NAVNEET JAN-JUNE 1964 G.K.U.

111300

RLT. 0959

111300

स

का
कर
तरे
गठ
देख
रह
उन
आ
अस
लि

सो
पि
पी
से
च
प
उ
म
"

१

एक महाप्राण

'विषकंठ' आज भी होते हैं। यह रोमांचक लेख आपकी मुलाक़ात एक ऐसे ही दुर्लभ व्यक्ति से करायेगा।

111300

मुकुंदराय वि० पाराशर्य

सन १९३८ के चैत्र मास की एक शाम थी। कोटडा सांगाणी के राजवैद्य कानजीभाई हरीराम भगवान के दर्शन करने पंचनाथ मंदिर में गये। मंदिर के चबूतरे पर उन्होंने घनी सफेद दाढ़ी और ऊंचे गठीले बदन के एक वृद्ध संन्यासी को बैठे देखा। संन्यासी का श्वास कुछ जोर से चल रहा था, पेट बढ़ा हुआ था। राजवैद्य ने उनसे अगले दिन अपने यहां भिक्षा के लिए आने की प्रार्थना की। संन्यासी ने निमंत्रण अस्वीकार करते हुए कहा—"हो सके, तो मेरे लिए यहीं कुछ मट्ठा भिजवा दें।"

बातचीत से पता चला कि वे संन्यासी सोमनाथ की यात्रा करने निकले थे। पिछले कुछ महीनों से वे उदरव्याधि से पीड़ित थे और अब व्याधि ज्यादा बढ़ जाने से दस-बारह दिन ठहरकर आराम करना चाहते थे। उदररोग में मट्ठा औषध और पथ्य दोनों का काम करता है, इसी [illegible] उन्होंने उसकी मांग की थी। वैद्यजी ने मट्ठा पहुंचाने का जिम्मा लिया और कहा—"मैं आपकी चिकित्सा करूंगा। आप रोगमुक्त होकर ही आगे की यात्रा करें।"

संन्यासी ने पूछा—"क्षारयुक्त औषध देंगे या क्षारहीन?" वैद्यराज ने कहा—"रोग इतना बढ़ गया है कि अब क्षार देना आवश्यक है।"

क्षारयुक्त औषध से संन्यासी की तबीयत में सुधार होने लगा। थोड़ा स्वस्थ होते ही गांववालों की प्रार्थना पर संन्यासी ने भगवद्गीता पर प्रवचन शुरू कर दिया। उस समय कोटडा राज्य के दीवान थे जीवनराम घेलाभाई, जो साधु-संतों की सेवा का बहुत ध्यान रखते थे। वे भी उनके प्रवचन में उपस्थित होते।

संन्यासी का नाम स्वामी कृष्णानंद था। पूर्वाश्रम के विषय में पूछने पर वे यही उत्तर देते—"वह सब भूल जाने के लिए तो मैंने संन्यास लिया है। वैसे भी ये निरर्थक बातें जानने से किसी का क्या भला होगा?" परंतु स्वामीजी सिर्फ आध्यात्मिक बातें ही नहीं करते थे; बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, मन की शांति, खेती, जमीन के कटाव, गाय-बैल के रोग, गांव की एकता आदि विषयों में भी प्रसंगानुसार सलाह दिया

111300

करते थे । शीघ्र ही वे गांववालों के बहुत प्रिय हो गये ।

अतः जब वे पूर्ण स्वस्थ होकर सोमनाथ जाने को तैयार हुए, गांववालों ने दीवान जीवनराम को आगे कर स्वामीजी से चातुर्मास्य कोटडा में करने की प्रार्थना की । बहुत आग्रह करने पर उन्होंने बात मान ली और चतुर्मास लगते ही कोटडा में वापस आ गये ।

उनकी सुविधा के लिए भक्तों ने पंचनाथ मंदिर की झोंपड़ी में खाट, गद्दा, पानी की मटकी रखवा दी । स्वामीजी बोले–"यह पंचनाथ का आश्रम है, साथ में कमंडल है, दंड है, कपड़े हैं, कौपीन है । फिर इन सबकी क्या जरूरत ? कौपीनवंतः खलु भाग्यवंतः ।" और हंसते-हंसते वह सब सामान हटवा दिया ।

पुस्तक पास न होते हुए भी स्वामीजी ने महाभारत के शांतिपर्व के मोक्षधर्मपर्व पर प्रवचन शुरू किया । ब्राह्मण विद्यार्थियों को वे रुद्राष्टाध्यायी, वश्वदेव, प्राणायाम आदि सिखाते तथा विप्र केशवलाल झीणा को दशोपनिषद पढ़ाते और वैद्य कानजीभाई को चौमासे में उगनेवाली वनस्पतियों के गुण-धर्म की जानकारी कराते । स्वामीजी को हिन्दी और मराठी का अच्छा ज्ञान था, बंगला भी जानते थे, गुजराती टूटी-फूटी बोल लेते थे । परंतु वे किस प्रांत के थे, यह उन्होंने नहीं बताया, न कोई पहचान पाया । किसी-किसी मरीज की चिकित्सा में वैद्यराज उनकी सलाह लिया करते थे ।

कृष्णानंद स्वामी किसी के घर पांव धुलाने न जाते । भिक्षा लेने जाते भी, तो देहलीज के अंदर पैर न रखते और पंचनाथ लौटकर सब एकसाथ मिलाकर खाते । वे दो दिन में एक वक्त भोजन करते । गुरुपूर्णिमा के दिन दीवान जीवनभाई कुछ ब्राह्मणों के साथ उनकी पूजा के लिए आये, तो उन्होंने कहा–"ये महादेव मुझसे बड़े गुरु हैं; और इनसे भी बड़ा गुरु तुम्हारे हृदय में बैठा हुआ है । उसकी पूजा करो, वह फल देगा । यह बाह्याचार हम सबके लिए अनुपयोगी है ।"

श्रावण में वैद्यराज कानजीभाई के भतीजे की पत्नी का देहांत हो गया और क्रियाकर्म कराने वे सपरिवार मोरवी गये । उनके साढ़ू भट्ट अंबाशंकर केवलराम भी कोटडा में ही थे । उनकी उम्र करीब पच्चीस साल की थी । एक रात जब वे घर लौट रहे थे, देहलीज के पास सांप ने उन्हें डस लिया । आस-पास के लोग इकट्ठे हो गये । एक अहीर ने सांप को मार डाला. । लोगों ने अंबाशंकर का पैर कपड़े से बांध दिया । दंशस्थान को काटा गया । गांव में कोई दूसरा वैद्य था नहीं । पास के गांव में विष झाड़नेवाला कोई 'आयर' (ओझा) था । उसी को बुलाया गया । सबका कहना था—काला नाग है, बहुत जहरीला है । अंबाशंकर भी घबराकर चिल्लाने लगे–"मर गया, मुझे बचाओ ।"

किंतु उनकी युवा पत्नी दयाकुंवर उन्हें ढांढ़स बंधाते हुए बोलीं–"घबराइये नहीं।

हमारे वंश में शेषनाग का छत्र है । नागबाबा ने भले डस लिया; परंतु उनका विष नहीं चढ़ेगा । उन्हें मार डाला गया, यह बहुत बुरा हुआ । वे नागबाबा ही हमारी रखवाली करते हैं ।" और वे सिर से नहाकर, पूजाघर में शंकरजी की मूर्ति के सामने मनौती मनाने बैठ गयीं ।

जहर फैलता जा रहा था । लोग बेचैन थे । औरतें दयाकुंवर को पूजा छोड़ पति की सेवा करने के लिए कह रही थीं । इसी बीच किसी को स्वामीजी की याद आ गयी । उन्हें सूचना भेजी गयी । वे तुरंत दौड़ते हुए आये । बाहर पड़ा मरा सर्प देखकर "बहुत भयंकर" कहते हुए अंबाशंकर के पास आये । दिये के उजाले में उनकी आंख देखकर पूछा—"घी पिलाया ? नरमूत्र पिलाया ? जल्द ही पिलाओ और थोड़ी-थोड़ी देर के बाद पिलाते रहो ।"

इसके बाद स्वामीजी ने अपने ही वस्त्र फाड़कर पैर को फिर से अच्छी तरह बांधा और घाव को और काटा । फिर वे एकाएक झुके और घाव को चूसने लगे । चार-पांच आदमियों ने स्वामीजी का हाथ पकड़कर खींचा—"आप छोड़ दीजिये, हम चूसते हैं ।"

किंतु स्वामीजी ने उन्हें कहा—" नहीं, दांत खराब होगा तो ......मर जाओगे । तुम लोग दूर हटो ।" और उन्होंने घाव को चूसकर काफी खून निकाल दिया । ऊपर से दवा दी ही जा रही थी । इसी दरम्यान दयाकुंवर पूजाघर से उठकर स्वामीजी का पैर पकड़कर कह रही थी— "आप पैर न चूसें, हमें पाप लगेगा । भगवान आप ही रक्षा करेगा । हम अहिछत्र हैं ।" स्वामीजी ने कहा—"रक्षा तो भगवान ही करेगा । परंतु मुझे भी अपना धर्म निभाने दो ।" ऐसा कहते-कहते संन्यासी ने अंबाशंकर की आंखें व नाड़ी देखी और बोले—"अब कोई डर नहीं है, ये बच जायेंगे । कल रात तक इन्हें सोने न देना । इस स्त्री को कहो कि भोलेनाथ रक्षक हैं, कल्याण हो, नमो नारायण !" फिर स्वामीजी सबसे विदा ले, जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए चले गये ।

अंबाशंकर को सारी रात सोने नहीं दिया गया और वे बच गये । प्रातः जब स्वामीजी को इसकी खबर देने आदमी गया, तो वे ध्यानस्थ बैठे थे । उसने दो-तीन बार उन्हें बुलाया । पर वे पद्मासन लगाये निश्चल बैठे रहे । दोपहर के बाद किसी ने ध्यान से देखा, तो उनका शरीर नीला पड़ गया था । श्वास और नाड़ी चलती नहीं थी । समाधि में ही होंगे, यह समझकर दूसरे दिन तक राह देखी । किंतु संन्यासी की समाधि न भंग हुई । वे महासमाधि में जा चुके थे ।

गांव लौटने पर वैद्य कानजीभाई ने सारी घटना सुनी, तो भर्राये हुए गले से बोले—"दांत तो उनके सारे थे । लेकिन जब मैं मोरबी गया, उनके दांतों में दर्द था, दांतों में से खून निकलता था । मैं उन्हें इसकी दवा देकर गया था ।" सब दुःख से मूक रह गये ।

['कुमार' से]

★

मौत मुंह ताकती रह गयी

मौत उन पर बार-बार हमला करती; मगर हर बार वह खुद हार जाती। यहां पढ़िये—मौत के बारंबार मात खाने की एक ऐतिहासिक सत्य कथा।

विष्णु प्रसाद

बूढ़े पादरी और नास्तिक तरुण के बीच ईश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस चल रही थी। पादरी ने प्रश्न किया—'अगर भगवान का नाम लेते हुए मैं इस गिरजे की मीनार से कूद पड़ूं और मेरे खरोंच भी न आये, तो ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करोगे?' तरुण नास्तिक शांति से बोला—"नहीं, मैं इसे संयोग कहूंगा।"..."अगर दुबारा कूदूं और मेरा बाल बांका न हो तो?"... "मैं कहूंगा, आपका भाग्य प्रबल है।"..."अगर तीसरी बार भी मैं सर्वथा सुरक्षित बच जाऊं तो?" "...जी, मैं यही समझूंगा कि आपको गिरजे की मीनार से कूदने का अच्छा अभ्यास है।" पादरी निरुत्तर हो गया!

वह युवक अगर नीचे का प्रसंग पढ़ता, तो न मालूम क्या कहता!

साल था १८२९, और दिन १६ अक्टूबर। ग्रीष्म का आरंभ हो चुका था। दक्षिणी गोलार्ध में ऋतुक्रम हमारे यहां से उलटा होता है न! आसमान साफ था। हल्की-हल्की हवा बह रही थी। ऐसे में लंदन की लायड कंपनी का जहाज 'मरमेड' परी के पंखों की तरह पाल फैलाकर सिडनी बंदरगाह से बाहर निकला। उसे जाना था कोलियर्स बे, जो आस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट पर स्थित है।

यात्रा लंबी थी। 'मरमेड' को लगभग आधे आस्ट्रेलिया की परिक्रमा करनी थी। लेकिन कप्तान सैम्युअल नोलब्रो ने अनेक वर्ष समुद्र पर बिताये थे और उसके मातहत अठारह अनुभवी मल्लाह थे। वैसे भी मौसम साफ था। चिंता की कोई बात नहीं थी। यह सोचने का कोई कारण नहीं था कि यह यात्रा जहाजरानी के इतिहास में विलक्षण समझी जायेगी।

तीन दिन की यात्रा आनंद से बीत गयी। चौथे दिन कप्तान नोलब्रो अपने सहकारी की निगरानी में जहाज को छोड़कर स्वयं अपनी कैबिन में जा बैठा। वहां कई किस्म की बढ़िया शराब की बोतलें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। मल्लाह भी डेक पर गप्पें लड़ाते हुए या ताश खेलते हुए बैठे थे। हवा अनुकूल दिशा में चल रही थी। बैरोमीटर बेफिक्र रहने को कह रहा था।

लेकिन दिन के दो बजे के करीब हवा एकाएक रुक गयी। पाल शिथिल हो गये।

जहाज ने आगे बढ़ना बंद कर दिया । थोड़ी देर में सूरज के चौगिर्द काले-काले बादल घिर आयें । कप्तान नोलब्रो तब तक काफी चढ़ा चुका था । लेकिन वह अनुभवी नाविक था । जहाज की गति बंद होने का उसे तुरंत पता लग गया । वह लड़खड़ाता हुआ डेक पर उतर आया ।

बैरोमीटर का पारा तेजी से गिर रहा था । दिन ढलने तक हवा के जोरदार झकोरे आने लगे, जो देखते-देखते भयंकर तूफान में बदल गये । 'मरमेड' लहरों की मार से डांवाडोल होने लगा । कप्तान और मल्लाह जी-जान से उसे संभालने में लग गये । वे जानते थे कि इस वक्त वे टोरेस के तंग जलडमरूमध्य में हैं, जिसमें कितने ही जहाज जलसमाधि पा चुके हैं । बौखलायी हुई लहरें टनों पानी 'मरमेड' पर उड़ेलने लगीं । हवा मल्लाहों को समुद्र में धकेलने पर तुली हुई थी । बीच-बीच में बिजली की चमक में कप्तान को क्षितिज दिख जाता था । जहाज से वहां तक लहरें-ही-लहरें दिखाई देती थीं । और कुछ ही सौ गज पर एक विशाल नंगी चट्टान सिर उठाये खड़ी थी । आंधी जहाज को उसी ओर धकेले लिये जा रही थी । मल्लाह उसे दूसरी दिशा में मोड़ने की प्राणपण से चेष्टा कर रहे थे ।

इतने में एक बहुत ऊंची लहर आयी और उसने 'मरमेड' को ऐसा जोरदार धक्का दिया कि समूचा जहाज हवा में उछला और चट्टान पर गिरकर चीनी के प्याले की तरह चूर-चूर हो गया । उसके बाईसों यात्री उस अंधेरी रात में चट्टान से चिपककर जैसे-तैसे उफनते सागर से अपने प्राण बचाते रहे । जब पौ फटी और एक-दूसरे का मुंह दिखाई देने लगा, तो उनके आश्चर्य का पार न रहा । वे बाईस-के-बाईस बिलकुल सही-सलामत थे ।

तीन दिन तीन रात ठंड से ठिठुरते, भूख से बिलखते ये बाईसों इंसान चट्टान पर बैठे रहे । चौथे दिन 'स्विफ्टश्योर' नाम का जहाज टोरेस जलडमरूमध्य में से गुजरा । उसने उन्हें देखा और उबार लिया ।

अगले पांच दिन आराम से बीत गये । 'स्विफ्टश्योर' न्यूगिनी के नजदीक पहुंच गया । दो-तीन घंटे और चलना था कि तट मिल जाता । लेकिन तभी 'स्विफ्टश्योर' तेजी से दूसरी दिशा में बहने लगा । वह एक तीव्र समुद्री जल-धारा में पड़ गया था । कप्तान ने नक्शा खोलकर देखा; लेकिन उसमें इस धारा का कोई संकेत नहीं था । बहते-बहते जहाज एक बियावान चट्टानी तट पर जा लगा । आत्मरक्षा के लिए सब यात्री वहीं उतर गये । इस बार भी वे सब के सब सही-सलामत थे ।

उन्हें उतरे पूरे आठ घंटे भी नहीं हुए होंगे कि 'गवर्नर रेडी' नामक जहाज उस ओर आ निकला । उस पर पहले ही बत्तीस आदमी मौजूद थे । फिर भी उसने 'मरमेड' और 'स्विफ्टश्योर' के सम्मिलित जत्थे को अपने यहां आश्रय दिया और अपने लक्ष्य की ओर कूच कर दिया ।

और लक्ष्य था सर्वनाश! न जाने कैसे तीन ही घंटे में जहाज में आग लग गयी। एक तो लकड़ी का जहाज, फिर उस पर लदे हुए थे शहतीर। धूं-धूं करके आग जल उठी। जल्दी-जल्दी किश्तियां समुद्र में उतारी गयीं। यात्री उनमें बैठकर जल पर जलती उस चिता से दूर सरक गये।

बच तो गये। पर समस्या थी कि अब क्या होगा? पास में खाना-पानी कुछ न था। चारों ओर सैकड़ों मील तक समुद्र-ही-समुद्र था और वह जहाजों के आने-जाने का मार्ग भी नहीं था। मदद मिलने की उम्मीद बहुत क्षीण थी। लेकिन जाने कहां से आस्ट्रेलियन सरकार का 'कटर' किस्म का जहाज 'कामेट' सामने से आता दिखाई दिया। इस बार भी सबके-सब यात्री और नाविक सुरक्षित बचा लिये गये।

जब 'कामेट' के नाविकों ने अतिथियों का किस्सा सुना, तो उन्हें बधाई देने के बजाय कोसने लगे। उन्हें विश्वास हो गया कि मौत इन लोगों के पीछे पड़ी है और इनका 'कामेट' पर रहना अनिष्टकारी सिद्ध होकर रहेगा।

और मानो उनके अंधविश्वास को सही सिद्ध करने के लिए ही आठवें दिन अचानक ही समुद्र में बवंडर उठ खड़ा हुआ। 'कामेट' का मस्तूल और पतवार सब तहस-नहस हो गये। जहाज को छोड़ देने में ही कल्याण था।

लेकिन जहाज पर एक ही डोंगी थी और 'कामेट' के नाविकों ने साफ-साफ कह दिया कि वे इन मनहूस यात्रियों को अपने साथ नहीं लेंगे। सचमुच वे इन्हें तूफान के थपेड़ों में उलटते-पुलटते हुए जहाज पर छोड़कर चले गये।

अभागे यात्री अठारह घंटे तक 'कामेट' के टूटे मस्तूल और जंगले से चिपटे रहे। मौत ने चारों ओर घेरा डाल रखा था। ऊपर से आसमान मूसलाधार पानी बरसा रहा था। लहर रूपी जीभ लपलपाता हुआ समुद्र उन्हें लील जाने की चेष्टा कर रहा था। और जैसे इतना ही काफी नहीं था, जहाज के आस-पास सैकड़ों की तादाद में चक्कर काट रही थीं सैकड़ों हत्यारी शार्क मछलियां।

लेकिन यात्रियों को तो आशा थी कि जिसने तीन बार उन्हें बचाया है, शायद चौथी बार भी बचा ले।

और आशा व्यर्थ नहीं गयी। कुछ ही घंटे बाद 'ज्युपिटर' नाम के जहाज ने आकर उन्हें बचा लिया। इस बार भी सबके-सब मौत के मुंह से सकुशल निकल आये।

लेकिन सबसे विचित्र घटना तो अभी घटनी बाकी थी। यार्कशायर की सरा रिची नाम की बुढ़िया 'ज्युपिटर' के यात्रियों में थी। वह आस्ट्रेलिया जा रही थी पंद्रह साल पहले घर से लापता हुए अपने बेटे की खोज में। अब उसे अपना बेटा मिल गया। वह युवक 'मरमेड' के नाविकों में से एक था।

यह संयोगों की शृंखला थी, भाग्य की लीला थी, या भगवान की करुणा—यह निर्णय आप ही कीजिये।

★

मूर्तिकार प्रदोष दासगुप्त

जिनकी मूर्तियां आप बोलती हैं

डा० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में एक नये अध्याय का श्रीगणेश किया है शिल्पी प्रदोष दासगुप्त ने ।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के जन्मदाता अवनींद्रनाथ ठाकुर और देवीप्रसाद राय चौधरी हैं। अवनींद्र ठाकुर आदर्शवादी थे । उन्होंने परंपरा से प्रेरणा ली, पौराणिक और बौद्ध भाव-भूमि का सहारा लिया। देवीप्रसाद राय चौधरी ठेठ यथार्थवादी थे । उन्होंने ईमानदारी से जीवन का यथातथ्य निरूपण किया, उसी को मूर्त रूप दिया । प्रदोष दासगुप्त दोनों से अलग थे। वह अपने कलागुरु देवीप्रसाद राय चौधरी और हिरण्यमय राय चौधरी से आगे निकल गये ।

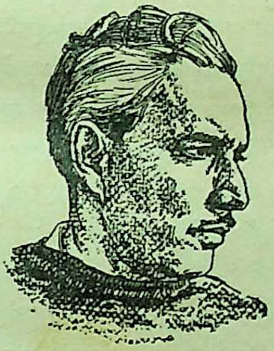

प्रदोष दासगुप्त केवल कुशल मूर्तिकार ही नहीं; मूर्तियों के अद्भुत व्याख्याकार भी हैं। एक-एक कृति की वे ऐसी व्याख्या करते हैं कि सुननेवाला दांतों तले उंगली दबाये। वे एक-एक बात इस प्रकार खोलकर सामने रख देते हैं कि कृति स्वयमेव अपनी आपबीती सुनाने लग जाती है ।

१९६० की बात है । वियाना में उन्हें 'कांग्रेस आफ इंटरनेशनल एसोसियेशन आफ प्लास्टिक आर्टस्' के सभापतित्व के लिए आमंत्रित किया गया । कैसे ? इस रहस्य को भी सुनिये । दुनिया के सभी देशों के जाने-माने कलाकारों से इस विषय पर एक प्रबंध लिखने के लिए कहा गया था । यह शर्त रखी गयी थी कि जिसका प्रबंध सर्वोत्तम हो, वही सभापतित्व करे–ऐसा संसार के पंचों का फैसला था। प्रदोष दासगुप्त इसमें बाजी मार गये । पंच उनकी लेखनी का लोहा मान गये–ऐसा है उनकी व्याख्या का जादू ।

१९५३ में लंदन में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन था । अस्सी देशों के जाने-माने कलाकारों की कृतियां प्रदर्शित हुईं । एक प्रकार से 'अग्नि-परीक्षा' थी । विषय था–'अज्ञात राजनीतिक बंदी' । उसमें

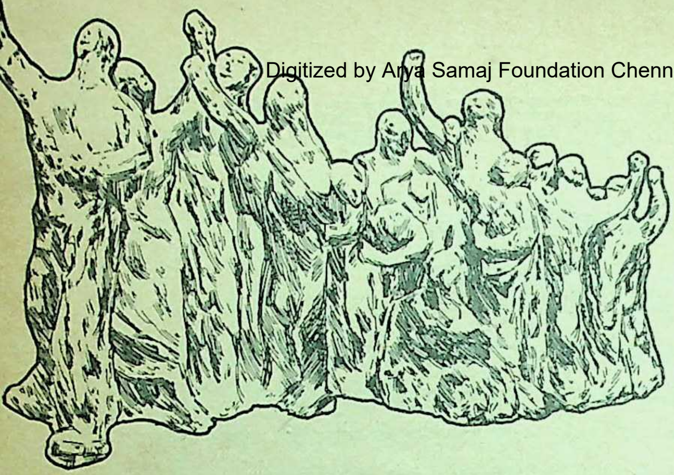

जयहिंद

भी अन्य कलाकार चारों खाने चित हुए, प्रदोष दासगुप्त सर्वप्रथम आये ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी मूर्तिकार, चित्रकार, कवि, लेखक आदि–सभी रूपों में उस्ताद प्रदोष, खूब खिलखिलाकर हंसते हैं, दूसरों को हंसना सिखाते हैं, जीने का मंत्र पढ़ाते हैं, जीवन की हर लहर से प्रेरणा लेते हैं । कैक्टस (नागफनी) देखा, तो झट से 'माता-पिता-पुत्र' के रूप में उसे मूर्तरूप दे दिया । चाहे पेड़ों की टेढ़ी-मेढ़ी टहनियां हों, चाहे संगीत के अनोखे साज, मुस्कराते फूल हों, या चटकती कलियां, छोटे-छोटे पौधे हों या नन्हें-नन्हें परिंदों के पर–यों समझिये कि रिबन, स्प्रिंग, तार, घोंघे सभी से जीने का सबक पढ़ते हैं । प्रकृति के कण-कण में जीवन-द्रष्टा, मानवता की 'अलख' जगानेवाले, मनुष्य की भावनाओं, समस्याओं और मनोविज्ञान को समझनेवाले प्रदोष दासगुप्त वास्तव में अनेक बातों में बेजोड़ हैं ।

१९१२ में ढाका में जन्म लिया । बचपन से ही कला के प्रति अनन्य प्रेम और आस्था थी । १९३२ में जैसे ही कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि ली, मूर्तिकला के पीछे दीवाने हो गये । सीखने की धुन सवार । देवीप्रसाद राय चौधरी और हिरण्यमय राय चौधरी की देखरेख में प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ । पढ़ने में तेज । फलत: १९३७ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से 'प्रसन्न घोष ट्रेवलिंग स्कालरशिप' मिला और दो साल तक लंदन की रायल एकादमी में अध्ययन करते रहे । उसी दौर में पाश्चात्य मूर्तिशिल्प को अपनी आंखों से देखा, परखा और समझा । लंदन और पेरिस में कलाकारों से मिले । कला की ज्वलंत समस्याओं पर चर्चाएं कीं और फिर लौट आये अपने वतन में ।

भारत में मूर्तिकला का अपना शानदार इतिहास रहा है । कश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से कामरूप तक, सर्वत्र मूर्तिकला के जीते-जागते अद्भुत रूप विद्यमान हैं । प्रदोष के मन में उनको देखने की ललक थी । १९४० में कलकत्ते में अपना स्टूडियो खोलने का विचार हुआ । इन्हीं दिनों शांतिनिकेतन गये । गुरुदेव और नंदलाल बसु का सान्निध्य प्राप्त किया । उनसे घंटों बातें हुईं । कला की मान्यताओं के

बारे में, कलाकारों की समस्याओं के बारे में । देश के स्वातंत्र्य-आंदोलन से प्रभावित हुए । देश की भुखमरी और अकाल से मन में जो टीस उठी, वही कृतियों में बोलने लगी । जनता-जनार्दन का सामीप्य प्राप्त किया । देश की आत्मा को पहचाना ।

१९५० में दो बार दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों का दौरा किया । वहां के कलारूपों को बहुत करीब से देखा । अध्यापन को पहले जीविका का साधन बनाया । बड़ौदा विश्वविद्यालय में कुछ दिन तक मूर्तिकला विभाग के रीडर बने । गवर्नमेंट आर्ट कालेज' कलकत्ता में मूर्तिकला के प्रोफेसर रहे; लेकिन अधिक कहीं नहीं जमे । अब १९५७ से दिल्ली में 'नेशनल गैलरी आफ माडर्न आर्ट' के क्यूरेटर के रूप में काम कर रहे हैं ।

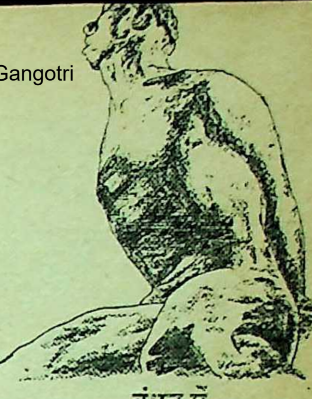
बंधन में

जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करने की कभी इच्छा नहीं हुई, आत्म-विज्ञप्ति से बिलकुल दूर । लेकिन लोग-बाग भला कहीं छोड़नेवाले हैं ! लंदन की रायल सोसाइटी आफ आर्ट्स ने 'फेलो' बनाकर सम्मानित किया । कांग्रेस आफ इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ प्लास्टिक आर्ट्स ने अपनी केंद्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बनाया । भारत की ललित कला अकादमी ने अपनी केंद्रीय समिति का सदस्य चुना । १९५९ में ललित कला अकादमी के कलाकार-प्रतिनिधि-मंडल के साथ वे रूस गये ।

समवेदना

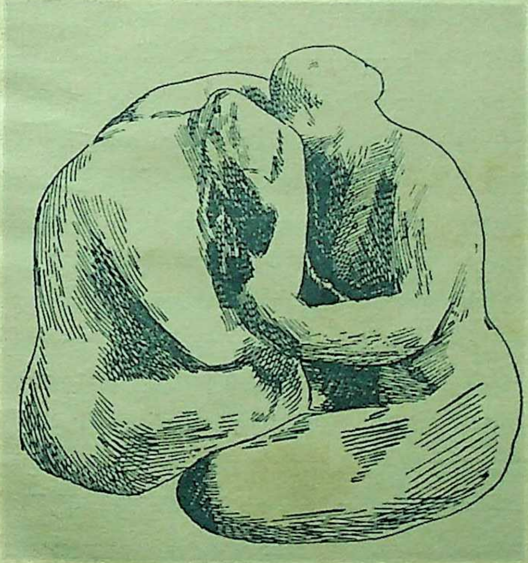

व्यक्तित्व में अद्भुत आकर्षण, वाणी में गजब का मिठास, व्यवहार सौजन्य से लबालब भरा—ऐसे हैं प्रदोष दासगुप्त । उनके इसी आकर्षक व्यक्तित्व की गहरी छाप उनकी कलाकृतियों में झलकती है । हर रूप-शिल्प अपने ढंग का । हर कृति में एक नयापन, एक नयी बात । जीवन की गहराइयों में डूबकर मोती निकालते हैं और उन्हीं का पानी अपनी

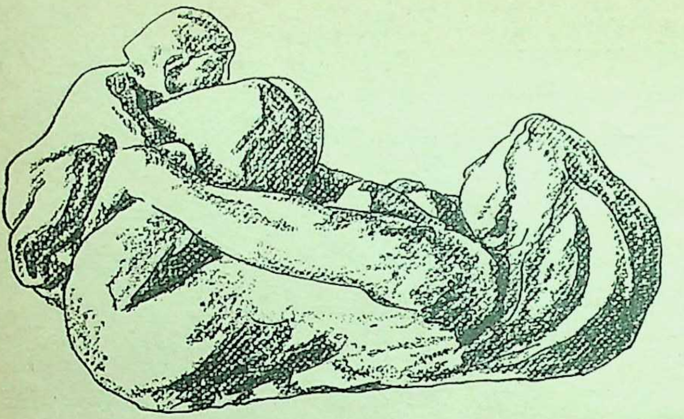

धरती मेरी मां

कृतियों पर चढ़ाते हैं। हर कृति में आत्मा की अनुगूंज और प्रतिभा का चमत्कार है।

अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम हैं। सीमेंट सजीव हो जाता है इनके हाथों का स्पर्श पाकर। कांसे और पीतल की झनकार में मानव-मन की पुकार सुनिये। रंगों और रेखाओं में जीवन की अनबूझ पहेलियां बूझिये।

सामीप्य में ऐसा जादू कि प्रदोष दासगुप्त दून स्कूल में जब भी आये, अपनी खिलखिलाहट की महक छोड़ गये।

इन दिनों वे नेताजी की अठारह फुट की विशाल कलाकृति बनाने में संलग्न हैं। अपने ढंग की यह बेजोड़ कृति कलकत्ते में आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के नये स्वरों को युग-युग तक मुखर करती रहेगी।

काम लेना सीखिये

उस दिन मैं भी पंडितजी के साथ उनके बाग में चला गया। बाग में निराई, खुदाई, और सिंचाई हो रही थी। घंटा-पौन घंटा काम करने के बाद मजदूरों ने हुक्का भर लिया और आराम से गप्पें हांकने लगे। पंडितजी ने जब देर होते देखी, तो उठे और खुरपा उठाकर निराई करने लगे। मजदूरों ने पंडितजी को काम करते देखा, तो हुक्का रख दिया और काम पर लौट आये। दोपहर हुई, तो पंडितजी खुद मजदूरों के पास जाकर बोले–"देखो भैया, अब दोपहर हो रही है। काम छोड़कर पहले भोजन कर लो, फिर थोडा आराम।" मजदूर भोजन करने लगे, तो पंडितजी ने एक-एक डली गुड़ लाकर सबको दिया। मजदूर खुश हो गये।

सायंकाल मैंने देखा इन्हीं मजदूरों ने जितना काम हमारे यहां दो दिन में किया था, उससे बहुत अधिक काम यहां एक दिन में ही किया है। यह मैं सोच ही रहा था कि पंडितजी बोल उठे–"क्या सोच रहे हो ? यही कि तुम्हारे यहां डांट-डपटकर भी जितना काम नहीं होता, उससे अधिक काम मेरे यहां बिना बोले ही हो जाता है। यह सोचने की बात नहीं, समझने की बात है। यह संसार तो स्नेह का है। नौकर-मजदूरों से काम लेना सीखिये, डाटना नहीं।"

—शरद्‌कुमार मिश्र 'शरद्'

★

नन्हा हाथी

पशु-जीवन में भी मानव-जीवन की-सी भीति और ममता के दर्शन होते हैं—यहां प्रस्तुत है उसकी एक सरस झलकी।

नोरा बर्क

वन में लगी आग के कारण जंगली हाथी, जंगल से बाहर आये, तो देखा सामने वाली नदी में जबरदस्त बाढ़ आयी हुई है।

हाथियों का यह झुंड एक बेढंगे तरीके से नदी के किनारे खड़ा हो गया। वे आपस में धक्कमधक्का करते हुए धारा के नीचे-ऊपर चल-फिरकर यह सोचने लगे कि क्या करना चाहिये ? उनके पीछे धुएं के विशाल स्तंभ उठ-उठकर आसमान छूने को बेचैन थे और सामने राप्ता नदी का उफनता हुआ पानी घोर गर्जना कर रहा था।

इस झुंड में हाथी-हथनियों के साथ एक नन्हा सिर्फ चंद महीनों का बच्चा भी था। वह बेचारा घिसटता हुआ चला आ रहा था। उसने बड़ी मुश्किल से रास्ता तय किया था, अब दम मारने का मौका मिला था। वह अपनी मां से चिपटकर चलता था और मौका पाते ही, जहां वह खड़ी हुई कि खंभे-जैसे दोनों पांवों के बीच दुबक जाता था और फिर चूहे की तरह बाहर झांकने लगता था।

उसके झुर्रीदार काले बदन पर इधर-उधर कुछ बाल थे, जिन्हें जल्दी ही गिर जाना था। इनमें अभी तिनके-पत्तियां और धूल भरी हुई थी। पैदाइश के वक्त उसके सूंड़ न थी; पर अब निकल आयी थी, जिससे उसे हर काम में मदद मिलने लगी। वह उसे बड़े हाथियों की तरह इधर-उधर हिलाया करता था। वह मुश्किल से ढाई फुट ऊंचा था।

वह बेधड़क बाढ़ के पानी को देख रहा था। पानी के भूरे रंग का फेन उठ रहा था। उसमें टूटी टहनियां, पूरी जड़ें और मरी हुई मछलियां फंसी हुई थीं। गरमी का आखीर था। इन दिनों पशुओं के खुरों और पत्थरों से टकराने से उठी चिनगारियां जंगल में आग लगा देने के लिए काफी होती हैं। सूखी घास व सनसनाती पवन उसे उभार देती हैं। बस बात की बात में जंगल में अग्निकांड हो जाता है। इधर पहाड़ों पर जोरदार बारिश भी हो चुकी थी। सूखे झरने फिर उबल पड़े थे। वही मटमैला पानी नालों से भागता हुआ राप्ता में आ पहुंचा था। उसी के द्वारा मटमैला गंदला आधा मील का पाट बन गया था।

हाथियों में हलचल मच गयी। जंगल में वे किसी से नहीं डरते; पर यह बाढ़ उन्हें बहुत बुरी लगती है। एक अनुभवी बड़ हाथी ने गरजती धार की ओर कदम बढ़ाये;

पर वह एकदम चौंककर सिर हिलाता हुआ, इस तरह लौटा, जैसे सिरदर्द झाड़ रहा हो।

उसके बाद एक जवान हथिनी, जो आग से ज्यादा पानी से तंग थी, सीधी पानी की धार की ओर तेजी से बढ़ गयी। सूंड़ उठा, वह धार में उतर गयी। वह चार कदम ही चली थी कि धार उसे बहा ले गयी।

झुंड ने उसका पीछा किया, कुछ ने तरंग में आकर और कुछ ने निराशा से ऊबकर। अब हाथियों की कतार पानी की धार में थी; किंतु नन्हा हाथी और उसकी ममतामयी मां बाहर खड़े थे।

मां तेजी के साथ इधर-उधर घूम रही थी। साथ ही झुंड को अपने पीछे रह जाने की सूचना चिंघाड़कर दे रही थी। पर कौन सुनता? सबको अपनी-अपनी पड़ी थी। जो भी हो, उसे भी पार जाना होगा। उसे अपनी चिंता न थी; किंतु नन्हा बच्चा जंगल में अकेला-दुकेला कैसे रह सकता था? वह इतना छोटा था कि शेर उसकी ओर ललचाई नजरों से देख सकते थे। मां ने सोचा कि तुरंत अपने झुंड के साथ जाना चाहिये और वह भी चल पड़ी।

बच्चा बहुत घबराया हुआ था। "मैं कैसे पार जाऊंगा?" यह प्रश्न उसके चेहरे पर अंकित था। मां ने जब उसे उन ऊंची लहरों की ओर खींचा, तो उसे बहुत बुरा लगा। उसे पानी अच्छा लगता था; किंतु नन्हें तालाबों का तेलिया पानी, जो हरी-हरी काई से ढंका रहता है। उसे अपनी झुलसी हुई खाल पर ठंडा पानी उलीचकर ठंड पाना अच्छा लगता है। इस वक्त तो हर चीज खौफनाक थी। वह उससे दूर भागना चाहता था।

इधर मां जिद कर रही थी कि बच्चा उसके हुक्म पर आगे बढ़े। मां ने बच्चे को अपने साथ इस तरह ले लिया कि उसे वह पार भी ले जाये और बाढ़ का उस पर असर भी न पड़े।

वे साथ-साथ तलहटी पर चले जा रहे थे। तेज धार उन्हें नहला रही थी।

उसकी रुखी-सूखी खाल पानी पाकर हुलस उठी; किंतु दूसरे ही क्षण उसके पैरों के नीचे से धरती गायब हो गयी। वह भयभीत होकर चीख पड़ा, पागलों की तरह पानी पर पैर रखकर उसने चलने का प्रयत्न किया; पर असफल रहा। वह तैरने लगा। सभी पशु तैरना जान जाते हैं।

उसकी मां भी तैरने लगी। नदी की कोमल रेशमी ताकत, जो हिमालय पर जमी बर्फ से पिघलकर, एशियाई बादलों से बरसे हुए पानी से बनी थी, उन्हें तेजी से धार की तरफ बहा ले गयी। यह सारा काम एक झपाटे में हो गया।

नन्हे को यह अच्छा न लगा। चारों तरफ भयानकता का बोलबाला था। उसमें इस संघर्ष का सामना करने की शक्ति न थी। मां का बलिष्ट शरीर उसकी रक्षा कर रहा था, साथ ही मार्गदर्शन भी। दोनों पूरी शक्ति से तैर रहे थे। दूर दिखनेवाला किनारा पास आता-सा लग रहा था। अचानक उन पर एक विपत्ति का पहाड़ टूट

पड़ा। उनके पीछे की धारा में किसी सहायक नदी का पानी तेजी से साथ आ मिला। चढ़ती हुई नदी और उबल पड़ी। पानी की दीवार फेन का साफा बांधे हुए, तेज बहती नदी में लपलपाती हुई जीभ की तरह लपकी।

क्षणमात्र में ही वह उनके सिर पर सवार थी। पानी की पुष्कल राशि और सूरज की किरणें चारों ओर फैली थीं। वे भंवर में जा फंसे और एक-दूसरे से अलग हो गये।

नन्हा हाथी अपनी बिछुड़ती हुई मां को देख तक न पाया। जैसे वह छूमंतर हो गयी हो। इधर बच्चा डूबता-तिरता, उछलता-गिरता धार के भूरे फेन और उसमें फंसे बबूलों व अन्य कंटीले पौधों के बीच इस तरह घूमने लगा, जैसे उसे किसी बहुत बड़े बर्तन में डालकर किसी तेज मशीन से घुमाया जा रहा हो।

वह बेचारा किसी प्रकार तैरता हुआ किनारे की ओर सतह पर आ लगा। सामने धरती भी दिखाई दी, उसके पैर भी किसी कठोर पदार्थ पर पड़े। वह अब मगर की पीठ-जैसे एक टापू पर आ लगा। यह टापू अनगढ़ पत्थरों, मलबे और कूड़े-कर्कट से बना था।

यह नंगा नन्हा-सा टापू आधा पानी के भीतर था और आधा बाहर। वह बरसात के बाद अपना रूप व आकार बदलता आया था। बहार के दिनों में अबाबीलें बादलों की छाया में, इस पर बसेरा करती थीं और पत्थरों से बनी ठंडी रेत पर अंडे देती थीं।

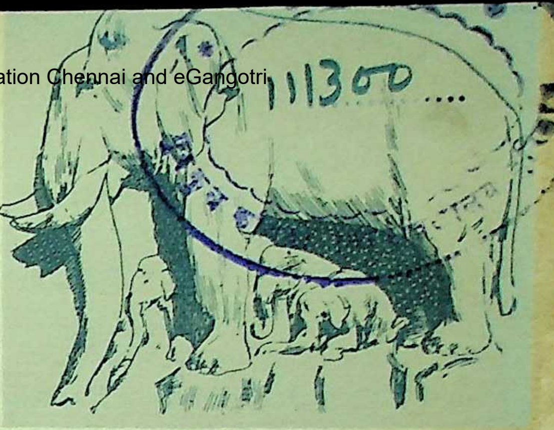
111300

हाथी-परिवार

[महाबलिपुरम् के मंदिर का एक शिल्प]

नन्हा हाथी किनारे पर कशमकश में पड़ा था। पैरों से कंकड़ और घोंघे रौंद रहा था। वह बुरी तरह कांप रहा था, प्रयत्न करने पर भी उसके कदम आगे नहीं पड़ते थे। वह जैसे-तैसे खड़ा हो सका था। उसके सारे शरीर से पानी चू रहा था, पीठ धूप से सूख गयी थी। उसने सूंड़ से पानी फुरका, फिर चिंघाड़कर मां को पुकारा। पर वह कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी।

उसने चारों ओर सूंड़ घुमाकर झुंड को खोजने की कोशिश की, पर उसे सिर्फ सैलाब के पानी के अलावा कुछ नजर न आया। उसके आस-पास सड़ी-गली पत्तियों और मरे हुए पशुओं की लोथों से आती हुई दुर्गंध के अतिरिक्त कुछ न था।

उसने बदन हिलाकर सूखी रेत झाड़ी। सूंड़ से अपना पेट खुजाया, फिर स्वभाववश पास ही लगे एक घास के पौधे को जड़ से उखाड़कर बदन की सफाई की, साथ

ही मक्खियां भी उड़ायीं । सभी हाथी ऐसा ही करते हैं । उसने कान-पूंछ और सूंड़ भी हिलायी । उसने एक पैर जमाया, फिर दूसरा । इसके बाद साफ बदन पर सूखी रेत बिखेरी । उसे गंदा किया और अंततः सूंड़ को मुंह में डालकर विचारमग्न सा खड़ा हो गया ।

थोड़ी देर में उसे लगा कि वह जिस भूमि पर खड़ा है, वह मुलायम होती जा रही है। चंद मिनिटों में ही वह चटनी जैसी हो गयी। बालू के बुलबुले-से निकले । वह धंसने लगी, वह टापू के बीचोंबीच जाने की बात सोचने लगा; किंतु तब तक वह मध्य-भाग भी धंस गया । किनारे पर के कगार, जिनमें जल के पक्षियों द्वारा बने जालीदार पैरों के निशान थे, धीरे-धीरे डूबने लगे ।

नन्हा हाथी डूबते हुए टापू के आखिरी हिस्से पर सहमा हुआ खड़ा था । अपने कान खड़े करके चांदी जैसी चमकीली धार पर नजर गढ़ाये था । टूटी पत्तियां व टहनियां उसके पैरों को छू रही थीं ।

वह टापू के इस टुकड़े से उस समय तक चिपटा रहा, जब तक पानी उसे निगल नहीं गया; हार कर उसे तैरना पड़ा ।

वह किसी तरह डूबने से बचता रहा। उसे यह भी ज्ञात न था कि उसे किधर जाना है । धार उसे एक जमीन के टुकड़े की तरफ, जहां से नदी मुड़ती थी, बहा ले गयी । बहता हुआ वह एक कूड़े के ढेर पर आ लगा ।

वह धीरे से ऊपर चढ़ गया । उसके मन में अब न भय था, न आश्चर्य । वह चुपचाप अपने आसपास होनेवाली घटनाओं को देखने लगा ।

शाम उतर आयी थी । नदी का तूफान भी अब उतार पर था । नदी की धार अब सुनहली दिखाई दे रही थी । कालिमा से पुते हुए पेड़ों पर बंदरों और पक्षियों ने रैन-बसेरे की तैयारी शुरू कर दी थी । शहद की मक्खियों की आखिरी टोली भी फूलों को छोड़ छत्ते की ओर चल दी थी । उल्लू भी चुपचाप बैठ गया था । मच्छरों और गीदड़ों का अधिकार सारे वन-प्रदेश पर छा चला था ।

अचानक बारहसिंगों के सीगों की आवाज सुनाई दी । जलकुक्कुट ने बांग लगाकर मानो प्रश्न किया—"प्यारे दोस्त! क्या तुमने यह किया है ?"

नन्हा हाथी सब कुछ खड़ा सुनता रहा। दूर एक गुलबाघ ने कलेजे को कंपा देनेवाली दहाड़ मारी । पहाड़ी से ध्वनि टकरायी और प्रतिध्वनि वन-प्रदेश में छा गयी ।

गुलबाघ और बाघिनी की दहाड़ें क्रमशः गूंजती रहीं ।

निरीह नन्हा हाथी भयभीत हो गया । किंकर्तव्य विमूढ़ होकर उसने सूंड़ उठाकर मां को पुकारा ।

दूर से उत्तर भी आया ।

बच्चे ने बार-बार पुकारा ।

बहुत नीचे नदी के पास से बराबर उत्तर आता रहा । मां वहां अपने नन्हे बच्चे को खोज रही थी । उत्तर से यह भी स्पष्ट

था कि मां पास आती जा रही है । वह लापरवाही के साथ घास-पत्ती पौधे रौंदती हुई भागी आ रही थी ।

नन्हा हाथी मां की चिंघाड़ बराबर सुन रहा था । वह बर्फीली पहाड़ी की तरफ चिंघाड़ती हुई भागी चली आ रही थी । उसे अपने प्यारे बच्चे की तलाश थी । बच्चा अब चुप था । संभवतः सहज ज्ञान ने उसे चेता दिया था कि अब चुप रहने की आवश्यकता है, क्योंकि खतरा सिर पर आ चुका है ।

उसके चारों ओर दूधिया चांदनी शांति का साम्राज्य फैलाती आ रही थी, जिसमें जंगली आंखें सब कुछ साफ-साफ देख लिया करती हैं । अनजान बच्चे ने चारों ओर नजर दौड़ायी । जिसे यह ज्ञात न हो कि खतरे के वक्त वह क्या करेगा, यदि जान भी ले कि खतरा है तो क्या लाभ ? वह एक भयावह स्वप्न-सा देख रहा था और खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा था ।

उसी क्षण मां आ पहुंची । उसने चिंघाड़ कर तसल्ली दी ।

पेड़ों के बीच एक घनी छाया ।

उसके दूसरी तरफ ममतामयी मां ।

गुलवाघ बिजली की तरह झपटा और बच्चे की ठोढ़ी के नीचे से पंजा डालकर गला दबोच लिया । बगल से बाघिन मदद को आ गयी । पंजा व दांतों ने खाल फाड़कर गोश्त उखाड़ना शुरू किया । मौत का खूनी पंजा उसके गले में पड़ गया ।

तभी मां उन पर आ झपटी । उसने करारा हमला बोल दिया । उसकी सूंड़ खतरे से दूर मुंह में दबी थी । वह भूकंप की तरह आयी । गुलवाघ की जोड़ी, जो जंगल में किसी से नहीं डरती थी । मां की मुहब्बत का सामना नहीं कर सकी और मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई ।

अब हथिनी मां बच्चे से प्रेमालाप कर रही थी । उसकी सूंड़ बच्चे के घावों को खोज-खोजकर सहला रही थी । बच्चे के गले में बहुत चोट आयी थी । टांग भी घायल हुई थी, किंतु वह मौत के मुंह से लौट आया था । उसके घावों से रक्त बह रहा था; पर यह कोई चिंताजनक बात नहीं थी । कीचड़, धूल, और बरसाती पानी—नाना प्रकार की पत्तियां व जंगली जड़ी बूटियां—घावों को पूर देंगी । रहा दर्द, वह तो उठेगा ही; पर उठकर उसे भी बंद होना पड़ेगा । कुछ दिन बच्चा दर्द से तड़पेगा । निशान तो बदन में अपनी रौनक सारी उम्र दिखायेंगे ।

दर्द के बावजूद मां बच्चे के पास थी । जीवन-दायिनी, जीवन की संजीवनी बूटी मां, सारे दुखों को ठीक कर देती है । उसकी वाणी में संतोष, आनंद और प्रेम की त्रिवेणी लहरें मारती है, फिर चिंता को स्थान कहां?

चंद दिनों में नन्हा हाथी चलने-फिरने योग्य हो गया । मां-बेटे झुंड में पुनः जा मिले। और फिर वे इस वन की दूधिया चांदनी और ऊंची घनी वृक्षावली को सदा के लिए छोड़कर चले गये ।

रूपांतरकारः— राजेंद्रनाथ मिश्र

*

बातचीत की कला

चंद शर्तें हैं; जिनका पालन करें, तो बातचीत कला बन सकती है, वरना बला बनने में इसे देर नहीं लगती ।

जीवनलाल टाक

बातचीत कैसे की जाये ? इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान नहीं, जितना इस प्रश्न का कि बातचीत कैसे न की जाये । दर्जनों उदाहरणों से इसका उत्तर दिया जा सकता है, चार यहां दिये जाते हैं ।

१. मेरे परिचित साथियों में एक, जो बड़े तार्किक थे, बातों की किसी भी गोष्ठी में शामिल होते, तो प्राय: होंठ मींचे बैठे रहते; और जब खोलते, तो बोलनेवाले से एक ही प्रश्न करते—"आपने जो कहा, उसका सबूत क्या है ?" सबूत पेश करनेवाला कुछ भी कहे, मेरे साथी महोदय फिर से होंठ भींचकर चुप्पी साध लेते । उन्हें यही संतोष होता था कि उन्होंने एक ही प्रश्न से वक्ता की जबान बंद कर दी है ।

२. कुछ दिन पहले एक दावत में एक महिला मेरे पास बैठी थी । उससे मेरा कोई परिचय न था । मगर उसने जब अपनी न्यूयार्क-यात्रा का वर्णन सुनाना प्रारंभ किया, तो घंटा-भर सुनाती ही रही । दावत पूरी खत्म हो गयी थी । मगर उसकी यात्रा का विवरण अभी आधे तक ही पहुंचा था ।

३. मेरे एक मित्र ने दर्शन के क्षेत्र में कुछ नयी खोजें की थीं । उनमें से एक यह है कि जीवन की पूर्णता संतुलन में है । उनकी स्थापना का मूलमंत्र संतुलन था । इसकी व्याख्या में जब वे घंटों खपा देते थे, तो प्रतीत होता था कि वे स्वयं असंतुलित रहकर ही अपना संतुलन स्थिर कर पा रहे थे। वार्तालाप के हर मोड़ पर वह अपनी संतुलन-प्रणाली की चर्चा में ही व्यस्त रहते थे। कोई भी बात चल रही हो, वह उसे अपनी संतुलन-कसौटी पर ही परखते थे ।

४. एक दिन गरमियों के मौसम में मेरे घर चार विख्यात विचारक अचानक ही आ गये । उनमें एक तो वर्ष का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लिखकर ख्याति पा चुके थे । दूसरे एक प्रमुख पत्र के संपादक थे । तीसरे एक अत्यंत लोकप्रिय कवि थे । चारों अपने-अपने क्षेत्र के यशस्वी व्यक्ति थे । विचार-गोष्ठी भी वार्तालाप के आदर्श नियमों के अनुसार हो रही थी । दुनिया के सभी विषयों की चर्चा करते हुए, चारों बड़ी संयमित भाषा में अपना विचार रख देते थे और बड़े धैर्य से दूसरे की बात को सुनते थे । न कोई जोश में आता था, न अधीर होता था । और न कोई सारे समय अपनी बात कहे जाने की जिद्द करता था । बातों का सिलसिला बड़े

सहजभाव से आगे बढ़ रहा था । सब चाहते थे कि घंटों यही परिचर्चा होती रहे । कोई उचाट नहीं हो रहा था ।

इसी बीच एक महिला कहीं से टपक पड़ी । और अपनी बात का सिलसिला ऐसा छेड़ा कि पौन घंटे तक अपने संस्मरणों की धुआंधार झड़ी लगा दी ।

पौन घंटे बाद भी जब उनका धाराप्रवाह वक्तव्य शांत न हुआ, तो मुझे उन्हें टोकना पड़ा ।

ये चार दृष्टांत, वार्तालाप संबंधी अशिष्टता के चार नमूने हैं । ऐसे ही दर्जनों अन्य उदाहरण भी दिये जा सकते हैं ।

सच तो यह है कि हममें बहुत कम लोग हैं, जो शिष्टतापूर्ण बातचीत के साधारण नियमों का भी पालन करते हों ।

उनमें से कुछ की चर्चा करना ही इस लेख का लक्ष्य है ।

१. अच्छी और मनोरंजक बात वही कह सकता है, जिसके पास कहने को कुछ तत्व की बात हो । कुछ-न-कुछ तो हर आदमी कह सकता है । मगर बात मनोरंजक तभी होगी, जब वह किताबों में पढ़ी-लिखी या सुनी-सुनाई न होकर स्वानुभव की बात होगी । अथवा उसमें केवल दार्शनिक चिंतन न होकर कहनेवाले के व्यक्तित्व की छाया का स्पष्ट आभास मिलेगा । बातचीत पुस्तकों से कंठस्थ की गयी बातों या दूसरों से सुनी बातों के सहारे नहीं चल सकती । जैसे सोने का दांत और लकड़ी की टांग अपनी असलियत जाहिर कर देते हैं, वैसे ही बातों में पांडित्यपूर्ण उद्धरणों का नकलीपन बहुत जल्दी प्रगट हो जाता है । अच्छी बात मनुष्य के व्यक्तित्व का उसी प्रकार अंतरंग भाग होती है, जैसे उसका अपना रक्त ।

किसी को भी उन विषयों पर बात करने में संकोच नहीं करना चाहिये, जो उसके अत्यंत निकट के हों या जिनमें उसका पूरा दखल हो । यदि वह विषय आम लोगों के दायरे से बाहर का हो, तो भी बुरा नहीं । क्योंकि गैर-मामूली और नये विषयों की बात सुनने में सभी की दिलचस्पी काफी रहती है । नये और अपरिचित क्षेत्रों के साधारण प्रसंग भी सुननेवाले का मन मोह लेते हैं । मुझे मालूम है, एक कीटाणु-विशेषज्ञ जब कीड़ों के विचित्र व्यवहारों का विवरण प्रस्तुत करता था, तो राजनीतिक या साहित्यिक चर्चा के साधारणतया मनोरंजन विषय भी फीके पड़ जाते थे । विलक्षण विषयों में बड़ा रस होता है । और उनमें तत्व की बातें भी अधिक मिलती हैं।

२. बातों के अच्छी होने की दूसरी शर्त यह है कि कहनेवाला अपने व्यक्तिगत मंतव्यों का कभी भी लंबा-चौड़ा बखान न करे । जिस विवादग्रस्त प्रश्न या व्यक्ति के संबंध में आपकी सम्मति सर्व विदित है, उसे हर बार पूरे आग्रह के साथ दोहराते जाना मूर्खता है । घिसे-पिटे प्रश्नों के दोनों पक्षों की युक्तियां प्रायः सभी को ज्ञात होती हैं । अखबारों में भी उनकी चर्चा चलती ही रहती है । उन्हीं अखबारी दलीलों को पेश

करने से किसी का प्रभाव बढ़ता नहीं है। उन्हें अपने अंदर ही पचा जाइये। बातचीत के दौरान उन्हें प्रसारित करने से लोग आपको कट्टरपंथी मानने के अलावा और कुछ न मानेंगे। और भविष्य में सभी मित्र आपको असली बातचीत में शामिल करने से कतरायेंगे।

३. ध्यान रखने योग्य तीसरी बात यह है कि आप अपनी बात का इस ढंग से अंत कीजिये कि दूसरे को उसी प्रसंग में अपनी बात जोड़ने का सिलसिला मिल जाये। कुछ लोग अपनी बात का इस ढंग से उपसंहार करते हैं कि उस विषय पर जो कुछ कथनीय था, सब उन्होंने कह दिया। इससे आगे कोई कुछ कह ही नहीं सकता। वस्तुतः ऐसे दुराग्रही व्यक्ति केवल अपनी बात कहने के आदी होते हैं। दूसरे की बात सुनने का उन्हें न अभ्यास होता है, न धैर्य। वे सामान्य शिष्टता की भी परवाह नहीं करते। बातचीत की मनोरंजकता के लिए आवश्यक है कि बात करनेवाले शिष्ट विनयशील और व्यवहारकुशल हों।

४. बातचीत का लक्ष्य कभी भी किसी पक्ष को पुष्ट करने या बहस में किसी को नीचा दिखाने का नहीं हो सकता। बातचीत हल्के मन से, साधारण मनोरंजन के लिए ही होती है। इसका लक्ष्य यदि कुछ है, तो यही है कि एक विषय के सब पहलू प्रकाश में आ जायें। जैसे किसी छायाचित्र को विद्युत्प्रकाश के सामने रखकर उसके अंदरूनी रंगों को स्पष्टया देखते हैं, वैसे ही हम बातचीत में किसी विषय की गहराइयों तक पहुंचने का यत्न करते हैं और उसके नये पहलुओं को जानकर प्रसन्न होते हैं। बातचीत द्वारा ज्ञान बढ़ाने का माध्यम एकांतिक चिंतन से भिन्न है। इसमें हम सहयात्री मिलजुलकर नये ज्ञान की खोज करते हैं।

टेनिस के खेल में जैसे खिलाड़ियों को बड़े कौशल से अपने साथी की हर चाल का जवाब देना पड़ता है और अपनी ओर से भी नया कौशल दिखाना होता है, वैसे ही बातचीत में भी कौशल की आवश्यकता है। बातचीत भी एक खेल है; मगर इस खेल का लक्ष्य हार-जीत न होकर मनोरंजन ही होना चाहिये।

बातचीत को हम ऐसा नृत्य भी कह सकते हैं, जिसमें कई लोग साथ मिलकर नाचते हैं। सहनृत्य में जैसे साथी की गतिविधि के अनुकूल अपनी गति बनानी पड़ती है, तभी नृत्य तालबद्ध होता है। इसी प्रकार बातचीत की लयताल को प्रवाहित रखने के लिए साथियों के अनुकूल बातों के उतार-चढ़ाव का क्रम जारी रखना चाहिये। बातचीत को जिंदा रखने के लिए उसमें समयानुकूल आवेश भी आना चाहिये और उसे आवश्यक गरमी से बचाने के लिए संयम भी चाहिये। संयम और आवेश के दोनों किनारों को छूकर चलती हुई लहरों पर ही बातचीत की नाव आगे बढ़ती है।

५. कुशल वार्तालाप की पांचवीं शर्त यह है कि कुछ व्यक्तियों से विशेष विषयों पर बात करने का अवसर ही टाल दिया जाये।

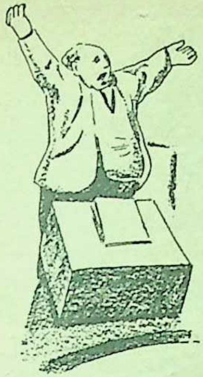

यह साहब न अंगड़ाई ले रहे हैं, न लड़ाई से घबराकर चीख रहे हैं–बल्कि अमरीकी सीनेट में अपनी वक्तृता झाड़ रहे हैं।
[ग्रापर की एक कलाकृति]

आपके कोई मित्र किसी विशेष वर्ग के या वाद के कट्टर समर्थक हों, तो उसके पक्ष-विपक्ष की चर्चा से बचना ही श्रेयस्कर है। किसी बात से अपने साथी व्यक्ति की भावनाओं पर आघात पहुंचने की आशंका भी हो, तो उस प्रसंग को स्पर्श करनेवाली बात भी नहीं करनी चाहिये। ऐसे विवादास्पद विषयों पर खुले दिल से बात नहीं हो सकती और जब उदारतापूर्वक विचार-विनिमय न हो सके, तब बातचीत का आनंद नहीं आ सकता।

६. कई बार मैंने देखा है कि वार्तालाप के मध्य थोड़ी-थोड़ी देर बाद मौन रहने से भी वार्तालाप की मनोरंजकता बढ़ जाती है। इससे मैंने यह परिणाम निकाला है कि हमें अपने विचारों को व्यक्त करने में उतावले नहीं होना चाहिये। यही उचित है कि हमारे मन में जो भी विचार अंकुरित हो, उसे विकसित होने का पूरा अवसर मिले। मुख पर आने से पूर्व मस्तिष्क में उस नवोदित विचार के हर पहलू पर खूब चिंतन हो चुका हो। अभिव्यक्ति में अधीर होने की कोई जरूरत नहीं है। वार्तालाप एक ऐसी ज्ञान-यात्रा है, जो हमें वेग से दौड़नेवाली मोटर पर बैठकर भागते हुए तय नहीं करनी, इसे तो वैसी ही पदयात्रा समझना चाहिये, जिसे धीमे-धीमे चलते हुए, रास्ते के रम्य दृश्यों का आनंद लेते हुए पूरा करना है।

७. अंत में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने विचार प्रकट करते हुए शब्दों का चुनाव बहुत ध्यान से करना चाहिये। मनोगत भाव को व्यक्त करने से पूर्व हमें अपने शब्द-कोष को खूब टटोलकर उसी शब्द का प्रयोग करना चाहिये, जो हमारे भाव के सर्वथा अनुरूप हो। अर्थपूर्ण शब्दों से अभिव्यक्ति की रोचकता बहुत बढ़ती है और अच्छी भावभरी शब्दावली सुनते हुए श्रोता वार्तालाप का पूरा आनंद लेते हैं। बातों में घिसे-पिटे मुहावरे बोलने या अर्धशिक्षित लोगों-जैसे गंवारू शब्दों के प्रयोग से बातचीत का स्तर बहुत गिर जाता है। वार्तालाप के विषय के अनुरूप हमारी शब्दावली भी बदलती रहनी चाहिये। कथा-कहानी और दार्शनिक विषयों के प्रसंगों की चर्चा एक ही भाषा में चल नहीं सकती।

वार्ता-कौशल के कुछ प्रयोग मैंने लिखे हैं, संभव है आप इससे भी अच्छे कुछ और जानते हों, उन सबका उपयोग कीजिये।

★

झुर्रियां केवल यह बताती हैं कि मुस्कराहटें कहां खेलती हैं। – मार्क ट्वेन

★

अभी क्या सीखना शेष है

हम सभ्य-सुसंस्कृत तो हुए हैं और हो रहे हैं; किंतु मानव-समुदाय को युद्ध के भय से अभी तक त्राण नहीं मिला—आखिर क्यों ?

मार्गरेट मीड

जब मैं पहले-पहल १९२८ में एडमिराल्टी द्वीपों के निवासियों के परिचय में आयी, तब वे अभी पाषाण-युग में थे । उनकी न कोई वर्णमाला थी; न उन्हें इतिहास-भूगोल का ज्ञान था; न उनका कोई राजनीतिक संघटन था, जो दो सौ से अधिक मनुष्यों को एक सूत्र में पिरोकर रख सके।

लेकिन १९५३ में मैं दुबारा वहां गयी, तो सब कुछ बदल चुका था । जो आदमी १९२८ में मेरा घरेलू नौकर था, उससे अब मैं कह सकती थी—देखो, जनरेटर चालू कर दो और मैग्निकार्डर पर द्विभाषी टेप रेकार्ड करने के लिए तैयार हो जाओ । यही क्यों, ये लोग इस बात की आलोचना करने लगे कि मेरे सब विद्युत्-यंत्र चारों तरफ से बंद थे । उन्होंने कहा कि अगर वे इन यंत्रों के सर्क्यूट देख-भर सकें, तो उनकी बनावट समझ लेंगे ।

यह सब कुछ पच्चीस वर्ष के अरसे में हो गया । इसी तरह, ये लोग जो अपने टापुओं के बाहर की दुनिया के बारे में घोर अज्ञान में पड़े थे, इन पच्चीस वर्षों में यह समझने लायक हो गये कि राष्ट्रसंघ के ट्रस्टीशिप में उनका क्या स्थान-मान है तथा आस्ट्रेलिया, लंदन और बाकी संसार के साथ उनका क्या संबंध है । तो यह था ज्ञान का परिवर्तन । हम जानते हैं कि ऐसा परिवर्तन संभव है; क्योंकि हमने इसे होते देखा है ।

किंतु मेरा खयाल है कि एडमिराल्टी द्वीपों के निवासी या दूसरी 'उठती हुई' जातियों के लोग अपने को आधुनिक यंत्र-तंत्र के अनुरूप ढाल सकेंगे या नहीं, इसकी फिक्र करने की हमें आवश्यकता नहीं । ज्यादा फिक्र हमें इस बात की होनी चाहिये कि क्या हम में, सभ्य-असभ्य सभी में अपने भीतर उन परिवर्तनों को लाने की क्षमता है, जो मानव-जाति को जीवित रखने के लिए आवश्यक हैं ? वास्तव में हमें इसका बहुत ही कम ज्ञान है कि हम अपना खात्मा कर बैठें, इसके पूर्व ही वैज्ञानिक युद्ध की रोक-थाम कर सकने के लिए हमें किन नयी सामाजिक व्यवस्थाओं का आविष्कार करना होगा ।

इतना हम जरूर जानते हैं—जो भी संस्कृतियां अपने को जीवित रख पायी हैं, उन्होंने मनुष्यों में निहित प्राणिसहज भावों को इस तरह मोड़ने का मार्ग खोज लिया है कि मनुष्य नयी बातें सीख सके, परिपक्वता

प्राप्त कर सके और उस संस्कृति में आत्मसात् हो सके। किंतु कोई भी संस्कृति यह कार्य बिलकुल पूर्णरूप से नहीं कर पायी है। विशेषत: परिवर्तन के दौर में से गुजरती हुई संस्कृतियों में तो, जैसे हमें दो भिन्न प्रकार के तत्वों को सीकर जोड़ना पड़ता है। और कई बार यह सिलाई टिक नहीं पाती।

भविष्य की एक समस्या यह होगी कि मानव की सहज प्रेरणाओं (इंपल्सेस) को वर्तमान स्थिति के अनुरूप कैसे ढाला जाये। सहज प्रेरणाओं का ताना-बाना उस युग के अनुरूप था, जब मनुष्य की कोई संस्कृति नहीं थी; लेकिन आज की दुनिया में जीवित रहने के लिए वह उपयुक्त नहीं है। इसी कारण मनुष्य के राजनीतिक आचरण को—जो कि तर्क के बजाय भावना पर आधारित हैं—सुधारना बहुत कठिन हो जाता है। वस्तुत: मनुष्य की भावनाओं को नया संस्कार देना कहां तक संभव है, इसका हमें बहुत ही कम ज्ञान हैं।

उदाहरण के लिए, मनुष्य के स्वभाव में जो आक्रामक वृत्तियां हैं, उनका आधार क्या है—इस बारे में अभी काफी अनिश्चय है। आज के बहुत-से शोधकार्यों से सामान्यत: यह प्रकट होता है कि युद्ध का खतरा मनुष्य की अच्छी प्रवृत्तियों (इंपल्सेस) से उपजता है, न कि बुरी प्रवृत्तियों से। समूचे मानव इतिहास में हम यह देखते हैं कि अपने पत्नी-पुत्र, अपनी जमीन, अपना देश, अपना धर्म और अपने आदर्श आदि जिन चीजों को मनुष्य बहुत मूल्यवान समझते हैं, उनके लिए वे मर मिटने के लिए तत्पर रहे हैं। तो हमें सिर्फ आक्रमण-वृत्ति की—सत्तालिप्सा, विध्वंसकता और हिंसा की—चिंता नहीं करनी है; बल्कि मनुष्य की यह जो युगों पुरानी आदत है कि वह जिन चीजों को जीवन से ज्यादा कीमती समझता है, उनके लिए मर मिटता है—उसकी चिंता हमें करनी है।

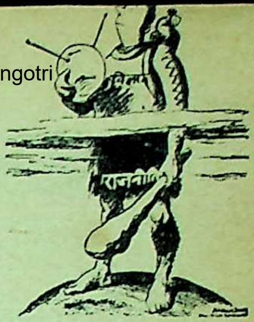

आधा जंगली-आधा सभ्य

युगों से हम शस्त्रों को इस प्रकार मुकम्मिल बनाते आ रहे हैं कि उनके द्वारा उत्तरोत्तर अधिक विशाल समूह बाह्य आक्रमण से अपनी रक्षा करने में समर्थ हुए हैं। क्या हम आशा करें कि यह सचाई लोगों की समझ में आ जायेगी कि जिन चीजों के लिए अब तक हम जान कुर्बान करते आये हैं, उन्हें अब जान कुर्बान करके नहीं बचाया जा सकता।

सो आज हमारे सामने समस्या है ऐसी राजनीतिक व्यवस्थाओं के विकास की, जो हमारी जान कुर्बान करने की प्राणिसहज (बयोलाजिकल) क्षमता को नया रूप दे सकें। जिन चीजों को हम अमूल्य समझते हैं, उनके लिए लड़े-मरें नहीं, बल्कि उनके लिए जियें, काम करें। अगर हम यह कर सकें, तो जिस यात्रा ने हमें पाषाण-युग से आधुनिक युग में पहुंचाया है, उसकी तुलना में हमारी अगली यात्रा अत्यधिक भव्य होगी।

★

प्यार का दंड

खलील जिब्रान की एक मार्मिक कहानी

सुंदर सुहावनी सुबह थी । दिवाकर अपनी दिव्य किरणों से लेबनान के निवासियों को ऊष्मा और प्रकाश से देदीप्यमान कर रहा था । गत एक सप्ताह से मूसलाधार वर्षा के बाद सूर्य भगवान के दर्शन बड़े लुभावने थे । उसी समय लेबनान के उत्तरी भाग के तुला गांव में कुछ लोग गिरजाघर के आसपास इकट्ठे होते दिखाई दिये । सबके चेहरे उदास थे । हर आगंतुक की जबान पर यही बात थी कि फारिस राहल अचानक गांव छोड़कर क्यों चला गया । बड़ी बेसब्री और परेशानी से सब बड़े-बूढ़े कह रहे थे कि वह अपनी नवविवाहिता पत्नी को भी तो साथ नहीं ले गया; अभी केवल छ: माह हुए थे उसके विवाह को ।

फारिस शेख था और अपने गांव का लोकप्रिय नायक । यह गौरवमय पदवी उसकी पैतृक संपति तो थी ही; किंतु वह स्वयं भी बड़ा लोकप्रिय था । उसके बापदादों ने सदियों तक तुला गांव पर शासन किया था। फारिस सत्ताईस वर्ष का प्रतिभाशाली योग्य और निष्कपट युवक था । सभी ग्रामवासी उसके प्रति श्रद्धा रखते थे । विशेषकर मजदूर वर्ग का वह आदर और सम्मान का पात्र था; क्योंकि वह बिना किसी ऊंच-नीच के भाव से सभी के दुख: सुख में हाथ बंटाता । फारिस ने जब सुंदरी सूसन से विवाह किया, तो सबने उसके भाग्य की सराहना की । सुखी जीवन के लिए जो कुछ मनुष्य को चाहिये, वह सब फारिस को प्राप्त था । वह स्वयं सुंदर स्वस्थ युवक था और सौंदर्य की प्रतिमा युवती सूसन अब उसकी पत्नी थी । उस दिन तुला गांव के लोगों ने निद्रा देवी की गोद से उठकर अभी दैनिकचर्या शुरू नहीं की थी कि फारिस के घर से आता हुआ चीत्कार सुनकर सब-के-सब सुन्न रह गये । पौ फटने से पहले ही शेख अपना सोना-चांदी और अशर्फियां इकट्ठा कर अपने प्यारे घोड़े पर सवार हो, गांव छोड़कर चला गया था । लोग चिंतित हो उठे । हर व्यक्ति उत्सुक था, यह जानने के लिए कि आखिर कारण क्या हैं । क्यों वह अपनी नयी दुल्हन, घरबार, बाग-बगीचा और अपने हाथों से बनायी फली--फूली वाटिका छोड़कर बिना विदा लिये चुपचाप चला गया ? वह तो कभी अपने प्यारे गांव और गांववासियों से जुदा नहीं हुआ ।

परंपराओं और प्रकृति ने लेबनान और विशेषत: तुला गांव के रहनेवालों को पारस्परिक सहयोग और स्नेह की कोमल भावनाओं से ओतप्रोत रखा । वह सदा एक

दूसरे के सुख-दु:ख में काम आते। एक घर की घटना सारे गांव की घटना बन जाती। सब लोग एक स्थान पर इकट्ठे हो, उस पर विचार-विनिमय करते और हर समस्या का सुझाव स्वयं खोज निकालते।

उस दिन की घटना तो ऐसी थी कि सभी बड़े-बूढ़े, अपने-अपने धंधों में न लग गांव के गिरजाघर के पास इकट्ठे हो, अपने प्रिय शेख के अकस्मात गांव छोड़ देने के बारे में चिंता प्रकट करने लगे। इस असाधारण घटना पर वे अपने-अपने विचार बताते और कल्पना का आधार लेकर कारण ढूंढ़ते। सब लोगों को इकट्ठे बैठे और चिंचित जान गिरजाघर के सर्वेसर्वा फादर स्टीफन वहां पहुंचे। उन्हें आया देख, लोगों में आशा और निराशा की लहरें दौड़ने लगीं। आशा थी कि कुछ सही समाचार पता चलेगा; लेकिन उनका दुखी चेहरा देखकर निराशा होती थी। कुछ क्षणों के लिए वहां सन्नाटा छाया रहा, फिर फादर ने रुंधे कंठ से कहना शुरू किया—“फारिस आज पौ फटने से पहले मेरे दरवाजे पर आया। वह अपने प्यारे घोड़ेपर सवार था। उसके मुख पर घोर पीड़ा और आत्मवेदना की रेखाएं अंकित थीं। आंखें उनींदी थीं। गहरी निराशा टपक रही थी। पहले वह चुप रहा। जब मैं उसके सदा प्रसन्न मुख पर असहनीय चुप्पी और अनवरत आंसुओं की धारा को सहन न कर सका, तो आगे बढ़ा। उसके कंधे पर हाथ रखकर मैंने पूछा—“बेटा, बेवक्त तकलीफ क्यों की ?” उसने कहा—“पापा मैं आपसे विदाई लेने आया हूं। मैं समुद्र-पार जा रहा हूं। जहां से अब कभी वापस नहीं आऊंगा।” इतना कहकर फारिस ने एक सील किया हुआ लिफाफा दिया, जो उसके बचपन के परम मित्र नव्वी मलिक के नाम था। उसने यह लिफाफा मेरे हाथ में थमाकर, गिड़गिड़ाकर कहा कि मैं इसे उसके दोस्त तक पहुंचा दूं। लिफाफा थमाते ही वह अपने घोड़े पर चढ़कर पूरब की ओर सरपट भाग खड़ा हुआ। मेरे प्यारे फारिस ने मुझे इतना मौका ही नहीं दिया कि मैं उसके इस तरह चले जाने का कारण पूछ सकूं।”

सुननेवालों में से एक ने कहा—“मेरे विचार में इस खत से सारा भेद खुल जायेगा, क्योंकि नव्वी मलिक फारिस के दिली दोस्त हैं।”

दूसरे ने पूछा—“पापा, क्या आपने उसकी पत्नी को भी देखा है ?”

पादरी ने कहा—“प्रातः प्रार्थना के बाद मैं उसके घर गया। वह अपनी खिड़की के पास पागलों की तरह खड़ी शून्य आंखों से क्षितिज की ओर एकटक देख रही थी। ऐसे लगा जैसे, वह बिलकुल सुधबुध खो चुकी हो। मेरे पूछने पर कि फारिस कहां चला गया है, उसने रो-रोकर बताया—‘मैं नहीं जानती, मैं नहीं जानती कि वह कहां गया है।’ यह कहते-कहते वह उस निरीह बालिका की तरह रोने लगी, जो सारे संरक्षण-सहारे खो चुकी हो।”

पापा अभी यह बता ही रहे थे कि पूरब

की ओर से बंदूक चलने की आवाज आयी और उसके साथ ही किसी स्त्री का गगन-भेदी आर्तनाद सुनायी दिया । इन दर्दनाक आवाजों से लोगों के दिल दहल गये । सबके चेहरों पर भय छा गया । एक क्षण में सब लोग घटनास्थल पर पहुंच गये । उन्होंने एक भयंकर दृश्य देखा । जमीन पर नव्वी मलिक का शरीर पड़ा था, उसकी छाती से खून की धार बह रही थी । सूसन पास खड़ी अपने बालों को नोच रही थी । वह पागलों की तरह चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी– "नव्वी, नव्वी तुमने क्या किया ?"

इस शोकातुर दृश्य ने सबके हृदय दहला दिये । सभी नर-नारी पत्थर की मूर्ति की तरह सन्न खड़े थे । वे सब उस मृत शरीर को घेरे थे । पादरी ने दूर से देखा कि नव्वी के दाहिने हाथ में एक लिफाफा थमा है । वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा और सबकी आंख बचाकर उस लिफाफे को अपने चोगे में छिपा लिया । नव्वी मलिक का शव उसके घर पहुंचाया गया । नव्वी की मां अपनी इकलौती संतान का यह रूप देखकर बेहोश होकर धरती पर तड़ाक से गिरी, तो फिर उठी ही नहीं। सूसन को उसके कमरे में पहुंचा दिया गया । वह जीवन के टिम-टिमाते दीपक के प्रकाश और मृत्यु के घोर अंधकार के बीच तड़प रही थी ।

पापा स्टीफन अपने मन का भारी बोझ ढोते हुए धीरे-धीरे अपने निवासस्थान पर पहुंचे । किवाड़ बंदकर, चश्मा लगाकर, कांपते हांथों से उस रहस्यपूर्ण लिफाफे को खोला । लिखा था–

प्रिय मित्र नव्वी,

आखिर मुझे अपने प्यारे गांव और बाप-दादे के घर को छोड़ना पड़ रहा है । मेरा यहां और अधिक रहना, उन सबके लिए कष्टदायक है, जो मेरे अपने हैं–तुम्हारे लिए, मेरी नवविवाहिता पत्नी के लिए और मेरे अपने लिए । मैं जानता हूं कि तुम्हारी आत्मा पवित्र है । तुम मित्रों और पड़ोसियों के विश्वासघात से घृणा करते हो । मुझे यह भी मालूम है कि सूसन निर्दोष है, शुद्ध है, और विश्वस्त पत्नी है । साथ ही मैं यह भी जानता हूं कि सच्चे प्रेम के सुंदर तारों ने तुम्हारे और उसके हृदय को न टूटनेवाले पाश में बांध दिया है । मगर दुनियावालों ने तुम दोनों को प्रेम, तुम्हारी शक्ति और तुम्हारी आशाओं से परे कर दिया है । यह प्रेम शाश्वत है । इसे स्वयं उसका आशीर्वाद प्राप्त है, जो मनुष्य को बनानेवाला है । मैं उस महान शक्ति के विपरीत अधिक प्रयत्न नहीं कर सकता । मैं प्रेम-नदी की इस प्राकृतिक धारा को थाम नहीं सकता । उसे बांधना ही महा पाप है । मेरे प्यारे नव्वी, तुम मेरे विश्वस्त मित्र हो । आज ही नहीं बल्कि तब से, जब हम दोनों शैशव काल के माधुर्य और मासूमियत में संसार की किसी भलाई-बुराई से अवगत नहीं थे । वह प्रेम मेरी नसों में रमा हुआ है । ईश्वर साक्षी है कि मैं अब भी तुम्हें उतना ही प्यार करता हूं । तुम मेरे अभिन्न मित्र हो । मैं इस प्रेम को भूल नहीं सकता ।

सूसन को भी मैं प्रेम करता हूं और उसी के प्रेम के मोह में आकर मैंने उससे विवाह करके उससे विश्वासघात किया है। उससे कह देना कि रात्रि के अंधकार और सन्नाटे में, जब मैं बेचैन होकर जाग उठता था और उसे ईसा की वेदी के सम्मुख घुटने टेके आठ-आठ आंसू रोते और जल से निकाली हुई मीन की तरह तड़पते देखता था, तो मेरा हृदय एक साथ अनगिनत नश्तरों से बिंधकर लहूलुहान हो जाता था। किसी भी नारी के लिए इससे अधिक कोई भी वेदनामय और कठोर दंड नहीं हो सकता कि वह दो पुरुषों के बीच बंदी हो। एक वह, जिससे वह प्रेम करती है और दूसरा वह, जो उससे प्रेम करता है। सूसन की मूक वेदना उसे तड़पा रही है। उसके अंदर एक अंतर्द्वंद्व है। फिर वह चुपचाप सम्मानपूर्वक गृहिणी के कर्तव्यों को निभाती है। तुम्हें मुझमें पाने की कोशिश करती है; लेकिन मैं 'तुम' नहीं हो पाता। उसका प्रयत्न सफल नहीं होता। तो वह बिलखती है और तुम्हारे सच्चे प्रेम को दबाने में असमर्थ हो, निराशों के आश्रय ईसा की शरण में जाकर फूट पड़ती है। मैं उसकी उस बेबसी को सहन नहीं कर सकता, क्योंकि मैं भी उससे प्रेम करता हूं।

मेरे मित्र, मैं बड़ा स्वार्थी हूं। इस द्वंद्व से घबराकर इससे छुटकारा पाने के लिए मैं उन सब निर्दोष साथियों को छोड़कर जा रहा हूं, जो मुझे अपना प्यारा नेता मानते हैं। मुझसे संरक्षण की अभिलाषा रखते हैं। अपने प्यारे मित्र और अपनी प्यारी सूसन के असीम प्यार के बीच में दीवार बनकर खड़ा नहीं रह सकता। यह प्रेम ईश्वरीय है। ईश्वर सदा तुम्हारी रक्षा करे।

तुम्हारा अपना, **फारिस**

पापा के हाथ से पत्र कब गिर गया, कब वह खिड़की के पास मंत्रवत आकर अबाध असीमित समुद्र की लहरों में गोते खाने लगे—उन्हें इसका कुछ भी होश न था। वे एक पहर तक वहीं पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रहे। उस अर्धचेतना में वह किसी खास रहस्य को ढूंढ रहे थे। अचानक विद्युत की चमक उनके चेहरे पर आयी। वे बोल उठे—"तुम कितने चतुर हो मेरे बेटे! तुमने अपने मित्र को मधु भेजा है; किंतु विष मिलाकर। तुम्हारा अपराध कितना बड़ा और कितना सरल है। नव्वी की बंदूक से तुम्हारी उंगलियों ने निशाना छोड़ा और तुम्हारा संकल्प नव्वी का संकल्प बन गया। तुम कितने चतुर हो तुला ग्राम के नायक।"

इस भयानक दुर्घटना से भी भयानक था, यह रहस्य जो पापा को व्यथित किये था। फारिस का कहना कि मैं उससे प्रेम करता हूं और मैंने विवाह करके उसके साथ विश्वासघात किया है।

तुला ग्राम में इस वक्त स्त्री-पुरुषों के क्रंदन और विलाप का ऊंचा स्वर उठ रहा था। सूसन की आवाज उन आवाजों में नहीं थी। लोग कहते थे, वह पत्थर हो गयी है—पत्थर जो कभी कुछ बोलता नहीं।

रूपांतर: कृष्ण कुमार

★

यम का विषबुझा तीर टेटनस

मगर इस तीर से बचाव के लिए आदमी के पास ढाल भी है, बशर्ते वह उसे हमले से पहले इस्तेमाल करले।

विशाखदत्त

मां की साड़ी का पल्लू पीछे से खींचते हुए उमा तुतलायी –"अम्मा मेला हात लेको।" मां ने मुड़कर देखा, बच्ची के दायें हाथ के अंगूठे पर खून की एक बूंद चमक रही थी। पूछने पर बच्ची ने बताया– "मोतल से कत गया।" बच्ची की पुरानी, चाबीवाली 'मोतल' पास ही फर्श पर औंधी पड़ी हुई थी।

मां ने कृमिनाशक दवा मिले पानी से उमा का अंगूठा धोया और बच्ची का मन रखने के लिए ऊपर से पट्टी बांध दी। फिर दोनों अपने काम में लग गये–मां रसोई बनाने में, बच्ची खेलने में। यह मंगलवार की बात थी।

शनिवार को सवेरे उमा ने बिस्तर में पड़े-पड़े कहा–"मां, पैल दुकता है।" उसके पैरों में ही नहीं, हाथों में भी दर्द हो रहा था। शरीर भी कुछ गरम था। मां ने थर्मामीटर लगाकर देखा और राहत की सांस ली। बुखार हल्का ही था। दोपहर को उमा ने अपना मनपसंद भोजन दूध-भात एक-दो कौर ही खाया और थाली हटा दी। मुंह खोलने में उसे कष्ट हो रहा था।

शाम को बाबूजी के घर आने तक उमा का चेहरा अजीब-सा हो गया था। उसके माथे पर बल पड़ गये थे, भौंहें चढ़ गयी थीं, मुंह दोनों किनारों से खिंच-सा गया था, जैसे, उमा विद्रूप की हंसी हंस रही हो। उसका शरीर भी तेजी से तप रहा था। माता-पिता घबरा उठे और उसे डाक्टर के पास ले गये।

बच्ची का चेहरा देखकर डाक्टर सहम गया। उसकी शरीर-परीक्षा करते हुए उसने पूछना शुरू किया–क्या बच्ची ने हाथ-पैर दुखने की शिकायत की थी? ...... क्या उसे मुंह खोलने में तकलीफ होती है? ...... क्या उसे हाल में कोई चोट लगी थी? ...... जब हर प्रश्न का उत्तर हां में मिला, तो डाक्टर ने गंभीरता से कहा–"मामला संगीन है। मुझे बहुत शक है कि बच्ची को टेटनस हो गया है। अभी बड़े अस्पताल में भरती करा दीजिये। मैं वहां फोन कर देता हूं।"

डाक्टर की मदद से बड़े अस्पताल में उमा को बिस्तर मिल गया और तुरंत उप-

चार शुरू हो गया। परंतु अगले तीन-चार दिन में उसकी हालत खराब-ही-खराब होती चली गयी। उसे बहुत दर्दनाक झटके लगते थे। शामक औषध खिलाकर उसे आधा बेहोश कर दिया गया था, ताकि दर्द कम हो। चौथे दिन ऐसे ही झटकों के दौरे में दम घुट जाने से उमा चल बसी। एक नन्ही कली, प्यारी कली खिलने के पहले ही कुचल दी गयी।

लेकिन टेटनस बच्चों की ही बलि नहीं लेता। उसे युवक, अधेड़, बूढ़े, बच्चे किसी की जान से परहेज नहीं है। और दुनिया के सभी द्वीपों-महाद्वीपों में उसका संचार अबाधित है।

जब 'क्लास्ट्रीडियम टेटनी' नाम के रोग-कीटाणु शरीर में पैठकर वहां विष पैदा करते हैं, तब मनुष्य को टेटनस होता है। ये कीटाणु दंडाकार होते हैं और खुर्दबीन की सहायता के बिना नहीं देखे जा सकते। लेकिन ये होते हैं लगभग सर्वव्यापी। खाने की मेज पर, पुस्तक के सफे पर, साइकल के हत्थे पर, चाकू की धार पर और बाजार में सड़क पर--कहीं भी आपकी इनसे मुठभेड़ हो सकती है।

नेब्रास्का विश्वविद्यालय के चिकित्सा-शास्त्रियों ने बाल्टिमोर नगर के अलग-अलग मोहल्लों से धूल-मिट्टी के नमूने मंगवाये। खुर्दबीन से देखने पर सभी में 'क्लास्ट्रीडियम टेटनी' हाजिर मिले। कलिफोर्निया में बहुत-से मनुष्यों की जांच की गयी और उनमें से एक-तिहाई की आंतों में ये कीटाणु पाये गये। गाय, घोड़े और कुत्ते-बिल्ली की पीठ पर ये सवारी किया करते हैं। कोई अचरज नहीं कि इस समय ये आपकी कमीज के कालर पर मजे से दौड़-फिर रहे हों। इसलिए यह सोचना व्यर्थ है कि मलेरिया-विरोधी आंदोलन जैसी किसी मुहिम के द्वारा इनसे छुटकारा पाया जा सकेगा।

वैसे हैजे और प्लेग की तरह टेटनस लाखों की बलि नहीं मांगता। लेकिन जितनों पर यह आक्रमण करता है, उनमें से तीन-चौथाई बच नहीं पाते। और मनुष्य पर इसका आक्रमण कभी भी हो सकता है।

चाकू या कील चुभ जाने से, साइकल की चेन छू जाने से, सड़क पर रपटकर गिर जाने से, या किसी भी कारण से कहीं त्वचा कट जाये, तो वहीं से टेटनस के कीटाणु शरीर में घुस जाते हैं। गहरे घावों में इसका भय विशेष रूप से रहता है। बात यह है कि ये कीटाणु आक्सीजन की कमी में खूब पनपते हैं और गहरे घावों में भरे हुए आक्सीजन-हीन जीवकोशों में उन्हें अड्डा जमाने के लिए अच्छा स्थान मिल जाता है।

प्राय: ये कीटाणु जहां से शरीर में प्रवेश करते हैं, वहीं डेरा डाल देते हैं। कई बार तो ये वहीं बैठकर बीजाणु उत्पन्न करने लगते हैं। बीजाणु दीर्घकाल तक गोदाम में पड़े रह सकते हैं और फिर किसी दिन अचानक ही उपद्रव खड़ा कर सकते हैं। एक आदमी को घाव लगने के पूरे चौदह साल बाद टेटनस हुआ था।

अगर वातावरण अनुकूल हो, तो कीटाणु

इतना सब्र नहीं रखते । बड़ी तेजी से उनकी तादाद बढ़ती है और शरीर में विष पैदा होने लगता हैं । पांच से चौदह दिन के भीतर विष अपना असर दिखाने लगता है । कई बार उसे जोर पकड़ने में तीन हफ्ते लग जाते हैं, तो कई बार एक दिन ही काफी होता है । रोग जितने अल्पकाल में फैलता हैं, उतना ही जानलेवा होता है । जब घाव लगने के तीन से पांच दिन के भीतर टेटनस हो जाये, तो रोगी के मर जाने की शत-प्रतिशत आशंका रहती है ।

टेटनस के प्रथम संकेत हैं बेचैनी, चिड़चिड़ापन, अवयवों की जकड़न—खासकर जबड़े और गर्दन की । ये लक्षण प्रकट होने तक टेटनस का विष मस्तिष्क में पहुंचकर स्नायुओं पर असर डालना शुरू कर चुका होता हैं । असर बढ़ने के साथ-साथ अवयवों की अकड़न भी बढ़ती जाती हैं । बुरी तरह जबड़े जकड़ जाते हैं । इसीलिए अंग्रेजी में इसका एक प्रचलित नाम 'लाकजा' हैं ।

रोग जब इस हद तक बढ़ जाता हैं, तो माथे पर बल पड़ जाते हैं, भौंहें चढ़ जाती हैं, मुंह के कोने फैल जाते हैं, गर्दन, पीठ, टांगें और हाथ अकड़ जाते हैं, सारा जिस्म डोर चढ़ायी हुई कमान की तरह तन जाता है । इसीलिए हमारे यहां इसका नाम धनुर्वात पड़ा हैं ।

रोगी को हवा का हल्का-सा झोंका छू जाये, उसका पलंग तनिक-सा हिल जाये, या उसके कमरे में अचानक बत्ती जला दी जाये, तो दौरा पड़ जाता हैं । दौरे में उसके शरीर को भयंकर झटके लगते हैं और खूब पसीना छूटता है । रोगी होश में ही रहता है, भयंकर दर्द भी महसूस करता हैं । लेकिन कुछ कह नहीं पाता ; क्योंकि छाती की भीत के अकड़ जाने से उसके गले से बोली नहीं निकलती । बीमारी ज्यों-ज्यों उग्र होती जाती हैं, दौरे जल्दी-जल्दी पड़ने लगते हैं। इस अवस्था में पहुंचकर रोगी के बचने की संभावना प्राय: नहीं रहती । जो बच जाते हैं, उनकी रीढ़ के दो-एक गुटके टूटे मिलते हैं । झटके इतने भयानक होते हैं ।

इन झटकों के दौरान में गले की मांसपेशियां अकड़ जाती हैं, जिससे रोगी कुछ भी खा-पी नहीं पाता । इसी प्रकार मल-मूत्र की निकासी भी रुक जाती हैं । बुखार अक्सर धीमा रहता हैं; परंतु अंत-अंत में बहुत तेज होता हैं । श्वासयंत्र में अकड़न पैदा हो जाने से सांस लेने में कष्ट होता हैं । बहुधा रोगी की मृत्यु दम घुट जाने से होती है ।

रोग-लक्षण प्रकट होने पर डाक्टर ज्यादा कुछ नहीं कर सकते ; क्योंकि तब तक जहर स्नायुजाल में फैल चुका होता हैं । घाव को साफ किया जाता हैं, ताकि जो रोग-कीटाणु वहां बैठे हों, नष्ट हो जायें । रोग-कीटाणुओं को निष्क्रिय बनाने के लिए दवा दी जाती हैं । शामक औषध भी दिये जाते हैं, ताकि रोगी को दर्द कम महसूस हो ।

प्राय: रोगी को नर्स की निगरानी में अंधेरे में रखा जाता हैं । उसे नली की मदद से भोजन कराया जाता हैं । शलाका और एनीमा के जरिये उसके शरीर से मल-मूत्र

निकाला जाता है । इस सारे उपचार का उद्देश्य यह है कि रोगी को कम-से-कम कष्ट हो ।

इसीलिए चिकित्साशास्त्री टेटनस की रोकथाम पर ज्यादा जोर दे रहे हैं । इसका उपाय है मनुष्य के शरीर में रोगनिरोध की क्षमता (इम्यूनिटी) पैदा करना । इसके दो तरीके हैं – एक सक्रिय, एक निष्क्रिय । सक्रिय विधि में शरीर को रोगविष के प्रतिरोधक (एंटीबाडी) उत्पन्न करने की प्रेरणा दी जाती है । निष्क्रिय विधि में 'एंटीबाडी' शरीर में प्रविष्ट कराये जाते हैं।

पहले में टेटनस का शोधा हुआ विष (टाक्साइड) इंजेक्शन द्वारा शरीर में पहुंचाया जाता है । कुल तीन इंजेक्शन दिये जाते हैं । पहले दो इंजेक्शन एक-एक महीने के अंतर से लगाये जाते हैं, तीसरा बारह महीने बाद । फिर हर पांचवें साल एक इंजेक्शन लगवाते रहना चाहिये । जब भी घाव लगे, एक इंजेक्शन लगा देना काफी होगा । बचपन में ही इंजेक्शन लगवाकर 'इम्यूनिटी' पैदा कर लेना अच्छा है । चिकित्सकों का कहना है कि बच्चे को डेढ़-दो महीने की उम्र में ही पहला इंजेक्शन लगवा देना चाहिये । ये इंजेक्शन मनुष्य को टेटनस के भय से जीवन-भर के लिए लगभग पूर्ण रूपसे मुक्त कर देते हैं ।

एक बात और है । एक इंजेक्शन, दो इंजेक्शन कारगर नहीं होते । तीनों का कोर्स पूरा होना जरूरी है । कोर्स के बीच में ही कीटाणु शरीर में प्रवेश कर जायें, तो इंजेक्शन कुछ भी नहीं कर सकते । बात यह है, शोधे हुए विष को शरीर में रोग-प्रतिशोधक तत्व पैदा करने में हफ्तों का समय लगता है, जबकि रोग-कीटाणु आनन-फानन में विष पैदा कर सकते हैं ।

जिनके शरीर में 'इम्यूनिटी' न पैदा हुई हो, उन्हें घाव लगने पर 'एंटीटाक्सिन' का इंजेक्शन दिया जाता है । यही निष्क्रिय विधि है । 'एंटीटाक्सिन' का निर्माण घोड़े के सीरम से होता है । लेकिन देखा गया है कि २५ प्रतिशत व्यक्ति इस सीरम को सह नहीं पाते । उन्हें इससे बुखार हो आता है, उनके स्नायुसंस्थान में विकार पैदा हो जाता है । कुछ लोग तो मर ही जाते हैं ।

इसलिए चिकित्सक पहले मरीज की त्वचा में थोड़ा-सा 'एंटीटाक्सिन' इंजेक्शन द्वारा पहुंचाते हैं । इंजेक्शन लगने की जगह के चारों ओर अगर लाल चकत्ता बन जाये, तो निश्चय ही मरीज को घोड़े का सीरम सहन नहीं होगा । तब उसे गाय का सीरम दिया जाता है । लेकिन बहुत-से रोगी इसे भी नहीं सह पाते । ऐसी हालत में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कई घंटों में 'एंटीटाक्सिन' रोगी के शरीर में पहुंचाया जाता है ।

'एंटीटाक्सिन' के इंजेक्शन का असर शरीर पर कुछ ही हफ्ते रहता है । और दूसरे, टेटनस कोई चेचक-जैसी रहमदिल बीमारी नहीं, जो एक ही आदमी पर दो बार हमला करते झिझकती हो । इसलिए टेटनस से पूर्ण सुरक्षा पाने के लिए 'टाक्साइड' के तीन इंजेक्शन ले ही लेने चाहिये ।

★

अनोखा डाकिया एक कुत्ता

जिसके भाग्य से मनुष्य भी ईर्ष्या करे एक ऐसा बुद्धिमान कुत्ता, जिसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली, जिसके नाम के डाकटिकट निकले और जो अमरीका के एक अजायबघर में आज भी देखा जा सकता है। किंतु उसके भाग्य की विडंबना तो देखिये कि उसे गोली मारकर खत्म करना पड़ा।

पीटर फार्ब

सन १८८८ की शरद ऋतु का एक खुश्क दिन था। एक दोगली नस्ल का छोटा-सा कुत्ता सर्दी से ठिठुरता-कांपता, न्यूयार्क के अलबाने डाकखाने में घुस आया। बेचारा भूख के मारे हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया था। डाकखाने के क्लर्कों और डाकियों को उस पर दया आ गयी और उन्होंने उसे डाक के थैलों के ढेर में आश्रय दिया। उसने फौरन ही अपने आराम के लिए एक उपयुक्त स्थान ढूंढ़ लिया और थैलों के बीच में दुबककर सो गया। जब वह नींद पूरी करके उठा, तो क्लर्कों ने पहले से ही उसके लिए भोजन की व्यवस्था कर रखी थी। कुत्ते ने जी-भर खाया और स्नेह से सबकी ओर देखकर पूंछ हिलाने लगा। चूंकि यह एक लावारिस कुत्ता था, इसलिए डाकखानेवालों ने संयुक्त रूप में इसे अपने संरक्षण में ले लिया और उसका छोटा-सा नाम 'ओने' रख दिया।

आराम और अच्छा भोजन पाकर ओने का स्वास्थ्य सुधर गया। अब वह बहुत चुस्त और सचेत नजर आने लगा। वह डाकखाने के वातावरण में रहता था, जहां हर समय डाक के थैले आते-जाते रहते, डाकगाड़ियों का आवागमन जारी रहता और डाकिये इधर-उधर घूमते रहते। ओने ने बहुत जल्द समझ लिया कि उसे अब क्या काम करना चाहिये। वह डाकियों के पीछे-पीछे जाने लगा। कुछ ही दिनों में उसे अपने इलाके के हर मकान का पता याद हो गया। क्लर्कों ने भांप लिया कि कुत्ता असाधारण रूप से जहीन है। उन्होंने उससे डाकिये का काम लेना शुरू कर दिया। उसकी पीठ पर डाक का थैला बांध दिया जाता और फिर वह पूरे इलाके का चक्कर लगाता। हर मकान और दुकान पर जाता। लोग थैले में से अपने-अपने पत्र छांटकर निकाल लेते। कुत्ते को प्यार से थपकी देते। कभी-कभी लोग उसे पुरस्कार-स्वरूप दूध और मांस भी देते। और फिर वह आगे रवाना हो जाता। होते-होते वह बहुत प्रसिद्ध हो गया। अब अलबाने का बच्चा-बच्चा उसे जान गया। वह जिधर जा निकलता, लोग उसके लिए आंखें बिछाये रहते।

एक दिन ओने यों ही मटरगश्ती के लिए अपने डाकखाने से बाहर निकला और स्टेशन की ओर गया, तो वहां उसने रेलगाड़ी में लगी लाल रंग की डाककार को पहचान लिया । डाककार न्यूयार्क की ओर जाने के लिए तैयार थी। ओने के जी में आया कि आज इस गाड़ी में सैर करनी चाहिये। वह फौरन उसमें चढ़ गया । यह उसका पहला सफर था । फिर जिंदगी के सत्रह वर्षों में उसने कई लंबी यात्राएं कीं, बल्कि यों कहिये कि लगभग दुनिया-भर में घूमा। अनुमान है कि ओने ने १ लाख ४३ हजार मील की यात्रा की । ऐसा सौभाग्य उससे पहले किसी कुत्ते को नसीब नहीं हुआ था।

रेलगाड़ी में यात्रा करने का उसे ऐसा चसका लगा कि वह फिर निठल्ला न बैठ सका । डाकगाड़ियां अमरीका में जहां तक जाती थीं, उन सब पर उसने बारी-बारी यात्रा की । वह हर डाकक्लर्क और अफसर का कृपापात्र था, इसलिए उसे कोई रोक-टोक नहीं थी । इस आशंका से कि कहीं वह खो न जाये, अलबाने के डाकक्लर्कों ने उसके गले में एक खूबसूरत-सा पट्टा बांधकर उसमें पीतल का एक तमगा लगा दिया, जिस पर ओने का पूरा नाम और पता अंकित था । ओने की गर्दन में पड़ा हुआ यह तमगा लोगों को इतना अच्छा लगा कि अधिकांश व्यापारियों और दुकानदारों ने भी बहुत सुंदर तमगे और पेटियां बनवाकर उसके शरीर पर बांध दीं । उसकी ख्याति में दिन-प्रति दिन वृद्धि होती गयी।

जब वह बाहर निकलता, तो स्त्रियां और बच्चे स्नेह से उसे गोद में उठा लेते और उसका खूब आतिथ्य-सत्कार करते ।

कुत्ते की आश्चर्यजनक सूझ-बूझ डाकखाने और रेलवे के आदमियों के लिए विस्मय का कारण थी । कुत्ता इनमें से हर एक की न केवल शक्ल पहचानता था, बल्कि उनके नामों से भी परिचित था । जब उसे कहा जाता कि अमुक व्यक्ति के पास जाकर खड़े हो जाओ, तो वह सैकड़ों व्यक्तियों में से उस व्यक्ति को पहचानकर, फौरन उसके निकट पहुंच जाता और दुम हिलाने लगता। यहां तक कि वह डाकगाड़ियों की सीटियां भी खूब पहचानने लगा था ।

एक दिन वह तीकोमा (वाशिंग्टन) में घूमते-घूमते समुद्र के तट पर जा निकला। उस समय वहां भाप से चलनेवाला एक छोटा-सा पोत 'विक्टोरिया' जापान की यात्रा पर जाने के लिए तैयार था । बंदरगाह पर जहाज के मल्लाहों ने कुत्ते को फौरन पहचान लिया क्योंकि वह अपने तमगों और रंग-बिरंगी पेटियों के कारण फौरन पहचान लिया जाता था। बस, उसे जहाज पर सवार कर लिया गया । जहाज जब याकोहामा पहुंचा, तो ओने की ख्याति उससे पहले ही वहां पहुंच चुकी थी । बंदरगाह पर सहस्रों जापानियों ने उसका स्वागत किया, यहां तक कि जापान के सम्राट ने स्वयं उसके लिए शाही सम्मान के साथ पासपोर्ट जारी किया और उसे सरकारी अतिथि की तरह रखा गया ।

जापान ही नहीं, पूर्व के लगभग सभी देशों का दौरा करने के बाद ओने अपने देश लौटा। उस समय अमरीका-भर में लोग ओने की एक झलक देखने के लिए व्याकुल थे। उसके बारे में भांति-भांति की रोचक कथाएं प्रसिद्ध हो गयी थीं। उन्हीं दिनों सानफ्रांसिस्को में एक डाक-तार परिषद् हुई, जिसमें डाक-विभाग के उच्चाधिकारी सम्मिलित हुए। इसमें ओने को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। कहते हैं, जब वह इजलास के कमरे में बराबरवाली गैलरी में दाखिल हुआ, तो उसने अपने शरीर पर तमगों और सुंदर पट्टों की पूरी 'वर्दी' पहन रखी थी। सबने उल्लासपूर्ण करतल-ध्वनि से उसका स्वागत किया। लोगों ने बारी-बारी से ओने की देह पर प्यार से हाथ फेरा और उसे शाबाशी दी। एक कुत्ते के लिए यह बहुत बड़ा सम्मान था, जो कभी किसी और कुत्ते को प्राप्त नहीं हुआ।

ऐसा प्रतीत होता है कि ओने को जब इतना सम्मानित किया गया, तो उसके मन में अहंकार और स्वभाव में आक्रोश आ गया। उसकी आयु ज्यों-ज्यों अधिक होती गयी, उसमें चिड़चिड़ापन बढ़ता गया। लोग उससे दूर-दूर रहने लगे, क्योंकि अब वह काट खाने को दौड़ता था। उसने कई लोगों को काटा भी, जो मरते-मरते बचे। ओने की दिमागी हालत ठीक करने के लिए बहुत प्रयत्न किये गये, पर शायद उसका समय पूरा हो चुका था।

एक दिन टूलेडो में उसने पोस्टल क्लर्क को काट लिया। पोस्ट मास्टर ने पुलिस को सूचना दी कि इस खूंख्वार कुत्ते से छुटकारा दिलाया जाये। आखिर निश्चय हुआ कि उसे गोली मार दी जाये। इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं था। अतः दूसरे दिन एक पुलिस अफसर ने अपनी पेटी से पिस्तौल निकाली। उसमें गोली भरी। ओने के सिर का निशाना लिया और फायर कर दिया। कुछ ही मिनिट में अमरीका का लोकप्रिय कुत्ता इस संसार से विदा हो गया। मरते समय उसकी आयु लगभग सत्रह वर्ष थी।

उसका शव स्मिथसोनियन इंस्टिटयूट को सौंप दिया गया, जिसने स्मृति-स्वरूप उसकी खाल में भूसा भरवाकर अपने अजायबघर में रख दिया और १९२६ में जब फिलेडेल्फिया में प्रदर्शनी हुई, तो उसमें ओने का शव भी रखा गया। १९३३ में शिकागो और १९५६ में न्यूयार्क के लोगों को भी ओने के शव को देखने का अवसर मिला।

आज इस कुत्ते को मरे हुए ६५ वर्ष बीते चुके हैं, किंतु अमरीका का डाक-विभाग आज भी विभिन्न उत्सवों पर उसकी याद ताजी करता रहता है। यदि आप अमरीका के किसी डाकटिकट पर एक छोटे-से कुत्ते का चित्र देखें, जिसकी पीठ पर बहुत से गोल-गोल तमगे बंधे हों, तो फौरन पहचान लीजिये कि यह उसी ओने का चित्र है, जो डाक का थैला मुंह में दबाकर अलबाने के गली-कूचों में पत्र वितरित किया करता था।

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अ
अतुल
ATUL

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)
पश्चिम रेलवे.

[illegible]
पुस्तक सं०........
आगत सं०........
दिनांक........
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

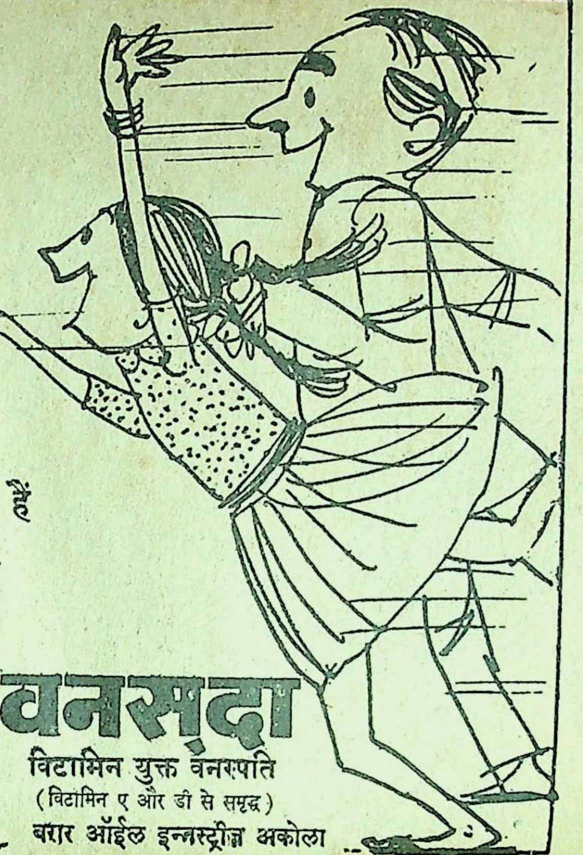

जब भोजन **वनस्दा** से बना होता है
तो वह खाना खाने के लिये दौडे चले आते हैं

बुद्धिमती स्त्रियां जानती हैं कि स्वादिष्ट भोजन का एक रहस्य है विटामिनयुक्त वनस्दा वनस्पति। वनस्दा से पकाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं परन्तु अधिक पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्दा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्दा का विशिष्ट स्वाद दीजिये और अपने परिवार से प्रशंसा पाइये।

Vanasda
MADE FROM VEGETABLE OILS ONLY
BERAR OIL INDUSTRIES

वनस्दा
विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)
बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़ अकोला

ASP/V-18 HIN

कोण कोई भी हो

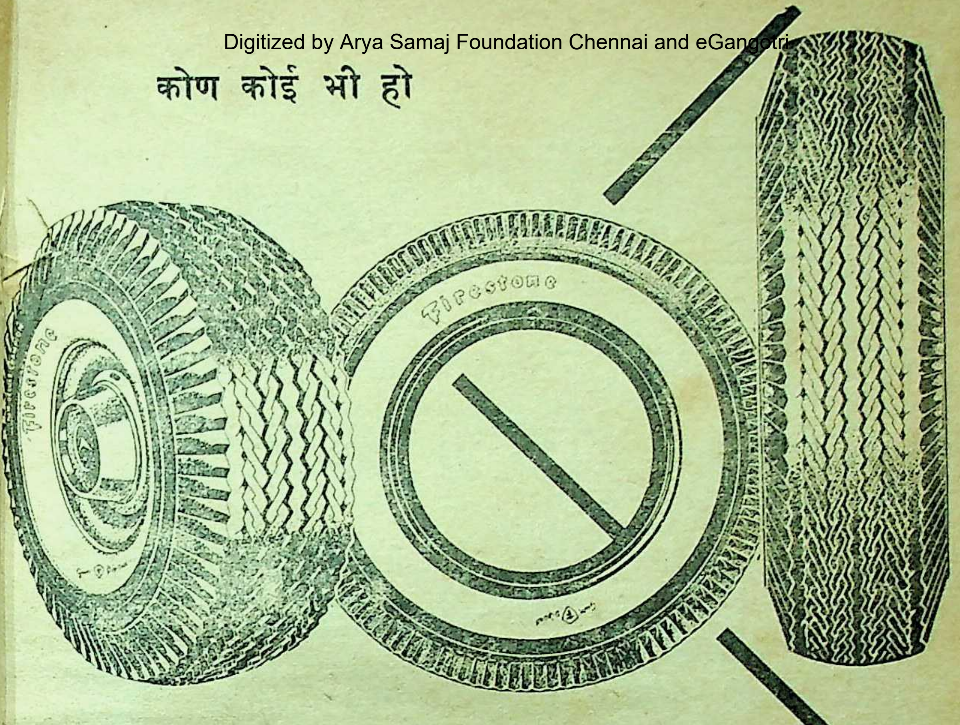

यह रहा टायर जो आपको देता है

अतिरिक्त सुरक्षा

यह ऐसी ट्रैड प्रणाली है, जो मोटरवालों को अधिकाधिक टायर सुरक्षा प्रदान करने के लिए परीक्षण-मैदानों तथा मोटर रेस की सड़कों पर संपन्न वर्षों के अनुसंधान की प्रतीक है। सुरक्षित संचालन के हजारों कोण सड़क को मजबूती से पकड़ते हैं, और जब आप अपनी मोटर चालू या खड़ी करते हैं तब आसान नियंत्रण और बेहतर संचालन की आपको अधिक सुविधा रहती है। जब आप फायरस्टोन खरीदते हैं तब भली भाँति जानते ही हैं कि आपको कितना लाभ होनेवाला है।

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर

फायरस्टोन : बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आपका प्रिय प्रतीक

Lina
Lina
HAIR TONIC

खिज़ाब मत कहिये-

लिना

मांगिये। यह अद्‌भुत केश-प्रसाधन सफेद
वालों को न तु केवल श्याम बना देता है
बल्कि बालों को सफेद बनने से रोकता भी है।

लिना सफेद वालों को
श्याम बना देता है

सौराष्ट्र सुगन्धी स्टोर्स
अहमदाबाद-१

एजेंटस् : एस. डी. पटेल अँड कंपनी, ७९ प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई २

आजादी खतरे में है। अपनी पूरी ताकत लगाकर इसकी रक्षा कीजिए। —जवाहरलाल ने

देश की रक्षा के लिए
सदैव जागरूक रहिये

आजकल हमारे सामने बाहरी आक्रमण का जो खतरा है वह जल्दी ही समाप्त होने वाला नहीं है और वह काफी समय तक बना रह सकता है। इसलिए राष्ट्र को सदैव सतर्क रहना है। हर प्रकार से देश की ाक्ति बढ़ाने के काम में न तो कोई ढील ही ोनी चाहिए और न ही उसकी गति मंद ड़नी चाहिए।

ती तोड़ मेहनत कीजिए

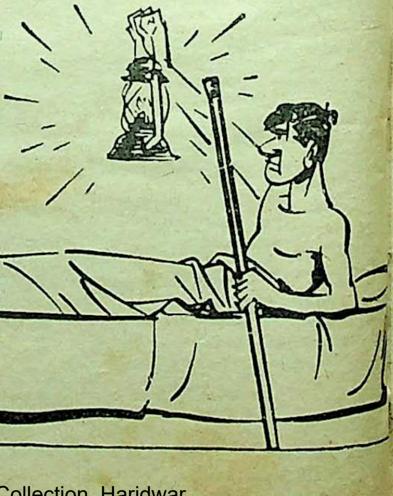

परिवार नियोजन

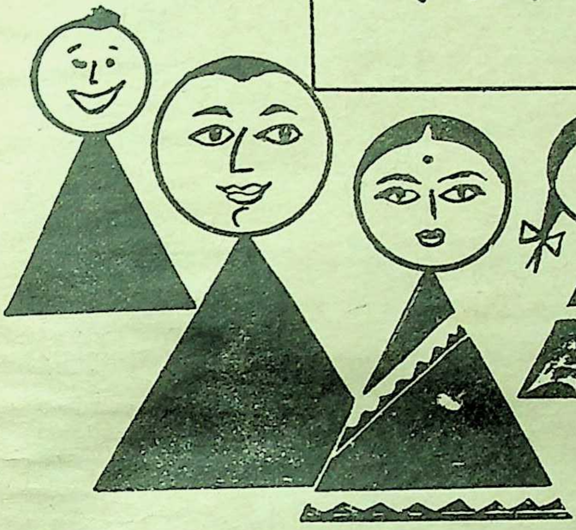

सबकी सुख-सुविधा का साधन

यदि आप चाहते हैं कि

१. आपके बच्चे स्वस्थ हों,
२. उनकी शिक्षा और खान-पान का उचित प्रबन्ध हो,
३. उनको जीवन में आगे बढने के उपयुक्त अवसर अपलब्ध हों, और
४. आपका वैवाहिक जीवन सुखी और सुव्यवस्थित हो

तो पास के **परिवार नियोजन केन्द्र** में जाइए और

अपने परिवार को सीमित रखने के तरीके मालम कीजिए।

डीएव६३-४३२

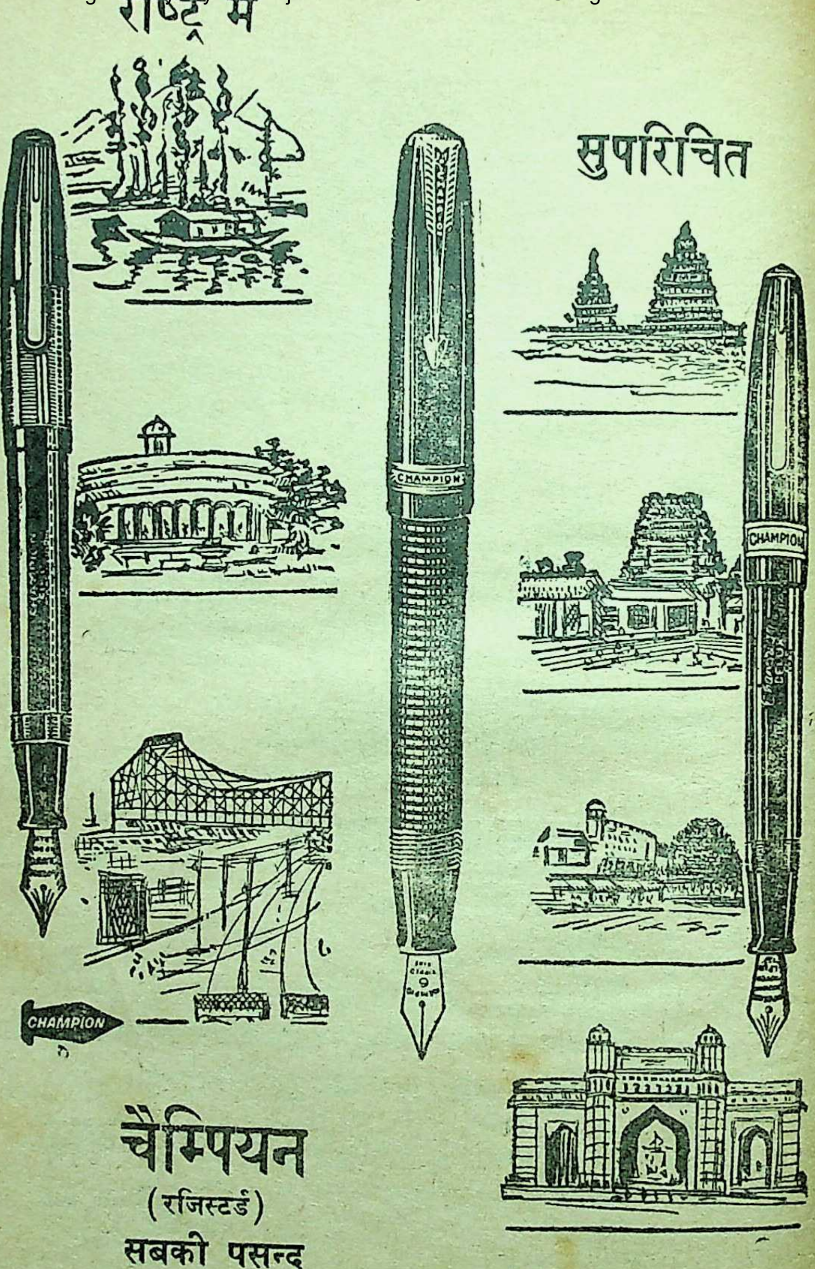
CHAMPION
CHAMPION
CHAMPION
CHAMPION

राष्ट्र में
सुपरिचित

चैम्पियन
(रजिस्टर्ड)
सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–२

सिर्फ किस्मत से

बाल सुंदर नहीं बनते ...

'बालों को सुंदर रखने में किस्मत नहीं, बल्कि अपनी **मेहनत** और उनकी हिफाजत काम आती है'–**होशियार** महिला का उत्तर यही होगा। सुंदर तथा आकर्षक बालों का राज उनकी पूरी-पूरी हिफाजत में है...और आप के लिए **'केशा'** यह काम बखूबी करता है! **'केशा'** बालों को **जवान** और पौष्टिक रखनेवाले तत्वों से भरपूर है, जो बालों की जड़ों तक पहुँच कर उन्हें रेशम जैसे मुलायम, चमकीले और सचमुच आकर्षक बनाते हैं। सच तो यह है अनोखी खुशबूवाला 'केशा' आपके बालों के लिए वरदान है।

केशा

सोल एजेंट्स और निर्यातकः
एम. एम. खंभातवाला,
अहमदाबाद–१
एजेंट्सः
सी. नरोत्तम एंड कं.,
बम्बई–२

अनिवार्य जमा (कर्मचारी) योजना, १९६३

अनिवार्य जमा (कर्मचारी) योजना, १९६३; २३ सितम्बर, १९६३ से रद्द कर दी गयी हैं। इस योजना के अंतर्गत कर्मचारियों से अब और रकम वसूल नहीं की जायेगी।

जमा रकम की वापसी

जो रुपया जमा करवाया जा चुका है, वह वापस लौटा दिया जायेगा और साथ ही उस पर ४ प्रतिशत प्रतिवर्ष का ब्याज उतने प्रत्येक पूर्ण कैलेण्डर मास के लिए मिलेगा, जितने मास के लिए रकम सरकार के पास रही थी।

कर्मचारियों को अपनी पास-बुकें नियोजकों अथवा मालिकों से ले लेनी चाहिए और जमा रकम की वापसी के लिए उस जमा कार्यालय को अर्जी लिखनी चाहिए, जिसमें खाता खोला गया है। यदि खाता बिना कर्मचारी की अर्जी के नियोजक द्वारा खोला गया था, तो रकम की वापसी नियोजक के मार्फत ही हो सकती है।

ऐसे नियोजक अथवा मालिक, जिन्होंने अपने कर्मचारियों के खाते अपने पास खोल रखे हैं और अपने यहां ही रकम जमा कर लेते हैं, वे अपने कर्मचारियों को रुपया सीधा ही लौटा देंगे। ऐसे नियोजक या मालिक इस प्रकार लौटाई गई रकम उस जमा कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें उन्होंने अपना खाता खोल रखा है।

वित्त मन्त्रालय

भारत सरकार

डी ए ६३।२९८

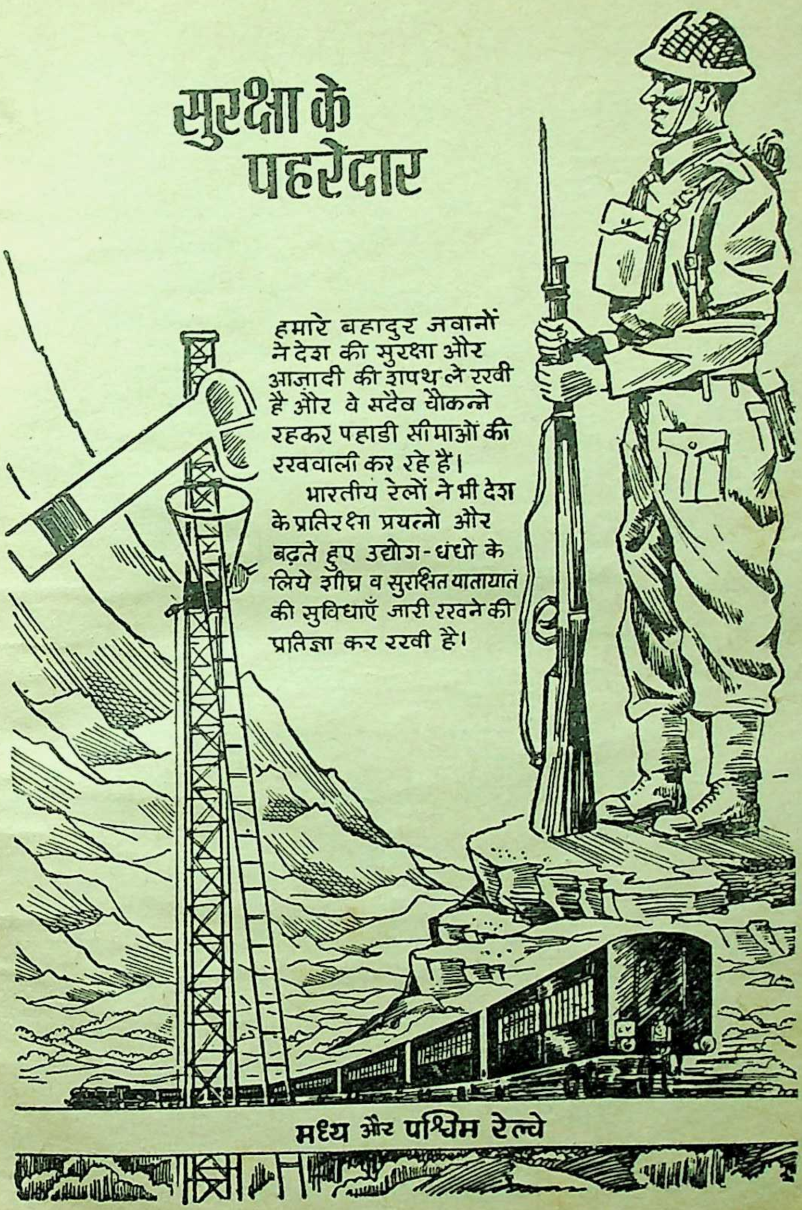

सुरक्षा के पहरेदार

हमारे बहादुर जवानों ने देश की सुरक्षा और आज़ादी की शपथ ले रखी है और वे सदैव चौकन्ने रहकर पहाडी सीमाओं की रखवाली कर रहे हैं।

भारतीय रेलों ने भी देश के प्रतिरक्षा प्रयत्नो और बढ़ते हुए उद्योग-धंधो के लिये शीघ्र व सुरक्षित यातायात की सुविधाएँ जारी रखने की प्रतिज्ञा कर रखी है।

मध्य और पश्चिम रेल्वे

आपके लिए जरूरी है

बेंगाल केमिकल का कैंथराइडिन हेयर ऑयल

आपके लम्बे, काले मुलायम और, घुंघराले बालों की रक्षा के लिए

बेंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

'नवनीत' के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें ।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे ।

३) 'नवनीत' की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं । प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है ।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें ।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे । अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे ।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये ।

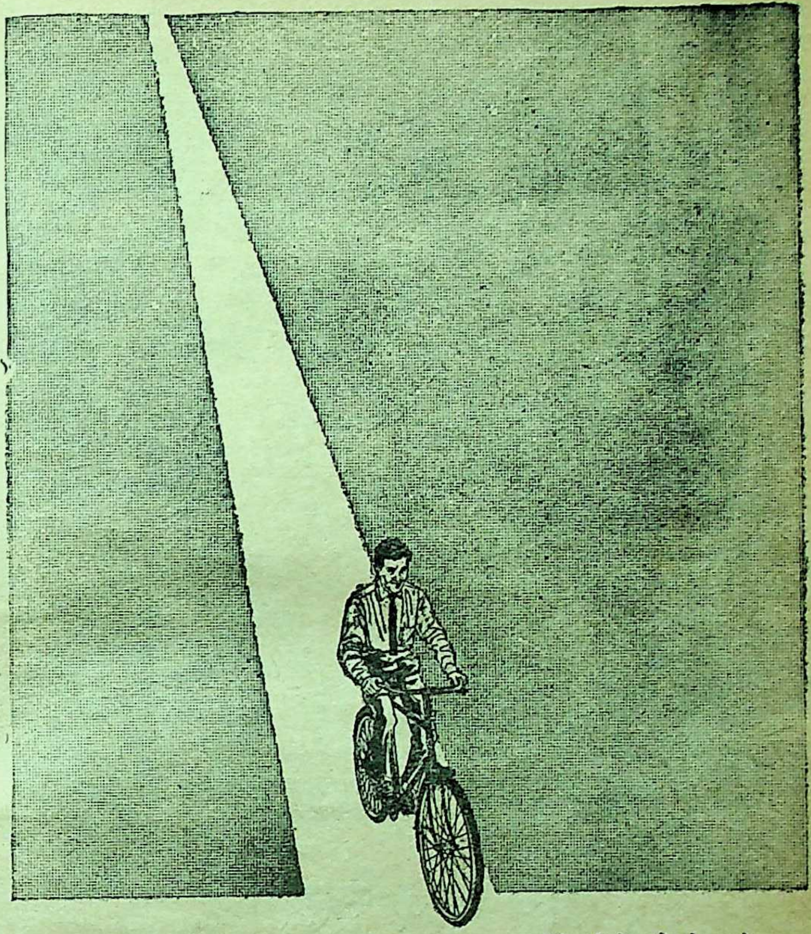

...फिर भी चलने में हमेशा की तरह आसान, क्योंकि नार्टन की उत्तम कार्यशीलता की खूबी के पीछे इसकी बनावट की किस्म है, जो साइकल चलाने वालों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ति करने वाली होती है।

मजबूत फ्रेम, फोर्क और हैण्डल बार। ●

पैडल घुमाने में सरल। ●

भरोसेवार ब्रेक। ●

Santa/hc/63-Hi

मीलों पर

मील

पार

याद रखिये, नार्टन के बनाने वाले भारत के अधिक अनुभवी साइकल-निर्माता हैं।

नार्टन

उत्तम साइकल

उत्पादक:

हिन्द साइकल्स लि., बंबई

रक्षा और

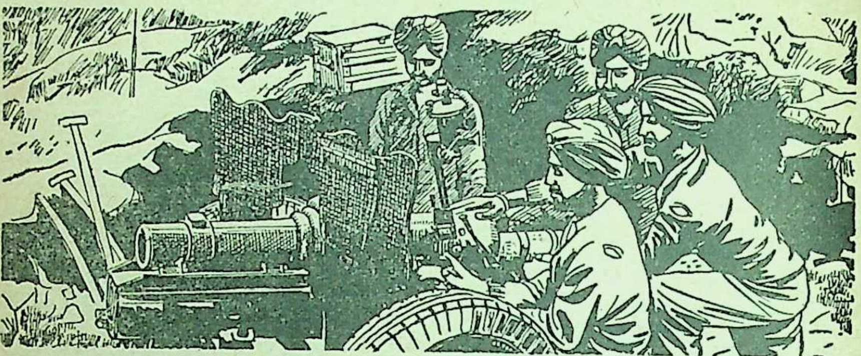

विकास का काम

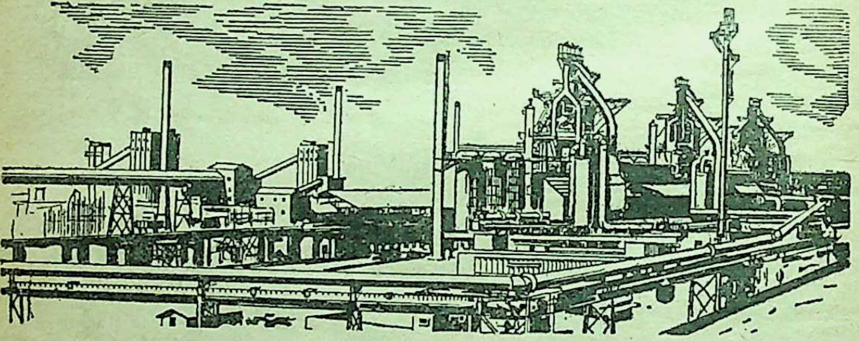

साथ साथ चलता है

देश की विकास योजनाएं हमारी रक्षा-व्यवस्था का अभिन्न अंग है। संकट का सामना करने के लिए नई प्राथमिकताएं निश्चित कीं गई हैं और बिजली योजनाओं, इस्पात, मशीन, मशीनी औजार, बिजली का साज-सामान, कोयला खनन, रेलवे जैसे बुनियादी उद्योगों, इंजीनियरी और चिकित्सा कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर तेजी से अमल करने की व्यवस्था की गई है। शक्ति की ठोस बुनियाद पर ही रक्षा की तैयारी निर्भर करती है। यही हमारी समस्या का एकमात्र हल है। इस कार्य में मन, वचन और कर्म से पूरा पूरा सहयोग दीजिए। भारत के करोड़ों नागरिकों की निरन्तर और निस्वार्थ सेवा-भावना और कठोर परिश्रम से ही देश की रक्षा-सामर्थ्य बढ़ सकती है।

योजना को
सफल
बनाइये

भारत की रक्षा-व्यवस्था को
सुदृढ़ कीजिए

डी ए-६३/३९४

हमारी
केश विन्यास की
परम्परा

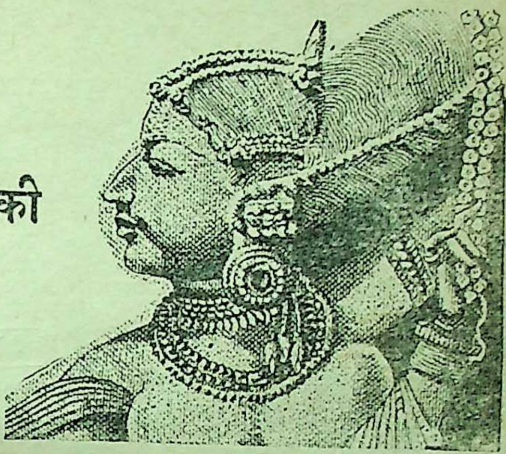

भुवनेश्वर के राजारानी मंदिर की नारी प्रतिमा को देखने से पता चलता है, कि हमारी परंपरागत केश प्रणालि का बहुत बड़ा आधार बालों के प्रचुर गुच्छों पर है।

ऑलिव आयल के सहयोग से प्रस्तुत कैलकेमिको का **कैन्थरॉल** केश की जड़ें मजबूत रखते हुए केश वृद्धि में सहायता करता है।

कैन्थरॉल

सुगन्धित कैन्थराइडिन केश तैल

दि कैलकटा केमिकल कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता-२६

naa/CC H

"मजाक करते हो क्या ?"

क्या तुम सचमुच चाहते हो कि
मैं बचत करूं ?"

हम मानते हैं कि आजकल बचत करना आसान नहीं। लेकिन ऐसे सोचिए: क्या बिना बचत के आप काम चला सकते हैं? बिना बचत के क्या आप आकस्मिक खर्च कर सकेंगे। बच्चों की पढाई, जीवन व कल्याण के लिए क्या सोचा है। और अपनी सेवानिवृति के बाद का प्रबन्ध भी तो करना है।

बचत करने का सही रास्ता यह है कि दी बैंक आफ इन्डिया लि. के एक सेविंग्ज बैंक खाते में आय का करीब १०% जमा करते जायें और बाकी आय तक ही खर्च को सीमित रखें।

"Six reasons for Saving–" नामक हमारी मुफ्त पत्रिका अवश्य मंगवायें।

दी बैंक आफ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

जनवरी **नवनीत** १९६४
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

कार्यालय
३४१ तारदेव,
बम्बई-३४
फोन : ७२८४७

प्राकृतिक छवि
चित्र: के० ई० कैवेंडिश

विषय-सूची

आंखों का अंतर … … … १७
राम बादशाह का सिक्का मकरंद दवे १८
पुस्तकें : एकांत की सखियां डा० जाकिर हुसैन २२
केनेडी का सबसे महत्वपूर्ण दिन … … … २४
डा० लाइनस पालिंग … … … २८
प्रकृति के पदचिह्नों पर मैत्रेयी दत्ता ३२
प्रकृति और वैज्ञानिक डा० सी० वी० रामन ३३
साधना-पथ … … … ३७
लुटेरी टकसालें भगीरथ ३८
कल का गरीब शेख जगत गुप्त ३९
अंतिम नैवेद्य टी० सदाशिवम् ४२
बह मेरी ही लड़की थी श्रीमती वंदना ४३
एक महाप्राण मुकुंदराय वि० पाराशर्य ४९
मौत मुंह ताकती रह गयी विष्णु प्रसाद ५२
मूर्तिकार प्रदोष दासगुप्त डा० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' ५५
काम लेना सीखिये शरद्‌कुमार मिश्र 'शरद्' ५८
नन्हा हाथी नोरा बर्क ५९
बातचीत की कला जीवनलाल टाक ६४
अभी क्या सीखना शेष है मार्गरेट मीड ६८
प्यार का दंड खलील जिब्रान ७०
टेटनस विशाख दत्त ७४
अनोखा डाकिया: एक कुत्ता पीटर फार्ब ७८
अनथाही गहराइयां (बंगला कहानी) नरेंद्रनाथ मित्र ८१
जवान को देखिये मोर्चे पर ले० जनरल थोरात ८८
ऋणी कौन करमसिंह भणारी ९२
जिंदगी का तकाजा (कश्मीरी कहानी) तेजबहादुर मान ९३
नैनीताल शिवानी ९७
विविध देश; विविध घटनाएं (पुस्तक संक्षेप) हेनरी बर्लिन १०९

मचान से [illegible] १३७
डेढ़ हजार लोगों की बलि सपनकुमार १४५
'टूर दे फ्रांस' १४६
नयी पुस्तकें १५०

★

चित्र सज्जा :

विकी, मेस्ट्रोविक, ओके, प्रदोष दासगुप्त, ग्रापर, पिकासो, मकबूल फिदा हुसैन

लेखकों से निवेदन

'नवनीत' में प्रकाशनार्थ प्राप्त रचनाओं में से उपयोग में न आनेवाली सब रचनाएं वापस नहीं की जा सकेंगी।

★

आगामी अंक में

१. **नवाबों के बाबरचीखाने :** मेवाराम गुप्त का रोचक लेख।

२. **सूअर से संग्राम :** बिसनलाल शर्मा लिखित शिकार कथा।

३. **व्हेल के पेट में पंद्रह दिन :** कीर्तिमणी नाइक का रहस्य-रोमांचभरा लेख।

४. **केन्या शेरों का देश :** एक ब्रिटिश महिला-यात्री के रोचक संस्मरण।

५. **कुर्सी :** डा० महीपसिंह की मर्मस्पर्शी कहानी।

६. **अभिशप्ता :** श्रीमती चारुलता राय चौधरी-लिखित बंगला कहानी।

७. **विविध देश : विविध घटनाएं** :हेनरी बर्लिन की पुस्तक ' ट्रैवेल्स विदाउट पासपोर्ट' से संकलित कुछ सरस यात्रा-प्रसंग।

८. **विज्ञान की दुनिया :** वैज्ञानिक उपलब्धियों का परिचायक नया स्तंभ।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८, खेतवाड़ी बैंक रोड, बम्बई-४ में मुद्रित।

वर्ष : १३
अंक : १

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

जनवरी
१९६४

ंसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

आंखों का अंतर

स्निग्ध-गंभीर स्वर से तमिल दिव्यप्रबंधों का पाठ करके हुए आचार्य रामानुज धीर-गंभीर गति से मंदिर की परिक्रमा कर रहे थे। तभी अकस्मात् एक चांडाल स्त्री उनके सम्मुख आ गयी। आचार्यश्री के पैर ठिठक गये, प्रबंधपाठ खंडित हो गया, मुंह से ये परुष शब्द फूट पड़े–"हट जा चांडालिन, मेरे मार्ग को अपवित्र न कर।" चांडाल स्त्री हटी नहीं, अपितु हाथ जोड़कर पूछ बैठी–"स्वामी, मैं किस ओर सरकूं? मेरे चारों ओर पवित्रता है... किस ओर मैं अपनी अपवित्रता ले जाऊं?" मानो कोई परदा आचार्य की आंखों के सामने से हट गया। श्रद्धावनत हो उन्होंने कहा–"मां, क्षमा करो। तुम परम पावन हो। भीतर का मैल ही हमें बाहर दिखाई देता है। जो भीतर की पवित्रता से आंखों को आंज लेता है, उसे चहुं ओर पावनता दिखाई देती है। मां, तुम्हें प्रणाम!"

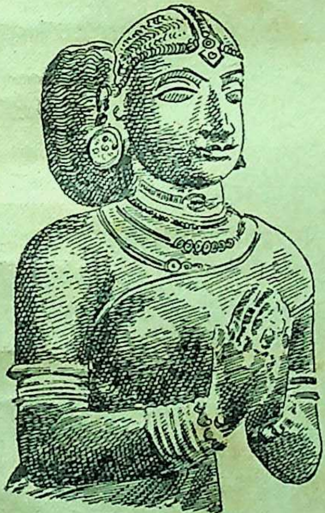

भक्तिभाव
तंजाऊर के मंदिर में
स्थित नारी-मूर्ति

राम बादशाह का सिक्का

'राम बादशाह' के दरबार में एक ऐसा अनोखा सिक्का चलता था, जिससे मानसिक शांति और आत्मिक आनंद भी खरीदा जा सकता था।

मकरंद दवे

संत फ्रांसिस की तस्वीर के सामने सिर झुकाये एनी हृदयविदारक क्रंदन कर उठी–"हे पिता, मुझे शांति दो; क्षण-भर चैन पड़े, ऐसा करो। नहीं तो मैं कहीं पागल न हो जाऊं! तुम सबके आंसू पोंछते हो, सबको हरषाते हो। अपना वरद हाथ मेरे सिर पर फेरो! मेरे अंतर की आग बुझाओ।"

एनी का रोना-कलपना देखते नहीं बनता था। अभी दस दिन पहले वह सानफ्रांसिस्को की सबसे सुखी नारी थी। अनन्य प्रेमी पति, बेहिसाब पैसा, भरपूर प्रतिष्ठा। गोद में देवशिशु-सा बालक खेल रहा था। अचानक ही जानलेवा बुखार उसके बच्चे को छीन ले गया।

एनी का संसार सूना हो गया। दुनिया उसे काटने को दौड़ने लगी। वह टूट गयी और अपने को संभालने का उसने जितना प्रयत्न किया, उतना ही वह अवसाद में फंसती गयी। अंत में निढाल होकर गिर पड़ी–असीसी के संत फ्रांसिस की तस्वीर के सामने।

तभी एनी की प्रिय सहेली आ पहुंची। यह सानफ्रांसिस्को की प्रसिद्ध अभिनेत्री थी। अपने चारों तरफ हरदम उल्लास की लहरें उछालती चलती थी; लेकिन उसका अपना हृदय अंधकूप-जैसा था जीवन में कड़वा जहर पीते हुए वह गुलाबी शरबत पीने का अभिनय कर रही थी। एनी यह सब जानती थी। वस्तुतः वही अपनी इस जन्म दुखियारी सहेली के जीवन में एकमात्र विश्रांति स्थान थी। जो स्वयं अपना जला हुआ हृदय फूलमाला के नीचे छिपाये फिरती हो, उससे एनी मलहम की आशा कैसे कर सकती थी! लेकिन आज तो सहेली की आवाज में आनंद की कंपकंपी थी, मानो अमृत की कुप्पी उसके हाथ लग गयी हो।

"एनी, एनी! तेरा दुःख गया, तेरा दर्द गया। बस, अब तेरा सारा शोक-संताप चुटकी बजाते छूमंतर हुआ समझ ले। लगता है, बाबा फ्रांसिस ने तेरी प्रार्थना सुन ली।"

सहेली के आनंद से चमकते हुए चेहरे

को एनी प्रश्नसूचक दृष्टि से देखती रही । सहेली बोली—"एक हिन्दू योगी आया है । लैजारस को जिसने कब्र में जिलाया था, ठीक उसके जैसा ही कोई कीमियागर है । चाहे तो तेरा बच्चा भी वापस ला दे ।"

एनी ने भारत और उसके चमत्कारी योगी-महात्माओं के बारे में सुना था । कुछ वर्ष पूर्व शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में सबको विस्मित कर देनेवाले विवेकानंद की विलक्षण प्रतिभा की बातें कहते उसके सगे-संबंधी थकते नहीं थे । क्या वैसा ही कोई पुरुष है यह भी ? उसकी जान-में-जान आयी । सहेली को हाथ पकड़कर पास बैठाया और एक-एक बात विस्तार से पूछी ।

पता चला कि योगी का नाम स्वामी रामतीर्थ हैं । उसकी चाल में राजाधिराज का-सा दर्प है; मुंह पर मां का दूध पीते हुए बच्चे की मुग्ध मुस्कान है । शास्टा झरने के पास डाक्टर हिलर के अरण्य-कुटीर में वह ठहरा हुआ है । एक विशाल वृक्ष से हिंडोला बांधकर उस पर झूलता रहता है । हवा के साथ होड़ बांधकर दौड़ता है । बादलों पर हुक्म चलाता है । पंछियों की प्रार्थना में अपने सुर मिलाता है । वर्णन सुनते-सुनते एनी उससे मिलने के लिए आतुर हो उठी ।

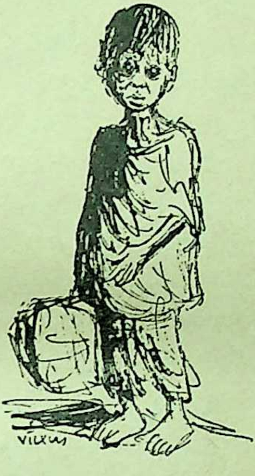

अनाथ बालक
सुप्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार
विकी का चित्र

सांझ को दोनों सहेलियां अरण्य-कुटीर पर पहुंचीं । योगी कुटिया में ही था । मानो आत्मानंद शरीर धारण कर संसार की सैर करने निकला हो । उसकी हर हरकत से अलमस्ती चू पड़ती थी । आंखों में नटखट बालक का भाव था । उसे देखकर हर नारी में मातृत्व उमड़ पड़ता था । एनी उस अपूर्व आनंदमूर्ति को एकटक देखती रही ।

सहेली ने योगी को एनी का परिचय दिया; उसे लगे गहरे आघात का वर्णन किया । एनी बीच में ही चीख उठी—"प्रभु, मुझे शांति दो । मुझे कहीं चैन नहीं पड़ता । मैं कहां जाऊं ? क्या करूं ?"

आंखों से करुणा-वृष्टि करते हुए स्वामी रामतीर्थ ने इस जीवन-हारी मां से कहा—"मां, शांति का तो मेरे पास भंडार भरा है । शांति बेचना ही मेरा धंधा है । लेकिन उसके लिए तुझे कुछ कीमत देनी पड़ेगी ।"

"तू शांति मांगती है एनी ! स्वामीजी चाहें, तो तेरा बच्चा भी वापस दिला सकते हैं ।" अभिनेत्री ने नयी दिशा सुझायी ।

यह सुनना था कि स्वामीजी खिलखिलाकर हंस पड़े । फिर एनी की ओर सिर झुकाकर बोले—"हां माता, तेरा बच्चा भी वापस ला दूंगा । इसमें कौन-सी बड़ी बात

है ! चिंता न कर ।”

भगवान ईसा जैसे समर्थ पुरुष के अलावा कौन ऐसी असंभव बात इतनी सहजता से कह सकता था ! एनी को लगा कि वह जो अब तक दुःख के भार से दबी हुई थी, आनंद से बावली हो जायेगी । आवेश में वह बोल उठी–“मेरा लाल मुझे दिलादीजिये स्वामीजी ! उसकी चाहे जितनी कीमत चुकानी पड़े, मैं पीछे नहीं हटूंगी । चाहे जो मांग लीजिये ।”

“लेकिन तेरा सोना-चांदी, तेरे हीरे–यहां काम नहीं देंगे । तुझे तो हमारी दुनिया का सिक्का देना पड़ेगा । अगर राम बादशाह का सिक्का तेरे पास है, तो तेरा सुख, तेरा बच्चा समझ ले तेरे हाथ में ही है ।”

एनी सोच में पड़ गयी । यह राम बादशाह का सिक्का क्या है ? सीजर का सिक्का सीजर को और ईश्वर का सिक्का ईश्वर को दो–ऐसा ईसा ने कहा था । यह स्वामी क्या कहना चाहता है ? वह बोली–“मेरा लाल मुझे दे दीजिये स्वामीजी । आप जो कीमत कहें, मैं चुकाने को तैयार हूं ।” “तो चल माता, तेरे बच्चे का हाथ तेरे हाथ में दे दूं ।”

एनी और अभिनेत्री विस्मयविमुग्ध हो स्वामीजी के पीछे चल पड़ीं । स्वामीजी उन्हें एक अत्यंत निर्धन बस्ती में ले गये और एक अनाथ हब्शी बालक का हाथ पकड़कर बोले–“यह रहा तुम्हारा बच्चा । माता, इसे गोद ले ले, हृदय से जुड़ा ले । इससे तू जितना लाड़ लड़ायेगी, तेरे सुख का दरिया उतना ही उमड़-उमड़ कर बहेगा ।”

स्वामीजी के शब्दों में विश्व के समस्त उपेक्षितों, मातृहीनों और भूखों को अपने आलिंगन में समेट लेनेवाला स्नेह बरस रहा था । उनके मुख पर ईश्वरीय आभा खेल रही थी ।

पराये दुःख-दर्द को अपनाकर उसमें अपना खोया आनंद-धन पा लेने का गुरुमंत्र एनी के हाथ लग गया । उसका गोरेपन का गर्व गल गया । उच्चता के अभिमान की ऊंची मीनार ढह गयी । उस धूलि-धूसरित हब्शी बालक को उसने अपनी कोख से जन्मे बच्चे की तरह छाती से चिपका लिया । उसका श्मशान-सदृश घर फिर निश्चल हास्य की किलकारियों से गूंज उठा ।

और राम बादशाह कुहक भरकर पंछियों को चहकने का निमंत्रण देते हुए वापस लौट गये, अपने अरण्य-साम्राज्य में । [‘वैष्णवजन’ से साभार]

*

जिस बूंद को सीप में बंद रहकर मोती बनना है, कहीं वह अंगारे पर गिरकर अशेष न हो जाये । ......क्या प्रायः जीवन में यही विडंबना नहीं होती है ?

× × ×

अपने कष्टों और दुःखों के लिए मैं ईश्वर का आभारी हूं; क्योंकि उन्हीं के द्वारा मैं ईश्वर को और अपने आपको समझ पाया हूं ।

–अंबरीष

*

पुस्तकें : एकांत की सखियां

पुस्तकों की उपयोगिता और आवश्यकता पर उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रेरक विचार ।

डा० जाकिर हुसैन

"आज का असली विश्वविद्यालय है पुस्तकें"—यह बात बिलकुल ठीक कही गयी है । पुस्तकें हमें "जीवन के नये रूप दिखाती हैं, जीने का ढंग सिखाती हैं । दुखियों को वे तसल्ली देती हैं, जिद्दियों को दंड देकर राह पर लाती हैं । मूर्खों की वे लानत-मलामत करती हैं, अक्लमंदों को ताकत देती हैं ।" एकांत में वे हमें सहारा देती हैं, संसार और मनुष्य की क्षण-भंगुरता को भुलाने में हमारी मदद करती हैं, हमारी निराशाओं को थपकियां देकर सुलाती हैं ।

पुस्तकें आत्मा को विचारों का भोजन देती हैं, चिंतन के चश्मों का पानी पिलाकर उसकी प्यास बुझाती हैं । जैसा कि महान यहूदी विद्वान जुडाह इलेन तिब्बन ने कहा है—"पुस्तकों से भरी अलमारियां तुम्हारे बगीचे हैं, आरामगाह हैं । वहां लगे फल तोड़ो, वहां खिले गुलाब चुनो, वहां से पराग और लोबान बटोरो ।"

सभी युगों में, सभी पीढ़ियों के बड़े आदमियों ने यही पाया है कि पुस्तकें "विवेक, सदाचार, आनंद और लाभ देती हैं ।" लेकिन आधुनिक समाज में तो वे एकदम अनिवार्य हो चली हैं । यह कैसा व्यंग्य है कि उद्योग-धंधों के बढ़ने के साथ ज्यों-ज्यों लोग बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी तादाद में जमा होते जाते हैं, अपने को ज्यादा-ज्यादा अकेला महसूस करने लगते हैं । समाज उनके लिए जाने-पहचाने लोगों का समुदाय न रहकर अपनत्वहीन भीड़ बन जाता है । ऐसे में, पुस्तक लगभग दोस्त की जगह ले लेती है ।

आज की औद्योगिक सभ्यता और वैज्ञानिक प्रगति का एक लक्षण यह है कि वह निरंतर व्यक्ति-निरपेक्ष होती जा रही है । पुराने जमाने के उद्योगतंत्र में, जैसे कि कारीगरी में, यह सीखना पड़ता था कि उस्ताद

किस ढंग से काम करता है, और इसके लिए शागिर्द बनना जरूरी था । तब लगभग सारा ज्ञान फिलसफे या धर्म से संबंधित था और यह ज्ञान केंद्रित था व्यक्तियों में । यही बात मनोरंजन की थी ।

अब वैज्ञानिक दृष्टि के विकास से हालत बहुत बदल गयी हैं । आज का उद्योगतंत्र कोई प्रक्रिया "कैसे" की जाती है, इसके बजाय "क्यों" की जाती हैं, इस पर निर्भर है । आप क्या कर सकते हैं—यह नहीं, बल्कि क्या जानते हैं—यह आज के उद्योगतंत्र का आधार हैं । समूचे विज्ञान में यही बात है । कारण यह है कि यह सारा ज्ञान व्यक्ति-निरपेक्ष है, वस्तुनिष्ठ हैं, पुस्तकों में दर्ज है ।

पुस्तक तो आज मानो मनुष्य की जीवन-सहचरी है । और बड़ी गजब की सहचरी है यह—बड़ी ही शिष्ट है; जब और जिस भी 'मूड' में बुलायें, आ जाती है; सब कुछ साफ-साफ कह देती हैं, लेकिन बड़ी शिष्टता से । हम बातचीत छेड़ें, तभी वह बोलती हैं, अनंतकाल तक हमारे निमंत्रण की प्रतीक्षा करती रह सकती हैं, हमेशा मदद करने और अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार रहती है ।

पुस्तक सिखावन देती हैं, सलाह देती हैं, बढ़ावा देती हैं, झिड़की सुनाती हैं; लेकिन जितने की आपको आवश्यकता है, उतना ही और उससे एक अक्षर भी ज्यादा नहीं । कभी-कभी हम जो अटपटे व मूर्खता-भरे सवाल पूछ बैठते हैं, उनसे वह खफा नहीं होती । वह मुस्करा-भर देती है और चुप्पी साध लेती है । जो लोग एकाकी हैं, उनके लिए पुस्तक सचमुच बड़ी बेजोड़ साथिन है । जो सीखना-सिखाना चाहते हैं, उनके लिए वह बेजोड़ गुरु है और आनंद का बेजोड़ साधन है ।

जो लोग एकाकी हैं, उनसे मैं ज्यादा कुछ न कहूंगा । अच्छा यह है कि वे एक बार पुस्तक को आजमाकर देख लें । अगर आप उस लगातार बढ़ती जानेवाली तन्हाई में कैद हैं, जिसमें आदमी शोर-शराबे से भरी भीड़ में अकेलापन महसूस करता है, अगर आप फिक्र-परेशानियों के जंगल में अकेले खो गये हैं, तो यह साथिन आपको वह एकांत दे सकती है, जिसके लिए आप तरस रहे हैं और जिसमें आप अपनी तमाम फिक्र-परेशानियों के बावजूद तन्मय हो सकते हैं ।

और जो लोग कुछ सीखना-सिखाना चाहते हों, उन्हें तो पुस्तकों के साथ जिंदगी-भर का रिश्ता जोड़ लेना चाहिये । सीखने का भी कोई अंत है ? हमेशा कुछ-न-कुछ सीखने के लिए बचा ही रहेगा । इस प्रसंग में, आइये, टी० एच० व्हाइट का यह छोटा-सा उद्धरण साथ-साथ पढ़ें :

"शायद आप बूढ़े हो गये हैं और शरीर की कमजोरियों ने आपको धर दबोचा है । शायद आप सारी रात बिस्तर पर पड़े-पड़े अपनी आंतों की गड़बड़ सुनते रहते हैं । शायद आप अपने एकमात्र प्रियजन से बिछुड़ गये हैं । शायद आप अपनी दुनिया को दुष्टों और पागलों के हाथों उजड़ते हुए देख रहे हैं, अपनी इज्जत को कमीने दिलों की गंदी नालियों में रौंदे जाते देख रहे हैं ।

......ऐसे में आपके लिए एक ही चीज है–सीखना, इल्म हासिल करना । देखिये तो, सीखने के लिए कितना कुछ पड़ा है ! शुद्ध विज्ञान है, जो शायद दुनिया में एकमात्र शुद्ध चीज है । एक जिंदगी में आप खगोल सीख सकते हैं, तीन जिंदगियों में पदार्थ-पाठ और छः जिंदगियों में साहित्य । और जब आप जीवशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, धर्मशास्त्र, भूगोल, इतिहास और अर्थशास्त्र के अध्ययन में लाखों जिंदगियां खपा चुकें, तो उसके बाद अच्छी-सी लकड़ी चुनकर बैलगाड़ी का पहिया घड़ने बैठ जाइये । अथवा चाहें, तो अगले पचास साल आप यह सीखने की कोशिश में खपा सकते हैं कि तलवारबाजी में दुश्मन को कैसे मात दी जा सकती है । इसके बाद आप फिर गणित सीखना शुरू कर सकते हैं और सीखते रह सकते हैं, जब तक हल चलाना सीखने का वक्त न आ जाये ।''

हां, सीखने का कोई अंत नहीं है । और सीखने के लिए आदमी को पुस्तकों के पास ही जाना पड़ेगा । लेकिन हम सिर्फ सीखने के लिए पुस्तकों की सोहबत नहीं ढूंढ़ते । आनंद के लिए भी हम उनके पास जा सकते हैं । जान-बूझकर ही मैंने ''आनंद'' कहा है, न कि ''दिल बहलाव''; क्योंकि ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं । कुछ लोग दिलबहलाव के लिए भी पढ़ते हैं । ये लोग पढ़ते हैं ऐसे किस्से व अफसाने, जो आज हैं और कल नहीं, जो आज नये हैं और कल बासी पड़ जाते हैं ।

साहित्य आनंद देता है, दिलबहलाव नहीं करता । साहित्य दर्दनाक हो सकता है, फिर भी उसमें आनंद है –ऐसा आनंद, जिसे समझाना मुश्किल है । और साहित्य यह आनंद पहुंचाता है अपने सत्य और सौंदर्य के द्वारा, जो कि कवि कीट्स की बात मानें तो एक ही चीज है–'' सौंदर्य ही सत्य है, और सत्य ही सौंदर्य ।''

लेकिन जैसे आनंद दिलबहलाव नहीं है, वैसे ही सौंदर्य भी मोहकता नहीं है । संसार के श्रेष्ठ साहित्य के अधिकांश पात्र और प्रसंग मोहक नहीं हैं; लेकिन उनमें सौंदर्य है । उनमें सत्य का सौंदर्य है, साहसपूर्वक जीवन का सामना करने का सौंदर्य है ।

★

एक कुष्ठी नगर के एक चौराहे पर बैठा हाथ पसारे भिक्षा मांग रहा था । एक नवयुवक ने दो पैसे देकर उससे पूछा–''बंधु , तुम्हारा संपूर्ण शरीर विगलित हो गया है और तुम अपने इंद्रियार्थों का ठीक से उपयोग करने में भी समर्थ नहीं हो, फिर क्यों इस कष्टकर जीवन की विडंबना सहे जा रहे हो ?''

कुष्ठी ने उत्तर दिया–''मित्र नहीं जानता । यह प्रश्न तो कभी-कभी मेरे मन को भी सताया करता है । फिर भी शायद मैं इसलिए जी रहा हूं कि मुझे देखकर मनुष्य यह जान सके कि मूर्ख, तू भी कभी मेरा जैसा हो सकता है । अतः संसार में इस सुंदर देह का अहम् केवल एक प्रवंचना है ।''

–आचार्य जगदीशचंद्र मिश्र

★

प्रेसिडेंट केनेडी की निर्मम हत्या ने एकबारगी समूची मानवता को हिला दिया और कुछ सोचने को विनश कर दिया ।

केनेडी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन

गत अक्टूबर ६२ में संसार के इतिहास में पहली बार प्रेसिडेंट केनेडी ने ख्रुश्चेव को सीधी चुनौती दी थी । इससे पूर्व अमरीकी सरकार का गुप्तचर विभाग वस्तुस्थिति का पता लगाने के लिए वायुयानों से चित्र लेने तथा उनका सूक्ष्म परीक्षण करने में बड़ी तत्परता एवं सतर्कता से लगा हुआ था । यह समय-समय पर राष्ट्रपति केनेडी को इस विषय में सूचना देता रहता था; लेकिन केनेडी ने बड़ी शांति और गंभीरता के साथ उस समय तक किसी प्रकार की कोई उग्रता प्रदर्शित नहीं की, जब तक कि उन्हें हर प्रकार से यह विश्वास नहीं हो गया कि क्यूबा में रूसी मिसाइलों का जमाव सुरक्षात्मक भावना से नहीं; अपितु आक्रामक योजना को लेकर हो रहा है ।

१७ और १८ अक्टूबर को कार्यकारिणी की मीटिंग में जो बहस हुई, उसमें प्रेसिडेंट केनेडी के भाई एटार्नी जनरल राबर्ट केनेडी ने सुझाव दिया था कि क्यूबा पर अचानक हवाई हमला किया जाये । लेकिन प्रेसिडेंट केनेडी ने बड़ी ही शांति और संयम से यह उत्तर दिया—"मेरा भाई दूसरा जनरल तोजो नहीं बनेगा ।" [स्मरण रहे कि जनरल तोजो ने दिसंबर १९४१ में पर्ल हार्बर पर अचानक जापानी हमले की आज्ञा दे दी थी ।]

ऐसे महान राष्ट्रीय संकट के क्षणों में केनेडी ने अपनी अपरिमित गंभीरता और शांति से संसार के गंभीरतम प्रश्न पर संतुलित दृष्टिकोण से विचार किया । आगामी एक सप्ताह तक अमरीका के जीवन में जो अपूर्व व्यस्तता संयुक्त हो गयी थी, उसका अंकन इस प्रकार किया जा सकता है ।

१८ अक्टूबर, बृहस्पतिवार

सवेरे प्रेसिडेंट केनेडी सोवियत विदेश मंत्री श्री ग्रोमिको से मिले । इस भेंट में क्यूबा की बात प्रासंगिक रूप से ही आयी । तभी केनेडी १३ सितंबर के अपने भाषण की एक प्रतिलिपि उठा लाये और उन्होंने विदेशमंत्री के सम्मुख उसे पढ़कर सुना दिया । सार इस प्रकार था कि यदि रूस ने कभी क्यूबा में आक्रमण नीति अपनायी, तो संयुक्त राज्य अमरीका ऐसी दशा में कुछ भी कर सकने के लिए तैयार रहेगा । रूसी विदेश मंत्री ने तत्काल कहा—" रूस क्यूबा में कभी भी आक्रमण नीति नहीं अपनायेगा ।"

इस बात पर केनेडी बड़ी कठिनाई से अपना आवेग रोक सके ।

१९ अक्टूबर, शुक्रवार

यद्यपि शांति और संतुलन बनाये रखने के लिए पूर्ण सावधानी बरती गयी थी, फिर भी किसी बड़ी घटना की संभावना का समाचार देश-भर में फैलने लगा । जलयानों के एक बेड़े में स्थानांतर से प्रेसवालों का ध्यान आर्कषित हो चुका था । इधर जल-सेना के प्रमुख अधिकारियों को वाशिंगटन में ही ठहरने की आज्ञा दी गयी थी, क्योंकि उनसे युद्ध-विषयक जानकारी और सलाह प्राप्त करनी थी । लोगों की व्यग्रता कम करने के विचार से केनेडी उस दिन ओहियो तथा इलिनियोस गये । वहां उन्होंने कई सार्वजनिक भाषण दिये; किंतु फिर भी व्यग्रात्मक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ ।

२० अक्टूबर, शनिवार

अगले दिन इस बात का निश्चय किया गया कि रूसी अधिकारियों से यह स्पष्ट रूप से कह दिया जायेगा कि वे तुरंत क्यूबा से अपने मिसाइल तथा अन्य विस्फोटक एवं आक्रामक सामान उठा लें । लेकिन रूसी सरकार तक यह संदेश भिजवाने के लिए २४ घंटे की प्रतीक्षा करने का भी निश्चय किया गया ।

अब इस निश्चय के पश्चात् प्रेसिडेंट केनेडी को अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाषण देना था । आज प्रातःकाल ही अमरीका के द्वितीय जहाजी बेड़े का भार एडमिरल एल्फर्ड वार्ड ने संभाल लिया था । जहाजों में घातक एवं शीघ्र आक्रामक अस्त्र भरे हुए थे । लड़ाकू हवाई जहाजों की भी तैयारियां हो चुकी थीं । जहाजों की स्थिति और आक्रमण की योजना पूर्ण होकर स्वीकृत हो चुकी थी । दूसरे जल-सेना के बड़े अधिकारियों ने भी अपने-अपने क्षेत्र संभाल लिये थे । सारा कार्य बड़ी सावधानी एवं तत्परता से हो रहा था ।

२१ अक्टूबर, रविवार

दोपहर तक फ्लोरिडा को वायुसेना द्वारा पूर्णतः आरक्षित करने का आयोजन कार्यान्वित हो चुका था । ये वायुयान बड़ी सतर्कता से चारों ओर गश्त लगा रहे थे । इधर, रात्रि से पहले ही जल-सेना की तैयारियां भी पूरी हो चुकी थीं ।

२२ अक्टूबर, सोमवार

संपूर्ण अमरीका उस दिन व्यग्र और

पूर्णत: सन्नद्ध था। राष्ट्रपति को उस दिन अपने देशवासियों, संसार तथा शत्रु से एक ऐसी बात कहनी थी, जो इस संकटपूर्ण स्थिति में कहनी आवश्यक हो गयी थी। उन्होंने बड़े ही विश्वास के साथ एक शक्ति-संपन्न और साहसी व्यक्ति की भांति गुरु-गंभीर वाणी में कहा–

"हमारी नीति शांति और सद्भावना की नीति रही हैं तथा एक शांतिप्रिय तथा शक्ति-संपन्न राष्ट्र के लिए इस प्रकार की नीति को अपनाना स्वाभाविक भी हैं, क्योंकि वह समस्त संसार में परस्पर मैत्री और सहकारिता का इच्छुक है। किंतु अब इस बात की भी आवश्यकता प्रतीत होती है कि हम इस नीति से कुछ और आगे बढ़ें। हम यों ही आणविक युद्ध का आरंभ करके संसार को प्राप्त सुफलों को नष्ट करने में विश्वास नहीं करते हैं; किंतु साथ ही हम किसी भी भय या आशंका से भयभीत होकर अपने कर्तव्य से भी विमुख नहीं होंगे। रूसी धमकी का– जो हमें पिछले सप्ताह दी गयी है, हम डटकर मुकाबिला करेंगे। हमारे साथ या हमसे संबंधित किसी भी मित्र-राष्ट्र के साथ कहीं भी और कभी भी कोई अनुचित व्यवहार किया जाता हैं, तो हम पूरी शक्ति के साथ बदले में वही व्यवहार करेंगे, जो इस संकट काल में हमसे अपेक्षित हैं।"

जब मास्को में राष्ट्रपति केनेडी का यह ओजपूर्ण भाषण सुना गया, उस समय सुबह के २ बजकर १८ मिनिट हो रहे थे। साथ ही क्रेमलिन के गुप्तचरों ने केनेडी के भाषणों में यह और जोड़ दिया कि उन्होंने सैनिकों को किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए आदेश दे दिया हैं तथा अमरीका की सेना युद्ध के लिए एकदम तत्पर हैं।

२३ अक्टूबर, मंगलवार

आज संयुक्त राष्ट्र-संघ की सुरक्षा-परिषद की एक अत्यावश्यक बैठक हुई। इसमें अमरीका के राजदूत श्री अदलाई स्टीवेंसन ने द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् से कार्यान्वित रूस की गतिविधियों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए, उसकी विस्तारवादी एवं आक्रामक नीति की कटु आलोचना की। उन्होंने बताया कि कहां-कहां और किस प्रकार साम्यवादी सरकार ने संधि-वचनों का उल्लंघन किया तथा सैनिक शक्ति का खुलकर प्रयोग किया। जब स्टीवेंसन रूसी सरकार के अतिक्रमण का विश्लेषण कर रहे थे, वहां उपस्थित रूसी राजदूत जोरिन के मुख पर हवाइयां उड़ रही थीं और वे चाह कर भी किसी प्रकार का प्रतिकार करने का साहस न कर सके।

२४ अक्टूबर, बुधवार

अब ख्रुश्चेव के लिए यह मानना आवश्यक हो गया था कि उनकी थोड़ी-सी असावधानी से ही विश्व-युद्ध की घातक संभावना हो सकती है। क्योंकि अमरीका अब अपनी बात पर अड़ गया लगता था। और ख्रुश्चेव के लिए एक ही रास्ता शेष था कि वह किसी बहाने क्यूबा से अपना सैनिक अड्डा और मिसाइलें हटा लें। लेकिन सीधे-

सीधे अपनी गलती मानना उनके लिए संभव न था।

इधर अमरीका ने इस बात की संभावना की थी कि इस दिन सायं ७-३० के लगभग अमरीकी और रूसी जल-सेना की पहली भिड़ंत होगी। इसीलिए अमरीकी जल-सेना युद्ध के लिए तैयार बैठी थी।

२५ अक्टूबर, बृहस्पतिवार

इस दिन बड़े सवेरे इस बात का निश्चय हो गया कि १२ रूसी जलयान जिनमें संभवतः घातक अस्त्र थे, क्यूबा की ओर मुड़े हैं। इधर अमरीका भी हर प्रकार से सन्नद्ध था। शुक्रवार (२६ अक्टूबर) के दिन ऐसा लगता था कि अब रूसी मिसाइलों पर अमरीका की ओर से बम-वर्षा होने ही वाली हैं। लेकिन इसी दिन ख्रुश्चेव ने केनेडी के पास एक लंबा तार भेजा, जिसमें दोनों शक्तियों के परस्पर भिड़ जाने से महान अनिष्ट की आशंका व्यक्त की गयी थी।

२७ अक्टूबर, शनिवार

दूसरे दिन 'तास' से जो समाचार प्रसारित किया गया, उसने अमरीका को फिर दुश्चिंता में डाल दिया। इस समाचार में कहा गया था कि रूस क्यूबा से अपने 'मिसाइल' तभी हटायेगा, जब अमरीका 'नाटो मिसाइल' टर्की से हटा लेगा। लेकिन केनेडी ने क्यूबा के साथ टर्की के प्रश्न को जोड़ने और रूस की इस शर्त को मानने से साफ इन्कार कर दिया। इसके उत्तर में प्रेसिडेंट केनेडी ने ख्रुश्चेव को जो खुला पत्र लिखा, उससे यह स्पष्ट हो गया कि अमरीका अब किसी प्रकार से झुकने को तैयार नहीं।

२७ अक्टूबर, शनिवार का यह दिन क्यूबा-संघर्ष का सबसे काला दिन था। ऐसा लगता था कि रूसी-नीति भी प्रतिक्षण कड़ी पड़ती जा रही है। १० बजे सुबह क्यूबा से वापस उड़ते हुए मेजर रुडोल्फ एंडरसन को गोली से उड़ा दिया गया और यह आशंका की जाती थी कि यह काम रूसी हवाई सैनिकों का ही है।

दोपहर के समय सबसे कठिन क्षण तब आया, जब यह अनुभव होने लगा कि शायद अमरीका ही युद्ध कर दे; किंतु किसी प्रकार से यह दिन टल गया। और तब रविवार का भाग्यशाली दिन आया। ख्रुश्चेव ने रेडियो पर, क्यूबा में स्थित मिसाइल अड्डों पर होनेवाले काम को रोक देने की घोषणा की। उन्होंने यह भी कहा कि ये अड्डे केवल सुरक्षात्मक दृष्टिकोण को लेकर ही किये गये थे; किंतु यदि प्रेसिडेंट केनेडी इसे आक्रामक मानते हैं, तो हम इन्हें वापस ले लेंगे।

अमरीका ने बड़ी दृढ़तापूर्वक अपनी इच्छा एवं शक्ति प्रकट की थी; किंतु शत्रु ने चुनौती का प्रत्युत्तर देने से इन्कार कर दिया। इस तरह विश्व की एक प्रलयंकारी सर्वनाश से रक्षा हो गयी।

ऐसे विश्वत्राता की हत्या इस घटना के लगभग एक वर्ष बाद एक ऐसे हत्यारे ने की, जिसका संबंध क्यूबा और कम्युनिस्ट दल से था। विश्व के इतिहास पर इसका जो प्रभाव पड़ेगा, वह अभी भविष्य के गर्भ में है।

*

मनीषा के धनी डा॰ लाइनस पालिंग

विज्ञान और साहस की एक ऐसी जीवंत मूर्ति का परिचय, जिसने मानव-जाति को अणुशस्त्र के खतरे से बचाने के लिए स्वयं अपने देश की सरकार को अदालत में चुनौती देने में संकोच न किया।

वाशिंग्टन में ह्वाइट हाउस के फाटक पर प्रदर्शनकारियों की भीड़ झंडों और प्लैकार्डों से लैस होकर खड़ी थी और नारे लगा रही थी—विश्वशांति की रक्षा करो... अणुशस्त्रों पर प्रतिबंध लगाओ...... मानवता को त्राण दो...... आधे घंटे की नारेबाजी के बाद प्रसन्न मुखमंडल और सफेद बालोंवाले एक सज्जन इस जत्थे की अग्रपंक्ति में से आगे आये। कोट की जेब में से एक निमंत्रण-पत्र निकालकर उन्होंने संतरियों को दिखाया। संतरियों ने अदब के साथ सलामी दी और उन्हें फाटक के भीतर प्रविष्ट होने दिया। ह्वाइट हाउस के सत्कार-कक्ष में पदार्पण करते ही उनका पुनः अभिवादन किया गया। और इस बार अभिवादन करनेवाले थे राष्ट्रपति केनेडी और उनकी पत्नी जैकलीन केनेडी, जो उस दिन अमरीका के समस्त नोबेल-पुरस्कार विजेताओं को दावत दे रहे थे।

जिनका हमने अभी जिक्र किया, वे सज्जन हैं, डाक्टर लाइनस पालिंग, जिन्हें १९५४ में रसायनशास्त्र का नोबेल पुरस्कार दिया गया था और अभी हाल में सन १९६२ का नोबेल विश्वशांति पुरस्कार दिया गया है। दो पूरे नोबेल पुरस्कार पानेवाले प्रथम व्यक्ति हैं वे। वैसे इसके पूर्व मदाम क्यूरी को भी दो बार नोबेल पुरस्कार मिला था—१९०३ में भौतिकी का, १९११ में रसायनशास्त्र का। किंतु १९०३ के पुरस्कार में मदाम क्यूरी और उनके पति प्येर क्यूरी को आंरी बेकरेल के साथ हिस्सा बंटाना पड़ा था।

पालिंग अमरीकी विज्ञान-दिगंत के सबसे प्रखर सितारों में से हैं। केवल अठारह वर्ष की उम्र में उन्होंने ओरेगान स्टेट कालेज की प्रयोगशाला में जैविक व्यूहाणुओं की रचना के संबंध में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयोग आरंभ किये। तीस वर्ष की अवस्था में उन्हें अमेरिकन केमिकल सोसायटी ने एक हजार डालर का वार्षिक पुरस्कार दिया (बाद में वे सोसायटी के अध्यक्ष बने)। यह पुरस्कार उन युवकों को दिया जाता है, जो विज्ञान-क्षेत्र में अत्यंत उज्वल कार्य की आशा दिलाते हैं। १९४१ में एक बड़े वैज्ञानिक ने लिखा था "जैविक व्यूहाणुओं की ज्यामितिक रचना के संबंध में

णुशस्त्र
ते में

या है।
प्रथम
क्यूरी
ा था-
ं रसा-
कार में
क्यूरी
बंटाना

ंत के
ठ अठा-
न स्टेट
व्यूहा-
महत्व-
वर्ष की
सोसा-
क पुर-
अध्यक्ष
ी दिया
उज्वल
में एक
क व्यूहा-
बंध में

जनवरी

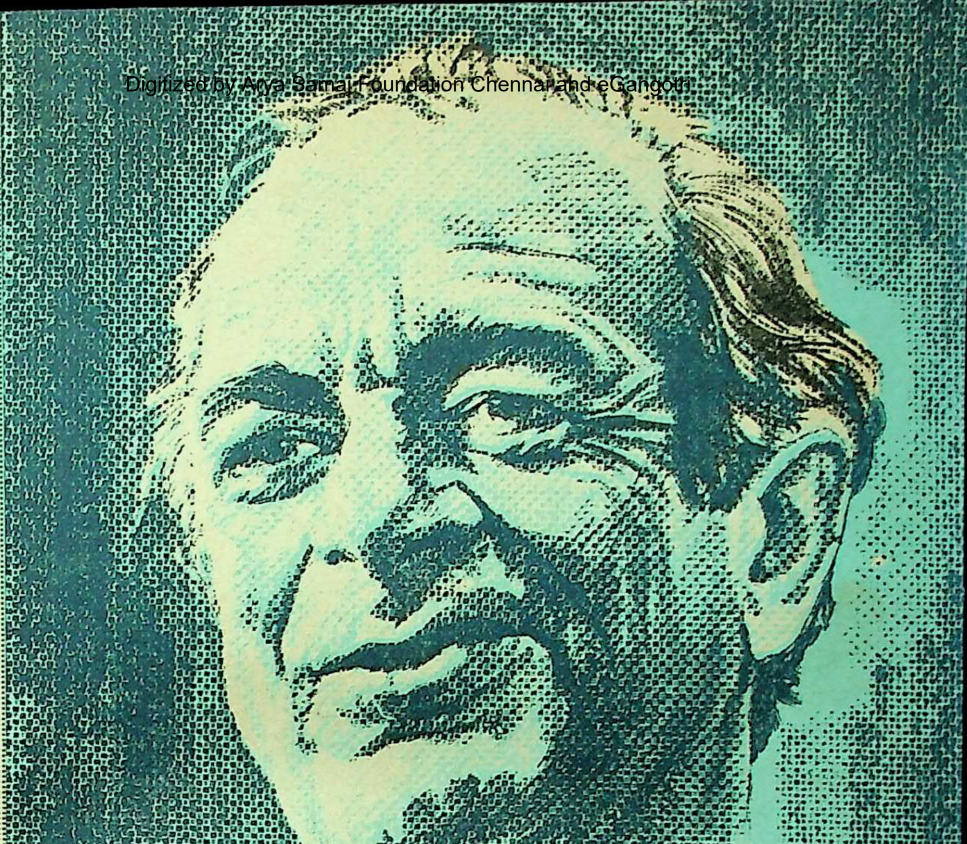

आज वैज्ञानिकों को जो भी सुनिश्चित ज्ञान उपलब्ध है, उसके लिए डा० पालिंग द्वारा आरंभ किये गये प्रयोग जिम्मेदार हैं। इसी तरह रासायनिक योजक और अनुनाद विषयक उनके शोधलेखों ने घटनात्मक जैविक रसायन की भाषा ही बदल दी है।"

मनुष्य की रोगप्रतिरोध-क्षमता का अध्ययन करते हुए डाक्टर पालिंग ने विज्ञान के इतिहास में पहली बार प्रयोगशाला में 'एंटीबाडी' का निर्माण करके दिखाया। (रक्त में स्थित 'एंटीबाडी' ही रोगकीटाणुओं से जूझकर शरीर को रोग से बचाते हैं।) इसके अलावा उन्होंने क्वांटम, तरंग, वर्णफलक और शून्य आदि अनेक क्षेत्रों में मौलिक खोजें की हैं।

संत्रस्त मानवता

ओरेगान विश्वविद्यालय से विज्ञान के स्नातक होकर तेईस वर्ष की अवस्था में लाइनस कार्ल पालिंग कैलिफोर्निया इंस्टिटचूट आफ टेक्नालाजी में शोधछात्र और बाद में अध्यापक नियुक्त हुए। वहीं से उन्होंने पी० एच–डी० पास की। उसके बाद म्यूनिख, ज्यूरिच और कोपनहेगन में सामरफील्ड, श्रोडिंजर और नील्स बोर जैसे महान आचार्यों के चरणों में बैठकर विज्ञान की ऊंची शिक्षा ली।

ओरेगान विश्वविद्यालय एवं कैलिफोर्निया इंस्टिटचूट के अतिरिक्त वे मैसाचुसेटस इंस्टिटचूट आफ टेक्नालाजी और प्रिस्टन, कार्नेल तथा शिकागो के विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक रह चुके हैं। विदेशों में भी अनेक प्रमुख विद्याकेंद्रों में उन्होंने अध्यापन और प्रवचन किया है। जिन बीसों विदेशी विज्ञान-संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है, उनमें बंगलोर की इंडियन एकैडमी आफ सायंसेस भी है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान में उन्होंने अमरीकी सरकार की वैज्ञानिक सुरक्षा समिति की अधीनता में विस्फोटकों और राकेटों के संबंध में खोज-कार्य किया। १९४६ में अणु-वैज्ञानिकों की संकटकालीन समिति के ट्रस्टी-मंडल में उनकी नियुक्ति हुई। अणुशस्त्रों से मानव के लिए उत्पन्न हुए भीषण खतरे की चेतावनी देनेवाले अमरीकी विज्ञान-मनीषियों में डा० पालिंग का नाम प्रमुख है। अमरीकी सरकार और जनता को उन्होंने बार-बार ललकारा है कि वे अणुशस्त्रों को तिलांजलि देकर नैतिक

उच्चता और राजनीतिक विवेक का आदर्श संसार के सामने प्रस्तुत करें ।

अपनी इन अणुशस्त्र-विरोधी प्रवृत्तियों के कारण, मैकार्थी की राजनीतिक धांधलीबाजी के दिनों में उन्हें अमरीका के अप्रबुद्ध वर्गों का कोप भी सहना पड़ा है। उन पर साम्यवाद-समर्थक होने का आरोप लगाया गया। काफी समय तक उन्हें वैज्ञानिक सम्मेलनों में भाग लेने के लिए विदेश जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी । उधर स्टालिन और लाइसेंको के जमाने में रूस में पालिंग का नाम लेना भी वैज्ञानिक कुफ्र था । उनके जैविक व्यूहाणु-संबंधी सिद्धांत को रूस ने सोवियत आदर्शों का विरोधी घोषित कर उसके पठन-पाठन पर प्रतिबंध लगा रखा था। और जब रूस ने अणुशस्त्र-परीक्षणों पर लगे तात्कालिक प्रतिबंध (मारेटोरियम) को तोड़कर पुनः अणुशस्त्रों के परीक्षण आरंभ किये, पालिंग ने उसकी तीव्र भर्त्सना की । तथापि अमरीका के अनुदारपंथी वर्ग आज भी उन्हें क्षमा नहीं कर पाये हैं ।

त्रेसठ वर्षीय पालिंग उन आदर्शवादी विज्ञान-महारथियों में से हैं, जो विज्ञान को शासन-तंत्र और संकुचित राष्ट्रीय स्वार्थों का साधन नहीं, अपितु सत्य एवं मानवता का आराधक बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हैं । उनका जीवन इस आस्था का उदाहरण है कि वैज्ञानिक दृष्टि और जातीय संकुचितता एक साथ नहीं चल सकतीं । द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान में भी उन्होंने एक जापानी को अपने बंगले में माली के काम पर रखा था ।

वस्तुतः लाइनस कार्ल पालिंग का अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण जन्मजात है । उनकी धमनियों में ब्रिटिश और जर्मन रक्त का मिश्रण बह रहा है । उनके पिता ओरेगान राज्य के पोर्टलैंड में दवाफरोश थे । वहीं लाइनस का जन्म २८ फरवरी १९०१ को हुआ । आजकल वे कैलिफोर्निया राज्य में पासाडेना नामक स्थान पर एक विशाल निजी बंगले में रहते हैं । बंगला हमेशा तरुण विद्यार्थियों और देश-विदेश से आये विद्वानों से भरा-भरा रहता है । तीन पुत्रों और एक पुत्री की मां श्रीमती एवा हेलन पालिंग (विवाह–१९२३) का निराडंबर आतिथ्य बहुत प्रसिद्ध है ।

इस शांत वातावरण में डा० पालिंग स्वाध्याय और अध्यापन से बचा समय अपने नाती-पोतों के साथ खेलने, संगीत सुनने और बागवानी में बिताते हैं । पशु-पालन का भी उन्हें शौक है । वे एक खासे बड़े रांच (चरागाह) के मालिक हैं ।

★

आज हमें विचार की महत्ता स्वीकार करनी होगी, जिसकी अग्नि में युगों से बटोरा हुआ कूड़ा जल जायेगा । इस रूप में आज युगानुकूल नये धर्म के लिए बहुत कुछ संहार का काम पड़ा है । उसके बाद ही नयी जीवन-संस्कृति का विकास होगा । **—बर्ट्रैंड रसल**

★

प्रकृति के पदचिह्नों पर

योगदर्शन में ईश्वर को 'पूर्वेषामपि गुरुः' अर्थात् गुरुओं का भी गुरु कहा गया है। प्रकृति के प्रति इसी श्रद्धाभाव में सिक्त होकर आधुनिक वैज्ञानिकों ने एक नया शास्त्रद्वार खोल दिया है।

मैत्रेयी दत्ता

गर्व से गर्दन ऊंची करके जब हम प्रकृति पर विज्ञान की विजय की बातें करते हैं, तो प्रायः एक बड़ी सचाई की उपेक्षा कर जाते हैं। आज के वैज्ञानिक और इंजीनियर अपनी समस्याओं का उत्तर पाने के लिए प्रकृति के पास उसी तरह विनम्र भाव से जाते हैं, जिस तरह प्राचीन काल में ब्रह्म-जिज्ञासु शिष्य ब्रह्मनिष्ट गुरु के पास जाया करते थे।

ये विज्ञानवेत्ता और इंजीनियर एक बात बहुत अच्छी तरह जानते हैं। प्रकृति पिछले बीस अरब वर्षों से एक विशाल प्रयोगशाला चला रही है। इस प्रयोगशाला ने ऐसी कितनी ही समस्याओं को बड़ी कुशलता के साथ सुलझाया है, जिनका सामना यंत्रतंत्र और इंजीनियरी को आज करना पड़ रहा है। विशेषतः जीव-जंतुओं के शरीर की रचना और कार्यविधि के अध्ययन से कितने ही मसलों के समाधान हमें मिल सकते हैं और मिले भी हैं।

मक्खी के पंखों के पीछे दो पतले छड़ होते हैं, यह बात जीवशास्त्रियों को बहुत पहले से मालूम थी। लेकिन वे नहीं जानते थे कि इनकी उपयोगिता क्या है। बारीकी से जांचने पर प्रकट हुआ कि ये कंपनशील छड़ उड़ान के दौरान में मक्खी को दिशा का ज्ञान कराते हैं। इन्हीं छड़ों के अनुकरण पर वैज्ञानिकों ने स्थिर जैरोस्कोप का निर्माण किया है, जो प्रचलित जैरोस्कोप से अधिक अच्छा है। (जैरोस्कोप और उसकी उपयोगिता पर मार्च १९६३ के 'नवनीत' में 'अंतरिक्षयान का अंतरंग' नाम का लेख छपा है। –संपादक)

मधुमक्खियों का दिशाज्ञान गजब का होता है। पुष्परस की खोज में उन्हें प्रतिदिन अपने छत्ते से मीलों दूर जाना पड़ता है। छत्ते पर वापस लौटने के लिए वे सूर्य की सहायता से दिशा का पता लगाती हैं। लेकिन देखा गया है कि जब सूर्य घने बादल या कोहरे के कारण दिखाई नहीं देता. तब भी वे राह नहीं भटकतीं। इसका राज उनकी आंखों में छिपा है। ये आंखें रोशनी को देख-

कर तुरंत बता सकती हैं कि रोशनी का स्रोत किधर है।

वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी की आंखों की रचना की नकल पर 'पोलारायड ओरिएंटेशन इंडिकेटर' नाम का उपकरण बनाया है, जो आकाश में सूर्य की स्थिति को ठीक-ठीक सूचित कर सकता है। ध्रुव-प्रदेशों की उड़ान भरनेवाले वायुयान दिशाज्ञान के लिए इसका उपयोग करने लगे हैं।

प्रकृति और वैज्ञानिक

विज्ञानवेत्ता प्रकृति की रचनाओं से वास्ता रखता है। वह उसकी कार्यविधि को समझने और स्पष्ट शब्दों में उनका वर्णन करने का यत्न करता है। प्रकृति से वह जितना ही दूर हटता जाता है, उसके प्रयत्न की उपयोगिता भी प्रायः उतनी ही घटती जाती है। कभी-कभी वैज्ञानिक कोरी कल्पना की उड़ानें भी भरता है; लेकिन तब यथार्थ की ठोस चट्टानों से टकराकर कष्ट पाता है। —डा० सी० वी० रामन

समुद्र में अचानक ही तूफान आ जाने पर बड़े-बड़े जहाज भी कागज की किश्तियों की तरह थरथराने लगते हैं और नाविक जहाज के ऋतु-विशेषज्ञ को कोसना शुरू कर देते हैं। लेकिन समुद्री जीव-जंतुओं को न जाने कौन घंटों पहले ही खतरे की सूचना दे जाता है। समुद्री बत्तखें घंटों पहले ही चें-चें करती हुईं आकाश में मंडराने लगती हैं; डालफिन मछलियां चट्टानों की ओट में छिप जाती हैं; तारा-मछलियां मानो प्राणायाम साधकर सागर-तल पर आसन जमा लेती हैं; ह्वेल मछलियां समुद्र में दूर-दूर निकल जाती हैं।

वास्तव में तूफान की पूर्व-सूचना इन्हें अपने कानों से मिलती है। इनके कान बहुत दूर से आते हुए तूफान की श्रवणातीत ध्वनि को सुन लेते हैं, जबकि नाविकों के कान तो क्या, प्रायः ऋतु-विशेषज्ञों के यंत्र भी उसे नहीं सुन पाते। इसी तथ्य के आधार पर मास्को विश्वविद्यालय ने एक कृत्रिम कान तैयार किया है, जो आनेवाले तूफान की सूचना पंद्रह घंटे पहले ही "सुन" लेता है; यही नहीं, तूफान की दिशा और उसके वेग को भी ठीक-ठीक जान जाता है।

अब तो जीव-जंतुओं की अदभुत शक्तियों के रहस्य खोजने और उनके आधार पर यंत्रतंत्र और इंजीनियरी की समस्याओं को सुलझाने के लिए एक नया विज्ञान ही बन गया है। विज्ञान-परिवार के इस सबसे नन्हे सदस्य का नामकरण अभी १९६० में हुआ है। इसे 'बायोनिक्स' कहते हैं।

'बायोनिक्स' का शब्दार्थ है—जीवों का अध्ययन। इसका क्षेत्र जीवशास्त्र से काफी भिन्न है और सीमित भी। बायोनिक्स जीव-जंतुओं की शरीर-रचना और शरीर-क्रिया की उन विशेषताओं का अध्ययन करता है, जिन्हें जीवशास्त्र में 'विशेषोद्देश्य व्यवस्थाएं' (स्पेशल पर्पस मैकैनिज्म) कहा

जाता है । 'विशेषोद्देश्य व्यवस्थाओं' के दो-तीन उदाहरणों से बायोनिक्स का कार्यक्षेत्र स्पष्ट हो जायेगा ।

किसी अंधेरे कमरे में बहुत-से तार बांधकर उनसे घंटियां लटका दीजिये । फिर इस कमरे में एक चमगादड़ छोड़ दीजिये । चमगादड़ घंटों यहां उड़ता रहेगा; लेकिन क्या मजाल कि एक बार भी वह किसी तार से टकरा जाये और कोई घंटी बज उठे! बात यह है कि चमगादड़ अपने गले से एक विशेष आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) पर श्रवणातीत ध्वनियां प्रसारित करता रहता है । ये ध्वनियां विभिन्न वस्तुओं से टकराकर लौट पड़ती हैं और चमगादड़ के कान के परदों को छूती हैं । इससे चमगादड़ को पता चल जाता है कि उसके मार्ग में कहां-कहां विघ्न हैं । अपने शिकार की टोह भी वह इसी उपाय से पाता हैं ।

कुछ कीट-पतंगे चमगादड़ द्वारा प्रसारित इन सूक्ष्म ध्वनि-तरंगों को अनुभव कर सकते हैं । ज्यों ही ध्वनि-तरंगें उनके शरीर से टकराती हैं, वे भांप जाते हैं कि चमगादड़ ने उन्हें देख लिया है और तुरंत अपनी रक्षा की तैयारी कर लेते हैं । इसी तरह कई किस्म के भुनगों के पेट से ध्वनि-विस्तारक यंत्र छुआकर वैज्ञानिकों ने ऐसी निम्न आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) की ध्वनियां सुनी हैं, जिन्हें हमारे यंत्र वैसे कभी ग्रहण न कर सकते ।

मेंढक सिर्फ जिंदा कीड़े-मकोड़े खाता है । उसके आस-पास कई मरी हुई मक्खियां डाल दीजिये और एक-दो जिंदा मक्खियां । वह जिंदा मक्खियों पर ही लपकेगा; मरी मक्खियों की तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखेगा । अगर वह देखना चाहे, तो भी मरी मक्खियां उसे दिखेंगी नहीं । बात यह है कि मेंढक की आंखों की बनावट बड़ी विचित्र होती है, जिससे उसे हिलती-डुलती वस्तुएं ही दिखाई देती हैं, निश्चल वस्तुएं नहीं । उसकी आंखें तो देखती हैं उड़ती हुई मक्खी को, चलते हुए मकोड़े को, रेंगते हुए सांप को—यानी उन्हीं चीजों को, जिनका देखना मेंढक के जीवन के लिए जरूरी है ।

उल्लू के कान ध्वनि को ही नहीं ग्रहण करते, बल्कि यह भी बता सकते हैं कि ध्वनि कहां से आ रही है । इसीलिए चूहे के चलने-फिरने की भनक कानों में पड़ते ही उल्लू उस पर सीधे झपट पड़ता है, भले ही चूहा सूखे पत्तों के ढेर के नीचे छिपा हुआ हो ।

बायोनिक्स इन सब अजूबों का अध्ययन और विश्लेषण करता है—केवल ज्ञानवर्धन के लिए नहीं, बल्कि उनका उपयोग करने के लिए । और बायोनिक्स सहकारिता के आधार पर चलता है । इसमें जीवशास्त्री, रसायनशास्त्री, भौतिकशास्त्री और इंजीनियर सब साझीदार होते हैं । अलबत्ता जीवशास्त्री इनका मुखिया होता है । ये वैज्ञानिक ऐसी अजीब जानकारियों का उपयोग ऐसे जटिल मामलों में करते हैं कि दिमाग चकरा जाता है ।

समुद्र-गर्भ में तैरती हुई पनडुब्बियों से रेडियो-संपर्क रखना कई बार कठिन हो

जाता है। कारण यह है कि सामान्य विद्युत्-चुंबकीय तरंगों को समुद्र-जल बीच में ही पचा जाता है। बायोनिक्स एक नये ही रास्ते से इस सिरदर्द का इलाज खोज रहा है।

कई मछलियों की घ्राणशक्ति बड़ी तीव्र होती है, जिससे वे पानी में दूर-दूर की चीजों की सूचना पा लेती हैं। आज के वैज्ञानिक यह मानते हैं कि गंध देनेवाली वस्तु के व्यूहाणुओं में कंपन होने से विद्युत्-चुंबकीय तरंगें पैदा होती हैं और जब घ्राणेंद्रिय इन तरंगों को ग्रहण करती है, तो स्नायुओं के छोर उत्तेजित हो उठते हैं और हमें उस वस्तु की गंध अनुभव होती है।

बायोनिक्स ने दूर-दूर पड़े इन दो तथ्यों को साथ रखकर उनसे यह परिणाम निकाला है कि विद्युत्-चुंबकीय तरंगों की ऐसी कोई आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) अवश्य है, जिसे पानी रोक नहीं सकता। यदि इस फ्रीक्वेंसी पर रेडियो-संदेश भेजने और ग्रहण करनेवाले यंत्र बना लिये जायें, तो पनडुब्बियों से संपर्क रखना आसान हो जायेगा।

रेडियो की 'जैमिंग' से छुटकारा पाने के लिए मच्छर का अध्ययन किया जा रहा है। मच्छर अपने पंख फड़फड़ाकर ऐसी गुंजार पैदा कर देता है, जो जबर्दस्त-से-जबर्दस्त 'जैमिंग' को चीरकर ४०-४५ मीटर की दूरी पर बैठे हुए दूसरे मच्छरों तक पहुंच जाती है।

रेंगते समय टिक-टिक शब्द करनेवाला अमरीकी सांप रैटल स्नेक आजकल बायोनिक्स के पंडितों के कौतूहल का केंद्र बना हुआ है। इस जहरीले सांप के सिर में एक अत्यंत संवेदनशील अवयव होता है। वातावरण के तापमान में एक डिग्री शतांश के हजारवें भाग जितना भी हेर-फेर हो, तो यह अवयव उसे जान लेता है। रैटल स्नेक को इससे चूहे, चिड़ियां आदि गरम रक्तवाले शिकारों की टोह पाने में मदद मिलती है। शत्रुओं द्वारा गुप्त रूप से छोड़े जानेवाले राकेटों की सूचना पाने के लिए वैज्ञानिकों ने इन्फ्रा-रेड किरणों की सहायता से काम करनेवाला जो यंत्र तैयार किया है, वह रैटल स्नेक के इस अवयव की तुलना में बड़ा ही अनघड़ और अकुशल है।

बायोनिक्स का व्यावहारिक उपयोग जोरों से हो रहा है। अभी तीन-चार साल पूर्व एक प्रसिद्ध वायुयान कंपनी ने अपने छोटे वायुयानों में शंकु के आकार की पूंछ लगानी शुरू की, जिससे वायुयान में अधिक स्थिरता आ गयी। यह सुधार इंजीनियरों को समुद्री पक्षियों के डैने देखकर सूझा था। इसी भांति मछलियों के गिल-जबड़ों की रचना से प्रेरित होकर अमरीकी जलसेना के इंजीनियर एक ऐसे यांत्रिक गिल का निर्माण कर रहे हैं, जो पानी में से आक्सीजन खींच लेगा और पनडुब्बी में से कार्बन डाइआक्साइड को बाहर निकाल देगा।

उड़ता हुआ भुनगा अपनी रफ्तार जान सकता है। उसकी आंखें चिरी हुई होती हैं। उड़ते समय भुनगा वृक्ष—जैसी किसी स्थिर चीज पर नजर गड़ा लेता है और वृक्ष के बिंब को आंख के एक भाग से दूसरे भाग

तक पहुंचने में जितना समय लगता है, उसके आधार पर अपनी रफ्तार जान लेता है । उसकी नकल करते हुए अमरीकी सेना ने अपने वायुयानों के लिए एक 'ग्राउंड स्पीड मीटर' तैयार किया है । भुनगे की चिरी हुई आंख के बजाय इसमें दो 'फोटो-सेल' हैं—एक यान की नाक में, दूसरा पूंछ में । और गणना का काम भुनगे के छोटे-से दिमाग के बजाय, एक कंप्यूटर करता है ।

हमारी आंखें और दिमाग मिलकर जिस तरह काम करते हैं, उसी तरह काम करनेवाला एक यंत्र बनाने की कोशिश की जा रही है । अमरीका के प्रिस्टन विश्वविद्यालय ने ऐसा उपकरण बनाया भी है, जो "देख" सकता है । यह यंत्र वस्तुओं के आकार व आयतन को पहचान सकता है, चलन-वलन से उसकी आकृति में होनेवाले अंतर को जान सकता है । इसमें फोटो-इलेक्ट्रिक सेल होते हैं, जो आकृतियों का बिंब ग्रहण करते हैं । एक कंप्यूटर इन बिंबों की व्याख्या करता है ।

हमारा दिमाग बीसों काम करता है । जो यांत्रिक दिमाग इनमें से तीन-चार काम भी कर सकेंगे, वे बहुत ही जटिल होंगे । उनमें लाखों पुर्जे लगेंगे । इन पुर्जों को हम कितना सूक्ष्म और कितना सस्ता बना सकेंगे, इस पर सब कुछ निर्भर है ।

वैज्ञानिकों का पहला लक्ष्य है कोई ऐसा यंत्र बनाना, जो स्वयं अपना कार्यक्रम निर्धारित कर सके । ऐसे एक छोटे यंत्र का उपयोग आजकल भी आर० सी० सी० कंपनी कर रही है । इस कंपनी के पास अटलांटिक सागर के आर-पार रेडियो कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए दो मार्ग (चैनल) हैं । कब किस मार्ग का उपयोग करना है, यह निर्णय एक मशीन करती है । निर्णय करते समय मशीन इसका ध्यान रखती है कि वायुमंडल अनुकूल है या नहीं, और किस मार्ग पर काम का कितना बोझ है । मशीन दो में से किस मार्ग को चुनेगी, यह पहले से नहीं कहा जा सकता है ।

लेकिन जैसा कि एक प्रसिद्ध अमरीकी कंप्यूटर-विशेषज्ञ ने कहा है—"अभी हमारे कंप्यूटर यंत्र बड़े ही अनघड़, मूर्ख पशु हैं । उनमें मूर्ख-से-मूर्ख चींटी के बराबर भी अक्ल नहीं है ।"

अधिक विकसित यांत्रिक मस्तिष्कों का निर्माण करने के लिए मानवीय मस्तिष्क की रचना और कार्यविधियों का गहरा अध्ययन करना होगा । किस प्रकार हमारा स्नायुजाल मस्तिष्क में सूचनाएं पहुंचाता है, किस प्रकार मस्तिष्क सूचनाओं को ग्रहण करता है, उनका विभाजन करता है, पूर्व-सूचनाओं से उनकी तुलना करता है, नये परिणाम निकालता है और उन्हें स्मृति के रूप में धारण करता है?—इन सब बातों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी होगी । बायोनिक्स स्नायु और मस्तिष्क के कोशों के अध्ययन और विश्लेषण के द्वारा ये सब रहस्य पता लगाने की चेष्टा कर रहा है । वास्तव में बायोनिक्स का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र यही है ।

* * *

साधना पथ

स्वामी विवेकानंद के प्रारंभिक जीवन का एक प्रसंग है। उस समय उनका नाम नरेंद्र था। श्री रामकृष्ण परमहंस का उन पर असीम स्नेह था। इतने पर भी एक बार उन्होंने नरेंद्र से बोलना बंद कर दिया। जब नरेंद्र उनके सम्मुख आयें, वे मुंह फेर लें और गंभीर हो जायें। नरेंद्र नित्यप्रति सहज भाव से प्रणाम करते और थोड़ी देर पास में बैठकर लौट जाते। कई सप्ताह तक यही क्रम चलता रहा—नरेंद्र बराबर उसी तरह आते रहे। तब एक दिन रामकृष्ण ने उनसे पूछा—"मैं तुझसे नहीं बोलता, तब भी तू आता है! क्या बात है?" नरेंद्र ने कहा—"आपके प्रति प्रेम है, इसीलिए दर्शन करने चला आता हूं। यों भी मैं सिर्फ आपकी बातें सुनने तो आता नहीं।" यह सुनकर रामकृष्ण परमहंस का मन भर आया और नरेंद्र को छाती से लगाते हुए बोले—"अरे पगले, मैं तो तेरी परीक्षा कर रहा था कि तू उपेक्षा भी सह सकता है या नहीं।"

—प्रभाकर

स्वाधीन विचार

स्वाधीन विचार बड़े महत्व की चीज हैं। और हम हैं कि आज उसी अधिकार को खो बैठे हैं। हममें से बहुत कम ऐसे हैं, जो कोई बात कहते समय उसकी सचाई के लिए किसी धर्मग्रंथ का प्रमाण पेश न करें। वे यह नहीं समझते कि प्रमाण देने का मतलब होता है अनुभवहीनता! पुस्तक-ज्ञान भी क्या कोई ज्ञान होता है? अनुभव द्वारा अर्जित ज्ञान ही वास्तव में ज्ञान होता है।

अगर हम विचार-स्वाधीनता पा लें, तो हम कुछ क्षणों में ही कुछ से कुछ हो जायें। और यह विचार-स्वाधीनता हमें किसी से मांगनी नहीं पड़ेगी—न इसके लिए हमें किसी की खुशामद ही करनी होगी; और न इसमें कुछ खर्च करना होगा। सिर्फ इतना करना होगा कि अपनी आज तक की जानकारी को कार्य-कारणभाव की कसौटी पर कसना होगा। जो उस पर ठीक उतरे, उसको अपना लेना होगा; जो ठीक न उतरे, उसका उस समय तक के लिए त्याग कर देना होगा, जब तक कि हमारे विवेक की कसौटी उसे ठीक साबित न कर दे।

यह बहुत मुश्किल काम है उनके लिए, जो अंधश्रद्धा में फंसकर अंधभक्ति से चिपक गये हैं। यह बहुत आसान काम है उनके लिए, जो अपने अनुभवों को ही श्रद्धा के देवता माने हुए हैं और उन्हीं के प्रति अपनी भक्ति रखते हैं। **—महात्मा भगवानदीन**

दो प्रतिक्रियाएं

एक नर्स थी । उसे इस बात का दुःख था कि उसे इतनी ठंड लगती है, फिर भी उसके पास मोजे नहीं हैं । वह भुनभुना रही थी कि इतने में एक रोगिणी आयी । नर्स उसे देखने गयी, तो पता चला कि उस बेचारी के टखने के नीचे पैर ही नहीं हैं । वह कहने लगी –"इससे तो मैं अच्छी हूं । मेरे पास मोजे नहीं हैं, तो क्या हुआ, पैर तो हैं न ! इस बेचारी के तो पैर ही नहीं है ।"

इसी प्रकार मनुष्य अपने से दुःखी मनुष्य को देखकर दुःख में संतोष मानता है । वह अधिक सुखी को देखकर ईर्ष्या करता है । हम कहते हैं कि अपने से दुःखी की तरफ देखो, सुखी की तरफ न देखो । नहीं तो दोनों से प्रतिक्रियाएं होंगी । अपने से दुःखी को देखकर अपने दुःख में मनुष्य संतोष मानेगा और अपने से सुखी को देखकर ईर्ष्या करेगा । जब दोनों से मुक्त होगा, तभी वह तटस्थ होगा ।

तो अपने मन को समझने के लिए, दुःख को भी सुसह्य बनाने के लिए मनुष्य अपने से अधिक दुःखी को देखता है । वह कहता है कि मेरे पास ठंडक से बचने के लिए एक कंबल तो हैं; पर वह बेचारा तो नंगा पड़ा हुआ है । इस तरह वह अपने मन को समझाता है । ये दोनों प्रतिक्रियाएं हैं । यह मनुष्य की सहज अवस्था नहीं, एक संस्कार मात्र है ।

–दादा धर्माधिकारी

लुटेरी टकसालें

यदि आपके घर में टकसाल खोल दी जाये तो ? क्या आप मालामाल नहीं हो जायेंगे? नहीं, आप लुट जायेंगे । दरअसल यही बात है । बम्बई, अलीपुर और हैदराबाद में भारत सरकार की एक-एक टकसाल हैं । प्रत्येक टकसाल लगातार घाटा दे रही हैं ।

सन १९६१ में जो स्थिति थी, उसके अनुसार एक नये पैसे के एक हजार सिक्के ढालने का खर्च २० रुपये ८२ नये पैसे आता है । एक हजार नये पैसों की कीमत है दस रुपये, यानी प्रत्येक एक हजार नए पैसों के पीछे दस रुपये और ८२ नये पैसों का घाटा !

भारतीय टकसाल चार वर्षों में औसतन ६४ करोड़ ५० लाख रुपयों से भी अधिक घाटा देती है । दशमलव प्रणाली के सिक्के चलने के बाद घाटा बढ़ गया है । दो नये पैसों के एक हजार सिक्के बनाने के लिए ३५ रुपये और ६९ नये पैसों का खर्च पड़ता है । अर्थात् २० रुपये पाने के लिए १५ रुपये ६९ नये पैसों का घाटा उठाया जाये ।

टकसाल से घाटे की बजाय फायदा तभी हो सकता है, जब उत्पादन बढ़ा दिया जाये। कई कारणवश फिलहाल यह संभव नहीं है । इंगलैंड की टकसाल बहुत फायदे में चलती है, क्योंकि उसका उत्पादन भारतीय टकसाल से प्रायः सात गुना अधिक है । सन १९६० में इंगलैंड की टकसाल के प्रत्येक कारीगर ने ९ लाख सिक्के सालाना बनाये, जबकि अलीपुर के कारीगर ने केवल एक लाख ४५ हजार ।

–भगीरथ

* * *

कल का गरीब शेख आज का धन-कुबेर

जगत गुप्त

लंबाई लगभग साढ़े पांच फुट । करीने, से कटी हुई काली दाढ़ी । लंबी-पतली गहरी भूरी आंखें । चेहरे पर न पहचाने जानेवाले भाव । कमरबंद से लटकती कटार, जो सोने की म्यान में छिपी है । कंधे से नीचे तक गलाबिया से ढका शरीर और सिर पर अरबी किस्म का साफानुमा तौलिया । उम्र अट्ठावन साल ।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर एक चित्र तैयार करें, तो आबू ढाबी के शेख शेखावत-बिन-सुल्तान आंखों के सामने झूलने लगेंगे । ईरान के खाड़ी-क्षेत्र के चार तैल-क्षेत्रों में से आबू ढाबी एक है । अन्य हैं कुवैत, बेहरीन और कातार । शेख के सिर पर ब्रिटेन का हाथ है, जिसके कारण कोई उनके राज्य पर आंखें नहीं उठा सकता; परंतु सर्वोपरि शेख ही हैं । ब्रिटेन का काम है, आबू ढाबी का विदेशी आक्रमण से बचाव करना और विकास के लिए उसे सुझाव देना । लेकिन अब तक ब्रिटेन ने यही महसूस किया है कि उसके दिये गये अधिकांश विकास-संबंधी सुझाव बेकार हो गये हैं । उदाहरणस्वरूप, आबू ढाबी के नागरिकों की निरक्षरता दूर करने हेतु जब एक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम पेश किया गया, तो शेख ने सिर्फ इतना ही कहा–"अगर अंग्रेजों ने भारतीयों को शिक्षित न किया होता, तो वे आज भी भारत में होते ।" इससे स्पष्ट है कि शेख शिक्षा-विस्तार को अपने लिए घातक समझते हैं और इसके कई एक कारण भी हैं ।

आज शेख निरंकुश शासक हैं। वैसे आबू ढाबी का अधिकांश भाग रेगिस्तान है; लेकिन उसका एक-एक कण उनका है । गत वर्ष शेख की दैनिक आय करीब ६०,००० रुपये थी और इस वर्ष यह १,२०,००० रुपये हो जायेगी । १९६६ में इस रकम के आठ लाख दैनिक हो जाने की आशा है । लेकिन यह सब तभी होगा, जब कि योजनानुसार १९६६ में पूरी रफ्तार में तेल प्राप्त होने लगे । अभी जिन तेल कंपनियों ने आबू ढाबी को 'तेल का सागर' पाया है, वे अपने अनुमान को सत्य सिद्ध करने के लिए दिन-रात संयंत्र आदि बैठाने में लगी हुई हैं । इस प्रकार अगर सब सही हो गया, तो शेख बैठे-ही-बैठे दुनिया के सर्वाधिक दैनिक आयवाले व्यक्ति बन जायेंगे और आबू ढाबी की प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय ३०,००० रुपये

हो जायेगी, जो [illegible] के किसी भी देश की प्रतिव्यक्ति आय से बहुत अधिक है। कल तक शेख को सिर्फ ७,००,००० रुपये सालाना की आय होती थी–खजूर के निर्यात और सागर से मोती चुनने की अनुज्ञा देने के फलस्वरूप।

पच्चीस हजार वर्गमील क्षेत्र के मालिक शेख की आदतें भी बड़ी अजीब हैं। वे शासक हैं; अतः उनके यहां मजलिस जमती है। अगर कोई अतिथि अथवा मिलनेवाला आता है, तो एक सैनिक उसके नाम की घोषणा करता है। आबू ढाबी के नागरिक, बद्दून जन-जाति के हैं। वे जब मजलिस में प्रवेश करते हैं, तो शेख को सलाम करके एक ओर बैठ जाते हैं। शेख एक किनारे अपने एक-दो मुसाहिबों के साथ बैठे होते हैं। फिर जिन्हें कुछ कहना होता है, वे आगे बढ़कर शेख के कान में फुसफुसा देते हैं। उत्तर में शेख भी कुछ फुसफुसाते हैं और फिर लंबा मौन धारण कर लेते हैं।

एक विदेशी यात्री ने इस मौन का जिक्र करते हुए कहा है–"मैं शेख की मजलिस में पहुंचा। सलाम करने के बाद किनारे पड़े सोफे पर बैठ गया। नियमानुसार मैंने अपनी बात उनके कानों में कह दी। उत्तर के लिए मिनिट-दो-मिनिट नहीं, पूरे दो घंटे इंतजार करना पड़ा। तब जाकर कहीं छोटा-सा उत्तर मिला। और इस बीच मजलिस में कई लोगों के होते हुए भी बिलकुल खामोशी रही। फिर काफी का दौर चला और उसके बाद वे उठकर चले गये। हम [illegible] भी निकल जाते। मजलिस खत्म।" कुछ लोग बैठे रहें और कोई-कोई तो घंटों कुछ न बोले! अब आप ही समझ लीजिये कि वातावरण कितना उबानेवाला हो जाता होगा इस दरबार का!

शेख शेखावत की मजलिस में प्रवेश करने का द्वार भी बड़ा खतरनाक है। द्वार छोटा होता है, जिससे होकर कोई भारी-भरकम शरीर का व्यक्ति निश्चित होकर अंदर नहीं जा सकता। उस दरवाजे के चारों ओर नुकीली कांटियों की पांच कतारें लगी रहती हैं, जिनसे असावधान रहने पर जख्म लगने की संभावना रहती है।

कुछ समय पूर्व एक ब्रिटिश इंजीनियर ने उनके सामने जब उनकी नयी हवेली का नक्शा पेश किया, तो शेख ने उसे तुरंत रद्द कर दिया। उस हवेली के बनने में करीब एक करोड़ बीस लाख रुपये खर्च होते। भला शेख यह फिजूलखर्ची कैसे स्वीकार करते! वे अपने मकान के नक्शे खुद ही तैयार करते हैं और आज के युग में भी जमीन की नाप-जोख हाथ और उंगलियों से करते हैं।

शेख का किला सफेद रंग का है और उसकी सीमेंट की दीवारें काफी मोटी हैं। दीवारों के ऊपर की सतह सपाट न होकर दांतेदार बनी है। चारों कोनों पर गोल टावर बने हैं। एक पर लाल झंडा समुद्री हवा के सहारे फहराता रहता है।

इस रेगिस्तान में समुद्र-तट के नजदीक कुछ कुएं हैं। आज भी लोग अपनी प्यास इन्हीं कुओं के पानी अथवा नारियल-जल

से मिटाते हैं । शेख के किले के अंदर रहनेवाले ५,००० लोगों को एक छोटी-सी पानी की टंकी से रोजाना १४,००० गैलन समुद्री पानी साफ होकर पीने को मिल जाता है । शेख इस कोशिश में हैं कि और भी स्वच्छ जल प्राप्त हो सके ।

शेख पर आधुनिक सभ्यता का थोड़ा-बहुत प्रभाव तो पड़ा ही है । उन्होंने अपने शयनकक्ष में शीतताप-नियंत्रण यंत्र लगा लिया है; परंतु वे ज़ल्दी उसका उपयोग नहीं करते । उनके महल में एक एस्प्रेसो काफी बनाने का भी यंत्र लगा है, जिसके अंदर पानी की भी अपनी अलग व्यवस्था है, क्योंकि महल में तो पानी की पहले ही कमी है । अभी भी काफी अंगीठी पर ही तैयार की जाती है और पिस्तौल से लैस सैनिक काफी पिलाता है ।

शेख ने विदेशी मेहमानों के लिए अब अपने भोजनागार में मेज और कुर्सी की व्यवस्था की है । परंतु मेहमानों को हाथ से ही खाना पड़ता है, क्योंकि यह शेख की प्रथा है, जिसे अभी तक तोड़ा नहीं जा सका है । यों शेख खाना खाते वक्त सामान्यतया जमीन पर पालथी मारकर बैठते हैं ।

शेख ने अब बैंक में रुपये रखने में यकीन करना शुरू कर दिया है । बैंकिंग प्रथा को अपनाने की भी एक मजेदार कहानी है । दो-तीन तेल कंपनियों ने जब आबू ढाबी में कार्य करना शुरू किया, तो कुछ बैंकवालों ने भी अपनी शाखाएं वहां खोल दीं । शेख से बहुत आग्रह किया गया कि वे अपने रुपये-पैसे बैंक में जमा किया करें; पर वे नहीं माने । वे अपने रुपये एक बहुत ही मजबूत कमरे म बंद करके रखते और जिस बिछावन पर सोते, उसके नीचे भी नोटों का अंबार लगा रहता । एक बार रजत-कीटों और चूहों की मेहरबानी से शेख को काफी नुक्सान उठाना पड़ा । और तब उन्होंने लाचार होकर बैंक में अपना खाता खोला । आज शेख के पास काफी मोटी चेक-बुक है; परंतु चेक काटते वक्त शेख की जान निकलती है । उनकी इसी कंजूसी की वजह से कई योजनाएं ठप पड़ी हैं ।

शेख को बाज के द्वारा सारस का शिकार करने में बड़ा आनंद आता है । ऊंट की सवारी उन्हें मोटर की सैर से भी ज्यादा पसंद है । शेख की पहली बीवी से दो बेटे तथा तीन बेटियां हैं । पहली बीवी के गुजर जाने पर शेख ने दूसरी शादी कोई तेरह साल पहले मरियम से की, जो कि आज २५ साल की है । शेख के दो भाई भी हैं; पर मां की दिलायी हुई कसम ने उन्हें अब तक आपस में लड़ने अथवा खून-खराबी करने से रोका हुआ है, जो कि दौलत के लालच में एकदम स्वाभाविक है । शेख के १४ पूर्वज कत्ल की नींद ही सोये हैं । शेख की एक खूबी यह भी है कि वे अपने १५,००० नागरिकों में से करीब-करीब सबको पहचानते हैं ।

*

अंतिम नैवेद्य

दक्षिण भारत की किन्नरकंठी गायिका श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी के जीवन का एक मर्मव्यथापूर्ण प्रसंग 'जीवन की एक बड़ी भूल' शीर्षक की शृंखला में

टी० सदाशिवम्

मेरा खयाल है, शायद सितंबर १९४७ की बात है। आकाशवाणी, मद्रास की मार्फत मेरे पास दिल्ली से एक संदेश आया। उसमें पूछा गया था कि क्या मेरी पत्नी श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी दिल्ली जाकर २ अक्टूबर को बापू के जन्मदिन पर उनके समक्ष कुछ भजन गा सकेंगी। कुछ घरेलू कारणों से मुझे खेदपूर्वक क्षमा मांग लेनी पड़ी। सुब्बुलक्ष्मी ने तुलसी, सूर, कबीर और मीरा के कुछ भजन रेकार्ड कराये और वे दिल्ली भेज दिये गये, ताकि बापू जन्मदिन पर उन्हें सुन सकें। लेकिन १ अक्टूबर को सवेरे मद्रास रेडियो की मार्फत मेरे पास दिल्ली से श्रीमती सुचेता कृपलानी का एक टेलिफोन-संदेश आया। श्रीमती कृपलानी ने बताया कि सुब्बुलक्ष्मी से मीरा का भजन "हरि तुम हरो जन की भीर" सुनने की बापू की तीव्र इच्छा है। मैंने बताया कि सुब्बुलक्ष्मी ने वह भजन नहीं सीखा है और सुझाव दिया कि बापू दिल्ली के ही किसी कलाकार से वह भजन सुनें।

किंतु उसी शाम को फिर संदेश आया कि बापू यह अधिक पसंद करेंगे कि कोई दूसरा कलाकार गाये, इसके बजाय सुब्बुलक्ष्मी उस भजन को पढ़ दें। अब तो कोई चारा नहीं था। हम लोग रेडियो स्टेशन गये। दो-तीन संगीतज्ञ मित्रों की सहायता से उस भजन की स्वर-रचना की। और जब सुब्बुलक्ष्मी उसकी रेकार्डिंग कराके हटीं आधी रात कभी की बीत चुकी थी। अगले दिन सवेरे मेरे भानजे रेकार्ड लेकर हवाई जहाज से दिल्ली गये और बापू ने अपने जन्मदिन की शाम को वह भजन सुना।

किसे कल्पना थी कि यही बापू का आखिरी जन्मदिन होगा और जन्मदिन के लिए रेकार्ड कराया गया वह भजन चार महीने के भीतर राष्ट्रपिता की अंत्येष्टि पर सारे देश में रेडियो स्टेशनों से प्रसारित होगा। ३० जनवरी १९४८ की शाम को सुब्बुलक्ष्मी घर पर यों ही रेडियो सुन रही थीं। अचानक रेडियो चुप हो गया। फिर बड़ी गंभीर गमगीन आवाज में बापू की हत्या का समाचार सुनाया गया और उसके तुरंत बाद सुब्बुलक्ष्मी के स्वरों में गूंज उठा—हरि तुम हरो जन की भीर। सुब्बलक्ष्मी बेहोश हो गयीं। इसके बाद तो लगभग एक साल तक चाहे कितनी कोशिश कर लें, वह भजन उनके गले से नहीं फूटता था।

*

वह मेरी ही लड़की थी

पिछले दिनों मुझे यात्रा में एक ६० वर्षीय महिला मिलीं। उनके मुख से जो बात मैंने सुनी, उसे केवल नाम-परिवर्तन के साथ मैं लिख रहा हूं। नाम कल्पित हैं, घटना सर्वथा सत्य है। ये घटनाएं आत्मा की जन्म-जन्मांतरों में होनेवाली यात्रा का समर्थन करती हैं। पूर्वजन्म संबंधी अनुभवों में यह अनुभव बहुत प्रामाणिक है, क्योंकि उक्त महिला से मैं स्वयं खूब परिचित हूं। –सत्यकाम विद्यालंकार

श्रीमती वंदना

घटना सन १९५१ की है। एक दिन डाक में मुझे चिट्ठी मिली :

"श्रीमती वंदनाजी,

दो वर्ष की एक बालिका बार-बार आपकी कोठी का पता बताकर कह रही है कि वह उसकी कोठी है। उसके मां-बाप संकोचवश आपसे कुछ नहीं कहते। आप इस संबंध में जानना चाहें, तो मार्फत पोस्ट-मास्टर सहारनपुर चिट्ठी लिख दें। मुझे मौनी बाबा कहते हैं।

–"मौनी"

एक बार तो मैं इस चिट्ठी से चौंकी कि शायद कोई अपनी लड़की को पाठ पढ़ाकर मेरे गले मढ़ना चाहता है। मेरा संदेह अस्वाभाविक नहीं था। सहारनपुर में हमारा घराना बहुत बड़ा माना जाता था। ५० बीघा जमीन में फैली दुमंजिली आलीशान कोठी, लीची और आम से लदे बगीचे, दरवाजे पर छः हाथी, मोटरें, बग्घी - अमीरी के सब ठाठ-बाट हमारे घर पर सजे थे। ऐसे घर से तरह-तरह के ताल्लुक जोड़नेवाले आते-जाते ही रहते थे। मैंने सोचा यह भी एक ऐसा ही प्रपंच होगा।

चिट्ठी फाड़कर मैं फेंकने ही वाली थी कि मेरी एक सहेली ने कहा–"बहन, इन मामलों में ठगी तो बेहद है; लेकिन कभी-कभी ये बातें सच भी हो जाती हैं। चिट्ठी न फाड़ो। शायद काम आ जाये।"

मैंने चिट्ठी संभालकर रख ली और सारी बात भूल गयी।

× × ×

लगभग छ. महीने बाद एक दिन मुझे शहर के एक महिलाश्रम के उत्सव पर जाना पड़ा। मेरे पति सेठ लक्ष्मणप्रसादजी के दान से आश्रम की नींव पड़ी थी, इसलिए मुझे जाने को विवश किया गया। सेठजी बीच में ही एक दुकान पर रुक गये। आश्रम महिलाओं का था, इसलिए भी उन्होंने मुझे अकेले ही भेजा।

मेरी मोटर जैसे ही आश्रम के द्वार पर रुकी, दो साल की एक बालिका ने मेरी ओर इशारा करके अपने पास खड़ी एक औरत

से कुछ कहा । बाद में मुझे मालूम हुआ कि उसने कहा था–"यह आयीं मेरी भाभी और यह मेरी मोटर ।"

मैं यज्ञ वेदी पर जा बैठी । यज्ञ समाप्त हुआ तो दो साल की वह बालिका फिर मेरे पास आयी । मेरा हाथ अपने छोटे-छोटे हाथों में लेकर उसने तोतली आवाज में कहा–"यह है मेरी भाभी और यह रही गुड्डी ।"

भाभी नाम से पुकारनेवाली लड़कियों में दो ही के स्वर से मैं परिचित थी । एक थी मेरी लड़की सुधा, जिसकी मृत्यु २१ वर्ष की आयु में चार साल पहले हो चुकी थी और एक थी मेरी दूसरी लड़की जयमाला, जो इस समय मेरे पास ही बैठी थी । जयमाला की ओर ही वह दो साल की बालिका हाथ से संकेत करके कह रही थी–"यह है गुड्डी ।" 'गुड्डी' नाम ही जयमाला का बचपन का नाम था । इन दिनों उस २५ साल की विवाहिता लड़की को गुड्डी नाम से कोई नहीं पुकारता था ।

कुछ दिन पहले मिली चिट्ठी और भाभी तथा गुड्डी नाम सुनकर एक बार तो मेरे रोमांच हो आया । मन कांप उठा । दिल में कई प्रश्न उठने लगे । किंतु मैं एक कट्टर आर्यसमाजी की पत्नी थी । किसी भी बात को बिना तर्क के मान लेना मेरे स्वभाव के विरुद्ध था ।

मेरा मन संदेहों में डूब रहा था और वह दो साल की बालिका मेरी गोद में आ बैठी थी । उसे गोद से दूर करने का साहस मुझमें नहीं था । बच्चों से मुझे स्वाभाविक प्रे था । आश्रम का कोई भी बच्चा मेरी गोद में आ बैठता था ।

प्रश्न करने पर मालूम हुआ कि इस बालिका का नाम सरला था । उसकी मा का नाम था संध्या । संध्या बी० ए० पास करके आश्रम में अध्यापिका का कार्य कर रही थी । इससे पहले मैंने संध्या को नहीं देखा था । कुछ दिन पहले ही वह आश्रम में आयी थी ।

मेरी बड़ी लड़की जयमाला ने, जिसे दो वर्षीया सरला गुड्डी कह रही थी, उसे अपने पास बैठा लिया और उससे कुछ प्रश्न किये । मैंने भी सरला की मां संध्या से पूछा–"यह और भी कुछ कहती है या नहीं ?"

संध्या ने बतलाया कि यह कई बार कह चुकी है कि मेरी बड़ी कोठी है । कई हाथी हैं, बगीचा है, मोटर है ।

"ये सब बातें इसने कब कहीं थीं ?" मैंने पूछा ।

संध्या ने बताया –"एक दिन कोई व्यक्ति आम मांगने आया । मैंने कह दिया–मेरे यहां नहीं हैं । सरला पास में खड़ी थी, कह उठी, हैं क्यों नहीं, हमारे पास हैं ।"

"कहां हैं बेटी ?" मैंने डांटते हुए पूछा ।

"कोठी पर हैं" इसने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया ।

एक और घटना की चर्चा संध्या ने उसी समय की । उसने बताया कि एक दिन श्रीमती मालती कुछ लीचियां लेकर आश्रम में आयीं । उन्हें देखकर बालिका ने कहा–

"ये तो अच्छी नहीं हैं।" मैंने कहा—"अच्छी कौन-सी हैं?" वह बोली—"मेरी कोठी पर बड़ी अच्छी लीचियां हैं।"

संध्या ने कहना जारी रखा—"मैं इन बातों को कुछ भी न समझ पायी थी। यह भी नहीं जान पाती थी कि यह दो साल की लड़की किस कोठी की बात कर रही है। कुछ दिन पहले एक बाबा आये थे। उनसे भी इसने ऐसी ही बातें की थीं। जाते हुए वे कह गये थे—यह लड़की पिछले जन्म में बड़ी कोठी में रहती थी। उसकी स्मृति ही यह इस जन्म में साथ लायी है। इसकी बातों में रस लेकर बाबाजी को विश्वास हो गया था कि यह यहीं की किसी कोठी की बात कह रही है। बार-बार यह कोठी के हाथी की बात कहती थी। बाबाजी ने हाथीवाली कोठी के बारे में इधर-उधर कुछ पूछताछ भी की।

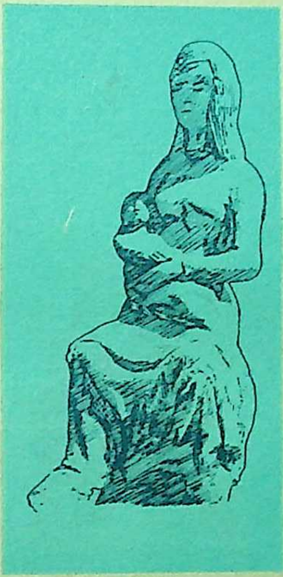

वात्सल्य

"उन्होंने मुझे कहा था कि यह कोठी वही हो सकती है, जहां आप रहती हैं। लेकिन मुझे आपसे यह सब कहने में संकोच होता था। मैं चुप रही। लेकिन आज आपको दरवाजे पर मोटर से उतरते देखकर सरला फिर खुशी से चीख उठी—'यह है मेरी मोटर' और इस समय यह मेरा हाथ पकड़कर आपके सामने खींच लायी है। मुझे माफ करें, कोई अपराध हुआ हो, तो क्षमा करें। मैं इसे वह सब भूल जाने को कह दूंगी।"

संध्या ने एक अपराधिनी की मुद्रा में यह सब कह दिया था। सब कहकर वह सचमुच अपराधिनी की तरह ही हाथ जोड़े खड़ी हो गयी।

मैंने कहा—"क्षमा मांगने की कोई जरूरत नहीं। लेकिन यदि जो कुछ तुम कह रही हो, वह झूठ हुआ तो उसका दंड क्या होगा, जानती हो?"

संध्या ने कहा—"जानती हूं वंदनाजी, मुझे विद्यालय से बाहर निकाल दिया जायेगा। जो कुछ मैंने आपसे कहा है वह तो बिलकुल सच है; मगर यह बात आगे न बढ़े, इसलिए यदि आप मुझे निकाल दें, तो भी आप अन्याय नहीं करेंगी। मैं इस संबंध में बिलकुल खामोश रहूंगी। इस लड़की को भी डांट-डपटकर समझा लूंगी। आप चिंता न करें।"

× × ×

मेरे ही वश में होता, तो मैं शायद इस बात को वहीं खत्म कर देती और संध्या को कुछ प्रलोभन देकर भी चुप करा देती। मैं जानती थी कि कुछ ऐसे ही झूठे प्रसंग बनाकर लोग पैसा ऐंठने की कोशिश किया

करते हैं ।

मेरी लाखों की जायदाद में हिस्सा बटाने की इच्छा किसी की भी हो सकती थी ! मैं अभी डावाडोल-सी हालत में थी कि जयमाला ने गोद में बैठी सरला से कई प्रश्न पूछ लिये । वह इसकी तह तक जाना चाहती थी । आखिर उसने यह भी पूछा—"अब भी तू अपनी कोठी पहचान लेगी?"

सरला ने 'हां' में जवाब दिया ।

मोटर बाहर खड़ी ही थी । उसे साथ लेकर हमने मोटर आगे बढ़ायी । बाजार में सेठजी भी मिल गये । वह हमारी राह देख ही रहे थे । उन्हें भी हमने साथ में ले लिया । उन्हें देखते ही सरला 'बाबूजी' कहकर गले से लग गयी ।

मैंने सेठजी को सारी बातें बता दीं । उनका कौतूहल भी जाग उठा था । जयमाला के इस प्रस्ताव से कि लड़की को कोठी पहचानने को कहा जाये, उनकी भी सहमति थी ।

मोटर लगभग दो मील का रास्ता तय करके हमारी कोठी के पास पहुंची । हम सब सहमे बैठे थे । सभी का मन यह जानने को उत्सुक था कि लड़की इस कोठी को पहचानती है या नहीं ।

यह कोठी ५० बीघा जमीन में फैली हुई है । अंदर आने के दरवाजे से बाहर जाने के दरवाजे का फासला भी काफी था । इस बीच मोटर की रफ्तार और भी बढ़ा दी गयी, जिससे कोई शक न हो । मगर मोटर जैसे ही बाहर जाने के दरवाजे के पास पहुंची, सरला उछलकर बोल उठी—"ये है मेरी कोठी, अंदर चलो ।"

मोटर से उतरकर वह तेजी से अंदर दौड़ गयी । पहले कमरे में सेठजी की बैठक थी । कमरे के अंदर जाकर सरला गुमसुम-सी खड़ी रही । जयमाला ने पूछा—"इसे पहचानती है ?" सरला ने धीरे-से सिर हिला दिया—"नहीं।"

अपने मन का संदेह अभी मेरी जबान तक नहीं आया था कि सेठजी ने 'इसे कैसे पहचानेगी ? यह बैठक तो पिछले साल ही बनी है' कहकर समाधान कर दिया ।

इस बीच सरला अगले कमरे में पहुंचकर उछल रही थी और चिल्ला रही थी—"यह है मेरी अलमारी ।"

यही वह अलमारी थी, जिसमें मेरी लड़की सुधा ५-६ साल पहले तक अपनी पुस्तकें रखा करती थी । उसे धार्मिक पुस्तकों के स्वाध्याय का व्यसन था । पढ़ने में वह कुशल थी । बनारस से बी० ए० की परीक्षा में पास होकर वह यहां आयी थी । उसकी बड़ी इच्छा थी एम० ए० पास करने की; मगर वह बीमार हो गयी । सात महीने तक वह चारपाई पर पड़ी रही । तब भी वह धार्मिक पुस्तकें पढ़ा-सुना करती थी ।

अलमारी तो उसने पहचान ली और चिल्लायी—"यह मेरी अलमारी है"; मगर जब अलमारी के किवाड़ खोले, तो उसने शिकायत-भरी आवाज में कहा—" ये पुस्तकें मेरी नहीं हैं, किसकी हैं ?"

पास में ही जयमाला खड़ी थी, बोली—

"ये मेरी हैं ।"

"तेरी अलमारी तो वह है—कहकर सरला ने सामनेवाली अलमारी की ओर इशारा किया ।

वस्तुतः वह सामनेवाली ही अलमारी थी पहले जयमाला की । सुधा की मृत्यु के बहुत दिन बाद जयमाला ने अपनी पुस्तकें उसकी अलमारी में रख दी थीं ।

इसके बाद तो सरला ने घर की सब चीजें पहचानीं । कौन चीजें किसकी हैं, यह भी बतलाया ।

कोठी से बाहर आकर वह लीची के बाग की ओर गयी । वहां उसने लीची के वे पेड़ दिखलाये, जिनसे लीचियां उतारकर वह खाया करती थी ।

हमारा माली भी वहीं खड़ा था । उसे वह नहीं पहचान सकी । मगर उसकी १२-१३ साल की लड़की को वह झट पहचान गयी । उसे देखकर वह कहने लगी—"तू तो इतनी-सी थी और कच्छी पहनती थी ।"

हम सरला की परीक्षा ले रहे थे । हमारे मन में संदेहों का अंबार लगा था । मगर उसकी बातों से मेरा ही नहीं, मेरे पति का भी संदेह दूर हो गया ।

हमने उसी दिन से समझ लिया कि सुधा की जिस आत्मा ने छः बरस पहले अपने रोगी शरीर को छोड़ा था, उसने ही यह नया जन्म लिया है ।

सुधा मेरी बहुत ही प्यारी लड़की थी । रोगी होने के बाद उसे मृत्यु का आभास हो गया था । उसकी वृत्तियां पूर्णतः अंतर्मुखी हो चुकी थीं । अंतिम दिनों में वह भगवान के ध्यान में ही सारा समय बिताती थी । शारीरिक कष्टों से व्याकुल होना वह बिलकुल भूल चुकी थी ।

युवावस्था में ही उसका मन संसार-भोगों से विरक्त हो गया था । सदैव सूती सफेद वस्त्र पहनना उसका अभ्यास था । कभी मैं रेशमी साड़ी पहनने को कहती, तो वह यह कहकर इंकार कर देती कि "रेशमी कपड़े पहनने से मुझे ऐसा लगता है कि रेशम के कीड़े मुझे काट रहे हैं ।" बीमारी के दौरान डाक्टरों ने कई बार 'लिवोजन' के औषध सेवन के लिए कहा । मगर सुधा ने दवाई न ली । उसका कहना था—"इसमें जीवित पशुओं के लिवर का उपयोग किया जाता है । मैं पशुहत्या द्वारा प्राप्त कोई औषध नहीं लूंगी ।"

शायद उसे मृत्यु से बहुत दिन पहले ही मृत्यु के दिन का अनुमान हो गया था । बहुत आग्रह से उसने यज्ञ करवाया और पूर्णाहुति के दिन ही शरीर छोड़ दिया । स्वयं आहुत हो गयी वह !

सुधा मेरी लड़की थी । उसकी आत्मा ने मेरी कोख से जन्म नहीं लिया, इसलिए अब वह मेरी लड़की नहीं है; मगर अब स्नेह उस पर अपनी लड़की-सा ही है और मैंने उसका नाम वसुधा रख लिया है ।

उसकी नयी मां ने मुझे अपना स्नेह देने से रोका नहीं । अब वह और मैं, दोनों ही उससे मातृवत् स्नेह करती हैं । मगर मां की सब जिम्मेदारियां तो उसकी नयी मां ही

उठाती है । मैं उसकी कठिनाइयों को यथाशक्ति सुगम बनाने का यत्न करती रहती हूं । किंतु संसारी व्यवहार की पेचीदगियां ऐसी हैं कि उसे लड़की के पूरे अधिकार नहीं दे सकती । किंतु अब इसका मुझे दुःख नहीं है । अपने नये जन्म के साथ वह अपना भाग्य लायी है । मैं उसका शुभ चाहती हूं ।

एक दिन मैंने उससे पूछा–"तू कहां गयी थी ?" आसमान की ओर इशारा करके उसने कहा–"वहां ।"

"तूने वहां भगवान को देखा ?"

"वहां तो बहुत-से भगवान देखे मैंने ।"

"वहां क्या होता है ?"

"वहां खूब सैर करने को मिलती है ।" उसका उत्तर था ।

सरला या वसुधा अपनी नौ वर्ष की आयु तक पिछले जन्म की बातें कहती रही, अब वह सब भूल चुकी है । अब उसका मेरा संबंध इस जन्म की स्नेह-स्मृतियों से ही बना हुआ है । अब पूर्वजन्म की कोई बात वह नहीं कहती । अपनी कोठी की बात भी अब उसके मुख पर नहीं आती ।

उसे अब वह फिर विस्मृत-सा हो गया है । मैं उसे अपनी ही लड़की मानती हूं; किंतु उसकी पुराने जन्म की बहन उसे नहीं अपनाती । उसे मेरा वसुधा को पुत्रीवत् मानना सह्य नहीं । उसके ससुरालवालों ने उसके दिल में वसुधा के लिए विष भर दिया है । उसे डर है कि कहीं मेरी जायदाद का एक भाग उसे भी न मिल जाये ।

सरला या वसुधा अब ८-वीं श्रेणी में पढ़ती है । उसे पूर्वजन्म की स्मृति से कष्ट ही हुआ । ईश्वर ने सबको विस्मृति देकर उनका उपहार ही किया है । वसुधा के कर्म-भोगों ने उसे स्मृति भी दे दी, इसमें भी भगवान की कुछ इच्छा होगी ।

*

निमंत्रण

खान साहब के यहां एक पार्टी का आयोजन था और बहुत से मेहमान आ रहे थे । दफ्तर से लौटते समय खान साहब को अचानक उनके एक दूर के रिश्तेदार मिल गये, जो बहुत गरीब थे । खान साहब ने उन्हें रास्ते में ही रोककर कहा– "भाई साहब, मैं आपकी तरफ जाने ही वाला था । आज शाम को गरीब खाने पर तशरीफ लाकर खाना तनावुल फरमाइये ।"

"आज शाम ?" उनके गरीब रिश्तेदार ने सोचते हुए कहा–"आज तो मुश्किल है, कल शाम अलबत्ता आ जाऊंगा ।"

"चलिये कल शाम ही सही ।" खान साहब ने मुरव्वत में आकर कहा–"आज शाम आप कहीं और निमंत्रित हैं क्या ?"

"जी हां, आज शाम आपकी बेगम साहिबा ने मुझे खाने पर बुलाया है ।" —मुगनी

*

बंगला कहानी

अनथाही गहराइयां

नरेंद्रनाथ मित्र

सड़क के मोड़ पर खड़ा-खड़ा समीर अचानक अधीर होकर कह उठा—"नहीं शायद अब एक भी टैक्सी नहीं मिलेगी। रविवार की शाम को क्या पूरा शहर अपनी-अपनी पत्नी को लेकर घूमने निकल पड़ा है? तुमने देखा, जितनी भी टैक्सियां गुजरीं, एक भी खाली नहीं थी। मेरी तरह, क्या पूरे शहर ने ही नयी शादी की है? देखा न, सब जोड़े-जोड़े थे?"

झरना हौले-से मुस्कराकर बोली—"तुम्हें शायद बड़ी ईर्ष्या हो रही है?"

समीर पत्नी की ओर देखकर हंसा—"किस दु:ख से मैं उनसे ईर्ष्या करूं? तुम्हें ही देखकर सब ईर्ष्या करने लगेंगे।"

झरना तनिक लज्जित होकर बोली—"हटो जी!"

अपरूप सुंदरी तो नहीं, हां देखने में अच्छी-भली है झरना। उम्र इक्कीस-बाईस की होगी। गत वर्ष बी०ए० किया है उसने। लेकिन इतने से ही विद्या-बुद्धि बहुत बढ़ती है, ऐसा समीर का विश्वास नहीं है। इतना जरूर है कि कालेज से निकलने के समय एक अहंकार प्राय: सभी ले आते हैं। पर झरना नहीं लायी है। बड़ी नम्र स्वभाव की लड़की है। देव-द्विज पर कितनी श्रद्धा है, इसकी समीर ने जांच नहीं की है। परंतु पति पर उसकी श्रद्धा है, यह जानकर वह खुश है और संतुष्ट भी है।

झरना ने कहा—"और कितनी देर तक इंतजार करोगे। आज अब टैक्सी मिलने की उम्मीद नहीं है। ट्राम या बस से भी तो जाया जा सकता है। बेकार ज्यादा खर्च करके क्या फायदा?"

झरना को समीर की गृहस्थी में आये, सिर्फ तीन ही हफ्ते हुए हैं। उसे खर्च-वर्च की चिंता इसी बीच लग गयी है, यह नोट कर समीर को अच्छा ही लगा। उसे भी बेहिसाब खर्च करने की छूट कहां? आफिस से जो तनख्वाह मिलती है, वह तीन सौ से कम ही है। उसमें से कुछ विधवा बहन और भानजों को देना पड़ता है। मां वृद्धा है, बीमारी-आजारी लगी रहती है। धंधा-रोजगार बगैर बढ़ाये, अब चलना मुश्किल है। परंतु शादी के तुरंत बाद ही भविष्य की चिंता सुहाती नहीं। बीच-बीच में बेहिसाबी और बेपरवाह जीवन भी मनुष्य को चाहिये। इसीलिए 'बहूभात' के दिन समीर ने कर्ज लेकर आत्मीय तथा बंधुवर्ग को

निक्का-मीठा भोजन कराया । और उन सभी ने नवदंपति को निमंत्रण दिया है । समीर उन लोगों के घर टैक्सी पर ही जा रहा है । कुछ महीनों के बाद तो फिर नोन तेल-लकड़ी का हिसाब करना ही है । फिलहाल ब्याह के मंडप से उठी वधू के हाथ में वह कविता की कापी भले ही न दे सके; पर हिसाब-किताब की कापी देना, जैसे उसके पौरुष को बींधता था ।

"लेकिन इस भीड़ के बीच तुम ट्राम-बस में चढ़ सकोगी ?" समीर ने पूछा ।

"क्यों नहीं ?" झरना बोली ।

समीर ने कहा—"खड़ी-खड़ी जा सकोगी?"

झरना हंसकर बोली—"अगर बैठने की जगह नहीं मिलेगी, तो खड़े-खड़े ही जाना पड़ेगा । जा क्यों नहीं सकूंगी ?"

समीर ने हंसकर कहा—"लेकिन मैं नहीं जा सकूंगा । इससे तो अच्छा यह कि हम लोग रिक्शे पर चलें ।"

और तुरंत ही हाथ के इशारे से समीर ने एक रिक्शावाले को बुला लिया । बोला—"पाल स्ट्रीट, श्याम बजार ।"

झरना बगल में बैठकर मृदु-प्रतिवाद के स्वर में बोली—"रिक्शे से काफी समय लग जायेगा ।"

समीर ने कहा—"लगने दो । समय तो लेकर चले हैं । अभी-अभी तो सांझ हुई है । ज्यादा आगे जाकर क्या होगा ?"

झरना बोली—"लेकिन परेश बाबू ने सांझ के पहले ही पहुंचने को कहा था । उन्होंने यह भी कहा था कि सिर्फ भोजन के लिए ही नहीं, थोड़ी-बहुत गपशप के लिए भी आना । काफी देर ठहरना पड़ेगा।"

समीर ने कहा—"छोड़ो भी, ऐसा सभी कहते हैं । आजकल के आदमी के पास क्या इतना समय है ? गप-सड़ाके करने के वे दिन अब नहीं रहे । आज का आदमी काफी व्यस्त है । समाज और सामाजिकता सभी कुछ घंटे-मिनिट के माप-तौल में है ।"

झरना चुप रही ।

समीर ने कहा—"इसके अलावा तुम परेश भैया के साथ बातचीत का कुछ भी मजा न पाओगी ।"

झरना ने कहा—"क्यों ?"

"याने दो-चार बात करने के बाद शरीफ आदमी को और बात ढूंढ़े नहीं मिलती । ऐसे वक्त, जो सामने होता है, वह बड़ी मुश्किल में पड़ जाता है । बातचीत अकेले तो नहीं चलती । हालांकि शरीफ आदमी आदर-सम्मान करना चाहते हैं और करना जानते भी हैं । ऐसी बढ़-बढ़कर खातिरदारी करते हैं कि किसी-किसी समय ऊब-सी लगती है । वहां जाने पर किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा खातिरदारी हो सके बेचारे सोच भी नहीं पाते । जो भी देखता है, झुंझला जाता है ।"

झरना बोली—"मैंने उन्हें दो दिन देखा है; मुझे तो अच्छे लगे ।"

समीर ने कहा—"तुमने ठीक ही अंदाज किया है, आदमी वे भले ही हैं । लेकिन क्या सब अच्छी चीजें हर वक्त अच्छी लगती हैं ? वैसे कहना उचित नहीं; पर तब भी

आजकल मुझे वे बड़े 'बोरिंग' लगते हैं ।"

झरना हंस उठी–"वे जरा ज्यादा शांत-शिष्ट हैं, इसीलिए तुम्हें ऐसा लगता है । तुम जरा दूसरे किस्म के लोग पसंद करते हो । उनकी स्त्री अच्छी चालाक-चतुर और फुर्तीली हैं । उस दिन काफी हंसी-मजाक किया था उन्होंने । लेकिन कुछ पुराने ढंग की और देहाती किस्म की हैं । तुम्हें बुरा तो नहीं लगा ?"

समीर ने कहा–"अरे, नहीं-नहीं । तुमने ठीक ही पकड़ा है । वह सब हंसी-मजाक पहले जितना अच्छा लगता था आजकल नहीं । इन दिनों भाभी और भी पुराने ढर्रे की बुजुर्ग-सी लगती हैं । बच्चे-कच्चे बहुत-से हो गये हैं । उन्हीं को संभालने में हमेशा व्यस्त रहती हैं । पर इतना जरूर है कि वे अच्छी गृहिणी हैं । हालत कोई विशेष अच्छी नहीं है, फिर भी उसी में अच्छी तरह चला लेती हैं । खिलाना-पिलाना, आदर-सम्मान करना उन्हें खूब आता है । लेकिन कठिनाई क्या है, जानती हो ? प्रीति, प्रेम, बंधुत्व के भी तरीके होते हैं । एक ही तरीका हमेशा मनुष्य को एक-सा नहीं लगता । उनका कोई दोष नहीं । वे हमेशा एक ही जगह पर हैं । मैं ही बदल गया हूं ।"

झरना ने कहा–"छोड़ो भी, दो-कौर खाकर ही तो आना है । इतने सोचने की बात क्या है ?"

समीर ने कहा–"क्या सिर्फ दो-कौर खाना ही ? पूरी एक शाम बिताकर आना है । हालांकि आज की इस शाम के लिए मैंने कितना क्या सोचा था । जानती हो, आफिस में छः दिन हड्डी-तोड़ मेहनत करनी पड़ती है । इसके बाद सातवां दिन तुम अपनी पसंद के मुताबिक बिताना चाहोगी । लेकिन क्या ऐसा होता है ? तुम पर हजारों पारिवारिक कर्तव्य और सामाजिक दायित्व लादे जायेंगे । मैंने परेश भैया से पिंड छुड़ाने की क्या कम कोशिशें की थीं ? कितना कहा कि परेश भैया और किसी दिन आ जाऊंगा, मेरी स्त्री भागी तो नहीं जाती । वह बगैर दो-चार वर्ष देखे मुझे तलाक नहीं देने की । उसे और किसी दिन ले आऊंगा । लेकिन देखा तुमने, कैसे हठी व्यक्ति हैं ।"

झरना तनिक मुस्करायी–"मुझे जान पड़ता है कि भले आदमी ने तुम्हें निमंत्रण देकर जैसे महापाप कर डाला है ।"

समीर ने कहा–"तुम हंस रही हो । लेकिन यह अभी सोच भी नहीं सकती कि वहां जिस बात में आनंद नहीं मिलता, उसी में आनंदित होना होगा । जिस बात पर तुम्हें हंसी नहीं आती, उसीपर हंसना होगा । यह कैसा सामाजिक अत्याचार है ? देखो भला, अपनी इच्छा के खिलाफ तुम किसी का उपकार कर सकती हो; परंतु वैसा करके आनंदित होना जरूरी तो नहीं है । खिलाना उनका 'फैशन' है । भाभी पांच किस्म की रसोई बनाना पसंद करती हैं । लेकिन मैं अगर खाना उसी तरह का पसंद न करूं तो ? सब लोग एक किस्म के तो नहीं होते--आहार से ज्यादा मुझे तो विहार में आनंद आता

है। चेहरा यों लाल न करो। मैं बात दूसरे अर्थों में कह रहा हूं।"

झरना लजाकर बोली—"मैंने चेहरा लाल तो नहीं किया। तुम सब बातों में ज्यादती करते हो।"

समीर ने कहा—"और क्या कर सकता हूं। तुम्हारे गले, कान तथा हर अंग पर तरह-तरह के नाम के गहने हैं। मेरे पास सिर्फ एक ही गहना है जिसका नाम है अतिशयोक्ति ?"

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। अचानक समीर चिल्ला उठा—"अरे ओ रिक्शावाले,ठहरो ठहरो!"

झरना चकित होकर बोली—"क्या बात है ?"

समीर ने कहा—"उस मोड़ पर जो फ्लैट है, उसमें अपना रणजीत रहता है। बर्मा शेल का एक बड़ा अफसर है। ब्याह में वह आया था। उसने एक कीमती साड़ी दी थी, याद नहीं है तुम्हें ? चलो जरा हो आयें। घर पर है या नहीं, कौन जाने ? शाम के बाद उसका घर पर मिलना कठिन है। फिर भी एक 'चांस' लिया जाये।"

झरना तनिक आपत्ति के स्वर में बोली—"लेकिन देर तो नहीं हो जायेगी ?"

इस बार समीर झुंझलाकर नयी-नवेली बीवी को डांट बैठा—"देरी-देरी की रट लगा रही हो। अभी सिर्फ साढ़े-सात ही त बजे हैं। अभी भी काफी समय है। उ लोगों के घर में देर से खाना-पीना होत है। यहां तो बस, जाना और आना ही है मिलेंगे भी या नहीं, कोई ठीक नहीं।"

रिक्शावाले को खड़ा करके, पत्नी क साथ लेकर समीर उस तीन-तल्ले मका की ओर बढ़ चला। चलते हुए उसने पत्न से कहा—"तुम्हें मालूम होना चाहिये रण जीत एक 'सक्सेसफुल मैन है। देखते-ही-देखते सरसर कर उन्नति के शिखर प पहुंच गया है। जानत हो, यह आरोहण ही जीव का सब कुछ है। अने मित्र उससे भीतर-ही भीतर ईर्ष्या करते हैं पीठ पीछे उसकी निंद करते हैं। लेकिन इस उसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। सफलता के कवच से वह सिर से प तक ढंक है। सुना है, सात-आठ सौ क तनख्वाह मिलती है। और भी बढ़ेगी कंपनी दमदम की तरफ एक क्वार्टर देगी अच्छा ही होगा। एरोड्रोम का काम है आफिस से नजदीक रहेगा !"

घंटी दबाने पर, कुछ देर बाद दरवाज खुल गया।

रणजीत ने कहा—"अरे, तुम !"

समीर ने कहा—"तुम इस वक्त घर प

नवदंपति

पिकासो का एक चित्र

मिलोगे, ऐसी आशा ही नहीं थी मुझे।"

रणजीत ने कहा—"झूठे ! तब कौन-सी दुराशा लेकर इतनी रात को मेरे घर में धरना देने आया है ?"

समीर हंसकर बोला—"नहीं भैया, 'पास पोर्ट' साथ ही है ।" कहकर वह जरा बगल हट गया ।

रणजीत देखकर उल्लसित हो गया—"अरे......रे......रे......रे...... ।" भीतर जाकर आवाज लगायी —"रूबी, रूबी ! देखो कौन आया है ?"

सोफा सेट से सजाया हुआ ड्राइंग रूम है । शेल्फ पर एक बड़ा-सा रेडियो है । कुछ हटकर एक तिपाई पर टेलिफोन रखा है । एक अपरिचित युवक उसे हाथ में लेकर किसी से बात कर रहा है ।

रणजीत की पत्नी रूबी से समीर की अच्छी जान-पहचान है । एक जमाना था, जब एक साथ खूब बैठकबाजी की थी उन्होंने । रूबी भीतर के कमरे से उनकी अभ्यर्थना के लिए निकल आयी । सभी काफी खुश थे ।

रूबी ने कहा—"कितने दिनों बाद आये हो, कहो तो ?"

समीर बोला—"आता कैसे, तुम्हारे पति-देव दरवाजे से ही भगाये दे रहे थे । ऐसे ईर्ष्यालु पति की गृहस्थी तुम कैसे चलाती होगी ?"

रूबी हंसकर बोली—"ज्यादा बको मत । अब तुम्हारी भी परीक्षा के दिन आ गये हैं।"

झरना को साथ लेकर रूबी बगल के कमरे में चली गयी । वह युवक जो टेलिफोन कर रहा था, फोन रखकर हताश स्वर में बोला—"नहीं रणजीत भैया, कोई नहीं मिला । शिबू, सुखेन कोई भी नहीं है घर पर ।"

समीर विषय न समझकर बेवकूफ की तरह देख रहा था । रणजीत ने बात समझते हुए कहा—"ताश के साथी की ढुंढ़ाई हो रही थी, सारे कलकत्ता-भर में । पर नांतू अब किसी की जरूरत नहीं । ईश्वर के भेजे हुए दूत खुद आ पहुंचे हैं, देख रहे हो न ? तुम्हारी पत्नी मिसेस बोस ब्रिज खेलना जरूर जानती होंगी । कम-से-कम कोर्ट-पीस जानने से ही काम चल जायेगा ।"

समीर ने हंसकर कहा—"इतना मुझे मालूम नहीं है । लड़की देखते वक्त यह पूछा नहीं था । लेकिन मैं देर नहीं कर सकूंगा । रिक्शा खड़ा है ।"

रणजीत बोला—"ओह, रिक्शा ! अब और क्यों रुका खड़ा है । उसे विदा करके दूर करो । जाओ नांतू, रिक्शावाले को दफा कर दो ।"

समीर असहाय-सा, तनिक बाधा देकर बोला—"अरे, यह क्या कर रहे हो । मुझे परेश भैया के यहां जाना है ।"

रणजीत बोला—"कौन, वही अरसिक परेश भैया ? हम लोगों की इस मित्र-मंडली में मूसरचंद बनने का उसका क्या अधिकार है ?"

समीर हंसकर बोला—"अधिकार नहीं है, तब भी जाना होगा । उसके यहां हम

दोनों को भोजन का निमंत्रण है ।"

रणजीत बोला–"अरे छोड़ो भी अपना निमंत्रण । बाद में होगा । दो हाथ खेलकर जाओ । दरअसल, तुम्हारे साथ जो दो नये और कोमल हाथ जुड़े हैं, उनका खेल देखने की मेरी इच्छा है । मैं ताश में चोरी नहीं करूंगा । पर भई, चोरी-चोरी तुम्हारी पत्नी की ओर देखूंगा, यह पहले ही कहे देता हूं । मैं छुट्टा-चोर हूं, डाकू नहीं ।"

अंततः खेल जमा और खूब जमा । ताश के पुल पर से डेढ़ घंटे तक समय किस तरह पार हो गया, कोई भी न जान पाया ।

बीच में समीर फुसफुसाया–"लेकिन परेश भैया राह देखते बैठे होंगे ।"

रणजीत बोला–"बैठे क्यों होंगे ? हाथ के पास ही फोन है । मुंह के पास लेकर कह दो ।"

"लेकिन उनके घर में फोन नहीं है ।"

रणजीत विरक्त होकर बोला–"अजीब मुसीबत है ! जिस घर में फोन नहीं, उस घर का निमंत्रण तुम क्यों स्वीकार करते हो ? अगल-बगल कहीं फोन नहीं है ?"

ढूंढ़-ढूंढ़कर समीर ने परेश के पड़ोसी डाक्टर अमूल्यरतन भट्टाचार्य का नाम निकाला । इसके बाद मित्र की ओर देखकर बोला –"कहो, क्या कहूं ?"

रणजीत ने डांट बतायी–"क्या नासमझ बनते हो ! क्या कहोगे यह भी सिखाना पड़ेगा ? जिन सब बहानों से आफिस से नागा करते हो, उसी में से एक बतादो । बीमारी-आजारी ही ठीक बैठेगी ।"

और उसने फोन पर कहा कि समीर बोस की पत्नी जरा अस्वस्थ हो गयी हैं । इसीलिए वे आज भोजन पर आ नहीं सकेंगे ।

ताश का खेल फिर शुरू हो गया । कई घंटे मजे में गुजर गये । चतुर गृहिणी रूबी ने इसी बीच भोजन भी तैयार करवा लिया, घर में नौकर-चाकर थे ही ।

मीठी-मीठी बातों के साथ समीर ने सपत्नीक भोजन भी वहीं कर लिया । लौटते-लौटते बारह बज गये । तकदीर तेज थी कि टैक्सी तुरंत मिल गयी ।

मकान के सामने के कमरे में अब भी बत्ती जल रही है । शायद मां धर्मग्रंथ पढ़ रही हैं । समीर ने कुंडा खटखटाया । मां ने आवाज नहीं दी; पर उनके पैरों की आहट मिली । कुछ देर बाद दरवाजा खुला ।

सरोजिनी गंभीर स्वर में बोली–"तुम लोग आ गये ?"

समीर ने कहा–" हां मां, रात तनिक ज्यादा हो गयी ।"

सरोजिनी बोली–" तू कहां गया था, सिनेमा ?"

समीर बोला–"वाह, भला सिनेमा क्यों जाऊंगा ?"

"तब फिर कहां गया था ? परेश के घर तो नहीं गया ।"

रंगे हाथों पकड़े गये चोर की तरह समीर बोला–"तुम्हें कैसे मालूम ?"

सरोजिनी बोली–"झरना, तुम भीतर जाओ । दो कैरियर लेती जाओ ।"

इतनी देर बाद एक बड़े टिफिन कैरि-

यर पर समीर की नजर पड़ी । डरते हुए उसने कहा–"उसमें क्या है मां ?"

"परेश रख गया है ।" मां ने कहा–"उसमें क्या है, मैंने देखा नहीं है । देखकर करती भी क्या । तेरी बहू की तबीयत खराब है, ऐसा ही कुछ तूने कहा था न परेश से । वह देखने आया था । लगे हाथ उसकी पत्नी ने कैरियर में कलिया की तरकारी-वरकारी भेज दी है शायद । सुना, उसकी पत्नी बेचारी पूरी शाम रसोई बनाती रही । सब बेकार गया । लड़के-लड़कियां नयी काकी को देखने के लिए अनेक बार घर-बाहर करते रहे । परेश यह सब कह रहा था । तुम लोगों ने यह क्या किया ! एक गरीब स्कूल-मास्टर को कुछ रुपयों का दंड लगा दिया । खैर, जाने दे, जो किया सो किया । खायेगा या खाकर आया है ? "

"खाकर आया हूं ।"

"कहां से ? होटल से क्या ? आज फिर उसी चीना होटल में गया था शायद ।"

समीर चिढ़कर बोला–"नहीं, तुम्हें तो पूरी कैफियत लेना जरूरी ही है । रणजीत के यहां गया था । उसने किसी तरह भी नहीं छोड़ा । उसे जब तब 'डिस्ओबिलाइज' किया जा सकता है क्या ? उसने मेरा बहुत उपकार किया है । अभी उस दिन शादी के वक्त पर दो सौ रुपये उसके पास से उधार लिये थे ।"

मां ने और कुछ नहीं कहा । समीर सोने के कमरे में चला गया । बड़े-से आईने के सामने खड़ी होकर झरना जेवर उतारकर रख रही थी । पति की ओर बिना देखे वह मृदु मुस्कराकर बोली–"मां पर इतना क्यों बिगड़ रहे थे । गलती तो तुम्हारी ही थी ।"

समीर विरक्त होकर बोला–"छोड़ो, छोड़ो ! चटपट काम पूरा करके आती हो, तो आओ । मुझे नींद आ रही है ।"

सोने के लिए जल्दी से तैयार होकर झरना समीर के पास आकर बोली –"मुझ पर नाराज हो क्या ?"

समीर बोला –"नहीं, तुम पर नहीं ।"

"फिर किस पर ?"

"खुद पर ।" कहकर समीर ने दूसरी ओर करवट बदली ।

एक मामूली-सी बात । समीर को मामूली-सी बात समझ पड़ी । फिर भी वह दांपत्य जीवन की रात्रि और रात्रि के शेष प्रहर की मीठी नींद को नष्ट करने के लिए काफी है । मजा यह कि प्रायश्चित के सिवा किसी भी भले आदमी का छुटकारा भी नहीं है । **–रूपांतर : सोमनाथ द्विवेदी**

एहसान

कहते हैं कि एक उद्योगपति ने अपने क्षेत्र के एम० एल० ए० को एक पत्र लिखा – "प्रिय महोदय, अक्सर अखबारों में आता रहता है कि अमुक विभाग की अमुक फाइल गुम हो गयी, मैं आपका यह एहसान जन्म-भर नहीं भूलूंगा, यदि आप मेरी इन्कम टैक्स की फाइल गुम करवा दें । धन्यवाद । भवदीय,......"

★

जवान को देखिये मोर्चे पर

हमलावर के लिए वह साक्षात यम है; पर निरीह प्राणियों को नाहक मरते देख उसकी आंखें नम हो जाती हैं—कठोर कर्तव्य-भावना और कोमल संवेदनाओं से ओतप्रोत, हमारे जवान की बेजोड़ तस्वीर, जिसे देखकर हर देशवासी को गर्व होगा।

लेफ्टिनेंट जनरल थोरात

यह बात याद रखने और गर्व करने योग्य है कि हमारी सेना का एक भी जवान जबरन भरती किया हुआ नहीं है। बहुत से पश्चिमी देशों में—ब्रिटेन और अमरीका में भी—अनिवार्य सैनिक सेवा का नियम है, जो जबरन भरती का ही दूसरा नाम है। चीन और रूस में इसका नाम कुछ और है; लेकिन है तो वह भी जबरन भरती ही। पर हमारी फौज संसार की उन बिरली फौजों में से है, जिसमें सारे जवान अपनी ही मर्जी से, बिना किसी स्पष्ट या गुप्त दबाव के भरती होते हैं।

अक्सर जवान देहाती होता है और किसान। वह सीधा-सादा और भोला होता है। उसके साधन और किताबी ज्ञान तो सीमित होते हैं—उत्साह और सहनशक्ति नहीं। ये तो असीम होते हैं। जब वह भरती होने आता है, तो धोती-कुरता पहने होता है; या अगर ठेठ उत्तर का है, तो पाजामा-कमीज। सेना का वातावरण उसके लिए बिलकुल नया और अनजाना होता है। उसे यह भी नहीं मालूम होता कि वर्दी कैसे पहनी जाती है। कितनी ही बार मैंने नये रंगरूटों को दायें पैर का जूता बायें पैर में और बायें का दायें में पहनते देखा है।

लेकिन गजब की शक्ति होती है उसमें नयी बात सीखने की। कुछ दिन के बाद यह विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि यह चुस्त सिपाही वही अनाड़ी लड़का है, जो जूते तक पहनना नहीं जानता था और अपनी भाषा के अलावा एक शब्द भी नहीं समझता था। इतनी जल्दी वह हिन्दी बोलने और समझने लगता है कि ताज्जुब होता है। उसकी प्रगति को देखते हुए मैं सोचा करता हूं—दूसरों को भी उसी तरह हिन्दी सीखने में क्या कठिनाई हो सकती है!

जवान को कुछ महीने तक बुनियादी ट्रेनिंग दी जाती है। इसमें वह हथियार चलाना, क्षेत्र-कौशल (फील्ड क्राफ्ट) और दूसरे विषय सीखता है। इनका उद्देश्य है उसे योद्धा बनाना। योद्धा तो वह जन्म से ही होता है और थोड़ी-सी ट्रेनिंग उसे लड़ाकों की पंक्ति में खड़ा होने लायक बना देती है। अब उसे अपनी यूनिट में भेजा जाता है। यहां उसकी ट्रेनिंग तब तक चलती रहती है, जब तक उसके मोर्चे पर जाने का दिन

नहीं आता।

और हर जवान को इसी दिन का तो इंतजार होता हैं। वह जानता है कि उसे अपार कष्ट सहने पड़ेंगे। वह यह भी जानता है कि उसके घायल होने और मारे जाने का खतरा रहेगा। फिर भी वह इस दिन का उत्साह से इंतजार करता है। क्योंकि इस दिन ही तो उसे मौका मिलेगा अपनी सूझ-बूझ और हिम्मत को शत्रु की सूझबूझ और हिम्मत के साथ तोलने का।

मोर्चे पर उसके घायल होने और मारे जाने का ही खतरा नहीं है। ऐसे भी मौके आयेंगे कि उसे भूखा-प्यासा रह जाना होगा, धूप में झुलसना और ठंड में ठिठुरना होगा, बारिश में भीगना होगा, कई-कई दिन तक गीले कपड़ों में रहना होगा, नींद और आराम से वंचित रहना पड़ेगा। लेकिन ये सब तो उसके जीवन के अंग हैं और वह उन्हें सहज भाव से झेल लेता है।

बर्मा में बादलों ने हम पर पानी की ऐसी बौछार की कि हफ्तों तक हमें गीले कपड़ों में दिन काटने पड़े। सप्लाई की लाइन में गड़बड़ हो जाने से हमें आधे राशन पर और कभी-कभी बगैर राशन के भी रहना पड़ा। कोरिया में हम ३० डिग्री शून्य के तापमान में रहे और लड़े। लड़ते-लड़ते कितनी रातें पलकों में काट दीं, इसकी तो गिनती नहीं। क्या जवान, क्या अफसर—सबने अपना सारा सामान-सरंजाम पीठ पर लादकर सैकड़ों मील कूच किया। तो ये सब खतरे भी युद्ध-भूमि में जवान के सामने आते हैं। और गजब की प्रसन्नता से वह इनका सामना करता है।

अराकान में एक बार हमारा सारा पीने का पानी चुक गया। चौबीस घंटे तक किसी को बूंद-भर पानी नहीं नसीब हुआ। किंतु क्या किसी ने शिकायत की? हर्गिज नहीं। शांतिकाल में शायद जवान किसी चीज की शिकायत कर भी बैठे; लेकिन लड़ाई के समय वह हर्गिज ऐसा नहीं करेगा।

मुझे २।२ पंजाब (अब, गार्ड्स १) की कमान संभालने का सौभाग्य मिला था। उसमें 'सिक परेड' में प्रतिदिन कोई बीस आदमी दवा लेने पहुंचते थे। ये अक्सर खांसी, जुकाम, बुखार और पेचिश की दवा लेते थे। फिर लड़ाई होने लगी और बाईस दिन तक हम लगातार लड़ते ही रहे। इस दौरान में कोई साढ़े चार सौ जवानों को दवा लेने डाक्टर के पास पहुंचना चाहिये था। पर पहुंचे कितने? एक भी नहीं। ऐसी बात नहीं कि उनमें किसी को बीमारी न हुई हो। बीमारियां जरूर थीं; लेकिन जब

मर्द के लायक काम सामने पड़ा हो, तब भला कौन जवान बीमार पड़ने की सोचेगा?

मोहम्मद अशरफ नाम के एक जवान का किस्सा मुझे याद आता है। एक छोटे-से हमले के बाद जब मैं मोर्चे को पुनः व्यवस्थित करने के लिए आगे की लाइन पर गया, तो मैंने अशरफ को एक हाथ से फावड़ा चलाते देखा। मैं एकदम बौखला उठा। क्योंकि अगर वक्त रहते हम खंदकें न खोद लेते, तो दुश्मन के जवाबी हमले में प्राणों की भारी क्षति होती। और जवाबी हमला होना निश्चित था। अशरफ को मैं गाली दे बैठता—पर तभी मेरी नजर उसकी दूसरी बांह पर पड़ी, जो बेदम होकर लटक रही थी। बेचारे लड़के की बांह में गोली लग गयी थी। जब मैंने पूछा कि मरहम-पट्टी कराने क्यों नहीं गये, तो वह बोला—"साहब, थोड़ा और खोद लूं, फिर चला जाऊंगा।"

और मुझे याद आता है पुन्नूराम। एक टुकड़ी गश्त पर भेजी गयी थी। दुश्मन ने उस पर छापा मारा। एक सिपाही खेत रहा और दूसरा घायल होकर गिर पड़ा। पुन्नू सेक्शन कमांडर था। अपने साथी को वह दुश्मन की दया पर कैसे छोड़ आता भला? उसने जो कुछ किया, वह निरा पागलपन था। प्राणों की परवाह न करते हुए वह अकेला ही शत्रु के घेरे में घुस गया, अपने साथी को बचाने के लिए। वह साथी के पास पहुंच गया और उसे उठाने के लिए झुका। लेकिन तभी दुश्मन की स्टेनगन ने उसकी छाती को चलनी बना डाला और वह वहीं बेजान होकर लोट गया। जरूर ही पुन्नू यह जानता था कि उस पर क्या गुजरेगी। लेकिन क्या उसकी परवाह की उसने?

एक और लड़का था पुतलाजी शिंदे। १९५८ में उसकी बटालियन नागा पहाड़ियों पर तैनात थी। एक रात को नागाओं ने अचानक ही उसकी पलटन को घेर लिया। एक-एक जवान के हिस्से में दस-दस नागा थे। इधर पलटन के पास कारतूस खत्म होते जा रहे थे और उधर उनका खात्मा करने के लिए नागा धंसे चले आ रहे थे। बड़ा संगीन मामला था। शिंदे ने खतरे को भांप लिया। लपककर उसने दो-तीन हथगोले उठाये, छलांग मारकर चौकी की दीवार पार की और तीर की तरह हमलावरों के बीच घुस गया। पेश्तर इसके कि हैरान नागा समझ पायें कि क्या हो रहा है, शिंदे ने पूरी ताकत के साथ उन पर हथगोले फेंके और खुद उलटे पांव भागा। दुश्मन ने उसकी टांग में गोली मार दी। लेकिन वह जिंदा बच गया और बहादुरी का उचित पुरस्कार अशोक-चक्र उसे मिला।

और उस गोरखा जवान को मैं कैसे भुला दूं! मेरे खयाल से उसका नाम जीतबहादुर था; पर मुझे ठीक-ठीक याद नहीं। दुश्मन का एक बंदूकची उसकी पलटन को आगे बढ़ने से रोके हुए था। बंदूकची सामने की पहाड़ी पर आगे बढ़ी हुई चट्टान की ओट में दुबका हुआ था और निशाना साध-साधकर एक-एक सैनिक को ढेर कर रहा था।

जीत ने अपनी पलटन को ओट में ही जाने को कहा । खुद चक्कर काटकर पेट के बल रेंगते हुए वह पहाड़ी पर चढ़ा और जा पहुंचा ठीक बंदूकची के सिर पर । बंदूकची ने भी उसके पैरों की आहट सुन ली और राइफल उसकी ओर मोड़ दी । जीत के पास बंदूक चलाने लायक वक्त नहीं था । वह बंदूकची पर धम्म-से कूद पड़ा । पूरे पंद्रह फुट की कुदान थी—बंदूकची की हड्डियां चूर-चूर करने के लिए काफी थी । बंदूकची फायर करे, इसके पहले ही जीतबहादुर की खुखरी उसके सीने में धंस चुकी थी ।

मुझे एक हमला याद है—संगीनों का हमला, जो निश्चय ही युद्ध का सबसे शानदार दृश्य होता है । हम दुश्मन की एक जमी-जमायी चौकी पर हमला कर रहे थे । हठीले दुश्मन संकट में पड़े थे, फिर भी पीछे हटने या घुटने टेकने को तैयार नहीं थे । उन्हें तोड़ने का एक ही तरीका था—सीधा धावा । हमले की पहली मुहिमों में दुश्मनों ने हमें भारी नुक्सान पहुंचाया था । हमारे अस्सी आदमी अब तक हत या आहत हो चुके थे और हमारे जवान अपने साथियों का बदला लेने के लिए बेताब हो रहे थे ।

संगीनों का यह हमला देवताओं के देखने की चीज थी । पचास गज की दूरी से हमारे जवान गोलियां दागते हुए, भूतों की तरह चीखते-चिल्लाते हुए चढ़ दौड़े । कितने ही मारे गये, कितने ही घायल हुए, बाकी आगे धंसते गये । जब वे खंदकों के पास पहुंच गये, तो दुश्मन भी उछलकर बाहर निकल आये । घायल शेरों की तरह हमारे जवान उन पर टूट पड़े । सिपाही से सिपाही भिड़ पड़ा और तब छिड़ी वह लड़ाई, जिसमें न किसी ने किसी से रियायत मांगी, न किसी ने किसी के साथ रियायत की ।

बस एक ही आवाज सुनाई दे रही थी—फौलाद से मानव-मांस कटने की आवाज, बोटी-बोटी कटने की मंद आवाज । और सुनाई दे रही थी—राइफल के कुंदों से खोपड़ियां फूटने की आवाज, या दम तोड़ते सैनिकों की आखिरी सांस की आवाज । और इस नरसंहार के बीच गूंज उठता था हमारे जवानों का भीषण रणनाद । आज भी, उस घटना के पूरे अठारह साल पश्चात् भी, उस अविस्मरणीय दृश्य का एक-एक ब्योरा मेरी आंखों के सामने अंकित है । और जब भी मैं उसे याद करता हूं, अपने जवानों की रौद्रता पर कांप उठता हूं, उनकी अप्रतिम वीरता पर अचंभित हो उठता हूं और मेरा सीना गर्व से फूल जाता है । भला ऐसे बहादुर जवानों के दल का संचालक रहकर कौन गर्व अनुभव नहीं करेगा ?

लड़ाई में जवान बड़ा ही रौद्र रूप धारण कर सकता है; लेकिन उसका सौम्य सहृदय रूप भी कभी-कभी चमक उठता है । इंफाल के घेरे के समय दुश्मन के कुछ गोले हमारे खच्चरों की लाइन पर आ गिरे । कुछ खच्चर मारे गये, कुछ जख्मी हुए । जब मैं वहां पहुंचा, तो सब खच्चर डर के मारे झुंड बांधे सटकर खड़े थे—एकदम स्तब्ध और निःशब्द । उनका सारा दर्द उनकी

बड़ी-बड़ी सुंदर, तरल आंखों से झांक रहा था। मेरा गला रुंध गया। मैंने मुंह फेर लिया और खच्चर हांकनेवाले जवानों को देखा। उन सभी की आंखों में आंसू थे।

मैंने यह भी देखा है कि जवान अपने दुश्मन के साथ कैसी वीरोचित उदारता दिखा सकते हैं। हमारी एक छोटी-सी टुकड़ी ने एक जलकुंड के ठीक सामने डेरा डाल रखा था। एक दिन जवानों ने देखा कि एक शत्रु-सैनिक पेट के बल रेंगता हुआ जलकुंड की ओर बढ़ा आ रहा है। सबने राइफलें तान लीं। "ठहरो," उनका मुखिया बुदबुदाया। उसने सिपाही के खून से लथपथ कपड़े देख लिये थे। राइफलें झुक गयीं। घायल सिपाही ने गंदले पानी के कुंड में मुंह लगा दिया। पर पहला घूंट निगलते-निगलते उसका सिर लुढ़क गया, उसकी मृत्यु हो गयी। जवानों ने एक-दूसरे को देखा। ऐसा कौन था, जिसकी आंखें नम नहीं थीं।

अपने जवानों की ये कतिपय सच्ची कहानियां मैंने आपके सामने रखी हैं। आप शायद कहेंगे कि ये बड़ी भयानक कहानियां हैं। हां, ये भयानक हैं; क्योंकि युद्ध भयानक चीज है—भीषण रूप से डरावनी चीज। ये कहानियां मैंने आपको इसलिए सुनायी हैं कि युद्ध की भयानकता का कुछ अंदाज आपको हो जाये। क्योंकि तभी आप समझ पायेंगे कि हमारा जवान अपने देश के लिए और आपके लिए क्या कुछ कर रहा है।

क्या यह सब कुछ वह चंद रुपल्लियों के लिए करता है? या कोई अधिक ऊंची, उदात्त चीज उसके सामने होती है? वह बिलकुल सीधा-सादा सिपाही है; शायद वह आपके बराबर पढ़ा-लिखा भी नहीं है। लेकिन एक बात वह हममें से अधिकांश से कहीं अधिक अच्छी तरह जानता है। वह जानता है कि उसका कर्तव्य क्या है।

['आकाशवाणी' से साभार]

ऋणी कौन

एक दिन पुरुष और नारी के बीच झड़प हो गयी। पुरुष ने कहा—"मैं दुनिया से लड़ता हूं, अपनी जान पर खेलकर तेरी रक्षा करता हूं, अपना खून-पसीना एक कर तुझे पालता-पोसता हूं, तू मेरा उपकार मान।" नारी ने उत्तर दिया—"इसमें उपकार की क्या बात है? मैं तुम्हारा साथ देकर तुम्हारे अकेलेपन को दूर करती हूं। हर क्षण तुम्हें नयी प्रेरणा और नव-शक्ति देती रहती हूं। जीवन के कोमल तत्वों को विकसित कर तुम्हारे अधूरेपन को पूर्ण करती रही हूं और सबसे बड़ी बात यह कि मैंने ही तो तुम्हें एक साधारण पुरुष से सृष्टिकर्ता बनाया है।" पुरुष ने जब नारी की बातों को फू-फूकर उड़ा दिया, तो नारी ने रुष्ट होकर मुंह फेर लिया। तभी बच्चा बोला—"दरअसल तुम दोनों मेरे ऋणी हो! मैंने तुम्हें एक सूत्र में बांधे रखा है और तुम्हारे विवाह को अर्थ और जय प्रदान की है। आनंद और उल्लास दिया है और भविष्य की आशाओं का आधार दिया है।" यह सुनकर मां-बाप बच्चे से चिपट गये, वातावरण एकदम बदल गया।

—करमसिंह भणारी

* * *

कश्मीरी कहानी

ज़िंदगी का तकाज़ा

तेजबहादुर मान

"पांच बज गये बाबूजी ।" चपरासी की आवाज ने उसे चौंका दिया । आस-पास नजर दौड़ायी । मेज पर फाइलें बेतरतीब पड़ी थीं । बात अपनी जगह से हटकर टेढ़ी हो चुकी थी—और कलम न जाने कहां खो चुकी थी । क्षण-भर के लिए उसके दिल में विचार आया कि बिखरी फाइलों को तरतीब दे, कलम को ढूंढ़ निकाले और बात को ढंग से जमा दे । बेतरतीबी से उसे बहुत चिढ़ थी । लेकिन अगले क्षण यह इच्छा कंधों के एक हल्के झटके के नीचे दब गयी । फाइलों को ढंग से जमाने या कलमदवात को सजाने की कोई आवश्यकता न थी । अब रहा ही क्या था उसके जीवन में, जिसे वह सजाता, संवारता...?

कश्मीरी मां और बालिका
[चित्र-मकबूल फिदा हुसैन]

वह उठकर दफ्तर से बाहर निकल आया । दिसंबर का महीना था, सर्दी यौवन पर थी । ठंडी हवा की लहरों ने उसके नंगे गले में सुइयां-सी चुभो दीं । अनचाहे उसके हाथ कोट के कालर उठाने को बढ़े, फिर अनायास रुक गये । वह कालर उठाये, नहीं तो गला नंगा रह जायेगा—ठंड लग जायेगी......रग-रग जम जायेगी......। निमोनिया का हमला होगा......और फिर सब समाप्त ।......यही कुछ तो होता है। और यही कुछ तो हुआ था, और उसकी इकलौती बच्ची हंसते-खेलते अनजानी दिशाओं में गुम हो गयी थी ।

जीवन और मृत्यु पर किसी का वश नहीं, प्रकृति अटल है । उसे प्रकृति से कोई शिकायत नहीं थी । लेकिन उसकी बच्ची, मासूम बच्ची, जीवन की केवल तीन बहारें ही देख पायी थी । मासूमियत की सीमाओं से अभी बाहर नहीं आयी थी वह-फिर भी मृत्यु ने उसे अपने चंगुल में ले लिया ।

काश, यह निर्दयी मृत्यु उस पर भी अपने पंजे बढ़ा दे, वह भी मर जाये ! ......और अपनी बज्जी के पास पहुंच जाये । शायद पंद्रहवां दिन था या अठारहवां, उसे अपनी बच्ची का मुंह देखे हुए । उसे अब दिन और

रात का भी एहसास न रहा था। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे बच्ची को देखे हुए सदियां बीत गयी हों। अब तो बिछोह सहा नहीं जाता था। बच्ची का रूप स्मरण होते ही उसकी आंखें धुंधला गयीं। सामने-से आता हुआ तांगा बेढंगी रेखाओं में बदल गया। किसी राहगीर ने उसे बाजू से खींचकर तांगे की जद में आने से बचा लिया। बौखलाकर उसने 'शुक्रिया' के औपचारिक शब्द बड़बड़ाये और आगे बढ़ गया।

मुहल्ले के बच्चे गली में क्रिकेट खेल रहे थे। बिजली का खंभा विकेट का काम दे रहा था। एक लड़का खुर्दरी लकड़ी का टुकड़ा हाथ में लेकर खंभे के सामने तैयार खड़ा था। दूसरी ओर गेंद लिये, एक लड़का देख रहा था कि कब रास्ता साफ हो और वह 'बाल' दे। सारी गली में गुल-गपाड़ा मचा था। उसके दिल में हूक-सी उठी। आज उसकी बच्ची होती, तो वह भी कोई खेल खेलती। उसे दफ्तर से आते देख, दौड़ी-दौड़ी आती। उसके थके घुटनों से लिपट जाती। बांहों में झूल जाती--शायद नयी गेंद की मांग भी करती। उसके पांव रुक गये। उसकी भाव-शून्य नजरें खेलते हुए बच्चों को टटोलने लगीं, जैसे किसी की तलाश हो। गेंद थामे बच्चे ने खीजकर कहा--"बीच में से हटिये न, मुझे गेंद फेंकनी है।" यह सुनकर वह तेज-तेज कदम बढ़ाता, घर की तरफ मुड़ गया।

घर में कई गेंदें थीं। गेंद खेलने का बल्ला भी था। कई प्रकार के खिलौने भी थे। बच्ची के मरने के बाद उसने ये सब ची इकट्ठी करके एक संदूक में रख दी थीं। दफ्तर से घर आकर वह संदूक खोल लेता था। एक-एक खिलौने को घूरता, एक-ए कपड़े को थपथपाता, छोटे-छोटे जूतों क चूमता-चाटता और साथ-ही-साथ आंख से दिल की भड़ास निकालता। अब न त कभी कोई गेंद गुम होगी, और नहीं को नयी गेंद के लिए मचलेगा, न कोई बल्ल पकड़कर खंबे के सामने खड़ा होगा, औ न कोई इन गुड़ियों से तोतली मासूम बा करेगा। केवल वह अकेला, और कुछ याद के खंडहर, जिनके सहारे उसे जीवन के अनगिन कठिन दिन गुजारने हैं।

घर पहुंचकर उसने जूते उतारे, हाथ मुंह धोया और उस कोने में गया, जहां व रोज बैठता है। कमरे के दूसरे कोने में उसक बूढ़ी मां रात के खाने के लिए सब्जी का रही थी। रसोई में उसकी पत्नी चाय बना के लिए समावार में कोयले डाल रही थी इस सारे वातावरण में एक कड़वाहट-स उभर आयी। उसे महसूस हुआ कि घर किसी को उसकी बच्ची का दुःख नहीं कोई सब्जी काट रहा है, तो कोई चाय बन रहा है। वह स्वयं भी तो आराम से बैठ अपनी भूख मिटाने की चिंता में था; जै बच्ची कभी पैदा ही नहीं हुई थी।

आज मां भी पूर्ववत् चुप थी। मां रो इधर-उधर की बातें छेड़ा करती थी, जि का वास्तव में कोई महत्व नहीं होता था वह खूब समझता था कि उसकी मां

बेकार बातें इसलिए छेड़ा करती थी, ताकि उसके इकलौते पुत्र का ध्यान बच्ची की याद से हट जाये। मां तो मूर्ख है, भला वह इन साधारण बातों से अपने दिल की धड़कन को भूल सकता है ? बच्ची तो उसके दिल की धड़कनों में बसी है। मां के व्यवहार से उसे ठेस लगती और वह चिढ़कर जबर्दस्ती बच्ची का जिक्र छेड़ देता। बच्ची के नाम से उसकी मां रो पड़ती और उसे सांत्वना-सी मिल जाती। लेकिन उसकी पत्नी की दशा सांत्वना को ग्लानि में बदल देती। पत्नी बच्ची का जिक्र छिड़ते ही ढाड़ें मार-मारकर रोती थी, छाती कूटती, बाल नोचती और बेहाल होकर सिसकियों में डूब जाती थी। कई बार उसने इरादा किया था कि पत्नी के सामने बच्ची की चर्चा न चलाया करे। बेचारी पत्नी—नौ महीने बच्ची को पेट में रखा, खुद भूखी रहकर बच्ची को खिलाया, रात-रात भर उसे छाती से लगाये, जागा करती थी। मां जो थी, मां से बढ़कर बच्ची का दुःख और किसे होगा ? उसका जी चाहता कि अपने प्यार से पत्नी का दुःख दूर कर दे, मीठी बातों से दुःखी दिल को ढांढ़स बंधा दे—अपनी सुदृढ़ भुजाओं में उसके अस्तित्व को सहारा दे। अब तो जैसे सदियां बीत गयी थीं, पत्नी से हंसे-बोले। पर जब भी उसने पत्नी के समीप होना चाहा, बच्ची की याद आ गयी। बच्ची की याद आते ही उसके आंसू न थमते थे। उसे रोते देख पत्नी भी रो पड़ती, और दोनों एक-दूसरे को थामे मन का दर्द आंखों से बहाने पर मजबूर हो जाते।

कमरे का मौन घुटन की सीमा तक बढ़ गया था। उबलते हुए समावार की सूं-सूं भी उस मौन में कोई आलोड़न पैदा नहीं कर रही थी। उसने मां की ओर देखा। मां सिर झुकाये सब्जी काटने में व्यस्त थी। बुढ़ापे ने मां के सारे बाल बर्फ के समान सफेद कर दिये थे। चेहरे पर झुर्रियों का जाल फैला हुआ था, देह में हल्की-सी कंपकंपाहट थी। कुछ दिनों की बात और थी--फिर शायद मौत उसकी मां को भी छीन लेगी। सहसा उसे एक भयावना विचार आया--यदि मौत गलती से उस नवअंकुरित कली के बजाय, इस सामने बैठे हुए मुरझाये फूल को ले जाती तो ? वह सोचते-सोचते रुक गया। सारे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी। उसे विश्वास न हुआ कि ऐसा भयानक विचार उसके मस्तिष्क में आ सकता है। कहीं वह पागल तो नहीं हो रहा, अन्यथा बेटा होने के नाते वह अपनी मां के बारे में ऐसा न सोचता। वह घबराकर उठ खड़ा हुआ। मां ने उसे प्रश्नमय नजरों से जांचा। मां से आंखें मिलाने का साहस न हुआ। वह नजरें चुराते हुए अपने कमरे की ओर चल पड़ा।

अपने कमरे में पहुंचकर उसने ताकचे में से बच्ची के खिलौनों-कपड़ों का संदूक उतारा। उसके ढक्कन को झाड़ा और सामने रख दिया। कांपते हाथों से संदूक का ढक्कन खोला। एकाएक वह हतप्रभ रह गया--संदूक खाली था। उसकी बच्ची के

खिलौने, कपड़े, जूते--कुछ भी उसमें नहीं था। कुछ देर वह उसके खाली तले को घूरता रहा। धीरे-धीरे चेहरे पर दुःख और क्रोध की रेखाएं उभरने लगीं। वह जान गया कि मां आज मौन क्यों बैठी रही। ऐसी चेष्टा केवल उसकी मां ही कर सकती थी, जो चाहती थी कि बच्ची को भूलकर वह घर-गृहस्थी की चक्की में पिसता रहे, मानो वह मनुष्य नहीं–कोई मशीन है।

वह तेजी से उठा और दरवाजे की तरफ लपका। दरवाजे पर पत्नी चाय की प्याली लिये खड़ी थी। विवश होकर उसके मुंह से निकला–"संदूक खाली है!"

पत्नी ने कोई उत्तर न दिया, उसने आगे बढ़कर संदूक का ढक्कन बंद कर दिया और उस पर चाय की प्याली रख दी।

"चीजें कहां गयीं?" भावातिरेक से उसके शब्द थरथरा रहे थे।

पत्नी की आंखों में आंसू भर आये। उसने धीरे से कहा–"मैंने फेंक दीं वे सब चीजें!"

उसे विश्वास न हुआ। भला कभी मां अपनी ममता को फेंक सकती है? अवश्य उसकी पत्नी अपनी सास को बचाने के लिए झूठ बोल रही है।

"सच? सच कह दो कहां हैं चीजें? तुम मां होकर अपनी बच्ची की चीजें नहीं फेंक सकतीं।"

वह और भी न जाने क्या-क्या बकता। उसके दिल में आग जल रही थी; परंतु पत्नी के फूट-फूटकर रोने से उसकी जबान रुक गयी।

पत्नी ने रोते हुए ऊंचे स्वर में कहा–"हां हां, मैंने मां होकर अपनी बच्ची की चीजें फेंक दीं–मौत ने तो उसे छीन लिया, अब वह तुम्हें भी मुझसे छीने जा रही है--मैं किस-किसको रोऊं–बोलो? वह भी न रही, तुम भी मेरे न रहे, तो मैं क्या करूं, मैं क्या करूं?"

और वह हतप्रभ-सा कमरे के मध्य में खड़ा उस नारी को देखता रहा, जो उसकी पत्नी थी--उसकी बच्ची की मां थी।

–रूपांतर : दर्शी राही

★

भाग्यवान

"एडवर्ड जो है न, बड़ा भाग्यवान है। वैसा भाग्यवान ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेगा।" एक आदमी ने कहा।

"उसने ऐसा कौन-सा बड़ा काम कर दिया कि तुम उसकी इतनी तारीफ करते हो?" दोस्त ने पूछा।

"सुनो तो बताता हूं। उसने अपने घर का बीमा कराया, तो एक ही महीने में वह जल-भुनकर राख हो गया। फिर दुर्घटना का बीमा किया, तो एक ही हफ्ते के अंदर उसका हाथ टूट गया। अभी कुछ दिन पहले जीवन का बीमा किया, तो जानते हो, क्या हुआ? आज वह मर गया।"

–'फेमिना' दक्षिण अफ्रीका, से : प्रेषक – रा० वीडिनाथन

★

नैनीताल

यह नगरी राजा और रंक. कुलीन और वारांगना-सभी की क्रीडा-भूमि है। यह अमीरों की रंगीनियों की राजधानी ही नहीं है, कोठियों का स्वर्ग भी है। इस लेख में आप नैनीताल की हलचलों, उसकी सांसों और धड़कनों का बहुत स्पष्ट अनुभव करेंगे।

शिवानी

छोटी-सी मस्जिद के ऊपर जेठ की सांवली सांझ की नागिन अपनी केंचुली कब की उतारकर रेंगती चली गयी है। गुंबद का पीला सोना चांदनी में नहा-धोकर 'डायमंड कट' किया हुआ लगने लगा है। मैं घर से निकली, तो आकाश मेघाच्छादित था; पर अब कहीं एक भी बादल नहीं है। मस्जिद से लगी कारों की एक लंबी कतार मेट्रोपोल जानेवाली सड़क तक चली गयी है। कतार में मंत्रियों की कारें हैं, जो तिरंगी पताकाएं फहरा-फहराकर अन्य वाहनों के अस्तित्व को व्यर्थ कर रही हैं। रुद्रपुर और कालाढुंगी के फार्म-प्रभुओं की भड़कीली 'शैवरले' हैं, रानियों की रेशमी परदे लगी 'फियट' हैं और अंतिम छोर पर खड़ी हैं कुछ सहमी-दुबकी रंग उड़ी अफसरी जीप-गाड़ियां।

पीली, लाल, हरी और नीली अधरंगी कमीजें पहने, हाकी के विजयी और पराजित खिलाड़ी पसीने से तर, फ्लैट (मैदान) पर पड़े-पड़े हांफ रहे हैं। हाकी मैच की भीड़, मैदान से हटकर विभिन्न दिशाओं में बंट गयी है। कुछ बैंड-हाउस के पास बैंड सुन रही है, कुछ चाट की दुकानों पर पानी की फुल्कियों का मजा ले रही है; कुछ कैपिटल के सामने बने मंच पर शेर-से दहाड़ते किसी विरोधी दल के प्रतिभाशाली नेता का भाषण सुन रही है। नेताजी कुछ देर तोप की भांति धुआंधार भाषण की गोलाबारी झाड़कर चल देते हैं। उनके जाते ही वहीं पर तपाक से आर्यसमाज के जलसे का आयोजन होने लगता है। देखते-ही-देखते कुर्सियां करीने से सजाकर चिट-चांदनी बिछा दी जाती हैं, तबले की जोड़ी की खनक और हारमोनियम के साथ आरंभ होता है–

बिना भक्ति ज्ञान
मुक्ति नहीं मिलेगी
हां, मुक्ति नहीं मिलेगी।...

सहसा दायीं ओर से भरभराती भीड़ का जत्थे-का-जत्था चला आता है, तीन-

SUNLIGHT
SOAP
SUNLIGHT SOAP
शुभ समाचार

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट से

आपके कपड़े चमक उठते हैं

✳ नया रूप, नया रैपर
✳ उजली धुलाई की नई शक्ति से
आप के कपड़े अधिक सफ़ेद, अधिक चमकदार!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S. 48-77 HI

चार मंत्री एक साथ दूल्हे-से झूमते चले आ रहे हैं, पीछे विधानसभा के रंग-बिरंगे सदस्य, उनके पीछे सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी और पूरी अंतरिम जिला परिषद। एक क्षण को भीड़ में फिर खलबली मचती है। किसी विदेशी दूतावास की पीली लंबी लिम्यूसीन, पहाड़ी चीते की-सी छलांग लगाकर फौवारे के पास खड़ी हो जाती है। फौवारा हर पल, लाल-नीली विद्युत-आभा से अपनी जलधारा को गिरगिट के रंगों की भांति बदल रहा है। उसी इंद्रधनुषी जलधारा के बीच कार का द्वार खोल, विदेशी दूतावास की इतालवी सुंदरी उतर पड़ती है। अपने कटे-छंटे सुनहरे केशों पर लंबी उंगलियां फेरती हुई फौवारे को देखती रहती है। उसके पीछे उसका पति आकर खड़ा हो जाता है, अपनी नीली आंखों से नैनीताल के नील उन्मुक्त गगन को वह विदेशी पर्यटक, आश्चर्यचकित होकर चीन्ह लेता है—यह तो उसी के देश का आकाश है, वही नीला इतालवी आसमान। दोनों भीड़ से निकलकर तिब्बती लामा के 'लंदन हाउस' की सीढ़ियों पर लगे बाजार के सामने ठिठकर खड़े हो जाते हैं और एक विचित्र-सी तिब्बती घंटी का मोल-तोल करने लगते हैं। घंटी वास्तव में सुंदर है, पकड़ने की डंडी के ऊपर एक कलात्मक गरुड़ बना है। लामा बार-बार कहे जा रहा है—"ए रियल ट्रेजर सर!" कहीं से उसने एक-आध अंग्रेजी शब्द रट लिया है, उसकी तन्वी सुंदरी पत्नी अपनी छोटी-छोटी तिब्बती आंखें चमकाती पति के कथन का समर्थन करती है—"ब्रासो पालिश करके चमक जायेगा साहब, दाम पचास से कम नहीं होगा। अभी पादरी साहब का मेमसाहब पचास में इसका जोड़ी खरीदा, आप पूछने सकता।"

पर इतालवी राजदूत ने भी दिल्ली देखी है, अतः पचास रुपये से उतरकर लामा पंद्रह रुपये में घंटी बेच देता है और प्रसन्नचित्त इतालवी दंपति घंटी बजाते, मुस्कराते हुए कार में बैठ जाते हैं।

रात और घनी हो आयी है। एक फ्रेंच पादरी अपनी नुकीली दाढ़ी पर हाथ फेरता, विलो वृक्ष के नीचे खड़ा, ताल को एकटक देख रहा है। किश्तियों की कतार-की-कतार ताल के नीलाभ जल में चित्रांकित-सी लग रही है। बत्तखों का दल कभी हार बनाता है, कभी पान का पत्ता और बार-बार कैलियेडोस्कोप के रंगीन कांच के टुकड़ों की भांति अभिनव चित्र प्रस्तुत करता, बोटहाउस क्लब के पास सिमट आया है। इन मूक पक्षियों को विधाता ने कैसे अद्भुत कलाचातुर्य की शिक्षा दी है। कहीं भी उनकी पंक्ति की सिधाई में कोई त्रुटि नहीं रहती, कभी जलसेना की टुकड़ी की भांति 'आइज राइट' करते वे तल्लीताल की ओर चल देते हैं, कभी गोल रासमंडल बनाते बीच ताल के भंवर में रम जाते हैं। ताल के इर्द-गिर्द जलती कलात्मक नियोन रोशनियां ताल में अपना प्रतिबिंब देखकर मुस्करा उठती हैं।

बोटहाउस क्लब में कोई खास जश्न

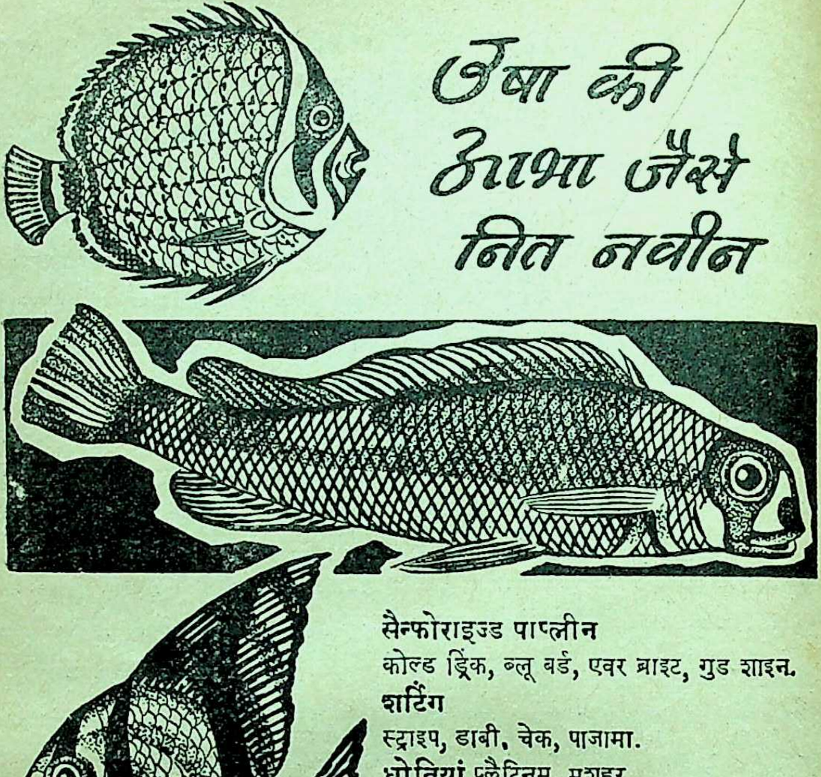
ऊषा की
आभा जैसे
नित नवीन
Arvind
Quality
FABRICS
'SANFORIZED'

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाइन.
शर्टिंग
स्ट्राइप, डाबी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर,
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१
सूटिंग, गैबर्डिन
रूमाल,
प्रिंट
छपे लोन, वाइल, पाप्लीन,
स्क्रीन छपाई की साडियां.
**बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में**

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद-२

मनाया जा रहा है । वैसे नित्य ही बोटहाउस मिस्र का बाजार बना रहता है; पर आज उसकी छटा ही निराली है । किसी फैंसी ड्रेस बाल का उत्सव है, जिसमें न जाने कितनी प्रौढ़ा गतयौवना नारियां, षोडशी मछुआरिनें और घसियारिनें, सेलोमी और क्लियोपैट्रा बनकर उत्सव मना रही हैं । पुरुष भी पीछे नहीं हैं । कोई रूसी राजदूत बना है, कोई घायल योद्धा । कौन कहता है कि भारत की आजादी ने राजे-रजवाड़े, रईस-जमींदार और ताल्लुकेदारों के वर्ग को समाप्त कर दिया है ? डांडी के दीन-दरिद्र कुली अपनी चरमराती डांडियों में न जाने कितने राजे-रजवाड़े और जमींदारों को भरकर नित्य यहां लाते हैं । डांडियों से उतरती हैं गरिमामयी रानियां, जिनकी रेशमी साड़ियों की बड़ौदाजरी बेल्जियन शीशे की-सी चमक से आंखें चौंधिया देती हैं । फिर उतरते हैं ठेकेदार, जिनके चीड़, शीशम और कत्थे के ठेके नित्य सोना उगलते हैं, जिनकी कोठियां पूरे नैनीताल में बरसाती कुकुरमुत्ते की भांति फैली रहती हैं । फिर उतरते हैं दुबले-पतले गोरे-काले, हर साइज और हर नमूने के वकील, जिनकी रातें बोटहाउस में गुजरती हैं और दिन कचहरी में । बाजपुर के खूनी उनके बेटों को पढ़ाने विलायत भेजते हैं, तराई के मुकद्दमे उनके लिए बोटहाउस में जिन और रम जुटाते हैं । इसी क्लब में उन्हें अपना शिकार फंसाना होता है पीकर और पिलाकर । इसी से उनके मुंह की लगी कभी छूटती नहीं ।

छोटी-छोटी मेजों पर चार-चार पांच-पांच के गुट जुटे हैं, कहीं माइल्ड 'फ्लर्टेशन' चल रहा है, कहीं घटिया किस्म की गाली-गलौज । एक राजा साहब अपनी रानी को बड़ी गंदी गाली दे बैठते हैं—उल्लू की पट्ठी । राजा साहब नशे में धुत हैं; पर रानी नहीं पीती । सांवली-भोली, बड़ी ही प्यारी-सी सूरत है, किसी बहुत बड़े ताल्लुकेदार की पुत्री है शायद । हाथ-पैर और गले के सब हीरे बिक चुके हैं । खाली कानों में दो बड़े-बड़े हीरे के कुंडल अभी भी झूल रहे हैं । उन्हीं जगमगाते कुंडलों के बीच उसकी तिरछी मंगोलियन आंखों के हीरे भी चमक उठते हैं । 'बीस्ट' कहकर वह तिलमिलाकर बाहर निकल जाती है । क्षण-भर को सदस्यों की रंगीली भीड़ में खलबली मचती है; पर क्लब फिर गुलजार हो जाता है । ऐसी घटना तो क्लब के लिए दाल-भात है । शराब के नशे में चूर राजा साहब अब जोर-जोर से दरबारी का आलाप लेने की

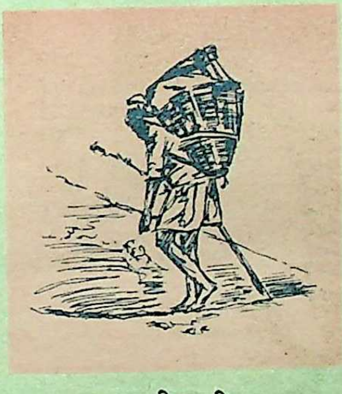

पहाड़ी कुली

धूम्रपान-शिष्टाचार

पहले आप

कोई साथ में हो तो पहले उसे सिगरेट पेश करना और फिर खुद पीना सुन्दर बात है। अपना पैकेट भले ढंग से उसके आगे बढ़ाएँ...यही सही तरीक़ा है। अगर कोई व्यक्ति दूसरी छाप की सिगरेट पेश करे, तो उस छाप की आलोचना न करना भली बात है।

पनामा पीना और पिलाना उम्दा बात है।

Panama
20
Panama
20
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves
CIGARETTES

ये आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि.,
बम्बई-५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT 616 HIN.

Greens' Advtg

चेष्टा कर रहे हैं; [illegible] स्वर ही उनके कंठ से फूट रहे हैं। अंत में दरबारी को मां की एक सर्वथा मौलिक गाली देकर फिर वह फर्श पर ही चित हो जाते हैं।

उदास रानी ताल के पास खड़ी हो गयी है। एक नवविवाहित सिक्ख जोड़ा नाव लेकर ताल में उतर जाता है, सिक्ख निहायत छैल-छबीला है, पत्नी की गोरी कलाइयों पर लाल-लाल चूड़ा चांदनी में झक-झक चमक रहा है। रानी की आंखों के हीरे क्षण-भर को फिर चमक उठते हैं, दस वर्ष पहले ठीक इसी के नीचे राजा साहब के साथ उसने कितनी मूंगफलियां खायी थीं। तब उसका राजहंस मोती चुगता था; पर उन मूंगफलियों में कितनी मिठास थी! उसकी मंगनी हो गयी थी और वह अंग्रेजी स्कूल के बोर्डिंग में रहकर पढ़ती थी। अपनी मंगेतर को एक प्रकार से घोड़े की पीठ पर बैठाकर भगा लाये थे राजा साहब। कैसा आनंद आया था, उस चोरी की लुकाछिपी में। पकड़ी जाती, तो जर्मन मदर चमड़ी उधेड़कर रख देती। आज उन्हीं राजा साहब ने सबके सामने इज्जत उतार दी।

"वेणी लीजियेगा मेम साब, मोतिया-चंपा...सिर्फ दो आना सरकार।" छोटा-सा लड़का एक लकड़ी की डंडी में खुशबू से ओर-छोर भिगोता दीन याचक-सा आकर खड़ा हो जाता है। "नहीं!" रानी साहिबा उसे झिड़क-सा देती हैं। मैं बचकर निकल जाती हूं। थोड़ी देर की चकरघिन्नियों के [illegible] के पास खड़ी पाती हूं। कैसा भूलभुलैया है नैनीताल का फ्लैट? एक चिरंतन परिक्रमा का क्रम बार-बार फौवारे के पास ही खींच लाता है। कुछ गतिशील चिंतन के पश्चात् एक परिचित बुकस्टाल की ओर मुड़ जाती हूं। छोटी-सी आडंबरहीन दुकान में कुछ ऐसा आमंत्रण है कि पांव स्वयं बढ़ जाते हैं। दुकान-मालिक बड़ा नम्र और बौद्धिक टाइप का सेल्समेन है, राजनीति में उसका अच्छा-खासा दखल है, पक्ष-विपक्ष के दलों का लेखा-जोखा बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसी से मैं कुछ देर तक उसके बुकस्टाल की पुस्तकों को सहलाती, उसकी चूरन-चटनी-सी लच्छेदार बातें सुनकर चलने लगती हूं, तो वह 'लिंक' की कापी बढ़ाकर कहता है—"यह अंक पढ़ा है आपने, बड़ी बढ़िया चीज छपी है प्रोफ्यूमो वाली।" इन दिनों प्रोफ्यूमो स्कैंडल ताजा है, मैं एक कापी खरीदकर आगे बढ़ती हूं।

तभी सड़क-से एक लंबी आतिशबाजी मेरे कान के पास से निकलकर मुझे सहसा चौंका देती है। मशाल जलाये, बैंड के साथ एक बारात चली आ रही है। लाल-लाल दुशाले से ढंके, हिरन की छाल के बने कुमाऊंनी पिटार हैं। रंगीन आतिशबाजियों के गुच्छे-का-गुच्छा गुलदस्ते-सा आसमान में बिखर जाता है। बंदूकों के धमाके से नैनीताल चौंककर जग जाता है। किसी समृद्ध शाहपुत्र की बारात है। पहाड़ के ब्राह्मणों की बारात गोधूलि-

चकाचक उजलेपन के लिए
विक्टोरिया ब्लू (नील)
00B
श्रेष्ठ किस्म की शुद्ध आधुनिकतम
अल्ट्रामरीन ब्लू (नील)

GENUINE
BEST ULTRA-MARINE
VICTORIA BLUE
00B
Manufactured in India by
Ultramarine & Pigments Ltd.
AMBATTUR (NEAR MADRAS)

पश्चिम जर्मनी के प्रतिष्ठानके सहयोग से भारतमें बनानेवाले
अल्ट्रामरीन एण्ड पिगमेण्टस् लिमिटेड
अम्बत्तूर (मद्रास के निकट)
सोल सेलिंग एजन्टस्: **केमडाइस ट्रेडिंग कम्पनी**
३८, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई – १
३१८, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट – मद्रास – १
जिन क्षेत्रोंमें प्रतिनिधित्व नहीं है
वहां स्टाकिस्टस् चाहिए

वेला में ही सजती है। नौशे के गोरे हाथ किसी सुंदरी के हाथों को भी लजा रहे हैं। कुमाऊं के शाह अपने गौर वर्ण और सुघड़ नैन-नक्श के लिए प्रसिद्ध हैं। बारात एक छोटी-सी गली के बीच आकर रुक जाती है।

न जाने कैसा बंद-बंद घुटा-सा मकान है। वही नहीं, पूरी बस्ती-की-बस्ती, पायरिया से सड़ी-गली दंतपंक्ति-सी ठुक-ठुककर हिल रही है। नैनीताल का नासूर है यह बस्ती। न जाने किस युग के जर्जर मकान हैं, जिनकी खिड़कियां, द्वार और दीवारें धुंए से काली पड़ गयी हैं, जिनकी भूरी जंग लगी छतों पर न जाने कितनी पीढ़ियों के कुरते और पेटीकोट सूख चुके हैं और न जाने कितनी और पीढ़ियों के सूखेंगे।

पीले चिकन और मलमल के सग्जीदार लाल-लाल बुंदकियोंवाले फुलकारी के दुपट्टों की यवनिका के नीचे कुमाऊं की उर्वशियां बड़ी-बड़ी नथें झमकातीं, झरोखों से मीठी-मीठी गालियां गा रही हैं। सहसा उनके सौंदर्य से सहमकर, रात अपने आवेश में कह गये शब्दों के लिए मूक क्षमा-याचना कर उठती है। काठ के सरल मकान की काली दीवारें और आड़ी-तिरछी छतें, उन कमलिनी-से उत्फुल्ल चंद्राननों की आभा से दीप्त हो उठती हैं। दीवारों पर स्वयं ही सहस्र अदृश्य हाथ मानो चूना-सा फेर देते हैं। छतों पर सूखते गोबर-कोयले के लड्डू, किसी झील में खिले असंख्य कमल से लगने लगते हैं।

मैं आगे बढ़ती हूं, एक पतली गली अचानक चौड़ी होकर मेट्रोपोल तक चली गयी है, उस पर छोटी-मोटी कारों का तांता-सा लग गया है। कुछ पर्यटक हैं, जो मेट्रोपोल, स्विस और रायल होटल को लौट रहे हैं। कुछ नैनीताल के ही रईस और राजा हैं।

नीचे एक छोटे-से मकान में गजब की चहल-पहल है। एक पेट्रोमैक्स जल रहा है, एक खाट बाहर निकाल दी गयी है, उसी पर कुछ ग्राहक जम गये हैं। कुछ भीतर खड़े हैं, कुछ देहरी पर ही लड़खड़ाकर ढेर हो गये हैं। आवाजें कभी उठ रही हैं, कभी अचानक किसी विदेशी सिफनी की भांति शून्य में उतर आती हैं। यह नैनी का लोअर बोटहाउस क्लब है—मिस्त्री, जमादार, ड्राइवर, नीची श्रेणी के ठेकेदार आदि को 'केटर' करता है। बाहर एक काले काठ के बोर्ड में दुकान ने स्पष्ट अक्षरों में स्वयं अपना कलुषित पेशा स्वीकार किया है—'देशी शराब की दुकान'। पास ही एक दुबला-सा काना लड़का, तेल की पकौड़ियां उतार रहा है, उसी जलते तेल का धुआं ऊपर तक उठकर घने कुहरे से मिल गया है। गली का दूसरा भाग बाजार को चला गया है। रात बहुत नहीं है; पर फिर भी अंधेरा भांग के नशे की भांति बढ़ता चला जा रहा है। नुक्कड़ की चौथी दुकान में नैनीताल का 'जलेबी किंग' लोहे के तार से जलेबियां उठा-उठाकर रस के सागर में छोड़ता जा रहा है। अपनी प्रभुता के मद में फूलती सुनहली गर्म-गर्म बाजूबंद-सी मोटी जलेबियां पीतल के थाल में सज जाती हैं।

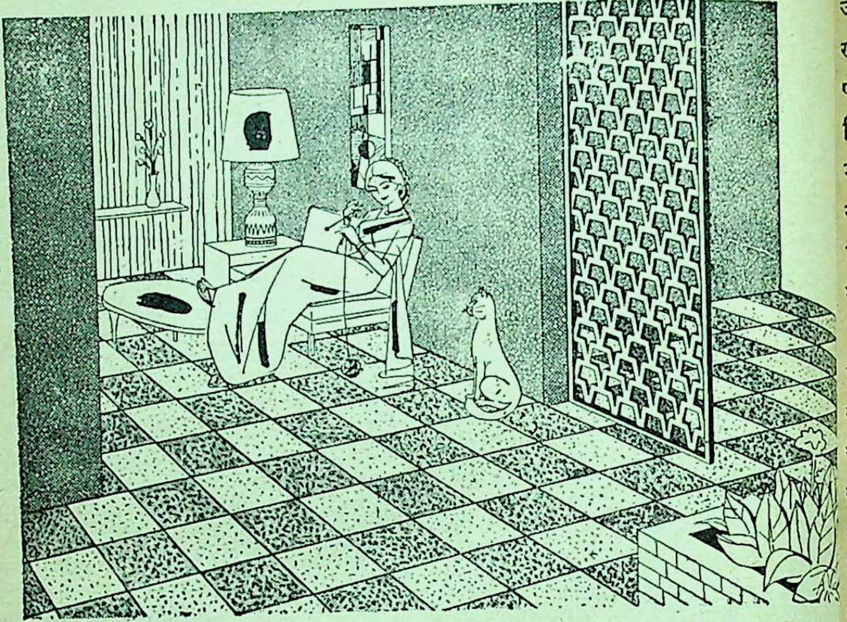

सजावट के लिए
आपके घर को ज़रूरत है...

सिल्वीक्रीट
एसीसी का सफ़ेद सिमेण्ट

सिल्वीक्रीट एसीसी सफ़ेद सिमेण्ट रचनात्मक डिज़ाइन, बाहरी कारीगरी, फ़र्श तथा शोभादायक चौखटा बनाने, जाली का काम तथा बाग के फर्नीचरों के लिए सबसे उपयुक्त होता है।

सिल्वीक्रीट साधारण भूरे पोर्टलैण्ड सिमेण्ट के लि
निर्धारित व्याख्या के अनुरूप होता है।
सिल्वीक्रीट [illegible] तथा [illegible] के लिए बुनिया
है।

तैयार मिलता है

दि सिमेण्ट मार्केटिंग कम्पनी आफ इण्डिया लिमिटे
बम्बई—अहमदाबाद—बंगलोर—कलकत्ता—कोयमबटूर—नयी दिल्ली—इन्दौर—कानपुर—मद्रास—पटना—सिकन्दराबा

दि एसोसिएटेड सिमेण्ट कम्पनीज लिमिटेड ● दि सिमेण्ट मार्केटिंग कम्पनी आफ इण्डिया लिमि

SISTA'S-CMI-360.

देखते-ही-देखते मिनि[illegible] हो जाता है, नैनीताल में रात को जलेबियां खाने का अपना अनोखा 'ट्रेडिशन' है। जहां पाव-भर की एक जलेबी बनती हैं, वहां फिर रस का अभाव कैसा ? एक जलेबी मुंह में भरते ही आंखें स्वयं मुंद जाती हैं। सच पूछिये, तो नैनीताल में दो ही चीजें हैं—रस से छलाछल छलकता ताल और रस से लबालब छलकती जलेबियां !

अंधेरे की बाहें कुछ और बढ़ रही हैं। इसी से मुझे एक डांडी करनी पड़ती है, डांडी को चारों कुली मानो हवा में उड़ाकर लिये चले जा रहे हैं। तभी एक अंधेरे कोने में खड़े एक जोड़े का स्वर हवा में तिरता मेरे कानों तक चला आता है, निकट आने पर देखती हूं—सस्ता शृंगार किये केले के रेशम की साड़ी में नैनीताल की कोई 'विकी बैरट' अपने पठान प्रेमी से समझौता कर रही है—"सुनो हो मुसलीदाज्यू, आज मेरा मुंह मत चूमना, मेरी एकादशी है।"

मैं मन-ही-मन मना रही हूं कि काश, उस सरला किशोरी की विनती इन डांडी-कुलियों के कर्ण-कुहरों तक न पहुंचे। अपने कलुषित पेशे के बीच भी अपनी एकादशी का स्मरण करनेवाली सरला कुमाऊंनी किशोरी की व्यथा मुझे सहसा उदास कर डालती है। एक लंबी सांस खींचकर नैनीताल की रात सहसा लज्जा से माथा झुका लेती है।

पहाड़ों के बीच, विचित्र छोटे-छोटे टूटे-फूटे मुर्गी के-से दड़बे में, पेट से पीठ लगाये, अनेक बोरों को जोड़कर बनायी गयी [illegible], दोटचाल कुलियों की एक लंबी कतार गहन निद्रा में मग्न है। सहसा कोने से, उनके सुप्त प्रधान सेनापति हांक लगाते हैं—'कोल्दे, कोल्दे, कोल्दे !' (करवट बदलो, करवट बदलो, करवट बदलो !) और नींद में ही सेना की सभी टुकड़ी, एक सम्मिलित करवट बदलती है, ऊपर की बोरे की रजाई उनके दरिद्र तन को, अनुशासन के आदेश से बंधी, पूर्ववत ढांके रहती है। कहीं पर भी एक छिद्र से हवा नहीं घुस पाती। दिन-भर दस-दस मन का बोझा ढोया है, बड़े-बड़े सामतों ने एक-एक चवन्नी के पीछे उनकी धज्जियां उड़ा दी हैं। न जाने कितने हीरे-जवाहरात के बक्सों से, दिन-भर उनकी पीठ दुहरी बनी रहती है; पर अब रात की बाहों में उनकी पीठ नंगी है। बक्सों में ताला भी न लगा हो, वे उनमें केवल अपने ईमान का ताला ठोंककर मालिक के महल तक पहुंचा देते हैं। बोरे का लंगोट या पैबंदों से भरा चीकट-सा चूड़ीदार पाजामा ही उनका एकमात्र परिधान है। उसी पाजामे के नाड़े से उनका पूरा बैंक-बैलेंस लटका है, मैल से पांडुजीर्ण एक रंगीन छींट के बटुवे में !

मंगल की रात है। इसीलिए मैंने डांडी-कुलियों से कहा है कि मंदिर से होकर चलेंगे। मंदिर के बाहर पत्थर की बेंचें बनी हैं। वहीं पर कई कटी लाशें-सी बिछी हैं। घृणा से सिहर उठती हूं। कितने सारे कोढ़ी हैं। नैनीताल को स्वर्ग बनाने की म्युनिसिपल बोर्ड की सारी योजनाएं क्या यहीं पर

आकर सिर धुन रही है ? किसी की नाक नहीं है, कोई अपने ठूंठ से हाथ अपनी अभिशप्त छाती पर धरे नींद में बेहोश है। अलमोड़ा और नैनीताल कुष्ठरोगियों की 'समर सीट' (ग्रीष्मकालीन राजधानियां) हैं। मंदिर की सीढ़ियां उतरती हूं। आखिरी सीढ़ी पर सिरहाने एक अमरीकी दूध का खाली डिब्बा धरे, वही नैपाली कुष्ठरोगिनी दिख जाती हैं, जो प्राय: मल्लीताल के पास कोढ़ियों के घेरे में राधिका बनी दिखती रहती है। मेरे कदमों की आहट से वह चौंककर उठ बैठती है और सधे स्वर में अलापती है–"ओ रानी साब ! हुजूर का गद्दी बना रहे सरकार।" अपनी पीब से गली हथेलियां फैलाकर वह मेरा मार्ग अवरुद्ध कर देती है, उसका गोरा रंग अब एक गंदी घिनौनी आभा से घिर गया है; पर चेहरा अभी भी सुंदर है और उसका यौवन कुंडली मारे सर्प की भांति उसके उभरे उरोजों पर फन उठाये, उसके आसपास बैठे दस-बारह युवा-प्रौढ़ कोढ़ियों को फुफकार-फुफकारकर, दिन-रात डसा करता हैं। उन दीन-दु:खी कुष्ठरोगियों को अपनी बांहों में संभाले, अपनी शांत आंखों से उन्हें निहारती खड़ी है नैना देवी की भव्यमूर्ति। सुचित्रजघना, चित्रमाल्यांबर–विभूषणा नैनादेवी अपनी स्निग्ध दृष्टि से कैसी अमृत-वर्षा कर उठती हैं। मंदिर किसी शांत प्रहरी-सा सजग खड़ा है। पाषाण देवी को जाती ठंडी सड़क किसी मृतप्राय रोगी की नाड़ी की भांति धीरे-धीरे मंद पड़ती जा रही है। पीतल के लटकते विशा घंटों के नीचे मैं नतमुखी खड़ी रह जाती हूं

"जल्दी करो मेमसाब, क्लब का टैम है दूसरी सवारी ले जाना है।" डांडी-कुली हांक लगाते हैं। मैं चौंककर चल देती हूं ताल की कोई पुष्ट मछली शायद खूब ऊंचे उछलकर फिर ताल में कूद जाती है। बड़े जोर से छपाक की आवाज दूर तक गूं जाती है। एक नंगधडंग संड-सा बाबा, हा का चिमटा बजाता 'अलख-अलख' करत सामने से निकल जाता है। कुली आपस में बातें करते हैं कि वह कोई प्रसिद्ध तांत्रि है, साधना करने कैलाखान के स्मशानघा को जा रहा है। कैसा अद्भुत है नैनीताल

लाल रोडोडैंड्रोन का देश, नंग-धड़ तांत्रिक का देश, हरी-नीली झील का देश जहां रानियों की उसांसें हैं, नये रईसों की खतरनाक रईसी है, जो स्नेह और करु को नहीं पहचानती; कुमाऊं की सुंदरियों के सरल सपने हैं, महत्वाकांक्षी नेताओं की उलझनें हैं, जिन्हें सुलझाने वे हिमगिरि की ठंडी गोद में उतर आते हैं; मंत्रियों की कूट नीति के दांवपेंच हैं और हैं कुलियों की नंगी पीठें, जिन्हें ढंकने कुमाऊं कभी पर्या वस्त्र नहीं जुटा पाया।

चौंककर देखती हूं, मेरा बंगला आ गय है–"ढाई रुपया होगा मेमसाब, बहुत रा हो गया।" कुली कहते हैं–"इनाम बख्शी अलग।" मैं देखती हूं, सचमुच ही प्रकृति का लाड़ला शिशु 'नैनीताल' निढाल होक निद्रा की गोद में लुढ़क गया है।

★

विविध देश विविध घटनाएं

री बर्लिन की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'ट्रैवेल्स विदाउट पासपोर्ट' में विभिन्न देशों की यात्रा-घटनाओं का रोच
न संकलित है । यद्यपि यह संपूर्ण पुस्तक प्रथम पुरुष में ही लिखी गयी है, तथापि वर्णनों की विविधता
सता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी है । उपर्युक्त पुस्तक के कुछ घटना-प्रसंग यहां प्रस्तुत हैं

इनके रूपांतरकार हैं डा० देवेश ठाकुर ।

मैक्सिको

[चर्च में चिड़ियों को पिंजड़े]

मई का महीना था और उस दिन माह का दूसरा शुक्रवार था। मैं प्रार्थना के लिए संत लारेंस के चर्च गया था और तभी एक अधेड़ व्यक्ति कुछ चिड़ियों के पिंजड़े लिये हुए भीतर आया। मेरे लिए यह एक अपूर्व अनुभव था। इन पिंजड़ों में विभिन्न प्रकार के पक्षी थे; लेकिन उनमें पानी का कटोरा तथा खाने की चीजें समान थीं। उस व्यक्ति ने उन पिंजड़ों को एक-एक करके वेदी के निकट लगी हुई कीलों पर लटकाने का प्रयास किया। पर कीलें काफी ऊपर लगी हुई थीं और यह काम कुर्सियों पर चढ़े बिना नहीं हो सकता था।

लटकते हुए पिंजड़ों की चिड़ियां तरह-तरह की आवाजें निकालने लगीं; लेकिन उन्होंने किसी का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं किया।

जब अपना काम करके वह अधेड़ व्यक्ति बाहर लान में आ गया, तो उसने मुझे बताया कि वह हर दूसरे शुक्रवार को आकर ये पिंजड़े यहां लटका देता है और फिर प्रातःकाल तक ये पक्षी इसी तरह गाते रहते हैं।

मैंने उससे पूछा—"क्या संत तुम पर बहुत प्रसन्न हैं ?"

उसने बड़ी श्रद्धा से उत्तर दिया—"उनकी कृपा हम सबका भला करती हैं।"

मैंने फिर पूछा—"क्या तुम इस तरह पिंजड़ा टांगने का काम वर्षों से कर रहे हो?"

उसने बताया कि वह अविवाहित
और जब वह इस नगर में नहीं होता, त
उसकी बहन यह काम कर दिया करती ह

संत लारेंस पर इस व्यक्ति-जैसी श्रद्
मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।

× × ×

फ्रांस

[सोमर : स्त्रियों और घोड़ों का नगर]

आर्लेस की महिलाओं में सोरसैनि
रक्त होने के कारण एक विशिष्ट प्रकार क
सौंदर्य पाया जाता है। लेकिन हममें
कितनों को यह ज्ञात है कि अनजोऊ नग
की महिलाएं अपने भलेपन के कारण आर्ल
महिलाओं से कहीं अधिक सुंदर हैं। इ
विषय के कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत कि
जा रहे हैं।

बीसवीं शती के नानतिली चर्च के ख
पर, जो नगर के बाहरी हिस्से में पड़ता है
प्रोविंस के सम्राट् रेने द्वारा अपनी न
थ्योफेन के लिए कुछ गीत-पंक्तियां खुद
हुई हैं। इनमें थ्योफेन के उच्चतर सेवाभा
की प्रशंसा की गयी है, जिसका प्रत्यक्ष अनु-
भव सम्राट् तथा उसकी बहन को हुआ था।

दूसरी अच्छी महिला, जिससे मैं मिल
७६ वर्ष की एक वृद्ध अध्यापिका थी। उस
बाल एकदम सफेद थे; लेकिन अब भ
उसके अधरों पर मुस्कराहट थी और उस
व्यवहार में अतिशय भद्रता थी। मैं उस
उस भवन के निकट मिला, जो सम्राट्
ने सिसली की महारानी के लिए बनवा
था। यह भवन सोमर नगर की उस दि

में पड़ता है, जिधर 'लोअर' का द्वीप स्थित है। इसी ओर 'रूई दे ला विजिटेशन' सड़क भी है, जो नगर की सबसे अधिक शांतिपूर्ण और निर्जन सड़क है। तो, उक्त भवन की दशा अब बड़ी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी। कभी उसमें बहुमूल्य एवं सज्जापूर्ण किवाड़ और खिड़कियां तथा सज्जा और शोभा की अन्य सामग्रियां रही होंगी; लेकिन अब वह एक उजाड़ प्रदेश का-सा दृश्य उपस्थित करता था और किसी बहुत ही साधारण कार्य के लिए प्रयुक्त किया जाता था। बूढ़ी अध्यापिका ने उस भवन की ओर ताकते हुए मुझे देखा और कहा—"समय परिवर्तनशील है।"

इतना कहकर वह अपनी स्वाभाविक मुस्कराहट .के साथ आगे बढ़ गयी। मैं वहां खड़ा-खड़ा सोचता रह गया कि ये शब्द उसने किसके लिए कहे—उस भवन के लिए या स्वयं अपने लिए।

सोमर की महिलाओं का वर्णन करने पर भी यह विवेचन अधूरा ही रहेगा, यदि मैं इस नगर के घोड़ों के अजायबघर के विषय में कुछ न कहूं। पहले यहां कई अजायबघर थे; लेकिन अब केवल एक का ही अस्तित्व है।

अजायबघर के अफसर उसमें कोई-न-कोई नवीनता लाना चाहते हैं। इसके लिए वे विभिन्न प्रकार के प्रयोग करते हैं। इस भवन में लगे हुए चित्रों को देखकर लगता है कि इन प्रयोगों में भी अब एक प्रकार की निष्प्राणता एवं जड़ता आ गयी है और वे किसी प्रकार से दर्शक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट नहीं करते।

इस अजायबघर की सबसे ज्यादा दिलचस्प चीज 'फ्लाइंग फाक्स' नामक घोड़े का अस्थि-पंजर है। इस विशिष्ट और प्रख्यात घोड़े की मृत्यु १९११ में १५ वर्ष की अवस्था में हुई। यह मोन्ते कारलो के मन्सियर एडमन्ड ब्लाक द्वारा ९,८४,३७५ फ्रांस्क में खरीदा गया था। इसके बाद यह फ्रांस का सबसे प्रसिद्ध घोड़ा हो गया। इसकी यह विशेषता रही कि यह अपने जीवन-काल में कभी नहीं हारा।

आज भी म्यूजियम की देख-रेख करनेवाला अधिकारी यह कहता सुना जाता है—"यदि तुम मेरी सलाह पर चलो, तो मैं यही कहूंगा कि 'फ्लाइंग फाक्स' पर अपना धन लगाना हमेशा लाभप्रद है।"

× × ×

पोलैंड

[तीन पादरियों का नगर]

इस नगर का नाम लवोव है। यूरोप में यही एक ऐसा नगर है, जहां तीन धर्मगुरु—एक रोमन कैथोलिक, दूसरा ग्रीक कैथोलिक तथा तीसरा आरमेनियन—रहते हैं। किंतु यहां की अधिकांश जनसंख्या यहूदियों की है। यूरोप में सबसे अधिक जनसंख्या-वृद्धि का अनुपात पोलैंड का ही है। यहां के रोमन कैथोलिक लोगों ने कई बार इस बात की चेष्टा की है कि उनकी संख्या यहूदियों से अधिक हो जाये। किंतु यहूदियों की जनसंख्या के विकास का क्रम अपेक्षाकृत तेज

है और उनमें शिशु-मृत्यु के आंकड़े भी कम पाये जाते हैं। इसीलिए अभी तक वहां यहूदियों का प्रभुत्व बना हुआ है।

इन तीन धर्मों के अतिरिक्त इस नगर में कुछ बाल्कियन चर्च के अनुयायी भी हैं। इस चर्च का भवन शिल्प-कला की दृष्टि से नवयुग तथा बाइजेंटियन युग के शिल्प का मिश्रण प्रतीत होता है। वस्तुतः यह भवन १७-वीं शती के शिल्प की सुंदरतम स्मृति है। इस चर्च के प्रांगण में 'तीन राजाओं' का तीन गुंबदोंवाला उपासना-गृह है। यदि यहां खड़े-खड़े आप इन गुंबदों की दुरूह शिल्पकारी को देखते-देखते ऊब जाएं, तो आप इस गिरजे के अधिकारी से बातें करके भी प्रसन्न हो सकते हैं।

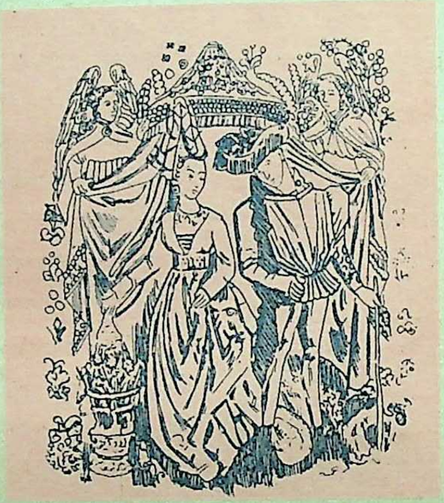

मैडरिड (स्पेन) में प्राप्त १५-१६ वीं शती के एक दीवार पर लटकायी जानेवाले कालीन की सरल अनुकृति

एक दिन मैं उस अधिकारी से मिला। उसके पास कभी कोई विशेष काम करने के लिए नहीं रहता।

"तो फिर तुम दिन-भर क्या करते हो?" मैंने उससे पूछ लिया।

उसने कहा —"कल मैं घर लौट रहा था। रास्ते में जाते हुए एक दुकान के बाहर ठहर गया। इस दुकान के शो-केस में संत मार्टिन का एक चित्र लगा था। तब से उसके विषय में काफी सोचता रहा हूं। क इस विषय को लेकर आप मेरी सहायता क सकते हैं?"

मैंने उसकी ओर देखकर कहा—"तु जानते होगे कि संत मार्टिन ने अपना को फाड़कर आधा भिखारी को दे दिया था। संत मार्टिन के वि में मेरा ज्ञान सि इसी घटना त सीमित था।

"जी, यह सब जानता हूं; किंतु इससे अधिक जान चाहता हूं।"

"वह बहुत ह दयालु व्यक्ति था। मैंने अपने ज्ञान क प्रदर्शन करना चाहा

"लेकिन क्या व एक बेवकूफ आद नहीं था।" उसने मे ओर देखकर कहा

"मिस्टर, यह तुम क्या कह रहे हो उसने अपना कोट दे दिया, क्या इसीलि वह बेवकूफ था?"

"यदि उसने पूरा कोट दे दिया हो तो मुझे कोई आपत्ति न थी।" नवयुव अधिकारी ने कहा—"लेकिन आधा को देकर उसने न तो भिखारी का ही भ किया और न अपना ही। इससे तो किसी

भी लाभ नहीं हुआ । संत मार्टिन उस समय एक सैनिक था ।''

''यदि ऐसा है, तो मैं तुमसे सहमत हूं । और फिर यदि कोट उसका नहीं था, तो सेनाध्यक्ष की ओर से उसका कोर्ट मार्शल होना चाहिये था ।'' मैंने कहा ।

''लेकिन मिस्टर ! संत मार्टिन एक अफसर था । और इस नाते कोट उसकी अपनी संपत्ति थी, सरकारी नहीं ।''

इस नवयुवक को संत मार्टिन के विषय में कितना ज्ञान था । मैंने उससे पूछा—''क्या संत मार्टिन के विषय में कल के बाद ही तुमने इतनी सूचनाएं एकत्र की हैं ।''

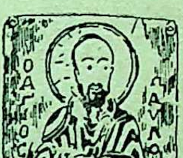

पादरी

एक स्वर्ण-मुद्रित पेंटिंग की अनुकृति

इस पर लड़के ने अत्यधिक विनम्रता से कहा—''मिस्टर ! एक बात जो मैं नहीं समझ सका, वह यह कि संत मार्टिन एक सिद्ध व्यक्ति था । उसने दूसरा कोट क्यों नहीं बनवा लिया ?''

मैं कुछ कहूं, इससे पहले ही उसने कह दिया—''मेरा खयाल है कि जिस समय उसने भिखारी को कोट दिया, उस समय उसकी अवस्था १८ वर्ष की रही होगी और वह इसके उपरांत ही धर्म में दीक्षित हुआ होगा और उसके बाद ही उसे सिद्धि प्राप्त हुई होगी । आपका क्या विचार है ?''

''यह सब काफी स्वाभाविक एवं तर्कसंगत लगता है । क्या तुम इस विषय में और भी कुछ जानते हो । मैं तुम्हें इतना बता सकता हूं कि इस विषय में तुमने मेरी दिलचस्पी पैदा कर दी है ।''

तब उस युवक अधिकारी ने मुस्कराते हुए कहा—''सिद्धि प्राप्त करने के पश्चात् वह अपनी जन्म-भूमि पेन्नोनिया गया । वहां उसके माता-पिता रहते थे । उसने उनको अपने धर्म में दीक्षित करना चाहा । मां को दीक्षित करने में तो उसे सफलता मिल गयी; लेकिन उसका पिता सैनिक प्रवृत्ति का था । उस पर संत मार्टिन का वश न चल सका ।

× × ×

स्पेन

[डोन एंजिल की वीतरागता]

'सेन पेड्रो डी ला नवे' एक ऐसा प्रशांत स्थान है, जहां कोई रेल्वे-स्टेशन नहीं है और जो सड़क जेमोरा से वहां तक जाती है, वह बहुत ही ऊबड़-खाबड़ है । सेन पेड्रो पहुंचने पर ही मुझे इस तथ्य का भान हुआ कि यहां गाड़ी से आने की अपेक्षा किसी खच्चर या घोड़े पर आना कम तकलीफदेह होता ।

यहां जिस होटल में मैं ठहरा, उसके मालिक ने मुझे सुझाव दिया कि वहां के निकटवर्ती प्रदेशों का भ्रमण करने के लिए घोड़े की सवारी ही श्रेष्ठ रहेगी । उसने मुझे यह भी बताया कि निकटवर्ती ग्राम में उसका एक किसान मित्र है । वह किराये पर अपना घोड़ा दे सकता है ।

इस कमरदर्द को
दूर करने के लिये
अमृतांजन
लगाइये

अमृतांजन बहुत जल्दी और बहुत अच्छा आराम पहुंचाता है क्योंकि यह आरामदायक १० दवाइयों का मिश्रण है। एक एक बार आपको इतना कम चाहिये कि एक एक शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। करीब ७० वर्ष से यह विश्वासी घरेलू दवा अमृतांजन, मोच, सरदर्द, सीने के ठंडक और दर्द, जुकाम और दूसरे तमाम दर्दों में भी अचूक है।

मौसम के बदलने और रोज रोज के कामकाज के दबाव से दर्द, जुकाम आदि पैदा होते हैं। एक शीशी अमृतांजन बराबर पास रखिये।

अमृतांजन
१० दवाइयों का मिश्रण है

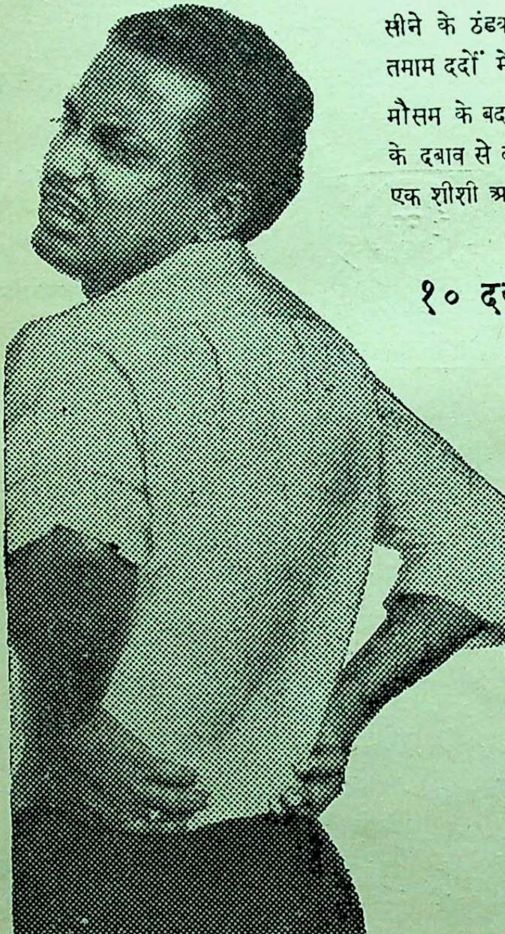

अब अमृतांजन की शीशी गत्ते की नई डिबिया में लीजिये। यह नकल से बचानेवाली 'अल्यू' कैप से सील बंद है।

AMRUTANJAN
Pain Balm
AMRUTANJAN
THE PAIN BALM
AMRUTANJAN LTD

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2334A

होटल-मालिक ने इस आशय का एक फोन अपने किसान-मित्र को किया। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक किसान ने केवल गेहूं की खेती से इतना धन एकत्र कर लिया हैं कि वह घर में टेलीफोन रख सके। खैर......! किसान-मित्र ने फोन पर घोड़ा दे देने का आश्वासन दे दिया।

किंतु अब एक और समस्या उठ खड़ी हुई। मैं इस प्रदेश के लिए बिलकुल नया था। मुझे उस गांव तक कौन ले जायेगा और कौन उस धनी किसान से मेरा परिचय करायेगा? लेकिन होटल-मालिक ने यहां मेरी सहायता की। उसने मुझे बताया कि यहां निकट ही उसी गांव का एक पादरी रहता है, वह मुझे लेकर वहां जा सकेगा।

दूसरे दिन मैं खिड़की के पास खड़ा 'शेव' कर रहा था कि मुझे एक बूढ़ा पादरी आता दिखाई दिया। उसका पूरा मुख टोप से ढंका हुआ था; लेकिन उसकी ठोढ़ी, जिसमें घने बाल उगे हुए थे, साफ दिखाई पड़ रही थी।

मैंने अपने गालों का साबुन साफ किया और मुस्कराते हुए उसका स्वागत किया तथा उसे अपना परिचय दिया। उसने मेरे सम्मान में अपना टोप उतार दिया। अब मैंने उसका चेहरा देखा– वह काफी अस्वस्थ प्रतीत होता था और उसके चेहरे पर गड़ी हुई आंखें मेंढक की आखों-सी लगती थीं। उसने कहा–"मेरा नाम एंजिल ग्रेशिया हैं।"

उस समय मैं किसी भी प्रकार अपने मन को यह नहीं समझा सका कि यह व्यक्ति मेरे लिए एक आकर्षक साथी भी बन सकता हैं और हमारा आज का भ्रमण पूरे दिन के लिए आनंद की वस्तु बन सकता है। इधर चलने का निश्चय हो चुका था और होटल के मालिक ने हमारा टिफिन तैयार कर दिया था।

रास्ते में चलते हुए हमने काफी समय तक कोई बात-चीत नहीं की। लेकिन फिर सहसा पादरियों के जीवन-क्रम पर बात-चीत शुरू हो गयी।

"हमें इतना कम धन मिलता है कि हमसे कोई क्या अपेक्षा कर सकता है।" बूढ़े पादरी ने मुझसे कहा।

"और फिर भी तुम संपूर्ण जीवन पादरी बने रहे।" मैंने जिज्ञासावश प्रश्न पूछा।

"तुम जानते हो मुझे कितना मिलता हैं?"

"हममें से बहुत से लोगों को अपनी योग्यता से कहीं कम मिलता हैं।" मैंने सहज भाव से उत्तर दिया।

"बिलकुल ठीक," बूढ़े पादरी के मुंह पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी –"तुम्हारे सिक्कों में मुझे लगभग ४० पौंड मिलता है। क्या इतने कम धन से कोई जीवित रह सकता हैं?"

रास्ते के खेतों पर काम करनेवाले किसान कभी-कभी हमारी ओर देख लेते थे। लेकिन हम किसी ओर भी आकृष्ट हुए बिना आगे बढ़ते गये।

"तब तुमने कोई दूसरा रोजगार क्यों नहीं कर लिया?" मैंने सहज जिज्ञासा से पूछा।

मसूढ़ों के कष्ट और दंत-क्षय का
सफल इलाज
फोरहन्स टूथपेस्ट

स्वेच्छा से भेजे गये पत्रों* द्वारा प्रमाणित

* ये प्रमाणपत्र ज्यॉफ्री मॅनर्स एंड कं. लिमिटेड, के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं।

मेरे परिवार के सभी सदस्य अब फोरहन्स इस्तेमाल करते हैं, क्यों कि मुझे इस से जो लाभ हुआ, उन के लिए सब से अच्छा प्रमाण यही है। फोरहन्स इस्तेमाल करने के पहले दांत-दर्द और मसूढ़ों की तकलीफ से मैं हमेशा परेशान रहता था, लेकिन फोरहन्स को धन्यवाद, अब मेरे दांत सफ़ेद व सुदृढ़ हैं। मसूढ़े स्वस्थ बन गये हैं। पिछले कुछ सालों से मसूढ़े फूले तक नहीं। मैं किसी दूसरे टूथपेस्ट के इस्तेमाल बात दिमाग में ला तक नहीं सकता।

जी. एस., दिल्ली

मेरे दांतों की इस सफेदी और चमक-दमक का राज फोरहन्स टूथपेस्ट है, जिसे मैं काफी समय से इस्तेमाल कर रहा हूं। मैं २७ साल का नवजवान हूं और पान-तम्बाकू का शौकीन भी। आप जानते ही होंगे कि तम्बाकू खाने से दांतों पर धब्बे पड़ते हैं और उन पर भूरी पर्त चढ़ जाती है लेकिन फोरहन्स की सफाई अनोखी है ... यह दांतों के दाग मिटा कर मेरे दांतों को सफेद और चमकीले बनाये रखता है।

पी. बी., बैंगलोर

फोरहन्स
दांत-डाक्टर द्वारा
निर्मित टूथपेस्ट

Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR
THE GUMS

और पूरी जोड़ी के लिए,
फोरहन्स दोहरे असरवाला टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये।

एकमात्र ऐसा टूथब्रश,
जो दांतों की सफाई के साथ
मसूढ़ों की धीमे-धीमे
मालिश भी करता है।

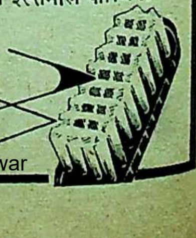

T. 32 A. HIN

"बात यह है कि कभी-कभी व्यक्ति के मन में किसी विशेष काम को करने की आस्था और रुचि उत्पन्न हो जाती है।" उसने भी उसी सरलता से कहा।

तभी वह एकाएक अपने घोड़े से कूद पड़ा और पास ही किनारे पर लगे जंगली साग के पौधों को तोड़ने लगा। मैं उससे कुछ कहूं, इससे पहले ही उसने अपना स्पष्टीकरण दिया—"हम लोगों के पास इतना धन नहीं होता कि हम मांसादि खा सकें। हमें ज्यादातर इसी प्रकार के जंगली साग पर निर्भर रहना पड़ता है। वस्तुतः इस प्रकार का जीवन एक प्रकार का अभिशाप है। फिर भी......हम वीतरागी हैं—किसी भी विषमता को सह सकने के अभ्यासी हो गये हैं।"

और मैंने देखा कि उसका सारा मुखमंडल जैसे कड़वा हो गया है। मुझे उस पर बड़ी दया आयी।

हमने अपने किसान मेजबान के पास जाकर कुछ विश्राम किया और वहां से टट्टू लेकर चल पड़े। रास्ते-भर कोई खास बात नहीं हुई। जब मैं वापस होटल में पहुंचा, तो रात हो गयी थी। बूढ़ा पादरी मुझे वहां पहुंचाकर अपने घर चला गया।

मैं बहुत देर तक उस बूढ़े पादरी के विषय में सोचता रहा। फिर दिन-भर का कार्य-क्रम नोट करने के लिए मैंने डायरी लिखना शुरू किया। एकाएक मुझे ध्यान आया कि मैं गांव के उस किसान का नाम भूल गया हूं, जिसके यहां से मुझे घोड़ा मिला था। उसका सही नाम जानने के लिए मैंने यह निश्चय किया कि मैं उसी बूढ़े पादरी से मिलूं। वैसे भी, उस बूढ़े पादरी से मिलने की इच्छा मेरे मन में तीव्र हो रही थी।

जैसे ही मैं उसके दरवाजे पर पहुंचा, वहां का वातावरण देखकर मैं अवाक् रह गया।

मां

मेस्ट्रोविक-कृत एक यूगोस्लावीय शिल्प

एक सुसज्जित मेज पर पूरा भुना हुआ मुर्गा रखा था। एक अन्य तश्तरी में आलू का शोरबा था तथा अन्य तली हुई तरकारियां रखी थीं।

"एंजिल, शायद तुम्हें तली हुई तरकारियां बहुत पसंद हैं!" मेरे स्वर में स्पष्ट व्यंग्य था।

उसने बिना किसी हिचकिचाहट और असमंजस के उत्तर दिया—"हां, मैं वही चीजें खाता हूं, जो मुझे बहुत पसंद होती हैं।"

मैंने मेज के चारों ओर देखा और फिर पूछा—"लेकिन, एंजिल, वह जंगली साग?"

उसने बड़ी ही सहज मुद्रा में उतर दिया—"मैं क्या कर सकता था? मेरे घोड़ों के

पूरी ख़ुशबूवाली
कॉफी
कॉफी बोर्ड के
फिल्टर के जरिए

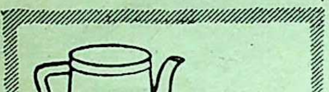
'जग'
ढक्कन
'जग' के ऊपरी हिस्से मे बैठनेवाला फिल्टर
प्लंजर

आप आसानी से कॉफी बना सकें, इसलिए 'सेंट्रल फूड टेक्नॉलाजिकल रिसर्च इंस्टीच्यूट' ने इस फिल्टर का डिजाइन बनाया है और इस की बिक्री कॉफी बोर्ड के जरिए होती है - आप हर वक्त परिपूर्ण और जायकेदार कॉफी बना सकते हैं।

'जग' की शक्ल में ये किस्में पेश हैं:

४ कप की क्षमता:	
पीतल (निकल की कलई)	... कीमत २५.३५ रु.
स्टेनलेस स्टील	... कीमत ४५.०० रु.
२ कप की क्षमता:	
पीतल (निकल की कलई)	... कीमत २०.५० रु.
स्टेनलेस स्टील	... कीमत ३१.७५ रु.

स्थानीय कर अलग

फिल्टर इस्तेमाल करने का तरीका

फ़िल्टर में प्रत्येक कप के पीछे एक माप (जो फिल्टर के साथ है) कॉफी पाउडर डालिये और उसे समतल कर लीजिये।

फिल्टर में प्लंजर बैठाइये और पाउडर को धीरे-धीरे दबाइये। प्लंजर के चारों तरफ उबलता हुआ पानी छोड़िये।

४ से ७ मिनट में कॉफी तैयार हो जायगी। अपने इच्छानुसार दूध और शकर ले कर कपमें कॉफी डालिये।

ये फिल्टर देश भर में सभी
इंडिया कॉफी डीपो,
कॉफी हाउस
में मिलते हैं।

कॉफी बोर्ड
बैंगलूर

पैरों तले यह मुर्गा दब गया । मैंने इस बेचारे को घोड़े को देना चाहा । लेकिन उसने अस्वीकार कर दिया । तब मैंने यह मुर्गा अपने लिए रख लिया और वह जंगली साग घोड़े को दे दिया ।"

× × ×

आरसेनियो

नवारा के इस कैथोलिक प्रदेश की राजधानी पैंपलोना है । अपने भ्रमण के सिलसिले में मैंने यहां भी कुछ समय बिताया । एक दिन डोन जोज मारिया मुझे अपने एक परिचित मारक्विस (ताल्लुकेदार) के पास ले गया । मारिया ने मुझे बताया कि मारक्विस बहुत ही बूढ़ा और गरीब आदमी है । उसकी गरीबी इस हद तक पहुंच चुकी है कि पिछले ३५ वर्षों से वह अपने नौकर को वेतन नहीं दे सका है ।

रात के लगभग १० बज रहे थे । पैंपलोना की मुख्य सड़क बिलकुल सुनसान पड़ी थी । कुछ ही कदम चलने पर हम मारक्विस के घर पहुंच गये । वस्तुतः यह घर नहीं, वरन एक महल था । जिसके मुख्य द्वार पर शानदार राजदौत्य चिह्न पंक्तिबद्ध थे । 'कोर्निस' का शिल्प विशेष कुशलता का परिचायक था। उसके ऊपर वंश-चिह्नों को पुष्प-शृंखला से परस्पर मिलाया गया था और उनके मध्य कुसुम-वाणों की सज्जा बड़ी भली प्रतीत होती थी ।

मारिया ने लोहे की छड़ी से दरवाजे पर तीन बार दस्तक दी । बाह्य चित्र-शैली की सज्जा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा– "यह सब सुंदर है । हमारे देखने के लिए यही सब कुछ है। भीतर हमें कुछ भी न मिलेगा, क्योंकि नौकर अब कुछ भी कर सकने के लिए सक्रिय नहीं रह गया है ।"

नौकर ने दरवाजा खोला । उसका नाम था आरसेनियो । वह लम्बा था और सूखा हुआ-सा प्रतीत होता था । उसकी आखें भूरी थीं; पर मुख पर उदासीनता स्पष्ट प्रतीत होती थी । वह हमारे सम्मुख आदर-भाव से थोड़ा-सा झुककर खड़ा हो गया ।

इसी समय नौकर के पीछे-पीछे हमारा मारक्विस डी सांताक्रुज हाथ में लालटेन लिये हुए दिखाई दिया । उसका कद हम दोनों की तुलना में बहुत ही छोटा था । उसने हाथ मिलाकर हमारा अभिवादन किया । रात गहरी हो चुकी थी और उसका मुख-मंडल लालटेन के प्रकाश में आधा ही दीख रहा था ।

बातें करते-करते हम लोगों ने भीतर प्रवेश किया । बड़े हाल में सिर्फ एक ही कुर्सी पड़ी थी । हम साथ के जीने से ऊपर के कमरे की ओर जाने लगे । हमारा मेजबान लालटेन हाथ में लिये हुए आगे-आगे चल रहा था । हम दोनों बीच में थे और आरसेनियो पीछे था । सांताक्रुज के बूढ़े और दुर्बल हाथ में लालटेन रह-रहकर कांप जाया करती थी और तब वह रुक जाया करता था । तभी न जाने क्या सोचकर उसने कहा–"मैं पूरी निष्ठा और सम्मान के साथ एक बात कहता हूं कि जब मैं स्वर्ग जाऊंगा, तब साथ में आरसेनियो को भी जरूर ले जाऊंगा।"

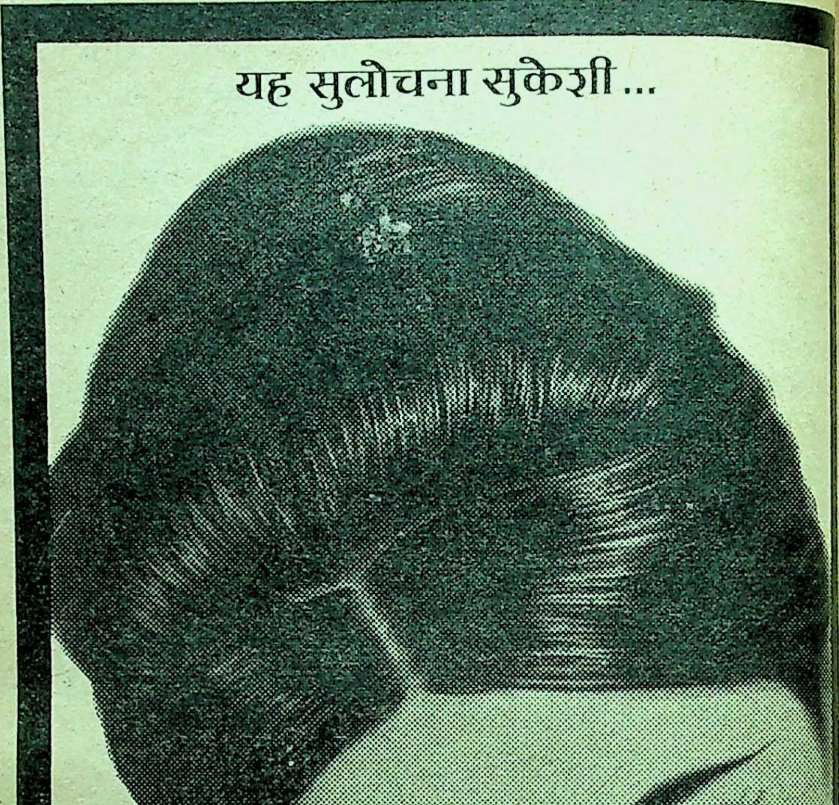
Tata's Perfumed Hair Oil Coconut
Tata's Perfumed Hair Oil

यह सुलोचना सुकेशी...

यह सदा टाटाका हेअर ऑइल इस्तेमाल करती हैं
जिससे इनके बाल स्वस्थ और चमकदार रहते हैं।

टाटा के हेअर ऑइल • मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाते हैं • बालों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं • संवारने के बाद बाल ठीक से बैठ जाते हैं • बाल घने उगते हैं • इनकी सुगंध भी मनमोहक होती है

टाटा के सुगंधित हेअर ऑइल

THOY-47 HIN

एकदम सामान्य-सा दीख पड़नेवाला वह बूढ़ा-सा नौकर इतने महत्व का व्यक्ति है–यह हमें अब ज्ञात हुआ । हम दोनों ने अब की बार अच्छी तरह से आरसेनियो की ओर देखा । वह सम्मानपूर्ण भावातिरेक में इतना अधिक निमग्न हो गया था कि बेचारा एक शब्द भी न बोल सका ।

मारक्विस सांताक्रुज ने फिर कहा– "इस व्यक्ति के साथ रहकर मुझे ऐसा सुख प्राप्त होता है, जैसे कि मैं स्वर्ग के द्वार पर खड़ा होऊं ।"

तब आरसेनियो ने बड़े ही विनम्र और सम्मानपूर्ण स्वर में कहा–"मेरे देव तुल्य मालिक !"

सांताक्रुज ने फिर कहा–"मैं संत पीटर से विनयपूर्वक कहूंगा कि–"मेरे लिए आरसेनियो के बिना स्वर्ग में प्रवेश पाना असंभव है । और पता नहीं, संत पीटर इसका उत्तर किस प्रकार देंगे । शायद वह यह कहेंगे–"हां, तुम दोनों साथ रह सकते हो । तुम इतने वर्षों तक धरती पर साथ-साथ रहे हो । और तुमने परस्पर कभी एक भी कटु शब्द का प्रयोग नहीं किया है ।"

"लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता," आरसेनियो ने कहा–"मैं तो छोटे वर्ग का व्यक्ति हूं । मैं अपने मालिक के साथ स्वर्ग नहीं जा सकता । मैं इस योग्य कहां हूं । मैं पापी हूं । एक बार जब मैं बालक था......।"

१७-१८वीं शताब्दीकी 'चीनी मिट्टी' का एक नमूना

"क्या बकार की बात करते हो," सांताक्रुज की बूढ़ी जबान इस बार गरज उठी । एक क्षण के लिए लालटेन उसके हाथों में कांप गयी और वह रुक गया–"यदि तुम इस प्रकार संत पीटर के सम्मुख कहोगे, तो ......।" और उसने आरसेनियो की ओर आग्नेय दृष्टि से देखा ।

"लेकिन मुझे सत्य तो कहने दीजिये। मैं पापी हूं । शायद मैंने पहले भी आपको बताया था कि......।"

"क्या बताना चाहते हो, बताओ......बताओ......?"

"मेरे मालिक ! यही कि स्वर्ग में मैं आपका सेवक बनने योग्य नहीं ......।"

"अच्छा, अच्छा । लेकिन मुझे यह तो बताओ कि तुम्हारे बिना मुझे स्वर्ग की प्राप्ति कैसे होगी ! बोलो...... बताओ कुछ......?" और बूढ़ा सांताक्रुज वहीं सीढ़ियों पर रुक गया ।

मेरे साथी ने कहा–"आरसेनियो ! तुमने सदा ही अपने मालिक की सुविधा का ध्यान रखा है ।–रखा है न ।"

आरसेनियो ने सम्मतिसूचक सिर हिला दिया ।

"तो जब तुम्हें स्वर्ग ले जाने में तुम्हारे मालिक की खुशी है, तो तुम उसमें आनाकानी क्यों कर रहे हो। तुम्हें अपने मालिक

MOON & STAG
RAIPUR MILLS
AHMEDABAD

पाप्लिन्स – शर्टिंग्स
मर्सेराइज्ड धोतियाँ
छपी हुई लान्स
तथा बुटास

·SANFORIZED·
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT, PEABODY & CO. INC.

रायपुर मिल्स लि०, अहमदाबाद

आदेश मानना चाहिये।

"मैं अपने मालिक का प्रत्येक आदेश सिर आखों पर लेता हूं।"

"तो फिर यह वचन दो कि तुम अपने मालिक के साथ स्वर्ग जाओगे।"

"......मैं......मैं।" आरसेनियो की जबान लड़खड़ायी। फिर उसने संभलकर कहा–"मैं......मैं वचन देता हूं कि मैं अपने मालिक के आदेश का पालन करूंगा।"

तब मेरे मित्र ने सांताक्रुज की ओर देखकर कहा–"डान! तुम्हें अब किसी प्रकार की चिंता नहीं करनी चाहिये। तुम्हारा आरसेनियो तुम्हारे साथ स्वर्ग में भी जायेगा।" बूढ़े सांताक्रुज की आंखों में आश्वस्त होने का भाव आ गया।

मैंने दीपक के उस टिमटिमाते हुए प्रकाश में देखा–"सांताक्रुज के मुख पर अब संतोष की गहरी छाया थी और आरसेनियो की आंखों में थे भाव-विह्वलता के अश्रु-बिंदु।

× × ×

युगोस्लाविया

[एक सरबियन महिला से भेंट]

पिछले महायुद्ध से एक या दो महीने पश्चात् की बात है। फरवरी का सुहाना दिन था। मैं युगोस्लाविया के बेनत-नामक प्रदेश के एक छोटे-से स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। यह स्टेशन इतना सामान्य था कि वह किसी भी अन्य स्थान से टेलिफोन या तार से संबद्ध नहीं था। अतः गाड़ी के आने-जाने के समय के विषय में किसी प्रकार की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती थी। किसी को यह भी ज्ञात नहीं होता था कि उसे गाड़ी के लिए कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

स्टेशन पर कुछ और भी सहयात्री थे। प्रतीक्षा करते-करते हम सबको एक घंटा बीत गया फिर दूसरा घंटा बीता। लेकिन अभी तक गाड़ी आने के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे थे। हमारे सहयात्रियों में एक व्यक्ति वायलन लिये हुए था। उसने धीरे-धीरे उसे बजाना आरंभ कर दिया। आस-पास के लोग उसके निकट एकत्र होने लगे और थोड़ी ही देर में हम सब उस मोहक संगीत की लहरियों के मध्य नाचने लगे। उस एकाकी स्टेशन पर सहयात्रियों का इस प्रकार उन्मुक्त भाव से नाचना-गाना एक अपूर्व दृश्य उपस्थित कर रहा था।

थोड़ी देर बाद स्टेशन-मास्टर भी हमारे इस रंगीन कार्यक्रम में शामिल हो गया और कुछ ही देर बाद उस स्टेशन का पोर्टर भी उस आमोद-प्रमोद के वातावरण में शरीक हो गया। सब मिलाकर वहां एक सुंदर दृश्य और अमित उल्लास की सृष्टि हो गयी।

मैं अत्यधिक नाचने के उपरांत थोड़ा विश्राम कर रहा था कि तभी एक अधेड़, किंतु आकर्षक महिला मेरे सामने आ खड़ी हुई। उसके हाथ में एक सुंदर थैली थी।

मैंने उसका अभिवादन किया। उसने मेरी दीर्घायु की कामना की। फिर जब उसने देखा कि मैं एक विदेशी हूं, तो उसे मेरे साहचर्य में रहने तथा कुछ बातें करने की इच्छा हुई।

आपको भी एक
फिलिप्स
बाइसिकिल
चाहिए

शानदार और सुन्दर फिलिप्स साइकिल आप जैसे, आज के कार्यव्यस्त युवकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाई जाती है। पक्के पानी चढ़ाये इस्पात से बननेवाली यह साइकिल ऐसी मजबूत है कि बुरी से बुरी हालत में भी बिलकुल ठीक चलती है। करीब ७० वर्षों से सारी दुनिया में मशहूर यह फिलिप्स साइकिल, टी० आई० साइकिल्स के आधुनिक कारखाने में सूक्ष्म रीति से बनती है।

RENOWNED THE WORLD OVER
PHILLIPS
MADRAS

PHILLIPS

टी० आई० साइकिल्स आफ इन्डिया
अम्बात्तुर, मद्रास

JWT/TIC : PH 2053A

"आपको पता है, ये लोग क्यों नाच रहे हैं ?" उसने मुझसे पूछा ।

लेकिन मैं कुछ उत्तर दूं, इससे पहले ही वह बोल उठी–"मेरे विचार से इसलिए कि सर्ब, क्रोट तथा स्लाव लोग आखिरकार एक हो ही गये । इनका उल्लास इसी बात का द्योतक है । फिर भी एक बात का दुःख अभी तक मेरे मन में शेष है, वह यह कि बल्गार लोग हमसे अभी तक पृथक बने हुए हैं । वे भी हमारी ही तरह दक्षिणी दास हैं; लेकिन मेरा विश्वास है कि एक दिन आयेगा...... ।"

"यह तो शोध का विषय है कि क्या बल्गार लोग हमेशा से अपने को अलग समझते आये हैं ।"

"हम भी तो उनसे घृणा नहीं करते । मेरे बेटे ने मुझे एक कहानी सुनाई थी । बाल्कान युद्ध में सरबियन तथा बल्गेरियन सैनिकों के मन में एक-दूसरे से मैत्री भाव बढ़ाने की इतनी उत्कट अभिलाषा थी कि वे एक-दूसरे की भाषा–भले ही वह अटपटी क्यों न लगती हो–बोलने लगे थे ।"

इसी समय सूअर का गरम शोरबा लिये एक लड़का हमारे पास से गुजरा ।

मैंने उसे बुलाकर दो कप ले लिये, क्योंकि मुझे विश्वास था कि अगर गाड़ी आयी भी, तो उसमें निश्चित रूप से डाइनिंग कार जैसी कोई चीज नहीं होगी ।

लड़के ने शोरबे के साथ-साथ हमें कुछ साग और रोटी भी दी । तब महिला ने अपनी थैली से एक दूधिया पेय निकाला और बोली– हम इसे अपने-अपने देशवासियों के नाम पर पियें ।"

और जब उस द्रव का तेज घूंट मेरे गले के नीचे उतरा, तो मुझे ऐसा लगा कि सरबियन लोग कभी भी अपने दुश्मनों के सम्मुख घुटने नहीं टेकेंगे ।

"मेरा देश सैनिकों का देश है ।" उसने बड़े उल्लास से कहा ।

"और अब तुम बल्गारों के स्वास्थ्य-लाभ के लिए पियो और उसके बाद मैं भी पिऊंगी ।"

मैंने कहा–"यह तुम्हारे हृदय की विशालता है । उन्होंने तुम्हारे देश को कितनी हानि पहुंचायी है, फिर भी तुम्हारे मन में उनके लिए इतना स्नेह......।"

"ओह ! उसकी मुझे चिंता नहीं । यह फिर भी घटित हो सकता है । समय आ सकता है कि हमें बल्गारों से और अपने अन्य पड़ोसी देशों से भी युद्ध करना पड़े ।"

मैंने कहा–"ईश्वर करे, ऐसा फिर कभी न हो ।"

"यदि हो भी, तो हम अपने राष्ट्र और जीवन की रक्षा के लिए पहाड़ों से नीचे उतर आयेंगे ।......अच्छा और पेय लो ।" उसने गिलास में थोड़ा-सा द्रव उंडेलकर मेरी ओर बढ़ा दिया ।

वह तेज घूंट मेरे गले में उतरा ही था कि स्टेशन मास्टर ने इशारे से हम दोनों को नृत्य के लिए आमंत्रित किया । मांस का एक बड़ा-सा टुकड़ा मुंह में डालती हुई वह भद्र महिला बोली–"हम सरबियन किसी

वाह, मज़ा आ गया हमाम से नहाकर!
हमाम
HAMĀM
the family soap
हमाम
भरपूर झागवाला हमाम-परिवार का मनपसंद साबुन!

भी कठिनाई का सामना करने के लिए सदैव तैयार हैं और साथ ही उदार मानवता के भाव को भी कभी नहीं भूले हैं।"

इतना कहकर वह मेरे साथ नृत्य करने की मुद्रा में खड़ी हो गयी।

× × ×

चेकोस्लोवाकिया

[घने जंगल की एक रात]

जब मैं जैसीना से लौटा, तो निकोलई भी मेरे साथ था। रास्ते के बीहड़ जंगल में ही दिन छिप गया। उस समय हवा बड़ी तेजी से बह रही थी। कुछ विशेष प्रकार के वृक्षों को देखते और विशेष पक्षियों का कलरव सुनते हुए हम आगे बढ़ते ही गये। हमारे सम्मुख उस समय सबसे बड़ी समस्या रात बिताने की थी।

हम लगातार कई घंटे चल चुके थे। जंगल की यात्रा का हम दोनों में से किसी को भी कोई अनुभव नहीं था। कुछ समय के पश्चात् हम एक खुले स्थान पर आये। वहां इल्को बिलेज का आवास था, जहां कुटिया के भीतर से प्रकाश दिखाई पड़ रहा था। आश्वस्त होकर हम उसी ओर चल दिये। एक क्षण के लिए हमें इस बात की शंका हुई कि कहीं हमें लुटेरा डाकू न समझ लिया जाये। लेकिन वहां पहुंचने पर हमारी यह शंका निर्मूल सिद्ध हुई।

हमें देखकर एक श्वेतवर्णी कुत्ता हमारे ऊपर झपटा और जोर-जोर से भौंकने लगा। तभी इल्को बिलेज सामने से आता दिखाई दिया। उसने डांटकर कुत्ते को भगा दिया और बड़ी सहृदयता के साथ अपने नये अतिथियों का स्वागत किया।

भीतर लैंप के प्रकाश में मैंने इल्को बिलेज को देखा। उसका सिर बीच से गंजा हो चुका था। कहीं-कहीं इक्के-दुक्के बाल दिखाई पड़ते थे और उसकी दाढ़ी भी भूरी हो चली थी। उसने अपनी पत्नी को आवाज दी। थोड़ी देर बाद एक मुरझाई-सी महिला हमारे सम्मुख आयी। औपचारिक अभिवादन के पश्चात् हमने कुछ इधर-उधर की बातें कीं और तब हमें खाने के लिए मेहमाननवाज ने भीतर के छोटे से कमरे में बुला लिया। वहां एक अतिथि पहले से जमा हुआ था। उसकी ओर मुखातिब होकर गृह-स्वामिनी ने कहा—"दो और आ गये!" और उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा।

उसके इस वाक्य का अर्थ उस समय मेरी समझ में न आ सका। मैंने अर्थभरी दृष्टि से उस महिला की ओर देखा और इस बार मुझे लगा कि वह आकर्षक है। लेकिन उसने बड़ी निराशा से मेरी ओर से मुंह फेर लिया। खाते समय और कोई विशेष बात नहीं हुई।

हमसे पहले आया हुआ अतिथि बड़ा लंबा-चौड़ा और बलिष्ठ प्रतीत होता था। खाना खा चुकने के पश्चात् वह अपने पूर्व-निर्देशित कक्ष में जाकर सो गया।

कुछ समय के पश्चात् बाड़े में हमारे सोने का प्रबंध करके इल्को बिलेज मेरे पास आया और हमसे आग्रह किया कि चूंकि रात अधिक हो गयी है, अतः हम लोग

गिरते बाल

आसानीसे रोके जा सकते हैं।

आप केवल यही करें कि........

आप जिस हेअर ऑईलका इस्तेमाल करते हैं, उसमें अथवा आधा किलो खोपरेके तेलमें या एरण्डीके तेलमें झरण की एक बोतल मिलालें। इस तरहसे बना हुआ विशेष गुणकारी तेल, हररोज इस्तेमाल करके बाल गिरनेकी मुसिबतसे आप छुटकारा पाईये ! इतनाही नहीं बल्की आप फिरसे घने और लम्बे बाल प्राप्त किजीये।

झरण

घने और लम्बे बाल के लिए

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स:- सुगंध घर, अहमदाबाद-१.
एजेन्टस:- सी. नरोतम एन्ड कं. बम्बई-२.

MPS

अब विश्राम करें ।

मैं और निकोलई उस फूस के उभरे हुए बिस्तर पर चित्त लेट गये । मैंने अपने मेजबान को विश्वास दिलाया कि उस बिस्तर पर हमें एकदम नींद आ जायेगी । अपने इस आश्वासन की पुष्टि के लिए मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं और गहरी नींद में सोने का उपक्रम करने लगा । इल्को विलेज हमसे विदा लेकर लौट गया ।

मैं थोड़ी देर तक उसी तरह आंखें बंद किये दिन-भर की घटनाओं का विश्लेषण करता रहा । फिर सहसा मुझे लगा कि कोई मेरे निकट खड़ा है । मैंने मुंह फिराया ही था कि मुझे बराबर में ही—चुपचाप खड़ी हुई महिला दिखाई पड़ी । मैंने सोचा, शायद वह यह देखने आयी है कि घास-फूस के उस बिस्तर पर हमें नींद भी आ रही हैं कि नहीं । इस आशय से मैंने धीरे से कहा—"आप निश्चित रहिये, हमें यहां बड़ा आराम है ।"

अतिशय विस्मय से मैंने देखा कि वह मुझसे उठने का इंगित कर रही है । मैं मंत्र-मुग्ध-सा उठकर खड़ा हो गया । मैंने दृष्टि उठाकर निकोलई की तरफ देखा वह गहरी नींद में था । मैं चुपचाप उठकर बाड़े से बाहर निकल आया । हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए घने जंगल में आ पहुंचे । तब वह एकदम थके हुए स्वर में मुझसे बोली—"आप मेरी अवस्था का अनुमान लगा सकते हैं । मैं क्या करूं ?"

मैं कुछ भी न समझ सका । फिर वह कुछ क्षण ठहरकर बोली—"हमारे यहां यह नियम है कि रात को गृह-स्वामिनी को अतिथि के साथ ठहरना पड़ता है, तथा उसके प्रत्येक मनोरंजन का ध्यान रखना पड़ता है । लेकिन अब तीन-तीन अतिथियों का मनोरंजन......। सचमुच, कभी-कभी स्त्री होना भी एक अभिशाप लगता है ।"

उस सुनसान वातावरण में एक नयी परिचित महिला का सान्निध्य मेरी रगों के लहू को गरम कर रहा था । मुझे लग रहा था कि निकटवर्ती पवर्तीय झरनों की कल-कल ध्वनि मेरे आनंद की ही अभिव्यक्ति है । मुझे उस सुनसान वातावरण में भी पक्षियों का संगीत झनझनाता-सा प्रतीत हो रहा था । मुझे लग रहा था कि सृष्टि में सब कुछ आनंदमय है और ......।

लेकिन उसका यह दर्दीला वाक्य सुनकर मेरी रगों का खून शीतल पड़ गया । मैं इस अनैतिक परंपरा के विषय में बड़ी गंभीरता से सोचने लगा, जिसके कारण नारी के प्रति इतना सस्ता व्यवहार किया जाता है ।

उस अच्छी लगनेवाली औरत ने फिर कहा—"इस परंपरा के होते हुए भी मैं अभी तक अपने आपको पवित्र रखे हुए हूं, इसलिए कि हमारे बुढ़ापे के दिन सुखपूर्वक बीतें और ईश्वर की कृपा हम पर बनी रहे ।" इतना कहकर उसने बड़ी दयनीयता से मेरी ओर देखा । मेरी ओर—जिसने अब तक उसकी कमर में उंगलियां फंसा रखी थीं ।

मैंने उसकी कमर से हाथ हटा लिया और बोला—"चलो, हम वापस चलें । आओ,

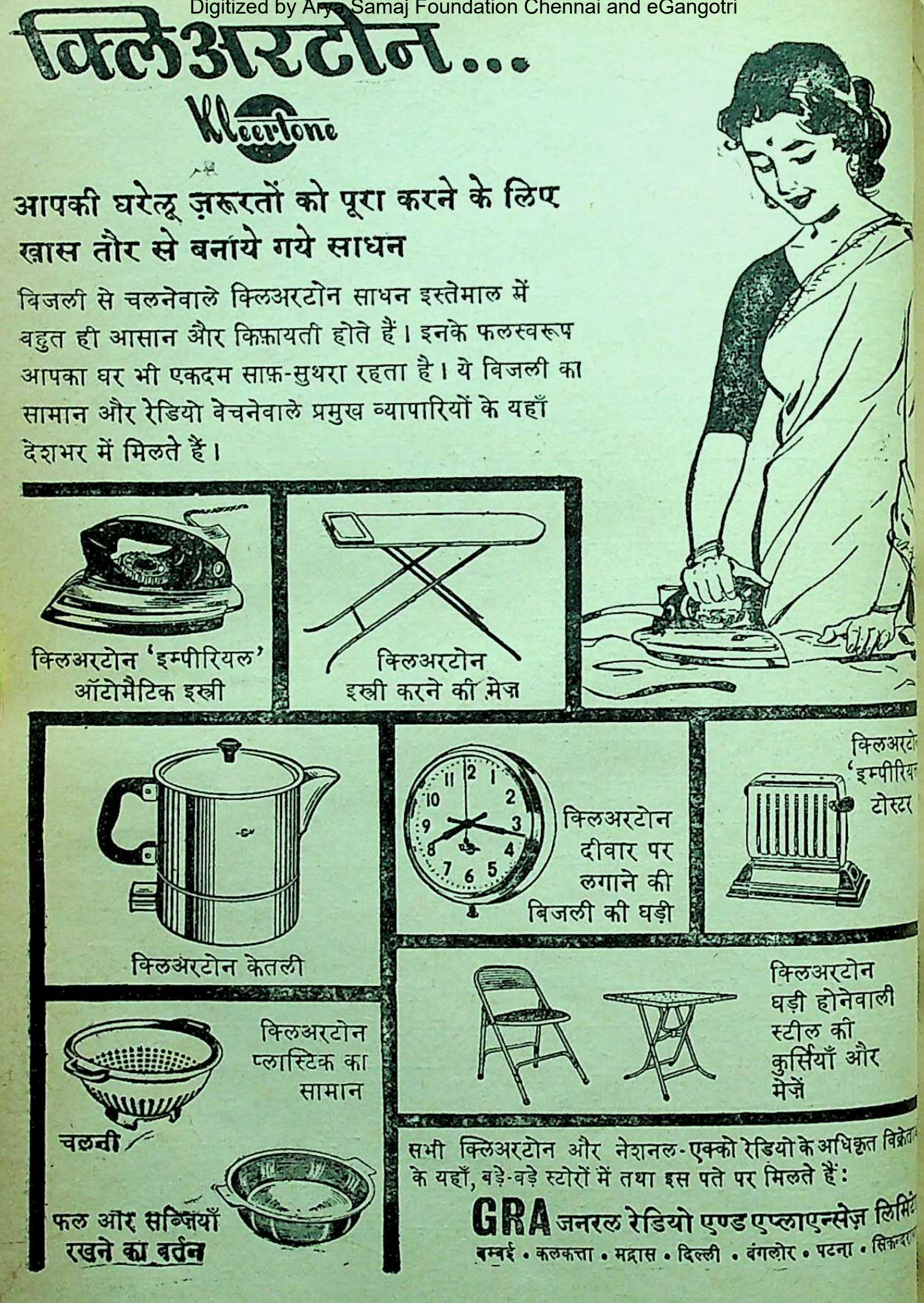

क्लिअरटोन...
Kleertone

आपकी घरेलू ज़रूरतों को पूरा करने के लिए
ख़ास तौर से बनाये गये साधन

बिजली से चलनेवाले क्लिअरटोन साधन इस्तेमाल में बहुत ही आसान और किफ़ायती होते हैं। इनके फलस्वरूप आपका घर भी एकदम साफ़-सुथरा रहता है। ये बिजली का सामान और रेडियो बेचनेवाले प्रमुख व्यापारियों के यहाँ देशभर में मिलते हैं।

क्लिअरटोन 'इम्पीरियल'
ऑटोमैटिक इस्त्री

क्लिअरटोन
इस्त्री करने की मेज़

क्लिअरटोन केतली

क्लिअरटोन
दीवार पर
लगाने की
बिजली की घड़ी

क्लिअरटो
'इम्पीरिय
टोस्टर

क्लिअरटोन
प्लास्टिक का
सामान

चलनी

फल और सब्ज़ियाँ
रखने का बर्तन

क्लिअरटोन
घड़ी होनेवाली
स्टील की
कुर्सियाँ और
मेज़ें

सभी क्लिअरटोन और नेशनल-एक्को रेडियो के अधिकृत विक्रेता
के यहाँ, बड़े-बड़े स्टोरों में तथा इस पते पर मिलते हैं:
GRA जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमि
बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • पटना • सिकन्द

मेरा हाथ पकड़ लो।

आकर्षण का वह क्षणिक आवेग मेरे हृदय से निकल चुका था। मैं जितनी जल्दी हो सकता था, बाड़े में वापस लौट आना चाहता था। हवा तेजी से चलने लगी थी और वर्षा के लक्षण साफ दिखाई पड़ रहे थे।

हम कई बार गिरते-गिरते बचे। कई बार हमने पत्थरों और कटे हुए पेड़ों की जड़ों पर ठोकरें खायीं; और घर पहुंचते-पहुंचते हम बुरी तरह भीग गये।

घर का दरवाजा खुला था। एक क्षण के लिए बिजली चमकी और मैंने देखा कि गृह-स्वामी जैसे हमारी प्रतीक्षा ही कर रहा था—"आज की रात कितनी भयानक है।" वह हमें देखकर बुदबुदाया।

"ओह! नहीं। आज की रात बहुत शानदार है।......सच, बहुत शानदार।"

मैं घास और फूस के बिस्तर पर पड़ा-पड़ा बड़ी देर तक सोचता रहा—वस्तुतः यह रात बड़ी शानदार है। क्योंकि इस रात एक महिला का सतीत्व खंडित होते-होते बच गया।

× × ×

रूमानिया

[वह वापस चला गया]

एक आवारा फिरनेवाला युवक रोमूलस उस दिन यों ही सड़क पर मिल गया। उसके विचार से किसी की ऐसी मां का होना, जो यह सोचती रहे कि एक दिन उसके पुत्र द्वारा संसार पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी, बड़ा अच्छा हो सकता है; किंतु साथ ही इस तरह से सोचने की अपनी कुछ हानियां भी हैं। इस संदर्भ में उसने मुझे अपनी कहानी कह सुनायी।

उसके गांव का पोस्ट-आफिस उसके अपने परिवार में ही था। खुद उसका पिता उस छोटे से पोस्ट आफिस का सर्वेसर्वा था। किंतु उसकी मृत्यु युवावस्था में ही हो गयी। तब उसकी मां ने अपने पति के काम को संभाला। और वह सब कुछ बड़ी ही कुशलता के साथ निभा ले गयी।

जब गांव में किसी की भी अमरीका या न्यूजीलैंड से चिट्ठी आती, तब उस पत्र पर लगे टिकिटों को वह अपने पुत्र को दिखाकर कहती कि इन देशों में रहकर अपने को भाग्यशाली बनाना कठिन नहीं है और यदि वह वहां चला जाये, तो धनी बनने की होड़ में सबको पिछाड़ सकता है।

इन बातों का रोमूलस पर यह प्रभाव हुआ कि एक दिन वह गांव छोड़कर अपनी किस्मत आजमाने के लिए विदेश चला गया।

कहानी को बीच में ही छोड़ते हुए रोमूलस ने मुझसे कहा—"मैं नहीं चाहता कि आपको अपने जीवन की प्रत्येक घटना सुनाऊं। वह सब बहुत हो जायेगा। लेकिन इतना तो बतला ही दूं कि मैं मंगलवार को पैदा हुआ था, लेकिन मेरी मां ने मुझे यह कभी भी नहीं बताया। शायद वह मुझे निरुत्साहित नहीं करना चाहती थी। क्योंकि हमारे यहां जन्म लेने के लिए मंगल का

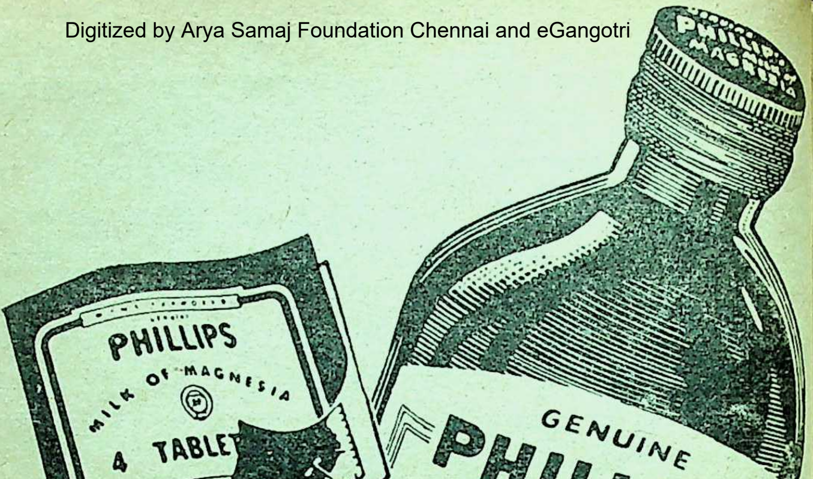
PHILLIPS
MILK OF MAGNESIA
4 TABLE
GENUINE
PHILLIPS
REGISTERED TRADE MARK
MILK OF MAGNESIA
CONCENTRATED
LIQUID MAGNESIA
MAGNESIA MAGMA U S P
CONTENTS 343 ml (12 fl oz.)
STERLING PRODUCTS INTERNATIONAL
INCORPORATED
KEEP FROM FREEZING
SHAKE WELL

विश्वसनीय

प्रत्येक क्षेत्र में बहुत कम ऐसी वस्तुएँ होती हैं जो अपने गुणों और अनेक वर्षों की सर्वविदित विश्वसनीयता के कारण विख्यात हो जाती हैं। इस गुण के कारण ही फिलिप्स मिल्क ऑफ मेग्नेशिया को संसार-भर में विश्वास और मान्यता प्राप्त है। ७५ वर्षों से भी अधिक समय से सारी दुनिया इसे जानती है और डाक्टर भी इसके व्यवहार की सलाह देते हैं

रजिस्टर्ड व्यवहारकर्त्ता द्वारा निर्मित देज मेडिकल स्टोर्स (मैन्युफैक्चरिंग) प्रा०

दिन बड़ा अशुभ माना जाता है । और फिर उसने एक गहरी सांस ली और कहा–"शायद मंगल के दिन जन्म लेने के कारण ही मैं अपने जीवन में असफल रहा हूं ।" उसके उपरांत उसने मुझे बताया कि उसने विदेश में किस-किस प्रकार के कार्य किये। ज्यादातर उसने बड़े ही निम्न कोटि के कार्य किये थे । ऐसे कार्य, जिनसे उसकी मां का स्वप्न कभी भी पूरा नहीं हो सकता था । परिणामस्वरूप बुरी तरह निराशा की अवस्था में और दुनिया से उपेक्षित होकर उसने अपने गांव लौटने का विचार किया। उसने सोचा कि वह दिन-भर पोस्ट आफिस में अपनी मां के काम में हाथ बंटाया करेगा और शाम को जब भी समय मिलेगा, उसे अपनी विदेश-यात्रा के अनुभव सुनायेगा। और वह अपने गांव की ओर लौट पड़ा ।

उसके साथ में धन-दौलत की गठरी नहीं, बल्कि एक राहगीर कुत्ता था, जो अब उसका मित्र बन गया था । गांव की सीमा पर उसे पेड़ की छाया में एक बूढ़ा व्यक्ति पाइप पीता दिखाई दिया । रोमूलस ने सोचा–गांव के विषय में इससे जानकारी प्राप्त करना बेहतर होगा ।

उसने निकट जाकर उसे पहचाना । वह उसके ही गांव का वृद्ध सीजर था । उसने अपने को अव्यक्त रखते हुए ही उसका अभिवादन किया और उसे पीने के लिए सिगरेट दी । वे उसकी अंतिम सिगरेटें थीं । लेकिन उसे विश्वास था कि मां के पास पहुंचकर उसे काफी सिगरेटें मिल जायेंगी।

बूढ़े ने सिगरेट के लिए रोमूलस को धन्यवाद दिया । कुछ देर की सामान्य चर्चा के बाद रोमूलस ने उससे अपने गांव का हाल पूछा। इस प्रश्न पर सीजर थोड़ा विचलित हो उठा । लेकिन फिर उपेक्षा के भाव में बोला–"कुछ दिन पहले यहां सरकारी टैक्स लेनेवाले अफसर आये थे । मैं नही चाहता कि अपने गांव की हालत किसी भी टैक्स-अफसर को बताऊं । चाहे उसने मेरे साथ कितना ही उपकार क्यों न किया हो ।"

इस उत्तर से रोमूलस लगभग चीख-उठा। "कौन कहता है कि मैं टैक्स-अफसर हूं ?"

बूढ़े ने बड़े सहजभाव से कहा–"तुम जो भी हो;" लेकिन तुम टैक्स-अफसर के समान ही दीखते हो । और मेरा यह कथन इतना ही सत्य है, जितना यह कि मेरा नाम सीजर है ।"

रोमूलस को यह नहीं सूझ रहा था कि अब किस प्रकार बातचीत बढ़ायी जाये । फिर अपने स्वर में अतिशय मृदुता लाते हुए उसने कहा–"मैं उस बूढ़ी औरत के विषय में जानना चाहता हूं, जो पोस्ट-आफिस चलाती है ।"

बूढ़ा इस बात का कुछ उत्तर दे कि गांव के कुत्तों का एक झुंड रोमूलस और उसके कुत्ते पर टूट पड़ा । कुत्तों ने रोमूलस की पेंट की कन्नियां फाड़ दीं और बेचारे कुत्ते को तो मार ही डाला । एक ही क्षण में यह सब कुछ हो गया ।

इधर वह बूढ़ा व्यक्ति रोमूलस को उस

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हॅंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY.
INDU FABRICS
BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

बूढ़ी महिला के विषय में बता रहा था। उसने कहा—"वह बड़ी बेकार और वाचाल औरत है। मैं उससे किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखता।"

रोमूलस ने हैरत से पूछा—"आखिर क्यों? उसने ऐसा क्या किया है?"

"वह और तो क्या कर सकती है?" बूढ़े न पाइप को झटककर कहा—"वह हमेशा हर व्यक्ति से डींग हांकती रहती है कि उसका बेटा विदेश में धनी बनने गया है। एक दिन उसका सारे महाद्वीप में बड़ा नाम होगा।.... लेकिन मैंने उससे कह दिया है कि ऐसा नहीं होगा। .... यदि ऐसा हुआ होता, तो अवश्य ही किसी ने उसका नाम सुना होता।"

"शायद-शायद......।" अब रोमूलस का स्वर लड़खड़ा गया—"शायद...वह बेचारा अभागा रहा हो।"

बूढ़े ने कहा—"हां, हो सकता है। लेकिन उस बेवकूफ बूढ़ी औरत ने तो अपने मकान के ऊपर दो कमरे तक बनवा लिये हैं। एक अपने बेटे के लिए और एक उसके नौकर के लिए। क्योंकि उसका पक्का विश्वास है कि अब उसका बेटा अंग-रक्षक के साथ ही वापस लौटेगा।"

रोमूलस आगे न सुन सका। उसने कुत्ते के शव पर दृष्टि डाली। गांव के कुत्ते लौट चुके थे और छोटे-छोटे बच्चों की चिल्लाहट बढ़ती जा रही थी।

"खैर...... इसके अलावा हो भी क्या सकता था।" रोमूलस ने मुझसे कहा—"गांव के बच्चों ने कुत्ते के शव को दफनाने के लिए ले लिया। उन्हें तो एक खेल मिल गया था। और मैं....वहीं से अपनी मां से मिले बिना ही वापस चला आया। पीछे से एक पत्थर मेरे पैरों पर लगा। मैं एक क्षण के लिए लड़खड़ाया और फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा। गांव के लड़के पत्थर लिये हुए मेरी ओर बढ़ रहे थे। मैं लंगड़ाते-लगड़ाते ही वहां से भागने लगा।" और यह कहकर रोमूलस ने मुझसे एक सिगरेट मांगी और फीकी हंसी हंसते हुए कहा—"और इसीलिए मैं यहां हूं। सच, कभी-कभी अपनी औलाद के विषय में बड़ी-बड़ी आशाएं करना भी कितना बुरा होता है!"

पकड़

कहते हैं नायक अल्ला दत्ता ने कोहिमा के मोर्चे पर दुश्मन के एक सिपाही को पकड़ लिया और उन दोनों में खूब हाथापायी हुई। नायक अल्ला दत्ता जब बुरी तरह थक गया, तो उसने पहाड़ की चोटी पर खड़े और दूरबीन लगाये कैप्टेन साहब को पुकार कर कहा—"कैप्टन साहब, मैंने दुश्मन का एक सिपाही पकड़ लिया है...।"

कैप्टन साहब ने आंखों से दूरबीन हटाते हुए खुशी का एक नारा लगाया और चिल्लाकर कहा—" उसे मेरे पास ले आओ।"

नायक ने पुकार कर कहा—"सर, यह मुझे आपके पास नहीं आने देता।"

★

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल

नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानग्रह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफरिज़रेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

भारत का महानतम आनन्दमय होटल
टैलीफोन-३०१११ (४० लाईन)
तार का पता-अशोका होटल

Newfields

मचान से

आपने मचान से शिकार करने की कई कथाएं सुनी होंगी, यहां मचान-संबंधी कुछ रोचक एवं व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत हैं

जाबालि

शिकार-कथाएं मचान के विना वनती नहीं, इसीलिए हर शिकार-कथा में मचान होता ही है। इस साल मचान से किये गये शिकारों की कई कथाएं सुनने को मिलीं। एक तब सुनी, जब शिकार-कथाओं के विख्यात लेखक श्रीनिधिजी के साथ कज्जल-वन जाने का प्रोग्राम बना। हरिद्वार से एक मील दूर चंडीघाट के नीचे नाव लगती थी। वहां से नाव पर गंगा की नील धार पार करके हम कज्जल-वन पहुंच गये।

चार-पांच मील दूर चिल्लागांव तक जाकर हम गंगा के एकांत तट पर देर तक बैठे रहे। लौटते हुए श्रीनिधिजी ने कहा–"वनयात्रा का आनंद तभी आयेगा, जब वन के अंतराल में रास्ता छोड़कर चलेंगे।"

आनंद-प्राप्ति की इस शर्त को मानकर हमने घने जंगल की एक पगडंडी पकड़ी। लेकिन पगडंडी के सहारे बहुत दूर तक न जा सके। पगडंडी पत्थरों के नाले में गुम हो गयी थी। हमने नाले के साथ-साथ आगे बढ़ने का निश्चय किया। मगर कुछ दूर ही गये थे कि नाले के किनारेवाली रेत पर के पंजे दिखाई दिये। श्रीनिधिजी ने पंजे को नापकर बताया कि यह शेरनी का पंजा है।

"आपने कैसे जाना कि यह शेरनी का है?" मैंने पूछा।

"शेर के पंजे का निशान वर्गाकार होता है, यह आयताकार है।"

मैंने कहा–"हमारे लिए तो शेर और शेरनी बरावर हैं। इस मीमांसा में समय क्यों गवायें?"

"शेरनी है, तो हमें नाले-नाले न जाकर जंगल का रास्ता पकड़ना चाहिये। शेरनी के साथ बच्चे भी होंगे और बच्चोंवाला जानवर ज्यादा खूंख्वार हो जाता है। बच्चों की रक्षा के लिए वह खुद हमला कर देता है।" श्रीनिधिजी की यह सलाह मानकर हमने फिर पगडंडी पकड़ी।

मगर उस पगडंडी ने हमें फिर ऐसे नाले में उतार दिया, जहां थोड़े से गंदले पानीवाला एक चौड़ा गड्ढा था। गड्ढे के चारों ओर की गीली मिट्टी हाथियों के पैरों से रौंदी हुई थी। गड्ढे में उतरकर भी हाथियों ने जलक्रीड़ा की थी। जिससे गड्ढे में दलदल-सी भर गयी थी। शेर के पंजे से

बिलकुल सरल

आप केवल

रु० ५/- से ही

खोल सकते हैं

सेविंग्स बैंक एकाउन्ट

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में

कोई बैंक चार्जेज नहीं—
और आपको ब्याज भी
मिलेगा वार्षिक ३
प्रतिशत के हिसाब से

आपकी निकट की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये :

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

(संयुक्त राज्य में समितिबद्ध • सदस्यों का दायित्व सीमित)

NGB/61AHIN

बम्बई की शाखायें :—६०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायड्स ब्रान्च) ; मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायड्स ब्रान्च) ; ११७-११६, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी ; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि,क्लब रोड, बायकला।

ठाणा :—आग्रा रोड, कोलबाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

बचकर हाथियों की सूंड में न लपेटे जायें, इस आशंका से हमने फिर नाले का आश्रय लिया । मगर इस हेराफेरी में हम रास्ता भटक गये । ऊपर सूरज की ओर देखा, तो वह बड़ी तेजी से नीचे उतरता दिखायी दिया । धूप ठंडी पड़ चली थी । कज्जलवन का कालापन गहरा हो गया था । शेर या हाथी से भेंट हो ही गयी, तो किस वृक्ष पर चढ़ना चाहिये, हर दस कदम बाद ऐसे वृक्ष को निगाह में रखकर हम आगे बढ़ रहे थे । पास की झाड़ी से फड़फड़ाता कोई तीतर भी निकलता, तो लगता शेर निकला ।

उसी समय हमें दूर से एक गुजर दिखायी दिया, जो ठीक रास्ते से चंडीघाट की ओर आ रहा था । हमारी आवाज सुनकर वह ठहर गया । वह खुद ६ फुट से कुछ ऊंचा ही होगा । उसके हाथ की लाठी ही ६ फुट की होगी, जो उसके चौड़े कंधों तक ही आ रही थी ।

"इधर कोई शेर होता है ?" मैंने पूछा ।

"शेर तो नहीं, चीता या बाघ जरूर होते हैं ?"

"तुमसे कभी मुठभेड़ हुई या नहीं ?"

"मुझसे नहीं हुई; मगर कुछ दिन पहले एक औरत ने उसे मारा था ।"

"औरत ने बाघ का शिकार किया !" मैंने कौतूहलवश पूछा ।

"शिकार नहीं किया, उसने तो अपनी हंसली से ही उसे मार दिया । वह दिन ढले अपने ढोरों के लिए पटठे काट रही थी । बाघ ने एक ओर से आकर उसका बायां कंधा जबड़े में दबोच लिया । औरत ने दायें हाथ की हंसली से बाघ के मुख पर दायें-बायें दो-तीन ऐसी करारी चोटें कीं कि बाघ ने वहीं दम तोड़ दिया । औरत भी ६ महीने अस्पताल में रही । मगर बाद में वह स्वस्थ हो गयी । सरकार ने उसकी बहादुरी के लिए खास इनाम दिया ।"

श्रीनिधिजी ने पूछा—"यहां बाघ का शिकार करने कोई आता है या नहीं ?"

गूजर ने कहा—"बहुत दिन पहले एक नवाब आये थे । एक ऊंचे वृक्ष की शाखाओं पर मजबूत मचान बांधा गया । सीढ़ी लगाकर दोपहर के वक्त ही नवाब साहब को मचान तक पहुंचा दिया गया । बहादुरी का दम भरनेवाले नवाब ने अपने साथियों को वापस भेज दिया । अकेले खुद मचान पर डट गये । बंदूक में उन्होंने कारतूस भर लिये थे, जिससे शेर के आते ही निशाना लगा दें । आधी रात तक शायद कोई जानवर न आया । बहुत रात बीते बाघ ने वहां पधारने की कृपा की । बाघ की चमकली आंखों से नवाब साहब की आंखें मिलीं और आंखें चार होते ही नवाब साहब चित्त मचान पर ही बिछ गये ।

"अगले दिन बहुत रोशनी होने पर भी जब नवाब साहब घर न पहुंचे, तो मुसाहिबों ने जंगल की राह ली । नीचे झाड़ियों में बंदूक देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ । कारतूसों से भरी बंदूक वहीं पड़ी थी । चारों ओर खोजा; मगर नवाब साहब न मिले । जोर-जोर से आवाजें दी गयीं; मगर उस

शीघ्र, सुरक्षित
निश्चित
खाँसी का घरेलू इलाज

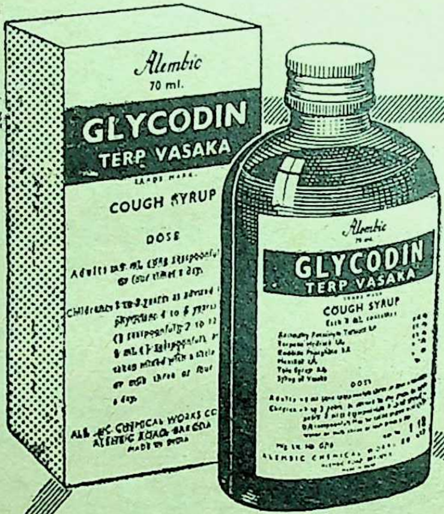
Alembic
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
DOSE
ALEMBIC CHEMICAL WORKS CO
ALEMBIC ROAD, BARODA
Alembic
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP

Alembic

ग्लायकोडिन
टर्प - वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

सन्नाटे में इन आवाजों की प्रतिध्वनि ही लौटकर आयी । नवाब साहब की ओर से कोई उत्तर न मिला । सबने यही समझा कि नवाब साहब बाघ का आमने-सामने शिकार करने मचान से उतर पड़े होंगे और खुद बाघ का शिकार हो गये होंगे ।

"नवाब साहब की बहादुरी के बयान के साथ घने जंगल में चारों ओर नवाब साहब की लाश की तलाश शुरू हो गयी, जिससे उस बहादुर की अंतिम क्रिया नवाबी ठाठ-बाठ से की जा सके ।

"वे आसपास किसी छोटी-सी रियासत के नवाब थे । वहां तार दे दिया गया। उनकी बहादुरी की चर्चा आसपास के सब गांवों में उसी दिन फैल गयी ।

"इसी बीच किसी की निगाह मचान की ओर गयी । उसने देखा, मचान पर कोई चीज पड़ी है । ऊपर गये, तो उन्हें मचान के किनारे पर मुख लटकाये औंधे पड़े नवाब साहब दिखायी दिये । मुसाहिबों ने उन्हें जोरों से हिलाया । मगर उनकी आंख न खुली । नब्ज देखी, तो अभी चल रही थी । मुख से झाग जरूर निकल रहे थे । बेहोशी की हालत में ही उन्हें घर ले गये । ठंडे पानी के छींटे डाले गये, डाक्टर ने दवा पिलायी, तब उन्हें होश आया । बेचारे बाघ की चमकीली आंखें देखकर ही सुधबुध खो बैठे थे, बंदूक हाथों से फिसल कर नीचे जा गिरी थी; और बाघ तो शायद उनकी टार्च की रोशनी देखकर उसी समय भाग गया था ।"

गूजर के मुख से नवाब साहब का किस्सा सुनकर मैंने श्रीनिधिजी से पूछा—"क्या मचान पर सुरक्षित बैठकर भी दिल में डर लगा रहता है ?"

श्रीनिधिजी ने कहा—"ऐसे घने जंगल में मचान पर बैठकर रात काट देना भी बड़ी दिलेरी का काम है । जिन वृक्षों पर हम मचान बनाते हैं, उन पर कई बार पक्षियों के घोंसले होते हैं और उन घोंसलों में पड़े अंडों और पक्षिशावकों को खाने के लिए प्रायः सांप वृक्षों पर चढ़ा करते हैं । यदि वह घोंसला मचान के पास ही हो, तो सांपों से बचना कठिन हो जाता है ।"

मचानोंवाले वृक्षों की बात छिड़ने पर कई वृक्षों की ऐतिहासिक विशेषता की चर्चा हुई ।

श्रीनिधिजी ने बतलाया—"तीर्थधाम बद्री, केदारनाथ के रास्ते के बीचों बीच एक वृक्ष अभी तक जिम कार्बेट की यादगार के रूप में खड़ा है । इस वृक्ष पर मचान बांध कर ही उस विख्यात शिकारी ने एक ऐसे नरभक्षी बाघ को मारा था, जो दो-तीन साल में ४०० मनुष्यों को उदरस्थ कर चुका था । इन अभागे लोगों में अधिक संख्या केदार के मुमुक्षु यात्रियों की थी। आश्चर्य यह था कि प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में एक बाघ द्वारा भोज्य हो जाने के बाद भी किसी ने इसका प्रतिकार करने की चेष्टा नहीं की । भाग्यवादी भारत के दुर्भाग्य का कारण उसकी यह निष्क्रिय मनोवृत्ति भी थी । कुछ वर्ष बाद वह वृक्ष

सिन्थॉल
वर्ष
EAU DE COLOGNE
CINTHOL

जवानी की देहली पर

क्या आप सुन्दर महिला बनने की तैयारी कर रही हैं? यही तो उम्र है जब आपको अपने रंग रुप पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है।

सिन्थॉल से बढ़कर आपके रंग रुप को बनाने वाली और कौन चीज़ हो सकती है। यह भारत में **एक मात्र** साबुन है जिसमें आश्चर्यजनक **जी-११*** मिला होता है। यह लाखों लोगों द्वारा आजमाया हुआ है और वे उस पर विश्वास करते हैं। आम चमड़ी पर से गंध और दाग उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को **मिटाकर,** **सिन्थॉल** आपका रंग रुप संवार देता है।

अतिरिक्त ताज़गी और पूर्ण सुरक्षा के लिए जी-११ युक्त मधुर सुगं दुर्गंधनाशक और शीतल गोदरेज सिन्थॉल टॉयलेट पावडर व्यवहा

गोदरेज हेअर टॉनिक भी जी-११ युक्त है।

* "जी-११ क्या है?" नामक सुबोध पुस्तिका 'गोदरेज बम्बई-१२' लिख कर मुफ्त मंगाइये।

* अॅल. जिवोडो कंपनी का ट्रेडमार्क

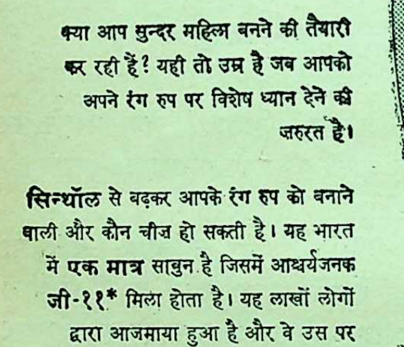
CINTHOL
CINTHOL
CINTHOL

शृंगार साबुन जो दुर्गंधनाशक भी है।

Godrej गोदरेज

साबुनों में सर्वोत्तम नाम

नया रास्ता बनाते समय रास्ते के बीचोंबीच पड़ने के कारण कटनेवाला था; मगर तत्कालीन गवर्नर श्री मुंशी के आदेश से उसे स्मृति चिह्न के रूप में बचा लिया गया ।”

मचान के प्रसंग में उस मचान का भी जिक्र आ गया, जिस पर बैठकर एक सप्ताह का हनीमून मनाने के लिए एक नव विवाहित दम्पति आया था और जहां पहली रात को ही एक अजगर की विनाशलीला देखकर उन्हें आधी रात बीतने से पहले ही अपना इरादा छोड़ देना पड़ा था ।

मचानों की बातों में मसूरी की एक बात मुझे भी याद आ गयी । यों तो मसूरी खुद एक बड़े मचान की स्थिति में है । फर्क इतना ही है कि वहां की मचान पर बैठे व्यापारी, होटल मालिक खुद शिकार नहीं करते, बल्कि यात्रीगण स्वयं शिकार बनने के लिए मचान पर चढ़ते हैं और अपने को समर्पित कर देते हैं ।

आज प्रत्येक ऊंचे अधिष्ठान पर बैठे लोग भी अपने को मचान पर बैठा समझते हैं और निम्न स्तर के लोग स्वयं मचान पर अधिष्ठित देवताओं को अपने तन मन का नैवेद्य अर्पित कर रहे हैं । इस प्रकार बिना हिंसा के ही इन मचानवालों को अपना शिकार प्राप्त हो जाता है ।

किंतु मैंने जिस शिकारी का जिक्र किया, वह ऐसा अहिंसक शिकारी था, जिसने हिंसा की थी । शिकारी मारा था बंदूक की गोली चलाकर । उसने शिकार करने को मचान भी बांधा था । मुझे उसके शिकार की कथा उसके श्रीमुख से जैसी सुनने को मिली, वैसी ही सुना दी । उसने अपने साथी को सुनाया था :

“मैं परसों देहरादून गया था । वहां मुझे कारतूस खरीदने थे । कुछ दिन पहले मसूरी के खाली पड़े मकानों में तेंदुआ देखा गया था । उसे मारने के लिए ही फारेस्ट आफिसर ने मुझे आदेश दिया था । मैंने २५ रुपये दर्जन के एल मार्का कारतूस खरीदे । कल दिन-भर इन वीरान पड़ी कोठियों का चक्कर काटता रहा; मगर तेंदुआ तो क्या कोई खरगोश भी मुझे दिखायी न दिया । आखिर मैंने अपनी ही झोंपड़ी के पिछवाड़े लगे वृक्ष पर मचान बनाया और वहां बंदूक में कारतूस भरकर बैठ गया । शाम तक भी जब कोई शिकार हाथ न आया, तो मैंने पड़ोस के घर से जैसे ही एक मुर्गी बाहर आकर हमारी बाड़ मे घुसी, वैसे ही बंदूक का सींग दबा दिया । धांय-धांय करती गोली मुर्गी पर छोड़ दी । निशाना ठीक लगा । बेचारी वहीं लेट गयी ।”

मचान से मुर्गी का शिकार करनेवाले की यह शौर्य-कथा सुनकर श्रीनिधिजी ने फिर मचान से शिकार करने का कोई रोमांचकारी प्रसंग नहीं सुनाया ।

बाद में मुझे बातों ही बातों में मालूम हुआ कि श्रीनिधिजी अहिंसक शिकारी हैं । वे केवल वन्य पशुओं की चरित्र-लीला देखने की उत्सुकता से ही मचान बनाते हैं । निर्दोष पशु को मृत्युदंड देना, उनके स्वभाव में नहीं है ।

★

आपकी
खाँसी जल्द ही
मिट जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटाने वाली

पॅप्स

टिकियाँ लीजिये।

पॅप्स की टिकियाँ चूसिये — आप देखेंगे कि इनकी आरोग्यकारी भाप दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़, ब्रॉंकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है। पॅप्स से शीघ्र ही आराम मिलता है।

PEPS
for
COUGHS
COLDS

इनमें कोई हानिकारक
दवाएँ नहीं होतीं।
ये बच्चों को बेखटके
दी जा सकती हैं।

**ब्रॉंकाइटिस,
गले के दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं।**

सभी औषधि-विक्रेताओं
के पास मिलती है।

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई के सोल एजेंट : केम्प एंड कं० लि०
पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई २८

खास जनता

किरासन कुक

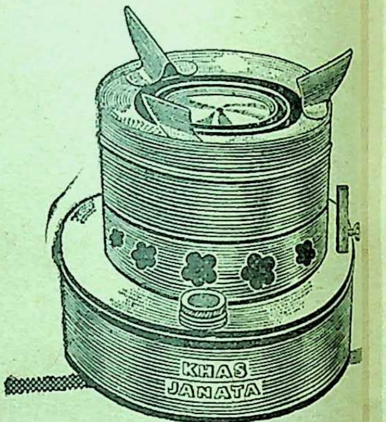

- न गंदगीं, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटे
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-1

KALPANA.OM.3

विचित्र किंतु सत्य–

डेढ़ हजार लोगों की बलि

टाइटेनिक की दुर्घटना में डेढ़ हजार लोगों की जानें जरूर गयीं; लेकिन बाद में उनसे ही हजारों लोगों की जान सुरक्षित भी हो गयी।

सपनकुमार

जहाजरानी के इतिहास में १५ अप्रैल १९१२ का दिन भयानकतम घटना का साक्षी है। इस दिन प्रख्यात मुसाफिर-जहाज टाइटेनिक बर्फ के तैरते पहाड़ से टकराकर डूब गया था और डेढ़ हजार लोगों ने अपनी बहुमूल्य जान से हाथ धोये थे। इन डेढ़ हजार मौतों से विश्व को बहुत फायदा भी हुआ है। वास्तव में हम कुछ भी गलत नहीं कह रहे हैं, क्योंकि यदि टाइटेनिक न डूबा होता, तो जहाजरानी के ऐसे कई अंतर्राष्ट्रीय नियम न बने होते, जिनके कारण भविष्य में कई दुर्घटनाएं रोकी जा सकीं। दूसरे शब्दों में कहें, तो डेढ़ हजार लोगों की बलि से आज कई हजार लोग सुरक्षित रूप से समुद्र की छाती रौंदते हैं।

टाइटेनिक की बलि से बने अंतर्राष्ट्रीय नियमों में तीन बातें प्रमुख हैं। जब वह डूबने लगा, तो अधिकांश मुसाफिरों को समुद्र में लाइफबोट उतारने का अभ्यास नहीं था, जिसके कारण बड़ी धमाचौकड़ी मची। अब प्रत्येक मुसाफिर-जहाज में लाइफबोट उतारने का अभ्यास हर मुसाफिर से कराया जाता है।

दूसरा नियम यह बना कि मुसाफिर-जहाज का रेडियो-वायरलेस चौबीसों घंटे कार्य करता रहेगा। डूबते समय टाइटेनिक ने रेडियो-संदेश प्रसारित किये थे। उस समय कैलिफोर्निया नामक जहाज वहां से बीस मील से भी कम दूरी पर था; लेकिन उसका रेडियो-आपरेटर मजे से सो रहा था।

तीसरा अंतर्राष्ट्रीय नियम यह है कि हर मुसाफिर-जहाज में उतने लाइफ-बोट अवश्य रखे जायें, जितने मुसाफिर उस जहाज में हों। टाइटेनिक में २,२२४ मुसाफिर थे; लेकिन लाइफ-बोटों की संख्या सिर्फ १,१८८ थी।

इन तीन नियमों ने न जाने कितने लोगों को मौत के घाट उतरने से बचाया है। इस संबंध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि डेढ़ हजार लोगों की वह बलि एकदम निरर्थक नहीं गयी—उसने भावी मुसाफिर-जहाजों का पथ प्रशस्त कर दिया।

★

फ्रांस का राष्ट्रीय क्रीड़ा-समारोह
'टूर दे फ्रांस'

सिर्फ फ्रांस ही नहीं, यूरोप के अनेक देशों के निवासियों के मन में जिंदगी और जवानी जोश भर देनेवाली एक 'साइकिल-रेस' का संक्षिप्त परिचय।

पिछले ६० वर्षों से फ्रांस में हर साल साइकिल-रेस होती रही है, जो न केवल एक स्मरणीय और उत्साहवर्द्धक राष्ट्रीय उत्सव है, बल्कि फ्रांस के हर बूढ़े, बच्चे के जीवन का एक अजीब और रंगीन अंग बन गयी है। इस साइकिल-रेस को 'टूर दे फ्रांस' कहते हैं और रेस का विस्तार फ्रांस ही नहीं, बल्कि इटली, स्पेन, स्विट्जरलैंड, लक्जमबर्ग, हालैंड, बेल्जियम और जर्मनी में लगभग ढाई हजार मील का होता है। इस तरह यह वार्षिकोत्सव फ्रांस के ही नहीं, बल्कि इन तमाम देशों के लोगों के जीवन का एक अंग बन गया है।

'टूर दे फ्रांस' की मार्ग-प्रणाली हर साल बदलती रहती है, जिसके कारण अनेक नगरों और बड़े कस्बों को यह अवसर मिलता है कि वे इस उत्सव में सक्रिय रूप से भाग ले सकें और दौड़ में भाग लेनेवाले युवकों का स्वागत कर सकें। इस प्रकार साइकिल-चालक अपने आपको पश्चिमी यूरोप के विभिन्न भागों और उनके विविध भौगोलिक और रंगीन दृश्यों में से गुजरता हुआ जाता है—कभी अर्द्धनिद्रित उपनगरों की पथरीली सड़कों पर, कभी दूर तक लहलहाते खेतों के बीच, कभी पिरें और आल्प्स के एकदम सीधे ढलानों ६० मील प्रति घंटे के हिसाब से हवा बातें करते हुए! चालक जानता है तनिक-सी भी असावधानी या अन्य कि कारण से अगर उसका संतुलन बिगड़ा, वह हजारों फुट गहरी खाइयों में गिर सक है। लेकिन गति के दीवाने ये साहसी यु ऐसे मौकों पर भी साइकिल के ब्रेकों प्रयोग नहीं करते। हो सकता है कि लगाने से या जरा-सी भी सावधानी तने से उनके दूसरे साथी आगे निकल जा और फिर इन युवकों को हार की संभा से मौत की संभावना अधिक पसंद है।

आम तौर पर इस साइकिल-रेस में लेनेवाले युवक १८ से ३० वर्ष तक की के होते हैं; किंतु गत वर्ष संभवतः उत्सव के इतिहास में पहली बार एक वर्ष का चालक भी था, जिसका पिनोसरामी है। दौड़ में भाग लेने युवकों को उत्सव से पहले कड़ा अ और प्रशिक्षण करना पड़ता है। वे इस

में न शराब पीते हैं न आलू तथा हरी सब्जियां खाते हैं और उनके भोजन में नमक की मात्रा लगभग नहीं के बराबर होती है । साइकिल-चालकों की एक आम बीमारी यह होती है कि साइकिल की सीट पर घंटों बैठने के कारण उनके कष्टदायक फुंसियां निकल आती हैं और दिनभर तीस मील प्रति-घंटे के हिसाब से साइकिल चलाने के बाद जब वे थककर चूर हो जाते हैं, तब भी उनके लिए रात को आराम से सोना कठिन हो जाता है । साइकिल चालकों को अपने वजन का भी ध्यान रखना पड़ता है। अधिक दूरतक साइकिल चलानेवाले छरहरे बदन के होते हैं और उनका वजन १२६ से १६८ पौंड के बीच तथा तेज दौड़ लगानेवालों का वजन १५४ से १८२ पौंड के बीच होता है । गत वर्ष दौड़ में भाग लेनेवाले १२० साइकिल-चालकों में से अधिकांश यह जानते थे कि वे विजयी नहीं हो सकेंगे और इसलिए उनकी महत्वाकांक्षा केवल इतनी ही थी कि वे रेस के लंबे विस्तार में से किसी एक स्थान तक सबसे पहले पहुंच जायें और उसके बाद अपनी इस स्वयं निश्चित विजय के स्थान के नाम पर एक छोटा-सा कैफे खोलकर शेष जीवन इसी मधुर स्मृति में विता दें ।

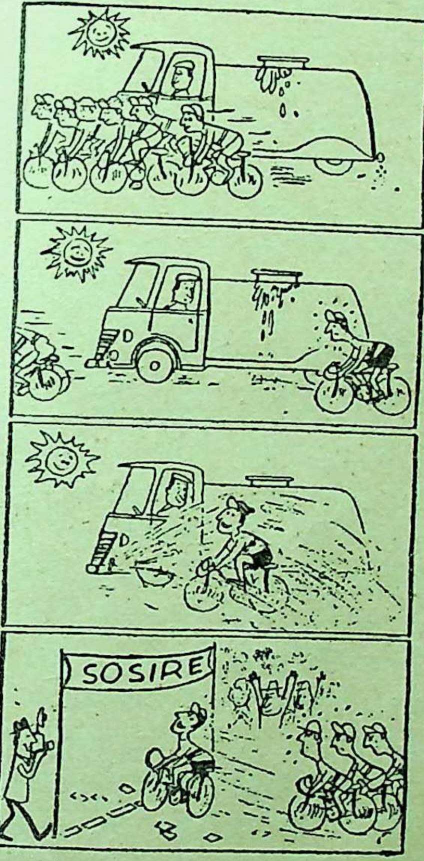

साइकिल-रेस

गत ३० वर्ष के बाद, पिछले वर्ष फिर रेस में भाग लेनेवाली टीमें फ्रांस के विविध व्यवसायों की ओर से भेजी गयी थीं । इस प्रथा को इतने वर्षों तक बंद रखने का कारण यह था कि अक्सर भाग लेनेवाली टीमों में तीव्र द्वेष और वैमनस्य की भावना रहती थी और मार-पीट तक की नौबत आ जाती थी, जिसके कारण रेस के अधिकारियों को हमेशा सशस्त्र और अत्यंत सतर्क रहना पड़ता था ।

'टूर दे फ्रांस' की साइकिल-रेस के मूल

प्रवर्तक लआटो के संपादक 'पापा दे ग्रांजे' थे, जिन्होंने १९०३ में पहली दौड़ संगठित की थी। आज इस रेस के प्रवर्तक दो पत्र हैं—ल 'इक्विप और ल' पैरिसियन लिवीयर। रेस में भाग लेनेवालों को प्रवर्तकों की ओर से बहुत कम पारिश्रमिक मिलता है; लेकिन रेस में भाग लेने का आकर्षण कुछ ऐसा होता है कि आवश्यकता से अधिक लोग रेस के लिए चुने जाने में अपना सौभाग्य समझते हैं। रेस का कुल खर्च लगभग ४ लाख पौंड होता है।

रेस का विस्तार चूंकि बहुत लंबा होता है, इसलिए विजेता कौन है, यह निश्चित करने की प्रणाली भी अलग है। रेस आरंभ होने के बाद हर दिन के अंत में भाग लेनेवाले लोग रात बिताने के लिए मार्ग के किसी नगर में ठहर जाते हैं और अगले दिन सुबह रेस फिर शुरू होती है। पिछले दिन का विजेता सम्मानित पीले रंग की जरसी पहनता है। प्रत्येक चालक ने दिन का विस्तार पूरा करने में कितना समय लिया, इसका रोजाना हिसाब रखा जाता है। बीच-बीच में कुछ चालक रेस छोड़ देते हैं और अगर उनमें से कोई विजयी होता है, तो उसे स्थानीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार उन लोगों की ओर से होते हैं, जो उत्सव में अपने विज्ञापन और चंदे देते हैं। रेस का अंत होने पर जिस चालक ने सबसे कम समय लिया होता है, उसे पुरस्कार दिया जाता है। रेस के समाचार जनता तक पहुंचाने के कार्य में लगभग १००० व्यक्ति सहयोग देते हैं, जिनमें २५० संवाददाता, ७५ फोटोग्राफर, ५० उद्‌घोषक, ७० टेलीविजन कर्मचारी होते हैं।

इन समाचारों के प्रति जनता में इतन उत्साह और उत्सुकता रही है कि सन १९४८ में एक व्यावसायिक संस्था ने ७,००० पौंड केवल इस बात पर खर्च किये कि रेडिय पर रेस के प्रवर्तक पत्र ल इक्विप के सा उसके नाम की भी घोषणा की जाये। जि नगर में रेस का अंत होता है, उसके मुख चौक में रेस की गतिविधि सिनेमा के द्वारा दिखायी जाती है। 'टूर दे फ्रांस' की रेस जीतने की प्रणाली इतनी अद्‌भुत है कि विस्तार के किसी भी विशेष भाग मे विजयी न होने पर भी अंत में कोई भ चालक विजयी घोषित हो सकता है। य सम्मान रेस के इतिहास में अब तक ती चालकों को प्राप्त हुआ है—१९२२ में बेल्जि यम के लैम्बो, १९५६ में फ्रांस के वाकोवे और १९६० में इटली के नेनचीनी।

रास्ते के हर नगर और उपनगर टिकिटों से जो दैनिक आमदनी होती है, व आयोजक ले लेते हैं। फिर भी स्थानी नगरपालिका को कोई आपत्ति इसलि नहीं होती कि नगर के व्यवसायी औ होटलवाले हर दिन दर्शकों से अच्छी खा रकम कमा लेते हैं।

रेस के विजेता को वास्तव में कोई विशे आर्थिक लाभ नहीं होता। उसे अपनी टी के अन्य चालकों के साथ वह रकम बांट पड़ती है। यों रेस का प्रथम पुरस्कार

हजार पौंड है; लेकिन विभिन्न सूत्रों से रेस का विजेता लगभग २५ हजार पौंड तक कमा लेता है। रेस के एक विजेता टामी सैम्सन कहते हैं–"पिछले साल रेस में जीतने के बाद मुझे दो महीने के अंदर ४३ रेसों में भाग लेने का निमंत्रण मिला। ये निमंत्रण 'टूर दे फ्रांस' का विजेता होने के नाते मुझे मिले थे और हर रेस के लिए मुझे पारिश्रमिक दिया गया था। इन रेसों में जीतने पर मुझे २५० पौंड प्रति रेस पुरस्कारस्वरूप मिले। इस प्रकार कोई भी विजेता दो महीने के अंदर ४० रेसों में भाग लेकर १०,००० पौंड तक कमा सकता है।"

'टूर दे फ्रांस' को केवल दो ही चीजें रोक सकती हैं–एक तो कोई धार्मिक छुट्टी या फ्रांस के प्रेसिडेंट जनरल दि गाल। एक बार प्रेसिडेंट दि गाल के कारण रेस स्थगित हुई भी थी–सिर्फ ३० सेकेंड के लिए। बात १९६० की है, जनरल दि गाल रेस देखने के लिए आये हुए थे। रेस के डाइरेक्टर की निगाह उन पर पड़ी–तभी ८१ चालकों का कारवां रुक गया और सबने अपनी-अपनी टोपियां उतारकर अपने प्रेसिडेंट का सम्मान किया। दि गाल ने भी आगे बढ़कर चालकों के अग्रनेता नेनचीनी को बधाई दी। ३० सेकेंड के बाद कारवां फिर आगे बढ़ गया।

'टूर दे फ्रांस' की रेस वास्तव में चालकों के लिए अनुभव, शारीरिक सहनशीलता और शक्ति की एक परीक्षा है। साथ ही व्यक्तिगत विजय की प्रणाली के बावजूद पूरी टीम के आपसी सहयोग और सद्भावना का उदाहरण है। टामी सैम्सन का कहना है कि यह रेस इसलिए अन्य रेसों से अधिक कठिन है कि हर उत्साही चालक इसे केवल पैसे कमाने और व्यक्तिगत सफलता की ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक और राष्ट्रीय सम्मान की बात समझता है। इसीलिए यह रेस आधुनिक यूरोप के लोक-जीवन का एक आवश्यक मनोरंजन और सर्वप्रिय अंग बन गयी है और मोटर कार के इस युग में भी इसका एक सम्मानित और लोकप्रिय स्थान है।

★

अपने पूर्वजों के खोदे हुए कुएं का खारा पानी पीकर दूसरे के शुद्ध जल का त्याग करनेवाले बहुत-से बेवकूफ दुनिया में घूमते-फिरते हैं। **–विवेकानंद**

* * *

छटांक-भर वैज्ञानिक विचार मन-भर अज्ञानपूर्ण उत्साह से बढ़कर हैं। **–हेवर्ड**

* * *

लालच और आनंद ने कभी एक-दूसरे को नहीं देखा, फिर वे परिचित हों, तो कैसे? **–फ्रेंकलिन**

* * *

कुछ लोग मरने से इतना डरते हैं कि जीना शुरू ही नहीं करते। **–हेनरी वान डाइक**

★

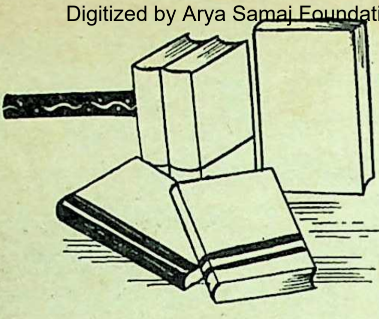

नयी पुस्तकें

एक गधे की वापसी

उर्दू-हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री कृश्नचंदर के इस लघु उपन्यास में समाज के अर्थशोषकों, राजनीति के धूर्त नेताओं तथा पाखंडी नागरिकों पर तीखा कटाक्ष है । लेखक की इसी विषय की पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'गधे की आत्मकथा' का इसे दूसरा भाग कह सकते हैं ।

प्रकाशक : हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली।

पूर्वापर

इसमें हिन्दी के समर्थ लेखक, नाटककार, उपन्यासकार और कवि पं० उदयशंकर भट्ट की ७४ कविताओं का संग्रह है । इनमें कुछ कविताएं पहले की हैं, कुछ पीछे की हैं । सभी कविताओं से कवि के गहरे चिंतन की गंध आती है । 'पूर्वापर' की प्रत्येक कविता हृदय की अंतरंगतम अनुभूतियों में डूबी हुई है ।

प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली; मूल्य : पांच रुपये ।

हिन्दी साहित्य-परिचायक

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने उक्त पुस्तक का प्रकाशन सामान्य पाठकों को हिन्दी साहित्य से परिचय कराने के उद्देश्य से किया है । इसका संपादन श्री गंगाराम द्वारा किया गया है । हिन्दी के इतिहास-प्रसिद्ध साहित्यकारों तथा उनकी साहित्यिक रचनाओं का परिचय भी दिया गया है । पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है; क्योंकि इसमें उन चरित्र-नायकों और पौराणिक पुरुषों का भी परिचय है, जिनके नाम बहुधा साहित्य में आते हैं ।

प्रकाशक : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस एमन हाउस, लंदन ई० सी० ८; मूल्य : साढ़े बारह रुपये ।

रणभेरी

पंजाब सरकार के लोक-सम्पर्क पर्यटन एवं सांस्कृतिक विभाग द्वारा प्रकाशित वीर-रस की कविताओं का यह संग्रह बहुत अच्छी साजसज्जा के साथ प्रकाशित हुआ है । इसमें देश के १२० से अधिक, प्रायः सभी कवियों की ओजस्वी राष्ट्रभावनापूर्ण कविताएं संकलित हैं । काव्य-संग्रह की ऐसी सुंदर पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय में होनी ही चाहिये ।

★

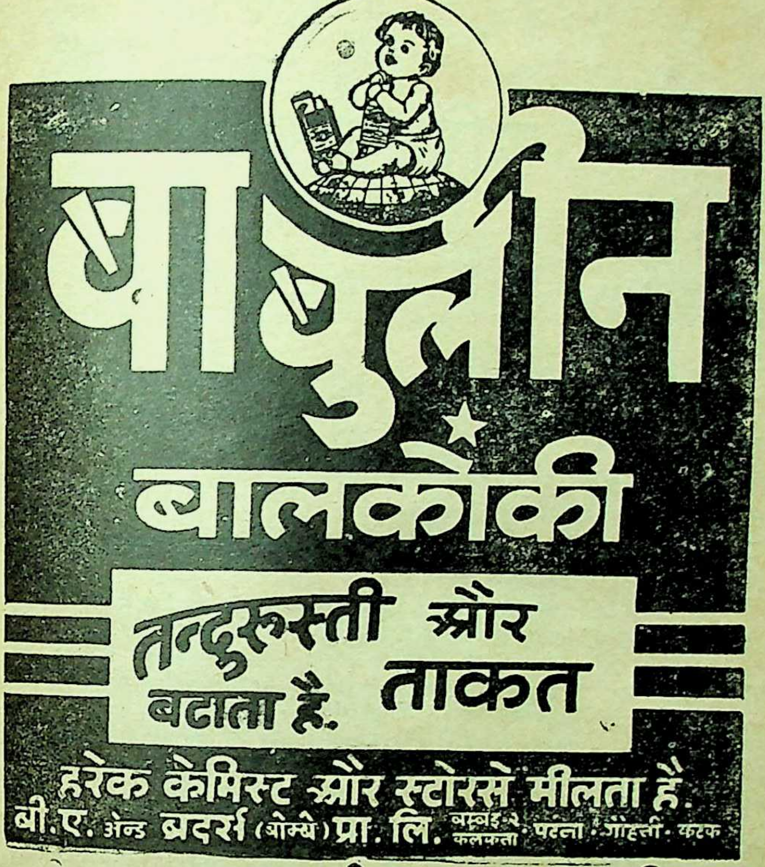

पाबुलीन

बालकोकी

तन्दुरुस्ती और
बढाता है. ताकत

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.
बी.ए. अेन्ड ब्रदर्स (बोम्बे) प्रा. लि. बम्बई २ · कलकत्ता · पटना · गौहत्ती · कटक

बी० ए० एण्ड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०
कलकत्ता, पटना और गोहाटी

सुखद अवसरों
को
अधिक सुखद
बनाइये

सुखद अवसरों पर शुभकामनाएं अथवा बधाई भेजने का श्रेष्ठ साधन है—बधाई तार।

बधाई तार सुचित्रित फार्म पर लिखा जाता है और जिस लिफाफे में तार पहुँचाया जाता है वह भी रंग-बिरंगा और खूबसूरत होता है।

व्यक्तिगत और सामाजिक सभी तरह के विशेष अवसरों के लिए उपयुक्त वाक्यों अथवा वाक्यांशों की एक सूची तारघर में उपलब्ध है। आप अवसर के अनुकूल इनमें से कोई वाक्य चुन सकते हैं।

साधारण बधाई तार का न्यूनतम शुल्क ७५ नये पैसे है। प्रत्येक अतिरिक्त शब्द के १० नये पैसे लगते हैं।

डीलक्स तार

यदि आप निर्धारित वाक्यों में से चुनना पसन्द न करें और अपने निजी शब्द भेजना चाहें तो वह डीलक्स तार से सम्भव है।

आप अपनी इच्छानुसार संदेश लिख लीजिए और विशेष हिदायतों के खाने में 'डीलक्स' शब्द लिख दीजिये। आपका तार बधाई तार के फा.१.पर ही पहुंचाया जायेगा।

बधाई
या
डीलक्स
तार
भेजिये

डाक-तार विभाग

कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें
टिकाऊपन
के लिये
पुलगांव मिल्स
के कपड़े
धोतियां
साड़ियां
लांगक्लाथ
वगैरह

पुलगांव कॉटन मिल्स लिमिटेड,

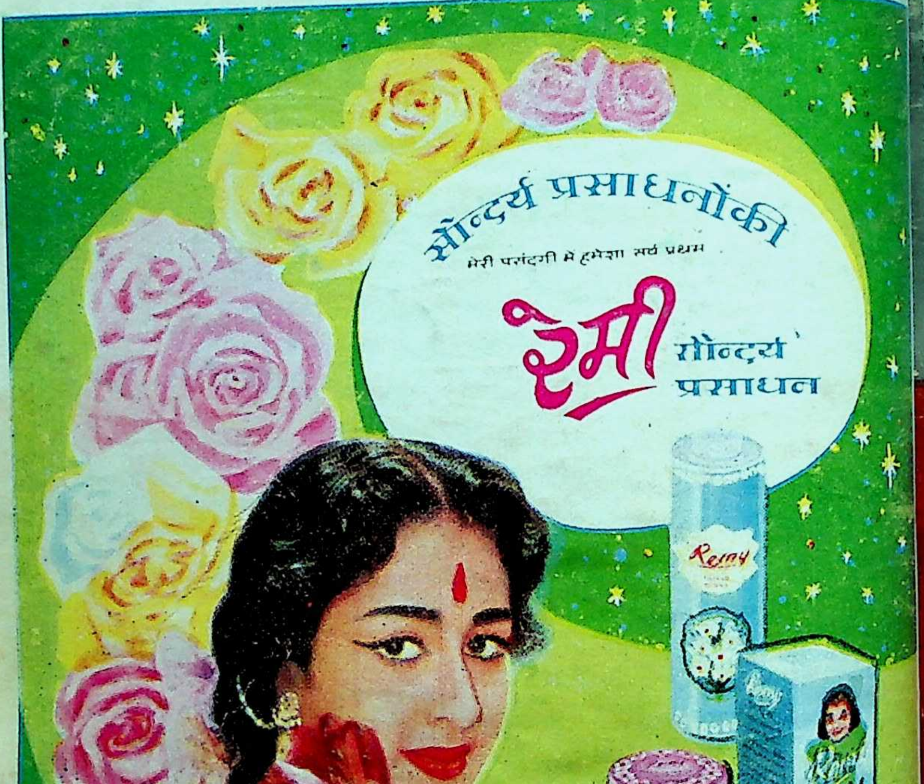
सौन्दर्य प्रसाधनोंकी
मेरी पसंदगी में हमेशा सर्व प्रथम
रेमी सौन्दर्य प्रसाधन
Remy
SHEELA

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

फरवरी १९६४

'नवनीत' का अप्रैल-अंक : आत्मकथा-विशेषांक

इस अंक के कुछ लेख और लेखक

आइंस्टाइन से भेंट : दारा दादीना
चीन के अंतराल में : एक ब्रिटिश राजनीतिज्ञ
मास्को के कारखाने में एक घंटा : आन्द्रेई मारयोलिन
नीले बुद्ध की प्रतिमा मैं न रख सका : लुडविग कोच
नये साल की पहली शाम : जे० एल० वास्वानी
अंधेरी रात में शब्दवेध : राजाजी
पहली पुस्तक की कमाई नदी में : येव्टुशेंको
हमने भाखड़ा बांध कैसे बांधा : डा० ए० एन० खोसला
मैंने अनजाने में जान बचायी : नवरत्न रामराव
मैं बेसेंट के प्रभाव में कैसे आया : सी० पी० रामस्वामी अय्यर
संत सियारामजी के साथ : जगन्नाथ पथिक
मेरी पहली संगीत-सभा : संगीत-कलानिधि के० वासुदेवाचार्य
गुरु से बदला : एम० आर० जयकर
अंतराल के अंतराल में : जान गंथर
तीखी मुस्कराहट : रूसी कहानी
अंतरिक्ष-यात्री के उत्तर : बर्नर ब्रान
मशालों की छांह में : श्रीनिधि सिद्धांतालंकार
मेरे रोमांचकारी केस : केशवलाल शाह

आवरण-पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

शीघ्र, सुरक्षित
निश्चित
खाँसी का घरेलू इलाज

Alembio
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
Alembic
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP

Alembic
ग्लायकोडिन
टर्प-वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

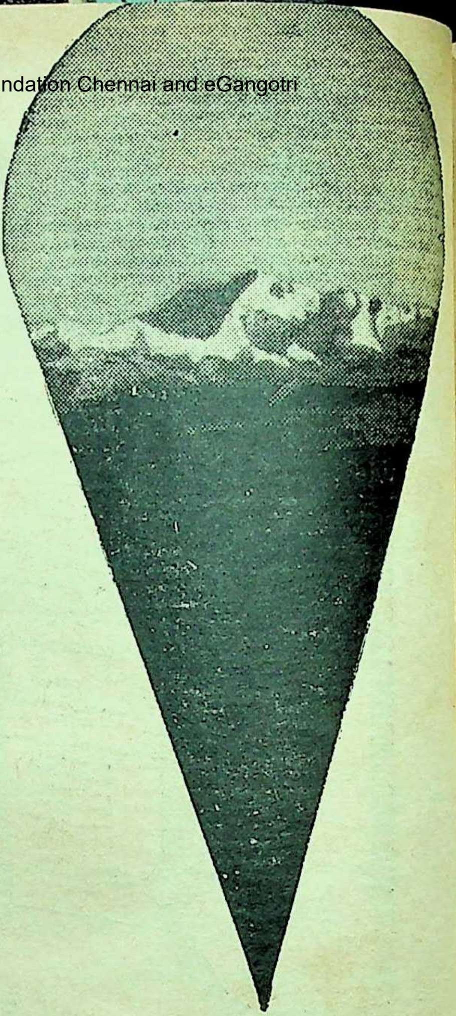

दार्जिलिंग में
कंचनजंगा का
दृश्यावलोकन
एक अनूठा अनुभव है।
जिधर भी आप जाएं
विविध व मोहक दृश्यों का
प्राचुर्य है।

स्वदेश घूमिये
जन-जीवन देखिये

भारत

भारत सरकार के पर्यटक कार्यालय
दिल्ली * बम्बई * कलकत्ता * मद्रास * आगरा
जयपुर * वाराणसी * औरंगाबाद * कोचीन
DA63/449

THY-52 HIN

वाह, मज़ा आ गया हमाम से नहाकर!
हमाम
HAMĀM
the family soap
हमाम

दिनभर तरोताज़ा रखनेवाला **हमाम**-परिवार का मनपसंद साबुन! टाटा-उत्पादन.

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हेंडलूम व पावरलूम में
लगनवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY.
INDU FABRICS
BOMBAY
"THE BIG SIX"

टेलेफोन नंबर २६५३३१

"इंदु हाउस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

"माँ, मेरी कितनी अच्छी माँ!

उस दिन पूरा परिवार हर्ष से फूला नहीं समाता था जिस दिन घर में रेडियोग्राम आया। सभी का मन चाहता था कि रेडियोग्राम आये, परन्तु पूरी क़ीमत चुकाने के लिए पिताजी के पास पैसों की कुछ कमी पड़ती थी। लेकिन माँ ने मौक़े को साध लिया। जितने पैसों की ज़रूरत थी उन्होंने पूरे कर दिये। पहले तो माँ ने छुपाया कि पैसे कहाँ से आये पर बाद में भेद खोल दिया। उन्होंने बताया कि वे घर-खर्च में से बचाया हुआ पैसा छुपा-छुपा कर देना बैंक के सेविंग्ज़ एकाउण्ट में जमा करती रहती थीं। परमात्मा उन्हें सुखी रखे। माँ हो तो ऐसी हो। जब पूरे परिवार ने उनकी तारीफ़ की तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। इस योजना के अधीन, हर महिला लाभपूर्ण ढंग से पैसे बचा सकती है।

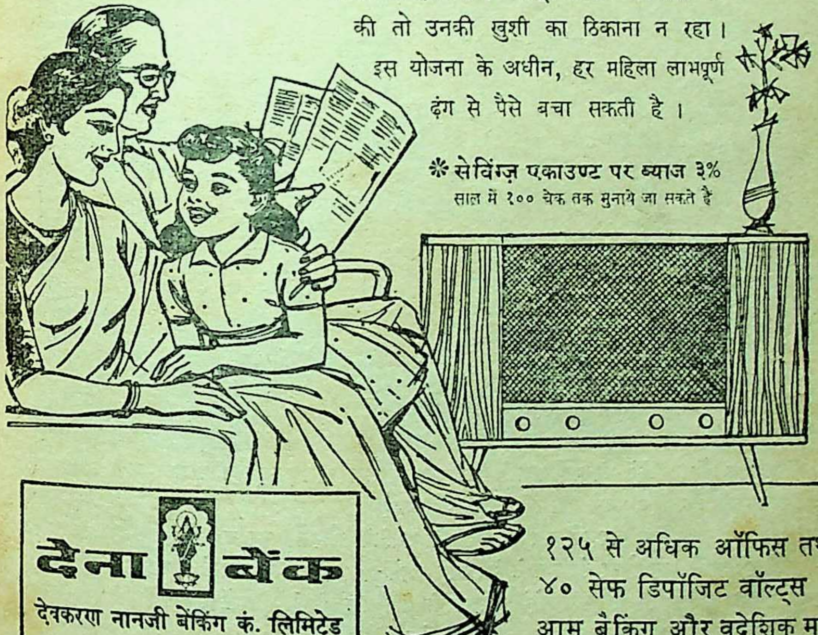

* सेविंग्ज़ एकाउण्ट पर ब्याज ३%
साल में १०० चेक तक भुनाये जा सकते हैं

देना बैंक
देवकरण नानजी बेंकिंग कं. लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस : देवकरण नानजी बिल्डिंग्स,
१७, हॉर्निमेन सर्कल, फोर्ट, बम्बई-१

१२५ से अधिक ऑफिस तथा
४० सेफ डिपॉजिट वॉल्ट्स
आम बैंकिंग और वदेशिक मुद्रा
विनिमय व्यवसाय भी होता है

प्रवीणचंद्र वी० गांधी, मैनेजिंग डाइरेक्टर

D B/SH/59A

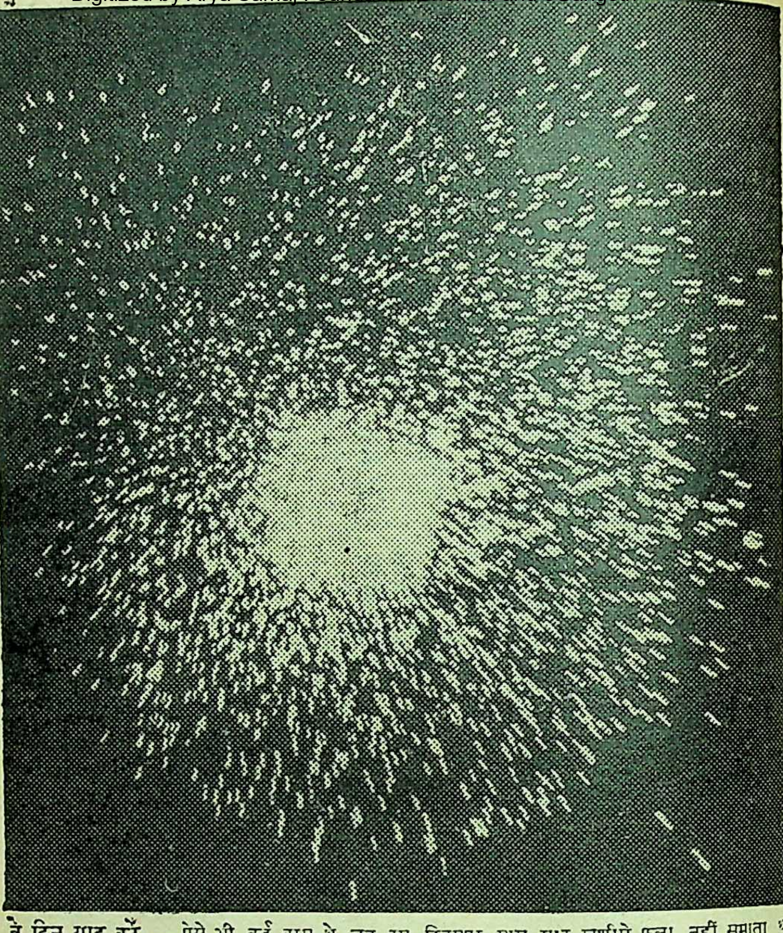

वे दिन याद करें... ऐसे भी कई बरस थे जब इस दिवसपर सारा राष्ट्र खुशीसे फूला नहीं समाता था, आतिशबाजीकी आवाजें आसमान तक पहुँचती थीं और जगमगाती रोशनीमें राष्ट्रका सन्मान उज्ज्वल हो उठता था! आइये, आज वे दिन याद करें जब अपने राष्ट्रके स्वाभिमानको कोई भय नहीं था और हम इस राष्ट्रीय दिवसको हर्षोल्लासमें मस्त होकर संपन्न करते थे। आज अपने हर्ष को कुछ संयत रखते हुए हम निश्चय करें कि हम एक रहकर अपने देशकी सुरक्षा करेंगे और अपनी प्रिय मातृभूमिकी सीमाओंपर संकटोंका सामना करनेवाले उन बहादुर जवानोंके हाथ अधिक मजबूत बनाएँगे।

मध्य और पश्चिम
रेल्वे द्वारा प्रसारित

छाती के ठंढक
से छुटकारा पाने के लिये
अमृतांजन
मलिये

अमृतांजन बहुत जल्दी और बहुत अच्छा आराम पहुँचाता है क्योंकि यह आरामदायक १० दवाओं का मिश्रण है। एक एक बार आपको इतना कम चाहिये कि एक शीशी आपके घर मे महीनों चलेगी। करीब ७० वर्ष से यह विश्वासी घरेलू दवा अमृतांजन, मोच, सरदर्द, सीने के ठंढक और दर्द, जुकाम और दूसरे तमाम दर्दों में भी अचूक है।

मौसम के बदलने और रोज रोज के कामकाज के दबाव से दर्द, जुकाम आदि पैदा होते हैं। एक शीशी अमृतांजन बराबर पास रखिये।

अमृतांजन
१० दवाइओं का मिश्रण है

AMRUTANJAN
Pain Balm
AMRUTANJAN
THE PAIN BALM
AMRUTANJAN LTD
JWT/AM 2331A

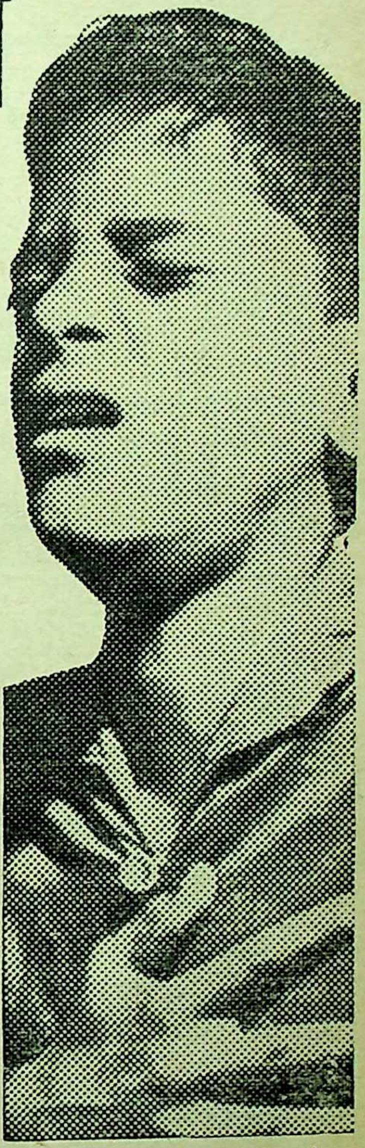

अब अमृतांजन की शीशी गत्ते की नई डिबिया में लीजिये। यह नकल से बचानेवाली 'अल्यू' कैप से सील बन्द है।

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास - बम्बई - कलकत्ता - दिल्ली

अब केवल मेट्रिक बाटों और पैमानों का प्रयोग ही कानूनी है-

मन-सेर या पौण्ड में लेन-देन न कीजिए

केवल

किलोग्राम में खरीदिये

डीए ६३/४४०

दुश्मन को कमजोर

न-समझें

चीनी सेनाएं अब भी हमारी उत्तरी सीमा पर जमा हैं। चौकस रहिये।

आपका अनुशासन भारत की शक्ति है।

आपको भी एक

फिलिप्स

बाइसिकिल

चाहिए

शानदार और सुन्दर फिलिप्स साइकिल आप जैसे, आज के कार्यव्यस्त युवकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाई जाती है। पक्के पानी चढ़ाये इस्पात से बननेवाली यह साइकिल ऐसी मजबूत है कि बुरी से बुरी हालत में भी बिलकुल ठीक चलती है। करीब ७० वर्षों से सारी दुनिया में मशहूर यह फिलिप्स साइकिल, टी० आई० साइकिल्स के आधुनिक कारखाने में सूक्ष्म रीति से बनती है।

PHILLIPS

टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया

अम्बात्तूर मद्रास

JWT/TIC : PH 2053A

खास
जनता
किरासन कुकर

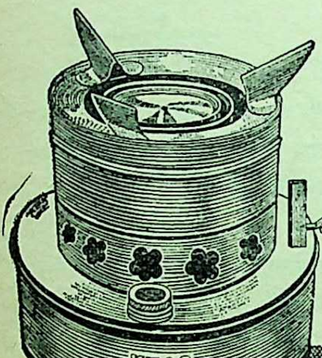

- न गंदगीं, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA.OM.35HIN

'नवनीत' के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं।

प्रति न मिलने की शिकायत मास की १०तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

मुझे बढ़नेवाली ावधिक जमा का खाता क्यों खोलना चाहिये ?

१–क्योंकि आपको जमा की हुई रकमों पर आयकर सम्बंधी छूट मिलती है । यदि आपकी अर्जित आय २०,००० रु० प्रति वर्ष है, तो बढ़नेवाली सावधिक जमा योजना के अंतर्गत १० या १५ वर्षीय खाता अपने खुद, अपनी पत्नी, अपने बच्चों अथवा अन्य आश्रितों के नाम में खोलकर आप ३०० रु० प्रति मास जमा करते रहें तो आपकी आयकर देयता में ५९८ रु० प्रति वर्ष की कमी हो जाएगी ।

२–क्योंकि आपको जमा की हुई रकमों पर कर मुक्त ब्याज मिलता है । आपको १० वर्षीय खातों पर ३.८ प्रतिशत प्रति वर्ष कर मुक्त चक्रवृद्धि ब्याज जो कि कर की वर्तमान दरों के अनुसार ५.४ प्रतिशत कर योग्य चक्रवृद्धि ब्याज के बराबर है तथा १५ वर्षीय खाते में ४.३ प्रतिशत प्रति वर्ष कर मुक्त चक्रवृद्धि ब्याज जो कि ६.१ प्रतिशत कर योग्य ब्याज के बराबर है, मिलता हैं ।

अधिक जानकारी किसी डाकघर से लीजिये ।

राष्ट्रीय बचत संगठन

DA 63/453

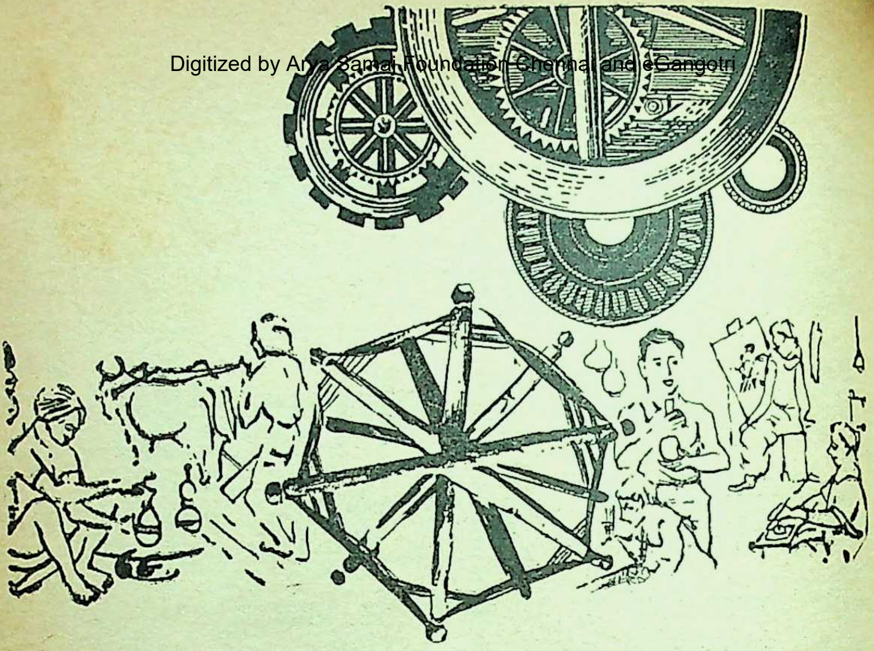

गतिमान चक्र बढ़ता रहेगा...

सभी आक्रमणों को कुचलते हुए,
प्रजातांत्रिक समाजवाद के अपने
नियत ध्येय के प्रति अग्रसर होते हुए
और सभी अवरोधों को दूर करते हुए !
आज जिस पथ का हम अनुसरण कर रहे हैं
उसके प्रति विश्वास का पुनरुच्चार हम करें।
जिसकी पुर्नरचना करने का हम प्रयत्न कर रहे हैं
उस भारत का हम पुनरपि विचार करें!
एक ऐसा समाज जिसमें शोषण,
असमानता और अन्याय का अस्तित्व नहीं होगा
और जहाँ व्यक्तिस्वातंत्र्य, प्रेरकता
और कार्यक्षमता को संपूर्ण अवसर प्राप्त होगा।

...हमारे बहु आकांक्षित ध्येय की ओर

संचालक, प्रकाशन संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, बंबई

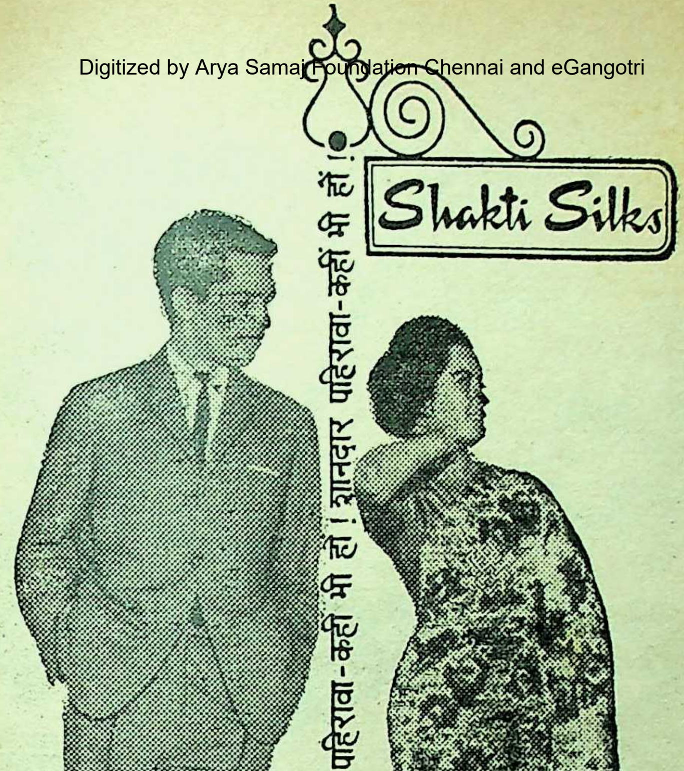
Shakti Silks
शानदार पहिरावा-कहीं भी हों! शानदार पहिरावा-कहीं भी हों! शानदार पहिरावा-कहीं भी हों!

शक्ति सिल्क और सूटिंग • पोदार द्वारा निर्मित

पहन कर एक मुस्कान लिये, सरलता से धुले हुए! आपका शक्ति सिल्क पहिरावे में स्वप्न सा सुहावना लगता है... व पल भर में सूख जाता है। समय समय पर धोने के बाद भी यह सदा ताज़ापन लिये तथा सिकुड़न-रहित होने के कारण सब से अधिक व्यस्तमय दिन में भी आपको मुस्कान-भरा ही रखता है। और शक्ति सूटिंग कितना भी पहनें, फिर भी इसके शिकन-रहित रहने से आपको यह सदा आत्मविश्वास व सुख का अनुभव दिलाता है, भले ही आप कहीं भी हों।

SHILPI SM-347 HIN

हर हफ़्ते बम्बई से
टोकियो के लिए ३ बोइंग!

हर बुधवार और हर शुक्रवार कलकत्ता,
बैंकॉक व हांग कांग होते हुए तथा
हर सोमवार दिल्ली, बैंकॉक व हांग कांग होते हुए!

३० से अधिक वर्षों का उड्डयन संबंधी अनुभव **एयर-इंडिया**

सहयोगी: बी.ओ.ए.सी. और कैण्टस

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के लिए बचत कीजिए!

JWT AI-1273 (A)

संचा
श्रीगोपाल
★
संपा
सत्यकाम ि
सहक
नारायण
सत्यनाराय
आलोक श
शि
गोपालकृ
★
प्रबंध-सं
हरिप्रसाद
विज्ञापन-व
महेंद्र
★
कार्या
३४१ त
बम्बई
फोन :

नि:शंक
चित्रकार :

फरवरी **नवनीत** १९६४
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
★
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता
★
कार्यालय
३४१ तारदेव,
बम्बई-३४
फोन : ७२८४७

निःशंक हिरन
चित्रकार : रसिक रावल

विषय-सूची

तारतम्य	......	१७
पुस्तकालय–सौभाग्य का द्वार	डा० एस० आर० रंगनाथन	१८
मानवता का मानदंड हिमालय	शिवकुमार शुक्ल	२१
भारत अजीब देश है	कुमारी सिंगर	२५
नाथजी महाराज	सत्यनारायण मिश्र	२८
वह कभी न मरती	करतारसिंह दुग्गल	३३
साधना-पथ	....	३७
मृत्यु का स्वागत	किशिनचंद 'बेवसि'	३८
विज्ञान की दुनिया	....	३९
शेरों का देश केन्या	रामनारायण	४१
पांच मुक्तक	श्रीहरि	४८
नवाबों के बावरचीखाने	मेवाराम गुप्त	४९
व्हेल के पेट में पंद्रह घंटे	कीर्तिमती नाइक	५३
मछलियों की वात्सल्य-भावना	प्रो० विश्वरमण	५६
सूअर से संग्राम	बिसनलाल शर्मा	५८
तुर्की कवि नाजिम हिकमत	सुखवीर	६१
अल्लाह की बंदियां	मुल्ला रमूजी	६५
स्वामी केशवानंद	रामचंद्र मकासर	६८
बुढ़ापा देकर जवानी लीजिये	संतराम	७१
मेरी रुचि की पंक्तियां	....	७३
समय का वह मूल्य नहीं रहा	मोहनलाल बड़जात्या	७५
तीन कविताएं	....	७६
सफलताओं में विश्वास रखिये	प्रमोद कुमार शर्मा	७७
कुर्सी	डा० महीपसिंह	८१
रंग बदल गया	अमरेंद्र 'अमर'	८९
[illegible]	चारुलता रायचौधुरी	९३
मन की आंखें	शंभुनाथ सक्सेना	१०१

डाल से झड़े पत्ते (पुस्तक-संक्षेप)	यसुशी इनोवे	१०
व्यक्तित्व को कैसे निखारें	शरद राकेश	१४
चिड़िया ने छकाया	मिखाइल प्रिश्विन	१४
नयी पुस्तकें	....	१५

★

चित्रसज्जा :

डिलाक्रो, डामियर, कियोनागा, लक्ष्मण पै, रामचंद्र शुक्ल, ओके, दिनकर कौशिक

❀ आगामी अंक में ❀

१. **ओलिंपिक-ज्वर की पकड़ में टोकियो :** एशियाई भूमि पर आयोजित प्रथम ओलिंपिक खेल इस वर्ष अक्टूबर में टोकियो में होंगे; उसके लिए टोकियो में की जा रही तैयारी का परिचय।

२. **फूलों में वर्णभेद क्यों ? :** अपने नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधान पर डा० सी० वी० रामन का लेख।

३. **जीवन और मृत्यु की निर्णायक समिति :** चिकित्साशास्त्र-संबंधी रोमांचक जानकारी शाना एलेग्जेंडर के शब्दों में।

४. **दक्षिण ध्रुव के सभ्य आदिवासी :** शिष्टता में मनुष्य को मात देनेवाले पेंग्विन पक्षियों का परिचय।

५. **घुड़दौड़ का महातीर्थ महालक्ष्मी :** बंबई के विख्यात महालक्ष्मी रेसकोर्स की रोचक झांकी शिवशंकर सिंह द्वारा प्रस्तुत।

६. **शायर मकतल साहब :** कन्हैयालाल कपूर की हास्य-कथा।

७. **अंधों का हकीम :** अब्दुल्ला कहार की उजबकिस्तानी कहानी।

८. **पूर्णता पाने का पागलपन :** डा० हैरोल्ड केनेथ फिंक का मनोविज्ञान संबंधी रोचक लेख।

९. **और यांगसी बहता रहा :** साम्यवादी शासन में चीनी जनजीवन की सच्ची तस्वीर पेश करनेवाला नान कुंग पो लिखित उपन्यास पुस्तक-संक्षेप में; रूपांतरकार : गंगाशरण सिंह।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८, खेतवाड़ी बैक रोड, बम्बई-४ में मुद्रित।

वर्ष : १३
अंक : २

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

फरवरी
१९६४

र के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

तारतम्य

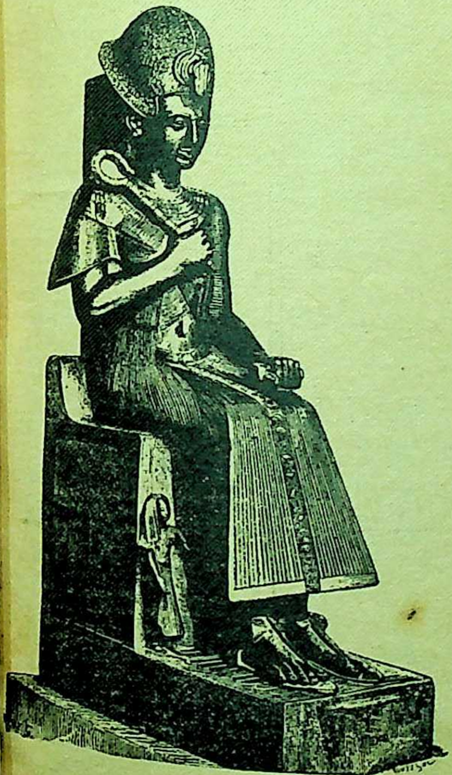

एक मशहूर अरब सुलतान का जहाज जंजीबार से नीग्रो गुलामों को भरकर ला रहा था। उन सैकड़ों गुलामों में से एक था, जो चीख-चिल्लाहट से जमीन-आसमान एक कर रहा था। जहाज के कप्तान ने परेशान होकर एक अरब दार्शनिक से उपाय पूछा। उसने कहा कि गुलाम को रस्सी से बांधकर समुद्र में तीन गोते दे दिये जायें, तो वह शेष यात्रा बड़े सब्र से पूरी करेगा। यह उपाय सचमुच कारगर हुआ। कारण पूछने पर दार्शनिक ने कहा कि जब तक आदमी बड़ी मुसीबत में से नहीं गुजरता, तब तक छोटी मुसीबत को खुशी-खुशी झेलने के लिए तैयार नहीं होता। समुद्र में गोते खाने के बाद वह यात्रा के शेष दिन ईश्वर को धन्यवाद देता हुआ ही काटेगा कि जहाज पर उसकी जान तो सही-सलामत है।

पुस्तकालय
सौभाग्य का द्वार

पढ़ने की भूख, सुव्यवस्थित पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष का आत्मीय स्पर्श–ये किसी व्यक्ति का भाग्य बदल सकते हैं। इस विषय के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री रंगनाथन ने प्रस्तुत लेख यही सिद्ध किया है।

डा० एस० आर० रंगनाथन

"मनुष्य का सार मन है"–यह वेद का वचन है। "मन चाहे तो नरक को स्वर्ग और स्वर्ग को नरक बना सकता है"–यह मिल्टन का कथन है। विकास के वर्तमान पड़ाव पर तो निःसंदेह मन ही मनुष्य के व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण कोश है। जन्म से स्वास्थ्य ठीक हो और भौतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां बेहद प्रतिकूल न हों, तो कोई भी मनुष्य अपनी मानसिक शक्ति के द्वारा अपनी समृद्धि का निर्माण या नाश कर सकता है।

समृद्ध बनने के लिए मनुष्य को अपने मन-मस्तिष्क को संस्कारी बनाना पड़ता है। और मन को संस्कारी बनाने और समृद्धि पाने का उपाय है योजनाबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण स्वाध्याय– वैयक्तिक समृद्धि का ही नहीं, सामाजिक समृद्धि का भी।

इन दो व्यक्तियों के उदाहरण लीजिये:

लगभग सौ साल पहले दक्षिण भारत के एक गरीब परिवार में एक बालक जन्मा। बचपन और किशोरावस्था में वह खूब प करता था, वह भी बहुत योजनापूर्वक। गरी वह इतना था कि उसे सड़क की बत्ति के नीचे बैठकर पढ़ना पड़ता था। लेकि बाद में बड़ा होकर वही मद्रास हाईको का पहला भारतीय न्यायाधीश बना औ सर टी० एस० मुत्तुस्वामी अय्यर के नाम प्रसिद्ध हुआ।

लगभग उसी समय एक और गरी बालक पैदा हुआ डनफर्मलाइन (स्का लैंड) में। उसकी मां केक बनाती औ सड़क के नुक्कड़ पर बैठकर बेचा करती उसका पिता फेरी लगाया करता। इस गरीबी से घबराकर लड़का एक दिन अ रीका भाग गया। वहां एक इस्पात का में उसे चपरासी का काम मिल गया। क कम ही रहता था। सो खाली समय में मैनेजिंग डाइरेक्टर की अलमारी से को पुस्तक निकाल लाता और बैठकर प करता। एक बार डाइरेक्टरों की मी

हो रही थी। वे किसी प्रश्न से जूझ रहे थे। इस चपरासी ने अलमारी में से एक किताब निकाली और वह पन्ना खोलकर डाइरेक्टरों के सामने रख दिया, जिसमें उस प्रश्न का उत्तर दिया हुआ था। अंत में वह चपरासी करोड़पति बन गया। वह था एंड्रू कार्नेगी।

अब उदाहरण लीजिये पूरे एक देश का। लगभग डेढ़ सौ साल पहले डेन्मार्क बड़ा गरीब देश था। किंतु कई नेताओं की दूरदर्शिता की कृपा से वहां शिक्षा का कार्यक्रम जोरों से शुरू हुआ। बच्चों को तो अनिवार्य शिक्षा दी ही जाती थी। जब वे जरा बड़े होकर धंधे-पेशे में लग जाते, तो कुछ साल बाद उन्हें फिर जनता (फोक) हाईस्कूलों में लाकर शिक्षा दी जाती थी। बालिग हो जाने पर भी उन्हें पढ़ने के लिए निःशुल्क पुस्तकालयों से पुस्तकें दी जाती थीं। देश में पुस्तकालयों का जाल बिछा दिया गया था। योग्य पुस्तकालयाध्यक्षों के मार्गदर्शन में लोग योजनापूर्वक और लगकर पुस्तकें पढ़ने लगे। उसका परिणाम? दो पीढ़ी के अंदर डेन्मार्क संसार के सबसे समृद्ध देशों में गिना जाने लगा।

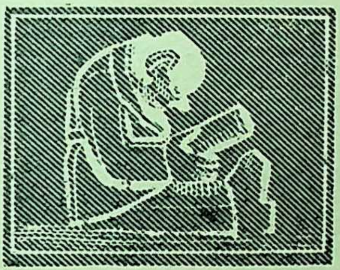

अध्ययन में निरत

हां, स्वाध्याय व्यक्ति और समाज दोनों को समृद्ध बना सकता है; लेकिन तभी जब कि वह सुनियोजित हो। कुछ लोग स्वयं ही योजना बनाकर इस तरह पढ़ते हैं कि उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है और जीवन में वे समृद्धि की राह पर आगे बढ़ते हैं।

आज से लगभग सौ साल पहले इंग्लैंड में जनता के लिए निःशुल्क पुस्तकालयों की व्यवस्था हुई। अभी एक पीढ़ी पहले तक इनमें अधिकांश व्यक्ति दिलबहलाव करनेवाली पुस्तकें, वक्त काटनेवाली पुस्तकें ही पढ़ा करते थे। लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इंग्लैंड के पुस्तकालयाध्यक्षों ने इस चीज में दिलचस्पी लेनी शुरू की कि लोग क्या पढ़ते हैं। अब तक उनकी दिलचस्पी इसी में थी कि लोग ज्यादा-से-ज्यादा पढ़ें। प्रोत्साहन और छिपे प्रचार के द्वारा पुस्तकालयों ने इंग्लैंड में जनता का पढ़ने का स्तर ऊंचा उठाया है।

मसलन १९४८ में मैं एक गश्ती पुस्तकालय की मोटर में बैठकर कुछ दिन देहात में घूमा। बेकवेल नाम के छोटे-से गांव में मैंने जो कुछ देखा, उससे स्पष्ट होता था कि किस प्रकार सही मार्गदर्शन में स्वाध्याय करके लोग समृद्ध और प्रबुद्ध बन सकते हैं। जब मैं वहां के पुस्तकालय में गया, वह पढ़नेवालों से भरा हुआ था। मुझे बताया गया कि गांव के ८० प्रतिशत निवासी पुस्तकालय के नियमित सदस्य हैं। लगभग घंटे-भर में देखता रहा कि पाठक किस तरह की किताबें लेते हैं,

और उनसे उनकी पसंद के विषय में चर्चा करता रहा । प्रायः वे सभी मध्यम या श्रमिक वर्ग के लोग थे ।

एक युवती बालमनोविज्ञान की पुस्तक अलमारी से निकाल रही थी; दूसरी बच्चों के आहार-संबंधी । एक अधेड़ आदमी ने गृहसज्जा के विषय में तीन पुस्तकें निकलवायी थीं । मैंने उन पुस्तकों में उसकी दिलचस्पी का कारण पूछा । उसने कहा—"घर की मरम्मत और पुताई कराने का वक्त आ गया है ।" एक नौजवान 'इलेक्ट्रानिक्स' की पुस्तक ले रहा था । वह स्वतंत्र रूप से रेडियो बेचा करता था । इसलिए रेडियो-इंजीनियरी की नवीनतम प्रगति का परिचय प्राप्त करना चाहता था । एक किशोर लार्ड केन्स के 'मूल्य सिद्धांत' की एक पोथी हाथ में लिये था । वह विश्वविद्यालय में पढ़ता था और उन दिनों छुट्टियों में घर आया हुआ था ।

एक नन्हा लड़का शिशु साहित्य की अलमारी में किताबें उलट-पुलट रहा था । मैं पास जाकर खड़ा हो गया । अंत में उसने एक किताब चुनी, जो हाथियों के संबंध में थी । मैंने पूछा—"तुमने हाथी देखा है ?" बोला—"नहीं ।" मेरा अगला सवाल था—"फिर यह पुस्तक क्यों ले रहे हो ?" बालक ने उत्तर दिया—"आप इंडिया के रहनेवाले हैं न ? मैंने सुना है, इंडिया में हाथी बहुत होते हैं । इसलिए मैं उनके बारे में पढ़ना चाहता हूं ।"

वहां एक बूढ़ी महिला भी थी, जो एक साथ कई जासूसी उपन्यास घर ले जा
थी । मेरे पूछने पर उसने बताया—"मैं
बहुत बूढ़ी हो गयी हूं । गंभीर पुस्तकें मु
नहीं पढ़ी जातीं । पर ये कहानियां पढ़ने
मुझे रस आता है ।" एक बूढ़ा आदमी श
रंज की दो किताबें ले जा रहा था ।
पेंशनयाफ्ता था । शतरंज उसकी 'हाबी' थी

पढ़ने और उद्देश्यपूर्वक पढ़ने की आ
अब सारे संसार में बढ़ रही हैं । १९५८
मैं ओसाका (जापान) में था । मैंने दे
कि एक इमारत के सामने लोग लंबी कत
में खड़े हैं और खड़े-खड़े ही पढ़ रहे हैं
वह इमारत थी वहां का सार्वजनिक पुस्त
लय । मैंने पुस्तकालयाध्यक्ष से पूछा
इतने सारे आदमी बाहर क्यों खड़े हैं
उत्तर मिला—"हमारा वाचनालय तीस
पहले बना था । अब पढ़नेवाले इतने
हैं कि वाचनालय छोटा पड़ गया है ।
लिए सीटें 'रिजर्व' कर दी गयी हैं
लोग अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में बा
खड़े रहते हैं ।

लेकिन हमारे यहां पुस्तकालयों
संचालन जिनके हाथों में हैं, वे अभी नौक
शाही मनोवृत्ति में जकड़े हुए हैं
पुस्तकालयाध्यक्षों को पाठकों की स
सेवा करने का अवसर ही नहीं देते ।

फिर भी इसकी पूरी संभावना है
ये कठिनाइयां शीघ्र दूर हो जायेंगी
हमारे यहां भी पुस्तकालयों का उप
उद्देश्यपूर्वक होने लगेगा ।

['टाइम्स आफ इंडिया' से साभार]

मानवता का मानदंड
हिमालय

हिमालय हमारी संस्कृति का गौरव और उदात्त भावनाओं का प्रतीक है।

शिवकुमार शुक्ल

कालिदास के काव्यों में जिन अनेक पात्रों की सृष्टि हुई है, उनमें हिमालय अपेक्षाकृत अधिक गंभीर और जटिल है। हमें वह सभी जगह दो रूपों में दिखाई पड़ता है। पहले रूप में वह स्थावर है, जड़ है, तो दूसरे रूप में जंगम या चेतनायुक्त है। कुमारसंभव के प्रथम श्लोक में ही कालिदास ने कहा है :

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।

भारत के उत्तर में पृथ्वी का मानदंड हिमालय खड़ा है। लोग कहीं जड़ पहाड़ को ही हिमालय न समझते रहें, इस आशंका से 'देवतात्मा' विशेषण देकर कवि संकेत करता है— वह जड़ नहीं है। जो तुम्हें जड़ दिखाई देता है, उसके भीतर दिव्य आत्मा है। मैं उसे स्पष्ट देख रहा हूं और तुम्हें भी कुमारसंभव द्वारा दिखा देना चाहता हूं। वह कितना विशाल है, यह तो तुम इसी से समझ सकते हो कि वह पूर्व और पश्चिम दोनों सागरों की थाह लेता रहता है। वस्तुतः वह समस्त पृथ्वी का मानदंड है।

सप्तर्षियों के प्रसंग में हिमालय की इस द्विरूपता की और भी अधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है। वहां स्वयं हिमालय महर्षियों का स्वागत करते हुए कहता है—"मेरे दो रूप हैं, एक जंगम और दूसरा स्थावर। पहले रूप में मैं आपके प्रति सेवक-भाव से ओतप्रोत हूं और दूसरे रूप में मेरा शरीर आपके पावन चरणों से अंकित हो रहा है। ये मानो आपके अनुग्रह के ही दो रूप हैं।"

और हिमालय के इन दोनों रूपों में कितना मेल है, इसका वर्णन इस श्लोक में है :

धातुताम्राधरः प्रांशुर्देवदारुबृहद्भुजः
प्रकृत्यैव शिलोरस्कः सुव्यक्तो हिमवानिति ।। (कुमार० ६–५१)

—लाल तांबे के समान इसके होंठ हैं, अथवा लाल रंग का तांबा ही इसके होंठ है; यह ऊंचे स्कंध या शिखरोंवाला है; देवदारु के समान इसकी बड़ी-बड़ी भुजाएं हैं, अथवा

बड़े-बड़े देवदारु ही इसकी भुजाएं हैं; स्वभाव से ही इसकी छाती विशाल शिला के समान है, अथवा विशाल शिलाएं ही इसकी छाती हैं। ......

यह कालिदास का सजीव हिमालय है। शिखरों के समान ही इसका मन भी ऊंचा है— **मनसः शिखराणां च सदृशी ते समुन्नतिः।** यह कीर्तिशाली है; क्योंकि इसकी गोद से निकलकर नदियों की भांति कीर्ति भी तीनों लोकों को पुनीत करती है। समुद्र की ऊंची तरंगें भी इसकी नदियों को रोक नहीं पातीं। ......यह उमड़ते हुए मेघों को अपनी कमर में लपेटकर वर्षा कराता हैं।......इसने बछड़ा बनकर सुमेरु को पृथ्वी रूपी गाय के दोहन में सहायता दी थी। यदि यह न होता, तो दिव्य औषधों की सृष्टि कैसे होती ?

यह पृथ्वी का सार है। यज्ञ की तमाम सामग्रियां इसी की करुणा का फल हैं। इसलिए देवों ने कृतज्ञ होकर इसे यज्ञाहुति में भागीदार बनाया है। यह देवताओं के बीच बैठता हैं। इसीलिए संसार में इसे महान पद मिला है। प्रजापति ने इसे तभी तो शैलाधिपति बनाया है। वास्तव में यह पर्वतराज ही भारत को 'यज्ञिय भूमि' बनाने का कारण है। इसके कारण ही भारत में छः ऋतुएं होती हैं।

स्थूल रूप में इसकी नदी-रूपी पुत्रियां तमाम झंझटों और कठिनाइयों को झेलकर अनंत सागर में मिलती हैं, तो आध्यात्मिक रूप में इसकी पुत्री पार्वती कठोर तपश्चर्या के बाद अनंत शिव से मिलती हैं।

कुमारसंभव में सृष्टि हुई है पार्वती की। इस अद्‌भुत नारी का हिमालय से बढ़कर उपयुक्त पिता कौन हो सकता था ! पिता के अनुरूप ही हैं माता मेना, जिसे बड़े-बड़े मुनि भी मानते हैं, जो पितरों की कन्या हैं। हिमालय और मेना का विवाह भोग के लिए नहीं, प्रत्युत वंश की स्थिति के लिए, कुल की प्रतिष्ठा के लिए हुआ है। तभी तो उस समाधिमती पत्नी में हिमालय समाधिनिष्ठ कन्या को उत्पन्न कर सका।

संस्कृत-साहित्य में ही नहीं, प्रत्युत शाक्त संप्रदाय को छोड़कर समस्त विश्व-साहित्य में, काव्य का प्रधान पात्र प्रायः पुरुष ही होता हैं। किंतु कालिदास ने जैसे इस परिपाटी को कुमारसंभव में छिन्न-भिन्न कर दिया हैं। यहां काव्य का केंद्र-बिंदु पुरुष न होकर नारी है स्वयं भगवान शंकर का चरित्र भी जैसे उसी के विकास के लिए लाया गया हो।

इस प्रसंग में कालिदास की उपमा कितनी सटीक बैठी हैं ! "हिमालय उत्साह है और मेना अपरिक्षत अर्थात् कभी न बदलनेवाली नीति !" इन दोनों के संयोग से उत्पन्न संपत्ति है पार्वती। इस संपत्ति का ज्ञानरूपी शिव से संयोग कराना कुमारसंभव काव्य का एकमात्र अभीष्ट है। इसीलिए हिमालय को पार्वती इतनी प्रिय है। पुष्प अनंत हैं; किंतु वसंत की भ्रमरावली आम्रमंजरी पर ही बैठती हैं। इसी तरह पुत्रवान् होते हुए भी हिमालय की दृष्टि पुत्री पार्वती पर ही टिकती है :

महीभृतः पुत्रवतोपि दृष्टिस्तस्मिन्नपत्ये न जगाम तृप्तिम् ।
अनन्तपुष्पस्य मधोर्हि चूते द्विरेफमाला सविशेषसङ्गा ।। (कुमार० १–२७)

कालिदास इस बात को कभी नहीं भूलते कि आदर्श दंपति ही आदर्श संतान उत्पन्न कर सकते हैं । पार्वती के जन्म के लिए हिमालय और मेना के रूप में उन्होंने आदर्श माता-पिता की कल्पना की हैं । देवों के सेनापति कुमार की सृष्टि के लिए शिव-पार्वती का संयोग कराया हैं । रघुवंश के आरंभ में ही दिलीप-सुदक्षिणा की जोड़ी भी इसीलिए अवतरित करायी है कि आगे राष्ट्रनिर्माता रघु का जन्म होना हैं ।

हिमालय आदर्श पति था, इसे कालिदास ने कितने सुंदर ढंग से सूचित किया है! जब शिव की ओर से विवाह प्रस्ताव लेकर सप्तर्षि उसके यहां पहुंचे, तब सब कुछ ठीक होते हुए भी और उत्कट इच्छा रहते हुए भी उसने एकाएक प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर लिया । उसने अपनी पत्नी मेना से सलाह ली; क्योंकि कन्या-संबंधी विषयों में प्रायः कुटुंबी गृहिणी के परामर्श से चला करते हैं :

शैलः सम्पूर्णकामोपि मेनामुखमपेक्षत ।
प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थे तु कुटुम्बिनः ।। (कुमार० ६–८५)

और मेना की मौन सम्मति मिलते ही उसने पार्वती को लाकर सप्तर्षियों के चरणों में यह कहते हुए डाल दिया कि "यह त्रिलोचन की वधू आप सबको प्रणाम करती हैं ।"

जहां तक पिता के कर्तव्य और पुत्री के आदर का प्रश्न हैं, हिमालय से अधिक जागरूक, उदार और स्नेहपरिप्लुत पिता साहित्य में मिलना कठिन है । नारद से जब उसने सुना कि पार्वती का विवाह शंकर से होगा, तो वह निश्चित हो गया । उसने दूसरे वर की खोज का विचार भी छोड़ दिया ।

पार्वती उस समय यौवन में प्रवेश कर चुकी थी । फिर भी हिमालय ने जल्दबाजी नहीं की । वर के चुनाव की बात उसने पार्वती पर ही छोड़ दी । यही नहीं, भावी पति से उसका परिचय कराया और उसकी सेवा करने का उसे अवसर दिया । भावी दंपति को एक दूसरे को समझने का मौका देना कितना उदार व्यवहार था पिता की ओर से ! उसने पुत्री की देखरेख के लिए सखी के साथ रहने की व्यवस्था कर दी और पार्वती को स्वयं शिव की सेवा करने का आदेश दिया ।

किंतु हिमालय गिरियों का राजा था । उसे आत्मसम्मान का पूरा खयाल था । नारद के कहने पर भी उसने शंकर से स्वयं प्रार्थना नहीं की । (पहले प्रस्ताव शंकर की ओर से होना चाहिये ।) कहीं शंकर उसके प्रस्ताव को ठुकरा न दें ! इसीलिए कैलाश में जाकर भी विवाह की बात न उठायी । दोनों का परिचय मात्र करा दिया, जिससे वे समीप रहकर भावी-जीवन की समस्याओं को समझ और सुलझा सकें ।

किंतु योजना फलवती नहीं हुई । शिव ने पार्वती के प्रेम को बुरी तरह ठुकरा ही नहीं दिया, प्रत्युत हृदय की तमाम कामनाओं के साथ काम को भी भस्म कर दिया । तथापि वह मानी पर्वतराज इस अपमान को चुपचाप पी गया । उसने शंकर के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा । वह बोला तक नहीं, पुत्री के हित के लिए ही तो !

बेचारी पार्वती शिव के कोप से घबरा गयी । उसका दिल धड़कने लगा । उसके नेत्र बंद हो गये । वह मूर्छित हो गयी । जब हिमालय ने पुत्री की यह आपत्ति देखी, तो सारे सम्मान और गर्व को ताक में रखकर भागा । जिस प्रकार गजराज हिम से कुम्हलायी पद्मिनी को उठा लेता है, उस तरह वह अपनी मूर्छित कन्या को उठाकर ले आया । वह इतने वेग से गया और आया कि उसका शरीर उस समय वेग के कारण बहुत लंबा दिखाई देने लगा ।

सपदि मुकुलिताक्षीं रुद्रसंरम्भभीत्या दुहितरमनुकम्प्यामद्रिरादाय दोर्भ्याम् ।
सुरगज इव बिभ्रत्पद्मिनीं दन्तलग्नां प्रतिपथगतिरासीद् वेगदीर्घीकृताङ्गः ।।
(कुमार० ३–७६)

ऐसा प्रतीत होता है कि इस घटना के बाद शंकर के संबंध को लेकर माता-पिता और पुत्री की विचारधाराएं विभिन्न दिशाओं में बह रही थीं । पार्वती चाहती थी तिरस्कार करने वाले पति का वरण करना । मेना उससे सहमत नहीं हुई । पार्वती ने इसके लिए तपस्या करने का निश्चय किया और संकोचपूर्वक मां से पूछा । पार्वती ने संभवतः कई बार अपनी इच्छा व्यक्त की । परंतु मेना " उ-मा, उ-मा" (अरी नहीं, अरी नहीं) की ही रट लगाये रही । मां का यह विरोध इतना प्रबल था कि उसकी स्मृति में बेचारी पार्वती का नाम ही उमा पड़ गया ।

अंत में उसने पिता से मूक प्रार्थना की । यहां फिर हिमालय आदर्श पिता के रूप में सामने आता है । पार्वती के पूर्वजन्म के पिता दक्ष ने न-कुछ अपमान होने पर शंकर से वैर ठान लिया था । किंतु इस जन्म के पिता हिमालय में इतनी कठोरता नहीं थी । पुत्री की इच्छा के विरुद्ध वह न चल सका । उसने पुत्री को न केवल अनुमति दी, अपितु तपस्या के लिए सारी व्यवस्था भी कर दी । कितना उदार था उसका हृदय !

कालिदास का हिमालय अपने दोनों रूपों में महान है । दोनों रूपों में उसकी उन्नति असाधारण है । उसमें हमें विश्वव्यापक अचिंत्य सत्ता की असीम शक्ति के साथ अनंत वैभव के दर्शन होते हैं ।

पुंजीभूत ज्ञान का प्रतीक बनकर देवतात्मा देवालय भी मानो उसी अचिंत्य सत्ता की महिमा का गान करता रहता है –**हिमवन्तोस्य महिमानमाहुः** (ऋग्वेद) । कालिदास ने हिमालय के इस समग्र रूप के दर्शन किये थे और तभी उसे पृथ्वी का मानदंड कहा था ।

भारत अजीब देश है

पिछले दिनों सुप्रसिद्ध दक्षिण अमरीकी व्यंग्य-लेखिका मिस सिंगर भारत आयी थीं। उस यात्रा के संबंध में उनके एक बहुचर्चित रोचक संस्मरण का हिन्दी रूपांतर यहां प्रस्तुत है।

कुमारी सिंगर

नयी दिल्ली में मैं जिस भारतीय मित्र के यहां ठहरी थी, वे मथुरा के रहनेवाले थे, भगवान कृष्ण की जन्मभूमि के। इनके पूर्वज किसी समय मथुरा के एक साधारण-से धार्मिक पुरोहित थे; मगर सन १८०३ में इस परिवार की किस्मत बदल गयी थी। मथुरा उन दिनों मराठों के अधिकार में था और साम्राज्यवादी ब्रिटिश सेनाएं जनरल लेक के नेतृत्व में मथुरा-विजय की घात में थीं। संयोग की बात देखिये, इसी वर्ष हमारी मातृभूमि पर भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी दांत गड़ा रहे थे—हमारी राजधानी ब्यूनिस आयर्स पर उनका कुख्यात आक्रमण इसी वर्ष हुआ था।

खैर, मथुरा को जनरल लेक ने जीत लिया; मगर उसकी विशाल फौज के लिए अन्न की बड़ी तंगी थी। निकटवर्ती हाथरस के एक देशभक्त राजा ने (राजा दयाराम) अंग्रेजों की सप्लाई-लाइन अवरुद्ध कर दी थी, जिसके परिणामस्वरूप मथुरा में तैनात अंग्रेजी सेना भूखों मरने लगी थी। ऐसे समय मथुरा के धार्मिक पुरोहितों ने किसी प्रकार बंजारों को राजी कर लिया, ताकि वे अंग्रेजी फौज को अपेक्षित अन्न दे सकें—यद्यपि मेजर स्किनर को इसका श्रेय मिला। जनरल लेक इससे बहुत खुश हुआ, क्योंकि इससे शक्ति पाकर ही उसने शीघ्र दिल्ली पर आक्रमण किया और वहां अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नींव डाली।

मथुरा के इस धार्मिक पुरोहित को भी दिल्ली में अंग्रेजों ने एक उच्च पद दिया। उसे सरधने की बेगम समरू वाला विशाल भवन दिया गया। तब से यह परिवार शासकों का भक्त रहा और उसके वंशज आज भी आई० सी० एस० अफसर हैं। आज कांग्रेसी शासन में भी उनकी ख्याति और मान कायम है, क्योंकि अब पूरा परिवार देशभक्त हो गया है।

इन्हीं के प्रबंध में, एक स्थानीय साहित्यिक संस्था का भव्य समारोह होनेवाला था। मैं भी उसमें सम्मिलित हुई और जो कुछ देखा, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है।

भारत एक ऐसा देश है, जहां के साहित्यिक समारोहों का उद्घाटन-सभापतित्व सरकारी मंत्री करते हैं। मंत्री अक्सर सभा में देर से आता है और जल्दी चला जाता है। उसके आने पर, सब उपस्थित दर्शक-श्रोता और कवि-साहित्यिक तुरंत खड़े

होकर अभ्यर्थना [illegible] करती है और सभा के संयोजक उस मंत्री के हंसने पर हंसते हैं, झूठी वाह-वाह करते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि उद्घाटक मंत्री भाषा और साहित्य के विषय में एकदम शून्य होते हैं।

यह मेरा निजी अनुभव है और मैं किसी के दिल को अकारण ठेस पहुंचाने की धुन में कदापि नहीं हूं कि भारत में साहित्यकार का कोई महत्व नहीं है, सारी महत्ता राजनीतिक व्यक्तियों के हाथ में है। अपनी इस यात्रा के दौरान मैं भारत के उच्च कोटि के कवियों और लेखकों से भी मिली। उनमें से अधिकांश मिले सरकारी नौकरी में, विशेषज्ञ-समितियों में और संसद में। गोया, सभी सरकार की खरीद-सीमा के अंतर्गत! कुछेक प्रसिद्ध नाम यहां के पूंजीपतियों के पत्रों के साथ संपादक रूप में जुड़े मिले।

मैं सत्य कहती हूं कि एक दो वयोवृद्ध व्यक्तियों को छोड़कर सभी ख्यातिप्राप्त साहित्यकार इसी प्रकार के जीवन क्रम में पाये गये।

और हां, संपूर्ण देश में एक भी ऐसी प्रकाशन, संस्था मैं नहीं खोज पायी—जहां भारतीय साहित्यकारों की रचना, उन्हीं के "हानि-लाभ" पर प्रकाशित करने तथा उसकी बिक्री नियोजित करने की सुव्यवस्था हो। वहां का साहित्य-मनीषी पूर्णतः प्रकाशकों की दया पर है। इन प्रकाशकों में कुछ "निजी" होते हैं, कुछेक सरकारी या पुलिस व्यवस्था अर्ध सरकारी।

भारत ने काफी आर्थिक उन्नति की है; अमरीकी पत्रों में हम लोग इसकी प्रगति के आंकड़े यदाकदा पढ़ते रहते हैं; मगर आप सच मानिये, जब मैं दिल्ली में थी, तो वहां की संसद में एक बहस छिड़ी हुई थी। विरोधी दल की मान्यता थी कि लगभग २७ करोड़ भारतीयों की दनिक आय केवल तीन आना है; और सरकारी प्रवक्ता का कथन था कि तीन आने नहीं, साढ़े सात आना है। यदि मैं भूल नहीं रही, तो प्रधान मंत्री के कथनानुसार यह रकम १५ आने प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति थी।

और यह तब था, जबकि भारत में कुछ परिवार ऐसे भी थे, जिनकी सम्मिलित आय तीन लाख रुपये दैनिक थी। ये आंकड़े मैं भारतीय संसद में हुई बहस से दे रही हूं।

सिर्फ तीन आने रोज! कोई रकम है यह! कैसे जीता है एक भारतीय, भगवान ही जाने। हे प्रभु, उनकी रक्षा कर!

क्षमा कीजिये, मैं विदेशी हूं और भारत के राजनीतिक मामलों पर अधिक चर्चा नहीं कर पाऊंगी; क्योंकि इससे अन्यथा समझा जाता है। मगर मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि भारत की पत्र-पत्रिकाओं में सरकार-विरोधी लेख नहीं के बराबर छपते हैं। इतने विराट् सामाजिक-भेद के बावजूद, वहां के साहित्यकार कैसे मौन साध लेते हैं, यह मेरी समझ से बाहर की बात है।

यों नयी दिल्ली की सजावट और नयी

नयी कारों और पाश्चात्य ढंग के आवासों की छटा हमारी राजधानी—ब्यूनिस आयर्स से किसी तरह कम नहीं है। लेकिन भारत के ग्रामों, रेल-मार्गों से चमकते हजारों स्थानों पर जो घर, ग्राम आदि दृष्टिगोचर होते हैं, उनकी बात छोड़ दीजिये। उनका वर्णन करने में न मुझे खुशी होगी, न पाठक ही आनंद उठा सकेंगे।

भारत में एक साहित्यिक कार्यक्रम होता है—मुशायरा। एक रात मैं भी उसमें शामिल हुई। उर्दू के कवि उसमें इकट्ठे हुए। एक-एक करके अपनी कविता का पाठ करने लगे। पता नहीं क्या कुछ बयान करते थे कि श्रोता 'वाह-वाह', 'मुकर्रर,' 'फिर कहिये' के नारे लगा देते थे। एकाध बार तो ऐसा हुआ कि कवि महोदय तब तक कुछ भी न कह पाये; मगर 'वाह-वाह' उसी तरह प्राप्त हो गयी।

और हिन्दी के कवि-सम्मेलन भी मैंने देखे। कई-कई हजार नर-नारी कवि के मुख से कविता-पाठ सुनने एकत्र होते हैं—कभी-कभी बाकायदा टिकिट लेकर भी! ऐसे दृश्य हमारे देश में सुलभ नहीं होते।

भारत की नारी आज भी यौन-कुंठा से पीड़ित जान पड़ती है। दफ्तरों में तथा अन्य संस्थाओं में काम करनेवाली स्त्रियां काफी संख्या में दिखाई पड़ती हैं; मगर स्त्री-पुरुष कार्यकर्त्ताओं के मध्य, अथवा अन्य अवसरों पर जब वे पुरुषों के बीच आती हैं, तो उनके मुख पर हीन-भाव स्पष्ट लक्षित होता है। मैंने बस में देखा। सामने की सीट पर एक भारतीय लड़की बैठी थी। शायद आफिस जा रही थी। उसी के बराबर खाली सीट पर एक अधेड़ व्यक्ति आ बैठा। तुरंत ही वह लड़की नववधू की तरह सिकुड़ गयी, सिमट गयी।

और, सब मिलाकर मुझे भारतीय बड़े प्यारे लगे। उनकी बातें बड़ी निश्छल और मदमस्त लगती थीं। खास तौर से, आकाशवाणी के देहाती-कार्यक्रम के एक वार्ताकार की बात! उसने मुझे बताया कि भारत और अर्जेंटाइना में अति प्राचीन संबंध हैं। 'अर्जुन ब्याहे अमरीका में' वहां का एक सुप्रसिद्ध लोकगीत है। उसी अर्जुन का विवाह अमरीका अर्थात् अर्जुनटाइना में हुआ और इसी कारण हमारे देश का नाम अर्जुनटाइना पड़ा।

खैर, घर लौटकर, मैं विद्वानों से चर्चा करूंगी कि इस कथन में कोई सचाई भी है या नहीं?

★

सन १६१० में एक फ्रांसीसी व्यापारी की मृत्यु हुई। जब उसकी वसीयत खोली गयी, तो उसमें पाया गया कि उसने एक खासी अच्छी रकम एक औरत के नाम छोड़ी है, जिसने बीस वर्ष पहले उस व्यापारी का विवाह-प्रस्ताव ठुकरा दिया था। वसीयत में व्यापारी ने अपने इस विचित्र व्यवहार का यह स्पष्टीकरण दिया था: "मैं इस महिला का बड़ा कृतज्ञ ; इसने मुझे स्वच्छंद और स्वतंत्र कुंवारा जीवन बिताने का सुखमय अवसर दिया।"

★

मनस्वी महाराज

'व्यवहार-शुद्धि आंदोलन' के प्रवर्तक एक आत्मसाधक का संक्षिप्त जीवन-परिचय उनके जीवन-दर्शन के साथ; पोर्ट्रेट – वी० एन० ओके।

सत्यनारायण मिश्र

लंबा कद, गठा हुआ शरीर, तेजस्वी नेत्र, उभरती उम्र और उस पर उदात्त संस्कारों का गहरा प्रभाव! पराधीन भारत की दयनीय अवस्था ने उस युवक की चेतना को एकदम झकझोरा हुआ था। बंग-भंग आंदोलन से देश में जो जन-जागृति की लहर उठी थी, वह बाद में सरकारी दमन-चक्र से धीरे-धीरे शांत हो चली थी। सफल नेतृत्व के अभाव और समाज में व्याप्त नैराश्य ने उस युवक के मन में एक विराग-सा भर दिया और वह 'परमेश्वर की कृपा' में देशोत्थान का आधार खोजने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वह घर-बार छोड़कर एकांत-सेवन के लिए हिमालय की ओर चल पड़ा।

उसके युवा मन में ईश्वर-दर्शन तथा आत्मसाक्षात्कार की तीव्र व्याकुलता भरी हुई थी, सो उपवास, अनुष्ठान, जप-तप चिंतन-मनन आदि जो साधन उसे सूझा या किसी ने सुझाया, वह उसी के पीछे पड़ गया। योग-साधना का आकर्षण भी उसके मन में जागा और उसने धीरे-धीरे उसमें काफी सिद्धि भी प्राप्त की; लेकिन मन की वह अकुलाहट कम नहीं हुई। साधना के उद्दे से उसने एक बार जमुनोत्री, गंगोत्री, केदा बदरीनारायण तक की यात्रा भी की। इ बीच उसे कई अच्छे व्यक्ति मिले। सा ही उसने सांसारिक कर्तव्यों से विमु होकर वैराग्य एवं परामार्थ के नाम प हजारों लोगों को संन्यासी-जीवन जीते देखा; किंतु उसका चित्त इन सबमें नहीं रम सका। सहज संस्कारजन्य समाजनिष्ठा ने एक दिन उसके मन में जिज्ञासा का रू धारण कर लिया और वह अपनी योग-साधना के मार्गदर्शक से पूछ बैठा–"महाराज, इन सब चमत्कारों व साधनाओं का देशोत्थान एवं लोक-कल्याण की दृष्टि से क्या उपयोग है ?" उन्होंने कुछ सकपकाते हुए कहा–"बेटा, यह तो राम की दुनिया है राम ही जाने !"

यह सुनना था कि उस युवक की संपूर्ण भाव-धारा उलट गयी। उसके मन की व्याकुलता तो जैसे मिट गयी; किंतु एक दूसरी हलचल शुरू हो गयी। "जिस साधना या सिद्धि का कोई समष्टिगत तथा व्यापक सदुपयोग नहीं, उसके पीछे पड़ने से क्या

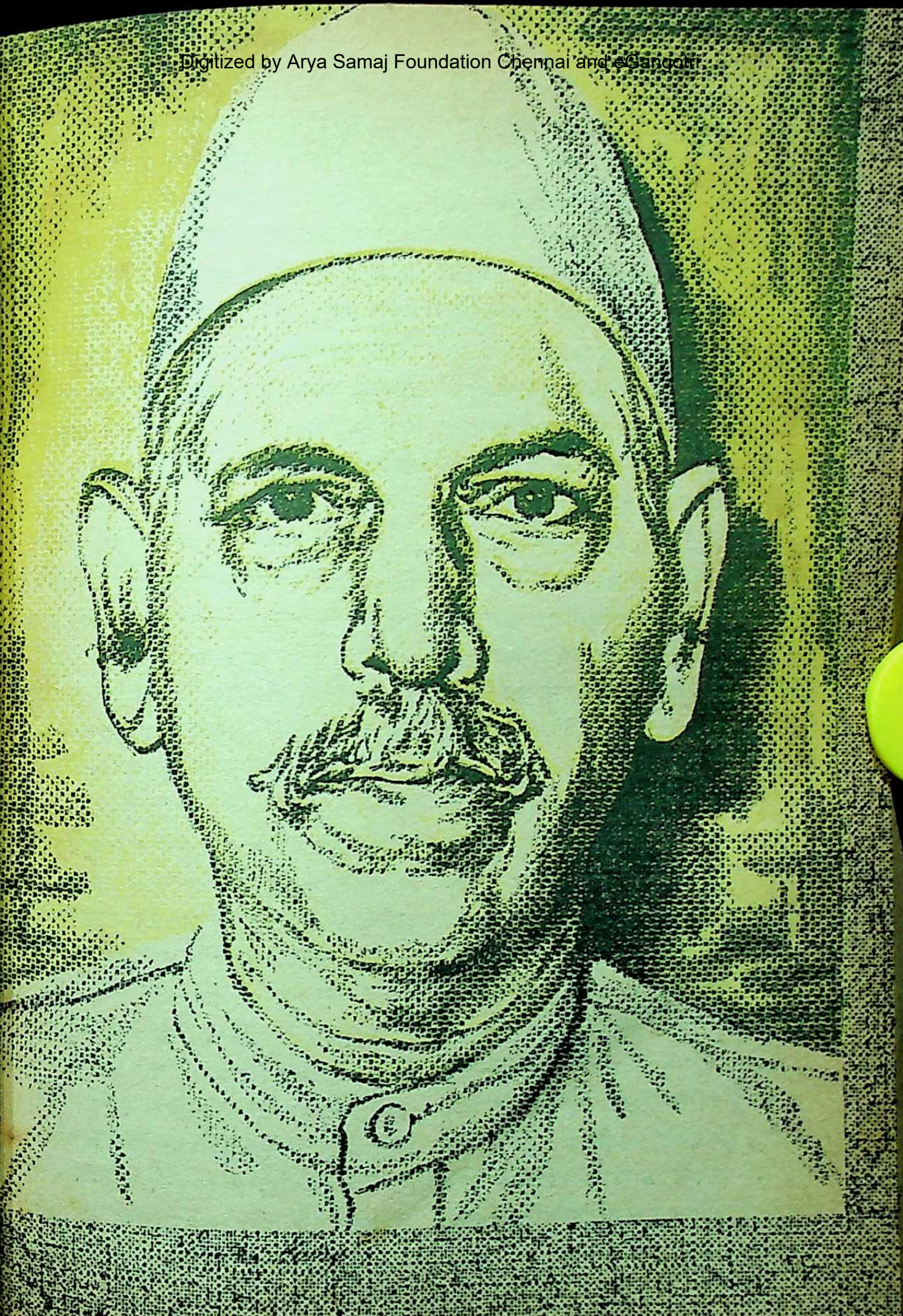

लाभ ?" बस, यह निश्चय करके वह युवक चमत्कारों की दुनिया से विदा लेकर पुनः अपने परिवार एवं समाज में आ मिला और आगे के लिए उसने अपने विवेक को ही गुरु मान लिया ।

अपने निकट परिचितों में 'नाथजी महाराज' के नाम से विख्यात वयोवृद्ध मनस्वी आत्मसाधक श्री केदारनाथजी के के जीवन का यह बड़ा उद्‌बोधक प्रसंग है । उस साधना का उल्लेख करते हुए नाथजी ने स्वयं लिखा है –"जीवन के उमंग और उत्साह-भरे लगभग दस वर्ष सतत इसी प्रयत्न के पीछे अत्यंत व्याकुलता में बीते । अलग-अलग भूमिकाएं साधकर मैंने अलग-अलग अनुभव किये; परंतु इतना करने के बाद भी मैं अपना धर्म या कर्तव्य तय नहीं कर सका; या यों कहिये कि जो काम मुझे करने जैसा लग रहा था, उसे करने की शक्ति या पात्रता मुझमें नहीं आ पायी ......उन अनुभवों को विवेक-दृष्टि व सब पहलुओं से जांचने के बाद मुझे मालूम हुआ कि वे अपनी ही कल्पना द्वारा निर्मित अल्पकालिक अर्ध-जागृत अवस्था के आभासमात्र हैं ।......इसलिए इनमें से किसी भी अनुभव से मेरा समाधान नहीं हुआ और न धन्यता ही महसूस हुई ।"

चिंतन की इसी दिशा ने आगे चलकर नाथजी के भीतर छिपे उग्र एवं तेजस्वी विचारक को प्रकट कर दिया । उन्होंने एक ओर तो साधना के नाम पर चलनेवाले कार्य के शारीरिक व मानसिक कष्ट, अज्ञान, भ्रम, दंभ व तज्जन्य गुरुडम आदि की नि की; दूसरी ओर लोगों को चेतावनी दी

नाथजी का पूरा नाम श्री केदारना कुलकर्णी है । उनका जन्म सन १८८ हुआ । पूर्वज महाराष्ट्र में कुलाबा जिले पाली गांव में रहा करते थे । लेकिन उन पिता श्री बलवंत कुलकर्णी चूंकि स कारी नौकरी में थे, इसलिए नाथजी क बचपन थाना, रत्नागिरी, खानदेश वगैर कई जिलों में बीता । ईश्वर, धर्म, शील सदाचार आदि पर उनकी शुरू से ही ब श्रद्धा थी ।

वे तब शायद पांचवीं कक्षा में हों कि उन्होंने सोचा, जिस शिक्षा से देश क आजाद नहीं किया जा सकता, वह कि काम की । परिणामस्वरूप उन्होंने पढ़ाई लिखाई छोड़ दी और व्यायाम द्वारा अप अन्य साथियों में बल एवं उत्साह पैदा करके उन्हें राष्ट्रीय कार्यों में प्रवृत्त करने क कोशिश करने लगे । उसी समय उन्होंने स्वदेशी-व्रत लिया । समर्थ रामदास औ छत्रपति शिवाजी के आदर्श से अनुप्राणि होकर एक बार उन्होंने देश को स्वतंत्र कर के लिए सशस्त्र सेना की योजना बनाक तैयारी भी शुरू कर डाली थी ।

नाथजी के मन में व्यायाम के प्र छुटपन से आकर्षण रहा । इस बारे में उ उपदेश मिला था –"तुम्हारा शरीर इतन कड़ा और मजबूत होना चाहिये कि पत्थ पर गिरने का मौका आ जाये, तो पत्थर क तुम्हारा डर लगे, तुम्हें उसका डर नहं

लगना चाहिये ।" और सचमुच नाथजी के शरीर का गठन प्रौढ़ावस्था तक कुछ ऐसा ही रहा । उनके एक निकट परिचित का कहना था कि नाथजी को कोई आंखें लाल करके डरा नहीं सकता था ।

भला ऐसे बलिष्ठ व तेजस्वी व्यक्ति का मन उस काल्पनिक दुनिया में कब तक रमता ? वे हिमालय का एकांत छोड़कर कोटि-कोटि जनता की भांति सरल-समान जीवन जीने के लिए समाज में आ मिले । अब तक उन्होंने समझ लिया था कि परिश्रमी जीवन मानव-धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है । अतः बीच के समय (१९०८ से १९१८ तक) जो परिश्रमी जीवन छोड़ दिया था, उसे फिर से शुरू कर दिया । स्वावलंबी व प्रामाणिक जीवन-यापन करते हुए लोक-सेवा का व्रत पूरा हो सके, इस दृष्टि से उन्होंने बढ़ईगीरी, सिलाई, बुनाई आदि कई काम सीखे व किये । गांधीजी से उनका अंत तक निकट संपर्क बना रहा । आध्यात्मिक चिंतन और साधना भी चलती रही ।

वैसे पश्चिम भारत में नाथजी के व्यक्तित्व एवं विचारों से प्रभावित होनेवाला काफी बड़ा समाज हैं; लेकिन उन्होंने कोई संस्था, पंथ या संप्रदाय चलाकर चेले मूंडने का काम कभी नहीं किया, न कभी उसके बारे में सोचा ही, किसी का मार्गदर्शक या गुरु बनने की भूख भी उनमें कभी नहीं जागी । प्रसिद्धि से कोसों दूर रहते हुए वे एक सामान्य नागरिक का जीवन जीते हैं । हां, कोई व्यक्ति उनसे कोई समाधान या सुझाव पाना चाहता है, या किसी परिचित व्यक्ति को उसके कल्याण की दृष्टि से सचेत करना आवश्यक हो जाता है, तो उसे मित्रभाव से सलाह जरूर दे देते हैं ।

एक बार प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक स्व० किशोरलाल मशरूवाला के मन में भी वैराग्य उत्पन्न हो गया था । उन्होंने परिवार, सगे-संबंधी व समाज आदि के संबंध को मिथ्या, स्वार्थपूर्ण तथा नाशवान समझ, उन्हें छोड़-छाड़कर भाग जाने तक की तैयारी कर डाली थी । तब गांधीजी के कहने पर नाथजी ने श्री मशरूवाला को समझाया-बुझाया था । उस प्रसंग की चर्चा करते हुए किशोरलालभाई ने एक जगह लिखा है–"नाथजी के साथ अपने प्रारंभिक परिचय में मुझे काफी घबराहट महसूस हुई ।...... ज्ञान, भक्ति, वैराग्य वगैरह के मेरे संस्कार पुराने सांप्रदायिक ढंग के ही थे । ......लेकिन उनके सत्संग से मैं अनेक प्रकार के भ्रमों और कल्पनाओं के जाल में फंसने या काल्पनिक भयों से डरकर उनसे छूटने के लिए बेकार की कोशिश करने के झंझट और जंजाल से छूट गया । जो चीज जैसी हो, उसे वैसी ही देखने की हिम्मत मुझमें आयी ।"

नाथजी अपने मित्रों एवं श्रेयार्थियों को अक्सर यही आह्वान करते हैं कि "आवश्यकता प्रवृत्तियों को छोड़ने की नहीं, बल्कि उन्हें शुद्ध करने की है । गृहस्थाश्रम का त्याग करने की आवश्यकता नहीं; अपितु उसे अधिक पवित्र बनाकर सफल करने

की है ।......जो संसार में रहते हुए भी अपने सगे-संबंधियों को सुखी बनाने का प्रयास नहीं करता, उनके दु:ख दूर करने की चिंता नहीं करता, वह गृहस्थ-जीवन छोड़कर राष्ट्रकार्य में लगा हो तो भी क्या; ईश्वर भक्त बन गया हो, तो भी क्या; और संन्यासी बन गया हो, तो भी क्या ? इससे उसकी मानवता नहीं बढ़ती । स्थान या वेश बदल लेने मात्र से आंतरिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता ।"

वे यद्यपि बालब्रह्मचारी हैं; तथापि उन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारी का बराबर ध्यान रखा है । उनकी विधवा भानजी चंद्रा बहन आज तक उनके पास रहती हैं और नाथजी ने कई महत्वपूर्ण और सार्वजनिक बातों की तुलना में इस उत्तरदायित्व को ज्यादा महत्व दिया है । उनकी वृत्ति में कारुण्य है । वे किसी परिचित के यहां हर्ष-अल्लास या आमोद-प्रमोद के अवसर पर भले ही न पहुंच सकें; किंतु किसी भी हारी-बीमारी में वे कभी नहीं चूकते । एक मित्र ने एक बार यहां तक कह दिया था कि यदि नाथजी सेवा-सुश्रूषा के लिए मिलें, तो फिर से बीमार पड़ने की इच्छा हो सकती हैं ।

नाथजी के स्वभाव में करुणा, जितनी ही सात्विक उग्रता एवं कठोरता भी है । उन्होंने एकदम खरे-खरे शब्दों में कहा है– "हम धार्मिक कर्मकांड के नाम **पर** बाहरी आडंबर, दंभ और धूर्तता का पोषण करते हैं ।......सदाचरण की अपेक्षा किसी शक्ति या चमत्कार पर हमारी श्रद्धा अधिक है । यही अंधश्रद्धा इन सब अनर्थों का बनती हैं । ऐसे चमत्कार, शक्ति या सामर्थ्य पर मेरा कतई विश्वास नहीं ......मनुष्य को पूर्णता तक ले जाने सामर्थ्य सिर्फ कर्मयोग में है । अतः छोटे-बड़े सभी कार्य सावधानी-पूर्वक निर्दोष भाव से संपन्न होने चाहिये । हमारे जीवन की सार्थकता है ।" विचार उनके 'व्यवहार-शुद्धि आंदो की पृष्ठभूमि में हैं ।

चूंकि मनुष्य का मन सुख या आनंद सर्वथा नहीं छोड़ सकता, इसलिए ना का कहना है कि हमें वैराग्य की झूठी में पड़कर सुखमात्र को त्याज्य नहीं मा चाहिये, हमारे संयम में भोग की इच्छा होनी चाहिये । वे कोरे अपरिग्रह की और उचित परिग्रह की बात पर जोर देते हैं । कोई व्यक्ति प्रामाणि एवं परिश्रम से कमाकर अपना व परिवार का स्वाभिमान व सादगी के निर्वाह हो सकने लायक परिग्रह रखे उसमें कोई दोष नहीं ।

इस तरह नाथजी धर्म, शील, सदा आदि का आग्रह रखते हुए भी किसी तक प्रचलित मान्यताओं एवं परंप के घोर विरोधी हैं । उनके विचारों की तेजस्विता, क्रांतिशीलता और व्याव कता ने आज ८१ वर्ष की उम्र में भी बौद्धिक वर्ग एवं नयी पीढ़ी का प्रेरणा बनाया हुआ है ।

वह कभी न मरती

करतारसिंह दुग्गल

चौबारे की सीढ़ियां चढ़ते हुए मेरे कदम डगमगा रहे थे। शायद इसलिए कि मैं पहले इस तरह किसी कोठेवाली के यहां नहीं आया था। शायद इसलिए कि सीढ़ियों पर कदम रखने से पहले मेरे पठान दोस्त ने कहा था, इन सीढ़ियों में हर चौथे दिन गोली चल जाती है और शराब में मदमस्त कबाइलियों की लाशें गेंद की तरह लुढ़कती, नीचे नाली में जा गिरती हैं।

किंतु आज की रात इस कोठे की ओर कोई देख नहीं सकेगा, मुझे विश्वास था। नीचे संतरी तैनात था। और मेरे साथ मेरा एक दोस्त था, जो पुलिस का बहुत बड़ा अफसर था।

चौबारे में ईरानी गलीचे पर बैठे मेरा दिल कांप-कांप जा रहा था। गावतकिये के गिर्द मैंने अपने बाज़ू को लपेटा हुआ था।

और फिर सामने परदे के पीछे से वह आयी। ऊंची-लंबी, गोरी-चिट्टी, जैसे चांदनी की एक किरण फानूसों की चकाचौंध से अठखेलियां करती, खुशबू की एक लपट हमारे पास आ बैठी। एक नशे-नशे में मेरी आंखें मुंद गयीं। मेरे मित्र ने मेरे बारे में उसे बताया। मैं वैसे-का-वैसा नीचे देख रहा था – पसीना-पसीना। "हमारे इलाके में हुस्न की यह मलिका है।" मेरे दोस्त के बोल मेरे कानों में गूंज रहे थे।

"बंदगी सरकार!" कहते हुए वह आगे बढ़ी और उसने मेरे हाथ को अपने दोनों हाथों में ले लिया।

मेरा चेहरा लाल-सुर्ख हो गया।

"ओ हो! कित्ती शर्म आ रही है!" उसने मुस्कराते हुए कहा।

और फिर मेरे दोस्त, पुलिस अफसर ने उसे समझाया कि मेरा मनोरथ क्या था। मैं लोकसाहित्य में खोज कर रहा था और मुझे उस इलाके के लोकगीतों की तलाश करनी थी।

"गाना नहीं सुनियेगा?"

"मुजरा नहीं देखियेगा?"

"अच्छा, एक जाम ही सही।"

"नहीं! नहीं! नहीं।"

"पान तो पेश करूं?"

मैंने तो पान भी कभी नहीं खाया था।

और वह हंसने लगी। मेरे हाथ को अपने रेशमी हाथों में लिये हंसती गयी, हंसती ही गयी।

और फिर मैंने अपनी नोटबुक निकाली। एक के बाद एक, वह गीत बोलती जा रही थी, मेरा दोस्त उन गीतों के अर्थ समझाता जा रहा था और मैं गीत लिखता जा रहा था। एक घंटा, दो घंटे, तीन घंटे, आधी

रात बीत गयी । [illegible] सुबह मुर्गों ने बांग देना शुरू कर दिया, तो भी उसके गीतों का खजाना खत्म नहीं हुआ । लिखते-लिखते मेरे पोर दुखने लगे । थका-टूटा, नींद से बोझिल पलकें, मैंने उसकी ओर देखा और वह खिलखिलाकर हंस दी । "अच्छा बाकी कल सही ।" और हंसती-हंसती वह उठ खड़ी हुई ।

चलने से पहले मैंने एक नोट सामने पड़े हुए पानदान में रख दिया ।

" यह नहीं होगा ।" वह तड़पकर पानदान की ओर बढ़ी और वह नोट उसने मेरी मुट्ठी में ला कर थमाया ।

"और सुनिये, आप ठहरे कहां हैं ?" उसने मुझसे पूछा और मेरे होटल के कमरे का नंबर लेकर कहने लगी—"कल शाम मैं वहां आऊंगी । रोज-रोज आपका इस कमबख्त बाजार में आना शायद ठीक नहीं ।"

अगली शाम वह होटल में आयी । उसके अगली शाम । उसके अगली शाम । जैसे गीतों का एक सागर उसकी छाती में बंद पड़ा हो । हर रोज वह आती, शाम की चाय और रात का खाना मेरे साथ खाती । घर लौटने से पहले हम टहलने के लिए निकल जाते और फिर रात बीते, मैं उसे उसके अड्डे पर छोड़ आता । हर रात मोटर से निकलकर, वह मुझे झुककर आदाब करती और जैसे अटूट मोहब्बत उसकी आंखों में झलक आये, ऐसे वह पलकों को मूंद लेती और भावमग्न हो जाती ।

प्रेममुग्धा
डिलाक्रो का एक चित्र

पहले दिन उसने जिद की; किन्तु उसके बाद जब भी मैं उसे कोई सौगात पेश करता, वह एक नजर मेरी ओर देखकर, कबूल कर लेती । मेरे हाथ से कुछ लेना शायद उसे उस चीज से भी ज्यादा प्यारा लगता था, जो मैं उसे पेश कर रहा होता ।

हम काम कर रहे होते, मुझे महसूस होता, जैसे होटल के नौकरों को हमारे कमरे में आना अच्छा-अच्छा लगता हो । चाय कोई लाता, बर्तन उठाने कोई दूसरा आता । रात के खाने का आर्डर कोई लेकर आता । यह कहने के लिए कोई और आता कि खाना तैयार है । डाइनिंग हाल में उचक-उचककर, लोगों की उत्सुक नजरें हमारी मेज की ओर पड़तीं ।

दूध से सफेद कपड़ों में, हल्का-हल्का मेक-अप, वह ऐसे लगती जैसे किसी को सात परदों से निकालकर कोई लाया है ।

बीमार-बीमार नजरें, एक अकथनीय आकर्षण था उसकी आंखों में । और फिर मैं लाहौर लौट आया ।

जितने दिन मैं पेशावर रहा, प्रायः हमारी शाम एक साथ गुजरती रही । या गीत लिख रहे, या बाहर लान में गप्पें हांक रहे, या मालरोड पर घूम रहे, अथवा अंग्रेजी दुकानों से कुछ-न-कुछ खरीद रहे होते । कंपनी बाग में बैठे, मैं उसे फूलों के बारे में, बेलों के बारे में, घास की किस्मों के बारे में बताता रहता । कितनी-कितनी देर मैं बोलता रहता, लेकिन वह सुनते न थकती ।

मुझे लाहौर आये हुए बहुत दिन नहीं हुए थे कि एक सुबह स्टेशन से उसका टेलिफोन आया—"मैं दिल्ली जा रही थी, सोचा आपसे भी मुलाकात हो जायेगी ।" मैं झट स्टेशन पर जाकर उसे ले आया । एक दिन की जगह वह तीन दिन मेरे यहां रही । लाहौर का चिड़ियाघर, अजायबघर, शालीमार और कितना कुछ और मैंने उसे दिखाया । लारैंस बाग में घूमना उसे बहुत अच्छा लगता था । आधी-आधी रात तक हम दोनों बेंच पर बैठे, घास पर लेटे गप्पें हांकते रहते ।

दस दिन बाद उसे फिर दिल्ली आना था । वह फिर लाहौर ठहरी । जब आती ढेरों चीजें मेरे लिए लाती । लौटते समय, मैं कितना कुछ उसके साथ कर देता ।

कोई दो सप्ताह बीते थे कि वह फिर दिल्ली आते हुए लाहौर मेरे पास रुकी । इस बार मैंने महसूस किया, जैसे वह थकी-थकी-सी हो । हर समय गुम-सुम । हर समय खोयी-खोयी । कितनी-कितनी रात तक उसके कमरे में बत्ती जलती रहती । सुबह मेरे जागने से पहले उठकर बाहर लान में घूम रही होती । बहुत कम खाती, बहुत कम बोलती । बैठी-बैठी आपसे-आप किसी गीत के बोल गुनगुनाने लगती । और फिर उसके आंसू छलक आते । बेकार उन्हें मुझसे छिपाने की कोशिश करती ।

जिस शाम उसे रवाना होना था, उसका अंग-अंग जैसे जकड़ा हुआ हो । उलझी-उलझी, दुखी-दुखी, रुआंसी-रुआंसी ।

मैंने कहा—"आपकी गाड़ी का वक्त हो गया है ।"

"अच्छा !" जैसे कुएं में से निकली कोई आवाज हो ।

और फिर हौले-हौले कदम वह चल दी । कमरे की चिक के पास पहुंचकर वह सहसा रुक गयी । उसके पीछे-पीछे मैं आ रहा था। अचानक मुंह उठाकर उसने मेरी ओर देखा, असीम भूख उसकी पलकों में छुपी हुई थी । उसके होंठ जैसे अनादि काल से प्यासे हों । और फिर पता नहीं क्या हुआ ? एक पल-के-पल में मेरा माथा उसके माथे पर था, मेरी पलकें उसकी पलकों पर थीं, और मेरे होंठ उसके होंठों से जुड़ गये । आंख झपकते में जैसे वह खिल-सी गयी ।

बाहर मोटर में बैठे, स्टेशन की ओर

जाते हुए, वह हंसे जा रही थी, बातें किये जा रही थी, जैसे सारी दुनिया उसी की झोली में आन पड़ी हो। उसके गाल लाल-सुर्ख हो गये थे । उसके बाल उड़-उड़कर उसके मुंह पर, माथे पर पड़ रहे थे ।

स्टेशन पर पहुंचे और सामने प्लैटफार्म पर वह गाड़ी खड़ी थी, जिसे पेशावर जाना था । दिल्ली की गाड़ी दूसरे प्लैटफार्म पर थी, पुल के पार । कहने लगी–"कौन पुल पार करे, मैं पेशावर ही चली जाती हूं ।"

मैं उसके मुंह की ओर देखता रह गया ।

अभी मैं बोल भी नहीं पाया था कि उसने कुली को पेशावर की गाड़ी में सामान रखने के लिए कह दिया । फर्स्ट क्लास में कोई सीट खाली नहीं थी । वह एयर-कंडीशंड कोच में जा बैठी ।

मर्जी की मालिक । उससे बहस कौन करे ! मैं बाहर जाकर उसके लिए टिकिट खरीद लाया । कुली को विदा करते हुए उसने दस का एक नोट उसे दिया और फिर मुझसे बातें करने लगी । कुली भी हैरान था, मैं भी हैरान था ।

जितनी देर गाड़ी नहीं चली, वह मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में लिये बैठी रही । "आप उस दिन कैसे लाल-सुर्ख हो थे, जब पहली बार मैंने आपके हाथ को छु था !" बार-बार मुझे छेड़ती और हंस जाती, हंसती जाती ।

और फिर गाड़ी चल दी ।

चार दिन बीते थे कि मुझे पेशावर मेरे दोस्त की चिट्ठी मिली कि वह मर ग है । अचानक शाम को उसे दौरा पड़ा औ रात को वह खत्म हो गयी । डाक्टर अप पूरा जोर लगा बैठे । किसी की कोई तद बीर नहीं चली । बड़ी मोहलक बीमार थी । पिछले साल भी उसे ऐसा दौरा प था । तब तो बच गयी । कोई नहीं कह था कि बचेगी, तब तो बच गयी । दस दि बीमार रहकर भली-चंगी हो गयी । लेकि इस बार देखते-देखते चल दी ।

वह दिन और आज का दिन, जब मुझे उसका खयाल आता है, मेरा दि कहता है, वह कभी न मरती, यदि मैं उ रोज उसे प्यार न करता । वह तो शाय कई साल इंतजार कर सकती थी, एक औ किले को ढहाने के लिए । वह तो शाय एक उम्र और इंतजार कर सकती थी, ए और सल्तनत को फतह करने के लिए ।

स्पेन के गृहयुद्ध में फासिस्ट सेनाएं मैड्रिड को घेरे पड़ी थीं । एक दिन उन्होंने हवा जहाजों से शहर पर बढ़िया डबल रोटियां बरसायीं, जहां उन दिनों रोटी के लिए आदमि और कुत्तों में छीना-झपटी हुआ करती थी । लेकिन शहर के बच्चों ने सारी डबल रोटि पुलिस थानों में पहुंचा दीं । अगले दिन रोटियों को कागजों में लपेटकर फासिस्टों की खंद में फेंक दिया गया । उन पर लिखा था–"मैड्रिड को फासिस्ट रोटियों से नहीं जीता सकता, उसे जीतने के लिए तुम्हें लड़ना होगा ।"

साधना पथ

महामना पं० मदनमोहन मालवीय उन दिनों जीवित थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने एक मल्लाह की नौका को क्षति पहुंचा दी। अब तो वह मल्लाह आग-बबूला हो उठा और मालवीयजी व छात्रों को गालियां देता हुआ महामना के निवास की ओर चल पड़ा।

मल्लाह की यह बकवास जो सुने, वही क्षुब्ध हो उठे; लेकिन मालवीयजी के कठोर अनुशासन के कारण कुछ बोल न सके। संयोगवश उस समय मालवीयजी के यहां कोई महत्वपूर्ण बैठक चल रही थी। ऐसे में मल्लाह का वहां पहुंचना लोगों को और भी अखर रहा था। किंतु करुणा-मूर्ति मालवीयजी उसे देखकर जरा भी विक्षुब्ध नहीं हुए। इतना ही नहीं, उन्होंने अश्रुपूरित नेत्रों से मल्लाह की ओर देखा और वे उसके चरण-स्पर्श करते हुए बोले—"भाई, लगता है, मुझसे तुम्हारा कोई महान अपराध हुआ है। मुझे क्षमा करो और कृपा करके बताओ कि मैं किस अपराध के लिए दोषी हूं?"

मल्लाह को स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि मालवीयजी उससे इतनी विनम्रता का व्यवहार करेंगे। वह एकदम पानी-पानी हो गया। वह बड़ी मुश्किल से सारी घटना कह पाया और मालवीयजी के सौजन्य से प्रभावित होकर सबको आशीर्वाद देता हुआ विदा हुआ।

—प्रभाकर

युग का सर्वसमर्थ औजार

आज के युग की मुख्य मांग है समन्वय। मतभेदों के प्रति हम आदरभाव रखते हैं; लेकिन हम चाहते हैं कि भिन्न मतावलंबी लोग आपस में लड़ें नहीं। केवल चर्चा से झगड़ों का अंत नहीं आता। सत्य की प्रतीति चर्चा से नहीं, किंतु हृदय से होनी चाहिये। बुद्धि के द्वारा सत्य का एकांगी दर्शन हो सकता है। स्याद्वाद ने यही बात हमें सिखायी है। हृदय के द्वारा और जीवन के द्वारा सत्य का अनुभव करते हुए मतभेद का स्वरूप और मतभेदों का कारण धीरे-धीरे समझ में आने लगता है और भेद के अंश गौण बनते हैं।

किंतु समन्वय का प्रयत्न कौन करे? मैं मानता हूं कि जो लोग स्याद्वाद का रहस्य समझते हैं, उन्हीं का प्रथम कर्तव्य है कि वे दार्शनिक चर्चाएं छोड़कर हरएक वाद की भूमिका समझ लें और जीवन में संघर्ष रूपी हिंसा टालकर, सहयोग रूपी अहिंसा का रास्ता खुला कर दें।

मैं समझता हूं कि बौद्ध जीवन-साधना, जैन जीवन-साधना और वेदांत की जीवन-

साधना तीनों का उत्तम समन्वय हो सकता है; और ऐसा समन्वय ही भक्ति के वायुमंडल में दुनिया का उद्धार कर सकता हैं । स्याद्वाद अथवा समन्वय ही अहिंसा का सर्वकल्याणकारी साधन अथवा औजार है।

समन्वय के इस सर्वसमर्थ औजार या साधन की मदद से सारे विश्व को हम एक परिवार बना सकते हैं । यत्र भवति विश्वम् एकनीडम् । **–काका कालेलकर**

वसिष्ठ की क्षमा

एक बार वसिष्ठ को देखकर विश्वामित्र के मन में मत्सर पैदा हुआ । वे तपस्वी तो बहुत बड़े थे, बड़ी भारी तपस्या करते थे; लेकिन उन्होंने ईर्ष्यावश वसिष्ठ के पुत्र को मार डाला । इतने पर भी वसिष्ठ को उन पर क्रोध नहीं आया । अब विश्वामित्र ने देखा कि वसिष्ठ तो बिलकुल अविचलित रह गया है, एकदम बेशर्म है; क्यों न भी मार दिया जाये । रात का समय था चांदनी छिटकी हुई थी । वसिष्ठ और अ धती का वार्तालाप चल रहा था । बीच वहां चुपचाप विश्वामित्र पहुंचे उन दोनों की बातें सुनने लगे । अरुंधती वसिष्ठ से कहा–"देखिये, चांदनी कि सुंदर है !" वसिष्ठ बोले–" हां, बहुत है, विश्वामित्र की तपस्या के समान हर हैं ।" यह वाक्य जब विश्वामित्र ने तो पिघल गये । उनसे रहा नहीं गया एकदम सामने आये और वसिष्ठ के च पर झुक गये । वसिष्ठ ने उन्हें ऊपर उ हुए कहा– "ब्रह्मर्षे, उतिष्ठ !" तब वसिष्ठ ने विश्वामित्र को 'ब्रह्मर्षि' कहा था; लेकिन जब विश्वामित्र ने वि होकर प्रणाम किया, तो यह संबोधन उ मुख से अनायास निकल आया । –विनो

*

मृत्यु का स्वागत

मौत जो सुहिणो मलाइकु आहि रहिमत जे समानि,
बदि नुमाईअ ऐं कुराड़प ते कशे करिड़ी कमान,
कुहन सालीअ, जईफु हालीअ खे भुलाए बेगुमानु
पुष्प पेशानीअ ते आणे नव निजाकत जो निशानु
उमिरि जे चहिरे तां 'बेवसि' घंज थो मेटे छदे,
नेकु बदि अइमाल खे वेसरि सां थो रेटें छदे ।

–बड़ा प्रसादपूर्ण है यह मृत्युरूपी सुंदर देवदूत, जो कुरूपता और बुढ़ापे पर क धनुष ताने हुए है, जो वर्ष-भार से झुकी हुई प्राचीनता और दुर्बलता को निश्चय ही देता है, जो आयु के चेहरे से पोलापन मिटाकर रूप-पुष्प पर लावण्य के चिह्न प्रकट क है तथा साथ-साथ विस्मृति द्वारा सदसद् कर्मों को मिटा देता है । **–किशिनचंद 'बे**

[सिंधी से अनुवादक : देवदत्त कुंदाराम शर्मा; सौजन्य : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, व

*

विज्ञान के झरोखे

गंजेपन का इलाज अब सर्जरी द्वारा संभव हो गया है। न्यूयार्क के डाक्टर राल्फ बर्जर और नार्मन ओरेंट्रेच ने एक मरीज के सिर के गंजे भाग में छेद करके नये बाल उगाने का सफल प्रयोग किया है। ये छेद साढ़े तीन मिलिमीटर गोल और पांच मिलिमीटर गहरे किये गये थे और प्रत्येक में एक से दो दर्जन तक बाल गाड़े गये थे। कुछ सप्ताह में ही सिर के ये जख्म ठीक हो गये और दो-तीन महीने के बाद नये बाल आने शुरू हो गये।

ह्वेल मछली की पूंछ में नासूर के इलाज की संभावना छिपी हुई है। ब्राजील में वैज्ञानिकों ने ह्वेल की पूंछ के केंद्रीय भाग में एक ऐसे पदार्थ का पता लगाया है, जो नासूर के कीटाणुओं को मार सकता है। उस पदार्थ को गरम करके उसकी भाप में सांस लेने से नासूर की सूजन उतर जाती है।

जापान के टोकियो शहर के पास खुदाई करनेवालों को एक अंडा मिला है, जो दो करोड़ साल पुराना बताया गया है। वह ३३ फुट की गहराई में पड़ा पाया गया है। उसके दो करोड़ साल पुराना होने का अनुमान उसकी ऊपरी परत से लगाया गया है, जिसमें वह घिरा हुआ था।

बिजली शायद हमें कीचड़ से छुटकारा दिला सकेगी। कार्नेल यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक इस तथ्य के आधार पर प्रयोग कर रहे हैं कि गीली मिट्टी में अगर बिजली की लहर दौड़ायी जाये, तो उसमें मौजूद पानी एक स्थान पर इकट्ठा हो जाता है, जिसे पंपों से बाहर निकाला जा सकता है। अगर यह प्रयोग बड़े पैमाने पर सफल सिद्ध हुआ, तो कीचड़ और दलदल से भरे हुए इलाकों को सूखा बनाया जा सकेगा।

टोकियो के निचले भाग में बिजली का एक यंत्र लगाया गया है, जो चारों ओर के शोर के स्तर को नापता है। वहां के अधिकारियों का कहना है कि अगर लोग अपने

पैदा किये हुए शोर को सुन सकें, तो शायद वे अधिक चुप रहना सीख सकेंगे और शा की कद्र करने लगेंगे ।

दक्षिणी गोलार्द्ध में, यूरोप के पांच देशों ने मिलकर, संसार की सबसे बड़ी दूर का निर्माण करने की योजना बनायी हैं । इसके लेंस का व्यास १४० इंच होगा । इस चार करोड़ रुपये खर्च होंगे और यह सन १९७० में बनकर तैयार होगी । यह दक्षि अफ्रीका या चिली में स्थापित की जायेगी । जो देश इस योजना में भाग ले रहे हैं, उ नाम हैं : नीदरलैंड, बेल्जियम, पश्चिम जर्मनी, फ्रांस और स्वीडन ।

हैरानी की बात हैं कि कोरिया की गोताखोर स्त्रियां कई मिनिट तक ५० ि तक के ठंडे पानी के नीचे रह सकती हैं । कोरिया और अमरीका के वैज्ञानिक इस सं में खोज कर रहे हैं, ताकि इस रहस्य का पता लग सके । उनके अनुसंधान ने अभी त यह पता लगाया हैं कि उन स्त्रियों के इतनी देर तक ठंडे पानी के नीचे रह सकने का का है, उनकी बहुत ज्यादा मसामोंवाली खुरदरी चमड़ी और उसके नीचे चर्बी की एक मो तह । इससे उनके शरीर एक औसत आदमी के शरीर की अपेक्षा ज्यादा गरमी पै करते हैं और वह भी ज्यादा देर तक ।

आंख में सूजन हो जाये, तो उस पर सोने की अंगूठी रगड़ने से वह दूर हो जाती आज भी गांवों में यह इलाज बहुत प्रचलित है । इसकी सचाई को परखने के लिए मे क्लिनिक के डाक्टरों ने सोने की अंगूठी रगड़कर इस रोग के सैकड़ों मरीजों का इला करके देखा है और पाया है कि ९२ प्रतिशत रोगियों की सूजन हट गयी हैं । इसका वै निक कारण उन्होंने यह बताया है कि आंसुओं में क्लोरीन होती है, जिसमें सोने का अंश (जिसे सिर्फ खुर्दबीन ही देख सकती हैं) घुल जाता है। इस प्रकार गोल्ड क्लो इड नामक रासायनिक पदार्थ बन जाता है । यह पदार्थ आंख के रोगों के लिए ब गुणकारी पाया गया है । इससे आजकल आंख के रोगों के लिए कई दवाइयां भी बन जा रही हैं ।

जापान की एक कंपनी ने 'मां के दिल की धड़कन' नाम का एक यंत्र बनाया जो बच्चों को लोरी देकर सुला देता है । यह यंत्र बच्चे के पालने में रख दिया जा है और जब वह आवाज करता हुआ धड़कता है, तो कुछ ही देर में बच्चा नींद की में सो जाता है ।

संकलन : सुख

★

शेरों का देश: केन्या

प्रस्तुतकर्ता :
रामनारायण

गत १३ दिसंबर के सूर्योदय के साथ अफ्रीका का एक और देश—केन्या स्वतंत्र हो गया। अफ्रीका के स्वतंत्र बने देशों में यह ३४-वां देश है।

केन्या हिन्द महासागर पर स्थित अफ्रीका का २,२४,९६० वर्गमील क्षेत्रफल का देश है। इसकी सीमाएं पूर्व में हिन्द महासागर; उत्तर में सोमाली लैंड, अबीसीनिया तथा सूडान; पश्चिम में युगांडा और दक्षिण में टांगानिका के प्रांतों से मिलती है। मोंबासा इसका मुख्य बंदरगाह है।

केन्या की कुल आबादी ५७ लाख के लगभग है। इनमें से ५५ लाख नीग्रो मूल अफ्रीका-निवासी हैं। शेष पांच प्रतिशत में सबसे अधिक—करीब ९० हजार— भारतीय और पाकिस्तानी हैं। ४२ हजार यूरोपियन हैं; और २५ हजार अरब हैं।

अंग्रेजों ने यह देश १८९५ ईस्वी में जंजीबार के सुल्तान से छीना था। ६८ वर्ष की गुलामी के बाद अब वह स्वतंत्र हो गया है।

इन ६८ वर्षों में अंग्रेज हाकिमों ने केन्या का खूब शोषण किया। उस शोषण का इतिहास देना इस लेख का उद्देश्य नहीं है। यहां हम केन्या के जंगली जीवन की, वहां के वन्य पशुओं, विशेषत: शेरों और हाथियों से भरी भूमि की एक यात्रा के कुछ पृष्ठ प्रस्तुत करेंगे। सन १९३५ में लेडी एवलीन ने केन्या की यात्रा की थी। यात्रा का विवरण डायरी की शक्ल में लिखा था। उसी डायरी के कुछ अंश यहां दिये जा रहे हैं :

काहिरा में तीन दिन बिताने के बाद हमने आस्वान के लिए गाड़ी ली। यहीं से हमें 'इंपीरियल एयरवेज' का एक विमान नूबिया, सूडान, युगांडा होकर ३,००० मील दूर केन्या ले जानेवाला था।

विमान ठीक ८ बजे सुबह उड़ा। थोड़ी ही देर में हम इतना ऊंचा उड़ रहे थे कि नील नदी जमीन पर एक नीले फीते की तरह बिछी दिखाई दे रही थी। विमान में

केवल ८-९ सवारियां थीं। उनमें एक [illegible] साल की वृद्धा भी थी, जिसने केप टाउन का वापसी टिकिट लिया था ।

एक रात सूडान के शहर खारतूम में बिताने के बाद दूसरे दिन सुबह हम सूडान के रेगिस्तान पर उड़ रहे थे । दोपहर को हमारा विमान १० हजार फुट की ऊंचाई पर उड़ता हुआ काफी निचली सतह पर उड़ने लगा, तो हमने देखा कि हाथियों का एक बड़ा यूथ जंगल में गुजर रहा है । उनमें कुछ छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जिन्हें उनकी मां-हथिनियां अपनी सूंड से आगे ढकेल रही थीं ।

अफ्रीकी हाथी भारत के हाथियों से भी बड़े होते हैं । उनके लंबे सफेद दांतों और ६ फुट लंबे, ४ फुट चौड़े कानों से उनका रूप बड़ा प्रभावशाली वन जाता है ।

अगले दो घंटे हम ऐसे जंगलों पर उड़ते रहे, जिनमें जिराफ, जेब्रा और हाथियों की बहुतायत थी । नीचे निगाह डालकर हम उनके झुंडों को दौड़ते-भागते देख सकते थे । वह रात हमने जूबा में गुजारी ।

अगले दिन सुबह हमारा विमान युगांडा पर उड़ता रहा । अब जगह-जगह जेब्रा और हाथियों के नहीं, बल्कि रीनों और गैंडों के दर्शन होने लगे । नील नदी की जो धारा दूसरे दिन ओझल हो गयी थी, वह फिर यहां प्रकट हो गयी । उसके किनारों पर हिप्पो और मगरमच्छों के झुंड दिखाई देने लगे । ऐसा प्रतीत होता था कि हिप्पो और मगरमच्छों में जरूर कोई संधि थी । के दोनों एक दूसरे पर हमला नहीं करते लेकिन अगर कोई रीनो मगरमच्छ के आ जाता था, तो वह किसी भी तरह बच नहीं जा सकता था ।

थोड़ी देर बाद हमारा विमान यु की राजधानी कंपाला में पेट्रोल लेने उतरा । यहां से उड़ते ही हमने वि विख्यात झील विक्टोरिया देखी । इ विशाल झील शायद दुनिया में दूसरी है । नील नदी का उद्गम भी इसी झील हुआ है ।

हमारा विमान शाम को नैरोबी हवाई अड्डे पर पहुंच गया । यहां से कार बैठकर मैं अपने भतीजे ह्यूबर्ट के साथ मुं क्लब में, जो नैरोबी के पास ही है, ग ह्यूबर्ट का काफी का बगीचा जरा दूर था इसलिए वह मुझे रात को वहां नहीं ले गया यह भी अच्छा ही हुआ; क्योंकि तभी किसुम के एक स्थानीय पत्र में आसपास शेरनी के घूमने की खबर पढ़ी थी । ह्यू ने आश्वासन दिया कि शेर यदि आदमखोर नहीं होता या घायल नहीं होता, तो आदमी पर हमला नहीं करता । उसने घटना भी सुनायी थी । उसके बगीचे में शेर रोज आता था और बकरी या ब उठा ले जाता था । एक दिन वह म कुली को लेकर शेर के शिकार को निकला बगीचे के साथ ही जंगल था । पगडंडी चलते-चलते एक स्थान पर उसे सरस हट सुनाई दी । उसका कुली कुछ कदम चल रहा था । आगे बढ़कर उसने देखा

वह पांच शेरों से घिरा खड़ा है । उस समय बंदूक चलाना बेकार था। पांचों को एक साथ तो वह मार ही नहीं सकता था । एक को मार भी देता, तो शेष चार उन दोनों पर हमला कर देते । कुली शेरों के स्वभाव से परिचित था । वह बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा । यदि वह भाग पड़ता, तो पांचों शेर उस पर टूट पड़ते । उसे मूर्तिवत् खड़े देखकर पांचों ने उसे अछूता छोड़ दिया ।

× × ×

नैरोबी में लंच लेने के बाद हमने कियाज्बे के लिए प्रस्थान किया । यहीं ह्यूबर्ट के काफी के बगीचे हैं । यह स्थान नैरोबी से ५० मील दूर है। रास्ते में बहुत-से अफ्रीकी दिखाई दिये । उनके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था । केवल अरंडी के तेल में लाल मिट्टी घोलकर उन्होंने सारी चमड़ी रंग ली थी । आदमियों ने सामने के दांतों को पैना करके आगे बढ़ाया हुआ था । औरत-आदमी—दोनों के सिर मुंड़े हुए थे । औरतों ने बालों को जड़ से उखाड़ा था । उनके सिर बिलियर्ड बाल की तरह चिकने दिखाई देते थे ।

× × ×

कुछ दूर जाकर हमें आर्था नदी मिली । नदी के किनारे हमने एक गैंडे और मगरमच्छ की भयंकर लड़ाई देखी । मगरमच्छ ने गैंडे की टांग पकड़ रखी थी । वजन में दोनों दो-दो टन से कम नहीं थे । लेकिन किनारे पर फिसलन थी, इसलिए गैंडे के पैर जम नहीं रहे थे । ढाई घंटे तक दोनों की लड़ाई होती रही और आखिर मगरमच्छ गैंडे को खींचकर पानी में ले गया ।

यहां मीलों तक खेती की जमीन फैली है । खेतों में काफी और शीशम के अतिरिक्त बाजरा और केला बोया जाता है । अफ्रीकी जमीन की पैदावार बढ़ाने के लिए खाद नहीं डालते । भूमि की उपज-शक्ति कम हो जाये, तो वे खेती के लिए नयी जमीन की तलाश कर लेते हैं । इनके रीति-रिवाज बड़े अजीब हैं । गाय-बकरी बेचकर वे औरतों को खरीदते हैं । मृत्यु के बाद वे अपने प्रियजनों को भी जंगली पशुओं के हवाले कर देते हैं । इनकी सहन-शक्ति आश्चर्यजनक है । ह्यूबर्ट ने बताया कि एक बार उसकी मालिन के लड़के की टांग मगरमच्छ ने पकड़ ली थी । उसकी जांघ का बहुत-सा हिस्सा मगरमच्छ ने खा लिया । लड़का जब बंगले पर लाया गया, तो उसके शरीर पर मांस के लोथड़े लटक रहे थे । मगर लड़के के मुख से एक आह भी नहीं निकली । ह्यूबर्ट की पत्नी तो उसे देखकर ही बेहोश हो गयी थी ।

× × ×

अफ्रीकियों के शहद इकट्ठा करने का ढंग भी विचित्र है । घने वृक्षों के खोकों में मक्खियां शहद का छत्ता बनाती हैं । जंगल इतने घने होते हैं कि छत्तेवाले वृक्षों का पता लगाना आसान नहीं होता । इसलिए अफ्रीकी लोग यह काम एक हनी-बर्ड (मधु-पक्षी) को पालकर उसकी सहायता से करते हैं । यह पक्षी केवल शहद खाकर

जीता है, इसलिए यह काम बड़ी सभ्यता से करता है। एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर उड़ता हुआ यह स्वयं शहद के छत्तेवाले वृक्ष की खोज कर लेता है और उसके चारों ओर चक्कर काटने लगता है। उसकी सूचना पाकर अफ्रीकी लोग छत्ते के नीचे पत्तों में आग लगाकर धुंआ छोड़ देते हैं।

मक्खियां धुंए के डर से उड़ जाती हैं। शहद का एक भाग मधुपक्षी को भी दे दिया जाता है। इस तरह यह काम वह हिस्सेदारी में करता है।

जंगली मधुमक्खियां बड़ी जहरीली होती हैं। पिछले विश्वयुद्ध में एक जर्मन अफसर ने इनका उपयोग बड़ी चतुराई से किया था। उसने इनका पालना सीख लिया था। जिस रास्ते से ब्रिटिश फौज का दस्ता जाना था, उस रास्ते के किनारे कई वृक्षों पर छत्ते लगा दिये गये। हर छत्ते के साथ तार जोड़कर बैटरी से बिजली छोड़ने का भी प्रबंध कर लिया गया। ब्रिटिश दस्ता जब उन वृक्षों के पास पहुंचा, तो जर्मन अफसर ने बिजली का करंट छोड़कर छत्तों पर बैठी मक्खियों को भड़का दिया। इन छत्तों से लाखों मक्खियां निकलकर फौजी दस्ते पर टूट पड़ीं। दस्ते के साथ जितने ब्रिटिश फौजी थे, सब वहीं मर गये। बाद में जर्मन अफसर ने घना धुंआ छोड़कर मक्खियों को दूर हटा दिया। सारा फौजी सामान जर्मनों के हाथ लग गया।

× × ×

ताना नदी पार करके हमारे सामने केन्या पर्वत के हिमाच्छादित भव्य शि प्रकट हुए। केन्या में केन्या पर्वत का महत्व है, जो मिस्र में नील नदी का इसकी तराई में घने जंगल हैं। सबसे शिखर की ऊंचाई १८ हजार फुट है। शिखर पर सबसे पहले १९०० में एक दल ने विजय पायी थी। प्रागैतिहा काल में यहां भयंकर ज्वालामुखी भी हुआ था।

× × ×

केन्या पर्वत की तराई के जंगलों में कने के बाद हम मेरु की ओर चले। ३० पूर्व यहां कोई मार्ग नहीं था। जंगली हा के चौड़े पैरों से रौंदी गयी झाड़ियां रास्ता बना देती थीं। अब यहां के घने से हटकर घास के मैदानों में रास्ता गया है। मोटर से तीन घंटे तक दौड़ते हमें यहां केवल जेब्रा के झुंड ही दि दिये। कुछ दूरी पर वहां छोटा-सा हो मिला, जिसके द्वार पर ही लिखा "यहां हम भूमध्य रेखा पर बैठे हैं।" होटल एक अवकाश-प्राप्त नाविक अ का था। यहां से कुछ दूरी पर हमसे जाती हुई एक मोटर पर जंगली भैं हमला किया था। मोटर पर बैठे लोग के नीचे गिर पड़े और भैंसा भी होकर गिर पड़ा। भैंसे पर बानेट का लता हुआ पानी पड़ा, तो वह घब जंगलों में भाग गया। मोटर पर बैठे कई मील पैदल चलकर जैसे-तैसे पा गांव में पहुंचे।

मेरु की जिन औरतों से हमारी भेंट हुई, उन्होंने बकरी की खाल ओढ़ी हुई थी और उनके गले में नीले पत्थरों की मालाएं पड़ी थीं । छाती को ढंकने के लिए पीतल की प्यालियां भी गले से लटक रही थीं । प्रायः सबकी पीठ पर बंधी गठरियों में बच्चे बैठे थे । उनकी बांहों पर पीतल के तारों के छल्ले इतने कसकर बंधे थे कि चमड़ी के अंदर घुसे हुए थे ।

यहां बकरी की खाल ओढ़ने के ही काम आती है । खाल को नरम बनाने के लिए औरतें उसे अपने जबड़ों में भींचकर दबाती रहती हैं । इस प्रक्रिया में उनके जबड़े इतने मजबूत हो जाते हैं कि यदि वे किसी से लड़ पड़ें, तो इन जबड़ों से नाक-कान कुतर लेती हैं । इसीलिए उनके पतियों को अपनी औरतों से बड़ा डर लगता है ।

× × ×

मेरु से हम बकाम्बा प्रदेश गये । यहां के जंगलों या मैदानों में कहीं गांव नहीं हैं । थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक-एक, दो-दो झोंपड़ियां बनी हुई हैं । कहीं-कहीं बहुत घनी झोंपड़ियां भी हैं । यहां एक आदमी कई विवाह करता है और हर विवाहिता स्त्री को एक अलग झोंपड़ी देनी पड़ती है । मुखिया जमींदार २०-३० विवाह भी करते हैं । इनके घर बहुत ही साफ-सुथरे होते हैं । लड़कियां अपनी इच्छा से शादी करती हैं । लेकिन मां-बाप यदि लड़की का दाम पहले ही ले चुके होते हैं, तो रिश्ता जोड़ते समय लड़की को हर्जाना देना पड़ता है ।

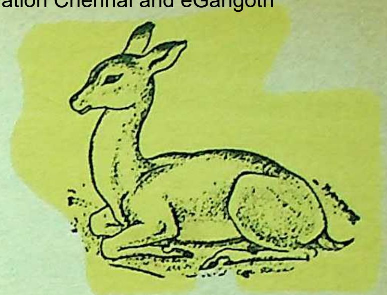

मसाइयों का प्रिय भोजन

एक अफ्रीकी औरत ने मुझे बताया कि अफ्रीकी औरत दिल से चाहती है कि उसका पति अधिक-से-अधिक शादियां करे। एक ही औरत से शादी करके संतुष्ट रहनेवाले सभ्य-सफेद आदमी को वह बड़ा अभागा मानती है ।

यहां अनैतिकता का मापदंड दूसरा ही है । वेश्या-वृत्ति का यहां कोई अस्तित्व नहीं। शहरों में जाकर कपड़ा पहननेवाली लड़कियों का चरित्र कुछ कमजोर जरूर हो जाता है; मगर सर्वथा नग्न रहनेवाली लड़कियां कभी विवाहित पुरुष के अतिरिक्त अन्य किसी से संबंध नहीं करतीं । कपड़ा पहनकर तन ढंकनेवाले पुरुष भी यहां अपने में कुछ कमजोरी महसूस करने लगते हैं और कपड़ा पहनने पर अपनी निर्बलता के प्रति लज्जा भी अनुभव करते हैं । कपड़ा पहनने के बाद अफ्रीकी बिलकुल लंगूर से दिखाई देते हैं । उनकी अपेक्षा नग्न स्त्री-पुरुष अधिक सुंदर मालूम होते हैं ।

× × ×

नैरोबी से ८ मील दूर पर ही एलन

टार्टन की ११ हजार एकड़ भूमि पर उसका अपना पशुवन है। इस में शेर, चीते, जेब्रा, जिराफ आदि सभी पशु सुरक्षित रहते हैं।

यहां मैंने केवल ३५ गज की दूरी से एक चीते और उसके बच्चों की फिल्म उतारी। एलन के पालतू पशु भी बड़े अजीब हैं। उसके पास एक १५ फुट लंबा अजगर है, जो ६ महीने बाद ही भोजन के लिए अपने कटघरे से बाहर आता है। एक बैबून भी उसका पालतू हैं। ७०० पौंड के वजन का एक गैंडे का बच्चा भी उसका पालतू जानवर है। वह डाइनिंग रूम में आकर खुद ही अपने हिस्से का दूध मांग लेता है। शेर के बच्चे भी उसके पास हैं, जो कभी-कभी आकर प्यार ले जाते हैं। शेर भी प्यार का भूखा होता है।

दो साल पहले मेरी बहन यहां से शेर के दो बच्चे इंग्लैंड ले गयी थी। एक रास्ते में ही मर गया। दूसरा सारे परिवार से हिल-मिल गया। मगर बाद में नारफोक के सब लोगों ने शेर के बच्चे को ब्रिस्टल के चिड़ियाघर में भेजने को मजबूर कर दिया। शेर के बच्चे ने वहां खुराक लेने से इन्कार कर दिया। भूख-हड़ताल की हालत में ही वह बीमार होकर मर गया। इस करुण मृत्यु से सारा परिवार वर्षों शोकाकुल रहा।

× × ×

कल रात नैरोबी से रेलगाड़ी में बैठकर मैं आज मोंबासा के बंदरगाह पर पहुंच गयी। इस रेलगाड़ी का भी बड़ा रोमांचकारी इतिहास है। यह एक ओर युगांडा से शुरू होकर केन्या के दूसरी मोंबासा तक फैली हुई है। इसके समय शेरों ने बड़ा उत्पात मचाया

त्सावो नाम के एक स्टेशन पर काम समय दो शेरों ने २८ भारतीय कुलियों इससे भी अधिक अफ्रीकी कुलियों के ले लिये थे। यहीं एक भारतीय कुली के साथ विचित्र घटना हुई। शेर के से बचने को वह एक टीन के ड्रम में गया। ड्रम के ऊपर छोटा-सा छेद शेर उसमें से अपना पंजा अंदर डालता मगर अंदर बैठा बालक हर बार सलाई से पंजे को जला देता था। शेर ड्रम को पंजे से ढकेलकर बहुत दूर गया; मगर बालक को घायल न कर सुबह हुई तो ड्रम में बालक सुरक्षित मगर डर के मारे पागल हो गया था।

इसी रेलवे पर एक पुल बनने के उसके उद्घाटन के अवसर पर घटना हुई। ठीक उद्घाटन के समय पर कई शेरों ने कब्जा कर लिया।

× × ×

केन्या में मसाई जाति के लोग और शिकारी होते हैं। पालतू पशु ही संपत्ति होते हैं। इनके पास लाखों वे इन्हें बेचते नहीं। उनका कहना है धन लेकर क्या करेंगे। धन का कोई योग उन्हें मालूम नहीं। खाने को वे किये पशु का मांस खाते हैं और पालतू भैंस का दूध पीते हैं। कभी-कभी वे भैंस की गरदन पर छोटा-सा घाव

उसका खून भी निकाल लेते हैं और उसे दूध में मिलाकर पी जाते हैं। जितने खून की आवश्यकता हो, उतना निकालकर वे पशु का घाव बंद कर देते हैं। पालतू पशु को मारकर खाने को वे पाप समझते हैं। भोजन के लिए वे वन्य-पशु को ही मारते हैं। इनके शिष्टाचार के नियम भी विचित्र हैं। मैत्री-पूर्ण हाथ मिलाने से पहले वे हथेली को थूक से गीला करने में शिष्टता मानते हैं।

केन्या में मसाई के अतिरिक्त किकुयू, क्वांगी, कविरांडो आदि जातियों के मूल निवासी भी हैं। कविरांडो जाति के लोग दूसरों की अपेक्षा बहुत अधिक नम्र और शिष्ट होते हैं।

सबसे पहले १८८८ में इंपीरियल ब्रिटिश ईस्ट आफ्रिकन कंपनी ने केन्या में ब्रिटिश प्रभुत्व कायम किया था। बाद में इस कंपनी को आर्थिक हानि भी हुई। ७ वर्ष के संघर्ष के बाद १८९५ में ईस्ट अफ्रीका का नाम ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका पड़ गया। उन दिनों यहां अरब के व्यापारी गुलामों की भर्ती करके बड़े पैसे कमा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने यह प्रथा बंद करवायी।

ब्रिटिश सरकार ने और भी बहुत-से सुधार किये; मगर इस स्वाधीनता के युग में स्वाधीनता ही सबसे बड़ा वरदान है। १९५२ से वहां स्वाधीनता के लिए "माऊ-माऊ" आंदोलन प्रारंभ हुआ। जोमो केन्याटा उसके नेता थे।

आज उनके नेतृत्व में ही केन्या की स्वाधीन सरकार बनी है। केन्या स्वाधीन होकर भी कामनवेल्थ का भाग है।

★

तीस साल पहले विद्यार्थियों की एक टोली के साथ मैं आगरा गया था। हमने बर्फ खरीदने की सोची। सस्ती पड़ेगी, यह सोचकर हम एक बर्फ फैक्टरी के सामने रुके; मैं मैनेजर से मिलने भीतर गया। मैंने सोला हैट, खाकी कमीज, खाकी निकर, खाकी जुर्राबें और काले बूट पहन रखे थे। मुझे देखते ही नौकरों व चौकीदार ने बीड़ी फेंक दी, खड़े होकर बड़े अदब से सलामी दी। क्लर्कों ने सिगरेटें मेजों के नीचे छिपाकर कार्यमग्न होने का दिखावा किया। सुपरिंटेंडेंट स्वयं मुझे मैनेजर के पास ले गया। मैनेजर ने खड़े होकर बड़े अदब से पूछा—"सर, क्या खिदमत करूं?" मैंने बताया कि मैं एक कालेज का लेक्चरर हूं, बर्फ खरीदने आया हूं। मैनेजर ने राहत की सांस ली। उसने मेरी पोशाक से समझ लिया था कि मैं फैक्टरी इन्स्पेक्टर हूं।... इसी वेश में मैं एक बार मोटर में दिल्ली से जयपुर जा रहा था। अलवर के पास एक गांव में कार रोककर पानी लेने कुंए पर गया। औरतें मुझे देखकर तेजी से पानी भरने लगीं। किसी ने मुझे नहीं पूछा। मैं हैरान था। अंत में घड़े लेकर चलते-चलते उनमें से एक बोली—"अब डाल दे।" मैंने चकित होकर पूछा—"क्या?" बोली—"डाल दे लाल दवा!" अब मेरी समझ में आया। मेरे वेश से उन्होंने मुझे स्वास्थ्य-विभाग का कर्मचारी समझ लिया था।

—एम० एम० बेग

★

पांच मुक्तक

हम तो दफनाये गये वास्तविकताओं में
फिर भी जैसे जीने के लिए मचलते हैं,
अचरज क्या, यदि अपनी समाधियों पर अब भी
ये नये-नये सपनों के दीपक जलते हैं ।

हर दर्द वजन है, कोई सांस न हल्की हो,
हर टीस एक बस्ती है, दिल वीरान न हो,
हर चोट कलेजे की मुंह पर रौनक लाती
आहों के मालिक आहों से हैरान न हो ।

हर सांस उम्र है और हर कदम मंजिल है,
ये उम्रें और मंजिलें साथ लिये जाओ,
हर पल की अपनी दुनिया, अपनी रंगत है,
जीवन भी क्या है, बस, महसूस किये जाओ ।

साथी छूटेंगे ही, सपने टूटेंगे ही
अरे अभागे, सोच रहा है क्या मन मारे !
अवनी ही है नहीं लदी अंबर से भाई,
अंबर की छाती पर भी हैं लदे सितारे ।

जब कोई नहीं कहीं भी अपना होता है
तब सारी धरती अपनी, अंबर अपना है,
हर डगर बुलाती है, हर नगर सुहाता है,
पल भर सुस्ता लो जहां, वहीं घर अपना है ।

—श्रीहरि

नवाबों के बावरचीखाने

मेवाराम गुप्त

नवाबी शान-शौकत के नजारे उनकी ऐशगाहों, मजलिसों या दरबारों की रौनक तो थे ही, बावरचीखानों में उनके और ही ठाट थे। आइये, आप भी जरा उन जलवों का जाइजा लीजिये।

अवध के नवाबों और अमीरों के महलसराओं और मयखानों के बयान आपने बहुत सुने हैं। लेकिन अगर आपने उनके बावरचीखानों की झांकी नहीं देखी, तो आपको उनकी रसज्ञता का अंदाज नहीं हो सकता।

नवाबी जमाने में बावरचीखानों को बड़ी अहमियत हासिल थी। इनमें बड़े होशियार बावरची बहुत ऊंची तनख्वाहों पर रखे जाते थे। खाना पकाने के लिए अलग लोग होते थे, परोसने के लिए अलग और पकाने-परोसने की निगरानी करने के लिए अलग। इस तरह एक ही भोजनालय में पचास-पचास तक नौकर होते थे। और एक-एक नवाब के महल में ऐसे बावरचीखानों की संख्या पांच-छः तक होती थी।

भोजन तैयार करना तो कठिन कार्य होता ही था, उसका परोसना और भोजन की चौकियों पर सजाना भी कुछ कम कठिन काम नहीं था। खूबसूरत खाना खूबसूरत हाथों से ही परोसा जाना चाहिये था। भोजन तैयार करने में तो स्पर्धा होती ही थी, भोजनालयों की सजावट में भी होड़ लगी रहती थी। इस बारे में अमीर हरदम एक-दूसरे को नीचा दिखाने की ताक में रहते और उनमें खूब नोक-झोंक भी चलती।

सचमुच बड़े कलाकार होते थे उनके बावरची। एक बार मिर्जा खुर्रमबख्त के सुपुत्र मिर्जा आसमांकदर लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिदअली शाह के मेहमान हुए। उस रोज दस्तरख्वान पर एक बड़ा ही सुंदर तथा आकर्षक व्यंजन परोसा गया। शाहजादा आसमांकदर ने मुरब्बा समझकर उसका एक कौर मुंह में रखा, तो पता चला कि वह तो कोरमा है। इस पर वाजिदअली शाह मुस्करा दिये।

आसमांकदर बड़े झेंपे। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने नवाब साहब को दावत दी। नवाब जानते थे कि अवश्य ही उनसे बदला लिया जायेगा। बड़े होशियार बनकर गये,

फिर भी धोखा खा ही गये । शाहजादे के होशियार बावरची शेख हुसैन अली ने खाने की तमाम चीजें–पुलाव, जर्दा, बिरियानी, कोरमा, कबाब, तरकारी, चटनियां और यहां तक कि अचार, रोटियां, पराठे और शीरमालें भी शक्कर से तैयार की थीं। हद यह हो गयी कि दस्तरख्वान पर जितने बरतन थे, वे भी शक्कर के बने हुए थे । पानी का लोटा तक शक्कर का था । वाजिदअली शाह जिस चीज को भी उठाते, धोखा खा जाते ।

आइये, अब अवध के नवाब शुजाउद्दौला के दस्तरख्वान का जायका लिया जाये । नवाब साहब के महलों में उस वक्त छः बावरचीखाने बहुत मशहूर थे । नवाब साहब के निजी महल का 'बहू बेगम का बावरचीखाना' सबसे बड़ा था। इस भोजनालय का खर्च उन दिनों भी दो हजार रुपये दैनिक था, यानी साठ हजार रुपये महीना और सात लाख बीस हजार रुपया सालाना।

बहू बेगम के भोजनालय में तैयार होनेवाले खाने के अलावा, दूसरे पांच भोजनालयों के अच्छे तथा स्वादिष्ट भोजन भी बड़ी-बड़ी परातों में चुनकर नवाब साहब के दस्तरख्वान के लिए आया करते थे । इन पांच पाकशालाओं को 'छोटे बावरचीखाने' के नाम से पुकारा जाता । इनके मुख्य प्रबंधक तथा सहायक प्रबंधक अलग-अलग होते थे । ऐसे ही एक बावरचीखाने के प्रबंधक मिर्जा अहसन अली थे । इस बावरचीखाने का खर्च तीन सौ रुपये दैनिक, यानी एक लाख आठ हजार रुपये वार्षिक था। दूसरा बावरचीखाना शुजाउद्दौला की का था, जो 'नवाब बेगम' के नाम से प्र थीं । तीसरा मिर्जा अली खां का था, सालारजंग का । पांचवें और छठे शु उद्दौला की बहू बेगम के भाइयों के थे।

जिस दस्तरख्वान पर बैठकर न साहब अपनी प्यारी बेगम (बहू बेगम) साथ भोजन करते, उसे बहुत ही सफाई करीने से सजाया जाता । बहू बेगम प से ही दस्तरख्वान पर मौजूद होतीं। भ पदार्थों से भरे जो थाल आते, उन्हें दा बहू बेगम के सामने खोलती जातीं। बेगम अपनी और नवाब साहब की पसंद चीजें उठा लेतीं । भोजनालय का अध्यक्ष पकवान की जांच करता, उसे चखकर दे और उसके बाद ही उसे शाही दस्तरख पर भेजता । अगर किसी चीज के स में जरा भी अंतर होता, तो उसे नौक चाकरों के लिए रख लिया जाता, चाहे पर कितना ही खर्चा क्यों न हुआ हो। कीमत स्वाद की थी, पैसों की नहीं।

बावरचियों को बहुत ही छान-बीन तथा परीक्षा लेकर नियुक्त किया जात यह जरूरी नहीं था कि हर एक बावर हर चीज तैयार कर सकता हो । अ अलग चीजें पकाने के अलग-अलग वि षज्ञ होते । एक रसोइया चावल रांधने विशेषज्ञ होता, तो दूसरा सालन भूनने माहिर और तीसरा कांजी के बड़े ब में बेजोड़ होता था। हर विशेषज्ञ की इ

कद्र होती कि उसका दिल खुश हो जाता और उसकी हिम्मत बढ़ जाती ।

नवाब आसफउद्दौला के शासन-काल में दिल्ली से एक विशेषज्ञ आया, जो केवल उड़द की दाल पकाया करता था । उससे जब वेतन के बारे में पूछा गया, तो उसने ५०० रुपये महीने की मांग की । साथ ही उसने चंद शर्तें भी पेश कर दीं—"जब सरकार मेरे हाथ की पकी दाल खाना चाहें, तो एक दिन पहले मुझे सूचित कर दिया जाया करे । दूसरे यह कि जब मैं सूचित करूं कि दाल तैयार है, उसी वक्त सरकार उसे खा भी लें ।" नवाब साहब ने शर्तें मंजूर कर लीं, बावरची को नियुक्ति-पत्र दिया गया ।

चंद माह बाद रसोइये को दाल पकाने की आज्ञा हुई । रसोइये ने दाल तैयार की और नवाब साहब को सूचना भेजी । नवाब साहब उस वक्त कुछ जरूरी काम-काज में मसरूफ थे । उन्होंने कहला भेजा कि दस्तरख्वान बिछाओ, मैं अभी आता हूं, लेकिन तुरंत आ न पाये । रसोइये ने उन्हें दूसरी और तीसरी बार कहलाया कि दाल तैयार है, पधारकर उसे खा लें । इतनी बार कहलाने पर भी नवाब साहब को आने में देर हो ही गयी । विशेषज्ञ रसोइये ने इसे अपना और अपनी कला का घोर अपमान समझा । उसने दाल की हांडी चूल्हे पर से उतारकर एक सूखे पेड़ के थाले में उड़ेल दी और खुद इस्तीफा देकर चला गया । कहते हैं, दूसरे दिन ही वह ठूंठ पेड़ हरा हो गया । नवाब साहब को ऐसे गुणी रसोइये के चले जाने का बहुत अफसोस हुआ । उसे बहुत तलाश किया गया; लेकिन उसका पता न चला ।

ये नवाबी रसोइये हमेशा नयी-नयी ईजादात करने की फिक्र में रहते थे । 'पुलाव अनारदाना' उन्हीं दिनों के रसोइयों का आविष्कार है । इस पुलाव की खूबी यह है कि चावल का हर दाना आधा याकूती रंग का होता है और आधा सफेद । इसी समय का ईजाद 'नवरतन पुलाव' भी है, जिसमें नौ रंग के चावल मिले होते थे । इन चावलों को इतनी होशियारी से रंगा जाता था कि देखनेवाला चकरा जाता था कि ये चावल हैं या हीरे-जवाहरात ।

लखनऊ के प्रसिद्ध रईस नवाब अब्दुल कासिम के यहां एक नये ही किस्म का पुलाव पकता था, जो 'भारी पुलाव' कहलाता था । इसे तैयार करने के लिए पहले ३४ सेर गोश्त की यख्नी (बिना मसाले का शोरबा) निकाली जाती थी । इस यख्नी में चावल पकाये जाते थे । इस पुलाव का लुक्मा मुंह में रखते ही ऐसे घुल जाता, जैसे आप चावल न खाकर, शोरबा पी रहे हों । इसी प्रसंग में एक लतीफा भी सुन लीजिये :

अवध का चिराग जब टिमटिमाने लगा था, तब लखनऊ में एक हकीम बंदा मेहंदी थे । उनके यहां एक दिन एक पहलवान को भोजन के लिए बुलाया गया । पहलवान की दैनिक खुराक भी कम नहीं थी । वह रोज सवेरे २० सेर दूध पीता था, फिर ढाई-तीन सेर पिस्ते तथा बादाम खाता था । दोपहर और रात के खाने में एक बकरा और

दो-ढाई सेर आटे की रोटियां होती थीं। जाहिर है कि ऐसे पहलवान की दावत करना कोई खेल नहीं था। लेकिन अवध में पैसे की कमी नहीं थी और लोग इस किस्म के मनोरंजन के शौकीन भी थे।

ठीक वक्त पर पहलवान साहब ने हकीम के मकान पर पहुंचकर भोजन की प्रतीक्षा शुरू कर दी। लेकिन हकीम साहब टालते रहे। जब पहलवान की भूख उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गयी, तो हकीम साहब ने एक नौकर के हाथ अंदर से एक थाल भेजा। थाल देखते ही पहलवान की आंखों में चमक आ गयी। लेकिन जब उसने थाल पर से कपड़ा उठाकर देखा, तो उसमें एक तश्तरी में छटांक-भर पुलाव के दाने रखे थे।

नाराज होकर पहलवान ने तश्तरी उठायी और सारा पुलाव मुंह में उड़ेल लिया। छटांक-भर पुलाव उसके लिए ऐसा था, जैसे ऊंट के मुंह में जीरा। थोड़ी ही देर में पहलवान को बड़ी जोर की प्यास लगी और बेचैन होकर उसने तीन-चार बार पानी पिया और डकार ली। तभी बाकायदा दस्तरख्वान बिछा और पहलवान साहब को भोजन पर बुलाया गया। मगर अब उनमें एक ग्रास खाने की भी शक्ति नहीं रह गयी थी। उनका पेट ठसाठस भर चुका था।

इन धनी शौकीनों ने अजीब-अजीब परीक्षण करके पकवानों में नये-नये जायके पैदा कर दिये थे। ऐसा ही एक पकवान था 'मुर्ग-पुलाव'। इसे बनाने की विधि भी अनूठी थी। मुर्गों को लंबे अर्से तक मुश्क तथा जाफरान की गोलियां खिलाकर पाला जा था। जब वे खूब मोटे-ताजे हो जाते, मुश् जाफरान उनकी नस-नस में भिद जा और उनके शरीर में से खुशबू आने लग तो मुर्गों की यख्नी निकाली जाती औ फिर उसमें चावल पकाये जाते। यही 'मुर्ग-पुलाव', जिसमें बिना मुश्क और जा रान डाले भी उनकी खुशबू होती थी।

इससे भी अद्भुत था 'मोती पुलाव' जब इसे थाली में परोसकर रखा जाता, ऐसा मालूम होता था कि थाली में अस मोती रखे हुए हैं। सुना है, इसे यों तै किया जाता था :

तोला-भर चांदी के वर्क और मा भर सोने के वर्क को अंडे की जर्दी में मि कर घोल लिया जाता। इस हल की चीज को मुर्ग के गले की नली में भर दि जाता और नली के हर जोड़ पर कस धागा बांध दिया जाता। फिर मुर्ग को ज उबाला जाता। चाकू से नली की खाल दी जाती। उसमें से सुडौल, चमक मोती निकल आते, जो पुलाव में गोश्त साथ उबाल लिये जाते। कुछ बावर पनीर से भी इस प्रकार के मोती तैयार लेते और उस पर चांदी का वर्क चढ़ा दे

त्योहारों और दावतों में नवाबों दस्तरख्वानों पर ऐसे तीस-चालीस कि के पुलाव और बीस-बाईस किस्म की त कारियां-भाजियां होती थीं। अब तो उन बनाने-खानेवालों की तो बात क्या, बतानेवाले भी नहीं मिलते।

व्हेल के पेट में पंद्रह घंटे

सत्य कभी-कभी कल्पना से भी अधिक अद्‌भुत होता है। यह उक्ति यहां प्रस्तुत इस सच्ची घटना में पूरी तरह से चरितार्थ हुई है। व्हेल एक मनुष्य को निगल गयी। वह पूरे पंद्रह घंटे उसके पेट की भट्ठी में पकता रहा। पर जब उस मत्स्य को मारकर उसका अन्नकोष चीरा गया, तो उसमें वह जिंदा मौजद था। यही नहीं, इस दुर्घटना के बाद भी वह आदमी १८ वर्ष जिया—निठल्ले बैठकर नहीं, सामान्य मनुष्य के समान अपना काम-काज करते हुए।

कीर्तिमती नाइक

क्या यह मुमकिन है कि मछली के पेट में पहुंचा हुआ मनुष्य जीता-जागता बाहर निकल आये? अक्ल कहती है—नहीं। लेकिन यहूदियों और ईसाइयों का धर्मग्रंथ 'ओल्ड टेस्टामेंट' कहता है—हां। और प्रमाण के रूप में वह पैगंबर जोनाह के किस्से का हवाला देता है।

जोनाह दूसरे बहुत-से यात्रियों के साथ नाव पर बैठकर कहीं जा रहा था। इतने में तूफान आया और नाव डांवांडोल हो उठी। यात्री बोले—ले डूबता है एक पापी नाव को मंझधार में। जरूर हमारे बीच में कोई पापी है। उसी के कारण यह संकट आया है।... पापी की शिनाख्त के लिए लाटरी डाली गयी। पर्ची जोनाह के नाम की निकली। बस, उसे उठाकर पानी में फेंक दिया गया। पास ही एक बड़ी-सी मछली तैर रही थी, उसे निगल गयी। लेकिन तीन दिन तक कोशिश करके भी मछली जोनाह को पचा नहीं पायी। अंत में उसने उलटी कर दी और जोनाह जीता-जागता बाहर निकल आया।

'ओल्ड टेस्टामेंट' कोई इतिहास ग्रंथ नहीं है—यह दलील देकर शायद आप इस किस्से पर विश्वास न करें। तो यह ऐतिहासिक घटना सुनिये, जिसके पूरे विवरण ब्रिटिश जलसेना के दस्तावेजों में दर्ज हैं।

सन १८९१ के फरवरी मास में एक दिन 'स्टार आफ दि ईस्ट' नाम का एक ब्रिटिश जहाज दक्षिण अटलांटिक में फाकलैंड द्वीप के समीप तैर रहा था। यह समुद्री इलाका व्हेल मछलियों की चरागाह है। और 'स्टार आफ दि ईस्ट' का उद्देश्य भी व्हेल का शिकार करना ही था।

मस्तूल पर चढ़कर एक मल्लाह व्हेलों की टोह ले रहा था। अचानक उसे आधे मील की दूरी पर पानी का फव्वारा उछलता दिखाई दिया। वह चिल्लाया—"व्हेल ...देखो, व्हेल पानी ले रही है!" चट-पट नाविक अपने-अपने हारपून (कांटेदार बरछे) लेकर डोंगियों में उतर गये और मिनिटों में जा पहुंचे जलक्रीडा करती हुई उस भीमकाय मछली की बगल में।

मछली के सबसे निकट जो नाव थी, उसमें एक नाविक था जान बार्टली। बार्टली और उसके साथी ने फौलादी रस्सी के सिरे में बंधा हुआ नुकीला हारपून व्हेल की बगल में घोंप दिया और नाव को तेजी से परे ले जाने की कोशिश करने लगे। वार करने के बाद व्हेल के पास बने रहना मौत को न्योता देना है। दर्द से बेचैन होकर व्हेल अपनी दुम को फटकारने लगती है; और उसकी दुम का एक थपेड़ा सौ-दो-सौ टन तक की किश्ती को उलटने के लिए काफी होता है।

लेकिन यह व्हेल बड़ी अजीब थी। दुम फटकारने के बजाय, चुपचाप गोता लगा गयी। वह पानी में उतरती ही चली गयी। उसके साथ फौलादी रस्सी भी सागर के पेट में समाती चली गयी। आठ सौ फुट उतर जाने के बाद रस्सी एकाएक ढीली पड़ी। इसका अर्थ था—मछली ऊपर उठ रही है। न जाने वह कहां सिर उठाये!

बार्टली और उसके साथियों को कुछ भी सोचने का समय नहीं मिला। झटके के साथ उनकी डोंगी हवा में उछली और औंधी होकर सागर की छाती पर छप-से गिरी। मानो फुटबाल की तरह किसी ने उसे नीचे से लात जमायी हो। घायल व्हेल ऊपर आ गयी थी। उसकी दुम मथानी की तरह सागर को बिलो रही थी। चारों ओर झाग उठ रहा था, जो व्हेल के शरीर से निकलते हुए लहू के कारण लाल-लाल था। व्हेल मिनिट-दो-मिनिट ही पानी पर रही, फिर गायब हो गयी।

नाव के उलटने से जो मल्लाह पानी गिर पड़े थे, उन्हें दूसरी नावों ने उठा लि सब तो मिल गये, लेकिन कई घंटे खो के बाद भी जान बार्टली तथा उसके साथी मल्लाह का कुछ पता नहीं चला। निराश हो गये।

उसी रोज सूरज डूबने के दो-चार मि पहले जहाज से चार सौ गज की दूरी व्हेल फिर प्रकट हुई। वह दम तोड़ थी। अब उसके पास जाने में कोई ख नहीं था। नाविक डोंगियों में चढ़कर और उसे रस्सी से बांधकर जहाज तक लाये। सौ टन की उसकी पहाड़-सी का को डेक पर चढ़ाना नामुमकिन था। इ लिए नाविक उसकी रपटीली पीठ पर गये और लगे उसे गंड़ासों से काटने काम बड़ा घिनौना था और उतना खतरनाक भी।

लालटेनों की रोशनी में लगातार घंटे शवच्छेद करने के बाद, मल्लाहों ने का विशाल जिगर और अन्नकोष ला जहाज के डेक पर डाल दिया। लेकि यह क्या? अन्नकोष तो हिल-डुल रहा जैसे सांस लेते समय शरीर धीमे- हिलता है।

तुरंत जहाज के डाक्टर को बुलाया ग उसने अन्नकोष को जरा-सा चीरा, आदमी का पैर दिखाई दिया—जूते-जुर लैस पैर। तुरंत अन्नकोष को फाड़ा ग एक समूचा आदमी वहां पड़ा था— ठोड़ी से सटाये, सिकुड़ा-सिमटा हुआ

बेहोश । यह आदमी और कोई नहीं, जान बार्टली था । उसकी सांस बहुत धीमे-धीमे चल रही थी ।

डाक्टर ने बालटियां भर-भरकर समुद्र का पानी उसके ऊपर डलवाया । उसकी बेहोशी तो दूर हो गयी; लेकिन पंद्रह दिन तक वह सन्निपात में बड़बड़ाता रहा, मौत और जिंदगी के बीच झूलता रहा । धीरे-धीरे सन्निपात उतरा । लेकिन बार्टली को ठीक होने में एक महीना लग गया । और उसके बाद उसने सारा वाकया सुनाया ।

जब व्हेल की पूछ के धक्के से किश्ती हवा में उछली, तब पानी में गिरते-गिरते बार्टली ने देखा कि एक विशाल मुंह उसे पकड़ने के लिए खुला हुआ है । उसके मुंह से चीख निकल गयी । लेकिन तभी जैसे वह किसी बटुवे में बंद हो गया । वह व्हेल के विशाल मुंह में समा गया था और व्हेल उसे निगल रही थी ।

उसने अनुभव किया कि कोई उसे कीलों की सेज पर घसीट रहा है । दरअसल व्हेल के ताकतवर जबड़े उसे नन्हे-नन्हे नुकीले दांतों की पांत पर से गले की ओर धकेल रहे थे । फिर वह एक चिकनी सुरंग में फिसलने लगा । उसका दम घुट रहा था ! छुटकारा पाने के लिए उसने कुछ क्षण तक हाथ-पैर मारे । फिर दिमाग पर एक काली चादर पड़ गयी । महीने-भर बाद उसनेअपने आपको कप्तान के कैबिन में बिस्तर पर पाया ।

जान बार्टली कुल पंद्रह घंटे व्हेल के पेट में रहा था । इन पंद्रह घंटों में उसके शरीर पर न जाने क्या रासायनिक प्रभाव हुआ कि उसके सारे बाल व रोएं ऐसे झड़ गये कि फिर नहीं उगे । उसकी त्वचा पर अजीब ढंग की सफेदी छा गयी । दृष्टि भी बहुत ही मंद हो गयी, जिससे वह नाविक का काम करने लायक नहीं रह गया । उसने ग्लाउसेस्टर के पास मोची की दुकान खोल ली ।

अठारह साल बाद १९०९ में उसकी मृत्यु हुई । उसकी कब्र पर मोटे अक्षरों में लिखा है—"जान बार्टली, आधुनिक जोनाह १८७०-१९०९" और नीचे संक्षेप में उसका यह अनोखा किंतु सच्चा जीवन-प्रसंग दिया गया है ।

★

मेरा पति सिलाई की मशीनें बेचा करता था । एक बार एक आपरेशन कराने के लिए उसे अस्पताल जाना पड़ा । आपरेशन के बाद डाक्टर ने उसे एक महीने तक पलंग पर से न उठने का आदेश दिया । दूसरे दिन सहसा उसका टेलिफोन आया । मैं उसकी आवाज सुनकर परेशान हो गयी । मुझे मालूम था कि उसके कमरे में टेलिफोन नहीं है । मैंने पूछा—"तुम्हें उठने की इजाजत किसने दी ?"

"आंख बचाकर आया हूं ।" उसने उत्तर दिया—"मेरी आर्डर बुक अपने साथ लेती आना । साथवाले बिस्तर पर जो बीमार है ना, उससे एक मशीन की बात पक्की कर ली है।"

—अहसना अब्बासी

★

मछलियों की वात्सल्य भावना

‘बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।’ पर उसी मत्स्य-समाज में आप एक और भी देखेंगे–अपने बच्चों के प्रति मानवीय स्तर की ममता।

प्रो० विश्वरमण

सृजन, पालन तथा रक्षण की प्रवृत्ति सांसारिक प्राणियों में जन्मजात होती है। क्षुद्र कीट से लेकर मानव तक इसीसे चालित दिखाई पड़ते हैं। एक छोटी चींटी को ही लीजिये। वर्षारंभ से पहले ही वह अपने अंडों को लेकर सुरक्षा के लिए एक जगह से दूसरी जगह चली जाती है। प्रायः हम मानुषिक वात्सल्य-भावना की प्रशंसा करते अघाते नहीं, किंतु वास्तविकता यह है कि अन्य प्राणी भी इसके बड़े सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मछलियों के जगत में ‘मत्स्य-न्याय’ ही नहीं है, अपनी संतान के रक्षण और पालन के लिए अपेक्षित स्नेह और प्रयत्न भी है। जिन मछलियों की शक्ति कम अंडे देने की होती हैं, वे नर-मादा दोनों मिलकर अपने अंडे तथा बच्चों का पालन-पोषण बड़ी ही तत्परता से करती हैं। अंडों की सुरक्षा के लिए वे नदी, तालाब, या झरनों की सतह पर बड़े ही वैज्ञानिक तरीकों से घर बनाती हैं। प्रोफेसर मैकइंटार्स ने लंपस्कर मछली के वात्सल्य प्रेम के बारे में लिखा है कि मादा लंपस्कर मछलियां छिछले पानी में अंडे देती हैं, जिन रक्षा नर करते हैं। कम पानी होने के का नर को काफी कठिनाइयों का सामना क पड़ता है, फिर भी वे करवटें बदलकर अं की रक्षा करते रहते हैं। डा० स्कार्फ ने मछलियों को अंडे से कुछ दूरी पर हटा देखा। थोड़ी देर बाद नर अंडों के पास गये। इन्हीं प्रवृत्तियों से लाभ उठा मनुष्य उन्हें पकड़ लिया करते हैं।

स्ट्रीकलबैक नामक मछलियों के मई तथा जून के महीनों में तैरते हुए स सेवार तथा छोटे रस्सी के टुकड़ों को ले अपनें गुर्दे से मकड़ी के जालों की तरह धा उत्पन्न करते तथा उन्हें बुनकर घर ब हैं। घर बनाने के पश्चात् वे मादा की में व्याकुल हो उठते हैं। मादा उसमें देती हैं। नर इनकी देखभाल करते हैं।

डा० सेमेन ने इरियस मछलियां विषय में लिखा है कि क्वीन्सलैंड की नेट नदी में ये गोलाकार खुदाई करती जिसका व्यास २० इंच के लगभग है हे। इसमें अंडे और बच्चे पलते हैं।

गोवियस नामक मछलियों के नर मृत सीप के नीचे की बालू को हटा देते हैं और माता उसमें अंडे देती है । इसके बाद नर अपने डैने चलाकर सांस लेने के लिए हवा उत्पन्न करता है ।

कार्वोनियर ने १८७५ ई० में ट्राइग्कोगेस्टर नामक मछलियों का बड़ा ही सुंदर विवरण दिया है । वयस्क होने पर नर अपने रंगीन पंखों से मादा के चारों ओर तैरते हुए उनसे छेड़खानी करते हैं । छोटे पौधों को मुंह में लेकर वे पानी की सतह पर आते हैं । नर यह अच्छी तरह जानते हैं कि वे पौधे अपने घनत्व से नीचे चले जायेंगे, इसलिए वे मुंह से हवा के छोटे-छोटे बुलबुले छोड़ते हैं । इससे वे पौधे नीचे की ओर नहीं जा सकते । यह क्रम दिन-रात चलता रहता है, जिसके फलस्वरूप पौधे और उन बुलबुलों के साथ एक तैरता हुआ टापू-सा बन जाता है, जिसका व्यास ८ सेंटीमीटर के बराबर हो जाता है । दो दिनों में जब यह टापू तैयार हो जाता है, तो नर उसमें मादा को अंडे देने के लिए प्रेरित करता है । मादा के अनिच्छा प्रकट करने पर, नर उसे मार तक देता है । मादा उस बुलबुले के टापू के अंदर अंडा देती है और यदि भारी अंडे नीचे की ओर जाने लगते हैं, तो नर फूंक मारकर उन्हें बुलबुले के टापू के अंदर ले जाता है । जिमनारकस नामक मछली भी अपने बच्चों के लिए इसी प्रकार का घर बनाती है, जिसका मुंह तीन ओर से घिरा और एक तरफ से खुला रहता है ।

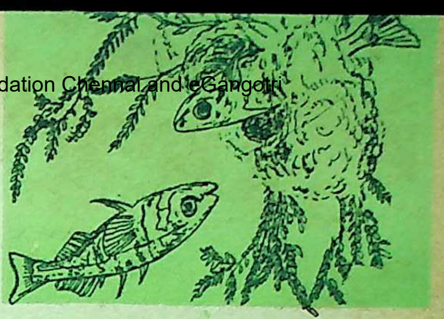

स्ट्रीकल बैक प्रेमिका का आह्वान करता हुआ

अभियाकाभा नामक मछलियां भी बहुत कौतूहल-पूर्ण ढंग से घर बनाती हैं । मई से लेकर जून तक उनकी प्रजनन ऋतु रहती है । ये मछलियां गहरे पानी से छिछले पानी में चली जाती हैं, जहां सेवार वगैरह ज्यादा रहते हैं । वहीं पर वे चक्कर काटना शुरू करती हैं और उन पौधों के बीच में नाजुक पौधों को तोड़कर घोंसलों की तरह छोटी-सी जगह बना, उसमें अंडे देती हैं । ये अंडे उन पौधों में चिपके रहते हैं । जब तक बच्चे नहीं हो जाते, तब तक नर उनकी रक्षा तथा निगरानी करता रहता है । पैदा होते ही बच्चे झुंड में पिता के साथ निकल जाते हैं ।

एक प्रकार की भारतीय मछली, जिसका नाम गरई है, पानी में हवा के बुलबुले, अपने मुंह की लार तथा छोटे-छोटे पौधों से तैरते हुए घर का निर्माण करती है । प्रजनन ऋतु में ऐसट्रेड नामक मछलियों के निचले हिस्से की त्वचा स्पंज की तरह हो जाती है, जहां अंडे चिपके रहते हैं और बड़े होते हैं ।

'हिपोकेंपस' तथा 'पाइप' मछलियों के नर के पेट में एक तरह की थैली होती है, जिसमें बच्चे बड़े होते हैं ।

सूअर से संग्राम

खूंख्वार सूअर के शिकार का एक सरस प्रसंग

बिसनलाल शर्मा

घटना १०-१२ वर्ष पहले की है। अप्रैल का महीना था। जोड़मोहा नामक गांव के खेतों में एक बड़ा जंगली सूअर आया करता था। महुए के फूल खाकर वह फसल को उजाड़ना शुरू कर देता। इससे किसानों का बहुत नुकसान हो रहा था। सूअर की यह आदत होती है कि वह जितना खाता है, उससे लगभग आठ गुना उजाड़ देता है। अतः सूअर के उपद्रव को बंद करना बहुत आवश्यक था। शिकारी दयाशंकरजी ने अपनी राइफल संभाली और अपने साथियों को साथ ले, उस क्षेत्र में जाकर आवश्यक मोर्चाबंदी की।

सूअर अपने शरीर पर कीचड़ लपेटकर हमेशा किसी एक ही वृक्ष से अपना शरीर रगड़ता है और इसी तरह वह रोज किसी एक ही जगह कीचड़ में लोटता है। उसके आने-जाने के मार्ग भी प्रायः निश्चित ही होते हैं। शिकारी यदि इन्हीं रास्तों के किसी वृक्ष पर उसकी ताक में रहे, तो वह अपनी मनोकामना पूरी कर सकता है। कीचड़ से सने शरीर को वृक्ष पर रगड़ने से जो कीचड़ वृक्ष के तने पर लगा रह जाता है, उससे सूअर की ऊंचाई जानी जा सकती है।

वडनेर के खेत के पास एक बड़ा ना था। उसी नाले से कुछ दूरी पर के एक के तने पर कीचड़ लगा हुआ था। ना सूअर के पदचिह्न इसी वृक्ष की ओर गये थे। आगे घनी झाड़ियां और छो छोटी पहाड़ियां शुरू हो गयी थीं। उस का अच्छी तरह निरीक्षण कर दयाशंक ने अपने लिए एक बड़े वृक्ष का चुनाव लिया। उनके साथी लक्ष्मण कोल दामा गोंड, झामा बंजारी और बंस्या बंज अपने-अपने भाले और शिकारी कुत्तों साथ लेकर एकदम तैयार थे। दयाशंक ने उन्हें उचित दिशा में पहाड़ियों की में तैनात कर दिया और स्वयं उस वृक्ष चढ़कर सूअर की प्रतीक्षा करने लगे।

इधर शाम हुई और उधर सूकरराज शुभागमन। त्रिवेदीजी चाहते, तो उस गोली चला सकते थे, किंतु वे चुपचाप रहे। उन्हें आगे का तमाशा देखना सूअर ने उस वृक्ष के तने से अपना रगड़ना शुरू किया। कीचड़ लगने से उ ऊंचाई जानकर उन्हें विश्वास हो गया सूअर वही है, जो यहां रोज आया क है। इस कार्य से निबटकर सूअर आगे

पूर्व दिशा की पहाड़ी पर झामा बंजारी बैठा था। उसकी निगाह सूअर पर जमी थी। पहाड़ियों के बीच सूअर के आते ही दो शिकारी कुत्तों के साथ झामा ने उस पर भाले से हमला बोल दिया। वराह इतना साहसी होता है कि एक बार वह अच्छे-से-अच्छे शेर से भी टक्कर ले सकता है। मगर शिकारी कुत्तों के दल से वह बहुत घबराता है। आदमी के साथ कुत्तों को अपनी ओर झपटता देख, वह दूसरी तरफ मुड़ा। दक्षिण की पहाड़ी पर लक्ष्मण कोलाम था। सूअर के मुड़ते ही अपने एक कुत्ते के साथ उसने भी धावा कर दिया। तीनों कुत्तों ने मिलकर सूअर को रोक लिया। बंस्या बंजारी उस क्षेत्र की पश्चिमी पहाड़ी पर था। वह भी सूअर के ऊपर आने की राह देख रहा था।

दयाशंकरजी इस मैदान के बीच में थे। झाड़ियां छोटी और कम घनी होने से यह युद्ध उन्हें अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। फिर वह वृक्ष पर से उतरकर पेड़ों की ओट लेते हुए धीरे-धीरे उस स्थान की ओर बढ़ने लगे।

इधर कुत्तों से सूअर की लड़ाई जमकर हो रही थी। वह अत्यंत आवेश में आकर उन पर टूट पड़ता था। किंतु वे उसे बहुत परेशान कर रहे थे। किसी एक कुत्ते पर जब वह आक्रमण करता, तो बाकी दो कुत्ते फौरन पिछली ओर से उस पर टूट पड़ते। अकेला होने के कारण वह तीन कुत्तों के मुकाबले में ज्यादा देर न टिक सका। बहुत थक जाने पर वह एक पेड़ का आश्रय लेकर बैठ गया, लेकिन साथ ही लड़ाई भी करता जाता था। वह गुर्राकर एक जोरदार आक्रमण करता, फिर आराम लेता और फिर आक्रमण करता। संग्राम पुनः जोर पकड़ता जा रहा था। सूअर बहुत बौखलाया हुआ था। आखिर एक कुत्ता उसके प्रहार की जद में आ गया और उसके दांतों के वार ने उसकी आंतड़ियां बाहर निकाल लीं। कुत्ता उसी वक्त खत्म हो गया। फिर वह बाकी दोनों कुत्तों पर टूट पड़ा। अपने एक साथी की दुर्गति देख वे दोनों पहले ही घबरा गये थे। उनकी दुम नीचे दबने लगी। अब उनके मालिक आगे बढ़े। उनके चलने से पत्तों की चरमराहट हुई और क्रुद्ध सूअर ने उनकी ओर पलटकर देखा। झामा बंजारी को देखते ही वह उस पर तीर की तेजी से लपका। सूअर की आंखें अंगारे उगल रही थीं। उस समय वह साक्षात यम का दूत दिख रहा था। उसकी गुर्राहट मानो मौत का संदेशा सुना रही थी। झामा को अपना अंत करीब ही दिखाई दिया। बचाव के लिए वह तुरंत एक पेड़ की आड़ में हो गया और उस पेड़ का तना सूअर के पैने दांतों के वार से कद्दू की तरह कटता चला गया। वार इतना जबर्दस्त था कि सूअर का एक अगला बड़ा दांत टूटकर गिर पड़ा। खैर यही कि झामा बच गया। सूअर की गुर्राहट और तेज हो गयी। झामा पत्ते की तरह कांप रहा था। फिर वह पेड़ पर चढ़ने लगा। घबराहट में ऊपर चढ़ना भी मुश्किल हो रहा था। वह कुछ ही ऊंचाई तय कर पाया कि सूअर

लौट पड़ा । पर अब झामा उसकी पहुंच से बाहर था । उसकी धोती नीचे लटक रही थी । सूअर उसे पकड़कर खींचने लगा । वह धोती पकड़े जोर लगा रहा था और झामा ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। सौभाग्य से इसी खींचा-तानी में धोती फट गयी और वह ऊपर चला गया । अब उसे पाने के लिए सूअर क्रोध से पागल होकर झाड़ के नीचे की धरती रौंदने लगा ।

अधिक समय हो जाने पर बंस्या, जो अब तक प्रतीक्षा कर रहा था, सूअर की स्थिति जानने उस स्थल पर आया। बंस्या की आहट पाकर सूअर ने उसे देखा और देखते ही उस पर आक्रमण कर दिया । सूअर का एक जोरदार धक्का खाकर बंस्या जमीन चाटने लगा। उसकी जांघ खीरे की तरह फट गयी।

एक वार करने के बाद सूअर कुछ दूर तक दौड़ता चला जाता है और फिर लौटकर दूसरा वार करता है । मनुष्य का अंत करने में उसे दो या तीन वार से अधिक नहीं लगते । अब वह बंस्या पर दूसरा वार करने के लिए लौट पड़ा । उसके जीवन के कुछ ही क्षण और प्रतीत हुए । किंतु इस समय झामा ने सराहनीय साहस दिखाया । वह वृक्ष पर से कूद पड़ा। अपना भाला संभालकर सूअर को रोकने दौड़ पड़ा । अब सूअर ने झामा को अपना संधान बनाया ।

इधर दयाशंकरजी भी वृक्षों की ओट लेते हुए उसी स्थान की ओर सरक रहे थे । कंटीली झाड़ियां रुकावट पैदा कर रही थीं, वे उन्हें हटाते हुए, आगे बढ़ रहे थे । अब आगे का दृश्य उन्हें अच्छी तरह दिखाई दे था । झामा का भालेवाला हाथ हवा में और इसके पहले कि वह पास आये पर वार करे, विद्युतगति से लपककर झामा पर टूट पड़ा । झामा का हाथ उठा रह गया और वह धरती पर आ गिरा। बंस्या की तरह वह भी असहाय था। फिर हमले के लिए लौट रहा था। शंकरजी की आहट से आर्कषित हो, उनकी ओर ही अपना रुख कर लि वे भी यही चाहते थे। सूअर उनसे ३० की दूरी पर था । उन्होंने उसकी को लक्ष्य कर अपनी राइफल साधी गोली छोड़ दी । गोली ठीक निशाने लगी और सूअर पट-से गिर पड़ा। उन्हों दूसरा कदम उठाया ही था कि वृक्ष की झुकी हुई शाखा से उनका सिर जा राया । वे अपना संतुलन न संभाल सके नीचे गिरते ही झामा की चिल्लाहट उ कानों में पड़ी । चोट की चिंता न कर उन्हों उस ओर देखा ।... सूअर उठकर चलने प्रयत्न कर रहा था । हालांकि वह गोली मार से बुरी तरह जख्मी हो चुका था, भी प्रतिशोध लेने वह मरते दम तक बढ़ने की कोशिश कर रहा था । कुत्ते डरे दूर खड़े थे और उस समय भी उ सूअर के पास आने का साहस नहीं हो था । दयाशंकरजी ने दूसरी गोली और सूअर का काम तमाम हो गया।

सूअर की लाश को नोच-नोचकर अब अपनी बहादुरी का परिचय दे रहे

★

तुर्की के अमर कवि नाजिम हिकमत

कहते हैं, कवि धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी होता है—क्योंकि जन-जन का दुख उसका दुख होता है और जन-जन का सुख ही उसका सुख। नाजिम हिकमत के कवि को कभी सुख नसीब नहीं हुआ—क्योंकि उसके देशवासी दरिद्रता, शोषण और विविध यातनाओं की चक्की में पीसे जा रहे थे। कवि भी ऐश-आराम छोड़कर स्वेच्छा से यातनाओं में पिसता रहा, मगर उसकी कविता में पुरजोश जिंदादिली और लोकक्रांति की बुलंद हुंकार थी।

सुखबीर

३ जून १९६३ मुहर्रम का दिन था। मुस्लिम संसार में मुहर्रम शोक-दिवस के रूप में मनाया जाता है। पर इस बार यह दिन सारे संसार के लिए शोकपूर्ण हो गया। क्योंकि इस दिन तुर्की का सर्वश्रेष्ठ कवि नाजिम हिकमत चल बसा। उसकी गणना विश्व के गिने-चुने महान कवियों में होती है। उसके निधन से तुर्की की ही नहीं, पूरे संसार की बहुत बड़ी हानि हुई है।

नाजिम हिकमत का जन्म १९०२ में हुआ था। वह एक अमीर घराने में जन्मा और परवान चढ़ा। उसका बाल्यकाल बड़े सुख और आराम से बीता। पर बड़ा होने पर, जब उसने अपने देश में हद दर्जे की गरीबी देखी, तो वह आश्चर्यचकित रह गया। उसने सभी ऐश-आराम छोड़ दिये और अपने देश की गरीब जनता का एक अंग बन गया। १९२०-२२ में तुर्की के लोग अपने देश के अत्याचारी शासकों और उनके साथी—विदेशी साम्राज्यवादियों—के विरुद्ध आवाज उठा रहे थे। देश-भर में लोकक्रांति की लहर जोरों पर थी। नाजिम हिकमत अपना घरबार छोड़कर देश के इस स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल हो गया और बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगा।

कुछ समय के पश्चात् नाजिम हिकमत

रूस चला गया। वहां उसने विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। उससे उसमें नयी चेतना जागी। रूसी साहित्य से उसने बहुत कुछ सीखा। उस दौर के सबसे बड़े रूसी कवि मायाकोव्स्की का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसके साहित्यिक जीवन में नया मोड़ आया। नाजिम हिकमत के साथ नयी तुर्की कविता का जन्म हुआ। कविता के विषय और रूप दोनों में नाजिम ने नये प्रयोग किये और उसे पुराने ढर्रे से छुटकारा दिलाया। तुर्की की पुरानी, निर्जीव और बोसीदा दरबारी कविता से अलग उसने ऐसी कविता लिखी, जिसमें क्रांतिकारी प्राणों का संचार था। उसने पुराने छंदों की कैद को तोड़ा और ऐसे नये छंदों की रचना की, जिनमें विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता से प्रकट किया जा सकता था। साथ ही उसने आम लोगों की भाषा को अपनाया, ताकि कविता लोगों के निकट आये। आम लोगों के स्तर पर कविता लिखकर भी एक ऊंचा साहित्यिक स्तर स्थापित करना, नाजिम हिकमत-जैसे महान कवि की ही करामात है।

१९२५ में नाजिम रूस से अपने देश लौटा। अपने देश से दूर रहना उसके लिए असह्य था। पर यहां वह अधिक समय तक स्वतंत्र न रह सका। उसकी कविता बहुत लोकप्रिय हो रही थी और लोगों में क्रांतिकारी चेतना जगा रही थी। अतः वह सरकार की आंखों में खटक रहा था। आखिर उसे पकड़ लिया गया और स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने के अपराध में तीन साल की सजा दी गयी। पर कैद से छूटने पर नाजिम चुप नहीं बैठा। उसने जुल्म के खिलाफ और भी तेज आवाज उठायी। अपने देशवासियों के क्रांतिकारी विचारों का आह्वान किया। उसकी कविताएं लोगों के दिलों में घर कर गयीं। किसानों-मजदूरों में ही नहीं, पुलिस और सेना के लोगों में भी उसकी कविताएं पढ़ी जाने लगीं। सरकार यह देखकर चौंकी। उसने नाजिम हिकमत की आवाज को बंद करना चाहा। १९३८ में एक खास अदालत में नाजिम हिकमत पर मुकदमा चलाया गया। इसमें अभियोग लगाया गया कि उसकी कविताएं फौजियों के पास पायी गयी हैं और वे समाजवाद का प्रचार करती हैं। अंततः उसे अट्ठाईस वर्ष की कैद की सजा सुना दी गयी। आश्चर्य की बात थी कि नाजिम पर उसकी उन कविताओं के आधार पर अभियोग लगाया गया था, जो कानूनी तौर पर पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों में छप चुकी थीं। इससे भी बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि इतनी सजा तुर्की में गैर कानूनी थी। उसे कानूनी बनाने के लिए सरकार को एक नया कानून पास करना पड़ा। लोगों ने इसके खिलाफ आवाज उठायी, पर सरकार ने कोई सुनवाई न की।

जेल में नाजिम हिकमत को अन्य कैदियों से अलग एकांतवास में रखा गया। उस पर कई तरह की पाबंदियां लगायी गयीं। न कोई उससे मिल सकता था, न कोई

पत्र लिख सकता था । रोज का अखबार भी उसे नहीं दिया जाता था । उसे अंधेरे में रखा गया, ताकि अपने देशवासियों से उसका संबंध टूट जाये और उसे कुछ पता न लगे कि देश में क्या हो रहा है । यही नहीं, उसे तरह-तरह की कठोर यातनाएं भी दी गयीं। पर नाजिम ने सभी दुःखों का डटकर मुकाबला किया और हिम्मत न हारी । वह कविताएं लिखकर चोरी-छिपे जेल से बाहर भेजता रहा । अब कविता ही उसके हाथ में एक मात्र हथियार था, जिससे वह दुश्मनों के खिलाफ लड़ सकता था । वे कविताएं उसके नाम से नहीं छप सकती थीं । वे और नाम से छपती रहीं । पर पाठकों से यह बात कभी छिपी नहीं रही कि वे कविताएं उनके प्रिय कवि नाजिम हिकमत की ही हैं ।

जेल में बारह वर्ष बीतते-बीतते नाजिम का स्वास्थ्य बहुत ही गिर गया । उसे न तो अच्छा खाना दिया जाता था, न सर्दी से बचने के लिए आवश्यक कपड़े । उसका शरीर क्षीण हो गया । उसकी टांगों में दर्द रहने लगा । फिर वह दिल की एक खतरनाक बीमारी का शिकार हो गया । किसी समय भी उसकी मृत्यु हो सकती थी । फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी । आशा-भरे भविष्य की प्रतीक्षा में वह जीता रहा ।

अपनी कविताओं में उसने अपनी पत्नी के नाम कुछ पत्र भी लिखे । ये पत्र बड़ी मार्मिक कविताएं हैं । एकांत कारावास की यातना-भरी सुदीर्घ अवधि में और कोई होता, तो शायद पागल हो जाता या आत्महत्या कर लेता । पर नाजिम का अपने देश की धरती और आजादी की लड़ाई लड़नेवाले लोगों के सुनहरे भविष्य के साथ अटूट संबंध था । सो वह जिंदा रहा । उसने अन्य कैदियों को भी जिंदा रहने पर जोर दिया–

शायद जिंदा रहने में
अब कोई आनंद न रहा हो ।
पर यह तुम्हारा फर्ज है ;
दुश्मन को नीचा दिखाना
और एक दिन और ज्यादा जीना ।

× × ×

रोज हजामत बनाते समय अपने चेहरे
को देखो
अपनी उम्र को भूल जाओ
जूंओं से अपने आपको बचाओ
और वसंत ऋतु की शामों से ।
और यह कभी न भूलो
कि तुम्हें रोटी का
आखिरी टुकड़ा भी खाना है
और दिल खोलकर हंसना है ।

आखिर जब नाजिम हिकमत का स्वास्थ्य और अधिक खराब हो गया और उसकी दिल की बीमारी और अधिक बढ़ गयी, तो उसने अपनी गैर कानूनी सजा और जेल में होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध भूख हड़ताल की और न्याय की मांग की । उस भूख हड़ताल की खबर सारे संसार में फैल गयी। संसार के हर देश में किसानों, मजदूरों, बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों की सभाएं हुईं और नाजिम हिकमत की रिहाई के लिए

आवाज उठायी गयी । यह आवाज इतनी बुलंद और सशक्त थी कि तुर्की सरकार को बाध्य होकर नाजिम को छोड़ना पड़ा । पर जेल से छूटने पर भी उसे पूरी स्वतंत्रता न मिली । उसे सरकार की ओर से हर समय जान का खतरा था । क्या पता किस मौके पर उसे गोली से उड़ा दिया जाये और उसकी आवाज को हमेशा के लिए बंद कर दिया जाये । वह पूरे देश की आवाज था और सरकार को उससे खतरा था । सो वह उसे कुचल देने का अवसर ढूंढ़ रही थी।

आखिर नाजिम हिकमत कुछ समय के लिए रूस चला गया । मास्को में रहते हुए उसे हर प्रकार का सुख और आराम था । पर उसे तो अपना देश बुला रहा था । स्वदेश से दूर रहने का उसे जो दुःख था, उसी के शब्दों में सुनिये :

लोग कहते हैं–
इस्तंबोल की गरीबी अवर्णनीय है ।
वे कहते हैं–
भूख अनेक जानों को
फसल की तरह काट रही है ।
तपेदिक –वे कहते हैं–
चारों ओर फैली हुई है–
और छोटी-छोटी लड़कियां–वे कहते हैं–
अंधेरी गलियों में, सिनेमा घरों में . . .

मेरे सुदूर शहर से
बुरी खबरें आ रही हैं
ईमानदार,
मेहनती और गरीब लोगों का
अपना शहर
मेरा असली इस्तंबोल !
मेरी प्रिये,
यह वह शहर है,
जहां तुम रहती हो
हां, वही शहर
जिसे मैं अपनी पीठ पर उठाये
फिर "रहा" हूं
अपने झोले में डाले फिर रहा हूं
जहां भी मैं जलावतन होता हूं,
जहां भी मैं कैद होता हूं
हर जगह यह मेरे दिल में
एक तीखी टीस की तरह रहता है
किसी मर चुके बच्चे की
तीखी टीस की तरह ।
यह वही शहर है
जिसे मैं तुम्हारे चित्र की तरह
अपनी आंखों में
लिये फिर रहा हूं ।

और नाजिम हिकमत अपने देश इस दर्दभरी याद को दिल में समाये जीता रहा । परिस्थितियां अधिक ख होती गयीं और वह लौट न सका । आ अपने देश से दूर, मास्को में, इकसठ की आयु में वह संसार से विदा हो गया

सारा इतिहास जिस स्याही से लिखा गया है, वह पक्षपात और पूर्वाग्रह की स्याही है
–मार्क ट

अल्लाह की बंदियां

मुल्ला रमूजी से पेशावर के अखबार 'अदीब' ने ईद के मौके पर प्रकाशनार्थ रचना मांगी थी। उसके जवाब में मुल्लाजी ने संपादक को जो पत्र लिखा था, वह यहां प्रस्तुत है। घरेलू हालात के सच्चे बयान के साथ उन पर चुटकियां पत्र-लेखक की ईमानदारी और व्यंग्य-प्रियता के सहज सरस उदाहरण हैं।

मुल्ला रमूजी

रिसाला 'अदीब', पेशावर के एडिटर साहब को मालूम हो कि खत आपका आया। हाल मालूम हुआ और हां, आंखों को नूर और दिल को सुरूर भी हासिल हुआ और यह सुरूर इसलिए हासिल हुआ कि सूबा सरहद के पठान भाइयों को जबान उर्दू की तरक्की का खयाल है और यह सुनकर अजहद (अत्यधिक) खुशी और भी अजहद हुई कि जनाब सरहदी भाई उर्दू से शजफ (हार्दिक प्रेम) रखते हैं। मगर यह न मालूम हुआ कि सरहदी भाई, यह गौहरजान कलकत्तावाली की सूरत से मिलती हुई तसावीर से क्यों शौक फरमाते हैं, जो सरहद के रिसालों में छापी जाती हैं? हां ऐसी तसावीर अगर लखनऊ के वल्लाह चुनांचे पसंद करते या आगरावाले, तो एक निस्बत भी थी। वे शुब्हा अफगानी अकाबिर (बड़े लोगों) की तसावीर तो जिस दर्जा भी काबिलेतारीफ हैं, बयान नहीं कर सकते। मगर सुना है कि सूबा सरहद में भी 'इस्लामिया हाइस्कूल' बन गये हैं और इसीलिए अब सरहदी भाई भी 'पायनियर' अखबार को पढ़ना, खरीदना, अंग्रेजी में गुफ्तगू फरमाना कुछ बड़ी ही रौशन-खयाली समझ बैठे हैं। वैसे इन बेचारों की खता ही क्या है? पेट, रोटी और गुलामी होती ही है काली बला। इसके असरात (प्रभाव) से वही दिमाग महफ़ूज रह सकते हैं, जो आजाद ममालिक (देशों) में रहते हैं। और दूर क्यों जाइये, खुद घर ही में देख लीजिये कि आपने खुद रिसाला 'अदीब' के खतूत (पत्रों) की पेशानी पर डाकखाने के अंग्रेजों से डरकर अंग्रेजी जबान में पता छपवा ही लिया और पते की इबारत के मुआफिक ही अंग्रेजी जबान को तरक्की दी। यों अगर आप उर्दू पर ही जम जाते, तो एक-न-एक दिन डाकखानेवाले ही आपकी उर्दू को मान लेते, क्योंकि अंग्रेज भाई तो हर हाल में उसूल और तिजारत को पसंद करते हैं। यह देखो न, जो अंग्रेज काबुल में रुपया कमाने जाता है, वह कैसी उम्दा पश्तो सीख लेता है और जो ईराक में जाता है, वह

मिस्टर फलवी गवर्नर ईराक की तरह कैसे शुद्ध अरबी सीख लेता है? लेकिन जब सारे हिन्दुस्तानी खुद-ब-खुद अंग्रेजी बोलें, तो फिर हिन्दुस्तान में अंग्रेज भाइयों को रिसाला 'अदीब' खरीदने की क्या जरूरत?

अच्छा, तो दीगर अहवाल यह है कि मुआफ कीजियेगा, आपके मुताल्लिक उर्दू की हिमायत में एक खुदा लगती कह गये हैं और भाई, यह आखिर हमसे और हमारे नन्हे मियां की ताजा वालिदा (मां) से जो हर वक्त ठनी रहती है, तो उसकी वजह भी बस हमारी यह साफगोई ही तो है। क्योंकि वे ठहरीं हर हाल में औरतजात और हम ठहरे हर हाल में मर्दजात। इसलिए बात-बात पर मामला कहीं-से-कहीं पहुंच जाता है। यह खुदा का शुक्र है कि कोतवाली तक मामला नहीं गया है और आप ही इंसाफ कीजिये कि हम यह किस तरह बरदाश्त करें कि अपने नन्हे मियां की वालिदा को मोटर में ईदगाह भेज दें। वरना जनाब, कल-कलां को अगर वे कहें कि मोटर-साइकिल पर सवार होकर ठंडी सड़क पर तफरीह को ले जाइये, तो फिर उस वक्त बुजुर्गों को क्या मुंह दिखायेंगे अगरचे गुलामी की जेहनियत (बुद्धि) यह भी सिखाती है कि हर हाल में फातेह कौम (विजयी राष्ट्र) की नकल करो और किसे खबर कि सूबा सरहद के मुसलमानों ने मोटर-साइकिल पर सवार करके बीवियों को ठंडी सड़कों पर घुमाने को अच्छा समझा है या नहीं।

हां, तो दीगर अहवाल यह है कि जनाब, ईद भी आयी और वह भी घर मौजूद थीं? बस, उन्होंने यह समझा कि असल में कहते हैं– पंप जूते, रेशमी मो रेशमी साड़ियों, लवेंडर-पाउडर और ज हरात के जेवरात को। अरे भई, गजब का, हमारी उन्होंने अलविदा के जुमा दिन भी तो न पूछा कि मुल्ला साहब, आ आपका लिबास ईद के दिन कैसा होगा बस, अगर खुद हमने कहा कि–

......और देखना यह हमारी ईद की शेरवानी का कपड़ा ......

......और देखो तो जरा इधर आकर, यह हमारे मोजे ......

......और सुनो तो हम वह खद्दर का पाजामा ईद के दिन पहनें या यह पतलून? और सुनती भी हो कि कि आखिर इस ईद पर भी हम नयी टो लायें कि नहीं।

और जरा इधर तो देखो कि वह ई गाह से हमारे साथ चंद दोस्त आयेंगे, आखिर उनके लिए क्या-क्या पकाओगी

और जरा यह भी तो सुनो कि आखि आज तुम मुंह से बोलती क्यों नहीं हो? हां, रात को तुम अपनी बालियां और रेश साड़ियां कोई दो घंटे तक लैंप के पास देखती रहीं, मगर अब क्या हो गया, हमारे ईद के लिबास पर तुम हो कि एक भी बोलने को तैयार नहीं?

अच्छा, तो तुम ईद के दिन अप वालिदा के घर जाना चाहती हो, उर्फ अ

मैके की ईद करना चाहती हो, तो कहो। मगर खुदा के लिए कुछ तो कहो।...... अच्छा तो तुम्हारे नन्हे मियां के तमाम कपड़े भी तुम्हारी पसंद के मुआफिक आ गये हैं। फिर क्या हो गया है, जो इस त्योहार के दिन तुम्हारी पेशानी पर बल पड़े हैं ?

और यह लो भई, यह कुल पांच रुपये हमने ईदगाह के लिए रख लिये थे, सो अगर तुम उन्हें भी खर्च करना चाहती हो, तो... तो ये पड़े हैं। कौन मरदूद है, जो उन्हें अब कभी उठाये या हाथ लगाये ... ! और यह लो, यह तुम्हारे अंग्रेजी फैशन का साबुन भी ले आये हैं।

मगर जनाब, वह खुदा की बंदी मुंह से न बोली, तो न बोली और हम ईदगाह से भी हो आये। हमारी वालिदा ने हमें गले से लगाकर दुआ दी, बच्चों ने सलाह कर के जो कुछ जेब में था, वह भी मालेहराम समझकर वसूल कर लिया। झूम गये, कूदे, नाचे, शोर किया, खेले, सो गये, फिर उठे–जेबों की तलाशी ली, मगर वह हमारी अल्लाह की बंदी मुंह से न बोलीं और आप जानते हैं कि ईदगाह से आकर अगर कोई मर्द अपनी प्यारी बीवी का मुह – चेहरा, पेशानी या नाक–चढ़ा हुए देखे, गरज उसे नाखुश पाये, तो क्या हाल हो। क्या कहें, बस भाई, दीगर अहवाल यह है कि......

ईद से कोई पांच दिन बाद मालूम हुआ कि इस अल्लाह की बंदी को हमारे लाये हुए पांव के मोजे पसंद न थे, सिर्फ इतनी बात पर उसने यह सितम ढाया कि सारी ईद का लुत्फ दूसरी ईद के लिए उठाकर रख दिया। इस पर आप कहते हैं कि ईद नंबर के लिए कोई उम्दा मजमून लिखो, लेकिन जब जिहालत, अंग्रेजी तालीम और नाकिस तरबियत से मुसलमानों के ९५ फी सदी घरानों में ईद पर यह होता है, जो हमारे यहां हुआ, तो फिर मुसलमानों की एजतेमाई और अखलाकी हालत (सामूहिक एवं नैतिक अवस्था) तो उसी वक्त अच्छी होगी, जब इन सारी अल्लाह की बंदियों को दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) दी जाये। अच्छा, तो बस, मुबारक ईद को और हम सबको दरजा-ब-दरजा......

–मुल्ला रमूजी।

रूपांतर : मुफीजुर्रहमान

★

एक व्यक्ति उल्लू बेचने के लिए बाजार आया। उसके पास दो उल्लू थे। एक छोटा और एक बड़ा।

बाजार में किसी ने उनकी कीमत पूछी, तो उसने कहा कि बड़े उल्लू की कीमत बीस रुपये है और छोटे उल्लू की तीस रुपये।

ग्राहक को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने पूछा कि बड़े की कीमत कम और छोटे की अधिक क्यों है, तो उल्लू बेचनेवाले ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया–"हुजूर, बड़ा केवल उल्लू है और छोटा उल्लू होने के साथ-साथ उल्लू का पट्ठा भी है।"

★

स्वामी केशवानंद

ग्रामोत्थान की साधना में निरत एक दुर्लभ विभूति

रामचंद्र मकासर

लोग इसे 'मरुभूमि का उद्यान' अथवा 'रेगिस्तान का नंदनवन' कहते हैं; प्रशंसाभाव में भरकर इसकी तुलना प्राचीन भारत के तक्षशिला और नालंदा विद्यापीठों से करते हैं। वैसे इस संस्था का नाम है–ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया।

राजस्थान और पंजाब की सीमा पर एक छोटा-सा स्टेशन है, जो पहले चौटाला कहलाता था, फिर संगरिया कहलाया और अब संगरिया मंडी के नाम से मशहूर है। स्टेशन के अहाते से बाहर निकलते ही फर्लांग-भर की दूरी पर विद्यापीठ की इमारतें दिखने लगती हैं। जरा समीप जाने पर हम देखते हैं–सुंदर विशाल भवन, हरे-भरे वृक्ष-कुंज, फूलों की क्यारियां, विशाल जलकुंड और कार्यव्यस्त कार्यकर्ता एवं जिज्ञासु छात्र।

और इन सबके बीच घूम रहा होता है एक व्यक्ति–दीर्घ काया, भगवे वस्त्र, हाथ में बेंत का खुट्टा, आंखों पर चश्मा और लंबी धवल दाढ़ी। उसकी आंखों से विद्यापीठ के एक-एक छात्र, एक-एक कार्यकर्ता, एक-एक पेड़ और एक-एक ईंट के लिए ममत्व बरसता रहता है। देखते ही ऐसा प्रतीत होता है, जैसे प्राचीन काल का महर्षि कुलपति चला आ रहा हो।

ये हैं स्वामी केशवानंदजी, जिन्हें स्वयं संसारत्यागी, वैरागी होते हुए जनता के ऐहिक अभ्युदय के लिए जीवन अर्पित कर दिया है। आइये, इन निकट से दर्शन करें।

शेखावाटी ठिकाने के भगलूणा ग्राम आज से अस्सी वर्ष पहले एक जाट था। कृषि और गोपालन से वह जैसे- अपनी गुजर-बसर करता। संवत १९ (सन १८८३) में उसके यहां बीरमा न का एक बालक जन्मा। भाग्य को इस बालक से न जाने क्यों वैर था। बे बीरमा को न चुपड़ी रोटी मिली, न भौतिक अभावों की भरपाई कर देनेवा पितृ-स्नेह ही अधिक दिन उपलब्ध हु

जरा सोचने-समझने की शक्ति आ ही बीरमा पितरों का उद्धार करने के लि हरिद्वार को पैदल ही चल पड़ा। वहां स संतों की संगति और गंगा माता के पा स्पर्श से विरक्ति के बीज उसके हृदय में अं रित होने लगे। घर लौटकर कुछ वर्ष चरायीं। किंतु अंत में गृहत्याग की

आ ही पहुंची । सब गाय एकत्र कर खलिहान में छोड़ दीं और पग बढ़ा दिये अनंत-अगम के अन्वेषणपथ पर ।

ब्रह्मविद्या के आगार संस्कृत के अध्ययन की लालसा लिये, भूखे-प्यासे पैदल चलकर बीरमा फाजिलका पहुंचा । यहां उदासीन साधु कुशलदासजी की कृपादृष्टि उस पर पड़ी । उन्होंने उसे अपने निकटवर्ती शिष्यों में स्थान दिया । फिर भी विद्या की प्यास बीरमा को दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, हरिद्वार, अमृतसर और क्वेटा आदि कितने ही स्थानों में भटकाती रही । अंत में प्रयाग के कुंभ पर दीक्षामंत्र पढ़कर बीरमा ने स्वामी केशवानंद का नाम पाया । १९०७ में स्वदेशी-आंदोलन के प्रभाव में आकर विदेशी मिलों की बारीक धोतियों के स्थान पर मोटा स्वदेशी वस्त्र पहनना शुरू किया ।

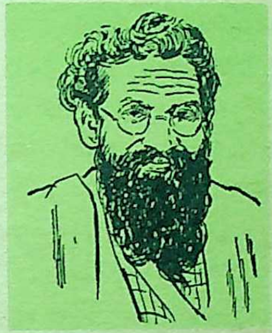

गुरु कुशलदासजी के बाद महंती केशवानंदजी को ही मिली । उन्होंने आश्रम को नये रूप में ढाला । साधु-संतों के अलावा सद्गृहस्थ भी आश्रम से लाभान्वित हों, इस इरादे से वहां 'वेदांत पुष्प-वाटिका' नामक पुस्तकालय की स्थापना की ।

किंतु कहावत है—जिनको कछू न चाहिये वो ही शाहंशाह । और केशवानंदजी ने शहंशाह की ही तबीयत पायी थी । लाखों की जायदाद की गद्दी छोड़कर भ्रमण करने निकल पड़े । बड़ी लंबी-लंबी यात्राएं प्रायः पैदल कीं । आज भी रामेश्वर, कलकत्ता, बलोचिस्तान, कैलाश-मानसरोवर एवं लंका की यात्राओं के बड़े सचित्र और सजीव वर्णन वे सुनाया करते हैं । बाद में उन्होंने बर्मा और हांगकांग की भी यात्रा की, लेकिन पैदल नहीं ।

इन लंबी-लंबी यात्राओं में उन्होंने देशवासियों की, विशेषतः ग्रामवासियों की दशा और उनकी दुःख-दुविधाओं का गहरा प्रत्यक्ष परिचय पाया । इससे उन्हें यह बोधोदय हुआ कि इन असंख्य अभागों की आराधना से ही भगवान की प्राप्ति होगी । स्वातंत्र्य-संग्राम की ओर भी उनकी सहज ही प्रवृत्ति हुई । १९२८ से वे कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेने लगे । फलस्वरूप उन्हें कारावास का दंड भी भोगना पड़ा ।

जीवन की गहराइयों की अनुभूति बढ़ने के साथ दृष्टि और कार्यभूमि भी व्यापक होती गयी । कुछ वर्ष तक उन्होंने अबोहर साहित्यसदन को अपना परीक्षण-स्थल बनाया । उनके प्रयत्न से अबोहर हिन्दी प्रचार का बड़ा गढ़ बन गया । गश्ती पुस्तकालय, संग्रहालय, छात्रावास आदि का संगठन कर आपने उस इलाके को ज्ञानपुष्पों से सुवासित कर दिया ।

मार्च १९२७ में स्वामीजी संगरिया

पधारे । उस समय का संगरिया आज के संगरिया से बहुत भिन्न था । उस समय वहां छः कच्चे कोठे, एक साल (बैरक), दस-बारह नीम-वृक्ष और बीस-पच्चीस विद्यार्थी ही थे । न पानी था, न हरियाली थी । स्वामीजी ने इस सूखे स्थान को सृजनात्मक तप की पुण्यभूमि बनाया । उन्होंने ग्रामोत्थान की सर्वतोमुखी प्रवृत्तियों का अनुष्ठान आरंभ किया । आज उनकी साधना के फलस्वरूप यहां विशाल ग्रामोत्थान विद्यापीठ खड़ा हैं ।

सैकड़ों विद्यार्थी इस विद्यापीठ में शिक्षा पा रहे हैं । यहां के पुस्तकालय में नाना विषयों की हजारों नयी-पुरानी पुस्तकें हैं। यहां के कौतुकालय की कीमत एक लाख रुपये से अधिक कूती जाती है । इसके अतिरिक्त यहां व्यायामशाला, शिल्पशाला, आयुर्वेद-भवन, प्रेस, महिलाश्रम, बाल-वाटिका, बाल-मंदिर तथा अध्यापकों व पंचों के प्रशिक्षण-केंद्र आदि भी पनप रहे हैं ।

अस्सी साल की उम्र में भी स्वामीजी नये-नये स्वप्न देख सकते हैं । वे विद्यापीठ में एक आदर्श कृषि-महाविद्यालय स्थापित करना चाहते हैं । उनकी कल्पना का यह महाविद्यालय विकसित होते-होते पूरा कृषि-विश्वविद्यालय बन जायेगा । स्वामीजी के उर्वर मस्तिष्क में उसके भावी रूप की तस्वीर टंगी हैं—वहां मनों दूध देनेवाली गायें होंगी, झूमते-मदमाते सांड होंगे, तरह-तरह के कलमी फलों के वृक्ष होंगे और देश-विदेश से आये हुए शोधछात्र होंगे—कृषि की वैज्ञानिक आर्थिक समस्याओं के झाव में तल्लीन ।

इस स्वप्न को साकार बनाने के स्वामी केशवानंदजी आठ लाख रुपये करने के लिए निकल पड़े हैं । शारी कष्ट की परवाह न करते हुए, जीप में कर कच्ची ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर वे सै मील की यात्रा करते हैं । कोई चाय ला सामने रखे, तो मुस्कराते हुए कहते "ओ तो जहर है, म्हानै क्यूं मारो हो म्हारी जिदंगी ऊं प्रेम हैं, तो दही ल्या फेर असली बात हैं चंदेरी, तो ल्याओ रिपि चोखा ही द्यो, पांच-पचीस रिपिया म्हारो काम कोनी चालै ।" लेकिन यह मजाक हैं । निर्धन किसान की अंटी निकला नया पैसा भी उनकी नजर में करो रुपये की कीमत रखता हैं ।

राजस्थान में तो लोकसेवकों की पूरी पीढ़ी उनकी तैयार की हुई है ।

इन्हीं शिष्यों और प्रशंसकों के अनु पर स्वामीजी कई वर्ष राज्य सभा सदस्य रहे । किंतु इस वीतराग संन्या के लिए राजनीति कभी सत्ता-संपाद और अधिकारोपभोग का अवसर न अपितु सदा ही सेवा और समर्पण साधन रही है ।

इस प्रकार उनका अदम्य उत्साह, अ संकल्प और संक्रामक आत्मविश्वास ह सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को आदर्शनि और कर्तव्यपरायणता का व्यावहा पाठ पढ़ा रहा है ।

★

बुढ़ापा देकर जवानी लीजिये

...और यह किसी देवता का वरदान नहीं है, वैज्ञानिक औषध का चमत्कार है।

संतराम

कई वर्ष हुए लोगों ने वृद्धों को उनमें बंदरों की गिल्टियां लगाकर और दूसरी कल्पनाओं द्वारा, दुबारा जवान बनाने का यत्न किया था। इन कल्पनाओं को कुछ वैज्ञानिक हास्यास्पद और विलक्षण कहते थे और वास्तव में वे थीं भी असंगत। उनमें से एक भी कभी सफल नहीं हुई। परंतु अब रूमानिया की एक प्रायः अज्ञात वैज्ञानिक ने तरुण बने रहने के संबंध में संसार के सामने जो जानकारी प्रस्तुत की है, वह इतनी चौंका देनेवाली है कि चिकित्सक-जगत सहसा अनुभव करने लगा है कि हमारे मध्य कोई नयी चीज आ गयी है।

उस तारुण्य-दाता वैज्ञानिक का नाम है प्रोफेसर अन्ना अस्लन। वे अभी तक कुंवारी हैं, इकसठ वर्ष की हैं; परंतु देखने में मुश्किल से चालीस की लगती है। उन्होंने एच ३ नाम की एक दवाई तैयार की है। उसका प्रयोग वार्द्धक्य, स्नायु-विकार, रक्तवाहिनी नाड़ियों का कड़ा हो जाना और हृदय के कष्ट-प्रभृति रोगों पर किया है और उनकी यह दवा हमेशा कारगर हुई है।

जो व्यक्ति बुढ़ापे के हाथों में वस्तुतः समाप्त होने जा रहे थे, वे बुखारेस्ट में प्रो० अस्लन की इंस्टिटयूट आफ जेरियाट्रिक्स में फिर से तरुण हो गये हैं। वे न केवल अपने को पहले से जवान ही अनुभव करते हैं, वरन् उनमें से अधिकांश पचास वर्ष की आयुवाले लोगों से अधिक जवान और अधिक उत्साहपूर्ण दिखते हैं; यद्यपि उनमें से अनेक की आयु सत्तर से भी ऊपर है। जिन लोगों को प्रोफेसर ने फिर से तरुण बनाया, उनमें १०० वर्ष के ऊपर के स्त्री और पुरुष थे। वे बुढ़ापे के कारण असहाय हो चुके थे। परंतु उपचार के उपरांत वे अपना सब काम आप करने लगे।

प्रोफेसर अस्लन ने सन १९४६ में अपना चिकित्सालय खोला था। तब से वे १४,७०० रोगियों का उपचार कर चुकी हैं और उनमें से एक में भी उनको विफलता नहीं हुई। उनकी दवा और विटामिन ई तथा पाइनियल ग्रंथियों के निचोड़ों में तुलना करने से पता लगा है कि यह दवा—एच ३—उन दोनों से बहुत बढ़िया है।

ब्रिटेन में बुढ़ापे से उत्पन्न होनेवाले रोगों के जो विशेषज्ञ डाक्टर हैं, वे एच ३ से इलाज करके देखने के लिए सहमत हो गये हैं।

प्रोफेसर अस्लन ने कहा—"मुझसे पूछा जाता है कि इस उपचार के बाद का प्रभाव, बौद्धिक शक्तियों पर क्या होता है ? परंतु यह एक ऐसी बात है, जिसका उत्तर मैं अभी कुछ नहीं दे सकती । इस संबंध में एक ही बड़ा केस, जो मेरे यहां आया, वह एक पैंसठ वर्ष का उपन्यास-लेखक था । बुढ़ापा आने पर उसने लिखना बिलकुल छोड़ दिया था और जीवन में भी उसे कोई दिलचस्पी नहीं रही थी । उपचार के उपरांत उसने फिर लिखना आरंभ कर दिया ।"

औषध एच ३ अभी रूमानिया में ही तैयार होता है । इसकी मांग इतनी अधिक है कि उसे पूरा करने के लिए एक फैक्टरी लगानी पड़ी है । फैक्टरी किसी को बताती नहीं कि इसमें क्या-क्या चीजें पड़ती हैं और यह कैसे बनायी जाती है । किंतु प्रो० अस्लन इसे किसी से छिपाकर नहीं रखतीं । जो भी कोई चाहे, वे उसे इसका फार्मूला बताने को तैयार हैं । उनका पता है—इंस्टिटयूट डि जेरियाट्रिक, बुखारेस्ट ।

इस औषध के प्रयोगों की चर्चा करते हुए प्रोफेसर ने बताया —"इस दवा का प्रयोग मनुष्यों पर करने के बहुत पहले हमने इसे पशुओं पर परीक्षा करके देखा कि कहीं यह कोई हानि तो नहीं करती । बाद में उन बूढ़ों पर प्रयोग किये गये, जिन्होंने स्वयं अपने को इसके लिए प्रस्तुत किया । और इसके परिणाम बड़े आश्चर्यजनक निकले । एक पुरुष को जब हमने एच ३ के इंजेक्शन देना आरंभ किया, तो उसके सिर और दाढ़ी के बाल बिलकुल सफेद थे । सप्ताह के उपचार के बाद उसकी दाढ़ी में काले बाल उगने लगे और कुछ मास में उसकी दाढ़ी और सिर के काले हो गये । जब वह हमारे पास आ था, तब वह चल भी मुश्किल से पाता तीन मास बाद वह वाटिका में कत्ती लगा और जब वह हमारे पास आया तब से अब वह बीस वर्ष छोटा दिखने लगा

अधिकार-पूर्वक आ धमकनेवाले के साथ जो भी परिवर्तन मनुष्य प्राणी आते हैं, प्रो० अस्लन के अनुसार वे मस्ति के छिलके से उत्पन्न होते हैं । इन परिवर्त को रोक देने से बुढ़ापा सचमुच रुक जाये प्रोफेसर की सम्मति में बुढ़ापे का उप ठीक वैसा ही है, जैसाकि किसी दूसरे रोग

प्रोफेसर अस्लन और उनकी संस्था संबंध रखनेवाला प्रत्येक व्यक्ति इस औ का प्रयोग करता है, सुंदर लगने के लि नहीं, वरन् प्रयोग करके देखने के उद्दे से । दस में से आठ मनुष्यों पर यह प्रतिशत सफल रहती है । शरीर या स्नायुजाल के किसी भी अंग में दोष हो, औषध उसे दूर कर देती है । यह नपुसकता, जोड़ों का दर्द, आर्थराइटि वार्द्धक्य आदि में बहुत हितकर है ।

महंगी होने के कारण यह दवा अ सर्वजन-सुलभ नहीं है। प्रोफेसर अस्लन आ करती हैं कि जल्द ही यह दवा गरीब लो को मुफ्त मिलने लग जायेगी, ताकि बुढ़ापे-जैसे बड़े रोग से मुक्ति पा सकें ।

मेरी रुचि की पंक्तियां

जब तुम अपने आपका दान करने के लिए कठिन श्रम करते हो, तब तुम भले हो; लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो, जब तुम अपने लाभ के लिए कठिन परिश्रम करते हो। क्योंकि, जब तुम लाभ के लिए कठिन श्रम करते हो, तब तुम केवल जड़ हो, जो पृथ्वी से लिपटकर उसका स्तन-पान करती है। निश्चय ही, फल जड़ से नहीं कह सकते—"तुम भी हमारे समान बनो—परिपक्व, सरस और दूसरों को अपना सर्वस्व देने को प्रस्तुत।" ऐसा इसलिए है कि फल की आवश्यकता है देना और जड़ की आवश्यकता है लेना।

—खलील जिब्रान (दि प्राफेट) अनु० हरिकृष्ण प्रेमी : प्रेषक – जसवंत अरोड़ा

परिवार एक दायरा अवश्य है, पर इकाई के विकास के लिए यह अनिवार्य है। इसी स्थल विशेष पर व्यक्ति को सच्चे और पवित्र मानवीय चिंतन-प्रसूनों की सुगंधि का आभास होता है। परिवार मानव-विकास का, उसके उत्थान और उत्कर्ष का, एकमात्र स्थान है। यहीं से वह समाज को सच्चे ढंग से देख और परख सकता है। जिस जीवन में किसी की मुस्कान का प्रकाश नहीं, वह जीवन मौत के भयंकर विनाशकारी विस्फोटक तत्वों का आगार मात्र है। सीमा के बिना जीवन उच्छृंखल है। यह सीमा नियम विशेष की हो या किसी के प्यार की, मतलब एक ही है। **—शक्तिपाल केवल (रंग बोलते हैं) प्रेषिका—मोहिनी जैन**

सुख-दुःख, आशा-निराशा तुम्हारी अपनी मनःस्थिति से उत्पन्न होनेवाली चीजें हैं। यह सब तुम्हारे मन की खेती हैं। यह मन बड़ा उपजाऊ है। यह जादूगर है। यह आलादीन का चिराग या कामधेनु है। यह कल्पवृक्ष है। जो इससे मांगो, वह तुम्हें देगा। पर दृढ़तापूर्वक मांगो, अधिकारपूर्वक मांगो। **—रामनाथ 'सुमन' (नयी जिंदगी) प्रेषक— शरद्चंद्र पेंढारकर**

वस्तुतः जब यौवन समाप्त हो जाता है, किंतु यौवन अभी आया नहीं होता; तब अप्राप्त यौवन का सौंदर्य बड़ा ही मनोहर होता है—यौवन का सौंदर्य उसके समान नहीं होता। यौवन में वस्त्राभूषण की चमक-दमक, हास्य-कटाक्ष के मजे, वेणी का झूलना, बांहों की

गोलाई, गले की रेखा और कलाई में व्यक्त होती हैं। युवती का ऐसा विकास, मानो दुकानदारी है। हम जिन आंखों से उस सौंदर्य को देखते हैं, उनमें भी विकृति होती है। जि सौंदर्य का उपयोग करने में इंद्रियों के साथ चित्त के भाव का स्पर्श नहीं होता, वही सौ वास्तव में सौंदर्य है। **–बंकिमचंद्र (रजनी) प्रेषक–कृष्ण भा**

देश को बदनाम किया है राजनीति के उन पुजारियों ने, जो अपने पद और प्रति के लालच में पड़कर नित्य न्याय का गला घोंटा करते हैं। गुण के स्थान पर संबंधों को म देते हुए, वे जरा भी नहीं हिचकते और स्वार्थ-सिद्धि में नयी पौध का भविष्य अंधकार बनाते रहते हैं। देश को बदनाम कर रखा है उन आधुनिक चारणों और चाटुकारों ने, जो न नयी योजनाओं की सृष्टि में भ्रष्टाचार को पनपने देते हैं। देश को बदनाम करने की जि दारी उन तमाम लोगों पर है, जो समाज के पीड़ित वर्गों का ध्यान न रखकर उसे जड़ निष्प्राण बनाते जाते हैं। **–भगवतीप्रसाद वाजपेयी (टूटा टी-सेट) प्रेषक–विलसन डि**

धैर्य रखो। सुख-दुःख, संयोग-वियोग हमारे जीवन में धूप-छांह की तरह आते हैं और उन्हें सहन करने के लिए बाध्य होते हैं। ऐसी परिस्थिति में धैर्य के अतिरिक्त और चारा क्या है। यद्यपि वर्तमान अतीत का ही फल होता है और वर्तमान पर भविष्य आधारित है है। फिर भी हमें अतीत से इतना चिपटे नहीं रहना चाहिये कि उसे वर्तमान का रूप रहें। बल्कि अतीत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान ऐसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिये, जि भविष्य उज्ज्वल बने। **–जगन्नाथप्रसाद मिश्र (परिधि से परे) प्रेषिका–कु० ममता**

पुरुष और प्रकृति में विरक्ति हो जाये, तो संसृति का कार्य कैसे चले? इस विर को अनुरक्ति में परिवर्तन करना, यही नारी की सर्वप्रथम तपस्या थी। उसकी परिपूर्ण बिना वह सृष्टि का सृजन नहीं कर सकती, मातृत्व का स्वर्गीय आनंद नहीं पा सकती अपने व्यक्तित्व की पूर्णता नहीं पा सकती थी। ...... मेनका इसी चिरंतन की ही प्रतिनिधि थी। **–अनंतगोपाल शेवड़े (मंगला) प्रेषक–जगदीशचंद्र**

प्रेषकों से निवेदन

कृपया इस स्तंभ के लिए सामग्री केवल नवनीतम प्रकाशित गद्य पुस्तकों से ही भेजें। रोचक पंक्तियों पर स्वल्प पारिश्रमिक दिया जाता है। –संपादक

समय का वह मूल्य नहीं रहा

सोहनलाल बड़जात्या

बात सन १९२८ की है । मुझे कलकत्ता के नेशनल बैंक में १ लाख रुपये जमा कराने थे । जब मैं बैंक में पहुंचा, तो दो बजकर पांच मिनिट हो रहे थे । क्लर्क ने कहा—"टाइम हो गया ।" उसके इन्कार करने पर मैं चीफ कैशियर से मिला । उसने कहा कि मैनेजर साहब की इजाजत लाने पर रुपया लिया जा सकता है, वरना नहीं ।

इस पर मैं मैनेजर साहब के पास गया और उनसे कैशियर को इजाजत लिखने के लिए निवेदन किया । मैनेजर एक कागज के टुकड़े पर इजाजत लिख देते, यही काफी था । मेरी बात सुनकर वे कुर्सी से उठे और मेरे साथ अपने कमरे के बाहर आये । शायद वे कागज पर न लिखकर स्वयं ही कैशियर के पास मेरे साथ चल रहे हैं—मैंने सोचा । पर मेरा यह अनुमान गलत निकला । कमरे के बाहर दीवार-घड़ी की तरफ इशारा करके उन्होंने मुझसे पूछा—"कितना बजा है ?"

"दो बजकर दस मिनिट हो रहे हैं ।"

इस पर उस अंग्रेज मैनेजर ने पूछा—"क्या दो बजे जानेवाली गाड़ी के लिए दस मिनिट बाद स्टेशन पहुंचने से ट्रेन मिलेगी ?"

मैंने कहा—"साहब, यह ट्रेन या स्टेशन नहीं है, बैंक है और मैं तो रुपया देता हूं, लेता तो नहीं ।" मैनेजर साहब ने ताकीद के साथ कहा – "हमें समय की पाबंदी रखनी चाहिये ।" और अपने कमरे को चले गये ।

समय की पाबंदी का गुर अंग्रेज अपने साथ ले गये । आज जो हाल है, उसका एक ताजा और सच्चा किस्सा यह है :

हाल ही में जयपुर में चैंबर आफ कामर्स की ओर से एक स्वल्पाहार का आयोजन था । समय था शाम के पांच बजे का । उसमें मुख्य अतिथि थे एक मिनिस्टर साहब । मैं ठीक पांच बजे पहुंच गया, पर उस समय वहां मुश्किल से पांच-सात सज्जन ही आये थे । साढ़े पांच तक काफी समुदाय एकत्र हो गया । मेजों पर चाय-काफी मेवा-मिठाई आदि सजाये हुए रखे थे । देखते-देखते छः बज गये, पर मंत्री महोदय के शुभागमन का कोई चिन्ह नहीं था । मैंने सोचा, चाय-काफी ठंडी हुई जा रही है और चैंबर के अधिकारियों से कहा कि चायपानी शुरू किया जाये । जवाब मिला—"मुख्य अतिथि के आये बिना यह कैसे हो सकता है ?" पर मेरे कहने का यह सुफल अवश्य हुआ कि मिनिस्टर साहब को फोन किया गया । उत्तर मिला—"साहब रवाना हो गये हैं, रास्ते में हैं ।" आखिर साढ़े छः बजे वे तशरीफ लाये । उस समय मुझे रह-रहकर यही महसूस हुआ कि आज समय का वह मूल्य नहीं रहा ।

*

तीन कविताएं

अंधेरा हमें बुलाता है

कभी-कभी
अंधेरी रात भी
हमें बहुत सुहाती है !
घनी काली आंखों-सी
कालिमा लुभाती है !

कभी-कभी
मौत के बीच
जीवन का विश्वास उभरता है ।
वक्त बहुत करता है कोशिश
मगर आदमी नहीं मरता है ।

कभी-कभी
अंधेरा रोशनी से अच्छा है,
क्योंकि वह हमें लड़ना सिखाता है;
मौत के फन पर बैठकर
आदमी जिंदगी को जीत कर लाता है !

आओ, अंधेरे में बढ़ें,
अंधेरा हमें बुलाता है –
"चीर दो मेरी छाती,
प्रकाश के पारावार फूटेंगे,
किरनों के रंगीन तार छूटेंगे !"

विश्वास जब सो जाता है,
लोग उसे 'अंधेरा' कहते हैं ।
जब वह जागता है,
रोशनी की धाराओं में बहते हैं !

—परदेशी

सागर-मन

तुम्हारे जाने के बाद,
अखंड लय-पूरित अस्तित्व-
सागर-सा मेरा मन,
अब,
अपने विशिष्ट आकारों से,
गंध से अंकित,
अपनी ही लयों से घिरे-घिरे,
जाने कितने क्षणों के,
अनेक द्वीपों से बस गया है,
यह मेरा सागर-मन...!

—ज्योत्स्ना

मुरझाया मनीप्लांट

तुम समुंदर
जिसका एक ही किनारा दिखता।
जामबंती-सी दृष्टि
कहीं-कहीं टापू बिखरे पड़े,
दूसरा छोर
भगवान की तरह अदृश्य ।
मैंने एटलस के सहारे परिक्रमा की
और
आंखों में छिपाने की शपथ
आंचल से ढंक दी !
जहाज, मोटरबोट, किश्ती की तरह
मैं भी एक
डोंगी बंधी हूं ।

—आ

सफलता में विश्वास रखिये

जरूरत है डर और आशंकाओं से ऊपर उठकर अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करने की—यदि आप यह कर सकते हैं, तो सफलता सुनिश्चित है।

प्रमोदकुमार शर्मा

अमरीका के सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानवेत्ता नेपोलियन हिल एक दिन अपने कार्यालय में बैठे थे कि एक व्यक्ति उनसे मिलने आया। अपनी जेब से उन्हीं की लिखी पुस्तक 'आत्मविश्वास' की एक प्रति निकालकर उन्हें दिखाते हुए उसने पूछा—"इस पुस्तक के लेखक आप ही हैं न ?"

"हां, मैंने ही यह पुस्तक लिखी है ।" हिल ने उत्तर दिया ।

"मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं ।" सामने पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए उस व्यक्ति ने कहा । और फिर इत्मीनान से अपनी कहानी सुनाने लगा ।

"आज से कुछ वर्ष पूर्व मैं एक सुखी मनुष्य था । अपने छोटे-से व्यापार से सुखपूर्वक जीवन-यापन करने योग्य पर्याप्त आय मुझे हो जाती थी। तभी महायुद्ध छिड़ गया। और लोगों की देखादेखी मैंने भी अपनी छोटी-सी पूंजी एक दुस्साहसपूर्ण व्यापार में लगा दी और यही मेरे जीवन की भयंकरतम भूल सिद्ध हुई। घाटे-पर-घाटा उठाकर कुछ ही दिनों में मैं एकदम कंगाल हो गया। मेरा पुराना व्यवसाय तो पहले ही चौपट हो चुका था । अब मेरे पास इतने पैसे भी न थे कि दुबारा उसी काम को शुरू कर सकता । नौकरी न हो सकी । आखिरकार मैं इतना निराश हो गया कि पत्नी-बच्चों का मोह त्याग, मैंने आत्महत्या करने का फैसला कर लिया । तभी अकस्मात् आपकी यह पुस्तक मेरे हाथ पड़ गयी । इसे पढ़ने के बाद मुझे लगा कि शायद इसका लेखक मेरी कुछ सहायता कर सकता है । और मैं आपके पास चला आया ।" इतना कहकर वह व्यक्ति चुप हो गया ।

हिल कुछ देर तक सोचते रहे । फिर बोले—"आपकी कहानी सुनकर और उस पर विचार करके मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता ।"

यह सुनकर उस व्यक्ति के चेहरे पर से रहा-सहा आशा का भाव भी लुप्त हो गया।

"लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं, जो आपकी सहायता कर सकता है ।" हिल ने एक क्षण रुककर कहा ।

"ईश्वर के लिए आप मुझे उससे मिला दीजिये ।" अधीरतापूर्वक वह बोला ।

हिल अपनी कुर्सी से उठे और उस व्यक्ति को साथ ले एक दूसरे कमरे में गये। उस कमरे में कुछ कुर्सियों के अलावा और कोई न था। जिस दरवाजे से वे घुसे थे, उसके सामने की दीवार पर एक परदा पड़ा था।

हिल ने उस व्यक्ति को परदे के सामने खड़ा कर दिया। फिर बड़े नाटकीय ढंग से वह परदा हटाकर वे बोले—"यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारी सहायता कर सकता है। इसके अलावा संसार में कोई भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता।" परदे के पीछे एक आदमकद शीशा लगा था, जिसमें अब उस व्यक्ति को अपना ही प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था।

कुछ देर तक वह व्यक्ति शीशे में अपने आपको देखता रहा और फिर एक भी शब्द बोले बिना दृढ़ कदमों से कमरे के बाहर चला गया।

कुछ दिनों बाद एक दिन जब श्री हिल अपने दफ्तर जा रहे थे, तो उन्हें वही व्यक्ति रास्ते में मिल गया। एक बार तो वे पहचान भी नहीं सके कि यह वही व्यक्ति है, जो एक दिन आत्महत्या करने के लिए तैयार होकर उनसे मिलने आया था।

"मैं आपके पास ही आ रहा था," उसने कहा—"मैं उस दिन आपसे सीखे पाठ के लिए आपका बड़ा आभारी हूं। आपके पास जब मैं गया, तो एक नया विश्वास मुझमें अंकुरित हो चुका था। मुझे उसी दिन तीन हजार डालर प्रतिवर्ष की एक नौकरी मिल गयी और आज मेरा मालिक मुझसे बहुत प्रसन्न है। एक दिन जब आपको मेरा भी न होगा, मैं आऊंगा, और अपने क्षरों से युक्त एक खाली चेक आपके करूंगा, जिसमें आप जितनी चाहें भर सकेंगे। उस दिन मैं एक सफल होऊंगा।"

जिस व्यक्ति की कहानी ऊपर गयी है, वह आज अमरीका की एक सिद्ध व्यापारिक संस्था का अध्य जिसका व्यापार मेक्सिको से कनाडा फैला हुआ है।

वह कौन-सी शक्ति थी, जिसने मृत्यु के द्वार से खींचकर सफलता के सन पर आसीन कर दिया? उसका विश्वास! आप स्वयं ही अपनी सह कर सकते हैं—दूसरे नहीं। जिस दिन अपने भीतर यह विश्वास उत्पन्न कर सफल हो जायेंगे, संसार की कोई आपके मार्ग में रुकावट नहीं बन सक उस व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकता, जिसे अपना काम करने की क्षमता पर विश्वास है।

"असंभव शब्द कायरों के शब्दको मिलता है। यदि आल्प्स ने रास्ता न तो मैं उसे मिटा दूंगा।" कितना विश्वास भरा है इन शब्दों में। और हास साक्षी हैं कि आल्प्स नेपोलियन रास्ता नहीं रोक सका था। रोक भी सकता था, वह महान सेनानायक उत्साह तथा आत्मविश्वास से पूर्ण जो

बात केवल नेपोलियन की ही नहीं

संसार के किसी भी महापुरुष के जीवन पर हम दृष्टिपात करें, उन सबको अपने पूरा-पूरा विश्वास था। विपत्ति के पहाड़ों को भी उन्होंने अपने आत्मविश्वास के बल पर चूर-चूर कर डाला।

यह आत्मविश्वास क्या हैं ? क्या हममें यह उत्पन्न नहीं हो सकता ?

हममें बहुधा अपनी सामर्थ्य, अपनी शक्तियों और योग्यता पर अविश्वास करने की आदत पड़ जाती हैं। इस अविश्वास का मूल कारण भय है। भय विश्वास का सबसे बड़ा शत्रु हैं। कार्य शुरू करने से पहले हम सोचने लगते हैं–"अरे ! यह तो बड़ा मुश्किल काम है। इसमें सफल होना बहुत कठिन हैं। अगर हम असफल हो गये, तो लोग क्या कहेंगे ?"

हमारा यह भय पंचमुखी है –

१–असफलता का भय ।

२–दरिद्रता का भय ।

३–दूसरों की आलोचना का भय ।

४–वृद्धावस्था और रोग का भय ।

५–मृत्यु का भय ।

ये पांचों ही भय कितने निराधार हैं–आइये, इन पर विचार करें :

(१) केवल उसी व्यक्ति को कभी असफलता का सामना नहीं करना पड़ता, जो सफलता प्राप्त करने की कोशिश ही नहीं करता। किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन-चरित्र का अध्ययन कीजिये, आप देखेंगे कि कभी-न-कभी ऐसे अवसर उसके जीवन में आये थे, जब उसे पराजित होना पड़ा था। पर इस अस्थायी पराजय को उसने असफलता नहीं माना और हिम्मत हारकर नहीं बैठा। अतः अपने मन में निश्चय कीजिये कि मैं अस्थायी रूप से पराजित हो सकता हूं, पर असफल नहीं। और आप असफलता के भय से मुक्त हो जायेंगे।

(२) दरिद्रता के भय से प्रायः हम सभी पीड़ित रहते हैं। आज अर्थ-पूजा का युग हैं। किंतु क्या हम नहीं जानते कि रूस के भूतपूर्व भाग्य-विधायक स्तालिन ने एक मोची के घर जन्म लिया था और आज रूस के सर्वेसर्वा ख्रुश्चोव ने एक खान-मजदूर के रूप में अपना जीवन शुरू किया था। अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के 'झोंपड़ी से राष्ट्रपति-भवन तक' पहुंचने ने तो एक कहावत का रूप धारण कर लिया है। अपने देश के मारवाड़ी समुदाय के बारे में तो यह प्रसिद्ध है कि उसके कितने ही सदस्य, जो आज सुप्रसिद्ध उद्योगपति हैं, अपने घर से केवल एक लोटा लेकर चल पड़े थे। फिर दरिद्रता से भय क्यों ? हां, हममें यह आत्मविश्वास होना चाहिये कि दरिद्रता हमारा मार्ग नहीं रोक सकेगी। दरिद्रता तो हमारे चरित्र-रूपी कुंदन को तपानेवाली अग्नि है, जिसमें से हम खरा सोना बनकर बाहर निकलते हैं।

(३) सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक **कोपर्निकस** ने जब यह सिद्ध किया कि सूर्य सारे सौर-मंडल का केंद्र है और हमारी पृथ्वी उसके चारों ओर चक्कर काटती है, तो उसे जबर्दस्त

विरोध का सामना करना पड़ा। सुकरात को अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण ही जहर का प्याला पीना पड़ा। अपने विचारों के प्रतिपादन के कारण ही ईसा को सूली पर चढ़ना पड़ा, गांधीजी को गोली का शिकार होना पड़ा। जेम्स वाट ने जब भाप का इंजिन बनाने की बात कही, तो लोगों ने उसकी खिल्ली उड़ायी। किंतु क्या उन सबने लोगों की आलोचना और विरोध के कारण अपना मार्ग छोड़ दिया? यदि ये सभी महापुरुष आलोचनाओं से डरकर खामोश हो जाते, या अपना काम बंद कर देते,तो हम आज भी पृथ्वी पर आदिम मानव की स्थिति में रह रहे होते। केवल इतना निश्चय कीजिये कि आप सही मार्ग पर चल रहे हैं, और फिर लोगों की आलोचना आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।

(४) वृद्धावस्था तथा रोग का भय दरिद्रता के भय से ही संबद्ध है। यह भय अविश्वास से ही पैदा होता है। हमें इस बात का विश्वास नहीं होता कि वृद्धावस्था में अथवा रोग-पीड़ित होने के कारण जब हम धनोपार्जन के योग्य न रहेंगे, तो रोटी-कपड़े की समस्या हल करने में कौन हमारी सहायता करेगा।

यहीं पर आत्मविश्वास का दूसरा पहलू उदित होता है। आज जब आप दूसरों के प्रति–अपने परिवार के प्रति, अपने समाज के प्रति, अपने राष्ट्र के प्रति–अपने कर्तव्य पूरे कर रहे हैं, तो कोई कारण नहीं कि आवश्यकता पड़ने पर दूसरे आपके प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा न करें। अतः पर विश्वास करने के साथ-साथ पर भी विश्वास कीजिये। अपने बच्चों अपने समाज को, हम आज जो कुछ उसका प्रतिदान हमें अवश्य मिलेगा। दृढ़ विश्वास के साथ अपना कर्तव्य करते जाइये, आगे की चिंता स्वयं ही हो जायेगी।

(५) मृत्यु का भय एक विश्व भय है। साथ ही यह भी सत्य है कि चीजों से मनुष्य को डरना चाहिये, मृत्यु तो सबसे पीछे की चीज है। सच पू तो हम मृत्यु से इतना नहीं डरते, क हम जानते हैं कि वह तो आनी ही है अपने समय पर ही आनी है। मृत्यु का अज्ञात का भय है।

जो पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं तो इस भय से मुक्ति पाने का बड़ा साधन प्राप्त है। क्योंकि दूसरा जन्म आपके इस जन्म के कर्मों के अनुसार हो अपने कर्म सुधारिये, दूसरा जन्म आप सुधर जायेगा।

और जिनका विश्वास दूसरे जन्म नहीं है, उन्हें तो केवल अपने इस जीवन उज्वल बनाने की चिंता होनी चाहि

अब जबकि आपने इन भयों से पा ली है, तो आपके आत्मविश्वास के की सभी बाधाएं दूर हो गयी हैं। साहसपूर्वक अपना कार्य प्रारंभ कर हैं। अपनी सफलता में आपका वि मार्ग की सभी रुकावटों को दूर कर

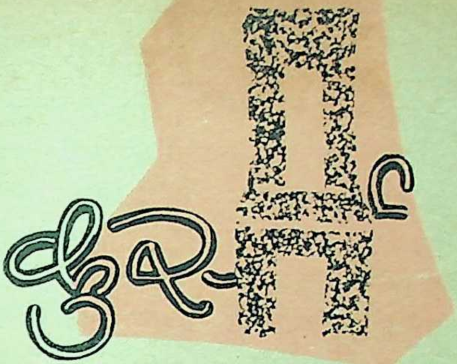

कुर्सी

डा० महीपसिंह

चंदनसिंह कुर्सी पर बैठा हुआ था, पर उसे लग रहा था, वह कुर्सी पर नहीं, बल्कि कुर्सी ही उस पर बैठी हुई है । इतनी बड़ी कुर्सी में उसका सारा व्यक्तित्व ही खो गया है और सैकड़ों लोग उस कुर्सी को चारों ओर से घेरे हुए उस पर पत्थर-पर-पत्थर फेंके जा रहे हैं, जिनसे अपने को बचाता हुआ वह कभी इधर झुकता है, कभी उधर ।

इस कुर्सी पर बैठे अभी उसे छः महीने भी नहीं गुजरे थे, पर यह हुआ क्या ? हर पराया अपना बनता जा रहा था और हर अपना बेगाना होता जा रहा था । पराये अपने न भी बनें तो क्या बात है ! पर भला अपनों को कौन छोड़ता है ? और आदमी दुनिया में बहुत कुछ पाना ही क्यों चाहता है ? जंगल की बादशाहत भी वह ले ले, यदि उसे भरोसा हो कि उसके अपने उसके पास होंगे । पर अपनों की तरेरी हुई आंखें कहां देखी जाती हैं ? उस समय तो मोतियों जड़ा मुकुट भी कांटों का बोझ-सा लगने लगता है ।

चंदनसिंह के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ । वह कंपनी का टूरिंग एजेंट था—बड़ा मिठबोला, बड़ा बातूनी और हर किसी के काम के लिए हर समय तैयार । वैसे तो वह हमेशा दौरे पर ही रहता । महीने-डेढ़ महीने के बाद दस-बीस दिन के लिए आता और फिर किसी तरफ निकल जाता । सेठी एंड कंपनी का मशीनों का कारोबार था । कंपनी के पास एक दर्जन से ज्यादा एजेंट थे, पर चंदन को लोग चंदनसिंह चक्रवर्ती कहते थे । जहां किसी एजेंट से कोई काम न बनता, जहां किसी एजेंट को अपेक्षा से कम आर्डर मिलते, जहां किसी पार्टी के पास कंपनी का पेमेंट रुक जाता और पार्टी झंझट करने पर उतर आती, वहां चंदनसिंह को भेज दिया जाता । हिन्दुस्तान-भर के डीलर चंदनसिंह के दीवाने थे । लोग सेठी एंड कंपनी को कम, चंदनसिंह को ज्यादा जानते थे । जो डीलर आर्डर न देता हो, चंदनसिंह उससे मनचाहा आर्डर ले आता । जिस डीलर की तरफ पेमेंट रुक गया हो, चंदनसिंह उससे पेमेंट ले आता । डीलर चंदनसिंह के हंस-हंस पड़ते हुए चेहरे को देखकर

गदगद हो जाते। उसके लतीफे सुन-सुनकर लोटपोट हो जाते और उसकी लुभावनी बातचीत में सेठी एंड कंपनी के प्रति अपनी सारी शिकायतों को भूल जाते।

एक बार सेठी एंड कंपनी के मालिक सरदार सुजानसिंह सेठी के पास बाहर के दुकानदार का एक बड़ा विचित्र पत्र आया। उसने लिखा था—"आपके एक एजेंट को मैंने तीन प्रिंटिंग मशीनों का आर्डर दे दिया है। कृपा करके उस आर्डर को रद्द कर दीजिये। इन मशीनों की मुझे बिलकुल जरूरत नहीं है। पता नहीं, मैंने आपके एजेंट को आर्डर क्यों दे दिया। सचमुच मुझे इन मशीनों की जरूरत नहीं है।"

इस पत्र पर सेठी साहब हंसते-हंसते दोहरे हो गये। उन्होंने अपने सारे स्टाफ के सामने चंदनसिंह को सुनाते हुए कहा—"यह तो ऐसा एजेंट है कि बजाज के यहां चारा काटने की मशीनें बेच आ सकता है और सीमेंट की दुकान पर गेहूं का सौदा कर आ सकता है।"

उसी चंदनसिंह को अब क्या हो गया है? वह चंदनसिंह, जो अपने साथियों के बीच हीरो माना जाता था। वह चंदनसिंह, जो हर किसी के काम के लिए हर समय तैयार रहता था। वह चंदनसिंह, जिसकी पत्नी लंबे दौरे के दिनों को उन थोड़े-से सुख से लबालब-भरे दिनों की प्रतीक्षा में काट देती थी, जब वह वापस आता था। वह बंगाल का दौरा करके आता, तो बच्चों के लिए रसगुल्ले और पत्नी के लिए कलकत्ते की न्यू मार्केट से कट डिजाइन के पेटीकोट ले आता। वह दक्षिण के दौरे से नारियल और कांजीवरम की आता। वह पंजाब के दौरे से वापस तो अमृतसरी पापड़-बड़ियों का ढेर लाता। सभी उससे खुश थे। उसके खुश थे, उसके सहकारी खुश थे, पत्नी खुश थी, उसके बच्चे खुश और ज्यादा उसके मालिक सेठी साहब

परंतु अब? अब चंदनसिंह को था उससे कोई खुश नहीं है। सभी कतराते हैं। सभी उसकी निंदा करते सभी उस पर तरह-तरह के व्यंग्य- वर्षा करते हैं।

चंदनसिंह अपनी कुर्सी की ओर रहा था। उसकी कुर्सी साधारण से दुगुनी चौड़ी थी। उसकी कुर्सी पर बढ़िया कुशन लगा हुआ था। उसकी की दोनों बाहों पर मुलायम रेक्सिन गद्दियां लगी हुई थीं। उसकी कुर्सी की कुर्सी की तरह रिवाल्विंग थी। दफ्तर में उस-जैसी बस एक ही और वह थी सेठी साहब की। कृपा से बहुत जूनियर होते हुए भी सिंह को यह कुर्सी मिल गयी थी।

सेठी एंड कंपनी के बीस वर्ष के मैनेजर श्यामसिंह ने एकाएक अपना पत्र देकर सभरवाल ब्रदर्स को लिया था। सेठी साहब ने सुना, तो बक्के रह गये। पिछले बीस साल से सिंह इस कंपनी की मैनेजरी के पद को हुए था। सारी खरीद-फरोख्त उसी के

थी । बड़ी-बड़ी फैक्टरियों से मशीनें वही मंगाता । सरकार से इंपोर्ट लाइसेंस वही लेता । इंपोर्ट लाइसेंसों को ब्लैक से खरीदने का इंतजाम वही करता । विदेशों से मशीनें मंगवाने का प्रबंध वही करता । किस भाग में किस एजेंट को भेजना है, इसका फैसला वही करता । देश के किस कोने के किस डीलर से क्या हिसाब-किताब है, इसका पूरा ज्ञान उसी को होता । सेठी एंड कंपनी का लाखों रुपयों का कारोबार श्यामसिंह पर ही तो टिका था । सेठी साहब तो ग्यारह बजे दफ्तर आते और चार बजे उठकर चले जाते। दफ्तर में वे अपने एयर कंडीशंड कैबिन में बैठते । वहीं श्यामसिंह उन्हें जरूरी कागजात दिखाता और उनके हस्ताक्षर लेता । वहीं वह उनके सामने एजेंटों का टूर-प्रोग्राम रखता, इंपोर्ट की योजना रखता, इन्कम टैक्स अधिकारियों को घूस पिलाने, व्यापार मंत्रालय के किसी अधिकारी को रिश्वत देने और भारत-भर में फैले हुए खास-खास डीलरों को कुछ उपहार भेजने की स्कीमें वही उनके सामने रखता । सेठी साहब आंख मूंदकर अपनी स्वीकृति की मोहर उस पर लगा देते । सारा व्यापार श्यामसिंह के इशारों पर चलता था । स्टाफ के किसी भी आदमी को, वह जब चाहता रखता, जब चाहता निकाल देता । सेठी साहब तक किसी की फरियाद भी न पहुंच पाती ।

वही श्यामसिंह जब एक ही रात में अपना मालिक बदल बैठा, तो सारे मशीनरी बाजार में सनसनी फैल गयी । लोगों ने कहा सेठी एंड कंपनी के अब बुरे दिन आ गये हैं । श्यामसिंह के बगैर तो हफ्ते-भर में उसका दिवाला निकल जायेगा । सभरवाल ब्रदर्स ने उन्हें करारी चोट दी है ।

और सचमुच ही यह चोट बहुत करारी थी । सेठी साहब को अपने व्यापार का ज्ञान एक साधारण क्लर्क से भी कम था । सेठी साहब ने श्यामसिंह को समझाने की बहुत कोशिश की । उसका वेतन पांच सौ से आठ सौ कर दिया । पर श्यामसिंह नहीं माना। सभरवाल ब्रदर्स ने उसे छः सौ मासिक वेतन और दो आने की पत्ती देना स्वीकार किया था । श्यामसिंह ने बस एक ही बात कही—"सेठी साहब, पिछले बीस साल से कमा-कमाकर मैं आप ही को देता आ रहा हूं । आप हजारपति से लखपति और लखपति से करोड़पति बनते चले गये, पर मैं तो पांच सौ रुपल्ली का नौकर ही रहा । क्या इस लाखों रुपये के मुनाफे पर मेरा कोई हक नहीं ? सभरवाल ब्रदर्स ने मुझे दो आने की पत्ती दी है, आप मुझे चार आने का हिस्सेदार बनाइये, तो मैं आगे भी आपके ही पास टिका रहूं ।"

सेठी साहब का सिर चकरा गया । चार आने की हिस्सेदारी ? उन्हें श्यामसिंह की बातों में वह गर्व झलकता हुआ दिखाई दिया, जिसके प्रकाश में कोई भी पढ़ सकता था—"आपका काम मेरे बगैर नहीं चल सकता । आपको मेरी बात माननी ही पड़ेगी ।"

सेठी साहब इस शर्त को नहीं मान सके । श्यामसिंह उन्हें छोड़ गया ।

सेठी साहब के सामने प्रश्न था—अब मैनेजर किसे बनाया जाये ? सेठी एंड कंपनी की मैनेजरी बड़ी आकर्षक वस्तु थी । पांच-छ: सौ के वेतन के अतिरिक्त तीन-चार सौ रुपया महीना ऊपर से बन जाना, कोई बड़ी बात नहीं थी । कौन नहीं जानता था कि श्यामसिंह ने इसी ऊपरी कमाई से तीस हजार रुपया लगाकर अपना मकान बनवाया था । कंपनी का चीफ एकाउंटेंट उसके लिए इच्छुक था । बाहर के भी बहुत-से लोग अपने आवेदन-पत्र ले-लेकर सेठी साहब के पास पहुंच रहे थे । उनमें अनुभवशाली व्यक्ति थे । उनमें आकर्षक व्यक्तित्ववाले लोग भी थे । परंतु उनमें से एक भी सेठी साहब को प्रभावित न कर सका और एक दिन लोगों ने दुनिया के आठवें आश्चर्य की तरह सुना—"सेठी साहब ने चंदनसिंह को मैनेजर बना दिया है ।"

जिस दिन चंदनसिंह पहली बार मैनेजरी की कुर्सी पर बैठा, उसे लगा, उस चौड़ी कुर्सी के साथ वह भी कुछ चौड़ा हो गया है । दुबले-पतले चंदनसिंह ने जब कुर्सी की बाहों पर अपनी बाहें टिकायीं, तो उसे लगा उसके कंधे बड़े चौड़े हो गये हैं । उसके सामने की मेज इतनी चौड़ी थी कि उस किनारे पर रखी हुई किसी चीज को उठाने के लिए उसे अपनी जगह से थोड़ा उठना पड़ता था । उसकी मेज पर फाइलों के ढेर के अतिरिक्त दो टेलिफोन रखे हुए थे, जिनमें से एक-न-एक की घंटी सदा बजती ही रहती थी ।

उस कुर्सी ने चंदनसिंह को गौरव दिया, उसे बहुत ऊंचा उठा दिया । इतना जहां उसकी हंसी गायब हो गयी, जहां लतीफेबाजी छूटे हुए पटाके की तरह गयी, जहां उसके हर किसी के लिए पड़नेवाले पैर मोटी-मोटी जंजीरों में दिये गये ।

अब चंदनसिंह के सामने तीस आदमियों का स्टाफ था, जिन्हें काम और जिनसे काम लेना, उसकी जिम्मे थी । चंदनसिंह के जिम्मे लाखों रुपये चलता हुआ कारोबार था, जो श्याम के जाने से इस तरह ठिठक गया था, पचास मील की रफ्तार से जाती हुई ट्रेन की जंजीर खींच ली गयी हो । चंदन को वह सारा काम समझना था, कारो को सुचारु रूप से चलाना था और बड़ी बात उसे सेठी साहब के उस वि की रक्षा करनी थी, जो उन्होंने उसे जर बनाकर दरसाया था ।

दुकान दस बजे खुलती थी, पर सिंह आठ बजे ही आकर जरूरी पत्रों मजमून बनाना शुरू कर देता । श्याम व्यापारिक पत्र लिखने में बड़ा माहिर सारे बाजार में उसकी ड्राफ्टिंग की थी । दुकानदार उससे एक पत्र की ड्रा कराने के लिए घंटों उसका मुंह देखा थे । मगर चंदनसिंह ने तो कभी ऐसे लिखे नहीं थे । अब वह श्यामसिंह के पत्रों की पुरानी फाइल की मदद से पत्रों के ड्राफ्ट बनाता । दुकान सात ब हो जाती, पर चंदनसिंह नौ-नौ दस-द

तक बैठा इन्कम-टैक्स या सेल्सटैक्स का हिसाब जांचता रहता और कई बार तो जरूरी फाइलें घर भी ले जाता ।

उस दिन उसे घर पहुंचने में ग्यारह बज गये । वंती दरवाजा खोलते ही हुसक पड़ी—"घर आने का यह वक्त है ? मां की तबीयत कितनी खराब हो गयी थी, तुम्हें टेलिफोन-पर-टेलिफोन करवाये, पर कोई जवाब नहीं। वह तो पड़ोस का लड़का कमल, डाक्टर को बुलाकर ले आया, नहीं तो पता नहीं क्या हो जाता !"

चंदनसिंह ने अपना बैग मेज पर टिकाया और पलंग पर लेटी अपनी सास की ओर बड़ी चिंता-भरी नजर से देखा ।

"कल सुबह इन्कम टैक्स की पेशी है । स्टेटमेंट पूरा तैयार नहीं था । उसी को तैयार कराने में इतनी देर हो गयी......और शाम को तो इतनी आंधी आयी थी, उसके कारण तीन-चार घंटों के लिए टेलिफोन की लाइन खराब हो गयी थी ...... क्या हो गया था ?"

"होना क्या है ?" वंती ने खीझते हुए कहा—"दिल की बीमारी है, कभी भी खतरनाक हो सकती है । शाम को एकाएक धड़कन बहुत बढ़ गयी । लगा अभी कुछ अनिष्ट हो जायेगा । घबराहट से मेरे तो हाथ-पैर फूल गये । तुम्हें टेलिफोन करवाया । इतना समय ही नहीं था कि किसी को तुम्हारे पास भेजती, वह तो कमल ने झटपट डाक्टर का इंतजाम किया । डाक्टर ने आकर इंजेक्शन दिया, गोली दी; तब जाकर धीरे-धीरे धड़कन कुछ कम हुई ।"

चंदनसिंह ने सास की ओर देखा । वंती बोली—"अभी-अभी जरा आंख लगी है ।"

पिछले आठ-दस महीनों से चंदन की सास बेटी के घर आयी हुई थी । अपने छोटे-से शहर में उसकी दिल की बीमारी का ठीक से इलाज नहीं हो पा रहा था । वंती ने मां को अपने पास बुलाकर इलाज कराने के लिए कई पत्र लिखे । चंदनसिंह ने खुद अनेक पत्र लिखे कि इस बड़े नगर में किसी हृदय-रोग के विशेषज्ञ से मां का इलाज होना बहुत जरूरी है । आखिर वंती के भाई ने मां को यहां भेज दिया ।

यहां आकर मां अपने इलाज से इतनी खुश नहीं थी, जितनी चंदनसिंह की बातचीत से। चंदनसिंह दौरे पर होता, तो वंती को लिखी चिट्ठी का आधा भाग इसीके बारे में होता–मां का क्या हाल है? मां को दवाई नियमित दी जा रही है या नहीं? मां को खाने-पीने में भारी और चिकनाई-वाली चीजें तो नहीं दी जा रही हैं? मां का ऐसे खयाल रखना, मां का वैसे खयाल रखना। वंती मां को पत्र पढ़कर सुनाती, तो उसके मुंह से निकले हुए आशीर्वादों की झड़ी लग जाती। बार-बार यही कहती–मेरा दामाद तो मेरे बेटों से ज्यादा मेरी फिक्र करता है। वंती बड़ी मीठी खिझलाहट से खीझ उठती। कहती–"मां, वो जो कुछ लिखते हैं, बस तुम्हारे बारे में ही लिखते हैं, कभी यह नहीं पूछा कि यहां मेरा क्या हाल है।"

चंदनसिंह जब दौरे पर न होता, तो सुबह-शाम घंटों मां के पास बैठा रहता। उन्हें छोटे-छोटे लतीफे सुनाता, दुनिया-भर की अद्भुत बातों का पिटारा उनके सामने खोल देता और मां का झुर्रियों-भरा चेहरा हंसते-हंसते फूल की तरह खिल जाता।

पर चंदनसिंह अब तो वह नहीं था। अब वह जल्दी-जल्दी कुछ नाश्ता करके सुबह सात बजे ही घर से निकल जाता। उस समय दिन-भर में किये जानेवाले कामों की लंबी सूची उसके मस्तिष्क को घेरे रहती। वह शाम को नौ-दस से पहले घर न आ पाता, उस समय तक मां सो गयी होती।

चंदनसिंह बड़ा आदमी हो गया था। उसका वेतन पहले से दुगुना हो गया पहले वह शायद ही कभी सूट पहनता परंतु अब वह सदा सूट और टाई में र सेठी साहब कहते–"देखो चंदनसिंह तुम एजेंट नहीं हो। तुम मैनेजर हो। अपनी पोजीशन बनाकर रहना चाहि

चंदनसिंह का यह बड़ा आदमी हो ज उसके परिचितों, मित्रों और संबंधि बहुत खलने लग गया था। सभी क चंदनसिंह मैनेजर बनकर बिलकुल ब गया है। चंदनसिंह तो अभिमानी हो है। बड़ी कुर्सी पर बैठकर किसका दि खराब नहीं होता? चंदनसिंह यह सुनकर गुमसुम हो जाता, एक गहरी उसके तन-मन में व्याप जाती।

मां की हालत बिगड़ती जा रही चंदनसिंह दुकान आने से पहले दवा के संबंध में जरूरी हिदायतें दे आता। पीता-पीता दो मिनिट मां के पास बै और फिर दुकान जाकर कुछ फल दवाएं आदि भिजवा देता। कभी-कभी दुकान पहुंचते ही अपने काम में इतना हो जाता कि उसे घर की कोई बात या रहती। वंती दिन-भर खीझती रहती

रात को वह घर पहुंचा, तो वंती ने क "भैया का पत्र आया है। मां को भेजने लिए लिखा है।"

"क्यों?" उसने कपड़े उतारते हुए "मां को पहले से तो अब काफी है। दो-चार महीने और यहीं रह लें अच्छा था।"

"पहले तो आराम दिखाई दे रहा था, पर अब तो उन्हें फिर से तकलीफ शुरू हो गयी हैं। हर दूसरे-चौथे दौरा पड़ जाता हैं। कोई देखनेवाला हैं नहीं, और तुम्हें अपनी मैंनेजरी से फुरसत नहीं......।"

चंदनसिंह को लगा किसी ने उसे कचोट लिया। वह हाथ-मुंह धोकर खाना खाने बैठ गया। वंती खाना परोसती हुई बोली—"भैया ने लिखा हैं, उन्हें दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलेगी। तुम दो-तीन दिन की छुट्टी लेकर भेज आओगे ?"

"मैं ?" चंदन ऐसे चौंका जैसे दाल में में कोई बड़ा कंकर आ गया हो —"आजकल तो मरने की भी फुरसत नहीं हैं वंती। एनुअल स्टाक-चेकिंग हो रही हैं। श्यामसिंह ने बेहिसाब गड़बड़ मचा रखी थी। हजारों रुपये का माल इधर-उधर हो गया हैं, जिसका कोई हिसाब नहीं मिलता। बेचारे सेठी साहब खुद बहुत परेशान हैं। श्यामसिंह किस तरह उनका माल उड़ाता रहा, यह उन्हें अब मालूम हुआ है। आजकल तो मेरा एक दिन के लिए भी इधर-उधर जाना बहुत मुश्किल हैं।"

सुनकर वंती कुढ़ गयी। चंदनसिंह खाना खाता रहा और वह कुछ नहीं बोली। हाथ धोकर वह पलंग पर लेटा, तो वह बोली—"मां के साथ मैं चली जाऊं ?"

"तुम......? "

"भैया को छुट्टी नहीं मिल रही। तुम्हें भी फुरसत नहीं है। ऐसी हालत में और क्या हो सकता है ? परसों कुक्कू के इम्तहान भी खतम हो जायेंगे......और आजकल मां का दिल भी यहां नहीं लग रहा है।"

"जैसा तुम ठीक समझो।" उसने करवट बदल ली।

वंती दोनों बच्चों और मां को लेकर चली गयी। चंदनसिंह अपने काम में पूरी तरह डूब गया। सुबह खुद ही अपने लिए चाय बना लेता। दोपहर को जब समय मिलता, होटल से खाना मंगवाकर दुकान पर ही खा लेता। रात खाना वह किसी होटल में ही खाकर ग्यारह-बारह बजे तक घर पहुंचता। कभी-कभी उसे सारा दिन कुछ भी खाने को समय न मिलता। शाम को चाय के साथ कुछ भी मंगवाकर खा लेता। उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। उसके मित्र उससे मिलते नहीं थे। उसके दफ्तर के साथी उससे दफ्तर की बातों के अतिरिक्त कोई बात करते नहीं थे। कभी-कभी उसे लगता, इस चारों ओर से भरे हुए जीवन में वह अकेला हो गया है, बिलकुल अकेला। और एक दिन एकाएक उसे याद आया, वंती को गये पंद्रह दिन से अधिक हो गये हैं, उसका कोई पत्र नहीं आया है।

उसने झटपट मेज की दराज से एक पोस्टकार्ड निकाला और तीन पंक्तियों का एक पत्र वंती को लिख दिया।

चार दिन बाद उत्तर आया—"तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला, चलो मैनेजर साहब को इतनी फुरसत तो मिली। मैंने यहां आकर जान-बूझकर तुम्हें कोई पत्र नहीं दिया। सोचा—तुम्हें क्यों परेशान करूं ? और मुझे

तो यह भी आशा नहीं थी कि तुम मेरा पत्र खोलकर पढ़ने का समय भी निकाल सकोगे। मुझे तो इसी बात का बहुत संतोष है कि तुमने एक पोस्टकार्ड लिखने का समय निकाल लिया। मायके गयी हुई पत्नी को लोग पोस्टकार्डों पर ही तो पत्र लिखते हैं!

"अभी तक सुनती आयी थी कि ऊंची कुर्सी पाकर लोग बदल जाते हैं, सबको भुला देते हैं। पर अपनों को भी भुला देते हैं, इसकी आशा नहीं थी। यहां सभी कहते हैं, तुम बदल गये हो। तुम वह नहीं रहे, जो पहले थे। मैं भी सोचती हूं, तुम वह नहीं रहे। ऊंची नौकरी मिल गयी, तो तुम अपने दोस्तों को भूल गये, जो तुम्हें जान से प्यारे थे। उन रिश्तेदारों को भूल गये, जिनके किसी भी काम के लिए तुम न रात देखते थे, न दिन। उस मां को भी भूल गये, जिसे तुमने इतनी आशाएं दिलाकर अपने पास बुलाया था। यहां तक कि मेरी और अपने बच्चों तक की चिंता तुम्हें नहीं रही। याद करो, पिछले छः महीनों में तुम कुक्कू के लिए एक गेंद भी लाये? मुन्नी के लिए एक गुड़िया भी खरीदी? कभी मेरे पास अच्छी तरह दस मिनिट भी बैठे? एक वह जमाना था, जब तुम हफ्तों बाहर रहते थे और मैं समझती थी, तुम हमेशा मेरे पास हो। पिछले छः महीनों में तुम कहीं बाहर नहीं गये, पर मुझे या बच्चों को एक दिन के लिए भी नहीं लगा कि तुम हमारे पास हो। बलिहारी है कुर्सी की!

"कुक्कू, चुन्नू और मुन्नी अच्छे हैं, अपने पापी की बहुत याद करते हैं, उस पा जो उनकी नन्ही-नन्ही बाहों की पहुं बहुत दूर हो गया है। मां तुम्हें बहुत करती हैं। कहती है, तुमने उसकी बहुत की। बाकी सब लोग भी अच्छे हैं। हम जरूरत तो तुम्हें महसूस होती ही नहीं है मैनेजरी के काम से कभी छुट्टी मिल ज तो याद कर लीजियेगा।"

चंदन हाथ में पत्र लिये पता नहीं कि देर बैठा रहा। उसकी कुर्सी के पास लोगों जमघट लगने लगा। उसकी मेज पर फ और पत्रों का ढेर बढ़ता गया। टेलिफो घंटी टनन्टनन् बजती रही। और वह सबके बीच निस्तब्ध बैठा रहा, जैसे चारों ओर और कुछ नहीं है, केवल है, एक गहरा शून्य।

फिर वह जैसे गहरी नींद से जागा, अपनी कुर्सी की ओर देखा, उस बड़ कुशनदार रिवाल्विंग कुर्सी की ओर। अपनी ओर देखा। उसे लगा—वह कुर्सी चारों ओर से चुभ रही है। उस कुर्सी शूल निकल-निकलकर उसके चारों ओ लोगों की आंखों में भुंक रहे हैं।

उसने घंटी बजायी और चपरासी कहा—"यह कुर्सी यहां से हटाओ वह......वह कुर्सी यहां लाकर रख दो

दुकान के कर्मचारियों, ग्राहकों सेठी साहब ने आश्चर्य से देखा, चंद ने वह कुर्सी हटवाकर, वहां सा क्लर्कोंवाली बेंत से बुनी हुई गोल रखवा ली है।

★

हिन्दी कहानी

रंग बदल गया

अमरेंद्र 'अमर'

यामिनी ने आसमान की तरफ नजर उठाकर देखा—धुंध की हल्की-हल्की चादरें वहां तन रही थीं । बादल का रंग, मटमैले से स्याह होता जा रहा था । हल्की बूंदाबांदी होगी, और अधिक न भी हो, तो कपड़े खराब हुए बिना नहीं रहेंगे । यह सोचकर वह खिन्न हो उठी । मन का सारा उत्साह और उमंग का तूफान, गुब्बारे में बंद हवा की तरह फूट निकला । बगल में उसकी प्रिय सहेली नमिता खामोश चल रही थी। कुछ भी सोच रही हो—यामिनी की तरह कुढ़ नहीं रही थी । यामिनी कुछ कहे, तो वह जवाब दे ।

दोनों सहेलियां सीढ़ियों के रास्ते से ऊंची पहाड़ी पर चढ़ रही थीं । दोनों तरफ घनी, उगी झाड़ियों का मेला था । हल्की-हल्की खुशबू समेटे हवा बह रही थी । बहुत दूर-दूर के फासलों पर सह-यात्रियों की दो-एक टुकड़ियां दिख जातीं । रास्ता ज्यों-ज्यों चक्कर काटता हुआ बढ़ता जाता, दूर-दूर की चीजें, मकानों की अनवरत कतारें, खिलौनों की तरह सजी दिखाई देतीं ।

यामिनी बेहद खूबसूरत थी । नाक-नक्श में प्रकृति-जन्य आकर्षण था, जो मेक-अप के बिना ही जादू की तरह सिर चढ़कर बोलता था । कालेज की पढ़ाई समाप्ति पर थी । साथ की सहेली नमिता बहुत ही सादे लिबास में सजी ऐसी लड़की थी, जो सुंदर कभी नहीं कही जा सकती । इसलिए नहीं कि रंग सांवला था, बल्कि इसलिए कि चेहरे की बनावट ही कुछ ऐसी थी कि सौंदर्य-प्रसाधन भी कुछ मदद नहीं कर सकते थे । मगर पढ़ने-लिखने में बहुत तेज थी । पिछले वर्ष वाद-विवाद प्रतियोगिता में लोगों को चकित कर दिया था । कालेज में उसकी चर्चा एक अपूर्व प्रतिभा-संपन्न लड़की के रूप में होती थी ।

"देख नमि, बादल तो नहीं छंटे—मगर पानी भी नहीं पड़ेगा —तू बहुत डर रही थी, क्यों ?"

"लो, अपने मन की बात खुद जबान पर ला रही हो ।" मुस्कराकर नमिता बोली ।

हालांकि चढ़ाई की वजह से दोनों ही कुछ-कुछ हांफ रही थीं, फिर भी एक दूसरे के प्रति यह जताने की कोशिश जारी थी कि किसी को हार स्वीकार नहीं । रास्ता अब लंबा नहीं रह गया था । कुछ ही मिनिटों में चढ़ाई खत्म हो जायेगी । सांस तेज चल रही थी, यह छिपाना दोनों के लिए मुश्किल-सा हो रहा था । दोनों के मन में यही बात आती

कि थकना सचमुच बहुत मुमकिन था। झूठी बड़ाई की बात अलग है।

यामिनी ने कहा—"क्यों थक गयी न ? कहती थी, थोड़ा रुक-रुककर चलो।"

"मैं और थकान ? देखो, ऐसी हवा में कोई थका हुआ महसूस कर सकता हैं ?" यामिनी भीतर से सिहर रही थी, किंतु यह सिहरन चेहरे को न छू सकी—शिष्ट भाव से विनीत स्वर में बोली— "नमस्ते मांजी, लगता है देर से आयी हैं ?" एक अधेड़, गोरी लंबी-चौड़ी महिला, जो वेश-भूषा में किसी धनी घर की मालूम पड़ती थी, मुस्कराती हुई बोली—"हां देर हुई। और कौन आया है तुम्हारे साथ ?" यामिनी ने बगल में खड़ी नमिता की तरफ ऐसा संकेत किया, जिससे बताये बगैर ही प्रश्नकर्ता समझ जाये। दो-चार औपचारिक संस्कृति में घुली-मिली बातें हुईं और दोनों सहेलियां, जैसे कैद से छुटकारा मिला हो, दूसरी तरफ चल दीं। मौका देखकर नमिता ने यामिनी को छेड़ा—"तब तो मि० आलोक भी जरूर आये होंगे। बिना उनके मांजी सैर-सपाटे पर निकलतीं भी नहीं, मगर ऊपर कहीं नहीं दिखे। शायद थोड़ी देर में......" सहसा नमिता ने बात वहीं छोड़ दी—देखा, कई रंग बड़ी तेजी के साथ यामिनी के चेहरे पर उभरे-मिटे। साथ-साथ यह भी लगा—जैसे ऊबकर तुरंत चल देगी। मगर यामिनी फिर बदल गयी। यह हंसमुखी, हर बात अपनी तरफ से शुरू करके, बराबर छेड़-छेड़कर बोलनेवाली बाला हैं। एक घंटे तक नमिता सिर्फ यामिनी की सुनती रही- दो-चार शब्दों से अधिक कह नहीं कि यामिनी की शब्द-फुलझड़ी फूट नमिता को लग रहा था, उसकी कोई मनोहर उपन्यास हैं, जो जादू की उस पर हावी हो उठी है।

उधर आसमान में घटाओं ने अपने में कई उभार दिखाये। कभी लगता- इतनी बारिश होगी कि फिर उसका मुश्किल हो जायेगा—मगर बस रंग ही कर रह गये। यामिनी ने वापसी के प्रस्ताव रखा और नमिता उसे सहर्ष कार करती हुई, उठ खड़ी हुई। बहुत खुश थी। उसके मन से यह भाव बहुत तेज पर लगाकर उड़ गया था वह आकर्षण की कृपा से वंचित एक टहनी मात्र है। अकेले कभी-कभी मन में गहरी टीस-भरी वेदना उठती यहां एक फूल भी आने से रहा। किंतु मन के परदे पर दूसरी तस्वीरें नाच थीं। एक सहज आत्म-विश्वास में हुआ भाव बार-बार उसे आह्लादित रहा था कि यामिनी के तन से मन कहीं है। अपने खयालों में मदहोश-सी, यामिनी की बातों का जवाब कैसे दे रही थी, उसे खुद भी आश्चर्य होता दोनों एक साथ धीरे-धीरे सीढ़ियां लगीं। इस बार बारिश की संभावना हद तक असलियत में बदल चुकी इससे पहले कि नमिता कुछ कहे- मोटी बूंदें ऊपर से ढुलक पड़ीं।

सोच भी नहीं पायी थी कि पानी आ ही गया । अब तो कोई पास का पड़ाव ढूंढ़ना होगा–यही निश्चय करके उसने नजर दौड़ायी–कुछ ही सीढ़ियां नीचे एक जगह दिखाई दी, संयोग से बिलकुल खाली । ऊपर घना जाल था पत्तों का, इतना कि बारिश का पानी ऊपर से ही बहकर नीचे गिर जाता और इसमें एक पथरीला साया भी था । दोनों बिना कुछ बोले शीघ्रता से उतरने लगीं । बूंदें भी तेजी से गिरने लगीं । धीरे-धीरे बारिश एक गति पकड़ने लगी । यामिनी ने फुसफुसाकर, जानबूझकर चिढ़ाते हुए कहा–"अब पानी रुकेगा नहीं मेम साहब, यहीं रहना होगा। मैं तो थोड़ा इंतजार देखकर चल दूंगी, तुम्हें बहुत खयाल है अपने कपड़ों का ।"

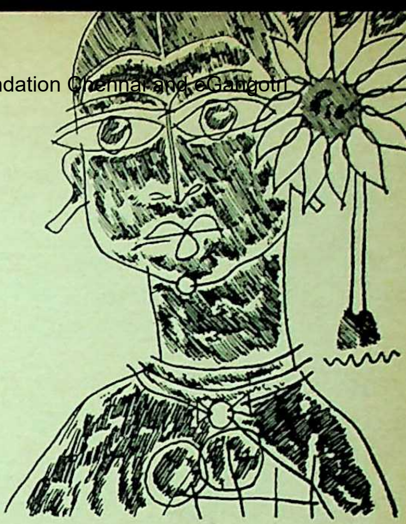

काली लड़की [चित्र : लक्ष्मण पै]

नमिता के जी में आया, कहे–'अपनी बात हमेशा दूसरों पर लादती हो तुम ।' पर तुरंत ही सोचा, छि:-छि: मजाक में ऐसा नहीं कहना चाहिये । अत: बोली–"क्यों रुकूंगी ? मैं भी चल दूंगी तुम्हारे साथ ।" तभी देखा–कोई दौड़ता, सीढ़ियां तेजी से चढ़ता हुआ आ रहा है–यामिनी का दिल धड़कने लगा, जैसे कोई अज्ञात सिहरन अभी से उसके मन-प्राणों को सम्मोहित कर रही है–बारिश में भीगता हुआ आलोक सामने था–शायद ऊपर जा रहा होगा, बारिश की वजह से रुकने के लोभ-वश यहां आ रहा है । सोचने का काम अपने आप हो गया–अर्थ भी निकल आया; किंतु यामिनी बेसुध-सी आलोक को देखती रही । नमिता ने जैसे सब कुछ समझ लिया । उसने बड़ी शिष्टता से आलोक को इशारा किया, आने का । बेचारा एक कोने में खड़ा हो गया । परिस्थिति ही ऐसी थी । बार-बार कोशिश करके वह नजर हटाता और सामने के खुले हुए वातावरण को देखने का अभिनय करता । नमिता ने महसूस किया, दोनों एक-दूसरे से प्रगाढ़ रूप से परिचित हैं । आंखों की जबान से वह बहुत कुछ कह-सुन रहे थे । मगर उसकी वजह से सारा बाहरी व्यवहार महज अभिनय बन गया था । पर वह कुछ नहीं कर सकती थी । पल-भर बाद ही चौंका देनेवाली घटना घटी–यामिनी डोर-सी खिंची आलोक के करीब चली गयी, और उससे ऐसे सहज-स्वाभाविक ढंग से बातचीत शुरू कर दी, मानो पास में और कोई भी न हो । नमिता का दिल 'धक्' से कर गया–क्या उसने जानबूझकर उसका अपमान नहीं

किया ? मगर पूरी सामर्थ्य लगाकर, मन को दुखी होने से रोका । फिर भी बाढ़ की तूफानी शक्ति की तरह उस अचानक घेर लेनेवाले दुख का बहुत-सा हिस्सा रोकते रोकते भी असर कर ही गया । किस साहस से वह यामिनी से पूछेगी ? यह दुस्साहस, इतनी बेशर्मी ? मगर भीतर किसी ने सवाल किया—"यह जलना नहीं, तो और क्या है? अपने भाग्य में पत्थर पड़े हों, तो औरों के घर रोशनी से भी चिढ़ ? क्या होगा इस चिड़चिड़ाहट को पालकर ?" नमिता प्रश्नों की अनवरत कड़ियों में उलझती-निकलती रही । इधर वे दोनों मजे से बातें किये जा रहे थे, जैसे बहुत दिन पर संयोगवश कहीं थोड़ी देर के लिए मुलाकात हो गयी हो और इतनी लंबी जुदाई की पीड़ा का हर क्षण इसी थोड़े से समयमें दुहराकर, अपने आपको तृप्ति देना चाहते हों ।

उधर बारिश हो रही थी । यहां शब्दों की फुहारें एक-दूसरे के मन को छूती-भिगोती जा रही थीं । आधे घंटे से अधिक होने को आया । तब तक पानी भी अचानक मद्धिम पड़ता हुआ, रुक गया था । तेज, थर्रा देने-वाली हवा, सिसकारियां भरती चल रही थी । दोनों ने स्नेह से भीगी मूक-विदाई का आदान-प्रदान किया और आलोक ऊपर जानेवाली सीढ़ियों की तरफ तेजी से मुड़ा । कई मिनिट यामिनी ऊपर की तरफ देखती रही—हालांकि आलोक का दिखाई पड़ना नामुमकिन था, क्योंकि रास्ता घुमावदार था । नमिता ने सुना—"अब चलो ।" आवाज में भारीपन था । आत्मीयता की मीठी जाने कहां गायब हो गयी थी । नमिता मन जाने क्यों साहस नहीं बटोर इतनी शिथिलता और जड़ता उसके समा गयी कि वह सहमी-सी यामिनी साथ बिना कुछ उत्तर दिये ही चल हो सकता है, कुछ ही देर में यामिनी अपनी पहले की मन:स्थिति में लौट किंतु एकाएक उसे छोड़कर यों कोसों दूर पहुंच जाना—इस बार नमिता के मन को कंपा गया । वह को हीनता से बुरी तरह पीड़ित करने लगी । दोनों बिलकुल पास सीढ़ियां उतर रही थीं । किंतु यामिनी से ही अभी साथ थी—उसका मन जख्मी की तरह, अभी तक उस दर्द को भूल पाया था, जो कुछ ही देर पहले अचानक भीतर जी उठा था । ऐसा दर्द, जो देर तक बेसुध किये हुए उसकी आत्मा कसकर जकड़े रहा था, अब फिर चुभ है । दोनों ने कुछ न कुछ जरूर था । एक से तो तुरंत देखा हुआ सपना छिन गया था—दूसरी तरफ मन इस बात से ठेस पहुंची थी कि कुछ भी नहीं है—चाहे वह महसूस किया हुआ क्यों न हो । बादल फिर से जोर-शो साथ बरसने को तैयारियों में जुटे थे संभव था, कुछ ही मिनिटों में बारिश होने लगे । किंतु दोनों के कदम अहि अहिस्ता सीढ़ियों पर पड़ रहे थे । पानी या तूफान आये—कोई चिंता नहीं ।

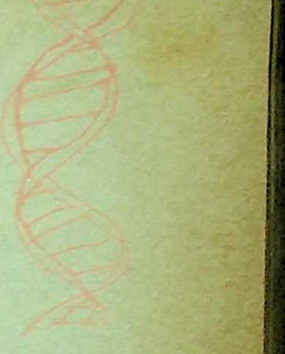

अभिशप्ता

चारुलता रायचौधुरी

अमावस की रात उस पर घोर दुर्योग। ऐसे में घर से निकलने की जल्दी उन्हें ही रहती है, जिनको बहुत ही जरूरी काम हो। शहर के प्रांतर में एक प्रतिष्ठान था। उसीकी दिशा में दुर्दिन की परवाह न करके एक मोटर गाड़ी छूट चली है। आरोही सिर्फ दो जन, दोनों ही नारियां—एक युवती, दूसरी प्रौढ़ा। किसी के मुंह पर बात नहीं। एक कोने पर अधिकार किये हुए प्रौढ़ा, उस नीरव में अश्रु-विसर्जन कर रही है। युवती अन्यमनस्क या अपनी ही चिंता में मग्न है।

भरेपूरे घर की महिलाएं। एक लड़की, दूसरी मां। कैशोर्य बीतते ही इस प्रौढ़ा का विवाह-जीवन शुरू हुआ था। और कई संतानों की मां होने का सौभाग्य प्राप्त है इसे। साथ में बैठी हुई सबसे छोटी लड़की है। घर के सभी इसे ज्यादा प्यार करते हैं। सदा प्रफुल्ल मन, दीप्त मुखाकृति, अति अस्थिर चित्त। मां ने प्यार से नाम रखा था इंद्राणी, बुलाती थीं रानी कहकर।

अल्प वय में जो व्यवहार मधुर लगता है, थोड़ी वय अधिक होते ही मनुष्य उस पर विचार करना शुरू कर देता है। इंद्राणी के बारे में भी इसका व्यतिक्रम नहीं हुआ। जितने दिन वह छोटी थी, उतने दिन उसकी चंचलता किसी को खटकी नहीं—लेकिन जैसे ही वह कुछ बड़ी हुई वैसे ही वह मां की आंखों में खटकी। वे बोलीं—"लड़कियों की इतनी अस्थिरता अच्छी नहीं।"

लड़की इतनी सहज में दूसरे की बात मान लेनेवाली नहीं थी। उसने कहा—"अच्छी क्यों नहीं है?"

मां ने कहा—"तुम्हारे साथ मैं तर्क करूंगी क्या? जो कह रही हूं, वही मान लो, बड़ों के मुंह पर जबाब मत दो।"

इंद्राणी की मां अत्यंत धार्मिक वातावरण में पली थीं। उनके स्वभाव में धर्म संबंधित सब कुछ को अनुष्ठान मान लेने की बात जम गयी थी। वे चाहती थीं कि उनकी प्रत्येक संतान उनके आदर्शों का अनुसरण करे। इस ओर से भी इंद्राणी ने

उनको निराश किया था । धर्म पर उनसे तर्क करती । मां क्षुण्ण होतीं या दुःखित वह निःसंकोच होकर कहती–"तुमने जिस पुण्य का संचय किया है, उससे ही अपने घर के सभी को स्वर्गलाभ हो जायेगा । मैंने ही कुछ नहीं माना तो क्या !"

मां को एक और संकट हुआ, लड़की के मित्रों के दल को लेकर । उनकी जितनी संख्या है, प्रकार-भेद भी उतना ही है । अच्छा लगने से ही बस हो जाती दोस्ती । इंद्राणी उसे पास खींच लेती–वह चाहे स्त्री हो या पुरुष । प्राचीनपंथी मां की आंखों को यह सब अच्छा नहीं लगता था । एक दिन बोलीं–"यह नहीं चलेगा ।"

लड़की ने प्रश्न किया–"क्या नहीं चलेगा मां ?"

मां ने कहा–"यह तुम्हारा ऐसे-वैसे लोगों को घर में लाकर हुजूम करना । तुम बड़ी हो रही हो, यह याद रखो । तुम्हारी उम्र में पुरुषों के साथ ऐसे मिलना-जुलना शोभा नहीं देता है ।"

इंद्राणी बोली–"क्यों, उसमें दोष क्या है ? अगर लड़कियां दोस्त हो सकती हैं, तो पुरुष दोस्त क्यों नहीं हो सकते, सुनूं ?"

इस बार मां ने क्रोधित होकर कहा–"देखो रानी, सब बातों की कैफियत मैं नहीं दे सकूंगी । तुम्हारा ये सत्यानासी दल लाकर घर में हो-हुल्लड़ करना नहीं चलेगा । यह मैं कहे देती हूं । तुम अगर उनका आना बंद न कर सको, तो मुझे ही यह भार लेना होगा ।"

उस दिन के इस कथोपकथन के इंद्राणी के मित्र इस घर के पास फिर लाई नहीं पड़े । लेकिन इसके साथ इंद्राणी में घर के बंधन की अपेक्षा बाहर आकर्षण अधिक बड़ा हुआ । मां समझीं इस लड़की को बस में लाना सहज नहीं है । अपने पति को जाकर कहा–" को और अधिक दिन घर में रखना अब चलेगा, वर की खोज करो ।"

लेकिन मन के माफिक वर पाने के ही एक उलटा कांड हो गया । उम्र ने इंद्राणी के कान में चुपके-चुपके रस की कहना शुरू किया, उसी समय सुयोग कर कितने ही चाटुकार उसको घेरकर हुए । उनमें से ही किसी एक की जादू छड़ी के स्पर्श से उसका सोता यौवन उठा । असतर्क मुहूर्त में उसने अपने आ दे दिया । फलस्वरूप मां होने का सर्टिकेट पाने के पहले ही शरीर पर मातृत्व अंकुरों ने बसेरा कर लिया । मालूम पर रोते हुए मां बोलीं–"सत्यानाशि यह तूने क्या किया ? अब मैं लोक-स में कैसे मुंह दिखलाऊंगी ?"

बिना प्रतिवाद के लड़की इस तिर को ग्रहण नहीं कर सकी । उसने क "तुम्हारे मां बनने में दोष नहीं है मेरे मां बनने में ही है सारा दोष ?"

मां ने कहा–"ओ री हतभागी, तेरे जो हैं । अपनी संतान का पितृ-परिच क्या देगी ?"

तब वह समझी कि भूल कहां है और

बार उसे सचमुच भय लगा।

पिता हृदय कठोर करके बोले–"रोना-धोना करके बाजार बैठाने या लड़की को गाली-गलौज करने से, जो हो गया है, उसे वापस नहीं लाया जा सकता; जिससे इसका प्रतिकार हो, वही व्यवस्था करनी होगी। मालूम किया है कि ऐसी अभागी घटना के लिए 'मातृ-मंदिर' नाम का एक प्रतिष्ठान है। लड़की को वहीं रख आओ।"

उसी परामर्श के अनुसार दुर्योग की परवाह न करके मां और लड़की इस भरी बरसात में आगे बढ़ी जा रही थीं।....

यथासमय इंद्राणी ने एक कन्या को जन्म दिया। प्रथम मातृत्व के आनंद में वह अपना सारा दुःख भूल गयी। बहुत प्यार से लड़की को हृदय से लगा लिया। उस नन्ही लड़की का नाम रखा कणा। 'मातृ-मंदिर' के नियमानुसार संतान-जन्म के बाद पांच-छः माह के समय तक मां को अपने शिशु की परिचर्या में रहना पड़ता है। उसके बाद वह अपनी जगह वापस जा सकती है। निर्दिष्ट समय के बाद इंद्राणी की मां आयीं, उसको लेने। इंद्राणी बोली–"कणा को बिना लिये मैं नहीं जाऊंगी।"

मां ने समझाया–"गड़बड़ मत कर रानी! खुद की इच्छा के अनुसार चलकर जितना दुःख झेला, उतना ही दुःख हमें दिया। और दुःख मत बढ़ा। लड़की को ले जाने पर समाज में तेरा स्थान नहीं होगा। उसका तो नहीं ही। उससे तो वह यहां बहुत अच्छी तरह रहेगी।"

इंद्राणी लड़की को छाती से लगाकर खूब रोयी, उसके बाद मां के साथ चली गयी।

'मातृ-मंदिर' में आठ वर्ष से अधिक आयु के शिशु को रखने की व्यवस्था नहीं थी। जिन बच्चों के रिश्तेदार उनको घर ले जाना चाहते, वे बच्चे चले जाते। जिनको वह सुविधा नहीं थी, उनको 'मातृ-मंदिर' और किसी प्रतिष्ठान में भेज देता। वहां उनकी क्षमता व बुद्धि के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था होती। कणा जिस प्रतिष्ठान में गयी, उसकी अभिभाविका को लड़कियां 'मां मणि' कहकर बुलातीं।

कणा का स्वभाव मृदु था, देखने में सुश्रीक और बुद्धि तीक्ष्ण। इसीलिए प्रथम दर्शन में ही वे उसकी ओर आकृष्ट हुईं और दूसरों की अपेक्षा उसको थोड़ा अधिक पास खींच लिया। दूसरी लड़कियों को इससे ईर्ष्या हुई। वे कहतीं–"कणा सुंदरी है ना, इसलिए मां मणि इसको अधिक प्यार करती हैं।" कणा ने बुजुर्ग की तरह सिर हिलाते हुए कहा–"कभी नहीं, मेरे जो मां नहीं है।"

इस बात पर सभी बड़ी लड़कियां हंसकर बोलीं–"आहा, क्या बुद्धि है लड़की की! हमारे क्या मां है? मां नहीं है, इसीलिए तो हम यहां हैं। मां होने पर भला यहां कोई आता है?" कणा ने मौन रहकर क्या जाने, क्या कुछ सोचा, पर बोली कुछ नहीं। बात जब अभिभाविका के पास पहुंची, तो वे चिंतित हुईं। लड़कियों में ईर्ष्या का आना स्वाभाविक है, पर शुभ नहीं। इस भाव को प्रश्रय देना उन्होंने नहीं चाहा, इसलिए अति

शीघ्र बचाव का एक उपाय ढूंढ़ निकाला। उन्होंने प्रतिष्ठान के संचालक को बताया कि वे एक लड़की का पालन-पोषण करने की बहुत दिनों से इच्छुक हैं। यदि आपत्ति न हो तो कणा के लालन-पालन का भार वे निजी रूप से ग्रहण करना पसंद करेंगी। संचालकों का एक खर्च कम हुआ, अतः वे सहज में ही राजी हो गये। वे उसे अपने घर ले आयीं।

तब से कणा मां मणि की लड़की हो गयी। लिखने-पढ़ने की ओर उसका उत्साह प्रकट होने पर, उन्होंने उसे स्कूल में भर्ती करा दिया। उसको गाना और सिलाई सिखलाने की व्यवस्था की।

कणा मेधावी छात्रा थी। अतः यथा-समय स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके कालेज में आ गयी। वहां सुलेखा नाम की एक लड़की से उसकी विशेष मित्रता थी। कालेज के बाद अक्सर सुलेखा उसको साथ लेकर अपने घर जाती और संध्या के बाद उसके घर पहुंचा देती। कणा जब बी० ए० में पढ़ रही थी, तब सुलेखा के रिश्तेदार सुबीर के साथ उसका परिचय हुआ। सुबीर के पिता की दो वर्ष पहले मृत्यु हो थी। वह अपनी मां के साथ रहता था एक सरकारी आफिस में अच्छी नौ पर था।

उसकी मां की इच्छा थी कि लड़के बहू लाकर उसे घरगृहस्थी का भार कर खुद धर्म-कर्म करें। इसी बात को लड़के और मां में झकझक होती। कहता– "किससे करूंगा। जितनी हैं बेवकूफों का द

मां नाराज हो कहतीं–"तेरी वही बात? ढूंढ़ने से अच्छी लड़की नहीं सकती? बोले, संबंध करूं?"

लड़का कह "दुहाई मां, ऐसा करना। तुम लोग तिसको गले में दोगी, और मैं मुं करके वह बोझ कर नहीं सकूंगा।

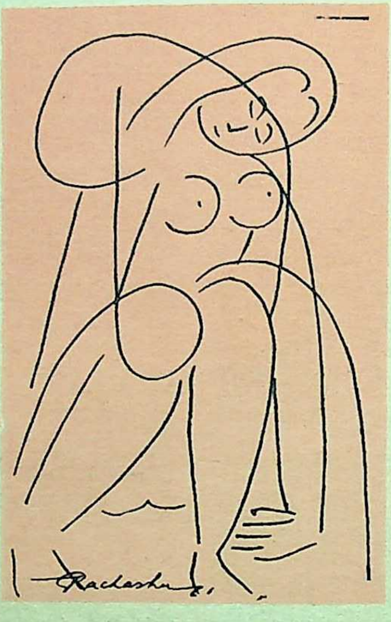

विषादमयी
[चित्र : रामचंद्र शुक्ल]

इसके कुछ दिन बाद की बात। मां को काम पर से खींचकर लाया बोला–"बैठो, एक बात कहनी है।"

"ऐसी क्या बात है रे कि अभी न से नहीं चलेगा?"

"बहुत जरूरी बात हैं, तुम्हारी बहू

कर ली हैं ।"

उत्सुक होकर मां बोली –"सच कह रहा है? कौन हैं वह? देखने में कैसी हैं? किसकी लड़की हैं? घर कहां है?"

"अरे बाबा, इतने सारे प्रश्नों का उत्तर देना होगा? ठहरो, एक-एक करके बताता हूं। लड़की का नाम कणा, अपनी सुलेखा की दोस्त हैं। देखने में खूब हैं, तब भी कोई बेहोश हो जाये, ऐसी सुंदर नहीं। एक बात तुमने नहीं पूछी, वह मैं बताता हूं। उसका स्वभाव मेरी मां की तरह शांत हैं, वह उग्र-चंडी नहीं। मेरी मां की बहू होने पर अच्छी जोड़ी बनेगी। लेकिन बाकी दोनों प्रश्नों का तो उत्तर नहीं दे पा रहा हूं। किसकी लड़की हैं, नहीं जानता। घर कहां हैं, यह भी नहीं जानता। लड़की अच्छी लगी, इसीलिए घर में लाना चाहा। और पता लगाने की आवश्यकता मैं नहीं समझता था।"

"यह क्या रे! जात, कुल, मान किसी का भी पता लगाये बिना ही शादी ठीक कर ली? इसी को कहते हैं बचपना!"

"अच्छा, तब बोलो, मना कर दूं।"

"यह मैं कब कह रही हूं। उसके मां-बाप के पास जाते ही, सबका पता लग जायेगा।"

कणा के आने पर सुबीर ने कहा–"मां का हुक्म हुआ हैं कि मुझे तुम्हारी मां के पास जाना होगा। कब जाने में तुम्हें सुविधा रहेगी बोलो?"

कणा थोड़ी सलज्ज हंसती हुई बोली–"मां से कहा है। वे भी तुमसे मिलना चाहती हैं।"

सुबीर जब कणा के घर आया, तब वह घर पर नहीं थी। किसी कारण से मां ने उसे बाहर भेज दिया था। सुबीर का आदर-अभ्यर्थना करके वे बोलीं–"आओ बैठो। तुम्हारे बारे में कणा से बहुत सुना हैं।"

"तब तो यह बात भी आपने जरूर सुनी होगी कि मैं आपकी पुत्री से विवाह करना चाहता हूं।"

"हां, मैं जानती हूं।" थोड़ा ठहरकर फिर बोलीं–"तुम उसकी मां से मिलने आये हो। कणा मेरी लड़की नहीं हैं–यह बात मैं प्राण रहते-रहते कह नहीं सकूंगी, लेकिन वह मेरी गर्भजात संतान नहीं हैं। कणा के जन्म का एक इतिहास हैं, वह बिना बताये, कणा का हाथ मैं किसी के हाथ में दूं, तो वह अन्याय होगा और उससे उसका भी कल्याण नहीं होगा।

"वैसे उसके जन्म की कहानी दूसरे के सामने बताना मेरे लिए इतना सहज नहीं हैं, लेकिन आज वह मुझे करना होगा। इस लड़की को जो ग्रहण करेगा, वह ठगा नहीं जायेगा–कणा का पक्ष लेकर बस इतना ही मैं कह सकती हूं।"

सुबीर गंभीर हो गया। बोला–"यह सब बातें कणा को मुझे पहले बता देनी चाहिये थीं।"

"उसके प्रति अविचार मत करो। कणा यह सब कुछ नहीं जानती। वह बस यही जानती है कि जन्मकाल से ही वह मातृ-पितृ-हीन है। मैं उसकी मां हूं, और किसी मां को वह नहीं जानती हैं।"

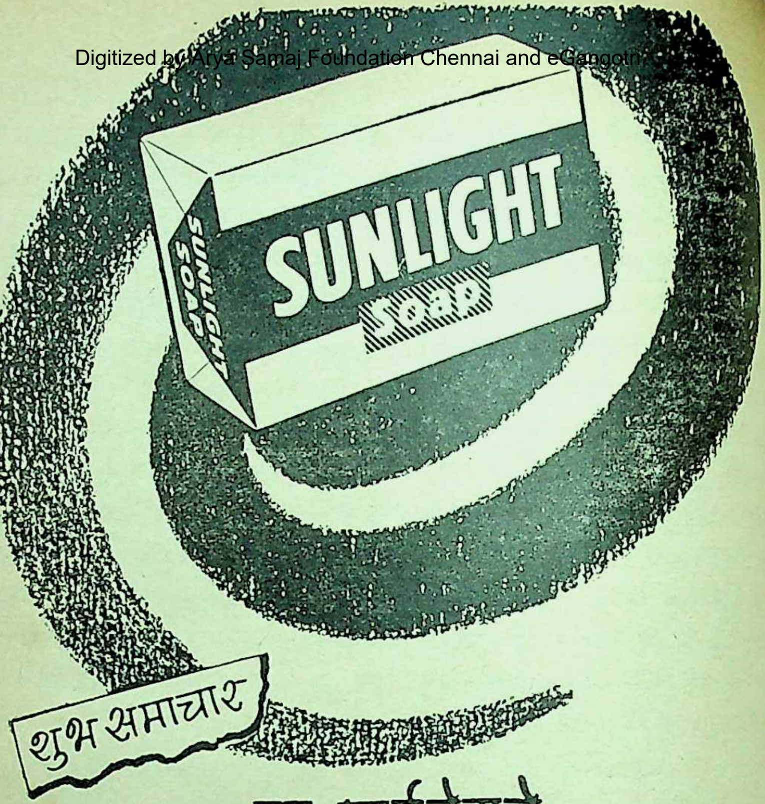
SUNLIGHT
SOAP
SUNLIGHT
SOAP
शुभ समाचार

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट से

आपके कपड़े

चमक उठते हैं

- ✳ नया रूप, नया रैपर
- ✳ उजली धुलाई की नई शक्ति से
  आप के कपड़े अधिक सफ़ेद, अधिक चमकदार!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S. 48-77 HI

सुवी
नहीं, मेरे
मर्यादा
मैं उनक
उनकी स
दस-
एक पत्र
पर जो
की आंख
साक्षात् ह
ही उसके
"क्योंकि
की है क्या
कणा
"चिट्
कणा
मां, और
भी नहीं।
इसके
हुई वहां
मां स
बैठी रही
अपनी
नहीं रख
बोली-"
जारज ह
यह बात
बता देने
सहनी प
"कह
लिए कह

सुबीर ने कहा—"अब चलूं ? मैं अकेली नहीं, मेरी मां हैं । जितना जानता हूं, वंश-मर्यादा की कीमत उनके निकट बहुत है । मैं उनका एकमात्र पुत्र हूं, मुझे लेकर ही उनकी सारी आशाएं हैं ।"

दस-एक दिन के बाद कणा के नाम से एक पत्र आया । उसको पढ़कर कणा के मुंह पर जो भाव-विलक्षणता फूट पड़ी, वह मां की आंखों में नहीं आयी । सुबीर के साथ साक्षात् होने के बाद से एक आशंका के बीच ही उसके दिन कट रहे थे । उन्होंने पूछा—"क्यों किसकी चिट्ठी आयी है री ? सुबीर की है क्या ?"

कणा ने धीरे से कहा—"हां ।"

"चिट्ठी आयी है ? उससे मिली नहीं ?"

कणा ओठ काटते हुए बोली—"नहीं, मां, और अब किसी दिन उनसे मिलना होगा भी नहीं ।"

इसके बाद आंखों के पानी को संभालती हुई वहां से उठकर बाहर चली गयी ।

मां सब समझ गयीं और स्तब्ध होकर बैठी रहीं ।

अपनी सहन-शक्ति को जब अपने में नहीं रख सकी, तो कणा वापस आकर बोली—"मां एक बात तुम्हें पूछती हूं । मैं जारज हूं, मेरा कोई वंश-परिचय नहीं है, यह बात तुमने मुझे पहले क्यों नहीं कही ? बता देने पर आज मुझे यह लांछना तो नहीं सहनी पड़ती ।"

"कहना कितना मुश्किल था बेटी, इसीलिए कह नहीं सकी । सोचा था न कहने से ही अगर चल रहा है, तो क्या करूं । समाज की ताड़ना से तेरी रक्षा कर सकूं, यह क्षमता मेरी नहीं—यह जानते हुए भी एक चेष्टा की थी । लेकिन आखिरकार हार माननी पड़ी । तेरी यह व्यथा मेरे हृदय में कम नहीं चुभी है, कणा ।"

इस घटना के बाद सदा हास्यमयी कणा के मुंह की हंसी मिट गयी । लिखने-पढ़ने म जो उत्साह था, वह भी सुस्त पड़ गया । कुछ दिनों में ही लड़की जैसे एकदम बदल गयी । एक दिन जब उसे कालेज से वापस आने में अस्वाभाविक रूप से देरी हुई, तो मां को चिंता हुई । मालूम किया, कालेज बहुत देर पहले ही बंद हो चुका था । अन्यमनस्क रूप में कणा की कापी-किताबें उलट-पलट करने पर उन्होंने देखा कि एक किताब के पीछे लगी एक चिट्ठी पड़ी है । बस थोड़ी-सी पंक्तियां थीं—

मां,

बहुत कोशिश की मन को मजबूत करने की, पर कर नहीं सकी । जिस समाज में कहीं मेरा स्थान नहीं, बिना दोष के मैं घृणित अस्पृश्या समझी जाऊं, उस समाज में रहने की इच्छा अब मुझे नहीं रही । इससे बिदा लेना ही ठीक लगा । ढूंढ़कर लाने की कोशिश मत करना, पृथ्वी में कहीं भी मुझे नहीं पायेंगी । तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी मां को मैं नहीं पहचानती । तुम्हारे मन में पीड़ा दे गयी, यही एक मात्र क्षोभ । कर सको तो क्षमा करना । तुम्हारी अभिशप्ता, कणा ।

रूपांतरकार : एस० चौधरी

★

एनासिन

सर्दी-ज़ुकाम और बुखार के लिए बेहतर है

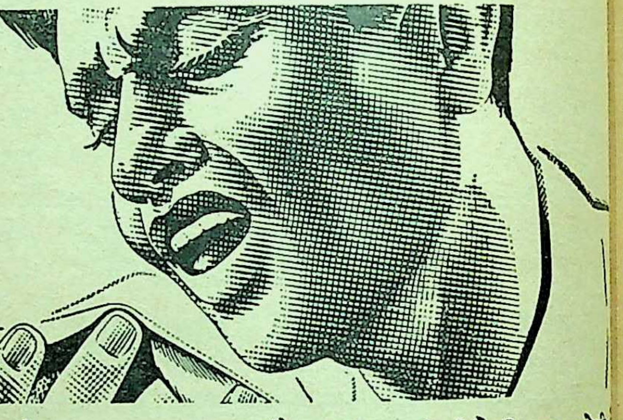

एनासिन लेने से दर्द, बुखार, घबराहट और तबीयतकी बेचैनी दूर होती

'एनासिन' में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे का असर है और अपनी चिकित्सा-शास्त्र प्रमाणित दवाओं के कारण 'एनासिन' सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुखार, दांतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र और पूरा आराम देती है।

एनासिन
बेहतर है क्यों कि
इस के **चार** फायदे हैं

ANACIN
ANACIN
ANACIN
ANACIN

दो टिकियों का दाम सिर्फ १२ नये पैसे

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

T.29-A

हिन्दी कहानी

बोलती आंखें

शंभुनाथ सक्सेना

जस्टिस विपिनबिहारी ने कहा–"अन्याय दमन से नहीं दवाया जा सकता, वह अनुकूल समय पाकर उभर उठता है; जैसे धरती के नीचे दवा हुआ बीज वर्षा, जल और ऋतु की अनुकूलता पाकर फूट उठता है – अन्याय के साथ भी यही सच है। इसे यदि शक्ति से दवा दिया जाये, तो वह कुछ समय के लिए अगोचर भले ही हो जाये, उसका अंत नहीं होगा।"

मिसेस विपिनबिहारी एक बंधी हुई, तेज गति से स्वेटर बुन रही थीं। पति की बात सुनकर उन्होंने सहसा नेत्र ऊपर उठाये। उन्हें लगा कि आज जज साहब कुछ ऐसा कहने के लिए उद्यत हैं, जो उनकी न्याय की तुला पर तुल चुका है और जिसे सत्य मानकर वे निर्णय दे चुके हैं। वे उसी तरह एकटक उनकी ओर देखती रहीं। जस्टिस विपिनबिहारी ड्राइंग रूम में चहलकदमी कर रहे थे।

उन्होंने कहना शुरू किया :

गत सप्ताह से एक ऐसा मुकदमा मेरे सामने था, जिसने मुझे कई वार अपना निर्णय बदलने के लिए बाध्य किया। कभी मैंने सोचा–जो अपराध किया गया है और उसके लिए जो दंड-विधान है, उसीको सही मानकर निर्णय दे दू। हमारे यहां न्याय की विधि भी यही है। लेकिन इस केस में जो कुछ घटनात्मक सत्य है, उससे परे हटकर मुझे भावनात्मक पक्ष को ग्रहण करना पड़ा है। इसी वात ने मुझे उलझा दिया। घटना और उसका सत्य, अपराध और अपराधी को सामने रख देता है, लेकिन घटना क्यों घटित हुई और अपराध क्यों बन पड़ा? मेरा मन उसकी पृष्ठभूमि खोजने लगा।

नाम शाहजहां बेगम। उम्र यही बीस वर्ष। मझला कद, चमकीली धूप-सा रंग, बड़ी-बड़ी कजरारी मादक आंखें, जैसे बिल्लौरी पैमाने में कंधारी अनार का रस लबालब भरा हुआ हो और उन आंखों में जैसे अनजाने ही सृष्टि-रचयिता ने भावना उड़ेल दी हो। उसके चेहरे पर एक अजीब मासूमी थी। एक ऐसा भोलापन, जो यह विश्वास दिलाता था कि जो अपराध हुआ, उसमें विवशता, अन्याय के प्रति एक जागरूक हिंसा और अपने विनाश के प्रत्यावर्तन में विद्रोह का विचार निश्चयात्मक रूप से रहा है। उसने जब गवाह के कटघरे में खड़ी होकर मेरी ओर देखा, तो उसकी आंखें

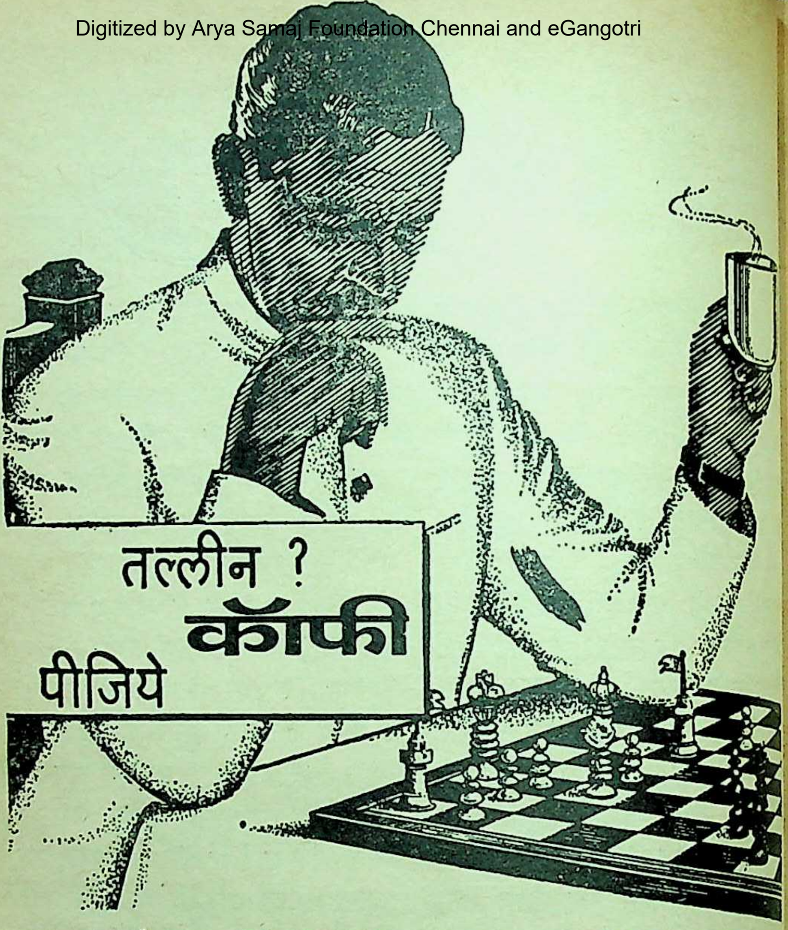

आप को प्रफुल्ल करने के लिए कॉफी का कप यह रहा...कॉफी की कोई जोड़ नहीं...गर्मागर्म और रुचिकर। इस की शानदार खुशबू दिल को खुश कर देती है। जब भी कुछ पीना हो, कॉफी ही पीजिये।

कॉफी हर मिजाज में खुश रखती है

अच्छी कॉफी बनाना आसान है। उस के लिए मुफ्त पुस्तिका हम से मंगवाइये। अपनी मनपसंद भाषा का नाम भी लिख भेजें।

COFFEE BOARD

कॉफी बोर्ड,
बेंगलोर

छलछला
को घटन
वस्तुत:
विकता
जस्ति
पर बैठ
हाथ के
सोच र
कठोर तु
के उस प्र
है, मान
है। जज
शाह
सहम ग
है, उसके
भोली-भ
क्यों हो
हत्याएं
और दू
निश्चय
साथ कि
विनाश
मैंने
से पूछ
द्वारा उ
किया।
उत्तेजित
किया।
खाविंद
पर कि
मेरी

छलछला आयी थीं, जैसे वह मेरे विवेक को घटना के परे ले जाना चाहती थी–जहां वस्तुतः उसका निजत्व था, उसकी वास्तविकता थी ।

जस्टिस विपिनविहारी अपनी ईजीचेयर पर बैठ गये और उनकी पत्नी ने अपने हाथ के काम को उठाकर रख दिया । वे सोच रहीं थीं कि उनके पति न्याय की कठोर तुला को एक ओर रखकर भावना के उस प्रदेश में निकल गये हैं, जहां आवेग है, मानवीय अनुभूतियां हैं और कोमलता है । जज साहब कह रहे थे :

शाहजहां बेगम के आंसू देखकर मैं सहम गया । सोचने लगा, जो कुछ हुआ है, उसके संचालन का मूलसूत्र क्या है ? यह भोली-भाली मासूम नवयुवती इतनी क्रूर क्यों हो गयी ? उसकी उत्तेजना से तीन हत्याएं हुई थीं । एक, एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी; जैसे उसने निश्चय कर लिया हो कि जो अन्याय उसके साथ किया गया है, उसका प्रतिशोध संपूर्ण विनाश में ही है ।

मैंने कटघरे में खड़ी हुई शाहजहां बेगम से पूछा–"अकरम खां का खून तुम्हारे द्वारा उत्तेजित करने पर बहादुर खां ने किया । फिर बहादुर खां का खून तुम्हारे उत्तेजित करने पर नासिर उल्ला खां ने किया । और नासिर उल्ला खां ने तुम्हारे खाविंद का खून तुम्हारे ही उत्तेजित करने पर किया ?"

मेरी बात सुनकर वह तनकर खड़ी हो गयी । उसका वक्षस्थल अस्वाभाविक ढंग से समुद्र की वेगवान लहरों-सा उठने-गिरने लगा । वह बोली–"हुजूर ! मैं क्या सफाई दूंगी । मुझे मौत की सजा दे दीजिये ।"

उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी और वह अपने जीवन के प्रति खिन्नता से भर गयी थी । जीवन के प्रति उसमें न कोई उत्साह था, न कोई उमंग, न इच्छा, न आकांक्षा । मानो उसकी आंखों के सामने वीरान कब्रिस्तान हो और उसमें बनी हुई अनेक कब्रें, जिनके नीचे अनेक लाशें उनके अरमानों के साथ दफना दी गयी हों । उसके मुख पर असीम निराशा व्याप्त थी ।

मैंने उसे धीरज बंधाया–"तुम्हें अपनी बात कहने का पूरा-पूरा अधिकार है । तुम यहां बिना किसी संकोच के सब कुछ कहने के लिए स्वतंत्र हो ।"

शाहजहां बेगम ने मेरी तरफ देखा, जैसे वह मेरे आश्वासन से उपकृत हुई है । उसके भीतर जो गांठ थी, वह कुछ शिथिल पड़ी और जो अपने प्रति निष्ठुरता थी, उसमें कुछ कमी आयी । उसने कहा–"हुजूर ! मुझे अपनी जिंदगी से कोई लगाव नहीं है, लेकिन जो भी वाकया मेरे साथ गुजरा है, उसे मैं आपके सामने रख दूंगी ! इंसाफ आपके हाथ में है ! मेरी उम्र अब २१ साल है । दो साल पहले मेरी शादी हुई थी । मेरे वालिद आरामतलब तबीयत के आदमी थे । बेहद शानशौकत और दिखावटी रहन-सहन के आदी । आमदनी कम थी और खर्च ज्यादा । मेरी मां ने भी बड़ी

MOON & STAG

RAIPUR MILLS
AHMEDABAD

पाप्लिन्स - शर्टिंग्स
मर्सेराइज्ड धोतियां
छपी हुई लान्स
तथा बुटास

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT. PEABODY & CO., INC.

रायपुर मिल्स लि०, अहमदाबाद

आलसी
को अपने
समझती
एक नौक
आमदनी
यह हुआ
चला। ि
तकाजे
हालत
वालिद
रहते
तकाजेव
बूरन कह
था कि वे
हैं। मग
बढ़ी, त
ही चली
अपने अ
प्यार क
मुझे इस
रंज था
होने की
मदद
नहीं हूं
जब सिर
अपने बे
निकाह
दिया, ज
"जज
बारे में
था, जिस

आलसी तबीयत पायी थी, वे किसी भी काम को अपने हाथों से करने में अपनी बेइज्जती समझती थीं। इसलिए घर में नौकर और एक नौकरानी रखी गयी। खर्चा बढ़ा, लेकिन आमदनी अपनी जगह से नहीं बढ़ी। नतीजा यह हुआ कि वालिद साहब पर कर्जा बढ़ चला। दिन निकलते गये, कर्जा बढ़ता गया। तकाजे बढ़े, इधर से हीलेहवाले होते रहे। हालत गिरती गयी। वालिद साहब के घर रहते हुए भी मुझे तकाजेवालों से मजबूरन कहला देना पड़ता था कि वे घर में नहीं हैं। मगर यह उलझन बढ़ी, तो फिर बढ़ती ही चली गयी। मैं अपने अब्बाजान से बड़ा प्यार करती थी, और मुझे इस बात का बड़ा रंज था कि मैं लड़की होने की वजह से उनकी मदद करने लायक नहीं हूं। वालिद साहब जब सिर तक कर्ज से लद गये, तो उन्होंने अपने बोझ को हल्का करने के लिए मेरा निकाह दूसरे गांव के एक साहूकार से कर दिया, जो मुझे बिलकुल पसंद नहीं था।

"जज साहब! मेरे भी अपने खाविंद के बारे में जज्बात थे। अपना एक जुदा सपना था, जिसमें मेरे अपने खयालों के रंग थे। वह स्वप्निल तस्वीर एकाएक बदरंग हो गयी। मेरे तसव्वुर और मेरे पुरनम खयालों को भारी धक्का लगा, क्योंकि जिस शख्स के साथ मेरा निकाह हुआ था, वह मुझ से उम्र में ड्योढ़ा ज्यादा था। उसे देखकर डर लग सकता था, मुहब्बत नहीं हो सकती थी। और मैं प्यार चाहती थी, जज्बात के रूमानी रौ में बहना चाहती थी। किसी खयालों की दुनिया से पुरनम नज्म की धुन बनना चाहती थी। मेरे मन में बड़ी ही कशमकश थी। लेकिन मैं कुछ कर नहीं सकती थी। मैं एक ऐसी तहजीब से बंधी हुई थी, जिसमें इस खयाल के खिलाफ आवाज निकाली ही नहीं जा सकती थी, और सब कुछ तय हो चुका था। जिसके साथ मेरी शादी होनी थी, उसने मेरे वालिद का कर्ज चुका दिया और उनके आराम के लिए कुछ सहूलियतें कर दीं। निकाह के बाद मुझे ससुरालवाले गांव ले जाया गया। वहां मैंने खुद को बिलकुल अकेला पाया। ऐसा लगा, जैसे चहल-पहल से भरे शहर से दूर मुझे जंगल में छोड़ दिया गया हो—किसी वीरानी और सूनेपन से भरी हुई जगह पर।

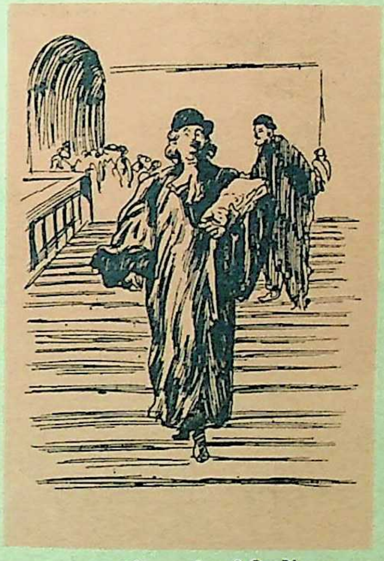

न्याय-मंदिर की सीढ़ियों पर

[चित्र : डामियर]

परिवार के लिए
माँ की पसंद
डालडा

डालडा
खजूर छाप
वनस्पति
–एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

DL. 96-77 LU
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

"यह
कोई लग
हालात
हालांकि
के लिए
बड़ा मक
पहनने के
हुजूर, मे
रह-रहक
थी और
बकरी की
बेच दिय
चुपके रो
"उन्ह
में आया
कम था,
में मुझे र
थी, जैसे
पास है
उसका न
कर निह
पा गयी
दिनों त
दूसरा दे
मुझे नही
से रिजू
ही मेरी
था। एव
मुझसे प
उसने मु
वह बदच
१९६४

“यह सही है कि शौहर [illegible] कोई लगाव नहीं था। मैं अपने को उन हालात में हिला-मिला नहीं पायी। हालांकि घर में नौकर थे और तीमारदारी के लिए नौकरानियां भी थीं, अच्छा खासा बड़ा मकान था, सोने के जेवरात थे और पहनने के लिए बढ़िया कपड़े भी। लेकिन हुजूर, मेरा उनके लिए कोई मोह नहीं था। रह-रहकर मन में एक कचोट-सी उठती थी और मैं महसूस करती थी, जैसे भेड़-बकरी की तरह मुझे किसी कसाई के हाथों बेच दिया गया है। कई दिन तक मैं चुपके-चुपके रोती रही।

“उन्हीं दिनों मेरा एक देवर मेरी जिंदगी में आया। वह मेरे शौहर से उम्र में कम था, वह हंसमुख था, उसकी बातचीत में मुझे रस मिलता था और मैं महसूस करती थी, जैसे मेरा कोई बहुत बड़ा हमदर्द मेरे पास है। यह रिश्ता पक्का होता गया। उसका नाम अकरम खां था। मैं उसे देखकर निहाल हो जाती थी, जैसे सब कुछ पा गयी होऊं। लेकिन ये हालात ज्यादा दिनों तक नहीं रहे। बहादुर खां मेरा दूसरा देवर था, जो अकरम से छोटा था। मुझे नहीं मालूम था कि वह मेरी तरफ कब से रिजू होता जा रहा है। लेकिन वह सहज ही मेरी मुहब्बत में बुरी तरह फंस गया था। एक दिन मुझे उसने बतलाया कि वह मुझसे प्यार करता है। इतना ही नहीं उसने मुझे अकरम के बारे में बतलाया कि वह बदचलन है और मुझे धोखा दे रहा [illegible] है। शहर में उसकी कोई रखैल है और वह जो प्यार का नाटक मेरे साथ कर रहा है, वह झूठा है।

“कुछ वक्त बीता, सारी चीजें सामने आने लगीं। बहादुर खां ने सही कहा था। हुजूर, अकरम एक गुलशन नाम की रंडी को रखे हुआ था। यह सब देखकर मेरे मन में गुस्सा दहकती हुई भट्ठी-सा भड़क उठा। मैं अपने को संभाल नहीं पायी। हुजूर, मैं अभी बतला ही चुकी हूं कि बहादुर खां मुझ पर बुरी तरह फिदा था। इन हालात का मैंने फायदा उठाया। मैंने ही अकरम खां को मारने के लिए उसे उकसाया। दूसरे दिन अकरम खां खेत की मेंड पर मार दिया गया।

“बहादुर खां एक बिलकुल नातजुर्बेकार नौजवान था। मेरे खाविंद को इस बात का शक हुआ कि वह बिगड़ रहा है, तो शीघ्र ही उसकी मंगनी कर दी गयी। मुझे सदमा लगा। इसी बीच मेरे खाविंद की पहली बीवी का भाई नासिर उल्ला खां एक दिन हमारे घर आया। वह बड़ी देर तक मुझसे हंस-हंसकर बातें करता रहा। बहादुर खां ने यह देखा तो जल गया। एकांत पाकर उसने मुझे कसकर दो तमाचे लगाये। शायद वह मुझे अपनी मिल्कियत समझता था। मैं सुबक उठी, लेकिन वह मुझसे बेलिहाज बकता रहा। उसने मुझे समझने की बिलकुल कोशिश नहीं की।

“वह भूल रहा था कि उसकी मंगनी हो चुकी है और वह अपनी खुशी से ही शादी

के लिए तैयार हुआ है। मैं कहां तक सहन करती ? मेरा जो सहारा था, वह टूटता जा रहा था। दूसरे दिन जब नासिर उल्ला खां घर आया, तो सिर्फ बहादुर खां को चिढ़ाने के लिए मैं उसकी चुहल में और अधिक दिलचस्पी लेती रही। बहादुर खां ने आव देखा न ताव, बंदूक उठा ली। लेकिन नासिर उल्ला कद्दावर था और तगड़ा था, उसने अपने को बचाकर बंदूक बहादुर खां के हाथ से छीन ली और उसे वहीं ढेर कर दिया। मेरे खाविंद ने, जो अपने भाई की लाश देखी, तो वे नासिर उल्ला की तरफ झपटे। खून मेरी आंखों के सामने था। खून चारों तरफ फैला हुआ था। खून नासिर उल्ला की आंखों में था और खून मेरे शौहर की आंखों में भी उतर रहा था। नासिर उल्ला एक खून कर चुका था और उसके सामने अब अपने बचाव का सवाल था। उसने दुनाली मेरे पति की ओर तान दी। एक लम्हा......फायर हुआ और मेरे खाविंद गिर पड़े। मैं वहां और ज्यादा वक्त तक न टिक सकी और अपने कमरे की ओर भागी......बेतहाशा भागी...... हुजूर मुझे फांसी की सजा दीजिये! बेशक यह सारा कुसूर मेरा ही है, मुझे रुंदवा दीजिये, मैं बड़ी बदकिस्मत हूं...... मैं बड़ी हकीर हूं!"

जस्टिस विपिनबिहारी भावावेश में अपनी चेयर पर से उठे, उन्होंने दे उनकी पत्नी की आंखों से आंसू, कण से झरते जा रहे हैं, जैसे रुकना चाहते। जस्टिस विपिनबिहारी ने पत्नी के कंधे पर हाथ रख दिया।

इस तरह शाहजहां बेगम की आं भी आंसू झर रहे थे। न्याय की तुला में में थी। अपराधिनी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। न्याय तुल था। दंड की धाराएं निश्चित हो चुकी लेकिन वैधानिक धाराओं के पीछे जो मानव बैठा हुआ था, वह...... कराह ...... नहीं...... नहीं...... शाहजहां निरपराधिनी हैं। आखिर वह करत क्या ...... ?

मैं सिहर उठा था। तुम्हें आश्चर्य मैंने उसे संदेह का लाभ देकर जुर्म से कर दिया है। मैं नहीं जानता, जो कुछ किया, वह उचित था या नहीं, लेकिन भी मैं यही सही मानता हूं कि उसके आ के पीछे जो नारी थी, वह निष्कलंक निरपराध थी, भोली और अबोध थी

जस्टिस विपिनबिहारी अब शांत गये, जैसे बहुत थक गये हों, जैसे पीड़ा और वेदना का सागर उमड़ हो। उन्होंने थोड़ा झुककर अपना पत्नी के कंधे से टिका दिया।

*

वर्तमान के समान पहले भी धर्म मुख्यत: उन लोगों के विश्वास और व्य का विषय था, जो आलसी और अत्याचारी थे और अपने को बहुत अधिक महत्व दें योग्यता, ईमानदारी, नेकनीयती और सच्चरित्रता आदि सद्गुण अधिकतर नास्तिक में ही पाये जाते हैं।

—टा

*

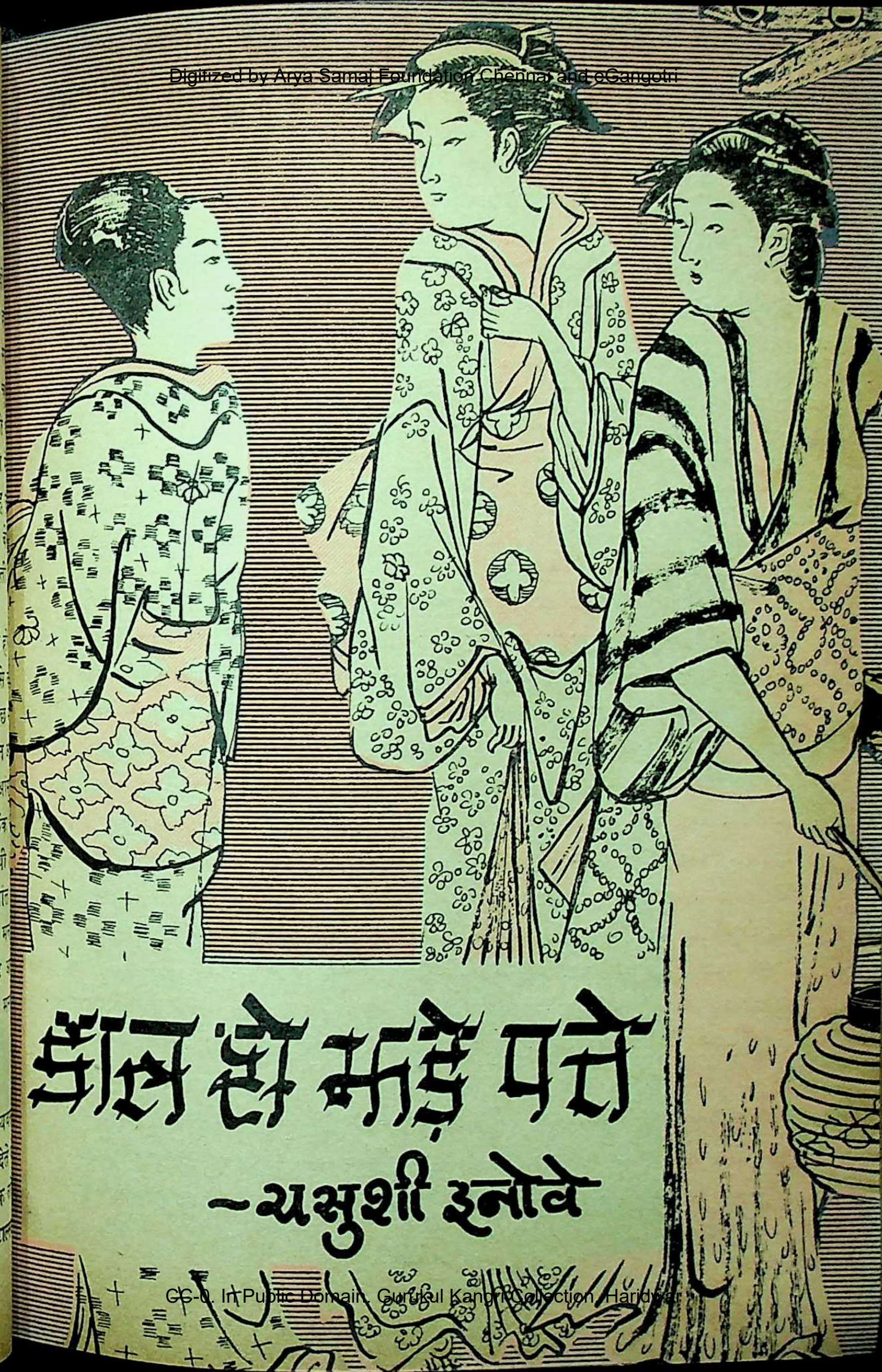

डाल से झड़े पत्ते

—यसुशी इनोवे

एक प्रेम ऐसा भी होता है, जिसे कोई दुआ नहीं देता और जिसे किसी को दुआ देनी भी चाहिये; जो धूप में नहीं खेलता, जो न-कहीं से निकलकर न-कहीं तक वहा करता है जो पातालगंगा की तरह वहुत नीचे दवा रहता है... ऐसे ही एक दर्दनाक प्रेम की कहा 'डाल से झड़े पत्ते', जिसे तीन स्त्रियां तीन दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करती हैं। इसके पात्र अपराध-भाव से दबी परपुरुष प्रेयसी सैको, मां के गुप्त जीवन को अकस्मात् जानकर हुई शोको, सैको के प्रेमी की शोख किंतु दुखियारी पत्नी मिडोरी और कथा का केंद्र जोसुके। नये जापान के समृद्ध वर्ग के जीवन से संबद्ध इस लघु उपन्यास के लिए लेखक इनोवे को जापान का प्रातिष्ठित अकुटागावा साहित्यिक पुरस्कार मिला था। प्रस्तुत रूपांतर 'रेयलिते' (पेरिस) से लिया गया है। हिन्दी अनुवाद मैत्रेयी दत्ता ने किया है।

पृष्ठ का चित्र विख्यात जापानी कलाकार कियेनागा की कृति है।

शोको का पत्र

प्रिय जोसुके, मां का देहांत हुए तीन हफ्ते बीत चुके और यह वक्त कितनी ते बीत गया! आप बुरी तरह थक गये होंगे। आखिर, रिश्तेदारों को चिट्ठियां भि से लेकर आधी रात के श्राद्धभोज तक सबका प्रबंध आपको ही तो करना पड़ा। अतिरिक्त, चूंकि मां की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, इसलिए बीच-बीच में मेरी ओर पुलिस से बातचीत भी आपने ही की और कितनी सावधानी से सारी देखभाल की! सब उपकारों के लिए आपका धन्यवाद करने को मुझे उपयुक्त शब्द नहीं सूझ रहे कलम हाथ में लेती हूं, तो वे सबकी सब बातें, जो मैं आपसे कहना चाहती हूं, एक उमड़ पड़ती हैं—नहीं, बात ऐसी बिलकुल नहीं हैं।

प्रिय जोसुके, सच-सच बता दूं? आप और मां के विषय में मैं सब कुछ जानती जिस दिन मां मरी, उसी दिन मैं सब जान गयी थी। मैंने छिपकर मां की डायरी पढ़ ली

यह सब अगर आपके समक्ष कहना पड़े, तो मेरी मुसीबत हो जाये। चाहे कि कोशिश कर लूं, मैं आपसे सिलसिले से ये बातें न कह सकूंगी। अब भी इसीलिए कह कि यह चिट्ठी हैं। ऐसी बात नहीं कि मैं डरती हूं, या संत्रस्त हूं। मैं उदास हूं, बस।

आपके और मां के प्रेम-संबंध ने मुझे यह ज्ञान दिया हैं कि एक प्रेम ऐसा भी होता जिसे कोई दुआ नहीं देता और जिसे किसी को दुआ देनी भी नहीं चाहिये। आपका और का प्रेम आप और मां ही जानते हैं—दूसरा कोई नहीं। आपकी पत्नी मिडोरी को भी पता नहीं है। मुझे उसका पता नहीं हैं। किसी को उसका पता नहीं है। और अब मां

चुकी हैं, इसलिए सिर्फ आपको उसका पता है। और भविष्य में कभी जब आप भी इस लोक से विदा हो जायेंगे, तब इस प्रेम के अस्तित्व का गुमान भी किसी को नहीं होगा। मैं अब तक यही समझती थी कि प्रेम धीरे-धीरे पैदा होता है—धूप में चमचमाते हुए स्वच्छ सुंदर झरने की तरह। भला उस प्रेम की कल्पना मैं कर ही कैसे सकती थी, जो धूप में नहीं खेलता, जो न-कहीं से निकलकर न-कहीं तक बहा करता है और पातालगंगा की तरह धरती में बहुत नीचे दबा रहता है!

मां ने तेरह साल तक मुझे धोखा दिया और धोखा देते हुए ही वह मर गयी। जो हो, मैं खयाल भी नहीं कर सकती थी कि हमारे बीच कोई छिपी-अनकही बात रह गयी है। मां स्वयं भी हमेशा कहा करती थी कि दुनिया में हम दो मां-बेटी बिलकुल अकेली हैं। एक यही बात वह मुझे नहीं बताती थी कि पिताजी को उसने तलाक क्यों दे दिया था। लेकिन उसका कहना था कि शादी हो जाने तक यह बात मैं समझ नहीं सकूंगी।

मां ने मुझे धोखा दिया, मिडोरी को धोखा दिया, हर किसी को धोखा दिया। हे भगवान, उसने ऐसा क्यों किया? कौन-सा भूत उस पर हावी हो गया था? हां, यही बात थी। मां ने स्वयं अपनी डायरी में 'पापी' शब्द का उपयोग किया है: "मैं और मिसुगी भी पापी बनेंगे। और चूंकि पापी बने बिना हमारे लिए कोई चारा नहीं, क्यों न हम दोनों महापापी बनें!" उसने 'शैतान के शिकंजे में' ये शब्द क्यों नहीं लिखे? फिर भी आपने और मां ने पापी बनने का, महापापी बनने का निश्चय कर लिया! अवश्य ही बड़ा दारुण होगा वह प्यार, जिसे पापी होने से न बचाया जा सके!

शायद आप नाराज हैं कि मैंने छिपकर मां की डायरी पढ़ ली। मां की मृत्यु के पहले दिन ही मुझे आभास हो गया था कि अब वह स्वस्थ नहीं होगी। मां जिस दिन मरी, उसके पिछले दिन मिडोरी उसकी तबीयत पूछने आयी थी। उसके आने की सूचना देने मैं मां के कमरे में गयी। कमरे का दरवाजा सरकाते ही मैं चौंक पड़ी। मां अपने बिस्तर पर बैठी थी। उसका मुंह दूसरी ओर मुड़ा हुआ था। उसने सिंदूरी और स्लेटी रंग की रेशमी 'हाओरी' पहन रखी थी, जिस पर बड़े-बड़े चमकीले गोखरू कशीदे से काढ़े गये थे। बहुत पहले मां ने यह कोट मुझे दे दिया था। तब उसने कहा था कि उसकी उम्र की औरत के लिए यह बेहद भड़कीला है। उसने इसे अलमारी में दबा दिया था और इस दिन तक कभी बाहर नहीं निकाला था।

"क्यों, ऐसा क्या गजब हो गया?" मां मेरी तरफ मुड़कर बोली। वह सोच रही थी कि आखिर मैं चकित किस चीज पर हूं।

"नहीं......" मैं इतना ही कह पायी और आगे जोड़ने के लिए मुझे कुछ नहीं सूझा। और क्षण-भर बाद मुझे यह भी याद न रहा कि मैंने मुंह क्यों बिचकाया था। उलटे, मैं हंस

प्रिय जोसुके, सच-सच बता दूं ?

पड़ी । अब वे सारी बातें सोचती हूं, तो समझ में आता मां को वह रेशमी हाओरी पहने देखकर मुझे झटका-सा था । मिडोरी मेरे पीछे ही कमरे में आयी । "कितनी सु कहकर वह कुछ क्षण मौन बैठी रही, जैसे वह भी उसके से मंत्रमुग्ध-सी हो गयी हो ।

सारे दिन रेशमी हाओरी से ढंकी मां की पीठ का सुंदर, किंतु बेहद सूना दृश्य मुझे याद आता रहा । ऐसा ल था कि सीसे का कोई ठंडा-ठंडा टुकड़ा मेरे हृदय में नीचे पैठ गया है ।

सुबह से जो हवा चल रही थी, शाम होते-होते थम ग महरी सदाओ की सहायता से मैंने बगीचे में झड़े हुए सब पत्ते जमा किये और उन्हें तीली दिखा दी । मां खिड़की से यह सब कुछ देख रही थी । रंगीन कागज में सलीके से हुआ एक छोटा बंडल लिये वह बरामदे में आयी–"इसे पत्तों के साथ जला दो ।" वह बोली ।

"क्या है मां, इसमें ?"

"कुछ भी होगा, तुम्हें क्या ?" अचानक ही बड़ी सख्ती से उसने कहा । फिर कुछ कर शांति से बोली–"डायरी है, तुम्हारी मां की डायरी । यह बंडल जैसा है, वैसा ही दो ।" फिर वह मुड़ी और गलियारे में लड़खड़ाते कदमों से चली गयी, जैसे हवा उसे ले जा रही हो ।

पत्ते धधकने लगे, लाल धुंआ उठने लगा । तब तक मैंने निर्णय कर लिया था । डा लिये मैं अपने कमरे में चली गयी और उसे अपनी अलमारी में सबसे पीछे छिपा दिया । रात हवा फिर तेज हो गयी । दरवाजे के सामने मैंने विश्वकोश की पांच-छः मोटी- जिल्दें एक-पर-एक चिनकर रख दीं और टेबल की बत्ती ठीक कर, उसकी रोशनी में बड़ी-सी नोटबुक फैला दी ।

प्रिय जोसुके, मैंने सोचा था कि अगर यह मौका हाथ से निकल जाने दिया, तो मैं माता-पिता का मामला कभी भी न जान पाऊंगी । उस दिन तक मैं बड़े भोलेपन से सोचती रही थी कि शादी होने तक प्रतीक्षा कर लूं, उसके बाद तो सब पता लग ही जा लेकिन मां को वह हाओरी पहने देखकर तुरंत मैंने अपना विचार बदल लिया । मेरे में यह दर्दभरी बात बस गयी थी कि मां अब ठीक होनेवाली नहीं है ।

उन्होंने तलाक क्यों लिया था, इसका सुराग मुझे अकाशी में अपनी नानी और

कुछ रिश्तेदारों से मिल चुकी थी। मैं जानती थी कि जब मैं पांच बरस की थी और मां, नानी व कुछ नौकरानियों के साथ अकाशी में रहती थी, तब पिताजी शिशु-चिकित्सा की डिग्री के लिए क्योटो विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। अप्रैल में एक हवा-पानीवाले दिन, गोद में एक बच्चे को उठाये एक कमसिन औरत मां से मिलने के लिए आयी। आते ही उसने बच्चे को अतिथि-कक्ष के आले में रख दिया। और जब मां उसके लिए चाय लेकर आयी, तो यह देखकर हैरान रह गयी कि वह औरत बेंत के झोले में से नाइट गाउन निकालकर पहन रही है। हां, वह पागल थी। बाद में पता चला कि जो भुखमरा बच्चा वह आले में सोता हुआ छोड़ गयी, वह मेरे पिताजी से उसे हुआ था।

मैंने सुना कि उसके बाद शीघ्र ही बच्चा मर गया और वह औरत ठीक हो गयी। सौभाग्य से उसका पागलपन थोड़े समय का था। इस घटना के बाद जल्दी ही मां मुझे लेकर अकाशी से चली आयी और पिताजी को, जिन्होंने कि मेरे नाना का कुलगोत्र अपना लिया था, तलाक दे देना पड़ा। जब मैं लड़कियों के स्कूल में भरती होने लायक बड़ी हो गयी, तो एक बार नानी मुझसे बोली—"सैको ने बहुत जिद पकड़ ली। उसे तुम्हारे पिता को माफ कर देना चाहिये था।"

क्या मां की परम सुशीलता उसे पिताजी की यह गलती क्षमा कर देने से रोक रही थी? उनके संबंध में मैं बस इतना ही जानती हूं।

मैंने मां की डायरी का पहला पन्ना खोला और मेरी भूखी आंखों से जो पहला ही शब्द टकराया, वह शब्द वह नहीं था, जिसकी मैंने आशा की थी। मैं माता-पिता के संबंध में जो बात जानना चाहती थी, उसके बारे में वहां एक भी पंक्ति नहीं लिखी गयी थी। मैंने तो वहां बस आपका और मां का यह प्रेम-संबंध पाया—ऐसा संबंध, जिसकी मैंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी और वह भी ऐसी उद्रेक-भरी, असंयत भाषा में कि मां भी ऐसे शब्दों का उपयोग कर सकती है, यह खयाल मैंने कभी नहीं किया था। कहीं उसकी वेदना थी, कहीं आनंदातिरेक था, कहीं प्रार्थना थी, कहीं घोर निराशा थी, कहीं आत्महत्या कर डालने का निश्चय था—हां उसने बहुत बार आत्मघात की बात सोची थी। उसने लिखा था कि उसके और आपके बीच का यह मामला अगर मिडोरी को पता चल गया, तो वह (मां) आत्महत्या कर लेगी। कैसी विचित्र बात! मां जो कि मिडोरी से इतना हंस-हंसकर बोला करती थी, उससे इस कदर भय खाती हो!

उस क्षण से मिडोरी मेरे लिए संसार की सबसे भयंकर व्यक्ति बन गयी। मां की छिपी वेदनाएं विलीन नहीं हो गयी हैं; बल्कि वे मेरी वेदनाएं बन गयी हैं। वह मिडोरी जो मुझे होंठ भींचकर चूमती थी! उस मिडोरी से मुझे इतना प्यार था कि ज्यादा प्यार मुझे मां से था या उससे, यह कहना मुश्किल था। बचपन की कोई भी बात याद करूं, उसमें आपकी

ज्योति

बेजोड़...

जल-निकासी के पंपो में आप की बेहतरीन पसंद यानी ज्योति 'यूनिबिल्ट' पंप। इसे चाहे जिस कसौटी पर उतार लें...यह निर्माण-कला में श्रेष्ठ, कार्यशक्ति में उत्कृष्ट और बिजली के बिल में बहुत ही किफायती है। साइज : १"×१" से ६"×६" कार्यशक्ति : घंटे में ५८,००० गैलन तक, चढ़ाव : २१० फुट तक

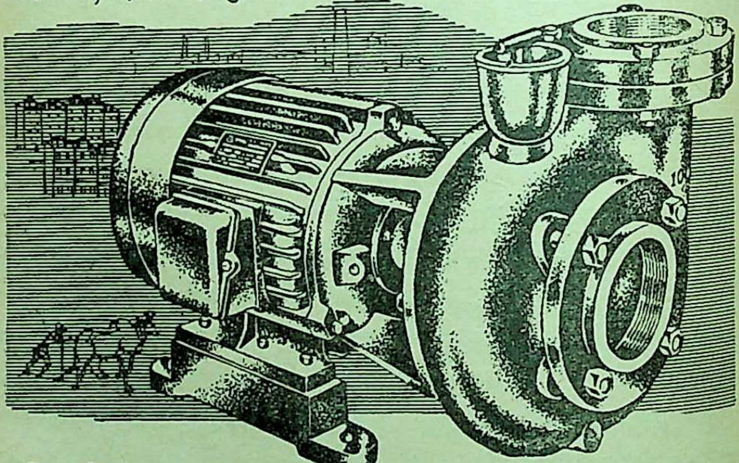

Quality is our Creed

ज्योति लिमिटेड,
बड़ौदा-३

JY-885-HI EVEREST

शाखाएँ : बंबई, नयी दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, जयपुर, भोपाल और सिकंदराबाद

पत्नी मिडोरी मौजूद मिलती है। मिडोरी जो मां की मौसेरी बहन और सहेली थी ! मिडोरी जो कभी माहजोंग व गोल्फ, तैराकी और स्कीइंग में माहिर थी, लेकिन अब केवल नृत्य में भाग लेती थी ! मिडोरी जो मेरे मुखड़े से भी बड़े-बड़े केक पकाकर मुझे दिया करती थी ! मिडोरी जो एक बार अचानक ही बहुत-सी तकाराजुका कोरस-गायिकाओं को हमारे यहां लायी थी और मां व मुझ को। चक्कर में डाल गयी थी ! वह हमारे जीवन में हमेशा इस तरह उल्लास की बहार लेकर क्यों आती थी, जैसे कि कोई बड़ा-सा गुलाब का फूल हो ?

उस बुरे दिन मां को अभी दर्द नहीं उठना शुरू हुआ था । वह दर्द थोड़ी ही देर रहा, लेकिन था बड़ा भयंकर । मां ने मुझे बुलाया और बुनराकू नाटक की कठपुतलियों जैसी विचित्र शांति के साथ कहा—"अभी-अभी मैंने जहर पिया है। मैं थक गयी हूं। जीते-जीते थक गयी हूं—बहुत ।"

ऐसा लगता था कि वह मुझसे नहीं, भगवान से बात कर रही है। और उसकी आवाज में अद्भुत स्पष्टता थी—दिव्य संगीत की-सी स्पष्टता । पाप......पाप......पाप ...इन शब्दों का जो ऊंचा ईफिल टावर खड़ा हो गया था वह, और वह सभी कुछ जो मैंने कल मां की डायरी में पाया था, टूट-टूटकर मां के इर्द-गिर्द गिरने लगा ।

मैंने दो लंबे गलियारे ऐसे पार किये, जैसे कि मैं पानी पर चल रही थी। उसी समय मां की छोटी-छोटी कराहें शुरू हुईं; मानो मौत की काली लहरें उस पर चारों ओर से घिरी आ रही थीं। मैंने फोन उठाया और आपको बुलाया। लेकिन पांच मिनिट बाद जिस व्यक्ति ने हड़बड़ाते हुए हमारे घर में प्रवेश किया, वह थी मिडोरी। मां, मिडोरी का हाथ पकड़े-पकड़े मर गयी—उसी मिडोरी का, जिससे वह प्यार भी करती थी और जिससे सबसे अधिक डरती भी थी। मिडोरी ने मां के मुंह पर कपड़ा ओढ़ा दिया—उस पर अब न दर्द था,न दुःख...

प्रिय जोसुके, मां की मृत्यु के बाद की पहली रात इतनी शांत थी कि वैसी शांत रात भी संभव है, यह विश्वास करना कठिन है। पुलिस, डाक्टर, पड़ोसी और दूसरे लोगों का आना-जाना रात के आने के साथ बंद हो गया और मां के ताबूत के सामने सिर्फ आप, मिडोरी और मैं बचे रहे। हम तीनों में आप सबसे ज्यादा गमगीन दिखाई दे रहे थे। जब आप नयी धपबत्ती जलाने के लिए उठे, तो आपने मां की फोटो को बड़े ध्यान से शांतिपूर्वक देखा। मुझे लगा, आप कुछ इस तरह मंद-मंद मुस्करा रहे हैं कि जिसका अर्थ सिर्फ मां समझ सकती थी, दूसरा कोई नहीं ।

नौ बजे के लगभग मैं खिड़की के पास गयी और अचानक ही रोने लगी। शायद आप पर मुझे जो तरस आ रहा था, उसीके कारण मैं रो पड़ी थी; क्योंकि आपको और मां को अपने प्रेम की रक्षा के लिए मां के जीवन के अंतिम क्षण तक नाटक करते रहना पड़ा था। मैं रो दी; क्योंकि मुझे सब कुछ सूना, उदास व भयंकर लग रहा था। आप तीनों-के-तीनों—

एक
सेविंग्स बैंक
एकाउन्ट
खोलिये

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलना आसान है। आपको कम से कम सिर्फ रु० ५/- लगाना पड़ेगा और साल में ३ सैकड़ा ब्याज मिलेगा।

विस्तृत विवरण के लिये पास की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये। बैंकिंग संबंधी आपकी चाहे जो भी समस्यायें हों, यहाँ हमारी नम्रता और योग्य सेवा आपकी प्रतीक्षा में है।

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड
संयुक्त राज्य में समिविष्ट ● सदस्यों का दायित्व सीमित
NGB/59A

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायड्स ब्रान्च) : मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२९, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायड्स ब्रान्च) : ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी : ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज़ ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल : शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि, क्लब रोड, बाइकला। ठाणा :—आग्रा रोड, कोलबाद रोड, (कैसल मिल्स के पास)।

मां, जिसकी आत्मा मात्र शेष थी, आप और मिडोरी—एक ही कमरे में मौजूद थे, तीनों अपने-अपने गूढ़ खयालों में खोये हुए और एकदम चुप। जब मैं इस विषय में सोचने लगी, तो मुझे प्रतीत हुआ कि आप बड़ों की दुनिया असह्य रूप से एकाकी है, उदास है, बहुत भयंकर ...

प्रिय जोसुके, मैंने बहुत-सी असंबद्ध बातें लिख डाली हैं। लेकिन मैंने कोशिश की है कि बिना झूठ बोले अपनी वर्तमान मनःस्थिति को प्रकट करूं; क्योंकि अब मैं जो प्रार्थना करनेवाली हूं, उससे आपकी सहमति चाहती हूं।

प्रार्थना इतनी ही है: आपको या मिडोरी को मैं अब और नहीं देखना चाहती। आशिया का बंगला मैं अपने एक रिश्तेदार श्री त्सुमुरा के जिम्मे छोड़कर जा रही हूं। फिलहाल मैं अकाशी जाकर वहां विदेशी स्टाइल की दर्जी की दुकान जैसा कोई व्यापार खोलना और अपनी आजीविका स्वयं कमाना चाहती हूं। मां ने अपनी वसीयत में सलाह दी है कि हर बात में मैं आपकी राय लिया करूं। लेकिन इस समय मेरे हृदय की जो हालत है, उसे अगर मां देख सकती, तो यह सलाह वह हर्गिज न देती।

आज मैंने बगीचे में मां की डायरी जला डाली। उस बड़ी-सी नोटबुक की बस मुट्ठी-भर राख रह गयी। और जब मैं उस पर उड़ेलने के लिए पानी लाने भीतर गयी हुई थी, हवा का झोंका आया और सूखे पत्तों के साथ उसे भी उड़ा ले गया।

मिडोरी का पत्र

श्री जोसुके मिसुगी,

इस तरह औपचारिक ढंग से आपका नाम लिखते हुए इस उम्र में भी (और अब मैं तीस साल की हो गयी हूं) मेरा दिल यों धड़कता है, जैसे मैं कोई प्रेमपत्र लिख रही हूं। पिछले दस वर्षों में मैंने पचासों प्रेमपत्र लिखे होंगे—कोई छिपाकर, कोई खुले आम। लेकिन उन सबमें से एक भी आपको संबोधित करके नहीं लिखा गया था। क्या आपको भी यह बात विचित्र नहीं लगती?

श्रीमती ताकागी ने एक बार बड़ा ही अशिष्ट दावा किया था कि स्त्रियों को आपमें कभी दिलचस्पी नहीं हो सकती और आप स्त्रियों के सुकुमार मन को कभी समझ नहीं सकते। मसला चाहे कोई भी हो, आपके समाधान बेहद सुलझे हुए होते हैं; फिर आपकी यह भी अटल आस्था है कि आपका निर्णय हमेशा ठीक ही होता है। आप चाहे इसे आत्मविश्वास समझते हों; लेकिन दूसरा व्यक्ति तो सदा ही आपको झकझोर डालने को अधीर हो उठता है।

तो शायद यह मेरी मूर्खता है कि इतने सारे पत्रों में से क्यों एक भी आपके नाम नहीं

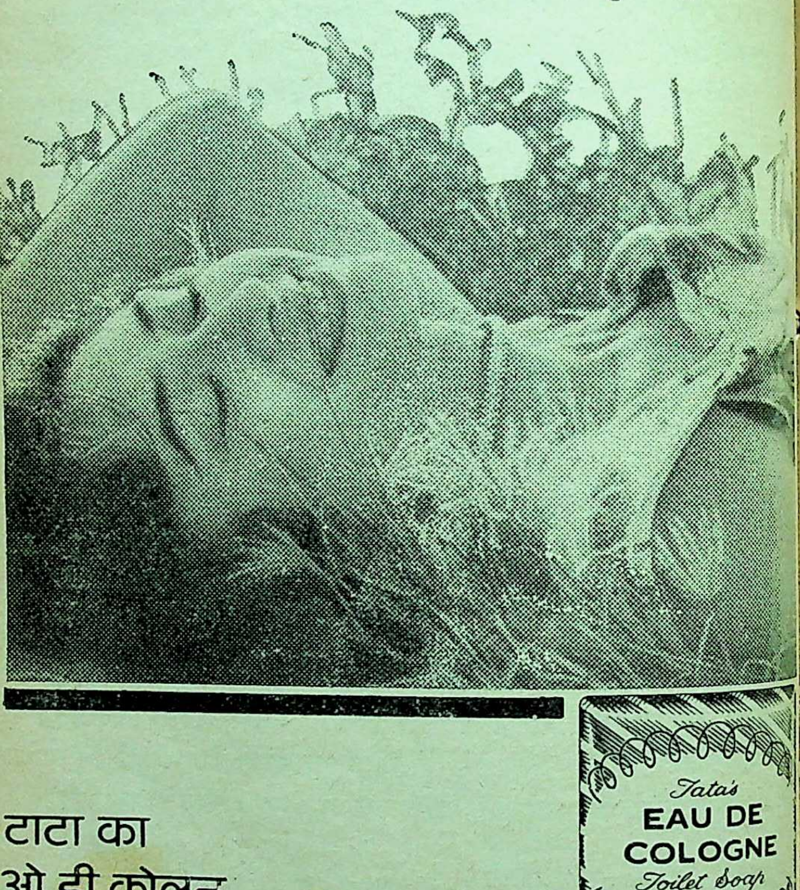

कोलन की ताज़गी • कोलन की सुगंध • कोलन की ठंडक
कोलन की ताज़गी
कोलन की सुगंध...

टाटा का
ओ डी कोलन
टॉयलेट साबुन

भारतभर में, ओ डी कोलन
की सुगंधवाला
एकमात्र साबुन

TESY-59 HIN

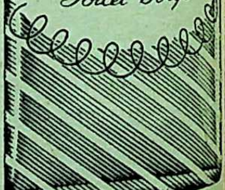

Tata's
EAU DE
COLOGNE
Toilet Soap

लिखा गया था, इसके विषय में मैं अपनी विचित्र तथा स्पष्ट न की जा सकनेवाली भावनाएं आपको समझाने के लिए व्यग्र हो उठूं। लेकिन एक ढंग से, मेरे लिखे ये तमाम पत्र उन्हीं भावनाओं से भरे हुए थे, जो आपके प्रति मेरी भावनाएं थीं—भले ही इन पत्रों के पानेवाले पुरुष दूसरे रहे हों। मानो मैं अंत तक अबोध मुग्धा ही बनी रही; और इसलिए मैं जिन पुरुषों को, शांत मन से पत्र लिखा जा सकता था, उन्हें पत्र-पर-पत्र लिखे बिना नहीं रह सकती थी। शायद यह मेरी बदकिस्मती है, जो जन्म से मेरे साथ जुड़ गयी है; लेकिन साथ ही यह आपकी भी बदकिस्मती है।

तो क्या खयाल है आपका? जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो लगता है कि हमारा दांपत्य, जो अब नाममात्र का दांपत्य रह गया है, बहुत लंबा खिंच चुका। क्या आप इसे एकबारगी खत्म नहीं कर देना चाहते? बेशक यह खेद की बात है कि ऐसा करना पड़े; लेकिन अगर आपको आपत्ति न हो, तो अच्छा हैं कि हम दोनों एक-दूसरे से मुक्त होने के लिए आवश्यक कदम उठायें।

अब जबकि आप बहुत-से व्यापार-व्यवसायों से अपना सक्रिय संबंध तोड़ रहे हैं, तो मैं समझती हूं कि अपने इस अस्वाभाविक संबंध को भी समाप्त कर देने का यह सबसे अच्छा अवसर है। तकाराजुका और यासे के दो बंगले मुझे मिल जायें, तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगी। यासेवाला मकान ठीक साइज का हैं, उसका पास-पड़ोस भी मेरी रुचि के अनुकूल है। तकाराजुका का बंगला मैं लगभग बीस लाख येन में बेच दूंगी और शेष जीवन उस रकम से चला लूंगी।

मैं यह भी बता दूं कि यही मेरी आखिरी ऐयाशी है और मेरे द्वारा वसूल की जानेवाली पहली और आखिरी चौथ भी यही है; क्योंकि कभी मैंने अपने आपको आप पर नहीं थोपा।

यद्यपि यह प्रस्ताव अचानक ही रखा जा रहा है, तथापि इससे यह न समझियेगा कि इस समय कोई सलोना युवक मेरी नजरों में है, जिसे मैं अपना प्रेमी कह सकूं। सो आपको यह चिंता करने की जरूरत नहीं कि कोई प्रेम-प्रदर्शन रूपी खुशामद के द्वारा मेरे पैसे ऐंठ लेगा। मुझे तो दुःख इसका है कि आज तक मुझे ऐसा एक भी पुरुष नहीं मिला, जिसे मैं बिना झिझक के अपना प्रेमी कह सकूं। मोहक संस्कारी मुखड़ा और सारंग-

...मैंने पचासों प्रेमपत्र लिखे हैं

फिलिप्स

आदि
मिल्क ऑफ
मैग्नेशिया

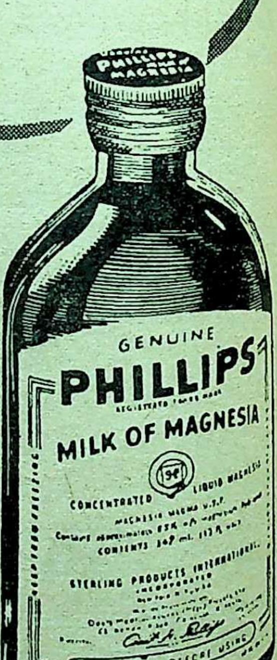
PHILLIPS
MAGNESIA
GENUINE
PHILLIPS
REGISTERED TRADE MARK
MILK OF MAGNESIA
CONCENTRATED
LIQUID MAGNESIA
STERLING PRODUCTS INTERNATIONAL
SHAKE WELL BEFORE USING

समस्त परिवार के लिये
आदर्श
अम्लनाशक-आरेचक

इस विश्वसनीय उपाय से करोड़ों लोग आराम पाते हैं

केवल एक हो आदि तथा असली फिलिप्स मिल्क आफ मैग्नेशिया—अम्लनाशक आरेचक है जिसे सारे विश्वके करोड़ों लोग जानते व व्यवहार करते हैं। कब्ज तथा कब्ज जन्य समस्याओं से निरापद तथा पूर्ण छुटकारा के लिये मिल्क ऑफ मैग्नेशिया से बढ़कर और कोई उपाय नहीं। समस्त परिवार के लिये आरेचक।

रजिस्टर युजर :—डेज़ मेडिकल स्टोर्स (मैन्युफैक्चरिंग) प्रा० लिमिटेड

IPB/MOM—L

जैसा ताजा व सशक्त शरीर—ये दो सामान्य-सी शर्तें जो पूरी कर सकें, ऐसे पुरुष धरती पर बहुत नहीं हैं। मुझे दुःख के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि जब मैंने विवाह किया, तो शुरू में अपने पति पर इस कदर मुग्ध हो गयी कि अब भी, हमारी शादी को हुए दस से ज्यादा साल बीत जाने पर भी, मैं उसके आकर्षण से बच निकलने का उपाय नहीं जानती।

अगर, मैं क्योटो के उत्तर यासे में रहने लगी, तो सामाजिक जीवन से मेरा इतना ज्यादा लगाव बना रहेगा कि मैं उससे निवृत्त न हो सकूंगी। विधवा-जैसा कठोर जीवन बिताने का मेरा विचार बिलकुल नहीं है। मैं फूलों की बागवानी करूंगी। लोग बताते हैं कि गिजो स्ट्रीट के फूलवालों को ये फूल बेचे जायें, तो अच्छी आमदनी हो सकती है। एक अधेड़ नौकरानी, एक लड़की और दो औरतों की मदद से मैं वहां साल में एक हजार कार्नेशन आराम से उगा लूंगी। फिलहाल यासे में हमारा बंगला मर्दों के लिए बंद रहेगा। मर्दों की गंध से भरे कमरों से मुझे उबकाई आने लगी है। मैं सच कह रही हूं। इस बार मैंने निश्चय कर लिया है कि सब कुछ नये सिरे से शुरू करूंगी, केवल अपने ही सच्चे सुख के लिए जीवन की योजना बनाऊंगी।

अतीत पर दृष्टि डालती हूं, तो हजारों भावनाएं उमड़कर मुझे आश्चर्य में डाल देती हैं कि दस, से भी अधिक वर्ष तक मैं आपके साथ यह जीवन कैसे जी सकी! कुछ हद तक, मुझ पर चरित्रहीनता का लेबल भी चिपकाया गया है! और दुनिया को हम अजीब-से पति-पत्नी दिखाई दिये होंगे। लेकिन अब तक हम खास सामाजिक अपमान से बचे ही रहे हैं; यही नहीं, कई बार विवाह-संबंध तय करने में मध्यस्थ का नाजुक काम भी कर चुके हैं। इस एक मामले में तो मैं आपसे प्रशंसा पाने की अधिकारी अवश्य हूं—है न?

विदाई का पत्र लिखना बड़ा मुश्किल होता है। मैं भावुक नहीं होना चाहती। लेकिन एकदम मुंहफट भी नहीं होना चाहती। मैं चाहती हूं कि तलाक की यह प्रार्थना शोभापूर्वक और परस्पर कम-से-कम दिल दुखाते हुए करूं। लेकिन कुछ अजीब-सी कृत्रिमता इस पत्र में घुस ही आयी है और मैं उसे रोक नहीं पायी हूं। आखिर तलाक का पत्र—चाहे कोई भी उसे लिखे—लुभावना पत्र नहीं हो सकता। ऐसा है तो मैं चाहती हूं कि एक शिष्ट और सीधा पत्र लिखूं, जो तलाकनामे से अधिक-से-अधिक मिलता हो।......और अब मुझे एक सरासर अप्रिय पत्र लिखने दीजिये, जो आपको मुझसे और भी विमुख कर दे ......

१९३४ का फरवरी मास था। सवेरे नौ बजे के आस-पास मैं अटामी होटल की दूसरी मंजिल पर एक कमरे में थी और मुझे याद है कि मैंने अपने कमरे के ठीक नीचे एक चट्टान पर आपको स्लेटी रंग के सूट में देखा था। यह कहानी एक बहुत ही पुराने दिन की है, जो अब सपने की तरह धुंधला पड़ गया है। इसलिए शांत दिल से मेरी बात सुनिये। चमकीले गोखरुओंवाली वह रेशमी हाओरी कितने जोर से मेरी आंखों में चुभी थी! उसे एक ऊंची, रूपवती स्त्री ने पहन रखा था, जो आपके पीछे-पीछे बाहर आयी। मैंने नहीं सोचा था कि

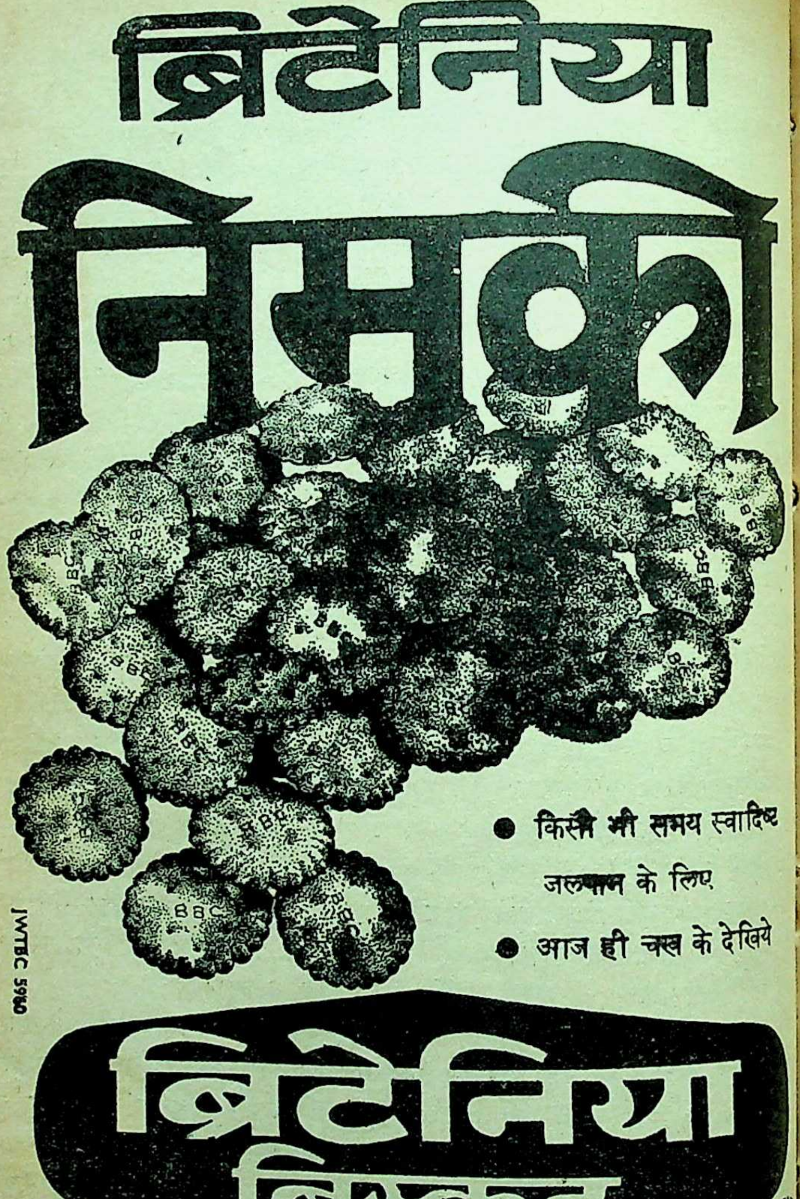
ब्रिटेनिया
निमकी
BBC
• किसी भी समय स्वादिष्ट जलपान के लिए
• आज ही चख के देखिये
JWTBC 5960
ब्रिटेनिया बिस्कुट
IS:1011

मेरी आशंका इस तरह अक्षरशः सत्य सिद्ध होगी । मेरी आशंका निराधार थी या सही, यह पता लगाने के लिए ही मैं रात-भर रेल का सफर कर, रात-भर जागकर, अभी-अभी वहां आयी थी । घिसे-पिटे मुहावरे में कहूं, तो मैं चाहती थी कि अगर मैं स्वप्नलोक में जी रही हूं, तो उस स्वप्नलोक को छिन्न-भिन्न कर दूं ।

उस समय मैं तीस वर्ष की थी, जितनी कि अब शोको-सान है । निश्चय ही, जीवन के क-ख से भी अपरिचित एक नववधू के लिए यह आघात बहुत जबर्दस्त था । बैरे को बुलाकर बिल चुकाते ही मैं बाहर को भागी। उस कमरे में अब एक क्षण भी ठहरना मेरे लिए दूभर था। होटल के बाहर मैं पटरी पर जरा रुकी, तो दर्द की एक बहुत ही गरम, झुलसा देनेवाली लौ मेरे सीने में धधक उठी । क्षण-भर मैं इस पसोपेश में खड़ी रही कि समुद्र की ओर जाऊं, या स्टेशन की ओर। फिर समुद्र-तट की ओर चल पड़ी; लेकिन अभी पचास कदम भी नहीं चली थी कि रुक गयी । वहां खड़े-खड़े मैं उस हेमंत-कालीन समुद्र को देखने लगी । धूप में वह ऐसे चमक रहा था, जैसे कि रंग की टयूब को दबाकर अभी-अभी गाढ़ा नीला रंग उस पर पोत दिया गया हो । थोड़ी देर बाद मैंने समुद्र की ओर पीठ फेर ली और अपना विचार बदलकर स्टेशन की ओर कदम बढ़ा दिये । अब वे सब बातें याद करती हूं, तो समझ में आता है कि मेरी उसी क्रिया ने ही मुझे इस क्षण और इस स्थान पर पहुंचाया है । अगर मैं समुद्र-तट पर चली गयी होती, जहां आप उस समय थे, तो आज मैं और ही व्यक्ति होती । लेकिन इसे सौभाग्य समझिये या दुर्भाग्य, मैं वहां गयी नहीं । अवश्य ही वह मेरे जीवन का सबसे बड़ा मोड़ था ।

क्यों नहीं मैंने समुद्र की राह पकड़ी ? कारण बस इतना ही है—मैंने बरबस यह अनुभव किया कि अपने से पांच-छः वर्ष बड़ी उस रूपवती स्त्री से, अर्थात् अपनी मौसेरी बहन सैको से, मैं हर तरह से घटिया हूं—अनुभव में, ज्ञान में, प्रतिभा में, रूप में, भावनाओं की सुकुमारता में, काफी का प्याला उठाने की अदा में, साहित्य की चर्चा में, संगीत के रसास्वादन में, चेहरे पर मेक-अप लगाने में, अर्थात् हर किसी चीज में घटिया हूं । ओह मेरा वह दैन्य ! बीस वर्ष की नववधू का वह दैन्य, जिसे कूंची की विशुद्ध बांकी रेखा ही अभिव्यक्त कर सकती है ! कुछ ऐसा ही अनुभव सरदियों में सवेरे-सवेरे समुद्र में कूदने पर आपको भी हुआ होगा। तब जरा भी हिलने-डुलने की हिम्मत नहीं होती; क्योंकि जरा-सा भी हिलें, तो ठंड और भी तेज, काटती हुई प्रतीत होती है। उस घटना के बहुत बाद कहीं मैंने निश्चय किया कि आपने मुझे धोखा दिया है, तो मैं भी आपको धोखा दूंगी ।

जीवन में ऐसा समय भी आया, जब मैं पागल हो जानेवाली थी; लेकिन अब सोचती हूं कि समय ने सब कुछ सुलझा दिया है। जैसे लाल गरम लोहा ठंडा पड़ता जाता है, उसी तरह आप ठंडे पड़ते गये । उसी हिसाब से मैं भी ठंडी पड़ती गयी । यह देखकर आप और ठंडे

मसूढ़ों के कष्ट और दंत-क्षय का सफल इलाज फोरहन्स टूथपेस्ट

स्वेच्छा से भेजे गये पत्रों* द्वारा प्रमाणित

* ये प्रमाणपत्र ज्यॉफ्री मॅनर्स एंड कं. लिमिटेड, के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं।

मेरे परिवार के सभी सदस्य अब फोरहन्स इस्तेमाल करते हैं, क्यों कि मुझे इस से जो लाभ हुआ, उन के लिए सब से अच्छा प्रमाण यही है। फोरहन्स इस्तेमाल करने के पहले दांत-दर्द और मसूढ़ों की तकलीफ से मैं हमेशा परेशान रहता था, लेकिन फोरहन्स को धन्यवाद, अब मेरे दांत सफ़ेद व सुदृढ़ हैं। मसूढ़े स्वस्थ बन गये हैं। पिछले कुछ सालों से मसूढ़े फूले तक नहीं। मैं किसी दूसरे टूथपेस्ट के इस्तेमाल बात दिमाग में ला तक नहीं सकता।

जी. एस., दिल्ली

रे दांतों की इस सफेदी और चमक-
क का राज फोरहन्स टूथपेस्ट है,
सैं काफी समय से इस्तेमाल कर
। मैं २७ साल का नवजवान हूं
तम्बाकू का शौकीन भी।
ही होंगे कि तम्बाकू खाने
धब्बे पड़ते हैं और उन
ढ़ जाती है लेकिन फोर-
अनोखी है ... यह

मेरे दांतों की इस सफेदी और चमक-दमक का राज फोरहन्स टूथपेस्ट है, जिसे मैं काफी समय से इस्तेमाल कर रहा हूं। मैं २७ साल का नवजवान हूं और पान-तम्बाकू का शौकीन भी। आप जानते ही होंगे कि तम्बाकू खाने से दांतों पर धब्बे पड़ते हैं और उन पर भूरी पर्त चढ़ जाती है लेकिन फोरहन्स की सफाई अनोखी है ... यह दांतों के दाग मिटा कर मेरे दांतों को सफेद और चमकीले बनाये रखता है।

पी. बी., बैंगलोर

फोरहन्स

दांत-डाक्टर द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR
THE GUMS
... YOUR TEETH

और पूरी जोड़ी के लिए,

फोरहन्स दोहरे असरवाला टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये।

एकमात्र ऐसा टूथब्रश,
जो दांतों की सफाई के साथ
मसूढ़ों की धीमे-धीमे
मालिश भी करता है।

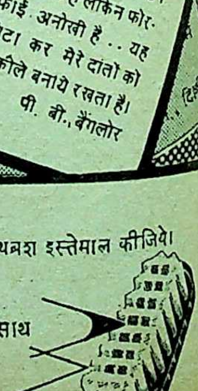

T. 32 A.HIN

हो गये; और होते-होते आज हम [illegible] इतने ठंडे कि दोनों को महसूस होता है कि हमारी पलकें भी जमकर बर्फ बन गयी हैं। आप दिखावा करते रहे कि मेरी बदनाम हरकतों का आपको कुछ भी पता नहीं है—यद्यपि कभी आपके मुंह पर नफरत, तो कभी अप्रसन्नता और कभी बोरियत उभर आती थी। मैं अच्छी तरह जानती थी कि मेरी हरकतों से किस प्रकार आपकी भृकुटियां तनेंगी। लेकिन आप थे कि कभी एक बार भी इस सलूक के लिए मुझे पर्याप्त सख्ती से डांटा-डपटा नहीं, डांटने-डपटने की हिम्मत नहीं की। अगर आप अपनी शिकारी बंदूक से तीतर-बटेर मार सकते थे, तो क्यों नहीं मेरे सीने में गोली दाग सकते थे? अगर आपको मुझे धोखा ही देना था, तो क्यों नहीं और बेरहमी से, और पूरी तरह धोखा दिया? आदमी के झूठ भी औरत को देवी बना दे सकते हैं......

लेकिन दस साल से भी ज्यादा मैं आपके साथ ऐसा जीवन बसर करती रह सकी, तो इसीलिए कि मेरे हृदय के किसी कोने में यह धुंधली, हठीली आशा छिपी बैठी थी कि किसी दिन हमारे इस व्यवहार का अंत होगा—कोई घटना घटेगी, कोई चीज आयेगी। वह क्या होगी, इसकी दो ही संभावनाएं मुझे सूझती थीं। या तो मैं आंखें मूंदकर आपके सीने से लग जाऊंगी, या आपकी छाती में चाकू घोंप दूंगी—वही चाकू, जो आप मिस्र से मेरे लिए स्मृतिचिह्न के रूप में लाये थे—और आपका खून बहा दूंगी।

आपका क्या खयाल है कि इनमें से मैं किसकी कामना करती थी? मैं स्वयं नहीं जानती।

हां तो पूरे पांच साल बीत चुके हैं। और ऐसी घटना हुई भी थी, याद है आपको? अगर मैं भूलती नहीं, तो आपके दक्षिण एशिया के दौरे से लौटने के तुरंत बाद की बात है। मैं दो दिन के लिए बाहर गयी थी। और तीसरे दिन घर लौटी तो जरा नशे में थी। मेरा खयाल था कि आप व्यापार के सिलसिले में टोकियो गये हुए हैं। इसलिए यह देखकर मैं हैरान हुई कि आप लौट चुके हैं। आप कमरे में अकेले ही थे और अपनी बंदूक के साथ खट-पट कर रहे थे। बाहर की डाइनिंग टेबल का ऊपर का भाग छज्जे के नीचे, कांच के दरवाजे के सहारे रख दिया गया था। दरवाजे पर कमरे के कुछ हिस्से की परछाईं पड़ रही थी। उस पर मैं आपका प्रतिबिंब देख सकती थी। आप सफेद कपड़े से बंदूक की नली साफ कर रहे थे। नली को पोंछकर आपने डाट लगायी। उसके बाद कई बार आपने बंदूक उठायी और झुकायी, हर बार उसे कंधे के बराबर ताना। थोड़ी देर बाद बंदूक हिली नहीं। अब वह आपके कंधे के सहारे स्थिरता से तनी हुई थी और आप एक आंख मींचकर निशाना साध रहे थे। मैं एकदम अकड़ गयी और मैंने पाया कि बंदूक का निशाना मेरी पीठ पर है।

"क्या ये मुझे गोली मार देंगे?" मैं ऊहापोह कर रही थी।

बेशक बंदूक भरी हुई नहीं थी; लेकिन मैं देखना चाहती थी कि क्या आप मेरा खात्मा कर देना चाहते हैं। मैंने निश्चिंतता का अभिनय करते हुए आंखें मूंद लीं।

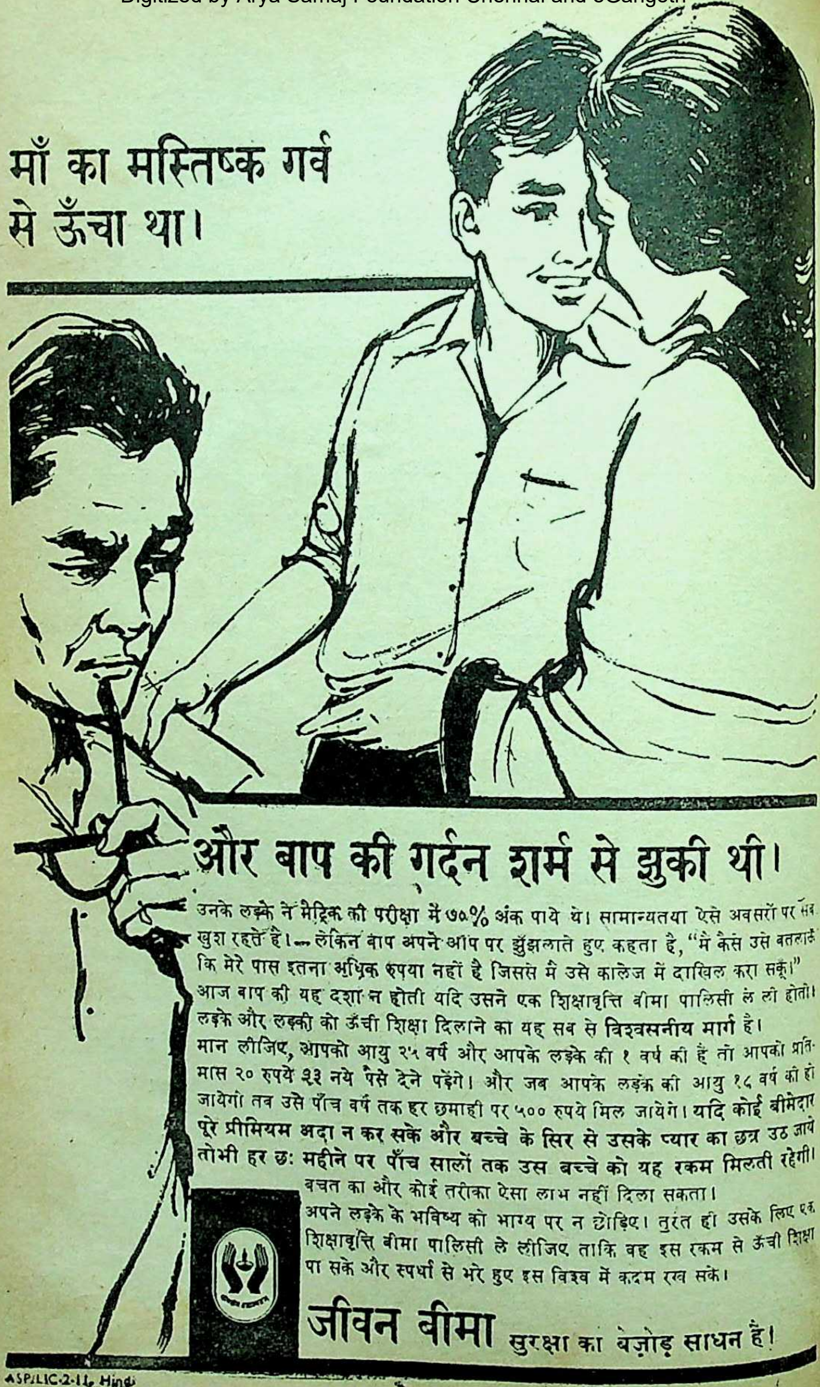

माँ का मस्तिष्क गर्व से ऊँचा था।

और बाप की गर्दन शर्म से झुकी थी।

उनके लड़के ने मैट्रिक की परीक्षा में ७०% अंक पाये थे। सामान्यतया ऐसे अवसरों पर सब खुश रहते है।— लेकिन बाप अपने आप पर झुँझलाते हुए कहता है, "मैं कैसे उसे बतलाऊँ कि मेरे पास इतना अधिक रुपया नहीं है जिससे मैं उसे कालेज में दाखिल करा सकूं।" आज बाप की यह दशा न होती यदि उसने एक शिक्षावृत्ति बीमा पालिसी ले ली होती। लड़के और लड़की को ऊँची शिक्षा दिलाने का यह सब से **विश्वसनीय मार्ग** है।

मान लीजिए, आपकी आयु २५ वर्ष और आपके लड़के की १ वर्ष की है तो आपको प्रति-मास २० रुपये ३३ नये पैसे देने पड़ेंगे। और जब आपके लड़के की आयु १८ वर्ष की हो जायेगी तब उसे पाँच वर्ष तक हर छमाही पर ५०० रुपये मिल जायेंगे। **यदि कोई बीमेदार पूरे प्रीमियम अदा न कर सके और बच्चे के सिर से उसके प्यार का छत्र उठ जाये तोभी हर छः महीने पर पाँच सालों तक उस बच्चे को यह रकम मिलती रहेगी।**

बचत का और कोई तरीका ऐसा लाभ नहीं दिला सकता।

अपने लड़के के भविष्य को भाग्य पर न छोड़िए। तुरंत ही उसके लिए एक शिक्षावृत्ति बीमा पालिसी ले लीजिए ताकि वह इस रकम से ऊँची शिक्षा पा सके और स्पर्धा से भरे हुए इस विश्व में कदम रख सकें।

जीवन बीमा सुरक्षा का बेज़ोड़ साधन है!

ASP/LIC-2-11, Hindi

अधीर होकर मैं इंतजार करती रही कि कब कमरे के सन्नाटे में बंदूक के घोड़े की 'क्लिक' की आवाज हो। लेकिन आवाज हुई नहीं। अगर मैं उसे सुनती, तो तुरंत वहीं धड़ाम से गिर जाती—मैं उस अभिनय की तैयारी करती आयी थी, जैसे कि वर्षों से वही मेरे जीवन का प्रिय लक्ष्य रहा हो।

मेरा सब्र टूटने लगा था। मैंने चुपके-से आंखें खोलीं और देखा कि आप अब भी मेरा निशाना साधे हुए हैं। मैं थोड़ी देर उसी तरह बैठी रही। किंतु अचानक ही यह सब कुछ मुझे एकदम उपहासास्पद प्रतीत होने लगा और मैं मुड़ी। जब मैंने परछाईं के बजाय, असली दृश्य पर नजर डाली, तो आपने फुर्ती से बंदूक की नली परे हटा ली। अपनी कुलटा पत्नी को आपने गोली क्यों नहीं मार दी? मैं तो समझती हूं, उस समय मैं गोली मार दी जाने के योग्य ही थी। आपकी मुझे मार डालने की काफी इच्छा भी थी; फिर भी आपने बंदूक का घोड़ा नहीं दबाया। अगर आपने घोड़ा दबा दिया होता, अगर आपने मेरी लंपटता को सह न लिया होता, अगर आपने अपनी नफरत की गोली मेरे कलेजे के पार कर दी होती, तो शायद मैं चुपचाप एकदम आपके सीने पर झुक जाती। या उलटे, हो सकता है बंदूक चलाने में अपनी दक्षता का परिचय आपको देती।

सैको-सान की मृत्यु के पिछले दिन मैं उसकी तबीयत पूछने गयी थी। और मैं चौंक पड़ी यह देखकर कि दस साल से भी अधिक समय बाद वह फिर वही हाओरी पहने हुए है, जो बहुत पहले अटामी में सुबह की चमचमाती धूप में दुःस्वप्न की तरह आंखों को झुलसाकर, मेरी पुतलियों पर अपना दाग छोड़ गयी थी। वही बड़े-बड़े, सुंदर लाल गोखरुओं-वाली हाओरी आज आपकी कृशकाय प्रेयसी के कमजोर कंधों से झूल की तरह लटक रही थी। कमरे में दाखिल होते ही मैं चिल्ला उठी—"कितनी सुंदर!" फिर बैठकर मैं शांत होने का यत्न करने लगी। लेकिन जब यह खयाल आया कि आज वह ऐन मेरी आंखों के सामने वही हाओरी क्यों पहने हुए है, तो मेरा खून गरमा गया। मैं समझ गयी कि अब मेरा आत्मसंयम टूट जायेगा। लेकिन एक पत्नी से उसके पति को खसोट लेनेवाली औरत के पाप और बीस बरस की नवोढ़ा वधू की दीनता—इन दोनों को एक रोज न्याय के दरबार में आमने-सामने खड़ा करना जरूरी था। और प्रतीत हो रहा था कि अब उसका समय आ पहुंचा है। मैंने अपने रहस्य की पिटारी, जिसका अब तक मैंने किसी को आभास तक नहीं होने दिया था, निकाली और गोखरूवाले कोट के सामने खोलकर रख दी।

"तुम्हारी यह हाओरी कितनी ही स्मृतियों को ताजा कर देती है—है न?"

छोटी-सी, लगभग सुनाई न देनेवाली विस्मय-भरी चीख के साथ वह मेरी ओर मुड़ी।

"तुमने यही हाओरी तब पहनी थी, जब तुम अटामी में मेरे पति के साथ थीं—है न? माफ कर देना, लेकिन उस रोज मैं भी वहां पर थी और मैंने सब कुछ देखा।"

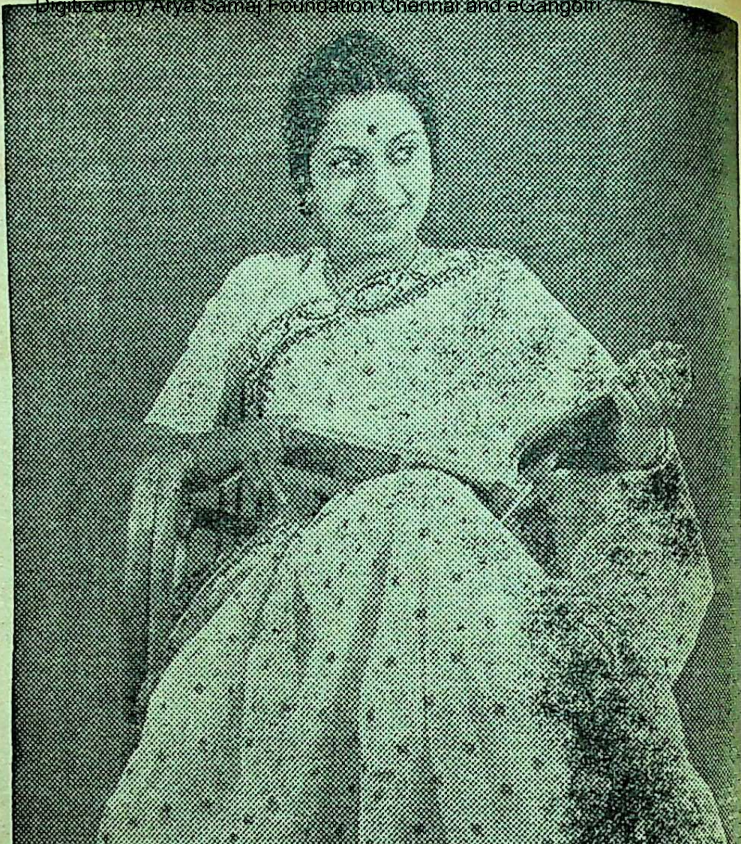

det
PROUD OF YOUR WASH!
Swastik Oil Mills Ltd., Bombay 31
डेट

प्रसन्नचित्र गृहणी...उसे हर काम के लिए
अवकाश है ...घर की सजावट व सुन्दरता के लिए...
अपने पति पर गर्व लिए... स्वयं पर भी...

डेट द्वारा
अपने धुले कपड़ों पर भी
शान लिए

डेट न केवल कपड़ों को धोता ही है
बल्कि उससे साफ़ हुए कपड़ों में
चमक सी भी आ जाती है

आधुनिक रीति अपनाइए
शान के साथ डेट से कपड़े धोइए
डेट एक सिन्थेटिक डिटर्जेन्ट

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड बम्बई

shilpi

जैसी कि मुझे आशा थी, उसका चेहरा मेरे देखते-देखते फक पड़ गया । फिर मैंने देखा, उसके मुंह के पास की मांसपेशियां जुगुप्साजनक ढंग से ऐंठ रही हैं । वह एक भी शब्द न बोल सकी और मुंह नीचा किये, घुटनों पर रखे अपने सफेद-सफेद हाथों को घूरती रही ।

उस क्षण मेरे शरीर में आनंद की फुरफुरी-सी दौड़ गयी–मानो मैं 'शावर' के नीचे खड़ी थी, मानो इसी क्षण के लिए इतने वर्षों से जी रही थी । किंतु हृदय के दूसरे खंड में मैं अवर्णनीय शोक भी अनुभव कर रही थी कि इतने वर्षों बाद अब उन दोनों संभावित अंतों में से कोई एक निश्चय ही आ पहुंचेगा ।

कुछ समय बाद जैसे-तैसे उसने अपना निस्तेज मुखड़ा ऊपर उठाया और बड़े ध्यान से मुझे देखा । उस समय मैंने महसूस किया कि वह मर जायेगी । बिलकुल तभी मौत उसमें प्रविष्ट हुई होगी । नहीं तो वह इतनी शांत न दिखाई देती ।

"नहीं, मुझे कोई एतराज नहीं । मैं अब 'उन्हें' बाकायदा तुम्हारे हवाले करती हूं ।"

और मैंने यह सोचते हुए कि शायद आखिरी बार मैं उसे देख रही हूं (कैसा भयंकर पूर्वाभास था यह !) यह जवाब दिया–"उसकी फिक्र न करो । हमारा हिसाब-किताब साफ हो गया है; क्योंकि मैं भी तो दस साल से ज्यादा तुम्हें धोखा देती रही ।"

न चाहते हुए भी मैं हंस पड़ी । फिर यत्नपूर्ण शालीनता और अदा के साथ झटपट कमरे से बाहर निकल गयी ।

"मिडोरी-सान !"...मैंने पीछे से आती हुई उसकी आवाज सुनी; लेकिन बिना उत्तर दिये या ठहरे गलियारे में मुड़ गयी ।

"ओह, आप कितनी फक पड़ गयी हैं !"...चाय लेकर आती हुई शोको-सान के शब्दों ने मुझे चौंका-सा दिया और तब एकाएक मैंने जाना कि मेरे चेहरे का भी रंग उड़ गया है ।

अब तो आप काफी अच्छी तरह समझ गये होंगे कि मेरे लिए आपको तलाक दे देना क्यों जरूरी है, या कि आपके लिए मुझे तलाक दे देना क्यों जरूरी है । मुझे अफसोस है कि मैंने इतनी सारी अशिष्ट बातें लिख डालीं; किंतु अब हमारे दस वर्षों से भी लंबे दुःखपूर्ण संबंध का अंत आ पहुंचा प्रतीत होता है ।

सैको का पत्र

मरणोत्तर पत्र भी क्या ही अजीब चीज होती है ! भले ही यह जीवन इस पत्र में ही भरा है और केवल पंद्रह-बीस मिनिट चलता है–हां यह जीवन उतना ही छोटा है–तो भी मैं सच्चे दिल से अपना असली स्वरूप तुम्हें देना चाहती हूं । यों यह बात भयंकर प्रतीत होती है, पर मैं अनुभव करती हूं कि जब तक मैं जीवित रही, मैंने अपना असली स्वरूप तुम्हें

जब भोजन **वनस्पदा** से बना होता है
तो वह खाना खाने के लिये दौडे चले आते हैं

बुद्धिमती स्त्रियां जानती हैं कि स्वादिष्ठ भोजन का एक रहस्य है विटामिनयुक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से पकाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं परन्तु अधिक पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिये और अपने परिवार से प्रशंसा पाइये।

वनस्पदा
विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)
बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़ अकोला

ASP/V-18 HIN

Vanasda
BERAR OIL INDUSTRIES

कभी नहीं दिखाया। किंतु वास्तव में केवल वही मेरा असली स्वरूप है, जो आज तुम्हें यह चिट्ठी लिख रहा है।

अब भी मैं याद कर सकती हूं, यमाजाकी के तेनोजान पर्वत को और हेमंत के अंत की वर्षा से भीगे हुए उसके लाल पत्तों को। कैसे और कहां से वह इतना सारा सौंदर्य प्रदर्शित कर बैठा था! वर्षा से बचने के लिए हम स्टेशन के सामनेवाले प्रसिद्ध चायगृह के प्रवेश-द्वार पर सायबान के नीचे खड़े थे। और हमने दृष्टि डाली पहाड़ पर, जो कि स्टेशन के पीछे सीधा उठता चला गया था और बड़ी भव्यता से हमारे समक्ष खड़ा था। सांस रोके हम उसके सौंदर्य को देखते रह गये।

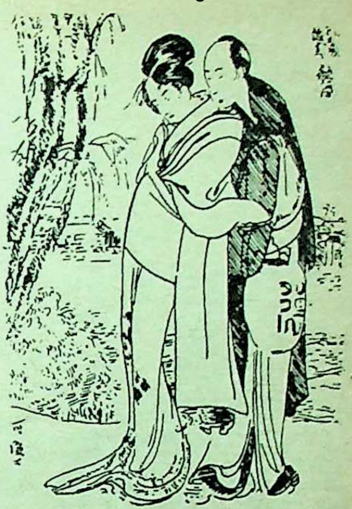

प्रेम एक आविष्टता है, ओब्सेशन है

यह पहला ही मौका था हमारे अकेले मिलने का। उस दिन सुबह तुमने मुझे क्योटो के तमाम उपनगरों की सैर करायी थी और तब तक मैं थककर चकनाचूर हो गयी थी। थक तो तुम भी अवश्य गये थे। जब हम पर्वत की एकदम सीधी और तंग सड़क चढ़ रहे थे, तुमने बिना किसी प्रसंग के ही कहा—"प्रेम एक आविष्टता, ओब्सेशन हैं। अगर मैं चाय के प्याले से आविष्ट हूं तो सब ठीक। फिर मुझे तुमसे आविष्ट क्यों नहीं होना चाहिये?" फिर तुम बोले—"तेनोजान का सौंदर्य हमीं दोनों ने देखा है—बिलकुल अकेले देखा है और एक साथ। अब हम वापस नहीं लौट सकते।"

तुम्हारे महत्वहीन किंतु व्यग्र शब्दों ने मेरे संकल्प को धराशायी कर दिया, मानो एक ही आघात में तुमने उसे ढहा दिया था। मेरा तुमसे किनारा कर लेने का संकल्प था और मैं उस दिन सवेरे तुम्हें यह बताने का निश्चय कर चुकी थी। परंतु तुम्हारे व्यग्र शब्दों और धमकियों में मैंने जो धूमिल वेदना देखी, उसने मेरी प्रेम पाने की स्त्री-सहज कामना को जगा दिया और फूल की तरह खिला दिया।

ओह कितना आसान था अपनी बेवफाई को क्षमा कर देना, जब कि मैं अपने पति की बेवफाई को हर्गिज क्षमा नहीं कर सकती थी!

तुमने "पाप" शब्द का उपयोग पहली बार अटामी होटल में किया था। तुमने कहा था—"आओ, हम पापी ही बन जायें!" क्या तुम्हें भी वे शब्द उतनी अच्छी तरह याद हैं, जितने कि मुझे हैं? जब तुमने पूछा—"क्या तुम मेरी मदद नहीं करोगी, जीवन-भर मिडोरी

HIN

Loma
REGD.
Loma
HAIR & OIL
Cooling the head
SHAKE WELL BEFORE USE
LOMA PRODUCTS (INDIA)
Loma

अब
लीजिये
लोमा
दस्ती शीशी में

१०० ग्राम
मध्यम आकार

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं
शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
एजेंटस: **सी. नरोत्तम एंड कं.** बम्बई -२

को धोखा देने में ?" तो मुझे यह उत्तर देते हुए क्षण-भर भी झिझक नहीं हुई कि 'जब पापी हुए बिना चारा ही नहीं है, तो हम महापापी ही बनेंगे और जब तक जियेंगे, हम अकेले मिडोरी-सान को ही नहीं, बल्कि सबको धोखा देंगे ।' और हमारी छिपी मुलाकातें शुरू होने के बाद पहली बार उस रात मैं गहरी नींद सो पायी ।

किंतु ऐसी स्मृतियां किसी के काम नहीं आतीं । उन घटनाओं के साथ आरंभ हुए ये पिछले तेरह वर्ष स्वभावत: पीड़ा और विकलता से भरे रहे हैं । तो भी मैं समझती हूं कि मैं और सबसे अधिक सुखी रही हूं । मैं कह सकती हूं, तुम्हारे अपार प्रेम के प्रीतिकर आलिंगन में बंधी मैं उससे कहीं अधिक सुखी रही हूं, जितने सुख की कोई आशा कर सकता है ।

पाप......पाप......पाप ! पाप की अनुभूति सदा मेरे पीछे लगी रही और मृत्यु मुझे हमेशा सामने दिखाई देती रही । मैंने सोच लिया था कि मिडोरी-सान को इसका पता चल गया, तो मुझे मर जाना पड़ेगा ; अगर उसे इसका पता चल गया, तो मैं अपने पाप की कीमत अपने प्राणों से चुकाऊंगी । किंतु इसी कारण मेरा सुख असंख्य गुना बढ़ गया था ।

कौन कल्पना कर सकता है कि अपने जिस स्वरूप के संबंध में मैंने लिखा है, उससे भिन्न कोई स्वरूप भी मेरा होगा । (शायद तुम कहोगे कि मेरा यह कहने का ढंग घमंड-भरा और चुभनेवाला है ; लेकिन मैं इसे कहने का और कोई ढंग सोच नहीं सकती ।) हां, सैको नाम की स्त्री में एक और स्त्री भी रहती रही है, जिसे मैं स्वयं भी नहीं जानती थी–एक और स्त्री, जिसे तुमने कभी नहीं जाना, जिसकी तुमने कभी कल्पना भी नहीं की ।

वह आज दोपहर को प्रकट हुई । जब मिडोरी-सान मेरा हालचाल पूछने आयी और मेरे कमरे में प्रविष्ट हुई, मैं वही सुर्ख-स्लेटी रेशमी हाओरी पहने हुए थी, जो बहुत पहले तुमने मिटो सिटी से मंगवाकर दी थी और जो जवानी के दिनों में मेरी सबसे मनपसंद पोशाक थी । कमरे में आते ही मिडोरी-सान की नजर उस पर पड़ी । वह चकित-सी मालूम दी । क्योंकि जो कुछ वह कहने लगी थी, उसे तो बीच में ही छोड़ दिया और कुछ समय चुप रही । मैं भी यह सोचकर शरारतन चुप रही कि मुझे जवान स्त्रियों के लायक यह भड़कीली पोशाक पहने देखकर ही वह चकरायी है ।

फिर अजीब-सी भावशून्य आंखों से मुझे देखते हुए वह बोली–"यही हाओरी तो तुमने उस दिन भी पहनी थी, जब तुम मिसुगी के साथ अटामी में थी–है न? ......उस दिन मैंने सब कुछ देखा ।"

उसका चेहरा एकदम फीका और गंभीर था और उसकी आवाज कटार की तरह पैनी थी, जिसे मानो वह मेरे शरीर में घोंप देना चाहती थी । एक क्षण बाद मैं समझ पायी ।

"तो यह सब कुछ जानती है और वह भी इतने लंबे समय से !" मैंने सोचा ।

अजीब बात है ! मैंने अपने को बिलकुल शांत पाया । जिस आपदा का मुझे इतना

भय था, वह आ पहुंची थी, किंतु मुझे तनिक भी आतंक अनुभव नहीं हो रहा था। ऐसा था—कैसे उसका वर्णन करूं?—जैसे बड़ा निर्विघ्न, शांत आराम मिल रहा हो। कोई तिरेक मुझे उड़ाये ले जा रहा था, जिसे मुक्ति कहा जा सकता हैं। जब मैं होश में आयी, वह कमरे से बाहर हो चुकी थी और तेज-तेज कदमों से गलियारे में चली जा रही थी।

"मिडोरी-सान !" मैंने पुकारा।

मैं चिल्लायी क्यों थी ? मैं स्वयं नहीं जानती। शायद मेरी इच्छा रही हो कि थोड़ी देर और मेरे सामने बैठी रहे। अगर वह लौट आयी होती तो हो सकता है, बिना वट के सहज ही मैं उससे कहती—"क्या, तुम अपना पति बाकायदा मुझे न दे दोगी?" उतनी ही भावुकता के साथ मैंने यह भी कहा हो सकता था—"लो, अब तुम्हारा पति लौटा देने का वक्त आ गया है।"

इन दो में से कौन-सी बात मैंने कही होती, मैं नहीं जानती। वास्तव में, मिडोरी वापस नहीं आयी।

फिर मैं खूब गहरी नींद सो गयी। जब शोको ने मुझे हिलाया और मेरी नींद मेरा एक-एक जोड़ इस बुरी तरह दुख रहा था कि मैं उठ तक न सकी। मानो इन तेरह की सारी थकान एक साथ ही मुझ पर टूट पड़ी थी। मैंने देखा, मेरे मामा मेरे सिरहाने हुए हैं। वे मेरा हाल-चाल पूछने आये थे, लेकिन सिर्फ तीस मिनिट ठहर सकते थे; व्यापार के सिलसिले में वे ओसाका जा रहे थे। कुछ देर वे इधर-उधर की बातें करते और जल्दी ही चलने लगे। द्वार पर जूते के फीते बांधते हुए उन्होंने कहा—"अरे हां, काडो ने दूसरी शादी कर ली हैं।"

काडोटा !... कितने साल से मैंने यह शब्द नहीं सुना था ! हां, मामाजी का मत मेरे पिछले पति से ही था। यह नाम उन्होंने यों ही सहजभाव से लिया था; लेकिन वह से मेरे हृदय पर आ पड़ा।

"कब ?" मेरी आवाज इस कदर कांप गयी कि मुझे भी उसका भान हुए बिना न

"पिछले या उससे पिछले महीने। सुना हैं, ह्योगो में उसने अपने अस्पताल के एक नया मकान भी बनवाया है।"

"अच्छा !" बस इतना ही कह सकी मैं।

मामाजी के चले जाने पर मैं बहुत धीमे-धीमे, कदम पर कदम धरते हुए, गलि पार करने लगी और रास्ते में अतिथि-कक्ष में मैंने खंभे का सहारा लिया। अकस्मात् बेहोशी-सी आने लगी, मानो मेरा शरीर किसी खड्ड में गिरा जा रहा था।

उस समय तक मैंने कभी खयाल भी नहीं किया था कि काडोटा का पुनर्विवाह लेना मुझे इस कदर झकझोर डाल सकता है। यह क्या हो गया था मुझे ? कुछ समय

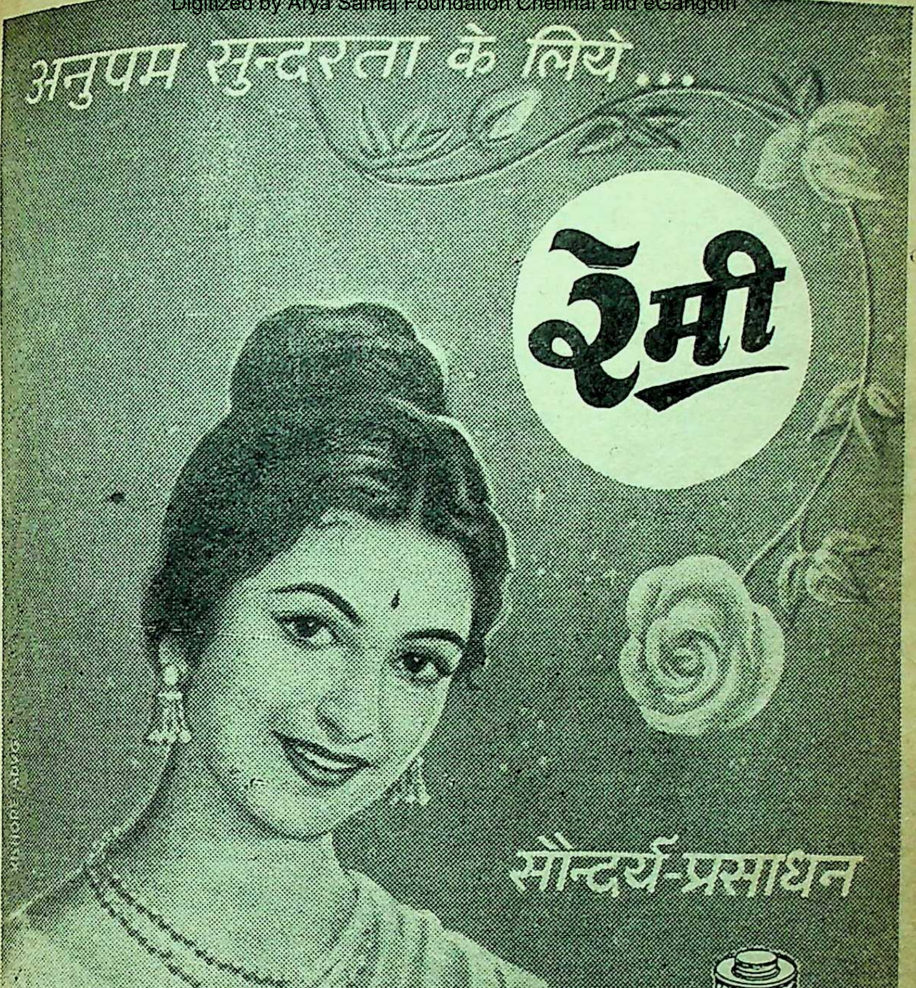
अनुपम सुन्दरता के लिये...
रेमी
सौन्दर्य-प्रसाधन
Remy
Remy SNOW
Remy
Remy

चकाचक उजलेपन के लिए

विक्टोरिया ब्लू (नील)

00B

श्रेष्ठ किस्म की शुद्ध आधुनिकतम

अल्ट्रामरीन ब्लू (नील)

GENUINE
BEST ULTRA-MARINE
VICTORIA BLUE
00B
Manufactured in India by
Ultramarine & Pigments Ltd.
AMBATTUR (NEAR MADRAS)

पश्चिम जर्मनी के प्रतिष्ठानके सहयोग से भारतमें बनानेवाले
अल्ट्रामरीन एण्ड पिगमेण्टस् लिमिटेड
अम्बतूर (मद्रास के निकट)
सोल सेलिंग एजन्टस्: **केमडाइस ट्रेडिंग कम्पनी**
२८, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई – १
३१८, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट – मद्रास – १
जिन क्षेत्रोंमें प्रतिनिधित्व नहीं है
वहां स्टाकिस्टस् चाहिए

मालूम नहीं, कितने समय बाद—मैं कमरे में से देख सकी कि शोको बगीचे में झड़े सूखे पत्ते जला रही है। सूरज डूब चुका था। मैंने इससे शांत और नीरव सांझ पहले नहीं देखी थी।

"ओह, तुमने आग सुलगा भी डाली !" मैंने बड़ी धीमी आवाज में और कुछ ऐसी अनुभूति के साथ यह बात कही, जैसे हम दोनों ने पहले ही तय कर रखा हो कि शोको मेरी डायरी को जलाने के लिए आग सुलगायेगी।

जब मैंने अपनी डायरी शोको को दी, तभी अपना खातमा कर लेने का निश्चय कर डाला। मैंने अनुभव किया कि अब चाहे कुछ भी हो, मुझे मरना ही होगा। या यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि अब और जीवित रहने की शक्ति मैं खो चुकी थी।

मुझे छोड़ने के बाद काडोटा ने फिर से विवाह नहीं किया था। कारण सिर्फ इतना था कि उसे इसका मौका नहीं मिला था; क्योंकि वह पढ़ने के लिए विदेश चला गया था, फिर लड़ाई के दिनों में दक्षिण एशिया भेज दिया गया था। अब सोचती हूं तो समझ में आता है—उसका अकेला रहना, एक स्त्री के नाते, मेरे लिए अदृश्य किंतु बहुत बड़ा सहारा था। ये शब्द उपयोग करते हुए भी मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहती हूं कि तलाक के बाद मैंने उसे कभी नहीं देखा हैं, न देखना ही चाहा हैं। कभी-कभार अकाशी में अपने रिश्तेदारों के मुंह से उसके बारे में कोई बात सुन ली, तो सुन ली, बस। वास्तव में, ऐसे भी कई साल गुजरे हैं, जिनमें उसका नाम एक बार भी याद नहीं आया।

यहां तक लिख लेने के बाद मुझे होश आया हैं। मैंने अपने असली स्वरूप के बारे में तो लिखा ही नहीं! पत्र आरंभ करते समय मेरे जो संकल्प थे, शायद वे टूट जायें; और ऐसा लगता है कि मैं दारुण और भीषण लगनेवाली उस चीज से बचने की कोशिश कर रही हूं।

उस दूसरे स्वरूप को मैं नहीं जानती थी—कितना आसान बचाव हैं! मैंने कहा कि वह आज ही पहले-पहल प्रकट हुआ। मैंने यह झूठ कहा। मेरा ऐसा कहना सरासर असत्य होगा। अवश्य ही मैं उसके अस्तित्व से बहुत पहले से परिचित रही हूंगी।

जब मैं ६ अगस्त को याद करती हूं, जिसमें ओसाका और कोबे के बीच का प्रदेश साक्षात् अग्निकुंड बन गया था, मुझे असह्य पीड़ा होती हैं। शोको और मैं एयर-रेड शेल्टर में चली गयी थीं, जिसे तुमने अपने हाथ से बनाया था। जब एक बार फिर हमारे सिर पर आकाश बी-२९ की घर्र-घर्र आवाज से भर गया, तो मुझे अचानक ही असह्य एकाकीपन की अनुभूति होने लगी। मैं अनुभव करने लगी कि अब एक मिनिट भी यहां बैठना मेरे लिए दुश्वार है और निरुद्देश्य ही मैं शेल्टर से निकल पड़ी। और मैंने तुम्हें बाहर खड़ा पाया।

पूर्व से पश्चिम तक आकाश धुंधला लाल था। तुम्हारे घर के पास भी आग भड़क उठी थी; लेकिन तुम भागकर मेरे पास आ गये थे और शेल्टर के द्वार पर खड़े थे। फिर मैं तुम्हारे साथ भीतर चली गयी; लेकिन वहां पहुंचते ही मैं रोने लगी। मुझे लगा, तुम दोनों

आप के
मन पसन्द

GG
BRAND
JAMS

BRAND

जेम्स
कैण्ड फ्रूट्स
चाकलेट
आदि

जी॰ जी॰ फ्रूट प्रिजर्विंग फैक्टरी
हल्द्वानी (जिला-नैनीताल)
प्रधान कार्यालय आगरा

आप
खाँसी ज
ही मि
जाय

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स की गोलियाँ चूसिए—आप देखेंगी कि इन आरोग्यकारी भाप बहुत ख़ूबी से दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़ को साफ़ करती है और ब्रांकाइटिस खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है।

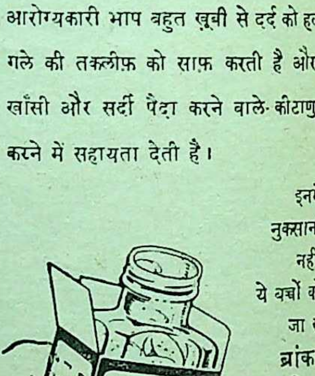

इनमें कोई
नुकसानदेह दवाई
नहीं होती
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती है
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती है
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि
FPY 55

बम्बई के सोल एजेंट :—केम्प एंड कं॰ लि॰
पो॰ बॉ॰ नं॰ [illegible], बम्बई २८

सोच रहे हो
तुम्हारे मह
आबद्ध होक
सफेद अस्प
मैंने ट्रेन से
भावना को
और
नाराज मत
बनाये रखने
दोहराया,
उस
कुछ बचा न
अपनी एका
प्रेम की रक्ष
रही थी, जब
उस
तुमने मुझे
इसका अपव
सिर्फ मिडो
सूने हृदय मे
हम
तब मैं कन्य
धातुओं के व
मारा जाना
था—प्यार क
हुए पेंसिल व
पीछे की सी
वाक्य वहां
जाये।" मैंने
प्यार करूं"
छोटा-सा शु

सोच रहे हो कि बहुत [illegible] के कारण मुझे हिस्टीरिया हो गया है। मुझे माफ कर दो। तुम्हारे महान प्रेम में—और तुम्हारा प्रेम मेरी पात्रता से बहुत अधिक महान है—उस प्रेम में आवद्ध होकर भी, तब मैं यही सोच रही थी कि काश मैं भागकर ह्योगो में उस साफ-सुथरे, सफेद अस्पताल के पास काडोटा के एयर-रेड शेल्टर के सामने खड़ी हो सकती ! एक बार मैंने ट्रेन से वह अस्पताल देखा था। उस अदम्य इच्छा से मैं कांप रही थी और रो-रोकर उस भावना को बड़े यत्न से दवा रही थी।

और हां, जब इतना सब लिख ही दिया है, तो मैं तुमसे कुछ भी छिपाऊंगी नहीं। नाराज मत हो जाना। अटामी में उस तूफानी रात में, जब हम दोनों ने अपने प्रेम को बनाये रखने के लिए पापी बनने और दुनिया में सबको धोखा देने का अपना दयनीय संकल्प दोहराया, उस रात में ......

उस दु:साहसी प्रेम का इकरार करने के बाद हमारे पास परस्पर कहने के लिए और कुछ बचा न रहा। उस समय मुझे इसका भी भान नहीं रहा कि तुम मेरी बगल में हो और मैं अपनी एकाकी आत्मा को छाती से चिपटाये पड़ी रही। उस वक्त मानो हम दोनों ने अपने प्रेम की रक्षा के लिए साझा मोर्चा बांधा था। लेकिन मैं क्यों ऐसी घोर उदासी में डूबी जा रही थी, जबकि हमने खूब सुखी रहने का निश्चय कर लिया था ?

उस रात तुमने तय कर लिया था कि तुम हर किसी को धोखा दोगे। मेरा खयाल है, तुमने मुझे धोखा न देने का निश्चय किया होगा। लेकिन मैं...... मेरा विचार किसी को इसका अपवाद रखने का नहीं था—तुम्हें भी नहीं। "जब तक जिऊंगी, सबको धोखा दूंगी, सिर्फ मिडोरी-सान और सारी दुनिया को ही नहीं, तुम्हें भी और अपने आपको भी।" मेरे सूने हृदय में यह विचार दलदल की रोशनी की तरह चुपचाप जल रहा था।

हम किसी को प्यार करें, कोई हमें प्यार करे—कितनी दयनीय हैं हमारी ये इच्छाएं! तब मैं कन्याशाला की नौवीं या दसवीं कक्षा में पढ़ती थी। अंग्रेजी व्याकरण की परीक्षा में धातुओं के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य रूपों के विषय में हमसे सवाल पूछा जा रहा था। मारना, मारा जाना; देखना, देखा जाना। ऐसे बहुत-से उदाहरणों के बीच एक गजब का जोड़ा था—प्यार करना, प्यार किया जाना। सभी लड़कियां आतुरता से प्रश्नों पर नजर डालते हुए पेंसिल का सिक्का चबा रही थीं। तभी किसी ने शरारतन एक पर्ची घुमानी शुरू की और पीछे की सीटवाली लड़की ने पर्ची मेरे पास पहुंचायी। मैंने उस पर नजर डाली और दो वाक्य वहां पाये—"मैं चाहती हूं कि मैं प्यार करूं ! ......मैं चाहती हूं कि मुझे प्यार किया जाये।" मैंने देखा कि "मुझे प्यार किया जाये" के नीचे बहुत-से शून्य बने हुए हैं, जब कि "मैं प्यार करूं" के नीचे एक भी निशान नहीं है। मैं ही भला कौन अपवाद थी ! मैंने भी एक छोटा-सा शून्य "मुझे प्यार किया जाये" के नीचे जोड़ दिया। ऐसा लगता है कि सोलह-सत्रह

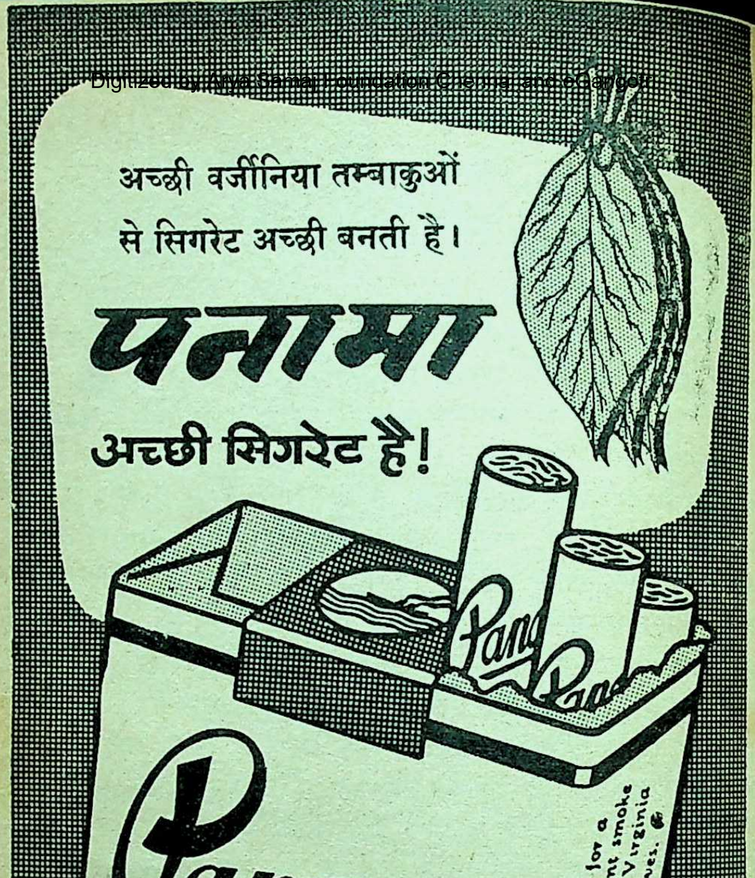
अच्छी वर्जीनिया तम्बाकुओं
से सिगरेट अच्छी बनती है।
पनामा
अच्छी सिगरेट है!
Panama
Panama
Panama
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves.
20
CIGARETTES
GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई - ५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT (P) 63 Hin

की कच्ची उम्र में, जब कि प्यार करने और प्यार किये जाने का अर्थ पूरी तरह हमें मालूम नहीं होता, तब भी हम औरतें सहज प्रेरणा से यह जान रही होती हैं कि प्यार किये जाने का सुख क्या है ।

लेकिन उस रोज परीक्षा में मेरी बगल में बैठी लड़की ने वह पुर्जा हाथ में लिया, एक नजर उसे देखा और बिना झिझके एक बड़ा-सा शून्य वहां बना दिया, जहां अभी तक एक भी निशान नहीं बना था । आज भी मुझे बहुत स्पष्ट याद है कि उस समय मैं चकरा गयी थी– मानो किसी ने मुझ पर पीछे से एकाएक वार कर दिया हो; यद्यपि साथ ही उसके दृढ़ और साहसी रुख पर मुझे तनिक जुगुप्सा भी हुई थी । वह हमारी क्लास की कम चुस्त लड़कियों में से थी, एकदम साधारण और कुछ मनहूस किस्म की । लेकिन अब यह पत्र लिखते समय, बीस से भी अधिक वर्षों के बाद, उस एकाकी लड़की का मुखड़ा मेरी आंखों के सामने यों तैर रहा है, जैसे अभी-अभी की बात हो ।

एक स्त्री है, जो कह सकती है कि मैंने प्यार किये जाने का सुख भरपूर चखा है; और दूसरी स्त्री है, जो कह सकती है कि यों तो मैं दुखिया ही रही, लेकिन मैंने प्यार किया है...... जब जीवन के अंतिम पहर में ये दोनों स्त्रियां चुपचाप लेट जायेंगी और मौत की दीवार की तरफ मुंह फेर लेंगी, तब इन दोनों में से किसको भगवान सच्ची शांति और विश्राम देगा ? लेकिन इस दुनिया में एक भी स्त्री है, जो भगवान के सामने कह सके–मैंने प्यार किया है ? हां, अवश्य होगी । और शायद वह हल्के बालोंवाली लड़की बड़ी होकर भगवान की चुनी हुई उन थोड़ी-सी स्त्रियों में से एक बन गयी होगी ।

ओह, मुझे कितनी नफरत है उससे ! मैं उसे परे हटाना चाहती हूं । लेकिन मैं नहीं जानती कि उस लड़की के चेहरे से कैसे पिंड छुड़ाऊं । मैं उसे कितना भी हटाऊं, वह मेरा पीछा करना नहीं छोड़ता । जबकि मैं मौत की प्रतीक्षा कर रही हूं और निश्चित है कि चंद घंटों में मौत आ पहुंचेगी, तब मुझे यह असह्य बेचैनी क्यों हो रही है ? हां, जो स्त्री प्यार करने का दर्द नहीं झेल सकती और प्यार किये जाने का सुख पाने के लिए भागी-भागी फिरती है, उसे न्यायतः मिलनेवाला दंड आज मैं भोग रही हूं ।

तेरह साल मैंने अपार सुख पाया, क्योंकि तुम मुझे प्यार करते थे; लेकिन फिर भी मुझे ऐसा पत्र लिखना पड़ रहा है–इसका मुझे दुःख है । अब, मैं समझती हूं, अंततः मैंने अपना असली स्वरूप तुम्हें दिखा दिया है । वैसे यह जीवन एक छोटे-से पत्र में भरा है और केवल पंद्रह-बीस मिनिट का है, तो भी यही मेरा वास्तविक जीवन है–सैको का सच्चा जीवन ।

पत्र के अंत में एक बार फिर यह कह दूं कि ये तेरह वर्ष ऐसे धुंधले हैं, जैसे कि कोई स्वप्न हो । तो भी तुम्हारे प्रेम के कारण ही मैं सुखी रही–संसार में दूसरे सबसे बहुत अधिक सुखी रही ।

★

MARGO
SOAP
HYGIENIC TOILET SOAP

आदर्श
पारिवारिक
साबुन

मार्गो सोप

यह एक मुलायम और स्निग्ध
साबुन है जो स्त्रियों और बच्चों
की नाजुक त्वचा की रक्षा करता है।
गंध विहीन नीम तेल से प्रस्तुत
और सुगंधित किया हुआ यह
साबुन स्वास्थ्यप्रद होता है
और हर प्रकार के दोष से
त्वचा की रक्षा करता है।

दि कैलकटा केमिकल कं० लि० कलकत्ता-२१

CMC-17 HIN

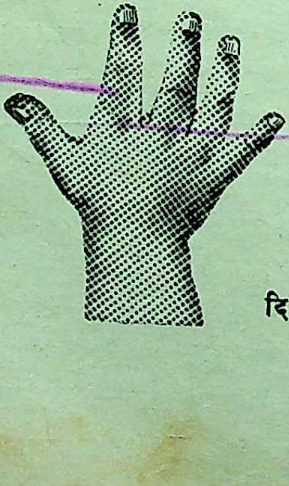

व्यक्तित्व को कैसे निखारें ?

शरद राकेश

आदमी हो या औरत, हर कोई यह चाहता है कि जब वह बाजार में से निकले, तो लोग उसे देखकर कहें—कहें नहीं तो भी मन में तो अवश्य सोचें– "वाह क्या तंदुरुस्ती पायी है! क्या आकर्षक व्यक्तित्व पाया है!" बेशक बहुत-से लोग तंदुरुस्ती और आकर्षकता ईश्वर के यहां से लेकर आते हैं। लेकिन जो इतने खुशकिस्मत नहीं हैं, वे भी अपने प्रयत्न से इन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

आकर्षक व्यक्तित्व शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर है। इसलिए अपने आकर्षण को बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखना आवश्यक है। और इस दृष्टि से मानसिक और शारीरिक उपचार के विशेषज्ञों ने काफी खोजें की हैं, जिनके परिणाम हम सभी के लिए उपयोगी हो सकते हैं। ऐसे ही कुछ परिणामों की हम यहां चर्चा करेंगे।

१. जबरन नहीं, मनपसंद कसरत :

कसरत करने से मनुष्य स्वस्थ रहता है और दीर्घकाल तक चुस्त व जवान रह सकता है—यह प्रचलित विश्वास बिलकुल ठीक है। लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिये कि रामलाल के लिए जो कसरत लाभदायक है, वह श्यामलाल के लिए भी उपयुक्त हो, यह जरूरी नहीं है। सबको अपनी प्रकृति के अनुसार, अपने मन के अनुकूल व्यायाम का तरीका अपनाना चाहिये।

इस विषय के अमरीकी विशेषज्ञ डा० टामस मैकगैवैक ने प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है कि जो कसरत मनपसंद न हो, दबाव में आकर की गयी हो, उससे शरीर को कोई लाभ नहीं होता। इसलिए हमें अपने स्वभाव और आदतों का ध्यान रखते हुए, ऐसे ही व्यायाम चुनने चाहिये, जो पसीना भी लायें, मन की प्रफुल्लता भी बढ़ायें।

दंड-बैठक, डंबबेल तथा दूसरी देशी-विदेशी कसरतों के अलावा तैरना, घूमना, हाकी-फुटबाल-कबड्डी आदि खेल भी बहुत उपयोगी हैं। इनमें भी शरीर की विभिन्न मांसपेशियों को श्रम करना पड़ता है, श्वास-क्रिया अधिक अच्छी तरह होती है और रक्त-संचार बढ़ता है। एक अतिरिक्त लाभ यह होता है कि मानसिक तनाव कम होकर स्फूर्ति आती है। जबरन की हुई कसरत में यह लाभ नहीं मिलता। मनोयोग पूर्वक किया हुआ कोई भी शारीरिक श्रम स्वास्थ्य-वर्धक हो सकता है।

वस्तुतः भोजन और व्यायाम दोनों में अपनी प्रकृति और रुचि का ध्यान रखना नितांत जरूरी है। अच्छे-से-अच्छा पौष्टिक भोजन भी शरीर को तभी लगता है, जब वह खानेवाले के मन और शरीर के अनुकूल

आप की रसोई में
नयी रुचि लाइये

Saffola
REFINED
KARDI
OIL

रसोई का
सहृदय
साधन

सफोला

अब रसोई का नया तरीका अपनाइये। फीके सुनहरे रंगके शुद्ध करड़ी के तेल सफोला में ही खाना पकाइये। करड़ी के तेल में संपृक्त चरबीयुक्त आम्ल तत्व अति कम मात्रामें होने से धमनियों के सख़्त होने का या उससे पैदा होनेवाली ख़तरनाक बीमारी का भय नहीं रहता; इसलिये करड़ी के तेल की डाक्टरों ने बड़ी सराहना की है।

अच्छी रसोई अब कोई चिन्ता की बात नही रही। खाना पकाने के लिये हमेशा उपयोग में लाइये सफोला – रसोई का सहृदय साधन।

सफोला ♥

सफोला मिलने में आपको कोई कठिनाई हो तो आपके
निकटवर्ती सफोला–विक्रेता की जानकारी के लिये हमे लिखें।
दि बाम्बे आयल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड,
कानमूर हाउस, बम्बई ९

OBO-5A-HIN

हो। जो भोजन रुचिकर न लगता हो, उससे लाभ नहीं होता, वरन् निश्चित रूप से हानि होती है। जो आदतन और सिद्धांततः शाकाहारी हैं, उसे अंडे या चूजों के शोरबे के सेवन के लिए विवश करने में कोई बुद्धिमानी नहीं है। हां, रुचि का अर्थ जीभ की चपलता नहीं है।

परंतु केवल कसरत और अच्छे भोजन से ही कोई व्यक्ति स्वस्थ और आकर्षक नहीं बना रह सकता। मनुष्य का स्वास्थ्य जितना उसके शरीर-संतुलन पर निर्भर है, उतना ही उसके दैनिक जीवनक्रम, पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण तथा मनःस्थिति पर भी मुनहसिर है।

२. हंसी संजीवनी बूटी है :

कुछ लोग शायद यह सुनकर हंसेंगे कि हंसी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक ही नहीं, जरूरी है। लेकिन यह बात काफी विस्तृत जांचों से सिद्ध हो चुकी है। कोई भी मनुष्य, चाहे उसके हाथ में कितनी ही सत्ता और संपदा क्यों न हो, अपने जीवन-क्रम और पारिवारिक - सामाजिक वातावरण को पूर्णतः अपनी इच्छा के अनुसार नहीं ढाल सकता। अपने पेशे, पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक मर्यादा, राज्य के नियम आदि के कारण हम सभी प्रायः रोज कितने ही नापसंद काम करते हैं और कितने ही मनपसंद काम कर नहीं पाते हैं। इससे हम उत्तेजित हो जाते हैं, तनाव में आ जाते हैं।

हंसी इस उत्तेजना और तनाव का निवारण करती है। हंसी परिस्थिति को पूर्णतः बदल भले न सके, सह्य अवश्य बना देती है। वह मनःस्थिति को मजबूत व संतुलित बनाकर विवशताओं के विष को हल्का करती है। और परीक्षणों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि हंसने से शरीर की मांसपेशियों का तनाव कम होता है, उत्तेजित स्नायुतंतु शांत होते हैं।

हंसने से शरीर की विभिन्न मांसपेशियां समुचित रूप से सक्रिय हो जाती हैं और गुर्दों के ऊपर स्थित एड्रिनल ग्रंथियों का स्राव समुचित मात्रा में निकलकर खून में मिलता है, जो तंदुरुस्ती के लिए बहुत अच्छा है। अमरीकी मानस-चिकित्सक डेविड फिंक की इस बात से लगभग सभी अनुभवी वैद्य सहमत होंगे कि हंसना शारीरिक और स्नायविक रोगों से बचने का सर्वोत्तम साधन है।

स्वाथ्यवर्धक श्रम
चित्रकार : दिनकर कौशिक

३. बुढ़ापा मन से आता है :

मानसिक स्थिति स्वास्थ्य पर कितना

रक्षा और

विकास का काम

साथ-साथ चलता है

देश-रक्षा के प्रयत्न में सीधा सहयोग देने के लिये इस्पात उद्योग ने उत्पादन बढ़ा दिया है
मिलों के निर्माण-कार्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन कर दिया गया है। सेना के काम में आनेवा
गाड़ियों का प्रतिमानीकरण होगया है। इंजीनियरी उद्योग की क्षमता में भी वृद्धि की गई है
संयत्रों को चालू करने का काम तेजी से हो रहा है। संकट कालीन उपयोग के लिए जेनेरेटर
पृथक संग्रह बनाया जा रहा है। रेलवे के वर्कशापों में से अधिकाधिक माल-डिब्बे बनकर
अत्यंत महत्व की और अन्य सड़कों को बेहतर व आधुनिक बनाया जा रहा है।

नयी प्राथमिकताओं से रक्षा-सामर्थ्य की सुदृढ़ नींव तैयार हो रही है।
इस महान कार्य में मन, वचन और कर्म से पूरा-पूरा सहयोग दीजिये।

योजना को
सफल
बनाइये

भारत की रक्षा-व्यव
को सुदृढ़ कीजिए

गहरा
होता
जवान
तीस
जैसी
बूढ़ों
देखने
ना
विषय
बात की
पर भी
ही सम
नहीं टि
स्फूर्तिम
तनावों
लेते हैं
मोक्ष क
अध्यात्
रिक जी
लेते हैं,
कर अ
बिताते
आदर
४. वि
दैनि
तरह के
आघात
चूंकि ह
लिए
पड़ता ह
लाख व
१९६४

गहरा असर करता है, यह इससे भी सिद्ध होता है कि कोई अपने को कितना बूढ़ा या जवान महसूस करता है । कितनी ही बार तीस वर्ष के जवानों में अस्सी साल के बूढ़ों जैसी मानसिक थकान और अस्सी वर्ष के बूढ़ों में तीस वर्ष के जवानों जैसी स्फूर्ति देखने में आती हैं ।

नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय में इस विषय में काफी खोजें हुई हैं और उनसे इस बात की पुष्टि हुई हैं कि उम्र काफी हो जाने पर भी जो लोग अपने को युवक या प्रौढ़ ही समझते हैं और बुढ़ापे के आगे घुटने नहीं टेक देते, वे शरीर से तो स्वस्थ और स्फूर्तिमय होते ही हैं, मानसिक आघातों व तनावों को भी ज्यादा अच्छी तरह झेल लेते हैं। "मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है"—यह गीता-वाक्य केवल अध्यात्म-साधना का सूत्र ही नहीं, सांसारिक जीवन का भी सत्य है । जो इसे साध लेते हैं, वे दीर्घकाल तक अपने लिए तृप्तिकर और दूसरों के लिए उपयोगी जीवन बिताते हुए, सबके आकर्षण का केंद्र और आदर का पात्र बन जाते हैं ।

४. विपदाओं से अमृत निचोड़िये :

दैनिक जीवन में हम सभी को तरह-तरह के शारीरिक-मानसिक तनावों और आघातों का सामना करना पड़ता है; और चूंकि हम न तो पत्थर हैं, न परमहंस, इसलिए उनका प्रतिकूल प्रभाव भी हम पर पड़ता ही है । ऐसा होना स्वाभाविक है और लाख कोशिश करें, तो भी हम इससे बच नहीं सकते । अगर कोई समाज से संबंध तोड़कर बिलकुल एकांतवासी बन जाये, तो भी संघर्षों से मुक्त नहीं हो सकता । बल्कि तब उसका आंतरिक संघर्ष और भी प्रबल हो उठेगा ।

इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि हम स्वस्थ और लचीली मनोवृत्ति पैदा कर लें, ताकि विपदाओं और विघ्नों के प्रहारों से टूट जाने के बजाय, उनसे बल ग्रहण करें और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें । आयुर्वेद के मर्मज्ञ कहा करते हैं कि पारा घोर विष होता है, लेकिन मूर्च्छित कर दिये जाने पर रसायन बन जाता है । यही बात विपदाओं के बारे में है । विवेक की भट्ठी में पुट दे देने पर विपदाएं औषध बनकर आत्मा को संस्कारी और सबल बनाती हैं ।

इस प्रसंग में स्वामी विवेकानंद का यह कथन सदा याद रखने योग्य है—"स्वर्ग का कोई मार्ग है, तो वह नरक में से होकर जाता है ।" दैनिक जीवन के त्रास, संघर्ष, कटुताएं-विषमताएं—यही वह मार्ग है, जिस पर से होकर हम जीवन के लक्ष्य पर पहुंचते हैं । इसलिए संसार के तापत्रय का रोना रो-रोकर भीतर और बाहर मनहूसियत फैलाने में नुक्सान-ही-नुक्सान है । उससे लोग आपसे दूर रहने की कोशिश करेंगे ।

५. संतुलन न खोयें :

स्वास्थ्य और आकर्षण के संबंध में कुछ भ्रांतियां भी समय-समय पर फैलती रहती हैं । ये भ्रांतियां फैशन के साथ बदला करती हैं । वजन घटाना (स्लिमिंग) आजकल

वाह...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, ज़ायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवी लड़की के लिए एक मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिये और मुस्कराइये। ताज़गी और स्वच्छता के लिये सुबह और रात को कोलिनॉस। सहेलियों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा... अधिक आनन्द आएगा!

मधुर मुस्कान.. कोलिनॉस की मुस्कान
रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी... जैफ़री मॅनर्स अॅन्ड कम्पनी लिमिटेड ASP/GM/K-1J HIN

नयी रोशनी की लड़कियों में रोग की तरह फैलता जा रहा है। और इसकी छूत हमारी लड़कियों को लगी है पश्चिमी—विशेषत: अमरीकी—पत्र-पत्रिकाओं से। 'डाइटिंग' के नाम पर शरीर को आवश्यक पोषण-तत्वों से वंचित कर कृशकाय भले बना जा सके, तन्वंगी नहीं बना जा सकता। और कृशकायता तो अस्वास्थ्य है।

ऐसा ही एक और फैशन है शरीर को धूप में तपाकर गाढ़ा रंग, फैशन की भाषा में कहें तो 'टैन', प्राप्त करने की खब्त। इसकी भी हवा पश्चिम से ही आयी है। भारत-जैसे उष्ण कटिबंध के देश में, जहां साल में नौ महीने सूरज खूब तपता है, त्वचा को जितनी धूप चाहिये, उतनी प्रायः स्वयं मिलती रहती है। इसलिए सूर्यस्नान की आवश्यकता हमारे यहां यूरोप-अमरीका आदि ठंडे इलाकों की तुलना में कम है। अब तो वहां भी चिकित्सक अनुभव करने लगे हैं कि अत्यधिक सूर्यस्नान त्वचा के लिए घातक है। मिसिसिपी विश्वविद्यालय के चिकित्सा-विभाग के डा० ग्राहम स्मिथ लंबे अरसे तक प्रयोग करके इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि आयुवृद्धि के बाद जो चीज त्वचा पर सबसे बुरा असर करती है, वह है—धूप। शरीर के जो भाग ज्यादा खुले रहते हैं, उनकी त्वचा जल्दी ढीली, खुरदरी और झुर्रीदार बन जाती है। इसका यह मतलब नहीं कि परदे में रहें, सूरज से मुंह छिपाते फिरें। बल्कि फैशन के बहाव में बहकर अति न कर बैठें, संतुलित रहें।

वस्तुत: स्वास्थ्य और आकर्षण का मूलमंत्र है संतुलन—शरीर का संतुलन, मन का संतुलन, विचारों का संतुलन।

हर रोज क्रिस्मस

आपने दूसरों के लिए क्या कुछ किया है, इसे भुलाकर, क्या आप यह याद रख सकते हैं कि दूसरों ने आपके लिए कितना कुछ किया है? दुनिया आपकी कितनी ऋणी है, इसकी अपेक्षा कर, क्या आप यह सोच सकते हैं कि आप दुनिया के कितने ऋणी हैं? क्या आप नन्हे बच्चों की जरूरतों और इच्छाओं का ध्यान रख सकते हैं; ढलती उम्र के लोगों की कमजोरियों का खयाल रख सकते हैं? और आपके मित्र आपसे कितना स्नेह करते हैं, यह पूछना छोड़कर, आप स्वयं से पूछ सकते हैं कि आप अपने मित्रों से कितना स्नेह करते हैं? क्या आप एक दिन के लिए भी यह सब करने को तैयार हैं? अगर हैं, तो आप क्रिस्मस मनाने के अधिकारी हैं। और एक दिन क्रिस्मस मना सकते हैं, तो क्यों न रोज मनायें? **—हेनरी वान डाइक**

★

पुनश्च:—इसी अंक में पृष्ठ ६८—७० पर छपा लेख 'स्वामी केशवानंद' लगभग दो वर्ष पूर्व लिखा गया था। लेखक के पत्र के अनुसार अब स्वामीजी का संकल्प पूरा हो चुका है। कृषि महाविद्यालय प्रारंभ हो गया है। इस समय ५९ छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं। **—संपादक**

★

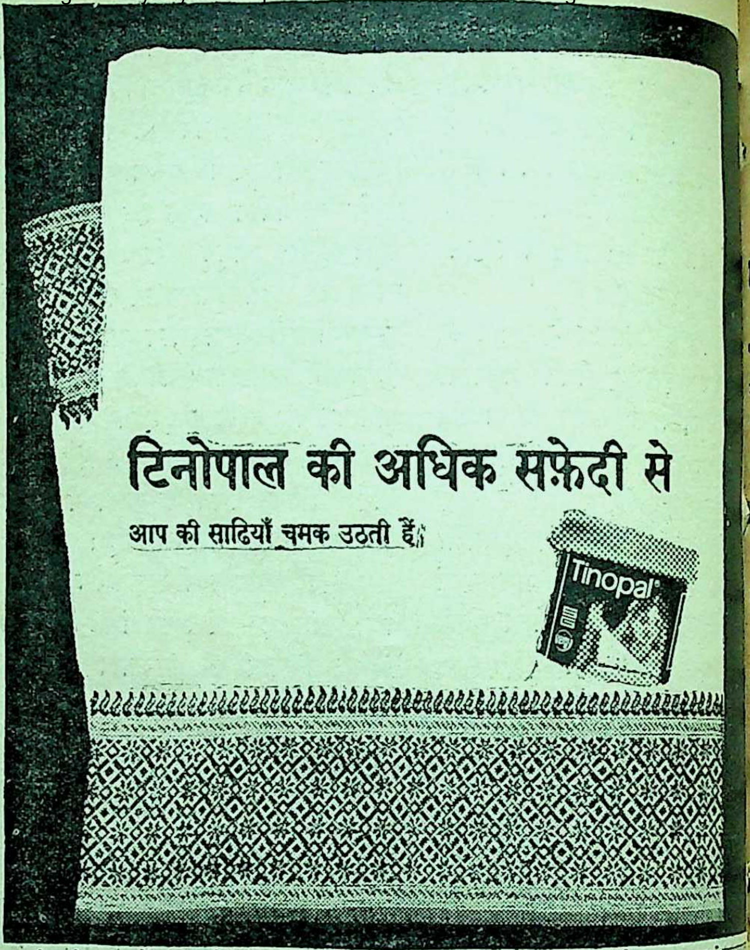
टिनोपाल की अधिक सफ़ेदी से
आप की साड़ियाँ चमक उठती हैं
Tinopal

आपके सफ़ेद कपड़ोंकी धुलाई मे टिनोपाल मिलाइए और देखिये एक अनोखा फ़र्क़! हर कपड़ा उ सफ़ेद, चमकदार और उजला हो जाता है! साड़ियाँ, पतलूनें, शर्ट, बच्चों के वस्त्र, चादरें अथवा सारे के स धुले हुए कपडे टिनोपाल की अधिक सफ़ेदी से चमक उठेंगे।

नए पिल्फ़र-प्रूफ़ डिब्बे में आज ही टिनोपाल खरीदिए। बाल्टी भर कपड़ों के लिए केवल 1/4 छोटा चम्मच टिनोपाल काफ़ी है।

थोडा सा टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है

Geigy

टिनोपाल जे. आर. गायगी,
एस. ए. बाल, स्विटज़रलैंड
का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

भारत में बनानेवाले : सुहृद गायगी लिमिटेड, वड़ी वाड़ी
बिक्री कार्यालय : एक्सप्रेस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई १-बी

चिड़िया ने छकाया

मिखाइल प्रिश्विन

एक अजीब घटना मैं आपको सुनाऊं, जो अकाल के दिनों में मेरे साथ घटी। एक नन्ही मैना अक्सर मेरी खिड़की पर आकर बैठा करती थी। शायद वह अनाथ थी। मेरे पास दो-एक बोरी जौ का दलिया था; महीनों से मेरा गुजारा उसी से चल रहा था। जब भी मैना आती, मैं दलिया के कुछ दाने खिड़की में डाल देता और मजाक में उससे पूछता—"दलिया चाहिये बेवकूफ ?"

मैना दानों को चट कर जाती और फिर फुर्र से उड़ जाती। पूरे महीने-भर यह क्रम चलता रहा।

फिर एक दिन सुबह मैना के लिए दलिया निकालने कुठले में हाथ डाला, तो कुठला एकदम खाली मिला।

शायद रात को डाकू घर में घुस आये थे और वहां जो कुछ खाने-पीने की चीजें थीं, सब उठा ले गये थे। और तो और, रात को मैंने जो ककड़ी आधी खाकर मेज पर रख दी थी, वह भी नदारद थी।

उस दिन मुझे भूखे ही सो जाना पड़ा और रात-भर मैं पलक न झपका सका। अगले दिन सवेरे शीशे में देखा, तो मुंह मुरझाकर स्याह पड़ गया था।

तभी सुनाई पड़ा—खुट्......खुट्...... खुट ! कोई मेरी खिड़की खटखटा रहा था। देखा तो मेरी मैना खिड़की के जंगले पर बैठी, कांच पर चोंच मार रही थी।"

"चलो, आज हांडी चढ़ाने के लिए मांस मिल गया !" मैंने खुश होकर सोचा।

मैंने खिड़की खोली और मैना को पकड़ने के लिए लपका। लेकिन वह फुदककर एक पेड़ पर बैठ गयी। मैं भी खिड़की में से कूदकर उस पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन ज्यों ही उस डाल पर पहुंचा, मैना और ऊपर जा बैठी। मैं उसके पीछे चढ़ा, वह और ऊपर चली गयी। इस तरह होते-होते अंत में वह वृक्ष की सबसे ऊंची डाली पर पहुंच गयी, जहां मेरा चढ़ना बहुत खतरनाक था।

और अब सुनिये, उस दुष्ट चिड़ियोंने क्या किया। वह मेरी ओर झुकी और बोली—"दलिया......चाहिये......बेवकूफ !"

★

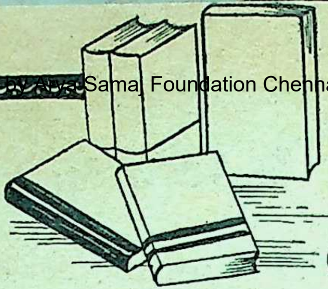

नयी पुस्तकें

विवेकानंद साहित्य

भारत के उत्थान में स्वामी विवेकानंद ने जो अति महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। उन्होंने एकबारगी आसेतु हिमाचल कोटि-कोटि सुप्त-संत्रस्त जनता में अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गौरव जगाकर नये प्राण फूंक दिये थे। आज राष्ट्रीय नव-निर्माण की वेला में भी उनकी संदेश-संजीवनी उतनी ही उपयोगी व कारगर सिद्ध होगी, इसमें किसी को संदेह नहीं हो सकता।

हर्ष का विषय है कि विवेकानंद जन्मशती के अवसर पर अद्वैताश्रम, कलकत्ता ने संपूर्ण विवेकानंद-साहित्य को नये संशोधित एवं परिवर्द्धित रूप में प्रकाशित किया है। हिन्दी के इस नये सेट में कुल दस खंड हैं, जो विषय-विभाजन की दृष्टि से अपने आप में बिलकुल स्वतंत्र हैं। पहले खंड में स्वामीजी के विश्वधर्म महासभा में दिये गये व्याख्यान, राजयोग, पातंजल योगसूत्र, भारतीय धर्म तथा समाज आदि विषय हैं। द्वितीय खंड में ज्ञानयोग एवं धर्म के सामान्य स्वरूप का समावेश है।

तृतीय व चतुर्थ खंड में कर्मयोग, धर्मसाधना, पराभक्ति, भक्तियोग आदि की विस्तृत चर्चा है। पांचवें खंड में कोलंबो से अल्मोड़ा तक दिये गये स्वामीजी के संकलित हैं। छठे खंड में विशेप उनकी वार्ताएं तथा कक्षालाप प्रस्तु गये हैं। सातवें भाग में विभिन्न के प्रसंग, धर्मकथाएं, कृष्ण और स्वामीजी की गद्य-सामग्री का अनुवा हैं। आठवें खंड में व्यावहारिक वेदांत, आत्मा, ईश्वर और प्रकृति, एवं सुभाषित हैं। अंतिम दो खंडों में साधना, वेदांत, अभिनंदन-पत्रों के अमरीकी समाचार-पत्रों के विवरण, रण, प्रश्नोत्तर आदि विभिन्न सामग्री का समावेश है। पहले के अंत में क्रमशः स्वामीजी की भी दी गयी है।

इन खंडों में एक प्रकार से समग्र नंद-साहित्य आ गया है, जो पाठक के स्वामीजी के आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिभा और ओजस्वी विचारों की जागती व अमिट छाप छोड़ देता है। रण भी बड़ा भव्य और मनोहारी सामग्री का कलेवर, सुंदर छपाई व जिल्द आदि को देखते हुए इन मूल्य काफी कम है। विश्वास है इस महत्वपूर्ण सेट का अधिक-से- लाभ उठायेंगे। —सत्यनाराय

★

नेशनल एक्को का

नया मॉडल ए-७८९

हूबहू साफ़ आवाज़ के लिए इसमें २ स्पीकर हैं

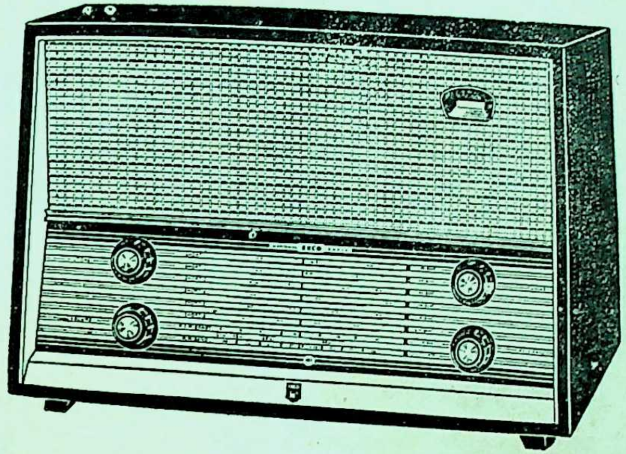

नेशनल-एक्को कंपनी अपने रेडियो सेटों की नयी मालिका का सबसे पहला सेट — मॉडल ए-७८९ — सहर्ष आपकी सेवा में प्रस्तुत करती है। इसमें दो स्पीकर होते हैं और 'मैग्नी-बैण्ड' ट्यूनिंग की व्यवस्था भी होती है।

मॉडल ए-७८९: ६ वाल्व, और पूरे तौर से बैण्डस्प्रेड किये हुए ८ बैण्ड, २ एलिप्टिकल हाइ-फ़्लक्स स्पीकर, मनभावन कैबिनेट।

रु. ६६७.००

एक्साइज़ ड्यूटी सहित; टैक्स अलग

नेशनल-एक्को रेडियो ज़्यादा अच्छे हैं...

ये मॉन्सूनाइज़्ड होते हैं!

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • पटना • सिकन्दराबाद

वार्षिक मूल्य १०)   मूल्य १.००)

अर्काट में छपा

रंगाई कला

किसी भी राष्ट्र का सौंदर्य के प्रति झुकाव उसके कुशल कारीगरों द्वारा सृजित कला के नमूनों से प्रदर्शित होता है। भारतीय रंगरेज अपनी छपाई व रंगाई कला द्वारा भारतीय नारी के रंग के प्रति आकर्षण का सम्मान करता है। उसके सुन्दर वस्त्र रंगरेज के रंगों से सुन्दरतम बन जाते हैं।

भारतीय उपभोक्ता की जटिल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अतुल ने उच्चतम् किस्म के रंगों का उत्पादन करने में बड़ा कदम उठाया है। उत्पादन कार्य उच्च शिक्षा प्राप्त रसायन-शास्त्री व वैज्ञानिकों के हाथों में है। उत्साह और मेल से काम करते हुए आशावादी युवक भारत की कला और औद्योगिक परम्परा को में संलग्न हैं। हर भारतीय के लिये अभिमान और खुशी की बात है-रंगों इस युग में भारत के इस नये की सहायता किये बिना वह अपनी किस प्रकार प्रदर्शित कर सकता है

सदा अतुल ही मांगिये

दि अतुल प्राडक्टस् लि०

अतुल, द्वारा बलसार, पश्चिम रेल्वे

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

मार्च १९६४

अमूल घी

शुध्दता की गारंटीवाला घी

Amul
GHEE
AGMARKED
CONTENTS 1 KG. NET

अमूल मक्खन वनानेवाले आप की सेवा में **अमूल घी** पेश करते हैं, जिस पर विशेष 'एगमार्क' मुहर
ताज़ी क्रीम और मक्खन से अत्यंत आरोग्यपूर्ण और आधुनिकतम विधि के अनुसार तैयार अमूल घी
अर्थ में अच्छा घी है। यह मिलावटरोक डिब्बों में मुहरबंद मिलता है। इस के शुद्ध होने की गारण्टी

AGMARK
GHEE
SPECIAL
GRADE

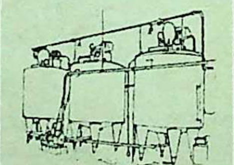

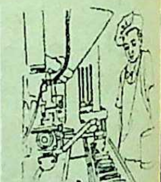

१-किलो, २-किलो और ४-किलो के विशेष मिलावटरोक (पिलफरप्रूफ) नीले व सफेद डिब्वों में मिलता

अच्छे भोजन का असली आनंद पाने के लिए अमूल इस्तेमाल कीजिये
ताज़ी क्रीम के स्वादवाला घी
खेडा जिला सहकारी दुध-उत्पादक संघ लिमिटेड, आनंद

कव्हर छपाई 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

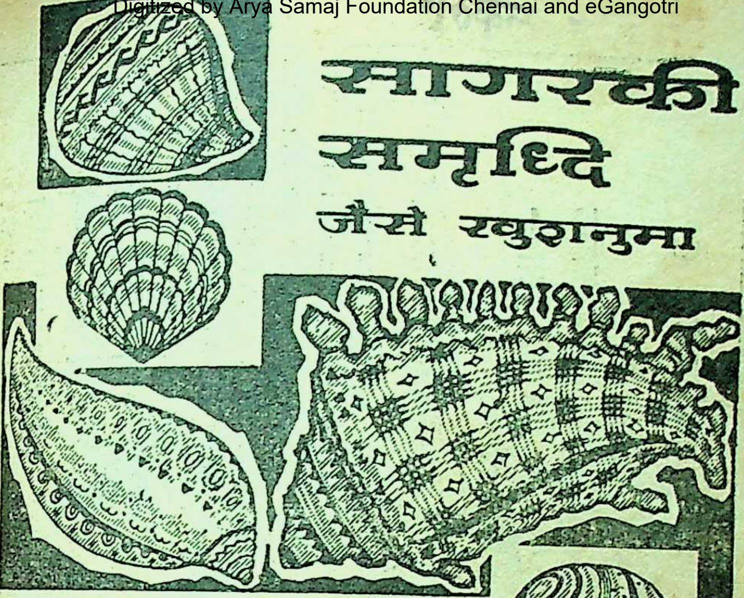

सागरकी
समृद्धि
जैसे खुशनुमा

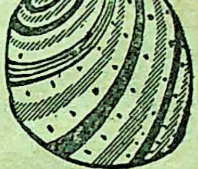

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाइन.
शर्टिंग
स्ट्राइप, डाबी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर.
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१,
सूटिंग, गैबर्डिन
रूमाल,
प्रिंट
छपे लोन, वाइल, पाप्लीन, स्क्रीन छपाई की साडियां.
बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में

Arvind Quality FABRICS

·SANFORIZED·

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद-२

Vanasda
BERAR OIL INDUSTRIES
VEGETABLE OILS ONLY

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनसदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनसदा वनस्पति। वनसदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनसदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनसदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनसदा

विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

बरार ऑइल इन्डस्ट्रीज अकोला

JWTBC-6087A

ब्रिटैनिया

विटामिनों से भरपूर

ग्लुकोज़

मिल्क बिस्कुट

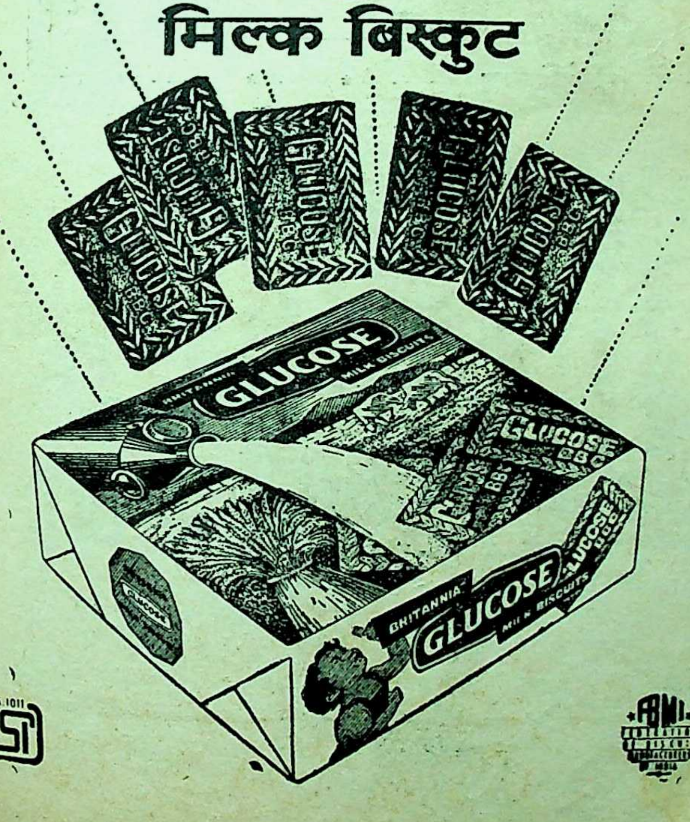
GLUCOSE
BBC
BRITANNIA
GLUCOSE
MILK BISCUITS
BRITANNIA
GLUCOSE
MILK BISCUITS

IWTBC-6087A

IS.1011

FBMI
FEDERATION OF BISCUIT MANUFACTURERS INDIA

बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेयर ऑयल
आपके लम्बे काले
मुलायम और,
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

बेंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

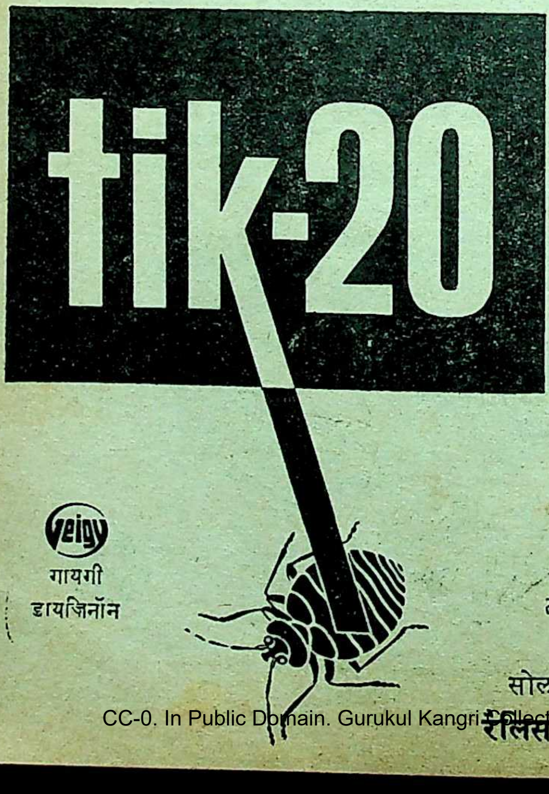

टिक-20
खटमलों का
नाश
करता है

Geigy
गायगी
डायजिनॉन

टाटा-फाइज़न उत्पादन

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
रैलिस इंडिया लि०

टेलीफोन पर आपका तार है

टेलीफोन द्वारा तार जल्दी पहुंचता है

अपना तार भेजते समय पते में पाने वाले के नाम के साथ उनका टेलीफोन नम्बर भी लिख दें जैसे कि :

माथुर
टे०फो० ४७९३९
नई दिल्ली

ज्यों ही यह संदेश तारघर में पहुंचेगा, टेलीफोन पर उन्हें पढ़ कर सुना दिया जाएगा। इससे संदेशवाहक के पहुंचने में लगने वाला समय बच जाएगा।

यह सस्ता भी पड़ सकता है क्योंकि टेलीफोन का नम्बर तथा उसके पूर्व लिखा जाने वाला 'टे०फो०' शब्द दोनों एक ही शब्द गिना जाता है।

यह सुविधा उन सभी स्थानों के लिए है जहां स्थानीय टेलीफोन व्यवस्था उपलब्ध है।

संदेश की एक प्रति उसी दिन पहली डाक से भेज दी जाती है।

टेलीफोन पर तार प्राप्त कीजिए

कुछ शहरों में आप टेलीफोन पर तार उस स्थिति में भी प्राप्त कर सकते हैं जबकि तार के पते में आपका टेलीफोन नम्बर नहीं दिया गया हो। इसके लिए आपको तारघर में अपना टेलीफोन नम्बर रजिस्टर करवाना होगा।

हमें उत्तम सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

डीए ६३/३६२

आप के
मन पसन्द

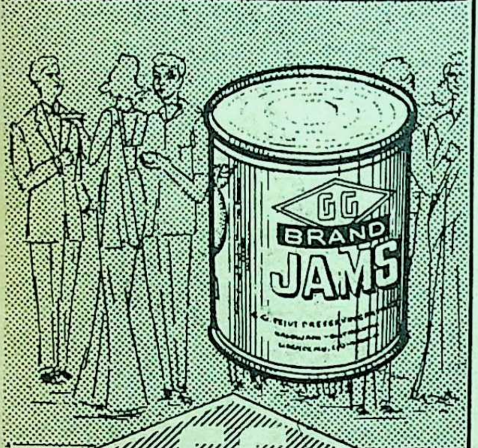
GG
BRAND
JAMS

GG
BRAND

जेम्स
केण्ड फ्रूट्स
चाकलेट
आदि

जी·जी·फ्रूट प्रिजर्विंग फैक्टरी
हल्द्वानी (जिला-नैनीताल)
प्रधान कार्यालय आगरा

खास
जनता
किरासन कुकर

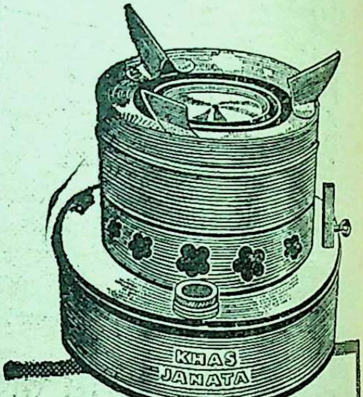
KHAS
JANATA

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA.OM.35

बालों को सुंदर बनाने का सबसे आसान तरीका

झरण

सारपूर्ण केश तेल मिश्रण

क्या कंधा लगाते ही आपके बाल गिरने लगते हैं ? झरण के प्रयोग से आप इसे आसानी से रोक सकते हैं। बावजूद इसके कि आपने इसके पहले चाहे जो तेल लगाये हो। झरण एक सारपूर्ण केश तेल मिश्रण है, इसे अपनी पसंद के किसी भी तेल में असानी से मिला कर अपना मन चाहा तेल बना सकते हैं। झरण बालों की वृद्धि करने में सहायक है तथा आपका व्यक्तित्व बढ़ाता है।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :
सुगंध घर
अहमदाबाद-१
एजेण्ट्स :
सी. नरोत्तम एण्ड कं.,
बम्बई-२

झरण

लंबे, घने और सुंदर बालों के लिए

MPS-HK-3-HIN

INDU FABRICS
* BOMBAY *

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हॅडलूम व पावरलूम में
लगनवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS LTD. BOMBAY.
INDU FABRICS
* BOMBAY *
"THE BIG SIX"

"इंदु हाउस", डुगल रोड. बॅलार्ड इस्टेट. मुंबई नं १

ऐसी शक्ति
जिसका
जबाब नहीं

गैंडा न तो बाघ के पंजों से डरता है, न सिंह के दाँतों से। उसका कवच सा दृढ़ चमड़ा तेज से तेज बर्छे से भी उसे बचाता है।

हम कदापि यह बतलाना नहीं चाहते कि कागज और बोर्ड गैंडे के चमड़े के समान मजबूत हो सकते हैं। मगर यह ज़रूर कहते हैं कि ओरियन्ट पेपर मिल्स द्वारा निर्मित कागज शक्ति और क्वालिटी की अपनी अपूर्व परम्परा को अक्षुण रखती आई है।

भारत में क्राफ्ट पेपर के निर्माण के क्षेत्र में अग्रगामी ओरियन्ट को इस दिशा में उच्च कोटि के अनुभवों की सुविधा प्राप्त है। इसलिये, जब आप ओरियन्ट उत्पादन खरीदते हैं तो उनकी शक्ति और क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं।

ओरियन्ट पेपर मिल्स लिमिटेड
ब्रजराजनगर, उड़ीसा

उत्पादनकर्ता :
- लिखने और छापने के कागज
- पोस्टर और मैनीला पेपर
- क्रेप और पोलिथिन कोटेड कागजों के साथ पैकिंग और रैपिंग पेपर
- डुपलेक्स, ट्रिपलेक्स और ग्रे बोर्ड

ASP/OPM-4 HIN

खिज़ाब मत कहिये-

लिना

मांगिये। यह अद्‌भुत केश-प्रसाधन सफेद बालों को न तु केवल श्याम बना देता है बल्कि बालों को सफेद बनने से रोकता भी है।

लिना सफेद बालों को श्याम बना देता है

सौराष्ट्र सुगन्धी स्टोर्स
अहमदाबाद-१

एजेंटस् : एम. डी. पटेल एन्ड कंपनी, ७९ प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई २

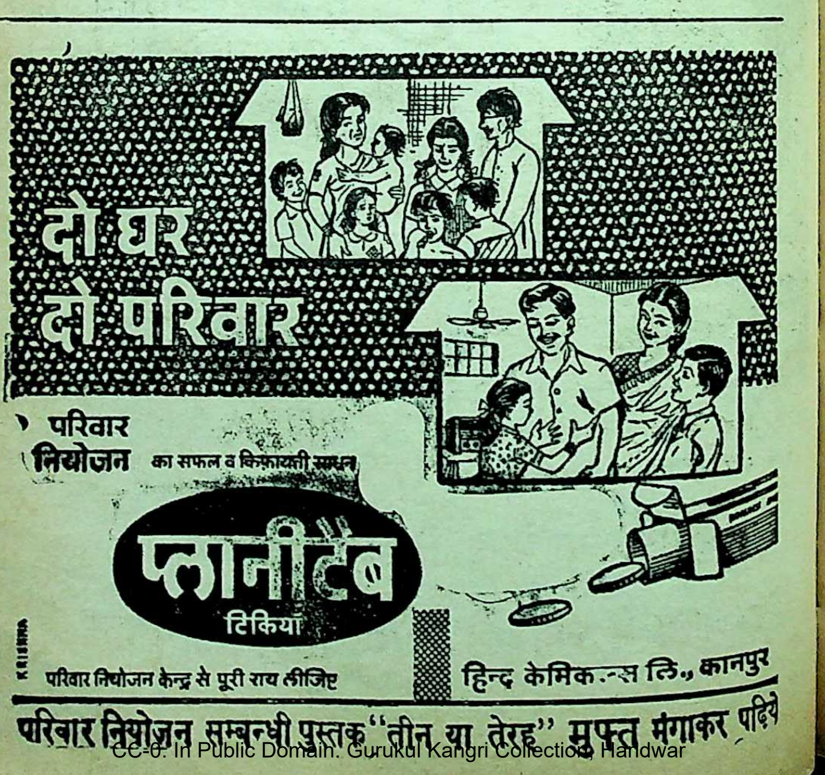

दो घर दो परिवार

परिवार नियोजन का सफल व किफ़ायती साधन

प्लानीटैब
टिकिया

परिवार नियोजन केन्द्र से पूरी राय लीजिए

हिन्द केमिकल्स लि., कानपुर

परिवार नियोजन सम्बन्धी पुस्तक "तीन या तेरह" मुफ्त मंगाकर पढ़िये

देश रक्षा में इससे क्या मदद मिलेगी ?

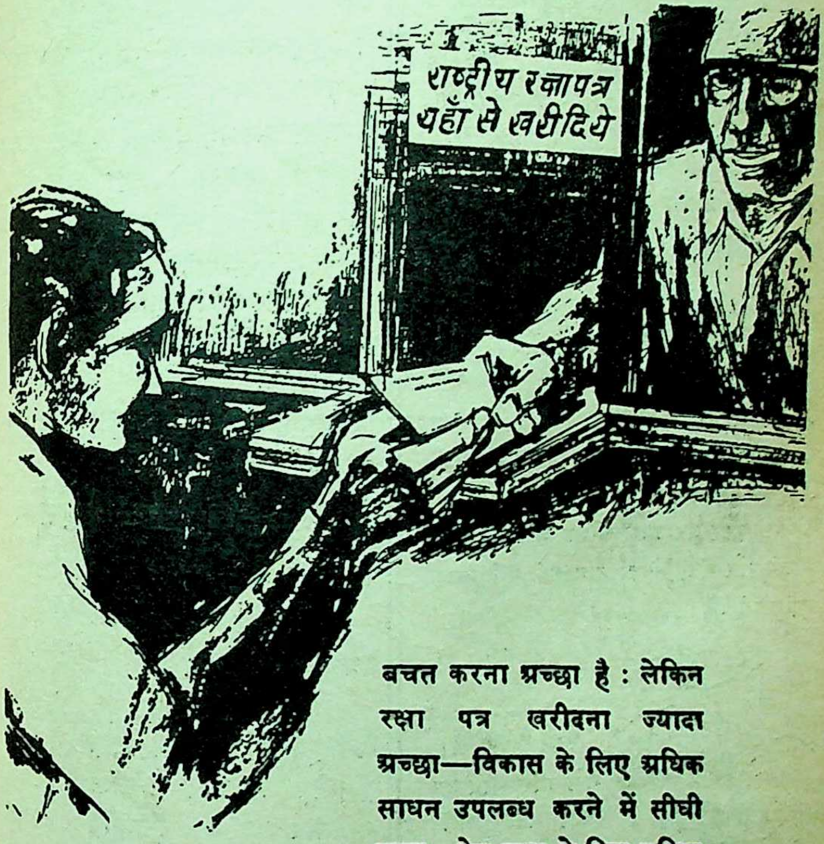
राष्ट्रीय रक्षापत्र
यहाँ से खरीदिये

बचत करना अच्छा है : लेकिन रक्षा पत्र खरीदना ज्यादा अच्छा—विकास के लिए अधिक साधन उपलब्ध करने में सीधी मदद—देश रक्षा के लिए अधिक रसद और साज सामान

देश रक्षा में आपकी बचत का बहुत महत्व है

डीए ६३/४०८

ब्रांकाइटिस
जल्द ही
ठीक हो जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

पेप्स की गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली गोलियाँ बहुत शीघ्रता से गले की तकलीफ, ब्रांकाइटिस, खाँसी और सर्दी ठीक करने में सहायक होती हैं। **पेप्स** की गोलियाँ चूसिए और उनका करिश्मा देखिए—दर्द को मिटाने और कीटाणुओं का नाश करने में वे कितनी सहायता देती हैं।

PEPS
for
COUGHS
COLDS

FPY 56 HIN

पेप्स

गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
टिकियाँ

सभी औषधि-
विक्रेताओं के यहाँ
मिलती हैं।

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेंट : **केम्प एन्ड कं० लि०**
पो० बा० नं० ७०२२, बम्बई—२८

श्रीरामकृष्ण–विवेकानन्द साहित्य

श्रीरामकृष्णलीला प्रसंग– सुविस्तृत जीवन-चरित प्रथम खंड ९.००, द्वितीय खंड १०.००, तृतीय खंड ७.००

श्रीरामकृष्णलीलामृत– जीवनचरित प्र. भाग ५.००, द्वि. भाग ५.००

श्रीरामकृष्णवचनामृत– प्रथम भाग ६.५०, द्वि. भाग ६.५०, तृ. भा. ७.००

माँ सारदा– श्रीरामकृष्णदेव की लीला-सहधर्मिणी की जीवनी ४.५०

श्रीरामकृष्ण और श्रीमाँ– ३.४०

साधु नागमहाशय–श्री रामकृष्णदेव के गृही शिष्य की जीवनी १.५०

विवेकानंद-चरित (विस्तृत जीवनी) ६.००

स्वामी विवेकानन्द कृत-

भारत में विवेकानन्द
(भारतीय व्याख्यान) ५.००
पत्रावली –प्र. भा. ५.२५,
द्वि. भा. ४.२५
व्यावहारिक जीवन में वेदांत १.१५
कर्मयोग १.७५ **भक्तियोग** १.५०
राजयोग ३.०० **ज्ञानयोग** ३.५०
हिन्दूधर्म १.५० **प्रेमयोग** २.००
धर्मविज्ञान २.०० **धर्मरहस्य** १.२५

हमारे संपूर्ण सूचिपत्र के लिए लिखिए
श्रीरामकृष्ण आश्रम (न)
धन्तोली, नागपुर–१

सुन्दर आकार और समुचित मूल्य की दृष्टि से

अपने दर्जे में **लाजवाब !**

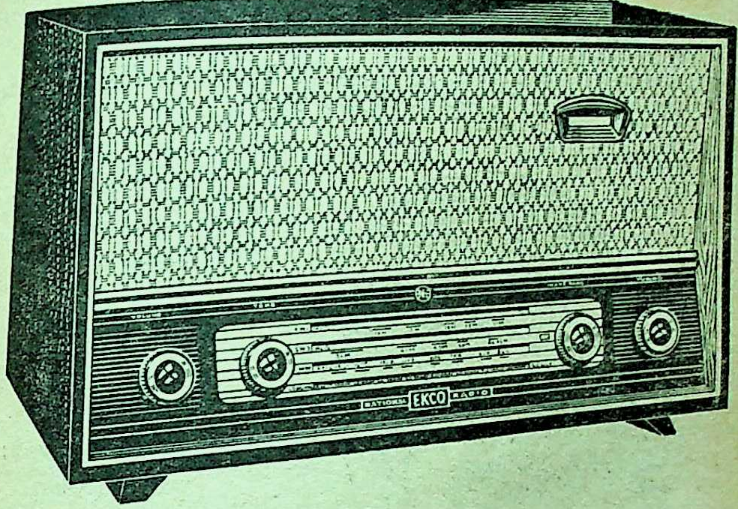

एक निराली शान…कुशलतापूर्ण बनावट…मनभावन कैबिनेट…'मॉन्सूनाइज़्ड' रचना—ये हैं कुछेक खूबियाँ जिनकी बदौलत नेशनल–एक्को का मॉडल ए–७७९ अपने दर्जे में लाजवाब है।

अपने पासवाले नेशनल–एक्को विक्रेता के यहाँ पधारकर इसे मुफ़्त सुनिए।

मॉडल ए-७७९ : ६ वाल्व, ३ बैण्ड। इच्छानुसार ध्वनि बदलने के लिए टोन कण्ट्रोल। आधुनिक डिज़ाइन के तिरंगे डायल, सुनहले रंग की सुन्दर पट्टी और मैजिक आइ सहित मनभावन कैबिनेट। ग्रामोफ़ोन और अतिरिक्त लाउडस्पीकर लगाने की व्यवस्था। **रु. ३९५·००**

एक्साइज़ ड्यूटी सहित; टैक्स अलग

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई · कलकत्ता · दिल्ली · मद्रास · बंगलोर · सिकन्दराबाद · पटना

एक और शानदार नेशनल एक्को रेडियो !

JWT-GRA-1590

आप किसी भी ढंग का जूड़ा बाँधें...

केशों के लिए गाय छाप ब्राह्मी आँवला तैल इस्तेमाल करने से आपके जूड़े की मोहकता निश्चय ही बढ़ेगी; क्योंकि यह बालों को अधिक श्यामल, सघन और चमकीला बनाता है। इसकी भीनी-भीनी शीतल सुगन्ध से आपका मन हर घड़ी प्रसन्न रहेगा।

सेवाश्रम का

गाय SEVASHRAM PRODUCTS UDAIPUR छाप

ब्राह्मी आँवला तैल

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड उदयपुर, वाराणसी तथा हैदराबाद

मार्च
१९६४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

फलवालियां
चित्रकार : रावत

इस अंक में

१७ शहीद की मृत्यु (कविता)
लैंग्स्टन ह्यूज
२० टोकियो ओलिंपिक-ज्वर से पीड़ित
प्रकाश खन्ना
२४ क्रोध नहीं, स्वस्थ क्रोध
सत्यपाल विद्यालंकार
२८ स्वरब्रह्म स्त्राविंस्की
मैत्रेयी दत्ता
३३ घुड़दौड़ का महातीर्थ महालक्ष्मी
शिवशंकर सिंह
३९ भारतीयता का एक सरकारी चेहरा
स० ही० वात्स्यायन
३६ दुर्भाग्य उस कार पर सवार था
वीरेश मुदलियार
४९ हालैंड की आधुनिक कविता
गंगाप्रसाद विमल
५१ पूर्णता पाने का पागलपन
हैरोल्ड केनेथ फिंक
५५ आज के विद्यार्थियों की विकट समस्याएं
हंट और कारमैन
६० चुटकी-भर हंसी
कुसुमलता
६२ रजाक बदमाश
रोचक पंडित
६५ जीवन और मृत्यु की निर्णायक कमिटी
शाना अलेग्जेंडर

चित्रसज्जा:

रवींद्रनाथ, जियोवानी थर्मेस, हेब्बार, रोजर फसे, मनसाराम, ओंके, लियोनार्दो द विंची

अगले अंक में पढ़िये

१. योजना पर पुनर्विचार की आवश्यकता, २. वह हिटलर की दाई थी, ३. सपनों पर काबू पाइये, ४. प्रेम का एक्स-रे, ५. करोड़ों वर्ष पहले के दृश्य देखिये, ६. सर्वहारा सर्वहारा ही रहा (पुस्तक-संक्षेप)

हमारा पता :
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१ तारदेव, बंबई—३४
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि. ३४१ तारदेव, बम्बई-३४. के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेतवड़ी बैक रोड, बम्बई-४ में मुद्रित ।

७० कण्वाश्रम के महावनों में
हरिवंश वेदालंकार
७७ यशपाल नये लेखकों से
डा० शुभकार कपूर
७९ अपनी अंगीठी खुद बना लें
डैरेल हफ
८० गजल, भावना का रंग
दिनेश भ्रमर, अमरनाथ चतुर्वेदी
८२ क्या घर में आपकी पूछ है ?
जान ई० गिब्सन
८४ सेमल की फलियां
धीरेंद्र
८७ शायर मकतल साहब
कन्हैयालाल कपूर
९० भारत में विदेशी पेड़-पौध
डा० एम० एस० रंधावा
९१ अंधों का हकीम
अब्दुल्लाह कहार
९६ हवा में लटकती हुई इमारत
वाल्टर इयान फिशमैन
१०१ विलायती मुर्गियां
व्यंकटेश माडगूळकर
१०९ जंगल की दुनिया (पुस्तक-संक्षेप)
टी० मरे स्मिथ
१३५ श्रीलंका और रावण की लंका
डा० विद्याबंधु त्रिपाठी
१४३ दक्षिण ध्रुव के सभ्य आदिवासी
महाराज कृष्ण जैन

स्थायी स्तंभ

१८ साधना-पथ /९७ मेरी रुचि की पंक्तियां/१५१ नयी पुस्तकें

वर्ष : १३ नवनीत मार्च
अंक : ३ [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६४

ार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि

शहीद की मृत्यु

मातम के नक्कारे बजाओ मेरे लिए,
मातम और मौत के नक्कारे बजाओ मेरे लिए
और भीड़ से कह दो
कि मिलकरके मरसिया गाये,
ताकि उसकी आवाज में मेरी हिचकियां
और मेरी मौत के गम में
सिसकते हुए बेला की क्षीण और दुःखी आवाज
डूब जाये—
लेकिन सूरज के संगीत से परिपूर्ण
शंख की एक हुंकार-भरी आवाज भी हो,
जो मेरे साथ जाये
उस अंधियारे मृत्युलोक में
जहां मैं जा रहा हूं।

— लैंग्स्टन ह्यूज

साधना पथ

एक भिखारी था। वह रोज एक ही स्थान पर बैठकर भीख मांगा करता था। उसकी बड़ी इच्छा थी जीवन में धनवान बनने की। लेकिन कंगाल ही मरा।

उसके मर जाने के बाद पता चला कि जिस जगह पर बैठकर वह इक्कीस बरस तक भीख मांगता रहा, उसके ठीक नीचे भारी खजाना गड़ा हुआ था, जिसमें किसी राजा के हीरे-जवाहरात और सोने के सिक्के थे। भिखारी जीवन-भर वहां बैठकर भीख मांगता रहा और यह नहीं जान पाया कि उसके पांव-तले कुबेर का कोश पड़ा है।

इसी तरह बहुत-से लोग जीवन-भर शांति और आनंद के लिए तरसते रहते हैं। वे नहीं जान पाते कि शांति और आनंद का दैवीय रत्नकोश तो उनकी आत्मा में ही छिपा पड़ा है। **–साधु सुंदरसिंह**

विशुद्ध प्रेम :

भाइयो, वह संदेश सुनो जो कि स्वर्ग से सर्वोच्च सत्ता ने अपने इस सबसे छोटे सेवक की मार्फत भिजवाया है। सबको प्यार दो–जो तुम्हारे पड़ोसी हैं, उन्हें भी; जिनसे तुम्हें कोई कष्ट पहुंचा है, उन्हें भी। इनमें से पहले लोग तो स्पष्ट ही तुम्हारे मित्र हैं; और दूसरे लोग तुम्हारे दुश्मन तो हरगिज नहीं हैं। जो तुम्हें प्यार करते हैं, तुम्हा
खिदमत करते हैं, तुम्हें खाना-कपड़ा दे
वे निश्चय ही तुम्हारे शरीर का उप
करते हैं। लेकिन जो तुम्हें कष्ट देते हैं, तु
पर क्रोध करते हैं, तुम्हें चोट पहुंचाते हैं,
तुम्हारी आत्मा का कहीं ज्यादा उप
करते हैं। इसलिए सभी तुम्हारे दोस्त
और तुम्हें किसी को दुश्मन नहीं कहना है
सभी तुम्हारे उपकारी हैं, कोई तुम्हा
नुक्सान नहीं करता। तुम्हारे सिवा तुम्हा
कोई दुश्मन नहीं है। **–संत फ्रांसिस असी**

तीन टांग की दौड़ :

गांधीजी का तत्त्वदर्शन स्कूलों में हो
वाली तीन टांग की दौड़ की तरह था
गांधीजी के विचार धीमे-धीमे आगे ब
थे; क्योंकि उनके विचार सदा ही तदनु
आचरण के साथ बंधकर चलते थे।

दूसरे लोग उपदेश देने के पूर्व स्वयं आ
रण करने के पाबंद नहीं थे। ये लोग विचा
को तेजी से आगे दौड़ा ले जाते थे; क्यों
आचरण का प्रश्न उनकी राह में आड़े
आता था। लेकिन गांधीजी ने अपने
यह पाबंदी लगा ली थी कि जो कुछ दु
को उपदेश देना उचित समझूं, उसे प
अपने जीवन में उतार लेता है। इससे उन

गति में अड़चन आती थी ।

श्री चंद्रशंकर शुक्ल ने अपनी गांधीजी-विषयक पुस्तक में ध्येयवाक्य के रूप में एपिक्टिटस का एक बड़ा ही मौजूं और बोधप्रद उद्धरण दिया है —“ यह जान लो कि कोई भी सिद्धांत तब तक आसानी से मनुष्य का स्वत्व नहीं बन सकता, जब तक कि मनुष्य प्रतिदिन उसका पालन न करे और प्रतिदिन उसे जीवन में न उतारे ।” गांधीजी ने अपने विचारों के साथ ऐसा ही किया । यह उनके तत्त्वदर्शन का प्रधान लक्षण था और उनके जीवन का भी ।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

श्रद्धा और अहंकार :

एक शिष्य को अपने धर्मगुरु पर अपार श्रद्धा थी । एक दिन वह गुरु का दर्शन करने चला । रास्ते में नदी पड़ी । वह गुरु के नाम का उच्चारण करते हुए पानी पर कदम रखता हुआ दूसरे तट पर आ पहुंचा ।

गुरु ने यह देखा और मन में सोचा—“ऐं, इतनी शक्ति है मेरे नाम में ! तब तो मैं कितना महान और शक्तिशाली हूं !” और अगले दिन “ मैं, मैं, मैं ” कहते हुए नदी पर चलकर उस पार जाने के लिए आगे बढ़ा । लेकिन नदी में पांव रखते ही डूब गया और मर गया । **—रामकृष्ण परमहंस**

मूर्तिमंत करुणा :

उस रोज अहमदाबाद में राह चलते एक ग्रामीण भाई से भेंट हो गयी । वह कंधे पर एक कुत्ते को बैठाये आ रहा था । मैंने सहज भाव से पूछा—“पटेल, इस तरह कुत्ते को कंधे पर चढ़ाये कहां जा रहे हो ?” उसने बताया कि गांव के इस लावारिस कुत्ते को किसी ने लाठी मार दी थी, जिससे उसकी रीढ़ टूट गयी और वह चलने-फिरने में असमर्थ हो गया था । किसी ने पटेल को बताया कि अस्पताल में रखने पर शायद कुत्ता ठीक हो जाये । वह कुत्ते को लेकर अहमदाबाद को चला । बसवालों ने कुत्ते को बस में चढ़ाने से इन्कार कर दिया । दूसरा कोई साधन नहीं था । सो वह कुत्ते को कंधे पर चढ़ाये पैदल ही चल पड़ा ।

मैंने कुत्ते के इलाज के लिए उसे दो-तीन रुपये देने चाहे । लेकिन उसने उन्हें लेने से इन्कार कर दिया और कहा—“घर से दो रुपये लेकर आया हूं ......भगवान की इच्छा होगी, तो यह ठीक हो जायेगा ।” फिर वह नमस्कार कर मवेशियों के अस्पताल की ओर चल दिया ।

उसकी वाणी और वर्तन से मुझे स्मरण हो आया धारासभा जाते हुए, मार्ग में गढ़े में पड़े छटपटाते हुए सूअर को कीचड़ से उबारकर, उन्हीं कीचड़-सने कपड़ों में धारासभा में प्रवेश करनेवाले अब्राहम लिंकन का, अथवा बलिदान के लिए यज्ञस्तूप पर लाये गये मेमने को दौड़कर गोद में उठा लेनेवाले बुद्ध का । कहां भगवान बुद्ध, कहां अब्राहम लिंकन, और कहां गांव का यह अशिक्षित पटेल ! लेकिन करुणा ने तीनों को एक सूत्र में पिरो दिया था । **—परमानंद कापडिया**

★

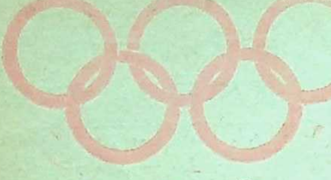

प्रकाश खन्ना

टोकियो ओलिंपिक-ज्वर से पीड़ित

संसार का सबसे बड़ा, सबसे व्यस्त और कुछ लोगों के मतानुसार सबसे दिलचस्प शहर टोकियो आजकल एक जबर्दस्त उथल-पुथल में मुब्तिला हैं। जिधर से गुजर जाइये, सड़कें टूटी पड़ी हैं। कहीं मकान गिराये जा रहे हैं, तो कहीं बनाये जा रहे हैं। तरह-तरह की छोटी-बड़ी मशीनों के हो-हल्ले में कान-पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती। रह-रहकर धूम-धड़ाकों के साथ जमीन ताजी मिट्टी उगलती रहती है। ऐसा प्रतीत होता है कि शहर में जबर्दस्त भूकंप आया था और अब सैकड़ों आदमी राहत-कार्य में लगे हैं।

परंतु वास्तविकता कुछ और हैं। यह ध्वंस और निर्माण भूकंप का नहीं, सुनिर्धारित योजना का परिणाम हैं। टोकियो को संसार की बड़ी राजधानियों में सबसे बदसूरत कहा जाता हैं। परंतु अब इस बदनामी को धो डालने के लिए जगह-जगह दूब के छोटे-छोटे मैदान बन रहे हैं और फूलों के पौधे लगाये जा रहे हैं; पुरानी बेढंगी इमारतें गिराकर उनकी जगह आधुनिक ढंग के ऊंचे-ऊंचे भवन बनाये जा रहे हैं; जमीन से काफी ऊंचाई पर सीमेंट के खंभों पर नये मार्गों का निर्माण किया जा रहा है; किनारे के मकानों और दुकानों को तोड़कर सड़कों को अधिक चौड़ा बनाया जा रहा हैं।

और यह कायाकल्प हो रहा है १९ ओलिंपिक खेलों की तैयारी में। खेलों में अ लगभग नौ महीनों की देर है और वे चलें भी १० से २४ अक्टूबर तक केवल पं दिन। परंतु उनकी तैयारी के व्यय का अ मान इसी से लगाया जा सकता है कि केव टोकियों में नयी सड़कों के लिए २३० करो रुपये से अधिक खर्च किये जा रहे हैं इनके अलावा ७० मील जितनी जमींदो सड़कें बन रही हैं, जिसका व्यय है ३३ लाख रुपये प्रतिमील।

सड़कों की इस नगर में वैसे ही ब जरूरत हैं और अगर ओलिंपिक से पहले सड़कें नहीं बना ली गयीं, तो उस मह क्रीड़ा-समारोह के समय नगर का च की चाल रेंगनेवाला यातायात बिल्कु ठप हो जायेगा। इसी बात को दृष्टि में र कर रेल-विभाग टोकियो से ओसाका

लिए एक नयी गाड़ी चला रहा है, जो बीच के ३०० मील में कहीं नहीं ठहरेगी ।

ओलिंपिक खेलों का आयोजन संसार के अनेक महानगरों में हो चुका है । लेकिन इतनी जबर्दस्त तैयारी और कहीं नहीं देखी गयी । इसका एक बड़ा कारण तो यह है कि एशिया में इस विश्व-प्रतियोगिता का आयोजन पहली बार हो रहा है । दूसरे, १९४० की प्रतियोगिता टोकियो में होनी थी; परंतु दूसरे महायुद्ध ने उस कार्यक्रम पर पानी फेर दिया । पूरे चौबीस बरस की प्रतीक्षा के बाद टोकियो को फिर अवसर मिल रहा है । अतः जापान इस समारोह को पूर्णतया सफल बनाने में किसी प्रकार की कसर नहीं रखना चाहता ।

टोकियो में सुविधाओं का कितना अभाव है, इसका अंदाज कई बातों से लगाया जा सकता है । नगर के केवल दसवें भाग म सड़कें हैं । पानी के साधन-स्रोत इतने कम और सीमित हैं कि नलों में पानी रात को बंद कर दिया जाता है । नगर के पंद्रह लाख व्यक्ति ऐसे मकानों में रहते हैं, जिनमें नल की व्यवस्था ही नहीं है । मकानों की इस कदर तंगी है कि एक करोड़ से भी अधिक आबादीवाले इस नगर में औसतन प्रति व्यक्ति के हिस्से केवल ५५ वर्ग फुट स्थान पड़ता है ।

बीसवीं शताब्दी के इस महानगर में दफ्तरों के शानदार भवन हैं, जिनमें बढ़िया लिफ्टें हैं; ६५० आलीशान सिनेमाघर हैं और दुकानें नये-से-नये फैशन के कपड़ों और साजो-सामान से भरी हैं । मगर सड़कों पर रोशनी का इंतजाम बड़ा निराशाजनक है; और गंदे पानी की निकासी की व्यवस्था

टोकियो एक करोड़ की आबादी का शहर है; लेकिन उसकी सड़कें और गलियां प्रायः बेनाम हैं; और मकानों के नंबरों का कोई सिलसिला ही नहीं होता । इसीलिए नये अतिथि को भोजन के लिए घर बुलाते हुए जापानी मेजबान उस मोहल्ले का छपा हुआ नक्शा भेज देते हैं, जिसमें उनके मकान तक पहुंचने का मार्ग निशानों से दिखाया जाता है । वे अपना या पड़ोसी का फोन नंबर भी दे देते हैं, ताकि आप राह भटक जायें, तो फोन करके पूछ लें । नक्शे और कुतुबनुमा की मदद काफी न पड़े, तो पास के पुलिस थाने में पहुंच जाइये । पुलिस आपकी मदद करेगी ।...... जापान में यात्रा करते समय पहनने के एक-दो कपड़े साथ रखना ही काफी है । वहां के होटल साफ-सुथरे बिस्तर और तौलिये ही नहीं, बल्कि नया टूथब्रश, टूथपेस्ट, कंघी, तेल और साबुन भी देते हैं । पहनने के लिए मौसम के मुताबिक गरम या ठंडे किमोनो मुहैया किये जाते हैं । होटल में पहनने के लिए गरम कपड़े के स्लिपर और बाहर जाते समय उपयोग करने के लिए लकड़ी की चट्टियां भी दी जाती हैं । किमोनो पहनने-उतारने में आपको आलस आता हो, तो परिचारिका आपकी मदद के लिए हाजिर रहती है ।

–रोनाल्ड प्रेस्टन

बाबा आदम के जमाने की है, जिससे नगर के चौथाई मकानों में फ्लश नहीं लगाया जा सकता ।

इस शोचनीय परिस्थिति के सुधार के लिए राजधानी के गवर्नर डा० रियोतारो अजूमा ने ८०० करोड़ रुपये की योजना प्रस्तुत की है। इतने व्यय की इस प्रकार की नगर-सुधार योजना संसार में यह शायद पहली है । एक लाख से अधिक श्रमिक विभिन्न निर्माण-कार्यों में लगे हैं ।

केवल ओलिंपिक के लिए आवश्यक सुविधाओं पर ११८ करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं । लगभग छः वर्ष हुए, एशियाई खेलों के लिए ५०,००० व्यक्तियों के बैठने लायक राष्ट्रीय स्टेडियम बनाया गया था। अब उसमें और ३५,००० दर्शकों के बैठने तथा १५,००० व्यक्तियों के खड़े होने लायक जगह की व्यवस्था की जा रही है ।

उसके निकट ही पांच करोड़ रुपये की लागत से 'ओलिंपिक ग्राम' का निर्माण हो रहा है, जिसमें ८० देशों के ७,५०० खिलाड़ियों और उनके प्रशिक्षकों के निवास के लिए पर्याप्त जगह होगी । इसमें खेल के दो मैदान भी बन रहे हैं । नगर के दक्षिण-पश्चिमी भाग में एक और ओलिंपिक क्षेत्र लगभग पूरा बन चुका है । इसमें स्टेडियम, जिम्नास्टिक की सुविधाएं और चांदमारी के स्थल सम्मिलित हैं ।

ये सब कार्य निश्चित योजना के अनुसार समय पर या समय से पहले ही पूरे हो रहे हैं । व्यवस्था-समिति खर्चे में कोई कोताही नहीं कर रही है । १४ करोड़ रुपये तो के तैयारियों पर व्यय किये जा रहे हैं ।

व्यय की आधे से अधिक राशि सरकार रही है । शेष रकम डाक-टिकिटों की बि बाइसिकल-दौड़ों और बेसबाल के मैचों उगाही जा रही है । जापान में तंबाकू-उद्यो पूर्णतया सरकार के अधीन है; और स कार ने 'ओलिंपियाज' नाम की नयी सि रेट चलायी है, जिसकी आय ओलिंपि खेलों पर खर्च होगी ।

आयोजकों के सामने सबसे बड़ी समस्य आवास-व्यवस्था की है । अक्टूबर महीने सामान्यतया जापान भ्रमणार्थियों से भ भरा रहता है । और इस वर्ष की ओलिंपि प्रतियोगिता तो अब तक के सब आयोज से बड़ी होगी । अनुमान है कि कम-से-क २०,००० व्यक्ति इसमें भाग लेने या देखने टोकियो आयेंगे ।

टोकियो का सबसे बड़ा होटल टोकियो-हिल्टन, जिसमें ४५० कमरे हैं। पूरा बुक हो चुका है और एक हजार लो के नाम 'वेटिंग लिस्ट' में हैं । यही हा दूसरे होटलों की है । अनेक नये होटलों इस समय निर्माण हो रहा है । इनमें एक तो १,३०० कमरों का होगा ।

नगर और उपनगरों के सब सार्वजनि आवास-स्थानों को ओलिंपिक आवा समिति ने अपने अधीन कर लिया है। स और निजी मकानों में ही नहीं, याकोह बंदरगाह में खड़े जहाजों में भी आगंतुकों ठहराने का विचार किया गया है। बा

में खेलों के लिए विदेशों में प्रवेश-टिकिट उन्हीं लोगों को बेचे जा रहे हैं, जो प्रमाणित कर दें कि टोकियो में उनके रहने की व्यवस्था हो गयी है।

टोकियो में हो रहे इन निर्माण-कार्यों में ओलिंपिक के मैदानों के निर्माण को छोड़कर प्रायः सभी ऐसे हैं, जो किसी भी सूरत में किये ही जाने थे, लेकिन अभी तक टाले जाते रहे। ओलिंपिक के आयोजन ने उन्हें अभी करवा दिया। नगर की विकास-समिति के अध्यक्ष श्री मसाओ यमादा मजाक में कहते हैं कि ओलिंपिक का नाम वह जादू की छड़ी है, जिसे उठाते ही सारी सरकारी बाधाएं छूमंतर हो जाती हैं।

फिर भी कमी पड़ रही है धन की। अतिरिक्त धन जमा करने का और एक विचित्र मार्ग अपनाया गया है। गैर-सरकारी कंपनियों से ओलिंपिक-निधि के लिए निश्चित रकम लेकर उन्हें अपने माल पर ओलिंपिक का पांच छल्लों का निशान लगाने की अनुमति दी जा रही है। परंतु यह अनुमति ऐसी ही चीजों के लिए मिलती है, जो नैतिक-सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन न करती हों।

आर्थिक समस्या को उग्र बनानेवाली सबसे बड़ी चीज है जमीन की कीमत। उदाहरणार्थ, नगर के दक्षिण-पश्चिमी भाग में ओलिंपिक के लिए तैयार किये जा रहे क्षेत्र में 'साके' (जापानियों की प्रिय चावल की शराब) की एक छोटी-सी दुकान थी। उसके मालिक ने अपनी जमीन देने से इन्कार कर दिया। इस कारण काम बहुत दिन रुका रहा। अंत में पौने दो लाख रुपये लेकर उसने अपनी दुकान छोड़ी।

इसी प्रकार, हनेडा हवाई-अड्डे से टोकियो तक की दस मील लंबी सड़क तीन वर्षों से ४७५ रुपये प्रति इंच की लागत से बन रही थी। इसके बन जाने पर हवाई-अड्डे से शहर तक आने का समय एक घंटे और कुछ मिनट से घटकर केवल सत्रह मिनिट का रह जायेगा। परंतु टोकियो की खाड़ी के पास १,१०० मछुओं ने अपनी जमीन देने से इन्कार कर दिया। आखिर लगभग ४२७ करोड़ रुपये लेकर उन्होंने सड़क के काम को आगे बढ़ने दिया।

ओलिंपिक का सबसे अनोखा असर है अंग्रेजी सीखने की उतावली। लाखों टोकियोवासी जैसे भी हो अंग्रेजी सीखने की कोशिश कर रहे हैं। प्रति सप्ताह टेलिविजन (जिसे जापानी 'टेरेबी' कहते हैं) और रेडियो पर २८ घंटे अंग्रेजी का पाठ पढ़ाया जाता है। अंग्रेजी के प्राइमरों की बिक्री खूब बढ़ गयी है। जरा भी फुरसत मिलते ही लोग प्राइमर खोलकर बैठ जाते हैं।

जापानियों की दृष्टि में ओलिंपिक आयोजन युद्ध और पराजय के दाग को हमेशा के लिए धो डालने का सुनहरा अवसर है। अतः प्रतियोगिता की सफलता में कोई कसर न रहने पाये, यह एक प्रकार से जापान का राष्ट्रीय ध्येय बन गया है। और लोग इस राष्ट्रीय ध्येय की पूर्ति में जी-जान से जुटे हुए हैं।

★

क्रोध नहीं, स्वस्थ क्रोध

क्रोध को मार न डालिये, उसे जीतिये, वश में कीजिये और काम में लाइये।

सत्यपाल विद्यालंकार

उपनिषद् का महावाक्य है –**"मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।"** इसमें अग्निदेव से प्रार्थना की गयी है–तुम मन्यु हो, मुझमें मन्यु का आधान करो । संस्कृत में मन्यु शब्द का अर्थ है स्वस्थ क्रोध । प्रश्न किया जा सकता है कि क्रोध और स्वस्थ क्रोध में भेद क्या है ?

क्रोध में मनुष्य का अपने पर काबू नहीं रहता । वह नशे की तरह आता है और नशे की तरह धीरे-धीरे उतरता है। यदि उसे जल्दी उतारना हो, तो क्रोधी को एक गिलास ठंडा पानी पीने की सलाह दी जाती है, जैसे कि शराबी को खटाई खाने की । स्वस्थ क्रोध में यह बा नहीं होती । उसकी आकृति गंभीरता की है, बौखलाहट की नहीं । उसके मूल में या तो न्या की उत्कट चेतना रहती है, या दूसरे की प्रबल हितचिंता ।

आग की ओर हाथ बढ़ानेवाले बच्चे पर मां एकदम बरस उठती है और बच्चे का हाथ सहसा रुक जाता है । यहां प्रबल हितचिंता प्रकट हुई । अब उत्कट न्याय-चेतना का उदाहरण लीजिये । कृष्ण के बहुत समझाने पर भी दुर्योधन ने उद्दंडता से जवाब दिया- **"सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव ।"** इस जवाब से कृष्ण की न्याय-चेतना भड़क उठी और छिड़ गया महाभारत का युद्ध ।

इन उदाहरणों से एक बात स्पष्ट है । स्वस्थ क्रोध में मनुष्य भावावेश का स्वयं शिका न होकर, उसे हथियार समझता है ।

राह चलते अनेक बार हम अन्यायपूर्ण घटनाएं देखते हैं । एक गुंडा किसी स्त्री से छे खानी कर रहा है । पुलिस का कोई सिपाही तांगेवाले को बेसूद गाली देकर पैसा ऐंठ रहा है सरे बाजार एक कमजोर आदमी को चार आदमी घेरकर पीट रहे हैं । ऐसी घटनाएं हमा न्याय-चेतना को धक्का देती हैं । पर अक्सर हमारी यह न्याय-चेतना इतनी उत्कट नहीं हो कि हमारी कायरता को दबाकर हमें अन्याय के प्रतिरोध के लिए आगे बढ़ा सके । हम मु की आफत मोल नहीं लेना चाहते और आगे बढ़ जाते हैं। यानी हमारे भीतर मन्यु का अभाव

मन्यु का ऐसा दयनीय अभाव जब किसी देश के नागरिकों का चारित्रिक स्वभाव जाता है, तब उस देश का समूचा नैतिक धरातल चरमरा उठता है । तब कानून लंगड़े सा होते हैं; शांतिप्रियता नपुंसकता की नकाब मात्र बनकर रह जाती है ।

मन्यु का मूल लक्षण यह है कि वह मननपूर्वक होता है। वास्तव में मन्यु और मनन दोनों शब्द संस्कृत की एक ही धातु से निकले हैं। अर्थात् यह क्रोध समझ-बूझकर, अंतिम उपाय के रूप में किया जाता हैं। इसके विपरीत अस्वस्थ क्रोध में मनुष्य की समझ-बूझ बिलकुल मारी जाती हैं।

कहावत है कि इतने मीठे मत बनो कि लोग चाट जायें और इतने कड़वे मत बनो कि लोग थूकने लगें। दूसरे शब्दों में कहें तो, हमें क्रोध पर तो सदा संयम रखना चाहिये; पर स्वस्थ क्रोध को बुझने नहीं देना चाहिये। स्वस्थ क्रोध राख से दबी आग की तरह होता है। वह लपटें तो नहीं देता; पर उस पर पैर भी नहीं रखा जा सकता।

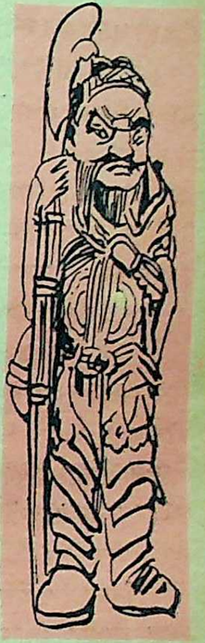

क्रोधी मनुष्य
एक जापानी मूर्ति

स्वस्थ क्रोध को सर्वथा तिलांजलि दे देने पर उस सांप की-सी गति हो जाती हैं, जिसने किसी साधु का उपदेश सुनकर डसना और फुफकारना दोनों को एक साथ तिलांजलि दे दी। बच्चों ने पत्थर मार-मारकर उसका कचूमर निकाल दिया। तब साधु को कहना पड़ा—"अरे भलेमानस, मैंने तो तुझे डसने से मना किया था, तूने फुफकारना क्यों छोड़ दिया ?"

कालिदास ने रघु का चरित्र-चित्रण करते हुए लिखा है:

भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम् ।
अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः ।।

(रघुवंश १–१६)

रघु से लोग डरते भी थे और प्यार भी करते थे। वह समुद्र की तरह था। लोग समुद्र में निश्चित होकर छलांग तो नहीं लगा सकते; पर गोताखोर लोग रत्नलाभ के लिए उसकी गहराई में जरूर पैठ सकते हैं।

स्वस्थ क्रोध का सबसे बड़ा शत्रु है क्रोध। होता यह हैं कि क्रोध करके अगर गुत्थी उलझा ली जाये, तो फिर सारा समझाना-बुझाना व्यर्थ रहता है। चाहिये यह कि समझाने-बुझाने से जब आदमी हार जाये, तब कृत्रिम क्रोध या स्वस्थ क्रोध का सहारा ले। समझाने-बुझाने का दूसरे पर असर नहीं हुआ, तो कोई चिंता की बात नहीं। इतना निश्चित है कि इससे मामला बिगड़ता नहीं। पर क्रोध से तो केस बिगड़ता ही है।

समझाने-बुझाने में दलील का उपयोग होता हैं। और कोई भी प्रतिभाशाली व्यक्ति—चाहे वह आपका बेटा ही क्यों न हो—दलील में हार नहीं मानता; दलील का जवाब दलील

से देता चला जाता है । ऐसे समय [illegible] आने के बजाय धैर्य
से काम लीजिये ।

शांतिपूर्वक उससे कहिये–"हो सकता है भाई, तुम्हारी दलील ठीक हो । पर मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी बात में कहीं-न-कहीं कोई गलती है ।" इस तरह परिष्क व्यवहार की दृष्टि से आपकी श्रेष्ठता सिद्ध होगी । प्रकट में चाहे कोई कुछ कहे, पर भीतर ही-भीतर प्रत्येक व्यक्ति संस्कारिता का अदब मानता है ।

जब कोई व्यक्ति आपकी बात को बिलकुल ही नहीं समझना चाहता, तब आपको क्रोध हो आता है । पर आप ऐसा क्यों नहीं सोच सकते कि –

(१) या तो आपकी बात इतनी ज्यादा सूक्ष्म और गहरी है कि वह आसानी से दूसरे व्यक्ति की समझ में नहीं आती । धैर्य और शांति से अनुकूल अवसर पर अपनी बात को दोहराइये ।

(२) या शायद दूसरे के संस्कारों की दीवार इतनी सख्त है कि कील किसी युक्ति से ही भीतर ठुंकेगी । तैश में आकर न कील को तोड़िये, न दीवार को । ऐसे ही प्रसंग को दृष्टि में रखकर तुलसीदास ने लिखा है :

निसा विगत होइ रविहि प्रकासा । होहि विवेक मोह तम नासा ।।
अस विचारि नहिं कीजिय रोसू । वृथा काहु नहिं दीजिय दोसू ।।

रंगमंच पर रोने का सफल अभिनय करने के लिए यह आवश्यक है कि अभिनेता को सचमुच की रुलाई न फूट पड़े । उस समय उसके मन का प्रधान भाव संयम व सतर्कता का होता है, शोकावेग का नहीं । ठीक इसी प्रकार, क्रोध का सफल अभिनय भी तभी किया जा सकता है, जब आदमी स्वयं क्रोध का शिकार न बन जाये । और क्रोध का सफल अभिनय ही स्वस्थ क्रोध है ।

निम्न चार अवस्थाओं में क्रोध आने पर विशेष सतर्कता और संयम बरतिये–१. असफलता या पराजय, २. खीज, ३. अपमान, ४. द्वेष या वैर ।

माना कि आपकी बात स्पष्ट व युक्तियुक्त है; पर उसे मुंह से निकालने के पूर्व चार बातों की जांच-पड़ताल अवश्य कर लीजिये –

१. आप कहीं से मार खाकर तो नहीं चले आ रहे हैं ?
२. किसी अप्रिय समाचार के कारण आपका मन खिन्न तो नहीं है ?
३. किसी ने आपका अपमान तो नहीं किया है ?
४. जिसे आप अपनी बात समझाना चाहते हैं, उसके प्रति आपके मन में द्वेष या वैर तो पहले से नहीं है ।

अगर इन चारों में से एक भी अवस्था आपके मन की है, तो मुंह को सी लीजिये । सम

लीजिये कि ठीक-से-ठीक बात भी आपके मुंह से [illegible] निकलेगी। थम जाइये; दूसरे उचित अवसर की प्रतीक्षा कीजिये।

मन को पूर्णतया प्रसन्न और क्रोधरहित बनाने के लिए महर्षि पतंजलि का निम्नलिखित नुस्खा माननीय है – **मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।**

देखिये, नुस्खे के लगभग अंत में 'भावना' शब्द आया है। वैद्यक में औषध-निर्माण के प्रसंग में इस शब्द का बहुत प्रयोग होता है। लोहे के चूर्ण को मूली के रस में भावना देने से लोहे में मूली के गुण पूरी तरह समा जाते हैं। सो भावना देने का अर्थ है–किसी वस्तु को किसी रस में सिंचित करके रगड़ना; और रगड़ने से रस जब उस वस्तु में समा जाये, तब उसे उस रस में फिर से सिंचित करके पुनः-पुनः रगड़ना।

पतंजलि का कहना है कि दूसरों के सुख को मैत्री-रस में भावना दो; दूसरों के दुःख को करुणा-रस में, पुण्य को हर्ष-रस में और पाप को उपेक्षा-रस में भावना दो–ऐसा करने से चित्त सदा प्रसन्न और शांत रहेगा। इस संदर्भ में भावना का अभिप्राय है–बार-बार किसी एक विचार को मन में उठाना।

दूसरे के सुख-वैभव को देखकर मन में जो स्वाभाविक विचार उठता है, वह है ईर्ष्या का–मैत्री का नहीं। किंतु मनुष्य को बार-बार मैत्रीभाव के बारे में सोचना चाहिये और तब तक सोचते रहना चाहिये, जब तक दूसरे के सुख पर हमारा मैत्रीभाव पूरी तरह प्रकट न हो जाये। इसी प्रकार, दूसरे को दुःखी देखकर करुणा-विगलित होने, दूसरे के शुभाचरण को देखकर हर्षित होने तथा दूसरे की बुराई को देखकर उपेक्षा-युक्त होने का निरंतर अभ्यास करना चाहिये। यहां 'उपेक्षा' शब्द क्रोध का वर्जन करता है, मन्यु अर्थात् स्वस्थ क्रोध का नहीं।

जहां मन्यु है, वहीं न्याय की रक्षा होती है। समाज में अथवा राजनीति में, जब अहिंसा के नाम पर मन्यु बुझने लगे, तब अन्याय और धांधली निश्चय ही सिर उठाने लगते हैं। समझ लीजिये, उस अहिंसा में कहीं-न-कहीं गलती है। दरअसल वह हिंसा है; क्योंकि उससे समाज और राजनीति में साधुता का निरंतर हनन होता है।

समाज और राजनीति की बातें जरा बड़ी बातें प्रतीत होती हैं। मन्यु का अभ्यास अपने मोहल्ले और घर ही में शुरू कीजिये। आपको मोहल्ले में गुंडागर्दी दूर करने में मदद मिलेगी; घर में आपके बच्चे अनुशासनहीन व उच्छृंखल नहीं हो पायेंगे।

अग्निदेव से मन्यु मांगने का बड़ा गहरा अर्थ है। मन्यु तेजोरूप है, उग्र है। उसका रूप शांति या निर्वेद का नहीं है। वह क्रोध है; पर स्वस्थ क्रोध है। क्रोध की अपेक्षा स्वस्थ क्रोध यानी मन्यु में दो गुण स्पष्टतया रहते हैं– (१) अविचार नहीं, बल्कि मनन; (२) हीनता का भाव नहीं, बल्कि आत्मविश्वास।

★

स्वरब्रह्म स्त्राविंस्की

देबुसी ने एक पत्र में स्त्राविंस्की को लिखा था– "नाद के क्षेत्र में जो उचित और विहित है उसकी सीमा तुमने कितनी विस्तृत कर दी है !" पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके।

मैत्रेयी दत्ता

रूस के नामी संगीतकार रिम्स्की-कार्साकाफ की बेटी का विवाह था। अतिथि और बंधुजन वर-वधु को तरह-तरह के उपहार दे रहे थे। रिम्स्की के एक तरुण शिष्य ने बड़ा ही विचित्र और बड़ा ही उपयुक्त उपहार दिया। उसने अपनी रची एक संगीतमय कृति उस समारोह में प्रस्तुत की। कृति के स्वर-सौंदर्य ने श्रोताओं को मुग्ध कर लिया। विख्यात बैले-निर्माता सर्जी दियागिलेफ ने ऊंचे स्वर में कहा–"इस नौजवान पर नजर रखिये। यह शोहरत की ऊंची चोटियां सर करेगा।"

भविष्यवाणी करके दियागिलेफ शांत नहीं हो गये। उन्होंने वहीं अपनी विश्व-विख्यात कंपनी के एक नृत्य-नाटक का संगीत रचने का निमंत्रण उस युवक को दिया। जब यह नृत्य-नाटक 'दि फायरबर्ड' रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया, महान संगीतकार क्लाड देबुसी दर्शकों की पहली पंक्ति में बैठे हुए थे। अंतिम परदा गिरते ही वे नेपथ्य की ओर लपके, नये रूसी संगीत-स्रष्टा को बधाई देने के लिए। श्रोता जान गये–यूरोप के कला-दिगंत पर एक नये सितारे का उदय हो रहा है।

इस नये उदीयमान सितारे की अ रचना थी–'पेट्रूश्का'। इसे भी दियागि ने प्रस्तुत किया था और यह भी ब प्रशंसित हुआ।

१९१३ की २९ मई को पेरिस में युवा कलाकार की तीसरी रचना 'ला से दु प्रिंतेंप' का प्रथम प्रदर्शन था। दियागिले को इस नृत्य-नाटक से बड़ी उम्मीदें थीं परंतु कार्यक्रम शुरू हुए अभी दो ही मिनि हुए थे कि श्रोताओं ने हू-हू करना शुरू क दिया। उन्होंने ऐसा अजीब संगीत आ तक नहीं सुना था। कार्यक्रम तो जैसे-तै पूरा हुआ; लेकिन अखबारों में उसकी भ कर छीछालेदर हुई।

यदि यह तरुण संगीतकार और को होता, तो शायद उसका भाग्य-सितारा उ दिन डूब जाता और आज यह घटना कि को याद भी न रहती। लेकिन वह दूसरी मिट्टी का बना हुआ था। उसने विरोध परवाह न की और अपनी रीति न छोड़ी आज वही पश्चिम का सबसे बड़ा संगी कार है–इगोर स्त्राविंस्की।

स्त्राविंस्की का जन्म १७ जून १८ को ओरानियेनबाम (रूस) में हुआ। पि

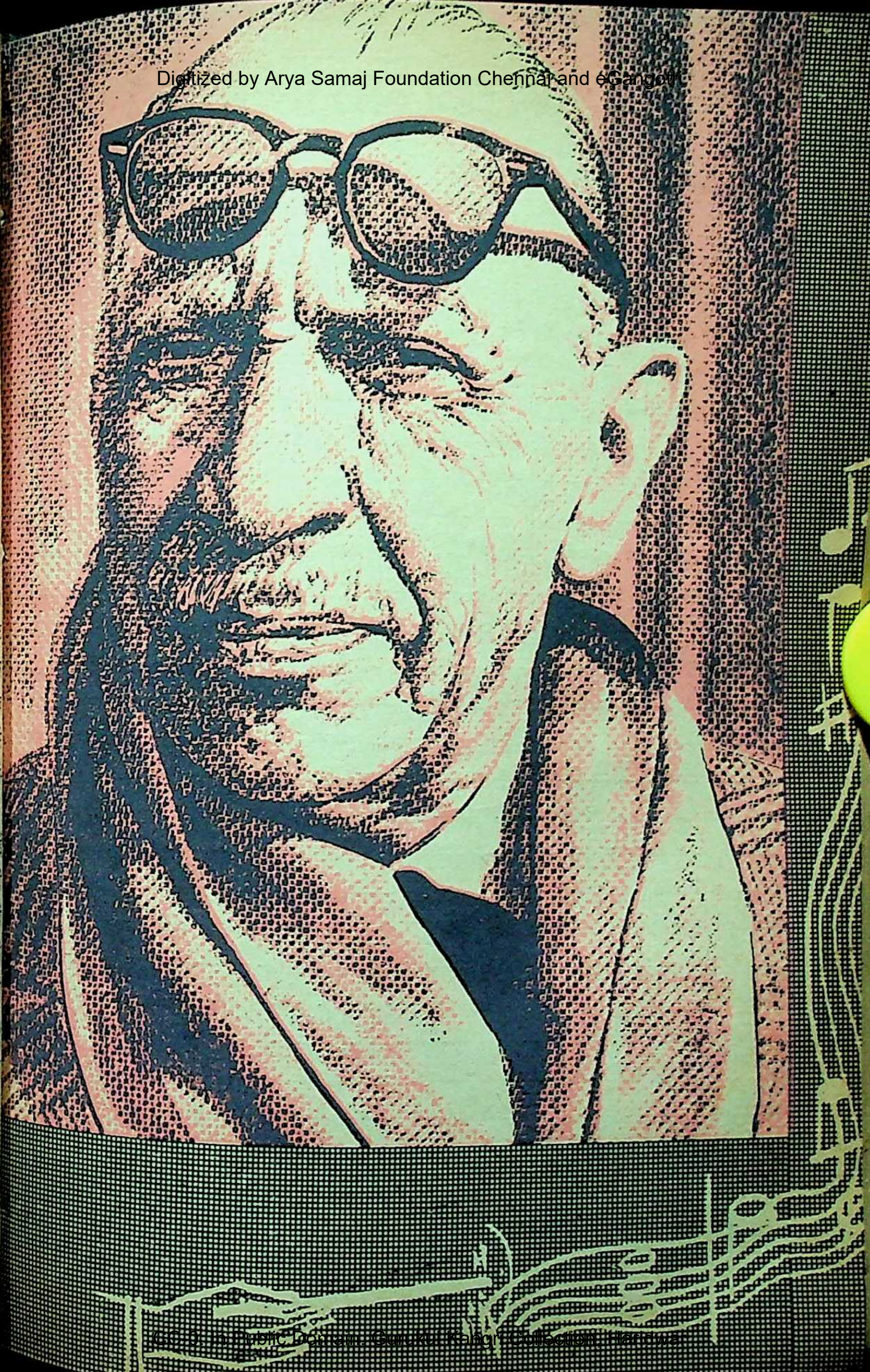

फेदोर इग्नातेविच स्त्राविंस्की पोलैंड से आये एक पुराने जमींदार परिवार में जन्मे थे और सेंट पीटर्सवर्ग (आधुनिक लेनिनग्राड) के विख्यात शाही ओपेरा के लोकप्रिय गायक थे। स्वयं वे कानून की पढ़ाई छोड़कर गायक बने थे; लेकिन यह नहीं चाहते थे कि उनका मेधावी बेटा संगीत को अपना पेशा बनाये। उन्होंने उसे सेंट पीटर्सवर्ग विश्वविद्यालय के कानून-कालेज में भरती होने को विवश किया। बेटे ने कहा-ठीक है, लेकिन मुझे संगीत भी सीखने की छूट देनी पड़ेगी। शर्त मंजूर हो गयी।

स्त्राविंस्की कानून भी पढ़ते रहे और पियानो का अभ्यास भी करते रहे। पहले से ही उनकी प्रवृत्ति स्वर-संयोजन की ओर अधिक थी। छोटी-मोटी रचनाएं वे स्वयं करते रहते। ऐसी ही कुछ रचनाएं उन्होंने रिम्स्की-कार्साकाफ को दिखायीं, जिनका पुत्र उनके साथ पढ़ा करता था। रिम्स्की ने उन रचनाओं पर तो विशेष ध्यान नहीं दिया; लेकिन कहा–" मेरे पास आकर अभ्यास किया करो।" इस तरह स्त्राविंस्की ने शास्त्रीय संगीत के सिद्धांत सीखे। गुरु-शिष्य के आपसी संबंध बड़े स्नेहपूर्ण थे। रिम्स्की एक तरह से स्त्राविंस्की के पिता ही बन गये।

किंतु स्त्राविंस्की शास्त्रीयता का जुआ कंधे पर लादे चुपचाप लीक पर चलनेवाले जीव नहीं थे। वस्तुतः वह युग ही जुआ उतार फेंकने का था। यूरोप में चारों ओर शास्त्रीयता का परकोटा ढह रहा था। इब्सन व शा नाटकों में नये प्राण प्रतिष्ठित कर चुके थे। पिकासो और कैंडिन्स्की चित्रकला की पुरानी परिभाषाओं को दफना रहे थे। हाफमान एवं आगुस्त पेरे आदि उन प्रयोगों में लगे थे, जिनसे वास्तुकला का कायाकल्प होनेवाला था।

नवसृष्टि के इस नववसंत में स्त्राविंस्की की चेतना में पड़े क्रांतिबीज भी अंकुरित हुए। उन्होंने संयत तालों के बजाय तीव्र और उद्धत लयों का आश्रय लिया; विवादी स्वरों की बुनियाद पर सिंफनी की रचना आरंभ की। 'ला सेक्रे दु प्रिंतंप' में जब ये चीजें पूर्ण और प्रकट रूप में सामने आयीं, तो सब चौंक पड़े। 'ला सेक्रे' एक बगावत थी। अगले एक दशक तक स्त्राविंस्की संगीत-जगत के बागी नंबर एक रहे।

लेकिन आज वही शास्त्रीय पश्चिमी संगीत के सर्वाग्रणी आचार्य हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सब नये तत्व आज पाश्चात्य संगीत के अविभाज्य अंग बन गये हैं। प्राकोफीफ, शोस्टाकोविच और कोपलैंड जैसे मूर्धन्य संगीतकार उनके ऋण को अभिमानपूर्वक स्वीकार करते हैं। संगीतकार निकोलास नोबोकोव का कहना है–"आज सिंफनी में वाद्यायोजन का जो जबर्दस्त महत्व है, वह स्त्राविंस्की के ही कारण है।" कोपलैंड ने तो यहां तक कहा है–" वागनर के बाद पश्चिमी संगीत को किसी ने इतना प्रभावित नहीं किया, जितना स्त्राविंस्की ने।"

स्त्राविंस्की कुछ वर्ष निर्जिस्की और दियागिलेफ के साथ यूरोप में घूमते रहे।

१९१४ में वे कुछ महीने अपनी जन्म-भूमि में रहे। वहां उन्होंने हैंस क्रिश्चियन एंडरसन की एक परी-कथा पर आधारित संगीत-रचना प्रस्तुत की। छः वर्षों तक उन्होंने इस पर श्रम किया था। 'ला सेक्रे दु प्रिंतेंप' की धुनें भी वस्तुतः कोई तीन वर्ष तक उनके दिमाग में चक्कर काटती रही थीं। और अंत में आठ फुट लंबी और आठ फुट छोटी एक कोठरी में उन्होंने उन्हें लिपिबद्ध किया। आज भी वे एक छोटे-से कमरे में ही सारा संगीत-सृजन करते हैं।

सिंफनी

चित्र : जियोवानी थर्मेस

साठ से अधिक रचनाएं उन्होंने की हैं; जिनमें 'ईडिपस रेक्स', 'दि वेडिंग', सुशिर वाद्यों की सिंफनियां, 'वायलिन कान्सर्टो', 'सिंफनी आफ साम्स' और 'दि रेक्स प्रोग्रेस' आदि मशहूर हैं। वैसे उनकी आरंभिक रचनाएं अधिक स्थायी मूल्य की मानी गयी हैं। उनकी परवर्ती रचनाएं अधिक शांत, संयत और अधिक क्लासिकी हैं। यह नियो-क्लासिकल प्रवृत्ति 'पल्सिनेला' में ही दृष्टिगोचर हो गयी थी, जिसकी रचना उन्होंने १९१९-२० में की थी।

कुछ आलोचकों ने उन पर क्रांति को धता बता देने का आरोप लगाया है। ठीक यही आक्षेप पिकासो के विरुद्ध भी किया जा चुका है। शायद परिवर्तन के नियम से कलाकार भी नहीं बच पाते हैं। और जैसाकि स्त्राविंस्की ने स्वयं कहा है—"कौन कह सकता है कि परिवर्तन किस कारण होता है? मोटर चलाते हुए आपको दिशा परिवर्तन का पता भी नहीं लगता। सड़क पर जरा-सा मोड़ आता है और आप पश्चिम की ओर बढ़ चलते हैं; फिर जरा-सा मोड़, और आपका मुंह उत्तर को हो जाता है। आप जान भी नहीं पाते।"

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वे पेरिस में बस गये और फ्रांसीसी नागरिक बन गये। १९२५ में उन्होंने पहली बार अमरीका की यात्रा की। इसमें उन्होंने पियानो-वादन के कार्यक्रम पेश किये और अपनी संगीत-रचनाओं का संचालन भी किया। वस्तुतः वे आज के सबसे बड़े कंडक्टर-कंपोजर हैं। १९३० में उन्होंने कैलिफोर्निया को अपना स्थायी घर बनाया। १९४६ से वे अमरीकी नागरिक हैं। अपनी प्रथम पत्नी की मृत्यु के बाद १९४० में उन्होंने पुनर्विवाह किया। द्वितीय पत्नी वेरा दे बेस्सेत सुदकाइन कुशल नर्तकी हैं और पहले दियागिलेफ के दल में काम करती थीं। १९६२ में स्त्राविंस्की-दंपति रूस गये थे, जहां उनका भव्य स्वागत हुआ।

स्त्राविंस्की ५ फुट ४ इंच कद के पतले

दुबले, तीक्षण मुखमुद्रावाले व्यक्ति हैं। बचपन से स्वास्थ्य संपदा से वंचित रहे। कभी खेल-कूद में भाग न ले पाये। तपेदिक की बीमारी उन्हें ननिहाल से मिली थी। उनकी पत्नी कैथेरीन (विवाह १९०६), जो उनकी मां के नजदीकी रिश्ते में से थीं, इसी रोग से मरीं। स्त्राविंस्की को भी १९३९ में कई महीने सेनेटोरियम में बिताने पड़े।

लेकिन अस्वास्थ्य उनके बौद्धिक विकास में बाधा नहीं डाल सका। कानून के स्नातक होने के साथ वे साहित्य और दर्शन के भी अच्छे विद्वान हैं। दास्तोव्स्की, जो उनके पिता के मित्र थे, उनके प्रिय लेखक हैं। मातृ-भाषा रूसी के अलावा फ्रेंच, जर्मन व अंग्रेजी पर उनका अधिकार है। हार्वर्ड में उन्होंने 'पोयेट्स आफ म्यूजिक' नामक जो भाषण-माला दी थी, वह उनकी विद्वत्ता और अंतर्दृष्टि का प्रमाण है।

चित्रकला के वे अच्छे पारखी हैं। पाल क्ली के वे प्रशंसक हैं और पिकासो के पुराने मित्र। पिकासो का बनाया उनका चित्र मशहूर है। इसे स्विट्जरलैंड ले जाते हुए स्त्राविंस्की इटली की सीमा पर पकड़े गये थे; क्योंकि इटालियन पुलिस ने उस चित्र को किसी किले का नक्शा समझ लिया था। काक्तू, चैपलिन और पाल वैलरी से भी उनकी मित्रता रही हैं।

स्त्राविंस्की आजकल हालिवुड में रहते हैं। फिल्म की राजधानी में रहते हुए भी फिल्मों से उनका संबंध बहुत थोड़ा ही है और बहुत प्रिय भी नहीं। उन्होंने स्वयं ही लिखा है—"१९३७-३८ में मेरे पास एक सज्जन सूचना लाये कि वाल्ट डिजनी मेरे 'ला सेक्रे दु प्रिंतेंप' के संगीत को अपनी एक कार्टून फिल्म में लेना चाहते हैं और इसके लिए मुझे ५,००० डालर देने को तैयार हैं। मैंने अधिक दाम मांगे, तो उत्तर मिला-आपके गानों का कापीराइट रूस का था, जो अमरीका में नहीं लागू होता। सो उनका उपयोग बिना रायल्टी दिये भी किया जा सकता है। लाचार हो मैं पांच हजार पर राजी हो गया। लेकिन अंत में मेरे हाथ तो एक ही हजार लगे। चार हजार डालर उन सज्जन ने दलाली के काट लिये। फिल्म में मेरे संगीत की दुर्गति जो हुई सो अलग।"

'फोर नार्वेजियन मूड्स' की रचना उन्होंने एक फिल्म के लिए ही की थी, लेकिन फिल्म नहीं बनी। फिर भी ८२ वर्ष की उम्र में अब उन्होंने हालिवुड में बन रही फिल्म 'बाइबिल' की संगीत-रचना का भार स्वीकार किया है। पारिश्रमिक वेतन लाखों डालर होगा। लेकिन लाखों की लंबी रकमों के लोभ में आनेवाले नहीं हैं स्त्राविंस्की। कुछ वर्ष पूर्व हालिवुड की एक कंपनी ने उनके सामने प्रस्ताव रखा था-"साल में तीन संगीतकृतियां हमें दिया कीजिये। हम १,००,००० डालर देंगे।"

स्त्राविंस्की ने यह कहकर प्रस्ताव ठुकरा दिया—"साल में एक अच्छी संगीत-कृति रच लेना बहुत बड़ी बात है। तीन-तीन रचने का वचन देना कला के साथ धोखा-धड़ी करना है।"

शिव

बंबई का

हूर नहीं

दात्री औ

मंदिर है

लिए हैं

विख्यात

और उनके

हैं, जहां

भिखारी

होकर श

१९६४

घुड़दौड़ का महातीर्थ महालक्ष्मी

शिवशंकर सिंह

बंबई का महालक्ष्मी इसलिए उतना मशहूर नहीं है कि वहां समस्त सौभाग्यों की दात्री और अधिष्ठात्री मां महालक्ष्मी का मंदिर है। वरन् वह अधिक प्रसिद्ध इसलिए है कि वहां महालक्ष्मी का विश्वविख्यात रेस-कोर्स है, जहां घोड़े दौड़ते हैं और उनके साथ हजारों की किस्मत दौड़ती है, जहां कितने ही अमीर मिनिटों में भिखारी हो जाते हैं और भिखारी अमीर होकर शान से सिर उठाये घर लौटते हैं।

घुड़दौड़ का इतिहास काफी पुराना है। इंग्लैंड में यह दौड़ लगभग ४०० साल पहले ही शुरू हो गयी थी। किंतु उसे प्रामाणिक स्वरूप मिला १७८० में, जब इप्सम में डर्बी स्टेक्स की स्थापना हुई। पहली इप्सम डर्बी घुड़दौड़ उस साल ४ मई को हुई।

भारत में घुड़दौड़ की शुरुआत १८-वीं सदी के अंत में हो चुकी थी; परंतु उसका विधिवत् आरंभ १८४७ में कलकत्ता टर्फ क्लब की स्थापना के बाद हुआ। उसके बाद

कुछ वर्षों तक घुड़दौड़ बंद रही और १८६६ में उसे पुनः शुरू किया गया । तब से वह अबाध रूप से जारी है ।

शुरू-शुरू में केवल राजाओं और महाराजाओं का संरक्षण मिलने के कारण घुड़दौड़ को 'राजाओं का खेल' कहा जाता था। बाद में सामान्य जनता भी इसमें दिलचस्पी लेने लगी और अब इसे 'खेलों का राजा' कहा जाने लगा है । भारत में इसकी लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है और यदि यही हालत रही, तो शायद लोकप्रियता में यह क्रिकेट को भी मात कर दे ।

सन १८६४ में बंबई में वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब की स्थापना हुई । वैसे सबसे पहली घुड़दौड़ पुराने भायखला क्लब के मैदान में १७९७ के आस-पास आयोजित की गयी थी । किंतु बंबई और पूना के अलावा सारे भारत में घुड़दौड़ का आयोजन कलकत्ता टर्फ क्लब की ओर से होता था । सन १९५३ में साउथ इंडिया टर्फ क्लब की स्थापना हुई और कलकत्ता क्लब की गतिविधियां केवल पूर्वी भारत तक सीमित हो गयीं ।

आज साउथ इंडिया टर्फ क्लब से संबद्ध पांच क्लब मद्रास, बंगलोर, ऊटकमंड, मैसूर तथा सिकंदराबाद में हैं । इनके अधीन मद्रास, ऊटकमंड, मैसूर, बंगलोर तथा सिकंदराबाद में घुड़दौड़ का आयोजन किया जाता है । किंतु बंबई की घुड़दौड़ की शान निराली है ।

आज से अस्सी साल पहले १८८३ में जब महालक्ष्मी में पहली बार घुड़दौड़ का आयोजन किया गया था, वह स्थान आज कि विकसित नहीं था । अप्रैल १९२५ में वे इंडिया टर्फ क्लब ने प्राइवेट लिमिटेड कं का रूप पाया । उसी साल ५० लाख रु की लागत से उसका जीर्णोद्धार किया ग झाड़-झंखाड़ और दलदलों से भरी एकड़ जमीन, जहां मच्छरों ने डेरा रखा था, घुड़दौड़ के मैदान में बद गयी । किसी जमाने की वही बंजर ज आज महान आकर्षण-केंद्र बनी हुई है।

घुड़दौड़ के दिन महालक्ष्मी की देखते ही बनती है । उस दिन नगर सारी सड़कें महालक्ष्मी की ओर जाती हैं घुड़दौड़ के शौकीनों में गजब का उ देखा जाता है । लेकिन इस पुण्यस्थल प्रवेश पाना कोई आसान काम नहीं । घु दौड़ में चाहे किसी की कितनी भी दि चस्पी क्यों न हो, यदि उसकी जेब खा है, तो वह कभी भी इसमें प्रवेश करने साहस न करेगा ।

संभवतः यही कारण है कि भारत केवल दो लाख घुड़दौड़-प्रेमी ही अ शौक पूरा कर पाते हैं । अमरीका में घु दौड़ के शौकीनों की संख्या पांच करोड़ भी अधिक है । वहां हर साल दो अरब डा से अधिक की बाजी घोड़ों पर लगायी जा है । वास्तव में वहां घुड़दौड़ एक विशा उद्योग है, जिसमें एक अरब डालर की पूं लगी हुई है ।

सन १९५९ में न्यूयार्क में नया घुड़ मैदान बनाया गया । उसकी लागत

करोड़ ३० लाख डालर बैठी । यह विश्व का सबसे बड़ा और सबसे आधुनिक घुड़दौड़ मैदान है । इसके पांच मंजिले स्टैंड में ८० हजार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है । इसके साथ एक एअर-कंडिशंड रेस्तरां भी है, जहां १,२०० व्यक्ति एक साथ खाना खा सकते हैं । रेस की धक्का-मुक्की में घायल होनेवालों के लिए ही एक अस्पताल है, जहां पच्चीस रोगियों का एक साथ इलाज किया जा सकता है । हमारे यहां अभी इन सब सुविधाओं की स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती ।

हमारे क्लब भी उतने साधन-संपन्न नहीं हैं । अभी तक यहां किसी एक घोड़े पर अधिक-से-अधिक ५५ हजार रुपये चुकाये जाते हैं, जबकि अमरीका में सवा मील की केंटुकी डर्बी के विजेता को १६ लाख डालर तक दिया जाता है ।

विदेशों में बाजी भी बहुत ऊंची लगायी जाती है । पाल जोन्स नामक अमरीकी ने एक बार केंटुकी डर्बी में 'रौल पार' नामक घोड़े पर १५ हजार डालर लगाया था और उसके विजयी होने पर उसे २,४९,७५० डालर की रकम मिली थी । कर्नल ई० आर० ब्रेडली ने १९३१ में 'ब्लैक सर्वेंट' पर १० हजार डालर लगाया था; किंतु घोड़ा हार गया । अन्यथा कर्नल को १० लाख डालर की आमदनी होती । कर्नल ब्रेडली इससे निराश नहीं हुए और उन्होंने 'बबलिंग ओवर' पर ४ लाख २५ हजार डालर लगाये और इस बार वे जीत गये ।

भारत में क्लबों ने बाजी लगाने की सीमा दो हजार रुपये निर्धारित कर दी है । यदि बुक-मेकर चाहें, तो इससे ज्यादा रकम लगायी जा सकती है । किंतु बुक-मेकरों में भी इतना दम नहीं कि वे बहुत अधिक जोखिम उठा सकें । कुछ साल पहले एक शौकीन ने बंगलोर में 'लांस कार्पोरल' पर एक लाख रुपया लगाने का प्रस्ताव किया था; किंतु कोई भी बुकी इतनी बड़ी रकम का जोखिम उठाने को तैयार न हुआ ।

घुड़दौड़ एक खेल भी है, जुआ भी है, और उद्योग भी है । इससे खेल-प्रेमियों का मनोरंजन होता है, जुआरियों का शौक पूरा होता है; और इसके कारण बहुतों को रोजगार भी मिलता है । विशुद्ध खेल की दृष्टि से देखें, तो यह एक बहुत ही दिलचस्प खेल है ।

जुए के साधन के रूप में घुड़दौड़ की अपनी अलग शान है । कानून से बचकर चोरी-चोरी ताश और कौड़ी फेरना या सट्टा खेलना बहुत लोग पसंद नहीं करते । किंतु पलक मारते कुबेर का खजाना लूट लाने

की उनकी तमन्ना बनी रहती है । इसलिए वे अपनी किस्मत आजमाने घुड़दौड़ के मैदान में उतर पड़ते हैं । घुड़दौड़ बहुतों के लिए रोजी-रोटी का प्रबंध करती है । बुकिंग क्लर्क से लेकर घोड़ों के मालिक तक इसे अपनी आमदनी का साधन बनाते हैं ।

घुड़दौड़ को कायम न रखा गया होता, तो आज देश से ऊंची नस्ल के घोड़ों का नामोनिशान मिट गया होता । पहले घुड़दौड़ के घोड़ों का आयात किया जाता था और अरबी, तुर्की तथा ब्रिटिश घोड़े ही मैदान में उतर पाते थे । बाद में विदेशी मुद्रा की कमी के कारण घोड़ों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया । तब से भारत में भी अच्छी नस्ल के घोड़े तैयार किये जाने लगे हैं । आज भारत में घोड़ों के कुल १८ रजिस्टर्ड तबेले हैं, जिनमें हर साल १६० घोड़े पैदा किये जाते हैं ।

घोड़ों की नस्ल सुधारने में वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब बहुत दिलचस्पी लेता है । उसकी ओर से बंबई में हर साल दो-दो साल के बछेड़ों की बिक्री होती है । इससे क्लब को लाखों रुपये की आमदनी होती है ।

संपन्न लोग बछेड़ों को खरीदकर प्रशिक्षकों के सुपुर्द कर देते हैं, जो उन्हें घुड़दौड़ के लिए तैयार करते हैं । आज देश में कुल एक हजार रेस के घोड़े हैं । एक घोड़े के रख-रखाव पर औसतन ३०० रुपये प्रतिमास खर्च होता है । इस प्रकार इन घोड़ों पर हर साल ३६ लाख रुपये खर्च होते हैं ।

प्रशिक्षण पूरा हो जाने पर घोड़ों को मैदान में उतारा जाता है । घोड़ों की उनका पिछला रेकार्ड, उन पर करनेवाले सवारों के वजन आदि को हुए उनके लिए वजन निर्धारित किया हैं, जिसे हैंडिकैप' कहते हैं । जो अधिक तेज समझा जाता है, उस पर अधिक वजन रख दिया जाता है, वह अन्य घोड़ों के समकक्ष हो जाये ।

दौड़ के कई कार्यक्रम होते हैं और बटवारा घोड़ों की श्रेणियों के अनुसार जाता है । इंडियन डर्बी, इंडियन (फिलीज), एक्लिप्स स्टेक्स आफ इं इंडियन सेंट लेजर, इंडियन २००० इंडियन १००० गिनीज (फिलीज), इंडिया गोल्ड कप, ईव चैंपियन कप, क्लब कप, सी० एन० वाडिया गोल्ड तथा राजपीपला गोल्ड कप घुड़दौड़ के आकर्षण हैं । इनके विजेताओं को २१ से लेकर ५५ हजार तक की रकम दी हैं । देश के प्रमुख क्लब कुल मिलाकर साल एक करोड़ रुपये के पुरस्कार देते

भारतीय घुड़दौड़ों में सबसे अधिक इंडियन डर्बी का है । इंग्लैंड की इप्सम तथा अमरीका की केंटुकी डर्बी की इसे वर्ष भी श्रेष्ठ घुड़दौड़ समझा जाता

इंडियन डर्बी का आयोजन बंबई में है । इसके विजेता को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । इस साल 'प्रिंस प्रदीप यह गौरव प्राप्त हुआ । पिछले साल का विजयी था 'राक्ली' । संभावना एवरेस्ट' के विजयी होने की थी और

समाप्त होने पर दर्शकों ने समझा भी यही। किंतु निर्णायकों ने 'राकली' को विजेता घोषित किया। इस पर बड़ा हो-हल्ला मचा।

वैसे विजय-स्तंभ के पास एक कैमरा लगा होता है, जो फीता पार करनेवाले हर घोड़े की फोटो खींच लेता है। यदि कोई घोड़ा बाल-भर भी आगे-पीछे रहता है, तो कैमरे द्वारा ली गयी फोटो से स्पष्ट मालूम हो जाता है। 'माउंट एवरेस्ट' के दुर्भाग्य से उस दिन अकस्मात् कैमरा बिगड़ गया और घोड़ों की फोटो न ली जा सकी।

भारत में घुड़दौड़ को लोकप्रिय बनाने में देशी नरेशों का बहुत अधिक योगदान रहा। ग्वालियर के स्वर्गीय महाराजा जार्ज जिवाजीराव शिंदे ने घुड़दौड़ के विकास में सबसे अधिक योगदान दिया है। वे स्वयं तबेले में जाते थे और घोड़ों की सेवा-टहल का सारा प्रबंध खुद देखते थे। उनकी मृत्यु के बाद अफवाह थी कि ग्वालियर तबेले के सारे घोड़े निकाल दिये जायेंगे। महारानी ग्वालियर को घुड़दौड़ और घोड़ों से खास दिलचस्पी नहीं थी। किंतु अपने स्वर्गीय पतिदेव के शौक का ध्यान रखते हुए महारानी ने तबेले को बंद नहीं किया। अब राजकुमार के मालिकाने में ग्वालियर के घोड़े पुनः मैदान में उतरने लगे हैं।

इसके विपरीत जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरिसिंह की मृत्यु के बाद सदरे-रियासत कर्णसिंह ने अपने पिता के घोड़ों में दिलचस्पी नहीं दिखायी और उनका अस्तबल बिक गया।

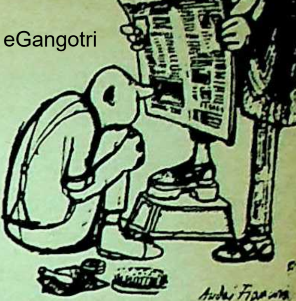

अरे, मेरा घोड़ा इस बार भी हार गया!

घुड़दौड़ को जुआ कहकर हमारे यहां कुछ लोग मांग कर रहे हैं कि उस पर कानूनन प्रतिबंध लगा दिया जाये। श्रीलंका सरकार ने जब से यह कदम उठाया है, तब से हमारे यहां भी इस मांग को बल मिला है। लेकिन कर का बड़ा अच्छा स्रोत है घुड़दौड़। अकेला साउथ इंडिया टर्फ क्लब हर साल सरकार को कर के रूप में २४ लाख रुपये देता है। वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब तथा कलकत्ता टर्फ क्लब से तो सरकार को इससे कम-से-कम दुगुनी आय होती होगी।

इसके अलावा टर्फ क्लब सार्वजनिक संस्थाओं को हर वर्ष लाखों रुपये की सहायता देते हैं। वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब बंबई में अस्पतालों के सहायतार्थ एक विशेष घुड़दौड़ का आयोजन करता है। उस दिन की सारी आय राज्य के अस्पतालों के लाभार्थ खर्च की जाती है।

बेशक घुड़दौड़ में दोष भी हैं। घुड़दौड़ के मैदान में उतर जाने के बाद प्रायः लोग नियंत्रण खो बैठते हैं। और उसका परिणाम बहुत ही भयंकर होता है। पर यदि मान लिया जाये कि घुड़दौड़ के शौकीन शत-प्रतिशत ऐसे होते हैं, तो भी उनकी संख्या दो लाख से अधिक नहीं होगी। इनमें भी

७५ प्रतिशत लोग धनिक वर्ग के होते हैं, जिनके लिए थोड़ा पैसा खो देना कोई बड़ी बात नहीं।

कायदे से टर्फ क्लब के सदस्यों को घोड़ों पर बाजी नहीं लगानी चाहिये। किंतु वे यदि खुद नहीं खेलते, तो अपने दोस्तों के जरिये बाजी लगा देते हैं। यह अनुचित है और इससे घुड़दौड़ की निष्पक्षता में संदेह होने लगता है। पहले घोड़ों के मालिक ज्यादातर राजा-महाराजा, नवाब तथा करोड़पति लोग होते थे। ये घुड़दौड़ को कमाई का जरिया नहीं, अपना शौक पूरा करने का साधन समझते थे और घाटा होने पर खुशी-खुशी उसकी पूर्ति कर देते थे।

किंतु अब राजा-महाराजा धीरे-धीरे मैदान छोड़ रहे हैं और उनका स्थान व्यवसायी लोग लेते जा रहे हैं, जिनका एकमात्र ध्येय होता है पैसा कमाना। इसके लिए ये कुछ ऐसे हथकंडे अपनाते हैं, जो घुड़दौड़ के नैतिक सिद्धांतों के विरुद्ध होते हैं। कभी-कभी घोड़ों को जिताने और हराने में परोक्ष रूप से इनका हाथ रहता है।

ट्रेनरों के बारे में भी ऐसी शिकायतें सुनने को मिलती हैं। किंतु कुछ साल पहले की एक घटना एक ब्रिटिश ट्रेनर की ईमानदारी का ज्वलंत उदाहरण है। मैसूर घुड़दौड़ में उसके दो घोड़े भाग ले रहे थे। एक को सबसे अधिक और दूसरे को सबसे कम वजन दिया गया था। ट्रेनर की पत्नी ने एक बुकी से कम वजनवाले घोड़े पर बाजी लगाने का प्रस्ताव किया। किंतु 'आड्स' के मामले में कुछ विवाद हो गया। संयोग उसी वक्त ट्रेनर उधर से गुजरा। को बचाव कर उसने फैसला कर दिया।

ट्रेनर की पत्नी ने देखा कि जिस घोड़े उसने पैसा लगाया था, वह चौथे स्थान आया। वह दौड़ी-दौड़ी अपने पति के गयी और बिगड़कर बोली–"तुम जानते कि तुम्हारा वह घोड़ा गधा है। फिर तु मुझे उस पर बाजी लगाने से क्यों न रोका?" ट्रेनर पहले तो हंसा, फिर मज़ा में बोला–"श्रीमतीजी, यह मेरा धंधा न है कि मैं लोगों से कहता फिरूं कि मेरा कौ घोड़ा घोड़ा है और कौन गधा है।" अ सभी ट्रेनर और मालिक ऐसी ऊंची नैतिक बरतें, तो सरकार को तरह-तरह के प्र बंध न लगाने पड़ें।

वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब ने एक योज तैयार की है, जिससे घुड़दौड़-प्रेमी बं ही बैठे-बैठे पूना में होनेवाली घुड़दौ शरीक हो सकते हैं। एक ऐसा विजली यंत्र लगाया जायेगा, जिससे पूना में ल जानेवाली बाजी का अंकन बंबई में प्र किया जा सके।

इसके अलावा महालक्ष्मी घुड़दौड़ मैदा को 'फ्लड लिट' करने की भी योजना है इस पर कुल छः लाख रुपया खर्च हों यह हो जाये, तो घुड़दौड़ रविवार के स्था पर शनिवार की रात को हो सकें इससे घुड़दौड़ के प्रेमी चिलचिलाती से बच जायेंगे और रविवार को आरा छुट्टी मना सकेंगे।

* * *

भारतीयता का एक सरकारी चेहरा

समाज में आदमी चेहरे से पहचाना जाता है; राष्ट्र-समाज में हर राष्ट्र उस चेहरे से पहचाना जाता है, जोकि उसके राजदूत और अन्य अधिकृत प्रतिनिधि पेश करते हैं। हमारे दूतावास और उनके कर्मचारी विदेशों में भारत का कैसा चेहरा प्रस्तुत कर रहे हैं, इसका क्षोभकारी वर्णन श्री अज्ञेयजी के शब्दों में पढ़िये।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

यूरोप में किसी भारतीय दूतावास में होकर आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति से प्रश्न पूछा जाता है–"अच्छा, आप भारतीय दूतावास में गये थे ? वहां आपने किस भाषा में बात की ?" प्रश्न का कारण तो स्पष्ट ही है। भारतीय दूतावासों में अंग्रेजी–और केवल अंग्रेजी–बोली जाती है। कर्मचारी अथिति के साथ भी अंग्रेजी बोलते हैं और आपस में भी।

निःसंदेह कुछ दूतावासों में कुछ लोग अंग्रेजी के अलावा दूसरी यूरोपीय भाषाएं भी बोल सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद यह बात सही है कि दूतावास का वातावरण अंग्रेजी का होता है–हिन्दी का नहीं होता, बल्कि किसी भी भारतीय भाषा का नहीं होता।

इसके कुछ उदाहरण अपेक्षित होंगे।

उत्तरी यूरोप का एक देश। एक भारत-प्रेमी विदेशी अध्यापक के घर पर भारत के स्थानापन्न राजदूत से भेंट हो जाती है और वे मुझे अगले दिन दूतावास आने के लिए आमंत्रित करते हैं। दूसरे दिन समय पर जब मैं दूतावास पहुंचता हूं, तो स्वागत-सत्कार-वाले कर्मचारी मेरा नाम ठीक समझ न पाकर (इसके लिए मैं उनको दोष नहीं देता, मेरा नाम ही ऐसा विकट है) अपना खाता उठा लाते हैं और उसमें नाम लिख देने को कहते हैं।

मैं जानबूझकर पूछता हूं–"अपनी भाषा में नाम लिख दूं, या कि रोमन में लिखना आवश्यक है ?"

कर्मचारी विदेशी है; लेकिन हैं तो भारतीय दूतावास की सेवा में। वह कैसे कह सकता है कि आप भारतीय भाषा में अपना नाम न लिखिये ? मुस्कान बिछाकर कहता है–"जैसी आपकी इच्छा हो।" मैं देवनागरी अक्षरों में अपना नाम लिख देता हूं। कर्मचारी खाते को अपनी तरफ घुमाकर देखता है, फिर उठाकर भीतर ले जाता है।

थोड़ी देर बाद एक दूसरे सज्जन प्रकट होते हैं। ये भारतीय हैं। मुझसे अंग्रेजी में पूछते हैं कि क्या राजदूत महोदय ने मिलने का समय दिया था ? मेरे हां कहने पर वे नाम फिर पूछते हैं और मैं उन्हें स्मरण

दिलाता हूं कि मैंने अभी-अभी उनके खाते में अपना नाम और भेंट का समय और कारण भी लिख दिया है। मैं समझ रहा हूं कि वे बेचारे उस खाते में देवनागरी में लिखा हुआ नाम नहीं पढ़ पा रहे हैं; लेकिन उन्हें इस घोर संकट से उबारने का कोई उत्साह मुझमें नहीं है।

वे सज्जन भी चले जाते हैं और लंबी अवधि तक मैं अकेला रह जाता हूं। उसके बाद राजदूत महोदय स्वयं प्रकट होते हैं और मुझे अपने कमरे में ले जाते हैं। कुछ शिष्टाचार और कुछ शरारत से मैं उनसे कहता हूं–"आशा है कि मेरे अपना नाम देवनागरी में लिख देने से आपके कार्यालय को बहुत अधिक कठिनाई नहीं हुई।" वे हंसकर उत्तर देते हैं–"नहीं, मैंने स्कूल में संस्कृत भी पढ़ी थी; मैं देवनागरी पढ़ लेता हूं।"

अनंतर मालूम हुआ कि कार्यालय में कोई भी अधिकारी खाते में लिखा हुआ मेरा नाम न पढ़ सका था। तीसरी बार नाम पूछने आना भी बहुत अभद्र जान पड़ता। इसलिए उस भारी-भरकम रजिस्टर को राजदूत महोदय के पास ले जाया गया था।

× × ×

एक दूसरी घटना। दक्षिणी यूरोप की एक राजधानी। इस नगरी में मैं डेढ़-दो महीने से हूं और अनेक स्थानीय लोगों से मेरा परिचय हो गया है। इनमें से कुछ भारत-यात्रा करना चाहते हैं और उनमें से कुछ से मेरी इस बारे में बातचीत होती रही है कि भारत में उन्हें कहां-कहां जा चाहिये और क्या-क्या देखना चाहि मैंने उनसे यह भी कहा है कि भारत के टक विभाग ने देश के कुछ ऐसे मान छापे हैं, जिनमें दर्शनीय स्थलों का संकेत है और मैं दूतावास से ये नक्शे लोगों के लिए ला दूंगा।

इसी उद्देश्य से भारतीय दूतावास जाकर मैंने संस्कृति-विभाग के अधि से मिलने की इच्छा प्रकट की है। वे समय दौरे पर हैं। इसलिए एक दूसरे अधि कारी के सामने मुझे खड़ा कर दिया गया।

ये सज्जन मुझसे अंग्रेजी बोलते हैं लेकिन चेहरे-मोहरे और उच्चारण से बंगाली पहचाने जाते हैं। इसलिए बंगला में उत्तर देता हूं। कुछ अचकचाकर वे भी अंग्रेजी में ही बात करते हैं; लेकि मेरे बंगला पर अड़े रहने पर मानो अ बंगला बोलना स्वीकार कर लेते हैं।

उनकी बंगला पूर्वी बंगाल की है, मे पश्चिमी; और इन दोनों के 'काकोल से मैं कलकत्ता से ही खूब परिचित इसलिए मुझे इस बात से और भी होता है कि उन्होंने अनुग्रहपूर्वक बं बोलना स्वीकार कर लिया। खैर, अभिप्राय समझ लेने के बाद वे मुझे सां तिक विभाग के एक दूसरे छोटे अधि के पास भेज देते हैं।

ये भी भारतीय हैं और ये भी अं बोलते हैं और अंत तक अंग्रेजी बोलते हैं–यद्यपि हैं हिन्दी प्रदेश के। इन्होंने तो

हिन्दी बोलने पर "आई बेग योर पार्डन ?" कहकर ऐसा भाव दर्शाया है कि वे हिन्दी समझते ही नहीं ।

अब ये सज्जन अपने क्लर्क को बुलाकर मुझे उसके हवाले कर देते हैं । यह क्लर्क स्थानीय भरती का विदेशी युवक है । यह मुझे अपने कमरे में ले जाकर मेरे साथ शुद्ध और परिष्कृत हिन्दी में बात करता है । लक्ष्य कीजिये, भारतीय दूतावास में जो एकमात्र व्यक्ति परिष्कृत भारतीय भाषा बोलता है, वह स्थानीय भरती का विदेशी है । पूछ-ताछ करने पर वह मुझे बताता है कि वह युद्ध-काल में बंदी होकर तीन वर्ष भारत में रहा; उसी अवधि में उसने हिन्दी सीखी और हिन्दी की दो परीक्षाओं में भी उत्तीर्ण हुआ ।

नक्शे उसने मुझे ला दिये । फिर एक नक्शा अपने सामने रखकर मुझे समझाने लगा कि दिल्ली से खजुराहो जाने का मार्ग कौन-सा है, और एलुरा तथा अजंता कहां पर हैं । मेरे यह कहने पर कि इतनी जानकारी मुझे है और नक्शा मैं अपने लिए नहीं, अपने कुछ विदेशी मित्रों के लिए चाहता हूं, वह हंसकर बोला– "जी हां, ऐसा हो सकता है । पर यहां जो भारतवासी यह नक्शा लेने आते हैं, उनको यह सब बतलाना पड़ता है ।" उसके चेहरे पर विनय का भाव ज्यों-का-त्यों है; लेकिन उसकी बात में कितना गहरा व्यंग्य है, यह मुझसे छिपा नहीं रह सकता।

× × ×

ये दो उदाहरण भारतीय दूतावास के भारतीय भाषाओं के प्रति रवैये के हैं । अब दो उदाहरण भारतीय साहित्य के प्रति उनकी दृष्टि और साहित्य के उनके ज्ञान के भी दे दूं ।

पश्चिमी यूरोप का एक छोटा देश । भारत से दूतावास को मेरे बारे में सूचना दी गयी है कि अमुक एक प्रतिष्ठित भारतीय लेखक वहां होंगे, उनका उपयोग किया जाये । राजदूत महोदय अतिशय सज्जन हैं; और उनका मुझ पर विशेष अनुग्रह है कि 'उपयोग' के नाम पर कहीं मेरे भाषण की व्यवस्था न करके, वे दूतावास में ही एक स्वागत-सम्मिलनी की व्यवस्था करते हैं जिसमें सभी दूतावासों के राजदूत और सांस्कृतिक अधिकारी आमंत्रित किये गये हैं और साथ ही सांस्कृतिक क्षेत्रों के कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी ।

अतिथि आ रहे हैं और भारतीय राजदूत मुझे अपने साथ लेकर परिचय कराने के लिए बढ़ते हैं । शिष्टाचार के नियम के अनुसार पहले वे उपस्थित राजदूतों में जो सबसे पुराने हैं, उनकी ओर बढ़ते हैं । ये हैं क्रम से मिस्र और फ्रांस के राजदूत ।

उन दोनों की ओर उन्मुख होकर भारतीय राजदूत अंग्रेजी में (कहना न होगा कि इस देश की भी भाषा अंग्रेजी नहीं है; लेकिन स्थानीय भाषा न राजदूत [illegible] हैं, न सांस्कृतिक विभाग के अधिकारी) कहते हैं–"मीट मिस्टर वात्स्यायन–द एमिनेंट इंडियन राइटर ।" (प्रसिद्ध भारतीय लेखक श्री वात्स्यायन से मिलिये ।)

(यह लेख 'कल्पना' से साभार उद्धृत है ।)

अतिथि अभिनंदन के लिए हाथ बढ़ाते हैं कि भारतीय राजदूत अतिरिक्त परिचय देने (और साथ-साथ अपना ज्ञान प्रदर्शित करने) के लिए जोड़दे ते हैं–"यू नो द कामसूत्र, आफ कोर्स।" (कामसूत्र का नाम तो आपने सुना ही होगा।)

अतिथि और राजदूत दोनों शिष्टाचार में मंजे हुए हैं; इसलिए उनके हाथ ज्यों-के-त्यों बढ़े रहते हैं और अभिनंदनार्थ बिछायी गयी मुस्कान ज्यों-की-त्यों बनी रहती है। लेकिन जब वे हाथ मिलाते हुए फ्रांसीसी में "आशांते!" (मुग्ध हुआ) कहकर फिर अंग्रेजी में कहते हैं–"ओ! हाउ इंटेरेस्टिंग!" तब उसमें निहित व्यंग्य किसी तरह छिप नहीं सकता।

फिर भी मुझे तो भारतीय राजदूत का पक्ष लेना ही है। इसलिए मैं हंसकर कहता हूं–"हिज एक्सेलेंसी आपसे मजाक करना चाहते हैं!" यद्यपि मैं जानता हूं कि यह मजाक केवल मेरे साथ हुआ है। और मैं यह भी जानता हूं कि वे भी यह जानते हैं।

स्वागत-सम्मिलिनी तो जैसे-तैसे समाप्त हुई। अनंतर रात को मुझे लगता है कि कम-से-कम सांस्कृतिक अधिकारी के सम्मुख अपना क्षोभ प्रकट करना अनुचित नहीं होगा। सारे आयोजन और उनके परिश्रम के लिए धन्यवाद देता हुआ मैं संकेत करता हूं कि राजदूत महोदय ने एक काम ऐसा कर दिया, जिससे मुझे बड़ा संकोच हुआ और बताता हूं कि परिचय देते समय उन्होंने क्या कहा।

पूरी घटना सुनकर उन्होंने बड़ी ज्ञान प्रकट करते हुए मुझसे पूछा–"तो क इसमें कुछ अनुचित हो गया है क्या? क्या ऐसा नहीं कहना चाहिये था?"

मैं अवाक्! तब से आज तक नहीं पाया हूं कि जवाब में क्या कहा जा सक है! राजदूत तो राजदूत हैं; संस्कृति साहित्य के बारे में वे कुछ जानें ही, कोई अनिवार्यता नहीं है। लेकिन जब सांस् तिक अधिकारी ऐसा प्रश्न पूछता है, उसे, और उसे नियुक्त करनेवाले मंत्रा को मन-ही-मन प्रणाम करने के सिवा क्या किया जा सकता है।

× × ×

यह तो हुई भाषा और संस्कृति की और न्यायतः यह भी कहना चाहिये यह केवल इनके ज्ञान की बात हुई, की नहीं। और प्रेम बिना ज्ञान के भी सकता है। और प्रेम नहीं तो श्रद्धा तो ही सकती है।

इसलिए देश-देशांतर में फैले हुए के अधिकृत प्रतिनिधियों की भारत-श्र की चर्चा कर लेना मेरे खयाल में अन नहीं होगा।

फिर यूरोप की एक राजधानी। भारतीय अध्यापक, जो मेरे आतिथेय मुझे अपने परिचित एक स्थानीय परि से मिलाने ले जाते हैं।

इस परिवार के सभी सदस्य भारत- हैं। पिता भारत में अपने देश के जनरल थे और अब अवकाश ग्रहण कर

हैं। माता के भारत-प्रेम का परिचय उनके घर में प्रवेश पाते ही मिल गया। घर-भर में काठियावाड़ी छपाई के परदे, दीवारों पर अजंता के भित्तिचित्रों की प्रतिकृतियां, कुछ राजस्थानी और पहाड़ी कलम के मौलिक चित्र, कुछ आधुनिक भारतीय चित्रकारों की कृतियां। पुत्र राष्ट्रभाषा परिषद् की उत्तमा परीक्षा में उत्तीर्ण और परिष्कृत हिन्दी बोलनेवाला।

परिवार के साथ बैठकर भारत से आयात की हुई दार्जिलिंगिया चाय पीते हुए उनकी बातें सुन रहा हूं। इसी बातचीत के सिलसिले में अवकाश प्राप्त कांसल जनरल की पत्नी भारतीय दूतावास का अपना एक अनुभव सुनाती हैं।

वे मुझे बता रही हैं कि पति के अवकाश ग्रहण करने के बाद दोनों की इच्छा थी कि भारत में ही बस जायें। ऐसा क्यों नहीं हो सका, इसी के स्पष्टीकरण के लिए दूतावास की बात उठती है।

अवकाश ग्रहण करके भारत में बस जाने के विचार से दंपति ने अपने संचित साधनों की पड़ताल की, तो उन्हें लगा कि कुछ समस्याएं उनके सामने आयेंगी। इसका जो निराकरण उनकी समझ में आया, वह कहां तक व्यावहारिक होगा, यह जानने के लिए वे दोनों स्वयं भारतीय राजदूत से मिले।

राजदूत के सामने अपना विचार रखकर उन्होंने कहा—"हम लोग चाहते हैं कि भारत में कहीं पहाड़ पर थोड़ी-सी जगह खरीदकर अपने शेष दिन वहीं बितायें। हम लोग पूंजी तो बहुत नहीं जुटा सके हैं; लेकिन हमारे पास मांटे कार्लो (दक्षिणी फ्रांसीसी सागर-तट पर सैलानियों का प्रिय केंद्र) में एक छोटा बंगला है, जिसे बेचकर हम भारत में मकान खरीदना चाहते हैं। आपसे यह पूछने आये हैं कि यहां से रुपया भारत ले जाने में कोई अड़चन तो नहीं होगी, और इसमें आप क्या हमारी सहायता कर सकेंगे।"

भारतीय राजदूत महोदय ने उनकी बात अंत तक सुनी। सुनने के बाद बड़े आत्मीयभाव से मुस्कराते हुए बोले—"आप लोगों की बुद्धि को क्या हो गया है? वन प्लाट इन मांटे कार्लो इज वर्थ द होल आफ इंडिया!" (मांटे कार्लो का एक मुरब्बा समूचे भारत से अधिक मूल्यवान है!)

कांसलानी वृत्तांत सुनाकर मेरे चेहरे की ओर देखती हैं। मैं क्या कहूं, सोच नहीं पा रहा हूं। लेकिन मेरे मन के भाव अवश्य ही मेरे चेहरे पर झलक रहे होंगे। मुझे असमंजस से बचाती हुई वे कहती हैं—"हमारे देश में भी ऐसे लोग हैं, जिन्हें अपने देश में कोई अच्छाई नहीं दिखती, जो हमेशा उसकी बुराई करते रहते हैं।... लेकिन हम उन्हें अपना राजदूत बनाकर नहीं भेजते!"

ठीक है। हर देश में ऐसे लोग होते हैं, जो अपने देश की बुराई-ही-बुराई करते हैं। कम-से-कम जितने देशों में मैं गया हूं, सभी में ऐसे लोग भी मुझे मिले ही हैं। लेकिन और कौन-से देश का राजदूत अपने पद पर बने रहते ऐसा करता है, मैं नहीं जानता।

★

नवनीत का मई अंक

आत्मकथा विशेषांक

अपनी कापी एजेंट के पास अभी सुरक्षित करा लें

प्रिय पाठक,

एक बात आपसे कहनी है। 'नवनीत' क आत्मकथा - विशेषांक अप्रैल में नहीं, मई ६४ प्रकाशित होगा।

आपने वर्षों तक प्रायः एक ही संभ्रांत सज्ज में 'नवनीत' को देखा है। अब 'नवनीत' के म अंक को नये रूप में देखिये।

इसमें आपके जाने-पहचाने कुछ लोग आपक ऐसी बात भी सुनायेंगे, जो उनकी अत्यंत गोपनी बात होगी।

आपने कभी स्वप्न में भी न सोचा होगा कि कभी राजाजी ने बंदूक हाथ में ली है। उनके गोली चलाने की बात इस अंक में पढ़िये।

स्वर्गीय जयकर के मुंह से सुनिये कि उन्होंने अंग्रेजी में प्रथम आने का पुरस्कार क्यों नहीं लिया था।

उड़ीसा के इंजीनियर राज्यपाल डा० ए० एन० खोसला ने भाखड़ा-योजना के बारे में एक बिलकु अछूती बात लिखी है। उसे भी 'नवनीत' के म अंक में पढ़ना न भूलिये।

दादाभाई नौरोजी के दौहित्र दारा दादीना का आइस्टाइन से भेंट करमे का प्रसंग भी सुनिये।

दक्षिण-ध्रुव की भूमि का स्पर्श करनेवाले प्रथम भारतीय की कथा दिल्ली के डाक्टर गिरिराज सिंह से सुनिये।

शिकार-कथाओं के जाने-मान लेखक श्री श्रीनिधि सिद्धांतालंकार के वे अनुभब भी पढ़िये, जिसमें उन्होंने मशालों की छांह में जीवन-रक्षा करने का संस्मरण लिखा है।

मई अंक में ही आप जान गंथर की आंसू-भीगी कलम से लिखी मार्मिक पुस्तक 'डेथ बी नाट प्राउड' का सरस हिन्दी रूपांतर भी पढ़िये।

अमरीका के एक लेखक ने पेंकिंग जाकर वहां के जो नये अनुभव लिखे हैं, उनसे चीन-संबंधी बहुत-सी गलतफहमियां दूर हो सकती हैं।

आत्मकथा अंक में ये लेख पढ़ना न भूलिये।

मई अंक के बाद भी हम 'नवनीत' को और भी अधिक दिलचस्प एवं ज्ञानवर्धक बनाने का यत्न कर रहे हैं। हमारे पाठकों को 'नवनीत' का नया रूप देखकर अवश्य प्रसन्नता होगी।

आप अपनी कापी एजेंट क पास अभी से सुरक्षित करा लीजिये।

आपका,
संपादक

'मेरा कसूर' शीर्षक क अंतर्गत पढ़िये — आस्कर वाइल्ड और आंद्रे मोरवा की स्वीकारोक्तियां

क्या आप इस दुर्घटना-शृंखला की व्याख्या
अंधविश्वास की मदद के बिना कर सकेंगे ?

दुर्भाग्य उस कार पर सवार था

वीरेश मुदलियार

वह छः सवारियों के बैठने लायक टूरिंग कार थी। रंग उसका लाल था—भड़कीला चमकीला लाल। सीटें उसकी खूब नरम और आरामदेह थीं। गरज यह कि वे सभी सुविधाएं उस कार में थीं, जिनकी उम्मीद प्रथम विश्वयुद्ध से पहले के माडलों में की जा सकती थी।

कार बिलकुल नयी थी। अभी पूरे दो सौ मील भी नहीं चल पायी थी। फिर भी उस दिन—यानी २८ जून १९१४ को उसे विशेष सावधानी से धोया और चमकाया गया था। क्योंकि उस दिन दो विशिष्ट व्यक्ति उसमें बैठकर बोस्निया प्रांत की राजधानी सेराजेवो की सैर करनेवाले थे।

ये दोनों विशिष्ट व्यक्ति—आस्ट्रियन साम्राज्य के युवराज आर्च डयूक फ्रांज फर्डिनेंड और उनकी पत्नी डचेस होहेनबुर्ग पहले से निर्धारित समय पर बोस्निया के गवर्नर के महल से निकलकर कार में बैठ गये। और कार उन्हें लेकर पहले से निर्धारित लक्ष्य की ओर चल पड़ी। लेकिन यह लक्ष्य बोस्निया के अधिकारियों ने नहीं, बल्कि उनसे बहुत ही ऊंची किसी स
निर्धारित किया था।

अभी कार बहुत दूर नहीं गयी थी—
जेवो जैसे छोटे शहर में कार की दू
लंबी दूरियां थी ही कहां!—इतने में ह
सनसनाता हुआ एक बम आकर का
पार्श्व से टकराया, उछला और बीच
पर गिरकर धमाके के साथ फट पड़ा।

कार के साथ चलते हुए चार घुड़
अंगरक्षक घायल हुए। जुलूस कुछ
रुका। युवराज ने जख्मी सिपाहियों
मरहम-पट्टी की समुचित व्यवस्था करने
आदेश दिया और कार को आगे बढ़वा
किंतु इसी बीच न जाने क्या हुआ।
ड्राइवर सेराजेवो के राजपथों से और
दिन के जुलूस के कार्यक्रम से अच्छी
परिचित था। फिर भी उसने कार को
छोटी गली में मोड़ दिया, जिसका
सिरा बंद था।

तभी किसी मकान के दरवाजे
निकलकर एक युवक लपका। उसके ह
पिस्तौल थी और मुंह से अपशब्दों की

बरस रही थी । ल[illegible] के पायदान पर चढ़ गया और लगा युवराज और युवरानी पर पाइंट-ब्लैंक रेंज से गोली-पर-गोली दागने । जब तक अंगरक्षक उसे घसीटकर काबू में कर सके, तब तक शाही दंपति के प्राण पखेरू उड़ चुके थे ।

इस घटना ने प्रथम विश्वयुद्ध की वह आग भड़का दी, जो पूरे दो करोड़ इन्सानों की बलि लेकर ही शांत हुई । पूछा जा सकता है कि यह तो एक राजनीतिक हत्या थी, इसमें उस बेचारी कार का क्या कसूर ? किंतु आगे के वाकयात पढ़ने पर इस सवाल का जवाब आपको स्वयं मिल जायेगा ।

विश्वयुद्ध छिड़ने के छः-सात दिन के भीतर पांचवीं आस्ट्रियन सेना के नामी सेनापति जनरल पोत्योरेक ने सेराजेवो के गवर्नर के महल में अड्डा जमाया । महल के साथ गवर्नर की गराज भी जनरल के कब्जे में आयी और साथ ही वह लाल कार भी । ठीक इक्कीस दिन बाद वालीवो की लड़ाई में यह विख्यात जनरल हार गया । उसे पदच्युत कर वापस वियेना बुला लिया गया, जहां वह पागल होकर अंत में एक भिखारी-गृह में मरा ।

जनरल पोत्योरेक की सेना में एक कप्तान था। उसे कार पसंद आ गयी और वह उसका उपयोग करने लगा । किंतु अभी नौ ही दिन हुए थे कि एक रोज तेजी से दौड़ती हुई कार ने राह चलते दो किसानों को कुचल डाला और खुद एक दरख्त से टकराकर उलट गयी । सैनिकों ने कप्तान के मुर्दे को कार के नीचे से निकाला और कार को गवर्नर की गराज में पहुंचा दिया ।

युद्ध की समाप्ति पर युगोस्लाविया का नया गवर्नर इस कार का मालिक बना । उसने इसकी मरम्मत करायी । कारीगरों ने ऐसी खूबी के साथ यह काम किया कि कार एकदम नयी दिखाई देने लगी । चार महीनों में कार ने गवर्नर को चार दुर्घटनाओं में फंसाया, जिनमें से आखिरी में उस बेचारे का दायां हाथ कट गया ।

अब तक लाल कार ने काफी बदनामी हासिल कर ली थी और गवर्नर को उम्मीद नहीं थी कि कोई उसे खरीदना चाहेगा । सो उसे तोड़ डालने का हुक्म दे दिया गया। लेकिन कार को तो अभी बहुतों की जिंदगी में उत्पात मचाना था ।

डा० सूकिस नाम के एक चिकित्सक ने कौड़ियों के दाम कार को खरीद लिया । लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी उसे कोई शोफर नहीं मिला; हालांकि वह मुंहमांगा वेतन देने को तैयार था । आखिरकार वह स्वयं ही कार को चलाने लगा ।

छः महीने तक सब ठीक चलता रहा । डाक्टर सबसे कहता-फिरता—"अजी, लोग बड़े वहमी हैं; अकारण ही बेचारी कार को बदनाम करते हैं ।" लेकिन एक दिन सवेरे देखा गया कि बेचारी कार सड़क से जरा हटकर औंधी पड़ी हुई है और पास ही बेजान डा० सूकिस लेटा हुआ है । स्पष्ट था कि रात को दौड़ती हुई कार उलटकर डाक्टर पर गिरी और उसका खात्मा करके

थोड़ी दूरी पर ठहर गयी।

कार को खास नुक्सान नहीं पहुंचा था। एक मालदार जौहरी ने उसे डाक्टर की पत्नी से खरीद लिया। लगभग एक साल तक उसने बड़े आनंद से उसका उपयोग किया......फिर एक दिन खुदकुशी कर ली।

कार का अगला मालिक भी एक डाक्टर था, जिसकी खूब जोरदार प्रैक्टिस चलती थी। लेकिन यह कार क्या आयी कि रोगियों का आना घट चला और घटते-घटते लगभग रुक ही गया। डाक्टर घबरा गया और मित्रों की सलाह से उसने वह कार स्विट्जरलैंड के एक रेस-ड्राइवर के गले मढ़ दी।

ड्राइवर ने डेलामाइट की रेस में कार को दौड़ाया और एक दीवार से टकराकर अपनी जान गंवा दी।

आखिरकार लाल कार फिर सेराजेवो लौट आयी और एक धनी किसान की मिल्कियत में शामिल हो गयी। महीनों तक उसने किसान की अच्छी तरह सेवा की। फिर एक दिन दौड़ते-दौड़ते वह न जाने क्यों सड़क पर रुक गयी और टस-से-मस न हुई। घर काफी दूर था। किसान ने उसी ओर जाते हुए एक गाड़ीवान से प्रार्थना की कि वह कार को गाड़ी के साथ घसीटकर उसके घर पहुंचा दे।

गाड़ीवान राजी हो गया और रस्सी से कार को गाड़ी के साथ बांधकर घसीटने लगा। लेकिन अभी उसने दस गज भी तय नहीं किये थे कि कार का इंजन अचानक स्टार्ट हो गया—ठीक उसी तरह जैसे कि थोड़ी देर पहले अचानक बंद हो गया घोड़ों और गाड़ी को गिराकर, रस्सी कर कार सड़क पर दौड़ चली और एक पर उलट गयी। लेकिन इसके पहले किसान का काम तमाम कर चुकी थी।

इस बार कार को भी काफी नु पहुंचा। परंतु इस टूटी-फूटी कार का खरीदार निकल ही आया। वह था हर्शफील्ड, जिसकी अपनी मोटर- चलती थी। कार की मरम्मत कराकर उस पर नीला रंग पुतवा दिया, ताकि उसके इतिहास को भूल जायें। लेकिन की याददाश्त इतनी कच्ची नहीं होती- कर बुरी बातों के संबंध में।

महीनों तक ग्राहकों की प्रतीक्षा हर्शफील्ड निराश हो गया और स्वयं कार को चलाने लगा। एक दिन छः के साथ किसी की शादी में शरीक होने लिए जाते हुए उसकी कार सामने से हुई कार से भिड़ गयी। हर्शफील्ड और मित्र मारे गये।

अब तक इस कार की महिमा दूर- तक फैल चुकी थी। सरकार ने अपने से मरम्मत कराकर उसे आस्ट्रिया के म्यूजियम को दे दिया, जहां वह विश्वयुद्ध तक रही। फिर एक दिन ने वियेना पर भारी बमबारी की, म्यूजियम के साथ वह कार भी नष्ट हो गयी

प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म देनेवाली कार की अंत्येष्टि द्वितीय विश्वयुद्ध यह सर्वथा उचित ही तो था।

★

हालैंड की आधुनिक कविता

गंगाप्रसाद विमल

वर्तमान यूरोप में आधुनिक कलाओं की जितनी जागृत और उन्नत अभिरुचि हालैंड की है, उतनी और किसी देश की नहीं। डच कला और डच साहित्य में रहस्यवाद, अतियथार्थवाद, प्रयोगवाद, प्रतीकवाद, प्रभाववाद और सूक्ष्मबिंबवाद परंपरा के विकासगत रूप हैं तथा उनसे कला को नये-नये रूप (फार्म) और नयी-नयी विधाएं मिली हैं। हैंस कोनिंग्सवर्गर का कथन है कि इतने विकसित कला-साहित्य रूपों के साथ एक ही दुर्घटना है और वह दुर्घटना यह है कि डच भाषा बहुत कम प्रसारित और लोकप्रिय है तथा उसके पाठक लगभग छः करोड़ से कुछ ही अधिक हैं।

हालैंड की कविता बहुत नयी है। प्रारंभिक अवस्था में बेशक वह अंग्रेजी से प्रभावित रही है; किंतु संक्रांतिकाल के पश्चात्, जब पुरानी पीढ़ी द्वारा 'इन डेंजर' जैसी रचनाओं का स्वागत किया जाने लगा, तब 'पोयट्स आफ टुमारो' से नयी पीढ़ी का स्वर भी गूंजा। हालैंड की कविता सभी पीढ़ियों में अपने एक निजी स्वभाव के कारण 'टिपिकल' रही है, और यह 'टाइप'-रूप इस देश के अपने रंग, वस्तु-संयोजना तथा संगति-बोध (सिमिट्री) का प्रतिनिधि रहा है।

कविता में 'अभिरुचि' का प्रश्न कहीं-न-कहीं मूल रूप में रहा है। यही कारण है कि आज भी हालैंड की एकदम ताजी रचना में वहां के एक निजी स्वभाव की छाप रहती है। इसे हम देशीय-व्यक्तित्व का नाम दे सकते हैं। संक्रांतिकाल की श्रेष्ठ रचनाओं में मार्टिनस निजहोफ की 'ए वाटर' रचना सर्वप्रसिद्ध है और उसकी एकान्विति तथा प्रभाव आगे की रचनाओं के लिए अनुकरण की वस्तु बन गये हैं। कविता में संगीत के तत्व का अभाव नहीं कहा जा सकता; क्योंकि हालैंडवासी लगातार संघर्ष-संगीत सुना करते हैं। मार्टिनस निजहोफ, जिसने प्रतीकात्मक संघर्ष की रचनाएं की हैं, पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच का वह रचनाकार है, जिसने परंपरा की वस्तु-संयोजना का भी कुछ आश्रय लिया और रूढ़ि को भी नकारा है। साथ ही उसने नयी पीढ़ी को भावी संकेत भी दिये हैं। आद्रियां रोलैंड होल्स्ट पुरानी पीढ़ी का सशक्त रचनाकार है। वह एक पीढ़ी विशेष का प्रतिनिधि है, इसलिए

कि 'कथन की यथार्थता को वह लय और संगीत देता है।

बीच की पीढ़ी के अंतिम छोर पर एकदम नये कवि आते हैं, जो अमरीकी कविता को रुचि से तो देखते हैं, लेकिन प्रभाव-ग्रहण करने की बात से इन्कार कर देते हैं। उनकी कविताएं संभवतः विश्व-कविता को एक नया मोड़ देने में सक्षम हैं। इन कविताओं में सामयिक वस्तु-चयन का रूप नहीं है। ये दुरूह होते हुए भी 'एक ही मंच के कई कवियों' में रचनागत समता का प्रश्न उठाती हैं। हालैंड का जनमानस वहां की कला, साहित्य तथा अन्य कलाओं में पूरे रूप में व्यक्त हुआ है। उसमें जागृत अभिरुचि झलकती है। एकदम नये कवियों में ग्राफ्ट और चूल्टे आदि ऐसे नाम हैं, जिनकी रचनाओं में अनुभूतिगत तीव्रता, ताजापन, अभिनव बिंबांकन तथा अर्थ-लय की गरिमा हैं। निश्चय ही हालैंड की कविता विश्व की नयी कविता के लिए द्वार बना रही है।

तीन कविताएं—

(१) कब्र

गेरिट आख्तेर वर्ट

[जन्म १९०८ प्रसिद्ध कवयित्री, अनेक काव्यग्रंथों की रचयिता।]

तुम मुझे इन पत्थरों में प्रवेश दे दो
उसी प्रिय भाव से
जैसे तुम अपने समय दोगे।
मृत्यु ने अधिक कुछ नहीं किया
केवल तुम्हें एक और परिवेश में रख दिया
इस जगह पर तुम्हारी पहचान के
कब्र-स्थल, अंधी रेत, फूल:
पवित्रित
ओ! पवित्रित ......

(२) इसी बीच

एलेन वार्मंड

[जन्म १९३०। नयी पीढ़ी की
कवयित्री छोटी कविताओं के लिए
निक डच कविता में महत्वपूर्ण स्थान
हैं। इनकी कविताओं के धारणागत
कविता में पूर्ण अर्थ की परिव्याप्ति करते

वक्त दौड़ गया
धूमिल करता हुआ
और भी तेजी से
और हमें पीछे छोड़ गया।
हम किसके लिए प्रतीक्षा करें
हम कैसे प्रार्थित हों
पीड़ा और भूख और प्यास ......
पीड़ित कोशिशों में
एक-दूसरे को सांत्वना देते हुए।

(३) रजत वार्ता

रेम्को कांपर्ट

[जन्म १९२९। पिछले दशक का
चर्चित कवि। अब तक कई काव्य-संग्रह
कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।]

पार्कों में मीठी बातें (रजत वार्ता
सूर्य एक सुनहरे लड़के की तरह
शरीर में तनता है ......
लड़कियों के, जो असंतुलन की
पर अपने बोधक्रम तोड़ती हैं
एक गोलाकार छाते की तरह।

★

पूर्णता पाने का पागलपन

सर्वथा पूर्ण बनने की सनक क्या-क्या गुल खिलाती है, इसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ।

हैरोल्ड केनेथ फिंक

अपने नित्यप्रति के काम को सही और पूर्ण रूप से करने की लगन यदि किसी व्यक्ति में है, तो वह प्रशंसीय है । निःसंदेह ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता है । परंतु कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जो प्रत्येक काम को इतनी अधिक पूर्णता से करने का प्रयत्न करते हैं कि सफल होना तो एक तरफ, उलटे दुःखी हो जाते हैं । ऐसे व्यक्ति एक तरह से मानसिक रोगी होते हैं । वे किसी भी काम में किसी भी तरह की खामी सहन नहीं कर सकते ; इस हद तक होता है उनका पूर्णता प्राप्त करने का पागलपन ।

प्रत्येक काम को अत्यधिक पूर्णता से करनेवाले ऐसे व्यक्तियों में अपराध की भावना निहित होती है, जिसकी चिंता उन्हें हमेशा सताती रहती है और उससे बचने के लिए वे किसी भी काम में कोई खामी देखना नहीं चाहते । वे प्रत्येक काम को अत्यधिक पूर्णता से इसलिए नहीं करते कि उनके सामने कोई ऊंचा आदर्श होता है; बल्कि इसलिए करते हैं कि वे अपने मन में चुभनेवाली अपराध की भावना से मुक्ति पाना चाहते हैं । किसी व्यक्ति में पूर्णता पाने की लगन का होना बहुत अच्छा गुण है; परंतु पूर्णता पाने की यह लगन उस समय मानसिक रोग बन जाती है, जब वह व्यक्ति हर छोटी-से-छोटी बात और हर छोटे-से-छोटा काम भी इस प्रकार करना चाहता है कि उसमें कोई खामी नहीं देखना चाहता ।

उदाहरणार्थ, किसी भी सफाईपसंद व्यक्ति का अपने हाथों को अच्छी तरह धोना स्वाभाविक है; पर अगर कोई व्यक्ति बार-बार अपने हाथों को धोता है और उसे हमेशा यही डर लगा रहता है कि हाथों में कहीं मैल न लगा रह गया हो, तो उस व्यक्ति के मन में अवश्य ही किसी अपराध की भावना छिपी हुई है । शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' में लेडी मैकबेथ, राजा की हत्या करने के पश्चात् बार-बार अपने हाथों को मलती हुई उनसे काल्पनिक खून को साफ करना चाहती है और कहती है कि उन पर का खून कभी धोया नहीं जा सकेगा । वास्तव में लेडी मैकबेथ की यह क्रिया अपराध की भावना से छुटकारा पाने की एक प्रतीकात्मक क्रिया है ।

मन में छिपी हुई अपराध की भावना को जब व्यक्ति दबाने का प्रयत्न करता है, तो वह किसी-न-किसी शक्ल में प्रकट होने से नहीं रहती । उदाहरणार्थ, जिन स्त्री-पुरुषों का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं है और

जो मन-ही-मन एक दूसरे से घृणा करते हैं उनके मन में विचित्र प्रकार के विचार उठा करते हैं। वे कल्पना में एक-दूसरे की मौत को देखते हैं या अपने अवचेतन मन में सोचते हैं कि दूसरे की मौत हो जाये। इस प्रकार उनके मन में अपराध की भावना जन्म लेती है और उन्हें हर समय कचोटती रहती है। वे अपने को अपराधी समझने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक सतर्क होकर चाकू-छुरियों को छिपाकर रखेंगे या रात के समय अलमारी में बंद करके उसे ताला लगा देंगे, ताकि वे कहीं सचमुच ही अपने साथी को मारने के लिए उनका उपयोग न कर बैठें। इस प्रकार एक साधारण औसत व्यक्ति हत्या करने से बच जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके द्वारा हुए कुछ ऐसे अपराध, गलतियां या अनैतिक कार्य होते हैं कि वे हमेशा उसकी रूह में चुभते रहते हैं और उसे चैन नहीं लेते देते। इस बेचैनी की आखिर प्रतिक्रिया होती है। उससे छुटकारा पाने के लिए वह व्यक्ति कोई-न-कोई असाधारण कार्य करने लगता है। वह या तो जरूरत से ज्यादा सिगरेटें पीने लगता है, या मुंह में उंगली या पेंसिल डालकर चबाता रहता है, या फिर किसी नशीली चीज का सेवन करने लगता है। वास्तव में इस प्रकार वह अपने को भुलाने का प्रयत्न करता है।

वह व्यक्ति, जो रात के समय कई बार रसोई में गैस से जलनेवाले स्टोव के पास जाता है कि कहीं उसमें कोई नुक्स तो नहीं हो गया, एक हद तक मानसिक रोगी है। ऐसे व्यक्ति में अपने परिवार को भ्रष्ट कर देने की भावना छिपी हुई हो सकती है, क्योंकि उसका परिवार उसकी स्वतंत्रता में बाधा डाल रहा है। हो सकता है, उस व्यक्ति का किसी से प्यार का मामला हो और उसका परिवार उसके रास्ते में रोड़ा अटका रहा हो। पर क्योंकि वह खुले तौर पर अपने परिवार का विरोध नहीं कर सकता, इसलिए उसके मन की भावना कोई-न-कोई प्रतीकात्मक क्रिया का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार के एक व्यक्ति को मैं जानता हूं, जो रात के समय उठकर स्टोव को देखा करता था कि कहीं वह खुला न रह गया हो, जिससे कि उसकी मां की मृत्यु हो जाये। इस व्यक्ति के, अपनी मां के साथ, बचपन में अच्छे संबंध नहीं थे और वह उसे मार डालना चाहता था। सो इस प्रकार की प्रतीकात्मक क्रियाओं से व्यक्ति वे काम करने से बच जाता है, जो वास्तव में वह करना चाहता है, पर जिन्हें उसकी आत्मा करने नहीं देती। ऐसी क्रियाएं व्यक्ति की गलतियों को सुधारने या अपराध की भावनाओं को शांत करने में सहायता करती हैं।

कभी यह भी होता है कि व्यक्ति कोई काम करने के बजाय उसके बारे में मन-ही-मन जरूरत से ज्यादा सोचने लगता है। अब जैसे एक स्त्री किसी गीत की पंक्तियां बार-बार गुनगुनाती है, जो किसी विशेष के बारे में लिखा गया है। वास्तव में

स्त्री अपने पति की मौत की इच्छुक है, जिसके साथ कि वह सुखद जीवन नहीं बिता रही है। अपने पति के बारे में उसके मन में जो दुर्भावनाएं हैं, उसे सताती हैं। उस गीत की पंक्ति गुनगुनाकर वह प्रतीकात्मक रूप में एक तरह से खुद को सजा दे रही है।

जिन व्यक्तियों के सिर पर हर चीज में पूर्णता पाने की सनक सवार है, वे इस सनक की बदौलत ही अपने डांवांडोल जीवन को संतुलित भी रख पाते हैं। तभी तो वे अपने बूटों को बड़ी सफाई से घर में, उनके असली स्थान पर रखते हैं, उनके बिस्तर की चादर में कोई सिलवट नहीं होती, उनका तौलिया गुसलखाने में तह किया हुआ रखा होता है ......उनकी किसी चीज या किसी काम में कोई खामी नहीं दिखाई देती। वे हर काम अत्यधिक सतर्कता से करते हैं। ऐसे व्यक्ति को कोई भी परिवर्तन पसंद नहीं आता; क्योंकि किसी भी प्रकार के परिवर्तन से दिमाग में खलबली पैदा होती है; चिंता जन्म लेती है और व्यक्ति को उस परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को ढालना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति क्योंकि मानसिक तौर पर असंतुलित होते हैं, इसलिए वे अपने बाह्य जीवन में संतुलन रखने का प्रयत्न करते हैं।

देखा जाये तो पूर्णता पाने की सनक के पीछे ठुकराये जाने का डर छिपा हुआ है। ऐसा व्यक्ति अपने मन के अपराध से परिचित होता है और वह हर कार्य को पूर्णता से करने के बहाने उसे छिपाना चाहता है। वह सोचता है कि अगर बाहर से उसमें कोई खामी नजर नहीं आयेगी, तो देखनेवाले की उसके अंदर की कमजोरी पर नजर नहीं जायेगी। ऐसा व्यक्ति सदा चाहता है कि वह फिर से एक नया जीवन जिये, जिसमें कोई गलती या अपराध न हो और जो हर तरह से पूर्ण हो। या ऐसा व्यक्ति आत्महत्या करना चाहता है, ताकि अपने अंतर की चुभन से छुटकारा पा सके।

जटिल व्यक्तित्व

चित्र : रवींद्रनाथ ठाकुर

ऐसे व्यक्ति का स्वभाव हमेशा शक्की होता है। वह किसी चीज पर विश्वास नहीं कर सकता। न ही किसी व्यक्ति पर उसे विश्वास होता है। उसे हमेशा यही डर रहता है कि लोग उसके विरुद्ध हैं। उसे स्वयं पर भी विश्वास नहीं होता। वह सोचता है कि वह किसी काम का नहीं है और वह कुछ नहीं कर सकता है। वह स्वयं को निरर्थक समझता है। और अगर कुछ करता भी है, तो उसे गलत समझता है। इसलिए वह कोई भी नया काम नहीं करता है और जो काम करता है, हमेशा एक ही तरह से करता है, वह उसमें किसी किस्म का परिवर्तन नहीं चाहता। अधिकांशत: ऐसे व्यक्ति में अपराध-भावना का संबंध लैंगिक समस्याओं से होता है।

क्योंकि ऐसा व्यक्ति अपने जीवन को

निरर्थक समझता है और उसे अपने में खोखलापन नजर आता है, इसलिए वह उसे भरने का प्रयत्न करता है । वह अपने दांतों को बहुत ज्यादा साफ करेगा, अपने बूटों को चमकायेगा और इसी प्रकार के अन्य छोटे-छोटे नगण्य-से कामों को बेहद महत्व देगा । इस डर से कि कहीं वह बुरी बातें न सोचे या कोई बुरा काम न कर बैठे, वह समय काटने के लिए कुछ-न-कुछ करता रहेगा, ताकि उसे बुरा काम करने या बुरी बात सोचने का मौका ही न मिले । समय काटने के लिए ही वह अपने लिबास, खाने-पीने और अन्य छोटे-छोटे कामों पर बेहद ध्यान देगा । इन कामों में वह घंटों बितायेगा । ऐसा व्यक्ति किसी दफ्तर में काम करे, तो क्लर्क तो बहुत अच्छा बन सकता है, पर मैनेजर अच्छा नहीं बन सकता ।

ऐसा व्यक्ति बुनियादी तौर पर असामाजिक होता है । उसका व्यवहार समाज और संस्कृति के विरुद्ध होता है । बचपन में ऐसा व्यक्ति अपने माता-पिता के प्रति विरोध प्रदर्शित करने के लिए कई दिन तक पाखाने नहीं जायेगा या अपने कपड़ों को धूल से लथपथ कर लेगा, क्योंकि वह माता-पिता के अधीन नहीं रहना चाहता । वास्तव में बच्चा उतना अच्छा नहीं बन पाता, जितना उसके माता-पिता उसे बनाना चाहते हैं । इसके परिणामस्वरूप वह बच्चा समझता है कि वह बुरा है । इससे उसके मन में हीनभाव पैदा होता है । जो माता-पिता अपने बच्चों को जरूरत से ज्यादा [illegible] जोर देते हैं, उनके के मन में कई प्रकार की उलझनें जन्म लेती हैं, जो कि बाद में मानसिक रोगों का रूप धारण कर लेती हैं ।

कुछ बच्चों को अपने माता-पिता से अनगिनत सवाल पूछने की आदत पड़ जाती है, जिनका कोई सिर-पैर नहीं होता । यह सवाल जानकारी प्राप्त करने के लिए नहीं पूछते, बल्कि माता-पिता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पूछते हैं । ऐसे सवाल पूछकर वे जानना चाहते हैं कि उनके माता-पिता उन्हें प्यार करते हैं या नहीं, उन्हें उनकी जरूरत है या नहीं । वे यह सब इसलिए भी करते हैं कि उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है।

कुछ व्यक्ति अंधविश्वास के जरूरत से ज्यादा बुरी तरह शिकार होते हैं। बिल्ली रास्ता काट जाये, तो वे अपशकुन समझते हैं । तेरह नंबर के कमरे में रहने से सकुचाते हैं । घर से निकलने पर कोई छींक दे, तो बुरा समझते हैं । वास्तव में ऐसे व्यक्तियों के मन में एक डर होता है कि दूसरे लोग उनमें किसी अपराध को देख रहे हैं और उन्हें सजा देना चाहते हैं।

इस प्रकार जिस व्यक्ति में भी हर छोटी-छोटी बात में पूर्णता पाने की सनक है और जो अपने किसी काम में कोई खामी देखना पसंद नहीं करता, ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से संतुलित व्यक्ति नहीं है। उसे मनोवैज्ञानिक डाक्टर की सलाह अवश्य लेनी चाहिये ।

★

आज के विद्यार्थियों की विकट समस्याएं

विद्यार्थी चाहे इस देश के हों, चाहे विदेश के; वे आज कितनी ही समस्याओं के शिकार हैं। वे समस्याएं केवल उनकी अपनी ही उपज नहीं हैं–कुछ स्वजनित हैं, कुछ मां-बाप की देन हैं और कुछ उनके विद्यामंदिरों की। यहां इसी दृष्टि से अमरीकी विद्यार्थियों का वर्णन किया गया है।

मार्टन एम० हंट और रेना कारमैन

सामान्यत: विद्याध्ययन-काल जीवन का स्वर्ण-काल कहलाता है और नि:संदेह अनेक विद्यार्थियों के लिए यह कथन एकदम सच है। मगर आज ऐसे विद्यार्थियों की भी एक बड़ी संख्या है, जो अपने इसी स्वर्ण-काल में दु:खी और निराश रहते हैं–यहां तक कि उनके आत्मघात करने की खबरें भी आये दिन सामने आती रहती हैं।

अमरीका का एक प्रसिद्ध कालेज। रात का समय। एक नवयुवक शराब के नशे में चूर शयन-भवन की चौथी मंजिल की मुंडेर पर लड़खड़ाता हुआ चल रहा है और नीचे पुलिस, डाक्टर तथा उसके साथी सांस रोककर उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पश्चिम के एक बड़े विश्वविद्यालय का दृश्य। रात के दो बजे एक युवा लड़की कालेज के उपासना-गृह से चुपचाप निकलती है। बाहर कार के भीतर बैठा हुआ एक अत्यधिकशंकित और भयभीत नवयुवक उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। क्योंकि उसे उस लड़की को यहां से लगभग १०० मील दूर एक स्थान पर गर्भपात करानेवाले डाक्टर के पास चुपचाप ले जाना है।

एक उदाहरण और। फिलेडेल्फिया के बाहर रेल की पटरियों का विस्तार। सुबह का समय। एक तेजी से आती हुई रेलगाड़ी जोर की आवाज करती हुई रुक जाती है। एक १८-वर्षीया छात्रा का सिर रेल की पटरियों पर लटका रह जाता है।

मानसिक असंतुलन की उपर्युक्त घटनाएं आज लगभग सभी देशों के विद्यार्थियों में पायी जाती हैं। पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों में इस प्रकार की घटनाओं की संख्या अधिक है। इसीलिए वहां की शिक्षण-संस्थाओं में इसके उपचार की भी व्यवस्था होती है। पेनसिलवैनिया विश्वविद्यालय में लगभग २० प्रतिशत विद्यार्थी अपने विद्यार्थी-काल में मानसिक स्वास्थ्य का उपचार कराते हैं। हार्वर्ड में यह संख्या ५ प्रतिशत अधिक है। लेकिन इससे इन विश्वविद्यालयों के सम्मान में कोई अंतर नहीं पड़ता। अभी हाल में विभिन्न कालेजों में काम कर रहे ६०० मानसिक विशेषज्ञों ने यह बताया है कि लगभग १५ प्रति-

शत विद्यार्थी मानसिक विशेषज्ञों की सलाह लेते हैं, जब कि ३० प्रतिशत विद्यार्थियों को इसकी जरूरत महसूस होती हैं।

आज के पश्चिमी देशों के विद्यार्थी-समाज में मानसिक विक्षोभ और असंतुलन के विविध चित्र देखने को मिलते हैं। कहीं डाक्टरों को विद्यार्थियों के सिरदर्द, दु:स्वप्न तथा परीक्षा से पूर्व तनाव की शिकायत मिलती हैं, तो कहीं दंगे-फसाद, जुएबाजी तथा कुंठित यौन-संबंधी समाचार। इतना ही नहीं, कहीं-कहीं मानसिक ग्लानि और घोर निराशा के क्षणों में डूबे हुए इन विद्यार्थियों की जेबों में विष की शीशियां भी प्राप्त होती हैं और कहीं ये आत्महत्या के लिए १०-वीं मंजिल की खिड़की पर एकांत की ताक में भी दिखाई दे जाते हैं।

विद्यार्थी-समाज की यह दयनीय अवस्था सभी देशों में दिन-प्रतिदिन उग्र समस्या का रूप धारण करती जा रही हैं। येल में कुछ समय पूर्व विद्यार्थी जीवन को स्वर्गीय सुख का पर्याय माना जाता था। लेकिन आज येल के विद्यार्थियों में आत्महत्या दुर्घटना के अतिरिक्त, मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण बन गयी है।

विद्यार्थी-वर्ग से समाज और राष्ट्र को बड़ी आशाएं होती हैं। अतः इस वर्ग की ऐसी अवस्था निश्चय ही चिंत्य है। और जब उन कारणों पर विचार किया जाता है, जिनसे विद्यार्थियों में मानसिक विघटन के ये चित्र देखने को मिलते हैं, तो लगता है कि इस दु:खद स्थिति के लिए मात्र नहीं, कई कारण उत्तरदायी हैं।

कालेज-जीवन के विषय में अमरीकी लोगों की भावनाएं और भी विशिष्ट हैं। वहां सामान्यत: कालेज-जीवन का अर्थ कालेज की योग्य डिग्री को प्राप्त करने के प्रयास-काल से लिया जाता है। इस प्रयास की सफलता के लिए इस बात की ओर स्वत: ही हो जाती है कि एक विशिष्ट प्रकार की डिग्री के लिए विशिष्ट प्रकार के कालेज में प्रवेश लिया जाये। बस, यहीं से वास्तविक समस्या आरंभ हो जाती है।

द्वितीय महायुद्ध के बाद से हमारे समाज में कालेज की शिक्षा के लिए एक महान आकर्षण आरंभ हो गया हैं। बीसवीं सदी की तीसरी दशाब्दी तक बहुत कम युवक विश्वविद्यालय की शिक्षा लेते थे, लेकिन आज इस शिक्षा के लिए एक होड़-सी लगी हुई है और प्रायः प्रत्येक युवक कालेज प्रवेश की परीक्षा देता हैं। इन युवकों के मन में कालेज-जीवन के लिए इतना बड़ा आकर्षण होता हैं कि वे प्रवेश पाने के दिन से पहले न तो भली प्रकार सो ही सकते हैं और न उन्हें तब तक मानसिक शांति ही मिलती है, जब तक कि प्रवेश न मिल जाये। उस समय तो ऐसा लगता है, मानो कालेज जीवन ही इनके जीवन का महान लक्ष्य है। लेकिन प्रवेश पा लेने के पश्चात् यंत्रणाओं का अंत नहीं हो जाता। वहां अध्ययन-मनन कर सफलतापूर्वक उपाधि प्राप्त कर लेने के बाद भी कोई ठोस विकल्प उनके सामने

नहीं होता । वस्तुतः [illegible] वर्ग-आरंभ से अंत तक स्वनिर्मित संघर्षों, द्वंद्वों और प्रतियोगिताओं के मध्य कुचला जा रहा है । इसीलिए एक क्षण के लिए भी उसे मानसिक स्वास्थ्य और शांति नसीब नहीं होती ।

एक परेशान विद्यार्थी
चित्र : रोजर फर्स

उन विद्यार्थियों की मुसीबत और भी बढ़ जाती है, जिनके अध्ययन की दिशा उनके माता-पिता स्वयं निर्धारित करते हैं । कभी-कभी अभिभावक यह चाहते हैं कि उनकी संतान किसी विशिष्ट विद्यालय में ही अध्ययन करे। और ऐसा निर्णय लेते हुए वे विद्यार्थी की रुचि का तनिक भी खयाल नहीं रखते । परिणाम यह होता है कि कभी-कभी नितांत अपरिचित वातावरण और विपरीत परिस्थितियों के मध्य वह समझौता नहीं कर पाता और प्रत्येक क्षेत्र में उसे असफलता ही प्राप्त होती है ।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी ने अपने साथी के विषय में इस प्रकार कहा था–"बाब एक अच्छा लड़का था । वह हार्वर्ड से बाहर कहीं भी भली प्रकार अध्ययन कर सकता था । लेकिन नहीं, उसका पिता अपनी कानूनी फर्म के लिए हार्वर्ड का स्नातक ही चाहता था । परिणाम यह हुआ कि वह बार-बार प्रयत्न करने पर भी असफल रहा और आज अपनी [illegible] वह असंतुष्ट है ।"

दूसरा उदाहरण रोनाल्ड का है । अभिभावकों की आकांक्षा ने उसकी गति भी अवरुद्ध कर दी । आइवी लीग कालेज में प्रवेश लेकर उसे अध्ययन करना पड़ा; यद्यपि उसकी सहमति इसमें नहीं थी । वह सुंदर आकर्षक व्यक्तित्ववाला छात्र था । लेकिन बाहरी जीवन से अनासक्त होकर उसे पुस्तकों से जूझना पड़ा । वह घंटों अपने कमरे से बाहर नहीं निकलता था –अंततः उसने कक्षा में जाना छोड़ दिया । शराब पीना और आवारा लोगों की तरह रहना आरंभ कर दिया । यहां तक कि वह कालेज से निष्कासित हो जाने की स्थिति में आ गया ।

और तब उसे उपचार के लिए मानस चिकित्सक के पास ले जाया गया । वहां उसने स्वीकार किया कि वह किसी भी प्रकार इस विद्यालय में प्रवेश नहीं पाना चाहता था । उसके पिता की इच्छा के कारण उसे यहां आना पड़ा । फिर पिता यह भी चाहते थे कि उसे बार-बार पुरस्कार मिले, वह भिन्न-भिन्न क्लबों में जाये, जिससे हार्वर्ड के वातावरण में उसे स्वीकार कर लिया जाये और उसने वह सब किया भी । लेकिन उसके साथियों पर इस सबका उलटा ही प्रभाव पड़ा । उसने बताया कि कालेज-

प्रवेश से पूर्व स्कूली शिक्षा में उसे प्रत्येक परीक्षा में विशेष ऊंचा स्थान प्राप्त होता था । लेकिन हार्वर्ड का यह वातावरण दूसरे ही प्रकार का है । यहां सभी विद्यार्थी भिन्न प्रकार की भाषा बोलते हैं । उसने बड़े खेद के साथ कहा–"यहां उपेक्षा ही मिली है । मेरी बातों को कभी स्वीकृति प्रदान नहीं की गयी । अतः मैंने शराब पीना शुरू कर दिया । इसकी प्रतिक्रिया साथियों पर और भी बुरी हुई । मैं सब ओर से उपेक्षित-सा रहने लगा । मैं यह निर्णय न ले सका कि इस हालत में मुझे क्या करना चाहिये ।" मनश्चिकित्सक अंततः इस निर्णय पर पहुंचे कि रोनाल्ड का किसी दूसरे कालेज में स्थानांतर कर दिया जाये । नया वातावरण रोनाल्ड को रास आया और वह प्रगति करने लगा ।

रोनाल्ड भाग्यशाली था कि उसे कालेज बदलने का अवसर मिल गया । बहुधा होता यह है कि विद्यार्थियों को उसी असमंजसपूर्ण वातावरण में कसमसाकर रह जाना होता है और जीवन-भर मानसिक तनाव की यंत्रणा भोगनी पड़ती है ।

कभी-कभी अभिभावक इस बात पर भी आवश्यकता से अधिक दबाव डालते हैं कि उनके बच्चे कालेज-परीक्षाओं में बहुत ही अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हों । वे स्वभावतः अपने बच्चों को बहुत ही अधिक बुद्धिमान मानने की गलती कर बैठते हैं । बच्चे पर इस दबाव का बुरा प्रभाव पड़ता है । बार्बरा की कहानी इसका अच्छा उदाहरण हैं । अभिभावकों के दबाव के कारण अपनी स्कूली शिक्षा में 'सी' और 'डी' ही ले सकी; लेकिन इसके लिए भी रातदिन अपने आपको किताबों का बनाना पड़ा ।

फिर कुछ समय पश्चात् उसका लड़के से प्रेम हो गया । उस लड़के ने प्रणय के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखा फलस्वरूप परीक्षाफलों में उसका बड़ी शीघ्रता से गिरने लगा । जब श्चिकित्सक ने इसकी सूचना उसके भावकों को दी और यह सुझाव दिया एक लंबे अवकाश के लिए वह उसे लें, तो आश्चर्यजनक रूप से शंकित उन्होंने मनश्चिकित्सक को लिखा कि बेटी बड़ी बुद्धिमान है और अगर बेमौके पर उन्होंने उसे अवकाश के बुला लिया, तो बेटी को लेकर हुई उनकी सारी योजना पर पानी जायेगा । इसलिए वह उनकी बेटी को दे कि वह उस लड़के का साथ छोड़ दे दूने उत्साह से अध्ययन करे ।

बार्बरा को इस का पता लगा, तो बहुत निराश हुई और एक रात को वस्था में उसने एक साथ एक दर्जन की गोलियां निगल लीं । गनीमत हुई उसको समय रहते देख लिया गया इलाज करवाकर घर भेज दिया गया।

कई अभिभावक अपने बच्चों पर विशिष्ट जीवन-यापन की प्रणाली देते हैं। बच्चों को अपनी इच्छा के

उस पेशे को स्वीकार करना होता है, जिसे उनके अभिभावक चाहते हैं और उसका कुप्रभाव बच्चों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कई बालकों का विकास इसी कारण नहीं हो पाता कि उनको अपनी इच्छानुसार विकास और प्रगति का अवकाश नहीं मिलता।

आज का युग स्पर्धा का युग है। स्पर्धा की भावना के विकास ने आज के विद्यार्थी-वर्ग के मन-मस्तिष्क में एक प्रकार की खींच डाल दी है। यह स्पर्धा की परंपरा सामान्य और अध्ययन में पिछड़े हुए छात्रों का पतन तो करती ही है, कभी-कभी मेधावी छात्रों को भी इससे बहुत हानि होती है। एक विद्यार्थी, जो स्कूल-जीवन में 'ए' ग्रेड लेता रहता है, कालेज में आकर यदि 'सी' ग्रेड पाता है, तो उसकी निराशा का पार नहीं रहता और वह स्वयं को अपने ही प्रति बड़ा दयनीय अनुभव करने लगता है।

मानसिक विक्षोभ के कई प्रसंग छात्र-छात्राओं के परस्पर यौन-संबंधों की उपज होते हैं। क्या मुझमें सचमुच पुरुषत्व है? यह प्रश्न बहुधा नवयुवकों को परेशान किये रहता है। लड़कियों के साथ यौन-समस्या दूसरे प्रकार की है। उनमें उत्सुकता तो रहती है, लेकिन वे यह भी जानती हैं कि विवाह से पूर्व यौन-संबंधों के लिए, न तो उनके अभिभावक ही आज्ञा देते हैं न चर्च, न स्कूल और न बहुत से साथी-मित्र ही। कुछ लड़कियों ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि वे मर्यादा से आगे बढ़ी हैं। उन्हें सखियों अभिभावकों तथा सहयोगियों से भी इस रहस्य को गुप्त रखना पड़ा है और सारा मानसिक क्लेश स्वयं उठाना पड़ा है।

उन लड़कियों की एक समस्या और भी है। वे नहीं जानतीं कि जब कोई लड़का उनका प्रेमी बनकर उनके काफी निकट आ जाता है, तो उस दशा में वे इससे सहज ही दूर नहीं जा सकतीं। मानसिक विक्षोभ का सबसे कठिन क्षण वह होता है, जब कोई लड़की गर्भवती हो जाती है और उसका प्रेमी-मित्र गर्भपात का निश्चय करता है। आज कालेज की कितनी कुमारी छात्राएं गर्भवती बनती हैं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता; पर ऐसी छात्राओं की संख्या कम नहीं है। एक बहुत ही सम्मानित महिला कालेज के अधिकारी ने कहा था कि उसकी कालेज की लगभग आधी लड़कियां अपने प्रेमी-मित्रों के साथ रात बिताती हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आज के विद्यार्थी-वर्ग का स्वास्थ्य एक नहीं, बल्कि कई कारणों से दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। और विद्यार्थियों की यह दशा पश्चिमी देशों में ही नहीं, बल्कि पूर्वी देशों में भी चिंतनीय है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि सरकार व समाज और विशेष रूप से विद्यार्थियों के अभिभावक इस दिशा में प्रयत्न करें कि इन नवयुवकों के मानसिक स्वास्थ्य को कोई आघात न पहुंचे।

★

चुटकी-भर हंसी

कुसुमलता

गांव के सबसे सम्मानित बुजुर्ग बुधसिंह से सभी ग्रामवासियों ने चुनाव में खड़े होने की प्रार्थना की। बहुत विनम्र होकर उन्होंने इन्कार कर दिया—"भई, मैं ठहरा अनपढ़ वृद्ध—यह सब मुझे शोभा नहीं देगा। किसी पढ़े-लिखे युवक को उम्मीदवार चुनो। मेरे बस की बात नहीं यह चुनाव-उनाव।"

लेकिन गांववालों ने उनकी एक न सुनी। हारकर उन्होंने चुनाव का टिकट ले लिया।

जोर-शोर से प्रचार आरंभ हुआ। चुनाव में दो दिन शेष रह गये। सभी ने बुधसिंह से अनुरोध किया कि आप भी दो शब्द जनता से कहें, क्योंकि लोग आपको सुनने को आतुर हैं......"

उन्होंने टालने की हरचंद चेष्टा की, किंतु उनकी एक न चली। किसी ने सुझाव दिया—"अजी बात में से बात निकाल देना......बस इतना ही काफी होगा..."

वे बेचारे सकुचाते हुए खड़े हो गये और बोलना शुरू किया—"भाइयो और बहनो ......न तो मैं स्पीकर हूं और न लाउड-स्पीकर हूं। स्पीकर तो पटेल साहब थे। जब वे परलोक सिधारे, तो उनके शव पर दो तरह के गुलाब चढ़ाये गये थे। एक तो वे जो नेहरू अपने कोट में लगाते हैं और दूसरे वे जिनका गुलकंद बनता है। आप तो जानते ही हैं, गुलकंद कब्ज को दूर करता है और कब्ज सारे रोगों की जड़ है। और जड़ खरबूजे की लंबी होती है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। रंग जर्मनी के पक्के होते हैं। जर्मनी में एक हिटलर हुआ था। उसने बहुत-सी 'वारें' लड़ी थीं, जैसे सोमवार, मंगलवार, बुधवार—बस जी, बुधसिंह मेरा नाम है। जब आप 'वोट' डालने जायें, तो कृपा कर इसे याद रखें।"

× × ×

एक महिला अपने पति के लिए अंगूर खरीद रही थी। उसने फलवाले से कहा—"मेरे पति को अंगूर बहुत पसंद हैं!"

आप जल-जीवों पर रिसर्च कर रहे हैं!

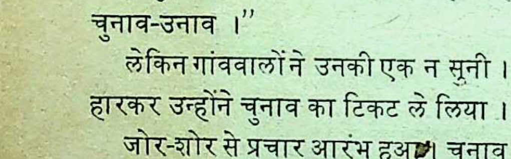

जब वह अंगूर लेकर चलने लगा, तो उसने फलवाले से पूछा–"इन पर किसी प्रकार का जहर तो नहीं छिड़का हुआ है ?"

"नहीं जी," फलवाले ने उत्तर दिया–"वह आपको किसी केमिस्ट की दूकान से खरीदना पड़ेगा ।"

× × ×

बात उस समय की है, जब अभिनेता ग्रेगरी पेक ने उन्नति के सोपान पर कदम रखा ही था। वह एक प्रसिद्ध होटल में पहली बार गया । यहां प्रायः प्रसिद्ध अभिनेता ही आते थे । कोई भी मेज खाली न थी, अतः उसे कुछ प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया । उसके साथी ने कहा–"आप बता क्यों नहीं देते कि आप कौन हैं ?"

अभिनेता ने कहा–"अगर मुझे यह बताना पड़े कि मैं कौन हूं, तो फिर मेरे प्रसिद्ध होने से लाभ ?"

× × ×

पार्टी बहुत ही नीरस और बेजान थी। एक मेहमान ऊपर छत पर जम्हाई लेने चला गया । वहां उसे अपने समान ही उद्विग्न एक और व्यक्ति मिला, जिसे देखते ही वह बोला–"ओफ, कितनी बेकार है यह पार्टी ! चलो हम क्लब के दूसरे हिस्से में चलकर कोई मधुर पेय लें ...... !"

"ऐसे सुंदर प्रस्ताव के लिए बहुत बहुत धन्यवाद ! ...... लेकिन मेरा खयाल है कि मैं न जा सकूंगा...... आप तो देख ही रहे हैं कि मैं मेजबान हूं ।"

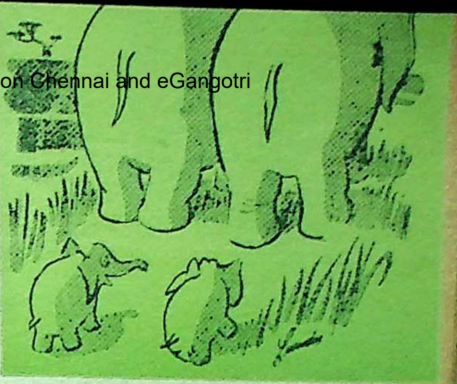

यार, मेरी मां तुम्हारी मां से ज्यादा खूबसूरत है!

× × ×

मेहमान-मेजबान का एक और किस्सा है । जयपुर में एक सज्जन अपने मित्र के यहां भोजन पर आमंत्रित थे । वे जरा पेटू किस्म के व्यक्ति थे–यह बात मेजबान जानता था । उसकी पत्नी ने छः-सात रोटियां भेजने के पश्चात् पापड़ भेजे, जो प्रथानुसार इस बात के द्योतक थे कि भोजन में यह अंतिम पदार्थ है । किंतु वे सज्जन भी बड़े काइयां निकले । हंसते हुए मेजबान से बोले –" आपकी पत्नी वास्तव में सत्कारकुशल हैं, मैं ठीक भोजन के बीच में पापड़ लेता हूं ।

धैर्य-परीक्षा !

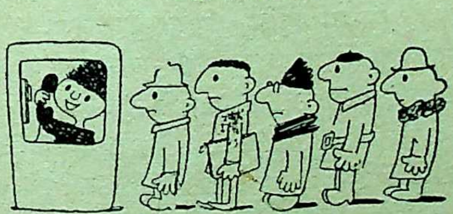

रजाक बदमाश

एक अविस्मरणीय व्यक्ति जो किसी शरीफ से कम शरीफ नहीं था।

रोचक पंडित

एक परिचित ने बातों-बातों में इलाहाबाद का एक किस्सा सुनाया। वहां एक व्यक्ति लोगों के घरों में पानी भरने का काम करता था। इसके बदले में उसको खाना और फटे-पुराने कपड़े मिलते थे। धीरे-धीरे उसके सरल स्वभाव से सभी प्रभावित होने लगे और एक शुभचिंतक ने उसे पुस्तकों की एक दुकान पर तीस रुपये मासिक की नौकरी दिलवा दी।

एक दिन एक आदमी कुछ किताबें खरीदने उस दुकान पर आया, तो उस दुकान में उस आदमी को देखकर उसे कुछ शंका होने लगी। वह उससे विशेष भाव से बातचीत करता रहा। दूसरे दिन वह फिर आया, तब वह अपने हाथ में एक किताब लिये हुए था। उसने उस नौकर से कोई किताब उठाकर देने के लिए कहा। और अपने साथ लायी हुई किताब में रखे हुए फोटो के साथ उस आदमी की सूरत से मिलान करता रहा। जब उसका संदेह पक्का हो गया, तो उसने पीछे छुपी पुलिस को बुलाकर उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। वह कभी कुख्यात बदमाश था और उसे पकड़कर लानेवाले के लिए भारी इनाम था।

मेरे परिचित ने कहानी सुनाकर पूछा-"जब वह आदमी अपनी बदमाशी छोड़कर एक अच्छे नागरिक का जीवन बिताने लगा था, तो उससे वह अधिकार क्यों छीना गया? क्या इसलिए कि वह तोताचश्म कानून की दृष्टि में बदमाश था?"

इस प्रसंग से मेरे मानस-पटल पर एक मानव-प्रतिमा उभर आयी। इस प्रतिमा का मशहूर नाम था--रजाक बदमाश।

आज से २८ वर्ष पूर्व की बात है। एक दिन वसंत की लुभावनी धूप में मैं अपने गांव के मकान के आंगन में हिन्दी प्राइमर हाथ में लिए 'अ-आ' आदि याद करने में लगा था कि एक छः-साढ़े छः फुट का लंबा-तगड़ा आदमी कश्मीरी पट्टू का ढीला-ढाला चोगा पहने हुए, आंखों में तेज और चेहरे पर हाजीनुमा दाढ़ी व सिर पर खोन (कश्मीरी मुसलमानी टोपी) पहने हुए मेरे सामने आया और मुझसे काफी मिठास में पूछने लगा-"बरखुरदार! तुम्हारे वालिद साहब घर में हैं?"

"पिताजी ड्यूटी पर हैं। मां और बहन घर में हैं।" मैंने नम्रता से कहा।

"नहीं बरखुरदार, मैं अपने अन्नदाता

के दर्शन करने आया था । जब वे आयें, तो उनको बताना कि उनका खादिम रजाक बदमाश आया था ।" उसने कश्मीरी में कहा और फिर एक पोटली निकालकर मेरी तरफ बढ़ाते हुए बोला–"ईद पर तो मैं हाजिर नहीं हो सका, इसलिए यह तुम्हारे लिए लाया हूं ।" मैंने जब लेने से इन्कार किया, तो उसने जेब से सोने का एक सिक्का निकालकर मेरी तरफ बढ़ाया और कहा–"अच्छा बरखुरदार, पहले यह रख लो । फिर वह पोटली भी संभालो ।" सोने का सिक्का देखकर तो मैं एक क्षण के लिए ललचा उठा, किंतु मां की सीख थी कि किसी से कोई भी चीज कभी नहीं लेना, जिसका ध्यान आते ही मैंने अपने हाथ खींच लिये और घबराहट में बोला–"नहीं, नहीं, मां मुझे मारेगी ।" इससे पहले कि मैं अपना वाक्य पूरा करूं, वह दोनों चीजें वहीं पर छोड़कर जिधर से आया था, उधर से ही वापस चला गया ।

"कहां से चुराकर लाया है–बोल ?" मां ने मेरे हाथ में चमकते हुए सिक्के को देखकर पूछा । मां का यह विकराल रूप देखकर, अपनी जान बचाने की नीयत से मैंने सारा किस्सा बता दिया । मुझे लगा, मानो मां रजाक बदमाश का नाम सुनते ही कांप उठी है । उन दिनों रजाक बदमाश का नाम राबिनहुड अथवा मानसिंह की भांति कश्मीरी इलाके में प्रसिद्ध था ।

जब पिताजी बाहर की ड्यूटी से घर लौटे, तो मां ने पौंड का सिक्का और चूड़ियां उनके सामने रखते हुए कहा–"यह चोरी का माल हमारे घर में क्यों आया ? क्या आप भी रिश्वत लेने लगे हैं ?" पिताजी पहले तो चकित हुए, फिर जब उनको पता चला कि ये चीजें रजाक बदमाश दे गया है, तो उनकी आंखें गीली हो गयीं । वे बोले–" जिसे दुनिया बदमाश समझती है, मुझे तो वह देवता लग रहा है । इसलिए नहीं कि वह ये चीजें दे गया है, बल्कि इसलिए कि उसने एक मामूली उपकार का बदला इतने बड़े रूप में चुकाने की कोशिश की है।"

बात यह थी कि कुछ वर्ष पूर्व पिताजी थानेदार थे । किसी गांव में कोई भारी डाका पड़ा था । रजाक को संदेह में पकड़कर थाने लाया गया था । संयोग से पिताजी सरकारी काम से एक दो दिन बाद उस थाने पर गये थे ।

पिताजी ने जब पहली बार रजाक को हवालात में देखा था, तो न जाने क्यों उनको उसके प्रति दया आ गयी थी । और उसने भी न जाने क्या सोचकर पिताजी से प्रार्थना की थी कि उसे भूख लगी है । हवालात में उसको खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया गया था । वह तीन दिनों से भूखा था ।

रजाक की बात सुनकर पिताजी पसीज गये । पुलिस अधिकारी का मिथ्या दर्प तोड़कर वे स्वयं दुकान पर गये और दो आने की रोटियां खरीदकर उसके लिए लाये । रोटियों के साथ ही दो आने नकद भी रजाक को दिये ।

रजाक को उस केस में कई वर्ष का

कारावास मिला । जेल में अच्छे कैदी का आचरण करने के फलस्वरूप महाराजा के जन्मदिन पर उसकी शीघ्र मुक्ति हो गयी। मुक्त होते ही वह पिताजी के उस छोटे से एहसान का आभार प्रकट करने के लिए, वे चूड़ियां और पौंड का सिक्का लाया था ।

कुछ दिनों बाद वह फिर पिताजी से मिलने आया । उन्होंने अपने पास बैठाकर उसकी रामकहानी सुनी ।

पिताजी के सामने उसने अपने अंतर का मुंह खोल दिया । संक्षेपत: बात यह थी कि जब ईमानदारी से जीवन बिताने पर भी सभी जगह उसको दुत्कारा ही जाने लगा, तो उसने बेईमान बनना ही उचित समझा; और अब बेईमान बनने के बाद बड़े-बड़े साहूकार तथा जागीरदार तक उसके नाम से कांपने लगे थे और झुक-झुककर सलाम करते थे ।

पिताजी ने अभिभूत होकर कहा– “रजाक साहब ! दुनिया भले ही आपको किसी भी विशेषण से पुकारे, लेकिन मैं तो आपको एक सच्चे इन्सान की नजर से ही देखूंगा । मगर इस बात का मुझे दु:ख हुआ कि आपने मेरे मामूली से कर्तव्य के बदले इतना बड़ा बदला देना चाहा है और वह भी किसी का कुछ छीनकर ।”

और पिताजी ने मां से चूड़ियां और पौंड मंगवाकर रजाक के सामने रखे और बोले–“ खुदा के लिए ये उसको दे दीजिये, जिससे आपने लिये हैं ।”

“या अल्लाह ! आपने मेरी आंखें खोल दी हैं ! एक तो उस दिन जब आपने मु बेकस को भूख से बचा लिया था और आज जबकि आप मुझे यह दोनों चीजें वा दे रहे हैं । अन्नदाता ! मैंने हर पुलिसवा को घूस खाते देखा है । यहां तक कि ह लात के कैदियों के खाने के सरकारी तक वे हड़प जाते हैं । मैं साहूकार की की ये चूड़ियां आपकी बेटी के लिए ला था, ताकि इसकी शादी में मेरी यह या गार रहती । मैं तो अपनी तरफ से तोहफा लाया था ।”

“मैं बहुत ही आभारी हूं रजाक सा कि आपको मेरा इतना ध्यान रहा । आज तो मैं विशेष रूप से आपका आभा हूं; क्योंकि आपके मुंह से पुलिस का क चिट्ठा सुनकर मुझे अब इस समुदाय रहना असह्य हो उठा है । मैंने इस्तीफा का पक्का फैसला कर लिया है ।” पिता दृढ़ स्वर में बोले ।

उस समय मां ने चाय बनायी थी, वे पसोपेश में थीं कि रजाक बदमाश पि या नहीं; क्योंकि कुछ मुसलमान हिन्दु के घर में खान-पान नहीं करते थे । मां इस असमंजस को ताड़कर बोला–“बहन इनके हाथ से अगर मुझे जहर भी मिले तो मैं वह आबेहयात समझकर पी जाऊंगा। और वह चाय पीने लगा ।

मैंने बहुत से दुर्लभ व्यक्तित्व देखे हैं देश-विदेश के महान व्यक्तियों के वि में पढ़ा-सुना है; किंतु रजाक बदमाश स्मृति-पटल पर सर्वाधिक देदीप्यमान है

जीवन और मृत्यु की निर्णायक कमिटी

न तो इस कमिटी के लोग किसी न्यायालय के न्यायाधीश हैं और न धरती पर नियुक्त यम के दूत ही; मगर सच मानिये, कितने ही लोगों के जीवन और मरण का फैसला इनके हाथों होता है। चिकित्सा-विज्ञान और उससे जुड़ी इस कमिटी का रोचक वर्णन यहां पढ़िये।

शाना अलेग्जैंडर

आज विज्ञान के चरण नित नये क्षितिजों का स्पर्श कर रहे हैं। औषध-विज्ञान और शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में आये दिन कुछ ऐसे रोमांचकारी और आश्चर्यजनक वर्णन पढ़ने को मिलते हैं कि दांतों तले अंगुली दबाकर रह जाना पड़ता है। अमरीका में पिछले दिनों गुर्दे के रोगियों के एक अपूर्व इलाज की सफल खोज हुई है।

जान मेयर को १९४५ में गुर्दे की बीमारी के कारण सेना की नौकरी से निवृत्त कर दिया गया था। लेकिन कई वर्षों तक उसे इस रोग से कोई खास तकलीफ नहीं थी। १९६१ की गरमियों में उसे पहली बार असह्य पीड़ा होने लगी। उस समय उसकी अवस्था ३७ वर्ष की थी। तब उसे यह पता नहीं था कि वह अपनी रुग्णावस्था की अंतिम स्थिति पर आ पहुंचा है। डाक्टरी जांच का निष्कर्ष था कि रोगी की मृत्यु बड़ी भयानक और शीघ्र ही होगी।

दिसंबर १९६१ में क्रिस्मस की सुबह जब वह उठा, तो उसे महसूस हुआ कि उसका दिल बड़ी तेजी से धड़क रहा है। उसकी खांसी रोके नहीं रुक रही थी। उसे बहुत तीखा सिर-दर्द सता रहा था। उसके मुंह का जायका बड़ा कड़ुवा हो गया था। उसकी बाहें और चेहरा बुरी तरह सूज गये थे। उसे शीघ्र ही अस्पताल ले जाया गया। पूरी आशंका थी कि कुछ ही घंटों में उसकी मृत्यु हो जायेगी।

लेकिन जान मेयर आज भी जीवित है, और भली-भांति जीवित है। वह सांसारिक अर्थों में अपंग भी नहीं है। आज भी वह अपने काम पर जाता है तथा अपनी बीवी और बच्चों के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीवन-निर्वाह कर रहा है। एक सामान्य व्यक्ति की दृष्टि में मेयर एक सामान्य व्यक्ति ही लगता है। पर वास्तविकता यह है कि वह दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले में बिलकुल असामान्य और विशिष्ट जीवन जी रहा है। अंग्रेजी के 'यू' अक्षर के आकार की एक प्लास्टिक टचूब उसकी दायीं कलाई की नाड़ियों से जुड़ी रहती है। प्रत्येक सोम-

वार और शुक्रवार की दोपहर को मेयर अपने निवासस्थान ब्रेमर्टन से सीटल तक जाता है । ६ बजे शाम तक वह सीटल के स्वीडिश अस्पताल में पहुंच जाता है । अस्पताल के भीतर वह अपने सामान्य कपड़े उतारकर अस्पताल का एक हरे रंग का गाउन पहन लेता है और चुपचाप बिस्तर पर लेट जाता है ।

तब चिकित्सा-उपकरणों से भरी हुई अस्पताल की एक ट्राली उसके बिस्तर के पास आकर रुकती है । डाक्टर उसमें से एक ६ फुट लंबी प्लास्टिक की स्पर्शिका (टेंटेकल) का जोड़ा निकालकर खोलता है । एक नर्स इन स्पर्शिकाओं को मेयर की कलाई में लगी हुई टयूब से जोड़ देती है । एक क्षण में ही स्पर्शिकाएं मेयर के खून से भर जाती हैं और वह खून बाहर रखी हुई मशीन में एकत्र होने लगता है । यह मशीन ही कृत्रिम गुर्दा है । इस मशीन का संबंध स्पर्शिकाओं द्वारा यू आकार की नली से जोड़ दिया जाता है और तब यह कृत्रिम गुर्दा मेयर के रक्त को स्वच्छ करने का कार्य आरंभ कर देता है । टयूब के नाड़ियों से जुड़े होने के कारण मेयर की कलाई में एक घाव हमेशा ताजा बना रहता है—और अपने जीवन के लिए उसे यह सहन करते रहना है ।

यह कृत्रिम मशीन वस्तुत: चिकित्सा-संसार का पहला सफल कृत्रिम गुर्दा है । अब जान मेयर को अपने शेष जीवन में प्रति सप्ताह दो रातें इसी प्रकार इस मशीन के साथ बितानी होंगी । ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उसने इस मूल्य पर जीवन से समझौता कर लिया है । यह कृत्रिम गुर्दा मेयर के विषाक्त रक्त को साफ करने में दस बारह घंटे तक लेता है । इस प्रक्रिया में किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होती । इसलिए अब मेयर इस इलाज का अभ्यासी हो गया है । बल्कि यहां तक कि रात को जब मशीन अपना कार्य कर रही होती है, तब मेयर सो जाया करता है । बस, एक नर्स इस बात की देख-भाल करती रहती है कि वह नींद में कहीं इधर-उधर उलटी-सीधी करवट न ले ले ।

प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार की सुबह नर्स उसके लिए नाश्ता लाती है । यह नाश्ता बहुत हल्का और पौष्टिक होता है । उसके भोजन के संबंध में विशेष सावधानी बरती जाती है । हरी शाक-भाजी और दूध उसके भोजन का प्रमुख अंग हैं । नाश्ते के बाद उसका रक्त-चाप जांचा जाता है । फिर उसे यंत्र के बंधन से मुक्त कर दिया जाता है । इसके उपरांत वह धीरे-से उठता है, अपना वजन लेता है, स्नानादि करता है और फिर से अपने कार्य पर लौट जाता है ।

जान मेयर इस बात से भली-भांति परिचित है कि जब तक वह ईमानदारी से इस प्रकार इस मशीन से अपना इलाज करवाता रहेगा और नियमानुसार संतुलित भोजन लेता रहेगा, तभी तक वह सामान्य जीवन जीता रह सकता है । वह यह भी जानता है कि इसके अभाव में वह निश्चित रूप से मर जायेगा ।

इस नये उपकरण के विषय में उसका कहना है कि उसके सम्मुख अब उसे कोई घबराहट नहीं होती । वह यह भी महसूस नहीं करता कि उसका जीवन चिकित्सा-संबंधी इस व्यवस्था में बंदी बना लिया गया है। डाक्टरों का कहना है कि मेयर के इस प्रकार के सोचने के ढंग ने उन्हें उसका इलाज करने में बड़ी सहायता प्रदान की है। मेयर का इस प्रकार पुनर्जीवन प्राप्त करना अमरीकी चिकित्सा-विज्ञान की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है ।

अमरीका में गुर्दे की बीमारी से प्रति वर्ष एक लाख व्यक्ति मरते हैं । इतनी बड़ी संख्या में से प्रति ५० में से एक व्यक्ति ही ऐसा होता है, जो सीटल के इस अस्पताल में गुर्दा मशीन द्वारा इलाज करवाने योग्य होता है । शेष रोगियों की अवस्था इतनी खराब हो गयी होती है कि उनका सफल इलाज किसी भी प्रकार संभव नहीं होता । सीटल के अस्पताल में दस रोगियों की नियमपूर्वक नियमित रूप से चिकित्सा की जाती है । प्रत्येक रोगी पर प्रति वर्ष दस हजार डालर के लगभग खर्च किया जाता है ।

संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा में इस प्रकार के केवल आधा दर्जन केंद्र खोले गये हैं और इनमें भी गुर्दे के रोगियों की चिकित्सा उसी प्रकार होती हैं, जिस प्रकार सीटल के औषधालय में ।

जैसे-जैसे चिकित्सा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन उन्नति होती जा रही है, वैसे-वैसे लोगों का ध्यान इनके उपयोग की ओर अधिकाधिक केंद्रित होता जा रहा है । लाखों व्यक्ति गुर्दे की बीमारी से पीड़ित रहते हैं और मानवता के नाते यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक मनुष्य को इस प्रकार के चिकित्सा-केंद्रों में इलाज करवाने का पूरा-पूरा अवसर मिले । लेकिन साधनों की कमी के कारण फिलहाल यह किसी भी प्रकार संभव नहीं है। तब प्रति पचास लोगों में से एक व्यक्ति को इस जीवनदायी उपकरण का लाभ प्राप्त करने के लिए चुनना एक बहुत ही नैतिकतापूर्ण और कठिन जिम्मेदारी का काम हो जाता है ।

सीटल में इस जिम्मेदारी को वहन करती है सात व्यक्तियों की एक कमिटी । इस समिति के सदस्य चुनते समय इस बात का खास खयाल रखा जाता है कि वे उदार प्रवृत्तिवाले सहृदय व्यक्ति हों । इन लोगों की नियुक्ति सीटल की किंग काउंटी मेडिकल सोसायटी करती है। सदस्य अवैतनिक होते हैं ।

वस्तुतः यह समिति जीवन या मृत्यु की निर्णायक कमिटी है । नैतिकता और धर्म-भावना से अधिक प्रभावित न होते हुए इसे अपनी अंतःप्रेरणा से रोगियों का चुनाव करना पड़ता है । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह समिति यह निर्णय करती है कि किसे जीवित रहना चाहिये और किसे नहीं ।

वर्तमान समिति के सात सदस्यों में एक वकील, एक मंत्री, एक बैंकर, एक

गृहिणी, एक राज्य सरकार का अधिकारी, एक मदूजर नेता तथा एक सर्जन हैं । १९६१ के ग्रीष्म में पहली बार ये लोग विचार-विनिमय के लिए मिले । इनमें से कोई भी जान मेयर को नहीं जानता था । इस पहली बैठक में गुर्दे के दो विशेषज्ञ चिकित्सकों को भी बुला लिया गया था । इन डाक्टरों ने इस समिति को कुछ परामर्श दिये । उन्होंने बताया कि ४५ वर्ष से अधिक आयुवाले रोगियों का चुनाव नहीं होना चाहिये, क्योंकि इलाज की प्रक्रिया की कठिनता को सहन करने के लिए उनमें योग्य-शक्ति नहीं होती । इसी प्रकार छोटे बच्चों को भी इस प्रकार के कठोर इलाज के लिए नहीं चुनना चाहिये । उनके कोमल मस्तिष्क पर इस प्रकार के इलाज की कठोरता की शीघ्र ही प्रतिक्रिया हो सकती है ।

इस पहली ही बैठक में इन सातों सदस्यों ने भविष्य में डाक्टर से सलाह लेने की बात को स्वीकार कर लिया । इन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वे सब इस पद पर तभी तक बने रहेंगे, जब तक उन्हें सब लोगों का विश्वास प्राप्त है । दूसरी बैठक में उन्होंने निश्चित कर लिया कि उन्हें रोगियों के नाम भी न बतलाये जायें । फिर उन्होंने रोगियों को चुनने के संबंध में कुछ सामान्य नियमों का नियमन किया । जैसे रोगी की आयु और लिंग की जानकारी, वैवाहिक स्तर और आश्रितों की संख्या, आय, रोगी की सामान्य प्रवृत्ति, रोगी में इस विशेष प्रकार के इलाज को सहने की क्षमता, उसका शैक्षणिक परिवेश, [illegible] प्रवृत्ति तथा कुछ अन्य ऐसे ही तथ्य ।

समिति के सातों सदस्य इलाज के लिए रोगियों के चुनाव में अपनी महान जिम्मेदारी बड़ी ईमानदारी के साथ [illegible] करते हैं । वे एक-एक रोगी पर खुलकर वाद-विवाद करते हैं । जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए इन लोगों में श्रेष्ठ मानवीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है । प्रत्येक रोगी के संबंध में इनकी अपनी स्वतंत्र मान्यताएं, स्थापनाएं और विचार हैं । लेकिन फिर भी प्रत्येक बैठक में, वाद-विवाद करने के पश्चात् किसी निष्कर्ष पर अवश्य पहुंच जाते हैं और रोगी का चुनाव हो जाता है । इस संदर्भ में किसी भी सदस्य में हठधर्मिता की भावना नहीं दिखाई देती । इस स्वस्थ प्रवृत्ति के कारण ही इतनी बड़ी जिम्मेदारी का संचालन इतनी सफलता के साथ हो रहा है ।

कोई रोगी अपने परिवार का अभिभावक हो, उसके ऊपर छोटे बच्चों और पत्नी का भार हो, उसकी पत्नी उसके अभाव में कोई कार्य कर सकने व अपने बच्चों को पालने में समर्थ न हो, तो वह [illegible] सदस्यों द्वारा आसानी से चुना जा सकता है । लेकिन इतना ही सब कुछ नहीं है । इसके साथ-साथ यह भी देखना पड़ता है कि उस व्यक्ति का स्वास्थ्य और प्रवृत्ति इस योग्य है कि नहीं कि वह इस प्रकार के इलाज को अपने शेष जीवन के लिए स्वीकार कर सके । रोगी को चुनते समय उ

मानसिक शक्ति और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का विश्लेषण भली-भांति किया जाता है । उसकी आर्थिक स्थिति को महत्व देने के विषय में किसी भी सदस्य को उत्सुकता नहीं होती । इसीलिए जान मेयर जैसा सामान्य आयवाला व्यक्ति भी सहज ही चुन लिया गया ।

जान मेयर दिसंबर के अंत में उक्त अस्पताल में दाखिल हुआ था । जनवरी के मध्य तक घर वापस आ गया । फिर जल्दी ही वह काम पर भी जाने लगा । पहले वह प्रतिदिन एक घंटे काम करता था, अब वह पूरे सात घंटे काम करने लगा है । वैसे वह आज भी यह बात स्वीकार करता है कि उसमें दौड़ने के लिए या रात-भर कार्य करने के लिए कोई उत्साह उत्पन्न नहीं होता । वह यह भी स्वीकार करता है कि दूसरे रोगियों की भांति उसे आज भी रक्त वेग के बढ़ने की शिकायत है और वह जल्दी थक भी जाता है । लेकिन फिर भी उसे इस बात का संतोष है कि एक बार फिर वह बहुत बड़े अर्थों में अन्य व्यक्तियों के समान ही हो गया है ।

जान मेयर को जीवन-दान देनेवाली इस समिति के सदस्यों का कहना है कि जब तक इस प्रकार के साधनों का बाहुल्य नहीं हो जाता, तब तक किसी-न-किसी का चुनाव करना ही पड़ेगा । इन सदस्यों के सामने चुनाव को लेकर अनेक कठिनाइयां हैं । एक तरह से इनका कार्य ईश्वरीय सत्ता को चुनौती देने के समान है ।

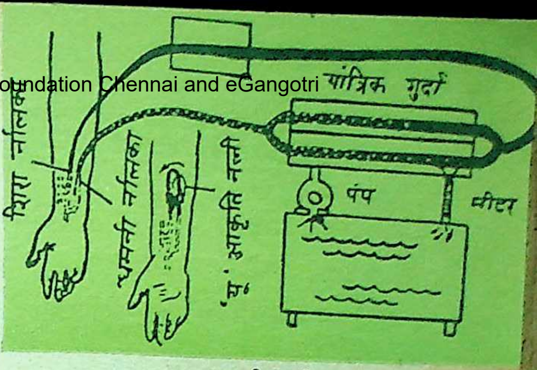

गुर्दा मशीन

जिस रोगी का रक्त गुर्दा-यंत्र से स्वच्छ करना हो, उसकी कलाई में प्लास्टिक की दो नलिकाएं सी दी जाती हैं । एक रोगी की धमनी से जुड़ी रहती है, दूसरी शिरा से । (देखिये ऊपर का चित्र ।) सामान्य अवस्था में ये दोनों सिरे अंग्रेजी के 'यू' अक्षर के आकार की एक नली से जुड़े रहते हैं । (देखिये चित्र में दायीं ओर की भुजा ।) और जब रक्त स्वच्छ करना हो, यह 'यू' आकार की नली हटाकर, धमनी और शिरा से जुड़ी नलिकाओं को गुर्दा-यंत्र की लंबी नलिकाओं से जोड़ दिया जाता है। रोगी का दूषित रक्त (चित्र में इस पर बिंदु अंकित हैं) बहकर यांत्रिक गुर्दे में आता है । यहां यह छिद्रोंवाली सिलोफेन की परतों के बीच से गुजरता है, जो एक प्रक्षालक घोल में डुबायी हुई होती है । यह घोल रासायनिक प्रक्रिया द्वारा रक्त के विकारों को खींच लेता है । नीचे रखी टंकी में से ताजा घोल गुर्दे में आता रहता है । गुर्दे के दूसरे सिरे तक पहुंचते-पहुंचते रक्त स्वच्छ हो जाता है । फिर यह एक अन्य उपकरण में से, शरीर के तापक्रम तक गरम होकर रोगी की शिरा में पहुंच जाता है ।

कण्वाश्रम के महावनों में

कण्व और कालिदास की उस पावन सांस्कृतिक भूमि का सरस वर्णन, जहां सागरगामिनी
अपने पिता हिमवान की गोद से उतरकर मैदान में आती है।

हरिवंश वेदालंकार

गंगा के उस पार, हिमालय की पूर्वोत्तरीय गिरिशृंखलाओं में ३२ मील दूरी पर स्थित कण्वाश्रम-स्थान को देखने की वर्षों पुरानी साध लिये जब हम हरिद्वार से बाहर निकले, भीषण गरमी से बेचैन होकर ज्येष्ठ मास का वह दिन रह-रहकर झुंझला उठता था। हमारी ओर का आधा मील चौड़ा गंगा का सूखा, रेतीला पाट छोटे-बड़े, तपे हुए गोल पत्थरों से पटा पड़ा था। उसे जलती दोपहरी में पार करना हठयोग की किसी साधना से कम कठोर नहीं था। फिर भी छः वनप्रेमियों का हमारा छोटा-सा दल नील धारा पर जा पहुंचा।

गोल-मटोल पत्थरों पर गंगा बड़े आनंद से नाचती-गाती, उछलती-कूदती, लंबी छलांगें भरती वेग से भागी चली जा रही थी। हिम-शिशिर जल में उतरकर हमने स्नान किया और फिर एक पत्थर के साथ रस्सी से बंधी नाव पर बैठकर भोजन करने लगे। वार्ता-विनोद भोजन को और भी स्वादिष्ट बना रहा था। बड़ी-बड़ी तरंगें, तीर तक आकर नौका को निरंतर थपेड़े दे रही थीं। दुर्भाग्यवश, अचानक पत्थर के उखड़ जाने के कारण, रस्सी खुल गयी और पहाड़ी नदी का अल्हड़ प्रवाह नाव को की तरह उछालता ले भागा। किश्ती मगाने लगी और डूबने-डूबने को होने

इस आकस्मिक संकट से हम क्षण किंकर्तव्य-विमूढ़ रहे। फिर हमें अ काल में सीखे नौ-संचालन का ध्यान आया और हम चारों पुरुष-यात्री कर एक पतवार और तीन चप्पुओं पूरी शक्ति से जुट गये। हमने "बोल, माता की जय!" का ऊंचा नारा और नाव को संभाल लिया। पत्नी देवी और पुत्री इंदिरा की मुखाकृति उभरी विषाद की काली रेखाएं फीकी लगीं और उनके स्थान पर आश्वासन संतोष की गुलाबी आभा झलकने चट्टानों की टक्कर और भंवर की बचाकर नाव को आगे बढ़ा ले गये गंगा के उस पार हर्षित मुद्रा में नीचे

नील पर्वत की तीन मील की चढ़ाई को लांघकर हम सायंकाल पर अवस्थित चंडीदेवी के मंदिर में मंदिर में ही रात्रि व्यतीत करने के निश्चय को सुनकर पुजारी ने कहा- राजजी, अब जानवरों के आने का

हो गया है। आप लोग भारी विपत्ति में पड़ जायेंगे। देखिये, पिछली रात ही पांच भालू मंदिर के चारों ओर लगे, लोहे की सीखों के जंगले को तोड़कर भीतर आ घुसे थे और जटाओं सहित नारियलों को अपनी दाढ़ों से कड़ाकड़ तोड़ते-खाते चले गये। यह देखिये, छिलकों का ढेर।" यह कहकर पुजारी ने एक बड़ा-सा ढेर दिखलाया।

फिर भी जब हमने रात वहां बिताने का निश्चय नहीं बदला, तो हमारी सुबुद्धि को कोसता हुआ वह आसन और पोथी-पत्रा समेटकर, दूर बसे अपने गांव को चला गया।

अब हमारे चारों ओर भयावह स्तब्धता और रहस्यमय घोर अंधकार का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो गया। हमने टूटे हुए सींखचों के बीच के खाली स्थान को करौंदों की कंटीली झाड़ियों से भर दिया और हाथों में भाले-बर्छे लेकर उन पांच मेहमानों का स्वागत करने के लिए सावधानी के साथ बैठ गये। रात गहरी हो चली।

तभी अकस्मात् गंगातीर के वनों में गीदड़ों का राष्ट्रगान 'हुआ-हुआ' प्रारंभ हो गया। शिशु, जवान, बूढ़े जिस-किसी भी गीदड़ ने जहां-कहीं भी राष्ट्रगीत की लय सुनी, स्थिर भाव से अपना मुंह ऊपर उठाकर उसके स्वर में स्वर मिलाया। इस प्रकार यह स्वर-लहरी वन से वनांतर और देश से देशांतर होती हुई दूर-दूर तक विस्तृत होने लगी। और क्रमशः दूर-दूर सरककर दिशाओं में विलीन हो गयी।

शृगाल-संगीत के समाप्त हो जाने पर

विनोदी श्रीनिधिजी बोले– "प्राचीन काल में हमारे मुनि-महर्षि गंगातट के इन्हीं वनों से भ्रातृत्व, सदाचार, धर्म और ब्रह्म-ज्ञान का संदेश विश्व के लिए प्रसारित किया करते थे। किंतु अब जबकि हम भारतीयों ने अपना वह पुनीत कर्त्तव्य भुला दिया है, तो ये बेचारे गीदड़ ही, उन मुनियों के उपदेश में से 'भ्रातृ-भावना' अंश लेकर, प्रतिदिन उसे अपने जाति-भाइयों के लिए प्रसारित करते हैं।"

श्रीनिधिजी की ऐसी परिमार्जित और कल्पना-वैशिष्टय से भरी हास्योक्तियों ने उस बियाबान में भी हमारा मानसिक तनाव बढ़ने न दिया। धीरे-धीरे रात्रि व्यतीत हो गयी। न कोई भालू-रीछ आया और न कोई अन्य चमत्कार ही हुआ।

प्रातःकाल चंडी मंदिर से हम चीला वन की ओर चले। काली मंदिर तक उतर कर गंगातट पर आये और उत्तर की ओर, नदी के साथ-साथ बढ़े। उषाकालीन वायु अंगों में ओज भरने लगी। दिल्ली शहर के पीले-मटियाले मकानों को लगातार देखते रहने के कारण कमजोर और धुंधली पड़ी हुई आंखें, अब यहां की गहरी हरियाली

में डूब-डूबकर गाढ़े मधु का पान करने लगीं। हमें आते देख, जंगली लंगूरों का एक झुंड भाग चला। अपनी लंबी पूछ उठाये, कल्पनाओं की तरह अनायास एक डाली से दूसरी डाली पर छलांग भरते हुए लंगूर कैसे भले लग रहे थे!

प्रकृति ने बड़े प्यार से लंगूर की रचना की है। उसे फुर्तीला और पुष्ट तन, आनंदी मन, हिंसा-छल से रहित सात्विक जीवन दिया है। बेल और बहेड़े के कड़वे-कसैले पत्ते खाकर बेचारा संतोषपूर्वक अपना जीवन बिता देता है।

चीलावन में प्रविष्ट होते ही प्रतापसिंह बोले—"वह देखो!" और हमने देखा कि साठ के लगभग वन्य हाथियों का एक झुंड, गंगा के उस पार के वनों से पुलिनों पर उतरा और नदी की वेगवती धारा को पार करने के लिए हमारी ओर बढ़ने लगा। गज-यूथ में छोटे-बड़े, बच्चे-वृद्ध सभी प्रकार के हाथी थे। सबसे आगे विशालकाय गजराज मस्ती से झूमता हुआ प्रवाह में प्रविष्ट हुआ और धारा को चीरता हुआ नदी को पार करने लगा। अन्य हाथी भी उसके पीछे-पीछे अनुशासनबद्ध हो, नदी को तैरकर पार करने लगे। छोटे बच्चों को माता नियां सूंड से सहारा दे-देकर तैराने दो नव-यौवना नियां बीच धारा पहुंचकर मचल मानो कह रही थीं- तो आज जी-भर गंगास्नान और क्रीड़ा करके ही निकलेंगी।"

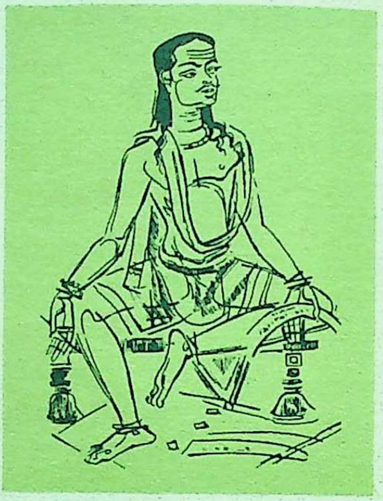

कालिदास

चित्र : श्यावक्ष चावडा

गजराज ने एक हल्का-सा चिंघाड़कर धमकाया—"अभी खतरा है! रात चांदनी निकलने पर धारा से निकल वह कुंजर-दल गोल पत्थरों से भरे ऊंचे तट पर चढ़ने लगा उनके पैरों से लुढ़कनेवाले पत्थरों का दूर तक सुनाई दे रहा था। स्नान की और माताओं से मिलनेवाले प्यार के का तरल-हृदय गज-शावक हाथियों के के बीच से, इधर-से-उधर निकलने एक शावक जब गजराज की टांगों के से निकला, तो उसने शावक की पीठ अपनी सूंड का एक हल्का मुक्का कहा—"अब तुम एक बरस के हो गये जितने बड़े। लेकिन चलने का तरीका अब तक न सीखा!"

तट के वनों में प्रविष्ट होकर हा का झुंड लताओं और वृक्षों को खाता

जाकर अदृश्य हो गया ।

गरमी तेज हो गयी थी । पर्वत-स्रोतों के ढहे हुए तटों से लटकते हुए सरस-मधुर कंद-मूलों का आस्वादन करते हुए हम खारा वन के मार्ग पर अग्रसर हुए । मार्ग के बायीं ओर सेमल वृक्ष के कोटर में एक करुण दृश्य दिख पड़ा । एक धनेश पक्षी ने अपनी आसन्नप्रसवा सहचरी को कंकड़-पत्थर और काली मिट्टी से सीमेंट-जैसी पक्की चिनाई करके वृक्ष-कोटर में बंदकर रखा था । बेचारी कोटर के छोटे छिद्र से अपनी चोंच बाहर निकाले, अत्यंत व्याकुल आंखों से सामने के वन-पर्वतों को देख रही थी । उसके सहचर का कहीं पता न था ।

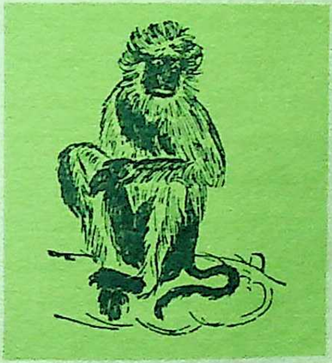

प्रकृति ने बड़े प्यार से लंगूर की रचना की है

उसे देखकर मुझे अपनी निर्मला बहन की स्मृति हो आयी और आंखें तर हो गयीं । एक 'धनेश' विवाह करके उन्हें कलकत्ता ले गया । वहां उन्हें चौमंजिले बंदीगृह में रहना पड़ा । परदा, रूढ़ि और अंधविश्वास की ऊंची दीवारों के बीच दम घुटने लगा और वे स्वच्छ पवन एवं सूर्यरश्मियों के दर्शन के लिए तरसती रहीं । तीन वर्ष बाद निकली उनकी लाश, क्षय रोग से काल-कवलित हो जाने के पश्चात् ।

मार्ग अधिकाधिक सघन, गुंफित और सुनसान वनों में से होकर हमें आगे ले चला । बृहदारण्यक, महारण्य आदि शब्द अब तक साहित्य में ही पढ़े थे । उनका साक्षात्कार आज यहां प्रथम बार हो रहा था । तीन घंटे चलने के अनंतर खारा में थोड़ा विश्राम करके लाल ढांग की ओर बढ़े । वनों की सघनता और भयानकता भी हमारे साथ-साथ चल रही थी । चार मील चलने के बाद, हम बायीं ओर की पगडंडी पकड़कर पश्चिम के महारण्य में प्रविष्ट हुए ।

आज आंखें धन्य हो गयीं । सामने का वन ही महाकवि कालिदास की साधना-भूमि थी । हिमालय में अनेक शोभाशाली वन देखे थे; किंतु इस वन की सश्रीकता और मोहकता कुछ अपूर्व ही थी !

उस साहित्यिक तपोभूमि की प्राकृतिक रूपरेखा और सीमाव्याप्ति की सामान्य झांकी लेने के लिए हम समीपवर्ती शिखर पर चढ़े । चारों ओर का दृश्य नयनाभिराम था । बदरी-केदार के हिम-शिखरों से हरिद्वार तक विस्तीर्ण यही विशाल महावन कविकुलगुरु की साधनाभूमि थी, जहां से उन्होंने प्रेरणाएं, अनुभूतियां और अनूठी कल्पनाएं पायीं । यहीं उन्होंने नैसर्गिक सुषमा से दिव्य आनंद प्राप्त किया और आत्मपरिष्कार के लिए कठोरतम तप का

अनुष्ठान भी नहीं किया।

शिखर से उतरकर जब हम कालिदास-आश्रम के ध्वस्त शिव-मंदिर के शिलाखंडों के निकट पहुंचे, तो सूर्यास्त हो चुका था। काले वृक्षों के पास अंधकार कुछ अधिक गाढ़ा हो रहा था। यह देखकर अति प्रसन्नता हुई कि शिला के ऊपर किन्हीं महात्मा का मृगछाले से लिपटा बिस्तर रखा है। मन श्रद्धा से भर गया। इस विकराल वन में निशागम के समय पधारनेवाले महात्मा, अवश्य ही कोई बड़े संत होंगे! किंतु यह क्या? वह बिस्तर तो लंबी छलांगें लगाता भागा चला जा रहा है! "तेंदुआ!" ...हम स्तब्ध रह गये! जिसे मृगछाले से लिपटा बिस्तर समझा था, वह तो तेंदुए का चित्तीदार लंबा शरीर था।

वन में चारों ओर अंधकार छा गया। वृक्षों पर मचान बांधने का समय अब नहीं था। अत: जंगल के बीच समतल भूमि देखकर, चारों ओर कांटों का बाड़ा बनाकर बैठ गये। पहरा देने के लिए दल के चारों पुरुष सदस्यों ने आपस में दो-दो घंटे की बारी निश्चित कर ली।

ढाई बजे का समय था। सब प्रगाढ़ निद्रा में सोये थे। हाथ में भाला, टार्च और घड़ी संभाले मैं पहरे पर बैठा था। अंतरिक्ष में नक्षत्रों की सुंदर दीपावली हो रही थी। मैं सोच रहा था—दो सहस्र वर्ष पूर्व कालिदास ने इसी स्थान पर बैठकर, इन्हीं तारों को देखते हुए गगन के विभिन्न स्तरों का ज्ञान प्राप्त किया होगा।

उसी समय एक बड़ा-सा तारा टूटा बाघ की प्रोच्चंड गर्जना से वनभूमि लगी। "व्या......घ्र:! ......व्या......घ्र जैसी, हृदय को दहला देनेवाली वह नक ध्वनि निरंतर पास आने लगी। हम सिटपिटाकर सटकर बैठ गये। इस को हमारी गंध कैसे लग गयी?

"टूटे मंदिर के पीछे भाग चलें!" ने सुझाव दिया। "वहां एक ओर सुरक्षा रहेगी।"

विराज बोले—"अगर बाघ को पता चल ही गया है, तो उसे खंडहरों पहुंचने में कितनी देर लगेगी? फिर वहां अधिक अच्छी आत्मरक्षा हो और प्रत्याक्रमण भी।"

हम सब चलने के लिए तैयार ही कि सहसा पीछे के कुंज से किसी दूसरे की कानों को बहरा कर देनेवाली गर्जना सुनाई दी। अब तो ऐसा मानो हम चक्की के दो पाटों के बीच फंस गये हैं।

थोड़ी देर की चुप्पी के पश्चात्, के क्षीण प्रकाश से मिश्रित अंधकार कोई जानवर चलता हुआ दिखाई टार्च के प्रकाश में देखा, तो बाघ-बा और उनके दो नन्हे बच्चे चकित दृ हमारी ओर देख रहे थे।

विराज कहने लगे—"अब हमें की जरूरत नहीं है। शायद बाघिन को शिकार-विद्या सिखाने के लिए दूर निकल गयी थी। बाघ उसे बुला

था । हमारे पीछे की झाड़ियों में पहुंचकर बाघिन ने अपनी उपस्थिति की सूचना दी । हम पर हमला करने की इच्छा इन दोनों की प्रतीत नहीं होती ।"

और मानो विराजजी के कथन को सही सिद्ध करने के लिए ही वह व्याघ्र-परिवार लता - गुंफित कुंजों में ओझल हो गया । व्याघ्र - दर्शन से उदित विक्षोभ और भय आनंद-स्मृति में बदल गये । वैसे अभी आधा पहर रात शेष थी; किंतु नींद आने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था । वार्तालाप में सारा समय बीता । अरुणोदय के साथ सूर्य की किरणें चीड़ वृक्ष की कलंगी को सुनहरा बनाने लगीं । हम कालिदास की साधना-भूमि को नमस्कार करके कण्वाश्रम की ओर चल पड़े ।

सघन वन-कुंजों में अब भी कुछ-कुछ अंधकार शेष था । रात्रि में क्रूर सत्वों के भीषण उत्पात से जीवित बची हिरनियां 'क्वाड-क्वाड' की ध्वनि करती हुईं अपने सहचरों का कुशल-क्षेम पूछ रही थीं । सुंदर युवतियों को जिस प्रकार मनचलों की कु-दृष्टि से अपने को बचाये रखना पड़ता है, उसी प्रकार वन की इन भोली-सलोनी हिरनियों को भी खूंख्वार जानवरों की क्रूर दृष्टि से सदा अपने को बचाये रखना पड़ता है । तनिक-सा प्रमाद हुआ कि बस प्राण गये !

स्रोतस्विनी खासन के पवित्र जल में स्नान करके लाल ढांग पहुंचे । कण्वाश्रम केवल १३ मील दूरी पर रह गया था । मार्ग पर्वतों के बंधन से मुक्त होकर कहीं खेतों में और कहीं वनों में होकर चलने लगा । दस मील इसी तरह चलने के बाद वह दायीं ओर मुड़ा और बायीं ओर हमें कण्वाश्रम के वन-पर्वतों के भव्य दर्शन हुए । हिमालय ने बड़े प्रेम से अपनी दोनों बाहुओं को अर्ध-चंद्राकार आगे फैलाकर इस प्रदेश का आलिंगन किया हुआ है । कैसी मोहक स्निग्धता है ! पवित्र, उदात्त भावनाओं का उमड़ता प्रवाह यहां की वन-भूमियों को आप्लावित करता हुआ शैल-शिखरों के ऊपर से होकर बहता है । महर्षि कण्व पर्वत-रूप में भाभर घास की पिंगल जटाएं धारण किये, ध्यानलीन शांत मुद्रा में आसीन हैं । निकट ही दुर्वासा मुनि अपने ढहते हुए पर्वत-शरीर को धारण किये स्थित हैं ।

कलाल घाटी पहुंचकर हम मालिनी के ऊंचे तट पर खड़े हुए । सायंकाल हो गया था। सामने के तीर पर सूर्य की पीली रश्मियों से चमकती हुई रेती में कुछ मृग-शावक सांध्य-क्रीड़ा में तल्लीन थे । सामने ही वह वन था, जहां मृगया-विहारी दुष्यंत का रथ पहुंचा था । हजारों वर्षों के बाद भी पर्वतों की रचना वैसी ही थी; किंतु मालिनी की धारा और वनों की स्थिति में बड़ा परि-वर्तन दृष्टिगोचर हो रहा था । नदी किनारे पर दुष्यंत-शकुंतला का वह मिलन-कुंज आज नहीं था; वहां बड़े-छोटे खेत बन गये थे । वनज्योत्स्ना नवमल्लिका की नवीन पाढ़ियां अब पर्वतमूल की ओर सरक गयी थीं और उनके स्थान पर चारों ओर

मकई का खेत लहरा रहा था ।

प्राचीन मान्यता है कि उग्र तपस्या करनेवाले मुनिजन, अपनी आत्माओं को पर्वतों और गिरि-कंदराओं में संक्रांत कर देते हैं और इस प्रकार आगामी मानव-संतति को अपनी चेतना से अनंत युगों तक प्रेरणा देते रहते हैं । कण्वाश्रम पहुंचकर हमने यह स्पष्ट अनुभव किया कि कोई अपार्थिव शक्ति हमारे अंतःकरण में जोंक की तरह चिपटी हुई असद् वृत्तियों को बलपूर्वक खींचकर दूर हटा रही है और वहां निर्मल प्रकाश भर रही है ।

अगले दिन प्रातःकाल हम स्नान-वंदन करके मालिनी के जल में उभरी हुई शिलाओं पर बैठे थे । इंदिरा ने 'शाकुंतल' के चतुर्थ अंक के चार श्लोक गाये । कालिदास की कविता के गायन और श्रवण का जो आनंद उसके इन निभृत और नीरव उद्गम-स्थलों पर है, वह जनाकीर्ण जनपदों और नगरों में कहां ! हमें खेद रहा कि कालिदास-आश्रम में भी इसी प्रकार 'रघुवंश' के द्वितीय सर्ग के श्लोक क्यों नहीं गाये । किंतु वहां तो हमने अपनी प्राणरक्षा की जल्दबाजी गयी थी !

× × ×

हरिद्वार लौटते हुए नीलधारा को करने के लिए हम नाव पर बैठे के उदार-रमणीय वातावरण की चर्चा में संलग्न थे कि समीप बैठे कटाई के ठेकेदार लाला बीच में बोल "अजी, आप लोग तो यों ही कण्वाश्रम इतनी तारीफ करते हैं । मुझे तो वहां ऐसी बात दिखाई नहीं देती ।"

मल्लाह ने धीमे-से बताया कि श्रम के जंगलों को काटने का ठेका सज्जन के पास है । श्रीनिधिजी मर्माहत हुए और तिलमिलाकर बोले- आपको दिखाई कैसे देगी ? तलवार गाय को काटने के लिए तैयार कसाई भला कहीं उसके गुण दिखाई देते हैं ! तो लकड़ी के लोभ में वहां के सुंदर को काट-काटकर उस स्वर्ग को पर तुले हुए हैं ।" इसके बाद हम किसी की कुछ बोलने की इच्छा नहीं

शायरी और स्वेटर

एक बार दिल्ली में इंडो-पाक मुशायरा हो रहा था । पंडित हरीचंद "अख्तर" भी पर बैठे मुशायरे का मजा ले रहे थे । स्टेज पर बैठने का इंतजाम कुछ इस तरह से किया था कि अगली पंक्ति में औरतों को बिठाया गया था । ये शायरों के कलाम पर दाद रही थीं और अपने स्वेटर भी बुन रही थीं । जब वे वाह-वाह करतीं, या सुब्हान कहतीं, उस वक्त उनकी बुनाई और भी तेज हो जाती ।

जब पंडित हरीचंद "अख्तर" का नाम पुकारा गया, तो आपने माइक पर पहुंच पहले यह ऐलान किया,—" अगर मुशायरा इसी का मयाबी के साथ चलता रहा, तो होने तक हर शायर को एक-एक स्वेटर जरूर मिल जायेगा । सभी देवियां शरमा

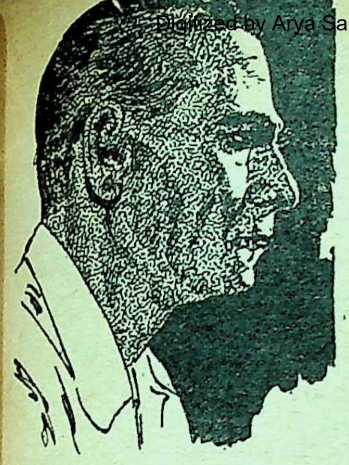

यशपाल

नये लेखकों से

डा० शुभकार कपूर

"आज के लेखकों की स्थिति पहले से बहुत अच्छी है।" यशपालजी गुजरे दिनों पर फब्ती कसते हुए बोले—"पहले प्रकाशक पैसा देना तो दूर, पुस्तक प्रकाशित करके ही लेखक पर उपकार करता था।

"किंतु अब? अब हालत काफी बदल चुकी है और मुझे विश्वास है, दिन-पर-दिन बदलती जायेगी।"

कथाकार यशपाल के इन शब्दों में भारतीय लेखकों के अच्छे भविष्य का स्पष्ट संकेत है।

मैं सन १८५७ से १९४७ तक की कालावधि पर उपन्यासों की एक शृंखला लिख रहा हूं—यशपालजी के निर्देशन में। अपने इस काम के सिलसिले में ज्यों-ज्यों मैं उनके निकट आया हूं, उनका व्यक्तित्व निखरकर मेरे सामने आया है। मैंने पाया है कि वे उच्चकोटि के कथा-लेखक ही नहीं हैं, वरन एक अच्छे पथ-प्रदर्शक भी हैं। जिस आत्मीयता से वे नये लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं, सहयोग और निर्देशन देते हैं, वह निश्चय ही बड़ा प्रेरक और अनुकरणीय है।

इस कार्य के दौरान मेरी यह दृढ़ धारणा बनी है कि आलोचनात्मक गवेषणाओं की भांति यदि मौलिक साहित्य के निर्देशन का कार्य भी ऐसे तपे हुए लेखक आरंभ कर दें, तो आगे रचे जानेवाले साहित्य में अधिक मौलिकता, अधिक प्रौढ़ता एवं कलात्मकता आयेगी। यही नहीं, साहित्य-सृजन में व्याप्त उच्छृंखलता पर भी बहुत अवरोध लग जायेगा।

"हिन्दी में आजकल किन विषयों पर लिखने की आवश्यकता है? नये लेखकों को आपकी क्या सलाह है?"—मैंने यशपालजी से एक मुलाकात के दौरान पूछा।

"सभी विषयों पर।" उन्होंने तत्काल उत्तर दिया। फिर कुछ रुककर अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा—

"हिन्दी आज राष्ट्रभाषा है। कुछ लोग उसे इस आसन से खिसकाना चाहते हैं। यह बात तो निश्चित है कि ये लोग उसे खिसकाना तो दूर, हिला भी न पायेंगे। किंतु हम लोगों का कर्तव्य इसके प्रत्येक अंग को अधिक-से-अधिक पुष्ट करने का है, जिससे इसकी शक्ति पर लोगों का विश्वास हो सके। लेखक को समाज के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिये। समाज के विकास का बहुत कुछ उत्तरदायित्व लेखक पर ही है। लेखक अपने चित्रण में तभी सफल होगा, जब वह सूक्ष्मता के साथ अंतर्विरोध का चित्रण कर सकेगा।

"मैं तो समझता हूं कि सामाजिक व्यवस्था के अंतर्विरोधों को प्रकट करना और सुधार के लिए मार्ग निर्दिष्ट करना लेखक का महान कर्तव्य है।"

अपनी बात जारी रखते हुए उन्होंने आगे कहा–"सफलता पाने के लिए नये लेखक धैर्य और साहस से काम लें। मैं अधिक लिखने के पक्ष में नहीं हूं। कम, किंतु श्रेष्ठ लिखने के पक्ष में अवश्य हूं। यदि लेखक में शक्ति और प्रतिभा है और वह अधिक लिखकर भी अपने स्तर को बनाये रख सकता है, तो मुझे कोई एतराज नहीं। लिखे, खूब लिखे, किंतु केवल पैसे को ध्यान में ही नहीं; जिसके लिए वह कलम उठा है, उसको ध्यान में रखकर भी। लीजिये, आप भारत के स्वतंत्रता-संग्राम औपन्यासिक शृंखला लिख रहे हैं, तो शृंखला को अधिक विश्वसनीय बनाने लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनै परिवर्तनों पर सूक्ष्म दृष्टि रखनी पड़े साथ ही आपको ऐतिहासिक पात्रों, दयानंद, अरविंद घोष, तिलक, आजाद, गांधी, सुभाष आदि का चित्र सजीव एवं वास्तविक भाव-भूमि पर होगा, जिससे पाठक की भावनाओं आघात न पहुंचे !" एक क्षण के लि कुछ रुके, फिर बोले–"एक बात और जिसे चित्रण करते समय ध्यान में रख खयाल से जरूरी है। जिस देश के व्यक्ति पात्र का आप चित्रण करने जा रहे हैं उस व्यक्ति की दृष्टि से देखेंगे, तभी उन को आप अधिक सजीव बना सकेंगे। लेखक इन बातों को ध्यान में रखकर अपनी कथा-कृति की रचना करें निश्चित रूप से उन्हें सफलता प्राप्त हो श्रेष्ठ रचना साहित्य में उनका स्थान बना देगी।"

होशियारी

ट्रैफिक के सिपाही ने एक मोटरवाले को रोककर अपना ड्राइविंग लाइसेंस दि के लिए कहा। इस पर मोटरवाले ने कहा–"भई, तुम मेरा लाइसेंस क्यों देखना चाहते क्या मैं गलत मोटर चला रहा हूं ?" इस पर ट्रैफिक के सिपाही ने कहा–"श्रीमानजी मोटर तो गलत नहीं चला रहे थे, लेकिन आप जिस होशियारी से मोटर चला रहे थे, मुझे पता चल गया कि आपके पास मोटर चलाने का लाइसेंस नहीं है।" –एम० आर

★

अपनी अंगीठी आप खुद बना लें

डैरेल हफ

घर में खुरदरे पत्थरों की बनी हुई अंगीठी हो, तो उसका अपना ही आनंद है।

एक साधारण अंगीठी आपको एक ही ओर से गरमी पहुंचाती है। पर वह अंगीठी आपको चारों ओर से गरमी पहुंचायेगी, जो लोहे के किसी ऐसे अग्निकुंड के इर्द-गिर्द बनायी गयी हो, जिसमें हवा खुले रूप से घूम-फिर सकती हो। ऐसी अंगीठी पूरे घर को गरम रखेगी।

इस अंगीठी के लिए सबसे पहले जरूरत पड़ती है लोहे के बने एक अग्निकुंड की। जब वह अग्निकुंड गरम हो जाता है, तो उसकी दीवारें गरमी को पूरे कमरे में फैलाती हैं। अग्निकुंड विभिन्न आकारों में मिल सकता है। उसका चुनाव कमरे के आकार के अनुपात से ही करना चाहिये।

अंगीठी के नीचे सबसे पहले बुनियाद के तौर पर सीमेंट और कंक्रीट का ठोस फर्श बनाना चाहिये। अग्निकुंड को उसके ऊपर रखा भी जा सकता है और लटकाया भी जा सकता है। राख के लिए एक ऐसा गड्ढा खोदना भी जरूरी है, जिसके एक ओर दरवाजा लगा हुआ हो, ताकि जरूरत पड़ने पर उसमें से राख बाहर निकाली जा सके।

सीमेंट-कंक्रीट का फर्श दो फुट से तीन फुट तक चौड़ा होना चाहिये। इस फर्श के ऊपर, अग्निकुंड के चौतरफा, ईंटों या पत्थरों की दीवार उठानी होगी। उस दीवार के लिए अगर पत्थरों का प्रयोग करना हो, तो पत्थरों को किसी भी आकार में हथोड़े घड़ा जा सकता है।

पत्थरों को आपस में जोड़ने के लिए सीमेंट, प्लास्टर, रेत और पानी को आपस में मिलाकर काम में किया जा सकता है। यह ध्यान रहे कि लोहे के अग्निकुंड का आकार, उभर कर सामने आना चाहिये।

दीवार में नालियां बनानी जरूरी हैं, जिससे उनमें से हवा आ-जा सके। अंगीठी क्योंकि बड़े कमरे के बीच में बनायी जायेंगी, इसलिए वे नालियां जो हवा अंदर आने के लिए हों, दीवार के पीछे की ओर बनायी जायें। हवा बाहर निकलने के लिए जो नालियां हों, वे दीवार के दोनों सिरों पर बनायी जायें, ताकि पूरे कमरे की गरमी मिल सके। यह नालियां बनी बनाई भी बाजार से खरीदी जा सकती हैं।

अग्निकुंड पर जो दीवार बनायी जाये, वह छोटी भी हो सकती है और अगर आप चाहें, तो उसे ऊपर छत तक भी उठा सकते हैं। अंगीठी के ऊपर जो चिमनी बनायी जाये, वह घर की छत से दो फुट ऊंची हो ही।

इस प्रकार आप जो अंगीठी बनायेंगे, उसकी सुंदरता व उपयोगिता, दोनों में निराली होगी।

★

भावना का रंग

घुल चुके हैं भाव के सब रंग मेरे
धुल चुका है वेदना का पट
असंख्य अनमने-से
कल्पना के शिशु,
नये आकार पाना चाहते हैं।
हर सृजन में सोचती है तूलिका
किस रंग से धरती बने,
जिसका नया आकाश हो,
जिसकी दिशाओं पर
नया सरगम बजे,
जिस पर नयी आयें बहारें
और
सब कुछ नया उतना हो
कि जितना अब तलक
है दीखता जैसे पुराना।

—अमरनाथ

गजल

कहीं सावन, कहीं गगन बरसे;
जाने किस याद में नयन बरसे !
क्या हो साकार स्वप्न समता का ;
कहीं माटी, कहीं रतन बरसे ।।
कैसा अचरज है, एक ही पल में;
कहीं जीवन, कहीं मरण बरसे ।।
नीले आंचल में चमक संदल की,
मानो, आकाश से किरन बरसे ।।
याद की गंध, महक बूंदों की;
ऐसा लगता है ज्यों अगन बरसे ।।
काली अलकों से सरकती बूंदें ;
जैसे थम-थम के कोई घन बरसे ।।

—दिनेश भ्रमर

क्या घर में आपकी पूछ है ?

यदि नहीं, तो यहां आपके लिए कुछ वैज्ञानिक गुर पेश हैं।

जान ई० गिब्सन

अच्छा बताइये, आपके घर में किसकी चलती है ? पारिवारिक समस्याओं अथवा आवश्यकताओं को लेकर आपके यहां किसकी बात मानी जाती है ?

विज्ञान इस विषय का अध्ययन कर रहा है कि घरेलू मामलों में कौन किसे प्रभावित करता है और कैसे ?

इस तथ्य का उद्घाटन करने के लिए आयोवा राज्य विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के प्राध्यापक विलियम एफ० केनकेल के निर्देशन में ७५० दंपति-समूहों में से ५० जोड़े चुने गये ।

प्रत्येक दंपति से कहा गया कि वे कल्पना करें कि उन्हें लगभग तीन सौ डालर इस शर्त पर दिये गये हैं कि न तो यह रकम बचाकर रखनी है और न किसी ऐसी वस्तु पर खर्च करनी है, जिसे खरीदने के लिए वे पहले ही सहमत हो चुके हों । उन्हें कहा गया कि वे परस्पर परामर्श करके तय करें कि यह रकम वे सम्मिलित रूप से किस प्रकार खर्च करना चाहेंगे । आधे घंटे में यह निर्णय ले लें और खरीदी जानेवाली व्यक्तिगत और घरेलू चीजों की एक सूची बना दें ।

प्रत्येक परिवार के वार्तालाप को एक निरीक्षक सुनता था और उसे टेप पर रिकार्ड कर लिया जाता था । इस बातचीत के दौरान किन-किन वस्तुओं को खरीदने के लिए सुझाव रखे गये, पति व पत्नी में से किसने वे सुझाव रखे, सुझायी हुई वस्तु का मूल्य क्या था, और अंत में उस वस्तु को खरीदना तय हुआ अथवा नहीं--इन सभी बातों की तालिका बनायी गयी ।

और इस प्रकार प्रत्येक पति और पत्नी के व्यक्तित्व की प्रभावशालिता स्पष्ट हो गयी । जिस स्त्री या पुरुष का अंतिम सूची बनाने में जितना हाथ रहा, उसके आधार पर उसके प्रभाव का क्रमांक तय किया गया ।

पति-पत्नी द्वारा अंततः स्वीकृत सूची की वस्तुओं में जिस स्त्री या पुरुष का एक-तिहाई से भी कम चीजों को खरीदने का सुझाव रहा था, उसे कम प्रभावशाली व्यक्तित्ववाला माना गया । जिनकी सुझायी

हुई चीजों की संख्या एक तिहाई से दो तिहाई तक थी, वे अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्ववाले माने गये ।

वस्तुओं का चुनाव करते समय प्रत्येक पति और पत्नी के व्यवहार का विश्लेषण बहुत ध्यान से किया गया । अध्ययनकर्ताओं ने इस बात पर भी गौर किया कि वार्तालाप में किसने कितना भाग लिया, सुझाव देने में किसने अधिक तत्परता दिखायी, किसकी राय अधिक मान्य हुई तथा बातचीत को सहज-सरल बनाये रखने में किसने अधिक सहायता की ।

देखा गया कि व्यक्तित्व के मापने की इस प्रणाली के अनुसार जिनके व्यक्तित्व प्रभावशाली माने गये, उनमें से ७१ प्रतिशत पतियों ने अधिकांश बातचीत की । मध्यम श्रेणी के प्रभाववाले पतियों में से ५७ प्रतिशत ने वार्तालाप में सक्रिय भाग लिया । किंतु जिन पतियों के व्यक्तित्व में प्रभावशालिता की मात्रा नगण्य थी, उन्होंने बहुत कम बातचीत की । अन्वेषकों ने इससे यह नतीजा निकाला कि जो पति अपनी पत्नी को वाक्-पटुता में जितना पीछे छोड़ता है, व्यक्तित्व उतना ही प्रभावशाली होता

मगर पत्नियों की बात कुछ और ही अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पति वा चाहे कितनी ही ज्यादा क्यों न करें प्रभावशाली व्यक्तित्ववाली पत्नियां ही अपनी बात मनवा लेती हैं । यह पत्नियों पर लागू नहीं होती वे जितना अ बोलेंगी या अ सुझाव पेश करें उतना ही अ अपने जीवन-साथी प्रभावित भी करें वास्तव में जि पत्नियों का व्यक्ति अत्यधिक प्रभाव माना गया, उन्हों अपनी ओर से क कम सुझाव किये थे ।

परिवार के आधार

पतियों के लि यहां एक बात करने योग्य है । यदि पत्नी आपके एक सु को अस्वीकार कर दे, तो हाथ पर हाथ बैठे न रहिये । फौरन कुछ नये सुझाव कर दीजिये ।

डा० केनकेल के उपर्युक्त अन्वेष दंपतियों की बातचीत के लहजे पर ध्यान दिया गया । अपने साथी को

रखते हुए हंसी-मजाक के साथ वार्तालाप को अबाध रूप से चलाये रखने की क्षमता, दूसरे के सम्मान का खयाल रखते हुए उसके प्रति उचित स्नेह का प्रदर्शन करना—ये गुण बातचीत में निपुण होने के पर्याय माने गये। जिन पत्नियों ने इस तरीके को अपनाया, उन्होंने सहज ही अपना उद्देश्य पूरा कर लिया। इस दौरान अन्वेषणकर्ताओं के हाथ जो स्वर्णसूत्र लगा, वह यह है कि यदि महिलाएं इस तरीके को अपनायें, तो आराम से मैदान मार सकती हैं। हां, पुरुष इससे बहुत अधिक लाभान्वित नहीं होते। देखा गया है कि कूटनीति का प्रयोग करनेवाले पुरुष प्राय: न घर के रह पाते हैं न घाट के। जिन पतियों ने जोर-जोर से, अथवा देर तक बोलकर अपनी पत्नियों को अपने विचारों से अवगत कराया, वे ही अंत में उच्च अथवा मध्यम श्रेणी के प्रभावशाली व्यक्तित्ववालों की गिनती में आये।

पत्नियों को चाहिये कि पतियों को समझाने का खेल जरा सावधानी और चतुराई से खेलें और बाजी जीत लें। बातों का सिलसिला तोड़कर बीच-बीच में अपने पति की थोड़ी-बहुत प्रशंसा करती रहें, जिससे वे अपने को विशिष्ट तथा सम्मानित व्यक्ति अनुभव करें। उनके आत्मसम्मान को जगाती रहें, उनके चुटकुलों पर जी खोलकर हंसें। और हां, अगर वे मूर्खतापूर्ण बात भी कह दें, तो भी बिगड़ें नहीं। वार्तालाप के समय यदि आपको किसी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ जाये, तो घबरायें नहीं। चतुराई से विषय को बदल दें और जब देखें कि श्रीमान का मिजाज ठीक हो गया है, तो पुन: उसी विषय पर आ जायें। ऐसा करने पर बहस में अपनी पत्नी से हारकर भी पतिदेव प्रसन्न ही नजर आयेंगे।

साधारणतया पत्नियों की अपेक्षा पति अधिक प्रभावशाली होते हैं। पर उपर्युक्त प्रयोगों के दौरान पाया गया कि अधिकांश पति अपने आपको जितना प्रभावशाली समझते हैं, उतने वास्तव में होते नहीं। इसके विपरीत महिलाओं का हाल यह है कि वे वास्तव में जितनी प्रभावशाली होती हैं, उससे कम ही अपना मूल्य आंकती हैं।

जिन ५० दंपतियों को अध्ययनार्थ चुना गया था, वे दो भागों में विभाजित कर दिये गये थे। एक भाग का निरीक्षण पुरुषों ने किया, दूसरे भाग का स्त्रियों ने। महिला के निरीक्षण में महिलाएं अधिक मुखर दिखाई दीं तथा उन्होंने अपेक्षाकृत अधिक अंक प्राप्त किये; उनमें प्रभावित करने की क्षमता दुगनी हो गयी। इसके विपरीत, महिला की उपस्थिति में पुरुष कुछ संकुचित हो उठे। उनकी बातचीत उतनी आकर्षक नहीं रही। फलस्वरूप उनके विजयी होने का योग बहुत कम रह गया।

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू मामलों पर बातचीत के वक्त स्त्री की उपस्थिति में स्त्रियों के और पुरुष की उपस्थिति में पुरुषों के विजेता होने का अवसर रहता है।

★

सेमल की फलियां

धीरेंद्र

पछिया के झोंके पर ढेर-सी सेमल की रुई इधर-उधर छितरा उठी और टें-टें करता सुग्गों का झुंड पूरब के आकाश में उड़ता-उड़ता क्षितिज के पास की जामुनी गाछी में समा गया ।

चरणदास ने एक लंबी सांस ली और घुटने तक बंधी गमछी को कुछ ढीला कर टट्टर से पीठ टेककर लेट गया । सेमल की बिखरी हुई रुई और टें-टें करता सुग्गों का झुंड ! ......बचपन से ही चरणदास सुनता आया था कि सुग्गे सेमल की फली के पकने की आशा में ताक लगाये रहते हैं कि अब पकी, अब पकी । और जब फलियां पककर लाल हो जाती हैं, तो सुग्गा मीठे फल की आशा से चोंच गड़ाता है, पर पाता है क्या ?...... रूखी-रूखी-सी रुई और फिर निराशा से चीखता हुआ उड़ जाता है ।

चरणदास के लिए यह कहानी पुरानी हो गयी थी, पर आज जब झूठी-झूठी-सी लगनेवाली यही कहानी उसके जीवन के किनारे को छूती हुई सपाटे से निकल गयी, तो अनायास चरणदास सुग्गों के प्रति सहानुभूतिशील हो उठा ।......सुग्गे की आत्मा के तार से उसे अपने हृदय का तार बंधा-सा लगा और क्षण-भर के लिए एक मिलानेवाली टीस ने उसे विकल कर मन-ही-मन बुदबुदाया चरणदास–"मैं तो सुग्गे की भांति ही सेमल की फलियां इंतजार करता रहा हूं और मुझे भी तो णाम में सूखी रुई ही मिली है ! और टेढ़ी-मेढ़ी छोटी-सी स्मृति-रेखा के मानस-पटल पर रेंगने लगी और आंखें बंद कर लीं ।

वैसे छुटपन में ही चरणदास की हो चुकी थी, पर उसका दांपत्य- पच्चीस वर्ष की उम्र में आरंभ हुआ। गौने के बाद अपनी पत्नी को घर सुशीला जैसी मेहनती पत्नी प्राप्त चरणदास निहाल हो उठा और जीवन फूलों के बिछावन की भांति कोमल मादक लगने लगा । मादकता के उसी पर झूलते हुए चरणदास ने जीवन की सुखदायी पेंगें भी भरीं और उसकी बाटिका में दो सुकुमार फूल मुस्करा चरणदास दो बेटों का बाप बन गया। जाने क्यों आज भी भारत में नयी प्रजा वृद्धि शुभ ही मानी जाती है, भी एक सामान्य आदमी की भांति

वृद्धि से प्रसन्न ही हुआ ।

दो बीघे जमीन का मालिक था चरणदास महतो । उसकी खेती प्रसिद्ध हो चुकी थी और लोग उसे खुशी-खुशी बटाई देते थे । गांव के बाबू लोग अपनी जमीन चरणदास को ही देते —“बहुत मन से खेती करता है वह !” उनकी धारणा थी और सचमुच बटाई में चरणदास जितना बांट देता था, उतना वे लोग खुद खेती करके भी नहीं पाते थे । कहां दरवाजे पर बैठकर शतरंज खेलनेवाले बाबू लोग और कहां तपे वैशाख और भरे भादों में खेतों के पीछे बेहाल चरणदास ! हर मां अपने सेवा करनेवाले बेटे को कुछ अधिक मानती है । सो, धरती मैया की भी चरणदास पर अच्छी नजर थी । खाते-पीते लोगों में उसकी गणना होती थी ।

यही कारण था कि जब चरणदास के दो बेटे हुए, तो उसे इसका जरा भी सोच न हुआ, प्रत्युत प्रसन्नता ही हुई —“अपना-अपना भाग है ! जो मुंह चीरकर भेजता है, वह पेट भर ही देता है ।” चरणदास की धारणा थी ।

वैष्णव-धर्मी चरणदास साल में एक छोटा-मोटा भंडारा जरूर करता, जिसमें सौ-सवा-सौ साधु प्रसाद पाते । चंदा देने में भी सबसे आगे था वह—चाहे गेंद का चंदा हो, या स्कूल बनाने का ।

धर्म-कर्म के बाद यदि किसी वस्तु से चरणदास का प्रेम था, तो वह थी विद्या । खुद तो वह लोअर प्राइमरी से आगे न बढ़ पाया था, पर अपने बेटों को ज्यादा-से-ज्यादा पढ़ाने की ख्वाहिश रखता था वह ।

बड़ा लड़का रामकिसुन ज्यों ही पांच बरस का हुआ, चरणदास ने गांव के लोअर प्राइमरी स्कूल में उसका दाखला करवा दिया । भगवानजी की कृपा । रामकिसुन का मन भी पढ़ने में जम गया और वह एक-के-बाद एक परीक्षा पास करने लगा । उसकी सफलता चरणदास के मंसूबे को बढ़ा रही थी ।

जिस दिन रामकिसुन ने बी० ए० की परीक्षा पास की, उस दिन का क्या पूछना था ! चरण के पैरों में मानो पंख लग गये थे । रामकिसुन अब उसे कल का होनेवाला हाकिम लग रहा था—“हे सतगुरु ! रामकिसुन को हाकिम बनाना कि आंखें जुड़ाऊं !” चरणदास ने उस अज्ञात शक्तिमयी चेतना से प्रार्थना की, जिस पर उसकी अटूट आस्था थी । पर जैसे कोई कड़ा हाकिम आवेदन का मजमून देखे

किसानों में आदर्श—चरणदास

चित्र : इब्बार

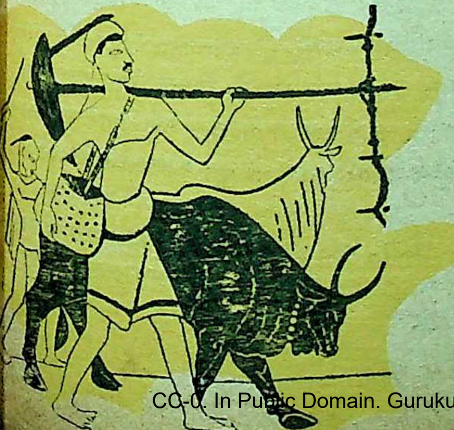

बिना, अपनी शान दिखाने के लिए उस पर 'रिजेक्ट' (अस्वीकृत) लिख मारता है, वैसे ही शायद उस अज्ञात शक्ति ने चरण के निवेदन को रिजेक्ट कर दिया।

चार बरसों से रामकिसुन नौकरी की खोज में दर-दर ठोकरें खा रहा है और आज उसका खत आया है कि वह काम की तलाश में कहीं दूर जा रहा है। यदि काम न मिला, तो वह लौटेगा नहीं।...चरणदास को पकी सेमल की रुई बिखरती दिखायी दे रही है। ...... उसे बेटे की कमाई का लोभ न था। वह तो केवल उसे सुखी देखना चाहता था। पर कहां हो सका यह ?

और इसीलिए छोटे लड़के जयकिसुन को उसने किताब के पैसे मांगने पर डांटकर भगा दिया और पढ़ाई को व्यर्थ बताया—"नहीं-नहीं, पढ़कर होगा ही क्या ?" उसने सोचा—"यह भी हाथ से चला जायेगा।" और देर तक आंखें मूंदे बैठा रहा। सेमल की रुई उड़ती रही। जब चरणदास ने आंखें खोलीं, तो जयकिसुन कब का जा चुका था और उड़ती हुई रुई को बटोरने ढेर सारे लोग जुट गये थे। ...... एक पतली-सी चेतना चरण के अंतर्मन में जगी। बिखरी हुई रुई को ये बटोरनेवाले ले जायेंगे, और फिर कल कोई दूसरा इसे उपयोग में लायेंगे। चरणदास के वात्सल्य को ठेस लगी। वह सोचने लगा—"जब तक सांस है, तब तक आस है। वह अपने काम से पीछे न हटेगा। वह जयकिसुन को भी पढ़ायेगा। बी० ए० करायेगा। वह फिर सेमल की फली का इंतजार करेगा। वह एक सुग्गा है, जो इंतजार करने और निराश होने के लिए ही बना है।......कौन जाने, जिस प्रकार बिखरी हुई रुई लोगों के काम आती है, उसी तरह बिखरी हुई रुई से उसके बेटे भी धरती के किसी काम आ जायें।......आशा की एक छोटी चिनगारी चरणदास के बुझते दिल में चमक उठी और उसने ममता से पुकारा "जयकिसुन, इधर आना बबुआ ...... ले जा किताब के पैसे।" पिता के स्वर में ममत्व का आभास पाकर जयकिसुन की बांछें खिल उठीं और आते हुए जयकिसुन को देख चरण को लगा, मानो सेमल की एक नयी फली उग आयी है।

अंतिम इच्छा

एक नवयुवक अपनी सोलह साला होनेवाली पत्नी की वर्षगांठ पर कुछ भेंट देना चाहता था, किंतु यह उसकी समझ में न आता था कि उसे क्या दे, जिससे वह एकदम खुश हो जाये। उसने कुछ परेशानी के पश्चात् अपनी मां से मालूम किया—"मां, अगर तुम कल १६ वर्ष की हो जाओ और तुम्हारी सालगिरह मनायी जाये, तो तुम कौन-सी चीज भेंट में लेना पसंद करोगी ?"

मां ने एक सर्द आह भरी और कहा—"बेटा, फिर मुझे किसी और चीज की जरूरत ही न होगी।"

—एम० आर०

* * *

उर्दू हास्य-कथा

शायर मकतल साहब

कन्हैयालाल कपूर

सुबह-सवेरे अभी मुंह-हाथ भी नहीं धोये थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई। पता चला, मकतल साहब आये हैं। कहने को तो आप मकतल हैं, पर आदतों और व्यवहार को देखा जाये, तो किसी कातिल से कम नहीं हैं। एक बार किसी मुशायरे में यों ही उनका जी रखने के लिए दाद दे बैठे थे। बस, उस दिन से लट्ठ उठाये हमारे पीछे फिर रहे हैं। एक बार आ जाते हैं, तो जाने का नाम नहीं लेते। कई बार तो यह शक होने लगता है कि वे घरवाले हैं और हम मेहमान। 'आदाब अर्ज है, किबला' के बाद हमेशा एक विजयी मुस्कराहट के साथ फरमाते हैं–"खुदा का शुक्र हैं, आप घर पर ही हैं। रात एक गजल हो गयी थी और गजल भी किबला इस पाये की कि सुनेंगे, तो फड़क उठेंगे। आपको फुर्सत हैं न ?" वे सोफे पर बैठ जाते हैं। और "किबला, अर्ज किया है," की माला फेरने लगते हैं। हर शेर दो बार, बल्कि तीन बार पढ़ते हैं और जब तक दाद हासिल न कर लें, माफ नहीं करते। सितम यह कि तरन्नुम से पढ़ते हैं, हालांकि गला ऐसा पाया है कि पहाड़ी कौवे जैसा लगता है।

सो आज जब "जल तू जलाल तू, आई बला को टाल तू" पढ़ते हुए हमने दरवाजा खोला, तो मकतल साहब हमेशा से ज्यादा खुश नजर आये और कहने लगे –"किबला, वैसे तो आपको सैकड़ों गजलें सुना चुका हूं, लेकिन इस गजल की शान ही और है। जरा बयान मुलाहजा फरमाइये और दिल खोलकर दाद दीजिये !"

उन्हें तशरीफ रखने को कहना पड़ा। और चारा ही क्या था।

फिर सोचा, अगर आवागमन की बात सही है, तो जरूर पिछले जन्म में कोई ऐसा गुनाह किया था, जो माफ नहीं किया जा सकता। उसीके बदले इस जन्म में मकतल साहब से वास्ता पड़ा है।

मकतल साहब ने हमारी घबराहट को कुछ भांपते हुए फरमाया – "क्या बात है, आज कुछ खोये-खोये नजर आ रहे हैं ? मालूम होता है, रात नींद नहीं आयी। वल्लाह, मीर ने क्या खूब कहा है –

मुझ गमजदा को नींद
न आयी तमाम रात

लेकिन किबला, इस मौजू पर अमीर का शेर बेनजीर है। फरमाते हैं–

कबाबे–सीख में हम करवटें
हरसू बदलते हैं ।
जो जल उठता है यह पहलू,
तो वह पहलू बदलते हैं ।।

कबाबे-सीख की तरकीब पर गौर फरमाइये । और फिर कितनी मुकम्मल तस्बीह की है ! खाकसार ने भी इसी रंग में एक शेर कहा था । बहुत उम्दा शेर था । कानपुर के मुशायरे में तीन बार पढ़वाया गया था । लेकिन अफसोस है, इस वक्त याद नहीं आ रहा है। वह शेर था–क्या था ? हां हां, याद आ गया–

सोना चाहें, तो सो नहीं सकते ।
रोना चाहें, तो रो नहीं सकते ।।

सलासत जवान की दाद चाहता हूं । देखिये, कितना साफ शेर है !"

मकतल साहब
जो घर आकर जाने का नाम नहीं लेते

मकतल साहब यह सब एक सांस में कह जाते हैं और हम दिल-ही-दिल में सोचते हैं कि इनका शेर इस किस्म का है, जिस पर अगर न भी रोना चाहें, तो बड़ी आसानी से रो सकते हैं । बल्कि इतना ही नहीं सिर भी पीट सकते हैं ।

तभी मकतल साहब कहते हैं–"किबला, पहले इस गजल की शान मुलाहजा फरमाइये । चंद दिन हुए खाकसार एक मजलिस में चला गया–यों ही गलती से। वहां एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई । उन्होंने फरमाया कि वे बहुत जल्द अल्लाह को प्यारे होनेवाले हैं। मैंने चट उन्हें एक खानदानी नुस्खा बताया और कहा कि एक बार इस्तेमाल करके देखिये, अगर आप 'अभी तो मैं जवान हूं' न गुनगुनाते फिरें, तो खाकसार का मकतल नाम नहीं । वह आंखों में आंसू भरकर कहने लगे–

'नाजुकी इसके लब की क्या कहिये । पंखुड़ी इक गुलाब की-सी है ।।'

किबला, ज्यों ही उन्होंने यह शेर पढ़ा, मुझे गजल का मौजू सूझ गया । मैंने सोचा, क्यों न इस पर कुछ कहा जाये । सारी रात सोचते हुए काटी । सुबह पांच बजे मतला (गजल का पहला शेर) हुआ । और अब साढ़े पांच बजे आपकी खिदमत में हाजिर हो गया हूं । अर्ज किया है ......"

"इरशाद !" हम मरी हुई आवाज में कहते हैं ।

"मतला अर्ज करता हूं–

आह कैसे फलक पे जायेगी ।
जाके फिर वां से कैसे आयेगी ।।"

हम मजाक में कहते हैं–"जाहिर है मकतल साहब कि राकेट के बिना आह न आसमान पर जा सकती है और न जाने के बाद वहां से वापस आ सकती है ।"

मकतल साहब एक खिसियानी मुस्कराहट के साथ फरमाते हैं —"किबला, आप तो मजाक करने लगे । जरा संजीदगी से शेर की बारीकियों को समझने की कोशिश कीजिये । नया खयाल बांधा है, उस पर दाद चाहता हूं ।"

"वाकई अछूती बात पैदा की है आपने !"

"जी हां," मकतल साहब कुर्सी से उछलकर फरमाते हैं —"यही तो इस शेर की खूबी है । जरा देखिये न —

आह कैसे फलक पे जायेगी ।
जाके फिर वां से कैसे आयेगी ।।

कैसे की तकरार ने शेर को कहां-से-कहां पहुंचा दिया हैं ।"

"बहुत खूब मकतल साहब !"

"आदाब अर्ज ! शेर अर्ज करता हूं—

हम तो जायेंगे खैर मकतल में ।
आपकी याद भी तो आयेगी ।।"

"सुभान अल्लाह ! कमाल कर दिया मकतल साहब, मतले के फौरन बाद ही मकता (गजल का अंतिम शेर) ! मेरे खयाल में शायद यह आपकी सबसे छोटी गजल है ।"

"नहीं किबला, आपको गलतफहमी हुई है । यह मकता हरगिज नहीं । 'मकतल' इस शेर में बतौर तकल्लुख (उपनाम) इस्तेमाल नहीं हुआ हैं । मकता तो अठारह अशआर (शेरों) के बाद आयेगा । हां, दाद तो दीजिये न, इस शेर की ।"

"अच्छा शेर है ।"

"अच्छा नहीं साहब, बहुत अच्छा कहिये ! शायद आपने गौर से नहीं सुना । एक बार फिर पढ़ देता हूं ......।"

और उस शेर के पुन:पाठ के बाद वे सोलह शेर और सुनाते हैं । और हर शेर के बाद दाद पाने की याचना-भरी नजर से हमें देखते हैं । पर हम बार-बार घड़ी की तरफ देखते हैं कि शायद वह इशारा समझ जायें और हमें माफ कर दें । लेकिन मकतल साहब भी कच्ची गोलियां नहीं खेले हैं । हमारा ध्यान खींचने के लिए हमारा कंधा झंझोड़कर कहते हैं—"दाद दीजिये न साहब, यह शेर तो खास तौर पर आपकी तवज्जोह का मुस्तहक (हकदार) है ।"

खुदा-खुदा करके गजल खत्म होती है । हम पंद्रहवीं बार घड़ी की तरफ देखते हैं । फिर कहते हैं—"अच्छा मकतल साहब, हमें लेक्चर तैयार करना है । अब आप आराम कीजिये ।"

वे कहते हैं—"बस एक नज्म और सुन लीजिये । उसके बाद मैं खुद ही इजाजत चाहूंगा ।"

"बहुत लंबी तो नहीं ?"

"अजी कहां ? सिर्फ सोलह बंद हैं । और वह भी बीस-बीस अशआर के ।"

"गुस्ताखी माफ, फिर कभी सही । इस वक्त फुर्सत जरा कम है ।"

"आप तो खामख्वाह घबरा रहे हैं । मेरी खातिर सिर्फ चंद मिनिट की तकलीफ गवारा कर लीजिये । देखिये ! कभी-कभार तो आप घर पर मिलते हैं । और फिर अगर आप-जैसे कद्रदान को न सुनाऊं, तो किसे

सुनाऊं ? आखिर जुम्मन तेली को तो सुनाने से रहा ।"

हमें जुम्मन तेली से ईर्ष्या होने लगती है कि वह कद्रदान नहीं है, जिससे वह मकतल साहब से बचा हुआ है ।

आखिर नज्म के खात्मे पर इत्मीनान की सांस लेते हैं, पर मकतल साहब यह कहकर कि इस नज्म का अगला हिस्सा शाम को सुनायेंगे, सारा मजा किरकिरा कर देते हैं ।

उस दिन शाम को किसी दोस्त के यहां शरण लेनी पड़ती है । और वे सारी शामें एकाएक याद आने लगती हैं, जो मकतल साहब से बच निकलने के लिए हमने कई जगहों पर गुजारी थीं । और इतना करने पर भी कई बार पकड़े गये थे । उदाहरण के लिए एक शाम–जब हम उन्हें सामने आते देखकर अपने धोबी के घर में जा घुसे, तो उन्होंने हमें वहां से भी ढूंढ़ निकाला और अपने घर ले जाकर आठ रुबाइयां, बारह कतआत, और छः गजलें सुनायीं ।

एक दिन पार्क में मिल गये, वहीं पर एक न दो, पूरी चार लंबी-लंबी नज्में सुनायीं ।

आम तौर पर अकेले में जब अपनी बेबसी पर गौर करते हैं, तो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि मकतल साहब से छुटकारा पाने के लिए सिर्फ एक ही तरीका है कि यह शहर छोड़कर किसी दूसरे शहर में जा बसें । फिर खयाल आता है, अगर मकतल साहब वहां भी आ धमके, तो फिर क्या करेंगे ?

★

भारत में विदेशी पेड़-पौधे

यह बात गलत है कि पिछले दो हजार वर्षों से भारत में खेती में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । इस अरसे में कितने ही नये पेड़-पौधे भारत में आये हैं और खेती की विधियों में लगातार संशोधन होता आया है ।...... बाजरा और ज्वार अफ्रीका से भारत पहुंचे । अंगूर की खेती यहां ईरान और अफगानिस्तान से आनेवाले आक्रांता मुसलमानों ने १३०० के आसपास शुरू करायी । मुगल बादशाह अकबर और जहांगीर को बागवानी का बड़ा शौक था । उन्होंने मध्य एशिया से चिनार और हूर तथा काबुल से बोतल (चेरी फल) के पौधे मंगाकर पहले-पहल कश्मीर में रोपवाये । लेकिन भारतीय खेती की अर्थ-व्यवस्था पर सबसे गहरा असर डाला पुर्तगालियों ने । उन्होंने सत्रहवीं सदी में तंबाकू, मूंगफली, आलू, शकरकंद मक्का, पपीता और अनन्नास का परिचय हमें कराया । ये सभी चीजें वे नयी दुनिया से लाये, टमाटर स्पेनी खोजियों के हाथों १५३५ में यूरोप पहुंचा और अठारहवीं सदी के अंत में भारत आया । उसी सदी के अंतिम चरण में अंग्रेजों ने चीन से चाय, लीची और लुकाट का तथा यूरोप से पत्ता गोभी, फूल गोभी आदि सब्जियों का भारत में प्रवेश कराया । विदेशों से पौधों के प्रवेश का ताजातर महत्वपूर्ण उदाहरण है आस्ट्रेलिया का रिडले गेहूं, जो हिमाचल प्रदेश में अच्छी फसल दे रहा है ।

–डा० एम० एस० रंधावा

★

अंधों का हकीम

अब्दुल्लाह कहार

अहमद पहलवान मौत की प्रतीक्षा कर रहा था । वैसे वह मरना नहीं चाहता था, पर लाचार था । वह एक भेड़ की तरह बंधा हुआ था और उसे मौत के घाट उतारने वाला जल्लाद उसके पास खड़ा था ।

उस जल्लाद ने अहमद पहलवान को जोर से ठोकर लगायी और वह लड़खड़ाता हुआ उस चबूतरे के सामने जा कर रुका, जहां गदेलों पर टोली का सरदार बैठा हुआ था–काना कुरबाशी । उसके दायीं ओर कुबड़ा उलेम बैठा था, जो उसका धार्मिक सलाहकार था, और बायीं ओर हिन्दुस्तानी हकीम तबीब बैठा था । उसके पीछे बैठा हुआ था उस घर का मालिक, जिसकी शक्ल चमगादड़-जैसी लगती थी ।

कुरबाशी ने अभी-अभी पुलाव की भरी हुई प्लेट खतम की थी । चेचक के दागों से भरे उसके चेहरे पर चिकनाहट चमक रही थी और उसकी घनी उलझी हुई दाढ़ी में चावलों के दाने फंसे हुए थे । वह इतना खा चुका था कि उसका शरीर शिथिल हो रहा था, उसकी आंखें नींद से बोझिल होकर मुंदी जा रही थीं ।

पूरा जोर लगाकर उसने आंखें खोलीं और उसके मुंह से निकला–"नरक के कीड़े ! बता अपने साथियों के नाम ।"

अहमद पहलवान चुप रहा । वह जो कुछ बता चुका था, उससे अधिक और क्या बता सकता था ? हां, उसने इस्माइल को जान से मार डाला था और इस काम में वह अकेला ही था, उसका कोई दूसरा साथी नहीं था ।

कुरबाशी इस्माइल को अपना दायां हाथ समझता था । जब लड़ाई में लाल तारेवाले एक घुड़सवार फौजी की गोली इस्माइल को लगी थी, तो कुरबाशी गुस्से में आकर, घमासान लड़ाई में से उस घुड़सवार को पकड़ लाया था और अपनी काठी पर डालकर पहाड़ की ओर ले भागा था, जहां उसका खातमा करके उससे इस्माइल का बदला ले लिया था । हालांकि लाल फौजियों ने उसका पीछा भी किया था, पर वह उनके हाथ नहीं आया था ।

और जब घायल इस्माइल को लिये हुए कुरबाशी अपने कुछ साथियों के साथ उस गांव में पहुंचा, जहां अहमद पहलवान रहता था, तब रात हो चुकी थी । इस्माइल इतनी बुरी तरह जख्मी हो चुका था कि उसे और

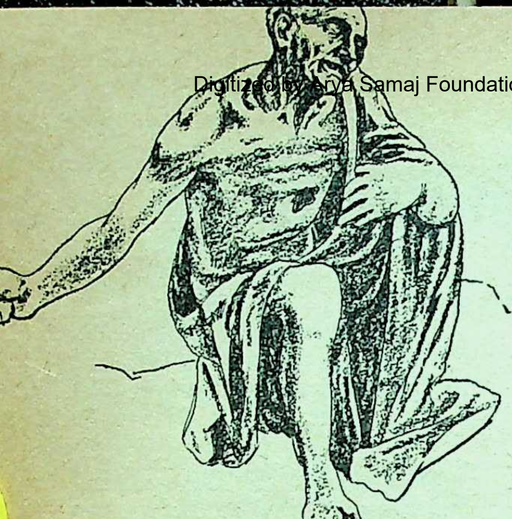

उत्पीड़न और उत्सर्ग

चित्र : लियोनार्दो दा विंची

आगे ले जाना संभव नहीं था । सो कुरबाशी ने उसे उसी गांव में छोड़ना ठीक समझा । पर वहां किसके यहां छोड़े ? वह उसे किसी अमीर के घर में नहीं छोड़ सकता था; क्योंकि लाल फौजी सभी अमीरों के विरुद्ध थे और उन्हें शक की नजर से देखते थे । आखिर उसे अहमद पहलवान का घर रास आया । अहमद गरीब था, उस पर किसी का शक भी नहीं जा सकता था ।

जब कुरबाशी इस्माइल को अहमद पहलवान के यहां छोड़कर आगे बढ़ गया, तो अहमद से और प्रतीक्षा न हो सकी । उसने कुल्हाड़े के एक ही वार से इस्माइल का सिर धड़ से अलग कर दिया ।

सैंतीस दिन के बाद कुरबाशी उस गांव में लौटा । वह इस्माइल की मौत के बारे में सुन चुका था । उसने अहमद पहलवान को बंधवाकर एक गठरी की तरह अपनी काठी के साथ लटका लिया । दो दिन तक वह उसी हालत में काठी के साथ झूलता रहा ।

और अब वह उसके सामने खड़ा था ।

“काफिर कहीं के !” कुरबाशी फिर गरजा—“तैयार हो जा मरने के लिए !”

अहमद पहलवान ने पीठ के पीछे बंधे हुए अपने हाथों की उंगलियां चटखायीं और फिर बोला—“मेरे शाह, मैं सब कुछ बता चुका हूं और अब मरने के लिए तैयार हूं । पर मरने से पहले मैं आपके काम आ सकता हूं ।”

“तू मेरे क्या काम आयेगा ?” कुरबाशी फिर दहाड़ा—“मैं तेरी चालाकी जानता हूं । मैं तेरे आर-पार देख सकता हूं ।”

“अभी आप मुझे एक आंख से देख रहे हैं; पर अगर चाहें, तो दो आंखों से भी देख सकते हैं । आप शायद नहीं जानते कि मैं अंधी आंखों का इलाज जानता हूं ।”

कुरबाशी अचानक तबीब की ओर मुड़ा—“तबीब !” उसने कहा—“इस कुत्ते से यह भेद लेकर मैं तुम्हें तोहफे के तौर पर पेश करूंगा । तुम्हें हिकमत का ज्यादा इल्म नहीं है; क्योंकि तुम अपना खुद का बुखार ही दूर नहीं कर सकते, रोज रात को बुखार से कांपा करते हो । आज आंखों के इलाज का भेद पा लो । तुम और भी बड़े तबीब बन जाओगे ।”

यह कहकर कुरबाशी बेतहाशा हंसने लगा । फिर उसने अहमद पहलवान से

पूछा—"क्या कभी तूने किसी की अंधी आंखों को रोशनी दी है ?"

"मैंने नहीं दी; पर मेरे उस्ताद ने दी थी और वह खुद अंधा हो गया था।"

"वह क्यों ?" कुरबाशी ने एकदम हैरानी से पूछा।

"यह इलाज ही ऐसा है कि दूसरे की आंखें ठीक करने पर अपनी आंखें जाती रहती हैं !"

कुरबाशी ने सोचा कि इस मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। यह इलाज आजमाकर देखना चाहिये।

"तो कैसे करेगा यह इलाज ?" उसने अहमद से पूछा—"दवा के लिए किन चीजों की जरूरत पड़ेगी ?"

पहलवान ने एक पौधे का नाम लेकर कहा कि उसके छः फूल चाहिये, इसके अलावा एक अंडा, एक चम्मच शहद, चुटकी-भर सफेद जीरा, तांबे की केटली, और मोमबत्ती।

तुरंत इन चीजों का प्रबंध कर दिया गया। अब पहलवान ने तबीब को दवा तैयार करने के लिए कहा; क्योंकि उसके अपने हाथ बंधे हुए थे। जैसे-जैसे वह बताता गया तबीब दवा तैयार करता गया। केटली आग पर चढ़ा दी गयी थी और उसमें एक-एक कर बाकी चीजें डाली जा रही थीं।

इस बीच में तबीब सोच रहा था कि यदि यह इलाज सचमुच सफल सिद्ध हुआ, तो वह अपने देश लौट जायेगा और इस इलाज से खूब धनवान बन जायेगा। देश-भर के हकीम उसकी हिकमत का लोहा मान जायेंगे।

जब केटली में काढ़ा तैयार हो गया, तो पहलवान ने कहा—" मेरे शाह, मुझे अब आदमी का लहू चाहिये।"

"वह कहां से मिलेगा ?" तबीब ने चिंतित होकर कहा।

"मैं देता हूं वह लहू", तभी पहलवान ने कहा—"शाह, किसी को मेरी उंगली काटने के लिए कहिये।"

"खोल दो इसके हाथ !" कुरबाशी ने कहा—"और दो आदमी तलवारें लेकर इसके दोनों तरफ खड़े हो जाओ। एक आदमी इसकी उंगली काटे।"

पहलवान ने लकड़ी के एक टुकड़े पर अपनी उंगली रखी और पास खड़े आदमी से कहा—"काट डालो।"

एक क्षण सब पर चुप्पी छा गयी। दूसरे क्षण उसकी उंगली काट डाली गयी। उसके लहू से एक प्याला भर लिया गया।

पहलवान दर्द के कारण दांत भींचे हुए था। उसकी आंखें बंद थीं। कुछ देर बाद उसने आंखें खोलीं और धीरे-से कहा—"अब एक पत्थर चाहिये, जिसका एक सिरा नुकीला हो।"

जब वैसा पत्थर लाया गया, तो पहलवान ने कहा कि उसे इस काढ़े में भिगोया जाये और सूखने के लिए रख दिया जाये। उसके सूखने तक उसने आराम करने की इजाजत मांगी।

कुरबाशी ने इजाजत दे दी। पहलवान बैठ गया और उसने सिर झुका लिया। उस

हालत में बैठा हुआ वह बड़ा दयनीय लग रहा था, जैसे किसान काम करने के बाद थककर खेत में बैठा हुआ हो । कुरबाशी उसे देखता रहा । उसका दिल पत्थर का बना हुआ था । उसने हजारों लोगों को मौत के घाट उतारा था और उसके दिल में कभी दया पैदा नहीं हुई थी । पर उस समय पता नहीं क्यों, उसे पहलवान पर दया आयी । आखिर यह आदमी क्यों उसकी आंख का इलाज कर रहा है और बदले में खुद अंधा बन रहा है ? कहीं यह बदले में अपनी जिंदगी की भीख तो नहीं मांगना चाहता ? पर नहीं, इसे जिंदगी नहीं मिल सकेगी । यह इस्माइल का कातिल है और मुझे तब तक चैन नहीं मिलेगा, जब तक इसे मरवा नहीं डालूंगा...... और वह एकाएक गरज उठा –" अब कब तक बैठा रहेगा ? उठ, अपना काम कर !"

"जो हुक्म शाह !" पहलवान धीरे-से उठा–" पत्थर शायद सूख गया होगा । मंगवाइये पत्थर ।"

पत्थर लाया गया ।

"इससे पहले कि मैं इलाज शुरू करूं, मैं चाहता हूं ......" पहलवान ने कहना शुरू किया ।

"कि मैं तुझे माफी दे दूं ।" कुरबाशी ने उसकी बात काटकर कहा –" जानता है, तू इस्माइल का कातिल है !"

"हां, मैं उसका कातिल हूं, जिसने गांव को आग लगायी, लोगों को कत्ल किया, लूट मार की ......"

"जबान बंद कर, कुत्ते !" कुरबाशी जोर से गरजा–"इलाज कर !"

पहलवान ने आवाज नरम करके कहा–" मैं माफी चाहता हूं शाह, मेरा यह मतलब नहीं था ......हां, तो मैं चाहता हूं कि जब आपकी आंख में रोशनी आ जाये और मैं अंधा हो जाऊं, तो मुझे उसी वक्त मरवा दिया जाये । मैं अंधा बनकर जिंदगी नहीं काटना चाहता ।"

"पर मैं तुझे जिंदगी देनेवाला कहां हूं ।" कुरबाशी ने कहा–"यह क्यों सोचता है कि मैं तुझे माफ कर दूंगा ?"

"शायद आपके दिल में रहम आ जाये !"

"नहीं आयेगा ।"

"पर मुझे कैसे यकीन हो ?"

"मैं कह जो रहा हूं ।"

"फिर भी......"

"फिर भी क्या ?"

"मैं आपको गुस्सा दिलाना चाहता हूं, ताकि आप रहम करना चाहें भी तो न कर सकें ।"

"वह कैसे ?"

"मैं आपके आदमियों से कुछ कहना चाहता हूं । आपके ही खिलाफ बोलना चाहता हूं ।"

"अगर इजाजत न दूं तो ?"

"तो आपकी यह आंख कभी रोशनी नहीं देख सकेगी ।"

"हरामी !" कुरबाशी गरजा..." जो कहना है, झटपट कह दे ।"

"देखा !" पहलवान ने कुरबाशी से कहा

और उसके साथियों की ओर मुड़ा।

"लोगो!" उसने बुलंद और साफ आवाज में कहना शुरू किया—"तुम मेरी तरफ देख रहे हो और हैरान हो कि मैं बेवकूफ हूं। ऐसा मूर्ख, जिसने अपने दुश्मन को पहले अपनी उंगली काटकर लहू दिया और अब अपनी आंखों की रोशनी देने जा रहा हैं। पर इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं हैं। मैं तो अपनी उंगली और आंखें ही दे रहा हूं, जबकि तुमने अपना पूरा आपा शाह को दे दिया हैं। तुम अपने ही भाइयों को कत्ल करते हो, उनके गांवों को आग लगाते हो। आखिर किसकी खातिर तुम यह सब कर रहे हो? आखिर किसकी खातिर हल छोड़कर राइफलें पकड़ ली हैं तुमने, और इस खून की कमाई पर जी रहे हो?......"

"जबान बंद कर कुत्ते!" कुरबाशी गरजा—"अगर अब एक लफ्ज भी बोला तो......"

पहलवान ने उसके सामने सिर झुकाया, जैसे मान गया हो कि अब कुछ नहीं बोलेगा।

"इलाज शुरू कर!" कुरबाशी ने कड़क कर हुक्म दिया।

पहलवान ने कहा—"अब घास की पूली जलायी जाये।" और तबीब से कहा—"आप यह पत्थर लेकर शाह के सामने बैठ जाइये और इस तरह शाह की अंधी आंख के सामने हिलाइये।" उसने हिलाने का तरीका बताया।

तबीब पत्थर हिलाने लगा, तो पहलवान ने कहा—"ऐसे नहीं, ऐसे।" और उसे फिर वह तरीका बताया, पर बार-बार कहने पर भी तबीब पत्थर को उस तरह हिला नहीं पा रहा था।

कुरबाशी झुंझला उठा। उसे तबीब पर गुस्सा आया और उसने कहा—"छोड़ दो पत्थर। और इसे खुद हिलाने दो, जैसा यह कह रहा हैं।"

"इसमें खतरा हैं शाह!" उलेम ने उठकर कहा।

"कोई खतरा नहीं हैं। पहरेदारों को तलवारें लेकर पास खड़े होने के लिए कह दो।" कुरबाशी ने कहा।

"मेरे शाह!" पहलवान ने कुरबाशी के सामने घुटनों के बल बैठते हुए कहा—"आपके मन में कोई शक न रहे, इसलिए मेरी आंखें बांध दी जायें। तब तो कोई खतरा न होगा।"

उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी गयी और उसे पत्थर दे दिया गया। अब फिर घास जलायी गयी और पहलवान पत्थर को आगे-पीछे करता हुआ हिलाने लगा। घास में से निकलता हुआ धुआं गाढ़ा होने लगा। पत्थर पहले ही की तरह कुरबाशी की कानी आंख के सामने हिलता रहा। लोग एकटक उसे देख रहे थे। तबीब की उत्सुकता का पारावार नहीं था। तभी पहलवान ने कहा—"मोमबत्ती!" एकदम सभी की नजर मोमबत्ती की ओर गयी और पहलवान के हाथों में पकड़ा हुआ पत्थर कुरबाशी के सिर के दो टुकड़े कर गया।

दूसरे ही क्षण एक तलवार हवा में

चमकी और पहलवान का कटा हुआ सिर मरे हुए कुरवाशी के ऊपर जा गिरा।

इससे पहले कि तलवार का वार करनेवाला तलवार का लहू पोंछता, एक घुड़सवार की गोली उसकी छाती को पार कर गयी।

पहली गोली के बाद दूसरी गोली चली और फिर तीसरी। कुरवाशी के घुड़सवार आपस में लड़ने लगे और उनकी लड़ाई आधी रात तक चलती रही।

आधी रात होने पर उस घर में से आग की लपटें उठीं और उन लपटों में से एक बहुत ही ऊंची लपट आकाश की ओर भड़की, जिससे पास-पड़ोस के गांवों को पता लग गया कि कुरवाशी मारा गया है।

रूपांतर–मुखबीर

* * *

हवा में लटकती हुई इमारत

कंक्रीट के दो खोखले स्तंभ ऊपर उठाये गये। उन्हें कंक्रीट के बने शहतीरों से जोड़ा गया। अब उनमें लोहे की कड़ियां डाली गयीं। इन कड़ियों के सिरों से लोहे की नालियां जमीन से कुछ ऊपर तक लटकायी गयीं। इन नालियों के साथ सलाखें जोड़कर फर्श का बाहरी ढांचा बनाया गया।

अभी हाल ही में इस नये तरीके से मेक्सिको शहर में एक छः मंजिली इमारत हवा में लटकायी गयी है। यह अपनी किस्म की पहली इमारत है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भूचाल इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

इस इमारत से एक और भी फायदा है। क्योंकि किसी भी फर्श पर छत का बोझ उठाने के लिए कोई खंभा नहीं है, इसलिए हर फर्श पर खुला स्थान है। हर मंजिल के १३१ फुट लंबे और ९२ फुट चौड़े फर्श पर १९ वर्ग-फुट के केवल दो ही स्तंभ दिखाई देंगे, जो उसमें उठकर ऊपर गये हुए हैं।

इनमें से एक स्तंभ में लिफ्टें लगी हुई हैं, जिससे मकान में रहनेवाले ऊपर नीचे आ-जा सकते हैं। दूसरे स्तंभ में आग से बचने और बिजली आदि का सामान है। इन खंभों की बुनियादें कीचड़ पर तैर रही हैं। इससे भूचालों का इमारत पर कोई असर नहीं हो सकता। दूर से देखने पर यह इमारत हवा में लटकती हुई मालूम होती है। **–वाल्टर इयान फिशमैन**

मेरी रुचि की पंक्तियां

चपरासी का संकेत पाते ही मैं कमरे के भीतर चला गया और जोर से 'गुड मार्निग' झाड़ दी। मुझे भय था कि यदि हिन्दुस्तानी भाषा में बातचीत की, तो बिलकुल गया समझा जाऊंगा। दिल्ली के दफ्तरों के संक्षिप्त अनुभव से मैं जान गया था कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी यहां अंग्रेजी भाषा का राज्य है। आप जब तक उर्दू या हिन्दी में बातचीत करते रहेंगे, दफ्तर के लोग ध्यान नहीं देंगे, लेकिन ज्यों ही अंग्रेजी में दांत दिखायेंगे, त्यों ही वे पलटकर आपकी बात सुनेंगे, जैसे आप सीधे उनके ननिहाल से चले आ रहे हों और बात सुनते समय ऐसी मोहिनी मुस्कराहट उनके चेहरे पर होगी, जैसे काम आपको उनसे नहीं, उन्हें आपसे है।

—कृष्णचंद्र [एक गधे की आत्मकथा] प्रेषक—हरिश्चंद्र ब्रह्मचारी

बार-बार शीशे में मुख देखनेवाले एक युवक से किसी ने पूछा—"तुम हर समय शीशे में अपना चेहरा क्यों देखा करते हो?" युवक ने कहा—"मैं शीशा इसलिए देखता रहता हूं कि मुख पर कोई धब्बा तो नहीं लग गया, सौंदर्य में कोई कमी तो नहीं आ गयी।" दूसरे व्यक्ति ने कहा—"मुख का सौंदर्य देखने की भांति कभी मन का सौंदर्य भी देखते हो?" बार-बार शीशे में अपना मुख देखनेवाले युवको, यदि तुम अपने अंतःकरण को देखकर उसके धब्बों को मिटा दो, तो तुम्हारे मुख-मंडल पर ऐसे ओज और लावण्य की छटा आयेगी कि तुम ही नहीं, अपितु अन्य लोग भी तुम्हारी छबि का दर्शन करके तृप्त होंगे। **—ब्र० जगदीश विद्यार्थी विद्यावाचस्पति [स्वर्ण-पथ] प्रेषक—राज**

......शायद प्रत्येक जीवन एक बंद कमरे की भांति होता है, जिसकी एक खिड़की प्रकृति के विकास की ओर खुली रहती है। प्रकृति के विकास में से कभी किसी चंद्रमा का धुंधला प्रकाश, तो कभी किसी अंधकार की कालिमा; कभी आंखों को चौंधिया देनेवाला आलोक, तो कभी निविड़तम अंधकार, कभी उष्ण हवाएं, तो कभी जल-सिंचित बयार; कभी अच्छा, तो कभी बुरा लगनेवाला दृश्य इस जीवन रूपी कमरे में आता रहता है। अंतर केवल इतना है कि कमरे की खिड़की खोलना और बंद करना मनुष्य के हाथ

पनामा
आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती है
Panama
20
CIGARETTES
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves.
GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.
▶ ऊँचे दर्जे की वर्जीनिया तम्बाकू
▶ संतुलित मिश्रण
▶ हमेशा ताज़ा

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई—५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग
GT. (P) 632HIN
Greens' Advtg

में है और जीवन [illegible] करना मनुष्य के वश में नहीं है।

–अमृता प्रीतम [डाक्टर देव] प्रेषक–वंसीलाल जैन

दुनिया में जितने भी मजे विखेरे हुए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज भी तुम्हारी हो सकती है, जिसे तुम अपनी पहुंच के परे मानकर लौटे जा रहे हो। कामना का दामन छोटा मत करो, जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस का निर्झर तुम्हारे बहाये भी वह सकता है।

–दिनकर [हिम्मत और जिंदगी] प्रेषक–उमाशंकर चंदोला

शस्त्रबल से हारना हारना नहीं है, आत्म-वल से हारना वास्तविक पराजय है। सारा-का-सारा देश विदेशियों से आक्रांत हो जाये, मुझे रंचमात्र भी चिंता नहीं होगी, यदि प्रजा में आत्मविश्वास बना रहे, अपने गौरवमय इतिहास की प्रेरणा जागृत रहे। .....युद्ध तलवार की लड़ाई को ही नहीं कहते, यह तो उसका एक अंग मात्र है। युद्ध में सफलता तभी मिल सकती है, जब समूची प्रजा में आत्मगौरव और प्रतिरोध की भावना उत्पन्न हो। परंतु किसलिए ? आत्मगौरव और प्रतिरोध की भावना भी किसी बड़े उद्देश्य के लिए होनी चाहिये।...... वस्तुतः तुम जो लड़ाई लड़ रहे हो, वह विदेशी के विरुद्ध नहीं है, विधर्मी के विरुद्ध नहीं है; यह उन लोगों के विरुद्ध है, जो विधाता के सहज विधान को पंगु बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। तुम्हारी लड़ाई उन सब लोगों से है, जो मनुष्य के सहज कर्म में बाधक हैं। सामाजिक मंगल के लिए, जो सहज प्रकृति है, उसी का नाम धर्म है। उसके विरुद्ध जानेवाला अधर्मी है। तुम्हारी लड़ाई उसी से है।

–डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी [चारुचंद्र लेख] प्रेषक–श्यामसुंदर घोष

क्या अजब हैरत है कि योगी, साधक, संतजनों के लिए नारी नरक का द्वार और घर में वह घरैतिन-मालकिन होते हुए भी ढोल, गंवार और शूद्र के साथ ताड़ना की अधिकारिणी है। बाजार में वह सर्ववल्लभा, जाने-जहां होकर भी सामाजिक विधान के अनुसार नीच है, फाहशा है। चाहे कथासरित्सागर लीजिये या किस्सा अलिफ लैला हजार दास्तां उठाइये, हर तरफ त्रियाचरित्र के बड़े रोने रोये गये हैं। यह त्रियाचरित्रवाला सिद्धांत एक इतना बड़ा सामाजिक झूठ है कि यदि इस शब्द के साथ फैली हुई नारी-विरोधी भावना को जोरदार प्रचार से न मिटाया गया, तो आज के नये युग में स्त्री-पुरुष में समता लाने की बात कहीं अधर में ही लटकी रह जायेगी।

–अमृतलाल नागर [ये कोठेवालियां] प्रेषक – बि० श० माहेश्वरी

★

खट्टी बदहज़मी, कलेजे की जलन और पेट की गड़बड़ी में,

शीघ्र आराम के लिये

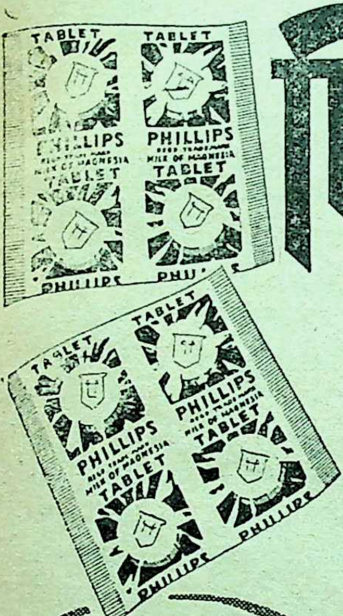

फिलिप्स

आदि

मिल्क ऑफ मैग्नेशिया

टेबलेट्स

४ टिकियों वाले
पैकेट का मुल्य सिर्फ २० न० पै०

फिलिप्स के टिकियों में असली फिलिप्स मिल्क ऑफ मैग्नेशिया शामिल है, जो समस्त परिवार के लिये प्रभावपूर्ण और सबसे शीघ्र आराम पहुँचानेवाला सुविधा जनक तरीका है। जबही खट्टी बदहजमी हो फिलिप्स की कुछ टिकिया चबा लीजिये। यह कलेजे की कष्टदायक जलन तथा वायु और भरेपन को शीघ्र ही दूर करती है। पेटके खट्टापन को दूर करती है और दूषित श्वास को ठीक करती है। समस्त परिवार के प्रयोग के लिये बचतवाले ७५ और १५० टिकियों वाले बोतलों में भी मिलती है। आज ही व्यवहार करके देखिये।

H.471/1—HOW/BH

अब

अधिक सुरक्षा के लिये सुविधाजनक
एल्यूमिनियम फायल के पैकेट में मिलती है।

रजिस्टर्ड युजर
डेज मेडिकल स्टोर्स (मैन्युफैक्चरिंग) प्रा० लिमिटेड

मराठी हास्य कथा

विलायती मुर्गियां

व्यंकटेश माडगूलकर

सुबह के कलेवे के बाद गांववाले अपने खेत की ओर जाने लगे। गांव का पटेल अपनी टूटी हवेली के साम` आंगन में मुर्गियों को दाने चुगाता दिखाई दिया। सुबह की सुनहरी धूप में पटेल मुट्ठियां भर-भरकर दाने उड़ेल रहा था और दो विलायती मुर्गे उनको चुगे जा रहे थे।

घर के काम-काज में आंख उठाकर भी न देखनेवाला पटेल आज मुर्गियों को दाने क्योंकर चुगा रहा था—गांववाले सोच में पड़ गये। हाथ में हंसिया-डोर लिये दस-पांच गांववाले पटेल के आंगन में इकट्ठे हो गये और इस दृश्य को देखने लगे।

पटेल दो टांगों पर बैठा था और अपनी बंडी की जेब से सफेद ज्वार के दाने निकाल-निकालकर मुर्गों की ओर फेंक रहा था। पुरानी घुन लगी ज्वार को छोड़, वह साफ और नयी ज्वार कैसे चुगाये जा रहा है—लोग अचंभे में पड़ गये। वे पटेल की करतूत न समझ सके।

हां यह बात सच थी, दाने चुगनेवाले पटेल के मुर्गा और मुर्गी बिलकुल नयी किस्म के थे। गांव के बड़े-से-बड़े मुर्गे से भी देखने में सुदर थे। बड़ा मुर्गा चोंच के ऊपर का भरा-सा तुर्रा हिलाते हुए दाने चुग रहा था। सफेद रंग का यह मुर्गा किसी पुलिस अफसर से कम नहीं दिखाई देता था। गर्दन ऊपर कर लोगों को देखता था और दाने चुगता था।

वैसी ही मुर्गी थी। देखने में सुंदर, पर शरीर से बिलकुल बड़े अफसर की बीवी जैसी—अर्थात् शरीर स्थूलता की ओर झुका हुआ; एक अजीब शान से चलती थी और गर्दन आगे-पीछे कर दाने चुगने लगती थी।

बेशक, मुर्गियां बहुत अच्छी हैं। मगर इनका मतलब यह थोड़े ही है कि खुद पटेल दाने चुगाने बैठे? विलायती मुर्गियों को बोयी जानेवाली ज्वार चुगायी जाये? वैसे देखा जाये तो इतने लोग देख रहे हैं, इसका कोई गुमान पटेल के चेहरे पर न था। जैसे कोई किसी अफसर से बर्ताव करता हो, वैसे ही पटेल मुर्गियों से बर्ताव कर रहा था—बड़े अदब के साथ, बड़े अपनेपन से—पर आखिर यह सब क्या है?

भोला से न रहा गया। एक बार खांस-कर, थूककर, धीरे-से बोला— "विलायती जोड़ा कहां से खरीद ला` ?"

आंखें ऊपर कर पटेल बोला—"क्या कहा?"

मीनाकुमारी से सुनिए एक रहस्य की बात...

'मेरे रंगरूप की बहार लक्स से है।'

वह कहती है।

मीना कुमारी, कमाल अमरोही की
'पाकीज़ा' की तारिका

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्रतारिकाओं का शुद्ध, मुलायम सौंदर्य साबुन
इंद्रधनुष के ४ रंगों में और सफ़ेद!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

LTS. 147-77 HI

"जोड़
"हां—
इतनी
की ओर
बकरा
दिल में
"भोला,
इसका—क्य
हाथ प
"बेशक, ह
में भी न
चर्चा होने
"भाई
"मैं सम
जात की
"जर्मनी
"एक दे
"तूने
"बंबई
दाने चु
हुई और
काटने लगा
वह भागने
करने लगा
आंगन-भर
पटेल वी
हलकू ने
पटेल ?"
"हलकू,
"फिर ?
ही होंगी ?"
१९६४

"जोड़ा विलायती [illegible] ?"

"हां-हां ।"

इतनी हामी भरकर पटेल फिर मुर्गी की ओर अदब से देखने लगा ।

बकरा चराने ले जानेवाला छोकरा दिल में न ठहरनेवाली बात कह बैठा–"भोला, चार सेर गोश्त तो निकालेगा ही इसका–क्यों ?"

हाथ पीछे कर खड़ा था हलकू; बोला–"बेशक, हमारे गांव के मुर्गे तो इसके पासंग में भी न बैठेंगे ।" लोगों में जोड़े की चर्चा होने लगी ।

"भाई कौन-से देश की हैं ?"

"मैं समझता हूं, विलायती नहीं हैं; जर्मनी जात की दिखाई देती हैं ।"

"जर्मनी क्या ?"

"एक देश है वहीं की होंगी ।"

"तूने कैसे जाना ?"

"बंबई में हमारे साहब के पास थीं ऐसी ।"

दाने चुगते-चुगते मुर्गे को हुड़क सवार हुई और वह मुर्गी के चारों ओर चक्कर काटने लगा । पर फैलाकर घूमने लगा–वह भागने लगी–गर्दन झुकाकर वह पीछा करने लगा । मुर्गी टों-टों चिल्ला पड़ी । आंगन-भर में हो-हल्ला शुरू हुआ ।

पटेल बीड़ी फूंकते हुए सब देख रहा था । हलकू ने पूछा–"जोड़ी कितने की पड़ी पटेल ?"

"हलकू, मेरी नहीं हैं मुर्गियां ।"

"फिर ? नयी दिखाई दीं, सोचा तुम्हारी ही होंगी ?"

[illegible]

"मेहमान ले आये ?"

"ना, सरकारी हैं ।"

"सरकारी ?"

"हां-हां, अपने गांव के लिए सरकार ने भेजी हैं ।"

सब अचंभे में पड़ गये । सरकार सजा देती है, इनाम देती है, पर मुर्गे ?

"गांव को मुर्गे देनेवाली कौन-सी सरकार है ? सोचने की बात है ।" भोला बोला ।

"गांव में अफसर आते हैं । उन्हें खाना लगता ही है । गांव के मुर्गे उन्हें क्योंकर पसंद आयेंगे, इसलिए सरकार ने मुर्गे भेजे हैं ।

पर पटेल उस पर मुसकराया, बोला–"अरे पागल, अफसरों को मुर्गे ?"

"फिर किसलिए ?"

मुर्गी हार गयी थी । उसकी चोंच के ऊपर का तुर्रा लाल-लाल हो गया था, फिर भी वह उसके पास-पास चल रही थी । मुर्गा ठहरा । बायां पांव उठाकर सीना फुलाया और एक लंबी बांग दी ।

बांग सुन, पड़ोसी सुनार बाहर आया और जमाव में आ खड़ा हुआ ।

विलायती मुर्गे देख, पूछने लगा–"बांग इसने दी ?"

सुनार बूढ़ा था । उसके मुंह के दांत गिर गये थे–पोपला-सा मुंह; कान और सीने के बाल सफेद हो चले थे–लोगों की हामी पर हाथ का चिमटा ऊपर कर बोला–"आज इतने साल से मुर्गों की बांग सुनता था । पर आज सुबह-जैसी बांग कभी नहीं

MOON & STAG
RAIPUR MILLS
AHMEDABAD

पाप्लिन्स - शर्टिंग्स
मर्सेराइज्ड धोतियां
छपी हुई लान्स
तथा बुटास

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT, PEABODY & CO. INC;

रायपुर मिल्स लि०, अहमदाबाद

सुनी ।" पटेल फूल उठा । बोला–"आज सुबह ना ? फिर वह बांग तो इन सरकारी मुर्गों की ही थी ”

सुनार खुश हो गया, बोला–"सरकारी हैं न चलो बात खतम हुई । रुपये चुकाये होंगे तुमने ।"

"हां," पटेल ने सफाई दी । " सरकार अब गांव के मुर्गों का विकास करनेवाली है । ये मुर्गे हम लोग संभालेंगे और सात साल में इनकी संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि मुर्गों की इस जाति के अलावा गांव में दूसरी जाति दिखाई ही न देगी ।"

सबको यह बात जंची । विचार किया। भोला बोला–"याने ये जोड़ी सरकार ने भेजी है ।"

"और क्या ?"

"पर पटेल, कहीं ` बीमारी से मर गयी, तो फिर क्या होगा–सरकार वसूल कर लेगी ?"

भोला की शंका ठीक थी । पटेल भी सोच में पड़ गया । इस पर तो पटेल ने कुछ सोचा ही न था । सोचकर बोला–"अरे भोला, इन विलायती मुर्गों को बीमारी ही नहीं होती । और हो भी गयी, तो सरकार ने इंतजाम किया है । दवाई की पेटी भेजी है मेरे पास । दवाई देते ही ठीक हो जाती है ।"

"अच्छा । फिर हमारी मुर्गी बीमार पड़े, तो लायें तुम्हारे पास ।"

"हिष्ट ! अरे पागल, वह विलायती दवाई गांव की मुर्गियों पर असर नहीं करेगी ।"

पटेल की बातें सुन, गांववालों ने अपन रास्ता लिया ।

आठ दस-दिन गुजरे होंगे । अचानक एक दिन तहसीलदार साहब का तांगा गांव में आकर रुका–गांव का हिसाब-किताब देखने । पटेल घबरा उठा ।

हनुमानजी के मंदिर में जाजम-मोढ़े लगाये गये । चपरासी ने पटेल से पानी मंगाया । हाथ-पांव धोकर साहब तैयार हुआ और पटेल से कागजात मंगवाये । कागजात आते ही वह देखने लगा । गलतियां खोजने लगा । पटेल और गांव का कारिंदा बिछावन के किनारे दुबके-से बैठे थे । गांव के कुछ ऊंचे लोग कोट-टोपी, फेंटा पहन, बेकार में खंभे से टिके बैठे थे । कुछ गांववाले सामने के मैदान में बैठे जमीन में लकीरें खींचने लगे । सब जैसे सन्नाटे में बैठे थे । सब चुपचाप खामोश । साहब अपनी ऐनक से कागजात टटोल रहा था । दीवार के सहारे सरकारी चपरासी खड़ा था । खूंटी पर साहब का नीले रंग का ऊनी कोट टंगा था । एक कोने में बेडिंग, टिफिन कैरियर, छाता और एक चमड़े का बैग । फिर एकाएक सुरंग फूटने-जैसी आवाज में अफसर चिल्लाया –"गधे कहीं के ! काम करते हो या हजामत ? बेशरम, पाजी ; मुफ्त के पैसे पाते हो? हरामखोर कहीं के ! अब कौन तुम्हारा बाप ठीक करेगा इसे ?"

पटेल और कारिंदे का चेहरा फीका पड़ गया, जैसे अफसर उनकी चमड़ी उधेड़ने पर तुला हो ।

एनासिन

सर्दी-ज़ुकाम और बुखार

के लिए **बेहतर** है

एनासिन लेने से दर्द, बुखार, घबराहट और तबीयतकी बेचैनी दूर होती

'एनासिन' में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे का असर है और अपनी चिकित्सा-शास्त्र प्रमाणित दवाओं के कारण 'एनासिन' सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुखार, दंतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र और पूरा आराम देती है।

एनासिन
बेहतर है क्यों कि
इस के **चार** फायदे हैं

ANACIN
ANACIN
ANACIN
ANACIN

दो टिकियों का दाम सिर्फ १२ नये पैसे

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

आसपास के लोग सकपका गये । संभलकर बैठ गये । कहीं साहब हम पर ही न बिगड़ उठें, इसलिए घबराये-से थे ।

साहब का चेहरा बिलौटे-जैसा लाल-पीला होने लगा । उसके मुंह से ठीक शब्द न निकल पा रहे थे ।

"क्यों जी पटेल ? नौकरी क्यों करने बैठे-हज्जाम की दुकान क्यों न खोल ली, गुंडागीरी करते हो, पैसे खाते हो, एं ? लोगों को चूसते हो, हरामखोर, पाजी, गधे, उल्लू!"

पटेल हाथ जोड़े खड़ा था बोला–"अब आपके हाथ में है साहब, दया कीजिये; मुझे बचा लीजिये ।"

"क्या बचा लूं ? खाक । शर्म नहीं आती गलती करते ? कितना पैसा खा गये और डकार भी न ली, एं ?"

पटेल के होश उड़ गये । खाने के टाइम तक अफसर बोले जा रहा था । लाख गलतियां ढूंढ़ डालीं । साहब खाना खाने उठा। डिब्बा खोल खाने बैठा और फिर ठंडक में सो गया । भूख से तड़पते पटेल को एक ओर ले जाकर चपरासी बोला–" रात को अच्छा खाना बनाओ, फिर सब ठीक हो जायेगा ।"

"बहुत अच्छा । मीठा या नमकीन ?"

"मीठा काहे के लिये ? अरे मुर्गी काटो एकाध–मजा आ जाये ।"

"बहुत अच्छा साहब ।"

पटेल घर लौटा । पटेलिन से बोला–"साहब रात को ठहरेगा । नमकीन भोजन बनाओ बढ़िया ।" पटेलिन ने बढ़िया भोजन बनाया, चपरासी डिब्बा भरकर ले गया । साहब ठंडा पड़ गया और कुछ नरम हुआ । सुबह अच्छीखासी हिदायत देकर चलने लगा तो पटेल से बोला–"खाना तो खूब बनाया पटेल, ऐसी अच्छी मुर्गियां तुम्हारे पास हैं, यह तो हम जानते ही न थे ।"

पटेल एकदम हंस दिया, बोला–"चाहिये तो दो साथ ले जाइये साहब ।"

साहब इस पर चुप रहा । पर चपरासी पटेल के आगे-पीछे घूमने लगा । पटेल घर गया और पटेलिन से बोला–"वह मुर्गी चाहता है, कहता था–ऐसी मुर्गियां तुम्हारे पास हैं, यह तो हम जानते ही न थे ।"

पटेल के रुकते ही पटेलिन बोली–"बड़ी लल्लो-चप्पो करने लगे साहब की ! मुर्गी मांगता है ? हमारी मुर्गियां कहां अच्छी हैं, अपनी ही खाये !"

"ऐसा किस मुंह से कहूं ?"

"फिर क्या करें ? रोज तुम्हारा साहब आयेगा और मुर्गी मांगेगा, फिर एक भी मुर्गी न बच सकेगी ? आज बनायी मुर्गी अपनी थोड़े ही थी ।"

"फिर ?" पटेल अवाक् रह गया ।

"सरकारी मुर्गी बनाई थी "–पटेलिन ने बताया ।

पटेल एकदम बैठ गया । बोला–"हाय भगवान, अब मैं मरा ।"

बाहर खड़े चपरासी ने सब सुन लिया और सीधा साहब के पास जा पहुंचा । सब बातें ज्यों-की-त्यों साहब को बता दीं ।

तांगा चलने लगा, तब पटेलिन के पागल-

पन से परेशान पटेल कुत्ते जैसा तांगे के पीछे पीछे चलने लगा।

साहव ने पूछा–"पटेल मुर्गी लाये?"

पटेल चापलूस हंसी हंसा। बोला–"वैसी मुर्गियां अव नहीं वचीं साहव।"

"वैसी याने कैसी?"

"विलायती साहव!"

"अच्छा! विलायती मुर्गियां भी तुम पालते हो?"

"मैं नहीं साहव, वे मुर्गियां......"

"वोलो-वोलो चुप क्यों हो गये?"

"ना साहव......पर......"

"वोलो, क्या बात है?

"बचा लो मुझे साहव! बीवी ने गलती की। मेरे पीछे सरकारी मुर्गी काटकर पका ली–आपके लिए।"

"पाजी! बेशर्म!"

साहव डांटने लगा। पटेल ने तांगे में वैठे साहव को दंडवत की और प्रार्थना की [illegible] साहव, अब आपके में हूं।"

"क्या संभालूं खाक? अव कलेक्टर कच्चा चवा जायेगा। उसे मैं करूं?"

"मेरी गलती नहीं है साहव! ऐसा कर दिया। मुझे पता तक न बचा लो साहव–अवकी वेर बचा लो।"

"वेवकूफ? ऊपर से मुंह चलाता तेरी वीवी वेअक्ल है, उससे मुझे क्या देना–एं?"

तांगा आगे और पटेल पीछे-पीछे साहव गालियां दे और पटेल पैर छुए। क्रम मील-भर तक चलता रहा – साहव वोला–

"जाओ टलो यहां से–अर्जी दो मुर्गियां वीमारी से मर गयीं। मैं गवाही दूंगा। जाओ पागल, वेशर्म कहीं के।"

रूपांतकार–विजय

*

प्रेयसी की 'हां'

रमेश– "भई, आज इतने परेशान क्यों नजर आ रहे हो?"

सुरेश– (एक ठंडी सांस लेकर) "परेशानी की तो बात ही है। वह मिस रीता है न, अरे जो मेरा दिन का चैन और रात की नींद हराम किये रहती है; बस, कल मैंने कड़ा करके उस पर अपना प्यार प्रकट कर दिया और साथ ही शादी का प्रस्ताव भी पेश कर दिया। पर उसने जो उत्तर दिया उसका मतलब निकलता है इन्कार।"

रमेश– (ढांढ़स बंधाते हुए) "फिक्र न करो दोस्त। औरत की 'ना' को 'हां' समझो। तुम्हें तो उलट इससे खुश होना चाहिये।"

सुरेश– "यह बात तो मैं भी समझता हूं।"

रमेश– "तो फिर तुम उदास क्यों हो रहे हो?"

सुरेश– "मुसीबत यह है कि उसने उत्तर में 'ना' नहीं कहा था, बल्कि 'हां' कहा था।"

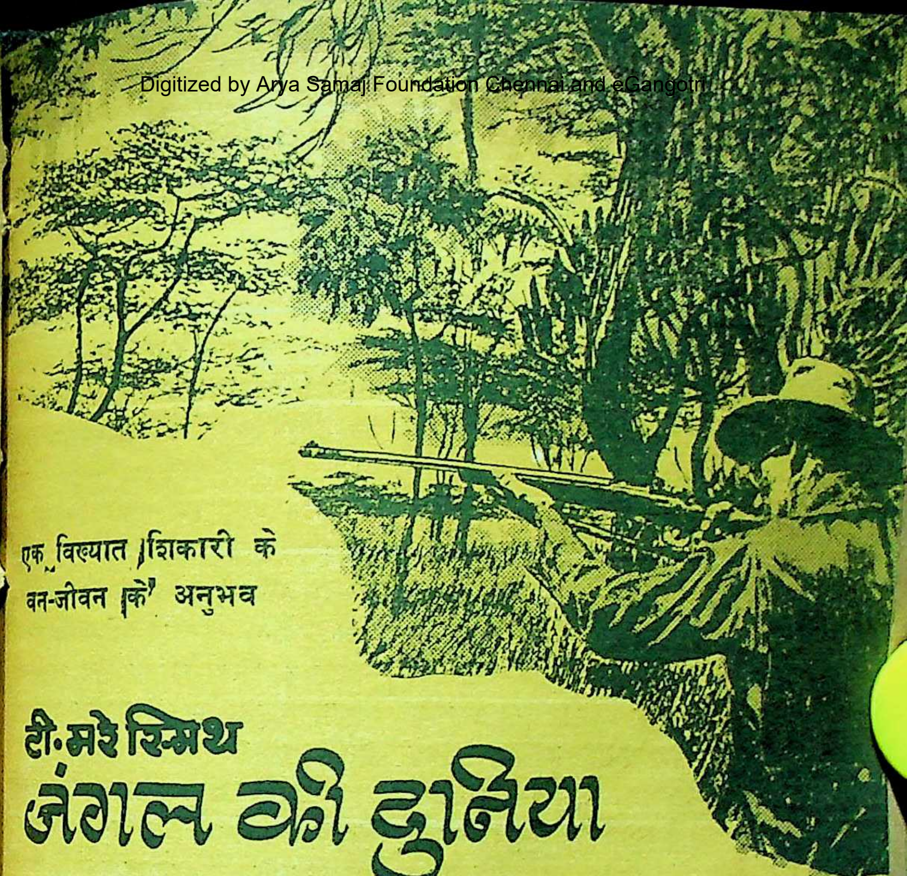

एक विख्यात शिकारी के
वन-जीवन के अनुभव

टी. मरे स्मिथ

जंगल की दुनिया

पिछले चालीस वर्षों से मैं जंगली जानवरों का पेशेवर शिकारी हूं। यदि कोई मुझसे पूछे कि इस धंधे का मेरे जीवन और चरित्र पर क्या प्रभाव पड़ा है, तो मैं उत्तर में रूजवेल्ट के ये शब्द उद्धृत करूंगा :

"जंगल की आत्मा और मूल प्रवृत्ति का वर्णन कोई शब्द नहीं कर सकते। न ही उसकी वेदना और उसके आकर्षण को व्यक्त करनेवाले शब्द हमारे पास हैं। वन में जाकर कठोर जीवन जीने तथा खतरनाक जंगली जानवरों से संघर्ष करने में एक अपूर्व आनंद की प्राप्ति होती है। इसके अलावा इसके साथ ही जुड़ा हुआ है, वन की नीरवता और रहस्यमयता का जबर्दस्त आकर्षण, वन में खिले चांद और सितारों की आभा, विशाल धरती पर अपनी सुषमा का प्रदर्शन करनेवाले सूर्यास्त और सूर्योदय के दर्शन वन में ही हो सकते हैं।"

पूर्ण ही आपको जीवन के साथ बांध सकता है, खंड नहीं। और पूर्णता के दर्शन

वन में होते हैं।

इन्सान को उकसाने और ललकारने-वाले दृश्य कौन-से हैं ? घने वन के किसी गहन कुंज में छिपा कोई जंगली भैंसा, पूर्ण-चंद्र के प्रकाश में दहाड़ता हुआ वनराज, सुबह-सुबह अपने छिपे हुए स्थान से जंगल की ओर भागता हुआ गैंडा, विशाल वृक्षों को तोड़ते और पद-दलित करते हुए जंगली हाथी की चिंघाड़, गोधूलि-वेला में लकड़-बग्घे का कुटिल हास्य, पहाड़ियों के पीछे छिपते सूर्य की ओर देखते हुए गीदड़ का भयावह उत्क्रोश–ऐसे ही हजारों दृश्य और स्वर आदमी के जीवन में उत्तेजना उपस्थित करते हैं।

इन उत्तेजनाप्रद दृश्यों और स्वरों के मोह में मनुष्य फंसा कि फिर वह आजीवन उसे घेरे रहता है। लेकिन यह मोहपाश ऐसी दृष्टि भी प्रदान करता है, जिससे आप जंगली जानवरों को सही ढंग से देख और समझ सकते हैं। इतने वर्षों तक इन जंगली पशुओं के साथ रहकर, उनके प्रति आकर्षण एवं लगाव पैदा हो जाने कारण, अब मुझे उनका दृष्टिकोण समझने में बड़ी आसानी होती है।

उदाहरणार्थ मान लीजिये, किसी नरभक्षी शेर का बौद्धिक स्तर वही हो जाये जो हमारा है और वह हमसे बात कर सके, तो हम उसे यही कहते सुनेंगे –"आखिर इस दुनिया में शेरों को भी जीना है; और इस कारण शेरों को कभी-कभी आदमियों को मारना पड़ता है, तो इसमें शेर का क्या कसूर ? आखिर आवश्यकता तो कोई बंधन नहीं मानती।"

आदमी भी तो इसी प्रकार अपनी निष्ठुरताओं और ज्यादतियों की सफाई पेश करता है।

आवश्यकता है कि हम वह कुंजी प्राप्त करें, जिससे उस जीवन के द्वार खुलते हैं जिसका शानदार और संक्षिप्त विवरण रूजवेल्ट ने ऊपर दिया है। मानव-जाति को जंगली पशुओं की आवश्यकता रहेगी ही; अतः उन्हें नष्ट न होने देना उसका कर्तव्य है।

अविवेकपूर्ण तरीके से वन्य पशुओं की समूची जातियों का उन्मूलन करने से काम नहीं चलेगा। और तो और, हमारी फसलों और मवेशियों को नष्ट करनेवाले जंगली पशुओं की भी सीमित संख्या की हमें आवश्यकता है।

जंगल के वृद्ध और निर्बल पशु बड़ी बुरी हालत में मरते हैं। शक्तिशाली पशु बड़ी भीषणता से उन्हें समाप्त करते हैं। सर्वाधिक शक्तिशाली पशुओं को सर्वाधिक भोजन और सुविधाएं मिलती हैं। ऐसे समर्थ पशुओं के साथ जंगल में संघर्ष करने में मुझे कभी लज्जा अनुभव नहीं हुई, गर्व ही अनुभव हुआ है।

भावुकता मुझे कभी नहीं सताती और न ही मैं उसे समझ पाता हूं। जब कभी मेरे सामने समस्या उठी है कि किसी जंगली पशु का जीवन बचाया जाये या किसी इन्सान का, मैंने इन्सान की खातिर जंगली पशु

को मारने में कोई हिचक अनुभव नहीं की है। परंतु यह भी सच है कि मैंने एक पशु को मारा है, तो सैकड़ों को बचाया भी है। अपने शिकारी-जीवन में मैंने जो सबसे उत्तम पाठ सीखा है, वह यह कि भगवान के बनाये सब जीवों को प्यार करो।

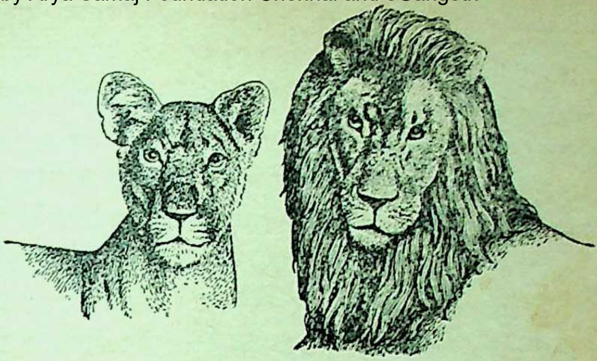

वन की रानी, वन का राजा

× × ×

लाखों-करोड़ों लोग शेर-जैसे जंगली पशुओं को सरकसों और चिड़ियाघरों में ही देखते हैं। कुछ लोग उन्हें राष्ट्रीय उद्यानों में भी देख लेते हैं। और उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि वहां ये जंगली पशु न आदमी से डरते हैं, न बंदूकों से।

लेकिन खुले जंगल में, जहां इन जंगली पशुओं का ही साम्राज्य होता है, उन्हें देखना एक निराला ही अनुभव है। और यह निराला अनुभव पाने का सौभाग्य कुछ इने-गिने और खुशकिस्मत शिकारियों को ही मिलता है।

सरकस या चिड़ियाघर के शेर और जंगलों में स्वच्छंद घूमनेवाले शेर में वही अंतर है, जो घर में पलनेवाले अलसेशियन कुत्ते और जंगली भेड़िये में। सरकस या चिड़ियाघर के शेर को अपने भोजन की फिक्र नहीं होती; जबकि जंगली शेर को अपने भोजन के लिए प्रतिदिन काफी जोखिम उठाकर शिकार करना पड़ता है। इसीलिए 'सभ्य' शेर की नैसर्गिक प्रवृत्तियां मंद-सी पड़ जाती हैं और उसका सहज स्वभाव कुंठित हो जाता है।

वन में जीवित रहने के लिए शेर को अपने दांतों और पंजों पर निर्भर रहना पड़ता है। मनुष्य का बंदी बनकर वह उस भोजन पर निर्भर हो जाता है, जो सींखचों में से उसे दिया जाता है। उसके अवचेतन मन में कभी-कभी उसके प्रति विरोध-भाव जाग उठता है। यही कारण है कि पालतू शेर कभी-कभी बर्बर और हिंस्र हो उठता है और अपने पोषक की जान ले लेता है।

× × ×

शेर को 'जंगल का राजा' जो कहा जाता है, वह ठीक है या नहीं—यह प्रश्न इस समय हमारे सामने नहीं है। इस शानदार उपाधि के कारण उसकी धाक खूब जमी

है । हालांकि जंगल में उससे अधिक हिंस्र बुद्धिमान और खतरनाक पशु मौजूद हैं; फिर भी शेर की इस उपाधि और भ्रांतिपूर्ण प्रचार के कारण लोगों को उन पशुओं के बारे में अधिक जानकारी नहीं है ।

शेर का नाम लेते ही हमारे मन में एक चित्र उभर आता है । शेर की आंखें क्रोध से जल रही हैं, जबड़े खुले हुए हैं और वह लपकता हुआ अपने शिकार की ओर बढ़ रहा है । उसके सामने हैं–निडर बहादुर शिकारी, कंधे पर राइफल रखे । वह शेर की आंखों के बीचों-बीच निशाना साध रहा है । क्षण-भर बाद, शिकारी की गोली लगते ही बिजली की तेजी से लपकता हुआ शेर पृथ्वी पर ढेर हो जाता है और शिकारी के सहायक आकर अपने तेज चाकुओं से उसकी खाल अलग कर देते हैं । यह है शेर के शिकार की प्रचलित धारणा ।

परंतु वास्तविकता इससे बहुत भिन्न है । वह इतनी सुंदर भी नहीं है । यथार्थ में शेर शिकारी के ऊपर, उसकी दृष्टि बचाकर बड़ी मंद गति से आता है । प्रहार वह अत्यंत निकट आने पर ही करता है; लेकिन यह प्रहार इतनी फुर्ती से होता है कि शिकारी को कुछ भी सोचने या करने का अवसर नहीं मिल पाता । जब शेरनी प्रहार करती है, तब तो प्रायः शिकारी को उसकी प्र के बारे में कुछ भी पता नहीं पड़ पाता, क्योंकि वह शेर से अधिक वेगवान होती है । वह शेर के समान ऊंची और भारी नहीं होती, और शायद इसीलिए उससे ज्यादा फुर्तीली होती है । जब शेर-शेरनी दोनों साथ शिकार के लिए निकलते हैं, तो शिकार पर प्रहार शेरनी ही करती है ।

× × ×

भारत के वन्य पशुओं के बारे में जानकारी रखनेवाले मेरे मित्रों का कहना है कि निर्भयता में जंगली सूअर का मुकाबला कोई वन्य पशु नहीं कर सकता । शिकारी जंगली सूअर को परम निःशंकता का प्रतीक मानते हैं ।

एक भारतीय मित्र ने मुझे जंगली सूअर की अविश्वसनीय निडरता की एक मनोरंजक कहानी सुनायी थी । यह शिकारी मित्र एक मचान पर बैठकर सामने कुंड में एक शेर और शेरनी को पानी पीते देख रहा था । तभी उसे ऊंची घास में से धड़ाम से किसी के आने और भागने की आवाज सुनाई दी । एक भारी जीव दनदनाता हुआ कुंड की ओर आया और बिना किसी हिचक के, शेर और शेरनी के बीच में खड़ा होकर कुंड में पानी पीने लगा ।

शेर-दंपति ने उससे कुछ नहीं कहा और उसे निश्चिन्त पानी पीने दिया । जानवर

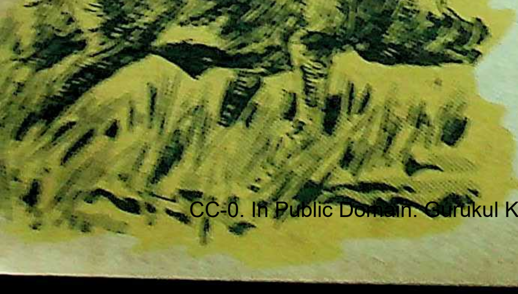

सूअर उसे ललकारता खड़ा रहा

दोनों ने पिछली रात को भरपेट भोजन किया था और सुबह-ही-सुबह सूअर का गोश्त खाने की उनकी इच्छा नहीं हो रही थी। फिर भी ध्यान देने योग्य है सूअर की निष्ठुर और भावशून्य साहसिक प्रवृत्ति। शेर-दंपति उस पर आक्रमण कर दें, तो उसे जान पर खेलकर दोनों से लड़ना होगा, यह जानते हुए भी उसने उन्हें छेड़ने का दुःसाहस किया।

अफ्रीका का मस्सेदार सूअर भी किसी भी चीज से नहीं डरता। उसे आंखों देखकर ही उसकी निपट निर्भयता पर विश्वास हो सकता है।

कई वर्ष पहले, मैं अफ्रीका की टाना नदी के किनारे शिकार कर रहा था। शाम का समय था। मैं अपने खेमे में बैठा था कि करीब सौ गज की दूरी से मुझे कोलाहल सुनाई दिया। बाहर आकर देखा—एक मस्सेदार सूअर चीत्कार कर रहा था और एक शेर गुर्राकर जवाब दे रहा था।

राइफल लेकर मैं घटना-स्थल पर आ गया। उस समय तक शेर ने सूअर को पकड़ लिया था। शेर के कब्जे में आ जाने पर भी सूअर जोरदार संघर्ष कर रहा था। पर वजन में वह शेर से बहुत कम था। उसका भार रहा होगा २०० पौंड, जबकि शेर का भार ५०० पौंड से कम हरगिज न था।

मुझे देखते ही शेर ने सूअर को छोड़ दिया। जमीन पर पड़ा हुआ निर्भीक सूअर फुर्ती से उठा और इतने वेग से शेर पर झपटा कि शेर उसके प्रहार से कई फुट पीछे जाकर गिरा। इतना ही नहीं, शेर के उठने तक सूअर बराबर दूसरी टक्कर के लिए उसे ललकारता हुआ उसके सामने खड़ा रहा। इतना प्रेरक दृश्य मैंने आज तक नहीं देखा—मृत्यु के मुख में निर्द्वंद्व शौर्य और साहस का ऐसा प्रदर्शन! मेरी पूरी सहानुभूति उस दिलेर सूअर के साथ हो गयी। मैंने शेर को गोली मार दी। अपराजेय सूअर ऐंठता हुआ चला गया।

एक और अवसर पर मैंने एक सूअरनी देखी थी, जिसके बच्चे उसके चारों ओर खेल रहे थे। एक लकड़बग्घा बच्चों को खाने के उद्देश्य से निकट आया। लकड़बग्घे को देखते ही सूअरनी उसकी ओर तेजी से झपटी। लकड़बग्घा डरकर पीछे भागा। पर सुअरनी यों उसका पीछा छोड़नेवाली नहीं थी। वह काफी दूर तक उसका पीछा करती रही और कई बार उसने लकड़बग्घे के पांवों को काटा भी। पूरे जी-जान से दौड़कर वह दुष्ट अपनी जान बचा पाया। उसने फिर कभी किसी सूअरनी के बच्चों की ओर ललचायी हुई दृष्टि से शायद ही देखा होगा।

वह दृश्य मुझे कभी नहीं भूलेगा, जब मैंने एक सूअर को हाथी की शेखी दूर करते हुए देखा। मस्सेदार सूअरों का एक परिवार, जिसमें सूअर, सूअरनी तथा पांच बच्चे थे, हाथियों के झुंड के पास से गुजर रहा था। झुंड का एक छोटा हाथी सूअर-परिवार की ओर लपका। उसका इरादा सूअर के बच्चों को तंग करने का दिखाई दे रहा था।

पूरी खुशबूवाली कॉफी कॉफी बोर्ड के फिल्टर के जरिए

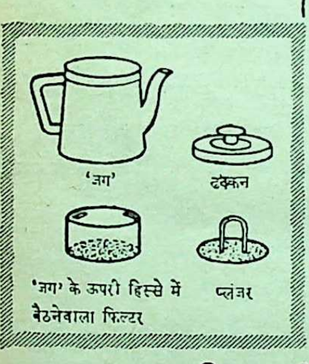
'जग'
ढक्कन
'जग' के ऊपरी हिस्से में बैठनेवाला फिल्टर
प्लंजर

आप आसानी से कॉफी बना सकें, इसलिए 'सेंट्रल फूड टेक्नॉलाजिकल रिसर्च इंस्टीच्यूट' ने इस फिल्टर का डिजाइन बनाया है और इस की बिक्री कॉफी बोर्ड के जरिए होती है - आप हर वक्त परिपूर्ण और जायकेदार कॉफी बना सकते हैं।

'जग' की शक्ल में ये किस्में पेश हैं:

४ कप की क्षमता:	
पीतल (निकल की कलई)	... कीमत २५.३५ रु.
स्टेनलेस स्टील	... कीमत ४५.०० रु.
२ कप की क्षमता:	
पीतल (निकल की कलई)	... कीमत २०.५० रु.
स्टेनलेस स्टील	... कीमत ३१.७५ रु.

स्थानीय कर अलग

फिल्टर इस्तेमाल करने का तरीका

फिल्टर में प्रत्येक कप के पीछे एक माप (जो फिल्टर के साथ है) कॉफी पाउडर डालिये और उसे समतल कर लीजिये।

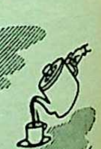

फिल्टर में प्लंजर बैठाइये और पाउडर को धीरे-धीरे दबाइये। प्लंजर के चारों तरफ उबलता हुआ पानी छोड़िये।

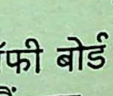

५ से ७ मिनट में कॉफी तैयार हो जायगी। अपने इच्छानुसार दूध और शक्कर ले कर कपमें कॉफी डालिये।

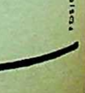

ये फिल्टर देश भर में सभी इंडिया कॉफी डीपो, कॉफी हाउस में मिलते हैं।

कॉफी बोर्ड
बेंगलूर

हाथी अभी सूअर-परिवार से दस गज की दूरी पर ही था कि सूअर ने उसे देख लिया। फिर तो उसने आव देखा न ताव, सीधा हाथी पर झपटा। हाथी तेजी से पीछे हटा। संघर्ष की तैयारी में उसके कान फैल गये थे; परंतु मन-ही-मन वह इस छोटे शत्रु से डर रहा था। सूअर को जब पूरा विश्वास हो गया कि उसने हाथी को अच्छा सबक सिखा दिया है, तभी वह वापस अपने परिवार के पास आया।

असल में, यह छोटा हाथी उस सूअर-परिवार को यों ही धमकी दे रहा था। हाथी कभी सूअरों पर आक्रमण नहीं करते। वे उनकी निर्भयता तथा दिलेरी के प्रशंसक होते हैं और कभी उनके रास्ते में नहीं आते। उस हाथी को शायद यह मालूम न थी।

मस्सेदार सूअर देखने में बड़ा घिनौना होता है। अधिकांश जंगली पशुओं की भांति वह आकर्षक नहीं होता। उसके सारे चेहरे और दांतों पर मस्से-ही-मस्से भरे होते हैं। इसीलिए उसे मस्सेदार सूअर कहा जाता है। उसके दांतों की दो जोड़ियां अर्द्धचंद्राकार तरीके से लगी होती हैं। इनकी लंबाई कभी-कभी पंद्रह इंच तक होती है। दांतों की तीक्षणता उस्तरे की धार से कम नहीं होती। सूअरनी के दांत कुछ छोटे होते हैं। उसकी खाल का रंग करीब-करीब सफेद होता है और उस पर बालों के बजाय छोटे-छोटे कांटे होते हैं, जो उसकी कुरूपता को और भी बढ़ा देते हैं।

× × ×

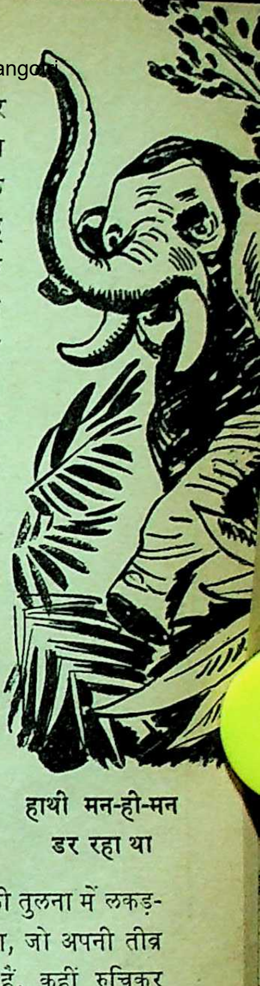

हाथी मन-ही-मन डर रहा था

घड़ियाल को देखकर मन में यह पहला विचार आता है कि किसी-न-किसी तरह उसे समाप्त कर दिया जाये। कारण यह है कि वह देखने में ही बड़ा हिंसक लगता है। उसकी अपलक देखती हुई निर्दय अतिकुटिल आंखें, उसके डरावने जबड़े, उसकी खुरदरी और अनाकर्षक त्वचा सब मिलकर एक ऐसा दृश्य उपस्थित करते हैं, जिसकी कल्पना कोई पागलों का सरताज कवि या शिल्पी ही कर सकता है। और उसके शरीर की गंध तो असह्य है। उसकी तुलना में लकड़बग्घा और शिकारी कुत्ता, जो अपनी तीव्र दुर्गंध के लिए कुख्यात हैं, कहीं रुचिकर लगते हैं। और जहां तक उसकी हिंसकता का प्रश्न है, इतना कह देना काफी है कि घड़ियालों के कारण प्रतिवर्ष २०,००० से अधिक अफ्रीकी मरते हैं। और कितने पशु-पक्षी घड़ियालों की कृपा से परलोक की सैर करते हैं, इसका विवरण पाना असंभव ही है।

घड़ियाल के बारे में कभी किसी व्यक्ति

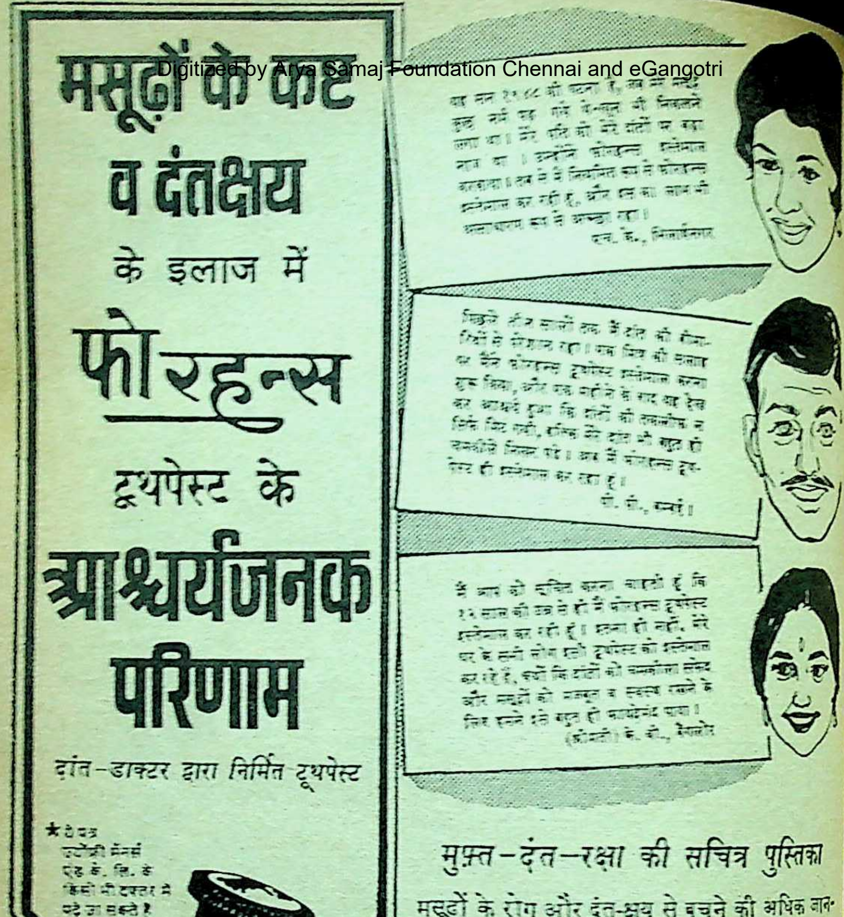

मसूढ़ों के कष्ट
व दंतक्षय
के इलाज में
फोरहन्स
टूथपेस्ट के
आश्चर्यजनक
परिणाम

दांत-डाक्टर द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

यह सन १९४८ की घटना है, जब मेरे मसूढ़े कुछ नर्म पड़ गये थे--खून भी निकलने लगा था। मेरे पति को मेरे दांतों पर बड़ा नाज था। उन्होंने फोरहन्स इस्तेमाल करवाया। तब से मैं नियमित रूप से फोरहन्स इस्तेमाल कर रही हूं, और इस का लाभ भी असाधारण रूप से अच्छा रहा।
एन. के., सिकन्दराबाद

पिछले तीन सालों तक मैं दांत की बीमारियों से परेशान रहा। जब मित्र की सलाह पर मैंने फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया, और एक महीने के बाद यह देख कर आश्चर्य हुआ कि दांतों की तकलीफ न सिर्फ मिट गयी, बल्कि मेरे दांत भी बहुत ही चमकीले निकल पड़े। अब मैं फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कर रहा हूं।
पी. पी., बम्बई।

मैं आप को सूचित करना चाहती हूं कि १५ साल की उम्र से ही मैं फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर रही हूं। इतना ही नहीं, मेरे घर के सभी लोग इसी टूथपेस्ट को इस्तेमाल कर रहे हैं, क्यों कि दांतों को चमकीला रखने और मसूढ़ों को मजबूत व स्वस्थ रखने के लिए इसने इसे बहुत ही लाभदायक पाया।
(श्रीमती) के. वी., बैंगलोर

★ ऐसे पत्र ज्योफ्री मैनर्स एंड कं. लि. के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं

मुफ़्त-दंत-रक्षा की सचित्र पुस्तिका

मसूढ़ों के रोग और दंत-क्षय से बचने की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आज ही "CARE OF THE TEETH & GUMS" पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ़्त प्रति के लिए लिखें। साथ में डाक-खर्च के १५ नये पैसे के टिकिट भी भेजें। पता: डिपार्टमेंट ओ-६ मॅनर्स डेंटल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१

Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR THE GUMS
"BRUSH YOUR TEETH WITH IT"

... और पूरी जोड़ी के लिए इस्तेमाल करें

फोरहन्स
दोहरे असरवाला
टूथब्रश

एकसाथ दुहरा.
★ जो मसूढ़ों की धीमे-धीमे मालिश,
★ साथ में दांत भी साफ करता है

B.27-HIN

या जाति ने कोई अच्छा शब्द नहीं कहा होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इस असर्व-प्रिय पशु की आदतों का कई महीनों तक अध्ययन करने का अवसर मुझे उस समय मिला, जब मैं टांगानिका झील के दक्षिणी किनारे पर रहता था।

जन्म के समय घड़ियाल की लंबाई चार इंच के करीब होती है। अधिक-से-अधिक लंबा घड़ियाल १८ फुट तक का हो सकता है। एक बार मैंने एक घड़ियाल मारा, जिसकी परिधि ९० इंच और गर्दन ७० इंच थी। उसका वजन लेना मेरे लिए कठिन था। अनुमानतः कम-से-कम डेढ़ टन था। वह औंधा पड़ा था; और उसे सीधा करने के लिए मुझे आठ हट्टे-कट्टे आदमियों की मदद लेनी पड़ी थी।

जब उसका पेट चीरा गया, तो उससे निकली दुर्गंध असह्य ही नहीं, भयजनक भी थी। पेट का निरीक्षण करने पर हमें विभिन्न आकारों के ६८ पत्थर, एक बकरी के अवशेष तथा पीतल के दो पाजेब प्राप्त हुए। पाचक अम्लों के कारण ये सब वस्तुएं आधी गल चुकी थीं। पाजेबों का दावेदार हमें घड़ियाल की मृत्यु के बाद तुरंत ही मिल गया। उसने बताया कि ये उसकी पत्नी के थे, जिसे वह घड़ियाल डेढ़ साल पहले निगल गया था। किसी ने उसके दावे पर संदेह नहीं किया। मैंने पाजेब उसे दे दिये। उसे उन्हें पाकर बड़ी खुशी हुई। अब वह उन्हें अपनी नयी पत्नी को भेंट दे सकता था।

मादा घड़ियाल प्रायः ग्रीष्म ऋतु में अंडे देती और सेती है। वह किनारे की रेत में दो-तीन फुट व्यासवाले कई गड्ढे करके उनमें अंडे रखकर रेत से उन्हें बंद कर देती है। प्रत्येक में करीब २० अंडे रहते हैं। अंडा तीन इंच लंबा, रंग में सफेद और आकार में साधारण अंडों-जैसा होता है।

मादा घड़ियाल स्वयं बैठकर अंडे नहीं सेती; यह काम उसकी ओर से सूरज की धूप कर देती है। अंडों में से निकलकर बच्चे तुरंत ही पानी की ओर भागते हैं और उनमें से अधिकांश रास्ते में ही चील-कौवों के शिकार हो जाते हैं।

एक बार मैंने यह जानने की कोशिश की कि घड़ियाल पानी के अंदर कितने समय तक रह सकता है; पर बुरी तरह असफल रहा। शायद कोई भी इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं पा सका है। कारण यह है कि एक घड़ियाल के पानी में डुबकी लगाते ही दूसरा घड़ियाल पानी के ऊपर आ जाता है, जिससे यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि क्या यह वही घड़ियाल है, जिसने डुबकी लगायी थी, या कोई नया घड़ियाल है? फिर भी अनुमान से मैं कह सकता हूं कि घड़ियाल करीब हर आधा घंटा बाद पानी के ऊपर आता है।

घड़ियाल कितने वर्ष तक जीता है, इस बारे में भी कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मैंने अफ्रीका के बहुत-से वृद्ध गांव-वालों को यह कहते सुना है कि वे एक ही घड़ियाल को उस समय से देखते आ रहे हैं, जब वे बहुत छोटे थे। उनकी बातें सच

परिवार के लिए
माँ की पसंद
डालडा

- सर्वोत्तम वनस्पति तेलों से बना है
- साफ़ सुथरे, मेल मिलावट से सुरक्षित मुहरबंद डिब्बों में मिलता है
- याद रखिये डालडा खुला कभी नहीं बिकता
- बढ़ते बच्चों के लिए इस में विटामिन है

डालडा खजूर छाप वनस्पति
–एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

DL. 97-77 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

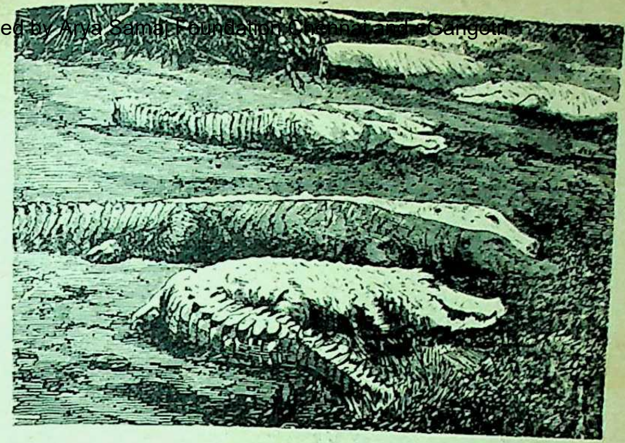

नदी-तट पर धूप-स्नान करते हुए घड़ियाल

भी हो सकती है, क्योंकि घड़ियाल प्रायः जीवन-भर नदी में किसी एक ही स्थल पर रहते चले आते हैं। जब तक कोई घड़ियाल गांववालों को नहीं छेड़ता, उसकी देवता के समान पूजा होती है; लेकिन जब वह भक्षण-लीला आरंभ कर देता है, तब उसे नष्ट करने के लिए मुझ-जैसे शिकारी से सहायता मांगी जाती है।

अफ्रीका की विक्टोरिया-न्यांजा झील के किनारे एक गांव के पास लुटेंबे नाम का एक घड़ियाल मैंने देखा। उस गांव के सबसे बूढ़े व्यक्ति का कहना है कि वह उसे बचपन से देखता आ रहा है। और इस आदमी की उम्र अस्सी से ऊपर है।

लुटेंबे बड़ा असाधारण घड़ियाल है। उसे अहिंसक घड़ियाल कहा जा सकता है। गांववाले उसे प्रतिदिन दो बार भोजन देते हैं। कभी कोई नया आदमी घड़ियाल के भोजन के लिए कुछ पैसे दे देता है, तो घड़ियाल को अतिरिक्त भोजन भी मिल जाता है। गांव का एक आदमी अपने हाथों उसे खाना खिलाता है। मैंने जब पहली बार यह दृश्य देखा, तो दंग रह गया।

भोजन देने से पूर्व, यह आदमी एक विचित्र आवाज से लुटेंबे को बुलाता है, जिसे सुनते ही लुटेंबे किनारे पर आ जाता है। साल में दो महीने वह गांववालों से अलग रहता है। ये दिन वह अपनी नस्ल बढ़ाने में व्यतीत करता है। पर दो महीने पूरे होते बिलानागा गांववालों की शरण में आ जाता है। जिन दिनों लुटेंबे गांव में रहता है, उन दिनों कोई दूसरा घड़ियाल उस किनारे पर आने का साहस नहीं करता, यद्यपि सारी झील घड़ियालों से भरी पड़ी है। मेरे अनुमान से लुटेंबे की लंबाई चौदह फुट जितनी होगी। इससे लंबे घड़ियाल भी देखे जाते हैं।

× × ×

कुछ लोगों का विश्वास है कि घड़ियाल गोरे लोगों पर आक्रमण नहीं करते। यह कहां तक सत्य है, सो इस सच्ची घटना से पता चल जायेगा।

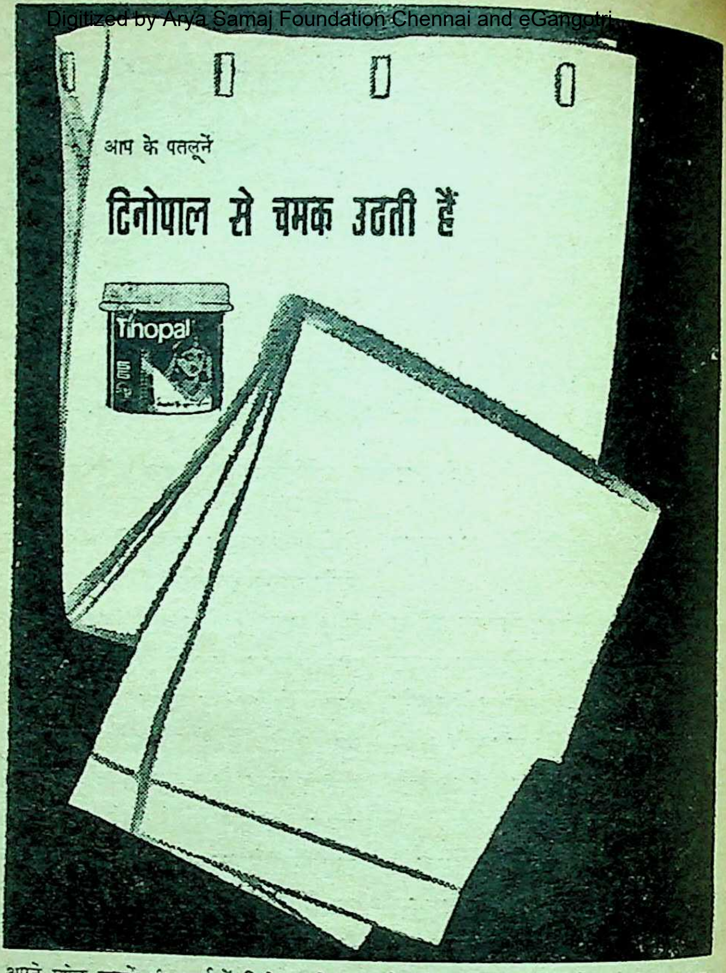

अपने सफ़ेद कपड़ों की धुलाई में टिनोपाल मिलाइए और देखिए एक अनोखा फ़र्क़! हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, चमकदार और उजला हो जाता है। पतलूनें, बुश-शर्ट्स, फ़्रोक, साड़ियाँ और तौलिए—आप के सारे सफ़ेद कपड़े टिनोपाल की अधिक सफ़ेदी से चमक उठेंगे।

नए पिल्फ़र प्रूफ़ डिब्बे में आज ही टिनोपाल ख़रीदिए। बाल्टी भर कपड़ों के लिए केवल ½ छोटा चम्मच टिनोपाल काफ़ी है।

थोड़ा सा टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है

टिनोपाल जे. आर. गायगी,
एस. ए., बाल, स्विटज़रलैंड
का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

भारत में बनानेवाले: सुहृद गायगी लिमिटेड, वड़ी वाडी, बड़ौदा।
बिक्री कार्यालय: एक्सप्रेस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई १-बी आर

Shilpi SGT 179 HN

मेरा घनिष्ठ मित्र वार्नेस अच्छा शिकारी भी है। एक बार वह कुछ कुलियों के साथ पैदल चलकर नदी पार कर रहा था। बीच में एक घड़ियाल ने उसे पकड़ लिया। आगे का वर्णन स्वयं उसी के शब्दों में सुनिये :

"भाई मेरे, एक बार एक शेर ने मेरा अंग-भंग कर डाला था। मैं समझता था कि उससे अधिक कष्टदायक अनुभव नहीं हो सकता। पर इस घड़ियाल के साथ भिड़ंत होने पर मैं उस अनुभव को बिलकुल भूल गया; और यह अनुभव मुझे जीवन-भर याद रहेगा। बड़ियाल ने मेरी एक टांग पकड़ ली थी। सब कुछ इतने शीघ्र और इतने अप्रत्याशित ढंग से घटा कि मुझे घड़ियाल के पास आने का जरा भी पता न लगा।

उस समय पानी मेरी छाती तक था। इस अप्रत्याशित आघात से मेरे पांव उखड़ गये और मैं पानी के अंदर जा गिरा। हाथ की राइफल भी पानी में जा गिरी। उसका पता नहीं लगा। वह मेरी प्रिय राइफल थी। उसके खो जाने का मुझे बाद में बड़ा दुःख हुआ। घड़ियाल मेरी टांग खींचते-खींचते मुझे नदी के तल पर ले जाने लगा। मैंने सांस रोककर अपने अंगूठे उसकी आंखों में ठूंस दिये। गंदले पानी में मुझे स्वयं कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

"आज भी उसके भयानक, काई की तरह चिकने सिर के स्पर्श की कल्पना करके मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लगता था, जैसे किसी सांप को छू रहा हूं। उस समय तो कुछ मालूम नहीं पड़ा। परंतु बाद में कुलियों ने बताया कि मेरे उसकी आंखों में अंगूठे ठूंस देने के फलस्वरूप उसकी एक आंख बाहर निकल आयी थी। पर उस समय मुझे इस बात का पता चल जाता, तो भी क्या लाभ था? मेरी एक टांग तो उसके जबड़ों में अभी तक थी और वह बराबर मुझे नीचे ही घसीटे जा रहा था।

"यों तो मैं उस समय होशो-हवाश बिलकुल गंवा बैठा था। पर एक डरावना खयाल बार-बार मन में आ रहा था। मैंने सुना था कि अफ्रीकी घड़ियालों की पकड़ में जो आ जाये, उसे वे पहले पानी में डुबा देते हैं और बाद में किनारे के किसी गढ़े में डाल देते हैं, ताकि कुछ सड़ जाने पर उसके टुकड़े करके खा सकें। जब सोचता कि मेरा भी यही हाल होनेवाला है, तो होश गुम हो जाता था। आगे कुछ नहीं कहा जाता...... भाई मेरे, आप मुझे घड़ियालों की याद न ही दिलायें तो बेहतर है।"

मेरे मित्र का उद्धार उसके कुलियों ने किया। उसे घड़ियाल के चंगुल में देखकर वे तेजी से नदी के किनारे पहुंचे और जिस दिशा में घड़ियाल मेरे मित्र को घसीट लिये जा रहा था, उस दिशा में करीबन ५० गज भागे। इतना फासला तय करने के बाद वे पुनः नदी में कूद पड़े और वहां से अपने भाले तानकर घड़ियाल की ओर बढ़ने लगे। जैसे ही घड़ियाल उनके निकट आया, उन्होंने एक साथ भालों से उस पर प्रहार किया। इस चौतरफा प्रहार को वह न सह पाया और तुरंत मर गया। लेकिन मरते-

शीघ्र, सुरक्षित
निश्चित
खाँसी का घरेलू इलाज

Alembic
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
DOSE
ALEMBIC CHEMICAL WORKS CO.
ALEMBIC ROAD, BARODA
MADE IN INDIA
Alembic
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP

Alembic
ग्लायकोडिन
टर्प-वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

मरते भी उसने मेरे मित्र की टांग न छोड़ी। उसे तो बड़ी मुश्किल से, घड़ियाल के जबड़ों को काटकर ही अलग किया जा सका।

किनारे पर आकर मेरे मित्र ने अपना दवाई का बैग खोला और अपनी चिरी हुई टांग पर एक तेज कीटाणुनाशक दवा लगायी। यदि उसने फौरन ऐसा न किया होता, तो शायद जीवित न बचता; क्योंकि घड़ियाल के दांत आदमी की त्वचा में गड़ने का अर्थ है–शरीर के उस अंग का बुरी तरह सड़ जाना। उस दिन मेरे मित्र की जान एक बार कुलियों ने बचायी, दूसरी बार कीटाणुनाशक दवा ने। यदि किसी बड़े घड़ियाल ने उसे काटा होता, तो वह इस दवा के प्रयोग के बाद भी जीवित न बचता। बेचारा बार्नेस आज भी लंगड़ाकर चलता है।

× × ×

नील-घाटी में मुझे भी घड़ियालों के साथ एक बड़ा रोमहर्षक अनुभव हुआ था।

सूरज डूब चुका था। सारे दिन शिकार करते-करते मैं थक चुका था और जल्दी से अपने खेमे में लौटकर स्नान करने का इच्छुक था। लंबे, चक्करदार रास्ते से बचने के लिए मैंने नदी के पास ही दलदली भूमि पार करने का निश्चय किया। दलदल की लंबाई कोई २५० गज रही होगी और वह नरकुलों से भरी हुई थी। उसे पार कर मैं बहुत जल्दी खेमे में पहुंच सकता था। यों मैं इस मार्ग से कभी नहीं जाता था; पर उस दिन काफी थकान के कारण ऐसा करने को मजबूर हो गया। दलदली भूमि पर कदम रखते ही मैं हिचकिचाया था। शाम के धुंधलके में वह स्थान बड़ा डरावना लगने लगा था। मेरे साथ जो दो छोकरे थे, वे भी कह रहे थे–"बहुत बुरी जगह है।"

उन्हें भयभीत देखकर मैं अपना भय भूल गया और दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने लगा। मैं आगे-आगे चल रहा था। वे दोनों मेरे पीछे-पीछे चले आ रहे थे।

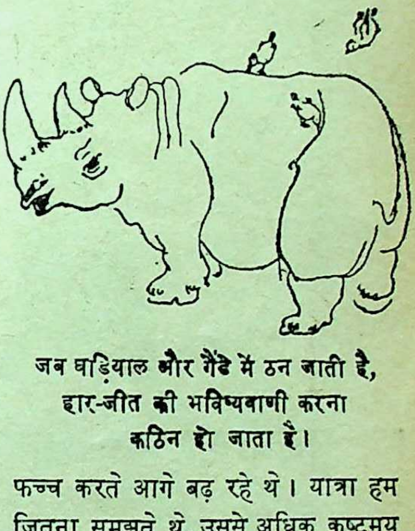

जब घड़ियाल और गैंडे में ठन जाती है, हार-जीत की भविष्यवाणी करना कठिन हो जाता है।

हम तीनों पानी और कीचड़ में फच्च-फच्च करते आगे बढ़ रहे थे। यात्रा हम जितना समझते थे, उससे अधिक कष्टमय साबित हो रही थी। रह-रहकर हममें से कोई किसी गहरे गढ़े में रपट जाता था। कोई-कोई गढ़ा तो इतना गहरा था कि कमर तक पानी आ जाता था। फिर भी हम तीनों चुपचाप आगे बढ़ते जा रहे थे। तीनों शंकित थे; पर भय का कोई कारण अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ था।

हर समय का मन-आकर्षण

मुरारजी फ़ैब्रिक्स

रिटेल मूल्य की दूकानें यहां पर हैं,

१. ३६ ए, कुलाबा काजवे २. डा० अम्बेडकर रोड, परेल
३. लोकमान्य, देना बैंक के सामने दादर (प. रेलवे)
४. ३९१ ए, गिरगांम रोड ५. ४०९, शेख मेमन स्ट्रीट ६. २८१, सुभाष मार्केट, तार
७. कांदीवली स्टेशन के सामने कांदीवली, ८. दी मोरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एंड वीविंग कं
लि०, परेल, बम्बई १२

CC-MM-

आधा रास्ता तय करने के बाद, निरंतर गहरे होते जा रहे अंधेरे में मैंने नदी के किनारे की हरी घास में एक पेड़ की आधी छिपी शाखा देखी। आधी शाखा पानी में डूबी हुई थी। थकान बहुत बढ़ गयी थी। मैंने पेड़ पर चढ़कर कुछ क्षण विश्राम करने का इरादा किया और शाखा पर पांव रखा।

पर पांव रखते ही मुझे मालूम पड़ गया कि मैंने पेड़ पर नहीं, बल्कि एक विशाल घड़ियाल की कमर पर पांव रखा है। उसे देखकर जितना आश्चर्य मुझे हो रहा था, शायद उतना ही आश्चर्य मुझे देखकर उसे भी हो रहा था।

कमर पर मेरा बोझ अनुभव करते ही उसने एक गहरी सांस ली और धक्का देकर मुझे गंदले पानी में गिरा दिया। इसके बाद जोर से छप-छप करता हुआ वह नदी की ओर भाग गया।

मेरे गिरते ही हाथ से अलग होकर मेरी राइफल भी पानी में गिर पड़ी। मैं तुरंत संभल गया और आगे बढ़ने लगा। पर अभी घड़ियालों से पिंड छूटा नहीं था। मेरे डगमगाते पांव करीब छः घड़ियालों पर और पड़े। ये सब घड़ियाल उस दलदली भूमि में रात बिताने के उद्देश्य से नदी से वहां आये थे। सहसा मुझे देखकर वे डर गये और नदी की ओर भागने लगे।

भागते-भागते एक विशाल घड़ियाल ने, जो उस धुंधलके में अपने वास्तविक आकार से दुगुना दिखाई दे रहा था, अपनी थूथनी से मेरे पांवों पर जोरदार प्रहार किया, जिससे मैं फिर गंदले पानी में गिर पड़ा। तभी दूसरे ने खुले जबड़ों से मुझ पर आकस्मिक हल्ला बोल दिया। उसके जबड़े मेरे इतने निकट आ गये थे कि मैं उसके मुंह से निकल रही दुर्गंध को महसूस कर सकता था और उसके तीन इंच लंबे दांतों को भलीभांति देख सकता था।

राइफल की नली अभी आधी मिट्टी में सनी हुई थी, फिर भी मैंने जोखिम उठाकर उसके पेट का निशाना साधा और गोली दाग दी। राइफल से गोली नहीं निकली। फिर भी वह घड़ियाल अपने भयभीत साथियों की भांति नदी की ओर भाग गया।

इस सारे कांड में मुश्किल से एक मिनिट लगा होगा। पर समय तो सापेक्ष वस्तु है; इसलिए वह एक मिनिट भी मुझे अनंत काल के समान प्रतीत हुआ। भागते हुए घड़ियालों की आवाज क्रमशः क्षीण होती गयी। विलीन होती हुई उस आवाज को संतोषपूर्वक सुनते हुए मैं सोच रहा था कि मनुष्य का जबर्दस्त शत्रु घड़ियाल भी असल में मनुष्य के समान ही डरपोक है।

परंतु मेरे पीछे आ रहे उन दोनों हब्शी छोकरों के कोयले के समान काले चेहरे डर के मारे भूरे हो गये थे। इससे पहले भी मैंने एक-दो बार ऐसा होते देखा था। संतोष का विषय यही था कि वे हतबुद्धि नहीं हुए थे और घड़ियालों के नदी की ओर भाग जाने के बाद, संभल-संभलकर उस दलदली रास्ते को पार कर रहे थे।

उस धोखेबाज भूमि को किसी तरह

MARGO
SOAP
IENIC TOILET SOAP

आदर्श
पारिवारिक
साबुन

मार्गो सोप

यह एक मुलायम और स्निग्ध
साबुन है जो स्त्रियों और बच्चों
की नाजुक त्वचा की रक्षा करता है।
गंध विहीन नीम तेल से प्रस्तुत
और सुगंधित किया हुआ यह
साबुन स्वास्थ्यप्रद होता है
और हर प्रकार के दोष से
त्वचा की रक्षा करता है।

दि कैलकटा केमिकल कं० लि० कलकत्ता-२९

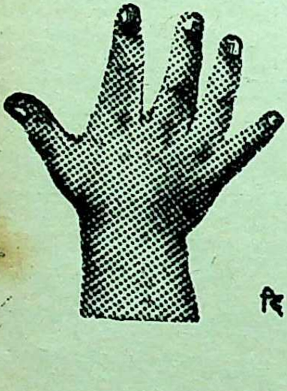

पार करने के वाद जब हमने ठोस पृथ्वी पर पांव रखे, तो भय और थकान के कारण हम तीनों ही लड़खड़ाकर गिर पड़े और काफी देर तक उसी अवस्था में पड़े रहे । पेड़ों के उस पार हमारे खेमे की रोशनी जैसे हमें निमंत्रण दे रही थी । हम तीनों साहस करके उठे और खेमे की ओर चलने लगे । मैं मन-ही-मन भगवान को धन्यवाद दे रहा था कि हमारी मुठभेड़ सिर्फ घड़ियालों से ही हुई । इस घटना से मैंने जाना कि घड़ियाल कितने कायर होते हैं ।

× × ×

दूसरे रेंगनेवाले पशुओं की तरह घड़ियाल भी मरने के वाद भी जीवित से दिखाई देते हैं । वात यह है कि घड़ियाल की मृत्यु के वाद भी उसकी स्नायुएं सक्रिय रहती हैं।

यही विलक्षणता सांपों में भी है । इसी कारण अफ्रीकियों का विश्वास है कि सांप को किसी भी रीति से मारें, पर वह सूर्यास्त के पहले पूरी तरह नहीं मरेगा । मैंने अफ्रीका में एक विशाल अजगर देखा था । उसका सिर धड़ से अलग किया जा चुका था, इसके वावजूद वह इतनी बुरी तरह हिल-डुल रहा था कि खाल उतारते समय उसे स्थिर रखने के लिए छः हट्टे-कट्टे व्यक्तियों की सहायता लेनी पड़ी ।

टांगानीका झील पर घड़ियालों का शिकार करते समय भी मुझे एक बार घड़ियालों की इस विक्षोभकारी विशेषता का स्पष्ट प्रमाण देखने को मिला । कुछ गज के फासले से मैंने एक घड़ियाल पर गोली चलायी थी । गोली ने उसकी एक आंख को बींधकर रख दिया था । ऐसे वार से जानवर का मस्तिष्क भी पूरी तरह नष्ट हो जाता है । गोली लगते ही घड़ियाल उलटा हो गया और उसका मृत शरीर पानी पर तैरने लगा । उसका पेट ऊपर की ओर था ।

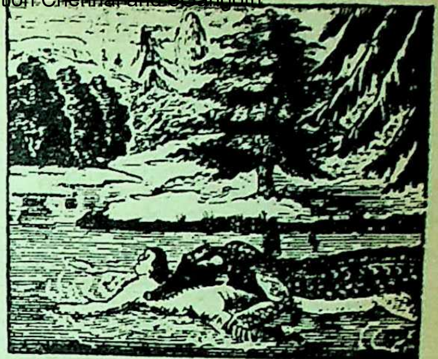

वेखबर तैराक घड़ियाल का शिकार हो जाता है

मैंने छोकरों को आवाज देकर एक बड़ा रस्सा लाने को कहा, ताकि उसे बांधकर किनारे पर लाया जा सके । मरते समय घड़ियाल किनारे से अधिक दूरी पर नहीं था और मैंने घास के एक ढेर के पीछे से उस पर वार किया था । छोकरे मेरे आदेश पर रस्सा तो ले आये; पर घड़ियाल के पांव रस्से से बांधकर उसे किनारे पर खींच लाने को कोई तैयार न हुआ ।

छोकरों की हिम्मत बढ़ाने के लिए मैं प्रोत्साहन के शब्द कहने का विचार कर ही रहा था कि मुझे घड़ियाल का शव हिलता दिखाई दिया । घाव से बुरी तरह

बिलकुल सरल

आप केवल

रु० ५/- से ही

खोल सकते हैं

सेविंग्स बैंक एकाउन्ट

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में

कोई बैंक चार्जेज नहीं—
और आपको ब्याज भी
मिलेगा वार्षिक ३
प्रतिशत के हिसाब से

आपकी निकट की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये :

नेशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

(संयुक्त राज्य में समाविष्ट • सदस्यों का दायित्व सीमित)

NGL

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, ([illegible]) ; मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, ([illegible]) ; ११७-११९, काझि सैयद स्ट्रीट, मांडवी : ९२एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज ; २/२७१, गोवालिया टैंक रोड, कम्बाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४वि, [illegible] रोड, भायखला। शाखा :—भाभा रोड, कोलबार रोड, (कॉटन मिल्स के पास)।

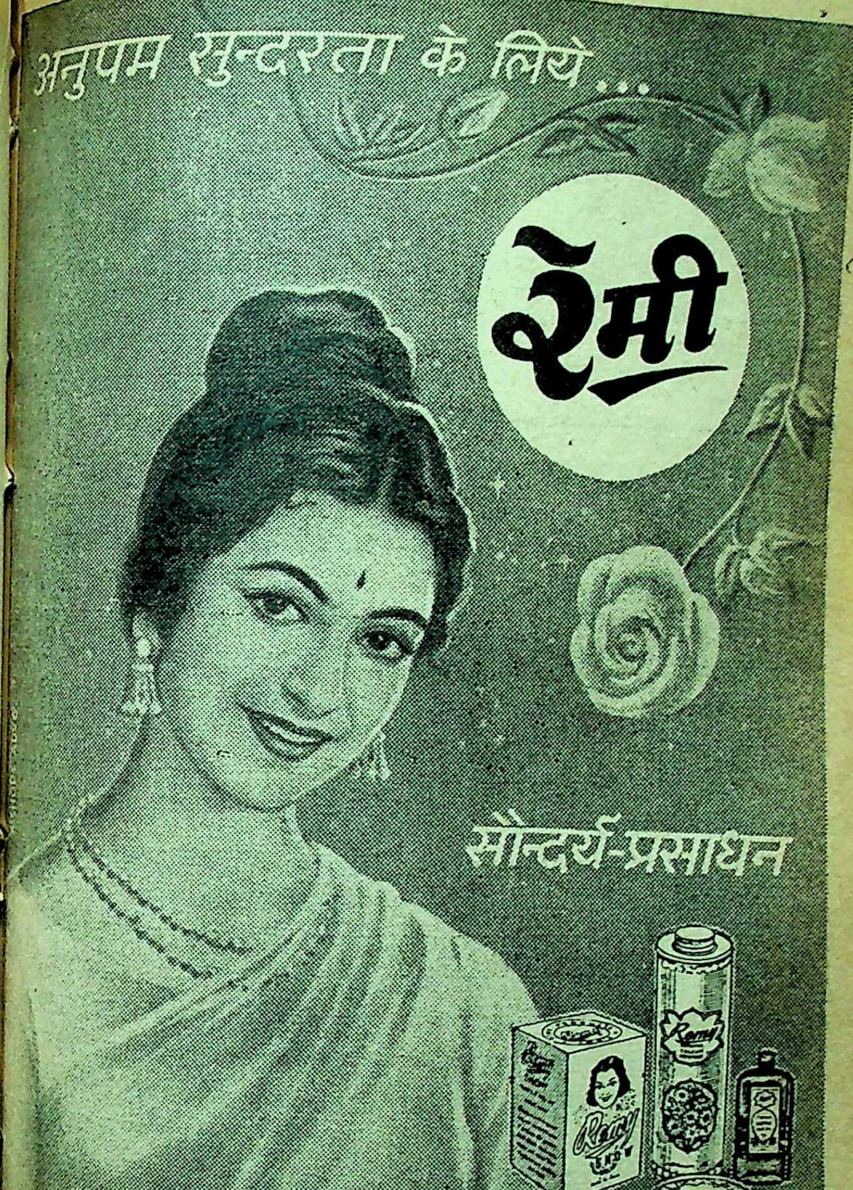
अनुपम सुन्दरता के लिये...
रेमी
सौन्दर्य-प्रसाधन
Remy
Remy
Remy

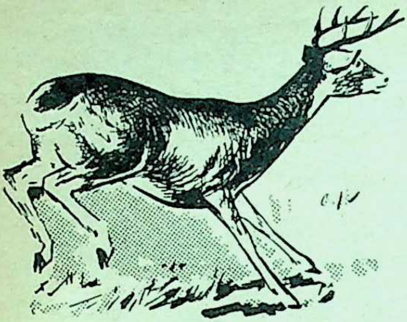

अचानक सामना

खून बह रहा था। पर इसके बावजूद घड़ियाल का हिलना बंद नहीं हुआ। धीरे-धीरे उसकी हिलने की गति बहुत तेज हो गयी और वह सीधा हो गया। ऐसा होते ही शव ने आगे तैरना आरंभ कर दिया।

इसी प्रकार तैरते-तैरते वह शव सौ गज दूर निकल गया। फिर उसने चक्कर लगाना आरंभ कर दिया। उसका चक्कर लगाने का वेग बढ़ता गया। इस बीच उसके बहते हुए लहू की गंध से आकर्षित होकर उसके साथी पानी के ऊपर आ गये और उसे अपना भोजन बनाने की गरज से उसके निकट आने लगे।

दूसरे घड़ियालों को निकट पाकर, उस शव ने एक विस्मयजनक हरकत की। वह तेजी से किनारे की ओर आने लगा और जहां मैं छोकरों के साथ खड़ा था, वहां से कुछ दूरी पर रुक गया। अब उसकी सब हरकतें बंद हो गयीं और ऐसा लगने लगा कि उसकी मिट्टी अब वाकई ठंडी हो गयी है। छोकरों ने उस पर ढेले फेंकने शुरू कर
दिये। ढेले उसे बराबर लग रहे थे। फि
पर भी शव में कोई हरकत नहीं दिखाई
यह देखकर एक मोटा छोकरा, जो अ
साहस से सबको प्रभावित करना चाहता
आगे बढ़ा और उस घड़ियाल की दुम
लगा। इस पर भी जब शव में कोई ह
दिखाई नहीं दी, तो उसने दुम को जोर
पकड़ लिया।

छोकरे का ऐसा करना था कि मु
घड़ियाल जैसे फिर जी उठा। उसने ते
से पटकी ली। छोकरा डर के मारे कि
पर आ गया और उसके साथी उस
खिल्ली उड़ाने लगे। उधर, मुर्दा घड़िया
पटकी लेकर फिर तैरना आरंभ कर दि
तैरते-तैरते वह उसी स्थान पर आ
निश्चेष्ट पड़ गया, जिस स्थान पर वह पह
बार पहुंचा था। हम सब इस आ
गरीब नजारे को देखकर दंग रह गये।

पर इस बार किसी की हिम्मत उसके
जाने की न हुई। वह अभी तक जीवि
या नहीं, यह देखने के लिए मैंने उस
खोपड़ी पर जोर से एक बेंत मारी। कुछ
हुआ। इस बार मुझे अच्छी तरह
हो गया कि वह सचमुच खत्म हो चुका है

मेरी गोली ने उसके मस्तिष्क को वि
कुल पिलपिला कर दिया था। वह
क्षण मर गया था। जब वह तैर रहा
चक्कर लगा रहा था और तीर-जैसी
से किनारे की ओर आ रहा था, उस
वह सचमुच मुर्दा ही था। उस दौरान
उसकी सब हरकतें मांसपेशियों द्वारा

लित थीं, मस्तिष्क नहीं। रेंगनेवाले पशु मरने के बाद भी मांसपेशियों द्वारा हरकतें करते रहते हैं, इसका प्रमाण मुझे कई अन्य घटनाओं से भी प्राप्त हुआ है।

× × ×

चीते के बारे में तरह-तरह की धारणाएं प्रचलित हैं। लेकिन मेरा अनुभव है कि शायद यही एक जंगली पशु है, जो आदमी का अच्छा मित्र है। आदमी के साथ उसका मैत्रीभाव इतना सहज है कि बिना आदमी से परिचय हुए भी वह उसका मित्र बन जाता है। जंगल में उसका व्यवहार देखकर ऐसा लगता है, मानो हजरत अभी तक आदम और हौवा के उस बाग में रह रहे हैं, जहां न घृणा थी, न तृष्णा। बाइबिल की इस उक्ति में शायद उसका बहुत गहरा और अगाध विश्वास है –" और मैंने पृथ्वी के प्रत्येक जंगली पशु को, और आकाश में उड़नेवाले प्रत्येक पक्षी को, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले प्रत्येक प्राणी को, और प्रत्येक जीव को पृथ्वी की प्रत्येक वनस्पति भोजन के लिए प्रदान की हैं।"

चीते को कुछ लोग चित्तीदार तेंदुआ भी कहते हैं। वैसे वह तेंदुए से काफी मिलता है। परंतु वह शेर की भांति बिल्ली का दूर का रिश्तेदार नहीं है। उसका दूर का रिश्तेदार शायद कुत्ता है। उसके पंजे संकोचनीय नहीं होते और उसकी रफ्तार शिकारी कुत्ते से ज्यादा होती है। उससे अधिक वेगवान पशु कोई और नहीं है। मैं यहां इस तुलना में पक्षियों को सम्मिलित नहीं कर रहा हूं।

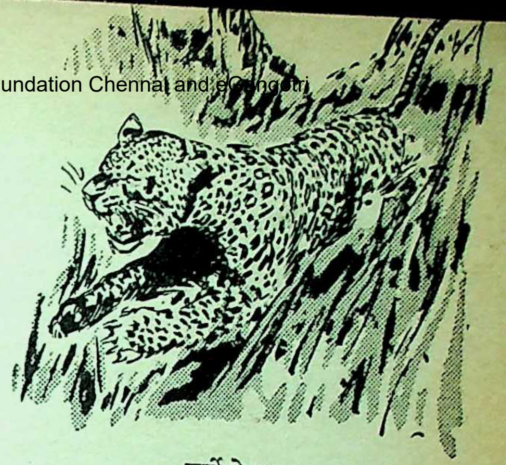

फुर्ती से हमला

आज्ञाकारिता और वश्यता में भी चीता कुत्ते से बहुत मिलता है। एक बार, मैंने घास में आराम कर रहे एक चीते की दुम पकड़कर खींच ली थी; पर उसने कुछ भी नहीं कहा। इसी तरह एक बार तो मैंने एक चीते की पीठ पर सवार होकर कुछ दूर तक यात्रा भी की थी। वह चुपचाप मुझे अपनी पीठ पर बैठाये घुमाता रहा। एक बार गुर्राया तक नहीं।

कुछ शिकारी इस आकर्षक और अनुपद्रवी पशु को भी मार देते हैं। मैंने कभी न सुना, न देखा कि चीते ने मनुष्य को कोई हानि पहुंचायी हो। पृथ्वी पर यदि कोई जंगली पशु पालतू बन सकता है, तो वह चीता ही है। चीते के बच्चे आरंभ में आदमी के साथ अवश्य हिंस्रता से पेश आते हैं, पर बड़े होते ही पालतू कुत्ते की भांति दब्बू और आज्ञाकारी बन जाते हैं।

वाह...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, ज़ायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवें पुरुष के लिए एक मित्रवत् संकेत:
औरों की तरह आप भी कोलिनॉस
का प्रयोग कीजिये और मुस्कराइये।
ताज़गी और स्वच्छता के लिये
सुबह और रात को कोलिनॉस।
मित्रों के बीच अपने पर
भरोसा रहेगा ... अधिक
आनन्द आएगा!

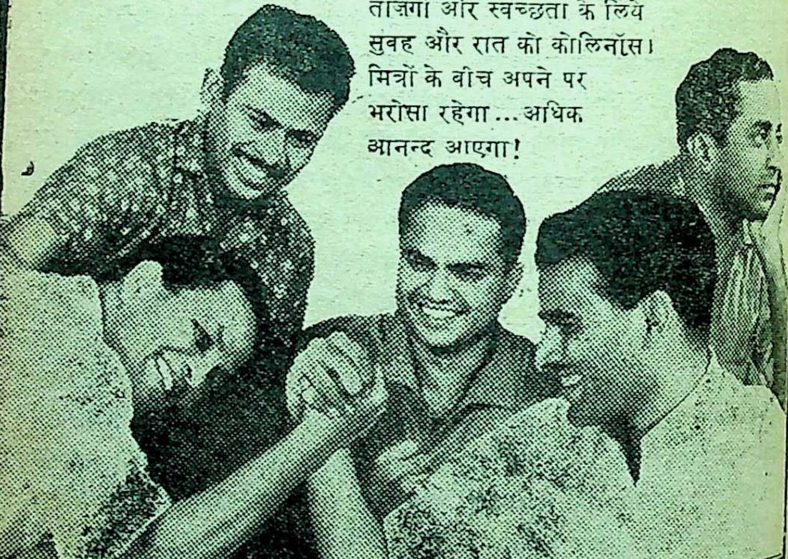

मधुर मुस्कान...कोलिनॉस की मुस्कान
रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी...जेफ़री मॅनर्स अॅन्ड कम्पनी लिमिटेड
ASP/GM/K 21 HIN

जहां तक मेरी जानकारी है, दूसरे जंगली पशु कभी चीते पर आक्रमण नहीं करते। सिर्फ एक बार मैंने एक शेर को चीते को मारते देखा था। शेर एक हिरन को मारने में व्यस्त था कि एक चीता घूमता-घामता उधर आ गया। शेर ने शायद यह समझकर कि चीता उसके शिकार को हजम करना चाहता है, एक झपट्टे में चीते का काम तमाम कर दिया।

ऊपर मैंने बाइबिल का एक उद्धरण चीते के संदर्भ में दिया था। परंतु वह शायद पूर्णतया शुद्ध नहीं है। चीता वनस्पतियों के अलावा चिड़ियों तथा हिरनों आदि को भी खा लेता है। और जिस पर वह अपनी ललचायी हुई दृष्टि डाल लेता है, वह प्राणी उसके चंगुल से बहुत कम बच पाता है; क्योंकि चीता सबसे तेज दौड़नेवाला जंगली जानवर है।

खुदा के दरबार में जब मेरी पेशी होगी, तो अपनी भलाइयों का (जो बहुत ही कम हैं) जिक्र करते समय मैं यह भी कहूंगा कि मैंने कभी किसी चीते को नहीं मारा है। *

जीवित मशाल

पेट के आपरेशन के बाद मैं अस्पताल में पड़ा था। नींद नहीं आ रही थी। वार्ड में पांच रोगी और थे। दो का अभी आपरेशन होना था; बाकी तीन का हो चुका था। हमारे बीच सत्रह साल की एक लड़की थी हेलन। उसी दिन उसका अपेंडिसाइटिस का आपरेशन हुआ था और वह बहुत दर्द में थी। पास की खाट पर पड़ी थी एक नीग्रो स्त्री–नोनी। उसका कैन्सर का आपरेशन हुआ था और हम सभी जानते थे कि उसके बचने की उम्मीद बहुत कम है। उसे लगातार तेज दर्द हो रहा था; लेकिन वह न कराहती थी, न शिकवा ही करती थी।

रात को हेलन रोने लगी। मैंने नोनी को उसे ढाढ़स बंधाते हुए सुना। वह कह रही थी–"सो जा बेटी, सवेरे तक तेरा सारा दर्द गायब हो जायेगा। मैं जानती हूं, तेरे बहुत दर्द हो रहा है। लेकिन उसके बारे में तू सोचना बंद कर दे, तो दर्द उतना नहीं महसूस होगा।" लेकिन हेलन रोती ही रही। अब नोनी उससे उसके स्कूल की डांस-पार्टी, परीक्षा, उसकी तरुणाई, उसकी सुंदरता आदि के बारे में बोलती रही। फिर भी कोई असर नहीं हुआ। अंत में नोनी ने बड़ी मृदुता से कहा–"अब तू आंखें मूंद ले; मैं गाना गाऊंगी तेरे लिए।"

बेचारी नोनी का सुर उखड़-उखड़ जाता था। फिर भी थोड़ी देर में उसके भक्तिगीत की स्वर-लहरी में मेरी भी झपकी लग गयी।...... अगले दिन सवेरे उठे, तो नोनी वार्ड में नहीं थी। स्वयं आराम पाने के बजाय, दूसरों को आराम पहुंचाने की कोशिश करते-करते रात को वह भगवान को प्यारी हो गयी थी।

–हेडविग बी० मर्फी

★

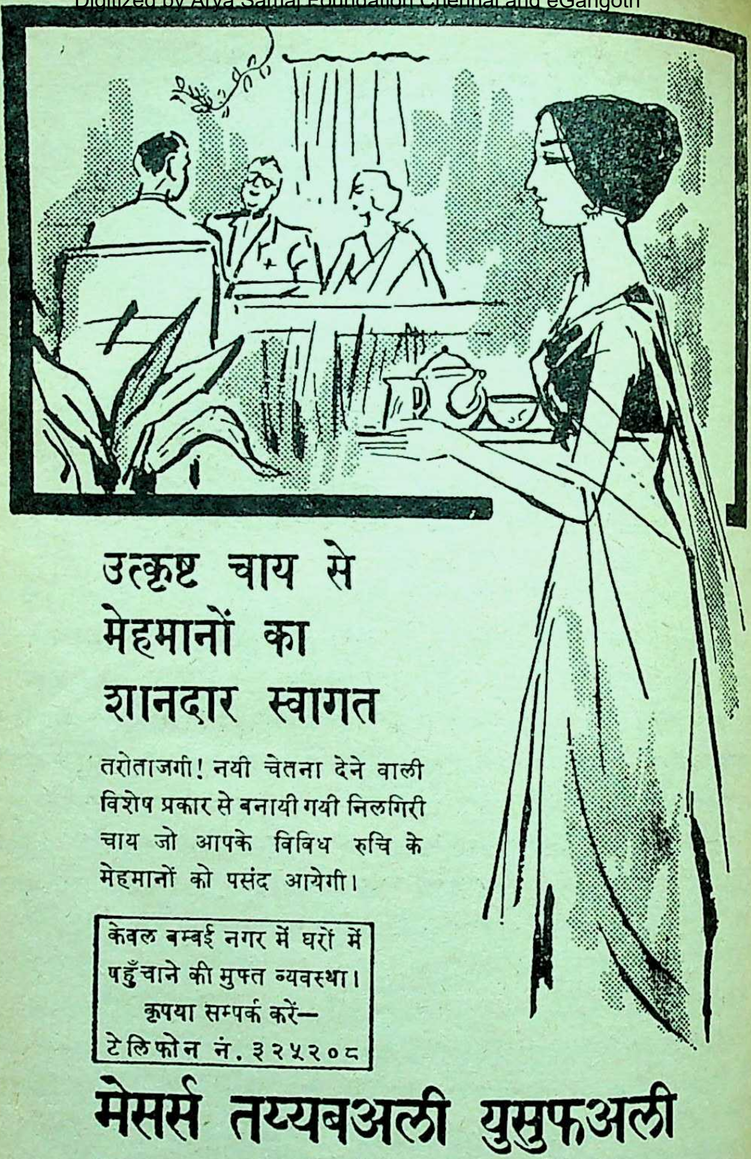

उत्कृष्ट चाय से
मेहमानों का
शानदार स्वागत

तरोताजगी! नयी चेतना देने वाली विशेष प्रकार से बनायी गयी निलगिरी चाय जो आपके विविध रुचि के मेहमानों को पसंद आयेगी।

केवल बम्बई नगर में घरों में
पहुँचाने की मुफ्त व्यवस्था।
कृपया सम्पर्क करें—
टेलिफोन नं. ३२५२०८

मेसर्स तय्यबअली युसुफअली

अब्दुल रहमान स्ट्रीट, पायधूनी, बम्बई–३

Telstar TE-1. HIN.

श्रीलंका और रावण की लंका

सांस्कृतिक महत्व के एक ऐतिहासिक प्रश्न का भूगोल के आधार पर विवेचन

डा० विद्याबंधु त्रिपाठी

प्रत्येक निष्ठावान हिन्दू की दृष्टि में राम सत् के प्रतीक हैं और रावण असत् का प्रतीक है, जो कि सत्-शक्ति द्वारा पराजित होता है। और रावण की वासस्थली मानी गयी है—लंका नगरी। परंपरा भारत के दक्षिण स्थित श्रीलंका द्वीप को ही रावण की लंका मानती है।

श्रीलंका द्वीप भूमध्य रेखा से चार सौ मील उत्तर की ओर ५°५५' तथा ९°५०' उत्तरी अक्षांशों के वीच स्थित है। द्वीप की अधिकतम लंबाई २७० मील तथा अधिक-से-अधिक चौड़ाई १४० मील है। क्षेत्रफल है २५,३३२ वर्गमील। भूगर्भ व भूगोल की दृष्टि से यह भारतीय प्रायद्वीप का ही एक अंग है, जिसे संकरे व उथले पाक जलडमरूमध्य ने पृथक् कर रखा है।

सामान्य रूप से मद्रास, आंध्र और उड़ीसा राज्यों में पायी जानेवाली पुराणयुगीन खोंडेलाइट क्रम की चट्टानें ही श्रीलंका में भी पायी जाती हैं। द्वीप के मध्यवर्ती भाग में पर्वतों का एक पुंज है, जिसके चारों ओर मैदान हैं। इसकी तीन प्रमुख शृंखलाएं पिदुरतलागल (८,२९६ फुट), किरिगलपोत्त (७,८५७ फुट) तथा श्रीपाद (७,३६० फुट) परस्पर मिलकर एक विशाल कूट का निर्माण करती हैं।

औसत हिन्दू की मान्यता है कि रामायण में इसी श्रीलंका का वर्णन है। कोनेश्वर देव, सीतावक, रावण कोट्टुव एवं विभीषण देव का मंदिर आदि स्थानों का इसके समर्थन में उल्लेख किया जाता है।

किंतु रावण की लंका की भौगोलिक स्थिति काफी विवादास्पद है। श्रीलंका के प्राचीन साहित्य में रावण की कहीं चर्चा नहीं है। ऐसे ही कई कारणों से इस विचार ने जन्म लिया कि श्रीलंका रावण की लंका नहीं हो सकती। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि रावण की लंका विंध्याटवी में थी।

'कोशोत्सव' नाम के स्मारक-ग्रंथ में रायबहादुर हीरालाल ने 'राम-रावण युद्ध' नाम के लेख में प्रतिपादित किया है कि रावण की लंका अमरकंटक की चोटी पर थी और उसकी तलहटी का विस्तीर्ण दलदल एवं विशाल जलाशय ही वह समुद्र था, जिस पर राम ने सेतु-निर्माण कराया था। वर्तमान विलासपुर जिले के केंदा नामक

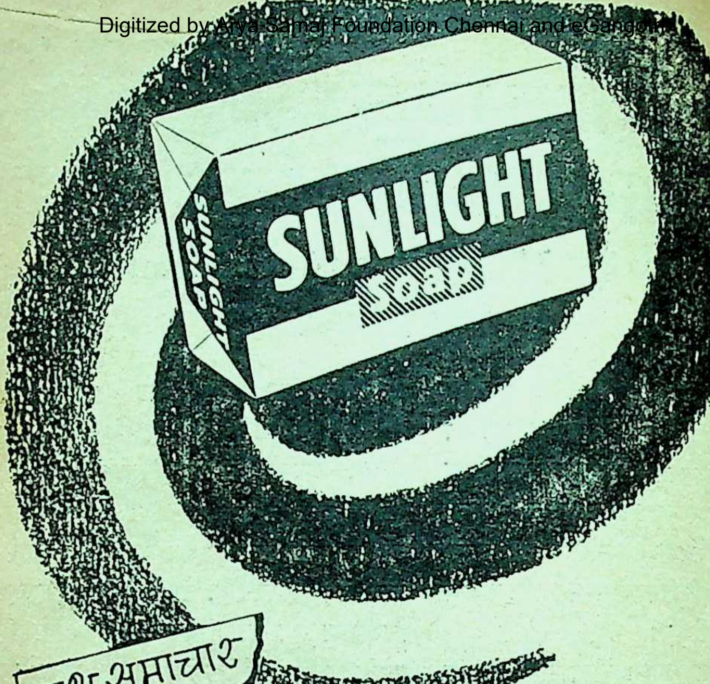
SUNLIGHT
SOAP
SUNLIGHT SOAP

शुभ समाचार

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट से

आपके कपड़े
चमक उठते हैं

- नया रूप, नया रैपर
- उजली धुलाई की नई शक्ति से

आप के कपड़े अधिक सफ़ेद, अधिक चमकदार!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S.48-77 HI

गांव को वे किष्किंधा मानते हैं। किंतु अपने मत की पुष्टि में उन्होंने उचित प्रमाण नहीं प्रस्तुत किये हैं।

सरदार किबे ने इंदौर में हुए प्रथम भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन में अपना शोधप्रबंध प्रस्तुत करते हुए, चोली नामक ग्राम को लंका बताया था। चोली ग्राम विंध्याचल और नर्मदा नदी के मध्य एक बड़ी झील के दक्षिण-पूर्वी तट पर, समुद्र की सतह से केवल ७०० फुट की ऊंचाई पर बसा है और उसके निकट किसी पहाड़ी या द्वीप के होने के चिह्न भी नहीं हैं। अतः इस गांव को लंका मानना कठिन ही है।

टी० परमशिव अय्यर की पुस्तक 'रामायण एंड लंका' शोधात्मक और तर्कपूर्ण है। इस पुस्तक के अनुसार रावण-कालीन लंका जबलपुर से १५ मील उत्तर की ओर स्थित १,९३२ फुट ऊंची वर्तुलाकार इंद्राणा पहाड़ी पर थी। अय्यर के मत में इंद्राणा ही रामायण का त्रिकूट पर्वत है। यह पहाड़ी पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम की ओर हिरन और उसकी सहायक नदियों द्वारा घिरी हुई है तथा विंध्याचल एवं नर्मदा के मध्य सिंघल दीप होते हुए पन्नागर रेलवे स्टेशन को जानेवाले राजमार्ग पर स्थित है।

इंद्राणा पहाड़ी की तलहटी में उसके तीन ओर हिरन एवं उसकी सहायक नदियों का जल एकत्र हो जाने के कारण पुराने जमाने में उथली झील का दृश्य उपस्थित हुआ होगा, जिसे रामायण में सागर कहा

लंका की भौगोलिक स्थिति (अय्यर)

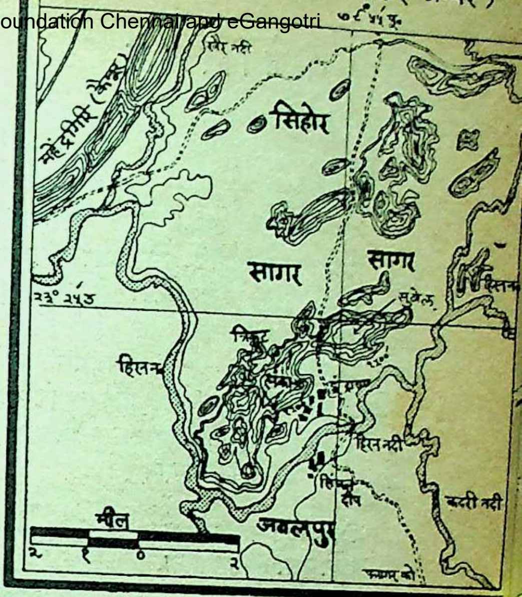

गया है। पंचवटी से रावण सीता का हरण कर, इस झील को रथ द्वारा पार कर त्रिकूट पहुंचा था; सीता की खोज के लिए हनुमान इसी झील को एक दिन में तैरकर लंका में प्रविष्ट हुए थे; श्रीराम ने नल और नील की सहायता से इस झील पर अस्थायी बांध का निर्माण कराया था—ऐसा अय्यर मानते हैं।

संभवतः ग्रीष्म ऋतु होने के कारण रावण को इसे रथ द्वारा पार करने में कठिनाई नहीं हुई, जबकि वर्षा के उपरांत उसे पार करते हुए राम को बांध-निर्माण की आवश्यकता पड़ी।

इस प्रकार लंका विंध्याचल और नर्मदा नदी के मध्य स्थित प्रतीत होती है। रामायण से भी इसका समर्थन करने की कोशिश

'सिर्फ किस्मत से

बाल सुंदर नहीं बनते ...

'बालों को सुंदर रखने में किस्मत नहीं, बल्कि अपनी **मेहनत** और उनकी हिफाजत काम आती है'—**होशियार** महिला का उत्तर यही होगा। सुंदर तथा आकर्षक बालों का राज उनकी पूरी-पूरी हिफाजत में है...और आप के लिए '**केशा**' यह काम बखूबी करता है। '**केशा**' बालों को **जवान** और पौष्टिक रखनेवाले तत्वों से भरपूर है, जो बालों की जड़ों तक पहुँच कर उन्हें रेशम जैसे मुलायम, चमकीले और सचमुच आकर्षक बनाते हैं। सच तो यह है अनोखी खुशबूवाला '**केशा**' आपके बालों के लिए वरदान है।

केशा

सोल एजेंट्स और निर्यातकः
एम. एम. खंभातवाला,
अहमदाबाद-१
एजेंट्सः
सी. नरोत्तम एंड कं.,
बम्बई-२

की गयी है । वाल्मीकि ने राम के मार्ग में नर्मदा-जैसी भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और भौगर्भिक दृष्टि से प्राचीन नदी का उल्लेख नहीं किया है ।

श्री परमशिव अय्यर ने लंका की स्थिति को प्रमाणित करने के लिए मानचित्रों की सहायता ली है और उनमें पंपा सरोवर से त्रिकूट पर्वत (लंका) के मार्ग में आनेवाले ऋष्यमूक पर्वत, महेंद्रद्वार, किष्किंधा और प्रस्रवण पर्वत आदि प्रमुख स्थलों की स्थिति प्रदर्शित की है ।

उनकी यह भी धारणा है कि रावण और उसके भाई संभवतः गोंड थे, जो उस समय से अब तक इस क्षेत्र के वन्य प्रदेशों में रहते आये हैं । इसी प्रकार वानर और रीछ क्रमशः कारकुस एवं भुइया जातियों के थे । ये गोंडों की अपेक्षा निर्धन थे । राम ने इन्हीं आदिवासियों की सहायता से गोंडों के अधिपति रावण को ८०० वर्गमील क्षेत्रफल-वाले जनस्थान में युद्ध में परास्त किया था ।

श्री अय्यर की स्थापना को स्वीकार करने में कई बाधाएं हैं । प्रथमतः जबलपुर के समीप के क्षेत्र में सागर की स्थिति संदेहास्पद है। वैसे जनस्थान और चित्रकूट के आस-पास का प्रदेश विंध्य का ऊर्ध्ववर्ती खंड है और उसकी भूगर्भीय रचना छिछले समुद्र में हुई, ऐसा अनुमान किया गया है ।

किंतु इन शिलाओं का निर्माण निश्चित रूप से आज से १०० करोड़ वर्ष पूर्व उपाकल्प में हुआ था । अतः उसके आधार पर रामायण-काल (५,५०० वर्ष पूर्व) में यहां सागर की उपस्थिति सिद्ध नहीं होती ।

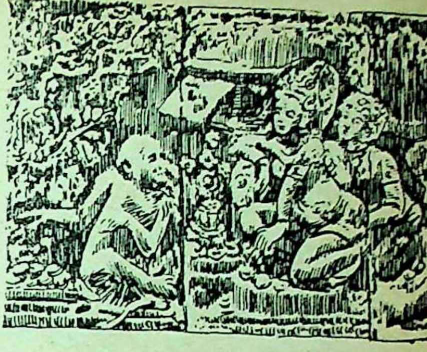

अशोकवन में सीता और हनुमान
बोरोबुदुर, जावा का एक शिल्प

हिरन और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित झील के अस्तित्व को मान लें, तो भी उससे वाल्मीकि रामायण के शेष वर्णनों की संगति नहीं बैठती । प्रश्न उठता है कि सीतान्वेषण-प्रसंग में विंध्याटवी के अतिरिक्त दक्षिण भारत के प्रमुख स्थलों एवं नदियों का विवरण क्यों दिया गया है ?

किष्किंधा-कांड के ४१-वें सर्ग में कपिराज सुग्रीव ने वानरों को दक्षिण में सीता को खोजने का आदेश देते हुए कहा है:

“हे वानरो, सर्वप्रथम तुम विंध्याचल, गोदावरी, कृष्णवेणी एवं महाभागा नदियों को पार करना । तदनंतर मेखल, उत्कल, दशार्ण, विदर्भ, ऋषिक एवं कैषिक आदि प्रदेशों को क्रमानुसार पार करते हुए सीता की खोज दंडकारण्य में पूर्ण कर आगे बढ़ना । तदुपरांत आंध्र, पुंड्र, चोल, पांड्य, केरल आदि देशों में खोज करते हुए

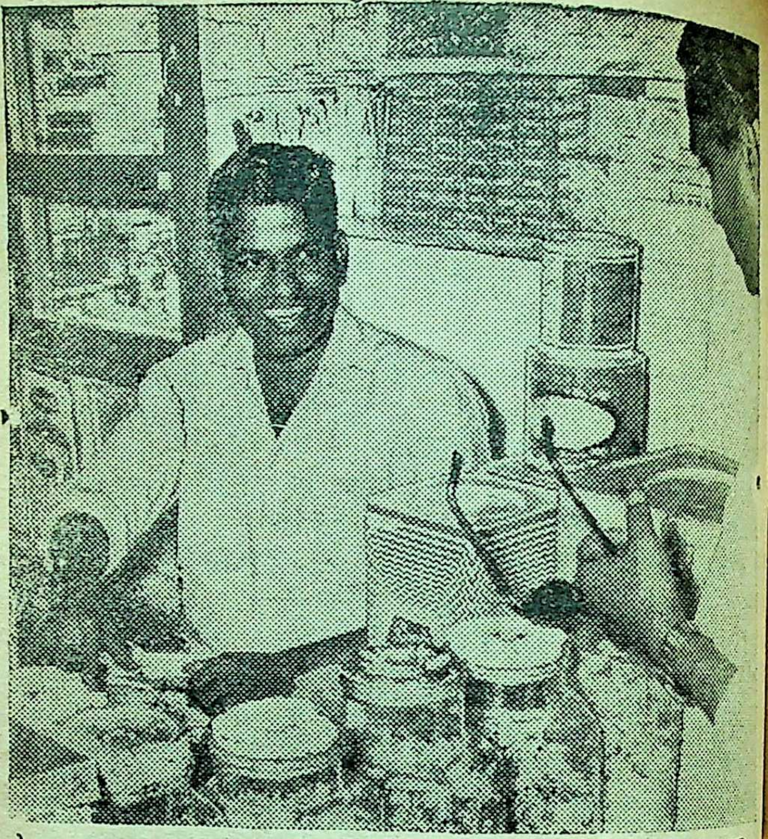

हर्क्युलिस साइकिल से कहीं बढ़ कर है
...यह तो जीवन-साथी है

गोविन्द ने मोदीखाने के कर्मचारी के रूप में काम शुरू किया था जिसे अपनी सबसे कीमती चीज, नई हर्क्युलिस साइकिल का गर्व था। अब तो वह ऐसी दुकान का मालिक है जहां खरीदारों की भीड़ रहती है। और उसकी हर्क्युलिस आज भी अथक सेवा करती जा रही है।

हर्क्युलिस भारत के सबसे बड़े, सबसे अधिक सुसज्जित साइकिल कारखाने में परम सूक्ष्मता से कठोरतम मानों के अनुसार बनती है। संसार के सर्वोच्च साइकिल निर्माण कारखाना ट्यूब इनवेस्टमेन्टस लिमिटेड इंगलैण्ड के अनुभव और तकनीकी ज्ञान इसमें लगे हैं।

टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया, मद्रास-५०

अयोमुख (पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग) पहुंचना। फिर कावेरी तथा मलय पर्वत पार कर ताम्रपारिणी के मुहाने से समुद्र-तट पहुंच जाना। समुद्र के भीतर महेंद्राचल है तथा उसके दूसरी ओर १०० योजन की दूरी पर एक लंबा द्वीप है। वही स्थान राक्षसपति रावण का निवास-स्थल है। वहीं सीता की खोज करना।"

संपाति ने भी राम को रावण की लंका का विवरण इस प्रकार दिया है—"समुद्र-तट से सौ योजन की दूरी पर एक द्वीप है। उसी में विश्वकर्मा द्वारा रचित लंका नामक नगरी है।" इसी तरह युद्धकांड के चतुर्थ सर्ग में राम के किष्किंधा से लंका जाते समय सह्य और मलय पर्वतों को पार कर महेंद्र पर्वत पहुंचने का वर्णन है।

भौगोलिक दृष्टि से महेंद्राचल पूर्वी घाट का अंतिम दक्षिणी क्रम है। इस समय भी समुद्र के समीप महेंद्रगिरि नाम का स्थान पर्याप्त ऊंचाई पर है। ताम्रपर्णी नदी मद्रास राज्य के तिरुनेलवेली जिले में से प्रवाहित होती हुई कोलकै (पांडयकवत) के समीप समुद्र में गिरती है। समीप ही धनुष्कोटि है।

मन्नार से भारत के निकटतम तट की दूरी २२ मील है। इस विस्तार में शिलाओं और बालू द्वारा निर्मित तट की पंक्ति है, जिसे 'आदम का पुल' कहते हैं। यही 'आदम का पुल' नल-नील का सेतु था। यहां समुद्र की गहराई लगभग १४ फुट है। प्राचीन काल में शायद इस भाग की लंबाई कम थी और यह ज्यादा उथला था।

धनुष्कोटि से रामेश्वरम् केवल सात मील है। माना जाता है कि श्रीराम ने समुद्र पार करने के पूर्व यहां अपने हाथों शिवलिंग की स्थापना और पूजा की थी।

श्रीलंका के आंतरिक भाग में पिदुरुतलागल, किरिगलपोत्त एवं श्रीपाद शृंखलाओं द्वारा निर्मित त्रिकूट का वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। इसी त्रिकूट के उच्च भाग पर रावण की स्वर्णमय लंका थी।

वाल्मीकि रामायण के युद्धकांड (१५६-वां सर्ग) में रावण-वध एवं विभीषण के राजतिलक के उपरांत श्रीराम के पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या लौटते समय नीचे के मुख्य पर्वतों, नदियों, आश्रमों और नगरों का जो क्रमबद्ध वर्णन है, वह भी लंका की इस परंपरा-स्वीकृत स्थिति को ही प्रमाणित करता है।

निःसंदेह श्रीलंका के अर्वाचीन निवासी—सिंघाली और तमिल—आर्य और द्राविड परंपराओं के हैं और राक्षस जातियों से भिन्न हैं। किंतु लंका के भारतीय प्रायद्वीप का ही एक विशिष्ट अंग होने के कारण प्राचीन काल से वहां भारतीयों का आवागमन होता रहा है। सिंघली लंका में ६०० से ३०० ई० पू० के बीच आये।

इसके पूर्व दक्षिण भारत की यक्ष एवं राक्षस जातियां भी लंका जाकर बस गयी होंगी। 'दीपवंस' और 'महावंस' नामक पालिग्रंथों व अट्ठकथाओं से भी प्रमाणित होता है कि श्रीलंका में ५४३ ई० पू० तक यक्ष और राक्षस जातियों का अस्तित्व था।

★

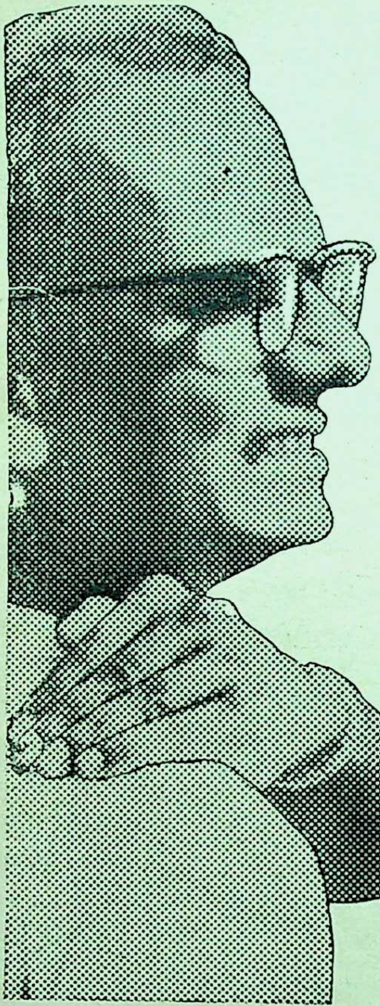

पेशियों के दर्द से
आराम पाने के लिये
अमृतांजन

अमृतांजन बहुत जल्दी और बहुत अच्छा आराम पहुंचाता है क्योंकि यह आरामदायक १० दवाइओं का मिश्रण है। एक एक बार आपको इतना कम चाहिये कि एक शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। करीब ७० वर्ष से यह विश्वासी घरेलू दवाई अमृतांजन, मोच, सरदर्द, सीने के ठंडक और दर्द, ज़ुकाम और दूसरे तमाम दर्दों में भी अचूक है।

मौसम के बदलने और रोज रोज के कामकाज के दबाव से दर्द, ज़ुकाम आदि पैदा होते हैं। एक शीशी अमृतांजन बराबर पास रखिये।

अमृतांजन
१० दवाइयों का मिश्रण है

AMRUTANJAN
Pain Balm
Amrutanjan Ltd.
AMRUTANJAN
THE PAIN BALM
AMRUTANJAN LTD

अब अमृतांजन की शीशी गत्ते की नई डिबिया में लीजिये। यह नकल से बचानेवाली 'अल्यू' कैप से सीलबंद है।

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2332A

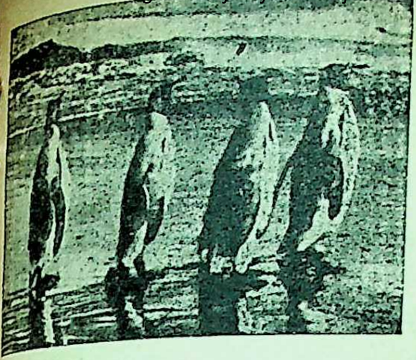

यह शिष्ट पक्षी भी मारिशस के डोडो की तरह नामावशेष हो जायेगा, अगर मनुष्य ने इसकी मदद नहीं की ।

दक्षिण ध्रुव के सभ्य आदिवासी

महाराज कृष्ण जैन

संसार के केवल एक ही भूखंड दक्षिणी ध्रुव में पाया जानेवाला जीव पेंग्विन सृष्टि के विचित्रतम प्राणियों में से है । वह पक्षी है; किंतु उड़ता नहीं, चलता है । वह मछली नहीं है; तब भी बड़ी सुगमता से जल में तैर सकता है । पक्षियों एवं मछलियों दोनों के विपरीत, वह अपने पिछले पैरों के बल सीधा खड़ा हो सकता है—भालू या चिंपैंजी की तरह ।

पेंग्विन की चाल बड़ी अटपटी होती है । अपने छोटे-छोटे पैरों पर खड़ा होकर वह डगमगाता-डोलता चलता है, जैसे बहुत शराब पी ली हो । कभी-कभी वह बर्फ पर पेट के बल घिसटता भी है । उस समय वह अपने पिछले पैरों और परनुमा हाथों का सहारा लेता है, जैसे पानी में तैर रहा हो ।

अब तक पेंग्विन की सत्रह जातियों का पता चला है । इनमें से किंग पेंग्विन सबसे बड़ा होता है—कद ३ और ४ फुट के बीच, वजन ८०-९० पौंड । एडली पेंग्विन छोटा होता है—कोई दो फुट ऊंचा ।

खड़ा हुआ किंग पेंग्विन किसी सुसंस्कृत, सुवेशी भद्र पुरुष से कम प्रभावशाली नहीं लगता । पीठ और सिर एकदम काले और पेट बिलकुल सफेद । प्रतीत होता है कि सफेद कमीज पर काला टेलकोट पहने कोई साहब खड़े हैं डिनर-पार्टी में जाने के लिए तैयार। कंधों से जुड़े दो डैने बिलकुल हाथों का भ्रम कराते हैं । किंग पेंग्विन के गले के दोनों ओर दो बड़े-बड़े पीले धब्बे होते हैं और एडली की आंखों के चारों ओर सफेद छल्ले, जो उनके आकर्षण को और

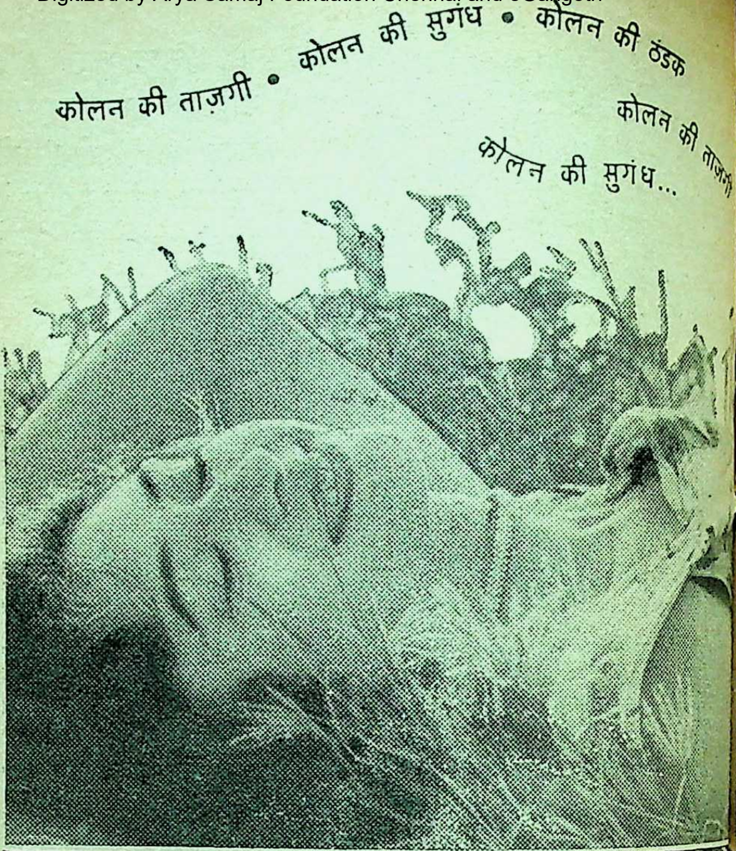
कोलन की ताज़गी • कोलन की सुगंध • कोलन की ठंडक
कोलन की ताज़गी
कोलन की सुगंध...

टाटा का
ओ डी कोलन
टॉयलेट साबुन

भारतभर में, ओ डी कोलन
की सुगंधवाला
एकमात्र साबुन

Tata's
EAU DE
COLOGNE
Toilet Soap

TESY-59 HIN

बढ़ा देते हैं।

स्वभाव से ये अत्यंत शिष्ट होते हैं। एक पेंग्विन दूसरे पेंग्विन से मिलते समय हाथ उठाकर अभिवादन करता है और कुछ बात भी करता है, जैसे कुशल-मंगल पूछ रहा हो। यदि आप ध्रुव-प्रदेश में खड़े हों तो जिज्ञासावश वह निःशंक आपके निकट चला आयेगा—इतना निकट कि आप उसे हाथ बढ़ाकर छू सकते हैं। मानो आपसे पूछना चाहता हो—"कहो मित्र, किस देश के निवासी हो?"

दक्षिणी ध्रुव के इस विदूषक के संबंध में सदियों तक जीवशास्त्रियों को बहुत कम जानकारी प्राप्त हो सकी थी। ध्रुव-प्रदेश में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए गयी पार्टियों अथवा साहसिक यात्री-दलों ने इसके संबंध में छिटपुट सूचनाएं अवश्य एकत्र की थीं। अतः सन १९५५ में डाक्टर स्लेडन विशेषतः इसी उद्देश्य से दक्षिणी ध्रुव गये और उन्होंने प्रथम बार इस पक्षी का विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन किया।

वहां इस समय लगभग १२,००० किंग पेंग्विन और कोई ५०,००० एडली पेंग्विन रहते हैं। किंतु उनकी संख्या तीव्रता से घटती जा रही है। बात यह है कि प्रतिवर्ष जितने पेंग्विन जन्म लेते हैं, उनमें से २० या २५ प्रतिशत ही बच पाते हैं। शेष ध्रुव की भयंकर ठंड, प्रचंड बर्फानी तूफानों, क्षुधा, रोग, हिंस्र पक्षियों, मछलियों आदि के शिकार हो जाते हैं।

जनवरी और फरवरी में दक्षिणी ध्रुव में ग्रीष्म ऋतु होती है। वहां ग्रीष्म का अर्थ है तापमान का ऋण १०० अंश से बढ़कर ऋण ८० अंश हो जाना। इन महीनों में पेंग्विन ध्रुव-सागर में बहते हुए बर्फ के तोदों पर अथवा जल में रहते हैं। इस समय वे डटकर भोजन करते हैं और अपने शरीर को चर्बी से भर लेते हैं। क्योंकि वापस जमीन पर लौटने पर महीनों तक भोजन मिलने की उम्मीद नहीं रहती और उन्हें इसी चर्बी पर जीना पड़ता है।

मार्च में शीत ऋतु प्रारंभ होने पर वे अंडे देने के लिए जमीन पर लौटते हैं और तट पर न रहकर कोई १५० मील भीतर चले आते हैं। अब उनकी प्रणय-क्रीड़ा आरंभ होती है और वे जोड़ा बनाने के लिए साथी की तलाश करने लगते हैं। प्रणय-निवेदन में नर मादा को एक कंकड़ उपहार में देता है। वे कंकड़ों की एक छोटी ढेरी बनाते हैं, जिस पर मादा अंडा सहेजे खड़ी रहती है।

वास्तव में कंकड़ों की ढेरी की कोई उपयोगिता नहीं है। फिर भी पेंग्विन-दंपति को उससे बड़ा लगाव होता है। शायद यह करोड़ों वर्ष पूर्व की उस अवस्था का परिचायक है, जब वे घोंसला बनाकर सामान्य पक्षियों की भांति रहा करते होंगे।

नर पेंग्विन प्रायः किसी दूसरे पेंग्विन के घोंसले से कंकड़ चुरा लाता है। बड़ा चौकन्ना होकर वह चोरी के लिए निकलता है। जहां किसी की निगाह बची, कंकड़ उठा लेता है। पकड़ा गया, तो भोली मुद्रा

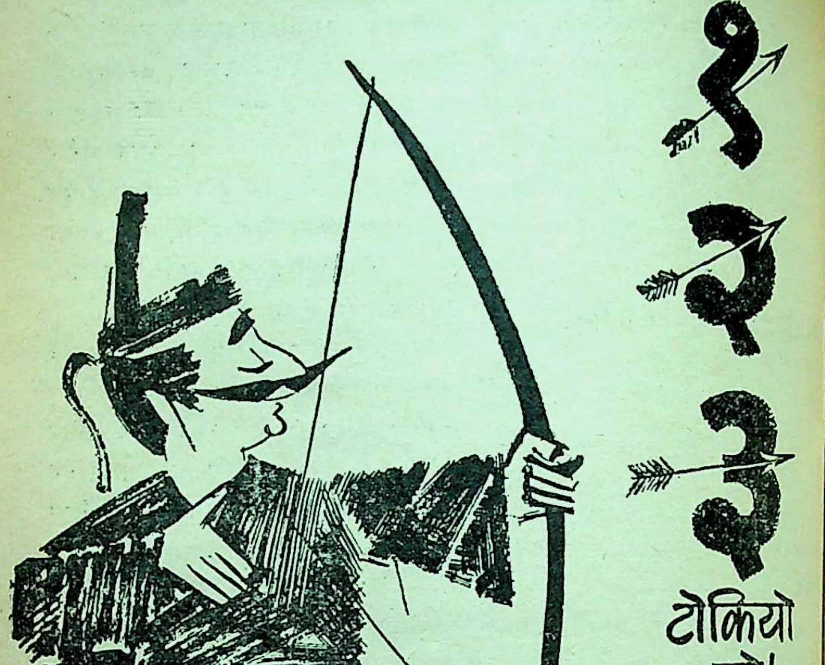

हर हफ़्ते बम्बई से
टोकियो के लिए ३ बोइंग!

हर बुधवार और हर शुक्रवार कलकत्ता,
बैंगकॉक व हांग कांग होते हुए तथा
हर सोमवार दिल्ली, बैंगकॉक व हांग कांग होते हुए!

३० से अधिक वर्षों का उड्डयन संबंधी अनुभव **एयर-इंडिया**

सहयोगी: बी.ओ.ए.सी. और कैण्टस

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के लिए बचत कीजिए!

JWT AI-1273 (A)

डिनर-पार्टी में जाने के लिए तैयार
[व्यंग्यचित्र : 'सैटर्डे रेव्यू' से]

बनाकर अनजान की तरह इधर-उधर देखने लगता है ।

पेंग्विनों में एकविवाह की प्रथा प्रचलित है । नर और मादा जोड़ा बनाकर रहते हैं । मई के मध्य तक मादा एक अंडा देती हैं । प्रसूति होते ही वह अंडे को नर की देख-रेख में छोड़कर भोजन की तलाश में चल पड़ती है, १५० मील दूर सागर-तट की ओर ।

वास्तव में प्रसव के श्रम से बेचारी मादा पेंग्विन अत्यंत दुर्बल और क्षीणकाय हो जाती है । अपनी भूख शांत करने और भावी शिशु के लिए भोजन लाने के लिए उसका इस तरह जाना बड़ा आवश्यक होता है । जुलाई के अंत में वह वापस आती है । नर तब तक आगे को झुककर अंडे को अपने पैरों पर टिकाये रहता है ।

नर हो या मादा, सभी पेंग्विनों के पेट पर नीचे की ओर, पैरों के बीच में एक स्थल होता है, जो शेष शरीर से अधिक गरम रहता है । इसी 'जीवित हीटर' द्वारा वे अपने अंडों और बच्चों को गरम रखते हैं ।

मादा के आने पर नर की भोजन की बारी आती हैं । इस प्रकार वे बारी-बारी से भोजन और अंडे की रखवाली करते हैं । कई बार दो मास के दीर्घ उपवास की यह अवधि समाप्त होने से पूर्व ही पक्षी का चर्बी का कोश समाप्त हो जाता है और वह साथी की वापसी की प्रतीक्षा न कर, स्वयं भी भोजन की खोज में चल पड़ता है । लेकिन अंडे को अपने पैरों पर रखकर वह साथ ही ले जाता है । बहुधा इस प्रयास में अंडा गिरकर फूट जाता है ।

किंग पेंग्विन का बच्चा लगभग छः इंच का होता है, ऊन की ढेरी जैसा । माता-पिता उसके मुंह में मुंह डालकर पहले से पचा हुआ भोजन उसे खिलाते हैं ।

ध्रुव-प्रदेश के भयंकर बर्फीले तूफानों से बचने के लिए हजारों की संख्या में पेंग्विन एक ठोस वृत्त बनाकर एक-दूसरे से बिलकुल सटकर खड़े हो जाते हैं । यदि इस प्रकार वे अपने शरीरों की गरमी की सम्मिलित रूप से रक्षा न करें, तो उनका जीना असंभव हो जाये ।

मौसम साफ होने पर आप उन्हें चार-चार, छः-छः या अधिक के समूहों में वार्तालाप में निमग्न देख सकते हैं । परंतु उन्हें अपने परिवार की रक्षा के लिए अत्यंत साव-

चकाचक उजलेपन के लिए

विक्टोरिया ब्लू (नील)

00B

श्रेष्ठ किस्म की शुद्ध आधुनिकतम

अल्ट्रामरीन ब्लू (नील)

GENUINE
BEST ULTRA-MARINE
VICTORIA BLUE
00B
Manufactured in India by
Ultramarine & Pigments Ltd.
AMBATTUR (NEAR MADRAS)

पश्चिम जर्मनी के प्रतिष्ठानके सहयोग से भारतमें बनानेवाले

अल्ट्रामरीन एण्ड पिगमेण्टस् लिमिटेड

अम्बत्तूर (मद्रास के निकट)

सोल सेलिंग एजन्टस्: **केमडाइस् ट्रेडिंग कम्पनी**

३८, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई – १

३१८, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट – मद्रास – १

जिन क्षेत्रोंमें प्रतिनिधित्व नहीं है

वहां स्टाकिस्टस् चाहिए

शान रहना पड़ता है । क्योंकि जिन्हें कोई साथी नहीं मिला हो अथवा जिनका अंडा गिरकर फूट गया हो, ऐसे इक्कड़ पक्षी अन्य पक्षियों के अंडे-बच्चे चुरा लेते हैं, या उन्हें नष्ट कर डालते हैं ।

दिसंबर के अंत में जब गरमी शुरू होती है, तमाम पेंग्विन समुद्र की ओर प्रस्थान कर देते हैं । वे बड़े-बड़े समूहों में प्रायः क्तियां बांधकर चलते हैं । बच्चे इस समय तक जवानी में पदार्पण कर चुके होते हैं, और साथ होते हैं । समुद्र के पानी में कूदने से पहले कुछ देर तक वे एक-दूसरे से खूब ठेलमठेल करते हैं । फिर एक-एक करके जल में उतरते हैं ।

पेंग्विनों में नर-मादा की पहचान करना बहुत कठिन है । कभी-कभी नर पक्षी भ्रमवश किसी दूसरे नर को ही कंकड़ का प्रणयोपहार दे बैठता है । तब दूसरा पक्षी उसे अपने पौरुष का अपमान मानकर उसकी अच्छी खबर लेता है ।

बहादुर पेंग्विन अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए ध्रुवीय प्रकृति के रौद्र रूप से निरंतर विकट संघर्ष कर रहे हैं । किंतु लगता है कि यदि मनुष्य ने उनकी मदद नहीं की, तो इस संघर्ष में विजय प्रकृति की होगी और भविष्य में पेंग्विन का अस्तित्व केवल प्राणिशास्त्र के ग्रंथों में ही रह जायेगा– मारिशस के डोडो पक्षी की तरह ।

★

गागारिन की बिल्ली

हफ्ते में दो बार पेरिस से एक छोटा-सा सीलबंद डिब्बा प्रथम अंतरिक्ष-यात्री यूरी गागारिन के नाम आता है । रूसी वायुयान कंपनी एयरोफ्लोट के जहाज इसे लाते हैं । इसमें बछड़े का ताजा कलेजा होता है ।

लेकिन यह न समझिये कि यह यूरी गागारिन को खाने को मिलता है । यह उनकी ईरानी बिल्ली विलारक्वियर के लिए है । जब गागारिन पेरिस गये थे, वहां के बिल्ली-प्रेमी क्लब ने यह बिल्ली उन्हें उपहार में दी थी । बिल्ली मास्को चली तो आयी; लेकिन उसे रूस का सर्वहारा भोजन बिलकुल पसंद नहीं आया । वह अनशन करने लगी । अंत में गागारिन को यह व्यवस्था करनी पड़ी ।

एक अमरीकी आदमी जीवन-बीमा की बड़ी पालिसी लेने गया । इसके लिए उसे जो फार्म भरने पड़े, उनमें बहुत-से सवाल पूछे गये थे । उनमें से एक था–आपके पिता की मृत्यु किस उम्र में और कैसे हुई । उस आदमी का पिता फांसी पाकर मरा था । लेकिन यह बात बताना उसे ठीक न लगा । न झूठ बोलना ही ठीक होता । सो उसने फार्म पर लिखा–"पिताजी ६५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुए । वे एक सरकारी आयोजन में भाग ले रहे थे कि नीचे से मंच खिसक गया ।"

–रायचंद्र

★

कोण कोई भी हो

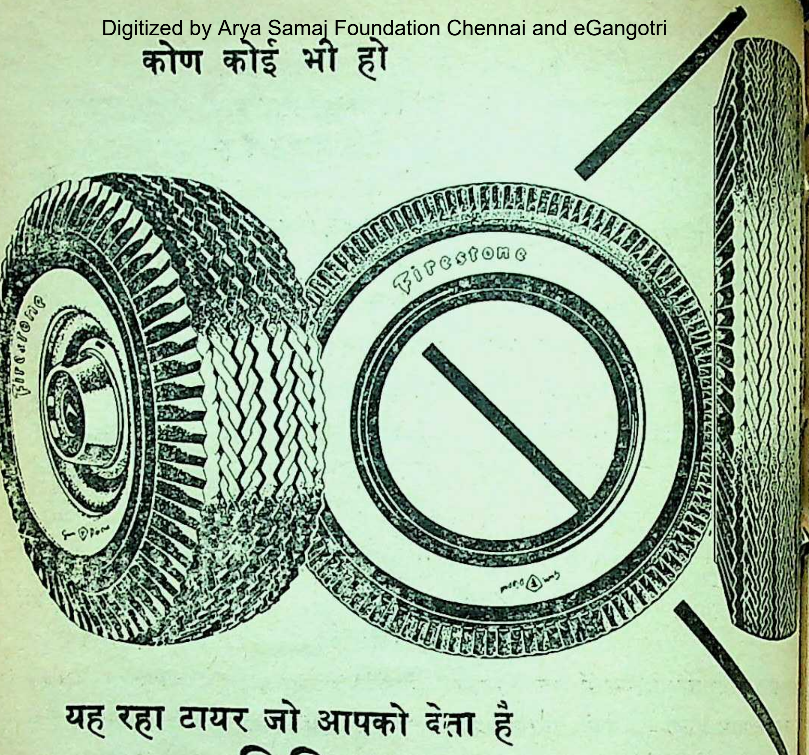

यह रहा टायर जो आपको देता है

अतिरिक्त सुरक्षा

यह ऐसी ट्रैड प्रणाली है, जो मोटरवालों को अधिकाधिक टायर सुरक्षा प्रदान करने के लिए परीक्षण-मैदानों तथा मोटर रेस की सड़कों पर संपन्न अनुसंधान की प्रतीक है। सुरक्षित संचालन के हजारों कोण सड़क को मज़बूत पकड़ते हैं, और जब आप अपनी मोटर चालू या खड़ी करते हैं तब आसान और बेहतर संचालन की आपको अधिक सुविधा रहती हैं। जब आप फायर खरीदते हैं तब भली भाँति जानते ही हैं कि आपको कितना लाभ होनेवाला है

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर

फायरस्टोन : बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आपका प्रिय प्रती

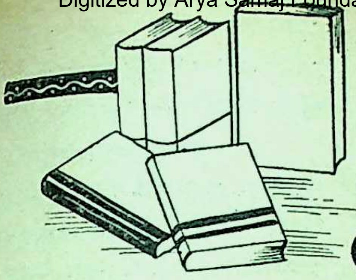

नयी पुस्तकें

प्रतिनिधि रचनाएं

राष्ट्र भारती ग्रंथमाला–१, लेखक : नार्ल वेंकटेश्वर राव, पृष्ठसंख्या : १९०, मूल्य : साढ़े तीन रुपये; ग्रंथमाला–२, लेखक : परशुराम, पृष्ठसंख्या : १९६, मूल्य : तीन रुपये; ग्रंथमाला–३, लेखक : व्यंकटेश माडगूळकर, पृष्ठसंख्या : २४२, मूल्य : चार रुपये; तीनों संकलनों के प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।

ग्रंथमाला–१ में तेलुगु के शीर्षस्थ लेखक नार्ल वेंकटेश्वर राव के ग्यारह एकांकी हैं। हिन्दी रूपांतर बालशौरि रेड्डी ने किया है। प्रस्तुत नाटकों में नार्ल ने जीवन, समाज, राजनीति, परिवार और व्यक्ति की उन्हीं समस्याओं को स्थान दिया है, जो हमारी परंपरा, विचारधारा और रीति-नीति से संबंधित हैं। ये वे समास्याएं हैं, जिनमें उलझकर भारतीय जीवन असह्य यंत्रणाएं भोग रहा है। मानव-धर्म की सूक्ष्म पकड़, दुःख-भोग का मूक तथा सांकेतिक विश्लेषण, नयी और पुरानी मान्यताओं की टकराहट से उठनेवाली समस्याएं और उनके समाधान; और विद्यार्थी, व्यापारी, क्लर्क, गृहस्थ, किसान, आधुनिका आदि के भीतरी-बाहरी संसार की विषमताएं–इन सबका बड़ा सच्चा चित्रण इन नाटकों में मिलता है।

ग्रंथमाला–२ में बंगला के व्यंग्य-सम्राट् परशुराम की बारह कहानियां और सात निबंध हैं। अनुवाद किया है प्रबोध कुमार मजूमदार ने, प्रस्तुत रचनाओं में बीसवीं सदी के यांत्रिक जीवन की बड़ी मनोरम झांकी मिलती हैं। लेखक जीवन के विविध रूपों से सुपरिचित हैं और उसकी पैनी कलम मानव-मन की गुहाओं में छुपी भावनाओं को ऐसे अद्‌भुत ढंग से उभारती है कि पढ़कर पाठक का हृदय आंदोलित हुए बिना नहीं रह सकता। हास्य की छटा के साथ व्यंग्य-वैभव से संपन्न ये कृतियां वाङ्मय की बहुमूल्य रत्नावलियां हैं। मजे की बात यह है कि ये रचनाएं साहित्यिक सरसता से ओतप्रोत तो हैं ही, आधुनिक जीवन और ज्ञान-विज्ञान का भी इनमें प्रचुर समावेश है; साथ ही इनका ताना-बाना भारतीय सांस्कृतिक धरातल पर बुना गया है।

और ग्रंथमाला–३, मराठी के वरिष्ठ लेखक व्यंकटेश दि० माडगूळकर का एक

उपन्यास 'बनगरवाडी', पांच कहानियां और तीन निबंध संकलित हैं । भाषांतरकर्त्ता हैं र० रा० सरवटे । उपन्यास ग्राम-जीवन का बड़ा सजीव चित्र उपस्थित करता है । वस्तुतः लेखक ने देहात की गतिविधियों को इतने करीब से देखा हैं और वह उसमें इतना घुलमिल गया है कि उसकी रचनाओं की कथावस्तु, पात्र, वर्णन आदि में ग्राम-जीवन का समूचा रूप एकदम सहज, सरल और स्वाभाविक रूप में मिलता हैं । हिन्दी में आंचलिकता का लेबल लगाकर लिखनेवाले लोग माडगूळकर से सबक लें, तो उनका सृजन सार्थक हो सकता हैं !

निःसंदेह ज्ञानपीठ की यह ग्रंथमाला स्वागतार्ह है । अनुवाद भी बुरा नहीं हुआ हैं, पर भविष्य में अनुवाद की भाषा को और अधिक सहज और मुहावरेदार बनाया जाये, तो लज्जत कुछ और बढ़ जायेगी।

तरंगित व्यंग्यमाला

प्रकाशकः सोहन प्रकाशन, जोधपुर ।
पहला पुष्पःचुटीले चुटकुले; पृष्ठसंख्याः १४४
दुसरापुष्पः फुलझड़ियां; पृष्ठसंख्या : १४४
तीसरा पुष्पःइनसे मिलिये; पृष्ठसंख्या : १४४
चौथा पुष्पःउलटी गंगा; पृष्ठ संख्या : १४२
प्रत्येक का मूल्य : दो रुपये पचहत्तर न०पै०

मिश्रीमल जैन 'तरंगित'-लिखित इन चारों पुस्तकों में चुटकुलों से लगाकर हास्य-व्यंग्य लघुकथाओं और रेखाचित्रों का संकलन है । हिन्दी में हास्य-व्यंग्य के अकाल को देखते हुए यह प्रयास प्रोत्साहन का पात्र है, किंतु प्रस्तुत कृतियों में ताजगी का अभाव है—आज का युग अपेक्षाकृत ऊँचे स्तर के हास्य-व्यंग्य की मांग करता है । ये कृतियां बाल पाठकों के लिए उपयोगी हो सकती हैं।

पुस्तकालय-प्रबंध

लेखक : द्वारकाप्रसाद शास्त्री, प्रकाशक : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पृष्ठसंख्या : १८४, मूल्य : पांच रुपये।

शिक्षा के विकास के साथ पुस्तकों और पुस्तकालयों की वृद्धि अनिवार्य है। पुस्तकालय की व्यवस्था में यह पुस्तक पर्याप्त सहायक होगी । इसमें दिये गये सुझावों को अपनाते हुए यथासुविधा कुछ हेरफेर किया जा सकता है। पुस्तकालयों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की हैं ।

नेहरू ही क्यों

लेखक : डा० शरदचंद्र जैन, प्रकाशक : किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद पृष्ठसंख्या : १२४; मूल्य : पांच रुपये।

आज भारत में ही नहीं, विदेशों में भी यह चर्चा होती हैं कि इस संकट-वेला में भारत की राजनीतिक नौका का कर्णधार कौन रहे ? लेखक ने पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व और उनकी रीति-नीति का विश्लेषण करते हुए, उन्हें इस पद के लिए सर्वथा योग्य ठहराया है । नेहरूजी के प्रति श्रद्धालुओं की कमी नहीं है, विरोधी आलोचक तक उनके प्रशंसक हैं; तथापि जिस ढंग से और जिस शीर्षक से लेखक ने विषय का प्रतिपादन किया हैं, भय है कि पाठकों को यह राजनीतिक प्रचार-जैसा न लगे।

—आलोक शिशोदिया

★

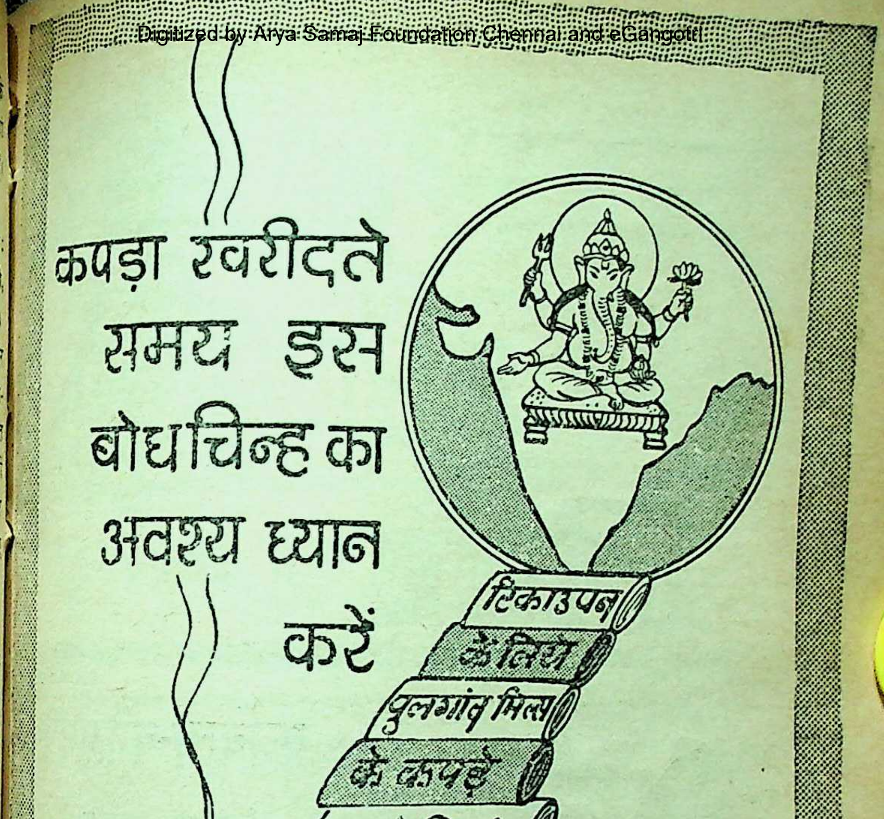
कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें
टिकाउपन
के लिये
पुलगांव मिल्स
के कपड़े
धोतियां
साड़ियां
लांगक्लाथ
वगैरह

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

अब केवल मेट्रिक बाट और पैमानों का प्रयोग ही कानूनी है

सेर आदि में लेन-देन न कीजिए

केवल

लिटर में खरीदिये

[illegible]

मनमोहक
केश

रीटा
कमनीय केशराशि के लिए

किसी के सिर के सुन्दर केशों को देखकर हताश न होइये। अपने बालों को रीटा के प्रयोग से मन मोहक बनाइये जिसे दूसरे व्यक्ति देखकर ललचा उठेंगे!

वीटो कंपनी मद्रास · मुंबई

R-29.H

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

नवनीत प्रकाशन

बम्बई- ३४

इंजीनियरो

राष्ट्र की सेवा करने का एक सुन्दर अवसर आ गया है। सेना के टेक्नीकल आर्म्स और सर्विसेज में आप आकर्षक शर्तों पर कमीशन प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक विवरण डाइरेक्टर आफ रिक्रूटिंग, एडजुटैण्ट जनरल ब्रांच, आर्मी हैड क्वार्टर्स, नई दिल्ली-११ से लीजिए।

DA 63/F-26

‘नवनीत’ के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक- क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) ‘नवनीत’ की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स (सेण्ट्रल) नियम, १९५६, के ८ वें नियम के अंत
''नवनीत (हिन्दी [illegible])'' नामक समाचारपत्र के स्वामित्व तथा अन्य विषयों
संबंध में प्रकाशित किया जानेवाला विवरण।

फार्म ४

१. प्रकाशन का स्थान:–	३४१, तारदेव, बम्बई ३४.
२. प्रकाशन का अवधिक्रम	प्रत्येक मास
३. मुद्रक का नाम:–	श्री हरिप्रसाद नेवटिया
राष्ट्रीयता:–	भारतीय
पता:–	३४१, तारदेव, बम्बई ३४.
४. प्रकाशक का नाम:–	श्री हरिप्रसाद नेवटिया, निमित्त स्वत्वाधिकारी, नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
राष्ट्रीयता:–	भारतीय
पता:–	३४१, तारदेव, बम्बई ३४
५. सम्पादक का नाम :–	श्री सत्यकाम विद्यालंकार
राष्ट्रीयता:–	भारतीय
पता:–	३४१, तारदेव, बम्बई ३४.
६. उन शेयर होल्डरों के नाम और पते, जिनके पास कुल पूँजी के १ प्रतिशत से अधिक शेयर हैं:–	श्री एस. जी. नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री ए. नेवटिया, हिन्दुस्थान शुगर, मिल्स, गोलागोकर्णनाथ श्री एम. पी. नेवटिया, ज्योति सदन, मरीन ड्राइव, बम्बई श्री हरिप्रसाद नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री कमल

नयन नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री विमलनयन नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६ श्री टी. एस. गोखले, ३२४ विट्ठलभाई पटेल रोड, बम्बई; श्री आर. जे. त्रिवेदी, २० सी. विसेंट रोड, बम्बई १९; श्री बंसीधर डागा, ५ मर्लीन पार्क, बालीगंज, कलकत्ता बिड़ला काटन स्पि. एण्ड वी. मिल्स लि., दिल्ली; उत्तरप्रदेश ट्रेडिंग कं., ८ इंडि एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता; दरभंगा मार्केटिंग कं. लि., ८इंडिया एक्स्चेंज प्लेस कलकत्ता; चंपारन मार्केटिंग कं. लि., ८ इंडिया एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता; सरन ट्रेडिंग कं. लि. ८ इंडिया एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता; प्रवीण कुमार नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई–६. मालती- देवी नेवटिया, रत्नाकर बम्बई ६, भरत कुमार नेवटिया, ज्योति सदन, मरीन ड्राइव, बम्बई

मैं, हरिप्रसाद नेवटिया, यह घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये सब विवरण, जहाँ तक मैं जानता हूँ तथा मेरा विश्वास है, सत्य हैं।

मार्च १९६४

प्रकाशक के हस्ताक्षर (हरिप्रसाद नेवटिया)

भारतीय
सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल, नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानग्रह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफ्रिजरेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

NEWFIELDS

भारत का महानतम आनन्दमय होटल

टैलीफोन-३०१११ (४० लाईन) तार का पता-अशोका होटल

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १.००)

फूल की तरह आपकी...
अपनी असली सुंदरता,
अपनी असली ताज़गी!
for natural freshness
Himalaya Bouquet
Talcum Powder
Himalaya Bouquet Snow
Himalaya Bouquet Snow
Himalaya Bouquet
TOILET POWDER
for natural freshness
हिमालय
बुके
स्नो, टॅल्कम और टॉयलेट पाउडर

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड ने भारत में बनाया

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

अप्रैल

१९६४

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

ASP/GM/K-31 HIN

वाह...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, फायदेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवी स्त्री के लिए एक मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिए और मुस्कराइए। रोज रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए...और रोज सुबह तो ऐसा करना जरुरी है। सहेलियों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा...अधिक आनन्द आएगा!

मधुर मुस्कान...कोलिनॉस की मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी: जेफ़री मॅनर्स ॲन्ड कम्पनी लिमिटेड

आवरण-पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.
अतुल, (वाया वलसार)
पश्चिम रेलवे.

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी,' 'बी$_2$', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

गोला
PA
EA
Gola
Gola

सुरक्षापूर्ण आधुनिक ढंग से पैसे बचाइए !

पैसे बचाना तो बस महिलाओं को ही आता है। बचत के वे कितने ही रास्ते ढूंढ निकाल लेती हैं। घर खर्च में से बचाएँगी, अपने हाथ खर्च में से बचाएँगी, 'रक्षा बन्धन' और 'भाई दूज' जैसे त्योहारों पर जो नक़दी भेंट मिलती है उसे बचाती हैं।

लेकिन बचत के पैसे घर में रखने की भूल कभी न करें; क्योंकि चोरी हो जाने का डर है। सबसे अच्छा तो यह है कि आप देना बैंक में एक सेविंग्स खाता खोललें – पैसे पूर्ण सुरक्षित रहेंगे और बैठे-बिठाये ३% की दर से ब्याज भी मिलता रहेगा। इसलिए आपने जो कुछ पैसे बचाये हैं उन्हें देना बैंक की सबसे पासवाली शाखा में ले जाइए और आज ही अपना खाता खोल लीजिए।

✻ सेविंग्ज़ एकाउण्ट पर ब्याज ३%
साल में १०० चेक तक भुनाये जा सकते हैं

*

हमारी फ़िक्स्ड डिपॉज़िट योजना:
४% से ५% तक ब्याज मिलता है

*

हमारी उपहार योजनाएं:
उपहार के चेक और चाँदी की छोटी छोटी ईंटें

देना बैंक
देवकरण नानजी बेंकिंग कं. लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्स,
१७ हॉर्निमन सर्कल, बम्बई-१

१३० से अधिक ऑफ़िस तथा ४० सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट ● आम बैंकिंग और वैदेशिक मुद्रा विनिमय व्यवसाय भी होता है

प्रवीणचंद्र व. गान्धी मॅनेजिंग डारेक्टर

1954-DB/58/60-A

कौनसी जीविका आपके लिए सबसे उपयुक्त है?

'व्यवसाय चुनिए' पुस्तिकाएं पढ़िए

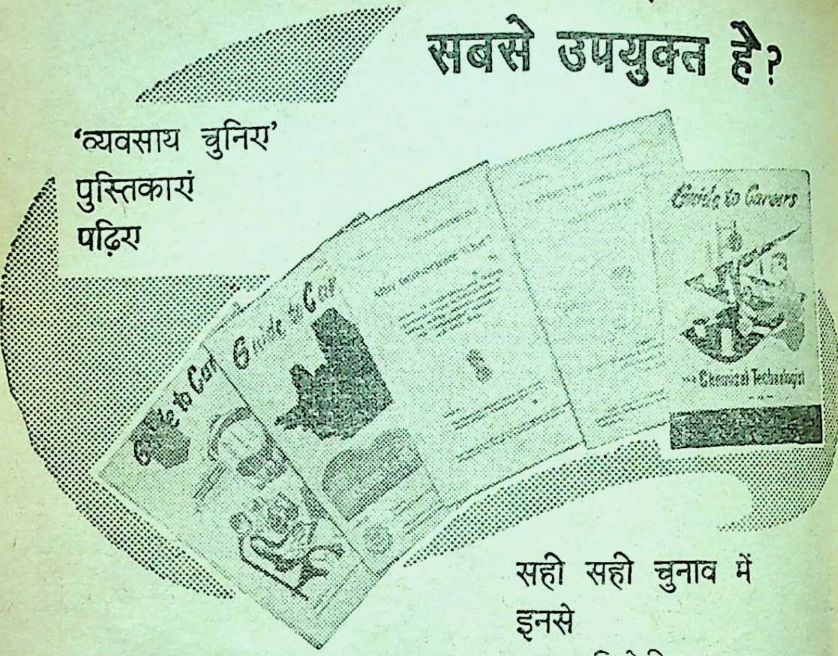
Guide to Careers
Guide to Car
Guide to Car
Chemical Technologist

सही सही चुनाव में इनसे मदद मिलेगी

वन अधिकारी
सिविल इंजीनियर
बिजली इंजीनियर
टेली-कम्यूनिकेशन इंजीनियर
लोक स्वास्थ्य इंजीनियर
नक्शानवीस (सिविल इंजीनियरी)
नक्शानवीस (बिजली इंजीनियरी)
ट्रेसर
आई. सी. इंजिन मेकेनिक
मिल राइट
मशीन ड्रिलर
मशीनिस्ट
रेडियो टेक्नीशियन
कम्पोजिटर
प्रूफ रीडर
दांत का डाक्टर
टीका लगाने वाला
मैडिकल लेबोरेटरी टेक्नीशियन
प्रायमिक स्कूल का अध्यापक
रेडियोग्राफर
ग्राम सेवक
समाज कल्याण कार्यकर्ता
कास्ट एकाउण्टेण्ट
मौसम वैज्ञानिक
नर्सिंग तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी व्यवसाय

इनकी प्रतियां (हिन्दी या अंग्रेज़ी में) रोजगार दफ्तर अथवा सरकारी पुस्तक विक्रेता से खरीदिये

रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशालय

भारत सरकार

DA 63/531

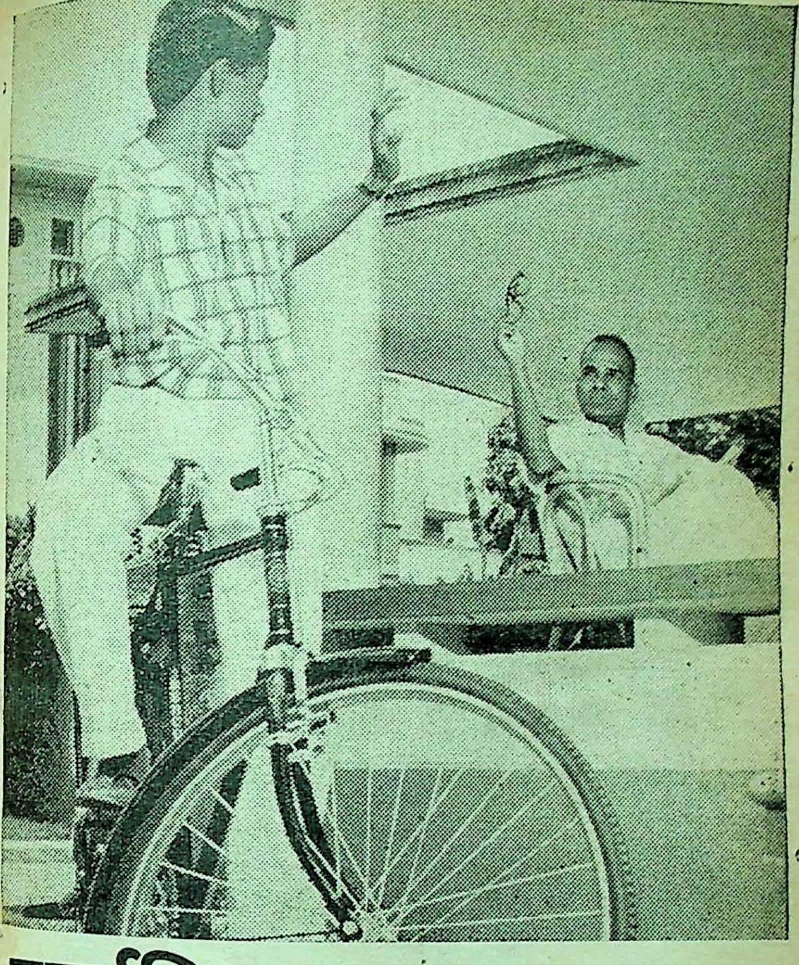

हर्क्युलिस साइकिल से कहीं बढ़ कर है—
यह तो जीवन-साथी है

पुरानी बातों को याद करके चंदू सचमुच खुश रह सकता है। मामूली नौकरी से आगे बढ़ता हुआ अब वह अपने इलाके का प्रभावशाली व्यक्ति बन गया है। उसका छोटा लड़का अब एक उदीयमान विद्यार्थी है। और उसकी हर्क्युलिस, जिसने उसकी उतनी अच्छी सेवा की, अब उसके लड़के की अथक सेवा करती जा रही है।

हर्क्युलिस भारत के सब से बड़े, सब से अधिक सुसज्जित साइकिल कारखाने में परम सूक्ष्मता से कठोरतम मानों के अनुसार बनती है। संसार के सर्वोच्च साइकिल निर्माण कारखाना ट्यूब इनवेस्टमेन्टस् लिमिटेड इंगलैंड के अनुभव और तकनीकी ज्ञान इसमें लगे हैं।

टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया, मद्रास-५३

WT/TIC H : 2452A

दो घर
दो परिवार

परिवार
नियोजन का सफल व किफायती साधन

प्लानीटैब
टिकिया

परिवार नियोजन केन्द्र से पूरी राय लीजिए

हिन्द केमिकल्स लि., कानपुर

परिवार नियोजन सम्बन्धी पुस्तक "तीन या तेरह" मुफ्त मंगाकर पढ़िये

समझिये

कि समस्या क्या है ?
विकास और सुरक्षा का बहुत निकट का सम्बन्ध है।
खेतों और कारखानों में आप जितना उत्पादन
बढ़ाएंगे देश को उससे उतनी ही अधिक ताकत मिलेगी।

सुदृढ़ रक्षा के लिए जी तोड़ मेहनत करें।

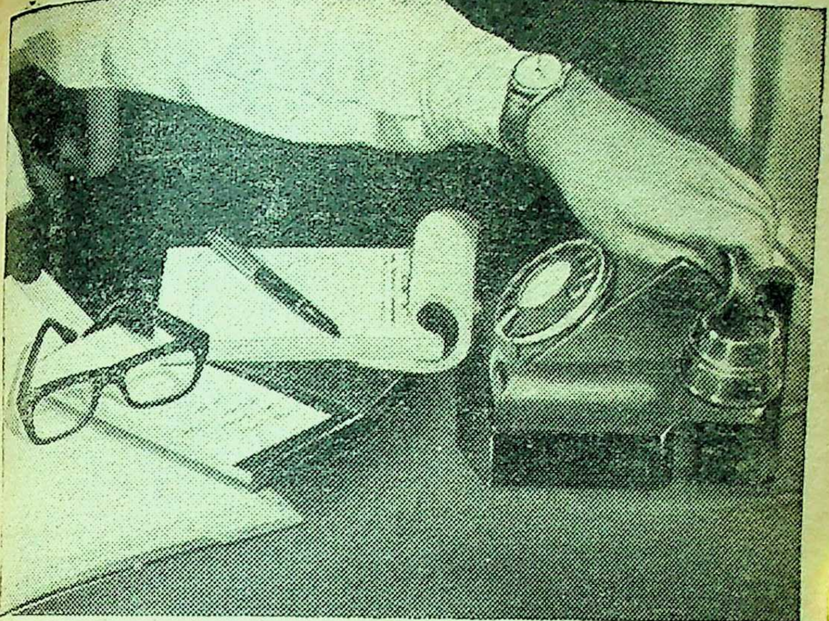

व्यस्त प्रबन्धक सुचारुढंग से काम करने के लिये अच्छे कागज़ का उपयोग करते हैं

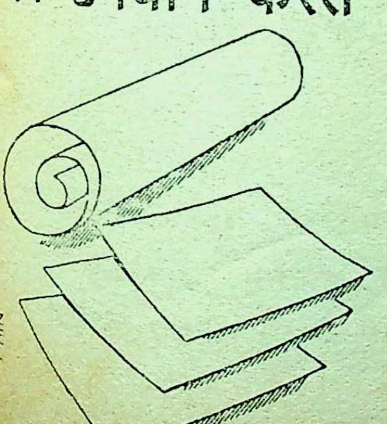

सिरपुर
पेपर
मिल्स लि०

सिरपुर, कागजनगर, आंध्र प्रदेश
द्वारा प्रचारित।

उत्तम लिखने व छापने के कागज़, बैंक व बॉंड कागज़, क्रीमलेद व क्रीमवोव कागज़, एयर मेल, ऑफसेट तथा अन्य कई खास प्रकार के कागज़ों के निर्माता।

कम मूल्य में सुंदर भेंट

हर एक मनुष्य के जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं, जब वह अपने मित्र अथवा स्वजन-संबंधी को कोई उत्तम भेंट देना चाहता है। पर भेंट का चुनाव एक बड़ी समस्या होती है। हम ऐसी वस्तु भेंट करना चाहते हैं, जो बार-बार हमारा स्मरण कराये। और कम मूल्य में ऐसी एक वस्तु हो सकती है-सुंदर साहित्य।

नवनीत के ग्राहक अपने मित्रों-स्वजनों को कम मूल्य में सुंदर साहित्य की ऐसी सुरुचिपूर्ण भेंट दे सकें, इसके लिए हमने एक योजना शुरू की है। इस योजना के अनुसार नवनीत के ग्राहक १० रुपये के बदले ८ रुपये वार्षिक शुल्क देकर भेंट भिजवा सकते हैं। इस भेंट के लिए ८ रुपये का मनीआर्डर कार्यालय के पते पर भेजिये और म० आ० की स्लिप पर जिसे आप भेंट भेजना चाहते हों, उसका पूरा नाम-पता तथा किस प्रसंग में भेज रहे हैं, उसके उल्लेख के साथ-साथ अपना ग्राहक नंबर स्पष्ट अक्षरों में लिख भेजें। हम उसी के अनुसार नीचे दिये हुए भेंट-कूपन को भरकर प्रथम अंक की प्रति के साथ आपके मित्र को भेज देंगे।

____

____

को

______________________ अवसर पर

______________________ की ओर से

शुभकामनाओं के साथ हार्दिक भेंट

......वर्ष के लिए : नवनीत : ग्रा. नं.......

वार्षिक चंदा एक साल का १०रु०, २ साल का १८रु०, तीन साल का २५रु०; भेंट योजना का चंदा एक साल का ८रु०, दो साल का १५रु०, तीन साल का २२रु०।

नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१, तारदेव, बम्बई-३४

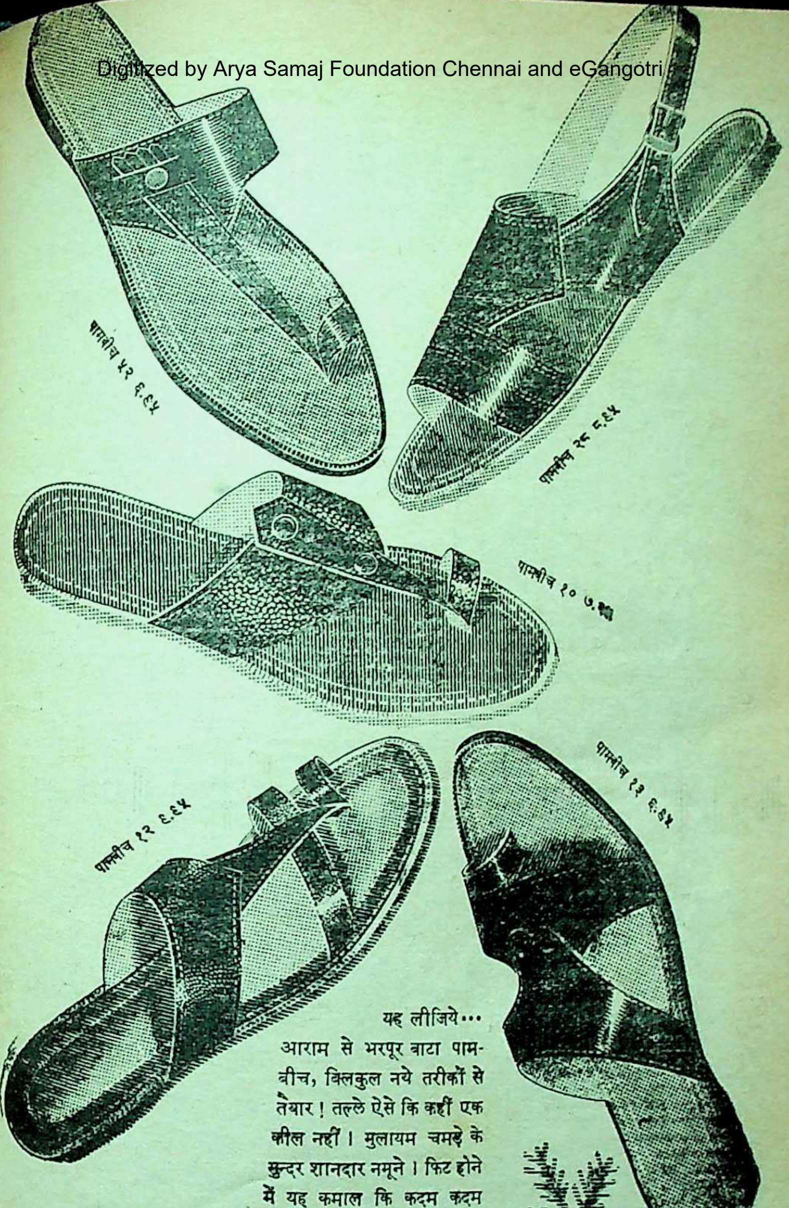
पाम्बीच ५२ ६.९५
पाम्बीच २८ ८.९५
पाम्बीच १० ७.[illegible]
पाम्बीच १२ ६.९५
पाम्बीच १३ ६.९५

यह लीजिये…
आराम से भरपूर बाटा पामबीच, बिलकुल नये तरीकों से तैयार! तल्ले ऐसे कि कहीं एक कील नहीं। मुलायम चमड़े के सुन्दर शानदार नमूने। फिट होने में यह कमाल कि कदम कदम पर पाँव से प्यार की होड़।

Bata
PALMBEACH

ज़रा सोचिये

सीमा पर एक जवान को पर्याप्त मात्रा में हथियार देने के लिए देश के अन्दर ५० से १०० व्यक्तियों को काम करना पड़ता है ।

सुदृढ़ रक्षा के लिए जी तोड़ मेहनत करें ।

DA63/

'नवनीत' के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक- क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे ।

३) 'नवनीत' की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं । प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है ।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें ।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे । अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे ।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये ।

आप किसी भी ढंग का जूड़ा बाँधें...

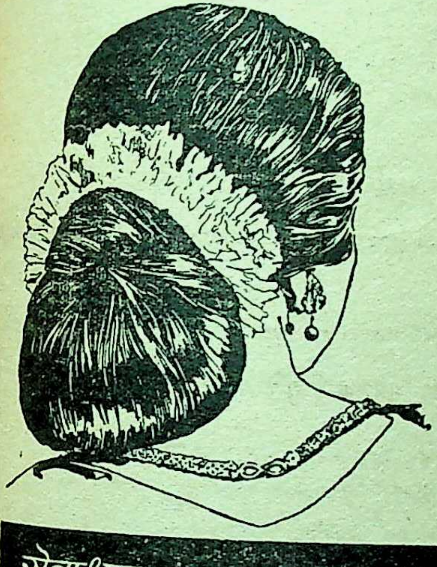

केशों के लिए गाय छाप ब्राह्मी आँवला तैल इस्तेमाल करने से आपके जूड़े की मोहकता निश्चय ही बढ़ेगी; क्योंकि यह बालों को अधिक श्यामल, सघन और चमकीला बनाता है। इसकी भीनी-भीनी शीतल सुगन्ध से आपका मन हर घड़ी प्रसन्न रहेगा।

सेवाश्रम का

गाय SEVASHRAM PRODUCTS REGD. UDAIPUR छाप

ब्राह्मी आँवला तैल

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड उदयपुर, वाराणसी तथा हैदराबाद

bpc/A929

नवनीत की छमाही जिल्दें

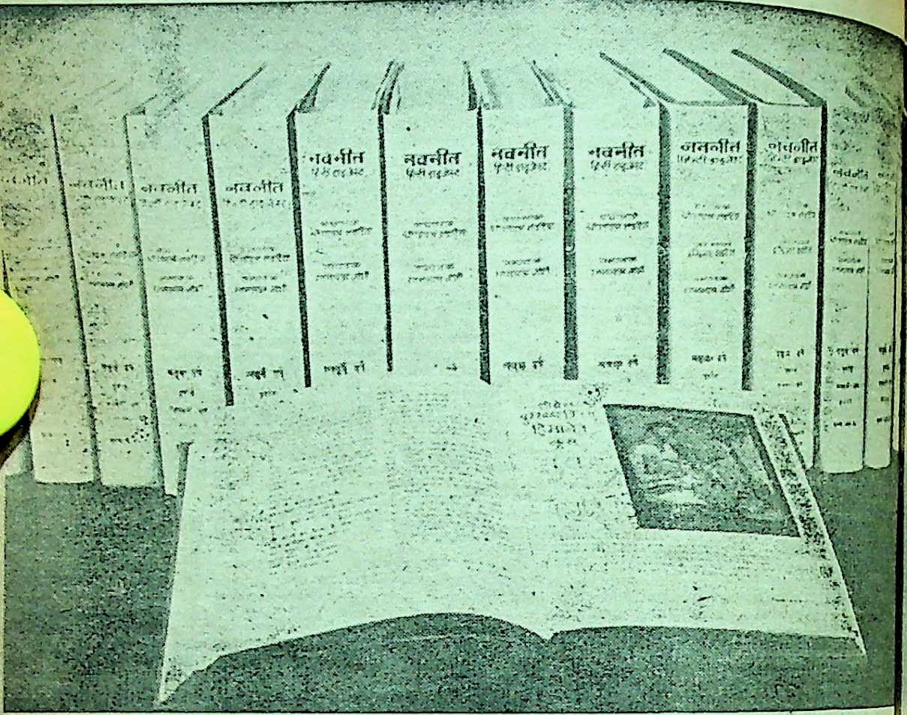

प्रति मास प्रकाशित 'नवनीत' की सामग्री इतने स्थायी उपयोग व सर्व-कालीन रुचि की होती है कि उसका संग्रह प्रत्येक घर के लिए वांछनीय है। इसीलिए 'नवनीत' के पाठक व ग्राहक सब अंकों को जमाकर अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय बना लेते हैं।

जो लोग पुराने अंकों को जमा नहीं कर पाये हैं या नये ग्राहक बने हैं – उन्हें पुरानी जिल्दें मिल सकती हैं। छः-छः अंकों (जनवरी-जून • जुलाई-दिसम्बर) को एक सुंदर जिल्द में बाँध दिया गया है। इसके अलावा छः महीने के अंकों में छपे लेखों की विषयानुसार सूची भी आरम्भ में लगा दी गयी है।

अपने अवकाश के समय में कोई भी जिल्द ले लीजिये और अपने प्रिय विषय के लेख या कहानियाँ पढ़िये।

जिल्दों का मूल्य

साधारण संस्करण ५) विशेष संस्करण ७॥) एक जिल्द पर १) डाक खर्च लगता है

लिखिये : वितरण व्यवस्थापक, नवनीत, बम्बई-३४

अमूल

मक्खन
में ऐसी कौन सी
विशेषता है ?

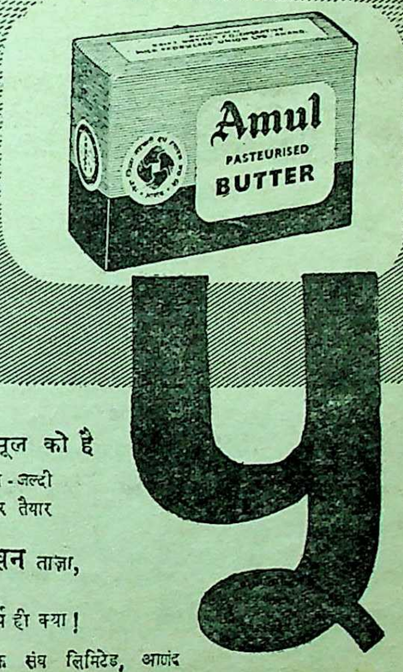

महज़ ५ घंटे में दूध से पैकट-बंद मक्खन बनाने का श्रेय केवल अमूल को है

दूध इकट्ठा करने के केन्द्रों से दिन में दो बार दूध जल्दी-जल्दी भेजने, मक्खन बनाने, डिलवरी के लिए 'पैक' और तैयार रखने का काम केवल इतने से समय में होता है।

फिर ताज़ी क्रीमका बना **अमूल मक्खन** ताज़ा, शुध्द और पौष्टिक हो, इस में आश्चर्य ही क्या!

खेड़ा जिला सहकारी दूध-उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद

CBRMP-2AHIN

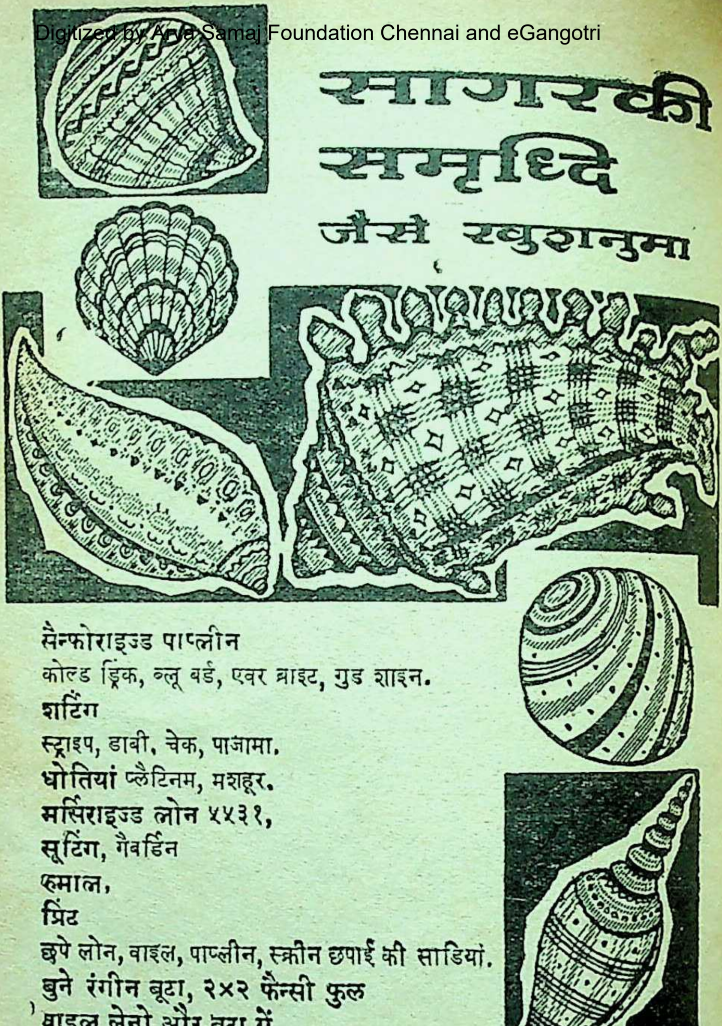

सागरकी
समृद्धि
जैसे खुशनुमा

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाइन.
शर्टिंग
स्ट्राइप, डाबी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर.
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१,
सूटिंग, गैबर्डिन
रूमाल,
प्रिंट
छपे लोन, वाइल, पाप्लीन, स्क्रीन छपाई की साडियां.
बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में

Arvind
Quality
FABRICS

·SANFORIZED·

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद-२

अप्रैल
१९६४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

मेरा लाल
महमूद हम्माद के एक
चित्र की अनुकृति

इस अंक में

१७ प्रार्थना (कविता)
लुइस केन

१८ सपनों पर काबू पाइये
जगन्नाथ पथिक

२० यहां सागर-मंथन चल रहा है
वी० जी० वर्गीस

२४ संसार के सबसे बड़े शरणार्थी-शिविर में
एलिजाबेथ शेरिल

२८ विज्ञान के जनसंपर्क अधिकारी रिची काल्डर
मैत्रेयी दत्ता

३२ अंधेरी रात (कविता)
हरिकृष्ण प्रेमी

३३ एक सौ अस्सीवां बाघ
बिसनलाल शर्मा

३८ वह हिटलर की दाई थी
मार्टिन एब्रामसन

४० क्रेमलिन का सितारा, मास्को का चांद
सत्यजित राय

४५ उनके वायुयान ने पहली उड़ान भरी
गार्डनर सोल

४९ रहस्यमय उपन्यासों की सम्राज्ञी अगाथा क्रिस्टी
हरिमोहन शर्मा

आगामी अंक में

अंधेरे में शब्दवेध
—राजगोपालाचारी

और स्वप्न साकार हो गया
—डा० ए० एन० खोसला

महानता की खोज में
—यूसुफ कार्श

गुरु से बदला
—एम० आर० जयकर

लाल चीन के अंतराल में
—सर फिट्‌जराय मैक्लीन

धन्यवाद
—एंटन चेखोव

मंटो की परछाई
—सआदत हसन मंटो

कारखाने या कलाभवन
—आंद्रेई मार्गोलिन

मौत की दहलीज पर
—जान गंथर

हमारा पता :

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१ तारदेव, बंबई—३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि. ३४१ तारदेव, बम्बई-३४. के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेतवड़ी बैक रोड, बम्बई-४ में मुद्रित।

५२ करोड़ों वर्ष पहले के दृश्य देखिये
हंस

५६ चांद पर पहुंचने के बाद
सी० पी० गिलमोर

५८ प्रेम का एक्स-रे
सदानंद

६१ प्रयोगशाला के प्राणी
विपिन बिहारी

६५ सुझाव बिकते हैं
ई० डी० फेल्स

६८ तोपों से दागे जानेवाले साहसी मानव
विक्रम कपूर

७३ सोचें नहीं, करें
कृष्णकुमार गुप्ता

७७ मेरी रुचि की पंक्तियां

... ...

७९ डाक्टरी परीक्षा अवश्य कराइये

... ...

८१ न्यायदंड (बंगला कथा)
जरासंध

८५ कमीज (हिन्दी कहानी)
सुखबीर

९५ सतजुगिया आदमी (हिन्दी कहानी)
शैलेश मटियानी

१०९ सर्वहारा सर्वहारा ही रहा
नान कुंग-पो

१४६ योजना पर एक नजर
वीरेंद्र अग्रवाल

१५० वह इस्माईल है या आबिद ?

... ...

चित्र-सज्जा :
ओके, कैमिल बोंव्वा, होजे गडालूप

वर्ष : १३
अंक : ४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

अप्रैल
१९६४

ार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासि

प्रार्थना

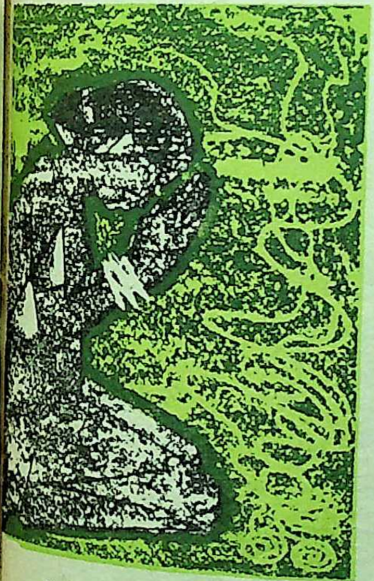

चित्रकार : वी० एन० ओके

जैसे हर बंद कली में
मधुमास छिपा रहता है
वैसे ही हर मनष्य की आत्मा में
जीवन का सौंदर्य छिपा रहता है।

*

एक घड़ी अशुभ काम म
अशिव विचार में
बिताने के अर्थ हैं–हृदय के
अमित वैभव को नष्ट करना।

*

हे प्रभु ! जीवन की हर घड़ी
मै जागरूक रहूं,
ताकि मेरा जीवन
वैसा ही मधुर, सुंदर रहे–
जैसे किसी भोली बाला का
निश्छल उल्लास।

– *लुइस केन*

स्वप्नों पर काबू पाइये

स्वप्न को साधन बनाकर उसके द्वारा स्वप्न, जागरण और सुषुप्ति से परे की तुरीयावस्था को प्राप्त किया जा सकता है।

जगन्नाथ पथिक

निद्रा में दिखनेवाले दृश्यों को स्वप्न कहा जाता है। अर्थात् जब मनुष्य इच्छा से अथवा स्वभावतः चेतना को त्यागकर अचेतनावस्था में–सुधि से बेसुधि में–प्रविष्ट होता है, तो वह चेतना और अचेतना की मिश्रित अवस्था में अर्धचेतन होकर रहता है। उस समय वह अपने शरीरव्यापी प्रधान गुण (दोष) तथा चित्त की प्रधान वृत्ति के अनुसार दृश्यों को देखता है।

पित्त-प्रधान देहवाला व्यक्ति अग्नि, प्रकाश और इनसे संबंधित विविध दृश्य देखता है। कफ-प्रधान प्रकृतिवाले को जल, जलाशय, नदी-नालों के दृश्य दिखाई देते हैं। वात-प्रधान मनुष्य को आकाश-गमन आदि दृश्यों का दर्शन होता है।

निद्रावस्था में देह और मन तमसावृत होकर अचेत हो जाते हैं। इस कारण स्वप्न में वस्तु की परीक्षा करते हुए भ्रांति होती है। किंतु जब स्वेच्छा से देह और मन को अचेत बनाते हुए उसमें तम को प्रविष्ट नहीं होने दि जाता, उस समाधि में तथा सत्व-प्रधा निद्रा में दिखनेवाला दृश्य यथार्थ होता है कभी-कभी तो उसमें भूत, भावी और व मान के दृश्य भी समक्ष आ जाते हैं औ वे यथार्थ होते हैं।

इसके अतिरिक्त मानसिक कर्मों क अर्थात् जो वासनाएं और चेष्टाएं ज तक क्रियात्मक रूप में प्रकट नहीं हुई उनका भुगतान भी स्वप्न में होता है। प्रसन्नता से हंसना, कष्ट से रोना, भय होना, मरना और जी उठना तक स्वप्न हो जाता है।

कई स्वप्न जन्मांतरों संबद्ध होते हैं। कभी म स्वप्न में रंक बनकर अ को निर्धन भिक्षुक के में देखता है; कभी बनकर राज्य करता है कभी-कभी किसी स्वप्न शृंखला वर्षों चलती है

इस स्वप्नावस्था यदि अधिकृत कर लि जाये, समाधि का

समाधिस्थ

दिया जाये,तो उससे अलौकिक लाभ अर्थात् आत्मसाक्षात्कार हो सकता है। और उसकी प्रथम रीति यह है कि अपनी दृढ़ धारणा से, संकल्प-बल से स्वप्न को स्वप्नमात्र के रूप में देखने का प्रयत्न करें। अर्थात् स्वप्न देखते समय हमें यह आंतरिक ज्ञान रहे कि मैं तो स्वप्न देख रहा हूं–यह वास्तविक घटना नहीं है। ऐसा अभ्यास हो जाने पर फिर स्वप्न में स्वप्न का ही भान होगा, भ्रम न होगा। तब स्वप्न के हर्ष-शोक न हमारे लिए सुखदायक होंगे, न दुःखदायक।

दूसरा साधन है – विवेक। तर्कपूर्वक निदिध्यासन के द्वारा जब संसार के वास्तविक स्वरूप का – उसकी प्रतिक्षण परिवर्तनशीलता का – ज्ञान हो जायेगा, तब संसार का कोई पदार्थ किसी भी अवस्था में ग्राह्य और सेव्य प्रतीत नहीं होगा। तब हम उसे ग्रहण भी नहीं करेंगे। इस प्रकार अपरिग्रह सिद्ध हो जायेगा।

और अपरिग्रह का फल योगसूत्र (३–३९) में इस प्रकार बताया गया है :–**अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासंबोधः**। अर्थात् अपरिग्रह-रूप वैराग्य से जीवन रंग जाने पर जन्म-जन्मांतरों तक के दृश्य स्वतः योगी के सामने आ जाते हैं। इस प्रकार आवागमन का सार और संसार की असारता पूर्ण रूप से अवगत हो जाती है।

आवागमन के सार से अवगत होकर योगी एक और लाभ भी उठा लिया करते हैं। स्वप्नवत् अस्थिर जगत से ऊबकर, शीघ्र मुक्त होने के लिए वे प्रयत्नपूर्वक जाग्रत् को भी स्वप्नवत् बनाकर अवशिष्ट बचे मानसिक कर्म (वासना) तथा दैहिक भोगों को दग्ध करने का प्रयत्न करते हैं।

योग में इसका स्वरूप इस प्रकार कथित है :– **निर्माणचित्तानि अस्मिता मात्रात्** (योगसूत्र ४–४)। अर्थात् योगी अहंकार द्वारा अन्य चित्तों को रचकर, उनके द्वारा अवशिष्ट कर्मों को शीघ्रता से भोगकर मोक्षधाम को चले जाते हैं। वैसे यह उड़ान अति उच्च है। कोई विरला ही इसे भर पाता है–पूर्वार्जित सुकर्मों व ईश-प्रसाद से।

फिर भी प्रयत्नपूर्वक जब हम विवेक-दृष्टि प्राप्त करके अपने जाग्रत्-काल के व्यवहार को स्वप्नवत् अस्थायी, नश्वर व क्षणिक देखेंगे, तब ऐसा ही स्फुरण स्वप्न में भी फुरेगा। क्योंकि मनुष्य स्वप्न में भी जाग्रत्-जैसा ही व्यवहार देखता और करता है, भले ही वह व्यवहार विकृत होता हो।

अतः सचेत होकर जीवन के प्रत्येक क्षण में इस सत्य को देखना और धारणा द्वारा दृढ़ करना चाहिये कि संसार तथा उसके समस्त विषय-पदार्थ और यह देह, मन आदि तो नितांत परिवर्तनशील, क्षणिक, दुःखद एवं आनंदहीन हैं; इनके प्रति अज्ञान से जो आकर्षण और अनुराग पैदा हो गया है, उसे विवेक द्वारा दूर करने का अभ्यास निरंतर करना उचित है।

इस प्रकार की मानसिक विजय पा लेने पर सर्वत्र विजय है, सर्व अधिकार सुरक्षित हैं। उसके बिना सब साधनाएं व्यर्थ और खिलवाड़ मात्र हैं।

* * *

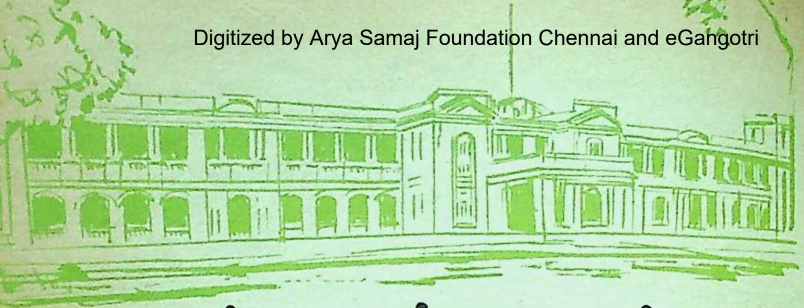

बी॰ जी॰ वर्गीस

यहां सागर-मंथन चल रहा है

सगर के पुत्रों ने अश्वमेध के घोड़े के लिए सागर खोदा था ; भावनगर के वैज्ञानिक राष्ट्रमेध यज्ञ के लिए सागर से संभार जुटा रहे हैं।

भावनगर के शांत वातावरण में केंद्रीय लवण एवं समुद्री रसायन शोध-संस्थान के वैज्ञानिक बड़े दिलचस्प परीक्षणों और प्रयोगों में लगे हैं, जिनका उद्देश्य है सागर से संपत्ति दुहना ।

समुद्र-जल में ३.५ प्रतिशत भाग विभिन्न लवणों का होता है । सोडियम क्लोराइड यानी हमारी बोलचाल का 'नमक', जो खाने के अलावा कास्टिक सोडा, क्लोरीन, सोडा एश, सोडियम बाइकार्बोनेट आदि के निर्माण में काम आता है, इसका छोटा-सा भाग है ।

नमक निकालने के बाद जो गाढ़ा और चिकना द्रव बचता है, अंग्रेजी में उसे 'बिटर्न' कहते हैं । उसमें बहुत-से कीमती रासायनिक पदार्थ रहते हैं । लेकिन भारत में उसे अनुपयोगी समझकर फेंक दिया जाता है । पिछले साल भारत में ४० लाख टन नमक बना, जिसकी कीमत १२ करोड़ रुपये थी । और लगभग इतनी ही कीमत के रासायनिक पदार्थ 'बिटर्न' के रूप में सम में, या राजस्थान की सांभर झील में दिये गये ।

विडंबना यह है कि इस प्रकार फेंक दि जानेवाले कई रासायनिक पदार्थ औद्योगिक कामों के लिए काफी रुपया करके विदेशों से आयात करने पड़ते हैं इसका सबसे बढ़िया उदाहरण है - पो शियम क्लोराइड । नाइट्रोजन, फास्फेट पोटाश के लवण प्रमुख रासायनिक खाद गन्ना, कपास, तंबाकू, धान, आलू, केले फसलें जमीन से बहुत-सा पोटाश खींच हैं । उसकी भरपाई के लिए हमें खेतों पोटाश छिड़कनी पड़ती है ।

भारत में पोटाशियम क्लोराइड का को बड़ा स्रोत ज्ञात नहीं है और कई साल हम हर साल १ करोड़ ३० लाख

खर्चकर ५० हजार टन पोटाशियम क्लोराइड आयात करते हैं, जबकि ३० लाख टन नमक बनाने से बचे 'बिटर्न' में ८५ हजार टन पोटाशियम क्लोराइड होता है और उसमें से ३५ हजार टन आसानी से निकाला जा सकता है ।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अंत तक देश में पोटाशियम क्लोराइड की खपत बढ़ाकर ढाई लाख टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है । वास्तविक मांग इससे कहीं अधिक है । हिन्द महासागर इसमें हमारी मदद कर सकता है ।

भावनगर के शोध-संस्थान ने पोटाशियम क्लोराइड निकालने की तीन विधियां खोजी हैं । कांडला में कांडला साल्ट वर्क्स और तूतिकोरिन में स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन इन विधियों का विकास कर रहे हैं । एक टन नमक ३० रुपये का होता है, जबकि एक टन पोटाशियम क्लोराइड २५० रुपये का बिकता है ।

'बिटर्न' में और क्या-क्या संपत्ति छिपी है ? पोटाशियम क्लोराइड स्वयं एक बुनियादी रसायन है, जिसमें से कई रासायनिक पदार्थ निकलते हैं । इनमें कई तो विस्फोटकों में काम आने के कारण सैनिक दृष्टि से महत्व के हैं ।

मैग्नेशियम लवणों का कुनबा बहुत बड़ा है–मैग्नेशियम क्लोराइड, मैग्नेशियम आक्सीक्लोराइड, मैग्नेशियम कार्बोनेट, मैग्नेशियम आक्साइड, मैग्नेशियम सल्फेट और मैग्नेशियम धातु आदि । इनका उपयोग सूती वस्त्र, रबर, कागज, स्याही, रंग, पेंट, दवा आदि से लेकर विस्फोटकों और हवाई जहाज तक के निर्माण में होता है ।

फिर आता है कैल्शियम सल्फेट यानी समुद्री जिप्सम, जो सीमेंट, पेंट, प्लास्टर और दीगर चीजों के निर्माण में लगता है । भावनगर में इसे निकालने की दो विधियां विकास की गयी हैं । इससे हल्की किस्म के कैल्शियम कार्बोनेट तैयार किये जा सकते हैं, जो रबर, कागज और शृंगार-साधनों के उद्योग के लिए उपयोगी होंगे ।

एक दूसरी विधि से कैल्शियम सिलिकेट बनाया जा सकता है, जो कीटनाशक दवा, प्लास्टिक और रबर उद्योगों के काम में आयेगी ।

'बिटर्न' से प्राप्त होनेवाला एक और द्रव्य है–ब्रोमाइन । यह दवा-दारू, फोटोग्राफी और कीटाणु-नाशक रसायनों के निर्माण में प्रयुक्त होता है ।

आधुनिक विज्ञान इन पदार्थों के नये-नये उपयोग भी खोज रहा है । 'बिटर्न' से निकलनेवाले पोटाश लवणों में दो पदार्थ बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं – रुबिडियम और सीजियम । रुबिडियम अंतरिक्ष-यानों के इंजन में ताप को विद्युत में परिवर्तित करने का काम करता है । सीजियम इन्फ्रारेड शोधविधि में उपयुक्त होता है । दोनों सोने के बराबर कीमती हैं ।

देश में नमक का उत्पादन ३५ लाख टन मानें, तो उस हिसाब से 'बिटर्न' में निम्नलिखित पदार्थ इतने-इतने टन होंगे;

कैल्शियम कार्बोनेट २० हजार, कैल्शियम सल्फेट २ लाख, सोडियम क्लोराइड ४ लाख, मैग्नेशियम सल्फेट २ लाख ४० हजार, मैग्नेशियम क्लोराइड ५ लाख १० हजार, पोटाशियम क्लोराइड ९० हजार और ब्रोमाइन ९ हजार ।

लेकिन वास्तव में इनका २५ से ९० प्रतिशत अंश ही अभी हस्तगत किया जा सकता है । फिलहाल केवल दो कारखाने 'बिटर्न' में से रासायनिक पदार्थ निकालते हैं, वह भी बहुत थोड़ी मात्रा में । बाकी सब 'बिटर्न' बेकार चला जाता है ।

फिलहाल हमारे देश में ब्रोमाइन का उत्पादन केवल ३०० टन सालाना है, जबकि मांग है १,००० टन की । ७,००० टन ब्रोमाइन समुद्र से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है । तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक नमक का उत्पादन ६० लाख टन वार्षिक हो जायेगा और १९७१ तक शायद ८० लाख टन पर पहुंच जायेगा । इससे 'बिटर्न' भी अधिक मात्रा में उपलब्ध होगा। लेकिन 'बिटर्न' में से रासायनिक प्राप्त करने का काम बड़े पैमाने पर हो, तभी लाभप्रद हो सकेगा ।

इस समय देश में १८० नमक के कारखाने हैं। इनमें से कोई दर्जन-भर कारखाने ही इतने बड़े हैं कि भावनगर संस्थान द्वारा विकसित विधियों का उपयोग कर सकें । किंतु छोटे कारखानों से लवणों को प्राप्त कर बड़े कारखानों में उन्हें शोधा जा सकता है ।

संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग ने कई प्रायोगिक प्लांट कायम किये हैं, जिनके अनुकरण पर व्यापारिक कारखाने खोले जा सकते हैं ।

लेकिन समुद्र में नमक-ही-नमक नहीं होता । समुद्री सिवार का काफी आर्थिक महत्व है । भारतीय तट के साथ-साथ कोई ११-१२ किस्म की सार्गेसम (भूरी सिवार) उगती है–कच्छ और मन्नार की खाड़ी में विशेषत: । सार्गेसम से निकलनेवाले एलिनिक तेजाब से सोडियम एलिनेट बनता है । यह आइस्क्रीम, स्क्वाश, चाकलेट और दूसरे खाद्य पदार्थों में पड़ता है । सूती वस्त्र के उद्योग में फिनिशिंग तथा चीनी मिट्टी के बर्तन और कागज को चिकना करने में भी इसका उपयोग होता है । वेल्डिंग करने के इलेक्ट्रोडों में भी यह काम में आता है।

जांच से पता चला है कि साल में ५० टन सोडियम एल्गिनेट तैयार करने लायक भूरी सिवार भारत के तटवर्ती समुद्र में उगती है । फिलहाल भारत की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह पर्याप्त है । एक पौंड सोडियम एलिनेट बाजार में ११ रुपये का पड़ता है ।

उष्ण-कटिबंध के सागरों में भूरी सिवार तो नहीं, लेकिन लाल और हरी सिवार काफी उगती है । लाल सिवार से अगर-अगर निकाला जा सकता है । हमारे देश में सालाना ३० टन अगर-अगर खपता है और यह सब बाहर से आता है । १२ टन अगर-अगर आसानी से भारत में तैयार किया जा सकता है ।

अंग्रेज

हरी सिवार का चूर्ण प्रोटीन की कमी दूर करने के लिए भोजन में काम में लाया जा सकता है। पशुओं तथा मुर्गियों के लिए भी वह अच्छा चारा है। सिवार की प्रोटीन की टिकियां भी बनायी जा सकती हैं।

संस्थान ने सोडियम एल्गिनेट और अगर-अगर के लिए दो प्रायोगिक प्लांट खोले हैं। सिवार से प्रोटीन निकालने का प्लांट खोलने का विचार भी चल रहा है।

भावनगर खाड़ी में प्रयोग करके देखा गया है कि सभी समुद्री सिवारों की खेती की जा सकती है। ऐसी शांत खाड़ियां या जलाशय, जिनमें ज्वार का पानी आता हो, सिवार की खेती के लिए सर्वोत्तम हैं। जापान में सिवार की खेती होती है। हर साल जापान ७ करोड़ रुपये का तो अगर-अगर ही तैयार करता है और लगभग इतनी ही कीमत की हरी और लाल सिवार उपजाता है—खासकर टोकियो की खाड़ी में, जिसमें टोकियो का गंदा पानी गिरता है।

समुद्र-जल को शोध कर पीने और सिंचाई के लायक बनाया जा सकता है। लेकिन यह पानी सामान्य ताजे जल से सात-आठ गुना महंगा पड़ता है। जल शोधने की कुल लागत का ८० प्रतिशत तो बिजली का खर्चा होता है। भावनगर में एक गैलन शोधा हुआ समुद्र-जल ५० नये पैसे का पड़ता है। बिजली सस्ती मिले, तो पानी सस्ता हो सकेगा। इस प्रक्रिया में जो रसायन प्राप्त होंगे, वे अलग।

समुद्री खेती फिलहाल इससे ज्यादा लाभप्रद होगी। समुद्र-जल में १० लाख औंस के पीछे ३५ हजार औंस लवण होता है। और भावनगर शोध-संस्थान परीक्षणों द्वारा देख रहा है कि नमक की मात्रा बढ़ने का पौधों पर क्या असर पड़ता है। करछिया नाम के गेहूं की फस्ल हल्का किये हुए सागर-जल से सींचकर उगायी गयी है। इस जल में १० लाख औंस के पीछे २० हजार औंस नमक था।

यह भी कोशिश की जा रही है कि पौधों को प्रति दस लाख औंस पीछे ३० हजार औंस जितना खारापन सहने लायक बनाया जाये। यह समुद्री खेती सफल हो गयी, तो गजब की लाभप्रद होगी।

भावनगर में नमक शोध-संस्थान की स्थापना १९५४ में हुई। १९६१ में उसे 'केंद्रीय नमक तथा समुद्री रसायन शोध-संस्थान' का नाम दिया गया। सिवार-विभाग उसी साल खोला गया। काफी विविध दिशाओं में यहां काम किया गया है, जिसका अब व्यावसायिक लाभ उठाया जाना चाहिये।

['टाइम्स आफ इंडिया' से साभार]

★

एशिया की आबादी १९२०-४० के बीच १०० करोड़ से १२० करोड़ हो गयी। अब विश्व के कुल ३०० करोड़ बाशिंदों में से १७० करोड़ एशियाई हैं। आबादी इसी तरह बढ़ती रही, तो १९८० तक एशिया की आबादी २६० करोड़ हो जायेगी।

★

संसार के सबसे बड़े शरणार्थी-शिविर में

एलिजाबेथ शेरिल

अफ्रीका जाते हुए जब मैं अपने साथी पत्रकार के साथ जोर्डन में ठहरी, तो जोर्डन की घाटी में एक अद्भुत व्यक्ति से हमारी मुलाकात हुई। बहुत दिनों तक वह व्यक्ति हमारी स्मृति में बना रहेगा। उसका नाम लबीब नासिर है। उसकी कर्तव्यनिष्ठा के सम्मुख किसी का भी मस्तक श्रद्धाविनत हो सकता है। उसके मुख से सुनी हुई उसकी कहानी में हमें एक अटल, कर्तव्यपरायण व्यक्ति की झलक मिली।

एक दिन सुबह लबीब नासिर हमें नीचे जोर्डन की शीतल घाटी में ले गया, ताकि हम संसार के सबसे विशाल शरणार्थी कैंप का निरीक्षण कर सकें। वहां जाने पर उस विस्तृत मरुस्थल में जहां तक हमारी दृष्टि गयी, हमें कतार में बंधे काली मिट्टी के छोटे-छोटे झोंपड़े दृष्टिगोचर हुए। वहां जमीन की सतह समुद्र से १,२९० फुट नीची है। शायद वह संसार का सबसे नीचा धरातल है और दैनिक जीवन की सुविधाओं से सबसे अधिक कोरा भी।

हमने नासिर की ओर आश्चर्य मिश्रित दृष्टि से देखा। आखिर किस प्रेरणा के वशीभूत होकर वह इस नितांत ऊजड़ प्रदेश में, जलवायु की कठोरता का मुकावला करते हुए इतनी कठिन तपस्या कर रहा है-यह प्रश्न हमारी आंखों में था। उत्तर में नासिर ने हमें जो कुछ बताया, उसाका सार यों है।

पंद्रह वर्ष पहले वह एक महत्वाकांक्षी तरुण था और उसकी महत्वाकांक्षा सांसारिक थी। उसे अकाउंटेंट की शिक्षा-दीक्षा मिली थी। उन दिनों जो अकाउंटेंट अरवी और अंग्रेजी बोल सकते थे, उन्हें आसानी से वड़ी तेल-कंपनियों में नौकरी पर ले लिया जाता था। लेकिन नासिर जानता था कि तेल-कंपनियां तजुरबेकार आदमियों को लेना ज्यादा पसंद करती हैं। सो कुछ प्रयत्न करके उसने जेरूसलम की यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन (वाइ० एम० सी० ए०) में कार्यालय-सेक्रेटरी का काम प्राप्त कर लिया।

१९४८ में असोसिएशन ने नासिर पर अनेक व्यावसायिक जिम्मेदारियां लाद दीं। इस समय तक पैलेस्टाइन में यहूदियों और अरबों की परस्पर लड़ाई और कटुता अंतिम सीमा पर पहुंच चुकी थी। दिन-

दहाड़े जेरूसलम की सड़कों पर खून-खराबा हो रही थी। व्यवसाय और व्यापार ठप हो गया था और खाद्य-समस्या दिनों-दिन उग्रतर होती जा रही थी।

नासिर ने अनुभव किया कि असोसिएशन को जीवंत संस्था बनाये रखना है, तो यह आवश्यक है कि खाद्य-समस्या के निराकरण में हाथ बटाया जाये। अतः उसने बेरूत से अनाज लाने का निश्चय किया। उसने यह भी तय कर लिया कि परिस्थिति चाहे कितनी भी संकटमय क्यों न हो, असोसिएशन को काम जारी रखना होगा। क्योंकि वही तो ऐसी एकमात्र जगह थी, जहां यहूदी और मुस्लिम के भेद को भूलकर सभी युवक एकत्र हो सकते थे। वहीं उन्हें परस्पर हिल-मिलकर खेलने या पढ़ने के साधन उपलब्ध थे। वस्तुतः यह संस्था द्वेष और वैर के सागर में भ्रातृभाव का एक द्वीप थी।

नासिर अनाज की तलाश में बेरुत पहुंचा। और बेरुत में ही उसकी गर्भवती पत्नी भी थी। जेरूसलम में आये दिन होनेवाले दंगे-फसाद के कारण उसने पत्नी को उसकी मां के पास भेज दिया था। लेकिन वह इसे अस्थायी व्यवस्था समझता था, क्योंकि वह जानता था कि थोड़े समय बाद उसे असोसिएशन छोड़कर किसी बड़ी तेल-कंपनी में चला जाना है।

लेकिन संयोग से जब वह अभी बेरुत में था, पैलेस्टाइन के विभाजन की घोषणा हो गयी। अंग्रेजों ने यह सब इतनी तेजी से कर डाला कि नासिर की तरह हजारों व्यक्ति स्तंभित रह गये। शीघ्र ही वह जेरूसलम लौटा; लेकिन उसे नगर को विभाजित करनेवाली, कांटेदार तारों की बाड़ पर रोक दिया गया।

पैलेस्टाइन को विभाजित करनेवाली रेखा जेरूसलम में से होकर गुजरती थी और असोसिएशन जिस मोहल्ले में था, वह संयोग से इजराइल के हिस्से में पड़ा था। विभाजन इस मुस्तैदी और कठोरता से कार्यान्वित किया गया कि उस तारीख को जो व्यक्ति जिस भाग में था, उसे वहां का ही मान लिया गया। नासिर को दूसरी ओर जाने नहीं दिया गया।

पहले तो नासिर ने सोचा कि यह विभाजन अधिक समय तक नहीं चल सकेगा; अरबों और यहूदियों का आपसी संघर्ष दो अलग राज्यों को जमने नहीं देगा। लेकिन १९४८ के अंत तक, दस लाख शरणार्थी

असहायों के सखा ईसा
एक स्पेनी भित्तिचित्र की ओके द्वारा अनुकृति

अरब पैलेस्टाइन में प्रवेश कर चुके थे।

इन शरणार्थियों की दुर्दशा देखकर नासिर को अनुभव हुआ कि विभाजन के दिन वह बाहर रहा, यह उसकी खुशकिस्मती ही थी। उसके बीवी-बच्चे बेरुत में सुरक्षित थे। उसने सोचा, क्या हुआ अगर मैं असोसिएशन वापस नहीं जा सकता; यहीं-कहीं नौकरी कर लूंगा। और उसने दो-तीन तेल-कंपनियों को प्रार्थना-पत्र भेज दिये।

वैसे असोसिएशन से उसका रिश्ता टूट गया था; फिर भी लोग उसे उस संस्था के कार्यकर्ता के रूप में ही पहचानते थे। जब वह गली में से गुजरता था, लोग उससे पूछते थे—लबीब भाई, क्या असोसिएशन हमारी कुछ सहायता नहीं करेगा ?...... क्या असोसिएशन मेरी मां के रहने की कोई व्यवस्था करा सकेगा ?

और नासिर साफ देखता था कि उसे देखते ही उन विपद्ग्रस्त शरणार्थियों की आंखों में आशा की चमक पैदा हो जाती है। वे पीड़ित और दु:खी लोग तो यह मानने के लिए तैयार ही नहीं थे कि अरब पैलेस्टाइन में यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन नहीं है; हालांकि वे जानते थे कि संस्था का भवन, कर्मचारी तथा तमाम साधन विभाजन-रेखा के दूसरी ओर ही छूट गये थे। हां, नासिर की तरह संस्था के और भी चार कर्मचारी विभाजन के दिन अरब पैलेस्टाइन में अटके रह गये थे।

एक दिन लबीब नासिर को एक तेल-कंपनी से पत्र मिला। उसे असोसिएशन में जितना वेतन मिलता था, उससे दस गुना ऊंचे वेतन पर बेरुत में नियुक्त किया जा रहा था। नासिर को स्वीकृति-पत्र भेजकर, अपना परिवार साथ लेकर वहां पहुंच जाना-भर था।

किंतु इसके पहले एक दिन वह यों ही नीचे जोर्डन की घाटी में चला गया, जहां लगभग ७०,००० शरणार्थी नये जीवन की नींव डालने की चेष्टा कर रहे थे। नासिर इन लोगों के रहन-सहन के तौर-तरीकों से परिचित होना चाहता था। फिर उसके कुछ मित्र भी वहां रहते थे।

घाटी में विशाल कैंप पड़ा हुआ था तथा रेडक्रास और कई अमरीकी सेवा-संस्थाओं के कार्यकर्ता सामर्थ्य-भर उनकी सहायता कर रहे थे। नासिर ने इन शरणार्थियों की आंखों में गहरी छाया देखी—यह छाया घोर निराशा की छाया थी। बड़े-बूढ़ों और युवकों की पीड़ा तो किसी प्रकार नजर-अंदाज की भी जा सकती थी। लेकिन उसने जब मासूम बच्चों की दयनीय उदासी और जड़ता देखी, तो उसे यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन के अहाते में खेलते-चिल्लाते, एक-दूसरे को ठेलते, हंसी-मजाक करते बच्चे याद हो आये।

वह सोचने लगा कि यदि उसने इन बच्चों को किसी दूसरे स्थान पर देखा होता, तो उनके लिए कितना कुछ कर सकता था! किंतु यहां इस रेगिस्तान में क्या किया जा सकता है ? उसने उस लंबे उजाड़ विस्तार को देखा। एक ओर ऊंची पठारी चोटी थी

और उसकी छाया में वह छोटी-सी घाटी थी, जहां हजारों शरणार्थी डेरा डाले पड़े थे। नासिर को महसूस हुआ कि वह पठार की चोटी ही उन शरणार्थियों की आशा-आकांक्षाओं का प्रतीक है। किवदंती है कि इसी चोटी पर से शैतान ने ईसा को धरती का साम्राज्य दिखाया था। नासिर ने उस घाटी में यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन की स्थापना करने का निर्णय कर लिया।

वह जेरूसलम लौट आया और वहां उसने असोसिएशन के अपने चारों पुराने साथियों को एकत्र किया और उनके सामने अपना संकल्प प्रकट किया। उसने तय कर लिया था कि फिलहाल वह बेरुत में तेल-कंपनी की नौकरी स्वीकार नहीं करेगा। लेकिन न तो उसके मन में और न ही उसके साथियों के मन में इसकी कोई स्पष्ट रूप-रेखा थी कि वे क्या काम करेंगे। सत्तर हजार शरणार्थियों के बीच में भला पांच आदमी क्या कर सकते थे? फिर भी उन्होंने एक छोटा-सा डेरा डालकर उसमें बड़ी आयु के लड़कों के लिए स्कूल चलाने का निश्चय किया।

स्कूल खुलने की घोषणा होते ही लगभग १,५०० विद्यार्थी आ पहुंचे। अपने छोटे से शिविर के द्वार पर खड़ा हुआ नासिर उन लड़कों को देख रहा था। वह सोच रहा था कि उस छोटे-से डेरे में बालकों का यह विशाल समुद्र कैसे समायेगा? तभी उसे याद आया कि डेरे में एक गेंद पड़ी है। उसने गेंद उठाकर बच्चों के बीच में फेंक दी। एक मस्जिद में लगभग दो सौ लड़के आपस में धक्का-मुक्की करते हुए उस गेंद से खेलने लगे। इस तरह जोर्डन में यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन स्थापित हो गया।

जब अमरीका के केंद्रीय असोसिएशन को नयी संस्था की स्थापना की सूचना मिली, तो वहां से आर्थिक सहायता आने लगी। नासिर को विश्वास होने लगा कि स्कूल चल निकलेगा। एक बार फिर उसने तेल-कंपनी को लिखा कि वह अभी काम पर नहीं आ सकेगा। स्कूल में उसने काष्ठशिल्प के प्रशिक्षण की व्यवस्था की। फिर और भी कई हुनरों के कोर्स आरंभ किये। कालांतर में नक्काशी, बिजली और होटल-व्यवस्था के पाठ्यक्रम भी चालू किये गये। अंत में नासिर अपनी पत्नी व बच्चों को जेरूसलम ले आया।

आज सारा पश्चिमी एशिया जोर्डन-घाटी के यंग मेन्स क्रिश्चियन असोसिएशन को जानता है और उसका मान करता है। उसके तैयार किये हुए नवयुवक आज अरब-संसार में विविध सेवाकार्यों में जुटे हैं और शब्दों द्वारा नहीं, बल्कि काम के द्वारा मानवीय आदर्शों का प्रचार कर रहे हैं। ये वही बालक हैं, जिनके सामने नासिर ने उस दिन गेंद फेंकी थी। इसी भूमि में दो हजार साल पहले ईसा मसीह ने कहा था—"दूसरे की जरूरत पर पहले ध्यान दो, अपनी इच्छा पर बाद में।" और ये युवक इस आदेश को अपने जीवन में उतारने का यत्न कर रहे हैं।

★

विज्ञान के जनसंपर्क अधिकारी

रिची काल्डर

विज्ञान को ऊंची अटारी से उतारकर जनता के बीच लानेवाले एक पत्रकार मनीषी का परिचय मैत्रेयी दत्ता के शब्दों में । पोर्ट्रेट – वी० एन० ओके।

अणुविद्या के आचार्य लार्ड रदरफोर्ड ने जब देखा कि उस युवक रिपोर्टर के सवाल समाप्त ही नहीं होते, वे खीज उठे और फार्म्युलों व समीकरणों से भरा एक वैज्ञानिक लेख टेबल पर पटकते हुए बोले– "मैं कहता हूं, कोई भी गैर-वैज्ञानिक इसे नहीं समझ सकता ।"

रिपोर्टर सकपकाया नहीं । उसने अपनी नोटबुक खोलकर महान रदरफोर्ड के सामने रख दी और कहा–"श्रीमन्, इसमें मैंने शीघ्रलिपि में जो कुछ लिखा है, उसे अगर आप रोमन में उतार दें, तो मैं भी आपके निबंध को पढ़ व समझ लूंगा ।"

रदरफोर्ड ने यह चुनौती स्वीकार की या नहीं, हम नहीं जानते । लेकिन उस रिपोर्टर ने अवश्य इतना विज्ञान सीख लिया कि अब तक उसने वैज्ञानिक विषयों पर बीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जो उन्नीस भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं, और उसके विज्ञान-संबंधी लेख विश्व-भर की एक हजार से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। दुनिया आज उसे प्रो० रिची काल्डर के नाम से जानती है ।

प्रोफेसर काल्डर की यह दृढ़ आस्था रही है कि विज्ञान कोई गूढ़ मंत्र नहीं है, जिसे दीक्षा के समय गुरु शिष्य के कानों में फूंक देता है; बल्कि कार्य-कारण नियम के अनुसार व्यवस्थित-विभाजित जानकारी ही विज्ञान है, जिसे कोई भी सामान्यतया बुद्धिमान शिक्षित व्यक्ति अध्ययन व अभ्यास द्वारा सीख-समझ सकता है । विज्ञान एवरेस्ट नहीं है, जिस पर कोई हिलेरी या तेनसिंह ही चढ़ सकता है; वह तो मैदान में मंथर गति से बहती हुई भागीरथी है, जिसमें कोई भी अवगाहन कर सकता है–बशर्ते उसमें उतरकर तैरना सीखने से न डरें।

पीटर रिची काल्डर (जन्म : १ जुलाई १९०६) के पिता स्काटलैंड की एक जूट मिल के मजदूर थे, जो अपनी योग्यता के बलबूते पर एक कारखाने के मैनेजर बन गये । पीटर के दो बड़े भाई हवाई जहाज के कारखानों में इंजीनियर बने । माता-पिता चाहते थे कि उनका एक लड़का तो विश्वविद्यालय का प्राध्यापक बने । पीटर से उन्हें विशेष उम्मीद थी ।

लेकिन पीटर ने पंद्रह साल की उम्र में स्वयं ही शीघ्रलिपि सीखकर हाइस्कूल को प्रणाम किया और डंडी के 'कूरियर'

में रिपोर्टर की नौकरी कर ली। उन्हें अपराध की खबरें लाने का काम दिया गया।

चार साल बाद वे लंदन चले आये और 'डेली न्यूज' के रिपोर्टर बन गये। उनकी रिपोर्टों के साथ, उनका नाम छपने लगा। १९३० तक वे यहां रहे। फिर 'डेली क्रानिकल' में कुछ दिन रहकर 'डेली हैराल्ड' में चले गये।

१९२० से ही वैज्ञानिक विषयों में उनकी दिलचस्पी थी। अतः विज्ञान-संबंधी मामलों की रिपोर्टिंग प्रायः उन्हीं के हिस्से पड़ती थी। उन दिनों अभी सर सी० पी० स्नो ने विज्ञान पर अलग संस्कृति होने का आक्षेप नहीं किया था। लेकिन तब भी वैज्ञानिक सबसे अलग-थलग रहते थे; रिपोर्टरों को पास नहीं फटकने देते थे।

लेकिन कुशल पत्रकार काल्डर वैज्ञानिकों के आगे-पीछे घूमने, उनकी किताबें व लेख पढ़ने, प्रयोगशालाओं के चक्कर लगाने और नये शोध की टोह लेने लगे। और विज्ञान के प्रति उनकी निष्ठा तथा शास्त्रीय विषयों को प्रामाणिक एवं रोचक रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता से प्रभावित होकर, वैज्ञानिक भी उनसे सहयोग करने लगे। अब वे 'डेली हैराल्ड' में वे नियमित रूप से वैज्ञानिक विषयों पर लिखने लगे।

उनकी प्रथम पुस्तक ' बर्थ आफ दि फ्यूचर' १९३४ में छपी। इसमें विज्ञान की तब तक की उपलब्धियों का विवरण था। फिर 'कान्क्वेस्ट आफ सफरिंग' आदि विज्ञान-संबंधी पुस्तकें निकलीं।

लेकिन काल्डर ने अपने को विज्ञान तक सीमित नहीं कर लिया। युद्धकाल में उन्होंने अपने लेखों तथा 'दि लेसन आफ लंदन' और 'कैरी आन, लंदन' नामक पुस्तकों द्वारा ब्रिटिश जनता की शूरता, उसकी मुसीबतों और नागरिक-सुरक्षा की अपर्याप्त तैयारी का खरा व जीवंत चित्र खींचा। सरकार तिलमिला उठी। उन्हें गिरफ्तारी की धमकी तक दी गयी। लेकिन उनके कई सुझाव अमल में लाये गये।

अंत में विदेश-विभाग की प्रचार-शाखा में योजना-अधिकारी के रूप में उनकी योग्यताओं का लाभ उठाया गया। वे इस कदर काम में जुट गये कि एक दिन राह चलते-चलते उनके दिमाग की एक नस फट गयी और वे कई दिन तक मर्त्यलोक और मृत्युलोक के बीच त्रिशंकु की तरह लटके रहे। स्वस्थ होते ही उन्होंने यूरोप में मित्र-राष्ट्रों के सर्वोच्च सेनापति जनरल आइसनहोवर के प्रधान शिबिर में विज्ञान-सलाहकार का पद संभाला।

युद्ध के अनंतर उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय आरंभ हुआ। १९४६ तथा ४७ में वे युनेस्को के अधिवेशनों में ब्रिटिश प्रतिनिधि-दल के सदस्य थे। [illegible] १९४६ में विश्व खाद्य-कृषि संघटन ने जो अकाल सम्मेलन बुलाया, उसके वे विशेष सलाहकार थे। बाद में भूख की समस्या पर उन्होंने 'कामनसेंस एबाउट ए स्टार्विंग वर्ल्ड' जैसी प्रामाणिक पुस्तक लिखी।

फिर उन्होंने युनेस्को की ओर से पश्चि

सहारा से लेकर ईरान [illegible] इलाकों का दौरा किया। इस यात्रा की रिपोर्ट 'मेन एगेंस्ट दि डेजर्ट' में इस रेतीले इलाके की भौगोलिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक तथा चिकित्सा-संबंधी समस्याओं और उनके समाधानों का वर्णन है।

१९५५ में कनाडा सरकार और राष्ट्रसंघ के आग्रह पर वे साढ़े चार महीने उत्तर-ध्रुव प्रदेश में रहकर वहां की प्राकृतिक प्रक्रियाओं और उनके संभावित प्रभाव का अध्ययन करते रहे। १९६० में उन्होंने राष्ट्रसंघ और विश्व खाद्य-कृषि संघठन की ओर से गृहयुद्ध-ग्रस्त कांगो का दौरा किया। इन यात्राओं के बाद लिखे उनके ग्रंथ 'मेन एगेंस्ट दि फ्रोजन नार्थ', और 'एगनी आफ कांगो' अत्यंत प्रामाणिक संदर्भ-ग्रंथ हैं।

किंतु काल्डर की सबसे महत्वपूर्ण और महत्वाकांक्षापूर्ण कृति है – 'आफ्टर दि सेवंथ डे'। इसमें उन्होंने मानव के अब तक के बौद्धिक विकास तथा अणुयुद्ध और जनसंख्या-विस्फोट की विभिषिका का वर्णन करके आस्था व्यक्त की है कि विज्ञान द्वारा विश्व में स्वर्णयुग लाया जा सकता है।

उनकी अन्य मुख्य पुस्तकें हैं – प्रोफाइल्स इन सायन्स, मेन एगेंस्ट जंगल, सायंस इन आवर लाइव्स, सायन्स मेक्स सेंस, फ्राम मैजिक टु मेडिसिन, मेडिसिन एंड मैन, वंडर फुल वर्ल्ड आफ मेडिसिन, दि लाइफ सेवर्स और लिविंग विद दि एटम आदि।

लेखन-कार्य और लंबी यात्राओं के बावजूद वे सार्वजनिक कामों के लिए समय [illegible] लेते हैं। वे ब्रिटिश वैज्ञानिक लेखक संघ के संस्थापकों में से हैं। श्रमिक शिक्षा संघ और वैज्ञानिक प्रगति संघ के वे सक्रिय कार्यकर्ता हैं; अणुबम निरस्त्रीकरण समिति के उपाध्यक्ष हैं। १९२४ से वे मजदूर पार्टी में हैं और उसके सर्वोत्तम वक्ताओं में गिने जाते हैं। उनके रेडियो और टेलिविजन कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हैं।

अनेक विद्या-विज्ञान संस्थाओं ने उनका सम्मान किया है। विज्ञान को जनगम्य बनाने की दिशा में उनकी सेवाओं के लिए १९६० में उन्हें कलिंग-पुरस्कार दिया गया। १९६१ में एडिनबरो विश्वविद्यालय ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार का प्राध्यापक नियुक्त कर, उनके माता-पिता की ख्वाहिश पूरी कर दी।

लेकिन इस नियुक्ति से एक समस्या उत्पन्न हो गयी। एडिनबरो में प्राध्यापक गाउन पहने बिना क्लास नहीं ले सकते हैं। बेचारे काल्डर के पास कोई डिग्री नहीं थी, वे गाउन कहां से लाते! अंत में एक अति पुराने कानून के बल पर विश्वविद्यालय ने उन्हें गौरवार्थक नहीं, अपितु असली एम० ए० घोषित किया। तब कहीं प्रोफेसर काल्डर गाउन सिलवा सके।

रिची काल्डर हृष्ट-पुष्ट शरीर और सशक्त मस्तिष्क के उत्तम उदाहरण हैं। ५ फुट ९ इंच कद और १८० पौंड वजन के उनको देखकर पहलवानों की याद आती है। यात्रा, बढ़ईगीरी और गाल्फ उनके प्रिय मनोरंजन हैं।

*

अंधेरी रात

गगन में तारिकाएं हैं,
धरा पर दीप जलते हैं।
मगर शशि को बुलाने में
अंधेरी रात कट जाती।
सितारों को सुलाने में
अंधेरी रात कट जाती॥

हठीला चपल बालक-सा
हृदय में दर्द पलता है,
इसे झूला झुलाने में
अंधेरी रात कट जाती।
सितारों को सुलाने में
अंधेरी रात कट जाती॥

न उनकी याद सोती है,
न दिल का दर्द सोता है।
निशा को दिन बनाने में
अंधेरी रात कट जाती।
सितारों को सुलाने में
अंधेरी रात कट जाती॥

जगत में क्यों नहीं मिलता
किसी का साथ मनमाना,
सितारों को मनाने में
अंधेरी रात कट जाती।
सितारों को सुलाने में
अंधेरी रात कट जाती॥

जलाते दीप आशा के
हवा उसको बुझा देती।
दिये फिर-फिर जलाने में
अंधेरी रात कट जाती।
सितारों को सुलाने में
अंधेरी रात कट जाती॥

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

एक रोमांचकारी शिकार प्रसंग

एक सौ अट्ठासीवां शिकार

बिसनलाल शर्मा

यवतमाल के दक्षिण पलसी, पालोदी, आदि ग्रामों के आस-पास के लगभग २५ मील के दायरे में १९५८ में एक मस्ताने भालू ने बड़ा आतंक मचा रखा था। वह जंगल पार करते हुए राहगीरों, मजदूरों और चरवाहों पर हमला कर देता और उन्हें बुरी तरह नोच डालता था। कई शिकारी बुलाये गये; किंतु प्रयत्न करके हार गये। भालू का बाल न बांका कर सके।

धीरे-धीरे भालू के बारे में तरह-तरह के अंधविश्वासपूर्ण किस्से फैलने लगे। लोगों के दिल में उसकी ऐसी दहशत बैठ गयी कि उन्होंने काम पर जाना छोड़ दिया। जंगल का सब काम-धंधा ठप हो गया और इसका सबसे अधिक नुक्सान उठाना पड़ा ठेकेदार नारायणसिंह को। सो एक दिन उन्होंने यवतमाल आकर दयाशंकर त्रिवेदी को सारा किस्सा सुनाया और इस विपदा से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की।

दयाशंकरजी उनके साथ ही चल पड़े विपद्ग्रस्त इलाके की ओर। लगातार तीन दिन तक जंगल में घूम-घूमकर उन्होंने भालू के आने-जाने के रास्तों का अध्ययन किया। वनवासियों ने उन्हें बताया कि अड़ान नदी के दोनों तटों पर फैले हुए जालंधरी जंगलों में, रत्नापुर के पासवाली पहाड़ियों की खोहों में भालू रहते हैं। लेकिन कोई वनवासी वहां तक उनके साथ चलने को तैयार नहीं था। अंत में बहुत समझाने-बुझाने पर करनू गोंड, देव्या और वाच्या बनजारा साथ चलने को राजी हो गये।

दोपहर के बाद चारों ने रत्नापुर की पहाड़ियों की ओर प्रस्थान किया। दोपहर के बाद धूप से बचने के लिए भालू तलुओं से मुंह लगाकर अपनी खोहों में निर्द्वंद्व गुनगुनाते हुए पड़े रहते हैं। अतः यह समय उनकी शिनाख्त के लिए बड़ा उपयुक्त होता है।

ज्यों ही वे लोग अड़ान नदी के किनारे से पहाड़ियों की ओर बढ़े, उन्हें मार्ग में भालू के पद-चिह्न और विष्ठा दिखाई दी, जिसे देखकर उन्होंने अनुमान लगाया कि

भालू को उस ओर से गुजरने का आभास नहीं हुआ है।

लेकिन हवा का रुख अनुकूल नहीं था, जिससे भालू को उनकी गंध लग जाने का डर था। इसलिए दयाशंकरजी ने करनू और वाच्या को आदेश दिया कि वे बायीं ओर से चक्कर लगाकर पहाड़ी पर जा बैठें; और स्वयं ५०० गज का चक्कर लगाकर देव्या के साथ सावधानी से आगे बढ़े। उनका लक्ष्य यह था कि भालू के लिए बच निकलने का कोई रास्ता न रहे।

अभी वे कुछ दूर ही बढ़े थे कि मधुमक्खियों की गुंजार ने उनका ध्यान आकृष्ट किया। नाले के किनारे एक विशाल अंजन वृक्ष पर बड़ी-बड़ी मक्खियां जोरों से भन्नाती हुई चक्कर काट रही थीं। ध्यान से देखा तो कोई चालीस फुट की ऊंचाई पर बैठा एक काला भालू शहद खा रहा था। उसने अपना मुंह एक बांह से ढंक रखा था, ताकि मक्खियां डंक न मारें और दूसरे से वह छत्ते को तोड़-तोड़कर मजे से मुंह में रखता जा रहा था।

बड़ी विकट समस्या थी। मधुमक्खियों का ध्यान आकृष्ट न हो जाये, यह जरूरी था; क्योंकि तब वे भालू को छोड़कर उन पर टूट पड़तीं। और दुर्भाग्य से उनके पास कंबल वगैरह कुछ भी नहीं था, जिससे मक्खियों से बचाव कर सकें। अतः कोई ३०० गज की दूरी पर घनी झाड़ियों में छिपकर वे भालू की लीला देखने लगे।

उधर करनू और वाच्या बायीं ओर से

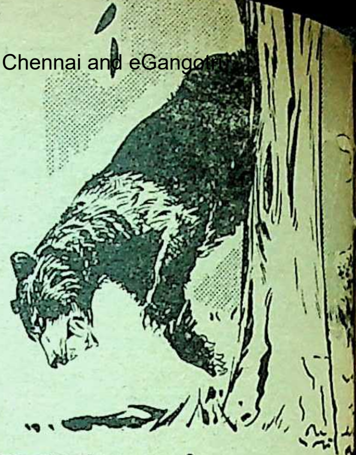

चक्कर लगाकर पहाड़ी पर जहां आकर बैठे, वह स्थान उस अंजन वृक्ष से ज्यादा दूर नहीं था। वैसे ही भालू के नाक-कान बहुत तेज होते हैं। फिर हवा का रुख भी अब उसकी तरफ हो गया था। उसे मनुष्यों के आने की भनक मिल गयी। सो उसने शहद खाना छोड़ दिया और चारों ओर नजर घुमायी। फिर एकाएक चालीस फुट की ऊंचाई से कूद पड़ा।

विस्मय की बात तो यह थी कि उसे इतनी ऊंचाई से कूदने पर भी तनिक भी चोट नहीं लगी और वह तुरंत उठकर भागा। असंख्य मधुमक्खियां उसके घने-घने बालों में घुसी थीं और कितनी ही मंडल-सा बनाकर उसके सिर पर मंडरा रही थीं। दयाशंकरजी भी झाड़ी से निकलकर चुपचाप भालू के पीछे चल पड़े।

लेकिन अभी ज्यादा दूर नहीं जा पाये थे कि एकाएक जंगल भयानक गुर्राहट की ध्वनि से भर गया। दयाशंकरजी ने देखा कि भागते हुए भालू की एक बाघ से भिड़ंत

हो गयी है । दोनों प्राणी जोरों से [illegible] गुथ गये । लेकिन युद्ध ज्यादा देर न चला । भालू के बालों में से निकलकर कुछ मधुमक्खियां बाघ पर पिल पड़ीं । वह इस आकस्मिक हल्ले से अचकचा गया ।

मौका देखकर भालू ने उसके सिर, गर्दन और पेट को नोच डाला । किंतु बाघ ने भी कम पराक्रम नहीं दिखाया । उसने एक भरपूर पंजा भालू के पेट पर ऐसा मारा कि उसकी आंतें बाहर निकल आयीं ।

लेकिन मक्खियों से जूझने की विद्या बाघ को नहीं आती थी । वह उनके डंक की चुभन से व्याकुल होकर भाग निकला । भालू के वार से उसका एक पैर जख्मी हो गया था, जिससे वह लंगड़ा रहा था । उसकी क्रोध और दर्द से भरी गुर्राहटें जंगल को कंपा रही थीं ।

इधर घायल भालू की हरकतें देखकर दयाशंकरजी हैरान रह गये । भालू पेट को एक हाथ से दबाये उठा और आस-पास की झाड़ियों का निरीक्षण करने लगा । दर्द से कराहते-लड़खड़ाते हुए वह आगे बढ़ा और एक लोखंड के वृक्ष के पास जाकर खड़ा हो गया । फिर वृक्ष की नीचे झुकी डालियों पर से पत्ते नोच-नोचकर पेट के घाव में भरने लगा । लेकिन घाव गहरा था और बहुत खून बह चुका था । थोड़ी देर में वह बेदम होकर जमीन पर गिर पड़ा ।

पहले भी कई बार दयाशंकरजी ने गोली से घायल भालुओं को किसी वृक्ष के पत्ते घाव में भरकर खून का बहना रोकते [illegible] था । वे यह भी जानते थे कि उस इलाके के आदिवासी किसी वृक्ष की पत्तियों का उपयोग करते हैं, जिससे टुकड़े-टुकड़े हुआ मांस भी जुड़ जाता है ।

किंतु यह समय वनस्पतियों और उनके द्रव्य-गुणों के विषय में सोचने का नहीं था । बाघ पर ध्यान देना जरूरी था । दयाशंकरजी जानते थे कि बाघ ज्यादा दूर न भाग सकेगा और कहीं पास ही किसी झाड़ी में छिपने की कोशिश करेगा । यों भी बाघ के फेफड़े अपेक्षाकृत छोटे होते हैं, जिससे वह लगातार मीलों तक नहीं दौड़ सकता । वैसे वह एक रात में २०-२५ मील तक का चक्कर पैदल लगा लेता है । लेकिन दौड़ते हुए वह बुरी तरह हांफने लगता है ।

यह बड़ा जरूरी था कि घायल बाघ हाथ से निकल न पाये और जल्दी ही उसका काम तमाम कर दिया जाये । नहीं तो निश्चित था कि बाघ ग्रामवासियों को सताने लगेगा । लेकिन तनिक-सी भी असावधानी जानलेवा सिद्ध हो सकती थी; क्योंकि दिन ढलने लगा था और अंधेरा घिर आया था । ऐसे में भला कब तक पीछा करते ? सो अकेले ही लौट चले । करनू, वाच्या और देव्या तो जब बाघ भालू पर टूट पड़ा था, तभी नौ दो ग्यारह हो गये थे।

गांव पहुंचकर दयाशंकरजी ने ग्रामवासियों को समझा दिया कि बाघ बुरी तरह जख्मी हो गया है । अगर उसके घावों में कीड़े पड़ गये, तो वह हिरन आदि पशुओं को मारने में असमर्थ हो जायेगा और मवे-

शियों पर ह[illegible] तो गांव में घुसकर आदमियों को भी उठा ले जायेगा । इसलिए जल्दी उसकी टोह लेनी चाहिये । यह खबर आस-पास के गांवों में भी भिजवा दी गयी ।

दो दिन तक जालंधरी जंगल को छान डालने के बाद तीसरे दिन दयाशंकरजी को एक दिन लंगड़े बाघ के पुराने पदचिह्न दिखाई दिये । कहीं-कहीं उसकी विष्ठा भी थी, जिसमें लंबे-लंबे बाल थे । पदचिह्नों के सहारे वे वहां पहुंचे, जहां भालू निढाल होकर गिर पड़ा था । उन्होंने देखा कि बाघ ने मृत भालू के पेट का सफाया कर दिया है

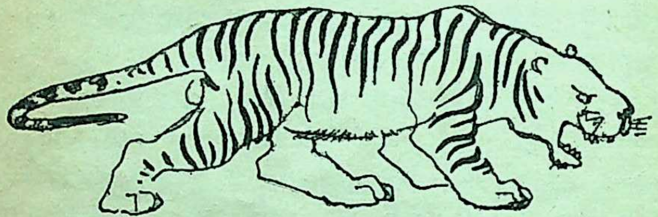

यह धारणा भ्रांतिपूर्ण है कि बाघ भालू का मांस नहीं खाता । खाता तो है, लेकिन थोड़ा ही; क्योंकि वह उसका नैसर्गिक भोजन नहीं है । बात यों हुई होगी । हवा के सहारे मरे भालू की गंध पाकर बाघ उस ओर आया होगा । भूख ज्यादा लगी होगी, सो पेट का मांस खा लिया होगा ।

× × ×

तीसरे दिन सांवली के गोंडों ने खबर भेजी कि उन्होंने पहाड़ी के पास एक बाघ को विक्षिप्तावस्था में देखा है, बाघ का [illegible] के पास का हिस्सा-सूजा हुआ है और उसके चारों ओर हरी मक्खियां मंडरा रही हैं । यानी बाघ के घाव में कीड़े पड़ गये थे । लेकिन उस दिन तबीयत ठीक न होने के कारण दयाशंकरजी कुछ न कर सके ।

चौथे दिन से आस-पास के गांवों से बाघ के उपद्रव की खबरें आने लगीं । वह दो-तीन बूढ़ी औरतों और बच्चों को उठा ले गया था । लोगों का अपने गांव से बाहर निकलना दूभर हो गया । शाम से ही घरों के दरवाजे बंद होने लग गये ।

तीन-चार दिन बाद वनवासियों के गांव से खबर आयी कि बाघ ने वहां डेरा डाल रखा है । बैलगाड़ी करके दयाशंकरजी वहां पहुंचे । गांव के छोर पर ही एक बनजारे का खाली घर और बैलों का कोठा था । वहीं से जंगल शुरू होता था । दयाशंकरजी ने यहीं रात बिताने का निश्चय किया ।

रात के दस बजे होंगे कि अचानक बंदूक के धमाके की आवाज हुई और फिर बाघ की हृदय-विदारक गर्जना गूंज उठी । गांववाले चौंककर उठ बैठे । उनके मन तरह-तरह की कुशंकाओं से भर गये । अंत में कई साहसी युवक लाठियां और लालटेनें लेकर उस खाली घर पर आये, जहां दयाशंकरजी अकेले ठहरे हुए थे ।

वहां उन्होंने जो दृश्य देखा, वह अद्भुत था। उनसठ वर्ष के नौजवान दयाशंकरजी हाथ में दुनाली बंदूक लिये खड़े थे और उनके पांवों के पास मरा हुआ बाघ पड़ा आ था।

किस्सा यों था। दयाशंकरजी को नींद नहीं आ रही थी। गरमी के कारण उन्होंने घर के दरवाजे बंद नहीं किये थे। दस बजे के करीब लालटेन के मद्धिम प्रकाश में उन्होंने देखा कि लंगड़ा बाघ आंगन पार कर, दीवार के साथ-साथ उनकी ओर बढ़ा आ रहा है।

सहज ही उनका हाथ बंदूक पर चला गया। लेकिन तभी याद आया कि लेटते वक्त खाली बंदूक ही सिरहाने रख ली थी; आलस्यवश उसमें कारतूस नहीं भरे थे। अब मौत निश्चित थी और क्षण-क्षण उनकी ओर बढ़ती आ रही थी।

लेकिन यह क्या! बाघ तो उन पर झपटने के बजाय, खाट के नीचे घुसने की चेष्टा कर रहा था। शायद उसने सोचा होगा— अब शिकार तो कहीं भागनेवाला नहीं है; तो उसका भोग लगाने के पहले कुछ सुस्ता ही लिया जाये। मौका अच्छा था। दयाशंकरजी ने आहिस्ते से अपनी दुनाली बंदूक उठायी और उसमें [illegible] इंच के एल० जी० छर्रे भर लिये।

बाघ की पीठ चारपाई से लग रही थी, जिससे चर्रचर्र की आवाज निकल रही थी। शायद इस कारण उसे ऊपर की हलचल का कुछ पता न चला। इसका लाभ उठाकर दयाशंकरजी चुपचाप खाट पर खड़े हो गये। बाघ अब तक दरवाजे की ओर मुंह करके बैठ गया था। दयाशंकरजी ने छः इंच की ऊंचाई से निशाना साधा और उसके कंधों के बीचों-बीच गोली दाग दी।

बंदूक के धमाके के साथ बाघ भयंकर गर्जना के साथ उछला और दरवाजे के पास गिरकर ढेर हो गया। उसकी छलांग के जोर से खाट उलट गयी और दयाशंकरजी के ऊपर आ गिरी। बंदूक उनके हाथ से छिटककर दूर जा गिरी और उसका कुंदा टूट गया।

खाट के नीचे से ही वे दो मिनिट तक बाघ को देखते रहे। जब उसमें कोई हलचल न दिखाई दी, उठे, बंदूक उठायी और उसके पास गये। तभी ग्रामवासी वहां आ पहुंचे।

बाघ को नापा गया, तो नाक से पूंछ तक वह ९ फुट ४ इंच था। यह दयाशंकरजी का १८०-वां बाघ था।

*

मच्छ नहीं, मगर

यात्री:—भाई मैं इस नदी में स्नान करना चाहता हूं। इसमें बड़ी मछलियां तो नहीं हैं? उनसे मुझे बड़ा डर लगता है।

मल्लाह:— बेखटके नहाइये साहब, इसमें बड़ी मछलियां बिलकुल नहीं हैं। उन सबको मगरमच्छों ने खा डाला है।

*

विधाता का व्यंग्य :

यह हिटलर की दाई थी

मार्टिन एब्रामसन

उस छोटे-से आस्ट्रियाई कस्बे ब्राउनाऊ ने अपने लंबे, नींद-भरे इतिहास में कभी ऐसी सरगर्मी नहीं देखी थी, ऐसा तनाव महसूस नहीं किया था। दिन था – १ मई १९४५। निंदियाई इन्न नदिया के उस पार १३-वीं अमरीकी आर्मर्ड सेना खड़ी थी और ब्राउनाऊ को धरती के तख्ते पर से उड़ा देने की तैयारी कर रही थी।

ब्राउनाऊ में आज तक एक ही खास बात हुई थी और उसकी भी गौरवपूर्णता संदिग्ध थी। एडोल्फ हिटलर ने यहीं जन्म लिया था। और विधि की विडंबना से, उसी हिटलर का शुरू किया हुआ महायुद्ध आज ब्राउनाऊ को नेस्तनाबूद कर देने पर उतारू था।

पिछले दिन ही अमरीकी सेना इन्न नदी के किनारे पहुंची थी और उसने नागरिकों से आत्मसमर्पण की मांग की थी। कस्बे के जिद्दी नाजियों ने ब्राउनाऊ को सिबाख से जोड़नेवाला पुल उड़ा दिया था। सो बेचैन अमरीकी सेना सिबाख में ही पड़ी थी।

उस रोज सवेरे आठ बजे सिबाख का मेयर किश्ती से नदी पार कर, ब्राउनाऊ के मेयर के पास अमरीकी सेनापति की यह चेतावनी लाया–"बारह बजे तक बिना शर्त हथियार डाल दो! वरना शहर धू मिला दिया जायेगा।"

सिबाख के मेयर की अपनी सलाह यही थी–"हथियार डाल दो। लड़ने से फायदा! आखिर लड़ाई तो हम लोग हा ही चुके हैं।"

दिन चढ़ता जा रहा था। और धूप में वह आस्ट्रियाई इलाका कितना मु वना लग रहा था!

पौने बारह बजे तीन विशाल अम तोपें कस्बे की ओर निशाना साधे तै खड़ी थीं सेनापति के इशारे की प्रतीक्षा मिनिट-पर-मिनिट बीते जा रहे थे। बजने में अब तीन ही मिनिट बाकी थे ब्राउनाऊ की ओर से तट पर तीन आ भागे-भागे आये, उछलकर किश्ती में और किश्ती को अमरीकी सेना की बढ़ाने लगे। वे चिल्ला रहे थे–"गोले दागो। हम आत्मसमर्पण करते हैं।"

और उस दिन दोपहर को अमरीकी ब्राउनाऊ की सड़कों पर से दनदनाते निकले। कहां गया मरते दम तक का नाजी संकल्प? ऐसा क्या हो था उस दिन सवेरे?

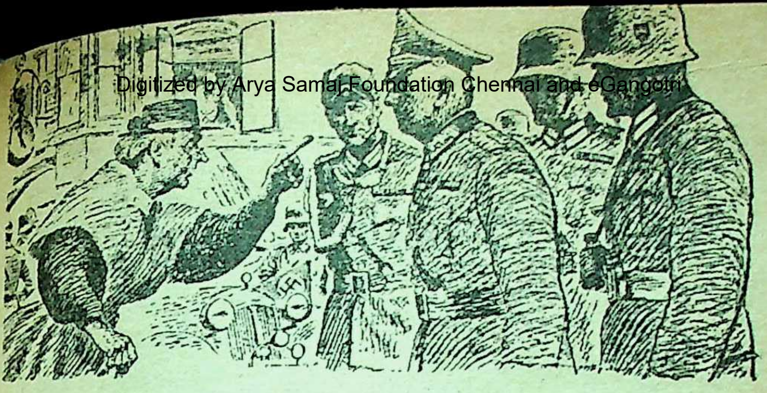

गुरुकुल काँगड़ी

......हिटलर ने यहां पैदा होकर कौन-सी मेहरबानी की हम पर ?

शहर के कट्टर नाजी कमांडर ने कस्बे की एक-एक ईंट के लिए लड़ने का संकल्प किया था। नागरिकों ने उससे बहुत अपील की। बैरक के सामने प्रदर्शन भी किया। इस पर वह अपनी टुकड़ी लेकर कस्बे में आ गया। उसने लेक्चर झाड़ा :

"लानत है तुम पर। दुनिया तुम पर थूकेगी, अगर तुमने बिना लड़े घुटने टेक दिये। ब्राउनाऊ अमर है; फ्युहरर की पवित्र जन्म-भूमि है। अपने हृदय-सम्राट् फ्युहरर के नाम पर हमें मरते दम तक लड़ना है, भले ही शहर की ईंट-से-ईंट क्यों न बज जाये।"

"कमांडर ठीक कहते हैं। हथियार डालने में बदनामी होगी।" नगरवासी परस्पर कहने लगे। तभी भीड़ के कोने से उठी एक तीखी आवाज सबके कानों को चीर गयी—"हिटलर ने यहां पैदा होकर कौन-सी मेहरबानी की हम पर ? उसने तो हम पर कहर ही ढाया है। बिलकुल निकम्मा आदमी है वह...... शुरू से ही निकम्मा था। तुम लोग भी जानते हो। अब हथियार डाल देना ही ठीक है।"

यह आवाज थी एक बुढ़िया की; और उस बुढ़िया को ब्राउनाऊ में हर कोई जानता था। सब बोल उठे—"ठीक है, ठीक है ! फ्यूहरर की इज्जत जाये भाड़ में।"

भीड़ का 'मूड' बदल गया। किसी ने कमांडर की बगल में बंदूक की नली तान दी। उसे वहां से ले जाया गया। अन्य सैनिक चुपचाप तितर-बितर हो गये। मेयर और उसके दो सहायक नदी की ओर भागे। ब्राउनाऊ विनाश से बच गया। कैसा विचित्र संयोग कि हिटलर की जन्मस्थली ने जिस दिन हथियार डाले, उसी दिन हिटलर की मृत्यु की घोषणा भी हुई।

और वह बुढ़िया, जिसने ब्राउनाऊ का आत्मसमर्पण कराया था, यह सोचते हुए घर की ओर चल दी कि चलो जो किस्सा छप्पन साल पहले मैंने शुरू किया था, उसे मैंने ही खत्म भी किया। वह बुढ़िया थी फ्राउ रोज ह्यार्ल, जिसने हिटलर के जन्म पर दाई का काम किया था।

★

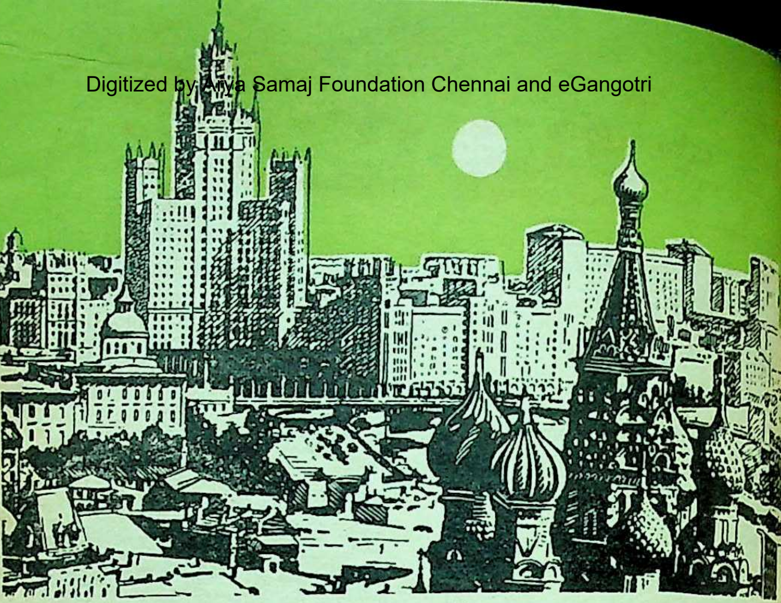

क्रेमलिन का सितारा और मास्को का चांद

सत्यजित राय

कोपनहेगन से हम मास्को जाने के लिए 'इल्युशिन' हवाई जहाज में सवार हुए। शाम के साढ़े चार बज चुके थे और मास्को तक का सफर दो घंटे का था।

हमारे पास फर्स्ट क्लास के टिकट थे। लेकिन फर्स्ट क्लास में एक भी सीट खाली न दिखाई दी। बड़ी अजीब बात थी। एक-दो मिनिट हम उलझन और बेचैनी में खड़े रहे। तभी एयर-होस्टेस आयी। उसने हमारे टिकटों पर नजर डाली और टूरिस्ट क्लास में जाने का इशारा किया। उसके पीछे ही एक विशालकाय आदमी आया, जो वर्दी पहने था। हमारे पास आकर माफी-सी मांगता हुआ बोला –"कुछ गलती गयी दिखती है। जितनी सीटें हैं, उससे ज्यादा टिकट बेंच दिये गये हैं।"

हम अपनी सीट पर जा बैठे। हवाई जहाजों में टांगें फैलाने के लिए जगह होती है, उससे यहां कुछ ज्यादा थी और टांगें अगली सीट की पीठ से रने के बजाय, सामने बैठे यात्री के से छूती थीं। दोनों सीटों के बीच मेज और यात्री आमने-सामने इस तरह बैठे मानो होटल में बैठे हों।

गरमी थी और जहाज में नमी भरी थी। मैंने सिर उठाकर ऊपर देखा,

झरोखा खोल सकूं । लेकिन कहीं झरोखे के दर्शन नहीं हुए । और न ही पढ़ने के लिए हर सीट के साथ अलग-से रोशनी का इंतजाम था ।

उड़ान शुरू होने के आधे घंटे बाद मैंने होस्टेस से पूछा कि अब तो हमें सिगरेट पीने और कमरबंद ढीले करने की इजाजत है? बात यह थी कि बिजली से लिखी सूचनाएं अब भी कह रही थीं —"कृपया धूम्रपान न कीजिये; कमरबंद न खोलिये ।" होस्टेस बोली—"सूचना गलती से जलती रह गयी ।"

× × ×

दो दिन पहले मैंने मास्को के फिल्म मेले के अधिकारियों को तार भेज दिया था कि हम फलां तारीख को फलां हवाई जहाज से मास्को पहुंच रहे हैं । लेकिन हवाई अड्डे पर हमें लेने कोई नहीं आया था । सो दूसरे यात्रियों के पीछे-पीछे हम एक कक्ष में पहुंचे, जो प्रतीक्षालय-सा प्रतीत होता था । पंद्रह मिनिट तक तो किसी ने हमें नजर उठाकर तक न देखा ।

आखिरकार हम कुर्सियों पर बैठ गये और प्रतीक्षा करने लगे कि शायद कोई हमें लेने के लिए आ जाये । हमारे पीछे एक बहुत बड़ा टेलिविजन-सेट था और छत से एक विशाल फानूस लटक रहा था । कमरा प्रतिनिधियों, दुभाषियों और प्रेस-फोटोग्राफरों से खचाखच भरा था ।

समय सात से ऊपर ही हो चुका था, जब एक जवान लड़की हमारे पास आयी और अंग्रेजी में बोली — "आप हिंदुस्तान से आये हैं क्या ?" हमने कहा — "हां ।" वह बोली— "ओह, तो आप आ गये ! यीना तो आपका इंतजार होटल में कर रही है ।"

"यीना कौन ?"

"आपकी दुभाषिया ।"

"वह यहां क्यों नहीं आयी ?"

"वह सोच रही थी, कहीं ऐसा न हो कि वह तो यहां तक आये; और आप न आयें !"

"लेकिन हम आते क्यों न ? हमने लिखा जो था कि हम आ रहे हैं । और तार भी भेजा था हमने ।"

"खैर जो हो । मैं टांगानीका के प्रतिनिधि-मंडल की दुभाषिया हूं और वह मंडल अभी आया नहीं है । सो तब तक मैं आपका सामान निकलवाने और आपको होटल पहुंचवाने का इंतजाम करती हूं ।" वह चली गयी और आधे घंटे के बाद लौटी । आते ही बोली—"एक सिगरेट देंगे ?" मैंने सिगरेट दी; उसे लेकर वह फिर चली गयी ।

जब हम कार में बैठकर शहर को रवाना हुए, तब नौ बज चुके थे । हमें बताया गया कि हमारा सामान बाद में आयेगा । मैं ड्राइवर के साथ की सीट पर बैठा । ड्राइवर गोल-मटोल आदमी था – घनी भौहें, घुंघराले काले बाल । और चूंकि टांगानीका का प्रतिनिधि-मंडल अभी तक भी नहीं आया था, वह दुभाषिया लड़की ईवा भी हमारे साथ शहर लौट रही थी ।

एवा ने हमारा परिचय उस ड्राइवर से कराया—"` हैं कामरेड......। ये भी फिल्म

का काम करते हैं।"

"अच्छा !" मुझे बड़ा ही विस्मय हुआ। ईवा बोली –" हां, इन्होंने कामरेड दारचुक की आखिरी फिल्म में काम किया है।"

"सचमुच ?"

"हां," ड्राइवर ने मेरी ओर मुड़कर कहा–" मैं 'फेट आफ ए मैन' का कैमरा मैन था।"

मैंने मन-ही-मन इसकी तस्वीर खींचने की कोशिश की कि भारत में इस स्तर का कोई फिल्मी आदमी विदेशी फिल्म प्रतिनिधि-मंडल को हवाई अड्डे से होटल तक इस तरह पहुंचाये। पर तस्वीर बन नहीं पायी। हिन्दुस्तान में ऐसी बात कहां संभव है।

होटल पहुंचने में एक घंटा लगा। कार से उतरकर हमने अपने ड्राइवर यानी उस प्रसिद्ध कैमरामैन को धन्यवाद दिया। बदले में उसने हाथ क्या मिलाया, मेरे हाथ को झकझोर के रख दिया।

होटल के बाहर लोगों की भीड़ जमा थी। पूछने पर पता चला कि ये लोग डैनी के की झलक पाने के लिए खड़े हैं, जो पिछले रोज ही वहां पहुंचा था।

× × ×

'मास्क्वा' बारह मंजिली इमारत है। सभी फिल्म-प्रतिनिधि इसी में ठहरे हैं। मास्को की ज्यादातर इमारतों की तरह यह भी शैली और सौंदर्य से इस कदर अछूती है कि देखकर हैरानी होती है। नीचे की पूरी मंजिल में लाबी है। इस समय वहां प्रतिनिधियों, पत्रकारों और फिल्म-मेले के आयोजकों की भीड़ लगी थी। शोर इतना
कि कान फटे जा रहे थे। एक कोने में सि
रेटों की दुकान दिखाई दी। पत्र-पत्रिका
का एक स्टाल था, कुछ और दुकानें भी
और सबकी-सब बंद थीं।

ईवा यहां हमें छोड़कर चली गयी थी।
जब वह लौटी, तो उसके साथ एक औ
थी–उम्र तीस के लगभग, शरीर कुछ गो
मटोल, होंठों पर मोहक मुस्कान। उ
मेरा और मेरी पत्नी का स्वागत किया।

"यह है यीना, " ईवा ने कहा–"
आपकी देखभाल यही करेगी।"

यीना ने हमसे हाथ मिलाया। "मास्को
आपका स्वागत ! मैंने सोचा कि होटल में
आपका इंतजार करूं। सफर आरामदेह
रहा न ?" यीना बड़ी मिठास के साथ
शत प्रतिशत अमरीकी लहजे में अंग्रेजी
रही थी–"आइये, दफ्तर में तशरीफ र
तब तक मैं आपके कमरे का पता ल
हूं। मेरा खयाल है, आपने खाना तो
खाया होगा ?"

मैंने बताया कि लंदन से कोपन
आते हुए राह में एक बजे खाया था;
कुछ भी खाने को नहीं मिला।

"अच्छा, तब तो आपके खाने का
जाम भी करना होगा। कृपया अपने
पोर्ट दीजिये।"

हमारे पासपोर्ट लेकर यीना लाबी
भीड़ में खो गयी। अब मुझे अपने सा
की चिंता होने लगी थी। हम भीड़ में
जैसे-तैसे रास्ता बनाते हुए दफ्तर गये।

और भी ज्यादा भीड़ थी और शोर भी ।

आधे घंटे के बाद यीना लौटी । "मैं उसके सामान का रास्ता देख रही थी ।"

"तो आ गया है क्या ?"

"अभी नहीं । तब तक आइये, सेक्रेटरी से मिल लें । वे सातवीं मंजिल पर हैं । उनसे आपको अपना प्रोग्राम पता चल जायेगा ।"

लिफ्ट की ओर जाते हुए मैंने यीना से पूछा कि क्या वह पिछले फिल्मी मेलों में भी दुभाषिया रही थी ?

"नहीं, यही पहला मौका है । मैंने सोचा कि अपनी अंग्रेजी को परखने का अच्छा मौका है । चार साल से मैं अंग्रेजी पढ़ रही हूं । अब अगले साल पुर्तगाली सीखना शुरू करूंगी ।"

× × ×

जब हम सेक्रेटरी के पास पहुंचे, वे फ्रांसीसी प्रतिनिधियों से बातें कर रहे थे । दुबला शरीर, भूरे बाल और उदास आंखें । उनकी फ्रेंच मुझे सुनने में बहुत बढ़िया लगी । दस मिनिट बाद हमारी बारी आयी ।

"ओह, कितनी खुशी की बात है मिस्टर राय कि आप आ सके । मिस्टर युतकेविच का बड़ा आग्रह था कि आप अवश्य आयें ।" उनकी अंग्रेजी भी फ्रेंच जैसी ही अच्छी थी ।

मैंने पूछा, मिस्टर युतकेविच कहां हैं ?

"वे बीमार हैं । लेनिनग्राड में इलाज करवा रहे हैं । मेले में शायद ही आ सकें ।"

युतकेविच ने पेरिस में मेरी पहली तीन फिल्में देखी थीं । वास्तव में वे ही एकमात्र फिल्मी निर्देशक थे, जो मेरी फिल्मों से अच्छी तरह परिचित थे । मुझे बड़ी निराशा हुई ।

"और ये रहा प्रोग्राम," सेक्रेटरी ने पीले रंग की एक पत्रिका मुझे देते हुए कहा, जिसके मुखपृष्ठ का डिजाइन बेहद बुरा था । "कल उद्घाटन है, वालूएव की फिल्म के प्रदर्शन के साथ । और परसों से आप काम पर जुट जायेंगे ।" सेक्रेटरी हमदर्दी से मुस्कराये । "मैं जानता हूं, यह बड़ा मुश्किल काम है ।"

"हां," मैंने पत्रिका के पृष्ठों पर सरसरी नजर दौड़ाते हुए कहा–"परंतु यहां दिन में दो ही फिल्में दिखायी जा रही हैं; इससे कुछ सहूलियत रहेगी । बर्लिन में हमें तीन-तीन फिल्में देखनी पड़ती थीं । बड़ी मुसीबत थी ।"

सेक्रेटरी ने जरा-सी पलकें उठायीं । "यहां भी दिन में तीन फिल्में हैं ।" वे बोले ।

मैं हैरान रह गया । जब इस फिल्म-मेले में निर्णायक बनने का निमंत्रण मुझे मास्को से मिला था, तभी मैंने उसके आयोजकों को लिखा था कि दिन में दो से ज्यादा फिल्में न देखनी पड़ें, इस शर्त पर ही मैं निर्णायक-समिति में शामिल होने को तैयार हूं । और मेले के अधिकारियों से उत्तर मिला था कि हमें एक दिन में दो ही फिल्में देखनी पड़ेंगी ।

मैंने अपने बस्ते में से वह पत्र निकाला और सेक्रेटरी को दिखाया । उसे पढ़कर वे सिर हिलाते हुए बोले–"जरूर कोई गलती हो गयी है ।"

"हां, बहुत बड़ी गलती–इतना तो आप भी मानेंगे ।"

"मुझे बड़ा अफसोस है मिस्टर राय ।"

फिर भोजन के कूपनों की बात आयी, तो सेक्रेटरी ने बताया कि कूपन कल से चालू होंगे।

यीना ने बड़ी हमदर्दी से हमारी ओर से कहा–"लेकिन मिस्टर और मिसेस राय ने तो दोपहर से कुछ नहीं खाया है। और उनके पास रूबल भी नहीं हैं। फिर रेस्त्रां भी बंद हो चुका है।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ। आप ही देख रहे हैं मिस्टर राय कि आज कितनी गड़बड़ है। इतने सारे मेहमान जो आ गये हैं। कल सब कुछ ठीक हो जायेगा। हां तो –" और वे यीना की ओर मुड़कर बोले–"मिस्टर और मिसेस राय को उनके कमरे में क्यों नहीं ले जातीं। बड़ा अच्छा कमरा है। यह वही कमरा है" –इस बार मेरी ओर मुड़कर–"जहां पिछली बार महबूब खां रहे थे।"

हमने सेक्रेटरी से विदा ली। चलते हुए यीना बोली– "आप अब अपने कमरे में चलिये। मुंह-हाथ धो लीजिये। मैं नीचे जाकर आपके सामान का इंतजार करूंगी और ज्यों ही आयेगा, ऊपर भिजवा दूंगी।"

× × ×

नौवीं मंजिल पर ९६४ नंबर का कमरा हमारा था। दरवाजा खोलकर हम अंदर गये। मुझे कहना होगा, उसे देखकर कुछ खुशी जरूर हुई। बैठक बहुत बड़ी और हवादार थी। फर्श पर बड़ा बढ़िया कालीन था और सोफे आकर्षक थे। एक कोने टेलिविजन-सेट था और बायीं ओर दीवा के पास पियानो रखा था। मैंने उसका ढक्क उठाया और सुरों पर उंगलियां फिरायीं कमरा सुरों की झंकार से भर गया। उठकर मेज तक गया; टेलिफोन की घं बज रही थी। मैंने चोंगा उठाया और यीन की आवाज सुनाई दी।

"हल्के भूरे रंग के दो बड़े सूटकेस बता थे न आपने ?"

"हां, हां !"

"तो आ गये हैं। मैं उन्हें ऊपर भिज रही हूं।"

"बहुत अच्छी बात है।"

"और कुछ चाकलेट भी......अच्छ अब कल मुलाकात होगी।"

नीचे सड़क पर चलनेवाली मोट गाड़ियों की हल्की-हल्की आवाज खिड़ में से आ रही थी। मैंने उठकर परदा खो दिया। सामने भव्य लाल चौक दिखाई रहा था।

आसमान में धुंध छायी हुई थी और एकमात्र तारा दिखाई दे रहा था, वह क्रेमलिन का लाल तारा। उससे कुछ ह कर पूनम का चांद चमक रहा था-गो भरा हुआ और मित्र-जैसा। मुझे नहीं आता कि इतना बड़ा चांद मैंने पहले क देखा हो। ('मेनस्ट्रीम' के साभार

जज:—तो तुमने एक ही दुकान से महीने में तीन बार चोरी की ?
अपराधी:—हुजूर, उस मोहल्ले में वही एक अच्छी दुकान थी।

उनके विमान ने पहली उड़ान भरी

वह एक युगांतरकारी घटना थी; लेकिन तब किसी ने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

गार्डनर सोल

राइट-बंधु साइकलें बनाते-बनाते ऊब गये थे। उन्होंने सोचा कि क्यों न बिना घोड़े की गाड़ियां बनाना शुरू कर दें। बड़े भाई विलबर ने कहा–"नहीं, उससे अच्छा यह है कि हम उड़नेवाली मशीन बनायें।" छोटा भाई आरविल बोला–"ठीक कहते हो भैया।" वे दोनों साइकलें बनाना छोड़कर उड़नेवाली मशीन बनाने में जुट गये। यह बात १८९७ की थी।

इसके छः वर्ष पश्चात् दोनों भाइयों ने एक हवाई जहाज बना लिया, जिस पर बैठकर मनुष्य उड़ सकता था। उन्होंने उत्तरी कैरोलिना के किटी हाक नामक स्थान पर अपने जहाज को पहली बार उड़ाया। यह आज से साठ वर्ष पहले की बात है। दिसंबर की सत्रह तारीख थी उस दिन। आज भी यह दिन हर साल किटी हाक में राष्ट्रीय पर्व के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

राइट-भाइयों ने स्कूल की शिक्षा भी पूर्ण नहीं की थी। न उन्हें इंजीनियरी के सिद्धांतों का ज्ञान था। फिर उन्होंने हवाई जहाज कैसे बना लिया? इसी में उनकी मेहनत, लगन और बुद्धिमत्ता की कहानी है। उन्होंने पहली बार मनुष्य को मशीनी पंखों के बल पर आसमान में उड़ने का सौभाग्य प्रदान किया।

इंग्लैंड में राइट-भाइयों के जन्म के बहुत पहले, सन १८४८ में जार्ज स्ट्रिंगफेलो ने एक माडल हवाई जहाज बनाया था, जो कि पहली बार उड़ा था। पचपन साल बाद, राइट-भाइयों ने उस हवाई जहाज के पंखे, इंजन और पंख इन तीन चीजों का प्रयोग अपने हवाई जहाज में किया।

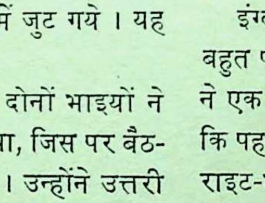
आरविल

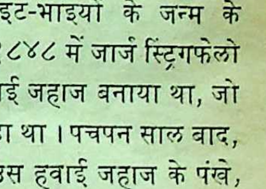
विलबर

जब विलबर और आरविल छोटे थे, एक दिन उनके पिता ने उन्हें खेलने के लिए हेलिकाप्टर लाकर दिया था। तभी से हवाई जहाज में उनकी दिलचस्पी पैदा हुई और आखिर उन्होंने उसे बनाकर ही दम लिया।

जर्मनी में ओट्टो लिलियेनथाल ने पक्षियों की उड़ान का अध्ययन करके 'ग्लाइडर' बनाये। उन पर वह कई बार उड़ा भी था। सन १८९६ में वह एक उड़ान में मारा गया। राइट-भाइयों ने उसके बारे में पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ा था। उन्हें लिलियेनथाल के ग्लाइडरों और उड़ानों में कुछ गलतियां दिखाई दीं। सो उन्होंने हवाई जहाज बनाते समय उन गलतियों से बचने का निश्चय किया।

अमरीका में आक्टेव चेन्यूर ने एक ग्लाइडर बनाया था और ६४ वर्ष की अवस्था में उसमें बैठकर उड़ान भी भरी थी। कई वर्ष तक चेन्यूर राइट-भाइयों से पत्र-व्यवहार करता और उनका उत्साह बढ़ाता रहा। वह बहुत बड़ा इंजीनियर था और कोई दो हजार बार ग्लाइडरों में सफलतापूर्वक उड़ा था।

राइट-भाई साइकलों के अच्छे कारीगर तो थे ही; अब वे हवाई जहाजों के निर्माण और उड़ान के संबंध में हर प्रकार की आवश्यक वैज्ञानिक जानकारी जुटाने लगे। वे जानते थे कि साइकल के बारे में केवल पढ़ लेने से ही कोई साइकल-सवार नहीं बन जाता; साइकल पर चढ़कर उसे चलाना सीखना पड़ता है। इसी प्रकार उड़ने के लिए भी केवल शास्त्रीय ज्ञान काफी नहीं है। सो उन्होंने ग्लाइडिंग का अभ्यास करना शुरू किया।

राइट-भाइयों ने घंटों लेटकर पक्षियों के उड़ने का निरीक्षण किया था। उन्होंने देखा-विभिन्न प्रकार की वायु में पक्षी विभिन्न प्रकार से उड़ते हैं और उनके पंखों का आकार बदलता रहता है। सन १९०० में उन्होंने चेन्यूर को लिखा कि इंजन के बिना भी उड़ना संभव है।

राइट-भाई १९०० में अपना बनाया हुआ पहला ग्लाइडर उड़ाने के लिए किटी हाक गये। उन्होंने ग्लाइडर के एक सिरे पर रस्सा बांधकर उसे पतंग की तरह उड़ाया और उसकी उड़ान का अध्ययन किया। उस वर्ष वे उसमें कुल मिलाकर दस मिनिट तक उड़े। बाद में उन्होंने बिना रस्से के भी उसमें दो मिनिट तक उड़ान भरी। सन १९०१ में उन्होंने उससे दुगना बड़ा ग्लाइडर बनाया और उसे किटी हाक ले जाकर उसमें उड़े।

विलबर और आरविल के सामने अब समस्या यह थी कि ग्लाइडर का संतुलन कैसे कायम रखा जाये? दूसरे उड़नेवालों के सामने भी यह समस्या रही थी। आखिर १९०२ में उन्होंने एक मशीन बना ली, जो ग्लाइडर का पूरा संतुलन कायम रख सकती थी। इस प्रकार वे दूसरे ग्लाइडर निर्माताओं से एक कदम आगे बढ़े। उन्होंने ग्लाइडर के पिछले भाग में पूंछ लगा दी, जिसे हिलाकर ग्लाइडर को संतुलित रखा जा सकता था। उसे ऊपर-नीचे भी ले जाया

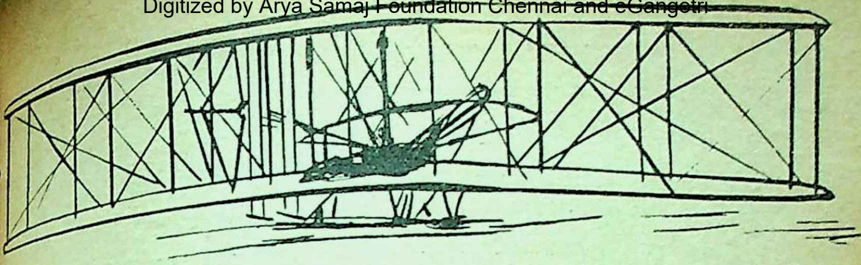

राइट-बंधुओं का वायुयान.....आज के चिकने-चमकीले सुपरसानिक वायुयानों का पिता

जा सकता था । चालक ग्लाइडर को जैसा चाहे मोड़ सकता था ।

उन्होंने किटी हाक में इस ग्लाइडर को २५० बार उड़ाया । उनकी सबसे लंबी उड़ान ६२२।। फुट की थी, जो २६ सेकेंड तक रही । बेहद तेज हवा में भी ३६ मील प्रतिघंटे की रफ्तार से वे उड़ सके । चेन्यूर, जो उन दिनों वहां आया हुआ था, उनकी सफलता देखकर बहुत खुश हुआ ।

जब राइट-भाई चौथी और आखिरी बार किटी हाक गये,तो वहां उन्हें समाचार मिला कि सम्युअल लैंग्ले का बनाया हुआ हवाई जहाज ८ दिसंबर १९०३ को वाशिंग्टन में उड़ने में असमर्थ रहा । यह लैंग्ले का अंतिम प्रयत्न था । इन प्रयत्नों पर वह ७०,००० डालर खर्च कर चुका था ।

राइट-भाई उन दिनों अपना हवाई जहाज बना चुके थे और उसमें बैठकर उड़ने की तैयारी कर रहे थे । इस पर कुल मिलाकर उनका खर्च एक हजार डालर से भी कम हुआ था ।

लैंग्ले की घोर असफलता के छः दिन के बाद १४ दिसंबर को राइट-भाइयों ने हवाई जहाज को उड़ाया । उस जहाज के पहिये नहीं थे । सो उसे एक ट्रक की सहायता से उड़ाया गया । विलबर उस पर सवार था । जहाज कुल ३।। सेकेंड हवा में रहा और १०५ फुट दूर जाकर नीचे उतर आया । उसकी कुछ चीजें टूट गयीं । अगले दो दिन उसकी मरम्मत करने में लगे ।

१७ दिसंबर १९०३ का दिन, जो इतिहास में अमर हो गया है, बहुत भयंकर दिन था । एकाएक मौसम खराब हो गया था । बहुत ठंड थी उस दिन । छोटे-छोटे गड्ढों का पानी जम गया था । राइट-भाई क्रिस्मस पर घर लौटना चाहते थे । सो उन्हें जल्दी थी ।उस दिन दस बजे उन्होंने हवाई जहाज को उड़ाने का फैसला किया । इस बार हवाई जहाज में सवार होने की आरविल की बारी थी । पिछली बार विलबर उसमें सवार हुआ था ।

हवा बेहद तेज चल रही थी, फिर भी हवाई जहाज उड़ा । इस बार वह अपने आप धरती से ऊपर उठा, जबकि पिछली बार

उसे ट्रक की [illegible] गया था। केवल बारह सेकेंड तक वह आसमान में रहा। पर यह उड़ान संसार के इतिहास में अमर हो गयी है; क्योंकि यही पहली उड़ान थी, जिसमें हवाई जहाज आदमी को साथ लेकर स्वयं अपनी शक्ति से ऊपर उठा, एक-सी रफ्तार से हवा में आगे बढ़ा और नीचे उतरा।

उस दिन राइट-भाई उसमें तीन बार और उड़े। चौथी उड़ान ५९ सेकेंड तक रही और ८५२ फुट लंबी थी। चौथी उड़ान के बाद इतने जोर की हवा चली कि हवाई जहाज के कई हिस्से टूट गये और उसका इंजन खराब हो गया। अब वह उड़ाये जाने के योग्य नहीं था।

उस रेतीले वीरान इलाके में राइट-भाइयों की ऐतिहासिक उड़ान को देखनेवाले पांच ही दर्शक थे। आखिर वे चले गये। विलबर और आरविल को कोई जल्दी नहीं थी। उन्होंने आराम से खाना तैयार किया और खाया। लगभग दो बजे वे चार-पांच मील चलकर किटी हाक के स्टेशन पर पहुंचे। वहां से उन्होंने अपने पिता को तार भेजा, जिसमें लिखा था –"चार उड़ानें सफल रहीं।" साथ ही यह भी सूचना थी कि वे क्रिस्मस पर घर पहुंच रहे हैं।

लैंग्ले की ताजी असफलता के कारण ऐसा निराशाजनक वातावरण पैदा हो गया था कि मनुष्य के आसमान में उड़ने की संभावना पर से लोगों का विश्वास उठ-सा गया था। इसलिए कुछ ही समाचार-पत्रों ने राइट-भाइयों की उड़ानों की खबर छापी। कुछ दिन बाद जब वे अपने घर पहुंचे, तो एक भी रिपोर्टर उनसे मिलने नहीं आया। न लोग उनका स्वागत करने के लिए जमा हुए, न बैंड बजा। सिर्फ उनका पिता उन्हें स्टेशन पर लेने आया। हां, उनकी बहन और एक बड़ा भाई पिता के साथ अवश्य आये थे। हवा में उड़नेवाले के भाई घोड़ा-गाड़ी में घर पहुंचे।

★

शास्त्र और सत्कर्म

जिस आदमी ने तोराह (शास्त्र) तो खूब पढ़े हैं, लेकिन जिसके पास सत्कर्म नहीं है, उसकी उपमा किससे दें ?...... ऐसे वृक्ष से जो रेगिस्तान में उगा है, जिसकी शाखाएं तो बहुत हैं, लेकिन जिसकी जड़ें इनी-गिनी हैं और इसलिए जिसे हवा का एक भी झोंका उखाड़ सकता है।

वह उस आदमी की तरह है, जो पहले ईंटों की चिनाई करता है, फिर पत्थरों की। तनिक-सा भी पानी जमा हो जाये, तो उसे ढहा देने के लिए काफी है।...... वह ईंटों पर फैलाये हुए गारे की तरह है, जो तनिक-सी बारिश हो जाये, तो गलकर बह जाता है। वह बेपेंदी के कटोरे की तरह है, जो पानी भरते ही लुढ़क जाता है।... वह बिना लगाम के घोड़े की तरह है, जो सवार को पीठ पर चढ़ते ही गिरा देता है।

–तालमुद

★

रहस्यमय उपन्यासों की सम्राज्ञी-लेखिका

अगाथा क्रिस्टी

आखिर इस विश्व-विख्यात लेखिका की सफलता का रहस्य क्या है? जीवन और साहित्य-परिचय के साथ-साथ यहां पढ़िये, इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर।

हरिमोहन शर्मा

विश्व के जिन दस लेखक-लेखिकाओं की पुस्तकें सबसे अधिक बिकती हैं, उनमें श्रीमती अगाथा क्रिस्टी का स्थान काफी ऊंचा है। उनके पाठकों की संख्या करोड़ों में है, और विश्व के प्रत्येक देश में फैले ये करोड़ों पाठक उत्सुकतापूर्वक उनकी नयी रहस्यकथा की प्रतीक्षा करते रहते हैं। अगाथा क्रिस्टी के सबसे निष्ठावान भक्तों में हैं, स्वयं जासूसी कथाओं के अन्य लेखक, जिनमें अर्ल स्टेनली गार्डनर, डोरोथी सेयर्स, एलरा क्वीन, डोरोथी ह्युग्स आदि, जो एक मत से अगाथा क्रिस्टी को रहस्य-कथाकारों में श्रेष्ठतम मानते हैं। पेरी मैसन के लोकप्रिय कथाकार अर्ल स्टेनली गार्डनर ने, जिनके पाठकों की संख्या करोड़ों में हैं, और जो शायद तमाम रहस्यकथा-लेखकों से अधिक कमाते हैं, एक बार कहा था—"रहस्यकथा के क्षेत्र में अगाथा क्रिस्टी का स्थान सबसे ऊपर है।"

अगाथा क्रिस्टी की सरल और रोचक लेखन-शैली की प्रशंसा करते हुए, आलोचकों ने कई बार लिखा है कि यदि वे सामाजिक या ऐतिहासिक उपन्यास लिखतीं, तो भी इतनी ही सफल रहतीं। पर अगाथा क्रिस्टी ऐसे कथनों के उत्तर में सिर्फ इतना कह देती हैं—"कथा-साहित्य के अन्य क्षेत्रों में शायद मुझे इतनी अधिक सफलता न मिल पाती। जब से मैंने जासूसी उपन्यास और कहानियां लिखना आरंभ किया है, तब से मेरी पुस्तकों की बिक्री प्रति वर्ष बढ़ती ही जाती है। ऐसी शानदार सफलता देखकर अब मैं किसी और क्षेत्र में कदम बढ़ाने का जोखिम नहीं लेना चाहती।"

विश्व के जिन कथाकारों की कथाओं का अनुवाद, दुनिया की अन्य भाषाओं में सबसे अधिक हुआ है, उनमें अगाथा क्रिस्टी का स्थान चौथा है। इसी से उनकी लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने जिन दो असाधारण जासूस पात्रों—वृद्धा कुमारी मारप्ले तथा हंगरीवासी जासूस

पायरे—के सहारे अपनी आठ से अधिक कथाकृतियों का सृजन किया हैं, वे दुनिया-भर में फैले पाठकों के हृदय में अपना स्थान बना चुके हैं।

अगाथा क्रिस्टी की कई जासूसी कहानियों के आधार पर फिल्में भी बन चुकी हैं। ऐसी फिल्मों में सबसे अधिक सफल फिल्म थी—"विटनेस फार दि प्रासीक्यूशन।" युनाइटेड आर्टिस्ट्स द्वारा निर्मित इस रोमांचक फिल्म में चार्ल्स लाटन, टायरोन पावर और मार्लिन डीट्रिच का अभिनय बड़ा लाजवाब था। प्रसंगवश, अगाथा क्रिस्टी की यह कहानी भी उनकी 'मास्टर-पीस' कहानी हैं, इसका अंतिम वाक्य पाठक को ऐसा धक्का पहुंचाता हैं कि उसके जबरदस्त आघात से वह काफी देर तक स्तंभित रहता हैं।

क्रिस्टी की कहानी कहने की शैली, अन्य सभी ज़ासूसी उपन्यासकारों से ज्यादा स्वाभाविक है। वे अपराध के सभी सुराग कहानी की प्रगति के साथ-साथ, पाठकों के सामने बिखेरती चलती हैं—अन्य जासूसी कथा-लेखकों की भांति कोई गुप्त सूत्र छिपाकर नहीं रखतीं। ज़ितने सुराग कहानी के जासूस को मालूम होते हैं, उतने ही पाठकों को भी मालूम होते हैं। अंत में, जब जासूस उन्हीं सुरागों में से किसी एक के सहारे अपराधी को खोज निकालता है, तो पाठक चकित तो होता ही हैं, ठगा-सा भी दिखाई देता हैं। अगाथा की प्रत्येक पुस्तक में यही कौशल दिखाई देता हैं—तीक्ष्ण बुद्धिवाला जासूस, सुपरिचित सूत्रों की सहायता से, सामान्य बुद्धिवाले पाठक को "अपराधी को खोज निकालो" वाले खेल में परास्त कर देता हैं। परास्त पाठक, इस आशा से क्रिस्टी की अन्य पुस्तकें पढ़ता है कि इस बार अवश्य वह जासूस से पहले अपराधी को पहचान कर रहेगा। पर लेखिका उसे संयोगों और भ्रांतिकारी घटनाओं में ऐसा उलझाये रहती हैं कि वह भ्रम-सागर में डूबता-उतराता रहता है, और अपराधी को देखकर भी नहीं पहचान पाता।

अन्य सभी जासूसी कथा-लेखकों का यह दावा है कि अपराधी कभी बचकर नहीं भाग सकता; पर अगाथा क्रिस्टी का ऐसा दावा नहीं हैं। उनका कहना हैं—"अपराधी पुलिस और जासूसों से भी कहीं अधिक चतुर होते हैं। प्रवीण अपराधी चाहे तो ऐसा अपराध कर सकता हैं, जिसे किसी भी तरह से मालूम न किया जा सके। वैज्ञानिक अनुसंधानों से पुलिस और जासूसों की अपेक्षा अधिक लाभ अपराधियों ने ही उठाया है। असंख्य हत्यारे और अपराधी मुक्त रूप से समाज में विचरण कर रहे हैं। क्या इनसे यह बात स्पष्ट नहीं हो जाती कि सर्वथा सूत्ररहित अपराध भी किया जा सकता है।"

अपराध - साहित्य से यश और धन अर्जित करनेवाली अगाथा क्रिस्टी का कहना है—"अपराध ऐसी मानसिक अवस्था है जो अपराधी में जन्म से ही होती हैं। कुमार्गी व्यक्ति अपराधी नहीं होते; पर उनकी कुटिलता बढ़ जाये, तो अपराधी बन सकते हैं।"

एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा है —"पारंगत अपराधी को एक कलाकार ही माना जाना चाहिये; पर वह अच्छा नहीं, कुटिल कलाकार होता है।"

लिखने का शौक अगाथा क्रिस्टी को आरंभ से ही था; पर आरंभ में १६-१७ वर्ष की आयु में वे सिर्फ कविताएं और प्रेम-कहानियां ही लिखती थीं। अठारह वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी पहली जासूसी कहानी "दि मिस्टीरियस अफेयर्स एट स्टाइल्स" लिखी, जो बहुत पसंद की गयी। इस कहानी की सफलता से प्रोत्साहित होकर उन्होंने अन्य जासूसी कहानियां लिखीं। वे इतनी अधिक लोकप्रिय हुईं कि फिर तो उन्होंने जासूसी कहानियों और उपन्यासों की रचना ही करने का निश्चय कर लिया।

"शुरू-शुरू में मैं एक-एक कहानी को कई बार लिखती थी," वे कहती हैं—"पर अब तो हाथ जम गया है, एक बार का ही लिखा संतोषजनक होता है। मैं पहले अपनी कहानी का पूरा प्लाट सोच लेती हूं और उसके बाद लिखना आरंभ करती हूं। एक बड़ा उपन्यास पूरा करने में मुझे तीन से नौ महीने लग जाते हैं।"

अगाथा क्रिस्टी की प्राय: सभी जासूसी कहानियों की पृष्ठभूमि इंग्लैंड है। कारण "कोई उसी पृष्ठभूमि को अच्छी तरह अंकित कर सकता है, जिसके रीति-रिवाजों, कानूनों आदि से वह भली भांति परिचित हो।"

अगाथा क्रिस्टी के कुछ मित्रों का कहना है कि अपने कुछ उपन्यासों की जासूस-नायिका कुमारी मारप्ले वे स्वय ही हैं। पायरे के बारे में उनका कहना है—"हंगरी से आये विस्थापितों की भीड़ में एक दिन पायरे का चेहरा दिखाई दिया था।"

क्रिस्टी भारत में कई बार आ चुकी हैं; पर "हत्या के प्लाट की तलाश में नहीं। भारत मुझे बड़ा अच्छा और प्यारा देश लगता है। खास तौर पर, भारतीय महिलाओं के सौंदर्य और उनकी साड़ियों पर तो मैं फिदा हूं।"

वे जितनी बार भारत आयी हैं, अपने पति श्री मैलोवन के साथ ही, जो एक विख्यात पुरातत्ववेत्ता हैं, और भारत में आयोजित पुरातत्ववेत्ताओं के सम्मेलन में भाग लेने के लिए, या भारत के रमणीय स्थानों का दर्शन करने के लिए अपनी पत्नी के साथ आते हैं। श्री मैलोवन अपने क्षेत्र में उतने ही विख्यात हैं, जितनी उनकी पत्नी अगाथा क्रिस्टी अपने क्षेत्र में। वे अपनी पत्नी की रहस्यकथाओं के सबसे बड़े प्रशंसक भी हैं।

यह पूछे जाने पर कि आपने अपना पति पुरातत्ववेत्ता ही क्यों चुना, अगाथा क्रिस्टी ने एक बार उत्तर दिया—"भई, पुरातत्ववेत्ता पति होना पत्नी के लिए बड़ा अच्छा है। आप तो जानते ही हैं कि पुरातत्ववेत्ता पुरानी वस्तुओं में अधिक रुचि रखते हैं। पुरातत्ववेत्ता की पत्नी जितनी पुरानी पड़ती जायेगी, उतनी ही वह अपने पति को अधिक प्रिय लगेगी। इस मायने में मैं अन्य पत्नियों से अधिक सौभाग्यशालिनी हूं।"

★

करोड़ों वर्ष पहले के दृश्य देखिये

किसी जादू के जोर से नहीं, वैज्ञानिक यंत्रों से देखिये—युगों पूर्व के ब्रह्मांड के जीते-जागते आश्चर्यजनक दृश्य ।

हंस

एच० जी० वेल्स की 'टाइम मशीन' की याद है न आपको, जिसकी मदद से कोई भी हजारों, लाखों, करोड़ों वर्ष पहले या बाद की दुनिया में जाकर उस काल के जीवित दृश्य देख सकता था? ऐसी मशीन बनना संभव है या नहीं, यह तो हम नहीं जानते, पर इतना अवश्य जानते हैं कि आप बिना किसी जादुई मशीन की सहायता के करोड़ों वर्ष पहले के जीवित दृश्य भी देख सकते हैं।

कैसे ? सो सुनिये ।

प्रकाश की एक किरण एक सेकेंड में १,८६,२०० मील जाती है। इस तीव्र वेग के कारण ही हम पृथ्वी के किसी भी भाग की वस्तु को उसी क्षण देख सकते हैं, क्योंकि हमारी पृथ्वी पर फासले १,८६,२०० मील से बहुत ही कम हैं। एक सेकेंड से भी बहुत कम समय में पृथ्वी का अधिकतम फासला हमें दिखाई पड़ जाता है ।

पर हमारी वसुधा के ये क्षुद्र फासले अंतरिक्ष की अति विशाल और लगभग अकल्पनीय दूरियों के मुकाबले में एकदम नगण्य-से ही हैं ।

सूर्य की एक किरण को हम तक पहुंचने में साढ़े आठ मिनिट लगते हैं। किसी कारण-वश सूरज चमकना बंद कर दे, तो इस बात की खबर हमें उसके चमकना बंद करने के साढ़े आठ मिनिट बाद ही लग पायेगी। हमारे सौर मंडल के अन्य नक्षत्र भी प्रकाश-गति की दृष्टि से हमारे बहुत निकट ही हैं। चंद्रमा पर प्रकाश-गति से पहुंचने में हमें सिर्फ सवा सेकेंड ही लगेगा। अन्य ग्रहों-मंगल, शुक्र, शनि, प्लूटो आदि पर भी हम प्रकाश-गति से जाने पर मिनिटों में ही पहुंच जायेंगे ।

पर इस सौर मंडल से बाहर निकलने पर सारा नक्शा ही बदल जाता है। वहां काल और दूरियां अपना खेल शुरू कर देते हैं।

हमारे सौर मंडल के बाहर स्थित जो निकटतम नक्षत्र है, उसका नाम है प्राक्सिमा सेंटारी। वह धरती से २५ करोड़ खरब मील की दूरी पर है। प्रकाश की एक किरण को वहां से पृथ्वी तक पहुंचने में ४·२ वर्ष लगेंगे। अर्थात् दूरबीन की सहायता से जब आप इस तारे को देखते हैं तो असल में उसका भास करानेवाली उस

अंश

किरणों को देख रहे हैं, जो उस तारे से ४.२ वर्ष पहले रवाना हुई थीं। दूसरे शब्दों में उस क्षण आप जिस प्राक्सिमा सेंटारी को देखते हैं, वह ४.२ वर्ष पहले का है, इस क्षण या आज का नहीं। लीजिये, दूरबीन हाथ में लेते ही आप एक क्षण में ४ साल २ महीने पहले के जीवित दृश्य देखने लगे।

पर अभी तो तमाशा शुरू ही हुआ है। मान लीजिये, आपके पास विश्व की सबसे शक्तिशाली वह दूरबीन है, जिसके लेंस का व्यास २०० इंच है। उससे आपको और भी अधिक बड़े व अधिक दूरी पर स्थित तारे दिखाई देंगे। बैटलगेज नामक एक विशाल तारा दिखाई देगा, जो प्रकाश-वेग की दृष्टि से पृथ्वी से इतनी दूरी पर स्थित है कि प्रकाश की एक किरण को यहां से उस तारे तक पहुंचने में ५२० वर्ष लगते हैं। अर्थात् आज अपनी शक्तिशाली दूरबीन की मदद से आप इस सितारे का जो रूप देख रहे हैं, वह असल में उस काल का है, जब स्पेन से कोलंबस भारत की खोज में निकला था और भूल से अमरीका पहुंच गया था।

पोलारिस नाम का एक तारा 'उत्तरी ध्रुव का तारा' नाम से विख्यात है। हमको वह जिन प्रकाश-किरणों की सहायता से दिखाई देता है, वे १०८५ वर्ष पहले उस तारे से चली थीं। अर्थात् आपको जब भी पोलेरिस तारा दिखाई देगा, १०८५ वर्ष पुराना ही। पोलारिस का ही एक अन्य प्रसिद्ध साथी है डेनेब। यह भी हमें हमेशा करीब १,००० वर्ष पुराना ही दिखाई देता है।

हम इसे नहीं, इसके भूत को देखते हैं। आज यह तारा चमकना बंद हो जाये, तो इसका पता हमारे पड़पोतों के पड़पोतों के पड़पोतों को ही लग पायेगा। बीच की पीढ़ियों के लोग उस मृत तारे को बराबर देखते रहेंगे—उस मृत तारे के जीवित स्वरूप को अर्थात् उसके भूत को।

आप यह खयाल न करें कि इन सब तारों को देखने के लिए आपको दुनिया की सबसे शक्तिशाली दूरबीन का ही सहारा लेना पड़ेगा। जी नहीं, ऐसी बात नहीं है। आसमान साफ हो, आपको इन तारों की वास्तविक स्थिति का पता हो, इनके आकार और स्वरूप से आप परिचित हों, तो आप

अपने घर की छत से भी इन तारों को देख सकते हैं। इन तारों को देखते ही आपके सामने हजारों साल पहले की चंचल छायाएं सामने आ जायेंगी।

इतना ही नहीं, बिना दूरबीन की सहायता के आप किसी भी साफ रात में एंड्रोमीडा नामक आकाश-गंगा को भी देख सकते हैं, जो आपको स्वच्छ, काले आकाश में सफेद कण-समूह जैसी दिखाई देगी। ये श्वेत कण वास्तव में आपको दिखाई देनेवाले प्रकाश की वे किरणें हैं, जो इस आकाश-गंगा से २०,००,००,००० वर्ष पहले पृथ्वी की ओर चलना शुरू हुई थीं। शक्तिशाली दूरबीन से देखने पर आकाश-गंगा आपको और भी स्पष्ट दिखाई देगी और आप उस क्षण, बीस करोड़ वर्ष पहले के वे जीवित दृश्य देख सकेंगे, जब पृथ्वी पर न मानव था, न मानवीय सभ्यता के चिह्न। घने जंगल और पर्वत-श्रेणियां भी न थीं। कल्पना कीजिये, एक क्षण में आप बीस करोड़ वर्ष पहले की दुनिया में पहुंच जाते हैं, और उस काल के सजीव दृश्यों का अवलोकन कर सकते हैं!

यह तो हुई उस आकाश-गंगा की बात, जो हमारे सबसे अधिक निकट है, पर अंतरिक्ष में ऐसी अरबों, खरबों, अनगिनत आकाश-गंगाएं हैं। २०० इंच व्यास के लेंसवाली दूरबीन से हमें वे सब आकाश-गंगाएं दिखाई दे सकती हैं, जिनकी प्रकाश-किरणों को हम तक पहुंचने में कम-से-कम दो अरब वर्ष लगते हैं।

२०० इंच लेंसवाली दूरबीनों की सहायता से, जो आजकल निर्माणाधीन हैं, तथा रेडियो-दूरबीनों की मदद से कुछ वर्षों बाद उन आकाश-गंगाओं को देखना भी संभव हो जायेगा, जिनकी प्रकाश-किरणों को पृथ्वी तक पहुंचने में ६ खरब वर्ष तक लगते हैं।

जिस प्रकार अंतरिक्ष में तारापुंज हैं, उसी प्रकार आकाश-गंगाओं के पुंज भी हैं। ऐसे पुंजों की संख्या भी करोड़ों में है। ये सब आकाश-गंगा-समूह, एक-दूसरे से प्रतिक्षण बड़ी तेजी से अलग होते जा रहे हैं। अनुमान है कि इनके एक-दूसरे से पृथक् होने का वेग ३८,००० मील प्रति सेकेंड है।

इससे दो बातें सिद्ध होती हैं। एक तो यह कि ब्रह्मांड का विस्तार, प्रतिक्षण बड़ी तेजी से हो रहा है। दूसरे, न्यूटन का गुरुत्वाकर्षणवाला सिद्धांत ब्रह्मांड के इस भाग में प्रयुक्त नहीं होता। डाक्टर विकी नामक एक खगोलवेत्ता के अनुसार केवल वे आकाश-गंगाएं ही, जिनकी प्रकाश-किरणों को हम तक पहुंचने में ५ खरब वर्ष लगते हैं, एक-दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं। पर उनका यह गुरुत्वाकर्षण बड़ा क्षीण है।

यह एक विचित्र बात है कि खगोलवेत्ता उस आकाश-गंगा के बारे में इतना अधिक नहीं जानते, जिसमें हमारी पृथ्वी और सौर मंडल स्थित हैं, जितना उन आकाश-गंगाओं के बारे में जो हमसे करोड़ों अरबों प्रकाश-वर्ष की दूरी पर स्थित हैं।

इसका कारण यह है कि हम अपनी आकाश-गंगा के बीच में स्थित हैं, और इसलिए उसके गठन का अध्ययन नहीं कर सकते। अपनी आकाश-गंगा से बाहर निकलकर ही हमारे लिए उसका विस्तृत अध्ययन करना संभव होगा। अन्य आकाश-गंगाएं चूंकि हमें स्पष्ट दिख सकती हैं, इसलिए उनके विषय में हमारी जानकारी काफी है, तथा रेडियो-दूरबीनों के विकास तथा मानव के चंद्रमा तथा अन्य ग्रहों पर पहुंचने के बाद और भी बढ़ जायेगी।

स्वर्गीय डाक्टर हबल के कथनानुसार अकल्पित आकारों की इन आकाश-गंगाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

पहले वर्ग में आती हैं अंडाकार आकाश-गंगाएं। इस वर्ग की कुछ आकाश-गंगाएं गोलाकार हैं, और कुछ वर्तुलाकार। अंतरिक्ष में १७ प्रतिशत ऐसी ही आकाश-गंगाएं हैं। इन आकाश-गंगाओं के मध्य में तारों का जमघट रहता है, और केंद्र से किनारों पर आते-आते तारों की संख्या क्रमशः कम होती जाती है। अंतरिक्षीय गैसों और धूल का आकाश-गंगाओं इन में अभाव है, तथा विशालकाय, रक्ताभ तारों और 'बौने तारों' का आधिक्य।

दूसरे वर्ग में आती हैं कुंडली-जैसी आकाश-गंगाएं। हमारी अपनी आकाश-गंगा तथा एंड्रोमीडा इसी वर्ग की हैं। इनमें गैस और धूल का प्राधान्य रहता है। अंतरिक्ष की ८० प्रतिशत आकाश-गंगाएं इसी वर्ग की हैं।

तीसरे वर्ग की आकाश-गंगाएं अनियमित आकार की हैं। ऐसी आकाश-गंगाओं की संख्या अधिक नहीं है। इन्हें सबसे कम आयु की आकाश-गंगा माना जाता है।

खगोलवेत्ताओं का कहना है कि आकाश-गंगाओं के आकार और स्वरूप से उनकी आयु का निर्धारण किया जा सकता है। आकाश-गंगाओं के तीनों वर्ग उनके विकास की तीन अवस्थाओं का दिग्दर्शन कराते हैं। अनियमित आकारवाली आकाश-गंगाएं बड़ी होकर कुंडलीवाली आकाश-गंगाएं बन जाती हैं। अंडाकार आकाश-गंगाएं अधेड़ आकाश-गंगाएं हैं। इसी कारण अधेड़ावस्था में इन आकाश-गंगाओं में रक्ताभ विशाल तारों तथा मृतप्राय बौने तारों की अधिकता रहती है। इनमें धूल और गैस भी नहीं रहते, क्योंकि तारों का निर्माण बंद हो जाता है।

स्वीडन के खगोलवेत्ता सी० वी० एल० चार्लियर का कहना है कि इन तीन वर्गों की आकाश-गंगाओं के अलावा अंतरिक्ष में इनसे ऊंचे दर्जे की आकाश-गंगाएं भी विद्यमान हैं, और हमारी परिचित आकाश-गंगाओं के चारों ओर परिक्रमा करती हैं। इन ऊंचे दर्जे की आकाश-गंगाओं की पहचान शक्तिशाली रेडियो-दूरबीनों के विकास से ही संभव है। पर इस विकास के बाद आप अनंत काल के सजीव दृश्य भी देख सकेंगे, और संतों की यह वाणी सच हो जायेगी—"यही क्षण अनंत है।"

★

चांद पर पहुंचने के बाद

चांद पर मानव का पदार्पण, मंगल ग्रह पर पहुंचने के लिए अंतरिक्ष-मार्ग की अर्गला खोल देगा।

सी० पी० गिलमोर

क्या मनुष्य अंतरिक्ष में घूमनेवाले अन्य ग्रहों तक पहुंच पायेगा ? अगर पहुंच पायेगा, तो कब ? इसके उत्तर में अमरीका की 'नासा' (नेशनल एरोनाटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) नामक संस्था ने एक लंबी योजना बनायी हैं, जिस पर बहुत वाद-विवाद हो रहा है। इस योजना के अंतर्गत, निकट भविष्य के कुछ वर्षों में मनुष्य पहले चांद पर कदम रखेगा और फिर वहां से अन्य ग्रहों तक पहुंचेगा।

सबसे पहले अंतरिक्ष में ऐसे प्लैटफार्म बनाये जायेंगे, जहां पर यात्री पड़ाव कर सकें। फिर वहां से वे और आगे बढ़ेंगे। ये प्लेटफार्म काफी समय तक अंतरिक्ष में कायम रहेंगे और अंतरिक्ष-संबंधी बहुत-सा ज्ञान पाने में भी सहायक होंगे। 'नासा' ने बोइंग और डग्लास कंपनियों को इन प्लैटफार्मों के डिजाइन बनाने के ठेके दिये हैं, पर अभी तक उनके निर्माण में होनेवाले खर्च की व्यवस्था नहीं हुई है। 'नासा' का खयाल है कि सन १९६५ तक इस खर्च का प्रबंध हो जायेगा।

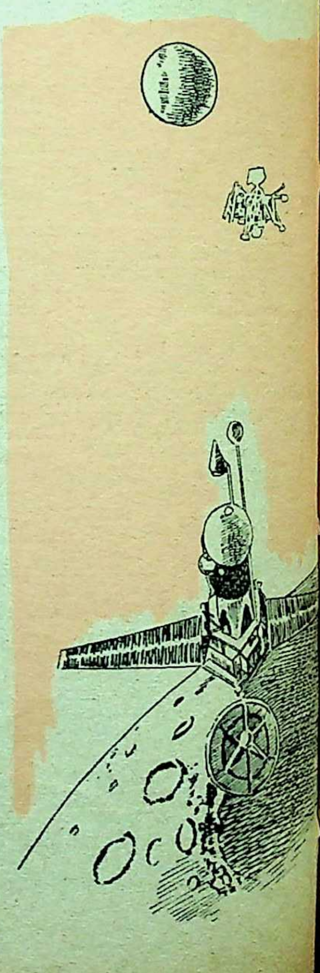

'नासा' ने बोइंग को यह जानकारी प्राप्त करने का भी ठेका दिया है कि चांद पर कैसा स्टेशन बनाया जाना चाहिये। वैसे कई विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि ऐसा स्टेशन बनाने की आवश्यकता नहीं है। चांद से दूसरे ग्रहों तक पहुंचने की व्यवस्था सन १९७० के बाद ही होगी। इस विषय पर विवाद चल रहा है।

सन १९७५ के बाद मंगल ग्रह तक पहुंचने की जो योजना है, उसकी आजकल बहुत चर्चा है। यह भी कहा जा रहा है कि क्या इतने समय में, अर्थात् आनेवाले दस-ग्यारह वर्षों में, इतनी तैयारी हो सकेगी कि मंगल तक पहुंचा जा सके ? पर इस विषय के जानकार डेविड हैमक का कहना है कि सन १९७१ तक यह तैयारी कर ली जायेगी।

इस योजना के अंतर्गत चार राकेट मंगल तक जानेवाले विमान के अलग-अलग भाग लेकर अंतरिक्ष में बने प्लैटफार्म पर जायेंगे। वहां पर उन भागों को आपस में जोड़कर विमान का निर्माण होगा। इस प्रकार पृथ्वी से मंगल तक पहुंचने में १२० दिन लगेंगे, ४० दिन वहां ठहरना होगा और २४० दिन वापस आने में लगेंगे। हैमक का कहना है कि ऐसा विमान बनाने में एक टेक्नीकल अड़चन हमारे रास्ते में आ रही है; मगर उन्हें विश्वास है कि उस अड़चन को आनेवाले वर्षों में दूर किया जा सकेगा। कुछ अन्य विशेषज्ञों का कहना है कि यह काम अभी और १५ वर्षों तक संभव नहीं हो सकेगा।

'नासा' की यह भी योजना है कि मंगल पर पहुंचकर वहां एक ऐसा स्टेशन बनाया जाये, जहां से दूसरे ग्रहों तक पहुंचा जा सके। पर ये अभी बहुत दूर की बातें हैं। फिर भी वैज्ञानिक इस तैयारी में लगे हुए हैं। पहले तो मनुष्य को चांद पर पहुंचना है। मंगल आदि ग्रहों पर पहुंचने की योजना चांद पर पहुंचने के बाद अगला कदम है। *

शौहर ने बीवी को अपना वसीयतनामा दिखाते हुए कहा—"मेरे मरने के बाद तुम्हें हर माह खर्च के लिए दो हजार रुपये मिला करेंगे। और अगर तुमने दूसरी शादी कर ली, तो चार हजार रुपये मिला करेंगे।" बीवी ने बड़ी हैरत से पूछा कि शादी करने पर यह रकम बढ़ क्यों जायेगी ?" शौहर ने कहा—"आखिर उस आदमी को भी तो बहादुरी का कुछ इनाम मिलना चाहिये, जो तुम्हारे साथ शादी करने की हिम्मत करेगा।"

★

एक मेजर ने अपने फौजी मित्रों की दावत की। खाने के बाद बढ़िया शराब पेश करते हुए मेजर साहब बोले—" दोस्तो, इन शराब की बोतलों पर ऐसे टूट पड़ो, जैसे दुश्मन पर हमला किया जाता है।" कुछ देर बाद मेजर ने देखा, एक अफसर शराब की एक बोतल अपने कोट में छिपाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने उससे पूछा—"यह क्या कर रहे हो।" जवाब मिला –" जो दुश्मन मर नहीं रहे हैं, उन्हें गिरफ्तार कर रहा हूं।"

★

प्रेम का एक्स-रे

यह लीजिये, प्रेम का कच्चा चिट्ठा, जिसे वैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने खोला है।

सदानंद

'प्रेम का है इस जग में पंथ निराला' का राग अलापनेवाले भाई-बहनों से गुजारिश है कि 'प्रेम का ज्वार' आने पर, कुछ क्षणों के लिए, ठंडे दिल से इन विज्ञान-सम्मत तथ्यों पर एक सरसरी नजर अवश्य डाल लें। प्रेम का नशा काफूर होता दिखाई देगा। अन्य वस्तुओं की भांति वैज्ञानिकों ने अपनी प्रयोगशालाओं में प्रेम की सारी विशेषताओं पर बाकायदा गौर किया है और उसे अच्छी तरह परखकर निष्कर्ष निकाले हैं।

आपने देखा होगा कि प्रेम का ध्यान आते ही आशान्वित प्रेमी मधुर सपनों में खो जाता है, जबकि निराश प्रेमी को प्रेम का खयाल आते ही सिरदर्द हो जाता है। अब सवाल यह है कि प्रेम की असली विशेषता क्या है; मधुर सपनों की सृष्टि करना या सिर में दर्द पैदा करना? कवियों और प्रेमियों की लच्छेदार बातों में न आकर इस बारे में वैज्ञानिकों से बात कीजिये। तो सुनिये, वैज्ञानिकों का कहना है—प्रेम सचमुच दर्देसर है।

स्थायी सिरदर्द, अपचन, जुकाम जैसे रोगों को भी गले लगाना चाहते हैं, तो बेशक प्रेम कोग ले लगाना आरंभ कर दीजिये। वरना वैज्ञानिकों की चेतावनी है कि प्रेम से सदा दूर ही रहिये।

प्रेम के संबंध में गहन शोध करनेवा जीव-रसायनशास्त्री जोन्स हार्पकिंस मा इन सुनिश्चित निष्कर्षों पर पहुंचे हैं कि प्रेम करने से (१) आपका जुकाम ब सकता है, (२) पाचनशक्ति पर इतना बु प्रभाव पड़ सकता है कि रही-सही भूख गायब हो जाये, (३) आप चौबीसों घं सिरदर्द से पीड़ित रह सकते हैं।

हार्पकिंस के अन्य निष्कर्ष ये हैं— हरगिज (१) अंधा नहीं होता, (२) मोह और आकर्षक नहीं होता, (३) प्रेमी आदर्शवादी नहीं बनाता, (४) अमर नहीं सकता, (५) विवाह के बाद 'सुख ही सु प्रदान नहीं कर सकता, (६) आनंद न देता, और यह कहना तो सरासर गलत कि 'प्रेम का आनंद द्विगुणित होता रहता है

वैज्ञानिकों के अलावा समाजशास्त्रि ने भी प्रेम पर काफी शोध की है। औ कवियों, प्रेमियों और कलाकारों को जानकर बड़ा दुःख होगा कि समाजशास्त्र भी अपनी शोध के बाद जिन नतीजों प पहुंचे हैं, वे उन्हें कतई रुचिकर प्रतीत न होंगे। पर यदि प्रेम में आपकी वैज्ञा शास्त्रीय रुचि है, तो आपको इन निष्क

के बारे में जानकर बहुत बड़ा आनंद आ सकता है ।

समाजशास्त्रियों का पहला निष्कर्ष तो यह है कि विश्व के पचास प्रतिशत विवाहों का प्रेम से दूर का भी संबंध नहीं होता । आंकड़े कभी झूठ नहीं बोलते, और आंकड़े गवाह हैं कि प्रेम विवाह के लिए अनिवार्य नहीं है । पचास प्रतिशत की बात कही थी न इन लोगों ने, तो लीजिये, प्रेम की आधी हत्या तो इस पहले निष्कर्ष ने ही कर दी ।

संभलकर बैठिये, इन समाजशास्त्रियों का दूसरा निष्कर्ष भी काफी चौंकानेवाला है ।

बाकायदा विशद अध्ययन करके पता लगाया गया है कि कुल पचास प्रतिशत महिलाएं ही जीवन में एकाध बार 'प्रेम में अंधी' होती हैं । कहां हैं वे कविगण जो सारी स्त्री-जाति को ही 'प्रेम-दीवानी' बनाते फिरते हैं ।

आप पूछेंगे कि शेष पचास प्रतिशत महिलाओं को क्या कभी प्रेमानुभूति नहीं होती ? समाजशास्त्रियों का उत्तर है–आंकड़े बताते हैं कि प्रेम की ओर से उदासीन पचास प्रतिशत में से भी पचास प्रतिशत कभी विवाह नहीं करतीं ।' 'क्यों नहीं करती ?' इस प्रश्न के उत्तर में समाजशास्त्रियों का कहना है–"वे न कभी प्रेम की आवश्यकता अनुभव करती हैं, न विवाह की । यों जबरन विवाह हो जाये, या प्रेम करना पड़ जाये, तो बात दूसरी है ।"

वैज्ञानिकों की दृष्टि से देखने पर प्रेम कितना शुष्क और रसहीन मालूम पड़ रहा है । है न ! पर अभी तो इस शोधकार्य की इब्तिदाये इश्क ही है ......

तीसरा निष्कर्ष और भी सनसनीखेज है । इन समाजशास्त्रियों के अध्ययनानुसार, प्रणय-निवेदिकाओं की संख्या प्रणय-निवेदकों से कहीं अधिक है । अब रूपगर्विता तरुणियां यह गर्व न करें कि वे युवकों की ओर उन्मुख नहीं होतीं, युवक ही उनकी ओर आकर्षित होते हैं । बात उन्हें कितनी भी अविश्वसनीय लगे; पर अनुसंधानकर्ताओं ने इस धारणा को विज्ञान की कसौटी पर कसने के बाद साफ-साफ कह दिया है कि विवाह के लिए पहल स्त्रियों की ओर से ही अधिक होती है ।

ऐसी ही एक अन्य धारणा को भी वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया गया है । रोमांटिक उपन्यासों और फिल्मों के कारण हमारे मन में यह विश्वास घर कर गया है कि प्रेम का आनंद चिरस्थायी है । आप-हम भले ही ऐसा सोचते रहें; पर समाजशास्त्री हरगिज ऐसा सोचने को तैयार नहीं हैं। वे तो अनेकानेक प्रयोगों के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह आनंद औसतन कुल १ मिनिट ३५ सेकेंड तक स्थायी रहता है । अब बताइये, इतने अल्प समय में आपको अपने 'जीवन का सबसे आनंददायक अनुभव' कैसे हो सकता है ?

फिल्मों और कहानियों की नायिकाओं को आपने यह कहते भी सुना होगा कि "प्रेमी के प्रथम चुंबन ने मेरी सुध-बुध ही

गायब कर दी थी ।" समाजशास्त्री इस कथन को सुनकर हंस पड़ते हैं और कहते हैं–"सिवाय अतिशयोक्ति के इस कथन में कुछ और नहीं है ।" उनके अनुसार वैज्ञानिक वास्तविकता तो यह है कि प्रथम मधुर चुंबन से दिल की सामान्य धड़कनों में कुल पांच की वृद्धि और होती है । विवाह के बाद तो इन अतिरिक्त धड़कनों की संख्या घटकर कुल दो ही रह जाती हैं ।

पतियों के बारे में भी इन समाजशास्त्रियों ने काफी शोधकार्य किया हैं । पर इस कार्य के फलस्वरूप हाथ लगे हैं कुछ नीरस और अरोमांटिक तथ्य ही ।

हमारी राय में तो ये तथ्य "नीरस और अरोमांटिक" ही नहीं, पतियों के लिए काफी शिक्षाप्रद भी हैं । शोधकर्ताओं की शोध का परिणाम यह हैं –"औसत पति का मानसिक विकास पचास वर्ष की आयु के बाद ही आरंभ होता है । उसके भरपूर मानसिक विकास में सबसे बड़ी बाधा उसकी पत्नी ही होती है ।"

आगे चलकर एक और बात कही गयी है, जिससे "औसत पति" को तो कुछ संतोष मिल सकता है; पर "औसत पत्नी" उसे जानकर एकदम आग बबूला हो उठेगी । शोधकर्ता कहते हैं–"जब इस औसत पति नाम के प्राणी का समुचित मानसिक विकास हो चुकता हैं, तब तक वह किसी अन्य महिला की ओर आकर्षित हो चुकता है ।"

अब शायद कुछ पतिगण नाराज होकर आर्तनाद करें कि "मैं तो अपनी पत्नी की दृष्टि में 'विश्व की सबसे मूल्यवान वस्तु' हूं । ऐसे पतियों को वैज्ञानिकों का बड़ा कड़ा और रूखा उत्तर है –" किसी भी औसत पति का मूल्य ९५ रु० से अधिक नहीं होता। अब, महंगाई के कारण शायद १०० रुपये तक पहुंच गया हो ।"

अपने को आदर्श जीवन-संगिनी कहकर बड़ा गर्व अनुभव करनेवाली पत्नियों के व्यवहार का अध्ययन करने के बाद ये वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि औसत पत्नी, विवाह के बाद, कुल तीन बार ही लगन से तीमारदारी करती है । बाद में तो वह बेगार ही टालती है । वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह भी पता चला है कि औसतन विवाह के पहले साल में मियां-बीवी में तीन बार खटपट अवश्य होती है, तथा दोनों में से कोई यह कहता अवश्य सुनाई पड़ता हैं–"अमुक से विवाह करके मेरा जीवन कितना सुखी होता !" और, वैज्ञानिक गवाह हैं, "विवाह के एक साल बाद, औसत वैवाहिक जीवन में हर १५ दिन बाद, झगड़ा होना अनिवार्य है ।"

इस औसत की बात से एक बात और याद आयी । वैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों ने अपने शोधकार्य के लिए विश्व भर के सभी प्रेमी-प्रेमियों, पति-पत्नियों को चुना था । इसलिए, आप इन तथ्यों को यह सोचकर न टाल जायें कि पश्चिमी शोधकर्ताओं की यह शोध आप पर लागू नहीं होती। उनके लिए तो आप भी "औसत" हैं ।

प्रयोगशाला के प्राणी

वैज्ञानिक प्रयोगों के नाम पर आज मूक प्राणियों को जो कल्पनातीत यातनाएं दी जाती हैं, उनकी एक लोमहर्षक झलक यहां प्रस्तुत है।

वैज्ञानिक प्रयोगों के बल पर मनुष्य ने बहुत उन्नति की हैं, अनेक समस्याएं सुलझायी हैं। किंतु इस प्रगति के पीछे तरह-तरह की पीड़ा और यंत्रणाएं पाते हुए, जो असंख्य मूक प्राणी शहीद हुए हैं, उनकी ओर किसी का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ।

प्रयोगों के दरमियान इन पशुओं को पीटना, भूखों मारना, जलाना, सरदी में ठिठुराना, नेत्रहीन करना, पानी में डुबा देना, जब तक वे थककर मर न जायें उन्हें तैरने अथवा दौड़ने के लिए बाध्य करना, सोने न देना, उनकी चमड़ी उधेड़ लेना तथा नित नये ढंग से उन्हें पीड़ित करना तो जैसे सामान्य बातें हैं। इतना ही नहीं, प्रयोग समाप्त हो जाने के बाद भी उन बेचारे त्रस्त प्राणियों की कोई सुध नहीं ली जाती। प्रायः देखा गया हैं कि पशुओं को ५-१० वर्ष की लंबी अवधि के लिए ऐसे मुड़े-तुड़े सींखचोंवाले पिंजड़ों में रख दिया जाता हैं, जिनमें ठीक से बैठने या लेटने के लिए भी जगह नहीं होती।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में एक प्रयोग के सिलसिले में कुत्तों को जबर्दस्ती आग की लपटों में धकेल दिया गया और उस प्रयोग के ५-७ दिन बाद तक भी उन कुत्तों की किसी ने सुध नहीं ली। उस दयनीय हालत में भी उन्हें मौत के पार नहीं उतारा गया। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में उद्वेगोत्पत्ति के लिए कुत्तों के हर पैर पर हथौड़ी से हजार-हजार आघात किये गये। उक्त प्रयोग का प्रतिपादन करनेवाले अन्वेषकों का कथन है कि उस आघात को सहकर अंत तक जो तीन कुत्ते बचे थे, वे अगले दिन पुनः प्रयोगशाला में लाये जाने पर मर गये।

जान हापकिन्स यूनिवर्सिटी के अन्वेषक सन १९२८ से बिल्लियों में क्लेश के विभिन्न प्रकट रूप–रोष, भय आदि उत्पन्न करने में लगे हैं। एक विशेष अध्ययन के उपरांत उन्होंने जो विवरण प्रस्तुत किया, उसके अनुसार उन्होंने बिल्लियों के पैर, कान तथा पूंछ नोचे, पीठ की ढीली चमड़ी के बल उन्हें उठाकर झकझोरा, उन्हें खूब पीटा और इस प्रकार के प्रतिरोधों से उन पर होनेवाली प्रतिक्रिया का सूक्ष्म अध्ययन किया। कसकर पीठ बांध देना, ढीली चमड़ी के बल उठाकर बुरी तरह झंझोड़ना, पीटना या पूंछ को अंगूठे व तर्जनी के बीच जोर से दबाना......आदि उद्वेगकारी क्रियाओं के प्रत्युत्तर में वे बेचारी केवल करुण स्वर में म्याऊं-म्याऊं करके रह गयीं।

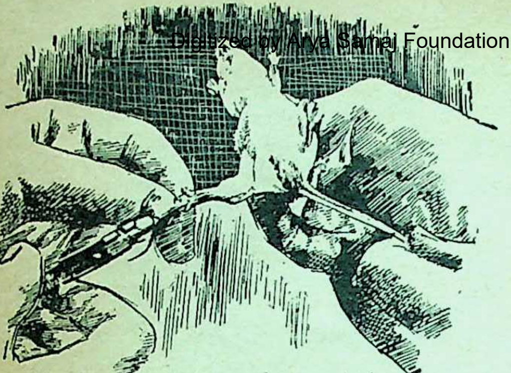

एक बार जब एक बिल्ली की पूंछ को किसी चिकित्सा-संबंधी औजार में भींचकर इतना अधिक दबाया गया कि खून तक छलछला आया, तब उसने जोर से क्रंदन करते हुए अपने आपको मुक्त करने का प्रयत्न किया था । अपने जीवन के शेष १३९ दिनों में वह हर दूसरे-तीसरे दिन ऐसी ही हानिकारक उत्तेजनाओं का शिकार बनायी जाती रही ।

इन प्रयोगों के संबंध में एक बड़ी कठिनाई यह है प्रत्येक शोध-संस्थान इतना अधिक स्वतंत्र रहना चाहता है कि अपने अन्वेषणों की परस्पर चर्चा करना भी उसे ठीक नहीं लगता । इसी मनोवृत्ति का परिणाम था कि क्रेटन यूनिवर्सिटी में कुछ कुत्ते एक प्रयोग के अंतर्गत पूरे ६५ दिन तक बिलकुल भूखे रखे जाने पर मर गये । बाद में ज्ञात हुआ कि ३ वर्ष पूर्व इसी संस्था में उक्त प्रयोग संपन्न हो चुका था ।

हाल ही में अमरीकी सरकार के वाल्टर हास्पिटल में बंदरों के कष्टज्ञान के अध्ययन की व्यावहारिक प्रणाली मालूम करने के लिए एक प्रयोग किया गया ।

इस प्रयोग के लिए ९ बंदरों को बेहोश करके शल्य-चिकित्सा की सहायता से उनके मस्तिष्क में कष्टबोध करानेवाले स्थान पर विद्युत् यंत्र लगा दिये गये । कुछ दिनों के बाद उन बंदरों को पूर्ण चेतनावस्था में लोहे की कुर्सियों पर बैठाकर उनके मस्तिष्क में विद्युत् प्रवाहित की गयी । प्राप्त विवरण के अनुसार कष्ट के आधिक्य से उन बंदरों में मुख की विरूपता, दोनों आंखें बंद कर लेना और ऊंची आवाज में चीखना आदि लक्षण दृष्टिगोचर हुए । तात्पर्य यह कि उन बंदरों ने किलकारी मारते हुए उस दर्द से छुटकारा पाने का असफल प्रयत्न किया । वे बंदर यदि इतने चतुर होते कि विद्युत्-प्रवाह को रोकने के लिए एक बटन दबा सकते, तो अवश्य उस पीड़ा से मुक्ति पा लेते । लगातार छः घंटों तक कष्ट सहकर कुछ बंदरों ने तो उस बटन को दबाना सीख भी लिया था । किंतु इसके दंडस्वरूप निर्दय अन्वेषकों ने भोजन, पानी अथवा विश्राम दिये बिना चौबीसों घंटे लगातार प्रयोग करके उन्हें असह्य कष्ट पहुंचाया ।

आगे चलकर ऐसे अमानुषिक कृत्यों के लिए सरकारी प्रयोगशालाओं को दोषी जरूर ठहराया जाने लगा, लेकिन चिकित्सा तथा अनुसंधान संस्थाओं की ऐसी धाक है कि वहां कुछ भी होता रहे, उनके विषय में किसी प्रकार का संदेह करने का किसी को साहस नहीं होता ।

*

समुद्र का नटखट शिशु

विपिनबिहारी

नदी का ऊदबिलाव आपने देखा होगा; पर "समुद्र का शिशु" नाम से विख्यात समुद्री ऊदबिलाव को कभी सागर में जल-विहार तथा कुलेलें करते देख पायें, तो आप मान जायेंगे कि समुद्री ऊदबिलाव में वृद्धावस्था तक शिशु ऊदबिलाव जैसी चपलता कायम रहती हैं। कभी आप उसे लहरिया गति से कैंची की तरह पानी को काटते हुए देखेंगे, कभी उलटा होकर और कभी एक पांव चलाते हुए तैरते पायेंगे। उस समय वह अपना दूसरा पांव भी बड़े मजे में अपनी छाती पर रख लेता हैं।

ऊदबिलाव की छाती उसके लिए खाने की मेज का काम भी देती हैं। छाती पर मछलियां फैलाकर वह उन्हें धीरे-धीरे खाता रहता हैं। भोजन समाप्त करके वह कई बार करवट लेता हैं, और अपने पंजों से गर्दन तथा सिर को सहलाता रहता हैं।

शिशु ऊदबिलाव का शैशव-काल ज्यादातर अपनी मां की छाती पर लेटे-लेटे ही बीतता है। संकटकालीन स्थिति में, मां बच्चे को एक हाथ से पकड़कर अपने रोओं के घने जंगल में छिपा लेती हैं। मां अपने बच्चे को मारती भी हैं। खास तौर पर उसे तैरना सिखाते समय।

ऊदबिलाव की रोएंदार खाल अत्यंत मूल्यवान होती है और इसी कारण इस खाल के लालची व्यापारियों ने आज से ७०-८० वर्ष पूर्व, समुद्री ऊदबिलावों को नष्ट करना आरंभ कर दिया था। उनके इस अभियान ने इतनी तेजी पकड़ी कि इस शताव्दी के आरंभ में तो लगता था कि समुद्री ऊदबिलावों का बस सिर्फ नाम ही शेष रह जायेगा।

तभी जिन देशों के समुद्री तटों पर ये ऊदबिलाव अधिक मिलते थे, उन्होंने इस दुर्लभ जाति को बचाने के लिए, कुछ योजनाएं बनायीं। इन योजनाओं के कारण इस असामान्य जंतु की जाति नष्ट होने से बच गयी है। आज अकेले अलास्का तथा ऐलियूशियन द्वीपों पर ८ हजार से अधिक समुद्री ऊदबिलाव देखे जा सकते हैं। इनके छोटे-छोटे दलों को अलग-अलग बसाया जा रहा है, ताकि वे वहां सही सलामत रहकर अपनी संख्या बढ़ा सकें।

एक जमाना था, जब समुद्री ऊदबिलाव अमरीका के प्रशांत महासागरीय तट से लेकर उत्तरी अलास्का तक पाये जाते थे। अलास्कावासी उनकी खालों के व्यापार के लिए सदा उनके शिकार में व्यस्त रहते थे। अमरीका के अलास्का को खरीद लेने के बाद, समुद्री ऊदबिलावों का मारा जाना

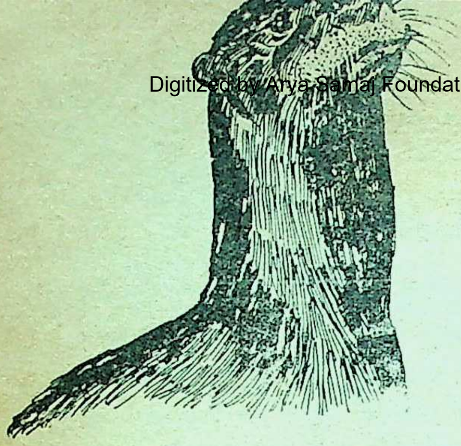

काफी कम हो गया, और १९१० में इन्हें मारना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। इससे पूर्व काले रंग के एक समुद्री ऊदबिलाव की खाल की कीमत १३,००० रुपया तक आंकी जाती थी। इन खालों के व्यापारी रूस से लेकर एशिया तक फैले थे और अपने लाभ के लिए हत्या, चोरी तथा अलास्कावासियों को दास बनाने तक का काम करते थे। बाद में अंग्रेज तथा अमरीकी व्यापारी भी इस में सम्मिलित हो गये।

तब अमरीकी अधिकारियों ने बचे-खुचे समुद्री ऊदबिलावों को गुप्त स्थलों में छिपाकर लूट-मार और हत्या के इस शर्मनाक दौर को समाप्त कर दिया। पर १९२० में उन्हें पता चला कि जापानी मछुए गैर-कानूनी ढंग से अलास्का के इन गुप्त स्थलों से समुद्री ऊदबिलावों को चुराकर ले जाते हैं। सुरक्षा की व्यवस्था और कड़ी हो जाने पर भी यह चोरी कम न हुई।

पिछले महायुद्ध के दौरान किसी का भी ध्यान इन ऊदबिलावों की ओर नहीं गया और इससे उनकी संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही। आज इस संकीर्ण खाड़ी में ही ४,००० से अधिक ऊदबिलाव मौजूद हैं। अमरीकी सरकार के इस कानून के कारण भी कि समुद्री ऊदबिलावों की खाल अनधिकृत रूप से रखना गुनाह है, कोई आ उन ऊदबिलावों को हाथ लगाने का साहस भी नहीं करता।

जीवशास्त्रियों के अध्ययन से पता चला है कि समुद्री ऊदबिलाव केवल कुछ विशेष समुद्री तटों पर ही जीवित रह सकते हैं। वे प्राय: समुद्र के छिछले तट के तल भाग में रहते हैं, जहां उन्हें छोटी मछलियां आसानी से मिलती रहती हैं, और बड़ी मछलियां उन्हें तंग नहीं करतीं। व्हेल मछली और मनुष्य, ये दोनों समुद्री ऊदबिलावों के सबसे बड़े शत्रु हैं। वे इन दोनों से बचने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, और धूप में नाव या व्हेल देखते ही पंजों से आंखें ढक लेते हैं।

वयस्क ऊदबिलाव अपनी लंबी-लंबी मूंछों, ५५ इंच की लंबाई तथा ५० पौंड भारी शरीर के कारण वृद्ध व्यक्ति-सा लगता है। पर उसमें बच्चों-जैसा फुर्तीलापन और लोच होती है।

आरंभ में ऊदबिलाव एक पत्नीव्रत का पालन करते थे; पर व्यापारियों के आक्रमण के बाद वे बहुपत्नी-प्रथा अपनाने लगे। पकड़े जाने के बाद, समुद्री ऊदबिलाव कुछ दिन ही जी पाता है। उसके भोजन तथा उसकी आदतों का अध्ययन करके उसे जमीन पर अधिक समय तक जीवित रखने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

सुझाव बिकते हैं

हो सकता है अब तक आपके सुझावों की कद्र न हुई हो; किंतु वह दिन दूर नहीं जब आप अपने सुझावों को भुना सकेंगे।

ई० डी० फेल्स

क्या आपके पास कोई ऐसा सुझाव है, जिससे आपकी कंपनी का मुनाफा पहले से बढ़ जाये ? अगर हां, तो उसे सुझाव-पेटी में डाल दीजिये। आपको उसकी कीमत मिल जायेगी—दस-बीस डालर से लेकर दस-बीस हजार डालर तक। कुछ हालतों में इससे भी ज्यादा।

आज से कुछ साल पहले सुझाव-पेटियों का मजाक उड़ाया जाता था और कोई मान नहीं सकता था कि सुझाव भी बिक सकते हैं। पर आज अमरीका में सुझाव-पेटियों की आम चर्चा है और नये सुझावों की बहुत बड़ी कीमत अदा की जा रही है। इस साल अमरीका में बहुत-सी कंपनियां ऐसे नये और मौलिक सुझावों पर दो करोड़ डालर से भी ज्यादा धन खर्च करनेवाली हैं। ये सुझाव हर छोटे-बड़े क्षेत्र में दिये जा सकते हैं और कोई भी दे सकता है।

अभी कुछ समय पहले व्हर्लपूल कार्पोरेशन में काम करनेवाले एक वेल्डर ने महसूस किया कि वेल्डिग करते समय, टंकियों में से गैस खतम हो जाने पर, जब उनके स्थान पर नयी टंकियां लाकर रखी जाती हैं, तो इसमें काफी समय बरबाद हो जाता है और काम को नुक्सान पहुंचता है। इस संबंध में उसने कागज पर एक सुझाव लिखा—"गैस की छोटी टंकियों का उपयोग बंद कर दिया जाये। कारखाने के बाहर गैस की एक बहुत बड़ी टंकी स्थापित की जाये, और उसमें से नालियों द्वारा वेल्डरों को गैस प्राप्त हो।" यह कागज उसने सुझाव-पेटी में डाल दिया। बहुत साधारण-सा सुझाव था; मगर इससे कंपनी को बहुत फायदा हुआ और उस पर उस वेल्डर को एक हजार डालर इनाम दिया गया।

इसी प्रकार जनरल मोटर्स के एक नौजवान क्लर्क ने मोटरों के किसी भाग के उत्पादन को और ज्यादा आसान बनाने के लिए एक सुझाव पेश किया। उसका सुझाव पसंद किया गया और उसके बदले में उसे पांच हजार डालर का पुरस्कार दिया गया। फिर जब उसके इसी सुझाव का प्रयोग 'टेंपेस्ट' कारों में किया गया, तो उसे तीन हजार डालर और मिले।

हर्बर्ट ओवेंस का उदाहरण बड़ा मनोरंजक है। छत्तीस वर्ष की उम्र का यह

व्यक्ति अमरीका की आई० बी० एम० कंपनी में काम करता है। एक दिन किसी काम के सिलसिले में उसने छोटा-सा सुझाव लिखकर पेटी में डाला, जिसके बदले उसे पच्चीस डालर मिले। किसी और सुझाव के बदले उसे पच्चीस डालर और मिले। फिर तीसरे सुझाव के बदले पैंतीस डालर मिले। उसने कोशिश जारी रखी। वह जानता था कि कंपनी को इलेक्ट्रानिक कंप्यूटरों में कुछ अड़चन पेश आ रही है, जिससे वे पूरी तरह काम नहीं दे रहे। वह उस अड़चन को दूर करने के बारे में सोचता रहा। आखिर उसे बड़ा सादा-सा तरीका सूझा, जिससे वह अड़चन दूर हो सकती थी। उसने अपना सुझाव लिखकर पेटी में डाल दिया। उसका प्रयोग करके देखा गया, तो वह सफल सिद्ध हुआ। इस बार इस सुझाव के बदले उसे पच्चीस हजार डालर मिले।

इसी कंपनी में काम करनेवाले दो अन्य कारीगरों ने आपस में मिलकर कंप्यूटर संबंधी ही एक सुझाव पेश किया। उससे कंप्यूटर और भी अच्छी तरह काम करने लगे। उन दोनों को उस सुझाव की छप्पन हजार डालर कीमत मिली।

एक समय था, जब किसी कंपनी के कर्मचारी का काम-काज संबंधी कोई नया सुझाव या नयी खोज कंपनी की ही मिलकियत समझी जाती थी। उसे उसका कोई पुरस्कार नहीं मिलता था। यहां तक कि किसी कर्मचारी की पेटेंट करायी हुई खोजें भी कंपनी हड़प जाती थी। इसका नतीजा यह निकलता था कि कर्मचारियों में न चीजों को जन्म देने का उत्साह मर ज था और वे कोई नयी बात सोचने या क का कष्ट नहीं करते थे।

पर आज बहुत-सी कंपनियां यह म सूस करने लगी हैं कि इसमें उनका नुक्सान है। उन्हें नये विचारों की जरूरत जिससे उनका उत्पादन बढ़े, खर्च घटे औ वे ज्यादा मुनाफा कमायें। तभी त अमरीका की तीन सौ से अधिक बड़ी कं नियों ने इस साल डेढ़ करोड़ से भी ज्या डालर नये सुझावों पर पुरस्कार देने लिए अलग रख दिये हैं। प्रकट है कि इ रकम से खरीदे हुए सुझाव उनके मुनाफे कई गुना बढ़ा देंगे।

सुझाव देने की यह व्यवस्था दो तरह हैं। कुछ दफ्तरों में तो यह नियम है कि क चारी किसी भी कागज पर अपना सु लिखे और नीचे अपने हस्ताक्षर करके में डाल दे। कुछ दफ्तरों में खास फार्म जिन पर नंबर छपे हुए हैं। कर्मचारी फार्म लेकर उस पर अपना सुझाव लिख दे है; पर अपने हस्ताक्षर नहीं करता, ता नाम का पता लग जाने से किसी प्रकार पक्षपात न हो; पर हां, वह फार्म के लगा उसी नंबर का एक टुकड़ा फा सबूत के तौर पर अपने पास रख लेता है

पेटी में डाले गये सुझाव या तो कं के मालिक के पास जाते हैं, या फिर खास कमेटी के पास, जो इन सुझावों विचार करने और उन्हें परखने के लि

नियुक्त की गयी होती हैं।

आखिर किस तरह के सुझावों की मांग की जाती है ? उत्तर है – हर तरह के सुझावों की। आप किसी नयी चीज की उत्पादन-क्रिया बता सकते हैं, किसी औजार को अच्छा बनाने के बारे में सुझाव दे सकते हैं, किसी व्यर्थ की चीज को काम में लाने का तरीका बता सकते हैं। या आप साप्ताहिक रिपोर्ट पेश करने के लिए कोई नयी किस्म का ऐसा फार्म बनाकर दे सकते हैं, जिस पर रिपोर्ट लिखने में आसानी हो। या फिर कोई नया फाइलिंग-सिस्टम सुझा सकते हैं; या किसी चीज की कीमत घटाने या उसे कम समय में तैयार करने का गुर बता सकते हैं।

एक उदाहरण लीजिये। नाइल्स में एक स्टोर का कर्मचारी इस बात से तंग आया हुआ था कि उसे फ्यूज हो चुके बल्ब उतरवाने और उनकी जगह नये लगवाने के लिए बार-बार अपने आदमी भेजने पड़ते थे। आखिर उसने सुझाव दिया कि क्यों न उन नये बने बल्बों का प्रयोग किया जाये, जो आम बल्बों की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा समय तक जलते हैं। उसका यह सुझाव कंपनी के मालिक को पसंद आया, इससे साल में सैकड़ों डालरों की बचत हो सकती थी। उसने अपने उस कर्मचारी को इस सुझाव के लिए लगभग बारह सौ डालर पुरस्कार में दिये।

जनरल मोटर्स में एक बहुत बड़ी क्रेन है, जिसे चलाने के लिए आठ बटनों का प्रयोग करना पड़ता है। उसमें से चार बटन दिशाएं बताते हैं। पर मुश्किल यह है कि क्रेन में बैठे हुए व्यक्ति को कई बार यह पता नहीं होता कि उत्तर दिशा किस ओर है। इससे गलत बटन दबाने पर बहुत नुक्सान की संभावना रहती है, सो एक कर्मचारी ने इस गलती से बचने के लिए सुझाव रखा। क्रेन में दिशा बतानेवाली कंपास लगा दी जाये। सुझाव का पुरस्कार–पचास डालर।

अब सवाल पैदा होता है कि आपके दिमाग में ये सुझाव कैसे पैदा हों ? इसका सीधा-सा तरीका है, हर काम के बारे में सोचिये कि सही रूप में वह कैसे हो सकता है ? उसमें क्या अड़चन पेश आती है ? उसे करने में इतनी देर क्यों लगती है ? कहीं औजारों में तो कोई खामी नहीं है ? आदि। जरूर आपके दिमाग में नये विचार उठेंगे। उन्हें सुझाव के तौर पर पेश कर दीजिये।

दवाइयां बनानेवाली एक बहुत बड़ी अमरीकी कंपनी में किसी दवा के उत्पादन में एक प्रकार का फिल्टर अड़चन डाल रहा था। उसे दूर करने का कोई तरीका नहीं सूझ रहा था। आखिर एक कर्मचारी ने सुझाव दिया– इस फिल्टर का यहां कोई काम नहीं है। जब उस फिल्टर को निकाल डाला गया, तो अड़चन भी दूर हो गयी। उस कर्मचारी को सुझाव की कीमत मिली–बारह सौ छिअत्तर डालर।

इस प्रकार आज के युग में हर चीज की कीमत है, नये और मौलिक सुझावों की भी बहुत बड़ी मांग है।

★

तोपों से दागे जानेवाले साहसी मानव

आम तौर पर तोपों से गोले दागे जाते हैं और ये गोले मानव पर भी दागे जाते रहे हैं, पर यहां उन मानव-वीरों की कथा है, जो गोलों की जगह स्वयं को दागने के लिए प्रस्तुत करते रहे हैं और वह भी स्वेच्छा से, अपने दर्शकों के मनोरंजनार्थ।

विक्रम कपूर

जब रूस ने अपना पहला स्पुतनिक व्योममंडल में छोड़ा था, तो शिकागो (अमरीका) के एक रिपोर्टर ने प्रसिद्ध जाकिनी-परिवार के एक सदस्य से टेलिफोन पर पूछा था–"क्या आपमें से कोई पहला अंतरिक्ष-यात्री होना चाहेगा ?" इस परिवार के लोग ऐसे साहसी रहे हैं कि सरकस की तोपों में से गोलों के बजाय इन्हें फेंका जाता था।

सरकस की तोपों से दागे जानेवाले पहले मानव, एगिजियो जाकिनी ने फोन पर उत्तर दिया–"ना भई, इस काम में बहुत अधिक खतरा हैं।" यों एगिजियो उर्फ एडी सरकस की तोप में से सैकड़ों बार दागा जा चुका है –"लेकिन," उसने कुछ सोचकर कहा–" चचा ह्यूगो से भी पूछकर देख लो।"

चचा ह्यूगो, जाकिनी-परिवार के सबसे ज्यादा साहसी सदस्य माने जाते हैं, और तोपों द्वारा दागे जानेवाले सात व्यक्तियों में उनका नंबर दूसरा है। खुद उनके दा के अनुसार, वे तोप से ११ हजार बा दागे जा चुके हैं। १९६० में वाशिंगटन प्रदर्शन करते समय, एक तार से उलझ ज पर उनके कंधों में चोट आ गयी थी। चोट के ठीक होते ही, वे ६० से अधि आयु हो जाने पर भी, फिर तोपों द्वा दागे जाने के लिए तैयार हैं।

चचा ह्यूगो ने शिकागो के रिपोर्टर बताया कि वे बड़ी खुशी से अंतरिक्ष-या पर जाने को तैयार हैं। उसके बाद उन्हों इस विषय पर भाषण आरंभ कर दिया अमरीका को अपनी अंतरिक्ष-यात्रा योज का कार्यक्रम किस प्रकार निश्चित कर चाहिये। इटली के मिलानो विश्ववि लय के इंजीनियरिंग के स्नातक ह्यूगो आगे चलकर कहा–"यदि अमरीकी अधि कारी हमारे तोप के सिद्धांत को अपना तो वे अपने अंतरिक्ष-यान की उड़ान में मू वान ईंधन नष्ट किये बिना, सीधे व्योम

औ

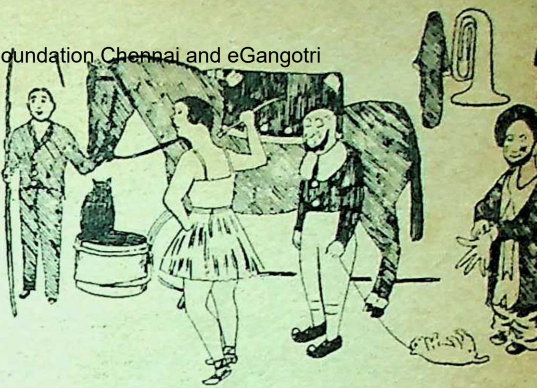

सरकस के खिलाड़ी

आठ मील तक पहुंच सकता है ।

जाकिनी की २३ फुट लंबी तोप में से आदमी को न तो आग और धुंए के जोर से दागा जाता है, और न किसी स्प्रिंग की सहायता से। (ऐसा जाकिनी से पहले की कुछ सरकस की तोपों में किया जाता था।)

तोप की यह विशेष युक्ति एडमंडो जाकिनी का निर्माण है, जिसमें काफी सुधार भी किया जा चुका है । पिछले ३२ साल से जाकिनी परिवार के सरकस में अग्रणी रहने का रहस्य यही है कि कोई इस युक्ति के रहस्य को नहीं जान सका है ।

पर इस युक्ति के सिद्धांत को बताने में उसके आविष्कारक ६३-वर्षीय एडमंडो को जो कि इटली की न्यूरिन पालीटैक्नीक इंस्टिट्यूट के स्नातक हैं, कोई एतराज नहीं है ।

तोप के अंदर एक पिस्टन है, और एक ऐसी नली भी, जिसके अंदर मानव-शरीर बिलकुल फिट हो जाता है । जिस आदमी को दागना होता है, वह इस पिस्टन-नली में कूदता है और एक बटन के दबाते ही, पिस्टन निरंतर तीव्र होती हुई गति से आगे बढ़ने लगती है । एक फुट फासले पर इसकी गति ५० मील प्रति घंटा होती है, सात फुट पर १०० मील प्रति घंटा । तोप के मुंह तक पहुंचकर पिस्टन के धक्के को एक यंत्र द्वारा लीन कर लिया जाता हैं । तोप द्वारा दागा गया जाकिनी १५० मील प्रतिघंटा की गति से यात्रा करता है ।

इस नियंत्रित वेगवर्धन का ही परिणाम है कि आज तक तोप के प्रदर्शन में किसी जाकिनी को दुर्घटना का शिकार नहीं होना पड़ा । इस प्रकार के अन्य प्रदर्शनों में २३ से अधिक सरकस - कर्मचारी अपने प्राण गंवा चुके हैं, पर किसी जाकिनी के साथ ऐसा आज तक नहीं हुआ है ।

जहां तक हमारी जानकारी है, अमरीकी अंतरिक्ष-यात्रा विशेषज्ञों ने ह्यूगो के भाषण पर कोई ध्यान नहीं दिया है । पर एक बात दिलचस्प जरूर है । वह यह कि आज पनडुब्बियों से पोलारिस प्रक्षेपकों को उसी शक्ति से छोड़ा जाता है, जिससे कि जाकिनी को संपीड़ित (दबायी हुई) वायु में छोड़ा जाता हैं ।

जाकिनी तोप की उत्पत्ति के बारे में कई वर्णन प्रसिद्ध हैं । पर साधारणतया यह समझा जाता हैं कि इस तोप का विचार जूल वर्न की पुस्तक 'चंद्रलोक की यात्रा' पढ़कर आया होगा । इस पुस्तक में फ्लोरिडा राज्य के तंपा नामक नगर से राकेट द्वारा चंद्रलोक की ओर छोड़े जाने का वर्णन है ।

संयोग से जाकिनी-परिवार के कुछ लोग फ्लोरिडा राज्य में ही रहते हैं, कुछ तंपा में और कुछ सरसोता में ।

तोपों द्वारा दागे जानेवाले सात भाइयों के पिता थे, हिल्दब्रांदो जाकिनी, जो एक प्रवीण इटालियन चित्रकार थे । एक बार ये अर्जेंटाइना में अकेले पड़ गये थे, वहां चित्रकारी का एक ही काम उन्हें मिला—सरकस की गाड़ियों और खंभों आदि को रंगने और उनकी सजावट करने का ।

हिल्दब्रांदो ने अपनी इस साधारण नौकरी से काफी लाभ उठाया । उन्होंने सरकस के धंधे की सब जरूरी बातें जान लीं, और इटली वापस लौटकर अपना सरकस शुरू कर दिया । इस छोटे-से सरकस के सभी कार्यकर्ता जाकिनी-परिवार के ही सदस्य थे । धीरे-धीरे इसे सफलता मिलती गयी, और बाद में 'दि ओलिंपिक' नाम से प्रख्यात इस सरकस में ८० प्रदर्शनकर्त्ता और ४० घोड़े भाग लेने लगे ।

प्रथम विश्वयुद्ध में ह्यूगो फौज में भर्ती हुआ था । उस पर दो बार—आस्ट्रिया और हंगरी में—गोली चलायी गयी । युद्ध से वापस आने पर मौत से उसका भय बिलकुल जाता रहा । उसका कहना है —"मौत का डर भी एक रोग ही है । जाकिनी-परिवार के सदस्य मौत से कहीं अधिक असफलता से डरते हैं ।" अपनी इस साहसिक मनोवृत्ति के कारण इस परिवार के सदस्य अन्य सरकस-प्रदर्शिनियों की ईर्ष्या का कारण बने हुए हैं ।

जल वर्न की राकेट-विषयक एक पु
पढ़कर इंजीनियर एडमंडो के मन में
विचार आया कि क्यों न सिपाहियों
राकेटों द्वारा शत्रु-पक्ष की ओर छोड़ा
अंत में उसके मन में संपीड़ित वायु के
से नियंत्रित वेगवर्धन का विचार आया
उसने प्रयोग के लिए एक ऐसी तोप बना
और काहिरा में उसका सार्वजनिक प्रदर्श
करना चाहा ।

और चूंकि इसका आविष्कार स्वयं उ
किया था, इसलिए अपनी इस युक्ति
प्रयोग में अपनी जान गंवाने के लिए
वह स्वयं ही तैयार हो गया । तोप ने
२० फुट की ऊंचाई तक उगल दिया,
उसका एक पांव चपटा हो गया । काहि
अस्पताल में पड़े-पड़े एडमंडो ने यह जा
का प्रयत्न किया कि उसकी युक्ति
असफल हुई थी ।

स्वस्थ होते ही उसने तोप का पुर्नान
किया । इस बार उसके भाई ह्यूगो को
नयी तोप द्वारा दागा गया । वह तीस
और अधिक ऊंचाई तक गया, और
कोई चोट नहीं आयी ।

एडमंडो का वही पांव पांच बार टूटा,
तोप के प्रयोगों में । अंत में वह सदा के
पंगु हो गया । इस दुर्घटना के बाद,
पिस्टन की गति निर्धारित करनेवाले
का बटन दबाने का काम करने लगा,
उसके चचा ह्यूगो तोप द्वारा दागे जाने

१९२२ में काहिरा में चचा ह्यूगो
तोप द्वारा दागे जाने का पहला सार्वजनि

प्रदर्शन हुआ। दर्शक-गण इस प्रदर्शन को देख कर चकित और स्तब्ध रह गये। प्रदर्शन अत्यंत सफल रहा, और उसकी प्रसिद्धि सारे विश्व में फैल गयी। बाद में जाकिनी-परिवार ने यह प्रदर्शन दमिश्क, बेरुत, जेरूसलम, लंदन, पेरिस और रोम के अलावा अफ्रीका, भारत और दक्षिणी अमरीका के नगरों में भी किया।

१९२९ में अमरीकी सरकस-सम्राट जान रिंगलिंग अपने सरकस के लिए नये आकर्षणों की खोज में थे। कोपनहेगन में उन्होंने ह्यूगो का तोप का प्रदर्शन देखकर ४,००० रुपये प्रति सप्ताह वेतन पर उसे तथा उसके भाई-बंदों को अपनी सरकस-कंपनी में आने के लिए आमंत्रित किया। ह्यूगो ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। तब से यह साहस का खेल रिंगलिंग सरकस का प्रमुख आकर्षण है।

सरकस के सब प्रदर्शनों में अन्य कोई प्रदर्शन इतना साहसिक, इतना संक्षिप्त (कुल ३ सेकेंड लगते हैं) और इतना भव्य नहीं है, जितना तोप द्वारा ह्यूगो के दागे जाने का प्रदर्शन। यह प्रदर्शन सबसे अंत में होता है, क्योंकि इसके बाद दिखाये जानेवाले किसी भी खेल को देखने की ताब दर्शकों में नहीं रहती।

इस प्रदर्शन में कोई जाकिनी मरा तो नहीं है, पर दुर्घटनाएं प्रायः होती रहती हैं। ह्यूगो का कहना है—"जब तक कम-से-कम पांच हड्डियां न टूट जायें, तब तक सच्चे जाकिनी का सबूत नहीं मिलता।"

इस प्रदर्शन के सफल होने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि तोप की दागने की शक्ति पूरी हो, दिशा सही हो, और दागा जानेवाला व्यक्ति भी सही स्थिति में रहे, और जरूरत पड़ने पर, हवा में ही उलट-पलटकर अपने को ऐसी स्थिति में ले जाये कि जाकर २१'×५०' के जाल पर ही गिरे। एक बार ह्यूगो विभिन्न जलवायु के कारण गति और फासले का गलत अनुमान लगा गया, और जाल के सिरों को छूता हुआ जमीन पर बाजीगर की भांति गिरा। उसके चमड़े के वस्त्रों ने उसकी कुछ रक्षा अवश्य की, फिर भी हड्डियां उतर जाने की वजह से उसे चार सप्ताह तक अस्पताल में रहना पड़ा।

एक अन्य अवसर पर, ह्यूगो ने जाल के खंभे को पकड़कर अपने को जमीन पर गिरने से रोका था। पर हथेलियों का मांस उखड़ जाने, कलाइयों के स्नायुजाल के फट जाने और बायें घुटने में चोट आ जाने के कारण, उसे फिर दो महीने अस्पताल में रहना पड़ा।

बेरुत में प्रदर्शन करते समय ह्यूगो की रीढ़ की हड्डी उतर गयी थी। फ्रांस में गलत ढंग से जाल पर उतरने के फलस्वरूप उसके दोनों पावों की हड्डियां अस्त-व्यस्त हो गयीं थीं। जाकिनी-परिवार के अन्य सदस्यों को भी ऐसी ही दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ा है।

१९३४ में ह्यूगो को तोप से १५० से लेकर १७५ फुट तक की ऊंचाई तक दागा

जाता था, पर [illegible] रिंगलिंग के लिए यह पर्याप्त न था। चाहते थे कि तोप से दो व्यक्ति दागे जायें। ह्यूगो ने रिंगलिंग को बताया कि ऐसा बड़ी आसानी से हो सकता है। आविष्कारक एडमंडो ने दो पिस्टनवाली तोप का निर्माण किया। दूसरे पिस्टन से ह्यूगो के भाई मारियो को दागा जाने लगा।

प्रदर्शन के समय, मारियो को पहले दागा जाता था, और वह सौ मील प्रतिघंटा की गति से बाहर निकलता था। एक सेकेंड बाद, १५० मील प्रतिघंटा की रफ्तार से ह्यूगो बाहर आता था। दोनों जाल पर लगभग साथ-साथ ही गिरते थे; क्योंकि ज्यादा रफ्तार से दागा जानेवाला ह्यूगो जाल तक आते-आते मरियो को पकड़ लेता था। एक बार दोनों भाई जाल में पहुंचने से पहले ही बीच हवा में टकरा गये। पर किसी तरह सही-सलामत जाल पर पहुंच गये, और बच गये।

१९५७ में इससे भी खतरनाक प्रदर्शन किया गया, जब तीन व्यक्तियों को एक साथ दो तोपों से दागा गया। इन तीनों व्यक्तियों में से एक ह्यूगो की बहन डचूना थी। दो व्यक्ति एक तोप से दागे गये, और डचूना को अलग तोप से दागा गया था, कुछ सेकेंडों के अंतर से।

आजकल तोप-प्रदर्शन में भाग लेनेवाले सात भाइयों के रिटायर हो जाने पर उनके बच्चे इस प्रदर्शन में भाग लेते हैं। एडमंडो के पांच बच्चों में से चार तोप द्वारा दागे जा चुके हैं। ब्रूनो ने अपनी लड़की को तोप द्वारा फिकवाया था। ह्यूगो का वर्षीय पुत्र इस काम की शिक्षा पा रहा है। फासलों में भी विस्तार-वृद्धि हो रही है। आजकल जिस जाल पर जाकिनी-परिवार के सदस्य तोप से आकर गिरते हैं, वह इतनी दूरी पर होता है कि तोप से दिखाई भी नहीं देता।

जाकिनी-परिवार के सदस्यों के तोप से फेंके जाने का यह प्रदर्शन सरकस के प्रदर्शनों में अनूठा होने के साथ-साथ सबसे अधिक खर्चीला भी है। एक प्रदर्शन में लगभग ५,००० रुपये खर्च आता है।

इटली, डेन्मार्क, इंग्लैंड और स्पेन के राजा जाकिनी-परिवार के सदस्यों को उनके साहसिक कारनामों के लिए पुरस्कृत कर चुके हैं।

जाकिनी-परिवार के १६ सदस्यों ने पिछले ३८ वर्षों में २२,००० बार इस प्रदर्शन में भाग लेकर करीब ६२५ मील का फासला तय किया है। अंतरिक्ष-यात्रियों के फासलों और प्रदर्शनों के आंकड़ों के आगे ये आंकड़े भले ही तुच्छ दिखाई दें, पर हमें इस बात को नहीं भूल जाना चाहिये कि सुसज्जित अंतरिक्ष-यान द्वारा अंतरिक्ष यात्रा करने में जितने खतरे हैं, उससे कहीं अधिक खतरे तोप द्वारा एक बार दागे जाने में हैं।

और जहां तक व्यक्तिगत साहस का प्रश्न है, दोनों यात्रियों का साहस समान स्तर का ही माना जायेगा।

सोचें नहीं, करें

आपकी वर्तमान कार्य-क्षमता आपकी वास्तविक क्षमता से बहुत कम है। शारीरिक कार्य-क्षमता का मस्तिष्क की सक्रियता से गहरा संबंध है। यहां इसका सरल विश्लेषण पढ़िये ।

कृष्णकुमार गुप्ता

सोच करना, सोचना नहीं हैं । किसी समस्या के सामने आने अथवा संघर्ष में उलझ जाने पर प्रायः व्यक्ति सोच में पड़ जाता है, यह उचित नहीं । सोच करने में मनुष्य की सभी भीतरी-बाहरी शक्तियां छिन्न-भिन्न रहती हैं, उनमें किसी प्रकार का अनुशासन अथवा संतुलन शेष नहीं रह जाता । मामूली-सा संकट भी उसे पहाड़ मालूम पड़ता है और उसके सामने वह आत्मसमर्पण कर बैठता हैं । कभी-कभी तो छोटी-मोटी लापरवाही के कारण ही मनुष्य जीवन के बड़े-बड़े अवसरों को यों ही चला जाने देता है और फिर सारा जीवन पछताने, हाथ मलने में बिता देता है । पर यह सब क्यों ?

साधारण आदमी प्रायः अपनी क्षमताओं से बेखबर रहता हैं । उसे यह पता ही नहीं रहता कि उसके मस्तिष्क में भी वे तत्त्व मौजूद हैं, जिनसे विश्व के बड़े-से-बड़े चिंतक अथवा विचारक के दिमाग का निर्माण हुआ है । आज के वैज्ञानिक स्पष्ट ही इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि मस्तिष्क को स्वस्थ एवं सक्रिय रखने तथा उसके ठीक प्रयोग करने की दिशा में यदि मनुष्य थोड़ा-सा भी सचेत रहे, तो कोई वजह नहीं कि जितना चिंतित और निराश वह आज दिख पड़ता हैं, उसमें सुधार न हो ।

कोई व्यक्ति समस्याओं अथवा प्रतिकूलताओं का सामना कितनी दृढ़ता और समझदारी से करता है, यह बात उसके मस्तिष्क में संचित बुद्धि-राशि पर इतनी निर्भर नहीं करती, जितनी कि मस्तिष्क के प्रयोग के सही और प्रभावशाली ढंग पर । इस दिशा में हुए वैज्ञानिक अध्ययन से जो परिणाम सामने आये हैं, उनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि सौ में से निन्यानबे व्यक्ति प्रायः जितनी योग्यता से जीवन जीते हैं, उनकी क्षमताएं वास्तव में उससे कहीं अधिक होती हैं । मस्तिष्क की शक्ति, उसकी कार्य-प्रणाली और विकास संबंधी जानकारी का एकदम अभाव ही मुख्यतः इसके लिए जिम्मेदार है ।

मनुष्य की बौद्धिक सक्रियता जिन अनेक बातों से प्रभावित होती है, उसमें मौसम भी एक है। वसंत ऋतु में मस्तिष्क की कार्यक्षमता सबसे अधिक होती है । इस दृष्टि से दूसरा नंबर पतझड़ का आता है । गरमियों में दिमाग के क्रियाशील तत्त्व तुलनात्मक

रूप से अधिक ढीले रहते हैं। किसी दिमागी काम को जितनी आसानी से आप ठंडे मौसम में कर सकते हैं, उतनी ही सुगमता से गरमियों में वह संभव नहीं।

प्रसिद्ध भूगोल शास्त्री स्वर्गीय श्री एल्सवर्थ हटिंटन ने साल के विभिन्न महीनों एवं ऋतुओं में हर प्रकार के व्यक्तियों की दिमागी कार्य-क्षमताओं का विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया था। वे स्वयं भी इसी परिणाम पर पहुंचे थे कि तापमान और जलवायु का मनुष्य की बौद्धिक क्षमताओं पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसका ठीक-ठीक कारण क्या है? विज्ञान के पास इसका कोई निश्चित उत्तर तो नहीं है, फिर भी इतना तो माना ही जा सकता है कि जो प्राकृतिक शक्ति वसंत ऋतु में सूखे पेड़-पौधों और मुरझायी घास-पात में नव-जीवन का संचार कर उन्हें मदमस्त बना देती है, संभवतः वही मानव-मस्तिष्क को भी नव-शक्ति प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है।

क्या शारीरिक कार्य-क्षमता एवं मस्तिष्क की सक्रियता में कोई सीधा संबंध है? इस विषय में सर्वप्रथम खोज-बीन का श्रेय कोलंबिया विश्वविद्यालय के डा० मारिस एच० फोराक्रे को प्राप्त है। डा० फोराक्रे के अनुसंधान से यह आम धारणा कि बुद्धिजीवी अधिक शारीरिक श्रम नहीं कर सकता, गलत सिद्ध हो जाती है। उलटे उनका तो विश्वास है कि जो व्यक्ति जितना अधिक बुद्धिमान होता है, उसमें शारीरिक कार्य-कौशल की क्षमताएं भी उसी मात्रा में अधिक पायी जाती हैं।

शरीर में सम्यक् रक्त-संचरण और आक्सीजन की उचित मात्रा भी बौद्धिक सक्रियता के लिए अति अनिवार्य है। इस लिए यह ध्यान रखना चाहिये कि दिमागी काम करते वक्त ऐसी कोई शारीरिक मुद्रा बनाकर बैठना हानिकारक है, जिससे आक्सीजन की पूरी मात्रा सांस के साथ अंदर न पहुंच सके। इसी प्रकार शरीर के रक्त-संचरण को ठीक रखने के लिए हल्का व्यायाम भी लाभदायक सिद्ध हो सकता है। इलिनाय्स विश्वविद्यालय में इस संबंध में जो प्रयोगशाला-परीक्षण हुए, उनसे यह स्पष्ट हो गया कि व्यक्ति में आक्सीजन की मात्रा सीमित करने पर उसकी बौद्धिक क्षमता भी तदनुसार कम हो जाती है। ह क्षीणकाय व्यक्तियों पर इसका प्रभाव जितना तीव्र होता है, उतना स्थूलकाय व्यक्तियों पर नहीं होता। इसका कारण यही है कि स्थूलकाय व्यक्ति के फेफड़ों में आक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।

विचार करने की क्षमता से क्या भोजन का भी कोई संबंध है? इस दिशा में भी अनुसंधान-कार्य हुआ है। मस्तिष्क की क्षमताएं संतुलित भोजन के अभाव में बुरी तरह गिरने लगती हैं। जो व्यक्ति जितना अधिक असंतुलित भोजन करता है, उसकी शक्ति भी उतनी ही अधिक कम होती है। सुबह का भारी नाश्ता दिन-भर दिमाग

और

को निकम्मा बनाने के लिए काफी है ।

अधिकांश लोगों की यह धारणा है कि ध्यान को एकाग्र करके अधिक संकेंद्रित बुद्धि से अच्छा काम लिया जा सकता है । पर मानस-चिकित्सक डा० डैविन हैरल्ड फिंक ने इस बात को गलत सिद्ध कर दिया है । डा० फिंक का कहना है कि अत्यधिक ध्यान एकाग्र करने पर स्नायुयों में तनाव उत्पन्न हो जाता है, जिसके फलस्वरूप मस्तिष्क कुंठित हो जाता है । इस मत की पुष्टि करते हुए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने यह राय जाहिर की है कि मस्तिष्क में प्रखर विचारों का उठना तब संभव नहीं, जब वह चारों तरफ के तनावों से दबा हो । वैसे यह बात सर्वविदित है कि घबराहट, चिंता या ऐसी ही किसी अन्य स्थिति में दिमाग ठीक-ठीक निर्णय लेने में असमर्थ रहता है । इसके विपरीत शेव करते समय, नहाते समय या घूमते-फिरते समय कभी--कभी दिमाग में बड़े महत्वपूर्ण और उम्दा विचार अनायास ही आ टपकते हैं ।

दैनिक काम-काज में दिमाग की प्रक्रियाओं में प्रखरता एवं निखार लाने के लिए ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक डा० एच० ई० बर्ट ने अनुसंधान के बाद एक बड़े मजे की बात सुझायी है । उनका कहना है कि सभी दिमागी कामों के लिए एक स्थान निश्चित कर लेने से दिमाग उस स्थान-विशेष के प्रति अनुकूलित (कंडिशंड) होने लगता है और कुछ ही दिनों में दिमाग और उस स्थान-विशेष में एक कार्य साहचर्य (वर्किंग एसोसिएशन) स्थापित हो जाता है । ऐसी स्थिति हो जाने पर जब भी आप अपनी मेज पर पहुंचते हैं, तो आपका दिमाग स्वत: ही विचार-प्रक्रिया में तल्लीन होने लगता है । हां, अपनी इस मेज को चाय-पान, कहानी-किस्से, अथवा शतरंज-ताश खेलने के लिए प्रयोग में लाना एक बड़ी भूल होगी । यदि आपने अपनी इस मेज को इन कामों के लिए भी इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, तो फिर इससे इन्हीं कामों की प्रेरणा मिल सकेगी, गंभीर चिंतन-मनन की नहीं । इसीलिए डा० बर्ट का कहना है कि हंसी-मजाक और ऐसे ही अन्य कार्यों के लिए हफ्ते में दो-एक बार किसी झरने या जल-स्रोत के किनारे, किसी सुंदर बाग-बगीचे या अन्य मनोरम स्थल पर जाकर पिकनिक करते रहना चाहिये । परंतु किसी भी कीमत पर अपने अध्ययन-कक्ष को इन कामों का अड्डा बनाना उचित नहीं ।

कैलिफोर्निया और स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने हाल ही में यह भी बताया है कि जहां सामान्य अथवा अवसामान्य (लो ऐवरेज) बुद्धिवाला व्यक्ति बड़ी उम्र में अपनी क्षमताओं का ह्रास कर बैठता है, वहां असामान्य (एबव ऐवरेज) व्यक्ति की मस्तिष्क क्षमताएं बड़ी उम्र में और भी अधिक बढ़ जाती हैं– लगभग एक हजार व्यक्तियों पर परीक्षण करने के पश्चात् यह परिणाम निकला है ।

वैसे विश्व के सभी अधिकारी विद्वान इस बात में लगभग एकमत हैं कि ज्ञाना-

र्जन, तथ्यों के विश्लेषण तथा मानसिक गुत्थियों के सुलझाने में मनुष्य के शब्द-भंडार का विशाल होना अति आवश्यक हैं। जिन लोगों का शब्द-भंडार जितना ही सीमित होता हैं, वे उतने ही दिमागी कामों में पिछड़े रहते पाये जाते हैं। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की भाषण विशेषज्ञ श्रीमती मार्था गाउदी मैसन ने एक स्थान पर लिखा हैं–"भाषा विचारों की पोशाक हैं और बोलने से दिमाग की कसरत होती हैं, क्योंकि अच्छे शब्द-भंडार के अभाव में अपने विचारों को ठीक-ठीक प्रकट करना और उन्हें दूसरे व्यक्तियों तक सही रूप में पहुंचाना मामूली बात नहीं हैं।" सचाई तो यह हैं कि विशाल शब्द-राशि के बिना व्यक्ति अपने विचारों को स्वयं अपने लिए भी गतिशील और सहज बोध गम्य नहीं बना सकता।

इस संदर्भ में डा० जेम्स डी० वे का वक्तव्य भी विचारणीय हैं। उन कहना हैं कि शब्दों को कृत्रिम रूप से दिमा पर थोप लेने से किसी व्यक्ति की मस्ति क्षमताएं विकसित नहीं हो जातीं। को व्यक्ति इसलिए बुद्धिमान नहीं होता कि उसके पास एक बड़ा शब्द-भंडार मौजू रहता हैं, बल्कि शब्द-भंडार बढ़ता है इस लिए ही वह मनुष्य बुद्धिमान है। उसमें सू विचारों को ग्रहण करने और उन्हें प्रक करने की उत्कंठा है। बात कुछ ऐसी हो कि कोई कारीगर केवल अच्छे औजा को थैले में रख लेने-भर से ही कुश कारीगर नहीं हो जाता, उसमें उ औजारों के प्रयोग की कला का होना आवश्यक है।

★

जोशी मठ से चलकर विष्णु प्रयाग पार करके मैं आगे जा रहा था। रा गरजती-बोलती अलकनंदा के किनारे चलता था। दोनों तरफ गगनचुंबी रुक्षकाय भी पहाड़, सब कुछ सूना-सूना। आगे चलकर चढ़ाई आयी। अकलनंदा अब सुगम नहीं रहा मध्याह्न का समय था। बेहद गरमी थी। मार्ग में कहीं झरना या जलप्रपात नहीं देखने आता था। प्यास सता रही थी; लेकिन शीघ्र पानी मिलने की कोई संभावना नहीं थी। आं में चाय की एक दुकान आयी। वहां खाने की चीजें भी बिकती थीं। यात्री लोग यहां चा पीते, नाश्ता करते और थोड़ा विश्राम करते थे। मैंने दुकानदार से पानी मांगा। उसने कहा "पानी है तो; लेकिन उसकी चाय बनेगी। नदी यहां से बहुत नीचे है। इसलिए पानी नहीं दे सकता। चाय पीनी हो तो पियो।" चाय मुझे पीनी नहीं थी। मैं निराश चला आया। पा ही एक पहाड़ी आदमी बैठा अपने लिए चाय बना रहा था। मैंने वहां जाकर पानी मांगा तुरंत उसने एक लोटा पानी दे दिया। मेरी तृषा शांत हुई। चलते हुए मैं उसे चार आने दे लगा। उसने एकक्षण मुझे देखा। फिर बोला–"पानी के पैसे लूं? ...... जिस चीज के लि मुझे पैसा खर्च नहीं करना पड़ता, उसके लिए मैं पैसा कैसे ले सकता हूं?"

★

मेरी रुचि की पंक्तियां

न्याय और अन्याय के गीत गाना छोड़ो। अपनी दुर्बलता के अतिरिक्त और अन्याय हैं भी क्या ? न्याय हैं शक्ति, न्याय हैं सत्ता, और न्याय हैं अधिकार। जिनके पास शक्ति, सत्ता और अधिकार नहीं हैं, वे न्याय की भीख मांगते ही रहते हैं।'

–मुनि नथमल (भाव और अनुभाव), प्रेषक–राजकुमार शर्मा

जो संसार को असार मान लेगा, वह संसार में क्या उन्नति कर सकेगा ? जो अपने को ब्रह्म समझ लेगा, उसको फिर किस उन्नति की आवश्यकता रहेगी ? जिन्होंने यह समझ लिया कि जिस परमेश्वर ने गर्भ में भरण-पोषण किया हैं, वही हमको बिना हाथ-पैर हिलाये आहार देगा, जो जल में, थल में, आकाश में, सब प्राणियों को आहार पहुंचाता है, वह अवश्य हमारी सुधि लेगा, वे क्या पुरुषार्थ करेंगे ?

–प्रो० अर्जुन सिंह (हिन्दी रचना-मंजूषा), प्रेषक–जगदीश यादव

भूखे प्राणी के हाथ बढ़कर जब रोटी को पेट में धर लेते हैं, तो यह संसार कितना बड़ा बावेला मचा देता हैं ! और इस संसार के कितने सूक्ष्म प्रहरी मानव मन के भीतर अपनी चौकियां स्थापित किये बैठे रहते हैं।

–आनंदप्रकाश जैन (आग के फूल), प्रेषक–ब्रजेश चंचल

जीवन सर्वदा ही वह अंतिम कलेवा है, जो जीवन देकर खरीदा गया है और जो जीवन जलाकर पकाया गया हैं और जिसका साझा करना ही होगा, क्योंकि वह अकेले गले से उतारा ही नहीं जा सकता, अकेले वह भोगे भुगता नहीं।

– अज्ञेय (अपने-अपने अजनबी), प्रेषक--प्रसन्नकुमार

भला, वह सबसे उत्तम रास्ता कौन-सा है ? उत्तम ही सोचना और बोलना। आइये, उत्तमता की गहनतम पेचीदगियों में चलें। उसके बाद ही हमें सांसारिक सुख और सद्गति मिल सकेगी। केवल वही शरीर उत्तम या पवित्र है, जो शुभ विचारों

से भरपूर है । ऐसे शरीर से खुशबू ही खुशबू (कीर्ति) आती है, जो अपने संपर्क में आनेवालों को बाग-बाग करती चलती है ।

–योगेंद्र जोशी (उत्तम पुस्तक-दर्शन), प्रेषक–रामचंद्र मक्कासर

संसार छोड़कर परमार्थ करने से खाने को अन्न भी नहीं मिलता–यही कल्पना बहुतेरे लोगों के दिमाग में, या यों कह लीजिये कि पेट में तुरंत घुस जाता है। सारा ढकोसला 'उदरनिमित्तं' होने से सभी चाहते हैं कि गुड़-खोपरे के नैवेद्य से ही भगवान संतुष्ट हो जाये ।

–विनोबा भावे (चार पुरुषार्थ), प्रेषक–अमर कुमार वर्मा

आप अपनी पत्नी को प्यार नहीं करते, वरन् जीवन के उस रूप को प्यार करते हैं, जो उसके व्यक्तित्व द्वारा व्यक्त होता है । आप अपनी माता या पिता को प्यार नहीं करते, वरन् उस जीवन को प्यार करते हैं, जो उनके व्यक्तित्वों द्वारा व्यक्त होता है ।

जब आप अपनी मृत माता या पिता को ले जाते और जलाते हैं, तब कोई नहीं कहता–"तुम अपनी माता या पिता के प्रति दुष्टता करते हो।" जीवन व प्राण ही वह वस्तु है, जिसे तुम प्रेम करते हो ।

–सद्गुरु ओंकार (उपदेश), प्रेषक–कृष्णमुरारी शर्मा

वह स्वार्थ जो दूसरों का बहिष्कार अथवा तिरस्कार करके सिद्ध हो, स्वार्थ नहीं हो सकता । वास्तविक स्वार्थ दूसरों को छोड़ अपने अकेले पर विचार कर सिद्ध नहीं होता । समाज में एक-दूसरे के सहयोग से ही स्वार्थसिद्धि हो सकती है।

–गुरुदत्त (परिभव), प्रेषिका–दया आचार्य

अशिक्षित जननी संतान को मूढ़ बनाती है, स्नेही पिता बच्चों को नालायक बनाते हैं, तरुण युवतियां अपने हाव-भाव और छलना से पुरुषों को आकर्षित कर उन्हें नीचे गिराती हैं, ज्ञानहीन छात्र शिक्षकों की मूढ़ता के कारण विद्वान नहीं हो पाते, अशिक्षित पत्नी और अदूरदर्शी पति के कारण गृहस्थी चौपट हो जाती है । इन्हीं सब अपराधों तथा दुर्बलताओं से ही बहुधा मानव-समाज पतन के गर्त में गिर जाता है ।

–प्रबोधकुमार सान्याल (मिट्टी का किला), प्रेषक–गिरीश

★

डाक्टरी परीक्षा अवश्य कराइये

डरिये नहीं जब भी डाक्टर कहे, जांच करा लीजिये । इससे आपकी देह के कई प्रकट अथवा प्रसुप्त रोगों पर प्रकाश पड़ता है ।

आज कोई भी शारीरिक परीक्षण, चाहे वह किसी स्वस्थ नौजवान व्यक्ति का ही क्यों न हो, एक-दो लेबोरेटरी टेस्टों के बिना पूर्ण नहीं समझा जाता ।

किसी व्यक्ति का पेशाब टेस्ट किया जाये, तो सामान्य टेस्ट में ही उस व्यक्ति से संबंधित कई ऐसी बातों की जानकारी होती है, जिनसे उसके रोग की पहचान आसान हो जाती है । कई बीमारियां, जिनका साधारणत: पता नहीं लग सकता, पेशाब टेस्ट करने पर स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाती हैं । साधारण से टेस्ट से ही व्यक्ति के गुर्दों की सूजन, जख्मों या किसी अन्य बीमारी का पता चल जाता है । पेशाब में शक्कर की मात्रा से झट बताया जा सकता है कि रोगी को मधुमेह है या नहीं । कुछ ऐसी बीमारियां हैं, जो बच्चों को माता-पिता से विरासत में मिलती हैं और जो आगे चलकर इतनी बढ़ सकती हैं कि उनका इलाज बहुत कठिन हो जाता है । पर बच्चों का पेशाब टेस्ट करने से उन बीमारियों का बड़ी सरलता से पता चल सकता है और शुरू में ही उनकी रोकथाम भी की जा सकती है ।

रक्त के भी कई प्रकार के डाक्टरी परीक्षण किये जाते हैं । रक्त सारे शरीर का चक्कर लगाता है, इसलिए उसके विभिन्न टेस्टों से शरीर की विभिन्न बीमारियों का पता चल जाता है । कुछ आदमियों को भूख नहीं लगती और उनका रंग पीला पड़ने लगता है । लाल रक्तकणों की संख्या गिनकर इस बीमारी का कारण मिल सकता है । इसी प्रकार सफेद रक्तकणों की जांच से कई अन्य बीमारियों के कारणों का पता लग सकता है और तब उनका ठीक-ठीक इलाज किया जा सकता है ।

कोई विशेष बीमारी न होने पर भी आजकल नौजवानों के रक्त की जांच की जाती है और उसमें 'कोलेस्टेरोल' नामक पदार्थ का पता लगाया जाता है । ऊंचे रक्तचाप और दिल के दौरे जैसे रोगों से इस पदार्थ का बहुत गहरा संबंध है । अगर रोग शुरू होते ही खून की जांच कराकर 'कोलेस्टेरोल' की मात्रा का पता लगा लिया जाये, तो सही खुराक और व्यायाम से ही इन रोगों से बचा जा सकता है ।

रक्त में सीरम' नामक जो तरल पदार्थ होता है, उसका परीक्षण करके कई ऐसी बीमारियों का पता चल जाता है, जिन्हें मालूम करने में पहले हफ्तों लग जाते थे ।

कई बार डाक्टर रोगी के शरीर पर ही टेस्ट करते हैं। जैसे किसी चर्म-रोग का पता लगाना हो, तो डाक्टर कोई दवा रोगी की चमड़ी के किसी भाग पर लगा देगा या चमड़ी की ऊपरी परत के नीचे रख देगा। कुछ ही देर में उस भाग पर सूजन हो जायेगी या खुजली होने लगेगी। उस सूजन या खुजली की जांच करने से रोग का सही पता लग जायेगा। कभी-कभी डाक्टर रोगी की चमड़ी से छोटा-सा भाग काट लेता है। आजकल कुछ ऐसे डाक्टरी उपकरण सुलभ हैं, जिनसे चमड़ी काटने पर रोगी को जरा भी तकलीफ नहीं होती और न ही जख्म का निशान पड़ता है। डाक्टर प्रयोगशाला में इस चमड़ी की जांच करता हैं। इससे कई छिपे रोग भी दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

ये टेस्ट आजकल इतने सूक्ष्म और विभिन्न प्रकार के हो गये हैं कि अब यह काम डाक्टर स्वयं नहीं करते। ये अब विशेषज्ञों द्वारा प्रयोगशालाओं में किये जाते हैं। डाक्टर रोगी को विशेषज्ञ के पास ही भेज देते हैं।

डाक्टर अगर रोगी को खास टेस्ट के लिए विशेषज्ञ के पास भेजें, तो उसे चले जाना चाहिये। इससे डाक्टर को बीमारी का जल्दी पता लग जायेगा और वह उसका योग्य इलाज कर सकेगा।

रोगी अक्सर इस प्रकार की डाक्टरी जांच पर होनेवाले खर्च की शिकायत करते हैं। खासकर उस समय वे टेस्ट कराने के लिए राजी ही नहीं होते, जब उन्हें कोई विशेष रोग न हो। पर यह याद रखना चाहिये कि इन परीक्षणों से रोग-संबंधी जो संदेह होता हैं, वह परीक्षण हो जाने पर दूर हो जाता है। फिर कुछ रोग ऐसे होते हैं, जो शुरू में पता नहीं चलते और जब वे अचानक बढ़ जाते हैं, तो उनके इलाज पर वहुत खर्च करना पड़ जाता है। इस खर्च के सामने परीक्षणों में होनेवाला खर्च नगण्य हैं। अतः जरूरत पड़ने पर उनसे मुंह नहीं मोड़ना चाहिये। *

रमजान का महीना था। गालिब एक दिन अपने घर के एक कमरे में चंद दोस्तों के साथ ताश खेल रहे थे। इतने में एक मौलवी दोस्त दाखिल हुए और उन्हें ताश खेलते देख **बोले**–" मैंने तो सुना था कि रमजान के मुवारिक महीने में अल्लाहताला शैतान को कैद रखता है। मगर इस बात में अब मुझे शक नजर आने लगा है।"

गालिब फौरन बोल उठे –"जनाब मौलवी साहव, शक न कीजिये। आपने बिल्कुल ठीक सुना है। यही तो वह जगह है, जहां शैतान कैद रहता है।"

★

क्या आप बतला सकते हैं हिन्दुस्तान में सबसे पहले किस शख्स ने हड़ताल की होगी? आपको ताज्जुब होगा कि वे गांधीजी नहीं बल्कि गालिब थे। एक दिन जनाब फुटपाथ पर धरना देकर बैठ गये। पुलिस के सिपाही ने पूछा, रास्ते में क्यों बैठे हो? तो गालिब ने तरन्नुम में फरमाया :

देर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्तां नहीं।
बैठे हैं रहगुजर पर हम, कोई हमें उठाये क्यों?

–हुस्न जमाल

★

बंगला उपन्यास का सार-संक्षेप–

न्यायदंड

जरासंध

मिस्टर वसंत सान्याल पुलिस-सुपरिंटेंडेंट मेजर बनर्जी से मुलाकात करने के लिए आये हैं। मि० सान्याल जिले के डिस्ट्रिक्ट सेशन जज थे, अब रिटायर्ड हैं। उनके साथ आयी है – पांच वर्ष की एक सुंदर-सी चंचल लड़की।

दरअसल मि० सान्याल प्रसिद्ध डकैत शशांक मंडल की खोज करने आये थे। शशांक मंडल को डकैती के जुर्म में मि० सान्याल ने ही पांच वर्ष की सजा दी थी। मि० सान्याल के हिसाब से आज उसे जेल से छुट्टी मिलनी चाहिये।

किंतु उन्हें हताश होना पड़ा। जेल के कानून के अनुसार रेमिशन प्राप्त कर शशांक मंडल साल-भर पहले ही जेल से छुटकारा पा चुका था। जेल से निकलकर वह कहां गया, यह कोई नहीं जानता। मि० बनर्जी से भी उसकी खोज करने के लिए अनुरोध करके मि० सान्याल शशांक के गांव फुलतालिया गये।

किंतु वहां भी शशांक नहीं मिला। जेल से छूटकर वह अपने गांव नहीं आया था। उसकी बहू भी गोद में बच्ची को लेकर कहां चली गयी थी, कोई नहीं कह सकता। शशांक के घर के ध्वंसावशेष की ओर दीर्घ निःश्वास छोड़कर मि० सान्याल वहां से लौट पड़े।

काफी दिनों पुरानी बातें उनकी आंखों के सामने तैरने लगीं।

पांच वर्ष पहले इस जिले के सेशन जज बनकर वे यहां आये थे। वे यहां अकेले ही रहते थे। स्त्री-पुरुष, कन्या-परिवार कलकत्ते में रहता था। एक बार की बात है। रात का समय था। मि० सान्याल अपने कमरे में अकेले बैठे-बैठे फाइल-वगैरह देख रहे थे कि गोद में दो वर्ष की एक बच्ची को लिये हुए एक औरत उनके कमरे में आकर खड़ी हो गयी।

उसने करुण स्वर में निवेदन किया– "डकैती का एक मामला हुजूर के इजलास में चल रहा है, जिसमें मेरे पति शशांक मंडल को बिना अपराध के गिरफ्तार कर लिया गया है। आपकी मेहरबानी होने पर उनको मुक्ति मिल सकती है – वरना इस बच्ची को लेकर मैं तो बड़ी मुश्किल में पड़ जाऊंगी।"

इजलास में शशांक के साथ जो जिरह हुई थी, उससे पता चलता था कि शशांक मामूली पढ़ा-लिखा था, इसलिए खेती-बाड़ी करने में उसे जरा हिचक होती थी। घर-गृहस्थी की तरफ भी उसका ध्यान नहीं के बराबर ही था। उसके बाप ने उसकी शादी विपिन मास्टर की बेटी राधा के साथ छोटी उम्र में कर दी थी। राधा सचमुच बड़ी सुंदर थी। उसके एक लड़की भी हुई

थी। राधा ने उसका नाम रखा था, रानी!

अनुकूल चौधरी इस गांव का सबसे धनी व्यक्ति था। गांव के प्रायः सभी व्यक्ति उसके कर्जदार थे और इसीलिए उसके अन्याय-अत्याचार मौन रहकर सह लेते थे। अनुकूल चौधरी की नजर राधा पर पड़ी थी। शशांक को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर अनुकूल ने राधा को वश में करना चाहा; पर वह सफल नहीं हुआ।

इसके कुछ दिन बाद अचानक एक दिन अनुकूल चौधरी के घर पर डाका पड़ा। अनुकल चौधरी की नालिश पर शशांक मंडल को गिरफ्तार किया गया।

शशांक के जेल में जाते ही अनुकूल राधा के पीछे लग गया। कुछ दिनों तक तो राधा भागती-दौड़ती रही; किंतु अंत में एक दिन राधा उसके पल्ले पड़ ही गयी। राधा ने बाद में विष खाकर आत्महत्या कर ली।

राधा की बेटी रानी को लेकर सनातन जज साहब के पास गया था। जज साहब उसे यों ही लौटा नहीं पाये थे। उस लड़की को अपने ही घर पर माली और उसकी पत्नी की देख-रेख में रख लिया।

इसके बाद एक दिन मि० सान्याल उस लड़की को लेकर कलकत्ता चले आये। उनकी पत्नी वीणापाणि तथा घर के अन्य लोगों ने इस अनाथ लड़की को बिलकुल पसंद नहीं किया। लेकिन मि० सान्याल की ज्येष्ठ पुत्रवधू जयंती ने उसे अपनी छाती से लगा लिया।

इस बीच बसंत सान्याल ने अपना वसीयत नामा भी लिखवा लिया। अपनी सम संपत्ति उन्होंने सभी रिश्तेदारों में बांट थी। उन्होंने यह भी कहा कि वे शीघ्र रिटायर्ड होनेवाले हैं। उनके इस आकस्मि परिवर्तन को देखकर सभी विस्मित हुए।

उससे भी अधिक विस्मित तब हु जब सुना कि मात्र उस बच्ची को ले बसंत सान्याल देवघर जा रहे हैं। परिवा के अन्य किसी व्यक्ति को वे साथ नहीं जा रहे हैं। उनके रवाना होते समय जयं भी साथ हो गयी।

देवघर पहुंचकर जयंती जिस तरह बच्ची को लेकर व्यस्त हुई, यह देखकर नि सान्याल निश्चित हो गये। जयंती बच्ची का नाम रखा—माया।

इसी बीच वीणापाणि का देहांत हो ग खबर पाकर मि० सान्याल जब कलक पहुंचे, तब तक चिता की आग ठंडी चुकी थी। उनके परिवार में भी का परिवर्तन हो गये थे। उनका बड़ा ल भास्कर, जयंती का पति, विलायत से अ तक वापस नहीं लौटा था। उनका छो लड़का शंकर, एक मराठी लड़की से शा करके अलग रहने लगा था और ल अणिमा बी०ए० करने के बाद दिल्ली नौकरी करने लगी थी। अतः परिवार अधिकांश माया-बंधन बसंत सान्याल लिए शिथिल हो गये थे। अब बचे थे, मि माया और जयंती। माया अब मि० सान्याल की पोती है, जयंती की पुत्री है

किंतु माया का बंधन जितना ही और

जा रहा था, वसंत सान्याल उतने ही चिंतित होते जा रहे थे । क्योंकि वह घड़ी धीरे-धीरे नजदीक आती जा रही थी, जब जयंती की गोद से माया को छीनकर उसे सौंप ना था, जिसकी वह अमानत थी ।

वह दिन भी आ गया । सत्यनिष्ठ वसंत सान्याल अपने वायदे के अनुसार माया को लौटाने के लिए चंचल हो उठे । स्वयं को समझाया, जयंती को भी समझाया । अंत में असीम धैर्य एवं संयम के साथ जयंती ने माया को वसंत सान्याल की गोद में दे दिया ।

किंतु माया को सहज ही वहां से लाना संभव नहीं था । माया जब सोयी हुई थी, तभी वसंत सान्याल उसे गाड़ी में बैठाकर ले आये थे । रास्ते में माया काफी रोयी थी, किंतु वसंत सान्याल ने किसी तरह समझा-बुझाकर उसे शांत किया था ।

वे माया को जेल में लाये थे कि शशांक के हाथों में सौंप देंगे । किंतु उन्हें वापस लौटना पड़ा ।

शशांक उनको अब कहां मिलेगा ? जेल से छूटने के बाद शशांक ने जज साहब की काफी खोज की थी । कलकत्ते भी गया था–पर वहां भी उसे न जज साहब मिले और न अपनी रानी (माया)।

शशांक को अपनी भी काफी चिंता थी। जेल से छूटे हुए को कौन नौकरी देगा; कौन आश्रय देगा ? किंतु फिर भी उसे आश्रय मिल गया था । दिलीप बाबू स्वदेशी आंदोलन में भाग लेते थे । उनके साथ शशांक की मुलाकात हो गयी थी । शशांक अखबार बेचकर अपना पेट चलाने लगा–रहने के लिए एक कमरा भी किराये पर मिल गया। किंतु सुख के ये दिन भी उसके भाग्य में अधिक नहीं लिखे थे । एक प्रसिद्ध डकैत निताई सरकार के साथ शशांक की अचानक मुलाकात हो गयी–शशांक उसे अपने घर ले आया । निताई को उस समय पुलिस ढूंढ़ रही थी । एक दिन शशांक के घर पर पुलिस ने हमला किया । निताई तो भाग गया; किंतु पुलिस शशांक को ही पकड़कर ले गयी ।

शशांक ने किसी भी तरह निताई का नाम जाहिर नहीं किया । निताई ने उसे जाते समय कहा था–"पुलिस से छुटकारा पाते ही तुम खड़दह चले जाना, वहां तुम्हारे रहने-सोने का इंतजाम तैयार मिलेगा । तुम मेरे मृत भाई की पत्नी संध्या से शादी कर लेना ।"

पुलिस से छुटकारा मिलते ही शशांक खड़दह गया । किंतु वहां की अवस्था भी शोचनीय ही थी । एक दिन शशांक ने घर लौटकर देखा, रामदीन संध्या से बलात्कार करने की कोशिश कर रहा है । शशांक की आंखों में खून उतर आया । दोनों में हाथापाई हो गयी । जोर का एक धक्का खाकर रामदीन जो गिरा, तो फिर खड़ा नहीं हुआ । शशांक को फिर जेल हो गयी ।

इधर शशांक को न पाकर वसंत सान्याल वापस देवघर चले आये । आकर देखा, एक चिट्ठी लिखकर जयंती अणिमा के पास दिल्ली चली गयी है । माया अपनी मां को

न पाकर अस्थिर हो उठी । बसंत सान्याल ने जयंती को पत्र भी लिखा, किंतु उसमें यह नहीं लिखा कि वे माया को वापस ले आये हैं । माया समझती रही, मां ननिहाल गयी हुई है ।

इसके बाद लगातार कई वर्ष बीत गये। काशीनाथ को साथ लेकर मि० बसंत सान्याल इलाहाबाद आ गये । माया अब बड़ी हो गयी है–कालेज में पढ़ रही है और एक धनिक पुत्र सुविमल के साथ उसकी घनिष्ठता भी होती जा रही है । दिन इसी तरह बीतते जा रहे थे कि अकस्मात् मि० बसंत सान्याल बीमार हो गये ।

इधर पुलिस-सुपरिंटेंडेंट मि० बनर्जी का तबादला हो गया और वे खड़दह में आ गये। शशांक को देखते ही वे उसे पहचान गये–उसी शशांक को तो वे इतने दिन से ढूंढ़ रहे थे । शशांक जब जेल से छूटकर जाने लगा, तो बनर्जी ने एक पत्र लिखकर शशांक को इलाहाबाद जाने के लिए कहा । इलाहाबाद पहुंचकर शशांक ने मि० बसंत सान्याल से मिलना चाहा । किंतु उनके बीमार होने के कारण, माया ने शशांक के हाथ से पत्र लेकर उसे दरवाजे से ही लौटा दिया । शशांक अपनी रानी को नहीं पहचान सका था । किंतु बसंत सान्याल पत्र पढ़कर शशांक से मिलने के लिए व्याकुल हो उठे । बाद में शशांक के साथ उनकी मुलाकात भी हुई और बसंत सान्याल ने माया को लौटाने की इच्छा भी प्रकट की।

बसंत सान्याल ने उस दिन माया को सारी कहानी सुना दी । माया अपना
परिचय जान गयी । वह स्वयं शशांक
साथ जाने के लिए तैयार हो गयी ।

बसंत सान्याल इसके बाद अधिक
हो गये । अवस्था शोचनीय देखकर
नाथ ने दिल्ली से जयंती को बुला
जयंती के साथ अणिमा भी आ गयी ।

शशांक के हाथों में माया को सौंपने
काम जयंती ने स्वयं ही अपने हाथों
लिया । माया को ले जाने के लिए
ठीक समय पर ही आ गया । बसंत
ने कुछ रुपये शशांक को दिये, ताकि
सुखी रह सके । फिर तय हुआ, माया
बाद में शशांक के पास भेज दिया

शशांक ने लौटते समय अनायास
सान्याल के मकान की ओर देखा,
बरामदे में खड़ी थी । माया के चेहरे
असहायता एवं विषण्णता की स्पष्ट
देखकर शशांक ने न जाने क्या निश्चय
कि वह माया से बिना मिले ही लौट

निश्चित समय पर काशीनाथ
को शशांक के घर पर पहुंचाने के
गये । किंतु शशांक वहां नहीं मिला ।
के नाम पत्र लिखकर शशांक न
कहां चला गया था । जज साहब
दिये हुए रुपये भी वह एक लिफाफे में
करके रख गया था ।

माया ने पत्र पढ़ा । उसकी आंखों
आंसू बहने लगे । उसने पत्र काशीनाथ
हाथ में दे दिया ।

[रूपांतरकार –गोपाल माहेश्वरी

★

हिन्दी कहानी

कमीज

सुखवीर

कालेज से कुछ जानकारी चाहिये थी। कालेज गया, तो दफ्तर जाने के बजाय प्रोफेसर सक्सेना के घर की ओर चल पड़ा। कालेज की इमारत के साथ ही प्रोफेसरों के लिए क्वार्टर बने हुए हैं। सक्सेना वहीं रहते हैं। सोचा, उन्हीं से जानकारी मिल जायेगी और उनकी शिकायत भी दूर हो जायेगी कि मैं कालेज आता हूं, तो उनसे मिले बगैर ही चला जाता हूं।

सक्सेना घर पर ही थे। आराम से बैठे हुए थे और बड़ी सफाई से कमीज की बांह को पलटते हुए हौले-हौले ऊपर चढ़ा रहे थे। मुझे देखकर खुश हुए। "आइये, आइये!" उन्होंने कहा–"बड़े अरसे के बाद आये हैं। आइये, बैठिये।"

सक्सेना के इस स्वागत में अपनत्व था। मैं उनकी बगल में पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया, तो सक्सेना हौले-से मेरी ओर घूमे और उसी प्रकार बड़ी सफाई से बांह चढ़ाते हुए बोले–"कही बाहर गये हुए थे?" उन्होंने यह सवाल ऐसे पूछा, जैसे कोई बहुत महत्वपूर्ण बात हो।

"नहीं तो।" मैंने कहा–"इस शहर से बाहर जाने का कहां रास्ता है।"

"क्यों?" सक्सेना ने दिलचस्पी दिखाते हुए कहा।

मैंने कहा–"यह शहर तो एक जंगल है। जो इसमें फंस गया, वह फंस गया। फिर बाहर नहीं निकल सकता।"

सक्सेना हल्का-सा मुस्कराये, जैसे वे उस जंगल में फंसे हुए न हों। फिर बोले–"इतने दिन नहीं आये थे, तो मैंने सोचा कहीं बाहर गये हुए होंगे।"

"बस यहीं था।" मैंने कहा।

"कभी इस तरफ आये ही नहीं।" उनके लहजे में हल्की-सी शिकायत थी।

"आया ही नहीं गया।" मैंने कहा और सोचा, अब यह बात खत्म भी होगी या नहीं?

"मेरा खयाल था, कभी चक्कर लगायेंगे," सक्सेना ने बात जारी रखी। "फिर सोचा, कहीं बाहर गये होंगे।"

मैं चुप रहा। आखिर कितनी बार कहता कि यहीं था।

"और सुनाइये, क्या हाल हैं? कहां रहे?" सक्सेना ने पूछा।

"ठीक हूं। आपके कालेज से कुछ काम पड़ गया था, तो इधर आना हो गया।"

"कोई खास काम हैं क्या?" सक्सेना ने पूछा।

"कुछ जानकारी चाहिये......एक लड़के के दाखिले के बारे में।" मैंने बताया।

और जितनी जानकारी मुझे चाहिये थी, उससे लगभग चार गुना ज्यादा जानकारी सक्सेना ने मुझे दी। तब तक वे कमीज की बांह को पूरी तरह कोहनी तक

चढ़ा चुके थे । उसे कुछ देर देखते रहे । फिर दूसरी बांह चढ़ाने लगे उसी सफाई से । उसे देखकर सक्सेना की नफासत-पसंदी का अहसास होता था । वे कालेज में सबसे ज्यादा अच्छे कपड़े पहनते थे और सबसे ज्यादा साफ-सुथरे रहते थे । उनकी सज्जनता भी मशहूर थी । कभी किसी ने उन्हें घटिया बात करते हुए नहीं देखा था, ऊंचा बोलते हुए नहीं सुना था । प्रोफेसरों-वाली गंभीरता और शान से रहते थे । वे गणित के प्रोफेसर थे । एम० ए० करते ही कालेज में लग गये थे और बहुत संतुष्ट थे ।

जब सक्सेना सारी जानकारी दे चुके, तो कुछ क्षणों के लिए हम दोनों चुप हो गये जैसे कोई बात करने को न हो । फिर सक्सेना ने ही वह चुप्पी तोड़ी ।

"कमीज नयी ली हैं क्या ?" सक्सेना ने मेरी कमीज को ध्यान से देखते हुए पूछा।

"नहीं, नयी तो नहीं हैं । वैसे बहुत पुरानी भी नहीं है ।"

"सिली हुई ली होगी ?"

"हां" मैंने कहा ।

"किस कंपनी की है ?" सक्सेना ने दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा ।

"पता नहीं ।" मैंने कुछ उकताकर बात खत्म करने के लहजे में कहा ।

"वैसे सिली हुई अच्छी है ।" सक्सेना ने कहा ।

"ठीक ही है ।"

"कपड़ा भी अच्छा लगता हैं । पर टेक्श्चर कुछ रफ हैं ।"

"मैंने कमीज की ओर देखा और फि उस पर एक जगह उंगली फिराकर उ टेक्श्चर को महसूस किया । उंगली कपड़ा काफी मुलायम लगा और उस खद्दर का खयाल आया, जो बचपन पहना करता था । मैंने सोचा, अक्सर रफ टेक्श्चर तो खद्दर का होता है । बात सक्सेना से कहनी चाही; पर मैं ही रहा ।

तभी सक्सेना ने कहा–"मैंने भी दिनों एक नयी कमीज सिलायी है ।" वे हौले-से उठे और धीरे-धीरे चलते दूसरे कमरे में गये ।

जितनी देर में उन्हें कमीज लेकर आना चाहिये था, उससे लगभग चार ज्यादा देर से वे लौटे । वे बड़ी साव से एक हाथ पर कमीज को उठाये हुए कमीज की बड़ी साफ-सुथरी तह लगी थी । उसे उसी सावधानी से सामने तिपाई पर रखते हुए सक्सेना बैठ गये । क्षण उसे देखते रहे । फिर मेरी ओर सा मुड़कर बोले–"इस बार यह बोस्की सिलायी हैं । टेरिलिन पहन-पहनकर कुछ तंग आ गया था । जरा तब्दीली लिए सिलवा ली हैं । देखिये तो कपड़ा हैं ।"

मैंने कमीज को छुआ नहीं । दूर से देखते हुए कहा–"बहुत अच्छा है ।"

"रंग कैसा लगा आपको ?"

"रंग भी बहुत अच्छा है ।"

"और सिली हुई कैसी है ?"

"मिली हुई भी बहुत अच्छी है ।"

"तब तो पसंद आयी आपको ?"

"हां, बहुत अच्छी है ।"

"बहुत शेड थे दुकान में," सक्सेना बताने लगे–"मुझे यही शेड खास तौर पर पसंद आया । वैसे और भी बहुत-सी दुकानें देखीं थीं । पर जिस दुकान से यह लिया, उसमें वेरायटी बहुत थी । यह शेड मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगा । जरा डल है और इसमें टेरिलिनवाली चमक नहीं है । मजा आ जाता है पहनकर ।"

"क्यों नहीं !" मैंने कहा ।

"वैसे कपड़ा तो एक और भी बहुत पसंद आया था," सक्सेना ने आगे बताना शुरू किया–"इससे कुछ सस्ता भी था । पर उसका शेड इससे जरा-सा चमकीला था । वैसे भी ऐसा नहीं था, जैसा इसका है । उन्नीस-इक्कीस का फर्क था । सो मैंने यही खरीद लिया । कुल मिलाकर कोई साढ़े सात-पौने आठ रुपये ज्यादा लगे ।

"क्या भाव का है ?" मैंने पूछा ।

"साढ़े चौदह रुपये गज । ढाई गज में बन गयी है कमीज ।"

मैं मन में हिसाब लगाने लगा कि कमीज कुल कितने में बनी होगी । पर साढ़े चौदह का ढाई में गुणा न कर पाया । फिर उसमें सिलाई की रकम भी जोड़ने की समस्या थी । आखिर सोचा, मगजपच्ची क्यों करूं? सक्सेना से ही पूछ लूं । गणित के प्रोफेसर हैं, फट बता देंगे ।

पर पूछने के पहले ही सक्सेना ने बता दिया कि सिलाई मिलाकर कमीज कुल तैंतालीस रुपये में बनी है ।

"सिलाई कितनी है ?"

"सात रुपये ।"

मुझे अपनी कमीज का खयाल आया और मैंने मन में कहा–"साढ़े सात रुपये में तो कपड़े और सिलाई समेत यह पूरी बांहों की बनी-बनायी कमीज आ गयी है ।" फिर मैं सक्सेना की कमीज के कपड़े की कीमत का हिसाब लगाने लगा । पर हिसाब न लगा पाया और सक्सेना से ही पूछा–"कपड़ा कुल कितने का है ?"

सक्सेना मुस्कराये और बोले–"सीधा-सा हिसाब है । तैंतालीस में से सात गये–छत्तीस । वैसे साढ़े चौदह के हिसाब से सवा छत्तीस बनते हैं । बस कड़वा घूंट भर लिया है । टेरिलिन से मन कुछ उकता गया था । जरा महंगी बनी है; पर तब्दीली के लिए अच्छी है ।" और सक्सेना ने कमीज तिपाई पर से उठा ली और उसे ऐसे देखने लगे जैसे पहली बार देख रहे हों ।

तभी मैंने कहा–" तब्दीली के लिए ही सिलानी थी, तो कोई सूती कमीज सिला ली होती । सस्ते में बन जाती ।"

सक्सेना फिर मुस्कराये । बोले–"सूती कपड़े की तो मेरे पास एक दर्जन से ऊपर कमीजें पड़ी हैं । टेरिलिन पहनने के बाद अब उन्हें पहनने का मन ही नहीं होता ।"

मैं अवाक् होकर उन कमीजों के बारे में सोचने लगा ।

"आपने नहीं ली कोई टेरिलिन की

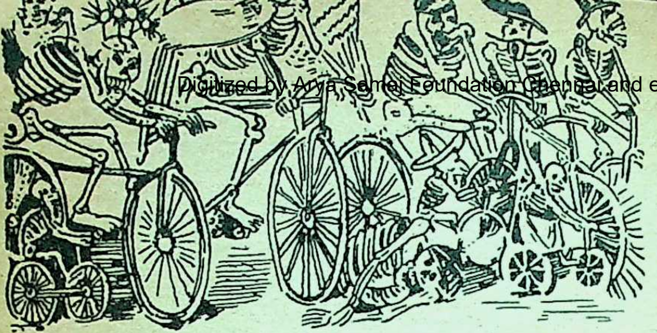

सभ्यता के मुर्दे
चित्र : होजे गडालूप

कमीज ?" सक्सेना ने पूछा ।

"इतने पैसे ही नहीं हैं।" मैंने कुछ कड़वाहट से कहा और चाहा कि यह बात खत्म हो जाये ।

पर सक्सेना ने बात खत्म नहीं होने दी; कहा–" वैसे देखा जाये, तो टेरिलिन सस्ती पड़ती हैं ।"

मैं जानता था कि टेरिलिन सस्ती पड़ती हैं, क्योंकि पहले ही सक्सेना बता चुके थे । सो चुप रहा ।

"हिसाब लगाया जाये तो," सक्सेना कह रहे थे–"टेरिलिन सूती कमीज से लगभग छः गुना ज्यादा चलती है । या यह कहना चाहिये कि अगर छः सूती कमीजों से दो साल निकलते हैं, तो टेरिलिन की एक ही कमीज से दो साल निकल सकते हैं ।"

"पर जेब में एक साथ इतने पैसे भी तो हों !" मैंने कहा, तो मेरे लहजे में हल्की-सी तलखी थी ।

"बस, एक बार कड़वा घूंट भर लेना चाहिये, सक्सेना ने कहा–"फिर आराम ही आराम है ।"

मैंने अपनी तलखी को दबा चाहा; पर वह दब न सकी और मैंने कहा–"कोई एक कड़ घूंट हो, तब तो पी लिया जा जिंदगी तो कड़वे घूंटों से भ पड़ी है । दिन-ब-दिन कीमतें सांपों की तरह फुफकार रही हैं उस पर भी टैक्स बढ़ते जा रहे हैं । अजीब है कांग्रेस का यह गांधीवादी समाजवाद । लोग पहले से ज्यादा दुःखी हैं । आखिर यह हालत"-

"एक बार के कड़वे घूंट से अगर ज में सुख मिले, तो वह पी लेना चाहिये," सक्सेना ने मेरी बात काटकर समझाते हु कहा–" सिर्फ यही नहीं कि टेरिलि सस्ती हैं, कि ज्यादा देर टिकती है, ब इसलिए भी सस्ती है कि उसका धोबी खर्च बचता है । हिसाब लगाया जाये तो

एक क्षण के लिए मुझे लगा, जैसे सक्से टेरिलिन के कोई एजेंट हों । फिर सोच अगर ये एजेंट बन जायें, तो बहुत का याब हों । अच्छी बड़ी तनख्वाह और अ खासा कमीशन कमायें । आज कालेज पढ़ाकर और ट्यूशनें करके और पत्नी नाम पर एक प्राइवेट कोचिंग कालेज च कर जितने रुपये कमाते हैं, उससे कहीं ज्या कमा सकते हैं । विदेशों में घूम सकते हैं ।

सक्सेना ने अपनी बात खत्म करके कह "कहिये ?"

"हां, फायदे तो बहुत हैं इस कपड़े के मैंने तलखी को किसी हद तक दबाते हु और

कहा–"पर यह कड़वा घूंट इतना कड़वा है और इतना बड़ा है कि इसे निगलना आम आदमी के वस की बात नहीं है ।"

"फिर भी आप एक कमीज लेकर जरूर देखिये," सक्सेना ने अनुरोध करते हुए कहा–"पर लें असली टेरिलिन । आजकल नकली भी बहुत निकल आयी हैं । कहेंगे, तो मैं साथ में चला चलूंगा । मुझे भी एक और कमीज लेनी है ।"

"लूंगा ।" मैंने पीछा छुड़ाने के लिए कहा ।

"आजकल एक नयी टेरिलिन आयी है। निटिड (बुनी हुई) टेरिलिन । बहुत बढ़िया चीज है । लें तो उसी की कमीज लें ।"

मैं चुप रहा ।

"ठहरिये, मैं दिखाता हूं वह कपड़ा । पिछले हफ्ते लाया था ।" सक्सेना ने कहा और दूसरे कमरे में चले गये । पता नहीं अंदर जाकर क्या करने लगे थे । काफी देर तक अंदर ही रहे । मैंने सोचा, उठूं और चल दूं । मजा ही आ जाये । पर तभी वे आ गये। उनके हाथ में तह की हुई दो कमीजें थीं । दोनों पर प्लास्टिक के कवर चढ़े हुए थे ।

उनके बारे में फिर वही छोटे-छोटे सवाल कपड़ा कैसा है ? शेड कैसा है ? सिलाई कैसी है ?...... और मैंने खुद को एक साथ कई गालियां दीं और आखिरी गाली देने के बाद अपने मन में कहा, अगर मैं फिर कभी सक्सेना से मिलने आया, तो अव्वल नंबर का चुगद हूंगा ।

"अब कुल मिलाकर सोलह कमीजें हो गयी हैं," सक्सेना कह रहे थे–"और एक बोस्की की है । कुछ साल बड़े आराम से निकल जायेंगे । लगभग सभी अच्छे शेड और डिजाइन आ गये हैं इन कमीजों में । वैसे आजकल नये-से-नये डिजाइन निकलते आ रहे हैं । भला बताइये तो, कौन-सा शेड आपको सबसे ज्यादा पसंद है ? और कौन-सा डिजाइन ? कुछ कमीजें उधर हैंगरों पर टंगी हैं । ठहरिये लाता हूं ।"

सक्सेना उठने को हुए, तो मैंने कहा–"नहीं-नहीं, रहने दीजिये । यहीं से देख लेता हूं ।"

सक्सेना बैठ गये । एक क्षण बैठे और फिर यह कहते हुए उठे–"दो-तीन कमीजें शायद अंदर भी पड़ी हैं।" और वे दूसरे कमरे में चले गये । पर इस बार, पता नहीं कैसे जल्दी ही कमीजें लेकर आ गये । "हां, अब पसंद कीजिये ।" उन्होंने आकर बैठते हुए कहा ।

"मुझे तो सफेद रंग ही ज्यादा पसंद है," मैंने कहा और सोचा कि सफेद रंग बताने से बात आगे नहीं बढ़ेगी ।

"और डिजाइन ?" सक्सेना ने पूछा ।

"यह कपड़ा, जिसमें कि कोई डिजाइन नहीं है ।"

सक्सेना । "मुस्कराये अपनी-अपनी पसंद है," उन्होंने कहा । फिर दो कमीजों की ओर संकेत करते हुए बोले–"वैसे मुझे ये दो डिजाइनें ज्यादा पसंद हैं । लेटेस्ट हैं ।"

"अपनी-अपनी पसंद है ।" मैंने सक्सेना के शब्द दोहराये और सोचा, चलो बात

खत्म हुई।

पर सक्सेना ने बात खत्म नहीं होने दी। उन्होंने एक-एक करके हर डिजाइन और हर शेड के बारे में बड़े विस्तार से बताना शुरू किया। और मुझे लगा कि मैं फंस गया था। बुरी तरह फंस गया था। अब निकलने का कोई रास्ता नहीं था। मैंने फिर खुद को गालियां दीं और कहा कि मैं पहले से भी बड़ा चुगद हूं, जो कई बार के अनुभव के बाद भी सक्सेना के यहां आया हूं। इस तलखी में मैंने कुछ-एक बार कोशिश भी की कि बात काटकर किसी और विषय पर लाऊं। मैंने बात राजनीति पर लानी चाही, फिल्मों पर लानी चाही, आज की शिक्षाप्रणाली पर लानी चाही। पर मजाल है कि सक्सेना ने किसी मौके पर भी टेरिलिन को हाथ से छोड़ा हो। इतना मुलायम कपड़ा होने पर भी वह उनके हाथ से एक इंच नहीं फिसला।

मैं लाचार होकर चुप हो गया।

आखिर जब लगा कि सक्सेना ने अपनी बात पूरी कर ली है और ज्यों ही वे एक क्षण के लिए चुप हुए, तो मैंने घड़ी देखते हुए हुए और उठते हुए कहा–"अच्छा, अब मैं चलूं।" पर सक्सेना ने मुझे उठने नहीं दिया। झट बोले–"बैठिये, बैठिये। अभी तो चाय भी नहीं पिलायी आपको। बैठ जाइये, बैठ जाइये। कहां रोज-रोज आते हैं। मैं देख रहा था कि चिउड़ेवाला आ जाये, तो चाय पियें। यहां एक आदमी आता है चिउड़ा बेचने। बहुत अच्छा बनाता है। अभी आने ही वाला है पांच बजे।"

मैंने फिर घड़ी देखते हुए कहा–"अ
तो सवा चार बजे हैं। दो घंटे हो गये हैं
हुए। बस अब चलूं।"

पर सक्सेना ने मुझे जाने नहीं दिया।

कुछ क्षण हम दोनों चुप रहे। मुझे
था कि सक्सेना कहीं फिर टेरिलिन के
में बात न करने लगें। सो मैंने बात का
बदलने के लिए पूछा–"आजकल कौन-
अच्छी फिल्म चल रही है?"

"यह तो आप बताइये," सक्सेना
कहा–"आपको ज्यादा पता होगा। आ
देखते रहते हैं।"

मैंने बताने की बजाय फिर पूछा–"इ
दिनों कोई नयी फिल्म देखी होगी?"

"इन दिनों तो कोई नहीं देखी।"

"पिछले दिनों कुछ-एक बहुत अच्
फिल्में आयी हुई थीं। हावर्ड फास्ट के नाव
'स्पार्टेकस' की फिल्म। टेनेसी विलि
के प्ले की फिल्म 'कैट आन ए हाट टि
रूफ'। 'गाड्स लिट्ल एकर,' काल्डवेल
नावेल की–"

"नहीं, मैं नहीं देख पाया कोई भी
सक्सेना ने कहा–"वक्त ही नहीं मिला।

"प्रोफेसरों के पास तो खुला वक्त हो
है," मैंने कहा–"वैसे लेटेस्ट फिल्म कौन-
देखी है?"

"बहुत पहले देखी थी।"

"कब?"

"कोई छः-सात महीने पहले।"

मुझे लगा, सक्सेना को ये बातें पसंद न
थीं। मैं मन-ही-मन मुस्कराया और

आगे

जारी रखते हुए कहा— इस अरसे में तो अच्छी-अच्छी फिल्में लग चुकी हैं । बहुत व्यस्त रहते हैं क्या ? पी-एच० डी० करने-वाले थे । उसमें तो नहीं लग गये ?"

"नहीं, पी-एच० डी० करने का खयाल छोड़ दिया है । बहुत झंझट हैं उसमें । पढ़ने-लिखने की भी एक उम्र होती है ।"

"आपकी उम्र कौन-सी ज्यादा हो गयी है । मुश्किल से तीस की होगी ।"

"नहीं, तीस तक पहुंचने में अभी लगभग सवा साल बाकी हैं । टु बी एग्जैक्ट, एक साल और डेढ़ महीना । अगले महीने मेरा जन्मदिन है ।"

"जन्मदिन मना रहे हैं क्या ?" मैंने पूछा ।

"नहीं । ख्वामख्वाह का झंझट है । क्या फ़ायदा ?"

"फायदा यही है कि एक दिन हंसी-खुशी में बीत जाता है और आदमी साल के बाकी दिनों की तलखियां भूल जाता है । फिर दोस्तों की शुभ कामनाएं"—

"सब झंझट है," सक्सेना ने कुछ उकताकर कहा —"बेहतर है कि आदमी आराम से घर में बैठे ।"

"आराम से तो आप साल-भर ही घर में बैठते हैं," मैंने कहा—"एक दिन झंझट ही सही । जिंदगी में कुछ तब्दीली आ जाती है, जैसे कि—"मैं कुछ रुका । फिर मुस्कराकर कहा—"जैसे कि टेरिलिन की कमीजों में एक बोस्की की कमीज से तब्दीली आती है ।"

सक्सेना भी मुस्कराये और उन्होंने मेरी ओर से नजर हटाकर [illegible] पर पड़ी बोस्की की कमीज की ओर देखा । और फिर देखते ही रहे ।

एकाएक मुझे लगा कि गलती कर बैठा हूं । कहां तो बातों का रुख टेरिलिन की ओर से मोड़ना चाहता था और कहां फिर टेरिलिन का जिक्र कर बैठा । और इसके पहले कि सक्सेना कोई बात करते, मैंने पूछा—"हेमिंग्वे का नावेल दे गया था—'ओल्ड मैन एंड दि सी ।' कैसा लगा ?"

"शुरू तो किया था, पर पूरा नहीं कर पाया ।"

"दिलचस्प नहीं लगा क्या ?"

"दिलचस्प तो था; वक्त नहीं मिला ।"

"कोई और नावल पढ़ा होगा इन दिनों ?"

"नहीं ।"

"कोई और किताब ?"

"नहीं । वक्त ही कहां है ?"

"टचूशनें ज्यादा आ गयी हैं ?"

"टचूशनें तो वही दो-तीन हैं ।"

"तो कोचिंग-कालेज में व्यस्त होंगे ?"

"नहीं, वह तो अब चल पड़ा है, तो खुद ही चलता जा रहा है ।"

"तो फिर वक्त क्यों नहीं मिलता ?" मैंने आश्चर्य से पूछा ।

"बस देख लीजिये," सक्सेना ने कहा और कोहनी तक चढ़ाई हुई कमीज की एक बांह को बड़ी सफाई से हौले-हौले पलटते हुए नीचे उतारने लगे ।

"आज शाम का क्या प्रोग्राम है ?" मैंने

पूछा ।

"कोई खास प्रोग्राम नहीं ।"

"तो आइये कोई फिल्म देखें ।"

"कौन-सी ?"

"यहां आपके नजदीक ही बड़ी अच्छी कामेडी लगी हुई है-कम सेप्टेंबर ।"

"अच्छी है ?"

"हां ।"

"अच्छी न हुई तो वक्त बरबाद होगा।"

"अच्छी है, " मैंने जोर देकर कहा ।

"आपकी देखी हुई है ?"

"देखी होती तो फिर क्यों देखता ?" मैंने तलखी को हंसी में ढालकर कहा ।

सक्सेना को कुछ बुरा लगा । मुझे भी कुछ महसूस हुआ । फिर सोचा, आखिर अंदर की तलखी बाहर आयेगी ही ।

"अच्छा, सोचते हैं," सक्सेना ने कहा— "पहले चाय तो पियें । आने ही वाला है चिउड़ेवाला ।"

सक्सेना ने अब तक कमीज की दूसरी बांह भी नीचे उतार ली थी और उसके कफ को बटन लगा रहे थे । बटन लगाकर उन्होंने उसे फिर खोला और कफ की ओर देखते हुए कहा—"इन रेडीमेड कमीजों के कफ कुछ अच्छे नहीं होते ।"

"कफ-कालर सब चालू ही बनते हैं ।" मैंने कहा ।

"नहीं, कालर तो बहुत अच्छे बनते हैं। ऐसे कालर आम दर्जी नहीं बना सकते । स्पेशल मशीनों से बनते हैं। हां, कफ कुछ... अब यह देखिये, सिलाई कुछ सीधी नहीं है और कालर के मुकाबले में कुछ मोटी हैं । कफ का साइज भी कुछ बड़ा है। दर्जी है यहां, मैं कफ उससे दोबारा ठीक करा लिया करता हूं । दो रुपये लेता है। वैसे इस कमीज के कफ किसी दूसरे दर्जी से ठीक कराये थे । उसने पहले से भी खराब कर दिये हैं । देखिये ।"

मैंने देखा तो मुझे कफों में कोई खराबी दिखाई न दी । फिर भी कहा—"हां, कुछ नुक्स रह ही गया है ।"

"दरअसल," सक्सेना ने कहा—"टेरिलिन के लिए स्पेशलिस्ट दर्जी चाहिये। टेरिलिन के लिए ......"

मुझे लगा, मैं फिर फंस गया था। एक-एक मन में ऐसी तलखी जागी कि सोचा उठकर भाग जाऊं । भाग जाऊं और पीछे मुड़कर न देखूं । पर मुझसे उठा न गया। बैठा ही रहा ।

उस समय सक्सेना की बातें तो कानों में पड़ रही थीं; पर कुछ पता नहीं लग रहा था कि वे क्या कह रहे हैं ।

आखिर काफी देर बाद जब बाहर चिउड़ा बेचनेवाले की आवाज सुनाई दी तो मैं चौंका । सोचा, अब शायद छुटकारा मिले ।

"लीजिये आ गया ।" सक्सेना ने कहा और उठे ।

मैं भी उठ खड़ा हुआ ।

"बैठिये, बैठिये ।" सक्सेना ने मुझसे कहा और दरवाजे की ओर बढ़े, जहां चिउड़ेवाला सिर पर टोकरी उठाये हुए खड़ा था।

मैं बैठा नहीं, सक्सेना के पीछे दरवाजे तक गया।

चिउड़ेवाले ने टोकरी नीचे रखी और सक्सेना की ओर मुंह उठाया।

मैंने देखा, उसके चेहरे पर कई मीलों का सफर था। उसका छोटा-सा बूढ़ा चेहरा था। दाढ़ी होने के बावजूद वह चेहरा बहुत छोटा-सा लग रहा था।

"अच्छा है न?" सक्सेना उससे पूछ रहे थे।

"देख लो।" उसने कहा।

सक्सेना ने झुककर चिउड़ा देखा और कहा—"पाव किलो दे दो।"

चिउड़ेवाले ने थके हुए अंदाज में तकड़ी उठायी। उसके पलड़े को ठीक किया। एक पलड़े में वजन रखा, दूसरे में कागज रखा। फिर टूटी हुई डंडीवाली कलछी से चिउड़ा निकालकर उसमें डालने लगा।

उस समय मेरा ध्यान चिउड़े पर से हटकर चिउड़ेवाले पर था और मैं सोच रहा था, बुढ़ापा आदमी को कितना दयनीय बना देता है। दरमियाना कद होने पर भी वह आदमी बहुत छोटा लग रहा था और उसने जो कमीज पहनी हुई थी, वह भी बहुत छोटी लग रही थी। जैसे किसी लड़के की कमीज हो। वह साफ-सुथरी धुली हुई कमीज थी और असली अर्थों में तार-तार हो चुकी थी। यहां तक कि उसके कंधों पर जो दो पैवंद लगे हुए थे, वे भी फटे हुए थे। और उस कमीज में से उस आदमी का नंगा शरीर झांक रहा था। और मैं हैरान, सोच रहा था कि इस तार-तार हुई कमीज को यह आदमी कैसे पहनता होगा? कैसे उतारता होगा? वैसे अगर इस कमीज को यह न भी पहने और नंगे बदन घूमे, तो क्या हर्ज है? पर नहीं, बुढ़ापे की लाज ढंकना भी जरूरी है।

तभी मैंने सक्सेना की बांह को जरा-सा हिलाया। उन्होंने मेरी ओर देखा। मैंने अंग्रेजी में कहा—"इसकी कमीज देखिये।"

सक्सेना ने 'हां' में सिर हिलाया। फिर पहले ही की तरह चिउड़े की ओर देखने लगे। फिर चिउड़ेवाले से बोले—"आज इसका रंग कुछ कम पीला है। लगता है, हल्दी कम डाली गयी है।"

"कुछ कम ही रह गयी होगी," चिउड़ेवाले ने कहा—"कल ज्यादा डालूंगा।"

"पर बहुत ज्यादा न हो जाये।"

"नहीं, कम ही डालूंगा।"

"और यह कागज भी जरा अच्छे बरता करो। यहां सब साहब लोग रहते हैं।"

"अच्छा साहब!" चिउड़ेवाले ने कहा और टोकरी सिर पर उठाकर रख ली।

उस समय टोकरी के नीचे वह मुझे और भी छोटा लगा। और उसकी कमीज सचमुच उसके माप से बहुत छोटी थी। शायद उस कमीज के कारण ही ज्यादा छोटा लग रहा था।

वह चला गया। सक्सेना रसोई में चले गये और मैं कुर्सी पर आकर बैठ गया। दो-तीन बार बाहर से चिउड़ेवाले की आवाज सुनाई दी। फिर वह एकाएक जैसे मेरे

सामने [illegible] खड़ा हो गया । मैं उसे फटी हुई आंखों से देखने लगा । एक बार मुझे लगा कि उसका वह छोटा-सा बूढ़ा चेहरा गायब हो गया था । अब सामने उसका छोटा-सा शरीर था और उस पर चेहरे के बजाय एक टोकरी थी ।

कुछ देर के बाद जब सक्सेना ट्रे में चाय का सामान और चिउड़े की प्लेट रखे हुए आये, तो मुझे देखकर चौंके । "क्यों, क्या बात है ?" उन्होंने चिंता दिखाते हुए कहा—"तबीयत ठीक नहीं है क्या ?"

मैं भी चौंका । अब सामने चिउड़ेवाला नहीं था । मैंने एक क्षण सक्सेना को देखा । फिर कहा—"पता नहीं, शरीर कुछ टूट-सा रहा है ।"

"चाय पीजिये, ठीक हो जायेंगे, वरना फिर एस्प्रो मंगा लेंगे ।" और सक्सेना ने चिउड़े की प्लेट मेरी ओर बढ़ायी ।

"नहीं, मैं खाऊंगा कुछ नहीं," मैंने कहा ।

"स्वाद तो देखिये ।"

"अभी रहने दीजिये । फिर सही ।"

सक्सेना ने प्लेटें ट्रे में रख दीं और कपों में चाय बनाने लगे । चाय बनाते हुए कहने लगे—" तो कब का प्रोग्राम बनायें ?"

"फिल्म मैं आज नहीं देख सकूंगा ।" मैंने माफी मांगने के अंदाज में कहा ।

"नहीं, फिल्म का नहीं । फिल्म देखने तो मैं भी नहीं जा पाऊंगा । बाजार जाने का प्रोग्राम । आपके साथ मैं भी एक कमीज खरीद लूंगा ।" यह कहते हुए सक्सेना ने चाय का कप मेरी ओर बढ़ाया ।

मैंने कप पकड़ते हुए तलखी से कहा—"इतने पैसे कहां हैं मेरे पास ।"

"अजी एक बार कड़वा घूंट पी लीजिये ।" सक्सेना मुस्कराये ।

मैं चुप रहा और मैंने चाय का कड़वा घूंट भरा । फिर चाय के कुछ और कड़वे घूंट भरे और कप खाली किया और उठ खड़ा हुआ । आखिर कहा—"माफ कीजिये, मेरी तबीयत कुछ खराब हो रही है । अब चलूंगा और घर जाकर आराम करूँगा ।"

"बैठिये, बैठिये, ऐस्प्रो मंगवाये देता हूं । यहीं आराम कर लीजिये ।"

"नहीं, ऐस्प्रो मैं रास्ते में ले लूंगा । अच्छा, चलूं ।"

और मैं वहां से आ गया । क्वार्टरों से निकलकर बाहर सड़क पर आया, तो तबीयत कुछ सुधरने लगी । कुछ देर सड़क पर चलता रहा । फिर सड़क के एक मोड़ पर खड़ा हो गया और आ-जा रहे लोगों को देखने लगा । उस समय उन लोगों के चेहरों के बजाय मुझे उनकी कमीजें दिखायी दे रही थीं । सफेद, मैली, नीली, भूरी और बेरंग कमीजें, जो वास्तव में एक कमीज थीं । वह एक कमीज उस चिउड़ेवाले की कमीज भी थी और मेरी कमीज भी थी और उस आदमी की कमीज भी थी, जो आज के जमाने में नंगा था । कुछ देर के बाद मैं वहां से चल पड़ा और सड़क पर भागी-दौड़ती जा रही उन कमीजों में एक कमीज बन कर खो गया ।

★

सतजुगिया आदमी

शैलेश मटियानी

दोनों बहुएं खेती के काम पर चली गयी थीं। परराम कहीं पड़ोस में ही रम गया था। और एकांत में बैठे-बैठे आज हरराम से चिलम संभाले नहीं संभल रही थी।

सत्तर-पार पहुंच चुका था हरराम, मगर अभी भी हाथ-पांवों का बल एकदम टूट नहीं गया था। अभी भी हल जोतने, खेतों की भीत चिनने में उसके सधे हुए हाथों की बरकत अलग ही दिखाई देती थी। कैसे-कैसे ढलाऊ खेतों में उसके हाथों की चिनी भीत बरसों टिक जाती थी। बरसात के दिनों में बहुतेरे खेत बैठ जाते थे। भीतें ढह जाती थीं, मगर हरराम कुछ ऐसी काट देकर पत्थरों को चिनता था कि पानी जोड़-जोड़ से भले ही रिसता रहे, मगर पत्थर नहीं खिसकते थे।

मगर आज लग रहा था कि परराम के पागलपन ने उसके घर और आत्मा की भीतों को हिला दिया है। जो अनहोनी कभी उसने, उसके पुरखों ने सोची भी नहीं, उसे परराम करने पर डटा हुआ था। केशवानंद के घर से तीन बार बुलावा आ चुका था, मगर तीनों बार परराम ने साफ इन्कार कर दिया था कि वह उनकी मरी भैंस नहीं खींचेगा!

खुला ब्रह्मद्रोह था वह। हरराम की आत्मा कांप रही थी कि कहीं केशवानंदजी ने कुपित होकर श्राप दे दिया, तो शायद उसके पूरे कुल-वंश की ही भीत अरअरा जायेगी। पुरोहित राघवानंदजी की शक्ति हरराम अपनी आंखों से देखता आया था। कैसे-कैसे विषैले सांपों को, भूत-प्रेतों को, मंत्रों से ही बांध देते थे। फन-फनाकर डंसने को आता हुआ विषधर सांप उनके 'ओम्-ओम्' कहने मात्र से अपने ही ठौर थिरा जाता था और ऐसे नाचने लगता था, जैसे कोई सपेरा महुवर बजा-बजाकर उसे वश में कर रहा हो—ओम—ओम्-ओम् विष्णु-विष्णु-विष्णु......

"अहाहा, अहाहा, अहाहा!"—हरराम दोनों हाथ जोड़कर, आंखें मूंदकर, एकदम विह्वल कंठ से अपनी जाति-बिरादरी के लोगों से पुरोहित राघवानंदजी की कीर्त्ति बखाना करता था—"ओम्-बिश्नुर-बिश्नुर-ओम्-बिश्नुर-बिश्नुर! ......मंतर ऐसा मार दिया गुसाईं राघवानंद ने यारो, अब क्या बताऊं? बखानी नहीं जाती मुझसे तो वह अपरंपार महिमा! कैसा तो फन्-फन्-फन् करता काटने को आया फनैला काली नाग, मगर जहां एक मंतर मारा था कि अपनी ही

जगह पर बसंती हुड़क्याणी-जैसा फर्र-फर्र नाचता रह गया...ओम्-बिश्नुर-बिश्नुर-ओम बिश्नुर......हे रामजी, मुझ गरीब का पाप छिमा हो। पंडितजी कहा करते हैं कि म्लेच्छों के मुंह में गूंजने से मंतर भिरिष्ट हो जाते हैं और फिर भूत-पिरेतों की तरह भटकते रहते हैं। सताते हैं।...... पाप छिमा हो, रामजी, मगर मंतर की शक्ति को अब क्या बखानूं यारो, पंडितजी ओम् कहें तो कालीनाग शीश झुकाकर दंडोवत करे और पंडितजी बिश्नुर-बिश्नुर पुकारें, तो उसकी सतमुख जीभ एकदम नीचे लटक जाये – स्यां-स्यां-स्यां......और विष ऐसे झड़े, जैसे शिवलिंग से निरमाल झड़ता है, बूंद-बूंद, बूंद-बूंद ।......और, यारो, पंडितजी पूरबाय कहें, तो कालीनाग का फन पूरब को घूम जाये। पच्छिमाय कहें, तो पच्छिम को ओर, दक्खिनाय कहें, तो दक्खिन को ।......इसे कहते हैं मंतर-सिद्धी। ऐसे ही महामंतरों के बल पर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के यहां पूजे जाते हैं पंडित लोग !"

बाद में एक दिन जब पुरोहित राघवानंदजी के एक यजमान हरराम के ही गुसांई बचेसिंह के चाचा किसनसिंह को खेत जोतते हुए सांप ने डस लिया था, तो हरराम ने साफ कह दिया था–"अरे, महाराज ! पंडित राघवानंदज्यू तो साक्षात् रिखी-मुनी बरमसि हैं। किसनसींग गुसांई ने उनसे ही छल-कपट किया। पहले अपने बाप बिरमसिंग की गति-किरिया करते समय तो दुधेले थनोंवाली गैया दान में देने का वचन दिया।......मगर तेरवें दिन पीपल छूकर सूतक वहा लेने पर, जनमबैल गैया चिपटा दी ! हुआ कि नहीं वर्मघात?......जहां तक मेरा वर्म बोलता है, पंडित-राज राघवानंदजी ने कालीनाग, वासुकी नाग सिद्ध कर रखे हैं। लगा दिया होगा कालीनाग को मंतर कर !......और सबसे बड़ा चमत्कार तो यह देखा, यारो कि जनमबैल गैया पंडितजी की गोठ में आते ही अगले बरस बत्वाल पर आ गयी और यारो, आज सेर-सेर दूध फूट रहा है उसके थनों से।"

अब राघवानंदजी नहीं रह गये थे, मगर हरराम जानता था कि वे सारे मंत्र-तंत्र अपने बेटे केशवानंद को सिखा गये होंगे। 'यथा पितरो, तथा पूतो' ही चलता आया है। हरराम के हाथों में बचपन से हथौड़ा ही रहा। केशवानंद ने कर्म-कांड की पोथी संभाल ली थी। हरराम वह भी जानता था कि ऋद्धि-सिद्धि और वशीकरण-मारण के जो मंत्र-तंत्र होते हैं, वे पिता से पूत को, गुरु से शिष्य को प्राप्त होते हैं। हरराम कहा करता था–"महाराज, उसी बांस की बांसुरी है। चँवर गाई के बछड़े की पूछ से ही चंवरीली आती है ! जिस समय केशवानंद गुसांई मंतर-जंतर करने लगते हैं, सकल सिरिष्टि बंध जाती है। थोकदार गुसांई के बेटे, छोटे गुसाईं धरमसींग की शादी के दिन की बात है। माघ के लगन ठहरे। लगन के दिनों में आकास के इंदर भी बहुत

जल बरसाते हैं। उस [illegible] सात जो लगी, तो फिर टूटी ही नहीं। कन्यादान का कर्म-कांड तो हो चुका, अब मांडव-कर्म रह गया। सतफेरा भांवरों की फिराई रह गयी थी, जो आंगन की जज्ञ-वेदी में होनी थी। मगर महाराज, पंडित केशवानंदजी ने गोठ से बाहर निकलकर जो आचमन करके जल का बरमास्त्र मारा है, तो आकास के बादल आकास में ही गरजते रह गये! इंदर राजा कुपित होकर के बिजली और वज्जर कड़कावें, मगर मजाल क्या जो पानी नीचे हुंच जाये! डोली को कंधा लगाने मैं भी गया हुआ था, मैंने अकाश की तरफ आंख उठाकर देखा, तो अहाहा! धन्य हो, रिखी-मुनी लोगो, धन्य हो! बरसात ऊपर-की-ऊपर ही रुकी हुई है—ओम्-बिस्नुर-बिश्नुर......"

और आज उन्हीं मंत्र-तंत्र के ज्ञाता केशवानंदजी के घर में भैंस मरी पड़ी थी, तो हरराम का ही बेटा परराम सारी जाति-बिरादरी के लोगों को भड़का रहा था कि कोई भी शिल्पकार भैंस खींचने नहीं जाये।...... और हरराम का कलेजा रह-रहकर कांप रहा था कि केशवानंदजी कुपित हो गये और उन्होंने कालीनाग मंतर कर भेज दिया तो? बड़ा बेटा वेदराम तो चला ही गया है। एक जो अंत समय में देवगढ़ बारात ले जाने का [illegible] रह गया है, उसका भी कहीं अनिष्ट न हो जाये! हरराम को याद आ रहा था, स्वर्गीय पुरोहित राघवानंदजी कहा करते थे, जिस मनुष्य के विनाश का समय आता है, सबसे पहले उसकी बुद्धि भिरिष्ट हो जाती है।

और हरराम बौखला रहा था कि भला, अब इससे ज्यादा विपरीत बुद्धि क्या होगी कि जिन रिखी-मुनी पंडित लोगों को बड़े-बड़े राजा-महाराजा, बड़े-बड़े ठाकुर-राजपूत लोग शीश नवाते हैं, उनको तू कमअकल डोम परेशान करने पर कमर कस रहा है।......अरे, स्साले नादान, मत कर मंतर-जंतर के स्वामी लोगों से बैर। कालीनाग डंस लेगा रे! ......ओम-बिश्नुर......

हरराम को लगा कि यों ही एक ठौर चुपचाप बैठा रहेगा और यों ही आत्मा की भीत थरथराती रहेगी, तो कुछ-न-कुछ अनिष्ट आज जरूर होगा। चिलम एक ओर रखकर, हरराम बिरादरी के लोगों की तरफ बढ़ गया। दूर से ही उसने देखा कि परराम जीतराम लोहार के भाई बचेराम लोहार के घर बैठा हुआ था। वहीं से उसके जोर-जोर से बोलने की आवाज सुनाई दे रही थी।

भड़का रहा होगा ससुरा अधरम की आग! हरराम की देह अपने धर्मभ्रष्ट बेटे

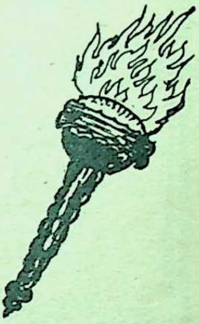

नयी चेतना की ज्योति

मसूढ़ों के कष्ट
व दंतक्षय
के इलाज में
फोरहन्स
टूथपेस्ट के
आश्चर्यजनक
परिणाम

दांत–डाक्टर द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

★ ये पत्र ज्यॉफ्री मॅनर्स एंड कं. लि. के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं

यह सन १९४८ की घटना है, जब मेरे मसूढ़े कुछ नर्म पड़ गये थे-खून भी निकलने लगा था। मेरे पति को मेरे दांतों पर बड़ा नाज था । उन्होंने फोरहन्स इस्तेमाल करवाया। तब से मैं नियमित रूप से फोरहन्स इस्तेमाल कर रही हूं, और इस का लाभ भी असाधारण रूप से अच्छा रहा।

एच. के., भिलाईनगर

पिछले तीन सालों तक मैं दांत की बीमारियों से परेशान रहा। एक मित्र की सलाह पर मैंने फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया, और एक महीने के बाद यह देख कर आश्चर्य हुआ कि दांतों की तकलीफ न सिर्फ मिट गयी, बल्कि मेरे दांत भी बहुत ही चमकीले निखर पड़े। अब मैं फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कर रहा हूं।

पी. पी., बम्बई।

मैं आप को सूचित करना चाहती हूं कि १२ साल की उम्र से ही मैं फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर रही हूं। इतना ही नहीं, मेरे घर के सभी लोग इसी टूथपेस्ट को इस्तेमाल कर रहे हैं, क्यों कि दांतों को चमकीला सफ़ेद और मसूढ़ों को मजबूत व स्वस्थ रखने के लिए हमने इसे बहुत ही फायदेमंद पाया।

(श्रीमती) के. वी., बेंगलोर

मुफ़्त–दंत–रक्षा की सचित्र पुस्तिका

मसूढ़ों के रोग और दंत-क्षय से बचने की अधिक ज
कारी प्राप्त करने के लिए आज ही "CARE OF
THE TEETH & GUMS" पुस्तिका (अंग्रेजी) क
मुफ़्त प्रति के लिए लिखें। साथ में डाक-खर्च के १५ न
पैसे के टिकिट भी भेजें। पता: डिपार्टमेंट ओ-६ मैन
डेंटल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-

Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR
THE GUMS
"BRUSH YOUR TEETH
WITH IT"

... और पूरी जोड़ी के लिए इस्तेमाल करें

फोरहन्स
दोहरे असरवाला
टूथब्रश

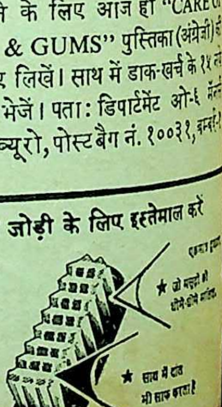
★ जो मसूढ़ों की धीमे-धीमे मालिश
★ साथ में दांत भी साफ करता है

B.27-

के प्रति कोप से एकदम थरथरा उठा— अरे, रेपरराम ! जरा बाहर निकल तो ।"

परराम बाहर निकल आया, तो हरराम ने हाथ की लाठी हिलाते हुए पूछा—"क्यों, रेमी अधरमी ! नहीं मानेगा तू मेरी बात ? आ गया है क्या तेरा भी सत्यानाश का वखत ? तेरी बुद्धि विपरीत हो गयी है, जो मलेच्छ होकर बर्मज्ञानी लोगों से बैर साध रहा है ! डंस लेगा कालीनाग तुझे...... कपूत उपज गया है स्साला मेरे खानदान में। अपने पुरखों की नाक कटाने पर अड़ गया है कमीना । मंतर मार देंगे मूठ में आचमन का जल भरके, तो कालीनाग......"

परराम को भी गुस्सा आ गया यों धिक्कारे जाने से। जोर से बोला—"बौज्यू, कालीनाग तो न पंडित राघवानंद ज्यू की मुट्ठी में था, न केशव पंडित के आचमन में है। कालीनाग तो असल में तुम-जैसे मूरख लोगों की आत्मा और बुद्धि से लिपटा हुआ है और पूरे शिल्पकार खानदानों को डसता ही चला जा रहा है। हम डोम लोगों की आत्मा और बुद्धि को एक जहर तो जन्म-जन्मांतरों से लगा हुआ है—ऊंची जात के लोग हमें कुत्तों से भी ज्यादा अछूत मानते हैं। म्लेच्छ कहकर दुत्कारते हैं। दूसरा कालीनाग तुम-जैसे हमारे पुरखों की आत्मा को लपेटता रहा। तुमने कहा कि जैसे कुत्तों के कबीले में कुत्ते ही पैदा होते हैं, ऐसे हम म्लेच्छों के कबीलों में म्लेच्छ ही पैदा होंगे। तुम लोगों का विषैला खून हम लोगों की नसों में भर गया । कालीनाग तो औरों को डंसता है, मगर हम निर्बुद्धि डोमों की आत्मा का कालीनाग हम डोमों को ही डसता रहता है । जैसे ही हम सिर उठाकर जीने की कोशिश करते हैं, वैसे ही कालीनाग फन उठाकर डंसने लगता है । मरी भैंस नहीं खींचने, भैंस का शिकार नहीं खाने से अगर सत्यानाश होता है, तो रायबहादुर किसनराम का सत्यानाश क्यों नहीं हुआ ?"

"बस, बस, रे परुवा ! अब बहुत हरगोविंद पणज्यू का-जैसा लेक्चर मत झाड़ । बहुत सुसरा 'तुम लोगों का खून, तुम लोगों का खून' करता है । अरे स्साले, मेरा ही खून जो तुझमें होता, तो आज तू यों बाबाजी के तुंबे-जैसा सिर उठाकर मुझसे ही लड़ने को आता ? मेरे खानदान का असर तो तुझमें आया ही नहीं । लगा लायी होगी डोमणी किसी कम जात से ।......"

"हम डोमों से ज्यादा भला और कौन होता है कमजात ?"

"तो स्साले, जब जानता है अपनी जात-औकात को, तो फिर क्यों बर्मद्रोह करके अपना नाश करने जा रहा है । एक भैंस नहीं खींचेंगे तुझ-जैसे डोमड़े, भैंस का शिकार नहीं खायेंगे, तो कौन-सी गुसाइयों की जात घट जायेगी और कौन-सा तुम लोगों के कपाल पर चंदन लग जायेगा? भैंस का शिकार छोड़ दोगे, तो फिर साग कहां से लाओगे इतना ? मांसखोर जात है, बिना मांस खाये रहेगी भला ? बकरी

मीनाकुमारी से सुनिए एक रहस्य की बात...

'मेरे रंगरूप की बहार लक्स से है।'

वह कहती हैं।

मीना कुमारी, कमाल अमरोही की
'पाकीज़ा' की तारिका

लक्स टॉयलेट साबुन

चित्रतारिकाओं का शुद्ध, मुलायम सौंदर्य साबुन
इंद्रधनुष के ४ रंगों में और सफ़ेद!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

L.T.S. 147-77 HI

का शिकार खाने के लायक और [illegible] है कि बात भी है पहले ?” हरराम ने सिर्फ परराम से ही नहीं, परराम के साथ के और जवान शिल्पकारों से भी पूछा—“इस समय तुम लोग भी वहुत इस परुवा साले के अखाड़े में उछल-कूद मचा रहे हो, मगर कल भुगतोगे अंजाम। यों ही गुसांई लोगों से बैर ठाने रहोगे, तो अन्न छोड़, नून की डली का सहारा भी नहीं रहेगा। भैंस के शिकार से भूख मिटती थी, देह मजबूत रहती थी। छोड़ोगे इस वर्मद्रोही की बातों में आकर, तो कल पछताओगे।”

आवेश में हरराम परराम को गालियां देने लगा।

परराम से रहा नहीं गया [illegible] में। हाथ की लाठी छीनकर दो-चार चोटें हरराम को मार दीं—“छोड़ दे हमारा घर। मरी हुई भैंसों को ही नोंच-नोंचकर खा। ...... हे राम, कैसे लिच्चड़ डोमड़े के घर जनमाया मुझे भी तुमने ?...... एकाएक हाथ से लाठी फेंककर, परराम बिलख-बिलखकर रोने लगा। इतने में जाति-बिरादरी के कुछ लोग और जुट आये। हरराम तो पिता था, इसलिए परराम ने उससे ज्यादा वहस आज तक नहीं की थी, मगर बिरादरी के लोगों को विस्तार से सारी वातें समझा रखी थीं। बहुत ज्यादा बूढ़े जनों और जीतराम लोहार को छोड़कर सभी परराम के पक्ष में थे। सभी इस बात से सहमत थे कि जव अपनी देह का खून-पसीना निचोड़कर पेट पालते हैं, तो कम-से-कम इतनी आजादी तो होनी ही चाहिये कि जो काम रुचे करें, जो न रुचे, न करें। भैंसखोर मानकर, देह छूते ही सवर्ण उन्हें दुराते थे। इससे उन सभी की आत्मा को ठेस पहुंचती थी, जिनके हरराम जैसे रूढ़ संस्कार नहीं थे।

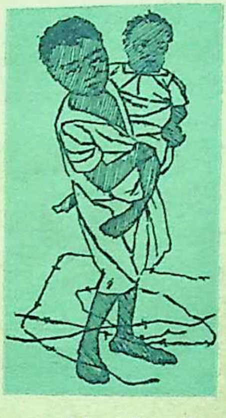

सामंती उपेक्षा के शिकार

हरराम को पकड़कर, बचेराम ने अपने घर के भीतर बैठा लिया था। एकदम अप्रत्याशित रूप से परराम के हाथ से मार खाकर, हरराम एकदम सिटपिटा गया था और उसकी बूढ़ी देह एकदम घोर क्लेश से थरथरा रही थी। उसे याद आ रहा था कि आज तक परराम ने उसके पीटने पर कभी ‘तू’ भी नहीं कहा था।

बचेराम उसे समझा रहा था—काका तुमको इस तरह से एकदम कोप नहीं करना चाहिये। परराम आखिर कोई गलत बात तो कहता नहीं है। आखिर जो कुछ भी हमको गुसांई लोगों से मिलता है, वह भीख में नहीं, पसीने के बदले में मिलता है। परराम ठीक कहता है कि हम जंगल से लकड़ी काटकर लाते हैं। सिर पर ढोकर वाजार ले जाते हैं, बेचते हैं। इन ठाकुरों-वामणों के खेतों में काम करते हैं, अपना पसीना निचोड़-निचोड़

शीघ्र, सुरक्षित निश्चित

खाँसी का घरेलू इलाज

Alembic
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
DOSE
ALEMBIC CHEMICAL WORKS CO.
ALEMBIC ROAD, BARODA
MADE IN INDIA
Alembic
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP

Alembic

ग्लायकोडिन टर्प-वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

कर अन्न उपजाते हैं। [illegible] का पेशा करते हैं, मजदूरी कमाते हैं। हम कोई ठाकुर-बामण गुसांइयों को गालियां नहीं देना चाहते, उनके साथ कोई झगड़ा-फिसाद नहीं करना चाहते, उनके खेतों में काम करने से इन्कार नहीं करना चाहते...... मगर हम मरे जानवरों को खींचना और पालकी ढोना नहीं चाहते और भैंस का मांस नहीं खाना चाहते, तो इसमें इन लोगों को क्या एतराज है भला ?"

"मगर सेवक-चाकर यों सेवकाई छोड़ देंगे, तो क्या केशवानंदज्यू खुद खींचेंगे अपनी मरी भैंस को ? तुम लोग तो सिर में तेल डालकर बैठे रहोगे। गुसांई लोगों की पालकी गुसांई लोग ढोयेंगे क्या ? बेचराम, यह नेतागिरी ज्यादा दिन नहीं चलेगी। जिस समय गुसांई लोग एकदम लावारिसों की तरह छोड़ देंगे तुम लोगों को, तब पता चलेगा कि बहुत पूंछ उठा-उठाकर दौड़ना कैसा होता है ?" हरराम उठ खड़ा हुआ। आंगन में खड़ा होकर बोला—"अच्छा, रे पक्का सत्यानाश का समय आ गया है। नहीं तो तू अपने बाप पर हाथ उठाता आज ?......"

परराम ने देखा कि चीखने को तो हरराम बड़े क्रोध से चीख रहा था, मगर आंखों से लगातार आंसू छलक रहे थे। देह बुरी तरह कांप रही थी। परराम ने दौड़कर, हरराम के पांव पकड़ लिये—"गुनाह हो गया है बौज्यू, माफी दे दो। ये लो छड़ी, अपने हाथों से उधेड़ दो मेरी चमड़ी।"

हरराम एकाएक चुप हो गया। पांव छुड़ाकर, घर की ओर लौट गया।

दहलीज में आकर बैठा ही था हरराम कि तिवारीखोला की तरफ आंख उठ गयी। कुछ सोचकर हरराम उठा। बचेराम के घर तक पहुंचकर रुक गया। परराम फिर अंदर बड़बड़ा रहा था—"यार, बचेराम ! आज ससुरे इन चोट्टे बामणों-ठाकुरों के कारण मैंने अपने बाप पर भी हाथ उठा दिया।...... मगर मैं करूं क्या ? एक बार जो इस कुत्तों की जैसी जिंदगी से ऊपर उठने का इरादा कर लिया है, उसे अब तोड़ नहीं सकता। रायबहादुर किसनराम साहब कह रहे थे कि महात्मा गांधी ने अफरीका के डोमों को हरिजन बनाने के लिए गोरे-अंगरेजों के चाबुक-हंटरों की मार सही। महात्मा ही सही, वो भी आदमी हैं। वो महाजन होते हुए अगर अफरीका के डोमों के लिए ऐसी-ऐसी मुसीबतें झेल सकते हैं, तो हम शिल्पकार क्या अपनी ही जात को ऊपर उठाने के लिए कोई विपदा नहीं झेल सकते ?"

हरराम सुन रहा था। उसे लग रहा था कि आज परराम की बुद्धि विपरीत हो गयी है। वह भयभीत हो रहा था कि कहीं केशवानंद पुरोहित कुपित हो गये तो ? कहीं उन्होंने ओम विष्णु विष्णु विष्णु उच्चरित करना आरंभ कर दिया तो ?...... हरराम की कल्पना में कालीनाग का फन फैलने लगता था और वह हाथ जोड़कर, आंखें मूंद लेता था—"प्रभो, पाप छिमा।

चकाचक उजलेपन के लिए
विक्टोरिया ब्लू (नील)
00B
श्रेष्ठ किस्म की शुद्ध आधुनिकतम
अल्ट्रामरीन ब्लू (नील)

GENUINE
BEST ULTRA-MARINE
VICTORIA BLUE
00B
Manufactured in India by
Ultramarine & Pigments Ltd.
AMBATTUR (NEAR MADRAS)

पश्चिम जर्मनी के प्रतिष्ठानके सहयोग से भारतमें बनानेवाले
अल्ट्रामरीन एण्ड पिगमेण्टस् लिमिटेड
अम्बत्तूर (मद्रास के निकट)
सोल सेलिंग एजन्टस्: **केमडाइस् ट्रेडिंग कम्पनी**
३८, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई – १
३१८, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट – मद्रास – १
जिन क्षेत्रोंमें प्रतिनिधित्व नहीं है
वहां स्टाकिस्टस् चाहिए

पाप छिमा। ......

कभी-कभी, उसे यह भी लगता था कि परराम जो आज फणिधर नाग की तरह शीश उठा-उठाकर, अपनी जाति-बिरादरी के लोगों को उनकी परंपरानुगत दासता और हीन वृत्तियों के विरुद्ध जगाने की चेष्टा कर रहा है, वह उसके अंध आक्रोश और विरोध की नहीं, सराहना और सहानुभूति की अपेक्षा रखता है। परराम जो हीन वृत्तियों से उबरने की बातें करता है, उनमें तथ्य तो हैं।...... मगर हरराम को यह आशंका बार-बार घेर लेती थी कि आखिर सवर्णों से तो वैर सधेगा ही, यदि डोम-चमार एकाएक उनकी चाकरी ठुकरायी गयी तो।

उसके अलावा वह यह भी नहीं स्वीकार कर पाता था कि मरी हुई भैंसें खुद द्विज या क्षत्रिय खींचे, या कि अपने कंधों पर पालकी ढोयें। उसे यही बात सबसे ज्यादा असंभव, उलटी और अटपटी लगती थी कि जो काम पुश्तों से शूद्र करते आये हैं, उसे शूद्र ही एकाएक छोड़ दें और सवर्ण जिन कामों को अपने लिए सर्वथा निषिद्ध मानते आये हैं, उन्हें वे एकाएक करना शुरू कर दें!

हरराम की सिर्फ जाति ही अपभ्रंश नहीं थी, बल्कि सिर भी अपभ्रश होकर 'बरमांड' कहलाता था। और हरराम के बरमांड में बुद्धि भी उसी तरह सीमित थी, जैसे अंडे के भीतर की जर्दी होती है।

आज भी उसे और कुछ नहीं सूझा, तो [illegible] की तरफ बढ़ गया—"अच्छा, रे परराम! जैसी तेरी तेज बुद्धि में आता है, कर ले तू। कोई अब मेरे समझाने से समझनेवाला बेटा थोड़े ही रह गया है तू?...... मगर मेरे तो गुसांई हैं वे। पुश्त-पुश्तों से उनका नमक खा रहा हूं। मैं तो अपना कुल-धरम निभा ही जाऊंगा और अपने हिस्से का ऋण उतार जाऊंगा।"

हरराम ने निश्चय कर लिया था कि जीतराम के पिता कमलराम को साथ बुला ले जायेगा और दोनों बूढ़े जैसे-तैसे घसीटकर भैंस को नीचे खेतों की तरफ खींच लायेंगे। तिवारीखोला के घरों से नीचे की धरती काफी ढलवां थी। एक बार गोठ से गलियारे तक खींचने-भर की समस्या थी। कमलराम भी सत्तर पार पहुंच चुका था और हरराम का कहा टालता नहीं था।

धीरे-धीरे ऊपर को हरराम और कमलराम बढ़ रहे थे कि हरराम ने ऊपर सुपियाली को उतरनेवाली बटिया पर पुरोहित केशवानंद को जाते हुए देख लिया। पुरोहित केशवानंद की चाल से ही लग रहा था कि बहुत कुपित हैं। उनके सिर की चुटिया हिलती दिखाई दे रही थी। चुटिया को हिलती देखकर, हरराम को एकदम फिर पुरोहित राघवानंद का स्मरण हो आया और उसकी कल्पना में कालीनाग की आकृति उभर आयी। उसने पुकार लिया—"गुसांई, स्योमान्यो! आपके ही गोठ की भैंस खींचने जा रहे हैं हम दोनों।"

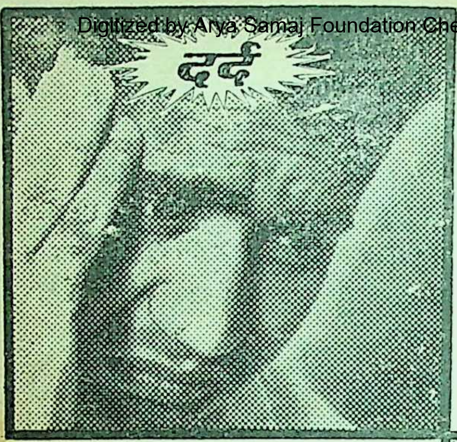

सिरदर्द में
पक्का आराम
पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- दर्द में जल्द आराम के लिए 'एनासिन' में एक अतिरिक्त दर्दतोड़ दवा है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है। सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द और बुखार में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी भी मिटाती है।

ANACIN
ANACIN
ANACIN
ANACIN

दो टिकियों का दाम
सिर्फ १३ नये पैसे

एनासिन
बेहतर है
क्योंकि इसके
४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO LTD

र्द में
राम
है
सके
है
CO LTD

......मगर तब तक पुरोहित केशवानंद मोड़ पार जा चुके थे । एक अबूझ-अनिष्ट की आशंका हरराम की आत्मा को फिर कंपा गयी । कहीं कालीनाग को मंतर कर पुरोहितज्यू ने मेरे परराम पर छोड़ दिया, तो ? अच्छा-बुरा जैसा भी है नादान, आखिरी समय का पूत तो वही है ।

सोचते-सोचते हरराम की आंखों में आंसू छलक आये और उसका कंठ थरथरा गया–विश्नुर-विश्नुर-विश्नुर ......

× × ×

पुरोहित केशवानंदजी के घर पहुंचने पर हरराम ने पदमावती बौराणी (बहूरानी) जी को सिर झुकाकर 'स्योमान्यो, बौराणज्यू !' कहा ही था कि पदमावती बौराणीजी एकदम बिफर उठीं –"हो गया, रे हरराम, हो गया । जैसी सेवा तुम डोम लोग आजकल हम लोगों की कर रहे हो, कर ही रहे हो । अहारे, कैसा सतजुग का जैसा समय था और कैसा म्लेच्छ वखत मेरी आंखों के देखते-देखते आ गया है । हमारे शिवानंद के बाबू तो आज साक्षात् परशुराम-दुर्वासा ऋषियों की तरह कुपित हो गये हैं। होंगे भी क्यों नहीं बेचारे कुपित । कहां स्नान-ध्यान पुंडरीकाक्ष करके थोकदार के यहां पाठ करने जाना था, कहां सवेरे से दोपहर तक 'तू आ रे परराम, तू आ रे नरराम !' चिल्लाते-चिल्लाते रह गये । आधी रात की मरी भैंस अभी तक बीच दहलीज में लमलेट पड़ी हुई है । आकाश में चील-गिद्ध घूमने लग गये हैं । एक गिद्ध एक बार छत पर की तुलसी के कनस्तर में ही बैठ गया था । मगर तेरा बेटा परराम न खुद आता है और न औरों को ही आने देता है । हे राम, मेरी बाछी बां-बां बिलख रही है, मगर मैं दहलीज कैसे पार करूं ? किसी डोम छोरे को लगवाकर, बाछी खुलवा देती हूं, तो बालकों के लिए दूध नहीं बचेगा ।...... ले जायेगी, रे हरराम, तुम घमंडी डोमों को तो हम ब्राह्मणों और गोमाता की हाय-हाय एकदम जड़ से धो-पोंछकर उठा ले जायेगी ।"......

"जड़ से धो-पोंछकर ले जायेगी" कहते हुए बौराणीजी ने अपने हाथों को इस तरह हिलाया, जैसे चूल्हे में पोता फेर रही हों । हरराम एकदम घबरा गया । दोनों हाथ जोड़कर बोला– "बौराणज्यू, 'छिमा बड़न को धरम है, नीच धरम अभिमान । तब तक दया न छोड़िये, जब तक घट में प्रान ।' कह रखा है । आप तो गुसांईजी, हम कमजातों की माता के ठौर पर हैं। नादानों से भूल-चूक हो जाती है; आकास के बादलों से ही यों कुपित हो जायें, बौराणज्यू, तो धरती की धूल कहां जायेगी ?... मेरा परराम तो मूरख है। शहर जाकर बिगड़ गया है नालायक छोरा ।......धीरे-धीरे समझ जायेगा । गुसांइनी, पुरोहित गुसांई का कोप शांत करा देना, माई...... भैंस उठाने को मैं और कमलराम आ गये हैं । एक-दो रस्सियां दे दो, बौराणज्यू !"

पदमावती बौराणजी का क्रोध हरराम की विनयशीलता से कुछ शांत हो गया था ।

रस्सियां ढूंढकर देते हुए बोलीं—"शाबाश, हरराम, शाबाश ! आखिर कुछ भी हो, तू सतजुगिया आदमी है । अब तो इस संसार में से सारे धरम-करम उठते ही चले जा रहे हैं । अपने-अपने कुल-धर्म को लोग तिलांजलि देने लग गये हैं । अरे, सत्य-धर्म ही नहीं रहेगा, तो शेषनाग भगवान को कहां बल मिलेगा । थोड़ा-बहुत जो कुछ भी धरम-करम शेष है, वह पुराने समय के लोगों में ही रह गया है, हरराम ! आजकल के तो हम ब्राह्मण-पंडितों के बेटे भी मय कपड़े-जूतों के खाने लग गये हैं । हमारे ससुरजी तो अंडे-मुर्गी का उच्चारण सुन लेने पर भी आचमन करके आत्मशुद्धि करते थे, मगर आजकल के लौंडे-लवार आमलेट-कबाब उड़ाने लग गये …… अहा, क्या बात है ! आखिर पुरानी कांठी है । देख तो, ये नंदा दुल्हेणी ! कैसी होशियारी के साथ फंदे डाले हैं हरराम ने ।"

पांवों और सींगों में तो ऐसे फंदे फंसा दिये थे हरराम और कमलराम ने कि जिससे भैंस को खींचने में सुविधा रहे । … मगर भैंस रात की मरी पड़ी थी, फूल गयी थी । गोठ की दहलीज भी कुछ ऊंची थी । सबसे बड़ी समस्या यह थी कि भैंस बाहर कैसे निकले ? भैंस आड़ी मरी पड़ी थी । हरराम और कमलराम ने जैसे-तैसे जोर लगा-लगा उसको सीधा कर लिया, मगर बाहर न निकाल सके ।

हरराम अपनी पूरी बढ़ऊ शक्ति लगा-लगाकर अब हांफने-खांसने लग गया था, मगर भैंस टस से मस नहीं हुई । एक घोर निराशा के साथ हरराम ने कमल की तरफ देखा, तो कमलराम को भी दम हांफता हुआ पाया । पीछे मुड़ा, पदमावती बौराणीजी की आंखों में कुछ ऐसी कटुता दिखाई पड़ी कि यह का वह साहस नहीं जुटा सका कि भैंस दोनों से नहीं उठेगी ।

कमलराम को सींग पकड़कर बा ठेलने को कहकर, हरराम दहलीज से बा खड़ा हो गया और फिर सींगों में फंसा हुई रस्सी और पूंछ दोनों को पकड़ अपनी पूरी शक्ति लगाकर खींचने ल बहुत ज्यादा जोर लगाने के कारण उस आंखों की पुतलियां चढ़ गयीं । उनमें ए दम धुंधलका छा गया । हरराम को भैंस पूंछ ऐसी लगी, जैसे साक्षात् कालीनाग एकदम थरथराकर, हरराम ने अपना जोर लगा दिया । साथ ही, एक प्रेरणा से, उसने पुरोहित राघवानंदजी मंत्र भी पढ़ा । सोचा शायद, मंत्र के या तो भैंस ही हलकी पड़ जाये, या उस ही बल बढ़ जाये ।

तीन बार अपना पूरा-पूरा जोर कर, हरराम ने हांफते हुए कंठ से मुंह में मंत्र पढ़ा—ओम बिश्नुर-बिश्नुर-बिश्नुर……

ओम्-बिश्नुर-बिश्नुर-बिश्नुर……
बिश्नुर-बिश्नुर-बिश्नुर……

चौथी बार उसकी देह एक ओर गयी । कमलराम चीख उठा—"हरराम तो सुरगवास हो गया है, बौराणज्यू !"

साम्यवादी शासन में चीनी जन-जीवन की वेदना और विडम्बनाओं की सच्ची तस्वीर पेश करनेवाला एक चीनी उपन्यास, जो हिन्दी में "और यांगसी बहता रहा" शीर्षक से नेशनल अकादमी, ९ अंसारी मार्केट, दरियागंज, दिल्ली-६, से प्रकाशित हुआ है। संक्षेपकर्ता हैं गंगाशरण सिंह।

सूखहा
खलिहान ही
रहा

—नान कुंग-पो

धायं !... सहसा गोली चली । सुरक्षा-दल के सैनिक तट-बंध के भीगे किनारे पर दौड़-दौड़कर अपनी मुस्तैदी दिखाने लगे । थोड़ी देर में फिर खामोशी छा गयी ।

सरकंडों के छप्पर के नीचे सोये शरणार्थी मजदूर, जो गोली की आवाज से उठ बैठे थे, ऐसे वापस सो गये, जैसे कुछ हुआ ही न हो । उनके लिए यह आम बात थी । मगर वांग चिग-ची यहां नया आया था और इस वातावरण से सर्वथा अनभिज्ञ था । उसकी नींद उड़ गयी ।

वह छप्पर की शेड से बाहर आकर खड़ा हो गया । सामने तूफानी लालटेनों की पंक्तियां झिलमिला रही थीं । तेज हवा दरिया की सतह पर सनसनाती फिर रही थी । तूफानी लहरें बांध की दीवार से टकरा रहीं थीं । उस गूंज-गरज के वातावरण में रह-रहकर संदेह होने लगता था कि न जाने क्या होनेवाला है ।

"चिंग-ची !" चाचा स्यू केंग-सेंग ने उसे पुकारा—"सोने का समय है और तुम्हें सैर की सूझी है । चलो, थोड़ी देर सो लो मेरे बेटे ! मुमकिन है कल रात आंख झपकाने का भी मौका न मिले ।"

वह चाचा के पीछे-पीछे झोंपड़ी में चला आया । भीतर गंदगी और गीली धरती की दुर्गंध बसी हुई थी । वह चटाई पर लेट तो गया, पर सो न सका । स्मृतियों की चित्रावलियां उसके मस्तिष्क-पटल पर गुजरने लगीं ।

"चिंग-ची बेटे ! जीवन की पराजयों
अब तुम्हें सम्मानपूर्वक स्वीकार करना है
तुम उन्हें सहन करने के लिए तैयार
जाओ । अपने ऊपर काबू रखो, ताकि
तक न निकले । जो सहिष्णुता से दु:ख सहे
वही अपने अस्तित्व को बचा पायेगा ।
सहनशक्ति अगर न रही तो समझो,
कुछ हाथ से गया ।......बेटा, अब परि
स्थितियां पहले-जैसी नहीं रहीं ।"

ये उसके पिता के अंतिम शब्द थे ।
मान दुर्दिनों में वह इन्हीं शब्दों की याद
अपने भीतर साहस और उमंग का
भव करता था ।

वांग चिंग-ची एक सुसंस्कृत परिवा
में पैदा हुआ था । उसके पिता अधिक
लिखे न होते हुए भी अपने विशिष्ट गुणों
कारण स्लिग की घाटी में सम्मानित
सर थे । उनकी इच्छा थी चिंग-ची खूब
लिखकर योग्य बने । पर उन दिनों
युद्ध के कारण बड़ी अशांति थी । फिर
वह यूनिवर्सिटी में पहुंच ही गया ।

लेकिन पिता के अचानक निधन से उ
जीवन का ताना-बाना बिखर गया ।
मय ही परिवार का बोझ उसके कंधों
आ गया । वह अपनी जिम्मेदारियों
जैसे-तैसे निभाये ले जा रहा था कि
और आघात हुआ । १९५४ की वर्षा
ऋतु में उसका घर बाढ़ के आघात में
गया । हजारों दूसरे बेघर लोगों की त
उसने भी हांको नगर की राह पकड़ी ।....
उसने अपनी बूढ़ी मां और छोटी बहन

और

सहारा बनने की पूरी कोशिश की और फिर जे सियूमिन थी ……

सियू का खयाल आते ही उसकी बेचैनी और भी बढ़ गयी । उसने अपनी आंखें बंद कर लीं । सियूमिन का कोमल अंडाकार मुखड़ा और शरमीली मुस्कान उसकी कल्पना में नृत्य करने लगे ।…… कैसे उससे परिचय हुआ, परिचय परवान चढ़ा और कैसे धीरे-धीरे दोनों प्रगाढ़ प्रेम में रंग गये । ल्पिग की बाढ़ ने सियूमिन को अनाथ बना दिया, तो वह वांग-परिवार के साथ हांको चली आयी थी । साथ-साथ रहकर, एक-सी विपत्तियां सहन करते हुए दोनों का प्रणय तप-तपकर कुंदन होता गया ।

चिग-ची ने लाख कोशिश की कि प्रेम के बंधन से मुक्त ही रहे, लेकिन उसका बस न चला । अब सियूमिन उसका सर्वस्व थी । जीवन के घटाटोप अंधेरे में एकमात्र आलोक-बिंदु थी ।

चटाई पर लेटे-लेटे वह सुखों के इंद्र-धनुष बनाने लगा । मगर एक भयानक खयाल उसे आया और उसकी सुखद कामनाओं का शीराजा बिखर गया ।…… भला, इस प्रेम की उपयोगिता क्या है ! यद्यपि उनकी मंगनी हो चुकी थी, पर शादी होने की कोई आशा न थी । वह बेचारा एक शरणार्थी था । न उसका घर था, न दर । शादी करे, तो कहां ? शरणार्थी-कैंप में तो इतनी भीड़-भाड़ थी कि वह अपनी मंगेतर से तसल्ली और सांत्वना के दो बोल भी नहीं बोल सकता था । सारा जीवन किसी तरह अपने आपको बचाये रखने का एक सतत प्रयत्न मात्र बनकर रह गया था । ऐसी विपदा में कोमल भावनाओं के लिए स्थान कहां था ? वांग चिग-ची आशा-निराशा के भंवरजाल में चक्कर खाने लगा। सच ही, नया वैवाहिक जीवन शुरू करने के लिए कैसी बेमौका घड़ी थी !

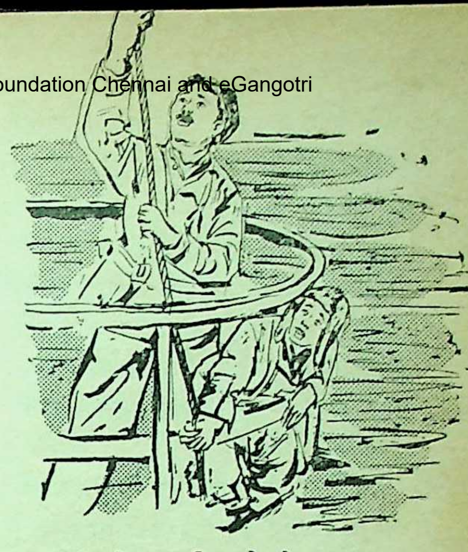

मौत से हाथ मिलाने को मजबूर
दो मजदूर

पौ फटी । बांध पर काम करने जाने का वक्त हो गया । स्यू केंग-सेंग ने वांग को पुकारा—"कोई तुम्हारी तलाश में है ।"

"अरे, सियूमिन तुम !" वांग बाहर आकर आश्चर्य और खुशी से चीखा —"तुम्हें रात में यों अकेले यहां नहीं आना चाहिये।"

सियू को यह सुनने की फुरसत कहां थी। वह बड़ी मुश्किलों से इस ठिकाने पर आ पायी थी और काफी खोज-बीन के बाद अंततः उसे पाकर प्रसन्नता में डूबी हुई थी।

मां, बहन और सियूमिन बांध से दूर एक शरणार्थी-कैंप में रहती थीं। वांग सियू को एक ओर लाया और पूछा—"सब कुशल है न? मामा तो ठीक हैं?"

"मामा बिलकुल ठीक हैं।" सियू शरमाती हुई बोली—"उन्हें यह डर था कि यहां खुली जगह पर खासी ठंड होगी। उन्होंने यह सूती जाकेट भेजा है। वे कहती हैं—ध्यान रखना, कहीं तुम्हें सरदी-वरदी न लग जाये।"

वांग बेहद खुश था कि सियूमिन को उससे मिलने का अच्छा बहाना मिला है।

"रात के खाने में से मैंने कुछ बचा लिया था," सियू एक कागज का पूड़ा वांग की ओर बढ़ाती हुई बोली—"इससे मैंने यह चावलों का कोफ्ता बना लिया है, तुम खा लेना।"

सामान्य स्थिति में सियू का यह आचरण चाहे विशेष महत्व का द्योतक न होता, लेकिन जब हर आदमी भूख के जबड़ों में जीवित हो, तब ऐसा बलिदान सचमुच महान था!

वांग सोच रहा था—प्यार करने और प्यार पाने के मामले में कितना सौभाग्यशाली है वह! उसका मन हुआ कि अपनी प्रेयसी को आलिंगन में कस ले, मगर रुक गया कि कहीं कोई उन्हें देख न ले।

"मेरी सियूमिन!" उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—"जब भी मौका मिला, मैं तुमसे मिलने कैंप आऊंगा।" और चावल के कोफ्ते को सियूमिन के होंठों की ओर बढ़ाता हुआ बोला—"लो खाओ। यहां बांध पर जो खाना हमें मिलता है, वो तुम्हारे शरणार्थी-कैंप से कुछ बेहतर होता है।" अंततः दोनों ने मिलकर वो भात का कोफ्ता खाया।

"सियूमिन! बांध पर अकेली न आ करो, खासकर रात को तो कभी न आ करो। मामा से कहना, मैं बिलकुल ठीक हूं, चिंता करने की कोई बात नहीं।... और अपना भी खयाल रखो। मैंने सु है, कैंप में पेचिश फैल रही है?"

"हां।" सियू धीरे-से बोली।

"चिंता न करो सियू, बाढ़ उतरते ही हम घर चलेंगे और शादी कर लेंगे।"

सियू जब वापस जाने को मुड़ी, तो वां ने देखा, उसके गालों पर आंसू बह रहे हैं। उससे न रहा गया और सियू को बाहु में भरकर बोला—"रोओ मत सियूमिन! ये दिन सदा तो नहीं रहेंगे। आज हर व तकलीफ देनेवाली जरूर है, मगर एक दि सब ठीक हो जायेगा और हम सुख से सा साथ रहेंगे।" सियू की गीली आंखों को चूमकर उसने तसल्ली दी।

इतने में सायरन बज उठा। वांग ने सियू को भीगे मन से विदा दी और बां की राह ली।

यांगसी नदी पर हांको नगर की र के लिए बनाया गया यह चांग कंग नाम बांध भूमितल से ५० फुट ऊंचा था। मिट्टी पत्थर की बनी हुई इसकी दीवार बाढ़ के दिनों जब नीची साबित होती, तो इसके ऊपर रेत के बोरों, मिट्टी और लकड़ी के और

तल्लों से एक पूरक बांध बनाया जाता ।

इस बार बहुत जोरों की बाढ़ आयी । बाढ़ग्रस्त इलाकों से आये हुए शरणार्थी परिवारों को कैंपों में बसाया गया और उनमें से मर्दों को बांध पर काम करने को भेज दिया गया । बदले में इन्हें भोजन दिया जाता था ।

वांग जब बांध पर पहुंचा, तो देखा--मजदूर चींटियों की तरह फैले हुए हैं । यद्यपि दरिया का पानी खतरे की सतह से ऊंचा चढ़ता जा रहा था; लेकिन फिर भी वे सुस्ती और अनमने होकर काम कर रहे थे। उसकी समझ में यह पहेली नहीं आयी। उसे आश्चर्य हुआ कि जीवन और मृत्यु के इस संघर्ष में लोग उदासीन क्यों हैं ।

उसने स्यू केंग-सेंग से इसका कारण जानना चाहा । स्यू ने चिढ़कर कहा–"दूसरों से तुम्हें मतलब ? बस अपने काम से काम रखो !"

जिस टोली में वह काम करता था, चाचा स्यू उसके फोरमैन थे । वे उसके अपने प्रांत स्लिग के अध्यक्ष थे और उसके पिता से उनकी अच्छी मित्रता थी ! बाढ़ के कारण उन्हें भी यहां आना पड़ा था । वांग उनका बहुत आदर करता था; मगर उनका यह व्यवहार उसकी समझ में नहीं आया ।

इतने में लाउड-स्पीकर से आवाज आयी–"आठवां सेक्शन सावधान !......... रेत के बोरे......जल्दी !"

वांग ने देखा–लोग जान-बूझकर कान नहीं दे रहे । वे व्यस्तता का दिखावा करके कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं [illegible] की फिराक में हैं ।

"चलो जी !" एक कार्यकर्ता ने चिंग-ची को कहा–"भागकर आठवें सेक्शन जाओ और दरार में मिट्टी भरने में उनका हाथ बंटाओ । अपने साथ दो-एक आदमी और लेते जाओ ।"

वांग की टोली के साथ ली और चांग उसके पास ही खड़े थे । उसने उन्हें चलने को कहा और आठवें सेक्शन की टोली में मिलकर काम पर जुट गया । पांच-छः घंटे में दरार भर गयी। इस पर सुपरवाइजर ने भाषण दिया, जिसमें सामूहिक श्रम की प्रशंसा की गयी थी । वांग ने महसूस किया कि भाषण में खतरे को ख्वामख्वाह बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था। उसे लगा–सारा भाषण कोरी लफ्फाजी है ।

जब वह डेरे पर गया, तो ली और चांग उससे लड़ने पर उतारू थे। पर इसका कारण उसकी समझ से बाहर था । बाद में पता चला कि वह जो डटकर काम करता है और आज ली व चांग को भी उसने काम में जुटा दिया था–यही उसके वैर का आधार था।

रात को चाचा स्यू ने एकांत पाकर कहा–"मेरे भाई, अधिक उत्साह दिखाने की आवश्यकता नहीं है । तट-बंध की दुनिया अनोखी है; मुनासिब है कि तुम उसे समझ लो ।" वे भेद-भरे स्वर में बोले–"यहां जो भी काम करता है, कम्युनिस्ट पहरेदारों को गालियां देता है । तुमने मुझे पूछा था कि लोग सुस्ती से काम क्यों करते हैं । लो,

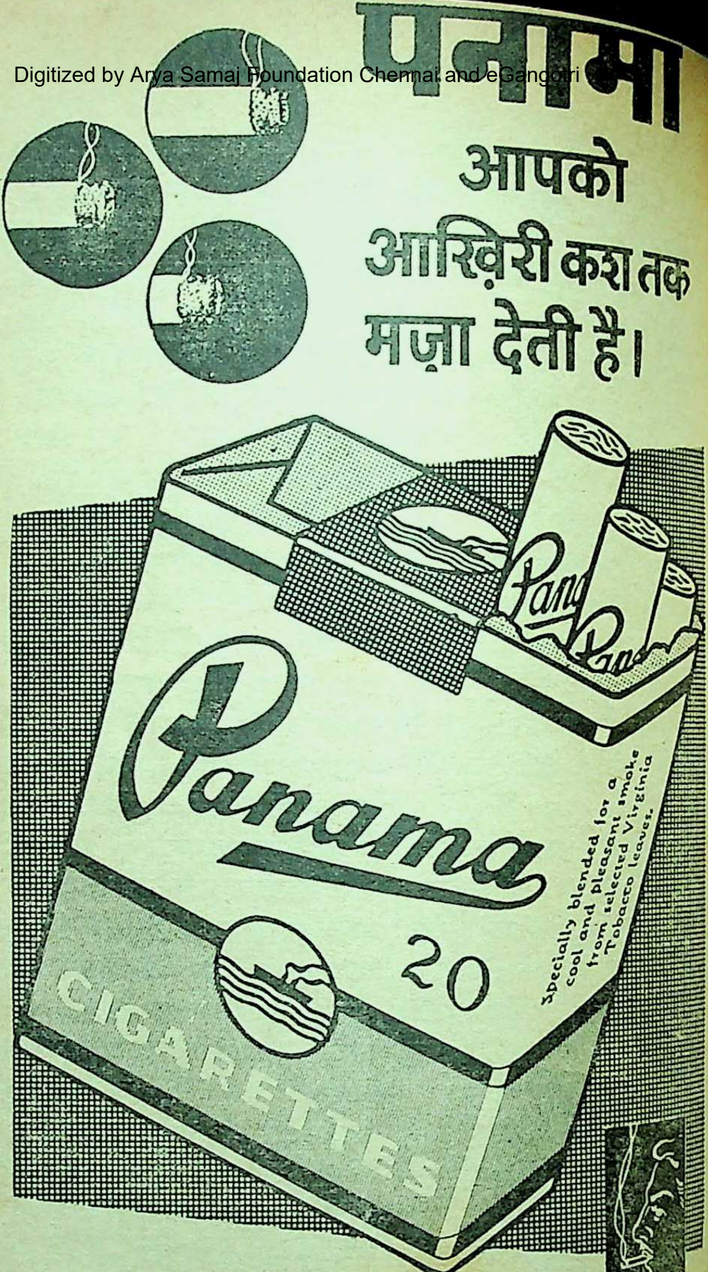

पनामा
आपको
आख़िरी कश तक
मज़ा देती है।

Panama
Panama
Panama
20
CIGARETTES
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves.

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबैको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई -५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

Greens' Advtg

GT. (P) 633 Hin.

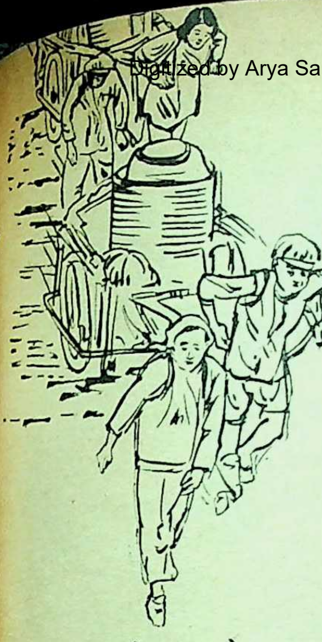

मानव जहां बैल-घोड़ा है!

अब तुम्हें बताता हूं। उन्हें कम्युनिस्टों से नफ़रत है–इसका राज भी तुम धीरे-धीरे समझ जाओगे। दिन में उस वक्त तुमसे यह बात कहना खतरे से खाली नहीं था। कोई नहीं कह सकता कि कौन छुपकर सुन रहा है। हम सबके बीच भेदिये छोड़ रखे गये हैं, पता नहीं कब किसकी शिकायत कम्युनिस्टों के पास पहुंच जाये और उसका काम तमाम कर दिया जाये।"

वांग अब भी बहुत-कुछ अंधेरे में था– "लोग कम्युनिस्टों से घृणा करते हैं; लेकिन काम से उसका क्या वास्ता?" उसने कहा– "बांध टूटता है, तो मरनेवालों में कम्युनिस्ट ही नहीं, हम भी होंगे।"

"हां, यह तो ठीक है" स्यू ने उत्तर दिया–" मगर बांध बरबाद हो या न हो, हम हर सूरत में मरेंगे। बस, जल्द या देर की बात है।"

"लेकिन बांध को बचाना हमारी जिम्मेदारी है। हमें तो अपना काम ईमानदारी से...... "

"चिंग ची!" चाचा ने चिढ़कर कहा– " यह समय आत्मा की आवाज पर चलने का नहीं है। इससे तुम्हारा भला नहीं होगा। अभी तुमने कम्युनिस्टों के तौर-तरीकों का पूरा मजा नहीं चखा है।

बाहर कोई चीखा–"बांध के दरवाजे में सूराख हो गया है।"

लाउड-स्पीकर से आदेश सुनकर वे मजदूर भी काम पर लौट आये, जो अभी-अभी ड्यूटी से उतरे थे। वांग चिंग-ची जब बांध पर पहुंचा, तो वहां हड़बोंग मची हुई थी। उसके एक मजदूर मित्र लो हाइ-पिंग ने कहा–"तुम्हें मालूम है, ऐसे वक्त में हम अच्छा-खासा हंगामा खड़ा कर सकते हैं, अगर हमारे पास केवल सौ राइफलें हों।"

"तुम्हारा दिमाग तो नहीं चल गया है?" चिंग-ची ने हैरान होकर कहा–"सपना देख रहे हो क्या?"

"सपना नहीं, सचमुच मैंने गंभीरता से सोचा है।" लो ने कहा–"सौ राइफलें हमारे पास हों, तो बांध के कई भागों पर हमारा कब्जा हो सकता है। हम जनरक्षक दस्ते पर काबू कर सकते हैं। इससे छः-सात सौ बंदूकें और कारतूस की पेटियां भी हमारे हाथ लग जायेंगी। आदमी हमारे पास हजारों हैं। रेल की पटरियां बह चुकी हैं। कम्युनिस्ट चाहें भी, तो बाहर से सेना नहीं मंग

घर में धुली
सर्फ़
से धुली
Surf
AMAZING BLUE POWDER
FOR THE WHITEST WASH!

सर्फ़ से घर में कपड़े धोइए, और देखिए धुलाई का कमाल ... अत्याधिक सफ़ेद, अपूर्व साफ़ और अत्यंत आसान! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है! अपनी सारी धुलाई सर्फ़ से क़ीजिए ...बच्चों के वस्त्र, कमीज़ें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं.

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 44-77 HI

सकेंगे ।"

ली ने कहा–"चुप भी कर यार, किसी ने सुन लिया तो –"

"तो क्या ?" लो जोश से बोला–"मरने से यहां कौन डरता है जी ! जो बांध पर काम करता है, वह मरने को हर पल तैयार रहता है । मैं तो अपनी बीवी को बीसियों बार कह चुका हूं कि मर जाऊं, तो गम न करे । बस, बच्चे का पालन-पोषण जरा ढंग से करे । खुद उसके जी में आये, सो करे । डाका डाले, चोरी करे, दुबारा शादी रचा ले, या रंडी बन जाये ......।"

"ऐसी पागलों की-सी बातें क्यों करते हो भाई ?" चिंग-ची के दिल को धक्का-सा लगा ।

लाउड-स्पीकर फिर गरजा–"चंग नदी का फाटक खोल दिया गया है । बाढ़ का रुख मोड़ा जा रहा है ।"...... सुनकर चांग ने मुंह बिगाड़ा–"वही फुटपाथी मजमेवालों-जैसी बातें ! ......सुनते जाओ, अगला वाक्य यही होगा–जनता की संगठित और महान शक्ति ने प्रतिक्रियावादी बाढ़ का मुंह फेर दिया !"

"खूब कहा ! प्रतिक्रियावादी बाढ़ ! हा: हा: !" उसके साथी हंस पड़े ।

लेकिन उनकी हंसी को एकाएक सांप सूंघ गया । सामने से कम्युनिस्ट सुपरवाइजर चो पाइ-हंग चला आ रहा था । बात करते हुए वह पागल कुत्ते की तरह भौंकता था । हमेशा गंदी गालियां उसके मुंह पर रहती थी । लोग डरकर उसे 'शेर' कहते थे ।

"लानत है तुम पर !" वह आते ही गुर्राया–"मिट्टी के लौंदो, चलते-फिरते नजर आओ !"

उसके पीठ मोड़कर जाते ही मजदूरों ने गुस्से से थूका । एक बोला–"मुट्ठी-भर चावल खिलाकर इससे भी हमारे-जितना काम लिया जाये, तो साले को पता चले !"

"काश, मेरे पास सौ बंदूकें होतीं" !...... लो हाइ-पिंग ने आह भरकर अपना पुराना राग अलापा ।

"मैंने सुना है, वेन आह-जे की बहन सेंग फेन और 'शेर' में अनुचित संबंध हैं ।" तो-पाओ ने कहा ।

"फटकार है उस रंडी पर !" चांग गुस्से में फुफकारा ।

इतने में खतरे के घंटे बजने लगे । एक कम्युनिस्ट वाचमैन ने इनमें से कई लोगों को पकड़ा और साथ ले चला । बांध में एक जगह सूराख हो गया था, जिसे रोकने के लिए मजदूरों को मजबूर किया जा रहा था कि वे रेत के बोरे लेकर पानी में गोता लगायें और छेद बंद करें । मजदूर कोई पेशावर गोताखोर न थे, न गोताखोरी का कोई सामान ही उन्हें दिया जाता था । लिहाजा जिन्हें गोता लगाना पड़ता, वे शायद ही वापस लौटते । मौत के मुंह में यों झोंका जाना, यहां का नित्यक्रम बन गया था । हुक्म हुआ और एक टोली पानी में कूद गयी ।

चिंग-ची और चांग उस वक्त दूर खिसक

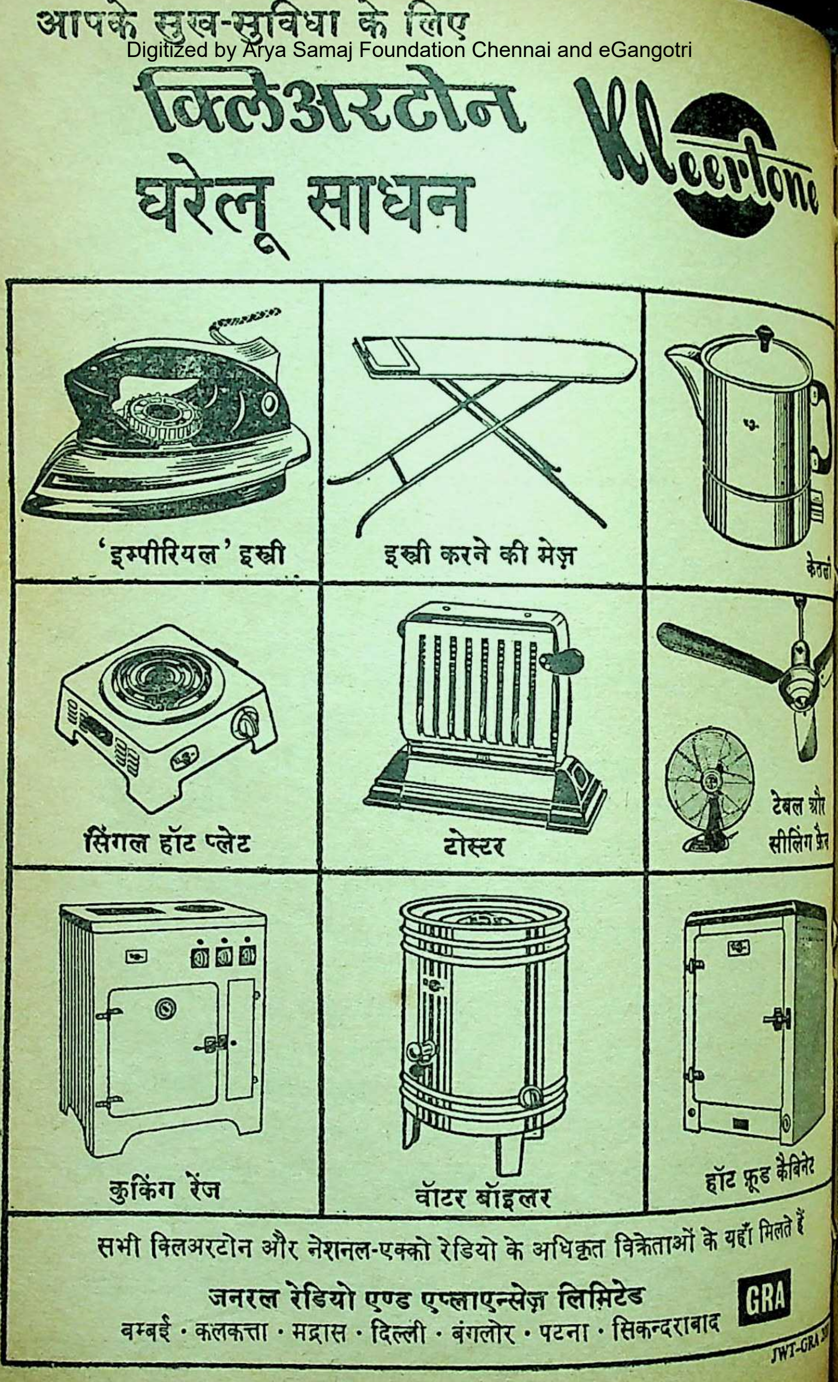

आपके सुख-सुविधा के लिए

क्लिअरटोन घरेलू साधन

Kleertone

'इम्पीरियल' इस्त्री
इस्त्री करने की मेज़
केतली
सिंगल हॉट प्लेट
टोस्टर
टेबल और सीलिंग फ़ैन
कुकिंग रेंज
वॉटर बॉइलर
हॉट फ़ूड कैबिनेट

सभी क्लिअरटोन और नेशनल-एक्को रेडियो के अधिकृत विक्रेताओं के यहाँ मिलते हैं

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · दिल्ली · बंगलोर · पटना · सिकन्दराबाद

GRA

JWT-GRA

केतली
टेबल और सीलिंग फ़ैन
ड कैबिनेट
मिलते हैं
RA
JWT-GRA

गये थे, अतः बच गये । बाद में जब वे घटनास्थल पर पहुंचे, तो वहां कई लाशें पड़ी थीं । एक वेन आह-जे की थी । चिग-ची तो हाइ-पिंग की तलाश में था । चाचा स्यू ने उसे बताया कि उसकी लाश नहीं मिली है ।

“क्याऽऽऽ?” चिग-ची अचरज में डूब गया । जो आदमी अभी-अभी तरह-तरह के हौसले बांध रहा था, ऐसे खत्म हो सकता है, जैसे कोई बात ही न हो !

“क्या सचमुच हाइ-पिंग मर गया !” उसे बड़ा सदमा पहुंचा था ।

“खैर मनाओ कि तुम बचे हुए हो !” चाचा स्यू ने कड़वे स्वर में कहा ।

पर यह कहने के साथ ही स्यू भीतर-ही-भीतर कराह उठा । अपने जीवन में उसने बड़ी-बड़ी मुसीबतों का मुकाबला किया था; पर जीवन की ऐसी उपेक्षा उसके लिए भी असह्य थी । लोगों को यों जान खोने पर विवश करना एक पैशाचिक कार्य था ।

एक बूढ़ा मजदूर जिसने १९३१ की बाढ़ भी देखी थी, चांग से कहने लगा– “उसे वह बाढ़ आज भी याद है । इस बरस का सैलाब अभी इतना खतरनाक नहीं हुआ । अगर पहले से सावधानी बरती जाती, तो इस समय इतनी मुसीबतें न आतीं ।”

“हुंह, सावधानी !” बूढ़े की बात से चांग का क्रोध भड़का–“वे सावधानी क्यों बरतने लगे ! और कौन उन्हें सहयोग देता? बड़े मियां, तुम्हारे खेत छिने होते, तुम्हारे बंधु-परिजनों को गोली मार दी गयी होती, तो तुम्हें पता चलता !......वे हमें आदमी कब समझते हैं ?”

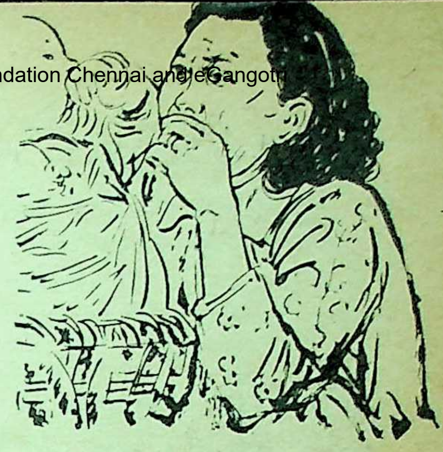

हाइ-पिंग की विधवा बच्चे की जीवन-रक्षा के लिए अपनी देह बेचने लगी ।

लोगों का ध्यान वेन आह-जे की बहन की ओर गया । वह लड़खड़ाती हुई अपने भाई की लाश के पास आकर घुटनों के बल बैठ गयी ।

“डायन !” चांग ने गाली दी –” इसे कोई समझाये कि तेरे भाई की लाश तेरे आशिक की तरफ से तोहफा है !”

चांग की बात उस तक नहीं पहुंची; मगर वह चीख-चीखकर कह रही थी–“इसे दरिया में फेंक दो और तमाम लोगों को बता दो कि यह कैसे मरा है !” वह घृणा और प्रतिशोध की ज्वाला में जल रही थी।

चिंग-ची के हृदय में खलबली हो रही थी –“इसी तरह किसी दिन वह भी......” और इस भयानक खयाल से उसका सिर घूमने लगा ! वह अपनी मां, बहन और मंगेतर–तीन औरतों–के जीवन का एकमात्र आशा-केंद्र था । वह नहीं चाहता था कि

उस पर [illegible] सवार हो । पर उसका कुछ भी बस नहीं चल रहा था ।

किसी तरह मौका निकालकर वह कैंप गया । वृद्धा मां उसके लिए बेहद चिंतित थी । उसे पाकर बलाएं लेने लगी ।

"बाढ़ का क्या हाल है ?" सियूमिन ने पूछा ।

"पहले से खतरा कम है । पानी उतर रहा है ।" चिंग-ची ने झूठी तसल्ली दी ।

"तब तो खुशी की बात है, " मां ने कहा–" उम्मीद है, हम जल्दी ही घर वापस चलेंगे । यहां के आदमी तो आदमियों की तरह लगते ही नहीं । रात के खाने पर सिया-ओ की पत्नी ने कुछ चावल और मांगे, तो जवाब में बुढ़िया को सरकारी नौकर का थप्पड़ मिला ।"

बहन आह-च्यून अपना शरीर खुजाये जा रही थी–"भैया, क्या बांध पर भी ऐसी ही खटमल-मच्छरों की फौज है ?"

"वहां हालत ऐसी नहीं है ।" उसने अपनी भोली बहन को समझाया । वह १४ वर्ष की थी और जवानी की दहलीज पर कदम रख रही थी ।

मां की मौजूदगी के कारण सियूमिन जरा दूर बैठी थी । उसकी हिम्मत ही नहीं हुई कि वह चिंग-ची के पास लेट रहे । उसका दिल तेजी से धड़कने लगा । कल्पना में वह दिन नाचने लगे, जब वे घर जायेंगे, उनकी शादी हो जायेगी और जिंदगी के दिन साथ-साथ हंसी-खुशी में बिता सकेंगे ।

बांध पर जिस दिन से मौतें शुरू हुई थी; शरणार्थी-कैंप की जिंदगी पर मा सा छा गया था । किसी का पति, किसी का बेटा और किसी का भाई मारा गया था । अतः रोना-धोना मचा रहता । हाइ- की विधवा सदमे से पागल हो गयी थी ।

चिंग-ची को जरा एकांत मिला, उसने सियूमिन का हाथ अपने हाथों में ले कहा–"हाइ-पिंग पर जैसी गुजरी, मुझ पर भी गुजर सकती है ! सियूमि अगर मैं मर जाऊं, तो रंज न करना, हिम्म से जिये जाना ।"

"चिंग-ची !" सियू फूट पड़ी -" बातें न किया करो । उन्हें ऐसा मौका ही दो कि तुम्हें मार सकें ।"

"रोओ मत सियू ! हमारे हाथ में कु नहीं है ।"

विदा के वक्त उसके मन में ग निराशा थी । पता नहीं यह विछोह अस्था है या ......। आगे सोचने का साहस न था उसमें ।

रात को एक और घटना घटी । मृत आह-जे की बहन चो पाइ-हंग (शेर) से मि गयी । दरअसल वह अपने भाई के लि कुछ सुविधाओं की भिक्षा मांगने, पहले उससे मिल चुकी थी । अपना सतीत्व दे उसने एक व्यर्थ-सा, कभी न पूरा होनेवा वायदा खरीदा था ।...... और अब उ पर पानी फिर चुका था । आज अभि के साथ उसके छुरे की धार पाइ-हंग कलेजे में तैर गयी और वह खुद दरिया डूब गयी ।

गर्म मौसम आप को कभी परेशान नहीं करेगा....

घमौरियों से पूर्ण सुरक्षा के लिए
इस्तेमाल कीजिये

रेमी

रेमी बोरेटेड
टाल्कम पाउडर
* टायलट * डस्टिंग
* फेस पाउडर भी सुलभ है।

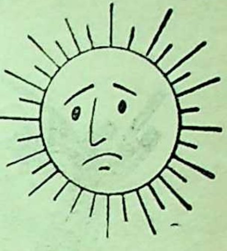

MPS-RG. 4 HIN.

एकमात्र वितरक : ए.वी.आर.ए. एंड कम्पनी, बम्बई—२, मद्रास—१, कलकत्ता—१

आप की रसोई में
नयी रुचि लाइये

Saffola
REFINED
KARDI
OIL

सफोला

रसोई का
सहृदय
साधन

अब रसोई का नया तरीका अपनाइये। फीके सुनहरे रंगके शुद्ध करड़ी के तेल सफोला में ही खाना पकाइये। करड़ी के तेल में संपृक्त चरबीयुक्त आम्ल तत्व अति कम मात्रामें होने से धमनियों के सख़्त होने का या उससे पैदा होने-वाली खतरनाक बीमारी का भय नहीं रहता; इसलिये करड़ी के तेल की डाक्टरों ने बड़ी सराहना की है।

अच्छी रसोई अब कोई चिन्ता की बात नही रही। खाना पकाने के लिये हमेशा उपयोग में लाइये सफोला – रसोई का सहृदय साधन।

सफोला ♥

सफोला मिलने में आपको कोई कठिनाई हो तो आपके
निकटवर्ती सफोला–विक्रेता की जानकारी के लिये हमे लिखें।
दि बाम्बे आयल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड,
कानमूर हाउस, बम्बई ९

OBO-8A-hin

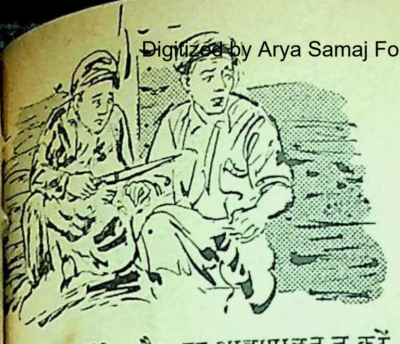

जो मजदूर सीधे तौर पर आज्ञापालन न करें, उन्हें ताकत के बल पर सीधा किया जायेगा।

दूसरे दिन की बात है। चिग-ची को चौथे सब-डिवीजन के दफ्तर में बुलाया गया। उसे आदेश मिला कि वह कम्युनिस्टों की ओर से कामचोर मजदूरों और दुश्मन के एजेंटों पर जासूसी किया करे। मगर दुश्मन के एजेंट कौन हैं—बेचारे, बांग चिग-ची को कुछ भी पता न था। वह जान बचाने को हां-हां करता रहा। वहीं उसने देखा कि उसकी टोली के मजदूर साथी चांग को पकड़कर बुलवाया गया है और उसे दुश्मन का एजेंट और ताइवान का जासूस कहकर कैद कर लिया गया है।

चिग-ची को वहां से छुटकारा मिला, तो वह सोच रहा था कि चांग की यह दुर्दशा इसीलिए हुई कि वह बांध पर अक्सर शिकायतें और आलोचनाएं करता रहता था। लेकिन उसे दुश्मन का एजेंट कहने में क्या तुक था? वह तो एक निराश युवक था, जो आंखों देखे अन्याय और अत्याचार के कारण आवेश में आकर उनका जिक्र करके अपना जी हल्का कर लेता था।

चांग के साथ अनेक मजदूरों की मनोभावना भी उसके दिमाग में गूंज गयी–"अच्छा है, बांध टूट जाये, ताकि जनता के साथ-साथ कम्युनिस्ट भी खत्म हो जायें।"

पिछले कई वर्षों से लोगों ने कोशिश की थी कि जो जीवन-पद्धति उन पर ठूंसी जा रही है, उसका विरोध करें; लेकिन उसका कोई नतीजा नहीं निकला। यह ऐसा ही था, जैसे कोई बर्फ के फैलते हुए पहाड़ को अपने खाली हाथों से रोकने की कोशिश करे। लोग सड़े अंडों की तरह कुचल दिये गये। विरोध से असंख्य जिंदगियां खत्म हो गयीं, फायदा कुछ भी नहीं हुआ।

चाचा स्यू ने चिग-ची को देखा, तो कहा– "तुम किसी तरह कोशिश करके यहां से खिसक जाओ और कैंप में अपनी मां से मिल जाओ। जब से उसने किसी से सुन लिया है कि तुम्हें चौथे सब-डिवीजन में बुलाया गया है, तभी से फिक्र के मारे उसका बुरा हाल है।"

कई मुसीबतों से जूझता हुआ चिग-ची कैंप पहुंचा। मां की जान-में-जान आयी। सियूमिन को वहां न देखकर उसके बारे में पूछा, तो मां ने बताया–"उसे जब पता चला कि तुम्हें कम्युनिस्टों ने बुलाया है, तो वह इतनी परेशान हुई कि तुम्हें देखने के लिए निकल गयी।"

चिग-ची चिंता में डूब गया। हाय, वह मुझे ढूंढ़ने बांध पर गयी है! हे ईश्वर, अब तो अंधेरा भी हो चला है। दो दिन पहले दो औरतें अपने पतियों से मिलने बांध पर गयी थीं। सात-आठ लोगों ने उन्हें पकड़-

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

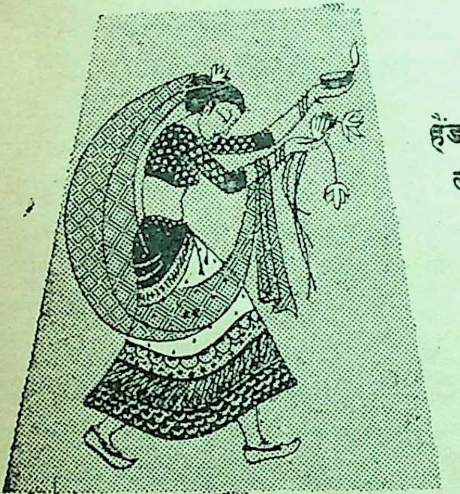

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY.
INDU FABRICS
BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं १

कर उनसे अपना मुंह काला किया था ।

"मामा, उसे बांध पर कभी न जाने दिया करो । वहां हर तरह के लोग हैं । औरत की इज्जत वहां सुरक्षित रहना कठिन है ।"

"मैं कब चाहती थी कि जाये, चिंता के मारे वह नहीं मानी ।" मां की आंखों में आंसू आ गये–"हाय, बेचारी सियूमिन ! उसका तो घर भी नहीं बसा । अकेले में वह सिर्फ तुम्हारे बारे में सोचती रहती है ।"

"भैया, तुमने खाना खाया ?" नन्ही बहन ने पूछा ।

"नहीं, ओह......हां, खा लिया है !"

रात का खाना उसे यद्यपि मिला नहीं था; पर यह बात वह अपनी मां और बहन पर प्रकट नहीं करना चाहता था ।

बांध पर लौटकर लोगों की निगाहों से बचता हुआ, वह सियू की तलाश करने लगा । भूख की छुरी उसके पेट को काट रही थी । वह अपना थूक निगलता रहा और आगे बढ़ता रहा । अंत में एक सड़क पर सियू दिखाई दी । दौड़कर दोनों एक-दूसरे से लिपट गये । सियू सिसक रही थी–"क्या बात है ? मुझे बताओ, क्या हुआ तुम्हें ?"

सिसकियां रोकते हुए सियू ने कहा–"वहां बांध पर मैंने देखा कि तीन आदमियों को रस्सियां बांधकर पानी में उतारा जा रहा है । जब उन्हें ऊपर खींचा गया, तो दो मर चुके थे ।"

"ऐसी डरावनी बात देखने तुम वहां क्यों गयी थीं ?"

"मैं तो तुम्हें ढूंढ़ रही थी । मुझे शक हुआ कि कहीं उनमें तुम भी तो नहीं हो ! मैं तो वह सब देखकर पागल-सी हो गयी ।" सियू की आंखों में आंसुओं की बाढ़ सी आ गयी ।

"एक बात और हुई । आह, मुझे कितना डर लग रहा है !" कहते हुए सियू ने अपना चेहरा चिंग-ची के सीने में छुपा लिया–"जब मैं बांध से उतर रही थी, एक आदमी ने मुझे गढ़े के पास धक्का दे दिया । मैं एक और आदमी के ऊपर जा गिरी । उसने मुझे जकड़कर पकड़ लिया और मेरे सारे जिस्म पर हाथ फेरने लगा ।" शर्म के मारे आगे उससे कुछ कहते न बना ।

"फिर क्या हुआ सियूमिन ?" चिंग-ची ने जैसे-तैसे पूछा ।

"उफ्, कैसे जानवर थे वे लोग ! एक ने मुझे छाती से पकड़ लिया । दूसरा मेरे कपड़े उतारने लगा । मैं चीखने लगी । इससे उनकी पकड़ ढीली हो गयी और मैं अपनी जान बचाकर भागी ।"

चिंग-ची की सांस-में-सांस आयी–"शुक्र है कि तुम बाल-बाल बच गयीं......मगर अब कभी इधर न आना...... एक दिन बाढ़ उतर जायेगी । हमारे सुख के दिन आयेंगे ।"

सियूमिन अपने प्रियतम से जोर से लिपट गयी । चिंग-ची उसके शरीर के दबाव के आनंद में डूबने लगा । सहसा उसके मन में इच्छा हुई कि वह सियू को अभी अपने में समा ले, संभव है यह उनका अंतिम

एक सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलिये

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलना आसान है। आपको कम से कम रु० ५/- लगाना पड़ेगा और साल में ३ सैकड़ा ब्याज मिलेगा।

विस्तृत विवरण के लिये पास की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये। बैंकिंग संबंधी आपकी जो भी समस्यायें हों, यहाँ हमारी नम्रता और योग्य सेवा आपकी प्रतीक्षा में है।

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड
संयुक्त राज्य में समिविष्ट ● सदस्यों का दायित्व सीमित
NGB/BA

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायड्स ब्रान्च) : मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायड्स ब्रान्च) : ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी ; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज ; २/५७१, गोवालिया टैंक रोड, कम्बाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; १४बि, [illegible] रोड, [illegible] शाखा :—भाया रोड, कोलबाद रोड, (रेमंड मिल्स के पास)।

मिलन हो ।

पर वे लोग किसी एकांत सुरक्षित स्थान पर नहीं थे। इसका खयाल आते ही उसकी गिरफ्त ढीली हो गयी—"आह सियूमिन !" चिंग-ची ने अपनी मंगेतर के होंठ चूमकर कहा—"देर हो रही है, तुम वापस जाओ । मां परेशान हो रही होंगी ।"

उधर बांध पर सर्चलाइटें सरगरमी दिखा रही थीं । चिंग-ची वहां पहुंचा, तो नौवें सेक्शन को तैयार किया जा रहा था। एक दरार रोकने के लिए आदमियों की जरूरत थी । एक हथियारबंद सैनिक ने चिंग-ची को भी इस काम के लिए पकड़ लिया । जिसका उसे डर था, आखिर वह घड़ी आ पहुंची । निस्तार का कोई रास्ता न था । स्यू कैंग-सेंग ने उसकी कमर के गिर्द रस्सी बांधी । वह निर्जीव-सा देखता रहा । उसने रेत की एक बोरी उठायी और पानी में उतारे जानेवाले लोगों में शामिल हो गया ।

स्यू ने उसे समझाया—"पानी में गिरते ही यह बोरी सूराख में ठूंस देना । सावधान रहना कि लहरें तुम्हें बहाकर न ले जायें या तुम खुद सूराख में न फंस जाओ । रस्सी कमर में मजबूत बंधी है न ! याद रखो, पहले बोरी मजबूती से पकड़ो, उसके बाद मुंह बंद करो, सांस रोके रखो । मैं तुम्हें ठीक-ठीक निकाल लूंगा ।"

बोरी के बोझ से वांग सीधा नीचे पहुंच गया । वह बड़ी मुश्किल से सांस रोके था । एकाएक उसने महसूस किया कि एक भयंकर लहर मुंह फाड़कर उसे लील रही है । उसने अपना पूरा जोर लगाकर रेत की बोरी की मदद से लहर को धकेला ; मगर थपेड़े ने उसे अपने बहाव में तो ले ही लिया। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया । न चाहते हुए भी उसका मुंह खुल गया और बहुत-सा पानी उसके पेट में चला गया । उसके सिर में धमाके से हुए, छाती में असह्य पीड़ा उमड़ी और उसके बाद उसकी चेतना पर स्याही फैल गयी ।

जब उसे होश आया, तो देखा कि वह बांध के ऊपर है और जमीन पर लेटा हुआ है । उसने आंखें खोलने और हाथ-पैर हिलाने की कोशिश की ।

"हिलो मत !" ली कहने लगा —"सत्रह आदमी उतरे थे, जिनमें चार जिंदा हैं, उनमें एक तुम हो ।"

"शुक्र है कि तुम जिंदा हो !" स्यू ने चैन की सांस ली—"आराम करने के लिए तुम्हें कैंप पहुंचाने की अनुमति मैंने ले ली है । अब ऐसे बन जाओ, गोया सख्त बीमार हो। इससे कुछ ज्यादा दिन आराम मिल जायेगा, वरना कहीं काम पर लगा दिये जाओगे ।"

चिंग-ची ने बमुश्किल कहा—"स्यू चाचा ! जान बचाने का शुक्रिया !"

× × ×

उस दिन कैंप में हृदय-विदारक रुदन ने शरणार्थियों को जगा दिया । हाइ-पिंग की विधवा बिलख-बिलखकर अपने मृत बच्चे को कह रही थी—"हाय मेरे लाल ! तुझे पालने के लिए मैंने क्या नहीं किया ?

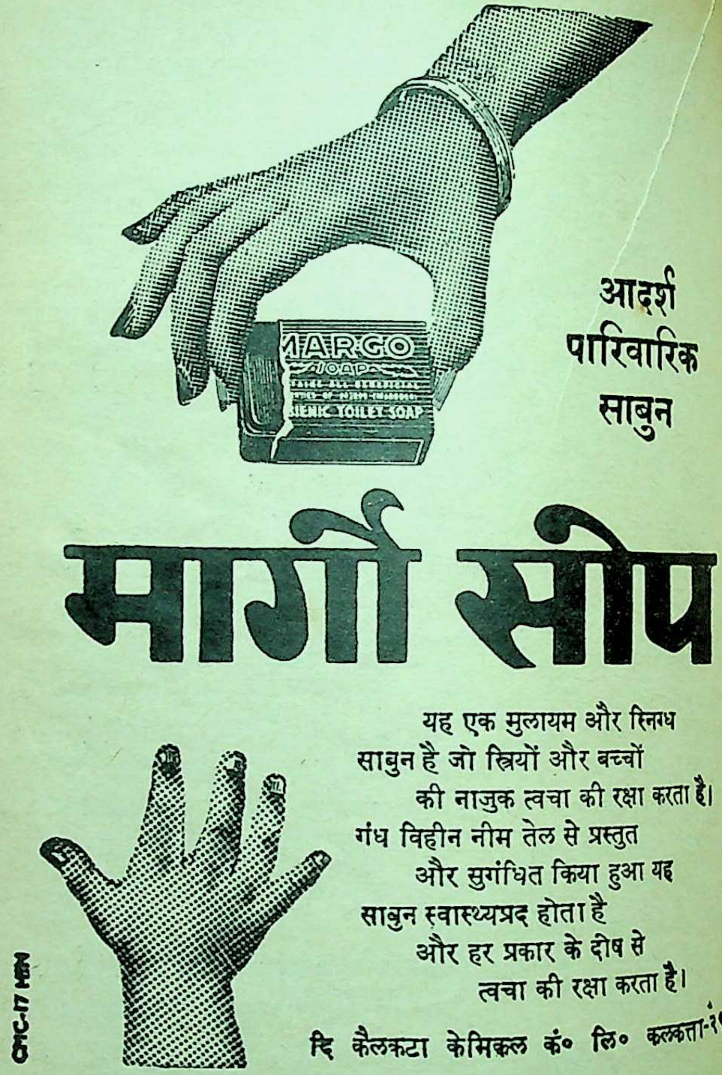
MARGO
SOAP
IENIC TOILET SOAP

आदर्श
पारिवारिक
साबुन

मार्गो सोप

यह एक मुलायम और स्निग्ध
साबुन है जो स्त्रियों और बच्चों
की नाजुक त्वचा की रक्षा करता है।
गंध विहीन नीम तेल से प्रस्तुत
और सुगंधित किया हुआ यह
साबुन स्वास्थ्यप्रद होता है
और हर प्रकार के दोष से
त्वचा की रक्षा करता है।

दि कैलकटा केमिकल कं० लि० कलकत्ता-२९

CMC-17 HBN

कौन-से दुःख नहीं भोगे ? हाय, मैं तेरे लिए रंडी भी बनी !" वह आकाश की ओर सिर उठाकर कहने लगी–"हाइ-पिंग ! मुझे मालूम है कि इसकी खातिर तुम मेरी भूल माफ कर दोगे।......हाइ-पिंग, मैंने तुम्हारे नाम को बट्टा लगाया......हाइ-पिंग, क्या तुमने इसे अपने पास बुला लिया है ?"

कैंप में पेचिश बुरी तरह फैली हुई थी, दवा थी नहीं और जो थी भी वह बेकार थी।

लाश पर लोगों की भीड़ देखकर सुपरवाइजर ने आदेश दिया कि सब लोग अपनी-अपनी जगहों पर चले जायें। मगर किसी ने उस आदेश पर कान नहीं दिये।

"अगर तुम लोग आदेश का पालन नहीं करोगे, तो मैं खाना बंद कर दूंगा।"

खाना बंद होने का मामला कोई मामूली न था। विवश लोग वहां से हट गये।

खाने की घंटी बजी। लोग अपने-अपने प्याले लिये एक-एक चमचा चावल लेने लाइन लगाकर खड़े हो गये।

"होशियार !" सुपरवाइजर ने नया आदेश सुनाया–"बाढ़ के विरुद्ध लड़ाई जीतने के लिए आज से औरतें भी काम में शामिल होंगी।

काम पर जाने के लिए चिंग-ची की मां का भी नाम था। बूढ़ी मां बोझा कैसे ढोयेगी, सियूमिन को बड़ी फिक्र हुई। वह मां की नजर बचाकर सुपरवाइजर के पास पहुंची–"कामरेड ! यह मेरी मां का बिल्ला है। अगर आप अनुमति दें, तो मैं उनकी जगह काम करूंगी।"

"तुम !" उसने आंख मारकर कहा–जरा इंतजार करो। दो-एक दिन में तुम्हारी बारी भी आ जायेगी।"

"मगर वे बहुत बूढ़ी हैं, काम नहीं कर सकतीं।"

"काम नहीं कर सकतीं ! क्यों ? खा खूब सकती है !"

"मगर मैं उनकी जगह काम करने को तैयार हूं।"

"बकवास न करो !" सुपरवाइजर को गुस्सा आ गया–"तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती। यह सामंतकालीन नैतिकता है।"

"कृपा कीजिये कामरेड !" उसने बड़ी आजिजी से कहा।

इस पर वह कुछ नरम पड़ा– "चिंता न करो। तुम्हें भी काम का मौका दिया जायेगा।" और उसने मुस्कराकर सियू का गाल मसल दिया।

सियूमिन डर गयी। अब और अनुरोध करने की उसकी हिम्मत न हुई और वह लौटने लगी।

"ठहरो !" कामरेड ने उसे रोककर उसके दोनों हाथ पकड़ लिये –"तुम्हारी सूरत तो अच्छी-खासी है !" और वह उसके गाल पर थपकियां देने लगा।

सियू ने अपने आपको छुड़ाया और भागी। लौटते हुए वह अपने गुस्से से लड़ रही थी। वह नहीं चाहती थी कि चिंग-ची या मामा को उसके इस अपमान का पता चले।

काम पर जाते हुए बूढ़ी मां ने बेटे को

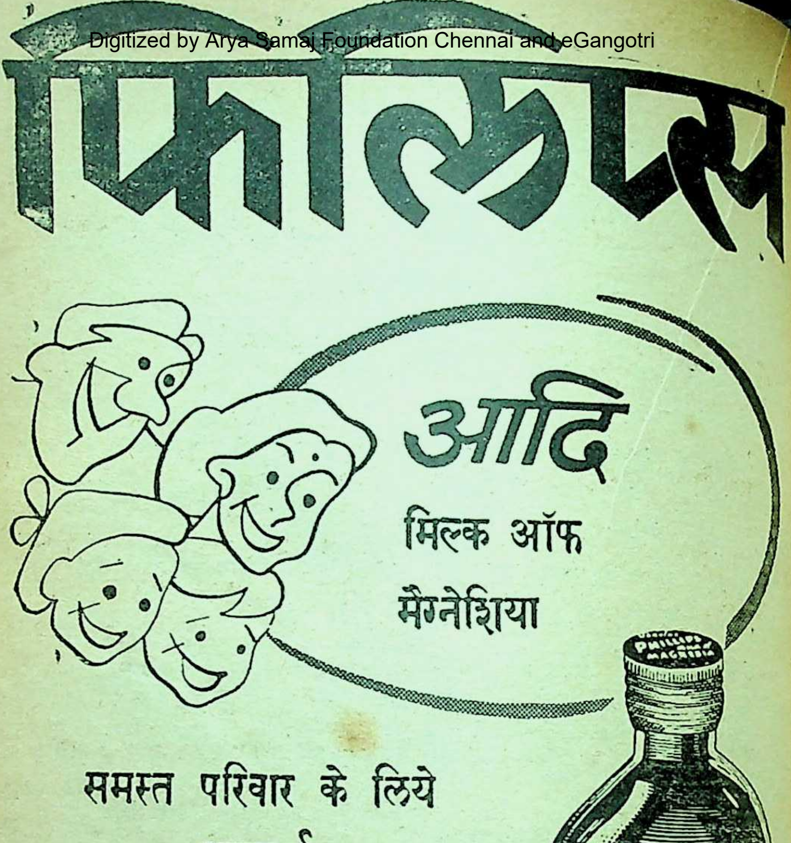
PHILLIPS MAGNESIA
GENUINE
PHILLIPS
MILK OF MAGNESIA
CONCENTRATED
STERLING PRODUCTS INTERNATIONAL
SHAKE WELL BEFORE USING

फिलिप्स

आदि
मिल्क ऑफ
मैग्नेशिया

समस्त परिवार के लिये
आदर्श
अम्लनाशक-आरेचक

इस विश्वसनीय उपाय से करोड़ों लोग आराम पाते हैं

केवल एक ही आदि तथा असली फिलिप्स मिल्क आफ मैग्नेशिया—अम्लनाशक आरेचक है जिसे सारे विश्वके करोड़ों लोग जानते व व्यवहार करते हैं। कब्ज तथा कब्ज जन्य समस्याओं से निरापद तथा पूर्ण छुटकारा के लिये मिल्क ऑफ मैग्नेशिया से बढ़कर और कोई उपाय नहीं। समस्त परिवार के लिये आरेचक।

रजिस्टर्ड यूजर :—डेज़ मेडिकल स्टोर्स(मैन्युफैक्चरिंग)प्रा० लिमिटेड

याद दिलाया—"चिंग-ची, इधर-उधर न फिरना। तुम्हें आराम की सख्त जरूरत है।" सियू को उसने कहा—"इसे कहीं जाने न देना। मेरी चिंता न करो।"

मां के जाने के बाद चिंग-ची पर गहरी निराशा छा गयी। उसे याद आये अपने स्वर्गीय पिता, जो उसकी मां को कितना प्यार करते थे। उन दिनों मां कितनी प्रसन्न और चिंताओं से मुक्त थी।

"भैया!" शाम को बहन ने रोकर पूछा—"क्या मामा रात को भी नहीं आयेंगी?"

चिंग-ची को जवाब देने का होश न रहा। अथाह पीड़ाओं में खो चुका था—कितना बदनसीब था वह। उसकी मौजूदगी में मां को जबरन बेगार करनी पड़े—यह उसके लिए सर्वथा कल्पनातीत था।

कैंप में अब हर समय रुदन-क्रंदन होने लगा। बच्चे अपनी मांओं को पुकारते रहते, उनकी समझ में ही न आता था कि उनकी माताएं उन्हें छोड़कर क्यों चली जाती हैं।

"चिंग-ची!" टोली के साथी तो-पाओ ने आवाज दी—"मैं अपनी मां से मिल आया था; मगर मुझे क्या मालूम था कि उन्हें काम पर भेज दिया गया है।...... कहो, तुम्हारी तबीयत अब कैसी है?"

"वैसी ही है।......बांध पर क्या हालत है?" चिंग-ची ने पूछा।

तो-पाओ ने एक गहरी सांस ली—"इन तीन दिनों में हमारे ग्रुप के ५१ आदमियों में से ४० मर चुके हैं। अच्छा चलता हूं। मेरी मां को मेरे आने का बता देना।"

काफी रात गये चिंग-ची की मां आयी।

"मामा, चौबीस घंटे तुम वहां क्या करती रहीं?" उसने पूछा।

"मैं बांध पर मिट्टी पहुंचाती थी। मगर बेटा, कल से मुझे सफाई का काम दिया गया है।"

"तो क्या तुम्हें कल भी काम पर जाना है?" बेटे का दिल बैठने लगा।

"कल क्या," थकान से कराहती हुई मां बोली—"आज ही समझो। मैं तो जरा-सा आराम करने आयी हूं।"

"पूरे दिन, पूरी रात काम; जरा देर के आराम के बाद फिर काम? हे भगवान, यह कैसा शासन? क्या हम आदमी नहीं?"

"हां, अगर वे हमें आदमी समझकर हमसे काम लेते, तो मैं मर जाती; पर काम न छोड़ती। मैंने खुद देखा, दो औरतें दरिया में गिर गयीं; मगर उन्होंने उन्हें बचाने की जरा भी कोशिश नहीं की। उन्हें बहने दिया और वे डूब गयीं। उनमें एक तो तो-पाओ की मां थी।"

"उफ्!" चिंग-ची को बड़ी चोट लगी—"अभी-अभी तो-पाओ यहां से गया है। वह अपनी मां से मिलने आया था।"

दूसरे दिन बांध पर खतरा और बढ़ गया। एलान हुआ कि मर्द-औरतें, बूढ़े-जवान, सब इस खतरे के खिलाफ लड़ने के महान कार्य में जुट जायें।

"उठोजी, उठो!" एक सैनिक ने वांग चिंग-ची को ठोकर मारकर कहा।

आपके केशकी अनुपम शोभा

स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

आपके केश को कोमल और सुंदर बनाए रखता है

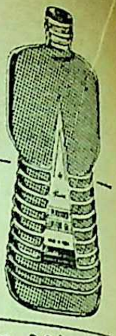

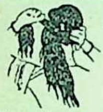

स्वस्तिक हेअर स्टाइल
'मयूर'

थोड़े से स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल को बालों पर लगाइये। केश को तीन भागों मे बांट लीजिए : मध्यम भाग गोलाकर घुमा कर एक और फंदे के रुप में रख छोड़िए। शेप दो भागों को आपस में गूंथ कर फंदे की चारों ओर घूमाते हुए लपेट दीजिए। अब आभूषणों से सजा लीजिए।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

"कामरेड ! मैंने चार दिन पहले सुराख बंद करने के लिए दरिया में गोता लगाया था ! उस वक्त मैं मरते-मरते बचा हूं । मुझे आराम करने के लिए छुट्टी मिली है ।"

"खड़े हो जाओ, बदमाश कहीं के ।"

चिग-ची उठा तो, मगर लड़खड़ाकर गिर पड़ा ।

"कामरेड ! उस दुर्घटना में ये लगभग मर ही गये थे ।" सियूमिन बीच में आयी—"पिछले तीन दिन से इन्होंने कुछ भी नहीं खाया है ।":

"चलते नजर आओ !" सैनिक ने कहा—"इन फालतू बातों के लिए मेरे पास वक्त नहीं है ।"

चिग-ची चुपचाप उन आदमियों में खड़ा हो गया, जो बलात् श्रम के लिए बटोरे गये थे । बांध पर पहुंचकर उसे मालूम हुआ कि उसकी टोली के पुराने साथियों में एक-दो को छोड़कर सब खत्म हो चुके हैं ।

एकाएक गोलियां दगने लगीं । सातवें सेक्शन पर सुराख हो गया था । मजदूरों ने गोता लगाने से इन्कार किया । सैनिकों ने दो मजदूरों को जबरदस्ती नीचे उतार दिया, इससे बाकी लोग उत्तेजित हो गये । उन्होंने एक हथियारबंद सैनिक को दरिया में फेंककर बदला लिया । बाद में कम्युनिस्ट सैनिकों ने आकर उन मजदूरों को गोलियों से भूनकर रख दिया । असहाय निर्बल लोगों का जोश दबा दिया गया ।

तो-पाओ ने चिंग-ची को देखा, तो आकर पूछा—"कहो, मेरी मां तुम्हें मिली थीं ? तुमने उन्हें बता दिया कि मैं ठीक हूं ?"

चिग-ची उत्तर देने के लिए शब्द तलाश कर रहा था, इतने में चाचा स्यू आ पहुंचे और उन्होंने बोरे ढोने का हुक्म देकर वातावरण बदल दिया ।

बांध पर कुछ दूर वांग की मां और सियूमिन भी अलग-अलग काम पर जुटी हुई थीं ।

चिंग-ची की नन्ही बहन आह च्यून कैंप में अकेली थी । एक वर्दीधारी आदमी उसके सामने आकर खड़ा हो गया । उसने उसे हुक्म दिया—"मेरे साथ आओ ।"

वह उसे कैंप के दफ्तर में ले गया । वहां एक और आदमी था । इन दोनों के बीच वह पसोपेश में खड़ी थी । इससे पूर्व कि वह अपने बुलाये जाने का कारण पूछे, एक ने मुस्कराकर उसे अपनी बाहों में भींच लिया और पास में बिछे बिस्तर पर गिरा दिया ।......और उसके बाद उन भेड़ियों ने उस मासूम जान के नाजुक बदन के साथ जो सलूक किया, उसे सुनकर हर इंसान का सिर शर्म से झुक जायेगा ।

बेजान-सी होकर आह च्यून जैसे-तैसे अपने स्थान पर लौटी और चटाई पर पड़ी-पड़ी दर्द से सिसकती रही । अकेले में रात उसको और भी डरा रही थी । घंटों प्रतीक्षा में गुजर गये । परिवार का कोई व्यक्ति नहीं आया । आखिर वह कैंप से बाहर आकर राह देखने लगी । वह बारिश में एकदम भीग गयी । काफी रात के वक्त पड़ोसिन आह चेन उधर से गुजरी, तो आह

आप के पतलूनें
टिनोपाल से चमक उठती हैं
Tinopal

अपने सफ़ेद कपड़ों की धुलाई में टिनोपाल मिलाइए और देखिए एक अनोखा फ़र्क़! हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, चमकदार और उजला हो जाता है। पतलूनें, बुश-शर्ट्स, फ्रोक, साड़ियाँ और तौलिए—आप के सारे सफ़ेद कपड़े टिनोपाल की अधिक सफ़ेदी से चमक उठेंगे।

नए फिल्टर प्रूफ डिब्बे में आज ही टिनोपाल खरीदिए। बाल्टी भर कपड़ों के लिए केवल ½ छोटा चम्मच टिनोपाल काफी है।

थोड़ा सा टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है

टिनोपाल जे. आर. गायगी.
एस. ए., बाल, स्विटज़रलैंड
का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

भारत में बनानेवाले: सुहृद गायगी लिमिटेड, वड़ी वाड़ी, बड़ोदा।
बिक्री कार्यालय: एक्सप्रेस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई 1·बी आर

Sh3pl SGT 15 HIN

च्यून ने रोकर पूछा – "मेरी मामा कहां हैं ? उन्हें बुलाओ ।"

"मेरी बच्ची, अब तुम बड़ी हो गयी हो, बाहर भीगने से क्या हासिल ?"

और वह उसे कैंप में ले आयी । उसे सूखे कपड़े पहनाने के लिए जब वह कपड़े उतारने लगी, तो आह चेन की चीख निकलते-निकलते रह गयी । सहसा सारी बात उसकी समझ में आ गयी । उसने आह च्यून को अपनी बाहुओं में भर लिया और उससे लिपटकर रोने लगी । लड़की ने अपने साथ गुजरी पूरी घटना बयान कर दी ।

"आह च्यून !" आह चेन ने उसे समझाते हुए कहा –" मेरी बात सुनो, कुछ भी हो जाये, यह बात अपनी मां को न बताना।"

"क्यों ?" भोली लड़की ने पूछा ।

"इस सदमे को वे सह न सकेंगी । अपना दुःख अपने तक ही रखना, नहीं तो तुम्हारी मां का कलेजा दो टूक हो जायेगा ।"

"मैं समझ गयी, उन्हें कुछ न बताऊंगी।"

आह चेन ने देखा कि लड़की को तेज बुखार है । उसने उसे कंबल ओढ़ा दिया ।

"चिग-ची!" दूसरे दिन सियूमिन ने बांध पर आकर उसे बताया–"आह चिग-ची, नन्ही बहन चल बसी ।"

चिग-ची पीड़ा से पागल-सा होकर कराहने लगा ।

"नन्ही बुखार में बेहोश थी । हमने चाहा कि उसे डाक्टर के पास ले जायें; मगर नौ बज चुके थे । सुपरवाइजर आया और हमें काम पर ले गया । मैंने बहुत मिन्नतें कीं कि मामा को तो यहां रहने दे ; मगर वह नहीं पसीजा । उलटे उसने मेरे दो थप्पड़ मारे । रात के नौ बजे मुझे छुट्टी मिली । आह च्यून अकेली पड़ी-पड़ी बेहोशी में बड़बड़ा रही थी । ग्यारह बजे मामा को छुट्टी मिली । उन्हें देखकर नन्ही ने बाहें फैला दीं और उनकी गोद में दम तोड़ दिया ।" सियूमिन सिसकती हुई बोली–"अब मामा इस सदमे से बेहोश पड़ी हैं। बार-बार तुम्हें आवाज दे रही हैं। चलो, शायद तुम्हें देखकर कुछ संभल जायें ।"

मगर तभी लाउड-स्पीकर से सुराख हो जाने की घोषणा हुई । चिग-ची को फौरन काम पर पहुंचने का आदेश हुआ । बौखलाये-से चिग-ची ने कहा –" सियूमिन, तुम जाओ...... अगर मैं जिंदा न रहूं, तो तुम मुझे भूल जाना । रोजी के लिए कोई जरिया तलाश कर लेना । जिंदों को चाहिये कि मुर्दों से कोई वास्ता न रखें, उन्हें भूल जायें ।"

"मेरे चिग-ची !" सियूमिन छलकते आंसुओं से उसे रोक रही थी । मगर वह तो पागल की तरह मजदूरों में शामिल होने के लिए दौड़ पड़ा ।

सियूमिन कैंप वापस तो आ गयी; पर चिग-ची की बातें उसके प्राणों में हाहाकार मचाये थीं । सियू की आहट सुनकर मामा ने लड़खड़ाती आवाज में कहा–" आ गये बेटा चिग-ची ! जरा करीब आओ ।" उसने देखने की कोशिश की; मगर उसकी बूढ़ी आंखें धुंधला गयीं ।

Vanasda
BERAR OIL INDUSTRIES

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्दा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्दा वनस्पति। वनस्दा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्दा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्दा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्दा
विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से सयुक्त)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज अकोला

सियूमिन मरती हुई मां को धोखे में नहीं रखना चाहती थी–"मां यह मैं हूं–सियूमिन !"

मगर बुढ़िया कुछ भी सुन-समझ नहीं पा रही थी। कमजोर आवाज में बोली–"तुम और सियूमिन शादी कर लेना बेटे ! ......वांग परिवार......" कहते-कहते उसका सिर लुढ़क गया।

"मामा!" सियू चीख-चीखकर विलाप करने लगी। रोते-रोते वह बेहोश हो गयी।

कुछ घंटे बाद भीगा-लड़खड़ाता चिग-ची कैंप आया। तो-पाओ उसे सहारा देकर लाया था। सुराख रोकने में उसने एक बार फिर मौत को मात दी थी; पर वह इतना चूर-चूर हो चुका था कि सियूमिन ने जब उसकी ओर बेचैनी से बाहें फैलायीं, तो वह उसे कोई जवाब न दे पाया और बेदम होकर गिर पड़ा।

अगले दिन जब उसकी नींद टूटी, तो जिस्म में टीसें उठ रही थीं, दिमाग चकरा रहा था; पर कोई बात याद ही न आती थी। वह पागल की तरह जोर-जोर से रोने और बड़बड़ाने लगा।

उधर सियूमिन जानलेवा ड्यूटी पूरी करके लंगड़ाती हुई कैंप वापस लौटी। उसने चिग-ची को हिलाकर जगाया–"अब तबीयत कैसी है ?"

"तुम!" चिग-ची बेहोशी में बड़बड़ाया–"तुम अभी जिंदा हो ? मेरी मां और बहन चल बसीं; मगर तुम अभी जिंदा हो ?"

उसका अंदाज ऐसा था, मानो इलजाम लगा रहा हो। सियू का दिल टूट गया। आंसू टपकाते हुए, वह बोली–"चिंता न करो चिग-ची ! मैं शीघ्र ही तुम्हारी मां और बहन के पास पहुंच जाऊंगी।" थकावट में उसे यह ध्यान ही नहीं रहा कि चिग-ची पूरे होश में नहीं था।

और जैसे ही चिग-ची को होश आया, वह सियूमिन-सियूमिन चीखता, हुआ उसके पीछे बाहर दौड़ा–"मुझे बताओ सियूमिन, आखिर मैंने तुम्हें क्या कह दिया। सियूमिन मुझे माफ कर दो–मेरा दिमाग ठिकाने नहीं था।"

सियूमिन को चिग-ची की मनोदशा का ध्यान आया, तो उसे अपनी भूल महसूस हुई। दोनों एक दूसरे की बाहों में समा गये। प्यार का ज्वार सारी भ्रांतियां और शंकाएं बहा ले गया।

दो-तीन दिन बाद चिग-ची ने फिर बांध पर जाकर काम करना शुरू कर दिया। कैंप से चलते समय उसका मन बहुत भारी था, क्योंकि सियूमिन की दशा बहुत खराब होती जा रही थी। उसकी आंखों के सामने उसकी मंगेतर के जीवन की चिनगारी बुझती जा रही थी। आते समय वह इस तरह बोल रही थी, जैसे दोनों सदा के लिए बिछुड़ रहे हों–"चिग-ची, अपनी सेहत और सुरक्षा का खयाल रखना। खानदान की अंतिम निशानी तुम्हीं तो रह गये हो। मुझे इस बीमारी से बचने की कोई आशा नहीं है। पर मुझे कुछ भी हो जाये, मेरी कामना है कि तुम सदा सलामत रहो।"

HIN

Loma
REGD.
Loma
HAIR OIL
Cooling the head
LOMA PRODUCTS (INDIA)
Loma

अब
लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

१०० ग्राम
मध्यम आकार

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं

शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -२
पुजेंट्स: **सी. नरोत्तम एन्ड कं.** बम्बई -२

भावावेश में चिग-ची का गला रुंध गया था। उससे कुछ भी कहते न बना था।

बांध पर उसे तो-पाओ ने बताया कि वह आह चेन से विवाह करनेवाला है। हालांकि इस विवाह में कोई तुक न था। आह चेन अपने पति के मर जाने के बाद विवशतया वेश्यावृत्ति भी करती रही थी। तो-पाओ के साथ उसका कोई जोड़ भी न ठता था और न वैवाहिक जीवन की परिस्थितियां ही थीं–किंतु वह विवाह करने जा रहा था। उसने चिग-ची को कहा–"तुम भी शादी क्यों नहीं कर लेते ?"

"हम शादी कैसे कर सकते हैं ? सियूमिन तो बीमार है। शादी और जीवन का आनंद हमारी किस्मत में कहां !"

"हमारे शहर में लोग ज्यादा बीमार हो जाते थे, तो शादी के द्वारा इलाज का तरीका आजमाते थे।"

"यह तो नामुमकिन बात है। दवा के बगैर बीमार का इलाज कैसे हो सकता है ? कल मैंने सारे पैसे उसके लिए दवा में खर्च कर डाले; लेकिन उस जरा भी आराम नहीं हुआ।"

बांध पर दसवें सेक्शन के विद्रोही मजदूरों ने अपने सुपरवाइजर को पकड़कर पानी में डुबो दिया था। इस कारण सनसनी फैली हुई थी। रात भयानक सन्नाटे में लिपटी हुई गुजर रही थी। क्षरिया में लालटेनों की परछाइयां ऐसी लग रही थीं, मानो आंसूभरी आंखें हों, जो मनुष्य की दयनीय स्थिति पर रो रही हों।

शेड के नीचे पड़ा-पड़ा चिग-ची सियूनिक के लिए व्याकुल हो रहा था और वह बेचारी कैंप में अकेली पड़ी मौत की प्रतीक्षा कर रही थी। मौन-भाव से मर्मांतक पीड़ा सहे जा रही थी।

"क्या मैं उसे फिर जीवित देख सकूंगा ? क्यों न हम शादी के जरिये इलाज का पुराना तरीका आजमा लें।" चिग-ची पड़े-पड़े सोच रहा था।

तो-पाओ और आह चेन का विवाह हो गया। वर-वधू के रूप में वे सियूमिन को देखने गये। सियू ने पूछा–"चिग-ची ठीक हैं न !"

"हां, लेकिन आज पानी चढ़ रहा है, अतः वह कैंप नहीं आ सकेगा। उसने कहा था, कल किसी समय जरूर तुमसे मिलने आयेगा।"

"कल......कल," सियूमिन ऊपर ताकने लगी–"आह चिग-ची, क्या मैं कल तक इंतजार कर सकूंगी ?"

"हां-हां, क्यों नहीं।" आह चेन ने ढांढस बंधाया।

वृद्धा सिया-ओ की पत्नी भी उसे समझाने लगी–"चिंता न कर बेटी ! चिग-ची जल्द ही तेरे साथ ब्याह करेगा। इससे बड़े-बड़े चमत्कार हो जाते हैं–तू बिलकुल ठीक हो जायेगी।"

"अम्मा !" वह बड़ी मुश्किल से कह पायी–"जरा मेरी हालत तो देखो, मैं कैसे खड़ी होकर अपने पुरखों को प्रणाम करूंगी ?"

बवासीर
की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये
हडेन्सा
इस्तेमाल कीजिए !

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता : **दि डॉलर कम्पनी,**
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

B3 DOL 2A HIN

खास जनता
किरासन कुकर

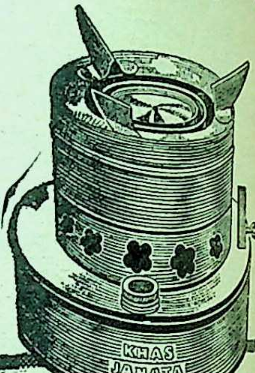

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA, OM.35

"उसके लिए तुझे उठना नहीं पड़ेगा बेटी। कल तेरी शादी हो जायेगी।"

"उफ कल !......कल कितनी दूर है !"

सियूमिन सोच रही थी। उसके शरीर में भयानक कंपकंपी उठी। यह देख, बुढ़िया समझ गयी, यह कल तक नहीं चल सकेगी। आह, बेचारा चिग-ची इसे मरते समय भी नहीं देख पायेगा !

और सचमुच ही पतझड़ की उस ठंडी रात ने वारिश और तूफानी हवाओं के बीच सियूमिन को अनंत लंवी और एकाकी यात्रा के लिए विदा कर दिया !

दूसरे दिन रात को वाढ़ ने भयंकर रूप ले लिया था। एकाएक नौवें सेक्शन की चौकी से एक आदमी चिल्लाया—"पेड़ किनारे तरफ आ रहा है।"

कुंडियां लगे वांस दरिया में डालकर पेड़ को किनारे से दूर रखने की कोशिश होने लगी। डर था कि पेड़ किनारे से टकराया, तो तट-वंध को क्षति पहुंचायेगा और तबाही आ जायेगी। लोग पागलों की तरह दौड़-धूप कर रहे थे।

"अरे तो-पाओ, तू इतनी जल्दी और ऐसे में काम पर क्यों आ मरा ?"

"भई, क्या करूं ? हालांकि मैंने रात-भर कैंप में रहने की अनुमति ले रखी थी; मगर एक केडेट कैंप देखने आया और उसने मुझे तुरंत वांध पर पहुंचने का हुक्म दे दिया।"

"अच्छा-अच्छा, तो अव काम शुरू कर दो दूल्हा मियां।"

सहसा एक चीख सुनाई दी। दरिया में एक आदमी गिर गया था। स्यू उधर लपका, तो गार्ड ने रोककर कहा—"वह गिर गया है, तो क्या हुआ ? तुम अपना काम करो।"

"उसका सिर अभी पानी के ऊपर है।"

"अपने काम से काम रखो।" गार्ड गुर्राया।

इतने में सुपरवाइजरों का शोर शुरू हुआ—"उस वृक्ष को हटाओ, किनारे से टकराने न पाये।"

एक सुपरवाइजर ने स्यू को हुक्म दिया—"ऐ तुम पानी में कूदो—उस पेड़ को वाहर निकालना है।"

स्यू को सांप सूंघ गया। ५०-६० आदमी भी उस वृक्ष को नहीं निकाल सकते थे। मगर उसे आनाकानी करते देख सुपरवाइजर ने पिस्तौल निकाल ली। पास खड़े चिंग-ची और तो-पाओ यह देखकर वहां से खिसकने ही वाले थे कि उसकी नजर उन पर पड़ी—"तुम दोनों भी दरिया में कूद जाओ दरख्त को रस्सियों से बांधो।"

स्यू डर के मारे पीला पड़ गया। तो-पाओ ने कहा—"चलो भई, बंदूक से बहस नहीं की जाती।"

एक साथ कुछ लोगों को दरिया में कुदा दिया गया। स्यू के हाथ में रस्सी थी। उसके पीछे चिंग-ची और तो-पाओ थे। तीनों ने दरख्त की शाखाओं को पकड़ लिया। उनके चेहरे और बाहें पेड़ से छिलकर लहूलुहान हो गये थे। पेड़ पानी में तेजी से चक्कर काट रहा था। किनारे पर जो लोग रस्सियों के

भारतीय
भाषाओं में
तार
भेजिये

अपना संदेश
देवनागरी लिपि में
लिखकर
आप किसी भी
भारतीय भाषा में तार
भेज सकते हैं।

अंग्रेजी में भेजे जाने वाले तारों को मिलने वाली सुविधाएं देवनागरी लिपि में भेजे जाने वाले तारों के लिए भी मिलती हैं, जैसे बधाई तार (बधाई वाक्यों की सूची हिन्दी में उपलब्ध है), डिलक्स तार, प्रेस तार, मानव जीवन अप्रता तार, फोनोग्राम तथा तार के संक्षिप्त पतों की रजिस्ट्री।

यह सुविधा
२००० तारघरों में उपलब्ध है

डीप ६१/१४४

डाक-तार विभाग

सिरे पकड़े खड़े थे, उन्हें आदेश मिला–"खींचो !"

और पेड़ यों खींचे जाने के कारण तट-बंध की दीवार से टकराया और उसका एक हिस्सा उड़ गया ।

प्रलय मच गया । हंगामे में कुछ भी सूझ नहीं पड़ रहा था । पेड़ अब पानी में ऊपर-नीचे होता हुआ, दरिया की ओर लौट गया और तेज धार में बहने लगा ।

स्यू किसी तरह चौड़े तने पर चढ़कर बैठ गया । चिंग-ची भी ऊपर चढ़ आया । तो-पाओ का सिर पानी में था । चिंग-ची रेंगकर उसके पास पहुंचा और उसे ऊपर खींच लिया । स्यू ने चांग आह-सेन को उलटा करके उसके पेट का पानी निकाला ।

बांध अब दृष्टि से ओझल होने लगा ।

"अब हमारा क्या होगा ?" चिंग-ची ने निराशा से पूछा । मगर किसी के पास इसका उत्तर न था ।

इतने में एक लहर आयी । वृक्ष ने चक्कर खाये, डूबा-उछला और फिर सीधा हो गया । इसके साथ ही बेचारा चांग दरिया में शहीद हो गया । अब दरख्त पर वे तीन बाकी थे ।

तो-पाओ के कंधे में बड़ा घाव हो गया था । चिंग-ची ने बनियान फाड़कर पट्टी बांधी; पर उससे खून बहना बंद नहीं हुआ।

जरूरत आविष्कार की जननी होती है । एक शाखा को तोड़कर और उसे रस्सी से बांधकर उसकी पतवार बना ली गयी, इससे पेड़ को उलटने-पलटने से बचाया जा सकता था । तीनों आदमियों में नयी जिंदगी आ गयी । बांध की लालटेनों की रोशनी भी अब ओझल हो गयी ।

"चांग कंग बांध !" चिंग-ची ने उस ओर देखकर कहा–"उफ, कैसा भयानक सपना था !"

तो-पाओ दर्द से कराहा । बेचारे का कल ही विवाह हुआ था, सुहागरात भी ढंग से न मना पाया था कि आज सारा खेल खत्म हो गया । दुःख के मारे वह अपना सिर शाखा से टकराने लगा ।

"सब्र करो बेटे !" स्यू ने समझाया–"अपनी शक्ति नष्ट न करो । यांगसी ने अभी हमें निगला नहीं है ।"

"तो-पाओ, तुम्हें सियूमिन के बारे में मालूम हो गया ?"

"मुझे अफसोस है चिंग-ची "......तो-पाओ आगे न कह सका ।

"शायद यह अच्छा ही हुआ कि वह चल बसी । देखो तो, इस फंदे से निकलने की कोई उम्मीद नहीं है । दूर-दूर तक धरती का कोई निशान नहीं दिखता ।"

पूरब में लाली उभरने लगी । सुबह की तेज हवा बर्फ के तीर छोड़ रही थी । मगर चिंग-ची में जाने कहां से साहस उत्पन्न हो गया–"भाड़ में जायें–मैं तो जिंदा रहूंगा।" उसने अपने-आपसे कहा–"मैं अपनी सियूमिन की अंतिम आकांक्षा के लिए जिंदा रहूंगा और इन बर्बर लोगों का पर्दाफाश करूंगा, जिन्होंने अन्न, धरती और भाईचारे का वादा करके दुःख और मौत का

भारतीय
भाषाओं में
तार
भेजिये

अपना संदेश
देवनागरी लिपि में
लिखकर
आप किसी भी
भारतीय भाषा में तार
भेज सकते हैं।

अंग्रेजी में भेजे जाने वाले तारों को मिलने वाली सुविधाएं देवनागरी लिपि में भेजे जाने वाले तारों के लिए भी मिलती हैं, जैसे बधाई तार (बधाई वाक्यों की सूची हिन्दी में उपलब्ध है), डिलक्स तार, प्रेस तार, मानव जीवन अग्रता तार, फोनोग्राम तथा तार के संक्षिप्त पतों की रजिस्ट्री।

यह सुविधा
२००० तारघरों में उपलब्ध है

डीए १६/७४

डाक-तार विभाग

सिरे पकड़े खड़े थे, उन्हें आदेश मिला—"खींचो !"

और पेड़ यों खींचे जाने के कारण तट-बंध की दीवार से टकराया और उसका एक हिस्सा उड़ गया ।

प्रलय मच गया । हंगामे में कुछ भी सूझ नहीं पड़ रहा था । पेड़ अब पानी में ऊपर-नीचे होता हुआ, दरिया की ओर लौट गया और तेज धार में बहने लगा ।

स्यू किसी तरह चौड़े तने पर चढ़कर बैठ गया । चिग-ची भी ऊपर चढ़ आया । तो-पाओ का सिर पानी में था । चिग-ची रेंगकर उसके पास पहुंचा और उसे ऊपर खींच लिया । स्यू ने चांग आह-सेन को उलटा करके उसके पेट का पानी निकाला ।

बांध अब दृष्टि से ओझल होने लगा ।

"अब हमारा क्या होगा ?" चिग-ची ने निराशा से पूछा । मगर किसी के पास इसका उत्तर न था ।

इतने में एक लहर आयी । वृक्ष ने चक्कर खाये, डूबा-उछला और फिर सीधा हो गया । इसके साथ ही बेचारा चांग दरिया में शहीद हो गया । अब दरख्त पर वे तीन बाकी थे ।

तो-पाओ के कंधे में बड़ा घाव हो गया था । चिग-ची ने बनियान फाड़कर पट्टी बांधी; पर उससे खून बहना बंद नहीं हुआ।

जरूरत आविष्कार की जननी होती है । एक शाखा को तोड़कर और उसे रस्सी से बांधकर उसकी पतवार बना ली गयी, इससे पेड़ को उलटने-पलटने से बचाया जा सकता था । तीनों आदमियों में नयी जिंदगी आ गयी । बांध की लालटेनों की रोशनी भी अब ओझल हो गयी ।

"चांग कंग बांध !" चिग-ची ने उस ओर देखकर कहा—"उफ, कैसा भयानक सपना था !"

तो-पाओ दर्द से कराहा । बेचारे का कल ही विवाह हुआ था, सुहागरात भी ढंग से न मना पाया था कि आज सारा खेल खत्म हो गया । दुःख के मारे वह अपना सिर शाखा से टकराने लगा ।

"सब्र करो बेटे !" स्यू ने समझाया—"अपनी शक्ति नष्ट न करो । यांगसी ने अभी हमें निगला नहीं है ।"

"तो-पाओ, तुम्हें सियूमिन के बारे में मालूम हो गया ?"

"मुझे अफसोस है चिग-ची "......तो-पाओ आगे न कह सका ।

"शायद यह अच्छा ही हुआ कि वह चल बसी । देखो तो, इस फंदे से निकलने की कोई उम्मीद नहीं है । दूर-दूर तक धरती का कोई निशान नहीं दिखता ।"

पूरब में लाली उभरने लगी । सुबह की तेज हवा बर्फ के तीर छोड़ रही थी । मगर चिग-ची में जाने कहां से साहस उत्पन्न हो गया—"भाड़ में जायें—मैं तो जिंदा रहूंगा।" उसने अपने-आपसे कहा—"मैं अपनी सियूमिन की अंतिम आकांक्षा के लिए जिंदा रहूंगा और इन बर्बर लोगों का पर्दाफाश करूंगा, जिन्होंने अन्न, धरती और भाईचारे का वादा करके दुःख और मौत का

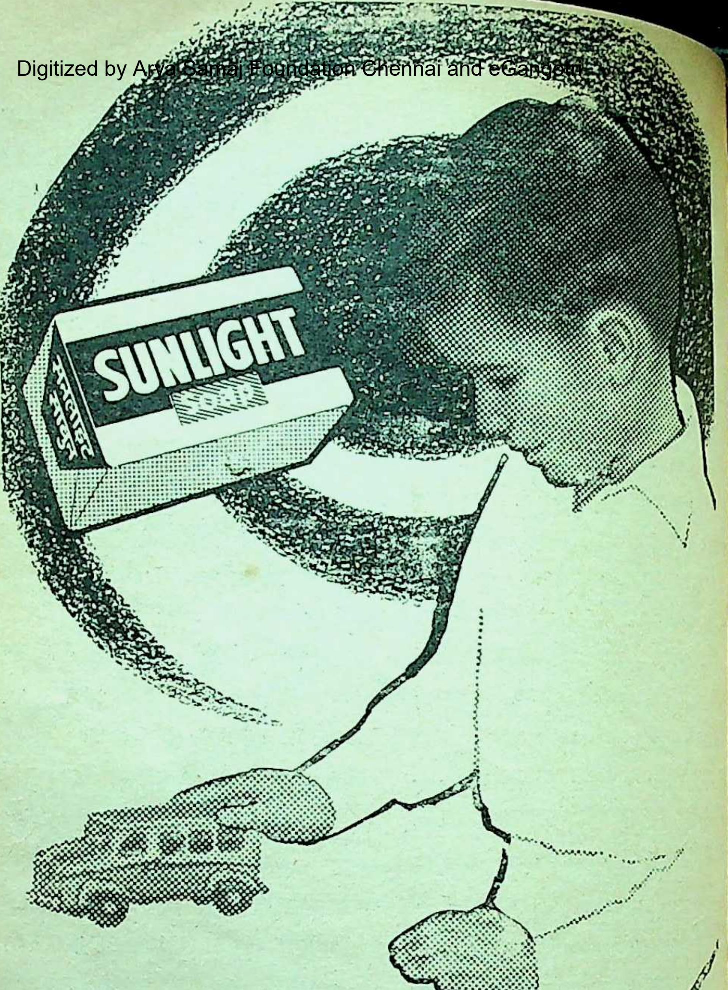

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट

से आप के कपड़े चमक उठते हैं!

नया सुंदर रैपर और नया मनोहर रूप

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S. 52-77 10

पुरस्कार दिया है ।"

सूरज निकल आया, तो कुछ राहत मिली । पर तो-पाओ का सिर लटक गया ।

"अच्छा बेटे, यांगसी ने तुम्हारी भी कुर्बानी ले ही ली !" स्यू ने दर्द-भरे स्वर में कहा ।

और दरिया की तेज धार में बहते-बहते किसी तरह पूरा दिन गुजर गया । नींद और भूख के कारण दोनों अधमरे हो रहे थे । स्यू अभी मूर्छित पड़ा था । चिंग-ची ने उसे रस्सी से बांध दिया था, ताकि पानी में गिर न जाये ।

फिर रात का अंधेरा बढ़ने लगा । चिंग-ची की चेतना भी अंधेरे में डूब गयी ।

एक झटका लगा, तो उसकी आंख खुली । दिन निकल आया था । दरख्त दरिया के किनारे से टकराकर ठहर गया था । चिंग-ची एक पत्थर का टुकड़ा पकड़कर किनारे पर चढ़ गया ; पर कमजोरी के कारण गिरकर बेहोश हो गया ।

जब उसे होश आया, तो उसने पाया कि वह कुछ अपरिचितों के घर में मेहमान है ।

"स्यू चाचा कहां है ?" उसने पूछा ।

"तुम्हारा साथी ?" एक आदमी ने कहा –" जब हम दरख्त के पास पहुंचे, तो वह मर चुका था । तुम सौभाग्यशाली हो कि बच गये ।"

"हां, मैं सौभाग्यशाली हूं कि लगातार दो रात और एक दिन दरिया में सैकड़ों मील बहते रहकर भी बच गया ।"

× × ×

चिंग-ची अब रेलवे कुली बन गया था । पर उसके मन् में एक ही धुन थी—जैसे-तैसे दक्षिण की तरफ बढ़ना । कुछ ही दिनों म वह क्वांग टंग तक पहुंच गया । अंत में वह मौका पाकर सीमा पार कर गया ।

× × ×

यहां वह उन असंख्य लोगों में मिल गया, जिन्होंने उसी की तरह दारुण दुःख भोगे थे और सीमा पार की थी । यहां वे अपनी मर्दित भावनाओं को अभिव्यक्ति दे सकते थे । मगर चिंग-ची बस मौन रहता, अपने में डूबा-डूबा परिश्रम में जुटा रहता । यह परिश्रम जो बलात् नहीं था, स्वेच्छया अपनाया हुआ था, उसके जीवन को नया जन्म दे रहा था ।

★

खुशि लका दुनिया जे मुंहं तां लाहि दुख दर्सीं नकाबु,
सुख दर्स लइ हूर दुनिया, दिलिरुबा दिलि शादि आहि ।
छा संदसि तश्बीह बेवसि माह ता बां सां कजे
रूइ खूबां आशिकनि लइ खुदि खुदा आबादु आहि ।

—प्रसन्नतापूर्ण संसार के मुख से अवसाद के आवरण को हटा दो ; क्योंकि इसका जो सुख-रूप में दर्शन करते हैं, उनके लिए अप्सरा-दुनिया प्रियतमा और प्रसन्नहृदया है ।

—किशिनचंद 'बेवसि' (सिंधी कवि)

★

योजना पर एक नजर

तीसरी पंचवर्षीय योजना की नीति, लक्ष्य और कार्यान्वय का आलोचनात्मक विवेचन

वीरेंद्र अग्रवाल

प्रधान मंत्री ने कहा है कि स्वाधीनता से पहले भारतवासियों की औसत आयु ३२ वर्ष थी, आज लगभग ५० वर्ष हो गयी है; और पहली योजना के प्रारंभ में कपड़े की खपत प्रतिव्यक्ति ९ गज थी, जो कि अब लगभग १४।। गज हो गयी है।

आंकड़ों से मालूम होता है कि प्रतिव्यक्ति अन्न की खपत स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मात्रा से, यानी १८ औंस से भी कम है। हमारे यहां प्रतिव्यक्ति अन्न की दैनिक खपत १९५४ में १५.७ औंस और १९६० में १५.४ औंस थी। १९५६ में कपड़े की खपत प्रतिव्यक्ति के हिसाब से १६.४ गज थी, जो लगातार घटते-घटते १९५९ में १५.७ गज हो गयी। दोनों क्षेत्रों में कुल उत्पादन की रफ्तार लगभग ज्यों-की-त्यों बनी है।

प्रधान मंत्री ने एक बार कहा था कि भारत अब साइकल-युग में पहुंच गया है; लेकिन साइकलों का उत्पादन वर्तमान रफ्तार से ही चलता रहा, तो हर आदमी के लिए साइकल की व्यवस्था करने में करीब हमें चार सौ वर्ष लग जायेंगे।

तीसरी योजना की अंतःकालीन समीक्षा से स्पष्ट है कि तीसरी योजना की अवधि में आर्थिक प्रगति मंद रफ्तार से हुई है। पिछले २।। वर्षों में राष्ट्रीय आय में के ५ प्रतिशत बढ़ती हुई है। १९६०-६१ १९६१-६२ में खेती की उपज लगभग करोड़ ७५ लाख टन से घटकर १९६२ में ७ करोड़ ७८ लाख टन रह गयी है तीसरी योजना के प्रथम दो वर्षों में औ गिक उत्पादन में बढ़ती की रफ्तार क्र ६.५ प्रतिशत और ८ प्रतिशत रही जो कि योजना के लिए निर्धारित ल प्रतिवर्ष ११ प्रतिशत बढ़ती – के मुका में अपर्याप्त है। और मशीनी औज अल्युमिनियम, कपड़ा, कोयला और लोहे का उत्पादन तीसरी योजना के लि रित लक्ष्य तक पहुंच सकेगा, इसमें संदेह है।

दूसरी ओर जीवन-निर्वाह के सूचक अंक (इंडेक्स नंबर) और करों मात्रा में काफी तरक्की हुई है। योजना-काल में नये करों से १,७५० क रुपये प्राप्त करने थे। लेकिन केवल तीन वर्षों में केंद्र और राज्यों की सर ने लगभग २,४०० करोड़ रुपये के नये लगा दिये हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में सरकार ने प्रायोजनाओं के लिए १९ ६१ में लगभग ४३० करोड़ रुपये का

निवेश किया था। १९६२-६३ में वह बढ़कर ६९० करोड़ तक पहुंच गया। ६३-६४ का बजट-अनुमान लगभग ८४० करोड़ रुपये का है।

अप्रैल १९६२ से कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। १९६२-६३ के वित्तीय वर्ष में मूल्यसूचक अंक में करीब ३ प्रतिशत बढ़ती हुई थी; लेकिन मार्च १९६३ से उसमें लगभग ८ प्रतिशत बढ़ती हुई है। ३० मार्च १९६३ को मूल्यसूचक अंक १२६.८ था, जो १४ सितंबर १९६३ तक बढ़कर १३७.३ हो गया। यदि तीसरी योजना के प्रारंभ से हिसाब लगाया जाये, तो लगभग ढाई वर्ष में ७ प्रतिशत की बढ़ती हुई है। अप्रैल १९६३ से २८ सितंबर १९६३ तक केवल खाद्य पदार्थों की कीमतों में लगभग १२.५ प्रतिशत बढ़ती हुई है। यह स्थिति बर्दाश्त की हद तक पहुंच चुकी है। लोगों को निर्वाह करना कठिन हो रहा है।

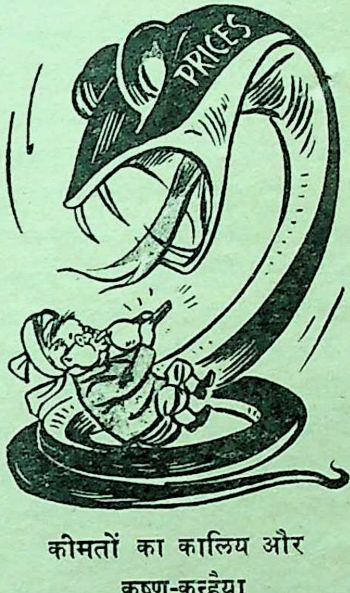

कीमतों का कालिय और कृष्ण-कन्हैया

['भारतज्योति' से साभार]

अभी हाल ही में योजना-आयोग के एक सदस्य ने कहा था कि १९७६ तक देश की आबादी में १८ करोड़ ७० लाख आदमी बढ़ जायेंगे; लेकिन उस समय तक केवल ७ करोड़ लोगों के लिए रोजगार-व्यवस्था की जा सकेगी। पिछले दो वर्षों में औद्योगिक क्षेत्र में लगभग ३२ लाख लोगों को रोजगार मिला है। शिक्षित बेकारों की संख्या भी इन दो वर्षों में १५.६ लाख से बढ़कर २४.८ लाख हो गयी है।

तीसरी योजना में परिवार-नियोजन के लिए २७ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी थी। इस काम के लिए १९६०-६१ में १ करोड़ २ लाख, १९६१-६२ में २ करोड़ ४२ लाख, १९६२-६३ में ३ करोड़ १४ लाख और १९६३-६४ में ३ करोड़ २७ लाख खर्च हुआ। द्वितीय योजना-काल के अंत तक संपूर्ण देश में कुल २,१३६ (१,३७९ देहाती और ५७५ शहरी) परिवार-नियोजन केंद्र थे।

सरकार का इरादा है कि १९७५ तक जन्मदर हजार पीछे ३० से घटाकर २५ कर दी जाये। लेकिन इसे घटाकर १५ तक किया जा सकता है। इसके लिए आगामी पांच वर्षों तक सभी लोगों को निरोधक उपकरण दिये जायें, तो उसमें कुल १२५ करोड़ रुपये से अधिक खर्च नहीं होगा।

अभी तक इस काम में सफलता नहीं मिलने का सबसे बड़ा कारण यह है कि सरकार ने जनमानस को इस विभीषिका से अवगत नहीं कराया है। इस मामले में सरकार को कुछ ठोस काम करना होगा; अन्यथा उत्पादन, वितरण, उपभोग और पूंजी-निवेश के प्रयास बेकार साबित होंगे।

तीसरी योजना की अंतःकालीन समीक्षा से मालूम होता है कि योजना के अंत तक औद्योगिक क्षेत्र में ४९ लाख आदमियों को रोजगार दिया जा सकेगा, जो कि १ करोड़ ५ लाख के निर्धारित लक्ष्य से बहुत कम है। इसी प्रकार खेती में ३५ लाख को रोजगार देने का लक्ष्य है; लेकिन १६ लाख से अधिक लोगों को काम दिलाना मुश्किल है।

इस रफ्तार से तीसरी योजना के अंत तक देश में बेकार लोगों की संख्या लगभग १ करोड़ ७० लाख होगी। देश की राजनीतिक स्थिरता की दृष्टि से इस प्रश्न पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है। तीसरी योजना के प्रारंभ में बेरोजगारों की पंजीकृत संख्या ४.९ लाख थी, जो जून १९६३ तक ७.८ लाख हो गयी थी। योजना में १५० करोड़ की व्यवस्था इसके लिए की गयी है कि जिन महीनों में खेती का काम मंदा रहता है, उनमें २५ लाख लोगों को काम दिया जा सके।

श्री गुलजारीलाल नंदा का मत है कि बेकारी को दूर करने का यही एकमात्र उपाय है कि देहात में उद्योग-धंधे चलाये जायें। यह साफ है कि योजना में देहाती निर्माण-कार्य और उद्योग-धंधे शामिल किये जाने चाहिये। लेकिन हमारे यहां तो बस बड़े-बड़े नारे लगाने की होड़ मची है।

ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़कों के निर्माण पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिये। लेकिन समाजवादी योजना में भारी उद्योगों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है और ऐसा करने में ग्रामीण जनता की बुनियादी आवश्यकताओं की उपेक्षा कर दी जाती है।

खेतों की उपज बढ़ाने के लिए किसानों को क्या प्रोत्साहन दिया गया है? तीसरी योजना के अंत तक १० करोड़ टन अन्न के उत्पादन का लक्ष्य पूरा करना है, तो किसान को केंद्र-बिंदु मानकर चलना होगा। ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की उपेक्षा करने की भारी कीमत हमें चुकानी पड़ी है। पिछले ११ वर्षों में लगभग १,४०० करोड़ रुपये का गल्ला बाहर से मंगाना पड़ा है। योजनाकारों ने भी माना है कि १९५१ से १९६१ तक किसान-मजदूरों की आमदनी यदि घटी नहीं है, तो बढ़ी भी नहीं है।

प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि थोड़े-से लोगों के हाथों में आर्थिक शक्ति के केंद्रित हो जाने के दुष्प्रभावों के निराकरण के लिए सार्वजनिक क्षेत्र का अधिक विस्तार करना चाहिये। तीसरी योजना में निजी क्षेत्र के लिए केवल १,०५० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के लिए १,३२० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है। सार्वजनिक क्षेत्र से लगभग ४५० करोड़

अप्रैल

की बचत भी सरकार ले लेती है, जिसमें से लगभग ३०० करोड़ केंद्रीय सरकार के उद्योगों से मिलता है।

आज जब सार्वजनिक उद्योगों में अधिकाधिक पूंजी लगायी जा रही है, तो यह भी उचित है कि उससे अधिक लाभ की आशा की जाये, ताकि उसे योजना के कामों में लगाया जा सके। कम-से-कम उतना लाभ तो होना ही चाहिये, जितना गैर-सरकारी उद्योगों में होता है। १९६३ की एक लेखा-परीक्षा की रिपोर्ट में कहा गया है कि ३१ मार्च १९६२ तक ४६ सरकारी कंपनियों की वित्तीय स्थिति इस प्रकार थी: इन कंपनियों में कुल १,०९० करोड़ ७५ लाख की पूंजी लगी है। १९६०-६१ में इन्हें ६.३४ करोड़ लाभ हुआ था; लेकिन इस वर्ष १०.६० करोड़ घाटा हुआ।

आगे बताया गया है कि २५ कंपनियों में से २३ में ११.४८ करोड़ का लाभ दिखाया गया है, जिसमें कर की रकम शामिल नहीं है। दो कंपनियों में १९६१-६२ में ८० लाख घाटा हुआ। कुल कंपनियों ने १ करोड़ ३२ लाख का लाभांश घोषित किया था, जो १५६ करोड़ की पूंजी को देखते हुए १ प्रतिशत से भी कम था। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि उपर्युक्त कंपनियों ने लाभप्रद कारोबार का तरीका नहीं अपनाया है।

यदि सार्वजनिक उद्योगों से लाभ की मात्रा पर्याप्त न हुई और वे हमारी अर्थ-व्यवस्था पर व्यर्थ का भार बने रहे, तो प्रजातांत्रिक समाजवाद और संभवतः योजनाबद्ध विकास में लोगों को विश्वास नहीं रह जायेगा।

हमारे प्रधान मंत्री की धारणा है कि योजना का विकेंद्रीकरण होना चाहिये और उसका आयोजन गांव, जिला और राज्य स्तर पर क्रमानुसार होना चाहिये। जिन लोगों ने खेतों और कारखानों में दक्षता दिखायी है, उन्हें ऐसे कार्यों का दायित्व सौंपा जाना चाहिये, ताकि स्वयं विकासशील अर्थ-व्यवस्था का रूप धारण करने के लिए योजनाबद्ध विकास-पद्धति कारगर सिद्ध हो सके। जब तक योजना का विकेंद्रीकरण नहीं किया जायेगा, योजना-आयोग का स्वरूप परामर्शदात्री समिति का नहीं होगा और साथ ही सार्वजनिक उद्योगों से उचित मुनाफे या सस्ते माल की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक समाजवाद एक स्वप्न-मात्र रहेगा।

इस समय उत्पादन-वृद्धि की रफ्तार २ प्रतिशत है, जब कि आबादी २। प्रतिशत के हिसाब से बढ़ रही है। साथ ही योजना में उपभोग्य माल की अपेक्षा पूंजी-माल के उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। मानो लोगों को उचित मूल्य पर उपभोग्य सामग्री दिलाने के बजाय,अभाव की योजना बनायी गयी है। निर्माणकारी शक्तियों को पूरा अवसर दिया जाये, तभी आर्थिक पुनरुद्धार संभव है। इस दृष्टि से योजना पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

* * *

वह इस्माईल है कि आविद ?

पुनर्जन्म की संभावना को पुष्ट करनेवाली एक सत्य घटना।

प्राय: सभी देशों और युगों की धार्मिक पुस्तकों में कहा गया है कि आत्मा अमर है; और पुनर्जन्म कई धर्मों का बुनियादी सिद्धांत है। आकस्मिक स्मृति, स्वप्न आदि द्वारा वैयक्तिक जीवन में भी ऐसे अनुभव कभी-कभी हो जाते हैं, जो इस मान्यता को बल देते हैं। लेकिन नीचे दी हुई घटना आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म को वैज्ञानिक कसौटी पर कसने में विशेष सहायक सिद्ध हो रही है।

इस्तंबूल (तुर्की) की आत्मविद्या तथा वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष ने इस घटना की स्वयं जांच करके कहा है कि "स्पष्ट ही यह आत्मा के देहांतरण का मामला है; एक शरीर में दो आत्माओं की उपस्थिति का नहीं। हम इस मामले की रिपोर्ट अध्यात्मविद्यावेत्ताओं की अंतर्राष्ट्रीय परिषद को देंगे।"

इस घटना का नायक है चार साल का लड़का इस्माईल अर्तलिकलिक। तुर्की मनोवैज्ञानिकों का मत है कि छ: साल पूर्व दक्षिण-पूर्वी तुर्की के अदना नामक स्थान में मारे गये एक व्यक्ति की आत्मा इस लड़के में बसती है। पिछले कई महीनों से मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मविद्यावेत्ता बड़ी तत्परता से इसकी जांच कर रहे हैं।

जिस व्यक्ति की हत्या की गयी थी उसका नाम था – आविद सुजुल्युस। वह अपने पीछे तीन बच्चे छोड़ गया था – गुलशरां, जैकी और हिकमत। चार साल का इस्माईल कभी-कभी 'अपने' इन बच्चों को देखने के लिए बेताब हो उठता है और जोर-जोर से नाम लेकर उन्हें पुकारने लगता है। बहुधा वह सोते-सोते उठ बैठता है और चिल्लाने लगता है – "गुलशरां, मेरी बेटी तुम कहां हो ?"

इस्माईल के पिता महमूद अर्तलिकलिक ने एक दिन एक विचित्र दृश्य देखा। उनके घर के आगे से कोई फेरीवाला आइस्क्रीम बेचता हुआ चला जा रहा था। नन्हे इस्माईल ने उसे आवाज देकर कहा – "महमूद, यह क्या कर रहे हो !? तुम तो पहले साग-सब्जी बेचा करते थे न !"

इस्माईल की आवाज और उसके ये शब्द सुनकर फेरीवाला दंग रह गया। उसका नाम सचमुच वही था। वह बच्चे से पूछने लगा – "तुम्हें कैसे मालूम कि मैं पहले साग-सब्जी बेचा करता था ?"

इस्माईल ने जवाब दिया – "भई, मैं आविद हूं। मुझे भूल गये क्या ? तुम सब्जीवाले

आगे

मुझसे ही खरीदा करते थे ।"

फेरीवाले के काटो तो बदन में खून नहीं । किसी तरह अपने को संभालकर उसने कहा—"जहां तक मुझे याद है, आबिद का कत्ल हुए तो छः साल होने को आये ।"

जब इस्माईल के पिता ने अपने लड़के के बारे में सारी बातें उसे बतायीं, तब कहीं जाकर महमूद के होश-हवास दुरुस्त हुए । अब वह रोज इस्माईल को आइस्क्रीम मुफ्त खिला जाता है ।

× × ×

आबिद सुजुलयुस अदना नगर में रहता था । एक दिन उसकी पत्नी और दो बच्चों के साथ उसकी हत्या कर दी गयी । एक दिन इस्माईल ने कहा—"मेरे तीन बच्चे गुलशरां, जैकी और हिकमत अभी तक जीवित हैं और मेरे घर में रहते हैं । मेरी पहली बीवी हातिस अब उनकी देखभाल करती है ।"

और एक दिन एक पत्र-प्रतिनिधि इस्माईल को अदना नगर ले गया । आबिद के घर पहुंचते ही इस्माईल उत्तेजित हो गया और चिल्लाने लगा । गुलशरां ने दरवाजे पर उसका स्वागत किया । इस्माईल ने उसे देखते ही बड़ी स्वाभाविकता से कहा—"मेरी बेटी गुलशरां !"

फिर खाना बनाती हुई एक वृद्धा को देखकर वह उसके पास दौड़ा-दौड़ा गया और उसके गालों को चूमकर पत्रकार से बोला—"यह है मेरी पहली बीवी हातिस" । जब पत्रकार ने पूछा कि तुमने हातिस को तलाक देकर अपनी दूसरी बीवी शाहिरा से निकाह क्यों किया, तो इस्माईल ने बिना हिचक के उत्तर दिया—"शाहिरा ज्यादा खूबसूरत थी; और इस हातिस के बच्चा न होता था ।"

आबिद के घर में इस्माईल इस तरह घूम रहा था कि मानो वह उसका अपना ही घर हो । उसे पता था कि कौन वस्तु कहां रखी है । वह पत्र-प्रतिनिधि को अस्तबल में ले गया और वहां जाते ही उसके चेहरे पर से मुस्कान गायब हो गयी । उसने बताया कि किस प्रकार ३१ जनवरी १९५६ को इस अस्तबल में उसकी हत्या की गयी थी । अब वह कथा सुनिये :

"हमारा परिवार बड़ा सुखी था । हम सबकी सहायता करने को तैयार रहते थे । एक दिन दो भाई—रमजान और मुस्तफा मेरे पास बिलाल नाम के आदमी को लेकर आये और काम देने की मांग करने लगे । उन्होंने बताया कि वे केमिस्कगज्क नामक नगर से आ रहे हैं।

"मैं साग-सब्जियां उगाने का काम किया करता हूं, इसलिए मैंने उन्हें काम पर रख लिया । ३१ जनवरी की सुबह रमजान ने मुझे अस्तबल में आने को कहा । उसने बताया कि मेरा घोड़ा कुछ लंगड़ा रहा है। मैं अस्तबल में जाकर झुककर घोड़े के पांवों को देखने लगा ।

"मेरे सिर पर जोरदार प्रहार हुआ और मैं नीचे गिर पड़ा । और इसके बाद, रमजान ने किसी लोहे की वस्तु से मुझ पर

नवनीत

वार किया।

जैसे-जैसे इस्माईल इस हत्या का वर्णन शब्दों और हाथ के इशारों द्वारा करता जाता था, उसके माथे पर पसीना बढ़ता जाता था। उसे घटना को याद करने में कठिनाई अनुभव हो रही थी। बाद में वह अपने परिवार को आबिद की कब्र के पास ले जाकर बोला–"मुझे यहां दफनाया गया था।"

इस्माईल ने आबिद की हत्या का जैसा वर्णन किया था, वह उस रिपोर्ट से हूबहू मिलता था, जो पुलिस ने मामले की जांच के बाद तैयार की थी। पुलिस की रिपोर्ट के मुताबिक रमजान और मुस्तफा नाम के भाइयों ने बिलाल नाम के व्यक्ति की मदद से आबिद, उसकी बीवी और दो बच्चे जिली (आयु ६ साल) और इस्मत (आयु ४ साल) की हत्या कुल्हाड़ी से की थी। उनकी भागने की कोशिश बेकार गयी थी। वे गिरफ्तार कर लिये गये और अदालत ने उन्हें प्राणदंड दिया। फांसी के पहले ही मुस्तफा जेल में मर गया, पर बाकी दोनों अपराधियों को फांसी पर लटका दिया गया। इन हत्याओं से अदना में बहुत तूफान मचा था।

× × ×

जब इस्माईल को इस नाम से पुकारा जाता है, तो वह कहा करता है–" तो आबिद है।" वह एक पत्नी संतानों में से एक है।

इस्माईल जब अठारह महीने तभी से बोलने लगा था। पर आबिद आत्मा के रूप में व्यवहार करना की उम्र से शुरू किया। चाचा ने अजीबो-गरीब हरकतें देखकर पहले तो डांटा और फिर पिटाई की। उसका था कि या तो लड़का मक्कारी कर या सचमुच उसके अंदर किसी की समायी हुई है।

बालक इस्माईल ने चाचा के क्रूर हार को शांति से झेला और फिर कर कहा–"कुछ दिन पहले तक तो तुम बाग में काम करते थे और मेरे साथ (तुर्की की एक तेज शराब) पीते थे। तुम ऐसे कृतघ्न हो गये?"

चाचा हक्का-बक्का रह गया। उसने आबिद के बाग में कई वर्ष तक किया था और आबिद के साथ बैठकर 'राकी' पी थी।

जब इस्माईल को पड़ोस के बच्चे के लिए बुलाते है, तो वह जवाब देता "बच्चों के साथ खेलने के मेरे दिन जाओ भागो यहां से।"

★

जफर–कितना अच्छा होता, जो मुर्गी के पेट से उबला हुआ अंडा निकलता।
हम उसे उबालने की झंझट से बच जाते।
रमजान–कितना अच्छा होता मुर्गी का कि अंडा हमारे ही पेट में पैदा होता।
तब हम उसे खाने की झंझट से भी बच जाते।

★

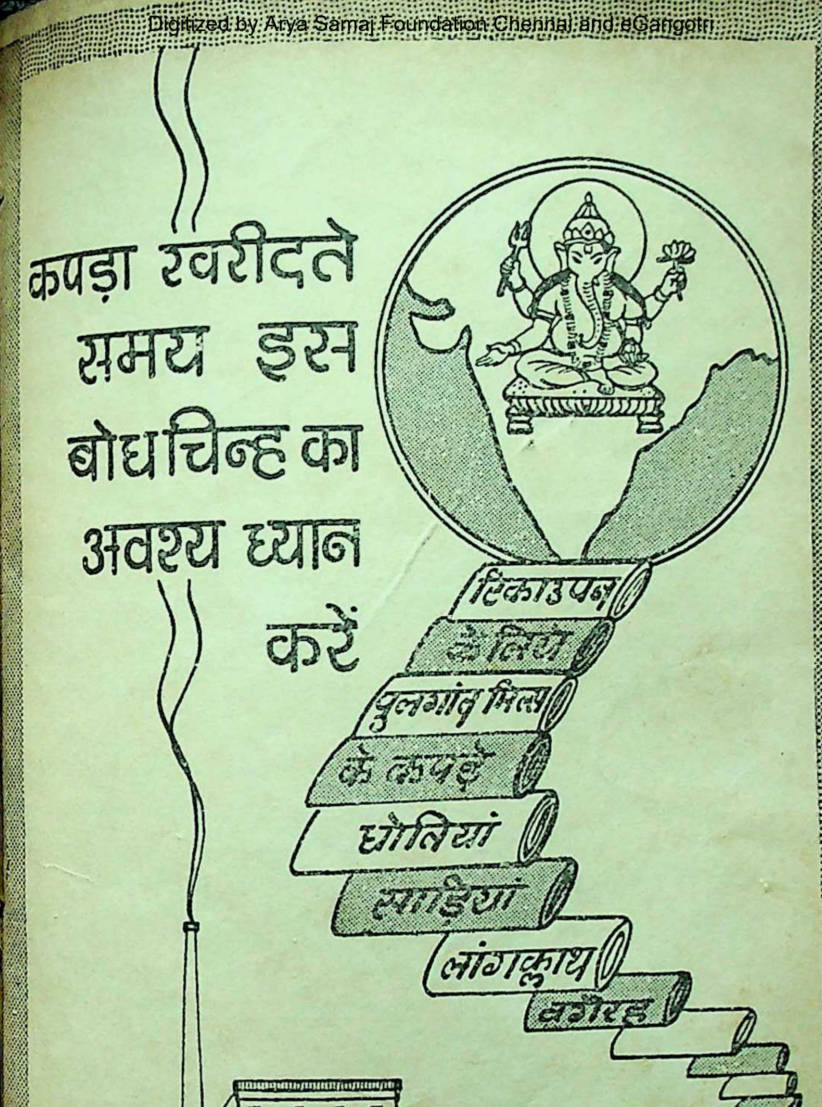
कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें
टिकाउपन
के लिए
पुलगांव मिल्स
के कपड़े
धोतियां
साड़ियां
लांगक्लाथ
वगैरह

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

फूल की तरह आपकी...
अपनी असली सुंदरता,
अपनी असली ताज़गी!
Himalaya Bouquet Talcum Powder
Himalaya Bouquet Snow
Himalaya Bouquet Toilet Powder
हिमालय
बुके
स्नो, टॅल्कम और टॉयलेट पाउडर

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मई
१९६४

सर्दी-ज़ुकाम का मुक़ाबला करने के लिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

लीजिए

लाल लेबल

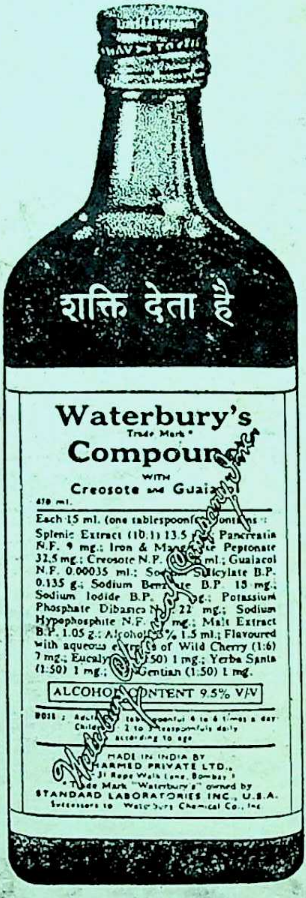
शक्ति देता है
Waterbury's
Trade Mark*
Compound
WITH
Creosote and Guaiacol
410 ml.
Each 15 ml. (one tablespoonful) contains:
Splenic Extract (10:1) 13.5 mg.; Pancreatin N.F. 9 mg.; Iron & Manganese Peptonate 32.5 mg.; Creosote N.P. ml.; Guaiacol N.F. 0.00035 ml.; Sodium Salicylate B.P. 0.135 g.; Sodium Benzoate B.P. 15 mg.; Sodium Iodide B.P. mg.; Potassium Phosphate Dibasic N.F. 22 mg.; Sodium Hypophosphite N.F. mg.; Malt Extract B.P. 1.05 g.; Alcohol % 1.5 ml.; Flavoured with aqueous extracts of Wild Cherry (1:6) 7 mg.; Eucalyptus (1:50) 1 mg.; Yerba Santa (1:50) 1 mg.; Gentian (1:50) 1 mg.
ALCOHOL CONTENT 9.5% V/V
DOSE: Adults tablespoonful 4 to 6 times a day
Children 2 to 3 teaspoonfuls daily according to age
MADE IN INDIA BY
PHARMED PRIVATE LTD.,
31 Rope Walk Lane, Bombay 1
*Trade Mark "Waterbury's" owned by
STANDARD LABORATORIES INC., U.S.A.
Successors to Waterbury Chemical Co., Inc.

सर्दी-ज़ुकाम को मामूली बात समझा जाता है, लेकिन दरअसल इससे कमज़ोरी आजाती है और शरीर की रोग-निरोधक शक्ति घट जाती है। वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड आराम पहुँचाता है, शक्ति पैदा करता है और बीमारियों का मुक़ाबला करता है। इसके सक्रिय तत्त्व 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' सर्दी-ज़ुकाम में आराम पहुँचाते हैं, लोहा तथा दूसरे बलवर्धक तत्त्व, जौ तथा प्लीहा के सत्त्व भूख बढ़ाते हैं, फिरसे शक्ति पैदा करते हैं तथा शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं।

बारहों महीने रोग-निरोधक शक्ति क़ायम रखने के लिए लाल लेबलवाला वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड नियमित रूप से पीजिए।

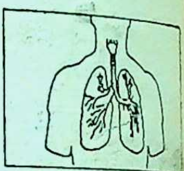

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड' मे मौजूद 'क्रिओसोट' और 'गाय-कॉल' श्वास-तंत्र को रोगाणुओं से मुक्त रखते हैं और बलग़म निकालते हैं, फेफड़ों को साफ़ रखते हैं, खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने में मदद करते हैं और रोगाणुओं को दुबारा फैलने से रोकते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने की शक्ति देता है

वॉर्नर-लैम्बर्ट फार्मास्यूटिकल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

कवर छपाई 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

नये मरफी मॉडल में चार खास खूबियां है

- आधुनिक साज-सज्जा के अनुरूप शानदार डिज़ाइन में लकड़ी की लो-लाइन कैबिनेट
- सुंदर वेफल-बोर्ड, जिसकी चमकती नॉब्ज सबका मन खींच लेती है
- आधुनिक ढंग का ट्यूनिंग इंडिकेशन
- सूक्ष्म-ग्राही ओवल स्पीकर, अधिक सजीव व स्वाभाविक प्रसारण के लिए

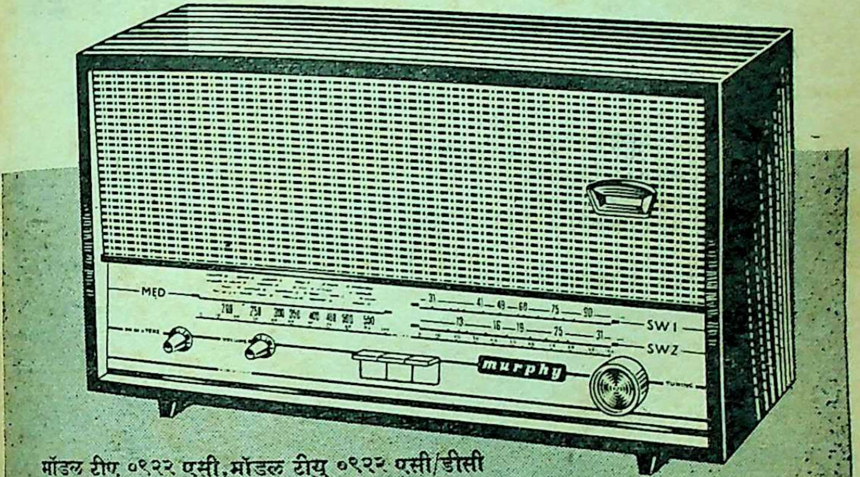

मॉडल टीए ०९२२ एसी, मॉडल टीयु ०९२२ एसी/डीसी

६-वाल्व • ३-बैण्ड • अखण्ड ध्वनि नियमन • नयी तरह का पियानो-की-स्विच • एलिप्टिकल लाउडस्पीकर • ग्रामोफोन पिक-अप साकेट्स • एक्सटरनल स्पीकर साकेट्स

murphy radio

मरफी रेडियो घर को आनन्दमय बनाता है

NAS 6113a

Vanasda
BERAR OIL INDUSTRIES
MADE FROM VEGETABLE OILS ONLY

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनसदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनसदा वनस्पति। वनसदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनसदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनसदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनसदा
विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से सम्पन्न)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज अकोला

लावण्यमयी ललनाओं के
सदा के साथी

उसके स्वजन या परिजन नहीं
प्रियजन या मित्र नहीं
हरदम का साथी है—
उन शृंगार प्रसाधनों से भरा डिब्बा
जो उसे हर समय, हर जगह
सदा और सर्वदा तरोताजा रखते हैं
उसी से पूछ लीजिये, वह कहेगी
उसके सदा के साथी हैं

अफगान स्नो
शृंगार-प्रसाधन

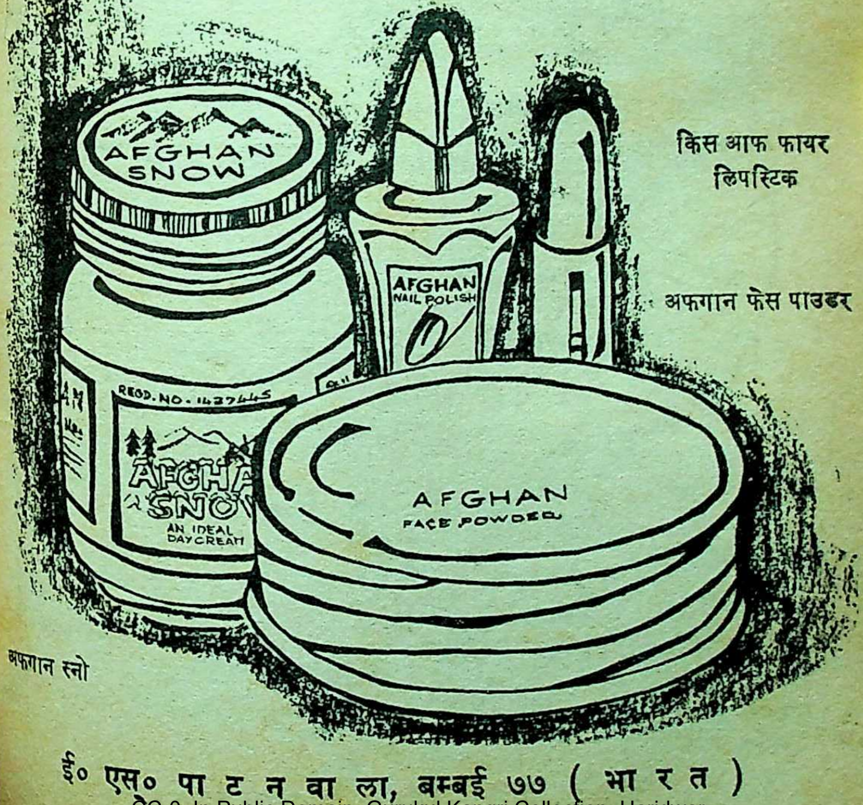
अफगान नेल पालिश
AFGHAN SNOW
AFGHAN NAIL POLISH
किस आफ फायर लिपस्टिक
अफगान फेस पाउडर
REGD. NO. 142744S
AFGHAN SNOW
AN IDEAL DAY CREAM
AFGHAN FACE POWDER
अफगान स्नो

ई० एस० पाटनवाला, बम्बई ७७ (भारत)

खिज़ाब मत कहिये-

लिना

मांगिये। यह अद्भुत केश-प्रसाधन सफेद बालों को न तु केवल श्याम बना देता है बल्कि बालों को सफेद बनने से रोकता भी है।

लिना सफेद बालों को श्याम बना देता है

सौराष्ट्र सुगन्धी स्टोर्स
अहमदाबाद-१

एजेंटस् : एम० डी० पटेल एंड कम्पनी, ७९, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई २

Lina
Lina
HAIR TONIC

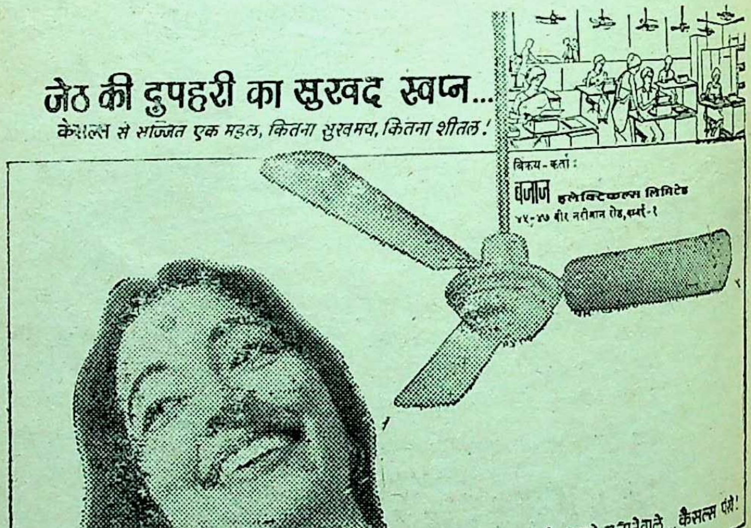

जेठ की दुपहरी का सुखद स्वप्न...
केसल्स से सज्जित एक महल, कितना सुखमय, कितना शीतल!

विक्रय-कर्ता :
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१

आपके सपने सजानेवाले... कैसल्स पंखे!

heros' BE-160 F H.N

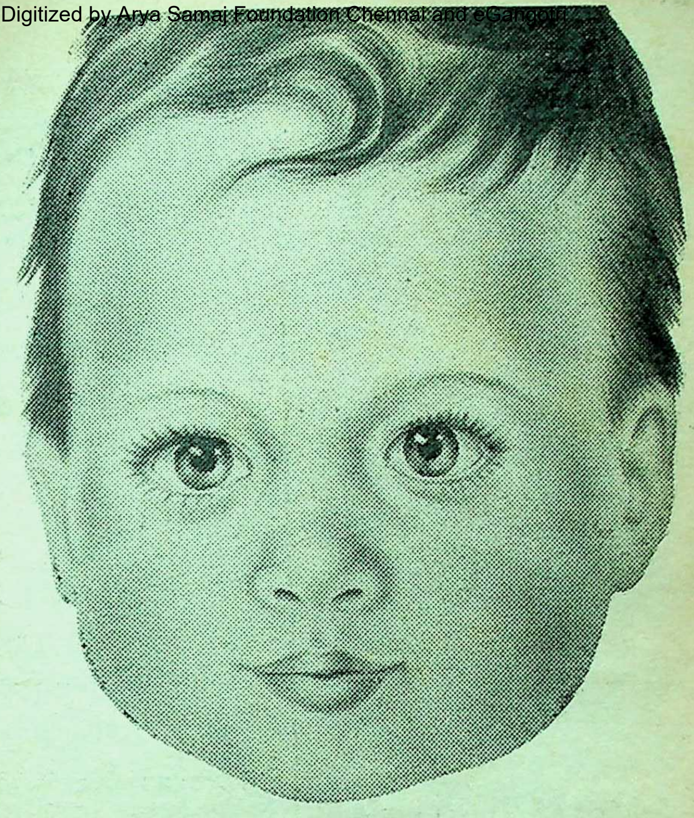

आपके बच्चे को
तन्दुरुस्त और हंसता खेलता रखने के लिए नियमित रूप से
ग्राइमिक्स दीजिये

आपके बच्चे की जरूरतों को ध्यान में रख कर-जैसे, उनके नाजुक पेट को आराम पहुंचाने, वायु-दर्द से, पेट की मरोड़ से और पेट की गड़बड़ीसे शीघ्र छुटकारा दिलाने के लिए-**ग्राइमिक्स** खास तौर से बनाया गया है। **ग्राइमिक्स** देने से, दांत निकलते समय और बच्चों को दूध छुड़वाते समय भी कोई कष्ट नहीं होता और वे मुस्कराते और हंसते खेलते रहते हैं।

याद रखिये-आपके बच्चे के स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिए ग्राइमिक्स दीजिये

ग्राइमिक्स

बूट्स Boots द्वारा निर्मित और लाखों माताओं का विश्वास-पात्र

NAS 6073

स्वस्थ आंखों के लिये

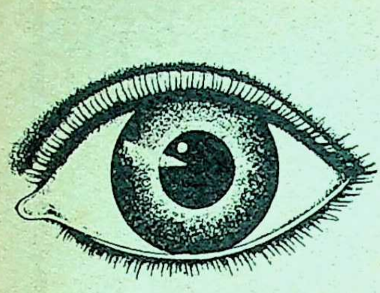

भीमसैनी
काजल

प्रयोग कीजिये

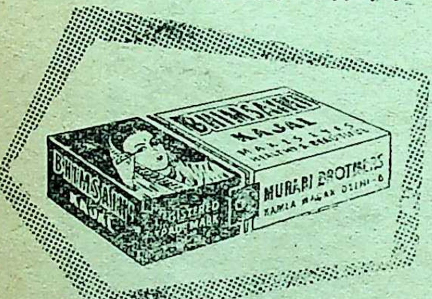

यह आपकी आंखों को नीरोग
और सुन्दर बनाता है तथा
उनकी ज्योति को निखारता है

मुरारी ब्रदर्स
कमला नगर. देहली-६

डिस्ट्रीब्यूटर्स—मेसर्स मनोचा ट्रेडिंग कं०
अमृता मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली—६

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

किसी भी उम्र में

TRADE "CALCHEM"
TOOTH P
Neem

चाहे उम्र ज्यादा हो या कम—नीम टूथ पेस्ट सभी के लिए समान गुणकारी होता है।

नीम के कीटाणुनाशक, रोग प्रतिरोधक और अन्यान्य भैषज गुणों के साथ इसमें आधुनिक दन्तविज्ञान की समस्त फलदायक औषधियों का सम्मिश्रण किया जाता है। इस टूथ पेस्ट से 'पायरिया' और 'केरीज' तथा 'टार्टर' आदि रुकते और दाँतों का 'एनामेल' मजबूत बनता है। मुँह की दुर्गन्ध को नष्ट कर यह श्वास को सुगन्धित करता है।

नीम की तुलना नहीं

पत्र लिखने पर नीम से
उपकार सम्बन्धी पुस्तिका
भेजी जाती है।

नीम टूथ पेस्ट

दि कैलकटा केमिकल कं० लि०, कलकत्ता-२९

NTP/211 H

आपके लिए जरूरी है

बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेयर ऑयल

आपके लम्बे काले
मुलायम और,
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

बेंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

ी खतरे में है। अपनी पूरी ताकत लगाकर इसकी रक्षा कीजिए। —जवाहरलाल ने

ा की रक्षा के लिए
व जागरूक रहिये

ाजकल हमारे सामने बाहरी आक्रमण ी खतरा है वह जल्दी ही समाप्त होने नहीं है और वह काफी समय तक रह सकता है। इसलिए राष्ट्र को सतर्क रहना है। हर प्रकार से देश की बढ़ाने के काम में न तो कोई ढील ही चाहिए और न ही उसकी गति मंद चाहिए।

तोड़ मेहनत कीजिए

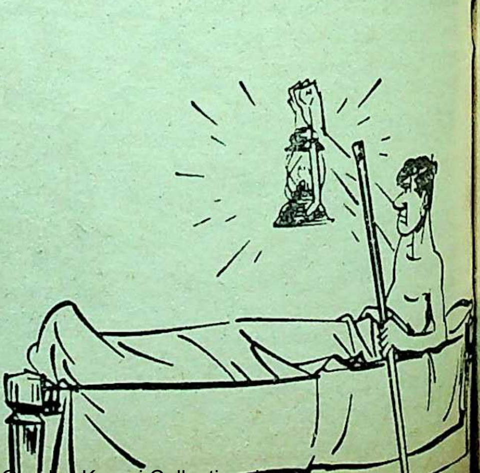

det
PROUD OF YOUR WASH!
Swastik Oil Mills Ltd. Bombay 31
डेट

प्रसन्नचित्र गृहणी...उसे हर काम के लिए
अवकाश है ...घर की सजावट व सुन्दरता के लिए...
अपने पति पर गर्व लिए... स्वयं पर भी...

डेट द्वारा अपने धुले कपड़ों पर भी शान लिए

डेट न केवल कपड़ों को धोता ही है
बल्कि उससे साफ़ हुए कपड़ों में
चमक सी भी आ जाती है

आधुनिक रीति अपनाइए
शान के साथ डेट से कपड़े धोइए
डेट एक सिन्थेटिक डिटर्जेन्ट

स्वस्तिक ऑयल मिल्स लिमिटेड बम्बई

आजादी खतरे में है।
पूरी ताकत लगा कर इसकी रक्षा कीजिए!

—जवाहरलाल नेहरू

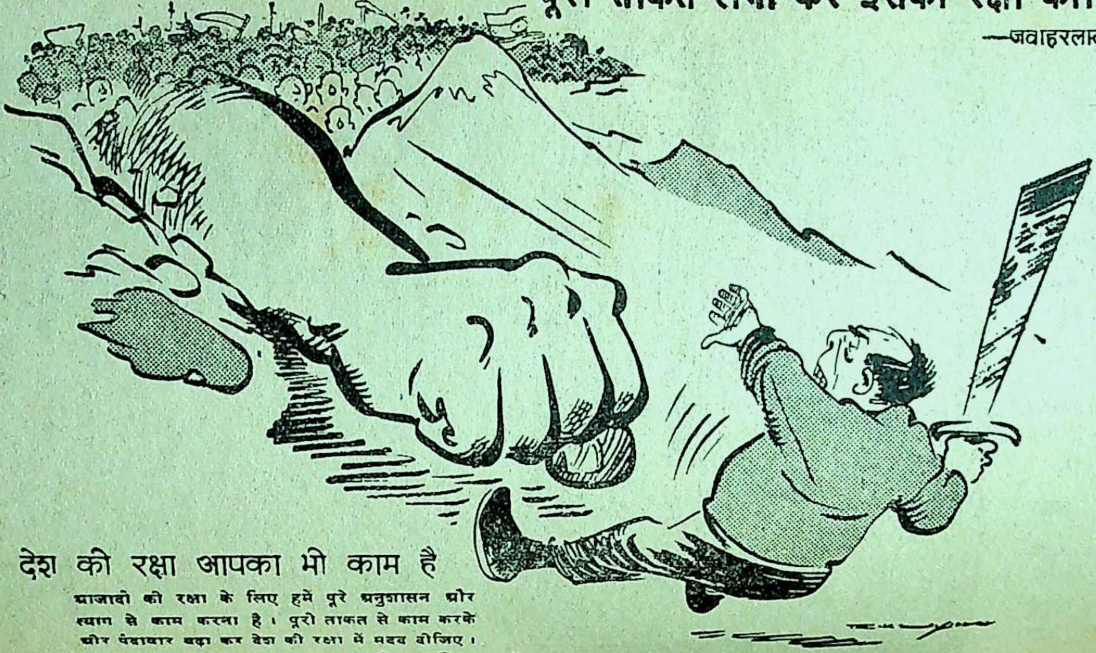

देश की रक्षा आपका भी काम है

आजादी की रक्षा के लिए हमें पूरे अनुशासन और त्याग से काम करना है। पूरी ताकत से काम करके और पैदावार बढ़ा कर देश की रक्षा में मदद दीजिए।

आप का अनुशासन भारत की शक्ति है

सुन्दर आकार और समुचित मूल्य की दृष्टि से

अपने दर्जे में **लाजवाब !**

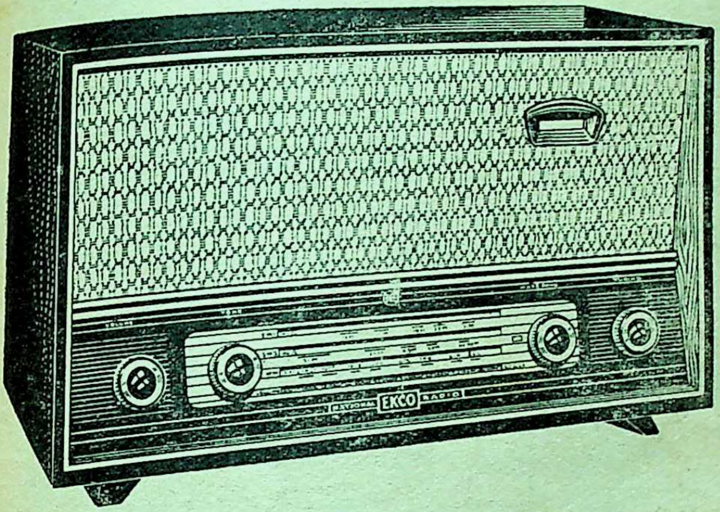

एक निराली शान...कुशलतापूर्ण बनावट...मनभावन कैबिनेट...'मॉन्सूनाइज़्ड' रचना—ये हैं कुछेक खूबियाँ जिनकी बदौलत नेशनल–एक्को का मॉडल ए-७७९ अपने दर्जे में लाजवाब है।

अपने पासवाले नेशनल–एक्को विक्रेता के यहाँ पधारकर इसे मुफ़्त सुनिए।

मॉडल ए-७७९ : ६ वाल्व, ३ बैण्ड। इच्छानुसार ध्वनि बदलने के लिए टोन कण्ट्रोल। आधुनिक डिज़ाइन के तिरंगे डायल, सुनहले रंग की सुन्दर पट्टी और मैजिक आइ सहित मनभावन कैबिनेट। ग्रामोफ़ोन और अतिरिक्त लाउडस्पीकर लगाने की व्यवस्था। **रु. ३९५·००**
एक्साइज ड्यूटी सहित; टैक्स अलग

जनरल रेडियो एण्ड एप्लायन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई · कलकत्ता · दिल्ली · मद्रास · बंगलोर · सिकन्दराबाद · पटना

एक और शानदार **नेशनल एक्को** रेडियो !

IWT-GRA-1590

गाडी में सफर
करते समय
सावधानी
बरतें!

सिगरेट के
जलते हुए टुकड़े को
फेंकने से पहले
बुझा दें
या राखदान में डाल दें।

●

सवारी डिब्बों में
स्टोव न जलायें।

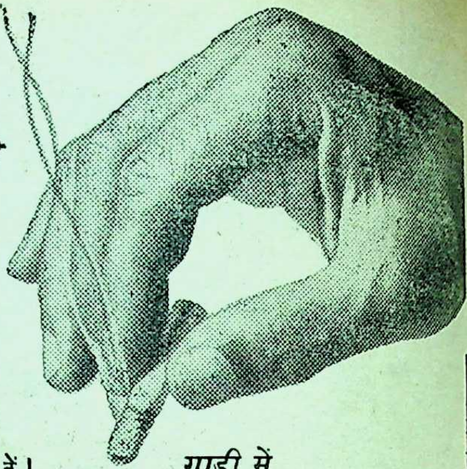

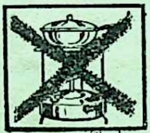

गाडी में
सुरक्षा
के लिए
अग्नि-रोधक
नियमों का पालन
करें।

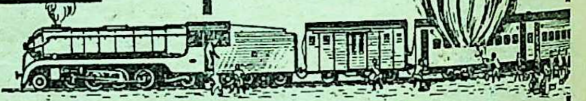

आग पकडने वाली
वस्तुओं को
साथ में न रखें।

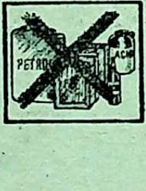

असावधानी से गाडी में आग
लग सकती है और जान और
माल की हानि हो सकती है।

यात्रा में सुरक्षा के वास्ते मध्य रेलवे द्वारा प्रसारित।

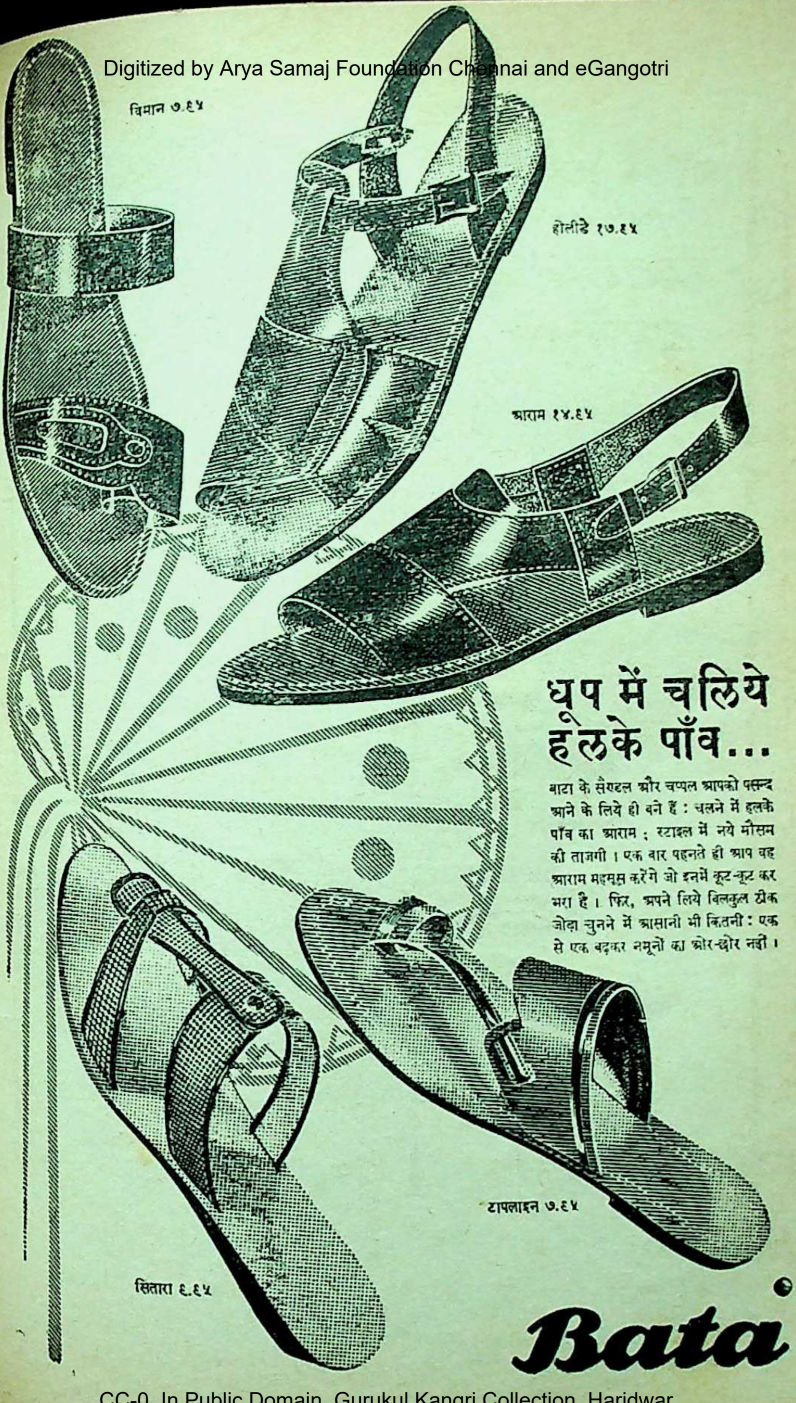
विमान ७.९५
होलीडे १७.९५
आराम १४.९५
टापलाइन ७.९५
सितारा ६.९५

धूप में चलिये हलके पाँव...

बाटा के सैण्डल और चप्पल आपको पसन्द आने के लिये ही बने हैं : चलने में हलके पाँव का आराम ; स्टाइल में नये मौसम की ताजगी। एक बार पहनते ही आप वह आराम महसूस करेंगे जो इनमें कूट-कूट कर भरा है। फिर, अपने लिये बिलकुल ठीक जोड़ा चुनने में आसानी भी कितनी : एक से एक बढ़कर नमूनों का ओर-छोर नहीं।

Bata

MAFATLAL GROUP

मफतलाल ग्रुप

पॉपलिन* और कमीज* के कपडे

*'टेबिलाइज्ड' क्वालिटी में भी मिलते हैं।

न्यू शोराक (शोराक), अहमदाबाद • न्यू शोराक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई • स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • सैसून बम्बई • सैसून (न्यू यूनियन), बम्बई • सूरत काटन, सूरत • मफतलाल फाइन, नवसारी

ars MGSP-4

वर्ष १३ : अंक ५
मई १९६४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

गौरी
[चित्रकार : टी० एस०]
विश्वनाथन

इस अंक में

१७ अंतहीन कहानी (कविता)
—ओटो द सोला
१८ अखंड ब्रह्मचर्य
—ब्रह्मचारी जगन्नाथ 'पथिक'
२० समय (कविता)
—भवानी प्रसाद मिश्र
२१ अंधेरे में शब्दवेध
—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
२२ गुरु से बदला
—एम० आर० जयकर
२४ दक्षिण-ध्रुव में चार महीने
—डा० गिरराज सिंह सिरोही
२८ महानता की खोज में
—यूसुफ कार्श
३४ और स्वप्न साकार हो गया
—डा० अजुध्यानाथ खोसला
३९ राजस्थान : एक मीठी याद
—श्रीगोपाल नेवटिया
४४ लाल चीन के अंतराल में
—सर फ़िट्जराय ह्य, मैक्लीन
५० एक सुनहरी याद
—जी० आर० सेठी
५२ जहांगीर के रोजनामचे से
५६ लगाम निरालाजी के हाथ में
—नीलकंठ तिवारी

आगामी अंक में

अंतरिक्ष से ख़तरे के संकेत
– सर बर्नार्ड लावेल

ऊंचा बांध, ऊंचे अरमान
– डा० के० एल० राव

आत्मनिरीक्षण आवश्यक
– श्रीप्रकाश

विकास की कीमत कितनी?
–जेरार्ड पील

नेतृत्व और नौकरशाही
– एच० वी० आर० अय्यंगार

सिक्ख-साम्राज्य का केरली मंत्री
–के० एन० नायर

चित्रसज्जा :

मातीस, आइसेंस्टाइन, ओंके, शणै, कदन

हमारा पता :

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१ तारदेव, बंबई–३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई–४ में मुद्रित ।

५७ पोंडोलैंड का अंतिम दिन
–बिनी मालकम
६१ मशालों की छांह में
–श्रीनिधि सिद्धांतालंकार
६६ मंटो की परछाईं
–सआदत हसन मंटो
६९ नीले बुद्ध की वापसी
–लुडविग कोच आइसनबर्ग
७२ मेरे पडोसी
–विलियम ओ० पी० डगलस
७६ तीन कविताएं
–दिनकर सोनवलकर
७७ अपनी नजर में
८१ लंबकर्ण की आत्मकथा
–स० का० वि०
८५ धन्यवाद (कहानी)
–एंटन चेखोव
८८ प्रार्थना फल गयी
–स्टार जेंकिंस
९० हमसे न कहो कि सब्र करो
–मार्टिन लूथर किंग
९२ एक बारात : एक प्रश्न
–डा० जगदीशचंद्र जैन
९६ सरकस मेरी जिंदगी
–प्रो० के० दामोदरन
१०५ मौत की दहलीज पर (पुस्तक-संक्षेप)
–जान गंथर
१३१ दिल टूटने से थोड़ी तकलीफ तो हुई
–संतराम
१३९ अंतरिक्ष-यात्रा कौन करेगा ?
–वारेन आर० यंग
१४७ कारखाने या कला-भवन
–आंद्रेई मार्गोलिन

अंतहीन कहानी

तुम दुःखी क्यों हो ?
याद रखो कि हम लोगों ने
एक अंतहीन कहानी लिखी है ।

संगीत, चुंबन और तितलियों से
बुनी हुई हमारी कहानी
सृष्टि की आदिम कहानी है ।

हमारी कहानी पर वे सभी देवदूत
घिर आयेंगे जो अभी पैदा नहीं हुए,
वे फूल जो रात के अंधेरे में खिलकर
अनजाने ही मुरझा जाते हैं ।

नववधू के फूल-मुकुट से
झरनेवाले नींबू के फूल
इस कथा से महक उठे हैं ।

हवा निःश्वास भर रही है,
हवा करवटें बदल रही है,
याद रखो कि हम लोगों ने
एक अंतहीन कहानी लिखी है ।

['देशांतर' से] —ओटो द सोला

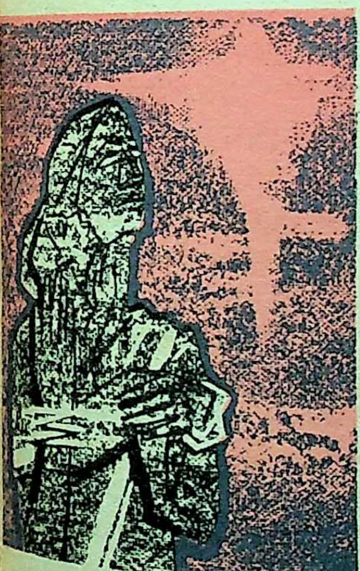

चित्र : वी० एन० ओके

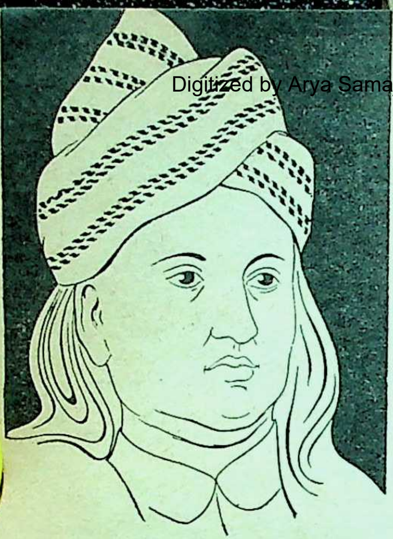

अखंड ब्रह्मचर्य

मानव की आत्मविजय की एक अतिमानवीय प्रतीत होनेवाली घटना।

जगन्नाथ 'पथिक'

स्वामी श्रद्धानंदजी गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन करनेवाले ब्रह्मचारियों को प्रायः ऋ दयानंद सरस्वती के संपर्क से प्राप्त ज्ञान तथा सदाचार-संबंधी वार्तालाप सु करते थे। एक बार ऋषि-निर्वाण दिवस पर उन्होंने अपने समक्ष बीती वार्ता यों सुनाई:

"एक छोटी-सी ज्ञान-गोष्ठी में ऋषि दयानंद के कुछ भक्त बैठे थे। उनमें से सज्जन कुछ पूछने को उत्सुक थे, पर पूछ नहीं पा रहे थे। यह देखकर ऋषि ने उन्हें दिलाया। तब उन सज्जन ने कहा—'स्वामिन्, जो कुछ मैं पूछना चाहता हूं, वह आपके जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध रखता है; इसलिए पूछते हुए संकोच हो रहा है।' दयालु ऋ ने कहा— 'आचार्य और शिष्य का संबंध तो आवरण-रहित होता है। फिर मशाल के अंधेरा भी रहता ही है—भले, मात्रा में नगण्य ही हो। इसलिए निःसंकोच होकर पूछो।'

"तब उन महानुभाव ने पूछा—'महाराज आपको क्या कभी काम ने नहीं सताया?' प्रश्न सचमुच बेढ़ब था। उसे सुनकर ऋषि ने नेत्र मूंद लिये और समाहित से हो गये। सब स्तब्ध हो गये। कुछ ही मिनिटों के पश्चात् नेत्र खोलकर ऋषि बड़े स्नेह से कहने 'प्रश्न तुमने बड़ी समझदारी का किया है। शिष्यों को गुरु से और गुरु को शिष्यों से कोई नहीं होना चाहिये—तभी शिष्य उच्च बन सकते हैं। मैंने इतने से समय में अपने जीवन सिंहावलोकन करके देखा है। मुझे यही ज्ञात हुआ है कि काम मेरे समीप नहीं आया—मैंने नहीं देखा। यदि जब-तब आया भी होगा, तो मेरे मस्तिष्क तथा हृदय के कपाटों को बंद कर, बाहर बैठे-बैठे उकताकर निराश लौट गया होगा। मुझे—मेरे मस्तिष्क तथा हृदय वेदभाष्यादि के लेखन तथा शास्त्रार्थों से अवकाश ही कहां मिलता है, जिससे बचे समय

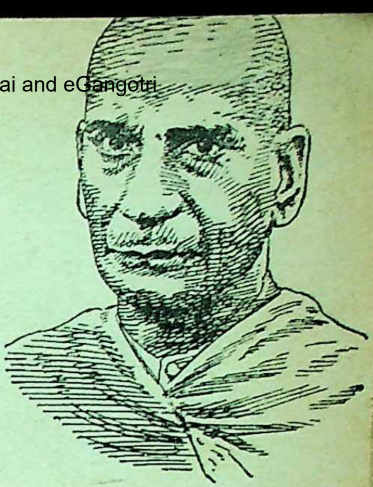

स्वामी श्रद्धानंद

मेरे हृदय तथा मस्तिष्क का द्वार बाहर को खुले और मैं इस निम्न दैहिक स्तर पर आकर यहां के दृश्य देखूं, सुनूं और उन पर ध्यान दूं !'

"इस पर गोष्ठी में बैठे एक अन्य सज्जन ने पूछ लिया–महाराज, अपराध क्षमा ! क्या आप स्वप्न में भी कभी काम-पीड़ित नहीं हुए ?' इस पर ऋषि ने मुस्कराते हुए कहा–'भाई, जब काम को मेरे अंदर प्रवेश करने के लिए द्वार ही नहीं मिला, तब वह अपनी क्रीड़ा भी कैसे और किससे करता ? जहां तक स्मृति काम दे रही है, इस शरीर से शुक्र की एक बूंद भी बाहर नहीं गयी है ।' यह सुनकर सब अवाक् रह गये । क्या इतना उच्च जीवन मानव से सध सकता है ?"

योगदर्शन के 'विभूति-पाद' में संयम से प्राप्त होनेवाली सिद्धियों का ही विशेष रूप से वर्णन किया गया है । उनमें एक है 'विवेकज-ज्ञान', जो क्षण तथा उसके क्रम-प्रवाह में समाधि लगाने से प्राप्त होता है । वहां बताया गया है कि एकजाति, समान लक्षण तथा देश-वाले जिन पदार्थों में भेद नहीं जाना जा सकता, उन पदार्थों में भी सूक्ष्म भेद देखने की शक्ति विवेकज-ज्ञान-प्राप्त योगी में आ जाती है । कूप और नदी के नीर को मिलाकर रख देने पर कोई भी यह नहीं बता सकता कि इस जल में दो स्थानों का जल मिला हुआ है; परंतु विवेकज-सामर्थ्य-प्राप्त योगी इस भेद को बता देता है । इसका आंखों देखा दृष्टांत श्रद्धानंदजी ने सुनाया था ।

ऋषि दयानंद ने अपने सेवक को आज्ञा दे रखी थी कि उनके स्नानार्थ सदा ताजा जल भरा करे। प्रमादवश सेवक ने एक दिन पिछली रात को भरे पानी में ही ताजा जल डालकर स्नान के लिए दे दिया । जब ऋषि ने कुल्ला किया, तो तुरंत सेवक को बुलाकर पूछा–"आज तुमने बासी जल और ताजा जल मिला क्यों दिया है ?" वह अवाक् रह गया और उसने भूल स्वीकार करके क्षमा मांग ली ।

यह है योग-सिद्धि का प्रत्यक्ष उदाहरण । इसी विवेकज-ज्ञान की सहायता से प्रकृति-पुरुष-बोध सरलता से हो जाता है ।

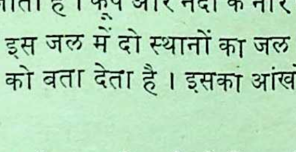

समय

सब कुछ
समय में अवस्थित है
और नष्ट है सब कुछ
समय में !
यह जो फूल खिलता है
और मुरझा जाता है;
यह जो लड़का उठा था
और जो अब सो गया है;
यह जो अभी कुछ था
और जो अभी
कुछ और हो गया है –
बादल का टुकड़ा,
चेहरे का रंग;
यह भी समय है।
यही भय है
यही अभय है।

–भवानी प्रसाद मिश्र

अंधेरे में शब्दवेध

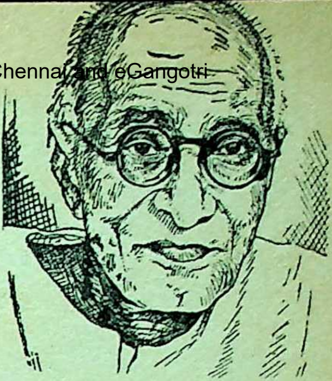

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

उन दिनों मैं एक मुकदमे की पैरवी के लिए नामक्कल गया हुआ था । वहां से बैलगाड़ी पर रात को सेलम लौट रहा था ।

उन दिनों सेलम जिले की लगभग हर सड़क पर डकैती और लूट-खसोट का डर रहता था । सड़कों पर चुंगी के फाटक भी थे ।......मैं गाड़ी में झोंके खाता हुआ सो रहा था कि एकाएक इस कड़कती आवाज ने मुझे जगा दिया—"पणम् !"

गाड़ी रुक गयी और मैंने समझ लिया कि डाकुओं ने मुझे घेर लिया है । मैंने उपहास के स्वर में पूछा—"अच्छा, तो तुम्हें पणं (पैसा) चाहिये ?" उत्तर में 'हां' की ध्वनि सुनाई दी; और मैंने अपना रिवाल्वर तानकर उस तरफ गोली छोड़ दी, जिधर से वह आवाज आयी थी। तभी मैंने किसी के चीखने का स्वर सुना और यह सोचकर कि अब दूसरे डकैत मुझ पर जरूर झपटेंगे, मैंने रिवाल्वर फिर निशाने के लिए साध लिया ।

इसी बीच गोली चलने की आवाज सुनकर चुंगी के कुछ आदमी जाग गये और एक बुझी-बुझी-सी लालटेन लेकर बाहर दौड़े । जिस आदमी पर मैंने गोली छोड़ी थी, वह जमीन पर पड़ा था । यद्यपि वह मरा नहीं था; लेकिन मेरा असली लक्ष्य तो उसे मारने का ही था ! मैंने दरअसल उस आवाज की सीध में निशाना दाग दिया था; किंतु किसी कारणवश गोली उसकी खोपड़ी में लगकर कुछ दायीं ओर घूम गयी और कान के पीछे से निकल गयी । मेरा रिवाल्वर काफी बड़ा और पुराने ढंग का था । खैर ...... गोली तो उसके लग ही चुकी थी । उस व्यक्ति को मेरी ही गाड़ी में डालकर नजदीक के शहर के अस्पताल में ले जाया गया, जहां वह बिलकुल ठीक हो गया और मैंने हर्जाने के रूप में उसे पचास रुपये भी दिये । मुझ पर मुकदमा चला; लेकिन मैं अभियोग-मुक्त हो गया । फिर भी, पुलिस ने मेरा लाइसेंस छीन लिया ।

जब यह घटना घटी, उस समय जिला मजिस्ट्रेट छुट्टी पर इंग्लैंड गये हुए थे । जब वे लौटे, उन्होंने मेरा लाइसेंस वापस दिला दिया और यह भी कहा कि दरअसल मुझ पर मुकदमा नहीं चलाया जाना चाहिये था । बाद में तो मैंने एक स्मूथ बोर का शाट गन भी खरीदा ।

*

गुरु से बदला

ऐसा भी एक समय था जब किसी अब्राह्मण बालक का संस्कृत पढ़ने की इच्छा करना गुस्ताखी समझी जाती थी ।

एम० आर० जयकर

मैं उन दिनों एलफिंस्टन हाइस्कूल में पढ़ता था । मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों के लिए तब यह स्कूल बंबई के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में गिना जाता था । तभी की एक घटना याद आती है, जिससे पता चलता है किस प्रकार सरकारी स्कूलों तक में रूढ़िग्रस्त और दकियानूसी रवैया अपनाया जाता था । इस प्रसंग से हमारे तत्कालीन सामाजिक विचारों का भी परिचय मिलता है । सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और समाज - सुधारक वामन आबाजी मोडक उस वक्त हमारे प्रिंसिपल थे । स्कूल में तब दो विभाग थे–एक मराठी का, दूसरा गुजराती का ।

शिक्षा-विभाग के नियमानुसार मुझे हाइस्कूल की कक्षा के लिए अंग्रेजी और अपनी मातृभाषा मराठी के अलवा एक ऐच्छिक भाषा और लेनी थी । उन दिनों सिर्फ दो ही ऐच्छिक भाषाएं थीं–संस्कृत और फारसी । फ्रेंच भाषा का उतना प्रचलन नहीं था । अतः अधिकांश अब्राह्मण विद्यार्थी फारसी ले लेते थे; क्योंकि संस्कृत के बारे में उन दिनों यही आम धारणा थी कि वह बड़ी कठिन भाषा है और बड़ी निष्ठुरता से पढ़ाई जाती है । मेरे नानाजी चूंकि संस्कृत के बड़े भक्त थे, इसलिए उन्होंने मुझे संस्कृत ही दिलवायी ।

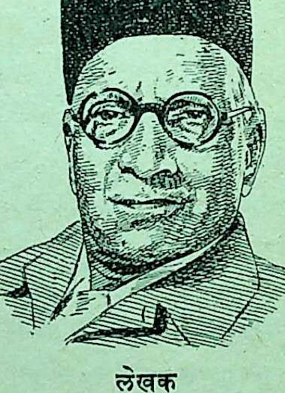

लेखक

लेकिन हमारे स्कूल में उस समय जो संस्कृत के अध्यापक थे, वे एकदम पुराण-पंथी ब्राह्मण ठहरे । उन्होंने जब सुना कि एक अब्राह्मण विद्यार्थी ने उस प्रचलित परंपरा को तोड़कर संस्कृत भाषा ली है, तो स्तंभित-से रह गये । उनके लाख मना करने व समझाने पर भी जब मैं संस्कृत पढ़ने पर ही उतारू रहा, तो उनका पारा चढ़ गया ।

उनके खयाल से मैंने जो संस्कृत पढ़ने की अनधिकार चेष्टा कर डाली थी, उसके लिए उन्होंने मुझे पहला दंड यह दिया कि मैं उनके घंटे में दस दिन तक क्लास के बाहर बेंच पर खड़ा रहूं । यद्यपि मेरे अन्य सभी सहपाठियों की पूरी सहानुभूति मेरे साथ थी; लेकिन उससे होनेवाला क्या था ? प्रिंसिपल साहब की कुछ ऐसी शान व धाक थी कि उन तक पहुंचने की बात ही नहीं सोची जा सकती थी ।

लगभग एक सप्ताह तक मैं इस 'आउटिंग' का आनंद लेता रहा । थोड़ी-बहुत मिठाई मैं घर से ले आता और कुछ स्कूल के दुकानदार से खरीद लेता । इस तरह खूब स्वाद लेता रहा । स्कूल छूटने पर मेरे सभी मित्र मेरी खूब तारीफ करते और मैं भी कुछ ऐसे गर्व की भावना के साथ घर पहुंचता, मानो बहुत बड़ा त्याग-बलिदान कर दिया हो । इस प्रकार पूरे आठ दिन बीत गये ।

नौवें दिन प्रिंसिपल साहब अन्य कक्षाओं का निरीक्षण करते हुए हमारी तरफ आये, तो मुझे बाहर खड़ा देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने क्लास में घुसकर इसका कारण पूछा । संस्कृत के वे पंडितजी महाराज तो भला क्या उत्तर देते ? हां, अन्य लड़कों ने सारी पोल जरूर खोल दी । प्रिंसिपल साहब ने अगले दिन से मुझे कक्षा में बैठने की आज्ञा दे दी ।

उस समय की शिक्षा-पद्धति के अनुसार चौथे स्टैंडर्ड से सातवें स्टैंडर्ड तक का पूरा पाठ्यक्रम चार वर्षों में बंटा हुआ था । हर वर्ष के दो भाग थे—एक जूनियर, दूसरा सीनियर। छः-छः महीने के अंतर से स्कूल में परीक्षा होती थी। मैट्रिक तक यही क्रम था।

बीच में कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मेरा उन पंडितजी से पाला नहीं पड़ा और मैं मैट्रिक में पहुंच गया । अंतिम वर्ष की परीक्षा में मैं सर्वप्रथम रहा; मुझे संस्कृत तथा इंग्लिश की विशेष योग्यता के लिए दो पुरस्कार भी मिले। उपर्युक्त पंडितजी का एक भानजा भी मेरी कक्षा में था और वह भी एक प्रकार से प्रतियोगी था । लेकिन पंडितजी को जब यह पता चला कि दोनों पुरस्कार मैंने जीते हैं, तो आश्चर्यचकित रह गये ।

अब पंडितजी की हार्दिक कामना थी कि उनके भानजे को कम-से-कम एक पुरस्कार तो मिल जाये । यह सब सोचकर उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि मैं दो में से एक पुरस्कार स्वेच्छापूर्वक त्याग दूं, ताकि दूसरा पुरस्कार उनके भानजे को मिल जाये । जब वे मेरे सामने इस तरह गिड़गिड़ाये, तो मैंने संस्कृत का पुरस्कार तो रख लिया और अंग्रेजी का पुरस्कार वापस कर दिया । मैंने उन्हें चिढ़ाने के लिए ही संस्कृत का पुरस्कार वापस नहीं किया ।

मैंने जान-बूझकर इस प्रसंग का विस्तृत वर्णन किया है; क्योंकि यह घटना मेरे मन पर काफी गहरा प्रभाव छोड़ गयी थी । आगे चलकर इसी ने मेरे मन में यह विचार पक्का किया कि जो लोग अभिजात-वर्ग के धार्मिक व सामाजिक अन्याय के शिकार हैं, उनके उद्धार का प्रयत्न होना चाहिये ।

★

दक्षिण-ध्रुव में चार महीने

औसतन छः हजार फुट ऊंचा और विस्तार में भारत से पांच गुना बड़ा। श्वेत महाद्वीप दक्षिण-ध्रुव प्रदेश ससार की ८५ प्रतिशत बर्फ को बटोरकर बैठा है। तापमापक का पारा यहां [illegible] १२६ अंश को छूता देखा गया है। लेखक ने बर्फ के इस अखंड साम्राज्य में पूरे चार महीने तक वैज्ञानिक प्रयोग व परीक्षण किये हैं।

डा० गिरराज सिंह सिरोही

आप यह जानते हैं कि पौधों की भी निश्चित गति होती है। एक सरल उदाहरण यह है कि पत्ते दिन में ऊपर की ओर उठते हैं और रात में नीचे की ओर झुक जाते हैं। यह किस तरह होता है, इसके बारे में अलग-अलग मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह समयांतर के कारण होता है। एक सिद्धांत यह भी है कि ऐसा पृथ्वी के घूमने के कारण होता है।

हम लोग लासएंजल्स के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में इस समस्या पर अनुसंधान कर रहे थे। पृथ्वी के घूमने का इस पर कोई प्रभाव है या नहीं, इसका सही निर्णय तो उसी जगह प्रयोग कर किया जा सकता थी, जहां यह गति शून्य के बराबर हो। और ऐसी दो ही जगहें हैं—उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, उत्तरी ध्रुव जल से भरपूर है, जबकि दक्षिण ध्रुव में एक सुसज्जित अनुसंधान केंद्र है। अतः हमने अमरीका के राष्ट्रीय विज्ञान-प्रतिष्ठान को अपनी समस्याओं और अपनी योजना से अवगत कराया।

दो माह के अंदर ही उनका उत्तर पाकर हमें विस्मय भी हुआ और आनंद भी। उन्होंने हमारी योजना को तो स्वीकृति दी ही, साथ ही सभी सुविधाएं प्रदान करने का आश्वासन भी दिया। फलस्वरूप प्रो० कार्ल सी० हैमनर, टी० होसजाकी और मैं, इन तीन व्यक्तियों का दल कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से रवाना हुआ।

नवंबर १९६० में हवाई मार्ग से हम दक्षिणी ध्रुव के एमंडसन-स्काट अड्डे पर पहुंचे। दो महीने यहां प्रयोग करने के बाद फिर दो महीने १,३०० मील दूर, दक्षिणी ध्रुव के मैकमर्डो पाइंट पर रहे। हमने पूर्व पश्चिम की ओर भिन्न-भिन्न गतियों से घूमने वाले कई 'टर्नटेबुल' लगाये और अनेक समस्या के समाधानार्थ सावधानीपूर्वक अध्ययन किया। इसके परिणाम [illegible] आफ दि बायोलाजिकल क्लाक एट दि साउथ पोल' नामक शोधपत्र में प्रकाशित हुए हैं। शोध का सार इतना ही है कि अकेले पृथ्वी के घूमने का कोई प्रभाव पौधों पर नहीं पड़ता।

हमारे कैंप में २० व्यक्ति थे—११ वैज्ञानिक, एक डाक्टर, कुछ मैकैनिक और प्रयोग-शाला-सहायक तथा एक रसोइया। जहां हमारा केंद्र था, वह अड्डा बर्फ खोदकर बनाया गया है और उसकी दीवारें काठ की हैं। सबसे मजे की बात यह है कि उसमें ठंड नहीं लगती। उसमें एक यंत्र भी लगा है, जो कमरों को थोड़ा गरम रखता है। बस यह समझ लीजिये कि उस बर्फीले इलाके में भी कमरे के अंदर रहने पर हमें कंबल तक ओढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती थी। न्यूजीलैंड के निवासी यह मजेदार शिकायत किया करते हैं कि अमरीकियों ने दक्षिणी ध्रुव को बहुत गरम बना दिया है। लेकिन एक मुसीबत भी है—खुश्की बहुत अधिक है। इस कारण आर्द्रता बढ़ाने के लिए जल छींटने की जरूरत पड़ती है।

दक्षिण-ध्रुव का स्पर्श करनेवाले प्रथम भारतीय डाक्टर गिरराज सिंह सिरोही वनस्पतियों के अंगक्रियाशास्त्र के विशेषज्ञ हैं और नयी दिल्ली के इंडियन एग्रिकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट में शोध कर रहे हैं।

दक्षिणी ध्रुव पहुंचने पर शुरू-शुरू में तो हमें बहुत तकलीफ हुई। एक तो भीषण ठंड, तिस पर १०,००० फुट की ऊंचाई। सांस लेने में बड़ी कठिनाई का अनुभव हुआ। आक्सीजन की कमी के कारण चलना भी मुश्किल। ऐसा महसूस होता था, जैसे हम जो काम करना चाहते हैं, वह नहीं कर सकेंगे। परंतु हम लोगों ने अपने आपको उस परिस्थिति के अनुकूल बना लिया। मैंने अधीर न होने और इत्मीनान से काम करने की भारतीय नीति को अपनाया। प्रो० हैमनर उम्र में हम लोगों से बड़े थे और उन्होंने सावधानी नहीं बरती। नतीजा यह हुआ कि उन्हें स्वस्थ होने में कुछ समय लग गया।

एक बात है, वहां भूख बहुत लगती है। दिन में हम चार बार भोजन करते थे। बारी-बारी से हम सब रसोईघर में रसोइये की मदद करते। यह बता ही चुका हूं कि दक्षिणी ध्रुव में खुश्की अधिक है, अतः प्यास बुझाने के लिए बीयर पीते। मैं तो प्रतिदिन १२-१३ बोतल ही पीता; परंतु प्रो० हैमनर औसतन ३५ बोतल पी जाते।

वहां हम जितने दिन रहे, उतने में हमें दो-तीन बार भयंकर बर्फीले तूफान का मुकाबला करना पड़ा। उस तूफान में फंसनेवाले की क्या हालत होती है, यह तो कोई भुक्तभोगी ही बता सकता है। लगता है, सब

कुछ किसी सफेद चीज में लटका है । जो कोई भी बाहर निकलता है, बचाव के लिए कुछ ओढ़े रहता है । तूफान आने पर वह उसी से अपने को ढंक, कहीं एक जगह पड़ जाता है । तूफान थमने पर उसे बर्फ के अंदर से खोदकर निकाला जाता है । तूफान आने पर हाथ-को-हाथ जल्दी नहीं सूझता ।

पर यों मौसम अच्छा रहता है । एक बार तो तापमान बढ़कर ऋण २५° तक पहुंच गया था, जबकि सामान्यतया ऋण ६०° से ऋण ४०° के बीच रहता है और यदि बहुत ही खराब मौसम रहा तो ऋण १००° फारनहाइट तक भी चला जाता है । खैर, मेरे सामने वैसी अवस्था आयी नहीं ।

दक्षिणी ध्रुव में कोई दर्शनीय स्थल तो है नहीं; अतः हमारी पिकनिक भी वैज्ञानिक ही हुआ करती थी । एक बार मैं एक विद्वान के साथ बहुत दूर तक इस तलाश में चला गया कि क्या वहां जीवन का कोई अवशेष मिलेगा । कई जगह से उन्होंने बर्फ के नमूने लिये, पर किसी जीव-जंतु का प्रमाण नहीं मिला । सारा ही प्रदेश बर्फ का सागर लगता है । जो कुछ भी आप फेंकिये, वह वहीं-का-वहीं पड़ा रहता है । वहां पचास वर्ष पूर्व फेंके गये बिस्कुट के टुकड़े आज भी वैसे-के-वैसे पड़े हैं । मुझे पांच वर्ष पूर्व का एक फोटो उतारने का कागज मिला और मैंने उसका इस्तेमाल किया ।

हमारी रसद हवाई जहाज के जरिये आती थी और जहाज के उतरने की पट्टी हमारे केंद्र से कुछ दूरी पर थी । नित्य ही हवाई जहाज वहां हम लोगों के लिए समाचार-पत्र, चिट्ठियां आदि लाते । डीजल से भरे ड्रम भी हवाई जहाज से गिराये जाते । वे बर्फ में धंस जाते, तो हम श्रमदान कर उन्हें खोद निकालते और केंद्र तक ले आते । आधा घंटा हवाई जहाज वहां ठहरता । उसका इंजन चालू रखा जाता, ताकि वह गरम रहे; अन्यथा उसका उड़ना मुश्किल हो जाता । हां, जाड़े के दिनों में उड़ान बंद हो जाती थी ।

बाहरी संसार से हमारा संपर्क रेडियो से भी होता था । हम कई स्टेशनों से प्रायः संपर्क स्थापित करते और फिर उनके सहयोग से कैलिफोर्निया में रहनेवाले अपने मित्रों से भी बातें कर लेते । परंतु मैं अपनी पत्नी से बातें नहीं कर पाता था; क्योंकि वह भारत में थी । पंद्रह दिनों में उसका एक पत्र आता ।

उस वर्ष बड़ा दिन और नववर्ष-दिवस हम लोगों ने वहीं मनाया । दिसंबर का महीना दक्षिणी ध्रुव में दिन का होता है । यह तो सर्वविदित है कि वहां ग्रीष्म साढ़े पांच महीने का एक ही लंबा दिन होता है और शीत साढ़े पांच महीने की लंबी रात । बाकी पंद्रह-पंद्रह दिन दिन-रात दोनों ही रहते हैं । हम वहां ग्रीष्म में रहे । रात का समय होने पर परदे डालकर अंधेरा कर लेते और सो जाते ।

जिस केंद्र में हम लोग थे, वह अमरीकी जलसेना के नियंत्रण में है और वहां स्त्रियों तथा पालतू जानवरों का जाना वर्जित है । कहा जाता है कि एक बार एक स्त्री पुरुष-

वेला में वहां पहुंच गयी और उसने कई संस्थाएं खड़ी कर दीं । कई अमरीकी युवतियां वहां जाने को तैयार हैं; पर उन्हें इजाजत नहीं दी जाती । हां, रूसी लोगों का एक केंद्र चुंबकीय दक्षिणी ध्रुव पर है, जो कि हमारे केंद्र से कुछ सौ मील की दूरी पर है । वहां महिलाओं पर कोई रोक-टोक नहीं है ।

दक्षिणी ध्रुव-प्रदेश में केंद्र की स्थापना विख्यात खोजी एडमिरल बर्ड ने की थी । वहां वस्त्र, भोजन और मानसिक समस्याओं के मामले में जो अनुभव प्राप्त हुए, उनसे अमरीका को युद्धकाल में बहुत लाभ हुआ । यह देखते हुए मुझे यह महसूस होता है कि हमें भी किसी बहुत ऊंची पहाड़ी जगह पर एक केंद्र खोलना चाहिये, जहां कि मानसिक समायोजन का अवसर मिल सके । गुलमर्ग में हमारा ब्रह्मांड-किरण शोध-स्टेशन है । वहीं हम इसकी भी स्थापना कर सकते हैं ।

फिर हमारी सरकार को नयी-नयी चीजों की खोज करने तथा साहसिक यात्राओं के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिये और ऐसी चीजों पर विचार करते समय सिर्फ यही नहीं देखना चाहिये कि उसका तत्काल क्या-क्या लाभ है । विज्ञान आज जिस बुलंदी पर पहुंचा है, क्या वह उन वैज्ञानिकों की देन नहीं है, जो सदा नयी चीजों की खोज में लगे रहे ? प्रचलित पथ को छोड़, नये पथ का निर्माण करने से ही विज्ञान विकसित हो सकता है; यही विज्ञान की नींव भी है । ['योजना' से साभार]

*

महादेव शास्त्री को बंगलोर के लोग अवधूत समझते थे । हमेशा वे जल्दी में रहते और एकदम चुप । राह चलते जिस किसी के भी सामने हाथ फैला देते और वह दमड़ी दे या अशरफी आंखों से छुआकर, जो भी पास हो उसे देकर आगे बढ़ जाते । उनके पीछे हमेशा दस-बीस बच्चों का झुंड रहता । शास्त्रीजी जब मन में आता किसी भी दुकान से कोई भी चीज उठाकर किसी को भी दे डालते । कोई उन्हें न टोकता; बल्कि व्यापारियों का विश्वास था कि शास्त्रीजी जिसकी दुकान में हाथ डालें, उसे एक की जगह दस गुना मुनाफा होता है ...... एक दिन शाम को मैं किसी सज्जन से मिलने एक बड़ी दुकान पर गया हुआ था । इतने में शास्त्रीजी उस ओर आ निकले और हाथ फैलाकर दुकान के सामने खड़े हो गये । एक सज्जन ने उठकर चांदी का एक रुपया उन्हें दिया । सिक्का सम्राट् एडवर्ड सप्तम की छाप का था और उसका हाथ से छूना था कि शास्त्रीजी का मुंह निस्तेज हो गया । झटके के साथ उन्होंने रुपया फेंक दिया और जैसे किसी मुर्दे से हाथ छू गया हो, इस तरह सड़क के किनारे लगे सार्वजनिक नल के नीचे बैठकर वस्त्र समेत स्नान किया और चलते बने । उनका यह व्यवहार किसी की समझ में नहीं आया । किसी ने कहा –"यह सब एक ढंग का पागलपन है ।" लेकिन अगले दिन सवेरे जब सम्राट् एडवर्ड सप्तम के देहांत की घोषणा हुई, हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा ।

–के० वासुदेवाचार्य

*

महानता की खोज में

"हर अच्छा पोर्ट्रेट एक मिली-जुली कृति है, दो मानसों के संगम का फल है, भले ही वह दो क्षणों का संगम हो"—पोर्ट्रेट फोटोग्राफी को कौशल के धरातल से उठाकर कला के सिंहासन पर बैठानेवाले महान फोटोग्राफर यूसुफ कार्श ने कहा है। महापुरुषों के अमर फोटो-चित्रों के स्रष्टा ने महापुरुषों के साथ अपने मानसिक संगम के कुछ क्षणों का वर्णन और अपने कलात्मक चिंतन का सार यहां प्रस्तुत किया है। दायीं ओर है कार्श का पोर्ट्रेट, वी० एन० ओके रचित।

यूसुफ कार्श

अक्सर मुझसे पूछा जाता है कि मेरे जो पोर्ट्रेट सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, वे सभी प्रायः प्रसिद्ध व्यक्तियों के हैं और ऐसे व्यक्तियों के बहुत कम कि जिनके चेहरे स्वतः पोर्ट्रेट के दिलचस्प विषय हो सकते हैं—ऐसा क्यों है ? यह सच है कि थोड़े-से अपवाद छोड़कर, मेरे जिन चित्रों से मुझे सबसे अधिक संतोष हुआ है, वे सभी विख्यात व्यक्तियों के हैं।

यों सामान्य मनुष्यों में भी मुझे दिलचस्पी है और मैंने सभी तरह के लोगों के अनगिनत चित्र खींचे हैं। लेकिन दुनिया को जिनकी कोई खास देन—अच्छी या बुरी—नहीं, उनके चित्र खींचते समय मुझे कोई चुनौती नहीं अनुभव होती।

फोटो खींचते समय मुझे व्यक्ति के उस गुण की तलाश रहती है, जिसे मैं कई बार मनुष्य की "अंतःशक्ति" कहा करता हूं। मुझे इस "अंतःशक्ति" को पकड़ पाने की ज्यादा उत्सुकता रहती है—आत्मा की गहराई से अछूते, दिलचस्प चेहरों के चित्रण की उतनी नहीं। मुझे तो कैमरे के सामने बैठे हुए व्यक्ति के मानस से, उसकी आत्मा से दिलचस्पी होती है; और जितना बड़ा मानस, जितनी बड़ी आत्मा, उतनी ही गहरी मेरी दिलचस्पी।

शायद यह बात पहले-पहल बर्नार्ड शा ने कही थी कि जीनियस भी ९८ प्रतिशत तो मामूली ही होता है। कलाकार का काम है, बाकी दो प्रतिशत को बाहर ले आना। महानता का यह चरमशेष जब कैमरे के सामने प्रकट हो, उसे तुरंत पहचान लेना चाहिये। कभी-कभी ऐसा भी क्षण आता है, जब मनुष्य के मन, हृदय और आत्मा का सर्वस्व उसकी आंखों, हाथों या भाव-भंगिमा में झांक उठता है। यही अंकित करने योग्य क्षण है। यही पकड़ाई में न आनेवाला "सत्य का क्षण" है।

क्या चेहरा व्यक्तित्व का सही प्रतिबिंब होता है?—यह प्रश्न पोर्ट्रेट-कलाकार के लिए शाश्वत दिलचस्पी का है। लेकिन विख्यात व्यक्तियों की तस्वीर खींचते समय जो सवाल

गई

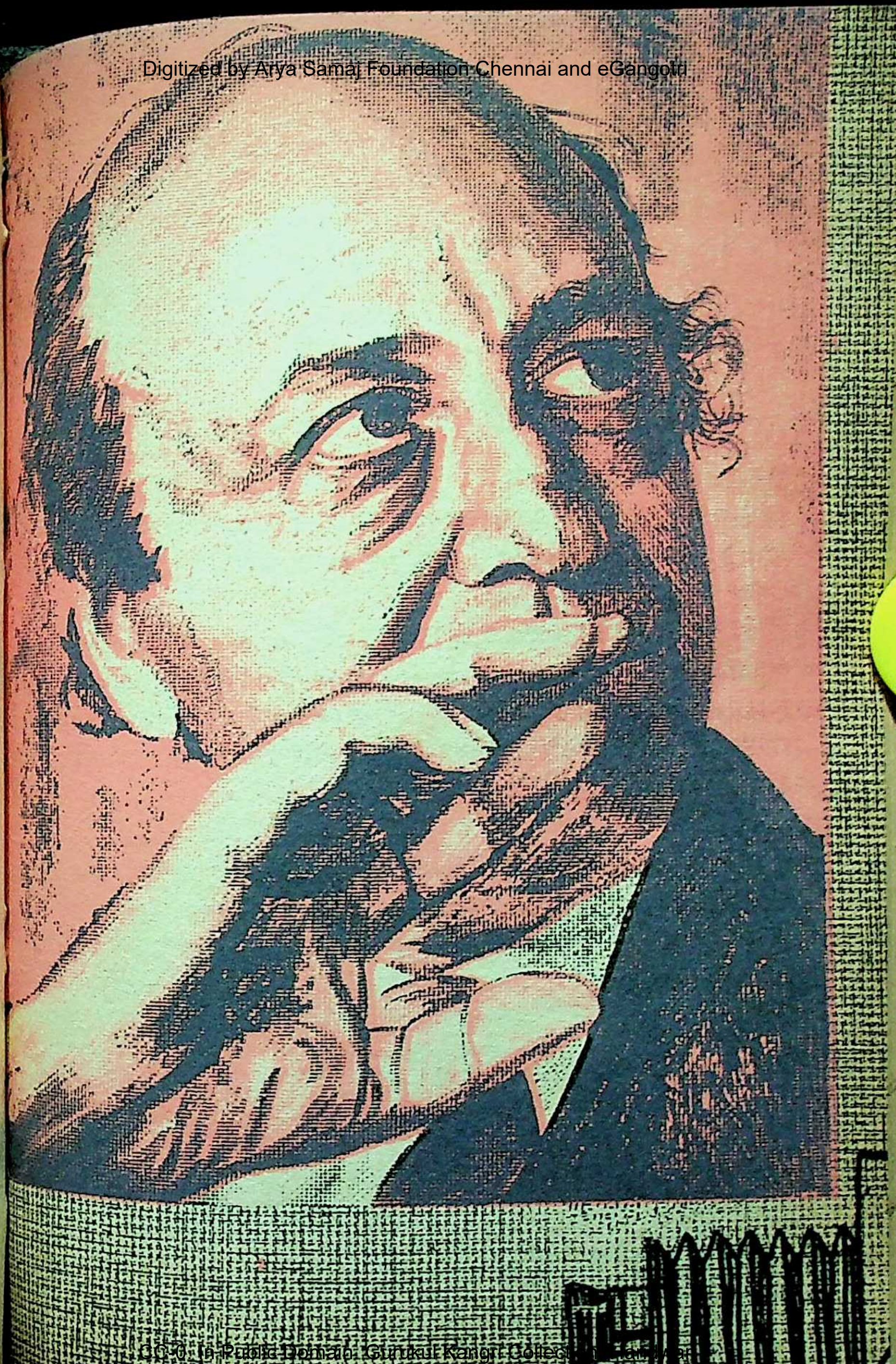

मेरे सामने अक्सर उठता है, वह यह है कि मैं उनके [illegible] रूप को अंकित करूं या कि ऐसे रूप को, जिसे लोग बिलकुल नहीं जानते ? मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जो महत्व का चित्र हो सकता है, उसे कमजोरी के क्षण का चित्र वना डालने में कोई लाभ नहीं। कम जोरी का क्षण दर्ज करने की चीज नहीं होती।

सचमुच कई वार प्रथम दर्शन में कुछ व्यक्तियों का मुझ पर अच्छा असर नहीं पड़ा लेकिन बाद में मेरे विचार बदल गये। कुछ व्यक्तियों की जवर्दस्त मानवीयता तब प्रक होने लगती है, जब वे बातचीत करने लगते हैं; और जब आपको उनके व्यक्तित्व की म द्वता की झांकी मिलने लगती है, उनके चेहरे में सौंदर्य और शक्ति दिखाई देने लगती है। चेहरा व्यक्तित्व के बारे में झूठ बोल सकता है।

शौकिया फोटोग्राफर अक्सर मुझसे सलाह मांगते हैं कि पोर्ट्रेट कैसे लेना चाहिये परंतु उनकी मदद करना सदा उतना आसान नहीं होता। कैमरे और फिल्म के आकार-प्रका का तो सवाल उठना ही नहीं चाहिये। किस पाठक को फिक्र होगी कि कोई पुस्तक खड़े-ख लिखी गयी या बैठकर, पेंसिल से लिखी गयी कि कलम से, या कि टाइप-राइटर पर! मु चीज है नतीजा। कलाकार जिस भी माध्यम में सुभीता अनुभव करे, उसी में उसे आत्माभि व्यक्ति करनी चाहिये।

मुझे तो नतीजे से वास्ता है, न कि टेक्नीक से। अपनी मर्जी से मैं कभी टेक्नीशियन नहीं बना। एक खास मात्रा में ब्रोमाइड और कार्बोनेट मिलाने से बढ़िया 'कंट्रास्ट' प्राप्त होता है। लेकिन मेरी दृष्टि में ये सब टेक्निकल ब्योरे हैं। सब जानते हैं कि नमक डालने से व्यंज जायकेदार हो जाते हैं; लेकिन कुशल रसोइये को रसोई के रसायनशास्त्र की नहीं, पकवा की चिंता होती है।

× × ×

पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के एक हफ्ते बाद चर्चिल वाशिंगटन गये और २ दिसंबर १९४१ को उन्होंने अमरीकी कांग्रेस के सम्मिलित अधिवेशन में भाषण दिया। लौटते हुए वे ओटावा पधारे। मैं उनकी फोटो लेना चाहता था। स्वयं प्रधान मंत्री मैकेंजी किंग ने कहा–"चर्चिल हाउस आफ कामन्स में पार्लमेंट की संयुक्त बैठक में भाषण देंगे। उसके बाद हम उन्हें स्पीकर के अध्ययन-कक्ष में ले आयेंगे।" तय हुआ कि मैं वहीं उनकी फोटो लूं।

भाषण से पिछली शाम को ही मैंने स्पीकर के अध्ययन-कक्ष में रोशनी की सब व्यवस्था कर दी। जब चर्चिल भाषण दे रहे थे, मैं उनके चेहरे के भावों को निरखता रहा, मन में उनकी फोटो उतारता रहा। भाषण के बाद मैकेंजी किंग के कंधे का सहारा लेते हुए चर्चिल अपने अनुचरों के साथ बाहर आये। मैंने फ्लड-लाइट जलाये। वे बोल उठे–"यह सब क्या है?" मैंने आगे बढ़कर कहा–"श्रीमन्, मुझे आशा है कि इस ऐतिहासिक अवसर के अनुरूप आपकी

तस्वीर खींचने का सौभाग्य मुझे मिलेगा।

वे चमके, अपने अनुचरों से वोले– "मुझे पहले क्यों नहीं वताया था?" फिर पुराना सिगार कर नया सुलगाया, शरारत-भरी अदा से कश और कहा–"एक फोटो आप ले सकते हैं।" मैं –"श्रीमन्, मैंने रोशनी वगैरह सव पहले ही कर रखी है। क्या आप यहां तशरीफ लाने की करेंगे?" वड़ी अनिच्छा से वे आकर वहां खड़े। मैंने स्पीकर महोदय की टेवल पर रखी राखदानी उनके आगे वढ़ायी और कहा–"क्या आप...... हटा देंगे?"

विंस्टन चर्चिल—फोटो : कार्श

लेकिन वे सिगार हटायें ही न। सो मैं वापस कैमरे तक गया, देखा कि सब कुछ टेक्निकल दृष्टि ठीक है, वहुत शार्प–रोशनी, कंपोजिशन, भंगिमा सव वढ़िया। लेकिन उनके मुंह में वह सिगार! मैंने स्लाइड निकाला, उनके पास गया, बोला–"क्षमा करें।" अपना हाथ उनके होंठों तक वढ़ाया और धीमे से उनके मुंह से सिगार खींच लिया; लेकिन वड़े ही अदव से और विना यह महसूस किये कि वे वुरा मानेंगे। सिगार मैंने इसलिए हटाया ताकि वह उस महान ऐतिहासिक क्षण के अनुरूप नहीं था। जव मैं कैमरे पर गया, तो देखा कि वे मुझे हमलावर ढंग से घूर रहे हैं, मानो निगल ही जायेंगे। वस मैंने फोटो खींच ली।

भयंकर सन्नाटा था। मैकेंजी किंग भी कुछ न वोल सके। लेकिन चर्चिल स्वयं वोले– "एक फोटो आप और ले सकते हैं।" वे वड़े अनुग्रहपूर्वक मुस्करा रहे थे। मैंने फिर 'क्लिक' किया। वे मेरे निकट आये, मुझसे हाथ मिलाकर वोले–"आप तो गरजते हुए शेर को भी फोटो के लिए चुपचाप खड़ा कर सकते हैं।"

× × ×

मेरी दृष्टि में हेलन केलर की सबसे बड़ी विलक्षणता है, उनका आनंदीपन। जव मैं उनसे मिला, उन्होंने हाथ मिलाया, फिर वहुत आहिस्ते से मेरे मुंह पर उंगलियां फेरीं, ताकि वे भी उसी तरह अपने मन में मेरी तस्वीर उतार सकें, जैसे मैं अपनी आंखों से उतार रहा था।

वाद में जव हम वातचीत कर रहे थे, उनकी सहचरी पाली थामसन मेरे शब्दों का अनुवाद स्पर्श द्वारा उनकी हथेली पर करने लगीं। मैं तुरंत समझ गया कि जो भी चित्र मैं खींचूं, उसमें मिस केलर का आलोकमय, प्रशांत किंतु सजीव मुखड़ा ही नहीं, अपितु उनके वे सूक्ष्म संवेदनशील हाथ और उनकी एकनिष्ठ सहचरी की तन्मयता भी अवश्य आनी चाहिये।

इन सब चीजों का समुचित समावेश कर पाना एक चुनौती थी।

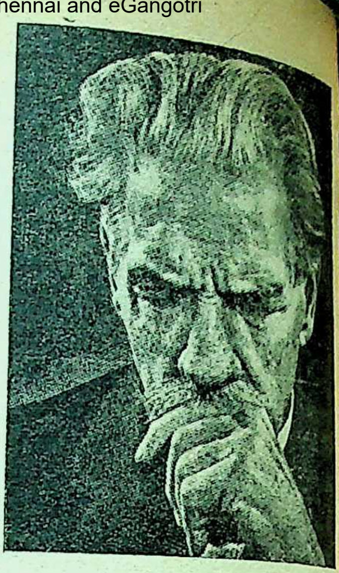

डा० श्वाइत्जर - फोटो : कार्श

परंतु मैंने महसूस किया कि इन सबसे भी बड़ी एक चीज को–जीवन में उनकी जबर्दस्त विजय का मानव-जाति के लिए जो महत्व है, उसे भी चित्र में लाने की कोशिश मुझे करनी चाहिये। सचमुच कोई निरा ठूंठ ही मिस हेलन केलर के सान्निध्य से मानव के लिए आशा और भगवान में आस्था लिये बिना लौट सकता है।

× × ×

मैं १९५४ में पेरिस में कई साहित्यकारों के चित्र ले रहा था कि आंद्रे मालरो से पता चला–दो हफ्ते में श्वाइत्जर पेरिस पहुंचेंगे। वे नोबेल-पुरस्कार लेने यूरोप आ रहे थे। दो हफ्ते बाद मैं, पत्नी सालोंज और मैं डा० श्वाइत्जर के गांव गुन्सवाख जा पहुंचे।

हमने उनके छोटे-से घर का दरवाजा खटखटाया। उनकी प्रधान परिचारिका हमें भीतर उनके पास ले गयी और बोली–"ये हैं डाक्टर महानुभाव!" मानो कह रही हो-"यह है दुनिया को भगवान का सबसे कीमती उपहार।" और मैं तो उन्हें ऐसा ही मानता था। मैंने बाख पर उनकी पुस्तक पढ़ी थी, आर्गन वाद्य पर उनकी पुस्तक पढ़ी थी, उनकी ईसा की जीवनी व दूसरी पुस्तकें पढ़ी थीं; और यह कहना अधार्मिक न होगा कि मैं ईसा के ढांचे में ढले किसी आदमी से मिलने की आशा कर रहा था।

श्वाइत्जर के स्वागत में हार्दिकता थी। वे विशालकाय मनुष्य हैं; छः फुट का कद, दृढ़ शरीर, बाल चिकने रुपहले व लंबे और विशिष्टता की द्योतक लंबी रुपहली मूंछें। उनके व्यवहार में पिता का-सा भाव था, जिससे सहज विश्वास उत्पन्न होता था। सौभाग्य से वे मेरे खींचे हुए कई चित्र देख चुके थे। तय हुआ कि फोटो अगले दिन सवेरे उनके अध्ययन-कक्ष में ली जाये और उस दिन सुबह नाश्ता और दोपहर को भोजन हम उनके साथ करें। वस्तुतः अगला पूरा दिन उनके साथ बीता।

श्वाइत्जर की तन्मयता गजब की थी। दो फोटो खींचने के बीच वे अपनी टेबल पर जाकर ऐसे लिखने लगते, जैसे कोई खलल ही न पड़ा हो। जब मैं कहता "मैं तैयार हूं," वे

कलम रखकर आते और फोटो खिचवाते ।

लेकिन जो चित्र मैं चाहता था, वह आसानी से नहीं खिचा । वे वैसे विश्रांत (रिलैक्स) नहीं हो पा रहे थे, जैसा मैं चाहता था । उनके हाथ बड़े-बड़े, सुघड़ और लचीले हैं—डाक्टर या संगीतज्ञ के हाथ । मैंने उन्हें पुस्तकों पर हाथ रखे चित्रित करने का यत्न किया—वह ठीक नहीं आया । हम कोशिश करते रहे, करते रहे । फिर जरा थककर श्वाइत्जर ने आंखें बंद कर लीं, उंगलियां होंठों पर रख लीं और बोले—"जब आपकी तैयारी हो चुके, मुझे बता दीजियेगा ।" और क्षण-भर में वे अपने खयालों में पूरी तरह खो गये । मैंने उन्हें जवाब नहीं दिया, बल्कि कैमरा 'क्लिक' कर दिया । बाद में यह चित्र बहुत जगह छपा और मेरी पुस्तक 'पोर्ट्रेट्स आफ ग्रेटनेस' में भी सम्मिलित है ।

पेरिस लौटते समय कार में सालोंज ने कहा कि उस दिन की कुछ घटनाओं ने उसकी श्वाइत्जर-संबंधी धारणाओं को हिला डाला । वह भी श्वाइत्जर को एक आधुनिक संत समझती आयी थी; लेकिन आज उसे उनके मस्तिष्क ने ही प्रभावित किया था । सालोंज को उनमें कुछ ठेठ जर्मन गुण भी दिखाई दिये । उनकी पितृभावना में हुकूमत का भाव स्पष्ट ही था । न वे उतने विनम्र थे, जितना कि किसी संत से आशा की जा सकती है । फोटो लेते समय उनके हाथ के नीचे रखने के लिए मैं बाख के संगीत की एक पुस्तक लाया, तो वे बोल उठे थे—"बाख नहीं ......" और अपनी ही लिखी दो-तीन पुस्तकें ले आये थे ।

श्वाइत्जर के एक और व्यवहार ने भी मुझे विचलित कर दिया था । (अब मैं समझता हूं—अकारण ही ।) उनके चित्र के साथ की इबारत में देने के लिए जानकारी एकत्र करने के उद्देश्य से मैंने कुछ सवाल पूछे, तो वे बोल उठे—"यह तो रिपोर्टिंग है । आपने जो प्रश्न पूछे हैं और जो आप पूछनेवाले हैं, उनके जवाब इसमें हैं ।" और उन्होंने एक पुस्तिका मेरे हाथ में रख दी ।

लेकिन आखिर वह लंबा और थका देनेवाला दिन था । उन्होंने मुझे पूरा सहयोग दिया था और कोई कारण नहीं था कि वे मेरे सवालों का जवाब भी दें । और मेरी पत्नी की प्रतिक्रियाएं उस समय श्वाइत्जर की जो अतिरंजित प्रशंसा सर्वत्र चल रही थी, उसका परिणाम थीं । वे चाहें न चाहें, लोगों ने उन्हें देवोपम महिमा से मंडित कर दिया था । श्वाइत्जर को 'रिलैक्स' करने में मुझे जो कठिनाई हुई, वह भी महत्व की चीज थी । फोटो देते समय पोज करने की प्रवृत्ति घमंड की तरह संकोचीपन की भी द्योतक हो सकती है । उन्होंने बिना ऐनक के चित्र खिचवाने की इच्छा प्रकट की थी; कहा था—"ऐनक से मैं अधिक बूढ़ा लगता हूं ।" चाहे तो इसे मैं आत्मप्रशंसा भी मान सकता था, चाहे तो एक अतिमानवीय-शक्ति-संपन्न मनुष्य की हृदयस्पर्शी मनुष्यता । मैं महापुरुषों का पूजक हूं; किंतु महापुरुषों से यह आशा नहीं करता कि वे उन मनुष्य-सहज भावों को प्रकट न करें, जिनमें वे हमारे सहभागी हैं ।

* * *

और स्वप्न साकार हो गया

• डा० अजुध्यानाथ खोसला •

मेरे पेशेवर जीवन की शुरूआत एक इंजीनियर के रूप में हुई। वह २७ सितंबर १९१६ की बात है। उस दिन मुझे योजना-विभाग में काम करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह विभाग सतलज पर बनने-वाले बांध के लिए योजना-प्रारूप तैयार करने और उसकी जांच-पड़ताल व सर्वेक्षण करने के लिए अक्टूबर १९१५ में ही खोल दिया गया था। लेकिन संयोग देखिये कि मेरी नियुक्ति के उस दिन से लेकर आज तक इस योजना से मेरा अभिन्न व अटूट संबंध बना हुआ है। और फिर अब तो भाखड़ा-बांध के रूप में इंजीनियरी की उस कल्पना का, योजना और निर्माण का, जीता-जागता चमत्कार सत्य सिद्ध हो चुका है। मुझे यह देखकर बड़ी खुशी है कि मेरे पेशेवर जीवन का वह पहला स्वप्न साकार हो गया।

['भगीरथ' से साभार]

दक्षिण-पूर्वी पंजाब और बीकानेर राज्य के बंजर क्षेत्र की सिंचाई के लिए सतलज पर बांध बनाने की कल्पना पहले-पहल सर लुई डेन के १८ नवंबर १९०८ के एक विवरण-पत्र में व्यक्त की गयी थी। सर लुई उन दिनों पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे और कहते हैं कि उन्होंने इंजीनियरी की ट्रेनिंग भी ली हुई थी। उन्होंने शिमला से सतलज, सुन्नी से बिलासपुर तथा नालागढ़ व रोपड़ की पहाड़ियों का दौरा करके उपर्युक्त विवरण प्रस्तुत किया था। उन्होंने सुन्नी और बादू दर्रों को बांध के लिए सबसे उपयुक्त स्थान माना था।

बाद में रायबहादुर बैजनाथ, एग्जिक्यूटिव इंजीनियर, ने भी ११ जून १९०१ को इस क्षेत्र का निरीक्षण करके अपनी रिपोर्ट पेश की। तत्कालीन चीफ इंजीनियर श्री गोर्डन ने नवंबर १९०१ में जब नैला क्षेत्र का दौरा किया, तो उन्होंने नैला को उपर्युक्त ठहराया।

फलस्वरूप उस स्थान का निरीक्षण व सर्वेक्षण हुआ और बांध के लिए लगभग ३.२७ करोड़ रुपये की लागत आंकी गयी। उन दिनों तो यही रकम काफी भारी-भरकम थी, सो खर्च के डर से वह बनी-बनायी योजना खटाई में पड़ गयी।

फरवरी १९१५ में चीफ इंजीनियर श्री एफ० ई० ग्वाइथर ने रोपड़ का दौरा करके और एग्जिक्यूटिव इंजीनियर श्री एच० डब्ल्यू० निकलसन से विचार-विमर्श करके सतलज पर बांध बांधने की योजना में फिर

से जान डाली। श्री ग्वाइथर ने अनुभव किया कि नैला बांध तैयार करके यदि उसके जल-भंडार से प्रतिक्षण १,६०० घनफुट जल की निरंतर सप्लाई हो सके, तो अकालग्रस्त सूखे क्षेत्रों को काफी लाभ पहुंच सकता है।

वस्तुतः इन क्षेत्रों को बचाने का एकमात्र उपाय भी यही था। उन्होंने यह भी सोचा कि जहां तक खर्च की बात है, उसे कुछ कम करके भी काम निकाला जा सकता है। इस प्रकार श्री निकलसन की देखरेख में १९१५ में ही उपर्युक्त योजना-विभाग का गठन हो चुका था। (श्री निकलसन बड़े प्रतिभा-संपन्न, दूरदर्शी और कार्यकुशल इंजीनियर थे। उन्होंने जीवन-पर्यंत, सन १९३५ तक, बड़ी लगन व निष्ठा से यह कार्य किया। भाखड़ा-बांध का निर्माण उनके जीवन की एक बलवती महत्वाकांक्षा थी, जो उनकी मृत्यु के काफी समय बाद पूरी हुई।)

तदुपरांत इस नव-गठित विभाग के अंतर्गत जो नया सर्वेक्षण एवं निरीक्षण हुआ, उसके आधार पर नैला क्षेत्र ठीक नहीं ठहरा। नींव व जल-भंडार की क्षमता कम होने के कारण यह स्थान अनुपयुक्त समझा गया। इसके बाद नैला से करीब तीन मील ऊपर नदी के नीचे जो भाखड़ा दर्रा पड़ता था, उसकी छानबीन शुरू हुई और यह क्षेत्र काफी संभावनाओं से परिपूर्ण समझा गया।

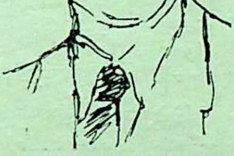

इंजीनियर-राज्यपाल खोसला

* * *

महज सीमेंट-पत्थर की चिनाई, अथवा सिंचाई एवं बिजली-उत्पादन की योजना का नाम नहीं है भाखड़ा। वह एक स्वप्न है–प्रकृति के वरदानों से वंचित एक विशाल प्रदेश को प्राण-रस से पुष्ट करने का संकल्प, जो आधी सदी की साध और एक दशक के श्रम से साकार हुआ है।

* * *

योजना के इसी दौर में मैंने पंजाब सिंचाई-विभाग में सम्मिलित होकर श्री निकलसन के साथ काम करने का सुअवसर प्राप्त किया था। सन १९१६-१७ के जाड़ों में मुझे रोहतक, हिसार और बीकानेर के निर्धारित क्षेत्र का सर्वेक्षण-कार्य सौंपा गया। जुलाई १९१७ से १९१८ के मध्य तक मैंने भाखड़ा बांध व उसके जल-क्षेत्र का सर्वेक्षण और सतलज की बाढ़-संबंधी छानबीन का काम पूरा कर लिया।

मैंने जुलाई १९१७ में भाखड़ा दर्रे की चेन १३ पर बांध की अक्ष-रेखा निश्चित कर दी थी। मुझे संतोष है कि आज भाखड़ा-बांध उसी केंद्र पर बना है।

१९१९ में उपर्युक्त योजना तैयार हो गयी और उसे अंतिम निर्णय के लिए भेज दिया गया। इस सतलज बांध-योजना में १५०० फुट आर० एल० (नींव से ४०० फुट रोड लेवल) पर बांध निर्माण की कल्पना थी और २५,८३,५५० एकड़ फुट

जल-संग्रह के सामर्थ्य का अनुमान था। लगभग ३.९४ करोड़ रुपये की लागत कूती गयी थी। उस वक्त यह बांध विश्व का सबसे बड़ा बांध समझा गया था।

१९१९ की योजना से बिजली के विकास की आवश्यकता पूरी नहीं होती थी। इस योजना की रिपोर्ट में दक्षिण-पूर्वी पंजाब और बीकानेर के अकाल-पीड़ित, किंतु घनी जनसंख्यावाले क्षेत्रों को सिंचाई का जल प्रदान करने पर ज्यादा जोर दिया गया था।

भाखड़ा-बांध-योजना के बारे में यह आशा थी कि प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्त होते ही उसका काम शुरू हो जायेगा। लेकिन हुआ इसका उलटा। पहले सतलज-घाटी-योजना का काम शुरू करने का निर्णय ले लिया गया। चूंकि इससे सरकारी जमीन के एक बहुत बड़े भाग की सिंचाई संभव थी और इस जमीन की बिक्री से खासी आय होती। इसलिए यह योजना ज्यादा लाभदायक लगी। और फिर राजनीतिक दृष्टि से भी इस निर्णय को अच्छा समर्थन मिल गया। फलस्वरूप सतलज घाटी योजना के अंतर्गत चार हेडवर्क्स में से सुलेमानकी हेडवर्क्स का काम १९२९ के शुरू में हाथ में ले लिया गया और मुझे भी वहीं नियुक्त किया गया। इसके विपरीत भाखड़ा-बांध-योजना काफी समय तक फाइलों में दबी पड़ी रही।

१९२४ में भाखड़ा-बांध-योजना में तब फिर जान आ गयी, जब मुख्य भूविज्ञानविद् डा० ई० एस० पिनफोल्ड और भारतीय भूविज्ञान-सर्वेक्षण संस्था के डा० सी० एस० फाक्स ने भाखड़ा-बांध क्षेत्र का विशेष रूप से अध्ययन किया। १९२७ में पंजाब सरकार ने अमरीका के बांध-विशेषज्ञ श्री ए० जे० वाइली को निमंत्रित किया और उनकी अध्यक्षता में एक कमेटी बनायी, जिसमें डा० पिनफोल्ड और निकलसन भी शामिल थे।

वाइली कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की कि बांध की ऊंचाई सड़क की सतह से ४०० के बजाय ५०० फुट रखनी चाहिये, ताकि जल-संग्रह का सामर्थ्य ४७.५० लाख एकड़ फुट तक बढ़ सके। इस कमेटी की सिफारिशों के आधार पर एक नयी योजना तैयार करने के लिए १९३२ में एक विशेष उप-विभाग खोला गया, जिसने १९३४-३५ में अपनी रिपोर्ट पेश कर दी।

लेकिन इस बार भी इस संशोधित योजना को उसी दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। पश्चिमी पंजाब की हवेली और थाल-योजनाओं की प्रबल मांग होने और उन्हें मिले राजनीतिक समर्थन के कारण यह योजना फिर पिछड़ गयी। परंतु १९३८ में जब दक्षिण-पूर्वी पंजाब में भयंकर अकाल पड़ा, तो भाखड़ा-बांध-योजना की सार्थकता अनायास उभर आयी। १९३९ में मुझे और श्री कंवर सेन को विशाल बांधों की योजना व निर्माण की नवीनतम विधियों का अध्ययन करने के लिए अमरीका भेजा गया। वहां से लौटने पर भाखड़ा बांध व नहर प्रणाली की नयी योजना तैयार करने के खयाल से मुझे हाइडैम सर्कल का अधीक्षक इंजीनियर

नियुक्त कर दिया गया । यह योजना हमने १९४२ में प्रस्तुत कर दी । इसमें पहली बार जल-विद्युत-शक्ति के विकास पर भी ध्यान दिया गया था और ७.४ करोड़ रुपये की लागत का अनुमान लगाया गया था ।

इस योजना की नहर प्रणाली के आवश्यक कार्यों के लिए ३ मई १९४० को स्वीकृति मिल गयी । लेकिन योजना का बांध-संबंधी अंग अभी विचाराधीन था; क्योंकि अधिकांश बांध-कार्य और जल-भंडारवाला क्षेत्र बिलासपुर राज्य में पड़ता था और उसके राजा से तब तक कोई समझौता नहीं हो सका था । यह रुकावट तो जो कुछ थी, सो थी ही; तभी विश्व-युद्ध ने स्थिति को और जटिल बना दिया और आंशिक योजना को जो स्वीकृति मिल चुकी थी, उसे भी जून १९४० में वापस ले लिया गया । भाग्य की इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती थी ?

समर्पण

उन अज्ञात श्रमिकों को
जिन्होंने मौन और अप्रसिद्ध रहकर
यश और नामवरी की चाह के बिना
श्रम किया —
और जिन्होंने प्राण अर्पित कर दिये
राष्ट्र का काम करते हुए,
ताकि आनेवाली पीढ़ियां
उनसे अधिक सुख से जी सकें ।
[भाखड़ा बांध पर अंकित समर्पण-लेख]

इसी बीच तत्कालीन राजस्व मंत्री सर सुंदरसिंह मजीठिया ने बांध को सड़क-सतह से ७५० फुट तक ऊंचा करने का प्रस्ताव रखा, ताकि पानी की एक-एक बूंद का सिंचाई और विद्युत-शक्ति के विकास में उपयोग किया जा सके । श्री मजीठिया की यह बात काफी सार्थक सिद्ध हुई और जून १९४० का, स्वीकृति वापस लेने का निर्णय इस योजना के लिए एक प्रकार से वरदान साबित हो गया । वास्तव में आगे चलकर बांध ७४० फुट की ऊंचाई पर ही बना और उसकी जल-भंडार की क्षमता भी ८० लाख एकड़ फुट की हो गयी ।

सर सुंदरसिंह मजीठिया की मृत्यु के बाद रोहतक के सर छोटूराम ने कार्यभार संभाला । उन्होंने अनुभव किया कि भाखड़ा-बांध-योजना न सिर्फ अकाल-निवारण के लिए कारगर है, अपितु संपूर्ण पंजाब की खुशहाली के लिए उपयोगी है ।

१९४१-४२ में मैं बिलासपुर के राजा से समझौता करवाने में सफल हो गया और फरवरी १९४५ में उस समझौते की सब शर्तें भी मंजूर कर ली गयीं । इस प्रकार अब बांध के १,६०० फुट आर० एम० पर बनने में कोई रुकावट-जैसी बात नहीं रही।

१४ अगस्त १९४३ को मैंने विश्व के जाने-माने बांध-विशेषज्ञ और यू०एस० ब्यूरो आफ रिक्लेमेशन के चीफ डिजाइन-इंजीनियर डा० जे० एल० सैवेज को यहां आकर पंजाब सरकार को इस संबंध में सलाह-मशविरा देने के लिए आमंत्रित किया ।

पंजाब सरकार ने १९४० में भाखड़ा योजना को रद्द जो कर दिया, उसकी जड़ में एक बड़े अंग्रेज आइ० सी० एस० अफसर का लिखा हुआ तीन पन्ने का एक नोट था। अफसर ने इसमें यह चेतावनी दी थी कि दक्षिण-पूर्वी पंजाब के अकाल-पीड़ित इलाकों में सिंचाई की सुविधा हो जाने का फौजी भरती पर बुरा असर पड़ेगा। यह इलाका रंगरूटों की भरती के सबसे बड़े केंद्रों में से था। तमाम परिस्थितियों पर विचार करते हुए यह बड़ा ही गर्हित निर्णय था।-डा० खोसला

वे जनवरी १९४५ में यहां आये और उनके सुझाव व निर्देशन में बांध-क्षेत्र के निरीक्षण का काम शुरू हो गया। बाद में भाखड़ा-बांध-योजना (१९३९-४२) के अंतर्गत सड़कों, रेलवे, इमारतों आदि के प्रारंभिक निर्माण की कार्रवाई शुरू तो हो गयी; किंतु देश-विभाजन की भयावनी परिस्थिति में उसकी गति मंद रही।

विभाजन के तुरंत बाद, सबसे ज्यादा जोर नहर-प्रणाली को पूरा करने पर दिया गया, ताकि जैसे ही बांध-निर्माण का कार्य संपन्न हो, वैसे ही संचित जल-राशि को नहरों के द्वारा सिंचाई और बिजली के उपयोग में लाया जा सके। इस तरह नहरों का काम करीब-करीब १९५४ में पूरा हो गया और ८ जुलाई १९५४ को पहले-पहल सूखे खेतों में जल प्रवाहित हुआ। उस दिन वहां के लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं था—उनके इतिहास में यह एक अनोखी घटना थी।

नंगल-जल-विद्युत-नहर के अंतर्गत हजार किलोवाटवाले दो-दो यूनिटों के बिजलीघर भी चालू हो गये। १ जनवरी १९५५ में गंगवाल पर और दूसरा जुलाई १९५६ में कोटला में। बिजलीघर के पहले दो यूनिट (प्रत्येक ६० हजार किलोवाट) १९६० में ही चालू हो गये थे। शेष तीन १९६१ में काम करने लगे।

इतना सब होने पर भी बांध-निर्माण में जो तरह-तरह की रुकावटें और बाधाएं आयीं, उनका एक लंबा इतिहास है। इस बीच बांध-कार्य के लिए कार्य-संचालन व्यवस्था का गठन किया गया। यह अपने आप में एक क्रांतिकारी कदम था। इस व्यवस्था के अंतर्गत पंजाब के राज्यपाल की अध्यक्षता में एक 'कंट्रोल बोर्ड' भी बना। साथ-ही-साथ एक 'क्वालिटी कंट्रोल' विभाग भी खोला गया।

मैं अपने इंजीनियरिंग कार्य-काल में भारतीय इंजीनियरों की योग्यता व कुशलता से काफी प्रभावित हुआ हूं और समय-समय पर मैंने उनकी सूझ-बूझ के कई चमत्कार भी अपनी आंखों देखे हैं।

भाखड़ा - बांध अक्टूबर १९६२ में तैयार हो गया था, तब से यह एक नया इतिहास लिख रहा है। इसकी नयी कार्य-संचालन-व्यवस्था के अंतर्गत तीनों तकनीकी विभागों का मेल बैठ चुका है। भाखड़ा-बांध हर दृष्टि से बेजोड़ सिद्ध हुआ है—विशेषकर कंक्रीट के खयाल से तो यह एकदम अनोखा है।

★

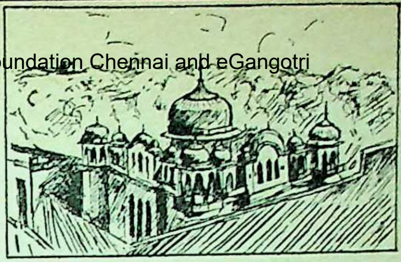

श्रीगोपाल नेवटिया

राजस्थान : एक मीठी याद

जो कल था, वह कल नहीं रहेगा। पांच दशक पूर्व जहां मेरा बचपन गुजरा था, आज वहां जाकर देखा, तो देखने को केवल उसके अवशेष मिले। घर-द्वार ने पुरातन रूप ले लिया था और नर-नारी सभी पुराने रूप में थे।

वह विगत कल आज समाप्त हो रहा है। कल की यह समाप्ति जिस गति से इस काल में अपने देश में हो रही है, वह अद्वितीय है; और राजस्थान के हृदय मरुस्थल के आज के दर्शन से जब अतीत की याद आती है, तो परिवर्तन की इस गति पर अचरज किये बिना नहीं रहा जाता। आज भी राजस्थान में वही बालू-रेत के टीबों से आवृत नगर हैं, जिनमें वैसी ही बड़ी-बड़ी हवेलियां, वैसी ही गलियां, वही घर-द्वार, वही लोग-बाग भी हैं। पर यह भी सच है कि पचास वर्ष में ही इतिहास बदल चुका है। हवेलियों के शरीर खड़े हैं; पर उनमें प्राण नहीं रहे। राजा गये, सेठ भी चले जा रहे हैं। कितनी तीव्र गति से काल ने इन सबको आत्मसात् कर लिया!

परिवर्तन की गति को देखकर आश्चर्य होता है। क्या राम-कृष्ण के बाद गांधी-नेहरू तक पहुंचने में लाखों-हजारों वर्ष लगे? यदि उतने नहीं, तो अयोध्या-द्वारिका को काल-कवलित होने में भला कम समय कैसे लगा होगा?

आज मेरा वह देश राजस्थान कितना निष्प्रभ प्रतीत होता है! पर पचास साल पहले यह भौतिक दृष्टि से साधन-विहीन दिखनेवाली मरुभूमि एक दृष्टि से बड़ी संपन्न भी थी। क्यों? वहां के कर्मठ सेठ 'दिशावर' (बंबई, कलकत्ता, रंगून आदि) में धन कमाते और अपने 'देश' राजस्थान में उसे खर्च करते। बड़े नगरों में अर्जित धन से वे राजस्थान में कूप-तड़ाग, धर्मशाला, पूर्वजों के स्मारक स्वरूप 'छत्री', निज-निवास के लिए हवेलियां बनवाते थे।

वह सब अब नहीं रहा। अफीम और रुई की खरीद-फरोख्त और निर्यात में प्रवीण मारवाड़ियों का वह रूप, उनका वह स्थान अब रह ही नहीं गया। अब कल-कारखानों का जमाना है। आज के व्यवसाय का बीज-मंत्र है—कमाओ, दक्ष बनो, कारखाने बनाओ,

एक हवेली पर अंकित भित्तिचित्र

टैक्स दो, अपने आप पर खर्च करो और कुछ बचे तो वहीं आस-पास अपनी समृद्धि को बिखेरो।

सारा राज ही बदल गया। न रहे महाराजा, न रहे रावराजा। सेठ-साहूकारों की तो बात ही क्या? उन सबके लिए आंसू बहानेवाले भी नहीं रहे। रावराजा और साहूकारों के कारण ही राजस्थान के वे साधनशून्य स्थल पनपते थे। न वे रहे, न कारखाने आये। अब वे स्थान पूर्णविराम से पूर्व के श्वास न लें, तो क्या करें? काल की इस गति को जानकर, कोई उसकी चिंता भी क्यों करे? हस्तिनापुर और पाटलिपुत्र सरीखे शहर नहीं रहे, तो फतेहपुरों और रामगढ़ों की कौन-सी तकदीर?

फिर भी अपनी चीज से मोह होता है; और होता है प्राचीनता के प्रति समादर और पुरातनत्व का अभिमान। और जहां भी, जिस भी स्थिति में कोई हो, वह स्वजनों के अभावग्रस्त कष्ट से तो बच ही नहीं सकता। ऐसे ही मोह, अभिमान और दर्द का अनुभव होता है दिशावरों में बसे उन प्रवासी राजस्थानियों को, जो वर्षों बाद अपने 'देश' की यात्रा करते हैं। और दो दशक बाद अपने देश फतेहपुर जाकर मैंने भी यही अनुभव किया।

पचास वर्ष पहले अपने उस नगर को मैं तब के जमाने में, ज्यादा-से-ज्यादा हवेली की ऊंची 'डागली' पर से देख सकता था और अब उसे देखता हूं हवाई जहाज की खिड़की से। सब कुछ वैसा ही है। वही टीले, वही पेड़, वही 'बीड़', वही घर-हवेलियों का झुरमुट। मगर हां, अब उनका हृदय चीरती हुई रेल भी है, सड़कें भी हैं, बिजली की रोशनी भी है और नल-पानी भी। जन-गण से मिलकर देखता हूं, तो लिखाई-पढ़ाई बढ़ गयी है, दुकानदारी तरक्की पर है। और वहां अस्पताल भी है, पंचायत भी है।

पचास वर्ष पहले सारा राज्य था राजा के हाथ में। और राजा दस-पांच दिन में एक आध दिन के लिए ही 'सादा' होता था, अर्थात् उस दिन शराब पिये बिना होता था। उसके प्रधान सचिव का वेतन था दस-बीस रुपये। न कोई टैक्स था, न कोई फौज या पुलिस। अदालत भी नहीं थी, मामले-मुकदमे भी नहीं होते थे। थाना था जरूर, पर वह हर साल नीलाम होता था। ज्यादा बोली बोलनेवाला थानेदार बनता; राजा को जितना देता, उससे ज्यादा जुरमानों से वसूल करके अपना घर भरता।

वह जमाना था, जब जमीन का लगान ही राजा को पर्याप्त होता था। कभी कोई नया खर्च—जैसे कि विवाह-शादी या विला-

त-यात्रा का आ जाती, तो 'बाछ' (अर्थात् स्पेशल लेवी) से काम लिया जाता। सेठ-साहूकारों को जमा करके उन्हें बाध्य किया जाता कि वे ही यह बतायें कि किससे कितना लिया जाये।

स्कूल, अस्पताल और शहर-सफाई की तो बात ही क्या, बाहर से आनेवाले अखबार भी राजा को नहीं सुहाते थे। मुझे याद है, सन १९२२ में मैंने अपने उस स्वदेश से 'श्रीस्वदेश' मासिक प्रकाशित किया। छः महीने बाद राजा को पता चला कि उसके राज्य में एक सेठ का बेटा 'रिसाला' शाया करता है, तो तुरंत "बंद करो" का हुक्म हो गया और उसका पालन भी।

राजा ऐसा था, तो प्रजा भी ऐसी ही। उसकी दृष्टि में पुस्तकालय स्थापित करना समाजीपन (आर्यसमाजीपन) था, पाजीपन था और अस्पताल में अंग्रेजी दवा पिलाना धर्मभ्रष्ट करने का प्रथम चरण। विवाह में वेश्या के नाच को रोकना और ब्राह्मणों को गली में बैठाकर लड्डू खिलाने का विरोध करना परम आदरणीय संस्कृति पर प्रहार करना। मुझे याद है, मेरे बड़े भाईजी ने बंबई में सोडा पी लिया था, तो दादाजी ने फतेहपुर में प्रायश्चित्त में व्रत किया था। अछूतों को हरिजन मानना तो कल्पना के बाहर की बात थी। पर अब तो वे पंच-सरपंच हैं, बराबर आकर बैठने के हकदार हैं।

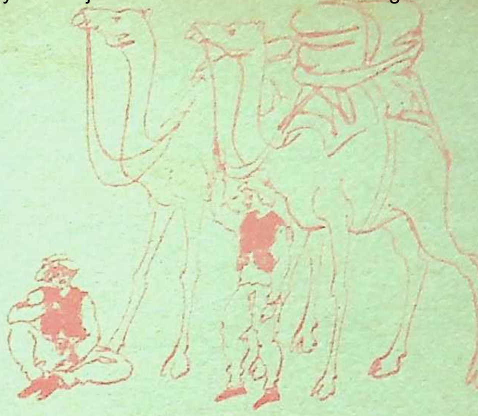

यात्री और सहयात्री

उन दिनों दस कोस की मुसाफिरी ही एक समस्या थी—रथ चाहिये, नौकर-चाकरों व सामान के ऊंट अलग से, और सबसे अधिक आवश्यक रक्षक 'ठाकर' (राजपूत)। धाड़ेतियों (लुटेरों) की बातें हवा में बनी रहतीं। आज हजारों मील की हवाई जहाज की यात्रा में वह प्राणभय नहीं, जो उन दिनों दस-पांच कोस की यात्रा में रहता। कोई करता भी कितनी मुसाफिरी? मेरे दादाजी ऊंट पर सवार होकर पूना गये थे और एक साथ नौ वर्ष की मुसाफिरी करके 'स्वदेश' लौटे थे। लौटते समय मालवा में लुटेरों ने लूटा; पर अजमेर के रेसिडेंट साहब की दोस्ती काम आयी। लुटेरों पर जोर पड़ा, कुछ धन वापस मिला। पर अब तो वे डर नहीं; और डर हैं, तो बीमा भी है।

एक और स्मृति। पुस्तकालय स्थापित किया गया, ब्राह्मणों ने 'धरणा' (अनशन-

सत्याग्रह) किया । मेले-ठेलों में सुप्रबंध के लिए सेवा-समिति बनायी गयी; उसका विरोध हुआ । कुछ शहर-सफाई की व्यवस्था की गयी, तो गांव ने मजाक उड़ाया । वहीं अब म्युनिसिपालिटी के चुनाव के वही हुड़दंग हैं, जो और सब जगह हैं ।

इसके साथ दूसरा जो परिवर्तन हुआ है, वह विशेष महत्व का है । बड़े-छोटों का वह भाईचारा नहीं रहा; हवेलियां-कूप-तड़ाग, धर्मशाला-छत्रियां—मंदिर बनवाकर 'परदेश' की कमाई को 'देश' में बिखेरने की वह बात नहीं रही; संतोषजन्य सुख का वह जीवन नहीं रहा । उन दिनों का जीवन था—बड़ी शानदार हवेली, पर सेठ का रहन-सहन सादा और उसका जीवन जनगण से घुला-मिला; नीची जातियां, पर उनके साथ अपनापन, धन-जन्य दर्प और घृणा नहीं; दवा नहीं, तो रोग भी नहीं; शिक्षा नहीं, तो बेकारी भी नहीं; पुलिस नहीं, तो चोरी-जारी भी नहीं; अदालत नहीं, तो मुकदमे-मामले भी नहीं; रेल-मोटर नहीं, तो मुसाफिरी भी नहीं; टैक्स नहीं, तो सरकारी खर्च भी नहीं । कैसा सुंदर सुखमय था ५० वर्ष पहले का मेरे देश का वह समय !

लोग प्रातःकाल उठते । कैसा ही मौ हो, घर से दूर टीबों में निवृत्त होते । बा बगीचियों में कसरत करते । नहाते-धो पूजा-पाठ करते, फिर देवदर्शन करते, भोज विश्राम करते । अपराह्न में बैठक मु शाम फिर बाग-बगीचियों में बीतती । स समय अपना गुलाम था । नाटक-सिने नहीं थे, न था किस्से-कहानियों का साहि फिर भी समय खूब मजे में कटता ।

जन-साधारण की रोजी इतनी-सी है कि दो रोटी मिल जाये, उसी में मस्त "राम झरोखे बैठकर, सबका मुजरा ले जैसी देखे चाकरी वैसा ही फल देय" मान्यता, उस फलसफे में अगाध श्रद्धा कोई धनवान-भाग्यवान, अर्थात् पूर्वज कृत पुण्यों का भोक्ता । किसी को उस विरोध नहीं, उसका किसी से विरोध नहीं कोई दरिद्र-दु तो वह उसी पिछले जन्म कुकृत्यों का दं उसे किसी इसकी शिकाय नहीं । ऐसा वह संतोष और सुख की सिंचा वट से हरा-भरा हमारा रेगिस्तान । पचास वर्ष पहले का वह देश

[एक राजस्थानी चित्र की शणै द्वारा अनुकृति]

पिछले पंद्रह वर्ष में कितनी द्रुतगति से बदल गया, कितनी द्रुतगति से बदलता जा रहा है! रावराजा, सेठ-साहूकार नहीं रहे; जो हैं वे भी नहीं रहेंगे—किसी को शिकवा-शिकायत नहीं। पुराने गढ़ और पुरानी हवेलियां अस्थि-कंकालावशिष्ट रह गयी हैं, जमींदोज होती जा रही हैं, उनके रंग फीके पड़ रहे हैं, उनके चित्रित वाह्यावरण को कोई भूला-भटका कलाविद ही नजर उठाकर देखता है। परोपकार नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है; टैक्स दो और सरकार उससे जनहित करे तो ठीक। टैक्स भी बढ़ रहे हैं, सरकारी काम भी। स्कूल, अस्पताल, रेल-सड़क, बिजली-पानी, पुलिस-अदालत सभी विस्तार पा रहे हैं; लोग उनसे लाभान्वित हो रहे हैं। पर उस 'लाभ' में वह सुख नहीं, जो अब से पांच दशक पहले था।

पर यही तो समय की गति है। आवश्यकताओं को बढ़ाओ, उत्पादन को बढ़ाओ; कर्मनिष्ठ बनो, कल-कारखाने लगाओ; कर्तव्य नहीं, बस अधिकार की बात करो; भाग्य-पूर्वजन्म कुछ नहीं, सब कुछ बाहुबल-बुद्धिबल है; कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं, सब समान हैं—सारे संसार में यह नवीन वातावरण प्रसारित हो रहा है। जीवन के वे प्राचीन मूल्य अब नहीं रहे। अब तो गत कल की ओर क्या देखें, देखें आनेवाले कल की ओर। संसार में भारत, भारत में राजस्थान और उस राजस्थान में मेरे देश फतेहपुर के गत जीवन को क्या देखूं? भविष्य को देखूं। परंतु क्या उसका भविष्य अणुयुग के साथ कदम बढ़ाकर चल सकेगा? एक फतेहपुर ही क्यों, स्वदेश के हजारों-लाखों नगरों-ग्रामों का यही भाग्य नजर आता है कि वे पिछड़े हैं, पिछड़े रहेंगे।

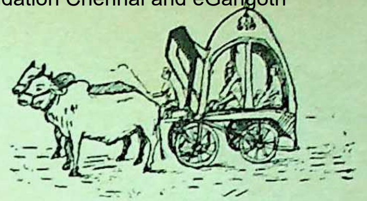

दस कोस की मुसाफिरी भी मुसीबत थी।

"जिसने दांत दिये, वह चना भी देगा" के फलसफे की जगह, यदि दांतों की वृद्धि पर रोक-थाम और चने की वृद्धि में तत्परता होगी और साथ ही लालसाओं-वासनाओं पर अंकुश लगेंगे, तो ही ये अर्धमृत नगर-ग्राम फिर सशक्त बन पायेंगे।

★

उत्तम पुरुषों की गति फूल के गुच्छे के सदृश होती है। या तो वे लोगों के सिर पर ही विराजते हैं या वन में ही सूखकर समाप्त हो जाते हैं।

—भर्तृहरि

यदि आप किसी विचार को मारना चाहते हैं, तो उसे क्रियाविन्त करने के लिए एक कमेटी बना दीजिये।

—सी० एफ० कैटरिंग

हमें मधुमक्खी की तरह मेहनत को मनोरंजन बना लेना चाहिये। **—गोल्डस्मिथ**

★

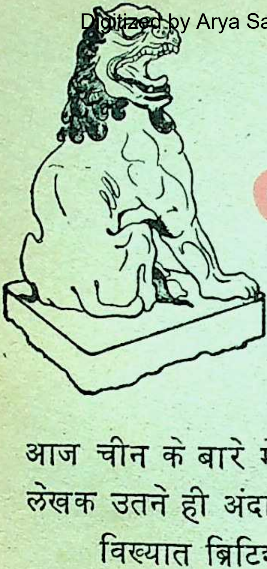

सर फ्रिट्जराय ह्यू मैक्लीन

लाल चीन के अंतराल में

आज चीन के बारे में छपनेवाली कोई दो रिपोर्टें मेल नहीं खातीं। जि लेखक उतने ही अंदाज, और उतने ही विभिन्न वर्णन.....प्रस्तुत वर्णन विख्यात ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ ने चीन की यात्रा के बाद लिखा है।

चीन और रूस आज एक दूसरे के राजनीतिक शत्रु हैं। मंगोलिया ने इन दोनों विशाल देशों को एक दूसरे से पृथक् कर रखा है। पीकिंग और मास्को के बीच में ३,६०० मील का फासला है। परंतु जैसा कि माओ त्से-तुंग ने कहा है, मंगोलिया एक दिन चीन का भाग बन जायेगा। तब दोनों देशों की सीमाएं छूने लगेंगी। यों सिक्यांग में दोनों देश परस्पर छूते ही हैं।

पीकिंग एक्सप्रेस, जिसमें मैं सफर कर रहा था, मास्को से चलकर एक सप्ताह बाद उलन बातोर के रेल्वे स्टेशन पर पहुंचती है। वहां एक घंटा रुकती है और आगे चल देती है। पहले वह बाहरी मंगोलिया की ओर से होकर आगे वढ़ती है, फिर गोबी मरुस्थल के वीरान इलाके को पूरे एक दिन में पार करने के वाद भीतरी लिया में प्रवेश करती है और अगले शाम को चीन की वड़ी दीवार में से पीकिंग की ओर जाती है।

यह गाड़ी चीनियों ने स्वयं बनायी और अधिकांशतः चीनी ही इसमें सवार मेरे सोने का कंपार्टमेंट, जिसमें बहुत दार नीले रंग के फूलदार चीनी परदे हुए थे, बड़ा आरामदेह था। जब भी मैं बजाता, दूधिया सफेद लिबास पहने क्टर मेरे लिए चीनी के प्यालों में दार चाय लाता। प्यालों पर भी नीले के बेल-बूटे बने हुए थे।

गोबी मरुस्थल के बीच में, चीनी सीमा की एक चौकी पर अफसरों ने हमारी हमारे सामान की पूरी तलाशी ली।

भी चीज उनकी आंखों से बच न पाती ।

गाड़ी वहां कई घंटे खड़ी रही ।

डाईनिंग-कार में भोजन काफी सस्ता और विभिन्न प्रकार का था । और था भी इतना अच्छा कि मुझे आश्चर्य हुआ । सारे सफर में मैंने उससे अच्छा भोजन और कहीं नहीं खाया । भोजन परोसने का काम साफ-सुथरी, सुशील लड़कियां कर रही थीं, जो विदेशी भाषा का एक भी शब्द नहीं जानती थीं । हर चीज एकदम साफ-सुथरी थी । जहां भी पड़ाव लंबा होता, पूरी गाड़ी को अंदर-बाहर से झाड़-पोंछकर खूब धोया जाता था, जिससे वह बिलकुल नयी बन जाती थी ।

डाइनिंग-कार में चीनी और यूरोपियन दोनों प्रकार के भोजन की व्यवस्था थी । मैंने सोडा की बोतल मंगवायी और मीनू में उसकी जो कीमत लिखी हुई थी, वह मुझे वाजिब ही लगी । पर जब मैंने उसे गिलास में ढाला और पिया, तो पता चला वह तो सफेद शराब थी । स्वाद उसका कोई खास नहीं था; लेकिन थी वह काफी नशीली । मैंने हल्की शराबों की सूची देखी, तो उसमें चीनी जिन और ह्विस्की शामिल थीं । लेकिन मैं यह सोचकर चुप रहा कि जब यहां का सोडा ही इतना करामाती है, तो हल्की शराबें तो न जाने कैसी होंगी ।

गाड़ी में विदेशी दूतावासों के कुछ लोगों के अतिरिक्त सभी यात्री चीनी थे । उनमें अफसर भी थे और कारीगर भी, जो अपनी पत्नियों और परिवारों के साथ सफर कर

रहे थे। नौजवान स्त्रियों ने सुंदर, आधुनिक वस्त्र पहन रखे थे--ब्लाउज और स्लैक्स। सब आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे, आनंद से खा-पी रहे थे।

ट्रेन में लगे लाउड-स्पीकरों पर निरंतर रूस और युगोस्लाविया विरोधी प्रचार हो रहा था; कभी-कभार ही पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के विरुद्ध कुछ कहा जाता था। कई बार जब प्रचार रुकता, साजों की मधुर धुनें गूंज उठती थीं। डाइनिंग-कार में बिक्री के लिए एक छोटी-सी पुस्तिका रखी हुई थी; नाम था–'तोग्लियाती को उत्तर'।

सत्रह साल पहले कोमिंतांग चीन से लौटते हुए मैं वहां की गड़बड़ और बेईमानी की छाप और यह विचार लेकर लौटा था कि यह देश अब ज्यादा दिन अपने पांवों पर खड़ा नहीं रह पायेगा। इसके पहले दो वर्ष मैंने युद्धग्रस्त युगोस्लाविया में बिताये थे और वहां टिटो को शासन की बागडोर संभालते देखा था। अब मुझे ऐसा लगा कि चीनी कम्युनिस्ट भी कुछ वैसा ही करनेवाले हैं।

परंतु चीन के पास कुछ ऐसी चीज थी, जो युगोस्लाविया के पास नहीं थी। उसके पास पचास करोड़ की आबादी थी, जो रूस की जनसंख्या से तिगुनी थी, और सारे संसार की जनसंख्या की चौथाई। स्टालिन ने एक बार गर्व से कहा था–"मेरे उंगली उठाने-भर की देर है कि टिटो का कहीं नाम-निशान नहीं रहेगा।" स्टालिन यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कभी चीन हाथ से चला जायेगा।

इस सदी के तीसरे दशक के अंतिम दिनों में, जब कम्युनिस्ट पार्टी की नीति से तनिक भी इधर-उधर होनेवाले हजारों रूसी लोग मार डाले गये थे, मैं मास्को में रहा था। इसलिए १९४६ में चीन का दौरा करते समय अक्सर सोचा करता था कि अगर चीन कम्युनिस्ट हो गया, तो वहां किस किस्म का कम्युनिज्म आयेगा? इसका उत्तर पाने के लिए मुझे कई वर्ष तक रुकना पड़ा।

और इस बीच रूस में कई मामलों में स्टालिन के जमाने की-सी सख्ती नहीं रही। लेकिन अपनी वर्तमान चीन-यात्रा में मुझे कोई परिवर्तन नजर नहीं आया। चीनी नेताओं की सत्ता और शक्ति देखकर शायद स्टालिन को भी ईर्ष्या होती।

मेरे देखे हुए दूसरे कम्युनिस्ट देशों से चीन मुझे भिन्न-सा प्रतीत हुआ। चीनियों ने कम्युनिज्म को अपनाकर इस तरह ढाल लिया है कि वह यूरोपीय नहीं, बल्कि चीनी प्रतीत होता है; वह ऊपर से थोपा हुआ नहीं, अपितु वहीं की उपज-सा दिखाई देता है। यह ऐसा कम्युनिज्म है, जो चीन और उसके पड़ोसी एशियाई देशों को सहज ही रास आनेवाला है।

आज यह सोचना गलत होगा कि चीनी हुकूमत स्वदेश में लोकप्रिय नहीं है।

मेरा खयाल था कि चीन में मैं जगह-जगह आधुनिक किस्म के 'कम्यून' देखूंगा, खेतों में फैक्टरियां बनी हुई होंगी और खेती-

बाड़ी का काम करनेवाले मजदूर इधर-उधर घूम रहे होंगे। पर मेरा यह सोचना गलत था। देहाती चीन का जो रूप मैंने पहले देखा था, उसमें अब मुझे कोई विशेष परिवर्तन दिखाई न दिया।

जहां भी जाइये, मेहनती स्त्री-पुरुष और बच्चे फीके नीले रंग का लिबास और घास की बनी चौड़ी टोपियां पहने प्रातःकाल से शाम तक खेतों में काम करते मिलेंगे। खेतों के बीच उनके छोटे-छोटे घरों के झुरमुट दिखाई देंगे और कहीं-कहीं कोई फैक्टरी या कैंटीन भी।

लेकिन सामाजिक और आर्थिक रूप से देखा जाये, तो चीन में पूरा इन्कलाब आ चुका है। जमींदारों और सूदखोर महाजनों का कहीं नाम-निशान नहीं रह गया है। कृषिभूमि जो १९४९ के बाद किसानों में बांट दी गयी थी, अब हुकूमत की, या बहुत से किसानों की साझी मिलकियत है। और उस भूमि की उपज पर किसानों का अधिकार है।

आज बेशक चीनी लोगों का जीवन-स्तर यूरोपीय स्तर से बहुत नीचा है और उन्हें खूब कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और शासकों की नीति से सहमत होना पड़ता है; पर आज उन्हें यह डर नहीं है कि पहले की तरह उन्हें भूखों मरना पड़ेगा।

और प्रायः यह जो कहा जाता है कि वहां पारिवारिक जीवन टूट रहा है, बिलकुल गलत है। हां, बहुत-सी जगहों पर लोग श्रमिक-कैंटीनों में एक साथ खाते हैं। कैंटीनों में निःशुल्क भोजन मिलता है, जिससे स्त्रियों को बाहर का काम करने में आसानी होती है। सच पूछिये तो परिवारों में खुशहाली आने से उनकी मजबूती बढ़ी है। कम्युनिस्ट शासन ने देश में शांति और सुव्यवस्था कायम कर लूट-खसोट, बेईमानी और रिश्वतखोरी आदि बुराइयों को आमूल नष्ट कर दिया है।

आज चीन का किसान पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और नीरोग है। उसके बच्चों को शिक्षा मिल रही है। यह कम्युनिस्ट शासन की ही देन है।

सो यह सोचना कि चीन के साठ करोड़ किसान शासन का तख्ता उलटने के लिए तैयार बैठे हैं, मूर्खता होगी। उलटे वे उसे अपना शासन समझते हैं।

कई बार पूछा जाता है कि क्या चीन विकास और उन्नति के रास्ते पर अकेला ही, यानी बिना दूसरों की सहायता के ही आगे बढ़ सकेगा?

औद्योगिक विकास के लिए चीन को समय की जरूरत है। अपने साठ करोड़ मेहनती लोगों की बदौलत वह कुछ ही समय में बहुत बड़ी औद्योगिक शक्ति बन जायेगा। रूस की मदद से चीन अपने पांव पर खड़ा तो हो ही चुका है, अब आगे बढ़ना उसके लिए इतना मुश्किल नहीं है। आज पारस्परिक संबंध खराब हो जाने से रूस ने उसे मदद देना बंद कर दिया है, तो चीन को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। पर निश्चय ही वह इन सब मुसीबतों

को लांघ जायेगा।

चीन का इस्पात-उद्योग दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। बहुत-सी विकास-योजनाएं कार्यान्वित हो रही हैं। उदाहरणार्थ १९६३ के पहले तीन महीनों में ही ट्रैक्टरों का उत्पादन पचास प्रतिशत बढ़ गया है। चीन को अब रूसी मदद के रहम **पर** नहीं जीना पड़ेगा।

देहाती चीन के स्वरूप में तो कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं देता है, लेकिन पीकिंग में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है। आज का पीकिंग १९४६ के पीकिंग से बिलकुल भिन्न है। आज फिर वह चीन की राजधानी है और साठ लाख लोग उसमें रह रहे हैं। उसमें यूरोपीय शहरों का शोर-शराबा और गहमा-गहमी बेशक नहीं है; पर कुछ ही समय में वह एक बहुत बड़ा आधुनिक शहर बन जायेगा।

कोयले की पहाड़ी के ऊपर से पीकिंग को देखने पर यह बात समझ में आती है। वहां से बेशुमार नयी इमारतें बनी हुई या बन रही दिखाई देंगी। सोवियत शैली की इमारतें, बड़े-बड़े होटल और विशाल नये स्टेडियम नजर आयेंगे। हां, इन आधुनिक ढंग की इमारतों के बीच में कहीं-कहीं शानदार पगोडा शैली की छतवाली भी कोई-कोई इमारत दिखाई देगी।

चागान नाम की सड़क, जो पीकिंग को बीच से आर-पार करती हुई पूर्व से पश्चिम की ओर जाती है, २४० फुट चौड़ी है। उस पर कभी-कभी किसी अफसर की चमकती हुई काली कार गुजरती है, जो प्रायः रूस की बनी हुई होती है। माल से भरे हुए कुछ ट्रक दिखाई देते हैं और लोगों से खचाखच भरी हुई कुछ बसें भी। पर अधिकांशतः वह हाथ-गाड़ियों, रिक्शों और बाइसिकलों से भरी रहती है।

वहां की सबसे बड़ी इमारत है 'जनता का महान हाल,' जो वहां की विधान-सभा है। उसे क्रांति की दसवीं वर्षगांठ पर चौदह हजार मजदूरों ने दस महीने में तैयार किया था। उसके सामने का भाग ग्यारह सौ फुट चौड़ा है। इसके अंदर दस हजार व्यक्ति बैठ सकते हैं। इसमें बहुत-से ड्राइंग-रूम हैं, जो विभिन्न प्रांतों की शैलियों में सजाये गये हैं। सौ एकड़ धरती पर खड़ी इस इमारत की अपनी ही शान है।

पीकिंग के स्टेट डिपार्टमेंट स्टोर में चीन में बनी हर किस्म की उपभोग-सामग्री खरीदी जा सकती है। उनकी कीमतें अवश्य कुछ ज्यादा होती हैं। कैमरों की कीमत तीन-चार सौ रुपये के बीच है, जो औसत चीनी नागरिक की तीन महीने की तनख्वाह के बराबर है। बाइसिकल कैमरे से कुछ महंगी मिलती है, जबकि घड़ी या रेडियो उससे कुछ सस्ते।

फर्नीचर, रसोई का सामान और क्राकरी की कीमत वही है, जो अमरीका या इंग्लैंड में है; पर कपड़ों की कीमत वहां के मुकाबले दुगुनी। कपड़ा राशन-कार्डों पर मिलता है—साल में एक व्यक्ति को छः गज से ज्यादा नहीं मिल सकता। पर कलात्मक चीजों का

उत्पादन पहले से कम नहीं हुआ है । आज भी आप उन्हें खरीद सकते हैं ।

पिछले कुछ महीनों से खाने-पीने की चीजें अधिक मात्रा में मिलने लगी हैं। शहरों में अनाज का राशन है और राशन की मात्रा आदमी के पेशे पर निर्भर है । एक अफसर को अगर महीने के पंद्रह सेर चावल मिलते हैं, तो मजदूर को पच्चीस सेर । मछलियों, मुर्गों, अंडों और तरकारियों पर से राशनिंग हट गया है और बाजार में उन्हें खुलेआम खरीदा जा सकता है । इन चीजों की चीन में अब बहुतायत है ।

बेशक औसत आमदनी के हिसाब से इनकी कीमतें कुछ ज्यादा हैं। एक मुर्गी की कीमत दस घंटे की मजदूरी के बराबर है, आध सेर मछली की कीमत दो घंटे की मजदूरी के बराबर, आध सेर सादी चाय की कीमत दो दिन के काम की कीमत के बराबर ।

रूस की तरह ही चीन में भी सरकारी अधिकारियों, ऊंचे ओहदे के अफसरों, वैज्ञानिकों, विशेष कारीगरों आदि की आमदनी आम कर्मचारियों की आमदनी से काफी ज्यादा है ।

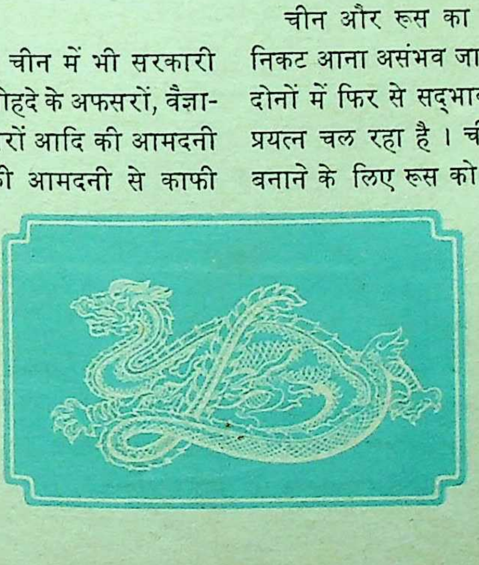

लाल चीन में एक और वर्ग भी है जिसकी बहुत आमदनी है— कम्युनिस्ट पूंजीपतियों का वर्ग । ये लोग पहले फैक्टरियों के मालिक थे, जिनसे कि सरकार ने फैक्टरियां ले ली थीं । बदले में सरकार उनकी जायदाद की कीमत का एक हिस्सा हर साल उन्हें देती है । आम तौर पर ये लोग फैक्टरियों के मैनेजर भी हैं । ये रेशमी लिबास पहने हुए दिखाई देंगे, इनके घरों में टेलिविजन सेट होंगे और किसी-किसी के-पास तो शानदार बेंटले कार भी होगी ।

आर्थिक विकास के साथ ही चीनी सरकार फौजी ताकत भी बढ़ा रही है और दिनों-दिन राजनीतिक तौर पर शक्तिशाली बनती जा रही है । तभी तो वह रूस के नेतृत्व को चुनौती दे रही है और एशिया में अपना नेतृत्व स्थापित करने का भरसक प्रयत्न कर रही है । उसे इस बात का भी पूरा विश्वास है कि सैद्धांतिक रूप से वह सही है और रूस गलत ।

चीन और रूस का अब एक दूसरे के निकट आना असंभव जान पड़ता है, यद्यपि दोनों में फिर से सद्भाव कायम करने का प्रयत्न चल रहा है । चीन से अच्छे संबंध बनाने के लिए रूस को माओ त्से-तुंग की शर्तें माननी पड़ेंगी। माओ रूस के अधीन रहना नहीं चाहता और अपनी किस्म का कम्युनिज्म संसार में स्थापित करना चाहता है । *

एक सुनहरी याद

आत्मोत्सर्ग की तत्परता ने सांप्रदायिक पशुता को लज्जित कर दिया.....चिरबीते गांधी-यु की एक हृदयस्पर्शी झलक ।

जी० आर० सेठी

सन १९२२ की बात है । उस समय कांग्रेस और खिलाफत कमिटी मिलकर विदेशी राज्य के विरुद्ध लड़ रही थीं । आजादी की उस फौज में कुछ ऐसे लोग भी आ गये थे, जो देश की इज्जत से ऊपर अपनी इज्जत मानते थे । ऐसे शोहरत-पसंद व्यक्तियों में एक थे मौलाना इसहाक । वे रावलपिंडी खिलाफत कमिटी के प्रधान थे । मैं उस समय जिला कांग्रेस कमिटी का मंत्री था ।

एक दफा किसी नादान स्वयंसेवक से अनजाने में मौलाना का अपमान हो गया। दुर्भाग्य से वह स्वयंसेवक हिन्दू था । बस मौलाना ने इस निजी मामले को हिन्दू-मुस्लिम मामला बना दिया और लगे मुसलमानों को कहने –"कांग्रेस हिन्दुओं की है । कांग्रेस के ताकतवर होने का मतलब है मुसलमानों की कमजोरी । मुसलमानों को कांग्रेस का साथ छोड़कर अपनी खिलाफत को ताकतवर बनाना चाहिये ।"

मौलाना हर जुम्मे को नगर की किसी-न-किसी मसजिद में धुआंधार तकरीर करके मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काते थे । इससे सारे नगर की हवा में जहर फैल गया और हिन्दू-मुस्लिम दंगों की अफ उड़ने लगीं । एक दिन मुझे यह पता च कि कल सुबह जरूर दंगा होगा । मौला ने नगर के मुसलमान गुंडों को इसी का के लिए उस रात अपने घर पर बुलाया था

वह रात बिलकुल अंधेरी थी । न जा मुझे क्या सूझी कि मैं किसी को बताये बि अकेले ही मौलाना के घर की ओर च दिया । उनका घर नगर से थोड़ी दूर था मैं कई अंधेरी गलियां पार कर उनके द पहुंच गया । अंदर से दरवाजा बंद था । मैं खटखटाया । मौलाना ने खुद दरवा खोला । उनके हाथ में हरीकेन लैंप था मुझे वहां देखकर और वह भी अकेले, वे दं रह गये ।

"कहो, कैसे आना हुआ ?"

"एक जरूरी बात करने आया हूं ।" मैंने कहा ।

वे मुझे अपने साथ अंदर ले गये । मैं देखा, वहां नगर के सभी मुस्लिम गुंडे हाजि थे । मैं उन्हें जानता था और वे मुझे प चानते थे ।

मौलाना साहब ने पूछा– "कहिये, क

काम है ?"

उस वक्त न जाने मुझमें कहां से इतनी हिम्मत आ गयी कि मैं बोल उठा —"मौलाना, मैंने सुना है कि कल यहां दंगा होनेवाला है, उसे आप इन लोगों की मदद से करा रहे हैं।" मौलाना चुप थे, मैंने कहना जारी रखा —"मौलाना, मैं जानता हूं कि एक मूर्ख हिन्दू स्वयंसेवक की नादानी से आपका कुछ अपमान हो गया है। आपके दिल में गुस्से की आग भड़क उठी है, "......

फिर मैंने हाथ जोड़कर भावावेश में कांपते हुए कहा—" यदि वह आग एक हिन्दू के खून से बुझ सकती है, तो मैं हाजिर हूं। सिवाय ईश्वर के कोई नहीं जानता कि मैं इस समय यहां हूं। आप मेरे खून से उस आग को बुझा लीजिये; लेकिन शहर में दंगा न होने दीजिये। इससे बेगुनाह लोगों की जान जायेगी और अंग्रेजों को आजादी की लड़ाई को खत्म करने का मौका मिल जायेगा।"

मौलाना इसहाक चुप थे; मगर उनके माथे के तेवर उनके बदलते रुख की सूचना दे रहे थे। मैंने आगे कहा—"मौलाना, मैं यह खूब जानता हूं कि रावलपिंडी में मुसलमानों की तादाद ८० फी सदी है। मुझे यह भी मालूम है, जान और माल का नुक्सान अधिकतर हिन्दुओं का ही होगा। लेकिन भूल न जाइये कि जहां दस हिन्दू मरेंगे, वहां एक मुसलमान भी अवश्य मरेगा। आप महशर के दिन खुदा के सामने उस एक बेगुनाह मुसलमान के खून का क्या जवाब देंगे ?"

यह सब कहते-कहते मेरी आंखों से आंसू बह चले थे, मेरा दिल रो उठा था; और मौलाना की आंखें भी गीली हो गयी थीं। मेरे हाथों को अपने हाथों में थामकर उन्होंने जो कहा, वह मुझे आज बयालीस साल बाद भी याद है। वे बोले –

"बरखुरदार, तुमने मेरी आंखें खोल दीं। मैं बहुत बड़ा गुनाह करने चला था। तुमने बचा लिया। कहो, क्या चाहते हो ?"

"यही कि कल फसाद न हो।"

"नहीं होगा। ...... और कुछ ?"

"और कल मैं एक सार्वजनिक सभा बुलाऊंगा, जिसमें आपको हिन्दू-मुस्लिम एकता पर व्याख्यान देना होगा।"

"दूंगा, तुम जलसे का इंतजाम करो।"

यह सुनकर मेरी भरी आंखों में प्रसन्नता नाचने लगी। वहां से चलकर मैं सीधा एक छापाखाने पहुंचा। सभा के विषय में पोस्टर छपवाये और रातों-रात सारे नगर में लगवा दिये।

दूसरे दिन सुबह ही सारे नगर में मुनादी भी करा दी। सायंकाल जलसा हुआ। और खूब हुआ। सभास्थल खचाखच भरा था। तिल रखने की भी जगह न थी। ऐसा प्रतीत होता था कि सारा शहर वहां उमड़ आया है।

मौलाना ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर व्याख्यान दिया और बड़े जोश से कहा—"जब तक मैं जिंदा हूं, रावलपिंडी में हिन्दू-मुस्लिम दंगा नहीं होगा। अगर होगा, तो मेरी लाश पर होगा।"

सारी सभा हिन्दू-मुस्लिम एकता की जय के नारों से गूंज उठी थी।

*

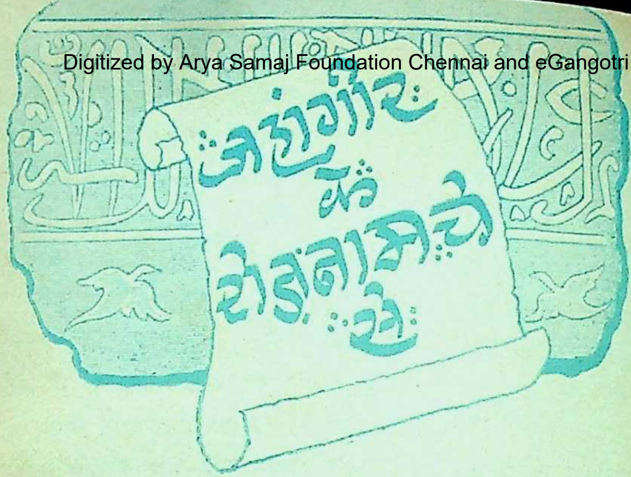

जहांगीर के रोजनामचे से

एक निसर्ग-रसि
सम्राट् का सूक्ष्म एवं
सरस प्रकृति-निरीक्षण
प्रस्तोता : सुधीन्द्र

सम्राट् जहांगीर अपने युग का अनन्य प्रकृति-विज्ञानी कहा जा सकता है। उसके आत्मचरित में अनेक जगह पशु-पक्षियों और मनुष्यों की स्वाभाविक वृत्ति और व्यवहार विषयक घटनाओं के विचित्र विवरण दिये हुए हैं।

सारसों के बच्चों का, जो राजस्थान की यात्रा में देवगांव के तालाब से पकड़े गये थे, विवरण देते हुए वह लिखता है :

"इस पड़ाव पर एक विचित्र बात देखने में आयी। हमारे इस पड़ाव पर पहुंचने से पहले एक खोजा यहां के एक तालाब पर पहुंचा और उसने सारस के दो बड़े बच्चे पकड़ लिये। रात में जब हम इस पड़ाव में आकर ठहरे, तो दो बड़े सारस तालाब के किनारे पर स्थित हमारे गुसलखाने के पास इस कदर चिल्लाते-चीखते आये, मानो उन पर कोई भारी जुल्म किया गया हो। वे बेखौफ आगे बढ़ते आये।

"हमारे खयाल में आया कि जरूर उन्हें सताया गया है और संभव है, इनके बच्चे कोई पकड़ लाया है। जांच करने पर उस खोजे का पता लगा। हमने फौरन बच्चे मंगवाये। बच्चों को देखते ही नर-मादा सारस उन पर टूट पड़े और उन्हें भूखा समझकर उन के मुंह में चुग्गा देने लगे। साथ-साथ वे रोते-चिल्लाते भी रहे। बच्चों के खा लेने के बाद, वे उन दोनों को बीच में रखकर स्नेह दिखाते हुए, डैने फैलाकर वहां से उन्हें उड़ा ले गये।"

इसी प्रकार गुजरात के अपने यात्रा-विवरण में जहांगीर ने एक अन्य विचित्र तथा मानवतामयी घटना का विवरण दिया है, जो इस प्रकार है :

"रविवार को हम पांच कोस चले और दोहद में पड़ाव डाला। यह मालवा और गुजरात की सीमा पर है। पहलवान बहा-उद्दीन बंदूकची एक लंगूर का बच्चा और बकरी लिये हाजिर हुआ और बोला कि रास्ते में हमारे एक निशानेबाज ने पेड़ पर मां

एक लंगूरनी को यह बच्चा गोद में लिये देखा। उस दुष्ट ने मां को निशाना बनाया। वह बच्चे को छोड़कर नीचे गिर पड़ी तथा मर गयी।

"इतने में बहाउद्दीन वहां पहुंच गया। बच्चे की दर्दनाक चिल्ल-पुकार सुनकर उसे दया आयी और वह पेड़ पर चढ़कर उसे उतार लाया। थोड़ी देर में उस अबोध बच्चे को भूख से बिलबिलाता जानकर उसने उसे दूध पीने के लिए कैंप की एक बकरी के पास छोड़ दिया। ईश्वर ने बकरी को ऐसी स्नेह-भावना दी कि वह लंगूर के बच्चे को चाटने तथा प्यार करने लगी। जातिगत विरोध होते हुए भी वह उससे ऐसा प्यार करती, मानो वह उसी का पेट-जाया बच्चा हो। हमारे सामने ही वह उसे दूध पिलाने लगी।

"इस अनैसर्गिक प्यार और सहानुभूति की परीक्षा करने के लिए हमने उन दोनों को अलग करने की आज्ञा दी, तो बकरी तुरंत चिल्लाने लगी और लंगूर का बच्चा भी बड़ा दुःखी मालूम पड़ा। लंगूर का स्नेह तो इतना विचित्र न था; क्योंकि उसे दूध की जरूरत थी; लेकिन बकरी का स्नेह अद्भुत लगा।"

सारसों के दांपत्य-प्रेम के स्थायित्व की अनेक घटनाएं लोगों ने लिखी हैं; परंतु जहांगीर द्वारा उल्लिखित घटना अद्वितीय है। वह लिखता है :

"कयाम खां इस दरबार का एक खानज़ादा है। उसने हमसे कहा कि एक दिन वह शिकार खेलने गया, तो एक सारस को बैठे देखा। जब वह पास पहुंचा, तो सारस उठकर चला गया। उसकी चाल से उसने अंदाज लगाया कि उसे कुछ पीड़ा है तथा वह निर्बल भी है। जब वह उस जगह पहुंचा, जहां सारस बैठा था, तो वहां उसने कुछ पर तथा हड्डियां पड़ी देखीं।

"कयाम खां ने उस स्थान के चारों ओर जाल लगवा दिया तथा स्वयं एक किनारे जा बैठा। सारस ने फिर उसी जगह जा पहुंचने का प्रयत्न किया, जिससे उसका पैर जाल में फंस गया। कयाम खां ने सारस को पकड़ लिया। वह बहुत हल्का हो गया था और अच्छी तरह देखने पर उसकी छाती तथा पेट पर एक भी पर नहीं पाया गया। चमड़ा तथा मांस अलग हो गये थे। हड्डियों का ढांचा भर रह गया था। स्पष्ट था कि उसकी संगिनी मर गयी थी और उसी के शोक में वह उसी दिन से उसी स्थान पर बैठा-बैठा घुल रहा था।

"इसी तरह हिम्मत खां ने भी हमसे

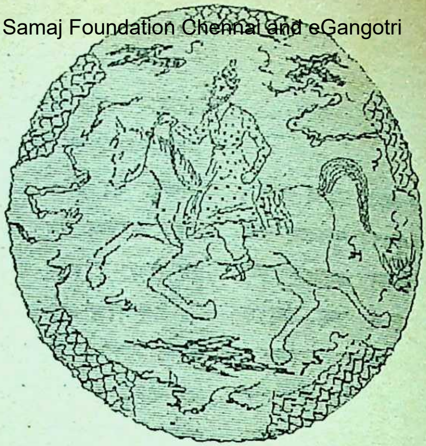

जहांगीर वन-विहार करते हुए
[एक प्राचीन चित्र की अनुकृति]

कहा कि दोहद परगने में उसने सारस के एक जोड़े को एक तालाब पर देखा था। उसके बंदूकची ने उनमें से एक को मार डाला और हलाल करके बस साफ कर दिया।

"दैवयोग से पच्चीस दिन बाद हिम्मत खां फिर उसी जगह से निकला और उसने वहां के रहनेवालों से उस सारस के बारे में पूछताछ की। लोगों ने उसे बताया कि वह उसी दिन मर गया और चिह्नस्वरूप कुछ पर और हड्डियां वहां पड़ी हैं। हिम्मत खां स्वयं वहां गया और जो कुछ कहा गया, उसे अपनी आंखों सच पाया।"

लैला-मजनूं नामक अपने पालतू सारसों के जोड़े के अगाध दांपत्य-प्रेम, वात्सल्य और जातीय सहानुभूति आदि अनेकों मानवीय वृत्तियों का इस प्रकृति-प्रेमी बादशाह ने बड़ा विशद विवरण अन्यत्र इस प्रकार दिया है :

"लैला-मजनूं ने, जो अब काफी बड़े हो गये थे, जोड़ा खाया और शायद हम ही पहले इन्सान हैं, जिसने सारस को जोड़ा खाते देखा। सोमवार २१-वीं अमूरदाद को इन सारसों ने कुछ तिनके तथा कतवार छोट बाग के कोने में इकट्ठे कि और पहले एक दिया, तीसरे दि दूसरा। सारस यह जोड़ा पकड़ा गया उस वक्त वह महीने का था और पांच साल पकड़े हो गये थे साढ़े पांच साल उम्र होने पर उन्होंने जोड़ा खाया और ऐसा वे एक महीने त करते रहे।

"मादा रात-भर अंडे सेती और पास में खड़ा रहकर रक्षा करता। वह इत सतर्क रहता कि कोई जीवित वस्तु नहीं जा सकती थी। एक बार एक नेव दिखाई पड़ा। उस पर नर सारस बड़े से टूटा और जब तक वह बिल में नहीं गया, तब तक न रुका। जब सवेरा हो और सूरज की किरणों ने दुनिया को प्रका मान कर दिया, तब नर मादा के पास और स्नेहपूर्वक चोंच से उस की पीठ लाने और थपथपाने लगा। मादा उठ हुई और नर उसकी जगह बैठ गया।

"कुछ समय बाद जब वह खा-पीकर लौटी, तब उसने भी इसी तरह नर को उठा दिया और स्वयं बैठ गयी।

"गुरुवार २१-वीं शहरयार की

को सारस ने एक अंडा फोड़ा और २५-वीं की संध्या को दूसरा—यानी पहला ३४ दिन में और दूसरा ३६ दिन में। ये बच्चे हंस के बच्चों से एक दहाई बड़े थे और मुर्गी के एक महीने के बच्चे के बराबर। इनका चमड़ा नीले रंग का था। पहले दिन इन्होंने कुछ नहीं खाया; पर दूसरे दिन से इनकी मां छोटे कीड़े-मकोड़े लाकर इन्हें कबूतरों की तरह खिलाती या कभी मुर्गियों की तरह दाने लाकर इनके आगे बिखेर देती।

"हमें इन बच्चों को देखना बड़ा अच्छा लगता था; इसलिए हमने बड़ी हिफाजत से इन्हें अपने सामने लाने को कह रखा था, ताकि इन्हें कोई हानि न पहुंचे। हम इन्हें देख लेने के बाद उसी बाग में भेज देते थे, जो शाही कनातों के पीछे है।

"नर सारस अक्सर बच्चों को उनके पैरों से अपनी चोंच में पकड़कर उलटा लटका लेता था। हमें लगा कि वह उन पर दया नहीं करता और उनके मर जाने का खतरा है। इसलिए हमने आदेश दिया कि नर को अलग रखें तथा बच्चों के पास न जाने दें।"

"फिर हमने तजरुबे के खातिर उसे बच्चों के पास जाने देने की आज्ञा दी, जिससे मालूम हो सके कि वह कठोर-हृदय होने के कारण वैसा करता था या स्नेहवश। पास पहुंचते ही उसने बच्चों पर बड़ी सहानुभूति प्रकट की और उन्हें बेहद प्यार किया, जो मादा से किसी तरह कम न था। इससे जाहिर हुआ कि वह बच्चों को प्रेम के कारण ही उलटा लटकाता था।

"मेहर की २८-वीं तारीख रविवार को हमने माही नदी के तट से कूच किया, जो सोमवार को भी जारी रहा। इस दिन एक विचित्र घटना देखने में आयी। सारस का का जोड़ा, जिसे बच्चे हुए थे, अहमदाबाद से २५-वीं गुरुवार को यहां लाया गया था। शाही कनातों के भीतर तालाब के किनारे नर-मादा अपने बच्चों के साथ टहल रहे थे कि दोनों ने एकाएक चिल्लाना शुरू कर दिया। उनकी चिल्लाहट सुनकर जंगली सारसों का एक जोड़ा तालाब के दूसरे किनारे से चिल्लाता हुआ उनके निकट उड़कर आया। नर नर के साथ तथा मादा मादा के साथ लड़ने लगे।

"जिन खोजों को सारसों की हिफाजत का काम सौंपा गया था, वे जल्दी से वहां आये और एक ने जंगली नर को व दूसरे ने मादा को पकड़ लिया। जिसने नर को पकड़ा था, वह तो बहुत लड़ने-भिड़ने के बावजूद उसे पकड़े रह सका; पर मादा निकल भागी। हमने अपने हाथ से नर की चोंच तथा पैरों में छल्ले पहना दिये और उसे उड़ा दिया। दोनों अपने स्थान को चले गये। जब पालतू लैला-मजनूं बोलते, तब वे दोनों भी तालाब के दूसरे किनारे से जवाब देते थे।"

लगाम निरालाजी के हाथ में

लखनऊ में निरालाजी श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी के यहां आते-जाते समय कभी-कभी मेरे घर पर भी पधारते । मैं उन्हें चाय बनाकर पिलाता । एक दिन बोले–"क्यों जी ! हम तुम्हारे यहां कितनी बार आये, तुम हमारे यहां क्यों नहीं आते ?" मैंने उत्तर दिया–" जी ! आप पढ़ने-लिखने में व्यस्त रहते होंगे; मैंने आपका अमूल्य समय नष्ट करना उचित नहीं समझा ।"

"वाह ! यह भी कोई बात है ! कल ही दोपहर को आओ और मेरे यहां भोजन भी करो ।" निरालाजी ने आदेश दिया।

दूसरे दिन मैं महाकवि के घर पहुंचा । निरालाजी केवल तहमद बांधे, नंगी मचिया पर लेटे हुए थे। मेरे पहुंचते ही तुरंत उठे, मचिया पर चटपट दरी बिछा दी और बैठने का आदेश देकर रसोईघर में चले गये ।

थोड़ी देर बाद मेरा हाथ-मुंह धुलवाया, फर्श पर पानी छिड़का, पीढ़ा लाकर रखा और मुझे बैठने का संकेत किया । फिर प्रेम से थाल में भोजन सजाया और मुझे आज्ञा दी–"शुरू करो।" मैंने कहा–"और आप !"

"हम बाद में खा लेंगे, मेहमान पहले ।" यह कहकर वे अंदर से बेना उठा लाये और झलने लगे । मेरे संकोच की सीमा न रही।

जब मैं भरपेट खाना खा चुका, तब हाथ-मुंह धुलवाकर पान-इलायची पेश की । फिर स्वयं भोजन किया। इसके बाद घूमने के लिए इक्का किया और इक्केवाले से कहा–"चलो मंकी ब्रिज ।"

एक दूसरा इक्केवाला सरपट इक्का भगाये जा रहा था । निरालाजी भड़क उठे और अपने इक्केवाले से बोले–"मियां ! तुम अंदर आ जाओ, मुझे दो घोड़े की लगाम।" मियांजी ने विशालकाय, छः फुटे, बड़ी-बड़ी जुल्फोंवाले निरालाजी का रोबदार चेहरा देखा और चुपके से लगाम थमा दी। अब निरालाजी घोड़े को सड़ासड़ चाबुक लगाते हुए लगे इक्का हांकने । आखिर दूसरे इक्के के आगे अपने इक्के को निकालकर ही दम लिया और उसे ललकारा–"है हिम्मत मुकाबला करने की! हम हार जायें, तो यह इक्का तुम्हारा !" हमारे इक्के का मालिक घबराकर बोल उठा –"नहीं हुजूर! आप इक्का हार जायेंगे, तो इस गरीब का..."

"घबराओ मत मियां ! हम तुम्हें नया इक्का ले देंगे और असली अरबी घोड़ा भी।" निरालाजी ने लापरवाही से उत्तर दिया। मैं सोचने लगा, निरालाजी के पास इतने पैसे कहां ? कभी ज्यादा पैसे आ भी गये, तो दयादान में सब स्वाहा ! पर गनीमत हुई कि दूसरे इक्केवाले पर निरालाजी का रोब इस कदर गालिब हुआ कि उसने हार मान ली और चलता बना ।– नीलकंठ तिवारी

★

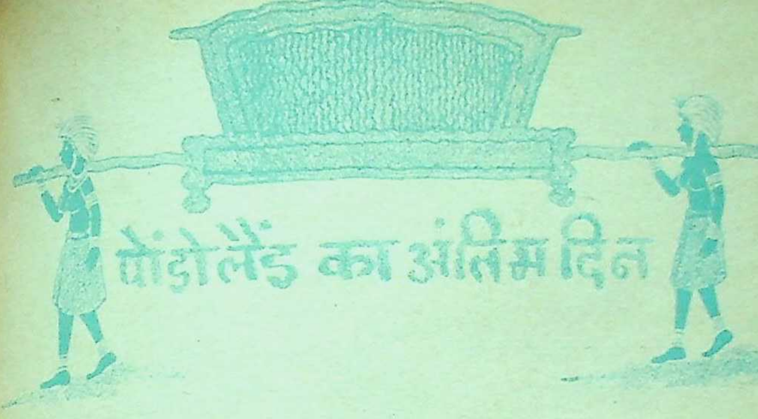

पोंडोलैंड का अंतिम दिन

पश्चिमी सभ्यता की विकृति के केंद्र दक्षिण अफ्रीका के बीचों-बीच पोंडोलैंड के लोगों ने अपनी अनोखी संस्कृति को अभी तक अक्षुण्ण बनाये रखा है।

बिनी मालकम

पोर्ट सेंट जोन्स के एक रेस्तरां में मैं जलपान कर रही थी। यह नगर केप प्रांत के पोंडोलैंड में है। मैं केपटाउन यूनिवर्सिटी में पढ़ रही थी और बंतू जाति के कानूनों का अध्ययन कर रही थी।

रेस्तरां के मालिक ने मुझे उस प्रदेश के सबसे रोचक व्यक्ति तथा अद्भुत उद्यान के बारे में बताया। उसने कहा—"आप जोनाथन से अवश्य मिलिये। वह दूर, निर्जन जंगल में नटाइल नामक स्थान पर रहता है। बड़ा अच्छा आदमी है वह और अभी बीस-बाईस वर्ष का ही है।"

मैं जोनाथन के निवास-स्थान पर पहुंची। उसका मकान लताओं से आच्छादित लकड़ी की ऊंची चहारदीवारी से घिरा था। द्वार बंद था, मैंने घंटी बजायी। स्वच्छ वस्त्र पहने एक गोल काले चेहरेवाली दासी ने मुस्कराकर अंदर आने का निमंत्रण दिया।

मकान के फर्नीचर से प्राचीन वैभव लक्षित होता था और उसके चुनाव की सावधानी प्रकट होती थी। मकान चांदी के सुंदर पात्रों, रेशमी परदों, चीनी मिट्टी के बरतनों और पर्शियन कालीनों से सजा था। जोनाथन 'सेविल रो' में सिला शानदार सूट पहने जब मेरे सम्मुख आया, तो पहली झलक से ही मुझे ज्ञात हो गया कि वह विलक्षण व्यक्ति है।

इक्कीस वर्ष की अवस्था में उसे अपार संपत्ति प्राप्त हुई, जिसे उसने 'वेस्ट एंड' की रंगरलियों में पानी की तरह बहाया।

तत्पश्चात् वह नटाइल आया।

पोंडोलैंड के समाज में उसका विशिष्ट स्थान था। वह चीनी से लेकर कफन तक, भोजन के पात्रों से लेकर घोड़े की जीन तक प्रत्येक वस्तु का व्यापार करता था। उसका गोदाम स्थानीय जनता का सभास्थल और बाजार दोनों था।

जोनाथन वुड ने मेरा स्वागत किया। उसने बताया कि उसका एक मित्र चाय पर आनेवाला है। यह मित्र उसका पड़ोसी था और पोंडो जाति का स्थानीय तांत्रिक प्रमुख माना जाता था। वह खाकी पैंट और चमकदार 'ब्लेजर' पहने था, जिस पर एक बड़े हीरे का ब्रोच था। उंगलियों में हीरे की अंगूठियां दमक रही थीं और सिर पर जैकी कैप था। उसका नाम खोत्सो था। उसे चाय से घृणा थी; अतः उसने चाय के प्याले में ही ह्विस्की ढाल ली। खोत्सो एक बार में दो बोतल स्काच पी लेता था और फिर भी बाहोश रहता था।

मैं नटाइल में छः मास तक रही। खोत्सो मेरा घनिष्ट मित्र बन गया। वह करोड़पति था और पांच मकान व नौ मोटरों का मालिक। उसका जीवन घुड़दौड़ के जाकी के रूप में आरंभ हुआ। तांत्रिक तो वह संयोगवश बन गया था। घोड़ों के मालिक ने उसे निकाल दिया। खोत्सो ने बिजली गिराकर उसके अस्तबल को जला डाला। इस घटना का वहां के लोगों पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने खोत्सो को बिना किसी शर्त के अपना तांत्रिक चुन लिया।

जादू-टोना करते समय खोत्सो पंखों का ताज पहनता, रोएंदार खाल ओढ़ता और हाथ-मुंह पर रंग पोत लेता, जैसा कि लड़ाई पर जाते समय पोंडोलैंड के योद्धा करते हैं। उसकी हरकतें बड़ी प्रभावोत्पादक हुआ करती थीं। बीस व्यक्ति नगाड़े पीटते और कुछ दूरी पर अल्शेसियन कुत्ते भौंकते रहते थे।

खोत्सो ने कभी हमें अपना जादू नहीं देखने दिया। उसका विचार था कि यह हमारे लिए अनुचित होगा।

खोत्सो अच्छा व्यापारी था। उसका जादुई पेय जड़ी-बूटियों, बंदरों के मल और घड़ियाल के चमड़े से बनता था। इसे वह बोतलों में भरकर उन पर सुंदर लेबल लगाकर सारे दक्षिण अफ्रीका में बेचता था। किंतु खोत्सो का मन सदैव रेसकोर्स में ही अटका रहता। रेस के बारे में बातें करता हुआ वह कभी न अघाता था। हमें भी उसने कुछ 'टिप' दिये थे।

पोंडो जाति के लोग आज भी वैसे ही रहते हैं, जैसे आज से सौ वर्ष पहले रहते थे। पोंडोलैंड 'ट्रांस की' प्रदेश का एक भाग है। इसे 'रेड ब्लैंकेट' का प्रदेश भी कहते हैं, क्योंकि यहां के निवासी मिट्टी में रंगा हुआ कंबल लबादे की तरह ओढ़ते हैं। इसके नीचे पुरुष पैंट पहनते हैं और स्त्रियां घाघरा।

स्त्रियों की वेशभूषा सामाजिक स्तर के अनुसार होती है। देखते ही ज्ञात हो जाता है कि कोई स्त्री विवाहित है या कुमारी, संतानवती है या निःसंतान। कुमारियां छोटा

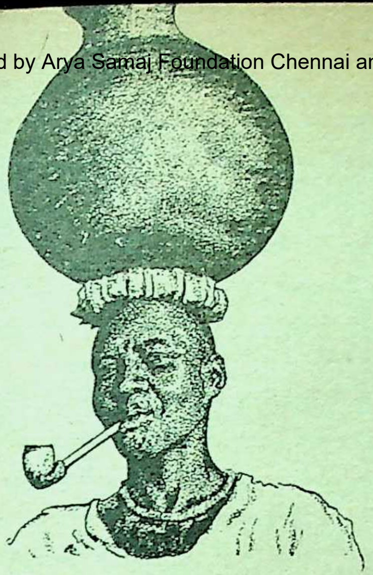

एक पोंडो-निवासी

घाघरा पहनती हैं और वक्ष को भी ढंकती हैं। केवल संतानवती स्त्रियां अपने घाघरे पर मनके टांक सकती हैं।

पोंडो-निवासी प्रायः अशिक्षित हैं। लेकिन वे दूर-दूर तक पत्र-व्यवहार करते हैं। उनके पत्र रंगीन मनकों की मालाओं में पिरोये जाते हैं। प्रत्येक रंग एक विशेष अर्थ को सूचित करता है। श्वेत मनका प्रेम का प्रतीक है और काला संकट का। हरे मनके का तात्पर्य धन से है। सफेद, काले और थोड़े से हरे मनकों से तैयार की गयी माला का मतलब है; कोई स्त्री किसी पुरुष से प्रेम करती है; किंतु पुरुष के पास धन नहीं है।

मैंने एक दिन सुबह नाश्ते के समय ऐसी ही एक माला पड़ी देखी। यह गांव के एक सुंदर युवक ने भेजी थी, जिसे मैं अंग्रेजी पढ़ाया करती थी। मैंने इस सुंदर उपहार के लिए उसे बहुत धन्यवाद दिया। लेकिन वह बड़ा उदास व नाराज दिखाई पड़ा। कई दिन बाद मुझे मालूम हुआ कि उसने तो मेरे पास विवाह का प्रस्ताव भेजा था।

पोंडोलैंड में पुत्री के विवाह में पिता को काफी धन प्राप्त होता है। विवाह के इच्छुक को पंद्रह पशु अपने भावी श्वसुर को देने पड़ते हैं। यदि लड़की किसी मुखिया की पुत्री हो, तब तो कम-से-कम सौ पशु देने पड़ते हैं। इस प्रथा को ये लोग 'लोबोला' कहते हैं।

पोंडो स्त्रियां बहुत मुस्तैदी से काम-धाम करती हैं। लड़की के पतिगृह चले जाने से पिता के कामकाज में जो हर्ज होता है, उसकी क्षतिपूर्ति लोबोला द्वारा की जाती है। पोंडो

जब कोई स्त्री अपने पति को नहीं पसंद करती और उसे छोड़कर मायके भाग आती है, तो उसका पिता बेटी और दामाद में समझौता कराने का भरसक प्रयत्न करता है; क्योंकि बेटी अगर उसके पास रह गयी, तो उसे विवाह के समय मिला दहेज लौटा देना होगा। विवाह-विच्छेद अनिवार्य हो जाये, तो पिता पुत्री की प्रत्येक संतान के हिसाब से एक या दो पशु रखकर शेष लौटा देता है।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि किसी युवक और युवती में प्रेम हो जाता है; परंतु युवक के पास दहेज में देने के लिए पर्याप्त पशु नहीं होते। इस स्थिति में पिता किस्त पर पुत्री का विवाह कर देता है। यदि युवक समय पर किस्त न चुका सका, तो पिता बेटी को वापस ले आता है। इन सब

बातों में वधु की सम्मति नहीं ली जाती। पोंडो में स्त्री का काम है गृहस्थी संभालना।

पत्नी का दूसरा कर्तव्य है--अधिकाधिक संतानोत्पादन। संतान में कन्याओं की बहुलता होनी चाहिये; क्योंकि वे धन-प्राप्ति का साधन होती हैं। पुत्रों का जन्म सामाजिक सम्मान का हेतु माना जाता है। घर में पति पशुओं की निगरानी करता है और पत्नी कृषि-कार्य संभालती है। स्त्री के बेवफा होने पर दोष उसका नहीं माना जाता। बल्कि ऐसा माना जाता है कि जिस पुरुष से उसका संबंध हुआ, उसने कोई जादू-टोना कर दिया है।

शीघ्र मैं वहां इतनी लोकप्रिय हो गयी कि वहां के लोगों को मेरे कुंवारी रहने से चिंता होने लगी। खासकर इसलिए कि मेरी अवस्था तेईस वर्ष की हो चुकी थी।

एक दिन खोत्सो जोनाथन को बुलाकर एक बड़े झोंपड़े में ले गया, जहां पुरुषों की सभा हो रही थी। वहां गांव के मुखियों ने जोनाथन से कहा कि वह मुझसे विवाह कर ले। जोनाथन ने कहा कि हम दोनों का विवाह करने का कोई इरादा नहीं है। इसका यह अर्थ लगाया गया कि शायद जोनाथन के पास पर्याप्त धन नहीं है और वे उसे दहेज के लिए आवश्यक पशु बतौर कर्ज देने को तैयार हो गये।

यह सब हंसकर टाल दिया जा सकता था। लेकिन पोंडोलैंड में स्त्रियों के 'सुन्नीकरण' चिकित्सा की खतरनाक परंपरा है। पोंडो स्त्रियां इस चिकित्सा के उपरांत जीवित तो रह जाती हैं; किंतु उनका वैवाहिक जीवन पूर्णतया नष्ट हो जाता है। इस चिकित्सा का उद्देश्य है स्त्रियों की बेवफाई को रोकना। और पोंडो लोगों ने जोनाथन की मदद करने के लिए मेरी भी ऐसी ही चिकित्सा करने का निश्चय किया।

जोनाथन बहुत घबराया। उसने सुन रखा था कि केन्या में एक मिशनरी की पत्नी के पोंडो शुभचिंतकों ने उसके पति की अनुपस्थिति में ऐसी ही चिकित्सा की थी, जिससे उस बेचारी की मृत्यु हो गयी। लेकिन वे कुछ कर सके, इसके पहले ही मुखिया उसके घर की ओर चल पड़े।

रात के समय मैंने कुछ पोंडो-निवासियों को मशाल लेकर जोनाथन के घर की ओर जाते देखा, तो कारण जानने के लिए बाहर निकलने लगी। तभी जोनाथन पिछले दरवाजे से भीतर आया और उसने मुझे तुरंत छिप जाने के लिए कहा। उसने अपने शुभचिंतकों को यह कहकर किसी तरह टाल दिया कि मैं घर पर नहीं हूं; फिर मुझे सारा मामला समझाया।

उसी रात मैंने पोंडोलैंड छोड़ दिया।

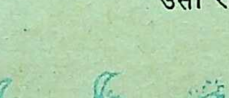

वन की विशाल नाटयशाला में नित्य
रात को खूनी नाटक खेले जाते हैं।

मशालों की छांह में

श्रीनिधि सिद्धांतालंकार

हम जब भीमगदा पहुंचे, सांझ के सात बज चुके थे। इस जंगल का यह भीमगदा नाम हमने ही रखा था। छात्र-जीवन में हम जब यहां आया करते थे, यहां के चट्टानों-भरे नाले में भीम की गदा सरीखे पचासों पत्थर पाये जाते थे। वे यहां के दूसरे पत्थरों से सर्वथा भिन्न होते थे और ऐसा लगता था, जैसे वे पाषाण-युग के शस्त्र रहे हों। बाद में पता चला, यहां की जलधाराओं ने ही उन्हें इस तरह का बनाया है।

भीमगदा स्थान सुंदर भी है, भयंकर भी। मुझे तो इतना अच्छा लगता है कि जब भी हरिद्वार आता हूं, पांच-सात दिन यहां अवश्य बिता जाता हूं।

हरिद्वार से तीसरे पहर चलकर जब तक हम 'हाथी जोहड' और 'चित्तल घाटी' में चलते रहे, भय की कोई बात नहीं लगी। क्योंकि एक तो तीसरे पहर का समय था; दूसरे, सड़क के दोनों तरफ का जंगल बहुत घना नहीं था। किंतु भीमगदा पहुंचकर जब सांझ का झुटपुटा अंधेरा घाटियों में उतरने लगा, हमें सावधान हो जाना पड़ा। और यहां की सबसे बड़ी सावधानी थी—किसी भारी वृक्ष पर मचान बांधकर अपने बैठने का प्रबंध करना।

मगर इस सांझ में मचान बांधना किसी भी तरह संभव न था। इसलिए साधु महाराज की उस झोंपड़ी में ही ठहरने का निश्चय किया, जो सूनी दिखाई पड़ रही थी। किंतु पास पहुंचने पर पता चला कि बहुत दिनों से खाली पड़ी रहने के कारण उसमें स्थान-स्थान पर कूड़ा-करकट और घास जमा हो गये हैं, जिनके नीचे सांप-बिच्छुओं का पूरा भय है; और असंभव नहीं कि हिरन व नीलगायों को धोखा देने के लिए किसी बाघ ने उसे रात में छिपने का बसेरा भी बना रखा हो।

इसलिए यही ठीक समझा गया कि

झोंपड़ी के सामने वह जो अच्छा साफ-स्वच्छ मैदान है, वहीं रात बिताने की व्यवस्था की जाये। मैदान को बुद्धिमान साधु महाराज ने वल्लियों के घेरे और कांटेदार झाड़ों से चारों ओर से घेरकर खूब निरापद बना दिया था। हम वहीं ठहर गये।

किंतु जेठ के दिन थे न, स्नान आवश्यक था। परंतु धारा पर पहुंचकर पता चला, उसका जल न स्नान के योग्य है, न पीने के। इसलिए उसके पास एक खूब चौड़ा कुंड खोदना पड़ा। कुंड में पहले तो मटमैला पानी निकला; लेकिन उसे उलीचकर फेंक देने के बाद जब दूसरी बार फिर पानी निकला, वह एकदम स्वच्छ और निर्मल था।

ये सब काम करते-करते तो आठ बज गये और रात को अपना प्रतिनिधि बनाकर संध्या न जाने कब चुपचाप विदा हो गयी। हम भी जल्दी स्नान से निबट, कुंड के पास आ बैठे और उसके दोनों ओर दो-दो प्रज्वलित मशालें रेत में गाड़कर उनके प्रकाश में भोजन करने लगे। इससे भोजन करना तो आसान हो गया; मगर इन प्रकाश फेंकती मशालों के कारण जहां कुंड के आस-पास का अंधेरा मिट गया था, वहां उसके चारों ओर वह इतना घना और काला हो उठा था कि हमारे आस-पास कहां क्या हो रहा है, कुछ भी दिखाई न पड़ रहा था।

यह ठीक है कि प्रकाश से सभी वन्य पशु डरते हैं, पास नहीं फटकते। किंतु इक्कड़ हाथी और इक्कड़ रीछ आदि कुछ पशु ऐसे भी हैं, जो इस तरह के प्रकाश से नहीं डरते और अचानक ही सिर पर आ पहुंचते हैं। इसलिए हमें अपनी टार्चों से भी काम लेना पड़ रहा था।

किंतु हम जहां बैठे थे, नाले की चौड़ाई वहां चालीस हाथ से अधिक नहीं थी और उसके दोनों ओर दूर तक, लगभग दो-दो फुट ऊंचे किनारे खड़े थे, जिन पर लगभग दस-दस फुट ऊंची कांस की सघन झाड़ियां पंक्ति बांधकर खड़ी थीं। ऐसा लगता था, जैसे वे झाड़ियां न होकर इस विशाल जंगल-रूपी नाटचशाला की यवनिकाएं थीं, जिन्हें रात में नित्य खेले जानेवाले खूनी नाटक की क्रूरताओं को छिपाने के लिए इन किनारों पर स्थिर रूप से लटका दिया गया था।

वे सचमुच ही अभेद्य थीं। हमारे चार-चार टार्च उन पर एक साथ मिलकर अपना तेज प्रकाश फेंक रहे थे; मगर झाड़ियों की चमकीली पत्तियों पर प्रतिक्षिप्त होकर पीछे लौट आने के अतिरिक्त उनसे कुछ करते न बन रहा था।

और इसी बीच रात का नाटक आरंभ हो गया। उसका नांदी-पाठ किसने किया, यह तो नहीं पता चला; किंतु जब अचानक ही "बौंक......बौंक......" की दो-तीन ऊंची पुकारें कानों में आकर लगीं, समझ लिया, जंगल का कोई शंबर मृग नाटक का सूत्रधार बनकर रंगमंच पर आ पहुंचा है और झाड़ियों के नेपथ्य में से अचानक ही निकलते हुए प्रधान नायक को देखकर इस प्रकार तूर्यध्वनि कर उठा है। इन ध्वनियों को सुनकर जंगल की नाटचशाला के सभी

दर्शक सावधान हो जाते हैं और चुपचाप सुरक्षित सीटों पर छिपकर बैठ जाते हैं।

लेकिन शंबर की ये पुकारें जंगल के सब प्राणी शायद नहीं सुन सके। तभी तो जंगल का वह मोर शंबर के मौन होते ही "मी आओ! मी आ ओ!" करता हुआ वन-वासियों को सावधान करने लगा। और कोई समय होता, तो मोर की ये पुकारें न जाने कैसी लगतीं! लेकिन इस समय तो वे किसी आती हुई विपत्ति का घंटानाद जान पड़ रही थीं।

किंतु लगता है, शेर कहीं दूर निकल गया था। शायद यही कारण था कि कुछ देर तक बोलने के बाद मोर ने भी बोलना बंद कर दिया था और जंगल में फिर वही पहले-सा सन्नाटा छा गया था। हां, कभी-कभी किसी बड़े उल्लू का "ऊ......ऊ......ऊ......" शब्द सुन पड़ जाता था, जिससे सन्नाटा और गहरा हो जाता था।

मगर नहीं। जरा ध्यान से सुनने से एक और धीमी-सी सरसराहट भी हमारे पास ही कहीं सुन पड़ रही है। वह ऐसी लगती है, जैसे कोई बहुत ही दबे पांव कभी सूखे पत्तों पर, कभी रेतीली धरती पर चल रहा हो। आहट किसी भारी पशु की नहीं जान पड़ती।

बात साधारण ही थी; किंतु मेरा मन न जाने क्यों, संदेह से भर उठा। सो टार्च का प्रकाश उधर की झाड़ियों पर फेंककर ध्यान से उधर ही देखने लगा। आहट अब क्रमशः स्पष्ट होती जा रही थी। लगता था, जैसे कोई बहुत ही दबे पांव हमारी तरफ चला आ रहा है। तभी झाड़ियों में धीमी-सी हलचल हुई और उनकी सेंध में से किसी की दो चमकीली आंखें हमारी तरफ झांकने लगीं।

वह कौन है, कुछ ठीक से पता नहीं चला। तो भी, जहां तक मैं समझ सका, वह लकड़बग्घा ही होगा; क्योंकि जैसे ही मैंने दो-तीन बार हिश......हिश... किया कि आंखें एक साथ ओझल हो गयीं। और वह जो भी था, तत्काल ही पीछे लौट गया। पहले तो वह शायद धीरे-धीरे लौटा। बाद में कुछ जल्दी भी चला। अंत में तो इस तरह भागा, जैसे मौत ही उसका पीछा कर रही हो। उसके इस व्यवहार पर देर तक हंसी आती रही।

तो भी एक बात अच्छी तरह समझ में आ गयी। इस नाले में अब अधिक देर ठहरना ठीक नहीं था। इसलिए भोजन समाप्त कर तुरंत उठ खड़े हुए और साधु की झोंपड़ी की तरफ लौट पड़े।

झोंपड़ी दो सौ हाथ से अधिक दूर नहीं थी। किंतु उसके बीच जो जंगल पड़ता था, उस पर विश्वास नहीं हो रहा था; क्योंकि वह जो जानवर अभी हाल में हमारे पास आया था, उधर ही भागा था। नाले में ऊपर की तरफ चलते हुए भी झोंपड़ी में पहुंचा जा सकता था। इससे रास्ता लंबा हो जाता था और रेत-पत्थरों के कारण चलने में असुविधा भी हो सकती थी; लेकिन भय की संभावना नहीं थी। थी भी तो बहुत

कम । इसीलिए जलती मशालों को और भी तेल पिलाकर हम नाले में चल पड़े ।

मगर फलांग-भर चलने के बाद न जाने कहां से एक विचित्र-सा शब्द कानों में पड़ने लगा......हुम्म ! हुम्म ! ...... हः ! हः ! ...... हम एकदम ठहर गये । शब्द दो प्रकार के थे और दो प्राणियों के मुख से निकलते जान पड़ रहे थे । पहला शब्द किसी बड़े पशु का लग रहा था, दूसरा किसी छोटे पशु का। कौतूहल बढ़ गया । पैर बढ़ाकर चलने लगे और मिनिट-भर बाद बात स्पष्ट हो गयी ।

साफ पता चलने लगा कि दो जानवर एक ही मैदान में चक्कर काटते हुए भाग रहे हैं और भागने की थकान के कारण ही उनके मुख से ये शब्द निकल रहे हैं। एक शायद शेर या तेंदुआ है, दूसरा हिरन । दोनों ही प्राण-पण लगाकर भाग रहे हैं—एक पकड़ने के लिए, दूसरा बचने के लिए । सामने ही जहां नाला उत्तर की ओर मुड़ गया है, वहीं-कहीं उनकी दौड़-प्रतियोगिता हो रही है । हमने चाल और भी तेज कर दी और मोड़ के पास पहुंच, ओट में छिपकर देखने लगे ।

दूर तक रेत-ही-रेत बिछी है । उसकी सफेद चमक के कारण केवल नाला ही स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ रहा, उसके दायीं ओर का छोटा-सा जलाशय भी पहचान में आ गया है। हां, भागते हुए वे दोनों पशु अवश्य अच्छी तरह नहीं पहचाने जा रहे । केवल उनके शब्दों के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि जो आगे है, वह हिरन होगा और जो पीछे है, वह शेर या तेंदुआ । किंतु उनके पैरों से उचटते कंकर-पत्थरों के कारण साफ पता चल रहा है कि दोनों की दौड़ पराकाष्ठा तक जा पहुंची है ।

इस समय यदि हम चाहते, मशालों की सहायता से उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे किंतु मशालें देखकर वे अवश्य ही भाग जाते और एक भयंकर दृश्य को देखने का बढ़िया मौका हाथ से व्यर्थ ही निकल जाता । इसी लिए हमने उन्हें मोड़ के किनारे की एक गुफा में छिपा दिया था ।

वह हिरन अच्छा भाग्यशाली प्रतीत हो रहा था, जो इतनी देर तक एक शेर को असफल करने में सफल हो रहा था। सहज ही हमें उससे सहानुभूति हो गयी। लगता था, हिरन के न पकड़े जाने पर शेर का कुछ न बिगड़ेगा; मगर पकड़े जाने पर वह बेचारा तो अपने जीवन से हाथ धो बैठेगा।

लेकिन दोनों की प्रतियोगिता के समाप्त होने का समय प्रतिक्षण निकट आता जा रहा था । हिरन के जीवन का कभी भी अंत हो सकता था । जो कुछ करना था, इन्हीं दो-चार क्षणों में कर लेना था । अतएव साथियों को सावधान कर, मैंने एक मशाल गुफा में से निकाल ली और उसे हाथ में पकड़ हिरन की तरफ दौड़ पड़ा । मेरी देखा-देखी

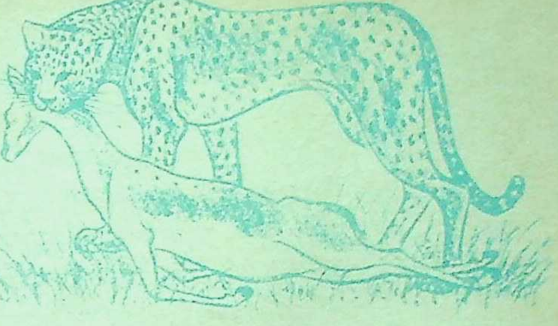

......यह अधिकार मेरा है और मैं उसे पूर्ण कर चुका हूं।

साथी भी ओट में से निकल आये और मशालें ऊंची उठाये मेरे साथ दौड़ पड़े। मशालों का ऊंचा उठना था कि दूर तक मैदान प्रकाशित हो उठा और चमकती धारियों और काली चित्तियों ने स्पष्ट बता दिया कि उनमें से एक सचमुच ही शेर है, दूसरा चीतल।

मगर इतनी शीघ्रता करने पर भी हिरन को न बचाया जा सका। चीतल की जो अजेय दौड़ शेर को अब तक निरंतर पराजित कर रही थी, वह एक ही साथ शांत हो उठी थी। नाले की रेत पर पड़ा हुआ उसका रक्त-रंजित शव साफ घोषणा कर रहा था कि उस हतभाग्य प्राणी की जीवन-लीला समाप्त हो चुकी है।

लगता है, मशालों से चौंककर हिरन ने जैसे ही अपनी दौड़ ढीली की होगी, चतुर शेर ने उसे दबोच लिया होगा। या संभव है, उससे पहले ही उसने उसे पकड़ लिया हो। हुआ जो भी हो, उसके सुंदर शरीर को धराशायी देखकर हमारा मन वेदना से भर उठा।

बहुत ही करुणापूर्ण दृश्य सामने खुला पड़ा था। अपने प्रियजनों से सदा के लिए बिछुड़कर चीतल शायद उन्हें अंतिम नमस्कार करने के लिए अपना मुंह खोले रेत की मृत्युशैया पर अचल पड़ा था। और उसकी छाती पर दोनों पैर जमाये शेर इस तरह खड़ा था, जैसे वह यमलोक का कोई क्रूर वधिक हो। शेर एकटक हमारी तरफ देख रहा था। मानो कह रहा था—"प्रकृति ने मर्त्यलोक के तुम तुच्छ मानवों के हाथ में वन्य पशुओं के जीवन-निर्णय का अधिकार नहीं दिया है। यह मेरा अधिकार है और मैं उसे पूर्ण कर चुका हूं। जाओ, अब पीछे लौट जाओ।"

मगर हम पीछे कैसे लौट जाते? झोंपड़ी पर पहुंचने के लिए तो हमें इसी नाले में से जाना था। तिस पर, शेर अब आगे क्या करता है, यह देखने की भी इच्छा थी। इसलिए मशालों की छांह में वहीं खड़े रहे। मगर शेर ने हमारी इच्छा पूर्ण नहीं की। हमें वैसे ही अटल खड़ा देख, वह पहले मुंह-ही-मुंह में दो-तीन बार गुर्राया, फिर चीतल की लाश को मुंह से उठाकर धीरे-धीरे जंगल में लुप्त हो गया।

*

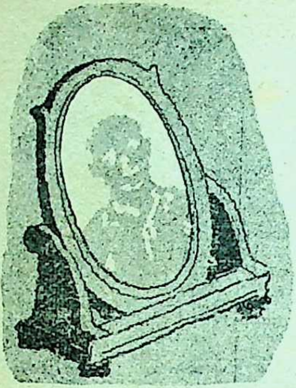

मंटो की परछाईं

• सआदत हसन मंटो •

मंटो के बारे में अब तक बहुत-कुछ लिखा और कहा जा चुका है—उसके हक में कम, उसके खिलाफ ज्यादा। उन सभी लेखों को अगर सामने रखा जाये, तो कोई अक्लमंद आदमी मंटो के बारे में अपनी सही राय नहीं बना सकता।

अब तक इस आदमी के बारे में जो कुछ लिखा गया है, सचाई से बहुत दूर है। कुछ उसे शैतान कहते हैं, कुछ गंजा फरिश्ता। जरा ठहरिये, मैं देख लूं, वह कमबख्त यहीं कहीं बैठा सुन तो नहीं रहा है। नहीं, ठीक है। मुझे याद आ गया। यह उसके पीने का वक्त है। उसे शाम के छ: बजे के बाद कड़वा शरबत पीने की आदत है।

हम इकट्ठे ही पैदा हुए और खयाल है कि इकट्ठे ही मरेंगे। पर यह भी हो सकता है कि सआदत हसन मर जाये और मंटो न मरे। हमेशा यही डर मुझे बहुत दुख देता है; क्योंकि उसके साथ मैंने अपनी दोस्ती निभाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी। अगर वह जिंदा रहा और मैं मर गया, तो ऐसे लगेगा, जैसे अंडे का खोल तो सलामत है, पर उसके अंदर की जर्दी और सफेदी गायब हो गयी है।

वैसे तो मैं उसे उसकी पैदाइश के वक्त से ही जानता हूं। हम दोनों इकट्ठे, एक ही वक्त, ११ मई सन १९१२ को पैदा हुए थे। पर उसने हमेशा यही कोशिश की कि वह अपने आपको कछुआ बताये, जो अपना सिर और गर्दन छिपा ले, तो आप चाहे कितना खोजें, उनका आपको पता न लगे।

लीजिये, अब मैं आपको बताता हूं कि यह आदमी कहानीकार कैसे बना। मंटो की कहानी-कला दो विरोधी तत्वों के आपसी संघर्ष का नतीजा है। उसके पिता—खुदा उन पर रहम करे—बहुत सख्त किस्म के आदमी थे और उसकी मां बहुत नरमदिल औरत थी। इन दो पाटों में पिसकर गेहूं का यह दाना जिस रूप में बाहर निकला, उसका अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं।

अब मैं मंटो की स्कूली जिंदगी की तरफ आता हूं। बहुत होशियार लड़का था और बहुत ही शरारती। उस जमाने में उसका

कद ज्यादा-से-ज्यादा साढ़े तीन फुट रहा होगा। वह अपने पिता का आखिरी बच्चा था। उसे अपने माता-पिता का प्यार तो मिला, पर उसके तीन बड़े भाई, जो उम्र में उससे बहुत बड़े थे और इंग्लैंड में पढ़ रहे थे, उनके साथ मिलने का उसे कभी मौका नहीं लगा। इसलिए भी कि वे सौतेले थे। वह चाहता था कि उन्हें मिले और उनसे उसे बड़े भाइयों का-सा सलूक मिले। यह सलूक उसे उस वक्त नसीब हुआ, जब दुनिया उसे बहुत बड़ा कहानीकार मान चुकी थी।

अच्छा, अब उसकी कहानी-कला के बारे में सुनिये। वह एक नंबर का 'फ्राड' है। पहली कहानी उसने 'तमाशा' नाम से लिखी, जो जलियांवाला बाग की खूनी घटना से संबंधित थी। यह कहानी उसने अपने नाम से नहीं छपवायी। यही कारण है कि वह पुलिस के हाथ आने से बचा रहा।

उसके बाद उसके दिमाग में एक लहर पैदा हुई कि और पढ़ाई करे। यह बताना दिलचस्पी से खाली नहीं होगा कि उसने इंटर का इम्तहान दो बार फेल होने के बाद पास किया था। वह भी तीसरी श्रेणी में। और आपको यह सुनकर भी हैरानी होगी कि वह उर्दू के पर्चे में फेल था।

अब लोग कहते हैं कि वह उर्दू का बहुत बड़ा साहित्यकार है। यह सुनकर मैं हंस पड़ता हूं—इसलिए कि उर्दू अब भी उसे नहीं आती। वह शब्दों के पीछे ऐसे भागता है, जैसे कोई जालवाला शिकारी तितलियों के पीछे भागे और तितलियां उसके हाथ न आयें। यही वजह है कि उसकी कहानियों में सुंदर शब्दों की कमी है। वह लट्ठमार है। पर जितने लट्ठ उसकी अपनी गर्दन पर पड़े हैं, उसने खुशी से सहे हैं।

मैं पहले कह चुका हूं कि मंटो एक नंबर का 'फ्राड' है। इसका एक और सबूत यह है कि वह आम तौर पर कहता है कि वह कहानी सोचता नहीं है, कहानी खुद उसे सोचती है। मुझे पता है कि जब उसे कहानी लिखनी होती है, तो उसकी हालत वैसी ही होती है, जैसी अंडा देते वक्त मुर्गी की। पर वह यह अंडा कहीं छिपकर नहीं देता, सब के सामने देता है। उसके यार-दोस्त बैठे हुए हैं, उसकी तीनों बेटियां शोर मचा रही हैं और वह अपनी खास कुर्सी पर बैठा हुआ अंडे दे रहा है, जिनमें से बाद में चूं-चूं करती हुई कहानियां निकल आती हैं।

मैं यह लेख लिख रहा हूं और मुझे डर है कि मंटो मुझसे नाराज हो जायेगा। उसकी हर चीज सराही जा सकती है, पर नाराजगी नहीं। तब वह बिलकुल शैतान बन जाता है, पर सिर्फ कुछ मिनिटों के लिए, और उन मिनिटों में खुदा ही खैर करे......

कहानी लिखने के मामले में वह नखरे जरूर करता है। एक बार उसने लिखा था कि उसकी जेब में अनगिनत कहानियां पड़ी हुई हैं। पर सचाई उससे उलटी है। जब उसे कहानी लिखनी होती है, तो रात-रात-भर उसके बारेमें सोचता है, उसे कुछ नहीं सूझता। फिर सुबह पांच बजे उठता है और अखबार में से किसी कहानी का रस चूसने की कोशिश

करता है; पर असफल रहता है। तब वह गुसलखाने में जाता है, ताकि वहां अपने सिर को ठंडा कर सके; पर असफल रहता है। फिर खीझकर अपनी पत्नी से यूं ही किसी बात पर झगड़ने लग जाता है। वहां भी असफल होने पर आखिर पान लेने बाहर चला जाता है। पान उसकी मेज पर पड़ा रहता है; पर कहानी उसे फिर भी नहीं सूझती।

अंत में जैसे बदले की भावना से कलम या पेंसिल हाथ में उठा लेता है और ७८६ लिखकर जो पहला वाक्य उसके दिमाग में आता है, उसी से कहानी शुरू कर देता है।

अक्सर वह बहुत गहरे विषयों पर कलम उठाता है और ऐसे शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में करता है, जिन पर एतराज किया जा सकता है। पर मैं जानता हूं कि जब भी उसने किसी विषय पर लिखा, पहले सफे पर ७८६ जरूर लिखा, जिसका मतलब है—'बिस्मिल्ला।' यह आदमी जो आम तौर पर खुदा की हस्ती को नहीं मानता, कागज पर मोमिन बन जाता है। यह वह कागजी मंटो है, जिसे आप कागजी बादामों की तरह उंगलियों से ही तोड़ सकते हैं। वैसे वह हथौड़े से भी टूटनेवाला नहीं है।

उस व्यक्तित्व के बारे में कुछ ही शब्दों में कहूंगा कि वह चोर है, झूठा है, धोखेबाज है और तमाशगीर है। उसने अक्सर अपनी बीवी की बेखबरी से फायदा उठाकर कईकई सौ रुपये चुराये हैं। इधर आठ सौ लाकर दिये और चोर आंखों से देखता रहा कि उसने कहां रखे हैं। दूसरे दिन एक हरा नोट उड़ा लिया। उस बेचारी को जब इस का पता लगा, तो उसने नौकरों को शुरू कर दिया।

वैसे तो मंटो के बारे में मशहूर है कि सच बोलनेवाला है; पर मैं इससे नहीं हूं। वह पहले नंबर का झूठा है। शुरू में उसका झूठ उसके घर में चल था—इसलिए कि उसमें मंटो का एक टच होता था। पर अब उसके घरवाले समझने लग गये हैं कि उसकी हर झूठी है—उस तिल की तरह, जो किसी ने अपने गाल पर सुरमे से बना लिया

मंटो अनपढ़ है—इस लिहाज से कि कभी मार्क्स नहीं पढ़ा, फ्रायड की किताब आज तक उसकी नजर से गुजरी, हीगल का वह सिर्फ नाम ही है। पर मजे की बात यह है कि लोग- मतलब है, आलोचक—कहते हैं कि वह सभी से प्रभावित है। जहां तक मैं जानता मंटो किसी दूसरे आदमी के खयाल से प्रभावित होता ही नहीं है। वह समझता है समझानेवाले सभी चुगद हैं। दुनिया समझाना नहीं चाहिये, उसे खुद चाहिये।

अपने आपको समझा-समझाकर ऐसा बन गया है, जो अक्ल की ऊंचा है। कई बार ऐसी ऊटपटांग करता है कि मुझे हंसी आ जाती है। मैं यह भी कहे बिना नहीं रह सकता कि एक ऐसा पक्के अंदाज का आदमी है खुद को भी डांटता-फटकारता रहता है।

* * *

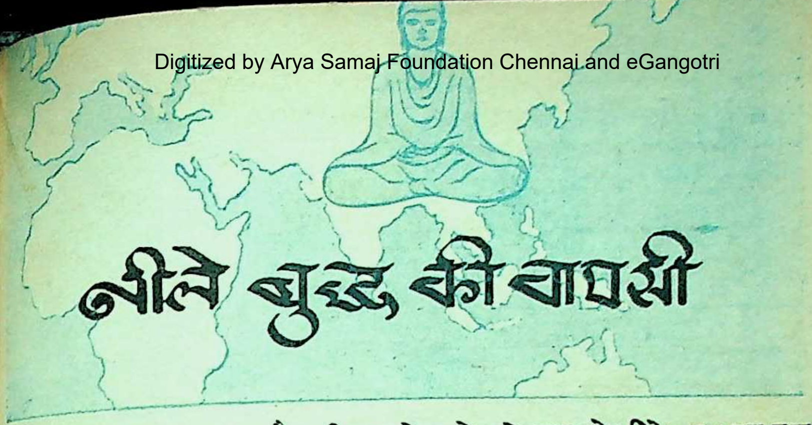

नीले बुद्ध की वापसी

सौंदर्य-प्रेम ने उससे पाप कराया और उसी पाप ने उसके बोधचक्षु खोल दिये...एक डच नागरिक का रहस्यानुभूति-सिक्त जीवन-प्रसंग।

लुडविग कोच आइसनबर्ग

उत्तरी थाइलैंड की यात्रा के दौरान मैं कुछ समय एक शानदार होटल में ठहरा था। वहीं मेरा परिचय क्लासीन से हुआ।

क्लासीन उन यूरोपियनों में से था, जो पूर्व में आकर बस गये थे और पूर्ण रूप से पूर्वीय बन गये थे। वह डच था, किंतु थाइलैंड में उसने पैंतीस वर्ष बिताये थे और वहां की सभ्यता-संस्कृति को अपना लिया था। उससे बातें करके उस देश के कई नये राज मेरे सामने खुले।

× × ×

शाम के समय हम—क्लासीन और मैं—च्यांगमाइ शहर में पहुंचे और वहां से एक स्थान देखने गये।

रास्ते में क्लासीन ने मुझसे कहा कि वह एक बड़ी ही रहस्यमय वस्तु दिखायेगा—ऐसी वस्तु, जो मैंने कभी सपने में भी न देखी हो। मुझे उत्सुकता हुई।

हम आगे बढ़ रहे थे कि रास्ते में सांप दिखाई दिये। "झाड़ियों में रहनेवाले हरे सांप हैं!" मैंने कहा।

"ये इतने जहरीले नहीं हैं," क्लासीन ने कहा—"थाइलैंड का नागराज किंग कोब्रा सबसे भयंकर सांप है। पर यहां के कुछ लोग उसे भी हाथ से पकड़ लेते हैं। उसके लिए बेहद सजगता और एकाग्रता आवश्यक है। सांप की छोटी-से-छोटी हरकत का ध्यान रखना पड़ता है। बौद्ध मत को माननेवाले इस देश के लोगों में ये गुण होना स्वाभाविक है। हम पश्चिमवालों को अपनी बुद्धि पर अभिमान है, पर बुद्धि हमें बेचैन बनाये रखती है। हम लोग इस देश से आंतरिक शांति का गुर सीख सकते हैं।"

अब हम एक घाटी में पहुंच गये थे, जहां साफ पानी बह रहा था। हम अपने जूते हाथों में पकड़े पत्थरों पर पांव रखते हुए

आगे बढ़ रहे थे । कुछ ही आगे जाने पर मेरे पांव ठिठके और मैं आश्चर्यचकित रह गया । मेरे मुख से चीख निकली । मैंने देखा, चट्टान में से तराशी हुई बुद्ध की एक विशालकाय मूर्ति मेरे सामने थी । मैं देखता ही रह गया।

उसकी एक बांह नीचे लटकी हुई थी और दूसरी सिर की ओर उठी हुई थी । किसी रहस्य से भरी हुई उसकी गहन आंखें सामने की असीम हरीतिमा को देख रही थीं । उसके ऊपर छायी हुई पहाड़ी चोटी ने उसे आंधी-पानी के हाथों नष्ट होने से बचा रखा था ।

मूर्ति के सामने एक बरतन में अगरबत्तियां पड़ी हुईं थीं । क्लासीन ने उन्हें जलाया, तो मुझे आश्चर्य हुआ । फिर वह मुझे मूर्ति के पांवों के पास एक छोटे-से आले के पास ले गया । आले में से उसने बहुत सावधानी से एक मूर्ति उठायी और मेरी ओर बढ़ायी । मैं उसे अपलक देखता ही रह गया । इससे अधिक सुंदर कलाकृति मैंने कभी नहीं देखी थी ।

"यह तो मणि की बनी हुई है !" मेरे मुख से निकला ।

"नीलम मणि की !" क्लासीन ने कहा ।

मेरे हाथों में वह मूर्ति मानो सजीव हो उठी हो । उसके भिंचे हुए होंठ मुस्करा रहे थे और ऐसी कोमल और करुणा-भरी मुस्कराहट मैंने किसी मनुष्य के चेहरे पर नहीं देखी थी । उसकी आंखें जैसे किसी दूसरे ही संसार को देख रही थीं। उसे देखते हुए मेरे आनंद का पार न रहा । वह ऐसा आनंद था, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। मैं आत्मविभोर हो उठा था ।

क्लासीन ने कहा–"जो भी इसे देखता है, उस पर इसका यही प्रभाव पड़ता है। मुझ पर भी इसका ऐसा प्रभाव पड़ा था कि मैं चोर बन गया था ।"

अब मैंने हैरानी से क्लासीन की ओर देखा । उसने मेरे हाथों से मूर्ति लेकर आले में रखते हुए कहा–"मैं आपको सारी कहानी सुनाता हूं । तीस साल पहले यह नीला बुद्ध कुछ समय तक मेरी मेज पर रखा रहा। हां, मैंने इसे यहां से चुरा लिया था।

"जब मैंने इस नीले बुद्ध को पहली बार इस आले में पड़े हुए देखा था, तो मेरा मन ललचा उठा था। मुझे कलाकृतियां इकट्ठा करने का शौक है और इसे देखकर तो मुझसे रहा ही न गया । मैं इसे जैसे भी हो पा लेना चाहता था । ऐसी जीवंत मूर्ति मैंने पहले कभी नहीं देखी थी । मेरे अंदर जबर्दस्त संघर्ष हो रहा था । भीतर की आवाज मुझे यह चोरी करने से रोक रही थी। पर अंत में मैंने इसे उठा ही लिया । मैं पाप कर रहा था । एक पराये देश में वहां के धर्म को मैं जैसे ठोकर मार रहा था । इस चोरी की सजा मुझे मिलकर ही रहेगी ।

"और ज्यों ही मैंने मूर्ति को उठाकर अपने थैले में डाला कि पागलों की तरह किसी के हंसने की आवाज सुनाई दी। मैं कांप उठा । मेरी हड्डियों तक में सिहरन दौड़ गयी । मैंने इधर-उधर झांका कि कहीं किसी ने मुझे देख न लिया हो । पर वहां कोई

नहीं था। आखिर मैं संभला और मैंने सोचा कि यह मेरे मन का डर ही है और वहां से चल पड़ा।

"परंतु मेरी बेचैनी दूर न हुई। बार-बार मुझे लगता कि मैंने घोर पाप किया है। आखिर मैंने सोचा कि जहां मैं ठहरा हुआ हूं, उस स्थान को छोड़कर देश के दक्षिणी भाग की ओर चला जाऊं, धीरे-धीरे बेचैनी अपने आप दूर हो जायेगी। सो मैं अपने हेड क्वार्टर की ओर चल दिया, जो वहां से दक्षिण की ओर छः सौ मील दूर था। लेकिन वहां पहुंचने पर भी मुझे शांति नहीं मिली।

"सो मैंने लगभग उसी मूल्य की, सोने की बनी बुद्ध की मूर्ति खरीदी और इस आले में रख दी। मैंने सोचा, इस तरह नीले बुद्ध की कीमत अदा हो जायेगी। कैसी विचित्र बात है कि हम पश्चिम के लोग हर चीज की कीमत पैसों में चुकाना चाहते हैं!

"खैर, कुछ ही दिनों में मुझे हालैंड लौटना था। मैंने सोचा, वहां जाकर मैं इस घटना को भूल जाऊंगा। अब तक मेरी बेचैनी कुछ कम हो भी गयी थी। अब मैं रात को सो सकता था। किंतु अब एक और चिंता मुझे सताने लगी। नीले बुद्ध को कस्टम-वालों की नजर से बचाकर अपने देश कैसे ले जा पाऊंगा? उन दिनों कलाकृतियों को एक देश से दूसरे देश में ले जाना असंभव था और जो लोग चोरी-छिपे ले जाने का प्रयत्न करते थे, पकड़े जाने पर उन्हें बेहद कड़ी सजा भुगतनी पड़ती थी।

"अफसरों से मिल-मिलाकर मूर्ति ले जाने का परमिट प्राप्त किया जा सकता था। लेकिन डर था कि कहीं किसी बोधी (भिक्खु) को इस बात का पता लग गया, तो वह धर्म के नाम शोर मचाकर परमिट रद करा देगा।

"उस इलाके के जंगलों में से मैंने कुछ मोर पकड़े थे और उन्हें अपने साथ हालैंड ले जा रहा था। रास्ते में उनकी खुराक के लिए चावलों की एक बोरी भी साथ ले जा रहा था। आखिर उस बोरी में ही इस नीले बुद्ध को छिपाकर ले जाने की तरकीब मुझे सूझी।

"तरकीब सफल सिद्ध हुई और मैं बहुत खुश हुआ। पर धुंध से भरे हालैंड में जब भी मैं नीले बुद्ध को देखता, मेरे दिल में एक असह्य टीस उठती। मैं सोचता, मैं स्वर्ग छोड़कर अपने देश में आ गया हूं। और इस घाटी का चित्र मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता। मुझे महसूस होता कि रुपहली शांति का यह देश ही मेरा असली घर है।

"कुछ ही समय के पश्चात् मैंने अपना देश छोड़ने की तैयारी कर ली। नीले बुद्ध को मैंने फिर बड़ी सावधानी से अपने ट्रंक में छिपाकर रखा। अब फिर उसे एक देश से दूसरे देश में ले जाने का प्रश्न था।

"इस बार भी मैं इस चोरी में सफल हो गया। थाइलैंड पहुंचते ही मैं उत्तर में इस जंगल की ओर चल पड़ा। जैसे कोई अदृश्य शक्ति मुझे खींच रही हो। जब यहां पहुंचा, तो मेरे मन की शांति लौट आयी। मैंने इस गुफा में प्रवेश किया। पर एकाएक मेरे पांव रुक गये। मैं भयभीत हो उठा। बुद्ध की विशालकाय मूर्ति के सामने पीला चोगा

पहने एक साधु झुका हुआ था। और वह सोने का बुद्ध, जो मैंने इस नीले बुद्ध के स्थान पर आले में रखा था, गायब था।

"साधु उठा, जैसे उसे मेरी उपस्थिति का भान हो गया था। मेरी ओर आया। उसकी आंखों में अनंत करुणा भरी हुई थी। उसने सिर झुकाया और दोनों जुड़े हुए हाथ माथे तक उठाकर नमस्कार किया। चुराया हुआ नीला बुद्ध मेरे हाथों में आग की तरह जल रहा था। मैंने उसे साधु की ओर बढ़ा दिया। उसके होंठों पर एक दबी हुई मुस्कराहट आयी–या शायद मुझे ही प्रतीत हुई–और धीरे से, जैसे कोई बहुत ही स्वाभाविक बात हो, उसने मूर्ति मुझसे ले ली और घूमकर आले में रख दी। 'मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था, भाई!' उसने अत्यंत शांति से कहा।

"फिर मैं उसके साथ इन सीढ़ियों पर बैठ गया, जहां हम इस समय बैठे हुए हैं। मुझे पता लगा कि वह यहीं रहता है। दरअसल ऊपर एक चट्टान में उसकी गुफा है जब मैं नीला बुद्ध चुरा रहा था, वह ऊपर से मुझे देख रहा था। परंतु सच्चा बौद्ध हो के कारण उसने मुझे टोका नहीं; क्यों उसमें मेरा अपमान हो जाता। सो वह कुछ देखते हुए भी चुप रहा।

"उसने सहज-भाव से मुझसे कहा–' जानता था, एक दिन आपको इसकी आव कता नहीं रहेगी। अच्छा हुआ, इसने आ जल्दी रोशनी दिखायी।'"

क्लासीन ने गहरी सांस ली–"सो मैं बोधी (भिक्खु) बन गया और आज हूं। काफी समय तक मैं पीला चोगा प हाथ में भिक्षापात्र लिये इस देश में भटक रहा। अब भी बहुधा यहां आया करता हम यूरोपियनों में जो जल्दबाजी और बे होती है, वह मुझमें नहीं है। मैं यह मा लगा हूं कि जीवन में जो सबसे बड़ी चं प्राप्त की जा सकती है, वह है–मनुष्य मा को समान समझने की भावना।"

"लीजिये अपने घर की चाबी!"–मकान-मालिक को चाबी देते हुए किरायेदार कहा! "अच्छा, आप मकान खाली कर रहे हैं?" मकान-मालिक ने पूछा। "हां!"–सीध उत्तर दिया किरायेदार ने। "मकान किराये पर उठाते हुए मैंने जो शर्तें रखी थीं, वे याद हैं

"क्यों नहीं? अच्छी तरह से याद हैं। घर की चाबी देते हुए आपने कहा था कि मैं जिस प्रकार मकान देता हूं, उसी प्रकार खाली करते समय लौटाना चाहिये! ठीक, उ प्रकार लौटा रहा हूं और उसके लिए मुझे अपनी जेब से दस रुपये खर्च करने पड़े हैं! ज आपने मुझे यह मकान सौंपा था, तब यहां तीन सौ चूहे, दो हजार तिलचट्टे, बीस घूस निवा करते थे। मैंने उन्हें भगा दिया था। अब आपकी शर्त याद आयी, तो कल एक आदमी को दस रुपये देकर, चूहे, तिलचट्टे, घूस वगैरह पकड़वा लाया। उन्हें छोड़े जा रहा हूं। आपको शक हो, तो गिनकर देख सकते हैं!"

–रा० वीलिना

★

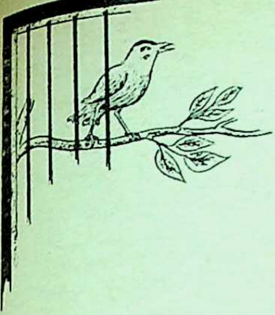

अमरीकी सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश विलियम डगलस से उनके नन्हे मित्रों का परिचय प्राप्त कीजिये ।

मेरे पड़ोसी

जिस नगर में आप रहते हैं, उसके काफी लोगों से आपका परिचय होगा । अपने मोहल्ले के तो प्राय: सभी व्यक्तियों से आपकी घनिष्ठता होगी । वे आपका नाम, काम-धाम जानते होंगे, आप उनका । मिलने पर दुआ-सलाम भी होती होगी ।

पर ऐसा ही घनिष्ठ परिचय क्या अपने दूसरे पड़ोसियों से भी है आपका ? आपके ही निकट जो मेंढक, चिड़ियां, मछलियां हैं, घास, पेड़, फूल और पौधे हैं, क्या उनका भी नाम और काम-धाम जानते हैं आप ?

बेशक इन तमाम पड़ोसियों के नाम जानना आपके लिए कठिन होगा; क्योंकि सिर्फ जंगली फूलों की ही हजारों किस्में हैं। पर जो फूल-पौधे और पशु-पक्षी हमें प्राय: दिखाई देते हैं, उनसे तो हमारा घनिष्ठ परिचय होना ही चाहिये । नयी दृष्टि लेकर इस नये वातायन में झांकिये, आपको एक बिलकुल नयी दुनिया दिखाई देगी ।

उदाहरणार्थ, वसंत ऋतु के आगमन की सूचना मुझे अपने एक खास दोस्त से मिलती है । यह दोस्त है–दलदल में रहनेवाला, एक इंच लंबा एक मेंढक । इस जाति के मेंढकों का रंग भूरा होता है और पीठ पर तीन काली चित्तियां होती हैं । सारी शरद ऋतु में मेरा यह दोस्त किसी दलदल की गहराई में आराम करता है । शरद ऋतु के बीत जाने की सार्वजनिक घोषणा करनेवाला यही पहला प्राणी होता है ।

प्रतिवर्ष फरवरी के अंत से मार्च के मध्य तक मैं वाशिंगटन में अपने बंगले के लान में जाकर इस दोस्त का संगीत सुनता हूं । कंघे की तीलियों पर अपनी उंगलियां दौड़ाकर उसके स्वर को सुना है कभी आपने? बस, वैसा ही स्वर इस दोस्त का है ।

किसी की आहट पाते ही मेरा दोस्त गाना बंद कर देता है । इसलिए उसे देखने की इच्छा हो, तो आपको झुटपुटे के समय,

रबर के जूते पहनकर और हाथ में टार्च लेकर उसके घर जाना होगा। और उससे मुलाकात केवल वसंत ऋतु में हो सकती है। जब ग्रीष्म ऋतु आ जाती है, और झाड़ियों पर फूल लगने लगते हैं, तो मेरा दोस्त गायब हो जाता है और फिर अगले वसंत में ही प्रकट होता है।

एक और किस्म का मेंढक—बुलफ्राग—तालाबों, झीलों और नदियों के उथले पानी में रहता है। स्वर उसका बड़ा घना और गहरा होता है। मैंने कई बार बहुत धीमे-से नाव चलाते हुए, पास जाकर उसका गाना सुनने का प्रयत्न किया है। पर हर बार मेरी आहट पाकर वह अपना गाना बंद कर देता है, और मुझे सिर्फ उसकी हरी-सुनहरी आंखें ही दिखाई देती हैं।

अक्सर रात को खाना खाकर, मैं किसी दलदली जगह की ओर निकल जाता हूं और दूर से मेंढ़कों के कोरस को सुनता रहता हूं। जंगल का यह खास तराना शायद दुनिया का सबसे पुराना तराना है।

× × ×

चिड़ियों का संगीत सुनने का सबसे आसान तरीका है—खिड़की के पास एक घोंसला बनाकर उसमें उनके खाने की सब वस्तुएं रख देना। इसके बाद, आप साल-भर अपने कमरे में बैठे विभिन्न पक्षियों की मधुर तानों का आनंद ले सकते हैं।

मेरी प्रिय चिड़िया है—कार्डिनल। सिर के लाल ताज से उसे अलग पहचाना जा सकता है। मगर वह केवल शरद ऋतु में ही बाहर निकलती है।

'वाटरउजल' नाम की एक छोटी चिड़िया भी मुझे बहुत प्रिय है। वह अमेरीका के पश्चिमी पर्वतों पर रहती है। छोटी सी होने पर भी उसकी आवाज बहुत तेज है—मैं जितनी चिड़ियों को जानता हूं, उनमें सबसे अधिक तेज। मैंने इस साहसी चिड़िया को हाहाकार करते हुए जल-प्रपातों के नीचे बार-बार डुबकी लगाते देखा है। वह भोजन भी पानी के अंदर ही करती है। पानी में डुबकी लगाने में उसे बहुत आनंद मिलता है।

शरद ऋतु में चिड़ियां प्रायः चुप ही रहती हैं। वे घोंसला बनाते समय या मिलन के समय ही अक्सर गाती हैं। इसीलिए पक्षियों का गान हमें ग्रीष्म और वसंत ऋतुओं में ही सुनाई देता है। जब चिड़िया घोंसला बनाकर पूरा कर लेती है, तो अपने परिवार के सदस्यों के साथ सामूहिक गान गाती है और उसके द्वारा अन्य पक्षियों को सूचित करती है कि उसके इस घोंसले से वे लोग दूर-दूर रहें। अपने घोंसले का अतिक्रमण कोई चिड़िया सहन नहीं कर पाती।

एक नन्ही-सी, भूरे रंग की चिड़िया होती है—कौए से आकार में बीस गुना छोटी। एक बार एक कौआ अंडों की तलाश में उस चिड़िया के घोंसले के पास आया। उस नन्ही चिड़िया ने उस पर जेट विमान की तरह झपट्टा मारा और चोंच मार-मारकर उसे वहां से भाग जाने को मजबूर कर दिया।

× × ×

अलग-अलग किस्म की मछलियों की खाने की आदतों में अंतर होता है। 'सन-फिश', 'कर्ल', 'बास' जैसी मछलियां प्रायः बहुत गहरे पैठकर, कीटाणुओं की तलाश करती हैं। 'ट्राउट' मछलियां झीलों और सोतों की सतह पर शिकार करना पसंद करती हैं।

ग्रीष्म ऋतु में झीलों और नदियों की सतह पर हजारों मक्खियां दिखाई देती हैं। ये उन अंडों में से निकलती हैं, जो पानी के तल पर एक साल पड़े रहते हैं। पंख आने तक ये पानी के अंदर ही रहती हैं, फिर ऊपर आकर उड़ने लगती हैं।

एक बार मैं शाम के समय एक झील में खड़ा मछली पकड़ रहा था। पानी मेरी कमर तक आता था और दर्पण की भांति स्वच्छ था। काफी देर तक मुझे आस-पास किसी मछली के दर्शन नहीं हुए। फिर सहसा ट्राउट मछलियों का झुंड-का-झुंड पानी की सतह पर आता दिखाई दिया। उनमें से कुछ ने पानी के ऊपर एक-एक फुट की छलांग लगायी। ध्यान से देखा, तो वे उन मक्खियों का पीछा कर रही थीं, जो नये पंख पाकर पानी के अंदर से ऊपर आ गयी थीं।

ट्राउट मछलियों को कभी-कभी आकाश में भी भोजन प्राप्त हो जाता है। एक बार एक झील में मछली पकड़ रहा था कि हजारों टिड्डे आकर पानी पर बैठ गये। उनकी गंध पाते ही जल की गहराइयों में विश्राम करती हुई ट्राउट मछलियां लपककर ऊपर आ गयीं और लगीं टिड्डों का सफाया करने।

छोटी-सी तलैया में भी इतने ही प्राणी रहते हैं, जितने कि एक औसत शहर में मनुष्य। मेंढक, पक्षी, कीटाणु, चूहे आदि के वहां अलग-अलग मोहल्ले होते हैं। इसी प्रकार जंगल में रहनेवाले पशु-पक्षियों के भी अलग-अलग मोहल्ले रहते हैं। हर वन, हर झील, हर चरागाह, एक बड़े कारखाने की भांति है, जहां उसमें रहनेवाले पशु-पक्षियों के भरण-पोषण के लिए आवश्यक भोजन का निर्माण होता है।

× × ×

और प्रत्येक झील, चरागाह और वन का अलग व्यक्तित्व होता है। प्रत्येक के मिट्टी-पानी की तासीर अलग है, तापांश अलग, निवासी अलग, पैदावार अलग। इतना ही नहीं, उनकी प्रत्येक झाड़ी, प्रत्येक पेड़, प्रत्येक पुष्प का अलग नाम है, अलग पोशाक है—ठीक आपके पड़ोसियों की भांति।

तीन कविताएं

महत्त्व की आकांक्षा :

बस इतनी ही है
महत्व की कांक्षा मेरी
कि जीवन में
"अर्थ" मिले, चाहे न मिले—
जीवन को "अर्थ" मिले।

सागर-दर्शन :

आज पहली बार समुद्र देखा
और देखीं उत्ताल तरंगें
तब समझ में आया
कि सिर ऊंचा कर
किस तरह जिया जाता है।

आस्था :

दृष्टि हो
तो आज भी
पाया जा सकता है सौंदर्य
विकृतियों के परिवेश में;
क्षमता हो
तो आज भी
मिल सकता है आनंद
पीड़ा के देश में;
आस्था हो
तो आज भी
मिल सकती है आत्मीयता
अजनबी वेश में!

—दिनकर सोनवलकर

जिन पुष्पों को आप रोज अपने चारों ओर खिलते-महकते देखते हैं, क्या उन पुष्पों नाम जानते हैं? अगर आप अपने आस-पास के वृक्षों, पुष्पों और लताओं का परिच प्राप्त कर लें, तो आपको उनके बारे में प्र दिन नयी-नयी और बड़ी ही दिलचस्प बा मालूम हो सकती हैं।

मैं जब छोटा था, तब हमारे बाग में मट बोयी जाती थी। हमारे पास के पहाड़ी क्षे में बैंगनी रंग का ल्यूपिन पौधा उगता था। हमारे बाग में ही कैरब वृक्ष था, जिसकी मीठी महक, वसंत ऋतु में सारे बाग में फ जाती थी।

एक दिन एक मित्र ने मुझे अपने मट ल्यूपिन और कैरब के पौधे दिखाये। ब वट में एक-से होते हुए भी ये पौधे मेरे पू परिचित पौधों से रंग, आकार और गं में भिन्न थे। प्रत्येक का बीजकोश बीजों भरा था। ल्यूपिन के बीजकोश जहरी होते हैं, पर मटर और कैरब के पौधों बीजकोश बड़े ही रुचिकर और पौष्टि होते हैं।

फूलों और वृक्षों का यह नया संबंध मु पहली बार उसी दिन मालूम पड़ा। कुछ दिन बाद मैंने बाइबिल में संत जान के बारे में पढ़ा, जो "जंगल में जाकर, मधु और कैरब पर जीवित रहते थे।" मुझे ध्यान आया कि संत जान ने जिस कैरब के बीज खाये होंगे, वह हमारे बाग के ही सुगंधित स्वादिष्ट कैरब का कोई दूर का रिश्तेदार रहा होगा। *

गांधी-मेरे

मैं मानत
हूं। इस
अनुभूत सू

वित हुआ
दार्शनिक
कहा था—
न किसी
प्रशंसा, ध
प्राप्ति में
करो; प
प्रत्युपका
भी नहीं
तरह कर

अपनी नजर में

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण क्षण और चिंतन - कण ।

गांधी-मेरे गुरु

मैं मानता हूं कि मैं बहुत सुखी व्यक्ति हूं। इस सुखीपन का कोई छोटा-मोटा अनुभूत सूत्र मैं आपको नहीं दे सकता। परंतु मैं आपको एक ऐसे सूत्र के बारे में बता सकता हूं, जो मैंने किसी के मुंह से सुना और जिससे मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। वह मुझे भारतीय नेता और दार्शनिक गांधी ने बताया था । गांधी ने कहा था–"न अपने पास कुछ रखो और न किसी वस्तु की आकांक्षा करो । प्रशंसा, धन या शक्ति की आकांक्षा भी सुख प्राप्ति में बाधक है । जो ठीक लगे, वही करो; पर उसके बदले में किसी तरह के प्रत्युपकार की आशा मत करो – यह आशा भी नहीं कि कोई तुम्हें वह काम अच्छी तरह करने का श्रेय देगा ।"

जीवन से मैंने क्या सीखा है ? यही कि दुनिया में मूर्खता दुष्टता की अपेक्षा कहीं अधिक है । –डेविड लो

०००

मुझे प्रभावित करनेवाले

अक्सर लोग मुझसे पूछते रहते हैं–आप पर किन लेखकों और कलाकारों का प्रभाव पड़ा है ? ईमानदारी से जवाब दूं, तो ऐसे लेखकों और कलाकारों की सूची बनाते-बनाते पूरा एक दिन निकल जायेगा । फिर भी एकदम जो नाम ध्यान में आते हैं, लिखता हूं–मार्क ट्वेन, फ्लोबा, स्टैंडहल, वाख, तुर्गनेव, टाल्सटाय, दास्तोवस्की, चेखोव, एंड्रू मार्वल, जान डन, मोपांसा, किपलिंग, थारो, कैप्टन मैरात, शेक्सपियर, मोजार्ट, दांते, वर्जिल, गोया, वान गाफ, गोगां आदि ।

कुछ लोग समझेंगे कि मैं जीवन और

लेखन को प्रभावित करनेवाले व्यक्तियों के नामों को याद न करके, सिर्फ पांडित्य-प्रदर्शन कर रहा हूं। परंतु ऐसा नहीं है। मैंने ऊपर कुछ चित्रकारों और संगीतकारों के भी नाम लिखे हैं। सच तो यह है कि मैंने कलाकारों से भी उतना ही सीखा है, जितना लेखकों से। अब शायद आप पूछें, यह कैसे संभव है? यह मत पूछिये। इसका उत्तर देने में मुझे फिर एक दिन लग जायेगा। गायकों और संगीतकारों से ऐक्य और आनुरूप्य की शिक्षा आपको मिलती है न? इसी प्रकार कोई लेखक भी कलाकारों से बहुत कुछ सीख लेता है।

–अर्नेस्ट हेमिंग्वे

०००

मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ क्षण

चारों ओर सख्त बर्फ की एक चादर बिछी हुई थी। बड़ी मुश्किल से मुझे एक करारे के सिरे पर बर्फ का ढेर दिखाई दिया। कुल्हाड़ी से बर्फ के एक ढेर को खोदते हुए मैंने तेनसिंग को आवाज दी। थके हुए कुछ और कदम......और अब हम दोनों एवरेस्ट की चोटी पर थे और श्वेत-हिम-मंडित एवरेस्ट-शिखर अब हमारे पैरों के नीचे था।

उस समय सवेरे के साढ़े ग्यारह बजे थे। मुझे संतोष था कि किसी तरह सब कठिनाइयों पर विजय पाकर मैंने और तेनसिंग ने एवरेस्ट को पराजित कर ही दिया। मुझे संतोष था कि हमारे इस अभियान का अंत एवरेस्ट के शिखर के एक सुरक्षित आश्रय में ही हुआ था, किसी दुर्गम और भयानक स्थान पर नहीं।

पर संतोष की इस भावना के साथ आश्चर्य की एक धूमिल भावना भी थी कि एवरेस्ट के शिखर के विराट वैभव का दर्शन करने का सौभाग्य, इस अजेय शिखर पर विजय पाने का संकल्प रखनेवाले इतने साहसी पर्वतारोहियों में से मुझे और तेनसिंग को ही प्राप्त हुआ। शिखर पर पहुंचकर, एक क्षण तो विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं एवरेस्ट के शिखर पर खड़ा हूं। धीरे-धीरे, जैसे इस सफलता की चेतना गहरी होने लगी, मैं एक अपूर्व उल्लास की भावना से घिर आया। ऐसा उल्लास मैंने कभी किसी पर्वत-शिखर पर अनुभव नहीं किया था। यह मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ क्षण था।

–सर एडमंड हिलेरी

०००

जब पीछे मुड़कर देखता हूं

प्रश्न पूछा गया है, क्या मैंने अपने जीवन को किसी पूर्वनिश्चित ढांचे में ढाला है? क्या मेरा जीवन स्वनिर्मित है?

नहीं, ऐसा नहीं है । [illegible] मित है, न किसी पूर्वनिश्चित ढांचे पर ढला है । मैं हमेशा घटनाओं का दास रहा हूं । पीछे मुड़कर देखता हू, तो अपनी गलतियों का ध्यान करके भयग्रस्त हो जाता हूं । लेकिन लेखक होने का एक लाभ यह है कि अपनी गलतियों का अपनी रचनाओं में उपयोग किया जा सकता है । मैंने अपनी गलतियों को अपनी कहानियों के कथानकों में बदल दिया है ।

यह तो रही भूतकाल की बात । भविष्य के बारे में मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मुझे ज्यादा दिन जीना नहीं है । मेरा जीवन एक धागे के सहारे लटका हुआ है और वह धागा कभी भी टूट सकता है । परंतु उसकी मुझे कोई चिंता नहीं है । भविष्य में भी मैं वैसा ही जीवन जीना चाहूंगा, जैसा आजकल जी रहा हूं ।

—सामरसेट माम

०००

यह है मेरी आत्मकथा

पंद्रह वर्ष की आयु में मैंने अध्ययन आरंभ किया । तीस वर्ष की आयु तक मैं अपनी शिक्षा पूरी कर चुका था । चालीस वर्ष की आयु तक मेरे मन में कोई संदेह शेष नहीं रहा था । पचास वर्ष की आयु में मुझे प्रतीति हो गयी थी कि भगवान की इच्छा क्या है । साठ वर्ष की आयु में मैं [illegible] तैयार हो चुका था । सत्तर वर्ष की आयु में मैं बिना अच्छाई की सीमाओं का अतिक्रमण किये, अपने मनचाहे कार्य कर सकता था ।

—कन्फ्यूशियस

०००

एक चेतावनी

लंबी उम्र पाने का रामबाण नुस्खा बताता हूं—किसी दूसरे बूढ़े की आदतों की नकल न कीजिये ।

चालीस वर्ष की आयु तक हमारी कोई आदत पकती नहीं । फिर वे मजबूत होती हैं । बाद में पथरा जाती हैं । उसके बाद, अंत में वे जीवन का ही एक अंग बन जाती हैं ।

चालीस साल की आयु से अब तक एक काम मैंने बड़ी नियमितता से किया है । रोज रात को सोना और सुबह उठ जाना । फिर एक नियम यह था कि सोया तब जाये, जब कोई बातें करनेवाला न रह जाये, और उठा तब जाये, जब उठे बिना रहा न जाये। अर्थात्, मैं बराबर बड़ी नियमितता से अनियमितता का पालन करता चला आ रहा हूं । ऐसी ही चंद और आदतों के सहारे मैं जीवन की सीढ़ी के सत्तरवें सोपान को पार कर पाया हूं । लेकिन इन्हीं आदतों को अपनाकर कोई दूसरा मेरे बराबर नहीं जी पायेगा, यह चेतावनी भी दिये देता हूं । **—मार्क ट्वेन**

०००

नब्बेवीं वर्षगांठ पर

जीवन के अंतिम दिनों में अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करना बड़ा कठिन कार्य है। ये अनुभूतियां बड़ी गहरी और एकदम दिली होती हैं।

फिर भी एक विचार मुझे अभी-अभी सूझा है। दौड़-प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धी लक्ष्य पर पहुंचकर एकदम ही ठहर नहीं जाते। सच है, एक दौड़ समाप्त हो गयी; पर जीवन समाप्त नहीं हुआ, जीने की शक्ति भी समाप्त नहीं हुई है। आदमी जब तक जीता है, तब तक उसके सामने कोई ऐसा लक्ष्य नहीं होता, जिस पर पहुंचकर वह रुकने की बात सोच सके।

डेढ़ हजार वर्ष पूर्व एक कवि ने एक बड़ी सुंदर पंक्ति लिखी थी—"मौत ने मेरे कान पकड़ लिये हैं और कह रही है : जियो, मैं आ रही हूं।"

—जस्टिस आलिवर वेंडल होम्स

०००

पुलिस से बहुत डरता हूं

परदे पर मेरी फिल्मों के पात्र खूब साहस-प्रदर्शन करते हैं और गाजते हैं। मैं भी यों डींग मारने और शेखी बघारने में किसी से कम नहीं हूं। परंतु पुलिस के सिपाही को देखकर मेरी नानी मर जाती है। सच बताऊं, मैं बड़ा डरपोक आदमी हूं। नाटकीय अपराध-चित्रण ही मेरी रोजी है। लेकिन जीवन में मैं सदा डरता रहता हूं कि कहीं अपराध के चंगुल में न फंस जाऊं। इसी वजह से, जब से अमरीका आया हूं, मैं कभी खुद अपनी कार नहीं चलायी। मोटर चलाने या ऐसे ही किसी छोटे-मोटे अपराध के कारण पुलिस के सिपाही का सामना करने की हिम्मत मुझमें आज तक नहीं हुई।

दर्शकों से भी मुझे बहुत डर लगता है। दर्शकों के बीच में बैठकर, उनके साथ अपनी कोई फिल्म देखने का साहस मुझे आज तक नहीं हो पाया है। 'टु कैच ए थीफ' के प्रदर्शन के समय मैंने ऐसी हिम्मत की थी। पर खेल खत्म होने के बाद, मेरा हुलिया देखने योग्य रहा होगा। मैं किसी से आंखें नहीं मिला पाता था। न जाने कौन कब मेरी किस गलती की ओर इशारा कर दे!

मेरी हालत उस हत्यारे की-सी रहती है, जिसने फांसी के फंदे की ओर देख सशंकित होकर फांसी देनेवाले से पूछा था—"यह फंदा भरोसा करने लायक तो है न भाई!"

—आल्फ्रेड हिचकाक

★

जो सर्वाधिक अव्यावहारिक थे, इतिहास में वे ही सबसे ज्यादा याद किये जाते हैं।—जिलर

जीवन में हम भूलें करते हैं और उनका नाम धरते हैं—अनभव। —एक अरबी कहावत

★

लंबकर्ण की आत्मकथा

स० का० वि०

मेरी आत्मकथा मेरी ही नहीं, बल्कि उन सब दोपाये लंबकर्णों की है, जो इन्सान की शक्ल में चलते-फिरते नजर आते हैं; मगर दिलो-दिमाग से चौपाये लंबकर्ण के समान ही (गधे) हैं। हों भी क्यों न? आखिर हैं तो वे उसी लंबकर्ण की औलाद, जिसकी कहानी सैकड़ों साल पहले आचार्य विष्णुशर्मा ने पंचतंत्र में दी थी!

अपने पूर्वजों की वह अमर कहानी अपने ही श्रीमुख से कहने में मुझे शर्म तो महसूस होती है; मगर शर्म न आना भी मेरा खानदानी गुण है। इसलिए बिना शर्म कह रहा हूं।

थोड़े में कहूं, तो बात इतनी ही थी कि हमारे महामना लंबकर्णजी को धूसरक नाम का एक गीदड़ हरी घास का लालच देकर अपने मालिक शेर के पास ले गया था। शेर एक मदमत्त हाथी से लड़ाई लड़ता हुआ घायल हो गया था। गधे को अपना भोजन बनाने के इरादे से शेर ने गधे पर पंजा उछाला। मगर लंबकर्णजी उसके पंजे की पकड़ में नहीं आये और भागते-भागते वहीं आकर दम लिया, जहां से गीदड़ उन्हें बहकाकर ले गया था।

धूसरक भी चालाक था। वह फिर लंबकर्णजी के पास आकर बोला—"मामा! तुम भी अजीब वहमी हो, जो इस तरह डरकर भाग आये। कुछ मालूम भी है कि जिससे तुम डर गये, वह कौन था? वह तो तुम्हारी सजातीय गर्दभी थी। और उस बेचारी गर्दभी ने तो तुम्हें प्यार करने को हाथ उठाया था। तुम उसे दुलत्ती झाड़कर भाग आये। वह तुम्हारे बिना कलप रही है।"

लंबकर्णजी प्यार शब्द पर गद्‌गद हो गये और चालाक धूसरक के साथ हो लिये। इस बार शेर ने लंबकर्णजी को ऐसा दबोचा कि भागने न दिया। अपनी ही शराफत के शिकार हो गये बेचारे लंबकर्णजी।

मैं भी उन्हीं बेहद शरीफ, शांतिप्रिय, संतोषी, विश्वासी लंबकर्णजी की औलाद हूं। हिन्दुस्तान के ज्यादा लोग उनके ही खानदान के हैं, इसीलिए आज हम चारों ओर से पिटते हुए भी विश्वशांति का शंखघोष कर

रहे हैं। शां[illegible] मगर हमारे स्वर से बड़ा मेल खाता है। जो इसे ढींचू-ढींचू कहते हैं, वे दरसल अपनी अल्पज्ञता का इजहार करते हैं।

हम एक बार ठगे जाने पर भी पुनः विश्वास करनेवाले यशस्वी लंबकर्णजी के वंशज न होते, तो अपने दायें-बायें बसनेवाले भेड़ियों के गिरोह में फिर न फंसते और पूर्वी पाकिस्तान में हलाल न किये जाते।

केवल लंबकर्णजी की औलाद होने से ही मैं लंबकर्ण नहीं हूं। गुण-कर्म-स्वभाव से भी लंबकर्णों में लंबकर्ण हूं—असली लंबकर्ण।

अब कुछ आत्मकथा भी कह दूं।

कुछ तो मैं वंश से ही लंबकर्ण था, कुछ मेरे एक बकरानुमा दाढ़ीवाले मास्टर ने बना दिया। इस कदर कान ऐंठे उसने कि आसमान तक पहुंचा दिये। हुआ यह कि कान लंबे होते गये और सिर छोटा होता गया। यही वजह है कि हम पढ़े-लिखों में ज्यादा लोग मेरे ही जैसे लंबकर्ण हैं।

उनकी पीठ पर किताबों-कापियों का बेहद बोझ लादकर भी उन्हें गधा बनाया जाता है—माफ करें, मेरा मतलब है, लंबकर्ण बनाया जाता है।

इसीलिए बड़े होने तक वे पूरे गधे बन जाते हैं, यानी उसके जैसे ही शरीफ, शांतिप्रिय, संतोषी, लकीर के फकीर, काहिल और बेवकूफ।

हां जी, तो मैं कह रहा था कि मैं भी उनमें से ही एक गधा, उनमें से ही लंबकर्ण हूं। पीठ पर मालिक की सौ लाठियां खाकर भी मैं चूं नहीं [illegible]। इतनी मोटी खाल हो गयी है मेरे जिस्म की। दफ्तर में हाकिम की गालियां चुपचाप सुन लेता हूं और "जी हां, जी हां" के अलावा कोई बात नहीं निकलती मेरे श्रीमुख से। मान-अपमान की भावना पर मैं ऐसा गालिब हुआ हूं कि कंदराओं में बसनेवाले योगी भी दंग रह जायें। योगी भी तैश में आकर शाप दे देते हैं; मगर मेरे मुख से न तो आह निकलती है, न किसी के लिए बददुआ।

जोश मलीहाबादी ने जब यह शेर पढ़ा—

ये हुक्म है चुप साध लो आंखें न उठाओ,
दो खूब अजां, धूम से नाकूस बजाओ।

तो उनकी निगाह में बस मैं ही था। मेरा नाम भी शेर में जोड़कर वे कह सकते थे कि "लंबकर्ण के मानिंद बन जाओ।" मेरी भलमनसाहत ऐसी है कि उस पर मेरी घरवाली को कभी शक नहीं हुआ—उसकी जली-कटी सुनकर भी मेरे मुख से उस के आशिकों के लिए दुआ ही निकलती है।

मुझे देखकर ही शायर ने लिखा था—

किसी से हाले-दिले-बेकरार कह न सके,
कि चश्मे-यास में आंसू भी आके बहन सके।
जितना जुल्म सहते हैं और मुस्कराते हैं,
जितने दुख उठाते हैं और गीत गाते हैं।

मेरी शांतिप्रियता पर दुश्मन भी फिदा है। प्रेम और युद्ध दोनों हालत में मैं शांत रहता हूं। युद्धकाल में भी शांति रखने के कारण ही मैं 'शांति का विश्वदूत' नाम से मशहूर हूं।

मैं मानता हूं कि अभी मैं इतना प्रशांत नहीं

नहीं बना कि मेरे मन में भी कभी गुस्सा की ऐंठन न आती हो या आंखों के तेवर न चढ़ते हों। ऐसी सूरत में मैं दुलत्ती झाड़ने की हरकत से अपने दिल का गुबार निकाल लेता हूं। सियासी हल्कों में इसे 'स्ट्रांग प्रोटेस्ट' कहते हैं। अपने पड़ोसी पर 'दुलत्ती-झाड़' नीति का प्रयोग करते-करते मुझे इस कला में पूरी सिद्धि प्राप्त हो गयी है।

मैं केवल राजनीतिज्ञों में ही हूं—यह बात नहीं है। जनता के आंदोलनप्रिय नेताओं में भी मेरे समजातीय बहुत हैं। इसीलिए आजकल शांतिपूर्ण जुलूसों की भरमार है। ढींचू-ढींचू करते हुए लंबी कतार में चलते जाना ही मेरी राजनीति है। कभी-कभी दुलत्ती-झाड़ सम्मेलन भी मैं करता हूं। अखबारवाले इसे 'विरोध-प्रदर्शन सभा' का नाम देते हैं।

दुलत्ती झाड़ने की चेष्टा से मुझे कई लाभ होते हैं। इससे मुझे मानसिक स्वास्थ्य भी प्राप्त होता है और शरीर के लिए यह योगासन भी हो जाता है। योग-विज्ञान में इसे 'गर्दभासन' की संज्ञा दी जा सकती है।

सुबह दस बजे से पांच बजे तक फाइलों का बोझ ढोते-ढोते जब रीढ़ की हड्डी टेढ़ी होने लगती है, तो यह गर्दभासन बहुत उपयोगी होता है। यों तो अब अपनी पीठ पर लदी फाइलों से मुझे वैसा ही प्रेम हो गया है, जैसा टट्टू को अपनी पीठ पर पड़ी घास से होता है। ये फाइलें ही मेरा चारा हैं और फाइलों के दफ्तर ही मेरे खेत-खलिहान हैं।

लंबकर्ण से दुलार

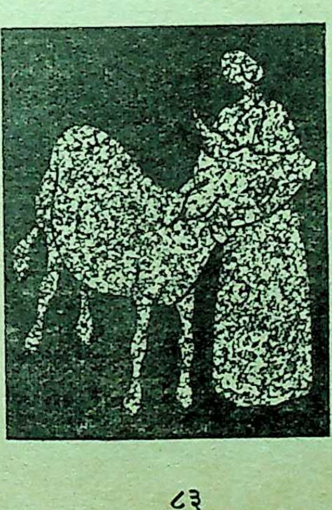

दफ्तरों के अलावा कारखानों, छापाखानों, दवाखानों, दूकानों, बावरचीखानों में भी मेरी बिरादरी के ही लंबकर्ण रहते हैं। वे सब भी मेरी तरह ही शांतिप्रिय और संतोषी हैं।

एक बात कह दूं, मैं केवल धन-दौलत के मामले में ही संतोषी नहीं हूं; प्रेम के मामले में भी संतोष से निबाह कर लेता हूं। प्रेम की लहर आती है, तो मैं फिल्मों में हीरो-हीरोइन की प्रेम-लीला देखकर अपना जी भर लेता हूं, या एकांत में प्रेम की कविताएं करके और मित्रों को सुनाकर तृप्त हो लेता हूं। प्रेम-विकल कवियों में प्रायः सब मेरी बिरादरी के लोग हैं। कभी-कभी गाने-बजाने की महफिल में मैं गा-बजा भी लेता हूं। इसी को अखबारवाले 'संगीत-परिषद्' कहते हैं। मेरा गाना सुननेवाले भी मेरे ही सजातीय होते हैं। इसलिए वे बिना कुछ समझे भी झूमते हैं और अपनी संगीतप्रियता का परिचय देते हैं।

मैं क्या गाता हूं, यह मैं

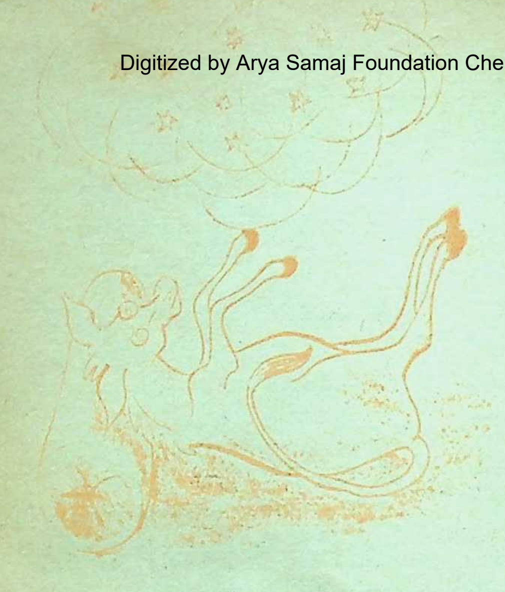

लंबकर्ण का स्वप्न

खुद भी नहीं जानता । इसीलिए उसे केवल स्वर-संगीत कहा जाता है। मेरे इस 'ढींचू-गान' की यह विशेषता है कि इसे आप किसी भी राग की संज्ञा दे सकते हैं और इसे बिना समझे ही इसकी भरपेट तारीफ कर सकते हैं।

मेरे सजातीय बंधु देवालयों, शिक्षणालयों, पुस्तकालयों, और सचिवालयों में भी बहुतायत से हैं। पुजारी, पूजक, शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठक, लेखक, मंत्री, तंत्री सभी वर्गों में लंबकर्ण हैं। उन लाखों लोगों में मेरा ही खून दौड़ रहा है।

* * *

दो ग्रामीण टिकट खरीदने के लिए खिड़की के पास पहुंचे।

पहला–"अरे भाई, दिल्ली के दो टिकट कितने में आयेंगे ?"

टिकट बाबू–"बारह रुपये छियालीस नये पैसे में।

दूसरा–"अरे बाप रे इतने महंगे ! बाबूजी, कुछ कम करो।"

टिकट बाबू–"नहीं जी, यहां एक पैसा भी कम नहीं किया जाता।"

पहला–"सरकार, गरीब आदमी हैं, दया कीजिये......।"

टिकट बाबू–"मैंने कहा न, यहां एक नया पैसा भी कम करने का नियम नहीं है।"

पहला–"आ यार, उधर खड़े हो जायें। गाड़ी आयेगी, तो खुद टिकट बेचने के लिए मुसाफिरों को आवाजें देगा। सब अकड़ ढीली पड़ जायेगी बच्चू की।"

दोनों चुपचाप टिकट की खिड़की से हटकर पास ही खड़े हो गये। थोड़ी देर में गाड़ी आ गयी। वे उचक-उचककर टिकट बाबू की ओर ताकने लगे। गाड़ी ने सीटी दे दी, हरा सिग्नल हो गया। दोनों बेताब होकर खिड़की की ओर आंखें और कान लगाये खड़े रहे। गाड़ी धीरे-धीरे सरकती हुई आंखों से ओझल हो गयी।

दूसरा ग्रामीण–"यार, बड़ा पक्का निकला यह तो।"

पहला–(आश्चर्य से) "हां यार, जिद के पक्के ऐसे ही होते होंगे।"

शोषण के मनोविज्ञान का चित्रण
करनेवाली एक मार्मिक कहानी

एंटन चेखोव

धन्यवाद

अपने बच्चों की अध्यापिका यूलिया वासीलियेवना को मैंने अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में आकर मिलने के लिए कहा। आज मैं उसका हिसाब चुकता करना चाहता था।

"बैठ जाओ, यूलिया वासीलियेवना," मैंने उससे कहा—"तुम्हारा हिसाब चुकता कर दिया जाये। मुझे पता है, तुम्हें पैसों की जरूरत थी, पर तुमने किसी संकोचवश मांगे ही नहीं। हां तो फैसला हुआ था कि तुम्हें महीने के तीस रूबल मिलेंगे, है न?"

"नहीं, चालीस।"

"नहीं, तीस। मेरी डायरी में लिखा हुआ है। मैं हमेशा तीस रूबल दिया करता हूं। हां, तो तुम हमारे यहां दो महीने रही हो, ठीक है?"

"दो महीने और पांच दिन।"

"पूरे दो महीने। मेरी डायरी में लिखा हुआ है। तो अब इन दो महीनों के नौ इतवार निकाल दो। इतवार के दिन तुम कोल्या को पढ़ाती नहीं थीं, सिर्फ सैर के लिए ही लेकर जाती थीं। और फिर तीन छुट्टियां..."

यूलिया वासीलियेवना के चेहरे पर परेशानी उभर आयी और वह अपने लिबास को उंगलियों में लेकर मरोड़ने लगी, पर एक शब्द भी न बोली।

"तीन छुट्टियां। नौ और तीन, बारह। तो बारह रूबल कम हुए। कोल्या चार दिन बीमार रहा, उन दिनों तुमने उसे नहीं पढ़ाया। सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया। और फिर तीन दिन तुम्हारे दांत में दर्द रहा, उस समय मेरी पत्नी ने तुम्हें छुट्टी दे दी थी। बारह और सात हुए उन्नीस। इन्हें निकाला जाये, तो बाकी रहे......हां, इकतालीस रूबल, ठीक है?"

यूलिया की आंखों में आंसू भर आये। उसकी ठोड़ी कांप रही थी। वह घबराहट में खांसने लगी। फिर उसने अपनी नाक

साफ की। मगर बोली कुछ नहीं।

"और नये साल के दिन तुमने एक कप-प्लेट तोड़ डाले। दो रूबल इनके घटाओ। वैसे उनकी कीमत इससे ज्यादा है, वह हमारी पैत्रिक संपत्ति थी। पर खैर, छोड़ो इसे। एक और बात। तुम्हारी लापरवाही से कोल्या ने पेड़ पर चढ़कर अपना कोट फाड़ डाला था, दस रूबल उसके घटाओ। और फिर तुम्हारी निगरानी में लापरवाही के कारण ही नौकरानी वान्या के बूट लेकर भाग गयी। तुम्हें उन पर नजर रखनी चाहिये थी। आखिर तुम्हें अच्छी तनख्वाह मिल रही है। सो पांच रूबल उसके कम हुए ...... दस जनवरी को दस रूबल तुमने मुझसे उधार लिये थे।"

"नहीं, मैंने नहीं लिये थे।" यूलिया ने होंठों में ही कहा।

"पर मेरी डायरी में लिखा हुआ है।"

"तब, अच्छा......शायद......"

"इकतालीस में से सत्ताईस निकालो। बाकी रह गये चौदह।"

यूलिया की आंखों में आंसू उमड़ आये। उसकी छोट्री-सी पतली सुंदर नाक पर पसीना चमकने लगा।

"मैंने सिर्फ एक बार ही पैसे लिये थे," उसने कांपती हुई आवाज में कहा- "मैं आपकी पत्नी से तीन रूबल लिये थे...... इससे ज्यादा कभी कुछ नहीं लिया।"

"अच्छा! यह तो मैंने डायरी में लि ही नहीं। तो चौदह में से तीन निकालो। बा बचे ग्यारह। सो यह रही तुम्हारी त ख्वाह। तीन, तीन, तीन......एक और ए रख लो इसे संभालकर।"

मैंने उसे ग्यारह रूबल दिये। उ कांपती हुई उंगलियों उन्हें पकड़ा और अ जेब में रख लिया।

मातीस का एक चित्र

"धन्यवाद!" उ बहुत ही हौले-से होंठों होंठों में कहा।

मैं एकाएक उछल खड़ा हो गया और क में इधर-उधर घूमने ल मुझे बेहद गुस्सा रहा था।

"तुमने धन्यवाद क कहा?" मैंने पूछा।

"पैसों के लिए।"

"लानत है! क्या तुम देखती नहीं कि मैंने तुम्हें धोखा दिया है? मैंने तुम्हारे मार लिये हैं और तुम इस पर मुझे धन्य कहती हो!"

"दूसरी कई जगह लोगों ने काम क कर एक भी पैसा नहीं दिया।"

"कुछ भी नहीं दिया? वैसे इसमें हैर भी क्या है? मैं तुम्हें परख रहा था......

मैं तुम्हें अस्सी रूबल ही दूंगा। यह रही पूरी रकम इस लिफाफे में। भला, इतना नीच भी कोई हो सकता है? तुमने विरोध क्यों नहीं किया? अपना मुंह बंद क्यों रखा? भला दुनिया में इतना बेरहम आदमी भी कोई होगा? तुम इतनी सीधी-सादी क्यों हो?"

उसके होंठों पर हल्की तीखी-सी मुस्कराहट आयी। उसके चेहरे पर मैंने पढ़ा—"हां, यह संभव है।"

मैंने उससे माफी मांगी कि उसे व्यर्थ में ही परेशान किया और जब मैंने अस्सी रूबल उसे दिये, तो उसे हैरानी हुई। तब उसने कई बार मुझे धन्यवाद कहा और कुछ डरते हुए वहां से चली गयी। मैं उसे देखता हुआ सोचने लगा कि दुनिया में ताकतवर बनना कितना आसान है। —रूपांतर : सुखबीर

★

खां साहब अपने प्रिय मित्र को घर आया देख खुशी से उछल पड़े—"कहिये, क्या खिदमत करूं आपकी? चाय मंगवाऊं या लस्सी?"

"तकलीफ न कीजिये, मैं अधिक देर बैठ न सकूंगा......।"

"अजी, बस दो मिनिट में ताजी लस्सी मंगवाये देता हूं।" कहकर उन्होंने नौकर को बाजार भेज दिया। फिर दोनों बातों में मशगूल हो गये। खां साहब बीच-बीच में कहते जाते थे—"अब नौकर बाजार के नुक्कड़ पर होगा, अब दुकान पर होगा, अब लस्सी लेकर चल पड़ा होगा, और अंत में उन्होंने आवाज दी—"क्यों अली, ले आया लस्सी?"

"जी सरकार।" लस्सी हाजिर थी। मित्र महोदय बड़े प्रभावित हुए।

अगली बार जब खां साहब उनके यहां पधारे, तो दुआ-सलाम के बाद वे बोले—"आपके लिए आज मैं खास बंगाली रसगुल्ले मंगवाता हूं......खाकर देखियेगा, बड़े लाजवाब बनाता है।"

उन्होंने नौकर को रसगुल्ले लाने भेज दिया और खां साहब से बातचीत करने लगे। लेकिन रह-रहकर यह कहना न भूले कि उनका नौकर बड़ा तेज चलता है, अब तक तो दुकान पर पहुंच गया होगा, अब उसने रसगुल्ले चखे होंगे, अब दोने में बंधवाये होंगे। अब वह लौट पड़ा होगा। लीजिये, वह आ भी गया। अरे रामू, ले आया रसगुल्ले?"

"नहीं मालिक, अभी तो जूते ही ढूंढ़ रहा हूं।"

× × ×

पिता—(अपने मित्र से) "पिछले दस वर्ष से मेरा लड़का कुछ विशेष योग्यताएं हासिल करने के लिए विदेश में है।"

मित्र—"अच्छा! क्या-क्या योग्यताएं हासिल की हैं उसने अब तक?"

पिता—"निश्चित रूप से तो मैं कुछ नहीं जानता। लेकिन हां, पुलिस ने उसकी खोज करनेवाले को पांच हजार रुपये का इनाम देने की घोषणा की है।"

★

प्रार्थना फल गयी

• स्टार जेंकिस •

जीवन की जटिल परिस्थितियों में ईश्वर की महान सत्ता और उसके शाश्वत संदेश का अनुभव व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। एक वार अपनी नौकरी की सामान्य दिनचर्या में मुझे कुछ इसी प्रकार का अनुभव हुआ और वह क्षण आज भी मेरी स्मृति में अमर है।

१९५६ के ग्रीष्म में मैं योस्मीन नेशनल पार्क में फारेस्ट-रेंजर के पद पर कार्य कर रहा था। मुझे अपने चारों ओर के १०० वर्ग मील के क्षेत्र की सुंदर प्रकृति को आग से और लोगों की विध्वंसात्मक प्रवृत्ति से सुरक्षित रखना था। मैं अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ ७,५०० फुट ऊंचे स्थान हारडिन लेक पर रहता था। यहां पर नितांत एकांत था; किंतु हमें यह स्थान अच्छा लगता था।

ऐसे वन्य स्थानों में सप्ताहांत में लोगों की भीड़ के कारण दुर्घटनाओं का जोर रहता है, अतः काम की भी अधिकता होती है। इसलिए उस ग्रीष्म में हम लोग रविवार को बचे नहीं जा सके थे और इसका मुझे काफी खेद भी था।

फिर वह सप्ताह आया, जिसमें आग-जनी का तांता लग गया। एक दोपहर को मुझे सूचना मिली कि मेरे हल्के के एक छोर पर विजली गिरी है। मुझे तुरंत वहां जाकर उस स्थान का निरीक्षण करना चाहिये। उस स्थान की ऊंचाई लगभग १०,००० फुट थी। और यह सब कुछ संध्या से पहले हो जाना चाहिये था।

मैंने अपने घोड़े की जीन कसी और साथ में एक खच्चर पर जरूरी सामान लेकर उस पर्वत-श्रेणी पर चढ़ने लगा। इसी समय हड्डी कंपा देनेवाली शीत-लहर के साथ बारिश शुरू हो गयी। वर्फीली आंधी ने आकाश के घने भयावह वादलों को छितरा दिया और उनकी टकराहट से वार-बार बिजली कौंधने लगी। कुछ समय पश्चात् बारिश के साथ बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। तभी मुझसे १०० गज की दूरी पर गोली की-सी आवाज करती हुई बिजली गिरी। मेरा घोड़ा भयभीत होकर एकाएक किनारे की ओर कूद गया। फिर भी मैं उसे मजबूती से पकड़े रहा।

नौ हजार फुट की ऊंचाई पर हमने नीचे की ओर उतरना आरंभ किया। ५ बजे शाम के करीब मैं योस्माइट क्रीक पहुंचा। यहां पहुंचकर आगे बढ़ने में झिझक होने लगी। मुझे रास्ते का पता नहीं था। घोड़ा बुरी तरह हांफ रहा था, टट्टू बेमन होकर चल रहा था और मैं भी थका-थका सोचता

हुआ चल रहा था कि क्या रात्रि से पूर्व कार्य निबटाया जा सकेगा ?

मैं थोड़ी देर के लिए रुक गया । घोड़ा घास चरने लगा । मैंने पास के स्रोत से एक कप पानी लिया और वहीं बैठकर नाश्ता करने की सोचने लगा । मेरे पास केवल आधी ही रोटी थी । मैंने मौन प्रार्थना की और नाश्ता करने लगा ।

सहसा अंतरात्मा से आवाज उठी—"देव, समय बहुत हो गया है । अब मुझे आपकी सहायता चाहिये ।"

और तभी मुझे कुछ याद आने लगा । मैंने नतमस्तक होकर प्रार्थना की—"देव ! मेरा यह शरीर चूर-चूर हो चुका है । इसे संभालिये प्रभु !"

मैंने जल-स्रोत से एक कप पानी और लिया और कहा—"मेरे रक्त का यह नव्य प्रवाह है देव ! तुम इसका पान कर लो । इसे स्वीकार कर लो ।"

अब मुझे लगने लगा कि मैं एक पवित्र स्थान में हूं, ईश्वर के प्राकृतिक गिरजे में हूं और ईश्वर स्वयं मेरे निकट है। दूसरे ही क्षण मुझे यह ज्ञान हो गया कि मुझे किस राह से जाना है ।

सो मैंने निकटवर्ती जल-स्रोत को पार करने के लिए अपने घोड़े को आगे बढ़ाया । लेकिन पानी लगातार तेज होता जा रहा था । थोड़ी ही देर पहले का वह पहाड़ी झरना मिनिटों में ही डेढ़ फुट और गहरा हो गया ।

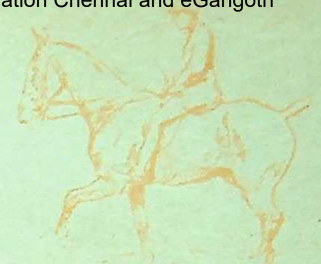

वर्षा और ओलों की भयंकरता ही कुछ कम नहीं थी । यह मुसीबत तो उनसे भी बड़ी थी ।

मैं सोचने लगा कि यदि स्रोत का यह जल ईश्वर के रक्त का नव्य प्रवाह है, तो शायद वह मुझे यह दिखला देना चाहता है कि मेरे प्रति उसकी असीम समवेदना स्वर्ग से निःसृत हो रही है । मुझे तो सिर्फ अपनी प्यास बुझानी थी; लेकिन बदले में वह मुझे इतना दे रहा था, जिसकी आकांक्षा मुझे कदापि नहीं थी ।

जल के निरंतर बढ़ते जाने पर भी मैं आगे बढ़ता ही गया और अंत में घटना-स्थल पर पहुंच गया । वहां एक जला हुआ लक्कड़ पड़ा था । वहीं बिजली गिरी थी और धरती के भीतर धंस गयी थी । मैंने ऊपर की ओर आंखें उठाकर देखा । संध्या का सूर्य चमक रहा था । अब आकाश में सतरंगा इंद्रधनुष खिंच गया था । यह संध्या की प्रार्थना का समय था ।

मैंने आत्मविभोर होकर कहा—"हे सृष्टि के नियामक, हे परम पिता, तेरी जय हो !" और प्रसन्न मन से घोड़े को नीचे घर की तरफ मोड़ दिया ।

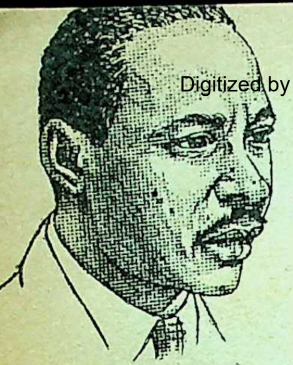

गत वर्ष अप्रैल में बर्मिंघम में नीग्रो नागरिक समानाधिकारों के लिए विराट् प्रदर्शन हुआ। कुछ पादरियों ने उसे 'अदूरदर्शितापूर्ण और असामयिक' कहा। नीग्रो नेता रेवरेंड मार्टिन लूथर किंग ने 'पादरी भाइयों के नाम' इस खुले पत्र में उन्हें जवाब दिया। पत्र जो कि टायलेट पेपर और अखबारों के हाशियों पर लिखकर चोरी से जेल से बाहर भिजवाया गया था, निःसंदेह एक क्लासिक है। उसमें एक जाति की ही नहीं, समस्त दलित मानवता की आत्मा की पुकार है।

हमसे यह न कहो कि......सब्र करो

अपने संवैधानिक और ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों के लिए हम ३४० साल से भी अधिक प्रतीक्षा कर चुके हैं। एशिया और अफ्रीका के राजनीतिक स्वतंत्रता की दिशा में जेट-यान की रफ्तार से अग्रसर हो रहे हैं। और हम हैं कि अभी होटल में एक कप कहवा खरीदने का हक पाने के लिए टट्टूगाड़ी की चाल से सरक रहे हैं। मैं सोचता हूं, जिन्होंने वर्णभेद के विषैले तीर कभी नहीं झेले हैं, उनके लिए यह कहना आसान है कि......सब्र करो।

लेकिन क्या आप द्वेष से तिलमिलाती भीड़ को आपकी माताओं व पिताओं को मनमानी सजा देते देख चुके हैं? मौज में आकर आपके भाई-बहनों को पानी में डुबकी खिलाकर जान से मारते देख चुके हैं? नफरत से भरी पुलिस को आपके काले भाई-बहनों को गालियां देते, लतियाते, पीटते और जान से मार डालते तक देख चुके हैं? क्या आपने अनुभव किया है कि जब आप अपनी छः साल की नन्ही बच्ची को समझाना चाहते हैं कि अभी टेलिविजन पर जिस आमोद-प्रमोद-वाटिका का विज्ञापन दिखाया गया था, उसमें वह नहीं जा सकती, तब आपकी जीभ अचानक ऐंठ जाती है, जबान लड़खड़ाने लगती है? क्या आपने देखा है कि 'फन-टाउन' काले बच्चों के लिए बंद हैं, यह सुनकर उसकी छोटी-छोटी आंखों में आंसू उमड़ आते हैं, और यह पाया है कि उसके छोटे-से मानस-आकाश पर हीन-भावना की मनहूस घटाएं घिरने लगी हैं और गोरों के प्रति उसके हृदय में अनजाने ही पनपती हुई कटुता उसके छोटे-से व्यक्तित्व को तोड़ने-मरोड़ने लगी है? क्या "गोरे" और "काले" के खिजानेवाले बोर्ड दिन-रात आपका अपमान करते हैं? क्या आपका नाम निरा "निगर", बड़ी उम्र में भी "बाय", अथवा महज "जान" बनकर रह गया है? क्या आपकी पत्नियों और माताओं को कभी सम्मान-सूचक "श्रीमती" विशेषण सुनने को नहीं मिलता? क्या मर्द

नीग्रो होना आपको दिन-भर [illegible] किये रहता है ? क्या आपको हरदम सहम-सहमकर सांस लेनी पड़ती है ? अगले क्षण क्या होगा, इसका अनिश्चय बना रहता है ? भीतर का भय और बाहर की खीज आपको खाते रहते हैं ? अपने "नाचीज" होने की पतनकारी भावना से प्रतिपल आपको जूझते रहना पड़ता है ?......यदि हां, तो आप यह समझ पायेंगे कि सब्र करना हमारे लिए कठिन क्यों है ।

० ० ०

अपने वक्तव्य में आपने जोर देकर कहा है कि हमारी कार्रवाइयां शांतिपूर्ण होते हुए भी निंदनीय हैं; क्योंकि उनसे हिंसा को उत्तेजना मिलती है । क्या यह ऐसा ही नहीं है, जैसे किसी लुटे हुए आदमी को यह दोष देना कि उसने पैसा जोड़कर लूट व डकैती को उत्तेजना दी ? क्या यह ऐसा ही नहीं है, जैसे सुकरात को यह दोष देना कि उसकी अडिग सत्य-निष्ठा और दार्शनिक जिज्ञासा ने बहकी हुई जनता को उसे हलाहल पिलाने की उत्तेजना दी ? क्या यह ऐसा ही नहीं है, जैसे ईसा को यह दोष देना कि उसकी अनुपम ईश्वरानुभूति और ईश्वरेच्छा के प्रति सतत समर्पण-भावना ने ही शूलारोपण के दुष्कर्म को उत्तेजना दी ?

० ० ०

सवाल यह नहीं है कि क्या हम अतिमार्गी होंगे; बल्कि सवाल यह है कि हम किस प्रकार के अतिमार्गी होंगे । क्या हम द्वेष के लिए अतिमार्गी होंगे, या प्रेम के लिए अतिमार्गी ? क्या हम अन्याय को बनाये रखने के लिए अतिमार्गी होंगे, या न्याय की स्थापना के लिए अतिमार्गी होंगे ? कैवेलरी पहाड़ी पर के उस नाटकीय दृश्य में एक ही अपराध में तीन आदमी सूली पर चढ़ाये गये थे—अतिमार्गी होने के अपराध में । उनमें से दो तो अनैतिकता में अतिमार्गी थे, और इसलिए परिस्थितियों से पराजित हो गये । तीसरा—ईसा मसीह—प्रेम में, सत्य में, भलाई में अतिमार्गी था, और इसलिए परिस्थितियों से ऊपर उठ गया । तो शायद आज दक्षिणी राज्यों को, राष्ट्र और संसार को सृजनात्मक अतिमार्गियों की जबर्दस्त जरूरत है ।

जब 'पिलग्रिम फादरों' ने प्लिमथ में कदम रखे, उससे पहले हम यहां मौजूद थे । जब जेफरसन ने इतिहास के पन्नों पर 'आजादी की घोषणा' के शानदार शब्द लिखे, उससे पहले हम यहां उपस्थित थे । दो सदियों से भी ज्यादा समय तक हमारे पुरखों ने इस देश में बिना मजदूरी के मेहनत की; उन्हीं ने कपास को फसलों का 'राजा' बनाया और उन्हीं ने पाशविक अन्याय और घोर अपमान सहते हुए भी अपने मालिकों की कोठियां खड़ी कीं—और फिर भी अपनी अथाह प्राणशक्ति के बल पर वे पनपते रहे, बढ़ते रहे । अगर दासता के वर्णनातीत अत्याचार हमें नहीं रोक सके, तो आज का यह विरोध भी असफल होकर रहेगा । हम स्वतंत्रता पाकर रहेंगे; क्योंकि हमारी बुलंद मांगों में हमारे राष्ट्र की पवित्र विरासत और ईश्वर की इच्छा मूर्तिमंत हो रही है ।

[रूपांतर : मैत्रेयी दत्ता]

★

एक बारात : एक प्रश्न

डा० जगदीशचंद्र जैन

बारातों में जाना मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। लेकिन जब मेरे मित्र का बहुत ही आग्रह हुआ, तो उसे मैं टाल न सका।

गरमी के दिन थे, इसीलिए कपड़े वगैरह तो बहुत नहीं ले जाना था, फिर भी तैयारी तो करनी ही थी। ठीक आठ बजे मोटर लेने आयी और हम लोग स्टेशन पर पहुंच गये।

वैसे कोई कंपार्टमेंट रिजर्व नहीं कराया गया था, लेकिन मित्रों ने एक डिब्बे को रिजर्व-जैसा ही बना लिया। अंदर से चाबी लगा दी और सबने अपने बिस्तर तान दिये।

गार्ड ने झंडी दिखाई, रेल ने सीटी दी और चल पड़ी। शुरू में कोई दिक्कत महसूस नहीं हुई, लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़े, स्टेशनों के प्लैटफार्मों पर स्त्री और पुरुषों के मुंड-ही-मुंड दिखाई देने लगे। इतनी दरिद्रता कभी देखने में नहीं आयी थी। कृष्णवर्ण के अर्ध-नग्न स्त्री-पुरुष सिर पर सामान की गठरी-मुठरी उठाये, एक हाथ में टीन के कनस्तर लिये और दूसरे में अपने शिशुओं की उंगलियां थामे, इधर-उधर बेतहाशा दौड़ रहे थे। उनके कुतूहल-पूर्ण चेहरों से पता लगता था कि यदि आप कंपार्टमेंट में सिर्फ दो पांवों पर खड़े-भर होने की जगह उन्हें दे सकें, तो वे जन्म-जन्मांतर में भी आपका उपकार नहीं भूलेंगे।

लेकिन कहा जा चुका है कि मेरे डिब्बे में चाबी लगी थी और स्टेशन आते ही खिड़कियां बंद कर दी जाती थीं। दरवाजे की खिड़की पर एक-दो पहलवान आदमी पहरे के लिए तैनात कर दिये जाते। यदि प्लैटफार्म पर खड़ी हुई भीड़ में से कोई अंदर झांकने की कोशिश करता या अंदर आकर खड़े-खड़े चले जाने देने के लिए अनुनय-विनय करता, तो एक साथ आवाजें उठतीं-"देखते नहीं हो, रिजर्व डिब्बा है! आगे चलो, आगे बहुत जगह खाली पड़ी है। तुम लोग भेड़ की चाल चलते हो, जिधर को एक ने मुंह मोड़ा, उधर ही सब चलने लगते हो।

जल्दी-जल्दी में जगह पाने के लिए हड़बड़ाये मुसाफिर यह भी जानने की कोशिश न करते कि डिब्बा रिजर्व है भी या नहीं। इतनी फुरसत किसे थी! अंदर आराम से बैठे या लेटे हुए मुसाफिरों की ओर बड़ी-बड़ी आंखों से घूरते हुए वे चुपचाप आगे बढ़ जाते।

गार्ड फिर झंडी दिखाता, रेल फिर सीटी देती और पहले की तरह सांप की गति से सरकने लगती। सिर पर गठरी-मुठरी

उठाये, रेल में सवार होने के लिए लालायित कितने ही मुसाफिर टुकुर-टुकुर हमें देखते रह जाते – अगली ट्रेन की प्रतीक्षा करते हुए ।

हम लोग तेलुगु-भाषी आंध्र या तेलंगाना में पहुंच गये थे । आंध्रदेश के निवासियों को महिला-प्रिय, संग्राम-प्रिय, सुंदर तथा रौद्र-भोजी कहा जाता रहा है । स्वभाव से ये क्रूर होते थे और "अटि, पुटि,' रटि" शब्दों का प्रयोग किया करते थे । प्रतिष्ठान के राजा शालिवाहन को आंध्र-वंशोत्पन्न कहा गया है । बांस के जंगलों और पहाड़ों को चीरती हुई गाड़ी आगे बढ़ रही थी । उत्तर हिन्दुस्तान के मुकाबले में यहां के लोगों की भाषा, वर्ण, वेश-भूषा और रहन-सहन कितना बदल गया है ! एक ही देश में कितनी विभिन्नता ! निर्धनता होने पर भी चेहरों पर कर्मठता और एक प्रकार का निश्छल तेज झलक रहा था ।

लगभग सुबह के सात बजे हम विकराबाद पहुंचे । कन्यापक्ष की ओर से नाश्ते का बाकायदा इंतजाम किया गया है । प्लैटफार्म पर मिठाई और नमकीन की तश्तरितां सजी हुई हैं । लेकिन गाड़ी को इतना अवकाश कहां कि हमारे नाश्ते के लिए प्रतीक्षा करती रहे । इसलिए तश्तरियां गार्ड साहब की भी नजर की गयीं, यानी अब निश्चित होकर नाश्ता किया जा सकता है ।

नग्न और अर्ध-नग्न लपलपाती हुई जीभवाले मैले-कुचैले भिखारियों के बालक अपनी सतृष्ण आंखें हमारी तश्तरियों पर गड़ाये हुए थे । बीच-बीच में पेट पर हाथ रखकर दीनतापूर्वक याचना की उनकी ध्वनि सुनाई पड़ रही थी । कुछ लोग डांट-डपटकर उन्हें भगाने की कोशिश भी करते; लेकिन मालूम होता था कि इस तरह की डांट खाकर भी वे दांत निपोरने के आदी हो चुके हैं ।

खैर, गार्ड ने चलने का सिग्नल दिया । हम लोगों ने जल्दी-जल्दी मुंह-हाथ धोया। जूठन का ढेर लग गया था । हम गाड़ी में सवार हो रहे थे और उधर भिखारी बालक आधे खाये हुए मिठाई के टुकड़ों पर टूटे पड़ रहे थे, उन्हें जल्दी-जल्दी गले में उतारने के लिए ।

गोल्लगुडा, शंकरपल्ली, नागलपल्ली, लिंगमपल्ली, संतनगर स्टेशन पीछे छूट गये, गाड़ी बेगमपेट में दाखिल हो रही थी । बारात के स्वागत के लिए अप-टु-डेट वेश-भूषा से सज्जित लोग उपस्थित थे । सुगंधित हारों को बड़े कलात्मक ढंग से सजाकर रखा गया था । उतरते ही गले-मिलाई हुई और फिर दूल्हे को हारों से लाद दिया गया । बारातियों के वक्ष:स्थल हारों की खुशबू से महक उठे थे ।

मोटरों में सवार होकर हम जनवासे में पहुंचे । स्थान रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया गया था । 'नाई,' 'धोबी' और 'शू बाय डिपार्टमेंट' (जूते पर पालिश करनेवाले) के साइनबोर्ड लगे थे । तेल, साबुन, कंघा तथा सैर करने के लिए मोटर आदि किसी चीज की कमी नहीं थी । जो चीज घर पर

नसीब नहीं होती थी, उसका यहां जी भर-कर उपयोग किया जा सकता था। बाराती जो ठहरे।

स्वागत के लिए एक बड़ा शामियाना लगा था, जो फूल-फुलवाड़ियों से अत्यंत मनोरम लगता था। बेशकीमती कालीन, गलीचे और जाजम बिछायी गयी थी। मेजों पर एक-से-एक बढ़कर स्वादिष्ट व्यंजनों के थाल और तश्तरियां सजी हुई थीं। छुरी और कांटे बड़े करीने से लगाये गये थे। रंग-बिरंगी बिजली की बत्तियों से विशाल विवाह-मंडप देदीप्यमान हो उठा था।

नगर का कोई उद्योग-पति और धनपति ऐसा न था, जो इस समारोह में उपस्थित न हुआ हो। सरकार के उच्च पदाधिकारी अपनी चाल-ढाल और वेश-भूषा से अलग पहचाने जा सकते थे। कोई शेरवानी और चूड़ीदार पाजामे में था, कोई कोट और पैंट में और कोई खादी के वस्त्र पहने गांधी टोपी लगाये था।

निजाम हैदराबाद सर मीर उस्मान अली खां बहादुर किसी खास काम में मसरूफ रहने के कारण तशरीफ न ला सके थे; लेकिन उनके साहबजादे, बराड के शाहजादे आजमजाह बहादुर उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे। अधिकांश अभ्यागतों का ध्यान उन्हीं की ओर था और लोगों की लालायित थी कि कम-से-कम, उनके पास जाकर, दूर से ही सही, उन्हें नजर-भर देखने की खुशकिस्मती हासिल करें।

फेरों का मुहूर्त आ गया था। नगर के जाने-माने ज्योतिषियों से मुहूर्त निकलवाया गया था। मंत्रपाठी ब्राह्मण अपने पोथी-पत्रे और समिधा लेकर उपस्थित थे। वैदिक विधि के अनुसार वेदी रचायी गयी। पहले चौकी पर दूल्हे को बैठाया गया, फिर बेश-कीमती सुंदर झीने वस्त्रों में लिपटी, अपनी सखियों द्वारा लायी हुई, सिमटी हुई-सी दुल्हन पास में आकर बैठ गयी। अग्निकुंड में घी की आहुति देकर उसे प्रज्वलित किया गया। मंत्रों का पाठ होने लगा। दूल्हा और दुल्हन दोनों के हाथों में पूजा की सामग्री देकर पूजा करायी जाने लगी। सप्तपदी आरंभ हुई, अर्थात् अग्नि की सात बार प्रदक्षिणा कर लेने के बाद दोनों एक-दूसरे के हो जायेंगे-पति-पत्नी बनकर रहने के अधिकारी।

वधू के लिए वेणी

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, साकेत के धनंजय सेठ ने अपनी कन्या विशाखा की विदा के समय उसे नीचे लिखी दस शिक्षाएं दी थीं: (१) ससुर के घर की आग बाहर न जाने देना (ससुर या पति के दोष को दूसरों से न कहना); (२) बाहर की आग घर में न आने देना (बाहर के लोग यदि ससुर या पति की निंदा करें, तो घर में नहीं कहना); (३)

देनेवाले ही को देना (कोई घर की चीज मांगकर ले जाता हो और उसे वापस लौटा देता हो,ऐसे व्यक्ति को ही कोई चीज देना); (४) न देनेवाले को न देना (जो न लौटाता हो, उसे न देना); (५) देनेवाले और न देनेवाले को देना (कोई निर्धन मित्र चीज लौटा सके या नहीं, फिर भी उसे देने से इन्कार न करना); (६) सुख से वैठना (सास, ससुर और पति को देखकर उठना); (७) सुख से खाना (सास-ससुर और पति से पहले भोजन न करना); (८) सुख से सोना (उनके सोने के वाद सोना); (९) आग की रक्षा करना (सास, ससुर और पति को अग्निपुंज के समान समझना) और (१०) घर के देवताओं का सत्कार करना (सास, ससुर और पति को देवता के समान पूजना)।

लेकिन यहां सप्तपदी के समय जो सात वचन दूल्हे से कहलाये जा रहे थे, वे विलकुल जुदा थे। आधुनिकता का उनमें पुट था। दूल्हा वोल रहा था–(१) परस्त्री-गमन नहीं करूंगा, (२) वेश्या-गमन नहीं करूंगा, (३) जूआ नहीं खेलूंगा, (४) उद्योग द्वारा धन का उपार्जन करूंगा, (५) आभूषणों से पत्नी की रक्षा करूंगा, (६) पत्नी को धर्म-स्थानों में जाने से नहीं रोकूंगा, (७) उससे कोई बात नहीं छिपाऊंगा और उसका गुप्त रहस्य प्रकट नहीं करूंगा। सामाजिक जीवन-संबंधी नैतिक मूल्यों में तब से कितना परिवर्तन हो गया है!

दहेज के सामान से कमरा भर गया। ऐश-आराम की कोई चीज ऐसी न बची थी, जो मौजूद न हो। फिर भी दुल्हन की मां बड़े विनम्र भाव से कहे चली जा रही थी–"हमने दिया ही क्या है!"

विदा की वेला बड़ी नाजुक होती है। कण्व ऋषि तक अपने आंसुओं को न रोक सके थे; आश्रम के फूल-पौधे, मृगशावक और पाषाण तक क्रंदन कर उठे थे।

रास्ते के लिए खाने-पीने आदि का सामान लादा जा रहा था। हम लोग गाड़ी में सवार हो गये थे। नवदंपति को अलग डिब्बे में बैठाया गया था।

मेरा दिल न जाने क्यों भर-भरकर आ रहा था। जिस कन्या को मां-बाप ने पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, योग्य वर ढूंढ़ने के लिए आकाश-पाताल एक किया, मुंह-मांगा दहेज दिया और बारातियों के स्वागत में कोई कमी न उठा रखी, आज वह घर छोड़कर जा रही थी। एक ओर वियोग के दुःख से वह कातर जान पड़ती थी और दूसरी ओर उसने एक छैल-छबीले नौजवान का हाथ पकड़ा था, जो उसे अपने हृदय की रानी बनायेगा।

लेकिन सवाल है, क्या बस यही नारी का जीवन है कि किसी पुरुष का हाथ पकड़कर जीवन को यों ही गुजार दिया जाये? यदि वह विवाह-बंधन में बद्ध होती है, तो उसका स्वच्छंद विकास मारा जाता है; और यदि वह अविवाहित रहना स्वीकार करती है, तो उसका स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता। आखिर उसके जीवन का उद्देश्य क्या हो सकता है?

* * *

सरकस व्यवसाय ही नहीं, कला है, उससे बढ़कर जीवन-दर्शन है... एक विख्यात भारतीय सरकस के संचालक के अनुभव व अनुभूतियां।

सरकस मेरी जिंदगी

प्रो० के० दामोदरन

शेक्सपियर ने इस संसार को रंगमंच कहा है–वे नाटककार थे। मुझे यह संसार एक सरकस लगता है–मैं जन्म से ही सरकसवाला हूं। मेरे स्वर्गीय पिता प्रो० कृष्णन सरकस चलाते थे।

इस समय मैं साठ वर्ष का हूं। इन साठ वर्षों में मैं सरकस के साथ ही जिया हूं। सरकस मेरे जीवन का सर्वस्व रहा है। मेरे पिताजी ने २ अक्टूबर १९१३ के दिन केरल में 'लेडी सरकस' के नाम से अपनी कंपनी शुरू की थी। मैं उन दिनों पढ़ता भी था और पिताजी से इस कला की शिक्षा भी लेता था। बचपन से ही मैंने उनकी इस धरोहर को संभालने का निश्चय किया। परिणाम-स्वरूप पढ़ाई के तुरंत पश्चात् मैंने यह काम संभालना शुरू किया। मैं सरकस के हर कार्य में हिस्सा लेता और प्रवीणता पाने की कोशिश करता रहा।

पिताजी के शुरू किये हुए 'लेडी सरकस' का नामकरण मैंने अपनी बेटी के नाम पर 'कमला सरकस' किया। २ अक्तूबर १९६३ के दिन हमने मद्रास में इसकी स्वर्ण-जयंती बड़ी धूमधाम से मनायी। इस सरकस को लेकर मैं विदेशों में गया, जहां मैंने लगातार बारह वर्ष बिताये। इस अवधि में मैं दक्षिण-पूर्वी एशिया में लगभग ३६० जगहों पर–यथा श्रीलंका, हांगकांग, मलाया, बर्मा, जावा, सुमात्रा, मनीला और चीन आदि देशों में प्रदर्शन करता रहा और हर जगह पर मैंने भारतीय राष्ट्रध्वज को बड़े गौरव के साथ फहराया। सरकस एक प्रकार का सांस्कृतिक दूतावास होता है।

संसार-भर के सरकसों की एक-सी भाषा है, एक-से खेल हैं, नपी-तुली चाल और एक-सा ही प्रयोजन है। सरकस-स्थल को किसी भी भाषा में 'एरीना' ही कहा जाता है और

शिक्षक को 'रिंग मास्टर'। इसके अधिकांश कार्य-कलाप विश्व-भर में एक-से ही हैं। यहां तक कि घोड़ों के नपे-तुले २४ कदम भी सभी जगहों पर एक-से हैं। 'राइडिंग ऐक्ट' में अगर अमरीका अथवा रूस का कोई भी रिंग मास्टर भारतीय सरकस के कलाकारों (मनुष्यों और पशुओं) का खेल दिखाना चाहे, तो उसे कोई भी असुविधा नहीं होगी; क्योंकि कलाकार, भले ही बोलचाल की भाषा न समझते हों, सरकस की भाषा सब समझते हैं। फिर चाहे वह 'डबल पोल बैलेंस' हो या 'स्पेस फ्लाइंग' या और कोई चीज, उनके आदेश और गतिविधियां सर्वत्र समान हैं।

हमारे स्टाफ में इस समय आठ सौ व्यक्ति हैं, जिनमें १५० कलाकार हैं, जो छः वर्ष से लेकर ७३ वर्ष की अवस्था तक के हैं। हमारे पास ३०० पशु कलाकार हैं, जिनमें दो चिंपैंजी भी हैं। हमारे अतिरिक्त शायद ही किसी के पास चिंपैंजी हों। एक चिंपैंजी की कीमत दस और पंद्रह हजार के बीच होती है। हमारे ये चिंपैंजी रेलगाड़ी चलाते हैं। एक ड्राइवर बनता है और दूसरा बनता है गार्ड।

इन भोले-भाले [illegible] खूंखार माने जानेवाले पशुओं को केवल प्यार से ही वश में किया जा सकता है। प्यार में मनुष्य धोखा दे सकता है; लेकिन पशु नहीं। हम वास्तव में अपने अज्ञान के कारण उन्हें पशु मानते हैं। अन्यथा उनका व्यवहार सुलझे हुए मानवों से भी श्रेष्ठ होता है। यह दूसरी बात है कि जिस प्रकार आदमी अपनी आजादी चाहता है, पशु भी बंधन में बंधना नहीं चाहता।

शेर और चीता सम्मान का व्यवहार पसंद करते हैं। 'ओ, अरे' संबोधनों से वे चिढ़ जाते हैं। जिस प्रकार आदमी अपने काम की प्रशंसा चाहता है, ठीक उसी भांति ये भी मालिक से प्रोत्साहन और शाबाशी चाहते हैं तथा दर्शकों से वाहवाही। आखिर भगवान भी तो स्तुति से प्रसन्न होते हैं।

शिक्षा के दौरान यदि कोई पशु भूल

सरकस : आइसेंस्टाइन-कृत एक स्केच

पनामा

पीना और पिलाना उम्दा बात है!

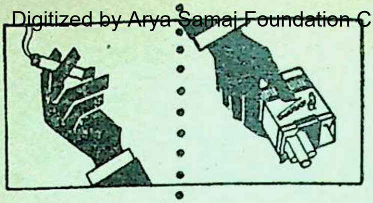

Panama
Panama
Panama
20
CIGARETTES
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves.

पनामा

ये आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

विशेषरूप से समिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई-५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT. (P) 634 Hin. Greens' Advtg.

करता है, तो उसे इसका एहसास कराना पड़ता है। अन्यथा केवल मारने से वे जिद्दी बन जाते हैं, जिसका परिणाम सदा बुरा ही रहता है। जिद चाहे इंसान की हो या पशु की, मूलतः बुरी चीज है। उसमें विवेक नहीं कायम रहता ।

मां-बाप के लिए जिस प्रकार अपने बच्चे अजीज होते हैं, उसी भांति हमारे लिए अपने सरकस के जीव-जंतु बच्चों से कम प्यारे नहीं होते। इस रूप में मैं काफी भाग्यशाली हूं कि मुझे कभी भी अपने इन बच्चों से कोई शिकायत नहीं रही है। हम स्वयं भले ही भूखे रहें, किंतु इन पशुओं की भूख हम सहन नहीं कर सकते। हम अपने से अधिक ध्यान इन पशु-रूपी बच्चों का रखते हैं। आखिर इन पर ही तो किसी भी सरकस की प्रतिष्ठा निर्भर है ।

मुझे कुछ बातें विशेष रूप से ध्यान में आ रही हैं। सबसे पहली यह कि भारतीय सरकस के पितामह स्वर्गीय प्रो० छत्रे की स्मृति में आज तक कोई भी स्मारक नहीं बन पाया है। हमारे देश के लोग शायद इस बात से अपरिचित हैं कि भारत में सरकस का आविर्भाव कैसे हुआ ।

भारतीय सरकस का जनक महाराष्ट्र रहा है–विशेषतः बंबई । यहां के आजाद मैदान में १८५७ में प्रथम भारतीय सरकस की स्थापना हुई थी । मैं चाहता हूं कि इस आजाद मैदान का नाम 'सरकस मैदान' रखा जाये और यहां पर प्रो० छत्रे का एक स्मारक बने ।

बात आज से सौ साल से अधिक पुरानी है। भारत में पहली बार एक विदेशी 'विलसन सरकस' आया था और बंबई नगर में उसका प्रदर्शन हो रहा था । उसके मालिक ने एक प्रकार से चुनौती-सी दी थी कि उसके अतिरिक्त दुनिया का कोई भी आदमी घोड़ों को उस तरह नहीं घुमा सकता, जिस तरह वह घुमाता है । इस पर रियासत इचलकरंजी के महाराजा के छत्रधारी को ताव आ गया । वह स्वयं घोड़ों का विशेषज्ञ था, उसने चैलेंज स्वीकार किया और कुछ काल बाद एरीना में उतरकर घोड़ों को उसी प्रकार नचाया, जिस प्रकार नचाना और लोगों को असंभव लगता था । 'विलसन सरकस' का मालिक काफी शर्मिंदा हुआ ।

महाराजा साहब ने अपने छत्रधारी के कौशल से संतुष्ट होकर से पुरस्कार में स्वर्णमुद्राएं दीं और उसे प्रेरित किया कि वह भी अपना सरकस शुरू करे । राजकोष से उसे धन मिला और इस प्रकार प्रथम भारतीय सरकस की नींव पड़ी । और वे छत्रधारी ही प्रो० विष्णुपंत छत्रे थे ।

बाद में देवल सरकस, परशुराम सरकस, इंडियन बहादुर सरकस, भारत सरकस, शेलार सरकस, कार्लेकर सरकस आदि बहुत-सी कंपनियां अपनी-अपनी विशेषताओं के बल पर ख्याति अर्जन करती रहीं। किंतु समय की गर्द ने लगभग ३५ महाराष्ट्रीय कंपनियों को अपनी कब्र में सदा के लिए दफना दिया ।

लोकमान्य तिलक के सहयोग तथा मार्ग-

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट

से आप के कपड़े चमक उठते हैं!

नया सुंदर रैपर और नया मनोहर रूप

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S. 53-77 HI

दर्शन को भारतीय सरकस कभी भी भुला नहीं सकता। उन्होंने जहां गीता-रहस्य का बोध सकल संसार को कराया, वहां मलखंभ और फिजिकल कल्चर को सरकस में स्थान दिलवाया। अन्यथा तब तक इस अखाड़े में केवल पशुओं के खेलों का ही बोलवाला था। कन्नन बंबइयो ने रस्सी-नाच द्वारा हिटलर से 'दि डेविल आन दि रोप' की उपाधि प्राप्त की थी।

सरकस के उत्थान में महाराष्ट्र ने धोत्रे और मालिक जैसे ट्रेनर दिये हैं; और केरल ने बड़े-बड़े कलाकार। उनमें मदनन महान, कन्नन बंबइयो, केशवन, कोनन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

एक बार डाकू मानसिंह हमारा खेल देखने आगरा आया था। फिर जब हम जयपुर जा रहे थे, तो उसका दल एक गांव में लूटमार कर रहा था। लेकिन हमें उसने कुछ नहीं कहा। मानसिंह से वह मुलाकात कभी-कभी याद आती है।

सरकस की लड़कियां

सरकस मेरे लिए एक मिशन रहा है। यह शिक्षा का बहुत बड़ा माध्यम है। देश में मुश्किल से पांच-छः बड़े चिड़ियाघर हैं। किंतु हमने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अपने खेल किये हैं। कश्मीर में हाथी को देखना मरुस्थल में पानी देखने के समान है। इसी प्रकार गांव के लोग चाहे शहर देखने न आ पायें, पर वे सरकस देखने अवश्य पहुंच जाते हैं। इसके चमत्कारी खेलों को देखकर उनमें विस्मय के साथ-साथ आत्मविश्वास बढ़ता है कि वे भी यदि चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। सरकस जहां मनोरंजन करता है, वहां जीवन में निडरता पैदा करने में भी सहायक बन जाता है। वह शरीर को स्वस्थ रखने की प्रेरणा देता है।

आज देश में एन० सी० सी०, होम गार्ड, प्रादेशिक सेना आदि में शारीरिक श्रम आवश्यक है। हमारा भी एक विशेष शिक्षण-शिबिर है, जिसमें लगभग दो सौ बालक हैं। पांच-छः साल की आयु से हम ही उन्हें विद्योपार्जन के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा भी देते हैं। इससे उनके शरीर मोम की तरह लचीले और फौलाद से मजबूत बन जाते हैं। मेरा विश्वास है कि हमारे ये कलाकार किसी भी सैनिक से कम बहादुर नहीं हैं। वे मौत का हर समय आलिंगन करने को तैयार रहते हैं। मृत्यु से उन्हें तनिक भी भय नहीं है।

देश में चीनियों के आक्रमण के दौरान जब इमर्जेन्सी लागू हुई थी, तो हम कलकत्ता में थे। हमें खेल दिखाने की अनुमति नहीं मिली। इसलिए हम वहां से डेढ़ हजार मील

खट्टी बदहजमी, कलेजे की जलन और पेट की गड़बड़ी में।

शीघ्र आराम के लिये

फिलिप्स

आदि

मिल्क आँफ मैग्नेशिया

टेबलेट्स

TABLET
PHILLIPS
REGD TRADE MARK
MILK OF MAGNESIA
TABLET
PHILLIPS

४ टिक्यों वाले
पैकेट का मुल्य सिर्फ २० न० पै०

फिलिप्स के टिकियों में असली फिलिप्स मिल्क ऑफ मैग्नेशिया शामिल है, जो समस्त परिवार के लिये प्रभावपूर्ण और नये शीघ्र आराम पहुँचानेवाला सुविधा जनक तरीका है। जबही खट्टी बदहजमी हो फिलिप्स की कुछ टिकिया खा लीजिये। यह कलेजे की कष्टदायक जलन तथा वायु और मतली को शीघ्र ही दूर करती है। पेटके खट्टापन को दूर करती है और दूषित श्वास को ठीक करती है। समस्त परिवार के प्रयोग के लिये बचतवाले ७५ और १५० टिकियों वाले बोतलों में भी मिलती है। आज ही व्यवहार करके देखिये।

M.4711—MOM/84

अब

अधिक सुरक्षा के लिये सुविधाजनक
एल्यूमिनियम फायल के पैकेट में मिलती है।

रजिस्टर्ड युजर
डेज मेडिकल स्टोर्स (मैन्युफैक्चरिंग) प्रा० लिमिटेड

चलकर मद्रास आये । खर्च-पर-खर्च बढ़ते जा रहे थे; पर आय का कोई साधन नहीं था । मद्रास में खेल के समय शामियाने में आग लग गयी । शामियाने को बचाने से ज्यादा हमने दर्शकों, कलाकारों व पशुओं की जान बचाना जरूरी समझा ; अतः वह जल-कर खाक हो गया ।

शामियाने के बगैर सरकस खेलना संभव नहीं और उसकी लागत साठ-सत्तर हजार रुपये से कम नहीं बैठती । विपदा-पर-विपदा आती रही । फिर भी हमने साहस नहीं गंवाया । ऐसे समय मद्रास सरकार ने हमें मनोरंजन-कर से मुक्त कर, बड़ी सहायता की । फिर महाराष्ट्र सरकार ने बंबई में हमें अपने कार्यक्रम के लिए अच्छा स्थान दिलवाकर हमारे पांव मजबूत किये । हम इन सरकारों के कृतज्ञ हैं ।

एक बात और । जब हम दिल्ली में अपना प्रदर्शन कर रहे थे, तो रूस के डाइरेक्टर आफ सरकस भी खेल देखने पधारे थे । वे काफी प्रभावित हुए । उन्होंने कहा—"रिंग लिंग और हेगनबेग सरकसों के पतन के बाद केवल रूसी सरकस ही बचा था । लेकिन आपका सरकस देखकर बड़ी खुशी हुई कि आपने भारतीय कला-परंपरा को जीवित रखा है । भारतीय सरकस का स्तर काफी ऊंचा है ।"

बाद में बातों-बातों में जब मैंने उन्हें यह बताया कि मैंने एक लड़के को 'ट्रिपल समरसाल्ट' में पारंगत किया है, तो वे क्षण-भर को अवाक् देखते रहे और बाद में बोले—"यह असंभव है ।" लेकिन मैंने असंभव को संभव करके दिखाया । वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे रूस आने की दावत दी । लेकिन मैं अभी तक जा ही नहीं पाया हूं ।

★

बंबई की लोकल ट्रेन में दो व्यक्तियों में राजनीति पर जोर की बहस छिड़ गयी । एक बोला—मैं जानता हूं कि मैं क्या कह रहा हूं, मैं रोज दो समाचार-पत्र पढ़ता हूं । दूसरा—क्यों नहीं ! दो ही क्यों, तुम रोज तीन समाचार-पत्र भी पढ़ सकते हो, अगर ट्रेन में तीसरी बार जगह बदल लो ।

× × ×

थाने में दो चोर सिर झुकाये खड़े थे । दोनों के हाथों में हथकड़ियां पड़ी थीं ।

थानेदार– (एक कैदी से) "तुम्हारा नाम ?"

पहला चोर–"चटर्जी ।"

थानेदार–(भौंहें तानकर दूसरे से) "और तुम्हारा ?"

दूसरा चोर–"बनर्जी ।"

थानेदार (अपने मुंशी से)– "देखा, काम चोरी का करते हैं और नाम के साथ जी लगाते हैं । लिख दो, चटर-बटर ।"

★

HIN

Loma
REGD.
Loma
HAIR OIL
LOMA PRODUCTS INDIA

अब
लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

१०० ग्राम
[illegible]

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं

शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
पुजेंटस: **सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -२**

मौत की दहलीज पर

जान गंथर

पंद्रह साल पहले विख्यात अमरीकी राजनीतिक लेखक जान गंथर ने अपने सत्रह वर्षीय पुत्र जानी की मृत्युकथा को 'डेथ बी नाट प्राउड' नाम से लिपिबद्ध कर एक आधुनिक क्लासिक की सृष्टि कर डाली। जानी तीन वर्ष तक कैंसर से वीरतापूर्वक जूझा। अंत में मौत उसे उठा तो ले गयी, लेकिन चोर की तरह चुपचाप। आत्मा की अपराजेयता की इस गाथा ने विश्व-भर के लाखों कैंसर-रोगियों को एवं कैंसर को परास्त करने के लिए संघर्ष-निरत चिकित्सकों को अनुप्राणित किया है।

जानी [illegible] और मैं उसे बेहद प्यार करते थे। परंतु इस पुस्तक में मैं अपने बेटे जानी के संस्मरण प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं; बल्कि मौत के साथ एक लड़के की बहादुराना लड़ाई की सीधी-सच्ची कहानी कहने जा रहा हूं।

मस्तिष्क में फोड़ा हो जाने के कारण, जानी को कैंसर हो गया था। उसकी यह बीमारी बहुत दिनों तक चली; लेकिन जिस सहनशीलता और विलगता के साथ जानी ने इस घातक रोग के साथ वीरतापूर्ण संघर्ष किया, उससे शायद मेरे-जैसे पुत्रविरह-विह्वल पिताओं को कुछ सांत्वना व साहस मिल सके—इस आशा से मैंने इस मार्मिक कहानी को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न किया है। कैंसर ने उसका शरीर नष्ट अवश्य कर दिया; परंतु उसकी अजेय आत्मा आज भी जीवित है।

जानी का जन्म ४ नवंबर १९२९ को पेरिस में हुआ। उसका बाल्यकाल हमारे साथ घूमने में ही बीता और जब वह अमरीका आया, उस समय उसकी आयु साढ़े सात वर्ष की थी। आरंभ में कई स्कूलों में शिक्षा पाने के बाद, अंत में उसे प्रख्यात डियरफील्ड अकादमी में भर्ती करा दिया गया था। स्कूल के दिनों में भी उसके शौकों का अंत न था। डाक-टिकटों के संग्रह से लेकर खनिज-विज्ञान तक, बिजली की रेलगाड़ियों से लेकर पाकविद्या तक; सबमें उसकी रुचि थी। बारह साल की आयु में भी वह मुझे शतरंज में हरा देता था। इसी आयु में उसे ऋतु-विज्ञान से दिलचस्पी हो गयी और उसने अपने कमरे में तरह-तरह के मानचित्र और यंत्र जमा किये।

एक बार उसे बिना मिट्टी की बागवानी करने का शौक भी चर्राया था। मिट्टी के स्थान पर उसने 'हाइड्रोपोनिक्स' का प्रयोग किया था। उसने कुत्तों और बिल्लियों के अलावा कछुए भी पाल रखे थे। उसके निजी संग्रहालय में पत्थरों के टुकड़े भी अनगिनत थे। इसके अतिरिक्त उसे जादू के खेलों का भी शौक था। उसके कई जादू तो मेरी समझ में भी नहीं आते थे। एक बार उसने दृढ़ निश्चय के साथ मुझसे कहा था—"मेरे शौकों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। अब मैं फिजूल के शौक छोड़कर सिर्फ पांच-छः शौकों से वास्ता रखूंगा।"

अपने शिक्षकों के अनुसार जानी "अपनी शिक्षा-संस्था के इतिहास में सबसे अधिक बुद्धिमान विद्यार्थी" था। फिर भी अनेक अवसरों पर उसकी नादानी और लापरवाही हमें हैरत में डाल देती थी। चीजें खोने में उसका जवाब नहीं था। देखते-ही-देखते उसके जूते और कपड़े इस खूबी से गायब हो जाते थे कि फिर कभी मिलते नहीं थे।

यों वह लंबा और काफी दुबला-पतला था, फिर भी उसका व्यक्तित्व काफी आकर्षक था। और उसके व्यक्तित्व से भी अधिक आकर्षक था उसका स्वभाव। वह बेहद संवेदनशील और संकोची था। अपने मित्रों और परिचितों का चुनाव वह काफी सोच-विचार कर करता था; लेकिन जिसे अपना

मान लेता था, उसके हित का सदा ध्यान रखता था। जीवन-भर उसकी यही कोशिश रही कि उसके कारण जाने या अनजाने में कभी किसी का दिल न दुखे।

अब मैं जानी के अंतिम दिनों के रोमांचक साहस की कहानी पर आता हूं।

१९४५ में वह डियरफील्ड अकादमी से, जहां वह तीसरे वर्ष का विद्यार्थी था, बड़े दिनों की छुट्टियों में घर आया, तो काफी स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई देता था। दस दिन तक हमारे साथ रहने से उसका स्वास्थ्य और भी निखर आया। अकादमी लौटते समय उसने स्टेशन पर मुझसे कहा था—"ये मेरे अब तक के सबसे अधिक सुखदायक दस दिन रहे।"

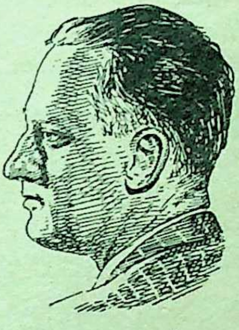

लेखक जान गंथर

किंतु अगले वर्ष मार्च में जब वह छुट्टियां बिताने के लिए घर आया, तो मैंने पाया कि उसमें पहले जैसी चमक-दमक नहीं है। यद्यपि इस बार भी उसने एक महत्वपूर्ण शतरंज-प्रतियोगिता में विजय प्राप्त की, अपनी प्रयोगशाला में कई प्रयोग किये, अणु-विज्ञान के व्याख्यान सुने; फिर भी पहले की अपेक्षा वह कुछ थका-सा नजर आता था। हमारे परिवार के चिकित्सक डाक्टर ट्रेगर ने परीक्षा के बाद उसे पूर्ण स्वस्थ पाया, तो मैं उसकी ओर से पूर्ण निश्चित हो गया। वह खुशी-खुशी हमारे यहां से अपने स्कूल वापस गया।

इसके बाद अप्रैल के तीसरे सप्ताह में मुझे उसकी अकादमी से एक तार मिला, जिसमें कहा गया था कि गर्दन सूज जाने के कारण जानी का इलाज किया जा रहा है। उस इलाके में उन दिनों पोलियो फैला हुआ था; परंतु जानी को पोलियो नहीं था। डाक्टर ने मुझे सिर्फ इसलिए सूचित किया था कि मैं खामख्वाह घबरा न जाऊं।

मैंने टेलिफोन पर जानी से बात की, तो उसने भी यही कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है। मैं पुनः आश्वस्त हो गया।

फिर २५ अप्रैल की शाम को जानी की अकादमी के डाक्टर ने मुझे फोन करके बिना किसी हिचक या चेतावनी के कहा—"डा० हान नाम के एक स्नायु-विशेषज्ञ ने आपके लड़के का परीक्षण किया है। लीजिये, उनसे बात कर लीजिये।"

और डाक्टर हान मुझसे बोले—"आपके लड़के के मस्तिष्क में घातक फोड़ा है।"

सुनकर मैं सन्न रह गया। इतना ही कह पाया—"यह तो बड़ा गंभीर रोग है!"

"जी हां, रोग बहुत ही गंभीर है। आप फौरन मस्तिष्क-रोगों के सबसे बड़े विशेषज्ञ डाक्टर ट्रेसी पुटनैम से मिल लीजिये। जरा-सी भी देर बहुत खतरनाक सिद्ध हो सकती है।"

डेढ़ घंटे बाद मेरी पत्नी और मैं डाक्टर

पुटनैम के क्लिनिक में थे। वह रात बड़ी किरकिरी और असुंदर थी। सारा मार्ग तिमिराच्छन्न था। जानी के कमरे में पहुंचते ही हमें मालूम पड़ गया कि स्थिति बहुत गंभीर है। डाक्टरों और नर्सों के परेशान चेहरे भी इसी बात की गवाही दे रहे थे। परंतु जानी ने फुसफुसाते हुए मुझसे कहा–"मेरी हालत ज्यादा गंभीर नहीं है। नहीं तो ये लोग मुझे अस्पताल में दाखिल करवा चुके होते।"

मैंने ध्यान से देखा, उसकी सीधी आंख उसके गाल पर थोड़ा झुक आयी थी।

जानी का आपरेशन अविलंब किया जाना बहुत जरूरी था; इसलिए न्यूयार्क के मस्तिष्क-संबंधी रोगों के एक बड़े अस्पताल में उसके लिए एक कमरा निश्चित करके, उसे यथाशीघ्र एंबुलेंस द्वारा वहां पहुंचाया गया। जार्ज वाशिंग्टन पुल के नीचे स्थित यह अस्पताल अगले बारह महीनों तक हमारी आशाओं और आशंकाओं का केंद्र बना रहा।

अगले दिन उसकी आंख का झुकाव कुछ कम हो चला। परंतु उसके सिर में अति पीड़ादायक दर्द आरंभ हो गया, जो उसकी बीमारी के अंत तक उसे जब-तब घोर कष्ट पहुंचाता रहा। मस्तिष्क शरीर के अन्य भागों की पीड़ा को नियंत्रित करता है; लेकिन मस्तिष्क की रचना ऐसी है कि उसमें कोई संवेदक स्नायु नहीं है। मस्तिष्क के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें, तो भी कोई कष्ट अनुभव नहीं होगा। सिरदर्द मस्तिष्क के चारों ओर की झिल्ली के सूज जाने या मस्तिष्क पर किसी बाह्य वस्तु के दबाव के फलस्वरूप होता है। जानी बार-बार मुझसे कह रहा था–"डैडी, हर धड़कन के साथ मुझे ऐसा अनुभव होता है, जैसे कोई मेरे अंदर तलवार घोंप रहा है।"

डाक्टरों ने जानी के इस भयंकर सिर-दर्द को दूर करने के लिए उसे इंजेक्शन वगैरह नहीं दिये थे; क्योंकि वे फोड़े के स्थान और कारण का ठीक पता लगाना चाहते थे। उन्होंने हम दोनों से जानी के भूतकाल की बहुत-सी बातें पूछ डालीं।

अगले दिन आपरेशन के लिए उसे तैयार करने के लिए, उसके सब बाल साफ कर दिये गये। सिर के जिस हिस्से में फोड़ा था, उस के बाल जब साफ किये जा रहे थे, वह असह्य पीड़ा से कराह उठता था और मेरा हाथ थाम लेता था। अंत में अपनी घुटी हुई खोपड़ी पर हाथ फेरकर उसने बड़े कष्ट से मुस्कराते हुए मुझसे कहा–"मैं ऐसी हालत में वापस अकादमी में कैसे जा सकूंगा? सच बताइये डैडी, क्या ये लोग मुझे बिजली से मारने जा रहे हैं?"

२९ अप्रैल को जानी का पहला आपरेशन हुआ। आपरेशन में पूरे छः घंटे लग गये। उसके बाद एक डाक्टर ने मुझे बताया कि आपरेशन का प्रभाव जानी पर वैसा ही हुआ होगा, जैसा किसी गोली के मस्तिष्क में लगने पर होता है। मेरी पत्नी फ्रांसेस और मैंने इतने लंबे छः घंटे शायद ही बिताये हों। जब कोई नर्स सहज भाव से हमसे पूछ

ती थी–"क्या आपको यह अकेला रहना है ?" तब हमारी व्यग्रता और भी बढ़ जाती थी ।

मस्तिष्क का फोड़ा चुपचाप बराबर बढ़ता रहता है; और पता लगते ही उसका उन्मूलन न कर दिया जाये, तो वह शीघ्र ही सारे मस्तिष्क को बेकार कर देता है। जानी का ट्यूमर नारंगी के आकार का था और डाक्टर ट्रेगर, जो पांच घंटे तक आपरेशन करने के बाद, पांच साल बूढ़े नजर आ रहे थे, उसे आधा ही नष्ट कर पाये थे ।

यह फोड़ा मस्तिष्क के अक्रिय भाग में स्थित था; इसलिए आशा थी कि वह और अधिक हानि नहीं पहुंचायेगा और एक्स-रे चिकित्सा से शेष भाग भी नष्ट हो सकेगा । आपरेशन के बाद, उसके चेहरे पर वरम आ गया था और आंखें निष्प्राण-सी लगती थीं । फिर भी वह भयभीत दिखाई नहीं देता था और उसके चेहरे पर खिली रहनेवाली मुस्कान जरा भी क्षीण नहीं हुई थी।

जानी ने बड़ी तेजी से प्रगति की । आपरेशन के ग्यारहवें दिन ही उसमें चलने-फिरने और खाना खाने की शक्ति आ गयी थी । (वैसे शुरू के दो दिन तक उसकी आंखें बिलकुल बंद रहीं और उसे डर रहा कि कहीं वह अंधा तो नहीं हो गया है ।) उसकी स्मरण-शक्ति भी ज्यों-की-त्यों थी । उसे अपनी विज्ञान की सब पुस्तकों के प्रश्नों के उत्तर याद थे ।

मेरे लाल !

१० मई को उसने डाक्टर अल्बर्ट आइन्स्टाइन के नाम पत्र लिखवाया, जो इस प्रकार था :

मान्य प्रो० आइन्स्टाइन,

अवकाश के समय में मैं कुछ दिनों से एडिंग्टन की पुस्तक 'अंतरिक्ष, काल और गुरुत्वाकर्षण' को पढ़कर एक विचित्र विचार से खेलता आ रहा हूं। विचार यह है कि क्या ब्रह्मांड के आयामों की संख्या और वक्रता को परिवर्तनशील और सापेक्ष नहीं माना जा सकता? उस दशा में, किसी घटना के गुण, उसे नियंत्रित करनेवाली वक्रता और उसके आयामों की संख्या पर ही निर्भर होंगे । उस दशा में विद्युत तथा चुंबक संबंधी आकर्षण इन दोनों को आयामों के फलस्वरूप हुए आकर्षण का एक स्वरूप ही माना

मसूढ़ों के कष्ट
व दंतक्षय
के इलाज में
फोरहन्स
टूथपेस्ट के
आश्चर्यजनक
परिणाम

दांत-डाक्टर द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

यह सन १९४८ की घटना है, जब मेरे मसूढ़े कुछ नर्म पड़ गये थे-खून भी निकलने लगा था। मेरे पति को मेरे दांतों पर बड़ा नाज था। उन्होंने फोरहन्स इस्तेमाल करवाया। तब से मैं नियमित रूप से फोरहन्स इस्तेमाल कर रही हूं, और इस का लाभ भी असाधारण रूप से अच्छा रहा।
एच. के., भिलाईनगर

पिछले तीन सालों तक मैं दांत की बीमारियों से परेशान रहा। एक मित्र की सलाह पर मैंने फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया, और एक महीने के बाद यह देख कर आश्चर्य हुआ कि दांतों की तकलीफ न सिर्फ मिट गयी, बल्कि मेरे दांत भी बहुत ही चमकीले निखर पड़े। अब मैं फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कर रहा हूं।
पी. पी., बम्बई।

मैं आप को सूचित करना चाहती हूं कि १२ साल की उम्र से ही मैं फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर रही हूं। इतना ही नहीं, मेरे घर के सभी लोग इसी टूथपेस्ट को इस्तेमाल कर रहे हैं, क्यों कि दांतों को चमकीला सफ़ेद और मसूढ़ों को मजबूत व स्वस्थ रखने के लिए हमने इसे बहुत ही फायदेमंद पाया।
(श्रीमती) के. बी., बैंगलोर

★ये पत्र ज्यॉफ्री मॅनर्स एंड कं. लि. के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं

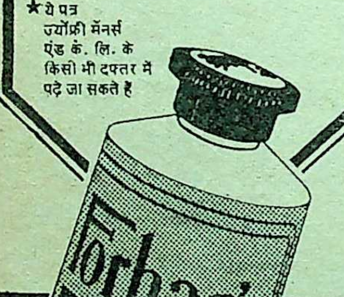
Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR
THE GUMS
"BRUSH YOUR TEETH
WITH IT"

मुफ़्त-दंत-रक्षा की सचित्र पुस्तिका

मसूढ़ों के रोग और दंत-क्षय से बचने की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आज ही "CARE OF THE TEETH & GUMS" पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ़्त प्रति के लिए लिखें। साथ में डाक-खर्च के १५ नये पैसे के टिकिट भी भेजें। पता: डिपार्टमेंट ओ-६ मॅनर्स डेंटल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई।

... और पूरी जोड़ी के लिए इस्तेमाल करें

फोरहन्स
दोहरे असरवाला
टूथब्रश

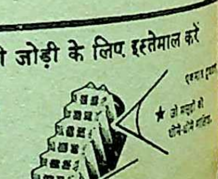
★ जो मसूढ़ों की धीरे-धीरे मालिश
★ साथ में दांत भी साफ करता है

जायेगा । यह विशेष [illegible] गुरुत्वाकर्षण संबंधी नियम का भी पालन करेगा । मैं जानता हूं कि इस सिद्धांत को तभी सफल माना जा सकेगा, जब वह क्लार्क और मैक्सवेल के समीकरणों और गुरुत्वाकर्षण संबंधी आपके नियम के गणित की कसौटी पर भी खरा उतरे। दुर्भाग्य से अपनी अधूरी शिक्षा के कारण मैं अभी तक इस सिद्धांत का संगणन नहीं कर सकता ।

कभी गलती से मेरा यह अजीबो-गरीब विचार आपके किसी निर्धारित विचार या सिद्धांत से मेल खा जाये, तो भूलकर भी मुझे इसका श्रेय न दीजियेगा ।

इस पत्र को पढ़ने के लिए धन्यवाद,

आपका—**जान गंथर (जूनियर)**

आइन्स्टाइन ने तुरंत उत्तर दिया ।

प्रिय ग्रंथर,

मैंने १० मई के तुम्हारे पत्र को बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा । परंतु विचार इतनी संक्षिप्तता से व्यक्त किया गया है कि मैं उसे पूरी तरह समझ नहीं पाया। मुझे आशा है कि जब तुम ठीक हो जाओगे, तब इस विषय पर हम दोनों की विस्तृत बातचीत हो सकेगी ।

तुम्हें शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ हो—इस शुभेच्छा के साथ । तुम्हारा—**आइन्टाइन**

इस पत्र के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हुए जानी ने आइन्स्टाइन को लिखा—"मुझे लगता है, शायद मैं इस विषय पर अपनी जानकारी से अधिक कह गया ।"

मुझे और फ्रांसेस को तो इस प्रश्न के [illegible] जब हमने इसकी चर्चा एक प्रमुख वैज्ञानिक से की, तो उन्होंने हमें बताया—"जानी ने जिस मूलभूत समस्या को प्रस्तुत किया है, उसे 'यूनिफाइड फील्ड थ्योरी' के नाम से हाल ही में जाना गया है । ......आश्चर्य है कि जानी को इस समस्या का पता कैसे लगा ?"

अपनी बीमारी की हालत में जानी मुझे एंड्रोमीडा आकाश-गंगा के बारे में बताया करता था । पर उस बेचारे को इतना ध्यान नहीं रहता था कि गर्दन के दर्द को कम करने के लिए तकिया ऊंचा कर ले । बच्चे सब कुछ जानते हैं, फिर भी कुछ नहीं जानते ।

× × ×

आपरेशन के कई सप्ताह बाद डा० पुटनैम ने मुझे अपने आफिस में बुलाकर बताया कि जानी का फोड़ा साधारण नहीं है । जितना वे सोचते थे, उससे वह फोड़ा कहीं खतरनाक था । इसलिए उन्होंने जानी की खोपड़ी को खुला ही रखा था, ताकि फोड़ा विकसित होकर बाहर आ जाये और फट जाये । उसके अंदर बढ़ने और फटने से मस्तिष्क को हानि पहुंचने की संभावना थी ।

हमने जानी से यही कहा कि डाक्टर ने आपरेशन से फोड़े को मार दिया है और अब वह शीघ्र ही अच्छा हो जायेगा । और वास्तव में, वह अच्छा हो भी रहा था। बायें पांव में जरा-सी कमजोरी रह गयी थी, अन्यथा वह पूर्णतः स्वस्थ था । उसकी आंख भी अब सूजी हुई नहीं थीं ।

परंतु कभी-कभी वह सहसा उदास हो

जाता था और अस्पष्ट स्वर में कहने लगता था–" सब ओर कुंठा और निराशा है ।" पर फिर संभलकर स्पष्ट स्वर में कहता–"पिछले सोलह वर्षों में मैंने अपने बारे में ही सोचने के अलावा कुछ और नहीं किया है । इसलिए मेरा कभी-कभी निराश हो जाना स्वाभाविक ही है ।" वह स्वयं प्रसन्न-मुख रहकर सदा हमें चिंता से दूर रखने का प्रयत्न करता रहता था ।

वह स्कूल में वापस जाने के लिए बहुत व्यग्र था । हमें उसे यह बताने का साहस नहीं था कि अब यदि वह फिर स्कूल का मुंह देख सके, तो यह किसी चमत्कार से कम न होगा । परंतु जानी स्कूल जाकर पढ़ाई जारी रखने के लिए इतना उतावला था कि उसके लिए डाक्टरों के तमाम आदेशों का अक्षरशः पालन करने को तैयार हो गया था । पानी तक वह निश्चित मात्रा से एक बूंद अधिक नहीं लेता था । डाक्टर दुःखी थे कि वे ऐसे आज्ञाकारी रोगी की बीमारी का मूल कारण खोजने और उसे दूर करने में वे एकदम असमर्थ थे । और इस असाध्य टच्यूमर की उत्पत्ति का रहस्य आज तक डाक्टर नहीं जान पाये हैं । शायद जीवन की उत्पत्ति का कारण उतना दुरूह नहीं है, जितना कि कैंसर की उत्पत्ति का कारण ।

इन्हीं दिनों, एक शाम को उसने फ्रांसेस को अपनी लिखी यह कविता दिखायी :

हे सर्वशक्तिमान प्रभो !
मेरी नास्तिकता के लिए मुझे क्षमा करें;
मैं उसे ढीठ नहीं होने दूंगा,
वह [illegible] और नन्ही ही रहेगी ।
उसके दुष्प्रभाव की काली छाया क
किसी पर नहीं पड़ने पायेगी,
यदि आप सचमुच स्वर्ग में वास क हैं, प्रभो !
तो अपने सब प्राकृतिक वरदानों के लिए मेरा हार्दिक आभार स्वीकार क
और मेरा यह आश्वासन भी लें कि
मैं कभी संघर्ष-विमुख नहीं हूंगा ।

इस कविता का शीर्षक उसने रखा था-'एक नास्तिक की प्रार्थना'।

और उन्हीं दिनों उसने बड़े हर्ष के सा मुझसे कहा था–"आप अपनी पुस्तक 'इ साइड यू० एस० ए०' पूरी करने में ज जाइये पिताजी ! मुझ पर क्यों बेकार पचा हजार डालर हर महीने खर्च कर रहे हैं !"

२८ मई को जानी स्नान करने के लि जाते समय सहसा बेहोश हो गया । दि कड़ा करके हम डाक्टरों से पूछना चाह थे कि कहीं जानी को लकवा तो नहीं मा जायेगा, कहीं जानी अंधा तो नहीं हो जायेगा ? परंतु डाक्टर हमसे कतराते र थे । डाक्टर पुटनैम ने सिर्फ इतना ही कहा-"अब जो एक्स-रे चिकित्सा शुरू की जा रही है, उस पर भरोसा रखिये ।"

और एक शाम को एक्स-रे कक्ष में जान की रिपोर्ट पढ़कर मुझे पता चल गया कि क्यों डाक्टर हमसे कतरा रहे थे । रिपोर्ट में लिखा था–"जानी का फोड़ा घातक बनता जा रहा है ।"

एक्स-रे चिकित्सा के समय मुझे पहले

बार जानी भयभीत दिखाई दिया। मशीन के सामने लेटे-लेटे जब काफी देर हो गयी, तो उसने मुझसे पूछा—"क्या मुझे सचमुच कैंसर हो गया है ?"......उसके बाद उसने फ्रांसेस की ओर देखकर कहा—"अभी तो मुझे बहुत कुछ करना था...... बहुत कुछ करना था।"

१ जून को हम जानी को अस्पताल से घर ले आये। घर आते ही उसने पहला काम वही किया, जिसकी कि मैं आशा कर रहा था......'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में मस्तिष्क के फोड़ों पर क्या लिखा है, इसकी खोज करना। विश्वकोष के जिस खंड में यह लेख था, उसे हमने पहले ही छिपाकर रख दिया था; क्योंकि उसमें लिखा था कि ऐसे फोड़ों का अंत अनिवार्य रूप से अंधेपन में होता है। जानी को विश्वकोष का वह भाग न पाकर निराशा तो काफी हुई; पर उसने कुछ कहा नहीं।

लेकिन मेरे सामने यह समस्या थी कि मैं उसे उसके फोड़े के बारे में क्या बताऊं ? यदि यह कहता हूं कि फोड़ा लगभग नष्ट हो चला है, तो सूजन बनी रहने का क्या कारण बता सकूंगा ? इसके आगे भी और बहुत-से प्रश्न थे। नियति ने जानी को ही क्यों इन निर्मम अनुभवों के लिए चुना ? मैंने जानी को समझाने की कोशिश की कि हर विकास में कष्ट अनिवार्य है और संभव है, इन दुःखदायी अनुभवों के बाद तुम्हारा मस्तिष्क पहले से अधिक संवेदनशील, सूक्ष्म और ग्रहणशील बन जाये। लेकिन जानी मेरी इस बात से प्रभावित हुआ नहीं लगा।

जानी को देखते ही या उसका खयाल आते ही एक प्रश्न मेरे मन में भी मंडराने लगता था। हम सबको जानी के दिमाग पर नाज था और अब उसका दिमाग ही रोग से पीड़ित था—क्यों ? ऐसा क्यों ? इसके लिए कोई क्या उचित कारण पेश कर सकता है ? क्या यह केवल एक दुःखद दुर्घटना ही है ? क्या सब कुछ दैवाधीन ही है ? तो फिर न्याय कहां है, कहां है ?

शायद इन्हीं दिनों जानी ने मुझसे यह कहा था—"मामूली चिंता करना गलत है। निरंतर गहरी चिंता करना ही ठीक है।" लगता था कि उसके शरीर में जिंदगी और मौत के बीच जो भीषण संघर्ष चल रहा था, उसके लिए पूरी मानसिक तैयारी कर ली थी।

जानी की मासूम जिंदगी पर मौत के निर्मम प्रहार होते ही रहे। यद्यपि उसके कपाल की शिराओं में कोई दोष उत्पन्न नहीं हुआ था, फिर भी उसके मुह का बायां भाग एक ओर को झुक गया था। जानी की दृष्टि भी बहुत अधिक मंद और सीमित हो गयी थी।

एक जबर्दस्त प्रहार और ! २४ जुलाई को फ्रांसेस ने मुझे फोन पर सूचना दी कि सूजा हुआ भाग फट गया है और उसमें से मवाद बाहर निकल रहा है। उसी शाम को जानी को उसी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया, जहां वह पहले भेजा गया था।

इस बीच जानी के डाक्टर ने एक विख्यात स्नायु-विशेषज्ञ विल्डर पेनफील्ड को रोगी

शीघ्र, सुरक्षित
निश्चित
खाँसी का घरेलू इलाज

Alembic
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
DOSE
ALEMBIC CHEMICAL WORKS CO
ALEMBIC ROAD, BARODA
MADE IN INDIA
Alembic
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP

Alembic

ग्लायकोडिन
टर्प - वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

की जांच के लिए वुलवा भेजा था । उन्होंने जांच करने के वाद, वेलाग होकर सच्चाई हमारे सामने रख दी –"यह फोड़ा आपके लड़के की जान लेकर ही रहेगा ।" जानी के चार्ट पर उन्होंने लिखा–"इस मामले में जो कुछ हो सकता था, किया जा चुका है । परंतु परिणाम कुछ न होगा । ऐसे मामलों का यही दुखड़ा है ।"

पेनफील्ड तो जैसे मृत्युदंड सुनाकर चले गये; परंतु जानी को जैसे भी हो वचाने की हमारी कोशिश जारी रही । मैं और फ्रांसेस चिकित्सा-संबंधी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते रहते थे। न जाने किस स्रोत से प्रकाश की किरण चमकने लगे ?

एक सुबह 'न्यूयार्क टाइम्स' पढ़ते हुए फ्रांसेस ने दो इंच की एक खवर की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। खवर में कहा गया था कि सरसों की गैस को इंजेक्शन द्वारा शिरा में पहुंचाने से फोड़ों के प्रभाव को कम किया जा सकता है। ज्यादा पूछ-ताछ करने पर हमें ज्ञात हुआ कि सरसों की गैस एक घातक विष है; परंतु सैनिक वैज्ञानिकों ने संभावना व्यक्त की है कि शायद उससे कैंसर की चिकित्सा हो सकती है । सरसों की गैस की विशेषता यह है कि वह तेजी से वढ़नेवाले कोषों का नाश कर देती है। शायद वह जानी के तेजी से वढ़ते हुए फोड़े को नष्ट करने में सफल हो जाये ।

हमारे घर के निकट स्थित मेमोरियल अस्पताल में ही जानी को सरसों की गैस देने की व्यवस्था हो गयी । उससे जानी को एकदम लाभ हुआ । वह पहले से ज्यादा स्फूर्तिमान दिखाई देने लगा। एक डाक्टर ने हमसे कहा था कि सरसों की गैस से केवल कैंसर-आक्रांत शिराएं ही नष्ट होती हैं और विचार-शक्ति को कोई हानि नहीं पहुंचती। इस गैस के प्रभाव से अव वह विना सहारे चलने भी लगा; और प्रतीत होने लगा कि उसकी कमजोरी धीरे-धीरे दूर हो रही है ।

उस ग्रीष्म ऋतु में वह जो जीवित रहा, उसका श्रेय चिकित्सा के अलावा, उसकी मां की हिम्मत और समझदारी को भी है । जानी मौत से डर न जाये, इसलिए वह उसके सामने उसके आपरेशनों का जिक्र वड़े हल्के तौर पर किया करती थी और कहा करती थी–"तुम वड़े भाग्यवान हो जानी कि मौत तुम्हारे पास से आकर निकल गयी है !" जानी भी अपनी मां से मृत्यु के वारे में वातें करता रहता था; पर गंभीरता से नहीं । लेकिन मुझसे उसने कभी मौत के वारे में वात की हो, ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता है ।

उन्हीं दिनों हमने मैक्स जेरसन नामक डाक्टर के वारे में सुना, जो आहार में सुधार करके कैंसर के रोगियों की चिकित्सा करते थे और इसी विधि से मस्तिष्क के फोड़े के कई मामलों में आश्चर्यजनक सफलता भी प्राप्त कर चुके थे । मैं उनसे मिला, तो उन्होंने मुझे ऐसे कई मामलों के पूरे विवरण दिखाये ।

वैसे जेरसन स्वयं एम० डी० थे; लेकिन डाक्टर-समाज उनकी चिकित्सा-प्रणाली के

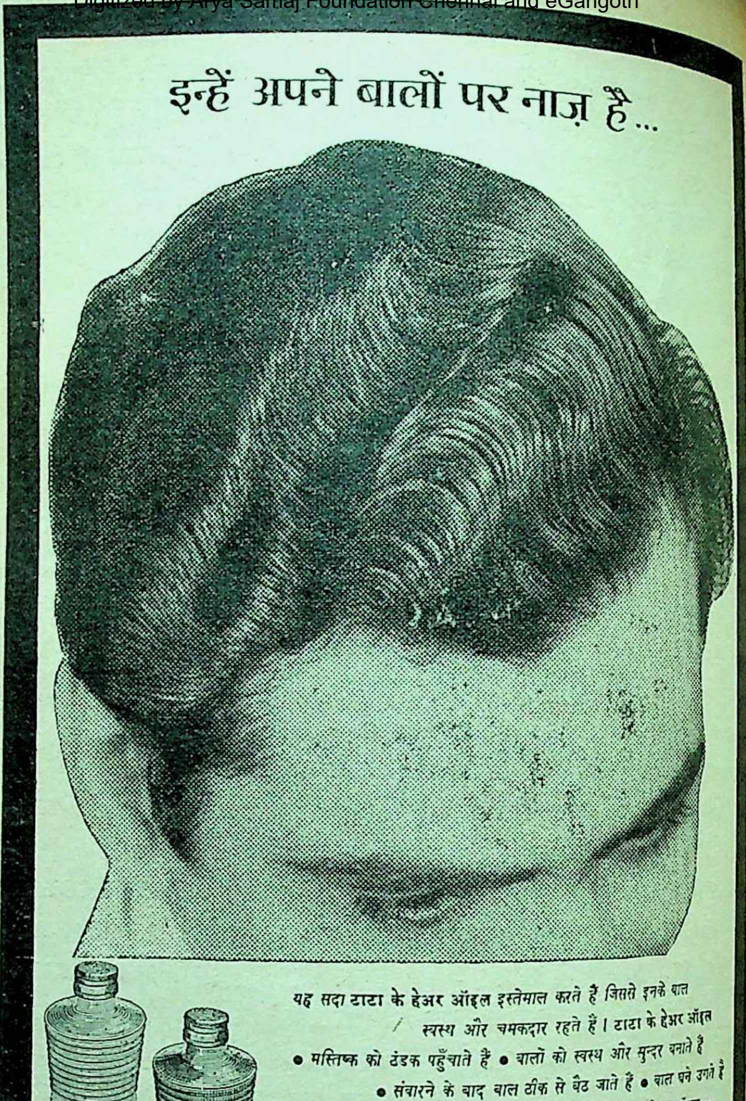

इन्हें अपने बालों पर नाज़ है...

यह सदा टाटा के हेअर ऑइल इस्तेमाल करते हैं जिससे इनके बाल स्वस्थ और चमकदार रहते हैं। टाटा के हेअर ऑइल
● मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाते हैं ● बालों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं
● संवारने के बाद बाल ठीक से बैठ जाते हैं ● बाल घने उगते हैं
● इनकी सुगंध भी मनमोहक होती है। टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल— ४ मनमोहक सुगंधों में...टाटा का कॅस्टर हेअर ऑइल— गुलाब की मनभावन सुगंध में...ये हेअर ऑइल ३ साइज़ की बोतलों में मिलते हैं।

टाटा के हेअर ऑइल

THOY-48 HIN

Tata's Perfumed HAIR OIL COCONUT
LAVENDER
Tata's Perfumed HAIR OIL CASTOR
THE TATA OIL MILLS

विरुद्ध थ
होता था
आहार द्व
जेरसन
पूरा-पूरा
भी अंत
भले ही
न होगी
को जेर
में सौंप
हो गया
साथ ज
लड़ाई
और द
आरंभ हु
डा०
आहार-
मूल सि
सादा थ
कहना
कभी
का कोई
सही स्थ
गलत
पहुंच ज
स्थान प
कारण
वह फो
को नष्
तत्वों क
फूलने
१९६४

विरुद्ध था । मुझे भी शुरू में विश्वास नहीं होता था कि कैंसर जैसा घातक रोग महज आहार द्वारा कैसे ठीक हो सकता है ; परंतु जेरसन को अपनी आहार-चिकित्सा पर पूरा-पूरा यकीन था और जानी के डाक्टर ने भी अंत में कहा कि आहार-चिकित्सा से भले ही कोई लाभ न हो, पर कोई हानि भी न होगी । सो मैं जानी को जेरसन के हाथों में सौंपने को तैयार हो गया । मौत के साथ जानी की लंबी लड़ाई में एक नया और दीर्घ अध्याय आरंभ हुआ ।

अंतिम क्षण

जब सुकरात जेल में विष का प्याला पीकर मरने को ही था, एक शिष्य ने पूछा—"प्रभो, आपको नहलाकर, कफन ओढ़ाकर फिर कहां दफन करें ?" सुकरात यह सुनकर मुस्कराया, बोला—"शिष्यो, अगर तुम मुझे पा सको, तो जहां भी चाहो दफना दो । लेकिन सोचता हूं, तमाम जिंदगी-भर मैं स्वयं अपने आप को नहीं पा सका, तो तुम मेरी मृत्यु के बाद मुझे कैसे पा सकोगे। मैं इस तरह जिया हूं कि इस अंतिम वक्त में मुझे यही लगता है कि अपने बारे में मुझे बाल-भर भी ज्ञान नहीं है ।"

—फरीदुद्दीन अत्तार

डा० जेरसन की आहार-चिकित्सा का मूल सिद्धांत सीधा-सादा था । उनका कहना था कि कभी-कभी गर्भस्थ बच्चे का कोई कोष अपने सही स्थान से हटकर गलत स्थान पर पहुंच जाता है और वर्षों तक उसी गलत स्थान पर छिपा रहता है, फिर किसी अज्ञात कारण से सहसा वह फूलने लगता है । तब वह फोड़े के रूप में प्रकट होता है । इस फोड़े को नष्ट करने के लिए आहार में से उन तत्वों को निकाल देना जरूरी है, जो कोष के फूलने में सहायक हों । इसीलिए जेरसन की आहार-चिकित्सा में कैंसर के रोगियों को नमक और चर्बी से रहित आहार दिया जाता है तथा उसमें प्रोटीन या तो होता ही नहीं, या एकदम कम रहता है । उद्देश्य यह रहता है कि इस प्रकार शरीर की रसपाक-प्रक्रिया में परिवर्तन करके कैंसर को स्वाभाविक मौत मरने दिया जाये ।

जानी को ताजे फलों के रस के अलावा उबला हुआ भोजन ही दिया जाने लगा । दिन में चार-पांच बार एनीमा भी दिया जाता था ।

और इस आहार-चिकित्सा का फल एक सप्ताह में ही दिखाई देने लगा । रक्तचाप 'नार्मल' होने लगा, घाव और सूजन घटने लगे । हमारी खुशी का ठिकाना न रहा । जानी शीघ्र ही भला-चंगा हो जायेगा, इस आशा ने हमें पागल-सा बना दिया । चार नवंबर को हमने जानी की सत्रहवीं वर्षगांठ भी मनायी । पार्टी में वह अपने दोस्तों के बीच बहुत प्रसन्न था । परंतु मैंने गौर किया कि वह बहुत शीघ्र थक जाता था और उसका बायां हाथ बहुत अधिक कमजोर हो गया था । फिर भी वह नियति से हार मानने

परिवार के लिए
माँ की पसंद
डालडा
डालडा

डालडा
खजूर छाप
वनस्पति
—एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

DL. 96-77 HU
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

को तैयार नहीं था ।

कभी-कभी एक अजीब खयाल मेरे दिमाग में आ जाता था । जानी की बीमारी आज की दुनिया में व्याप्त अस्तव्यस्तता और अव्यवस्था का प्रतीक है । और इस विशृंखलता को दूर करने के जो प्रयत्न आज दुनिया में चल रहे हैं, क्या रोग के साथ जानी का शौर्यपूर्ण संघर्ष उनकी याद नहीं दिलाता ? मानो जानी अपनी मति और अपने जीवन के लिए ही नहीं लड़ रहा था, बल्कि समस्त मानव-जाति की मति और उसके जीवन की रक्षा के लिए संघर्षरत था ।

और अब घटी इस संघर्ष की सबसे करुण और असाधारण घटना । जानी ने मुझसे पूछकर यह तो मालूम कर ही लिया था कि इस वर्ष स्कूल में पढ़ने के लिए जाना उसके लिए संभव न होगा । इस कारण, उसने अस्पताल में ही परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी । जेरसन की आहार-चिकित्सा से पूर्व, उसके हेडमास्टर श्री बायडन एक और शिक्षक के साथ उसे देखने आये थे । अभी काफी लंबे समय तक उसके पढ़ने जाने की बात सोचना भी कठिन है, यह जानते हुए भी उसने श्री बायडन से अपने स्कूल, सहपाठियों और अपनी पाठ्य-पुस्तकों के संबंध में खूब बातें कीं। उसकी मुरझायी हुई आशा को लहलहाने में बायडन का बहुत हाथ था ।

जिस समय वह परीक्षा की तैयारी कर रहा था, वह सीधी तरह चल-फिर भी नहीं सकता था । उसका बायां हाथ लगभग बेकार ही हो चुका था । उसकी दोनों आंखों की आधी ज्योति जा चुकी थी। फोड़े ने उसके मस्तिष्क के एक भाग को बिलकुल बेकार कर दिया था और मस्तिष्क के शोथ का विष उसे सदा तिलमिलाये रहता था । फिर भी उसने पढ़ाई जारी रखी, अन्य विद्यार्थियों की तरह परीक्षा दी और सम्मान के साथ उत्तीर्ण हुआ । परीक्षा-फल ज्ञात होने पर उसने इतना ही कहा—"जिंदगी में कभी-कभी 'चांस' भी लेना पड़ता है ।"

किंतु इस सफलता के बाद ही उसकी हालत फिर बिगड़ने लगी । सूजन ने अब दो टमाटरों का आकार धारण कर लिया और उसे निरंतर थकावट और हरारत रहने लगी । जेरसन के अलावा सभी की राय थी कि फोड़े के आस-पास के फटते हुए चमड़े को आपरेशन से नष्ट कर दिया जाये । जेरसन ने आपरेशन के प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया और कहा कि आपरेशन के पूर्व की बेहोशी प्राणलेवा सिद्ध होगी । उधर डाक्टर आपरेशन करने पर तुले हुए थे । इस कशमकश का सारा चिंताभार मुझ पर आ पड़ा था । उन दिनों मैंने जैसा मानसिक तनाव अनुभव किया, उसे मैं जीवन में कभी नहीं भूल पाऊंगा ।

लेकिन जानी ने खुद डाक्टरों से कहा—"आपरेशन करना ही होगा। फोड़े का जहर मेरी नसों में फैलता जा रहा है ।" फिर उसने भविष्यवाणी की —"फोड़ा दो बार और फूटेगा ।" उसकी यह भविष्यवाणी आगे चलकर बिलकुल सच निकली ।

अस्पताल ले जाते समय मैंने सोचा था

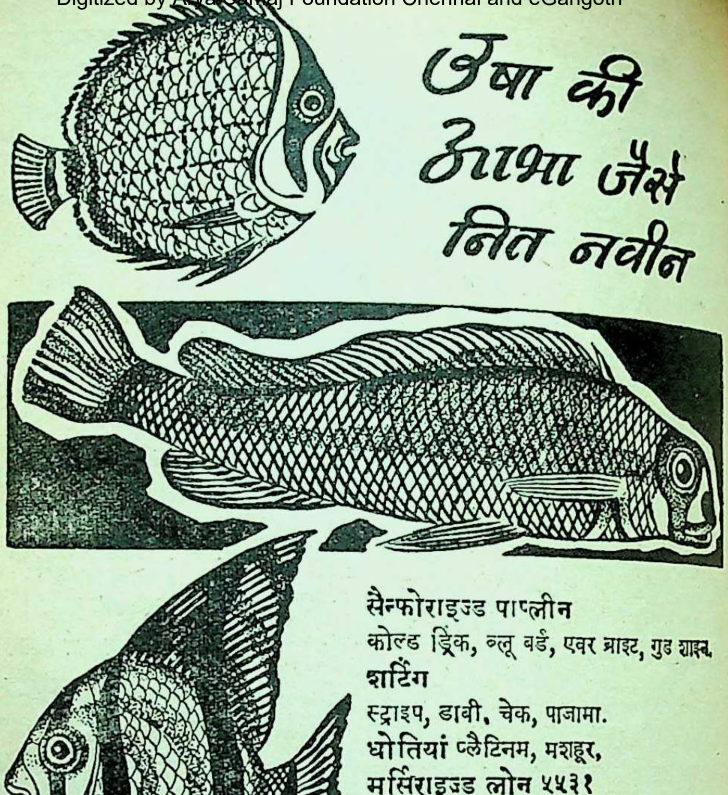

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाइन.
शर्टिंग
स्ट्राइप, डाबी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर,
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१
सूटिंग, गैबर्डिन
रुमाल.
प्रिंट
छपे लोन, वाइल, पाप्लीन,
स्क्रीन छपाई की साडियां.
बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में

Arvind
Quality
FABRICS

'SANFORIZED'

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद-२

कि शायद एक-दो दिन में वह घर वापस आ जायेगा। किंतु वह पूरे पांच सप्ताह तक वहां रहा।

इस आपरेशन के बाद जानी ने फिर आश्चर्यजनक प्रगति की। फोड़े के आस-पास की सूजन बिलकुल गायब हो गयी। मुझे आशा हुई कि वह शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा। डाक्टर स्वयं उसकी प्रगति से हैरान थे। उन्होंने भी कहा कि शायद फोड़े का बढ़ना रुक गया है।

परंतु अभी हमारी निराशाओं का अंत नहीं हुआ था। डाक्टर जानी की स्थिति में अप्रत्याशित सुधार देखकर चकित तो थे, लेकिन इसकी गारंटी देने को तैयार न थे कि फोड़ा दुबारा नहीं बढ़ेगा। इस बात का वे तीव्र प्रतिवाद करते थे कि यह सुधार जेरसन की आहार-चिकित्सा के कारण हुआ है; पर साथ ही वे उस चिकित्सा को बंद करवाकर कोई खतरा भी नहीं मोल लेना चाहते थे।

आज तक कोई नहीं जान सका है कि जानी के उस अप्रत्याशित और चमत्कारपूर्ण सुधार का कारण क्या था। एक्स-रे? सरसों की गैस? आपरेशन? आहार-चिकित्सा? शरीर पर आत्मा की विजय? स्वस्थ कोषों का निर्माण? या इन सबका सम्मिलित प्रभाव? निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

और इसी तरह कोई निश्चित रूप से यह भी नहीं बता सकता कि कुछ ही महीनों के बाद वह फोड़ा ज्वालामुखी की भांति अचानक कैसे फट पड़ा?

× × ×

आखिरी कड़ी

मौत के समय हम एकबारगी नहीं मर जाते। उसके बहुत पहले ही हम धीरे-धीरे गल चुके होते हैं। एक के बाद एक दैहिक शक्ति, एक के बाद एक दिलचस्पी, एक के बाद एक प्रीति खत्म होती जाती है। जीते-जी हम अपने आप से छिटकते चले जाते हैं; हर साल बदलते चले जाते हैं। हम जो कुछ थे, उसके बचे-खुचे आखिरी अवशेषों को मौत कब्र में डाल जाती है।

—विलियम हैजलिट

फरवरी १९४७ में जानी की हालत इतनी अच्छी हो गयी थी कि वह मजे से आधा मील के करीब पैदल चल लेता था। अब उसने कई साल पहले की अपनी मित्र कुमारी मेरी से दुबारा चिट्ठी-पत्री और फोन पर बातचीत भी आरंभ कर दी थी। अब वह हर तरह से प्रसन्न था।

किंतु फरवरी के अंत में फोड़ा बढ़ने लगा और इस बार उसकी स्मरण-शक्ति भी अस्थायी रूप से नष्ट हो गयी। वह अक्सर ऐसे सवाल पूछता रहता था—"मैं कहां हूं? ......अब सुबह के आठ बजे हैं, या शाम के? ......कल क्या हुआ था? ......मुझे अब कुछ भी याद क्यों नहीं रहता?"

फिर जानी को दो दिन के लिए अस्पताल ले जाया गया। इस बार उभार पत्थर

नंदा से सुनिए एक रहस्य की बात

'लक्स मेरा दैनिक सौंदर्य-साधन है'

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
सौंदर्य साबुन

LUX
TOILET SOAP

सफ़ेद और
इंद्रधनुष के
४ रंगों में

LTS. 175-75 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

की भांति कड़ा था । [illegible] टटोलने के बाद डाक्टर द्रवित हो आये । मैंने पहली बार उनकी आंखों में आंसू देखे । शोक-विह्वल शब्दों में उन्होंने इतना ही कहा—"इस बार इसे फूटने में कुछ अधिक समय लगेगा ।"

२५ अप्रैल को पेनफील्ड ने स्वयं आकर जानी की जांच की । उसके बाद उन्होंने मत व्यक्त किया कि यदि आहार-चिकित्सा को बंद करके सरसों की गैस फिर दी जाये तथा फोड़े का दुबारा आपरेशन हो, तो जानी के प्राण बचाना अब भी संभव है, बशर्ते इस सलाह पर अमल फौरन शुरू हो जाये ।

आहार-चिकित्सा बंद होने की बात सुनकर तो जानी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा । आपरेशन की बात हमने उसे नहीं बतायी । लेकिन अस्पताल में नाई को देखते ही जानी फ्रांसेस से कहने लगा—"मां, मुझे इस हत्यारे से बचाओ !"

२९ अप्रैल की दोपहर को १ बजकर २० मिनिट पर आपरेशन शुरू हुआ और सवा सात बजे हमने मूर्च्छित जानी को आपरेशन-रूम से बाहर लाये जाते देखा । फोड़े से गुलाबी रंग का द्रव काफी मात्रा में निकला था । डाक्टर ने कहा—"फोड़ा इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि मस्तिष्क में ११ सेंटिमीटर गहरा छेद करने के बाद भी मुझे स्वस्थ मस्तिष्क-शिराएं दिखाई नहीं दीं ।"

सप्ताह-भर बाद जानी को घर जाने की इजाजत मिल गयी । २५ मई को जानी के हेडमास्टर श्री बायडन ने फोन पर हम लोगों को सूचित किया कि जानी परीक्षा में सफल हो गया है और यदि डाक्टरों की अनुमति लेकर स्कूल के वार्षिक उपाधि-वितरण-समारोह में वह भी अन्य लड़कों के साथ डिप्लोमा लेने के लिए आ सके, तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता होगी । उन्होंने यह भी कहा कि जानी ने अपनी मेहनत से यह डिप्लोमा प्राप्त किया है; उसके साथ किसी प्रकार की रियायत नहीं की गयी है ।

जानी ने यह समाचार सुनकर विशेष आश्चर्य प्रकट नहीं किया । लेकिन उसकी सफलता की यह खबर सुनकर हमें रोना आ गया । क्योंकि हमें पता था कि यह उसके विद्यार्थी-जीवन की अंतिम सफलता सिद्ध हो सकती है ।

जब जानी हमारे साथ अपने स्कूल पहुंचा, तो स्कूल के लड़के पहले तो उसकी ओर यों घूरने लगे, मानो वह कोई भूत हो; लेकिन फिर तुरंत उससे पूर्ववत् व्यवहार करने लगे । जानी २७ मई को पहली बार स्कूल गया । उपाधि-वितरण ४ जून को होनेवाला था । यह सप्ताह बड़े आनंद से गुजरा । पूरे सप्ताह रोज शाम को स्कूल में कोई-न-कोई समारोह था और रोज शाम को वह हम लोगों के साथ उसमें शरीक होता था ।

उपाधि-वितरण के समय उसने अन्य विद्यार्थियों के साथ खड़े होने की जिद की और हम उसकी कमजोरी को जानते हुए भी 'ना' न कह सके। जब हेडमास्टर ने उसका नाम पुकारा, तो वह धीरे-धीरे मंच की ओर बढ़ा । उसका सारा शरीर कांप रहा था;

मेहमान आनेवाले थे...और सरला के सर में दर्द था!

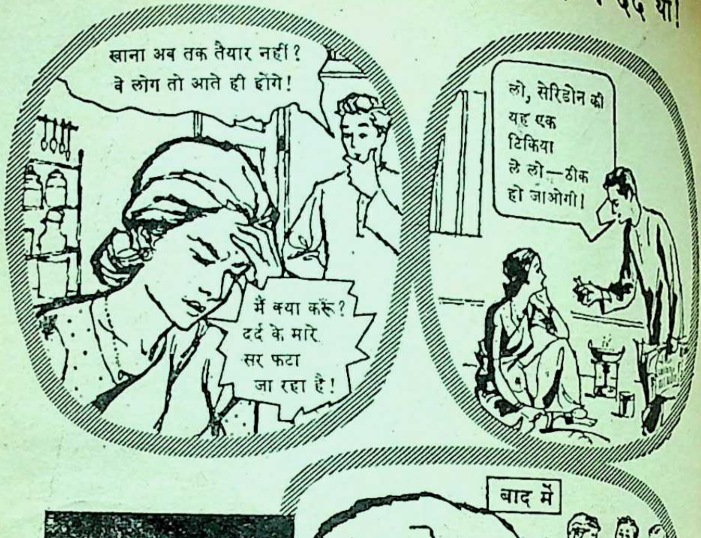
खाना अब तक तैयार नहीं ? वे लोग तो आते ही होंगे!
मैं क्या करूं? दर्द के मारे सर फटा जा रहा है!
लो, सेरिडोन की यह एक टिकिया ले लो—ठीक हो जाओगी।
बाद में
सरला सेरिडोन की एक ही टिकिया लेती है
बहुत अच्छा हुआ, उनकी बात रह गयी! सेरिडोन की यह टिकिया तो कमाल की निकली!

दुनियाभर में मशहूर सेरिडोन दर्द में जल्द और निरापद रूप से पूरा आराम पहुँचाती है। सरदर्द, दाँत के दर्द, बदन के दर्द, हरारत और सर्दी-जुकाम में सेरिडोन लीजिए।

सेरिडोन हमेशा अपने घर में रखिए। बड़ों के लिए एक टिकिया; बच्चों के लिए ¼ से ½ टिकिया तक काफ़ी है।

एक ही
सेरिडोन 'रोश'
दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है
ताज़गी देती है

सेरिडोन की एक ही टिकिया काफ़ी है
एक टिकिया के १३ न. पै.

'रोश' उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स : वोल्टास लिमिटेड

JWT-VT.384A

पर वह सीधा बढ़ता ही गया । और उसके डिप्लोमा लेते ही उसके साथियों ने खूब ज़ोर से तालियां बजायीं ।

इस समारोह में जानी ने अपनी अदम्य इच्छा-शक्ति के बल पर जैसा वीरोचित प्रदर्शन किया, उसने मानो थोड़ी देर के लिए उन सब यंत्रणाओं को धो डाला, जो पिछले महीनों में उसने भोगी थीं । शरीर पर आत्मा और संकल्प-शक्ति की विजय का उज्वल उदाहरण उसने प्रस्तुत किया था ।

× × ×

३० जून को वह अंतिम बार रक्त-परीक्षा के लिए अस्पताल गया। इस परीक्षा के बाद उसे हमारे साथ कुछ दिनों की छुट्टी मनाने जाना था । अस्पताल में तो वह बिलकुल ठीक था; परंतु घर लौटते समय, कार में उसने कुछ बेचैनी महसूस की। घर आकर वह फिर ठीक हो गया, हालांकि उसे थकावट अभी तक अनुभव हो रही थी ।

कुछ घंटे बाद उसे सिरदर्द की शिकायत हुई । दर्द बराबर बढ़ता ही जा रहा था ।

एक परिभाषा

जो मनुष्य जवान अरमान लिये मर जाये, समझो वह जीते-जी दफन हो गया । जो मनुष्य अपनी सब आशा-आशंकाओं के पूर्ण हो जाने के बाद भी जिये जाये, समझो वह मर तो चुका, पर दफन होने से रह गया । मौत क्या है ? वे तमाम चीजें जो हम चूक गये—वे तमाम युग और लोक जिनमें हम नहीं जिये, वे तमाम देश जो हमने नहीं देखे, वे तमाम पुस्तकें जो हमने नहीं पढ़ीं, वे तमाम भाव और अनुभव जो हमने नहीं पाये, वे तमाम प्रार्थनाएं जो हमने नहीं कहीं, वे तमाम युद्ध जो हमने नहीं लड़े । हर एक प्रतिबंध, हर एक निराकरण मौत का एक टुकड़ा है ।

—जैंगवेल

जब वह असह्य हो गया, तो उसने फोन पर अपने डाक्टर से आदेश के स्वर में कहा—"जल्दी, बहुत जल्दी, कुछ मार्फिया भेजिये।" ऐसा भयंकर सिरदर्द उसे अपने पहले आपरेशन के बाद पहली बार हुआ था ।

मैं जब ढाई बजे के करीब घर आया, तो जानी थका-हारा और निःशक्त होकर मेरे कमरे में लेटा हुआ था । मैंने उसे खुश करने के लिए झूठ बोलते हुए कहा—" जानी, हारवर्ड विश्वविद्यालय ने तुम्हें दाखिल कर लिया है ।" उसने जंभाई लेते हुए बड़ी शान से पूछा—" क्या मैं दाखिल हो गया ?"

जब अस्पताल से डाक्टर ट्रेगर जानी को देखने आये, तो वे कुछ देर तक उसके साथ रहे । फिर उन्होंने मुझे अलग ले जाकर व्यथा के साथ कहा—"जानी मर रहा है ।"

उसका फोड़ा किसी रक्तवाहिनी से टकरा गया था और अब वह मस्तिष्क में रक्तस्राव होने से मर रहा था । पिछले कई महीनों में कई डाक्टरों ने उसकी मृत्यु के कारण के बारे में जो-जो संभावनाएं बतायी

बिलकुल सरल

आप केवल

रु० ५/- से ही

खोल सकते हैं

सेविंग्स बैंक एकाउन्ट

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में

कोई बैंक चार्जेज नहीं—
और आपको ब्याज भी
मिलेगा वार्षिक २
प्रतिशत के हिसाब से

आपकी निकट की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये :

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

(संयुक्त राज्य में समितिबद्ध • सदस्यों का दायित्व सीमित)

बम्बई की शाखायें :—६०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायड्स ब्रान्च)। मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायड्स ब्रान्च)। ११७-११६, काजि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी ; ४५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज ; १/५७१, गोवालिया टैंक रोड, कम्बाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि,क्लेअर रोड, बायकुला। ठाणा :—आग्रा रोड, कोलबाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

थीं, उनमें मस्तिष्क के रक्तस्राव का कहीं जिक्र न था।

उस शाम की अस्पष्ट और धुंधली-सी ही याद मुझे है। जानी को तुरंत अस्पताल ले जाया गया और फ्रांसेस और मैं न जाने कितने घंटों तक जानी के कमरे के बाहर निरुद्देश्य चहल-कदमी करते रहे। रात बड़ी गरम और अंधेरी थी। परंतु जानी शांतिपूर्वक सोता रहा।

ग्यारह बजने में कुछ मिनिट बाकी थे। हम दोनों कुछ क्षणों के लिए बाल्कनी में चले गये। तभी 'एमरजेंसी' की घंटी बज उठी। उस समय जानी के पास कोई डाक्टर नहीं था। महीनों से जिसका साबका डाक्टरों से पड़ता रहा था, उसके अंतिम क्षणों में कोई डाक्टर हाजिर नहीं था—कैसी विडंबना थी! वैसे कोई डाक्टर हाजिर होता, तो भी क्या कर सकता था!

कुछ मिनिट बाद जानी का कमरा डाक्टरों से भर गया। वे डाक्टर मुझे उस समय मौत के कठोर और निर्मम चेहरे पर भिनभिनाती हुई मक्खियों जैसे लग रहे थे।

११ बजकर २ मिनिट पर जानी मर गया। उसकी मूर्च्छा एक क्षण को भी नहीं टूटी थी। मरते समय उसे पता नहीं था कि वह मर रहा है, न उसे कोई डर था, न दुःख। मैंने उसकी बाहें अपने हाथों में ले लीं, उन बांहों की गरमी धीरे-धीरे लुप्त होती चली गयी और अंत में वे बिलकुल सर्द हो गयीं। जीवन क्या है? कैसे अज्ञात रूप से वह मौत की शरण में पहुंच जाता है? चोर की तरह चुपचाप आकर मौत जानी के प्राण हर ले गयी थी।

× × ×

कभी-कभी मैं सोचता हूं, मौत ने उसे ही—इतने महत्वाकांक्षी और मेधावी लड़के को ही क्यों चुना? क्यों मौत ने एक किशोर को ही पसंद किया? क्यों कैंसर ने उसके व्यक्तित्व के सर्वाधिक उर्वर अंग अर्थात् मस्तिष्क को ही चुना? किंतु इन प्रश्नों का कोई उत्तर मुझे नहीं मिलता। यों जीवन को मापने और उसे महत्व प्रदान करने के कई तरीके लोगों के पास हैं; परंतु उनसे क्या संतोष मिल सकता है! हम तो इतना ही जानते हैं कि यादों के सहारे हम तो उस तक पहुंच सकते हैं; पर वह हमारे पास नहीं आ सकता।

वह जो इतने दिन जीवित रहा, इतनी मुश्किलें व बाधाएं सहता रहा—वह अपनी अजेय आत्मा और अदम्य साहस के कारण ही। यह पुस्तक जानी के वीरतापूर्ण संघर्ष की प्रशंसा में तो लिखी ही गयी है; जीवन की गरिमा तथा आत्मा के अमरत्व की महिमा दिखाने के लिए भी लिखी गयी है।

फ्रांसेस ने जानी की मृत्यु के बाद लिखा—"जीवन से हमारा आमना-सामना किसी की मौत के समय ही होता है। मौत ही हमें जीवन के निकट लाती है। जीवन के अंतिम दिनों में जानी प्रायः रोज ही मरता और रोज ही जन्म लेता था।

"अपने बच्चे को मरते देखकर बहुत-से पेचीदा सवाल मन में उठते हैं। पर हम जब

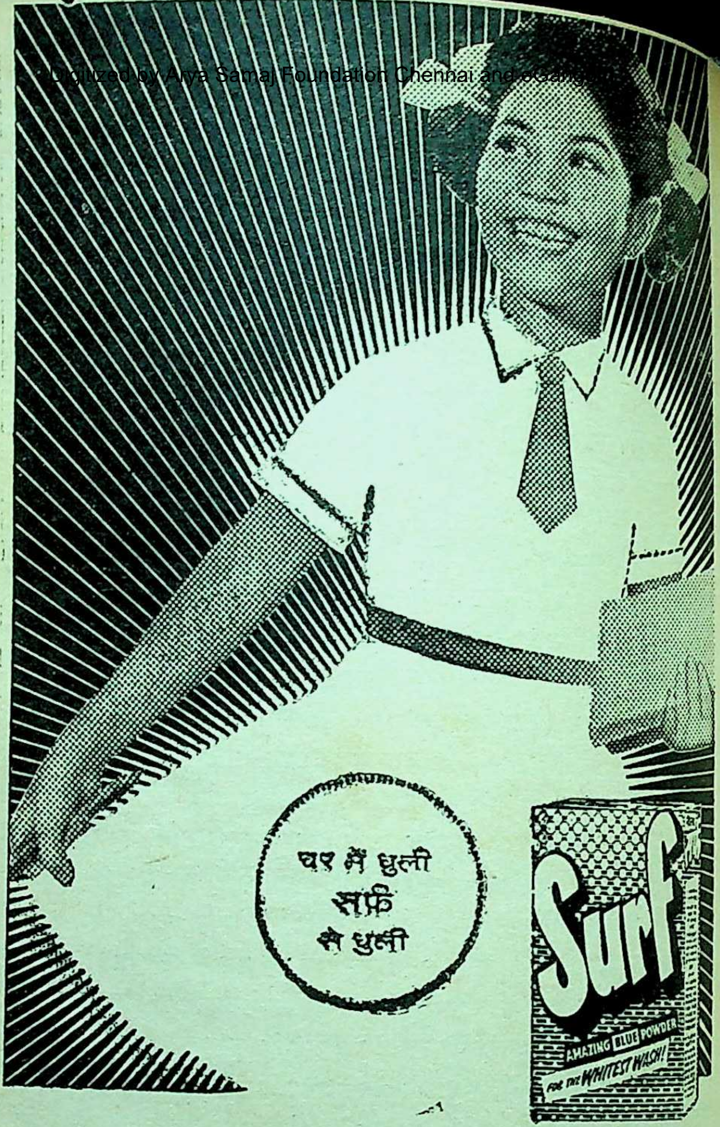
घर में धुली
सर्फ
से धुली
Surf
AMAZING BLUE POWDER
FOR THE WHITEST WASH!

सर्फ़ से घर में कपड़े धोइए, और देखिए धुलाई का कमाल ... अत्याधिक सफ़ेद, अपूर्व साफ़ और अत्यंत आसान! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है! अपनी सारी धुलाई सर्फ़ से कीजिए ...बच्चों के वस्त्र, कमीज़ें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं,

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 44-77 HI

अकेले में होते हैं, तो एक ही बात याद रह जाती है, एक ही बात बार-बार दिलो-दिमाग में चक्कर लगाती रहती है–'काश ! हमने उसे और ज्यादा प्यार किया होता !'

"जानी असाधारणतः स्फूर्तिमान और स्नेही लड़का था । उसमें कोई बुराई नहीं थी । उसकी अच्छाई औरों को भी अच्छाई के मार्ग पर प्रवृत्त करती थी । फिर भी एक बढ़ते हुए दूषित कोप ने उसे मार डाला ।

"मैं बहुत दुःखी हूं; लेकिन मेरे मन में असहायता की भावना, इस ब्रह्मांड के शाश्वत नियमों के प्रति विद्रोह की भावना नहीं है । मेरा दुःख बड़ा सीधा-सादा और गहरा है । भगवान का ध्यान करती हूं, तो गंभीर हो जाती हूं और मेरे आंसू अपने आप सूख जाते हैं । किंतु खिली धूप में एक नाव नदी में बहती देखकर बराबर आंखों में आंसू आ ही जाते हैं । और यह खयाल मन में आये बिना नहीं रहता कि जानी आज ऐसी ही नाव चलाकर कितना खुश हुआ होता !"

★

जीवन का मोड़

जाह्नवी का सुरम्य तट । ब्राह्म मुहूर्त की वेला और कंपायमान करने-वाले पौष मास के दिवस । पवन देव मानव-दंतावली से 'दंतवीणो-पदेशाचार्य' की शिक्षा-दीक्षा लेने में निरत थे ।

प्रकृति शीत में बेहोश मालूम होती थी । वहीं सरिता के रेतीले भूभाग पर ऋषि दयानंद बैठे थे । वे प्राणायाम करते, समाधिस्थ होते और अलिप्त भावों में खो जाने का अभ्यास करते थे ।

नातिदूर, एक दीन-हीन मां अपने शिशु के शव को भागीरथी के जल में बहाने को झुकी । मारे शीत के स्त्री स्वयं जल-प्रवाह में लुढ़कते-लुढ़कते बची । उसकी एकमात्र ओढ़नी ही कफन का वस्त्र था और वह अब भीग चुका था । दुःख, विलाप और विवशता की त्रिवेणी में डूबती हुई वह अबला अनिमेष नेत्रों से लाश को निहारकर लौट चली ।

वीतराग दयानंद सरस्वती यह सब देखकर चिंतित हो उठे । उनकी ज्ञान-वीणा के तार विशृंखलित होने लगे । लेकिन उनका विचार-मंथन अकथनीय था । अंततः उस नीरवता में, उनकी वाणी यों प्रस्फुटित हुई :

"हे सर्वेश्वर ! यह क्या देख रहा हूं ? मेरी माताओं की यह दशा ! मुझे सर्वांगीण शक्ति दो । मैं पिछड़े लोगों को उठाकर ही दम लूंगा । राष्ट्र के समस्त भाई-बहनों के हित में, मैं आज से अपनापन मिटा दूंगा ।"

–रामचंद्र मक्कासर

★

हर समय का मन - आकर्षण

मुरारजी फ़ैब्रिक्स

रिटेल मूल्य की दूकानें यहां पर हैं,

१. ३६ ए, कुलाबा काजवे, २. डा० अम्बेडकर रोड, परेल
३. लोकमान्य, देना बैंक के सामने दादर (प. रेलवे)
४. ३९१ ए, गिरगांम रोड, ५. ४०९, शेख मेमन स्ट्रीट, ६. २८१, सुभाष मार्केट, तारदे
७. कांदीवली स्टेशन के सामने कांदीवली, **८. दी मोरारजी गोकुलदास** स्पिनिंग एंड वीविंग कं
लि०, परेल, बम्बई १२

CC-MM-

दिल टूटने से थोड़ी-सी तकलीफ़ तो हुई लेकिन तमाम उम्र का आराम हो गया।

लेखक की नव-प्रकाशित आत्मकथा 'मेरे जीवन के अनुभव' के कुछ मीठे-तीखे प्रसंग।

संतराम

मेरे जीवन का अधिकांश समय जात-पांत के विनाश और राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा में बीता है । इन दोनों कामों को मैं राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से ही करता आ रहा हूं ।

बचपन से मेरे मन पर धार्मिक संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा । हमारे फूफाजी भक्त-हृदय व्यक्ति थे । वे रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत पुराण की कथा कहा करते थे । इससे मुझमें अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धा और भक्ति का भाव बढ़ा । लाहौर जाकर कालेज में मुझ पर आर्यसमाज का गहरा रंग चढ़ा । फलस्वरूप संस्कृत और प्राचीन वैदिक धर्म के प्रति मेरी श्रद्धा और बढ़ गयी ।

परंतु कालांतर में मेरे विचारों ने फिर पलटा खाया । मुझे किसी एक संप्रदाय के खूंटे के साथ अपने को बांध लेना हितकर न जान पड़ा । मैं किसी गुरु-महात्मा की पूंछ पकड़कर भवसागर पार करने की अपेक्षा, अपनी बुद्धि के प्रकाश में चलकर दो-एक बार ठोकर खा लेना भी अच्छा समझता हूं । इसी बीच मैं कई साधु-फकीरों व योगियों के संपर्क में भी आया । अंत में मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि योग, समाधि प्रभृति क्रियाओं का सच्चे आध्यात्मिक या उच्च तथा पवित्र जीवन के साथ कोई संबंध नहीं है । यह तो पांव से सींग बांधकर रस्से पर किसी नट के नाचने के समान केवल अभ्यास की बात है।

मैं उन दिनों बहरामपुर स्कूल में मुख्याध्यापक था । एक दिन मैंने देखा, स्कूल का फारसी-अध्यापक मुसलमान मौलवी अपने कुछ अपढ़ श्रद्धालुओं के बीच बैठा प्रेतात्माओं को बुला रहा है । मुझे देखकर वह बोला—"अब मैं दयानंद की आत्मा बुलाता हूं ।" मैंने कहा—"मौलवी साहब, अपना ढोंग मत रचिये, दयानंद की आत्मा न बुलाइये ।" मौलवी बोला—"नहीं, मैं जरूर बुलाऊंगा ।" इस पर मैंने कहा कि यदि मैंने मुहम्मद की आत्मा बुला ली, तब बुरा तो नहीं मानोगे ? लेकिन वह बाज नहीं आया । तब मैंने कड़ककर कहा—"अच्छा बुलाओ ! मैं देखता हूं, तुम दयानंद की आत्मा बुला लोगे, तो मैं अपना नाम बदल दूंगा ।" मेरे इस मनोवैज्ञानिक आक्रमण का परिणाम यह हुआ कि मौलवी का प्लांचेट हिलना

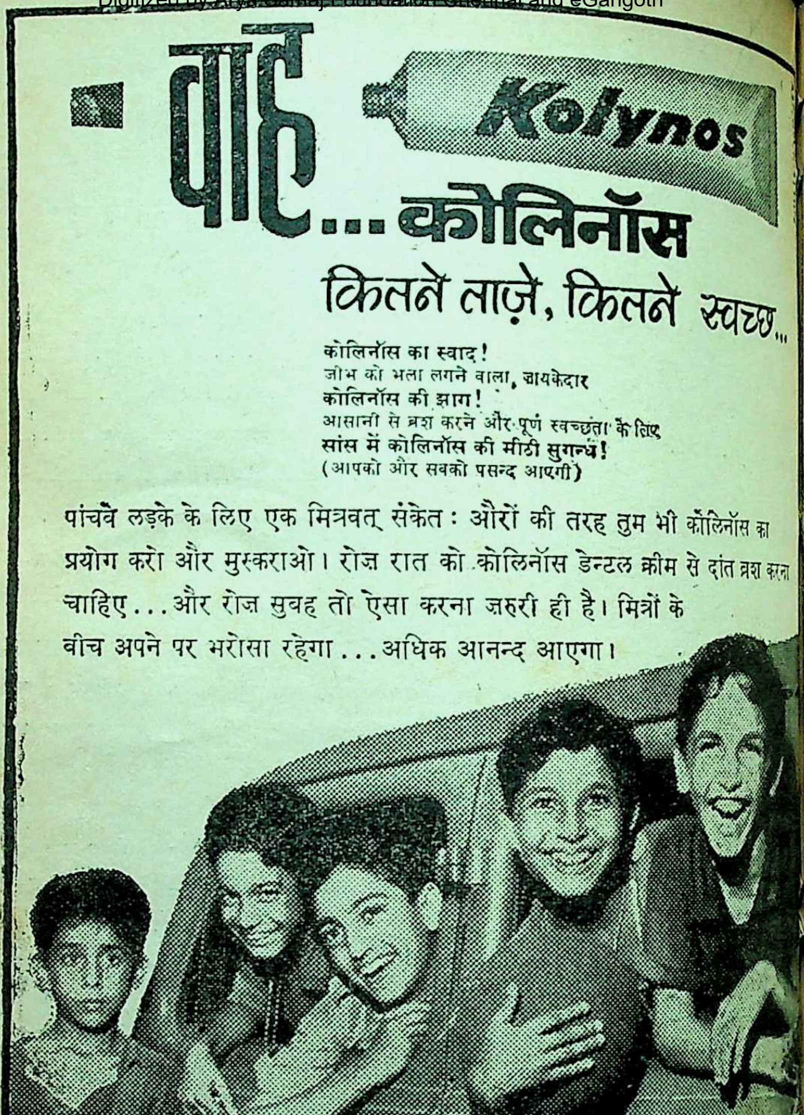

वाह...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, ज़ायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवें लड़के के लिए एक मित्रवत् संकेत : औरों की तरह तुम भी कोलिनॉस का प्रयोग करो और मुस्कराओ। रोज़ रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए...और रोज सुबह तो ऐसा करना ज़रुरी ही है। मित्रों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा...अधिक आनन्द आएगा।

मधुर मुस्कान...कोलिनॉस की मुस्का

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी : जेफ़री मॅनर्स अॅन्ड कम्पनी लिमिटेड

बंद हो गया । भक्तजन चकित रह गये ।

इसी तरह एक बार अपने एक मित्र के आग्रह पर मैं राधास्वामी सत्संग के एक गुरुजी के संपर्क में आया । उनसे अछूतों के हाथ का अन्न ग्रहण करने की चर्चा चली, तो वे कहने लगे—"हम किसी का अन्न नहीं खाया करते ।" इस पर मैंने कहा—"अच्छा, यदि आपको कोई चमार सत्संगी अपने यहां भोजन के लिए बुलाये, तो क्या आप उसका भोजन कर लेंगे ?" यह स्पष्ट और नंगा प्रश्न सुनकर वे आपे से बाहर हो बोले – "अरे, तेरे या मेरे कहने से यह जात-पांत नहीं टूट सकती ।"

मैंने कहा—"आप यदि दिन को रात कहते हैं, तो आपके भक्त झट कहने लगते हैं कि वह देखिये चांद चमक रहा है । फिर वे आपके कहने से जात-पांत क्यों नहीं तोड़ेंगे ?" इस पर वे बोले—" हम इस लोक की बात नहीं करते, हम तो परलोक की बात करते हैं ।" मैंने कहा—"मैं तो इस लोक को ही सुखी देखना चाहता हूं । परलोक में क्या होगा, इसकी मुझे अधिक चिंता नहीं ।"

इससे मुझे विदित हो गया कि हमारे ये आध्यात्मिक गुरु जनता को किस प्रकार परलोक की कल्पित बातों की मदिरा पिलाकर संसार की वास्तविक समस्याओं पर विचार करने से रोक देते हैं ।...... वास्तविकता यह है कि संसार में जितने धूर्त हैं, उनसे कहीं अधिक संख्या मूर्खों की है । इसलिए प्रत्येक धूर्त को ऐसे मूर्ख मिल ही जाते हैं, जिनको वह ठग सकता है ।

मेरी धारणा है कि किसी मनुष्य के अच्छा या बुरा होने का पता इससे नहीं लगता कि वह कितने घंटे समाधि में बैठता है या कितनी राम-नाम की माला जपता है । किसी व्यक्ति की जांच करनी हो, तो देखना चाहिये कि वह धन कैसे कमाता है और उसे कैसे खर्च करता है । बस इससे उसके सारे जीवन का चित्र आपके सामने आ जायेगा ।

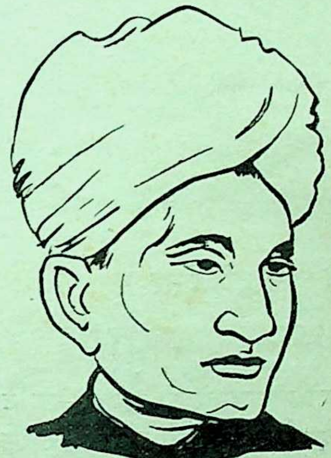
लेखक

मैं तामसिक दान से सात्विक ग्रहण को श्रेष्ठ मानता हूं । अर्थात् बेईमानी या अनुचित साधनों से बटोरकर अपनी ख्याति के लिए लाखों रुपया दान करने से मैं ईमानदारी से पैसा कमाना उत्तम मानता हूं ।

मेरा अधिकांश समय जात-पांत-विरोधी प्रयत्नों में बीता है, यह मैं पहले ही स्पष्ट कर चुका हूं । आज उन दिनों की याद करता हूं, तो मेरे सामने कई चित्र उभर आते हैं । संभवतः १९३१ या ३२ की बात है । हमारे

कोण कोई भी हो

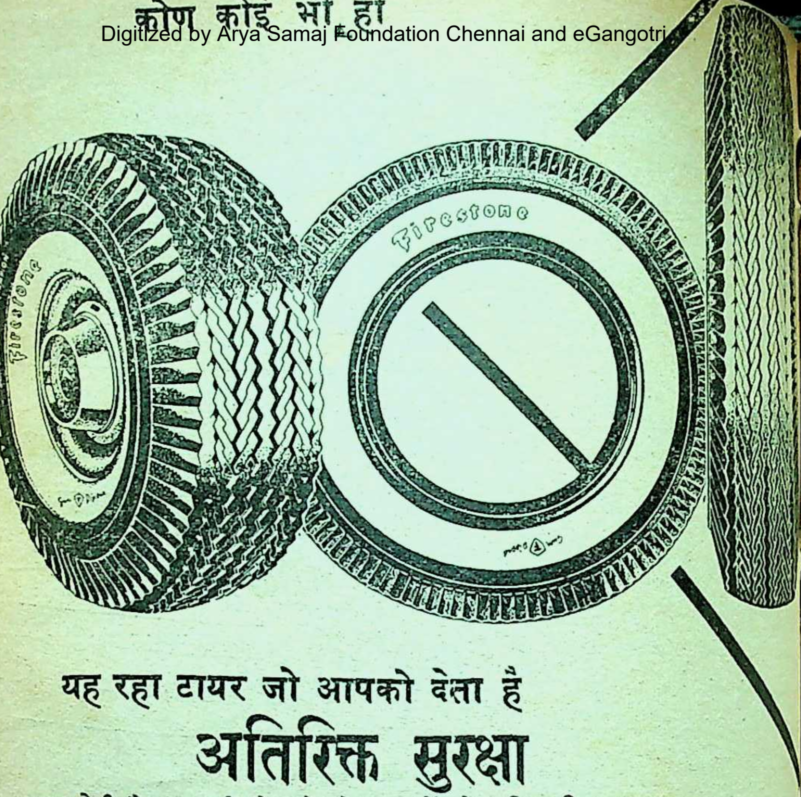

यह रहा टायर जो आपको देता है

अतिरिक्त सुरक्षा

यह ऐसी ट्रैड प्रणाली है, जो मोटरवालों को अधिकाधिक टायर सुरक्षा प्रदान करने के लिए परीक्षण-मैदानों तथा मोटर रेस की सड़कों पर संपन्न कों अनुसंधान की प्रतीक है। सुरक्षित संचालन के हजारों कोण सड़क को मजबू पकड़ते हैं, और जब आप अपनी मोटर चालू या खड़ी करते हैं तब आसान नि और बेहतर संचालन की आपको अधिक सुविधा रहती हैं। जब आप फायरस खरीदते हैं तब भली भाँति जानते ही हैं कि आपको कितना लाभ होनेवाला है

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर

फायरस्टोन : बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आपका प्रिय प्रतीक

गांव में पठानों के यहां एक विवाह था । मेरे मित्र श्री शेर खां अपने घर से मेरे लिए मीठा पुलाव ले आये और छिपकर मुझे देने लगे । मैंने कहा—"मैं छिपकर नहीं, सबके सामने खाना चाहता हूं ।" इससे गांव में बड़ा शोर मच गया ।

इसके कुछ समय बाद मेरे दो मित्र श्री ईश्वरदास सब जज और श्री हरनामदास मुझसे मिलने आये । वे दोनों जन्म से अछूत थे । मैंने उन्हें अपने घर के कुंए पर चढ़ाया और चौके में बैठाकर भोजन कराया । इससे गांव में बड़ा हो-हल्ला मच गया । हिन्दुओं ने ही नहीं, हमारे मुसलमान नौकरों ने भी हमारे घर का वहिष्कार कर दिया । मुसलमान नहीं चाहते थे कि अछूतों को हिन्दू इस प्रकार अपने साथ मिला लें और उनका शिकार उनके हाथ से निकल जाये । हिन्दू स्त्रियां मुझे गालियां देने लगीं—"तेरे-जैसे नालायक की जगह अगर पत्थर जन्म ले लेता, तो अच्छा होता ।" लेकिन मैं अपने संकल्प पर दृढ़ रहा । कुछ वर्ष में विरोध शांत हो गया । किसी ने ठीक ही कहा है :

न डर बादे-मुखालिफ से तू ऐ उक्काब,
यह तो चलती है तुझे ऊंचा उठाने के लिए ।

संसार में प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती देखी जाती है । साथ ही यह बात भी देखी गयी है कि जितना विरोध अपने करते हैं, उतने कदाचित दूसरे नहीं । जांत-पांत-तोड़क मंडल का जन्म यद्यपि एक प्रकार से आर्यसमाज में ही हुआ था और इसके संस्थापकों में अधिकांश आर्यसमाजी थे, तथापि इसका विरोध भी वहीं से आरंभ हुआ ।

उन दिनों आर्यसमाज, बच्छोवाली (लाहौर) की अंतरंग सभा में हमारे विरोधियों की संख्या ज्यादा थी । वहां उन्होंने हमारे विरुद्ध निंदा का प्रस्ताव पास करा दिया । हमने उसके विरुद्ध साधारण सभा में अपील की । वहां हमारा बहुमत था । फलस्वरूप वहां प्रस्ताव पास हुआ कि जात-पांत-तोड़क मंडल बहुत अच्छा काम कर रहा है, इससे प्रार्थना की जाये कि इसी प्रकार काम करता रहे । वास्तविकता यह थी कि—

सजाओं में ऐसा मजा आ रहा था ।
कि जी चाहता था करें फिर खताएं ।।

एक तरफ यह हालत थी, दूसरी तरफ कुछ तथाकथित सुधारकों का खोखलापन भी था । सन १९३५-३६ की बात है । मैं कृष्णनगर (लाहौर) में रहता था । एक दिन हमारे पड़ोस के पंचायत अफसर श्री रामसिंह हजामत बनवाने के लिए गये । नाई उनकी चमार जाति जानता था, सो उसने साफ इन्कार कर दिया । बाद में कुछ सुधारक उस नाई के पास पहुंचे और उसे समझाने लगे ।

नाई ने कहा—"मुझे कोई एतराज नहीं । ये मेरे ही जिले के रहनेवाले हैं । पर मैंने यह दुकान दो पैसे कमाने को खोल रखी है, समाज-सुधार के लिए नहीं । अछूत की हजामत बनाकर मेरा धंधा चौपट हो जायेगा ।"

इस पर सुधारकों ने कहा—"इनकी हजामत बनाने से तुम्हें जितना घाटा होगा, वह सब हम पूरा कर देंगे ।"

व्यस्त प्रबन्धक सुचारुढंग से काम करने के लिये अच्छे कागज़ का उपयोग करते हैं

सिरपुर
पेपर
मिल्स लि०

सिरपुर, कागजनगर, आंध्र प्रदेश
द्वारा प्रचारित।

उत्तम लिखने व छापने के कागज, बैंक व बौंड कागज, क्रीमलेड व क्रीमवोव कागज़, एयर मेल, ऑफसेट तथा अन्य कई खास प्रकार के कागजों के निर्माता

ASP/SP/2 HIN

यह सु
पूरा कर
आप सिप
को अपने
नवर्ण अ
बैठाकर
आपकी प
भला कर
साफ करे
बनाने ल
छूट गये,
एक
बहुत-से
कर इस्ल
हिन्दू सम
मिलाये
अछूतों क
इस पर
कि इसमें
अछूत।
हैं। हिन्दू
हैं और
हिन्दू ध
न हो ज
अछूत हो
कारा प
इस
गये। वे
हैदराबा
है और
है, वह

यह सुन नाई बोला— "आपको मेरी चोटी पूरा करने की कोई आवश्यकता नहीं। आप सिर्फ एक काम कीजिये। रामसिंहजी को अपने घर ले जाइये और अपने दूसरे सवर्ण अतिथियों के समान अपने चौके में बैठाकर खाना खिलाइये। खाने के बाद, आपकी पत्नी जैसे दूसरे पाहुनों के जूठे बरतन मला करती है, वैसे ही इनके जूठे बरतन भी साफ करे। बस, फिर मैं भी इनकी हजामत बनाने लग जाऊंगा।" सुधारकों के छक्के छूट गये, वे चुपचाप दुम दबाकर भाग गये।

एक बार निजाम हैदराबाद के राज्य में बहुत-से अछूतों ने हिन्दू धर्म का परित्याग कर इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। इस पर हिन्दू समाचार-पत्र और नेता बहुत तिलमिलाये। उन्होंने जी-भरकर निजाम और अछूतों को जली-कटी सुनायी। लेकिन मैंने इस पर टिप्पणी करते हुए 'क्रांति' में लिखा कि इसमें न तो निजाम दोषी हैं और न अछूत। दोषी यदि कोई है, तो स्वयं हिन्दू हैं। हिन्दू अस्पृश्यता भी बनाये रखना चाहते हैं और साथ ही यह भी चाहते हैं कि अछूत हिन्दू धर्म छोड़कर उनकी दासता से मुक्त न हो जायें। मैंने यह भी लिखा कि यदि मैं अछूत होता, तो मैं भी इस दासता से छुटकारा पाने के लिए मुसलमान हो जाता।

इस पर हमारे मंडल के कई सदस्य बिगड़ गये। वे मुझ पर आरोप लगाने लगे कि मुझे हैदराबाद के निजाम से रुपया मिलता है और मैंने कृष्णनगर में जो मकान बनाया है, वह निजाम के रुपये से ही बनाया है। मैंने उनसे कहा कि मुझे निजाम से रुपया मिला तो नहीं, किंतु यदि मिल जाये, तो मैं छोड़ूंगा नहीं— मैं उसे जात-पांत मिटाने के आंदोलन में लगा दूंगा।

दहर में हम वफा-शआरों को,
दोस्तों के भरम ने मार दिया।
दुश्मनों से तो बच गये लेकिन,
दोस्तों के करम ने मार दिया॥

पर वे कब माननेवाले थे! उन दिनों श्रीमती रामेश्वरी नेहरू हमारे मंडल की प्रधान थीं। जब उनके पास मेरे विरुद्ध शिकायत पहुंची, तो उन्होंने 'क्रांति' में छपी मेरी टिप्पणी ध्यान से पढ़ी और व्यवस्था दी कि ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के हृदयोद्गार हैं, जिसका हृदय हिन्दुओं की दुर्दशा को देखकर तड़प रहा है। वास्तव में वे सचाई को ताड़ गयी थीं। मेरा हार्दिक उद्देश्य हिन्दुओं को कशाघात द्वारा सुधार के लिए तैयार करना था। मैं हिन्दू-द्वेषी नहीं था।

अगस्त १९४७ में देश-विभाजन के कारण मुझे लाहौर से अपने गांव पुरानी बस्ती आ जाना पड़ा और मंडल का सारा संगठन अस्त-व्यस्त हो गया। फिर भी लेखों, पुस्तकों और ट्रैक्टों के प्रचार से पंजाब व अन्य राज्यों से मुझे करीब छः-सात सौ ऐसे मित्र मिल गये, जो मेरे इस प्रचार में प्रेम व श्रद्धा से सहयोग दे रहे हैं।

मैं अकेला ही चला था
जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये
और कारवां बनता गया॥

★

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY.
INDU FABRICS
BOMBAY
"THE BIG SIX"

टेलेफोन नंबर २६५३३१

"इंदु हाउस", डूगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं १

IWD.B.

अंतरिक्ष-यात्रा कौन करेगा?

वारेन आर० यंग

धरती से दो फुट ऊंचा उठने के पश्चात् मैंने अपने जूते की नोक से पीछे की ओर एक हल्का-सा झटका दिया । और अचानक ही एक छोटे-से गुब्बारे की भांति मैं सर्वथा भारहीन हो गया । सहसा उल्लास और विजय की भावना ने मुझे आत्मविभोर कर दिया ।

मैं अमरीका के अंतरिक्ष-प्रशासन (नासा) के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित अंतरिक्ष-परीक्षणों में एक प्रेक्षक पत्रकार की हैसियत से भाग ले रहा था । ऐसे कुछ परीक्षणों का उपयोग 'नासा' ने 'प्राजेक्ट मर्क्युरी' के लिए कुछ व्यक्तियों को छांटने के उद्देश्य से भी किया था । जलसेना और वायुसेना भी इन प्रयोगों के आयोजन में भाग ले रही थीं ।

वैज्ञानिकों को विश्वास था कि इन परीक्षणों से चिकित्सा और स्वास्थ्य संबंधी कुछ ऐसी समस्याओं का समाधान हो सकेगा, जो मनुष्य को चंद्रमा, अन्य ग्रहों और अंतरिक्ष में भेजने में उठती है ।

मैंने जो पहला और सबसे आनंददायक परीक्षण देखा, वह था भारहीनता की अनुभूति का । एक कन्वेयर १३१-बी विमान में बैठकर मैंने इसका आनंद लिया । इस विमान का नाम रखा गया था 'चांद कितना ऊंचा' (हाउ हाइ दि मून) । राइटफील्ड की एयरो मेडिकल लैबोरेटरी के मनोविज्ञान-वेत्ता और विमान-चालक एडवर्ड एल० ब्राउन इसमें परीक्षणों का आयोजन और संचालन करते हैं ।

पहले यह विमान १२,००० फुट की ऊंचाई से गोता खाता है और तब तक गिरता जाता है, जब तक २८५ मील प्रतिघंटा की रफ्तार नहीं पकड़ लेता । इसके उपरांत यह ३० अंश के कोण पर तेजी से ऊपर उठता है और १५ सेकेंड बाद हवा में वक्ररेखा-सी खींचता हुआ उड़ता है । उस समय विमान ग्रहपथ पर चलते हुए भारहीन पिंड के समान लगता है । इसके भीतर के उपकरण कसकर न बंधे होने के कारण परस्पर टकराते, उखड़ते और लुढ़कते रहते हैं । विमान-चालक की भी यही हालत होती है ।

जब वायुयान गोता लगाकर फिर ऊपर उठने लगा, मैंने फर्श पर औंधे मुंह लेटे-लेटे अनुभव किया, जैसे सामान्य गुरुत्वाकर्षण से ढाई गुना अधिक भार मेरी पीठ पर हो । इस तरह मेरी काया का भार कोई ५०० पौंड हो गया । मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि प्रभो, जल्दी यह बोझ उतारो । मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे मैं कोई चीता हूं, जो दबाव को झटके से हटाकर फुर्ती

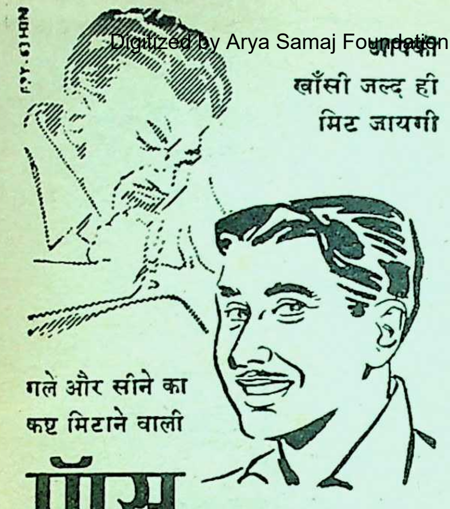

FSY.63HIN

आपकी
खाँसी जल्द ही
मिट जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटाने वाली

पॅप्स टिकियाँ लीजिये।

पॅप्स की टिकियाँ चूसिये — आप देखेंगे कि इनकी आरोग्यकारी भाप दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़, ब्रॉंकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है। पॅप्स से शीघ्र ही आराम मिलता है।

इनमें कोई हानिकारक
दवाएँ नहीं होतीं।
ये बच्चों को बेखटके
दी जा सकती हैं।

PEPS
for
COUGHS
COLDS

**ब्रॉंकाइटिस,
गले के दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं।**

सभी औषधि-विक्रेताओं
के पास मिलती हैं।

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई के सोल एजेंट—केम्प एंड कं० लि०
पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई—२८

**बवासीर
की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये
हडेन्सा
इस्तेमाल कीजिए!**

असहनीय पीडा है? खुजली होती है
जलन, या खून बहता है? तो
न कीजिए। बिना ऑपरेशन के
शीघ्र ही आराम पाने के लिये,
नीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल
संसार के १०८ देशों के डाक्टर
के इस्तेमाल की ही सलाह देते
यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है
हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है,
खुजली से आराम दिलाता है और
इस्तेमाल से मल-त्याग में भी
नही होती। यही नही, यह फटी
चमडी भरने, मस्सो के सिकुडने
स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने मे सहायता देता है
बवासीर से शीघ्र आराम पाने के
हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद
ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार
भारत में बनाया जाता है।

निर्माता : दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहां मिलता है।

B3 DOL 24 HIN

से निक
करने मे
कि
पंण का
प्रतीत
गया।
अनुभव
शून्य स
में जीने
शून
आत्मा
और उ
फैलता
वायुया
में भा
कि जै
वास्तव
होते थ
मु
आनंद
प्रकार
आगे
अवस्थ
भारही
टेल-प
रा
पर बै
मथान
थी।
पकड़
जैसे

से निकल जाने की क्षमता रखते हुए भी वैसा करने में अपने को असमर्थ पा रहा हो ।

किंतु कुछ ही समय पश्चात् गुरुत्वाकर्षण का वह भार मेरी पीठ पर से हटता हुआ प्रतीत होने लगा और धीरे-धीरे समाप्त हो गया। मैं फर्श पर तैर-सा रहा था। मुझे यह अनुभव कर बहुत आश्चर्य हुआ कि भार-शून्य संसार में रहना इस भार-भरी दुनिया में जीने से कहीं ज्यादा आसान है ।

शून्य गुरुत्वाकर्षण की स्थिति शरीर और आत्मा दोनों को बहने की प्रेरणा देती है और उसमें काल रबर की पट्टी की तरह फैलता हुआ प्रतीत होता है। बार-बार वायुयान के धरती पर उतरते समय जब मैं भारयुक्त हो जाता था, मुझे लगता था कि जैसे बहुत मिनिट बीत गये, जब कि वास्तव में १५ सेकेंड से अधिक नहीं बीते होते थे ।

मुझे विश्वास है कि भारशून्यता का आनंद ज्ञात हो जाने पर बहुत-से लोग इस प्रकार के परीक्षणों के लिए उत्सुकता से आगे आयेंगे और हम शीघ्र ही भार-शून्य अवस्था में संपन्न होनेवाले प्रथम विवाह या भारहीन अवस्था में आयोजित पहली काक-टेल-पार्टी की खबरें पढ़ेंगे ।

राइटफील्ड में मुझे एक जालीदार कुर्सी पर बैठना पड़ा, जिसके एक सिरे पर एक मथानीनुमा मशीन की २० फुट लंबी छड़ी थी । मैंने दोनों हाथों में नियंत्रण-छड़ियां पकड़ रखी थीं । मुझे बताया गया था कि जैसे ही मथानी घूमेगी, मेरी आंखों के सामने रोशनी चमकेगी। ऐसा होते ही मुझे नियंत्रण-छड़ी का बटन दबाकर रोशनी को बंद करना चाहिये और चालक को सूचना देनी चाहिये कि गुरुत्वाकर्षण से मैं न तो बेहोश हुआ हूं, न अंधा। बायें हाथ की छड़ी से मुझे गुरुत्वाकर्षण के साथ संतुलन बैठाना पड़ता था ।

जैसे जमींदोज ट्रेन बड़े वेग से स्टेशन से रवाना होती है, उसी तरह वह मथानीनुमा मशीन मुझे तेजी से चक्कर खिलाने लगी। कुछ ही क्षणों में मैंने गुरुत्वाकर्षण से साढ़े तीन गुना अधिक वजन प्राप्त कर लिया। तब भी मैं हाथ और पैर उठा सकता था, यद्यपि कुछ कठिनाई महसूस होती थी ।

जब मथानी का घूमना रुक गया और मेरी नाड़ी स्वाभाविक गति से चलने लगी, तो वैज्ञानिकों ने मुझे गुरुत्वाकर्षण से पांच गुना वजनदार बनाने का निश्चय किया। यह दबाव मुझे जीवन-भर याद रहेगा । मैं अपना सिर उठाकर ऊपर नहीं देख सकता था। सिर का भार पूरे ५० पौंड हो गया था। मेरे समूचे शरीर का भार तो आधे टन से भी अधिक था ।

सांस लेने के लिए मुझे पेट और छाती के बीच की मांसपेशियों को उभारने में बड़ा प्रयत्न करना पड़ता था; क्योंकि मथानी का दबाव सीधे मेरी छाती पर पड़ता था और इस कारण फेफड़े फूलते नहीं थे । सामने की सब चीजें बिलकुल अर्थहीन और धुंधली प्रतीत हो रही थीं। सिर्फ जो चीजें ठीक आंखों के सामने थीं, वही कुछ-कुछ

चकाचक उजलेपन के लिए
विक्टोरिया ब्लू (नील)
00B
श्रेष्ठ किस्म की शुद्ध आधुनिकतम
अल्ट्रामरीन ब्लू (नील)

GENUINE
BEST ULTRA-MARINE
VICTORIA BLUE
00B
Manufactured in India by
Ultramarine & Pigments Ltd.
AMBATTUR (NEAR MADRAS)

पश्चिम जर्मनी के प्रतिष्ठानके सहयोग से भारतमें बनानेवाले
अल्ट्रामरीन एण्ड पिगमेण्टस् लिमिटेड
अम्बतूर (मद्रास के निकट)
सोल सेलिंग एजन्टस्: केमडाइस् ट्रेडिंग कम्पनी
३८, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बइ - १
३१८, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट - मद्रास - १
जिन क्षेत्रोंमें प्रतिनिधित्व नहीं है
वहां स्टाकिस्टस् चाहिए

दिखाई
परंतु
भी हुआ
नियंत्रण
बाहों के
को ज्याद
हो गया
भी सुन
निकट थ
लगता थ
बहुत दू
रहा हो
का मैंने
नहीं दि
था कि
लिए मैं
तो मे
भार उ
देगा।
मुझे ऐ
रहा था
कुएं की
कर उ
जा रह
इतनी
नहीं ह
अस
दबाव
किंतु
प्रत्यंग
की वे
११६

दिखाई देती थीं।

परंतु यहीं पर मुझे इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि अब मुझे वायुयान के यंत्रों पर नियंत्रण करने में आसानी हो रही थी और बांहों के बढ़ते हुए भार के कारण छड़ियों को ज्यादा मजबूती से पकड़ना सुविधाजनक हो गया था। मैं अब यंत्र-चालक की आवाज भी सुन सकता था। वैसे वह मेरे एकदम निकट था, लेकिन ऐसा लगता था, जैसे वह बहुत दूर से बातें कर रहा हो। उसके प्रश्नों का मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। मुझे डर था कि यदि बोलने के लिए मैंने मुंह खोला, तो मेरी जिह्वा का भार उसे बंद कर देगा। भार के कारण मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे मुझे कुएं की तली में डालकर ऊपर से कुचला जा रहा हो। किंतु, इतनी असुविधाओं के बावजूद कोई पीड़ा नहीं हो रही थी।

दूरी

धरती से चांद की दूरी
न नापो,
अपरिमित है।
तुम नापो
इन्सान से इन्सान की दूरी,
और अपने हृदय को
इतना विशाल बनाओ
कि सारी धरती
सारा आसमान
और चांद
उसमें समा जाये;
जो तुम्हारा गंतव्य है,
तुममें आ जाये।

—चंद्रमूषण झा

असली राकेट-यात्रा में गुरुत्वाकर्षण का दवाब इतना भारी और स्थायी नहीं होता, किंतु तेज झटके और हिचकोले अंग-प्रत्यंग को झकझोर डालते हैं। जलसेना की बेथैसडा मैरीलैंड लैबोरेटरी में मैंने इस तथ्य का अनुभव किया था। पैंसाकोला में सबसे पहले जो लोग नितांत नये प्रकार के विमान 'ह्यूमन डिसओरियन्टेशन डिवाइस' पर चढ़े थे उनमें मैं भी एक था। यह विमान १० लाख डालर की लागत से जलसेना के स्कूल आफ एविएशन मेडीसन द्वारा तैयार किया गया था। इसका काम वैज्ञानिकों को संतुलन संबंधी प्रश्नों के अध्ययन में सहायता प्रदान करना था। जब मैंने इस यान के घूमते हुए उदर में प्रवेश किया, मुझे लगा कि जैसे मैं इधर-उधर उछाल दिया गया हूं। मेरी संतुलन-शक्ति एकदम समाप्त हो गयी।

इन परीक्षणों में झटकों, बहाव और उलट-पुलट के अलावा अत्यधिक ताप, शीत और कानों पर घन की चोट-सी करनेवाली तीखी आवाजों की कर्कशता भी सहन करनी पड़ती है। राइटफील्ड में वायुयान के सम्मुख खड़े होने के बाद उस दिन, खोपड़ी के पिछले हिस्से में दिन-भर घंटियों के बजने जैसी आवाज सुनाई देती रही।

उसके उपरांत कक्ष जैसी भट्ठी में डालकर मुझ पर १३०° तापमान का परीक्षण

MARGO
SOAP
HYGIENIC TOILET SOAP

आदर्श
पारिवारिक
साबुन

मार्गो सोप

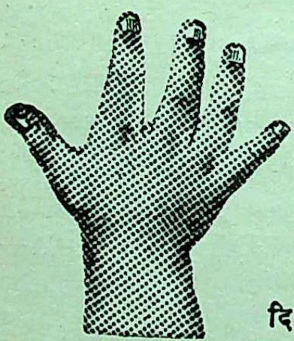

यह एक मुलायम और स्निग्ध
साबुन है जो स्त्रियों और बच्चों
की नाजुक त्वचा की रक्षा करता है।
गंध विहीन नीम तेल से प्रस्तुत
और सुगंधित किया हुआ यह
साबुन स्वास्थ्यप्रद होता है
और हर प्रकार के दोष से
त्वचा की रक्षा करता है।

दि कैलकटा केमिकल कं० लि० कलकत्ता-२९

CMC-17 HBN

किया गया । २[illegible] मैं पसीना-पसीना हो गया । लेकिन मुझे सबसे अधिक कष्ट हुआ, रक्तचाप का परीक्षण करने के लिए आयोजित प्रक्रिया से ।

जब तापमान बढ़ाकर १६० अंश कर दिया गया, बड़ी बेचैनी अनुभव हुई ! मैंने निकट ही धातु की तश्तरी में एक अंडा फोड़कर रख रखा था । मैंने देखा कि वह गरमी के कारण गाढ़ा होने लगा है ।

शीत-सहन की प्रक्रिया कम डरावनी थी । एक बरतन में पानी भरा हुआ था और उसमें कुछ बर्फ के टुकड़े तैर रहे थे । उससे पानी का तापमान ३२° पर स्थिर रहता था । मुझे अपने पैरों को इस पानी में ७ मिनिट तक डाले रखना था । बस मुझे यह बात बड़ी आसान प्रतीत हुई । ज्यों ही मैंने पैर पानी में डुबाने चाहे, सभी वैज्ञानिक मेरे चारों तरफ एकत्र हो गये । उनकी आंखों में बड़ी जिज्ञासा थी ।

आधे मिनिट तक वह पानी मुझे ठंडा प्रतीत हुआ, किंतु कष्टदायक नहीं । फिर मेरे टखनों में दर्द होने लगा—ऐसा दर्द जैसा कि हड्डी के टूटने से होता है । तीन मिनिट के बाद पीड़ा बंद हो गयी । अब तक मेरी टांगें शीत से सुन्न हो गयी थीं । थोड़े समय के पश्चात् पैरों के अग्रभाग में फिर दर्द शुरू हो गया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे कोई [illegible] उन्हें तराश रहा है।

शारीरिक और मनोवैज्ञानिक जांच के लिए किये जानेवाले इन परीक्षणों के द्वारा वायुसेना के अधिकारियों को अंतरिक्ष-उड़ान के लिए योग्य व्यक्तियों को चुन लेने में सुविधा हो जाती है । जो व्यक्ति इन परीक्षणों में सफल हो जाते हैं, उन्हें 'बाघ' की उपाधि दी जाती है । असफल व्यक्तियों को 'खरगोश' कहा जाता है ।

अंतरिक्ष-यात्री के लिए शारीरिक शक्ति ही यथेष्ट नहीं है । मनुष्य की शक्ति को मापने का सबसे आसान तरीका उसे दांतेदार चक्कर पर स्थिर रखना है । इस परीक्षण ने मेरे विजयी होने के स्वप्न को नष्ट कर दिया था । मैं केवल ४।। मिनट ही खड़ा रह सका, और मेरे हृदय की गति दुगुनी हो गयी; जब कि खिलाड़ी या योग्य विमान-चालक पर शायद ही इसकी कोई प्रतिक्रिया होती ।

विशेषज्ञ डाक्टरों ने मुझे यह बताया कि बहुत-से परीक्षणों द्वारा भले ही यह ज्ञात न हो कि कौन-सा व्यक्ति विमान-चालन या अंतरिक्ष-यात्रा के लिए सबसे योग्य होगा, किंतु यह तो निश्चित रूप से जाना जा सकता है कि कौन-कौन से उम्मीदवार इसके लिए अयोग्य हैं ।

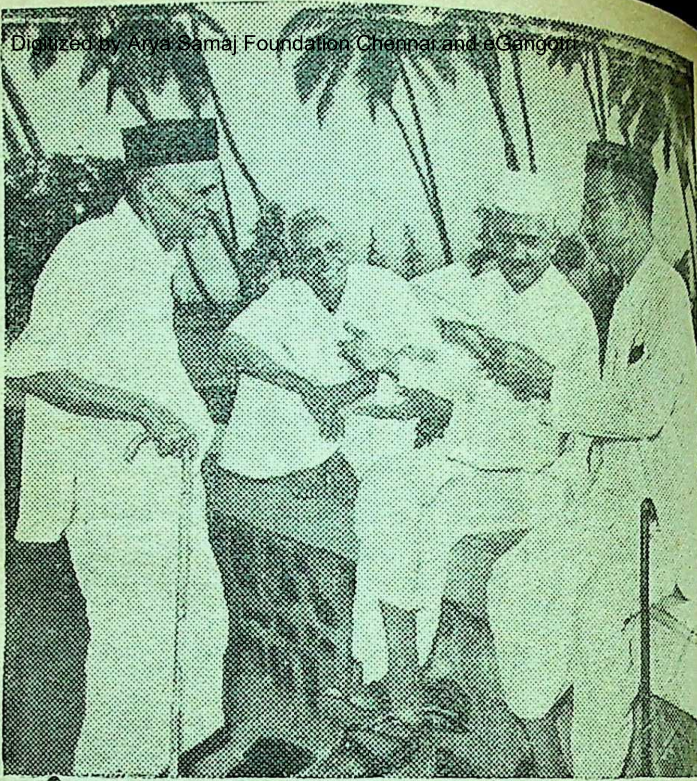

◆ सेवानिवृत्त व्यक्तियों के सुखमय जीवन की झांकी....

नियमित रूप में प्रारंभ से ही योजनाबद्ध बचत करने से आपके जीवन
संध्या भी उज्वल तथा आशाजनक हो सकती है।

◆ बचत की योजना अवश्य बनाइये। खर्च करने से पहले अपनी आय में
कुछ-न-कुछ जरूर बचाइये – वरना फिर भविष्य के लिए आपके पास कुछ
बचेगा।

दि बैंक आफ इंडिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

B/C/ 155 A

कारखाना या कलाभवन

आंद्रेई मार्गोलिन

उस इमारत को वाहर से देखने पर यह अनुमान नहीं होता था कि वह कोई कारखाना होगा। वह किसी प्रदर्शिनी का हाल या वहुत वड़े चित्रपटवाला सिनेमा प्रतीत होता था। दूर से देखकर ही मुझे महसूस हुआ कि मैं कोई ऐसी नयी चीज देखूंगा, जो कुछ असाधारण होगी। मेरा यह महसूस करना गलत नहीं था। जव मैंने कुछ और आगे वढ़कर इस इमारत को दो सौ गज की दूरी से देखा, तो उसका जो सुंदर रूप मेरे सामने आया, उसका ठीक वर्णन मैं नहीं कर सकता। मेरे और उस इमारत के बीच में एक गहरी खाई थी, जो वर्फ से भरी हुई थी। वह इमारत वड़ी शान से उस वर्फ में अपनी चौड़ी वुनियादों पर खड़ी थी।

इमारत के पास जाने के पहले मैंने उसके चारों ओर स्थित पांच मंजिली इमारतों को देखा, जिनमें दुकानें थीं और होटल थे। इन इमारतों में कारखाने में काम करनेवालों के घर भी थे।

एक संकरा रास्ता नीचे की ओर जाता था, जिसके दोनों ओर पेड़ थे और कंटीली झाड़ियां। आम तौर पर कारखानों के गिर्द तारों की वाड़ का घेरा होता है, पर यहां ऐसी कोई वाड़ नहीं थी। वास्तुशिल्पियों का कहना है कि किसी इमारत के प्रवेश-द्वार से ही उस इमारत के वारे में पता लग जाना चाहिये। एक तरह से वह उसका 'विजिटिंग-कार्ड' होना चाहिये। अगर यह वात है, तो मैं कहूंगा कि मास्को के चेरियोमुश्की इलाके में जो प्रयोगवादी ढंग का कपड़ा वुनने का यह कारखाना वनाया गया है, इसका प्रवेश-द्वार सचमुच एक वहुत प्रभावपूर्ण 'विजिटिंग-कार्ड' है। वह नीचे से लेकर छत तक कांच का वना हुआ है। ऐसे दिन, जवकि खूव तेज हवा चल रही हो और वर्फ पड़ रही हो, इसके खुले दालान में से होकर गुजरना वड़ा सुहावना लगता है।

इस इमारत की दूसरी विशेषता है कि इसमें कही कोई चिमनी नहीं है। चित्रकारों के लिए आम तौर पर चिमनी किसी कारखाने का प्रतीक होती है; पर अव उन्हें ऐसे कारखाने को दिखाने के लिए कोई और प्रतीक ढूंढ़ना होगा। क्योंकि ऐसे और भी वहुत-से कारखाने इस इलाके में भविष्य में वननेवाले हैं।

मेरी गाइड नताशा पेत्रोवा एक बीस वर्षीय लड़की थी। वह कारखाने में ही काम करती थी। उसके लिबास पर एक वड़ा तमगा लगा हुआ था, जिस पर मिस्र की रानी नेफरतिती का चेहरा चांदी से वना हुआ था। उसके पावों में खुले सैंडल थे। उन सैंडलों में

मनपसंद साडी के लिये

-हेमली-

शंकर मैन्शन, ३९०, सरदार पटे
रोड, वनिता विश्राम के पास, बंबई-

शुभेच्छक
भूपेन्द्र डाईंग एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स
बंबई—४

चिंतनशील पाठकों एवं शोधप्रेमी विद्यार्थियों के लिए,
बम्बई हिन्दी विद्यापीठ की अनुपम भेंट रजत-जयंती-ग्रंथ

प्रयत्नों के साथ विद्यापीठ ने एक संदर्भ-ग्रंथ प्रकाशित किया है। हिन्दी भाषा संबं
पूर्णतया जानकारी हासिल कराने में मुझे विश्वास है कि यह संदर्भ-ग्रंथ काफी मदद देगा।
सिफारिश करूंगा कि हिन्दी का प्रत्येक विद्यार्थी इस ग्रंथ का अवश्य अध्ययन करे।

—डा० जाकिर हुसैन (उपराष्ट्रप

१—इसमें देवनागरी लिपि, भाषा और साहित्य का गंभीर एवं खोजपूर्ण व्यापक विश्ले
अधिकारी विद्वानों द्वारा किया गया है।

२—स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं व भारतीय विश्वविद्यालयों के द्वारा किये गये कार्यों
अधिकृत विवरण उपस्थित किया गया है। इसके अतिरिक्त विदेशों में हिन्दी के अध्ययन
संबंध में हो रहे कार्यों की भी जानकारी दी गई है।

३—भारत की १५ प्रादेशिक भाषाओं के स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक प्रवृतियों के परिचया-
त्मक लेख इसमें संग्रहीत हैं।

प्रमुख लेखक :—उपराष्ट्रपंति डा० जाकिर हुसैन, डा० प्रभाकर माचवे, डा०
विश्वनाथप्रसाद, डा० सम्पूर्णानंद, श्री विष्णु प्रभाकर, यशपाल, हुमायूं कबीर, क्षेमचं
सुमन, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, कुमारी मार्गोत हेलजिग (जर्मनी), पी. ए. बारा-
न्निक्कोव (रूस) यशपाल जैन एवं आचार्य रघुवीर आदि प्रभृति विद्वान हैं।

मूल्य-तीन रुपये, पृष्ठ संख्या ६२३ मूल्य-तीन रुपये
बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, आनंद नगर, फारजेट स्ट्रीट, बम्बई २६

ह चमकते हुए मुलायम फर्श पर बड़ी आसानी से चल रही थी। ऐसे फर्श कारखाने में कई जगह हैं। अपने भूरे-लाल रंग में वे ऐसे लगते हैं, जैसे उन पर पालिश किया गया हो। पर वास्तव में उन पर एक ऐसे ल की तह बैठायी गयी है, जो बड़ी टिकाऊ है। नताशा ने बताया–"इसे 'पोलीविनी-स्तेत' कहते हैं। मशीनें इस फर्श के साथ जोड़ने के बजाय, चिपका दी गयी हैं।"

इस कारखाने की एकमात्र खिड़की, सड़क की ओर खुलती है, वहां कारखाने की कला की दुकानें हैं। वहां इस प्रकार के स्वाभाविक प्रकाश का प्रबंध किया गया है कि कलाकार रंगों को सही रूप में देख सकें। मुख्य हाल में भी दूधिया बल्बों का जो प्रकाश है, वह आंखों को चकाचौंध करनेवाला नहीं है। उसमें ताजगी और स्निग्धता का आभास होता है। मशीनों द्वारा हवा को स्वच्छ और गरम रखा जाता है। और बाहर चाहे सरदी हो या गरमी, कारखाने के भीतर साल-भर एक-सा तापमान रखा जाता है। "यह जरूरी है," नताशा ने समझाया–"क्योंकि रेयान के बारीक तारों के लिए एक खास तापमान की जरूरत होती है, वरना बदलते हुए तापमान और आर्द्रता में वे टूट जाते हैं। काम करनेवालों पर भी इस एक-से तापमान का अच्छा प्रभाव पड़ता है। विशेषज्ञों का कहना है कि एअर-कंडीशंड कारखानों या दफ्तरों में लोगों की कार्य-क्षमता बढ़ जाती है। एअर-कंडीशंड कारखानों में कर्मचारी ज्यादा साफ सुथरे और खुश दिखाई देते हैं।

सदियों से यह कहा जाता था कि कपड़े के कारखाने में बातें करना असंभव है। मशीनों का शोर इतना ज्यादा होता है कि मनुष्य की आवाज उसमें डूब जाती है। आज तक कोई भी वैज्ञानिक, कपड़ा बुनने की ऐसी मशीन नहीं बना पाया है, जो आवाज न करती हो। पर चेरियोमुश्की के इस कारखाने में, दूसरे कारखानों जितना शोर नहीं है, क्योंकि छतों में लगाये गये ऊन के गदेले शायद शोर को कम करने में सहायक हैं। कोई और भी कारण हो सकता है। कारखाने में घूमते हुए मैं बड़ी स्पष्टता से नताशा की बातें सुन सकता था। वह कह रही थी–"हमारी मिल में प्रकाश है, सुख-आराम है, और यहां काम करना अच्छा लगता है। सुबह काम पर आने को दिल चाहता है–हर चीज साफ-सुथरी है।"

कुछ देर के बाद हम उस लाउंज में गये, जहां कर्मचारी आराम करते हैं। उसकी दीवारों पर तरह-तरह के रेशमी परदे झूल रहे थे। वहां एक छोटी-सी मेज पर एक किताब पड़ी थी, जिसमें कारखाना देखने आनेवालों ने अपनी सम्मतियां लिखी थीं। उसमें मैंने कई देशों के कई शहरों के लोगों के नाम पढ़े। हर किसी ने कारखाने की प्रशंसा की थी और उसमें काम करने की जो सुविधाएं थीं, उन्हें सराहा था।

यह कारखाना हर साल पैंतीस लाख मीटर रेशमी कपड़ा तैयार करता है। यह सारा-का-सारा कपड़ा स्त्रियों के हाथों में से

सिन्थॉल
के वर्ष
C
A
B
D
CINTHOL
DEODORANT AND COMPLEXION SOAP
Godrej
CINTHOL
CINTHOL

पहला कदम

सिन्थॉलसे चर्मके स्वास्थ्य तथा सौंदर्य की ओर निश्चित आगे कदम। सिन्थॉल मे शामिल अद्भुत जीवाणु नाशक जी-११* बच्चेके मृदु चर्मपर आमतौर पर रहनेवाले असंख्य कीटाणुओंसे उसकी रक्षा करता है...घिसनसे पैदा होनेवाली गर्मी, गर्मीमें होनेवाली चुनचुनाहट, रगड को दूर रखता है।

मोहक सुवासित सिन्थॉल इतना मृदु है कि चर्मको सफ़ाई करते हुए उसे संवारता है...आँखोके लिये हानि-रहित है...नर्सरी में अत्यावश्यक।

अतिरिक्त ताज़गी और पूर्ण सुरक्षा के लिये 'जी-११*' युक्त मधुर सुगंध वाला दुर्गन्धनाशक और शीतल गोदरेज सिन्थॉल टायलेट पावडर व्यवहार करिये।

Godrej गोदरेज

साबुनों में सर्वोत्तम नाम

शृंगार साबुन जो
दुर्गंधनाशक भी है

"*जी-११ क्या है ?" नामक सचित्र पुस्तिका गोदरेज बम्बई-१२ को लिख कर मुफ्त मंगाइये।

CT.1.6/62, (7"X4 1/4") HIN.

होकर गुजरता है। यद्यपि इस कारखाने में हाथों का काम बहुत कम है। कारखाने के कपड़ा बुननेवाले भाग में छः सौ स्वयंचलित मशीनें हैं। चार-चार मशीनों पर एक-एक स्त्री काम करती है। कारखाना नया है और वहां काम करनेवाली अधिकांश स्त्रियां तरुण हैं। प्रायः वे सेकंडरी स्कूल की पढ़ाई पूरी करके आती हैं, बहुत जल्दी काम सीख जाती हैं और सही अर्थों में अपने पेशे की विशेषज्ञ बन जाती हैं।

विज्ञान ने कुछ चीजों की रफ्तार बहुत तेज कर दी है। अब जैसे मशीनें इमारतों के मुकाबले में बहुत जल्द पुरानी पड़ जाती हैं, क्योंकि कुछ ही समय में उनसे कहीं बढ़िया नयी मशीनों का निर्माण हो जाता है। एक कारखाने की इमारत आसानी से पचास-साठ साल तक चल सकती है, पर उसमें लगायी हुई मशीनें इस अरसे में तकनीकी विकास की दृष्टि से काफी पिछड़ जाती हैं, अतः वे कई बार बदलनी पड़ती हैं। इन मशीनों के अनुसार इमारत में भी तब्दीलियां करनी पड़ती हैं। कुछ भाग नये बनाकर जोड़ने पड़ते हैं। कई बार पुराने कारखानों में ऐसे परिवर्तन करने पर इतना खर्च आता है, जितना कारखाने की नयी इमारत बनाने पर नहीं आता। फिर पुराने कारखानों में जगह की तंगी बढ़ जाती है और उसके साथ जो नये भाग बनाये जाते हैं, वे उसका सही अंग नहीं बन पाते। ऐसे कारखाने में भला कितनी उन्नति हो सकती है? काम का कहां तक विकास हो सकता है?

अतः यहां के वास्तुशिल्पियों ने ऐसा कारखाना बनाने के बारे में सोचा, जो हर तरह का काम दे सके, अर्थात् उसमें जरूरत के मुताबिक हर तरह की तब्दीलियां की जा सकें। उन्होंने कंक्रीट के कुछ ऐसे भाग बनाये, जिन्हें जोड़ देने से कारखाना तैयार किया जा सके। भाग ऐसे हैं, जिन्हें अलग-अलग ढंग से जोड़ने पर अलग-अलग उद्योगों के कारखाने बन सकते हैं। इन भागों को जोड़कर जहां जैसी जरूरत हो, फौरन वैसा कारखाना खड़ा किया सकता है।

इस प्रकार यहां के इंजीनियरों ने इमारतें बनाने की बहुत-सी पुरानी प्रथाओं को तोड़ा है। इनमें एक प्रथा यह थी कि कारखाने का ऊपरी ढांचा तभी बनाया जाता था, जब उसके अंदर सभी मशीनें यथास्थान रख दी जाती थीं। कोई अपनी चीजों के मुताबिक घर नहीं बनाता, बल्कि घर के मुताबिक चीजें बनाता है, यही बात कारखाने के संबंध में भी होनी चाहिये। आधुनिक औद्योगिक इंजीनियरों का कहना है—"टेक्नोलाजी को हम कारखाने की इमारत के साथ जितना ही कम बांधें, उतना ही अच्छा है।"

और चेरियोमुश्की का यह कारखाना इसी दृष्टिकोण से बनाया गया है। दीवारों की जगह कांच के 'पार्टीशन' लगाये गये हैं। कहीं अंधेरा कोना दिखाई नहीं देता। थोड़े से प्रयत्न से ही बहुत अच्छी सफाई रखी जा सकती है।

कारखाने को बनानेवाले शिल्पियों ने

भवन-निर्माण कला के अत्याधुनिक साधनों का प्रयोग किया है। इसकी ऊपरी छत और लटकती हुई निचली छत के बीच में ऐसा स्थान है, जहां बिजली के तारों, गरम और ठंडे पानी के पाइपों और वातानुकूलन के सामान की फिटिंग की गयी है। यह सिर्फ फैशन के तौर पर ही नहीं हुआ है, बल्कि इंजीनियरी और आर्थिक दृष्टिकोण से इसकी जरूरत समझी गयी है। इन तारों और पाइपों को जमीन या कंक्रीट के फर्श के नीचे छिपाना ज्यादा मुश्किल और महंगा पड़ता है। इमारत की छत समतल बनायी गयी है। यह गरमियों में पानी से भर दी जाती है, ताकि इमारत ठंडी रहे।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मनुष्य अपना आधा जीवन काम पर बिता देता है। रोज उसे सात-आठ घंटे सोने के लिए चाहिये और बाकी के सोलह-सत्रह घंटे वह काम और आराम में बिताता है। हमारा उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपने जीवन के काम और आराम के दोनों भाग सुखद और सुंदर वातावरण में बिताये। जहां तक सुंदरता का संबंध है, इस कारखाने में हर चीज महत्वपूर्ण है। छत और दीवारों के रंगों का आपस में मेल, मशीनों और की पालिश, दरवाजों के हैंडलों और धोने के पात्र के डिजाइन, कुर्सियां अलमारियां--हर चीज में सादगी और सुंदरता भी। हर चीज जहां को पूरा करती है, वहां देखनेवाले के बोध को तृप्ति भी देती है।

कारखाने के चारों ओर एक बगीचा और कुछ दूर एक तालाब। वसंत ऋतु धूप में आप बगीचे में बच्चों को हुए पायेंगे, उनकी बूढ़ी दादियां पास बैठी स्वेटर बुन रही होंगी और उनकी मा छोटे बच्चों को गाड़ियों में बैठाये रही होंगी। किसी को इस बात का राज नहीं है कि उनके घर कारखाने के दीक बने हुए हैं; क्योंकि यह और कार जैसा कारखाना नहीं है।

"हमने भविष्य का कारखाना देखा किसी ने मेज पर पड़ी किताब में लिखा मैं उसकी इस बात से पूर्णतः सहमत सचमुच यह वह कारखाना है, जिसमें बोझ नहीं महसूस होता।

और मैं अपना पेन निकालकर लिख हूं—"यह कारखाना नहीं, कला-भवन है।

★

ईश्वर कभी-कभी अपने बच्चों की आंखों को आंसुओं से धोता है, ताकि वे उनकी कुदरत और आदेशों को सही-सही पढ़ सकें।

–क्राइस्ट

सखेद :

मार्च १९६४ के नवनीत के मुखपृष्ठ का चित्र 'फलवालियां' श्री भूरसिंह शेखावत रचित था। भूल से चित्रकार का नाम रावत छप गया। हम क्षमाप्रार्थी हैं। –संपादक

★

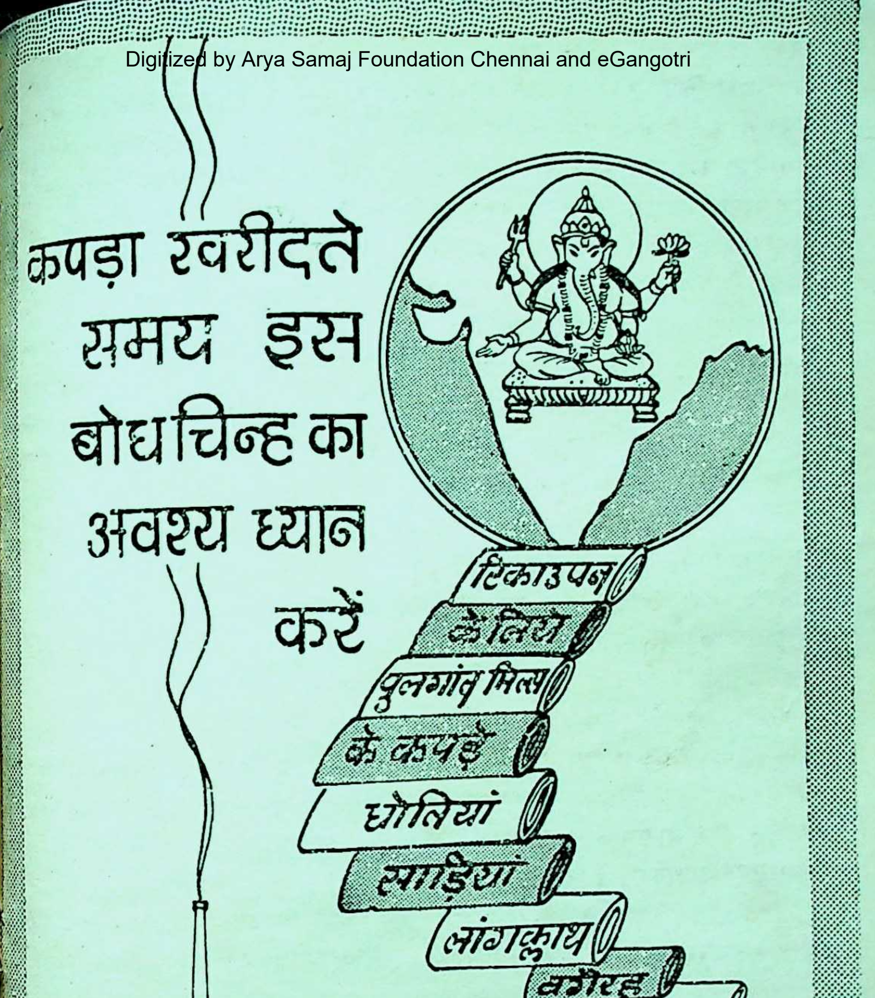
कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें
टिकाउपन
के लिये
पुलगांव मिल्स
के कपड़े
धोतियां
साड़ियां
लांगक्लाथ
वगैरह

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

Regd. No. B. 6246

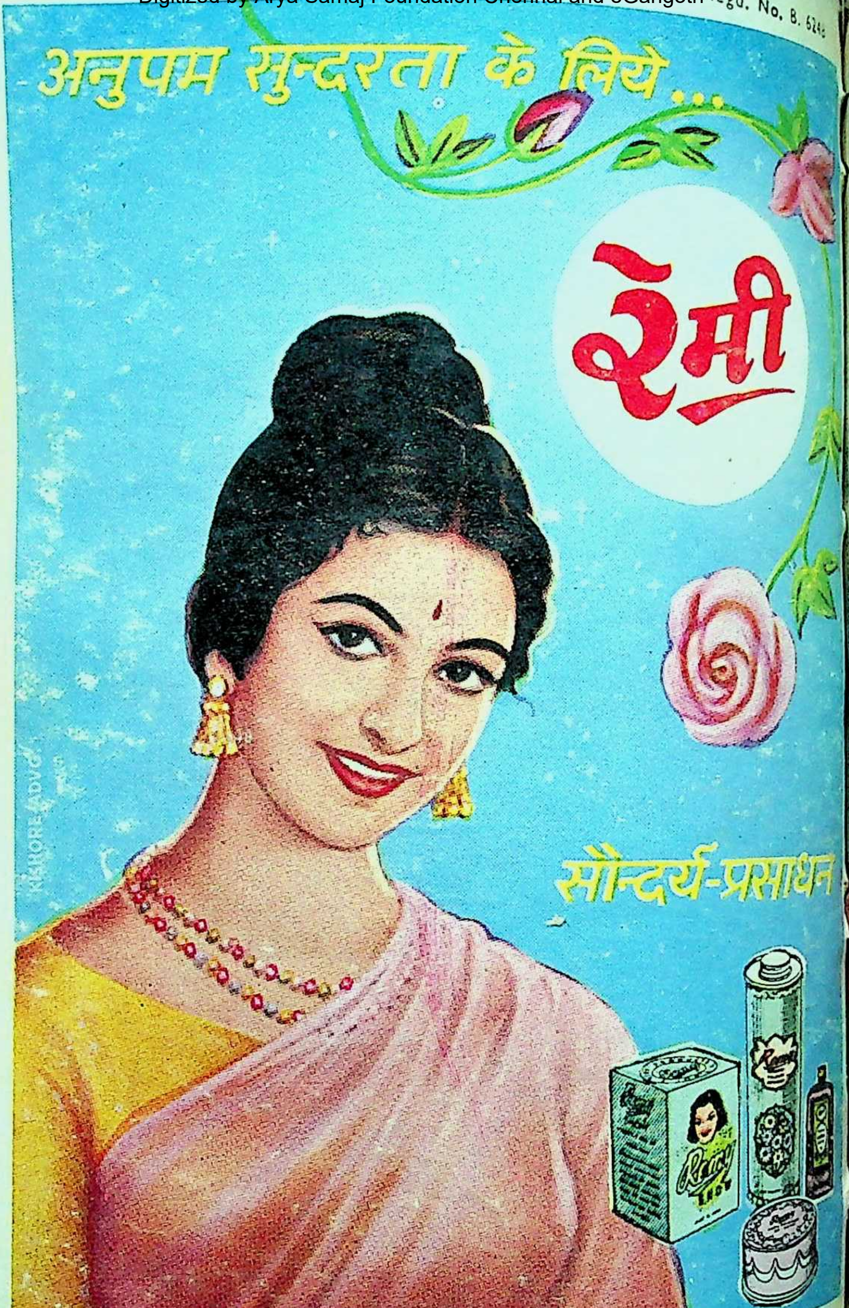
अनुपम सुन्दरता के लिये...
रेमी
सौन्दर्य-प्रसाधन
KISHORE ADVG
Remi

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जून

१९६४

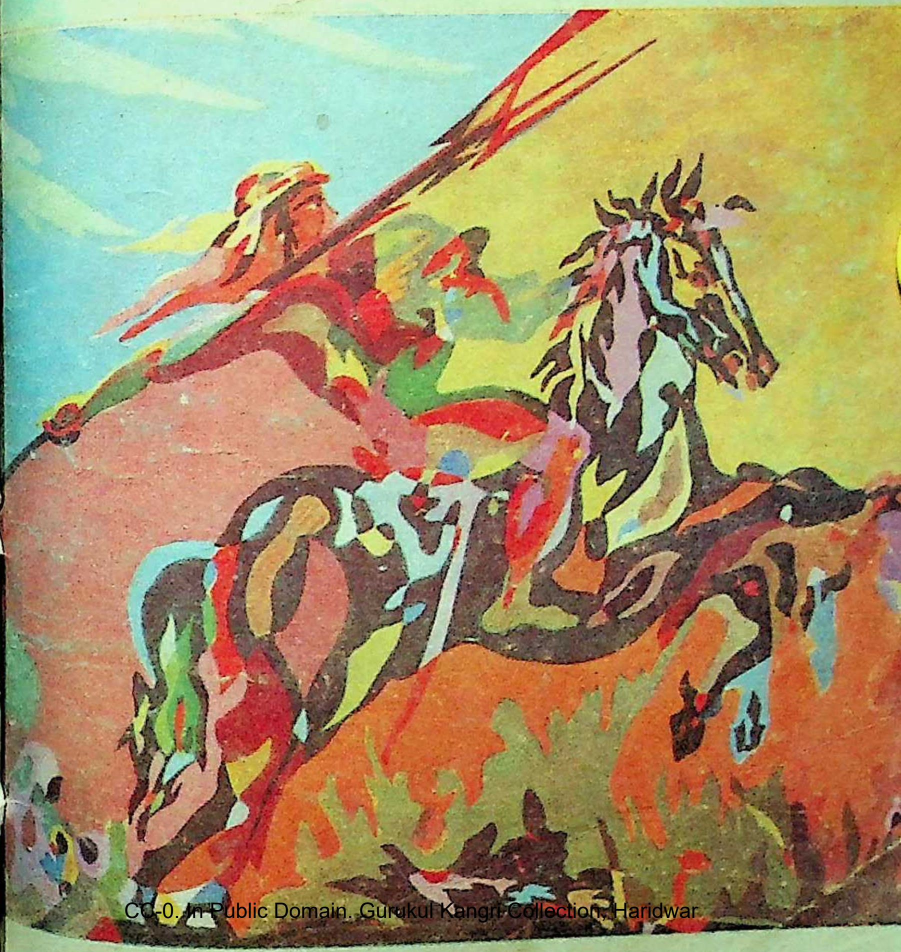

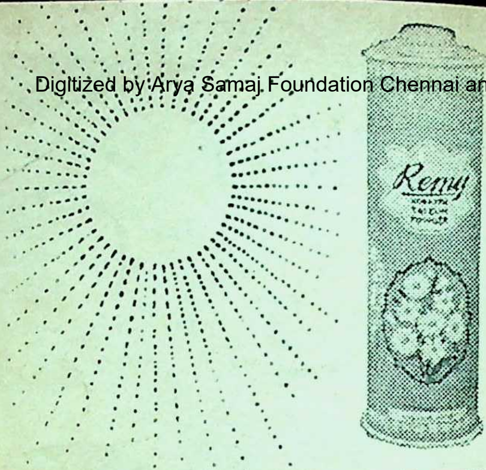

रेमी

वैसे ही
बोरेटेड
टेलकम पाउडर
गर्मी के दानों से
बचने के लिए चाहिए

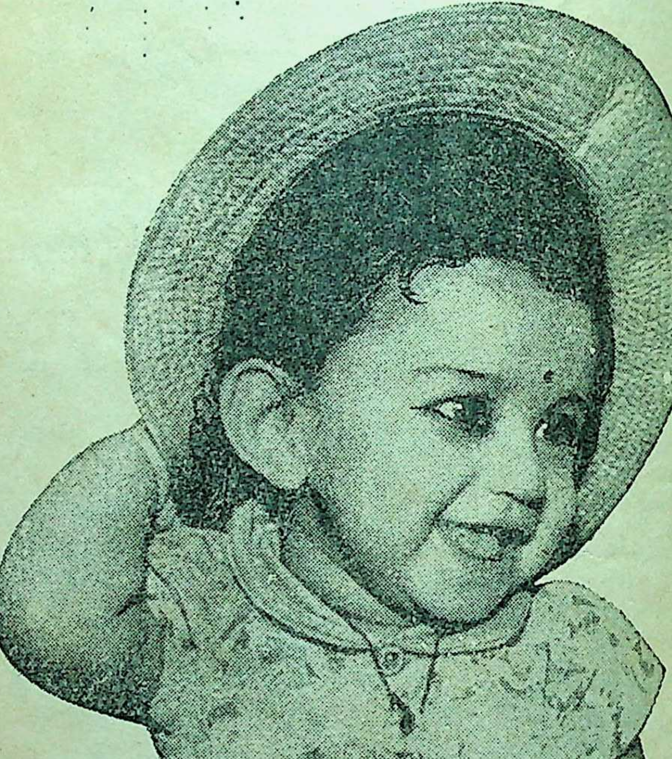

RB-9

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स :
ए. वी. आर. ए. अँड कंपनी, बम्बई-२. मद्रास-१. कलकत्ता-१.

कव्हर छपाई 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित

अतुल

- रंग
- रसायन
- और औषधि

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.
अतुल, (वाया बलसार)
पश्चिम रेलवे.

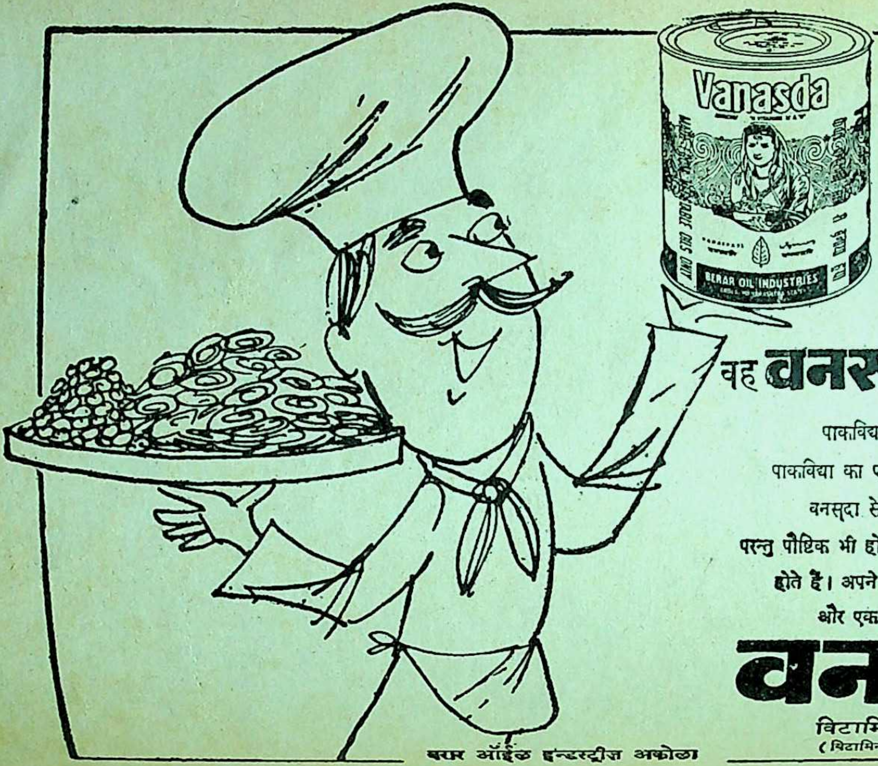
Vanasda
BERAR OIL INDUSTRIES
MADE FROM VEGETABLE OILS ONLY

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनसदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनसदा वनस्पति। वनसदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनसदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनसदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनसदा
विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से सम्पन्न)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज अकोला

तार : DIGJAM, जामनगर फोन : ५ और ५ ए

दिग्जाम

शुद्ध ऊन और टेरिवुल के बने
प्रसिद्ध सूटिंग

श्री दिग्विजय वूलन मिल्स लि०

जामनगर—३

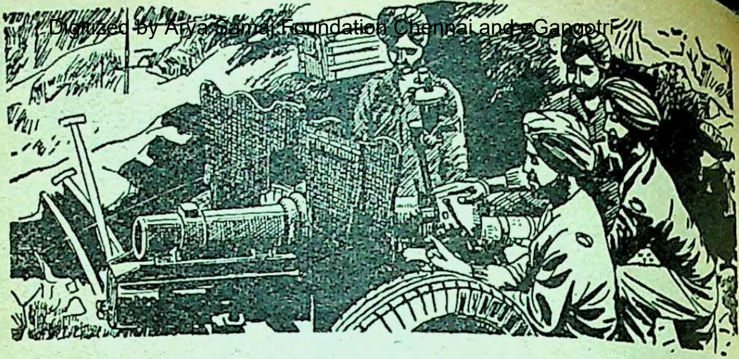

विकास का काम

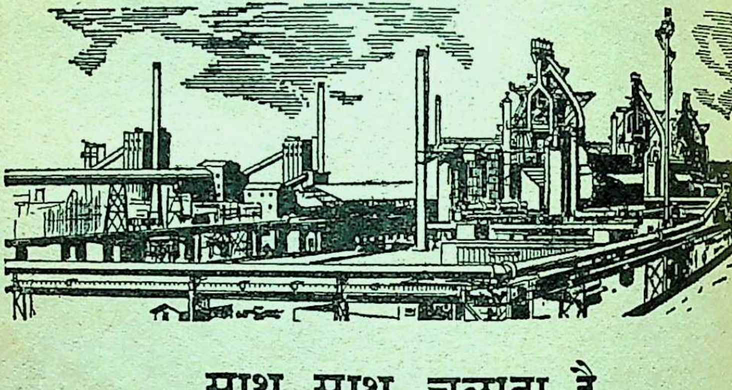

साथ साथ चलाता है

देश की विकास योजनाएं हमारी रक्षा-व्यवस्था का अभिन्न अंग हैं। संकट का सामना करने के लिए नई प्राथमिकताएं निश्चित की गई हैं और बिजली योजनाओं, इस्पात, मशीन, मशीनी औजार, बिजली का साज-सामान, कोयला खनन, रेलवे जैसे बुनियादी उद्योगों, इंजीनियरी और चिकित्सा कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर तेजी से अमल करने की व्यवस्था की गई है। शक्ति की ठोस बुनियाद पर ही रक्षा की तैयारी निर्भर करती है। यही हमारी समस्या का एकमात्र हल है। इस कार्य में मन, वचन और कर्म से पूरा-पूरा सहयोग दीजिए। भारत के करोड़ों नागरिकों की निरन्तर और निस्वार्थ सेवा-भावना और कठोर परिश्रम से ही देश की रक्षा-सामर्थ्य बढ़ सकती है।

योजना को
सफल
बनाइये

भारत की रक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ कीजिए

डी ए-६३/१९४

प्राचीन केशविन्यास :

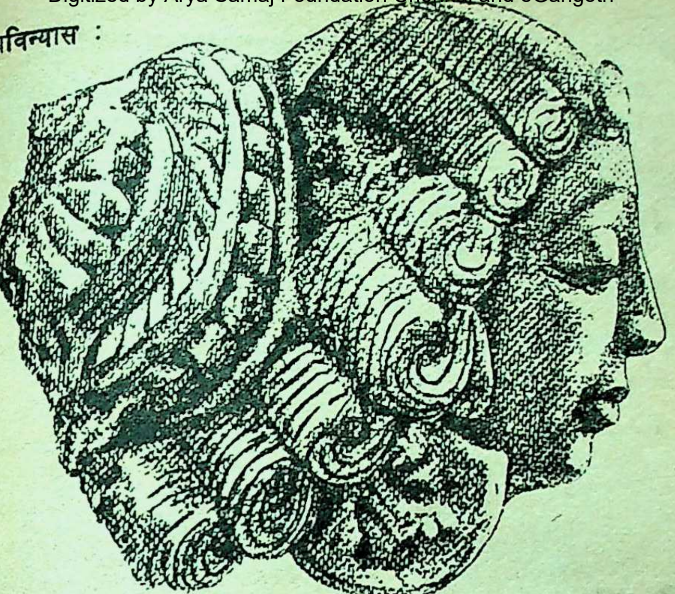

उत्तर प्रदेश के अहिच्छत्रा में प्राप्त यह अनुपम नारीमूर्ति प्रमाणित करती है कि **प्राचीन** भारतीय ललना केश-शृंगार में कितनी रुचि लेती थी। इस मूर्ति से यह भी सिद्ध होता है कि सघन केशराशि भारतीय केश-विन्यास कला का आधार थी। यही बात आज भी है। इसलिए सही केशतैल का अत्यधिक महत्व है।

कालकेमिकल का, जैतून-तेल से निर्मित कैंथारल आपकी समस्या सुलझा देता है। भीनी-भीनी सुगंधवाले इस केशतल से सींचकर बालों की जड़ों को मजबूत बनाइये और अपनी केशराशि को घना, चमकीला और कोमल बनाइये।

कैंथारल

सुगंधित कैंथाराइडीन केशतैल

दि कलकत्ता केमिकल कंपनी लिमिटेड, कलकत्ता-२

baa/cc,

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY.
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाउस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

IWD 8

एक सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलिये

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलना आसान है। आपको कम से कम सिर्फ़ रु० ५/- लगाना पड़ेगा और साल में ३ सैकड़ा ब्याज मिलेगा।

विस्तृत विवरण के लिये पास की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये। बैंकिंग संबंधी आपकी चाहे जो भी समस्यायें हों, यहाँ हमारी नम्रता और योग्य सेवा आपकी प्रतीक्षा में है।

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समिविष्ट ● सदस्यों का दायित्व सीमित

NGB/59AHIN

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायड्स ब्रान्च) : मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायड्स ब्रान्च) : ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी : ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल : शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि, क्लब रोड, बाइकला।

ठाणा :—आग्रा रोड, कोलबाद रोड, (कॅसुल मिल्स के पास)।

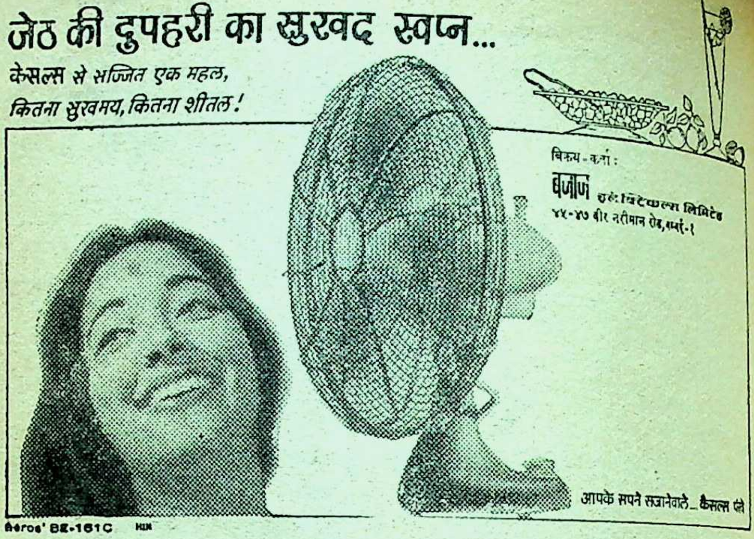
जेठ की दुपहरी का सुखद स्वप्न...
कैसल्स से सज्जित एक महल,
कितना सुखमय, कितना शीतल!
विक्रय-कर्ता :
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१
आपके सपने सजानेवाले_कैसल्स पंखे
Heros' BE-161C HIN

न्यू स्वदेशी

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग

न्यू स्वदेशी मिल्स ऑफ अहमदाबाद
नरोडा रोड – अहमदाबाद

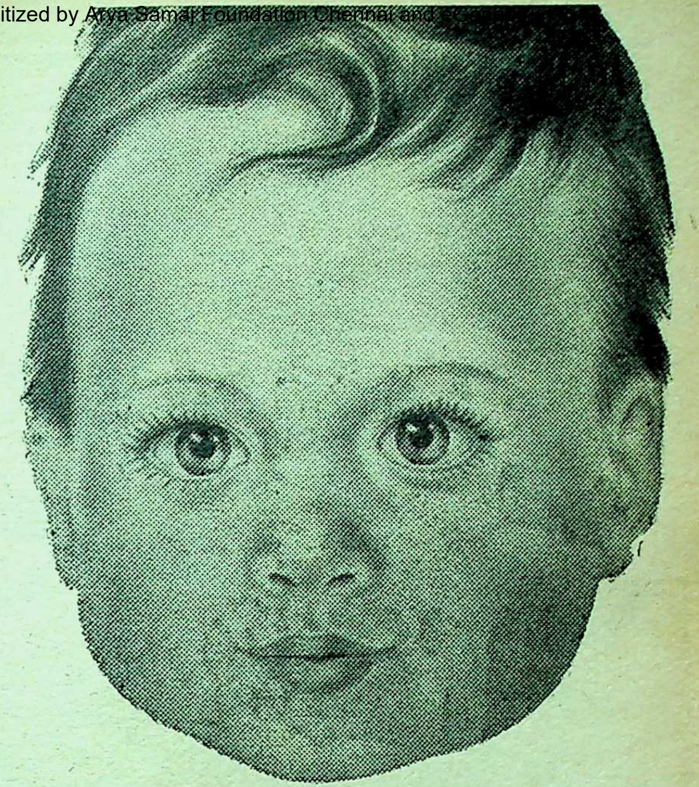

आपके बच्चे को
तन्दुरुस्त और हंसता खेलता रखने के लिए नियमित रूप से
ग्राइमिक्स दीजिये

आपके बच्चे की जरूरतों को ध्यान में रख कर-जैसे, उनके नाजुक पेट को आराम पहुंचाने, वायु-दर्द से, पेट की मरोड़ से और पेट की गड़बड़ीसे शीघ्र छुटकारा दिलाने के लिए-**ग्राइमिक्स** खास तौर से बनाया गया है। **ग्राइमिक्स** देने से, दांत निकलते समय और बच्चों को दूध छुड़वाते समय भी कोई कष्ट नहीं होता और वे मुस्कराते और हंसते खेलते रहते हैं।

याद रखिये-आपके बच्चे के स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिए ग्राइमिक्स दीजिये

ग्राइमिक्स

बूट्स Boots द्वारा निर्मित और लाखों माताओं का विश्वास-पात्र

NAS 687a

टीवीएस जाँची हुई क्वालिटी के

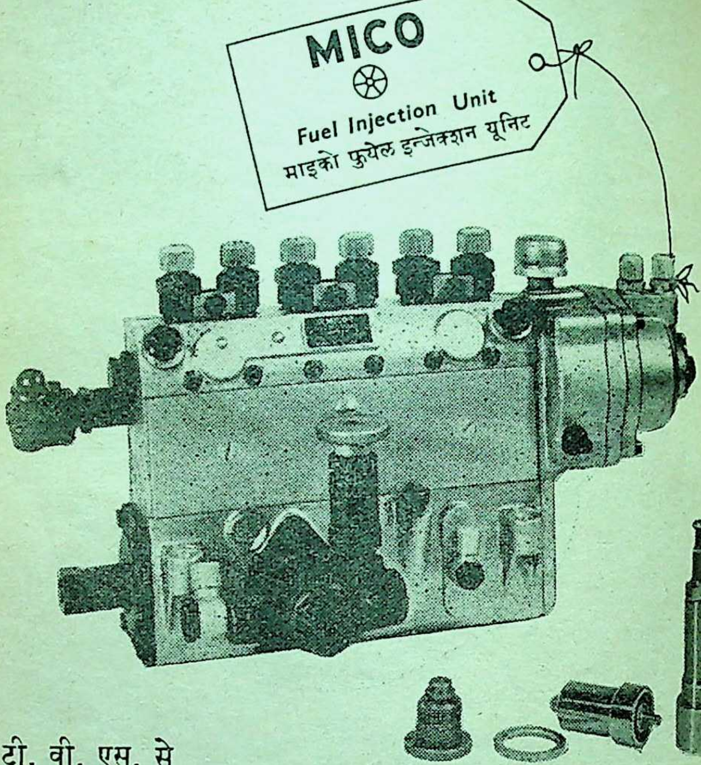
MICO
Fuel Injection Unit
माइको फुयेल इन्जेक्शन यूनिट

टी. वी. एस. से
मिलनेवाले
अन्यान्य
निर्भरयोग्य
स्पेयर पार्ट

Standard Battery स्टैंडर्ड बैटरी	**FERODO** Brake Linings फेरोडो ब्रेक लाइनिंग	Springs and Leaves कनाहा स्प्रिंग और लीफ
TRANCO VALVES ट्रैंको वेल्व	**HELLA** Horns हेला हॉर्न	**ROLON** Timing Chains रोलोन टाइमिंग चेन

TVS

टी.वी. सुन्दरम् आयंगर ऐण्ड सन्स प्राइवेट लिमिटेड

मादुराई–तिरूचि–तिरूनेलवेली–पडुकोट्टाई–सालेम–कोयम्बाटूर–त्रिवेन्द्रम

मोटर पार्ट बेचते हैं

MICO
Filter Element
माइको फिल्टर एलीमेंट

ट्रकों के मालिक और मोटरवाले जानते हैं कि टी.वी.एस. सिर्फ ऐसे माल बेचते हैं जो काम करके अपनी अच्छाई सावित कर चुके हैं। इसलिये इसमें आश्चर्य ही क्या कि टी.वी.एस. जिन चीजों को बेचते हैं वे लगातार वर्षों से अपने क्षेत्र की दूसरी चीजों से ज्यादा बिकती जा रही हैं। मेंटनेन्स के अपने खर्च को कम कीजिये; जो टी.वी.एस. बाजार में देते हैं, मोटर के वे स्पेयर पार्ट और साथ की चीजें ही लीजिये क्योंकि उनकी अच्छाई सावित हो चुकी है।

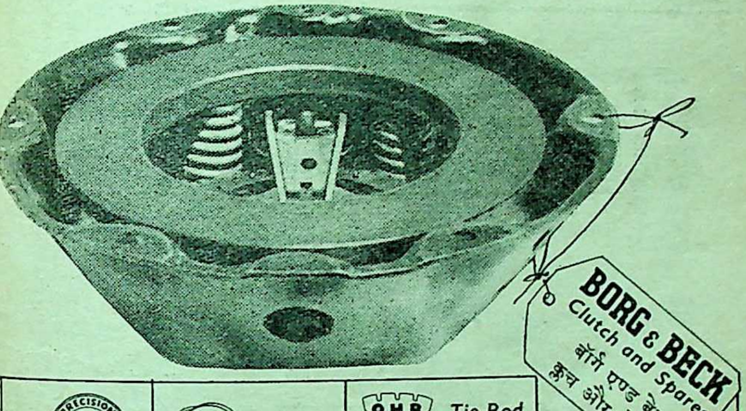
BORG & BECK
Clutch and Spares
बॉर्ग एण्ड बेक
क्लच और स्पेयर

DOUBLE LIFE PRECISION PARTS डबल लाइफ प्रेसीजन पार्ट	**W/L** Commercial Wheels विल कॉमर्सियल व्हील	**QHR** Tie Rod Ends QHR टाइ रॉड एण्ड	
KAP AUTO PARTS के.ए.पी ऑटो पार्ट	**Fenner** Fan Belts फेनर फैन बेल्ट	**FRITZ** Filter Elements फ्रिट्ज़ फिल्टर एलीमेंट	**allite** Bulbs एलाइट बल्ब

सुन्दरम् मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड | मद्रास ऑटो सर्विस प्राइवेट लिमिटेड

मद्रास–बंगलोर IWT/TVS 2631A

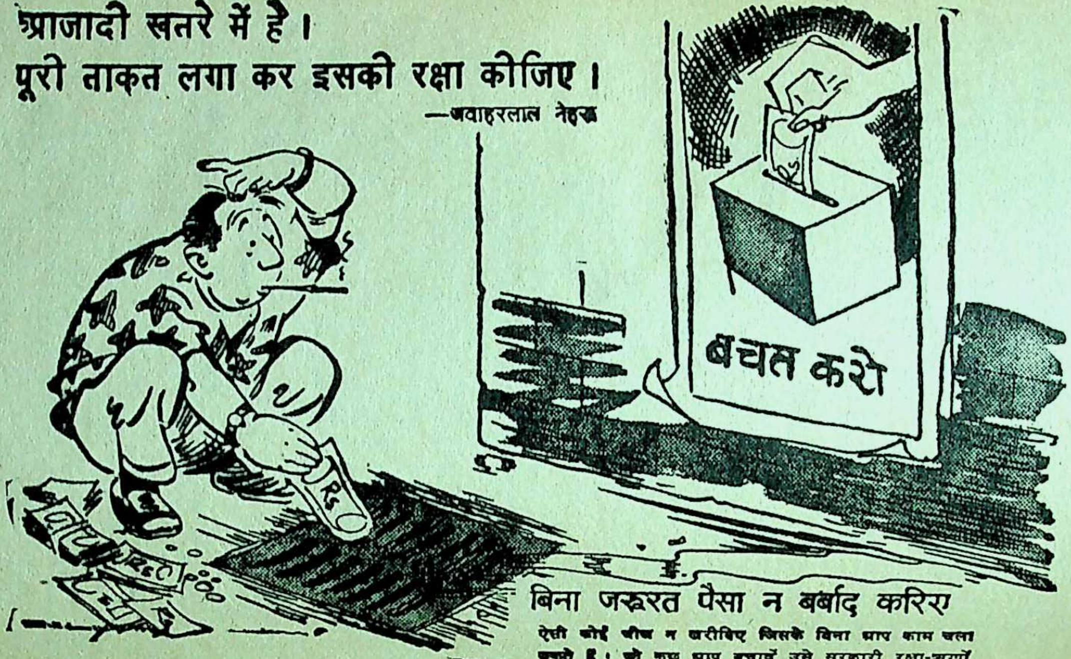

आजादी खतरे में है।
पूरी ताकत लगा कर इसकी रक्षा कीजिए।
—जवाहरलाल नेहरू

बिना जरूरत पैसा न बर्बाद करिए

ऐसी कोई चीज न खरीदिए जिसके बिना आप काम चला सकते हैं। जो कुछ आप बचावें उसे सरकारी रक्षा-ऋणों में लगाइए। इससे दाम भी न बढ़ने पाएंगे और देश की रक्षा के लिए अधिक साधन भी मिलेंगे।

आपकी बचत से देश की रक्षा होती है

दि

युनाइटेड कर्मशियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : २ इंडिया एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

अधिकृत पूंजी	. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,७९,६६,८१२
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें..........	रु. ३,२०,००,०००

डाइरेक्टर

जी. डी. बिड़ला
चेयरमैन

ईश्वरीप्रसाद गोयनका वाइस चेयरमैन	मदनमोहन आर० रुइया वाइस चेयरमैन
योगीन्द्र एन० मफतलाल	टी० एस० राजम
मोहनलाल नोपानी	रंगनाथ बांगड़
मोतीलाल तापड़िया	गोवर्धनदास बिनानी
एम० पी० बिड़ला	श्रेणिक कस्तुरभाई
महादेव एल० दहाणुकर	जी० डी० कोठारी
अनंत चरण ला	एस० टी० सदाशिवन

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एड्वांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबंध द्वारा हर प्रकार की बैंक संबंधी सेवा प्रदान करती है।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

आप को सदा सुहाते हैं

मफतलाल ग्रुप के

सूट* के कपड़े

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, वम्बई • स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना.), वम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • सैसून, वम्बई • सैसून (न्यू यूनियन), वम्बई • सूरत काटन, सूरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Aiyars MGS-169 HIN

* 'टेबिलाइज़्ड' और कॉटन/'टेरिलिन' के कपड़े भी मिलते हैं।

डे, बम्बई
सैसून
नवसारी.
Aiyars MGS-469 HIN.
मिलते हैं।

वर्ष १३ : अंक ६
जून १९६४

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

अश्वारोही
एक तुर्की चित्र की अनुकृति

इस अंक में

१७ स्पष्टीकरण
जाबालि
१८ आवश्यकता है आत्मनिरीक्षण की
श्रीप्रकाश
२० विश्लेषण (कविता)
कुमारिल पंत
२१ हिन्दी का भगीरथ
नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ
२४ आस्वान : ऊंचा बांध, ऊंचे अरमान
डा० के० एल० राव
२८ सेवामूर्ति सीग्रेव
... ...
३३ मेरे जीवन के निर्माता
काका कालेलकर
३५ मीकांग के वनों में
चार्ल्स डब्ल्यू० स्टाकवेल
४० सिक्ख-साम्राज्य का नंबूदिरी मंत्री
के० एन० नायर
४४ नेता और नौकरशाही
एच० वी० आर० अय्यंगार
४९ एक ईमानदार आदमी
हिलेर बेलौक
५३ पेरिस का संसार-प्रसिद्ध कैफे
जे० डी० रेडक्लिफ
५६ बच्चे कैसे देखते हैं
केशवदेव मिश्र

आगामी अंक में

इनके उत्तराधिकारी कौन ?
भोजन की विविध रस्में
डा० सत्येन बोस
उसे गैंड़ा पालने का शौक था
सीमा-रक्षा की समस्या
अंगरक्षक
द गोल की पत्नी
पिता लौह पुरुष बने
विकास की कीमत कितनी ?
आश्रय (हिन्दी कहानी)
प्रायश्चित्त (पुस्तक-संक्षेप)
वे दुनिया में रंग भरते थे

चित्रसज्जा:
पिकासो, अोंके, मैकडरमाट

हमारा पता :

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१ तारदेव, बंबई–३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेतवाड़ी बक रोड, बंबई–४ में मुद्रित ।

५८ हर्ष के आंसू
डा० धीरेंद्र मेहता
६२ भूगर्भ में आग की भट्ठियां
जेम्स लिनर्ड
६५ छोटे मगर अजब के यंत्र
के० सी० शंकर
६८ कमर-दर्द से छुटकारा पाइये
डा० गिलबर्ट
७२ संसार की कृपणतम महिला
मनोहर प्रभाकर
७४ यमन की यात्रा
जार्ज मार्टिन
७८ मार्गदर्शन
डा० प्रबोध
८१ सजा (बंगला कहानी)
हरिनारायण चट्टोपाध्याय
९१ बाप-बेटा (इटालियन कहानी)
मौरो सेनेसी
९५ मेरी रुचि की पंक्तियां
... ...
९७ जमाने की हवा (उर्दू कहानी)
सादिक हुसैन
१०९ नया स्वर (पुस्तक-संक्षेप)
येव्गेनी येव्तुशेंको
१४७ चुटकी-भर हंसी
कुसुमलता
१४९ नयी पुस्तकें

वर्ष १३ : अंक ६
नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]
जून १९६४
र के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मा

स्पष्टीकरण

वीणा की स्वर-लहरों के साथ
मैं अपने अंध अंतराल में
इसलिए डूब जाता हूं
कि वहीं एकांत में
तेरा मौन मेरी प्रतीक्षा करता है।

मेरे भीतर समाने के लिए
तू अपने को छोटा बना लेता है–
इतना छोटा कि
मैं दुर्बल और भाग्यहीन
अपने में तुझे बैठा पाता हूं।

मेरे सुरों में सुर मिलाने के लिए
तू मौन हो जाता है।

मेरे मन के अंधेरे को
सुहाना बनाने के लिए
तू अपना दीप बुझा देता है।

–जाबालि

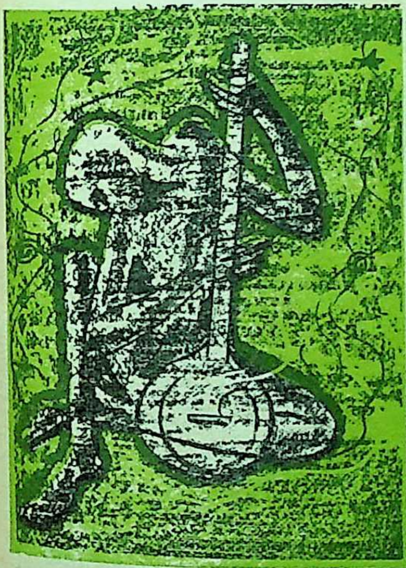

चित्रकार : वी० एन० ओके

आवश्यकता है आत्मनिरीक्षण की

आंखें स्वभावतः बाहर की ओर खुलती हैं; वे भीतर की ओर खुलें, इसकी तो साधना क पड़ती है। जो व्यक्ति, समाज, या राष्ट्र इस साधना से कतराता है, पूर्णता उससे कतराती है

श्री प्रकाश

देश के युवकों में संयम और सदाचार की भावना कैसे पैदा की जाये, यह बड़ी ही कठिन समस्या है। शिक्षा-पद्धति में कुछ परिवर्तन कर देने से ही चरित्र में उन्नति नहीं हो जायेगी। समस्या की जड़ तो हमारे घरों में है। घरों में माता-पिता का आचरण देखकर ही बच्चे अपने को ढालते हैं। आज सदाचार के अभाव में हमारे घर बरबाद हो रहे हैं। परिवारों की शांति छिन चुकी है। संयुक्त परिवार की अच्छाइयां गायब हो गयी हैं। पारिवारिक जीवन का सुखद, स्वर्गिक आनंद विलीन हो गया है।

हमारे घरों का वातावरण बड़ा विद्वेषमय हो चुका है। घरों में देवरानियां-जेठानियां किस प्रकार एक-दूसरे के प्रति शंकालु बनी रहती हैं! अपने बच्चों को अलग से प्यार देने में ही वे कुशलता का अनुभव करती हैं। बच्चे भी इस प्रकार के व्यवहारों को देखा और समझा करते हैं। मां-बाप के अपने भाई-भौजाई अथवा भतीजी-भतीजों के साथ ऐसे कपटपूर्ण व्यवहार को देखकर जो संस्कार अल्पवयस्क बालकों के कोमल मन पर पड़ते हैं, बाद में वही वयस्क हो स्थायी रूप पा जाते हैं।

और वही बच्चे जब बड़े होने पर जिक एवं राजनीतिक जीवन में प्रवेश हैं, तब बचपन में उन्हें मां-बाप से मि में मिले ये संस्कार व्यापक रूप से जीव प्रत्येक क्षेत्र में, विभिन्न रूपों में क्रिया होने लगते हैं और सभी क्षेत्रों में भ्रष्टा की सडांध उठने लगती है तथा वाता एकदम दूषित हो उठता है। यही स्थि आज हमारे देश के समक्ष है।

वाराणसी के पत्र 'आज' से प्रारंभ संबद्ध था। उसके यशस्वी संपादक राव विष्णु पराडकर से पत्र की नीति जब भी चर्चा होती, तब वे राष्ट्रीय नीति जोर देते। हमारी संस्कृति श्रेष्ठ है, देश है, हम श्रेष्ठ हैं–इस पर अधिक जोर देते वे बात करते। मैं कहता – "हमारी चीज श्रेष्ठ है का फतवा देना ठीक न हमें अपनी धार्मिक, राजनीतिक और सा जिक कमजोरियों पर भी प्रकाश डा चाहिये। अन्यथा अपने को सर्वगुण

ानकर चलने में तो हम [illegible] उन्हें कई बार जोर देकर कहा था कि हमारी नीति राष्ट्रीय नीति ही न होकर, राष्ट्रवादी पत्रकारिता की नीति होनी चाहिये ।

अमरीका तथा दूसरे पश्चिमी देशों की पत्र-पत्रिकाओं पर जरा ध्यान दीजिये । वे अपने देश की हर कमजोरी को प्रकट करते हैं, उसके उन्मूलन का निदान करते रहते हैं । अपनी कमजोरी प्रकाशित करने में उन्हें जरा भी झिझक नहीं होती । उनका दृढ़ विश्वास रहता है कि जब तक हम जनता को उसकी कमजोरियों से पूरी तरह परिचित नहीं करायेंगे, तब तक वह उन्हें दूर करने की तरफ ध्यान ही नहीं देगी । और यह हालत है उन देशों की जो हम से वर्षों आगे हैं, जो संसार के प्रथम श्रेणी के देश हैं ।

किसी अंग्रेज या क्रिश्चियन का ही उदाहरण लीजिये । उनके छोटे-छोटे शिशुओं को कैसे बात करना, उठना-बैठना और खाना-पीना यह सब स्कूल भेजने से पूर्व परिवार [illegible] में ही दिया जाता है । स्कूल पहुंचकर वे बड़ों के प्रति आदर-भाव, समय की पाबंदी, सफाई और ईमानदारी आदि का पाठ शीघ्र ही सीख जाते हैं ।

नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और चारित्रिक शिक्षा का सबक वे बाल्यावस्था में पढ़ ही नहीं लेते, गले भी उतार लेते हैं । यही उन्हें भावी जीवन में सशक्त और प्रौढ़ बना देता है । मेरे पड़ोस में तीन साल की एक बच्ची रहती थी । जब कभी उसका खिलौना या पुस्तक गिर जाती और मैं उठाकर उसे दे देता, तो हर बार वह "थैंक यू अंकल !" कहना न भूलती । मैं उसका नन्हा-सा मुंह निहारता रह जाता एवं उसकी शिष्टता की सराहना मन-ही-मन किया करता । परंतु हमारे यहां है क्या यह बात ? यहां तो धार्मिक शिक्षा में ही सांप्रदायिकता की बू का अनुभव पाते हैं ।

हमारे बच्चे अपने मां-बाप, चाचा-ताऊ से झूठ बोलना सीख जाते हैं । और वही

गेंद को देखो, उसमें आकार की पूर्णता है । भीतर से भी वह पूर्ण है–तरल गतिशील वायु तत्व से वह पूर्ण है । तभी वह स्वयं ऊंचा उछलता है, खेलनेवालों और दर्शकों के हृदयों को ऊंचा उछालता है । यही पूर्णता उपास्य है । –'पुण्यतोया' से

बच्चा [illegible] काम बड़े रूप में करने लगता है, तो हम उसे भ्रष्टाचार कहते हैं ।

आजादी मिलने के पूर्व तक हम अंग्रेजों में अनेक दोष और अपने में ही गुण दिखाया करते थे । शायद तब यह नीति सही थी; क्योंकि उस समय हमें उन्हें बदनाम करना था, शोषक और अत्याचारी सिद्ध करना था, उन्हें हटाकर शासन-सूत्र अपने हाथ में लेना था और देश को उनकी गुलामी की कारा से मुक्त करना था । स्वयं को अच्छा इसलिए सिद्ध करना था कि हम श्रेष्ठ हैं, हमारी संस्कृति श्रेष्ठ है, हम शासन-सूत्र संभालने में सक्षम हैं, यह विश्वास हम में अच्छी तरह बैठ जाये ।

परंतु आजादी मिलने के बाद भी, अंग्रेजों [illegible] विदा हो जाने के बाद भी, हम प्रशंसा के गीत गाते रहें, अपने दोष उन्हें दूर करने का प्रयास न करें, कितना बड़ा अहित हो सकता है उदाहरण वर्तमान स्थिति है ।

सबसे पहले हमें अपने दोषों को कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना आत्मचिंतन की कोशिश हमें करनी जब तक हम अपने दोषों को दूर करने प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक औरों से अपेक्षा रख सकेंगे ? परिवार, समाज देश की कमजोरियां दूर करने की हमें इसी प्रकार मिलेगी ।

आत्मनिरीक्षण व्यक्ति और आत्मिक एवं भौतिक उन्नति के अत्यावश्यक है ।

विश्लेषण

एक कनी सागर के तल में है मोती—बाकी तो रेत अगम है ...
एक गंध उपवन में स्यात् कहीं बहकी है—बाकी तो गंध वहम है...
एक किरण ज्योति की इकाई है सूरज में—बाकी तो उसका विस्तार सघन है...
एक प्यार जीवन में ज्योतित है दीपक-सा—बाकी तो सिर्फ देहताप-निष्क्रमण है...
एक अंश प्राणों में चेतन है सूक्ष्म बहुत—बाकी तो मात्र एक बाह्यावरण है...
मात्र सृजन जीवन का परमोपलब्ध क्षण है—बाकी तो देह और काल का विसर्जन है
सागर से मोती औ उपवन से गंध, तेज-बीज सूरज से, प्यार चिर अमंद
चेतन का ज्ञान, सृजन का चिर संधान सफल,
पाना ही जीवन का मात्र सही अर्थ है—बाकी तो सारा व्यवहार-मात्र व्यर्थ है।

–कुमारिल पं

*

गुरुकुल कांगड़ी

हिन्दी का भगीरथ

आचार जीवन की भाषा का व्याकरण है; व्याकरण भाषा के जीवन का आचार है। हिन्दी के भगीरथ पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी जीवन और भाषा दोनों में आचार के धनी और आग्रही थे। हिन्दी भाषा के आचार-नियमों को निर्धारित कर उन्होंने 'जो आचार ग्रहण कराये वह आचार्य' (आचारं ग्राहयतीति आचार्यः) इस नैरुक्त अर्थ में भी आचार्यत्व निभाया। उनकी जन्म-शताब्दी के सिलसिले में स्वर्गीय नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ लिखित ये श्रद्धा-स्निग्ध संस्मरण यहां पुनर्मुद्रित किये जा रहे हैं।

तब हमारा ज्वालापुर महाविद्यालय अभी बाल्यावस्था में था। स्वर्गीय पंडित पद्मसिंह शर्मा की प्रेरणा से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी स्वास्थ्य-सुधार के लिए महाविद्यालय पधारे और डेढ़ मास तक वहां रहे थे। 'सरस्वती' के संपादक आ रहे हैं, उन्हें आराम कैसे पहुंचेगा—यही सबको चिंता थी। उस समय महाविद्यालय में एक भी पक्का मकान नहीं था; हम सब झोंपड़ियों में ही रहते थे। द्विवेदीजी आये, तो वे भी प्रसन्नतापूर्वक एक कुटिया में रहने लगे।

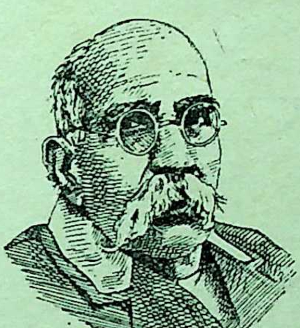
आचार्य द्विवेदीजी

द्विवेदीजी ने झांसी से चलते समय तार दिया था—"रीचिंग ज्वालापुर मैनेज केन्वेयेन्स फिफ्टीन आवर्स" (ज्वालापुर पहुंच रहा हूं, सवारी का प्रबंध करो, पंद्रह बजे।) रेलवालों की भाषा में पंद्रह बजे अर्थात् दिन के तीन बजे। किंतु तारबाबू ने असावधानी की, या करेंट में कोई भूल हो गयी कि तार में "फिफ्टीन आवर्स" की जगह "फिफ्टीन हार्सेस" (पंद्रह घोड़े) लिखा गया। मैं जरा चिंता में पड़ गया कि द्विवेदीजी पंद्रह घोड़ों को लेकर क्या करेंगे। वैसे एक सुंदर तांगे का प्रबंध मैंने कर लिया। जब द्विवेदीजी स्टेशन पर पहुंचे, तब मैंने वह तार उन्हें दिखाया, वे बड़े जोर से खिलखिलाकर हंसे और तारबाबू से जाकर विनोदपूर्वक बोले—"वाह बाबूजी खूब किया!" तारबाबू खिसियाना-सा रह गया।

द्विवेदीजी का रहन-सहन सादा था। स्वभाव के मिलनसार और विनोदी थे। इसलिए महाविद्यालय-परिवार में झट हिल-मिल गये, पराया-भाव तनिक भी नहीं रहा। उन्हें अनिद्रा रोग था। रात में कभी निद्रा

उचट जाती, तो फिर बड़ी कठिनाई से आती थी। संभवत: अतिविचार का परिणाम था।

जब द्विवेदीजी महाविद्यालय में आये, तो स्वभावत: 'सरस्वती' का प्रधान कार्यालय भी यहीं बन गया। यहीं ज्ञात हुआ कि वे 'सरस्वती' का संपादन कैसे करते थे। छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े सब लेखों को आद्योपांत सावधानी से पढ़कर ठीक करना, पत्रों का उत्तर देना, रद्दी-से-रद्दी लेख को अच्छा रूप-रंग देकर उसके अभिप्राय को स्थिर रखते हुए सुंदर बनाना, इत्यादि बातों में द्विवेदीजी की तुलना कोई संपादक न कर सकेगा।

जब मैंने द्विवेदीजी से कहा कि आप ऐसे रद्दी लेखों का भी स्वागत करते हैं, यह क्या बात है, तो उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया कि द्वार पर आनेवाले का स्वागत करना परम धर्म है और जिन महानुभावों को बार-बार लिखकर लेख मंगाया जाता है, उनका तो आदर करना अति आवश्यक है।

द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' के लिए जिस प्रकार दिन-रात एक किये, उतना अब कौन कर सकता है? द्विवदीजी द्वारा संपादित 'सरस्वती' को कोई आद्योपांत पढ़ता, तो उसे स्पष्ट भान हो जाता था कि उसमें आरंभ से लेकर अंत तक एक सधी हुई लेखनी कहीं-न-कहीं फिर गयी है। द्विवेदीजी ने अपनी निर्धारित प्रणाली, रीति-नीति के विरुद्ध 'सरस्वती' में एक भी शब्द जाने नहीं दिया। इस विषय में उन्होंने अपने प्रगाढ़ मित्रों को भी रुष्ट कर दिया; परंतु अपनी नीति पर वे अटल रहे।

श्री पद्मसिंह शर्मा की 'सतसई-संहार' नाम की लेखमाला इसीलिए एक वर्ष तक 'सरस्वती' कार्यालय में पड़ी रही, न छ सकी। द्विवेदीजी शर्माजी की शैली में सुधार करना चाहते थे; पर शर्माजी इस बात प डटे थे कि एक अक्षर भी इधर-का-उधर न किया जाये, समस्त लेखमाला जैसी लिखी गयी है, वैसी ही छपे। दोनों वीर अपनी-अपनी बात पर डटे रहे। अंत में द्विवेदीजी के बाद श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के समय में वह लेखमाला 'सरस्वती' में छपी।

द्विवेदीजी बड़े स्वाभिमानी पुरुष थे। कहते हैं कि महात्मा मुंशीरामजी (बाद के स्वामी श्रद्धानंदजी) ने किसी प्रसंग में द्विवेदीजी को अभिमानी कहा अथवा लिख दिया था। सो द्विवेदीजी महाविद्यालय में, महात्मा मुंशीरामजी के सुप्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी के इतने समीप रहते हुए भी और बुलावा आने पर भी, वहां नहीं गये। गुरुकुल के आचार्य प्रो० रामदेव उन्हें बुलाने स्वयं आये थे। द्विवेदीजी ने उन्हें हंसकर उत्तर दिया- "यदि मैं गुरुकुल गया, तो अभिमानी नहीं रहूंगा। एक महात्मा का वचन मिथ्या सिद्ध होगा। इसलिए नहीं जा सकता।"

द्विवेदीजी प्रतिदिन महाविद्यालय के ब्रह्मचारी और अध्यापक-वृंद के साथ गंगा की नहर की पटरी पर टहलने जाते थे। तब उनके संस्मरण सुनने में बड़ा आनंद आता था। वे संस्कृत के भी अच्छे कवि थे, जब लहर आती थी, तभी अनुष्टुप आदि छंद

बता डालते थे ।

महाविद्यालय आने के पूर्व, द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' में 'वदिक आर्य खेतिहरों की संतान थे' इस विषय पर लेख लिखे थे । तब मैंने दो लेखों में उनकी युक्तियों का खंडन किया था । वे जब यहां पधारे, तब मुस्कराकर बोले–"शास्त्रीजी, तब आपने हमारे लेखों का खंडन किया था, अब हम स्वयं आ गये हैं, हमारा भी खंडन कीजिये ।"

डाक के मामले में द्विवेदीजी बड़े पक्के थे । सारे पत्रादि वे डाक-विभाग के नियम के अनुकूल ही भेजते थे । यदि डाक-विभाग की कोई भूल रह जाती, तो उसकी भी खबर ले डालते थे । छोटे-छोटे नियमों के विषय में वे इतने कड़े थे कि एक बार जब उन्हें एक मित्र के पास जूते का नाप भेजना था, तो उन्होंने मित्र को एक लिफाफा अलग भेजा, जिसमें हिदायतें थीं, दूसरे लिफाफे में नाप का धागा भेजा । पूछा, तो बोले–"दोनों को एक लिफाफे में भेजना नियम-विरुद्ध है ।'

★

उस समय तक मैंने जो कुछ लिखा था, उससे मुझे टकों की प्राप्ति तो कुछ हुई ही न थी । मेरे तत्कालीन मित्रों और सलाहकारों ने कहा–" अजी, कोई ऐसी किताब लिखो, जिससे टके सीधे हों ।" रुपये का लोभ चाहे जो कराये । बहुत परिश्रम करके कोई दो सौ सफे की एक पुस्तक लिख डाली । उसका नाम रखा–तरुणोपदेश । मित्रों ने देखा, कहा–"अच्छी तो है, पर इसमें सरसता नहीं । पुस्तक ऐसी होनी चाहिये, जिसका नाम ही सुनकर और विज्ञापन मात्र ही पढ़कर, खरीदार पाठक उस पर टूटें । कामकला लिखो, कंदर्प-दर्पण लिखो ......" मैं सोच-विचार में पड़ गया । अंत में जीत मेरे मित्रों की ही रही । कवि तो मैं था ही, मैंने चार-चार चरणवाले लंबे-लंबे छंदों में एक पद्यात्मक पुस्तक लिख डाली–ऐसी पुस्तक जिसके प्रत्येक पद्य से रस की नदी नहीं तो बरसाती नाला जरूर बह रहा था । नाम भी मैंने ऐसा चुना, जैसा कि उस समय तक उस रस के अधिष्ठाता तक को न सूझा था । उसका नाम था–सोहाग रात । मित्रों ने उसे बहुत सरस पाया । मैंने भी अपना परिश्रम सफल समझा । अब लगा मैं हवाई किले बनाने । पुस्तक प्रकाशित होने पर उसे युक्तिपूर्वक बेचूंगा, मेरे घर रुपयों की वृष्टि होने लगेगी । परंतु मेरे हवाई किले एक पल में ढह गये । मेरी पत्नी कुछ पढ़ी-लिखी थी । उससे छिपाकर ये दो पुस्तकें मैंने लिखी थीं । दुर्घटना कुछ ऐसी हुई कि उसने ये पुस्तकें देख लीं । देखा ही नहीं, उलट-पलटकर पढ़ा भी । फिर क्या था, उसने मुझ पर वचन-विन्यास रूपी इतने कड़े कशाघात किये कि मैं तिलमिला उठा । उसने उन पुस्तकों की कापियों को आजन्म कारावास या काले पानी की सजा दे दी । वे उसकी संदूक में बंद हो गयीं । उसके मरने पर ही उनका छुटकारा उस दायमुलहब्स से हुआ । छूटने पर मैंने उन्हें एकांत-सेवन की आज्ञा दे दी । क्योंकि सती की आज्ञा का उल्लंघन करने की शक्ति मुझमें नहीं । इस तरह मेरी पत्नी ने मुझे पंक-पयोधि में डूबने से बचा लिया ।

–महावीर प्रसाद द्विवेदी

★

ऊंचा बांध ऊंचे अरमान

पिरामिड मृत मिस्र के अवशेष हैं; परंतु नील का आस्वान बांध, जो कटु राजनीतिक विवाद के बाद तीस हजार मिस्री श्रमिकों व इंजीनियरों के कठोर श्रम एवं रूस की सहायता से अपनी पहली मंजिल पार कर गया है, जीवंत-प्राणवंत मिस्र का प्रतीक है। विश्व की इस सबसे विशाल नदी-योजना का यह परिचय विख्यात इंजीनियर तथा सिंचाई एवं बिजली के केंद्रीय मंत्री डा० राव ने प्रस्तुत किया है।

डा० के० एल० राव

मिस्र और सूडान की प्राणधारा नील, जो मध्य अफ्रीका से निकलकर भूमध्य सागर तक ४,०३९ मील की यात्रा करती है, दुनिया की सबसे लंबी और उदार नदियों में से है। नील अगर न होती, तो आज मिस्र और सूडान भी सहारा की तरह ही निर्जीव होते। इन दोनों देशों में जो कुछ हरियाली है, वह सब नील की कृपा का फल है।

प्राचीन काल में मिस्रवासी नील के दोनों किनारों पर बांध बांधकर बाढ़ के जल को रोके रखते थे और उससे फसलों की सिंचाई करते थे। सिंचाई हो जाने पर ये बांध तोड़ दिये जाते और बचा हुआ जल फिर नदी में जा मिलता था। लेकिन बाद में मिस्र की आबादी और क्षेत्रफल में बहुत वृद्धि हो गयी, बाढ़ से सींची जानेवाली खेती राष्ट्र के भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त हो गयी। तब नदी के डेल्टा प्रदेश में बराज बांधे गये, ताकि पानी की सतह ऊंची उठे और नहरों द्वारा पानी खेतों में पहुंचाया जा सके।

खेती को बढ़ाने और अधिक-से-अधिक फसल उगाने की आवश्यकता बढ़ती गयी और सिंचाई के ऐसे स्रोत की मांग भी, जो साल-भर पानी मुहैया कर सके। इस उद्देश्य से नील नदी पर सन १९०२ में आस्वान बांध बांधा गया और उसी उद्देश्य से बांध को बाद में दो बार ऊंचा किया गया। अब बांध ३९७ फुट ऊंचा है।

लेकिन सिंचाई और बिजली के लिए जल की आवश्यकता सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती ही जा रही है। अतः मिस्र ने पुराने आस्वान बांध से उद्‌गम की ओर ४.३ मील दूर, एक नया बांध बनाने की योजना बनायी है। यही है उच्च आस्वान बांध।

यह नया बांध मानव के सबसे बड़े निर्माण-कार्यों में से है, जिस पर संसार के उन्नत-से-उन्नत देश को भी फख्र हो सकता है। विशालता, उपयोगिता, विलक्षण स्वरूप, बृहत कल्पना, डिजाइन और कार्यान्वय की नूतन विधियां—इन सब विशेषताओं के कारण उच्च आस्वान बांध लंबे अरसे तक बेजोड़ रहेगा।

भारत की रिहंद, नागार्जुन सागर और भाखड़ा विश्व की सबसे बड़ी परियोजनाओं

[‘भगीरथ’ से साभार]

में गिनी जाती हैं। लेकिन उच्च आस्वान बांध की जलसंग्रह-क्षमता ५,५४,४४,०३० लाख घनफुट है, जो इन तीनों परियोजनाओं की ही नहीं, बल्कि भारत की सभी प्रमुख परियोजनाओं की कुल जनसंग्रह-क्षमता से भी अधिक है।

उच्च आस्वान बांध की संग्रह-क्षमता १,२७३ लाख एकड़ फुट है। उसकी तुलना में भाखड़ा की क्षमता ७४ लाख एकड़ फुट, नागार्जुन सागर की ९३ लाख एकड़ फुट और रिहंद की ८६ लाख एकड़ फुट है।

पूरे तीन वर्षों की अवधि में नील में जितने जल की निकासी होती है, उतना पानी उच्च आस्वान बांध में जमा रहेगा। पहली बार बांध के जलाशय को भरने में दस वर्ष लगेंगे। जलाशय का न्यूनतम भंडार १,०५,९४०० लाख घनफुट है, जिसे नदी में रेत-जमाव की प्रक्रिया से पूरी तरह रेत से भरने में पांच सौ साल लगेंगे।

उच्च आस्वान जलाशय जब जल से भर जायेगा, तो फिर तीन वर्ष तक चाहे बारिश हो या न हो, सिंचाई चलती रह सकेगी, बिजली का उत्पादन भी जारी रह सकेगा। ऐसे विशाल पैमाने पर निर्माण की गयी जलसंग्रह-योजनाएं ही उष्ण कटिबंध के देशों को हमेशा के लिए सूखे से मुक्ति दिला सकती हैं।

उच्च आस्वान बांध की विद्युत-उत्पादन-क्षमता भी कम विशाल नहीं है। वहां १,७५,००० किलोवाट के १२ यूनिट होंगे, जिनकी संस्थापित क्षमता २१ लाख किलो- [illegible] विद्युत-केंद्र और पुराने आस्वान बांध के विद्युत-केंद्र को परस्पर जोड़ देने पर तो उत्पादन-क्षमता और भी बढ़ जायेगी।

बाढ़ की रोकथाम में भी यह बांध बहुत सहायक होगा। ३१०.७ मील लंबा इसका जलाशय बाढ़ के दिनों में १,४१,२५,९०० लाख घनफुट जल अपने कोष में रख सकता है। इसकी तुलना में भारत के जलाशयों की बाढ़-अवशोषण-क्षमता बहुत ही कम है।

बांध के इंजीनियर अब तक की उन्नत-से-उन्नत तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। स्वयं भी कई नयी तकनीकों का विकास उन्होंने किया है। आम तौर पर बांध बनाते समय नदी का रुख मोड़कर निर्माण-स्थल

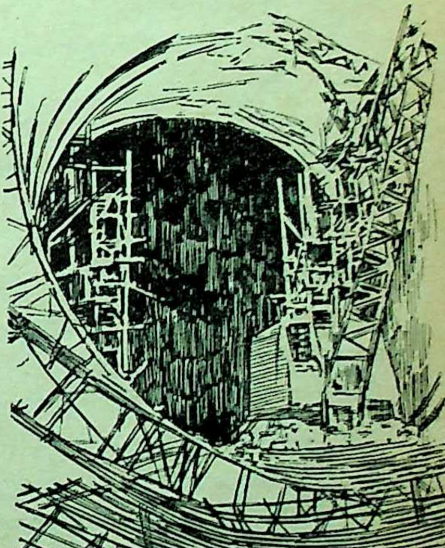

को सुखा लिया जाता है। लेकिन उच्च आस्वान बांध पुराने आस्वान बांध के जलाशय में खड़ा किया जा रहा है, जहां ११५ फुट गहरा जल है।

इससे भी बड़ी समस्या यह है कि ठोस चट्टानों की परत जलाशय के तल से ६५६ फुट नीचे हैं। बीच की मिट्टी पोली है और उसमें पानी रिसता रहता है। सो वह बांध का वजन सह नहीं सकती। अतः चट्टानों की नींव डालने का तरीका अपनाया गया है।

यह नया बांध तली से ३६४ फुट ऊंचा होगा और चट्टानों से ही बना होगा। तैरते झामों की सहायता से नींव की खुदाई की जायेगी और उसे रेगिस्तान की रेत से भरा जायेगा, जो कि पानी मिलाकर पंपों के जरिये वहां पहुंचायी जायेगी। वैज्ञानिक विधि से अच्छी तरह हिलाने पर यह पानी-मिली रेत खूब ठोस रूप धारण कर लेगी।

फिर भी जल उसे भेद न सके, इसके लिए बांध के मध्यभाग में नदी के आर-पार ६८९ फुट की गहराई तक सीमेंट व मिट्टी का घोल पंप किया जायेगा और कहीं-कहीं सोडियम सिलिकेट भी भरा जायेगा। बड़े अनुसंधान से यह विश्वसनीय प्रक्रिया विकसित की गयी है।

इस प्रकार बांध की एक बड़ी विशेषता है पास ही मिलनेवाले कच्चे माल, यानी रेगिस्तान की बालू का उपयोग। लाखों वर्ष तक निरंतर हवा की उछाल-पटक सहते-सहते रेत के ये कण बहुत ही महीन और एकसार हो गये हैं।

टीलों की इस रेत का उपयोग बांध के ऊपर तथा नीचे और भी अनेक भागों में किया जा रहा है। विभिन्न स्थानों के लिए विभिन्न मोटाई की रेत बड़ी वैज्ञानिक रीति से चुनी गयी है। बांध की चट्टानों के बीच की खाली जगहों को उपयुक्त किस्म की रेत पंप के जरिये पहुंचाकर भर दिया जायेगा। इससे पानी उसमें से रिस नहीं पायेगा।

प्रत्येक बांध में इस बात की व्यवस्था होती है कि जितना जल आवश्यकता से अधिक हो, वह निकल जाये। सामान्यतया ऐसा इंतजाम रहता है कि अतिरिक्त जल बांध के एक भाग के ऊपर से सहज ही बह जाता है। इस स्थान को उमड़-मार्ग (स्पिलवे) कहा जाता है। किंतु आस्वान में रूसी डिजाइन अपनाया गया है। इसमें अतिरिक्त जल बांध के नीचे बने विद्युत-केंद्र के बिजली यंत्रों के बीच में से होकर बहता है। लिहाजा आस्वान बांध में पुराने ढंग के उमड़-मार्ग (स्पिलवे) नहीं हैं।

यह नया डिजाइन चंद बातों में अधिक कारगर और सस्ता भी है। यह भी दावा किया जाता है कि इससे विद्युत-केंद्र की विद्युत-उत्पादन की क्षमता भी कुछ बढ़ जाती है।

देश की अर्थ-व्यवस्था में क्रांति पैदा कर देनेवाला यह उच्च आस्वान बांध मिस्र में कितना महत्वपूर्ण माना जा रहा है, इसकी आसानी से कल्पना की जा सकती है। बांध को यथासंभव कम खर्च में और जल्दी-से-जल्दी तैयार करने की आवश्यकता को मिस्र

सरकार खूब अच्छी तरह समझती है । इसलिए उसने बांध के लिए एक पृथक प्रधान इंजीनियर ही नहीं, एक पृथक मंत्री भी नियुक्त किया है । यह मंत्री स्वयं इंजीनियर है और इसने योजना-स्थल पर ही अपना दफ्तर बनाया है । संयोग से आस्वान प्रांत का गवर्नर भी इंजीनियर है ।

इन ऊंचे पदों पर इंजीनियरों की नियुक्ति का ही सुफल है कि इस विशाल योजना का काम बिना किसी प्राशासनिक अड़चन के अबाध गति से संपन्न हो रहा है । शीघ्र निर्णय लेने और तुरंत कार्यान्विय करने की इस व्यवस्था से समय बचता है और इसलिए बहुत-सा धन भी । उदाहरण के लिए, नदी में खुदाई करने के लिए ड्रेजरों की जरूरत थी। आस्वान के मंत्री ने स्वेज नहर के मंत्री को फोन किया और ड्रेजरों का जत्था आ पहुंचा।

आस्वान बांध का कार्य-स्थल हजारों मजदूरों और सैकड़ों दैत्याकार यंत्रों, तैरते ड्रेजरों और बजरों से पटा पड़ा है । वहां दिन-रात काम चलता रहता है । इन्सान और समय के बीच होड़ चल रही है ।

बाढ़ का अगला मौसम आने के पूर्व ही पानी के नीचे यथास्थान बालू जमा देनी है और बांध को नदी-तल से १३१ फुट ऊंचा उठा देना है । अन्यथा उफनती हुई नील नदी पिछले साल की सारी मेहनत पर पानी फेर देगी । लेकिन सारा कार्यक्रम इस तरह योजनापूर्वक तैयार किया गया है कि अवश्य ही यह काम समय रहते पूरा हो जायेगा ।

सन १९६८ में बांध तैयार हो जायेगा और समस्त पूर्वी देशों के लिए यह बड़े गौरव की बात होगी कि मिस्री इंजीनियरों ने अपने पुरखे फैराओं द्वारा निर्मित पिरामिडों से भी अधिक विस्मयजनक और लाभप्रद कीर्तिस्तंभ खड़ा कर दिया है ।

★

सावन के बादल उमड़-घुमड़ आये । हंस-दंपति ने मानसरोवर की ओर प्रस्थान किया । उड़ते-उड़ते रात हो गयी । दोनों थकान से चूर-चूर होकर धरती पर उतरे । चतुर्दिश निहारा, तो वह कौवों का राष्ट्र था । कुछ भी हो, उन्हें केवल आश्रय की अपेक्षा थी । उन्हें विदेशी जानकर एक कौवे ने उनका स्वागत किया । उसके निमंत्रण पर हंस-दंपति उसके कुंज-निकेतन में रात बिताने के लिए गये । कौवे ने उनकी खूब मनुहार की । फिर हंस से कहा—"बंधु, मेरा घर इतना बड़ा नहीं है कि आपके लिए पृथक कक्ष दे सकूं । सो भाभीजी भीतर अंतःपुर में रहें, हम दोनों आंगन में सो लेंगे ।" ऐसा ही किया गया । अगले दिन ब्राह्म मुहूर्त में हंस चलने को तत्पर हुआ और कौवे को धन्यवाद देकर हंसनी को बुलवाने के लिए कहा । किंतु कौवे ने हंसनी को विदा करने से साफ इन्कार कर दिया । विवश हंस ने कौवा-पंचायत बुलायी । पंचायत जुटी । सभापति ने निर्णय दिया—"हंसनी कौवे के अंतःपुर में है, अतः उसकी पत्नी है । किसी को विश्वास न हो, तो अभी मतदान करवा सकता है । यहां तो न्याय की सरिता निरंतर प्रवाहित होती है ।"

—रामचंद्र मक्कासर

★

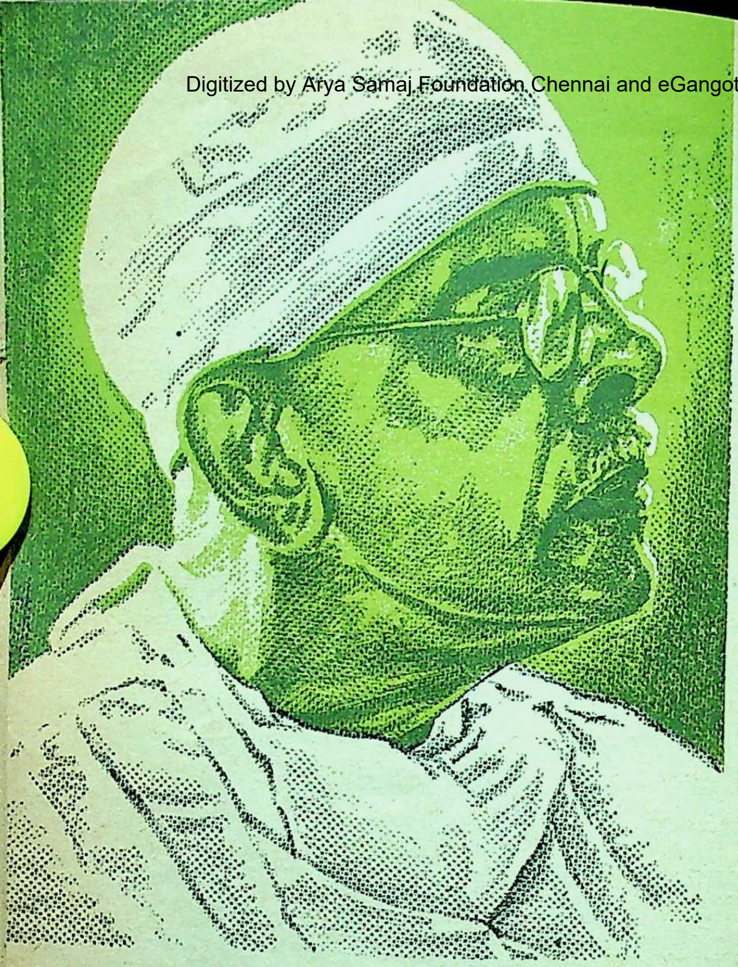

करुणा एवं कर्मठता–
दो शब्द,
दो महाशब्द, जिनसे
एक महाकाव्य
लिखा जा सकता है
और
कई बार
लिखा गया है...
ऐसे ही एक
जीवंत महाकाव्य का
कथासार
बी० एन० ओके-रचित
पोर्ट्रेट के साथ।

सेवामूर्ति सीग्रेव

उत्तर-पूर्वी बर्मा में श्वेली नदी की दूर तक फैली हुई हरी-भरी घाटी की एक पहाड़ी पर कुछ इमारतें दिखाई दे रही हैं। लकड़ी और पत्थर की ये इमारतें एक अस्वस्थ व थके-हारे वृद्ध की जीती-जागती याद हैं। प्लेग, मलेरिया और पुरानी पेचिश के कारण

आज उसका लंबा-चौड़ा व तगड़ा शरीर शिथिल पड़ गया है। पिछले चालीस वर्षों से, युद्धकाल एवं शांतिकाल दोनों में निरंतर बीमारों का इलाज करते-करते आज वह बूढ़ा डाक्टर कुछ थक-सा गया है।

डा० गोर्डन सीग्रेव का बर्मा के प्रति वंशपरंपरागत लगाव है। उनके दादा व दादी अमरीकी बैप्टिस्ट मिशनरी के रूप में पहले-पहल १८३५ में बर्मा आये थे। उनके माता-पिता ने भी अपने पुरखों का अनुकरण किया। १८९७ में गोर्डन सीग्रेव का रंगून में ही जन्म हुआ। पड़ोसी बच्चों के संग हंसते-खेलते उन्होंने पहले करेन भाषा ही सीखी, बाद में अंग्रेजी पढ़ी।

पांच वर्ष की उम्र में गोर्डन एक मिशनरी से मिला, जो कि डाक्टर भी था। बस, उसने तभी से मन में डाक्टर बनने का संकल्प संजो लिया। आगे चलकर वे अमरीका गये और डाक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद बाल्टिमोर हास्पिटल में प्रशिक्षण लेकर वे अपनी पत्नी और छोटी बच्ची के साथ पुनः बर्मा आ गये।

नामखाम उन दिनों बर्मा का एक छोटा-सा गांव था। आते ही उन्होंने यहां का अस्पताल संभाला, जो तब तक एकदम साधन-शून्य था। जब सीग्रेव-परिवार वहां पहुंचा, तब अस्पताल के नाम पर जंगली लकड़ी की छोटी-सी इमारत थी, जिसमें बीस चारपाइयां पड़ी थीं। ले-देकर वहां पैर के अल्सर का एक रोगी पड़ा था। वहां पूरे साल में कभी २८ से ज्यादा रोगी दाखिल न हुए थे।

डा० सीग्रेव ने निश्चय किया कि यदि रोगी वहां नहीं आते, तो वे खुद रोगियों के पास जायेंगे। इसके लिए उन्होंने वहां की शान भाषा सीखी। तदुपरांत उन्होंने एक खच्चर पर दवाइयां लादीं और उनका घर-घर व गांव-गांव जाने का अभियान प्रारंभ हो गया। वे एक-एक गांव में पहुंचकर घोषणा करते कि वे बिना किसी फीस व दाम के मरीजों का इलाज करेंगे। देखते-देखते गांव के रोगी उनके पास जमा हो जाते।

बाद में जब डा० सीग्रेव ने कुछ सफल आपरेशन किये, तो उनकी ख्याति और बढ़ गयी। एक महिला संतान के लिए तरस रही थी। उसके गर्भाशय में रसोली थी। डाक्टर सीग्रेव ने आपरेशन करके उसे निकाल दिया और एक वर्ष के भीतर उसके लड़का भी हो गया। इस घटना के बाद उनका नाम दूर-दूर तक फैल गया।

उन दिनों बर्मा में गिने-चुने डाक्टर थे। न पूरे साधन थे और न किसी ट्रेनिंग वगैरह की सुविधा थी। इसलिए डाक्टर सीग्रेव ने नर्सें तैयार करना शुरू किया। उस समय नर्सों की आवश्यकता सिर्फ नामखाम अस्पताल को ही नहीं, बल्कि सारे देश की चिकित्सा-संस्थाओं को थी। डा० सीग्रेव ने सोचा, यदि ये नर्सें और कहीं न जाकर अपने गांव ही जायें, तो भी वे वहां छोटे-मोटे दवाखाने और प्रसूति-गृह चलाकर लोगों की काफी सहायता कर सकती हैं।

बर्मा के उस क्षेत्र में कई जातियों के लोग रहते हैं—काचीन, शान, कारेन, खामती,

पलंग तथा इनके अलावा करीब आधी दर्जन जातियां और। प्रत्येक जाति की अपनी अलग भाषा है, जो किसी दूसरे की समझ में नहीं आती। पर वैसे करीब-करीब सभी लोग बर्मी भाषा जानते हैं। डा० सीग्रेव ने सर्वप्रथम एक शान और एक काचीन लड़की को नर्सिंग की शिक्षा दी। वे शान लड़की को शान भाषा में समझाते और फिर वह लड़की उसका अनुवाद बर्मी भाषा में करके दूसरी लड़की को सुना देती। किंतु बाद में जब चार काचीन लड़कियां और आ गयीं, तो डाक्टर ने खुद बर्मी सीख ली, ताकि वे सीधे उन्हें ट्रेनिंग दे सकें।

डा० सीग्रेव ने शुरू से ही दो बातों पर ज्यादा जोर दिया। एक तो यह कि नर्सों को रोगियों के प्रति बड़ी भली व सहिष्णु होना चाहिये। दूसरे, उन्हें कोई भी मैला काम करने को तैयार रहना चाहिये। अगर कभी कोई नर्स रोगी का बेड-पैन उठाने में संकोच अनुभव करती, तो डाक्टर बिना किसी झुंझलाहट के जाकर यह काम कर डालते। भाषा उन्होंने सब जातियों से समानता और का व्यवहार रखा।

महाचिकित्सक से

प्यारे भगवान, हे महाचिकित्सक, मैं तुम्हारे सम्मुख प्रणत हूं। क्योंकि समस्त उत्तम और निर्दोष नियामतों के दाता तुम्हीं हो, इसलिए तुमसे प्रार्थना करता हूं :

मेरे हाथों को कौशल दो, मेरी बुद्धि को विशद दृष्टि दो, मेरे हृदय को करुणा और सहानुभूति दो।

मुझे ध्येय की अनन्यता दो, अपने कष्ट-पीड़ित मानव भाइयों का कुछ तो कष्ट भार हर सकूं, इसकी शक्ति दो; और मुझे मिले इस विशेष सौभाग्य का सही बोध दो।

मेरे हृदय से सारा छल-छद्म और संसारीपन हर लो, ताकि बच्चे की भांति भोले विश्वास के साथ मैं सदा तुम पर निर्भर रह सकूं।

[डा० कोक्रेन की बैठक में टंगी प्रार्थना]

डाक्टर के आत्मीय व्यवहार तथा सेवा भाव के कारण नामखाम अस्पताल की सब चारपाइयां मरीजों से भर गयीं। लेकिन उन्हें इससे ही संतोष नहीं हुआ। उन्होंने साइडकारवाली एक पुरानी मोटर साइकल खरीदी और उन दूर के गांवों का भी दौरा शुरू किया, जहां के रोगी नामखाम तक नहीं पहुंच सकते थे।

तभी बर्मा सरकार ने सभी बच्चों के लिए स्वास्थ्य परीक्षा आवश्यक कर दी। डाक्टर को उसके लिए सिर्फ १५ पैसे फी बच्चा फीस दी जाती थी। अब डा० सीग्रेव ने अपनी सारी छुट्टियां इसी काम में लगायीं और हजारों बच्चों को देखने में जो फीस मिली, उससे टी-माडल की फोर्ड गाड़ी खरीद ली। फिर तो सुदूर गांवों के

में और भी तेज हो गयी । इस तरह नामखाम और निकटवर्ती क्षेत्रों में उन्हें पांच वर्ष निरंतर कठिन परिश्रम करते हुए बीते । बाद में एक दिन अप्रत्याशित लाभ का द्वार खुला । डिट्राइट (अमरीका) के एक गिरजे ने उन्हें अस्पताल के विकास के लिए बीस हजार डालर प्रदान किये । उन्होंने तुरंत एक ट्रक खरीदा और कुछ स्थानीय लोगों को नदी-किनारे से ट्रक में पत्थर लाने का काम सौंप दिया । जब कभी उन्हें समय मिलता तो वे, उनकी पत्नी और नर्सें भी पत्थर ढुलाने के काम में लग जातीं । यही दौड़धूप उन्हें अन्य इमारती सामान लाने में भी करनी पड़ी ।

धीरे-धीरे उनके छोटे-से अस्पताल का विस्तार होने लगा । शान राज्यों की संघीय सरकार के अनुदान से वहां महिलाओं और बच्चों के लिए एक औषधालय भी खुल गया । बाद में नामखाम के निकट ५०, ६५ और १५० किलोमीटर के फासले पर उन्होंने अस्पताल की तीन शाखाएं भी खोल दीं । १९३७ में वे अमरीका गये और वहां से इस सेवा-संस्था के लिए विपुल धन-राशि, एक्सरे मशीन और बहुत-सा सर्जरी का साजो-सामान लेकर लौटे ।

यह क्रम चल ही रहा था कि दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया । जापानी फौजों ने अचानक बर्मा पर हमला किया और वहां की असावधान ब्रिटिश फौजों को हरा दिया । डा० सीग्रेव ने स्थिति गंभीर होते देख अपनी बीमार पत्नी और दोनों बच्चों को घर (अमरीका) भेज दिया । परंतु खुद सेवा करने के लिए बर्मा में ही रुके रहे । भारी बमबारी और हवाई मशीन-गनों के हमलों के बावजूद, उन्होंने व उनकी नर्सों ने लड़ाई के मैदान में अस्पताल चलाये और सैकड़ों बीमार व घायल सैनिकों की देखभाल की ।

मियतक्विना की लगातार तीन महीने की लड़ाई में करीब ४,००० चीनी सैनिक घायल हुए । उनमें से भारी तादाद में सीग्रेव-यूनिट के फील्ड-अस्पताल में पहुंचे और लगभग ९६ प्रतिशत घायल बच भी गये ।

डा० सीग्रेव जब हारे-थके फिर नामखाम पहुंचे, तो उनके चेहरे पर बीमारी और अपर्याप्त भोजन का असर स्पष्ट दिखाई दे रहा था । उनका अस्पताल भी बमबारी में बुरी तरह ध्वस्त हो चुका था । चारों तरफ निराशा का साम्राज्य था; लेकिन डाक्टर ने हिम्मत नहीं हारी । उन्होंने नर्सों और नामखाम के लोगों की मदद से अस्पताल के पुनर्निर्माण का काम शुरू कर दिया ।

इसके बाद वे कुछ और धन-संग्रह के लिए अमरीका गये । इसी बीच उन्होंने अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशन से अपना संबंध-विच्छेद कर लिया और अस्पताल को पूर्णतः असांप्रदायिक रूप दे दिया ।

अब अस्पताल में पहले से भी ज्यादा रोगी आने लगे । लेकिन डा० सीग्रेव के संकटों का यहीं अंत नहीं हुआ । कारेन लोगों ने नव-गठित स्वतंत्र बर्मा की सरकार के खिलाफ बगावत कर दी और नामखाम क्षेत्र को अपने कब्जे में कर लिया । अंत में

जब स्थानीय कारेन नेता को वहां से निष्कासित किया गया, उनमें डा० सीग्रेव का एक मुख्य सहायक और एक नर्स भी थे।

बस अब तो तिल का ताड़ बन गया। तुरंत रंगून खबर पहुंची कि डाक्टर की कारेन लोगों से सहानुभूति है। फिर तो राजद्रोह के अपराध में उन्हें भी पकड़ लिया गया। उन्होंने करीब छः मास जेल में काटे। बाद में बर्मा की सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें निर्दोष घोषित कर जेल से छोड़ दिया। किंतु डाक्टर की अनुपस्थिति में नामखाम-अस्पताल लूट लिया गया था और नर्सिंग स्कूल भी छिन्न-विछिन्न हो गया था।

जेल से छूटकर जब वे फिर नामखाम पहुंचे, तो हजारों लोगों ने उन्हें हर्ष-विभोर होकर घेर लिया। सब एक स्वर में चिल्ला पड़े—“वह देखो, हमारा बूढ़ा डाक्टर आ गया।” उनके सहयोग से डा० सीग्रेव ने फिर जैसे-तैसे अस्पताल का काम शुरू किया। बाद में उनके कुछ अमरीकी मित्रों ने एक दो-मंजिली इमारत के लिए कुछ धन और भेज दिया। अस्पताल फिर चलने लगा।

आज इस अस्पताल के छः भवनों में कोई ढाई-तीन सौ रोगियों के लिए जगह है। हर वर्ष लगभग पांच हजार रोगी यहां रहकर और दस हजार रोगी बाहर से आकर इलाज करवाते हैं। सन १९२३ से अब तक सब मिलाकर ७०० लड़कियां यहां के नर्सिंग स्कूल से उपाधि प्राप्त कर चुकी हैं।

परिस्थितियों के थपेड़े खाते-खाते आज डा० सीग्रेव का सीना धंस चुका है और [illegible] है। सुबह साढ़े पांच से रात के दस बजे तक अस्पताल का कार्य उन्हें व्यस्त रखता है। वे अब तक करीब हजार आपरेशन कर चुके हैं।

लगभग चालीस वर्ष पहले एक मि वाले से डाक्टर सीग्रेव ने कहा था कि जो अस्पताल चलायेंगे, वह एकदम खु भरा होगा। उनका कहना है कि रोगी होता है, तो उसके मन में यह विश्वास ही जम जाता है कि वह ठीक हो जायेगा

इस समय नामखाम में सीग्रेव-परि में से बस ये डाक्टर ही बचे हैं। अस्वस्थ के कारण उनकी पत्नी अमरीका चली हैं। उनके दोनों बच्चे भी अमरीका में रहते हैं। लेकिन डा० सिग्रेव हैं कि ज तन होकर भी सेवाव्रत में जुटे हुए हैं उन्होंने अभी हाल में ही कहा था:

“मैं नहीं चाहता कि मेरी मृत्यु के सा यह अस्पताल समाप्त हो जाये। मेरी हार्दि कामना है कि जो स्वस्थ परंपराएं हमने य विकसित की हैं, उनके आधार पर यह संस् आगे भी चलती रहे। मैंने धन-दौलत व ऐशो आराम की इच्छा कभी नहीं रखी। लेकि ये सब बातें मैं तभी सिद्ध कर सकता जबकि मैं इसी तरह काम करते-करते यह नामखाम में ही दम तोड़ूं। सचमुच तभी मेरा जीवन सार्थक सिद्ध हो सकेगा।”

लेकिन अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध करने के लिए उन्हें मृत्यु से सर्टिफिकेट मांगने की कोई आवश्यकता नहीं। उसकी सार्थकता स्वतःसिद्ध है।

मेरे जीवन के निर्माता

जीवन-निर्माण में पुस्तकों के योगदान का विवेचन, काकासाहब द्वारा गुजराती 'नवनीत' के लिए विशेषतः लिखित ।

काका कालेलकर

कुछ लोगों के जीवन में एकाएक परिवर्तन हो जाता है। तुलसीदास ने अपनी पत्नी का ताना सुना और वह पत्नी के पीछे पागल कवि रामोपासक बन गया। वालमीकि डाकू था। उसके जीवन में भी एकाएक ही परिवर्तन हुआ और वह बहुत बड़ा संस्कृतिधुरीण ऋषि और कवि बन गया। रवींद्रनाथ के पिता के सामने कागज का एक टुकड़ा उड़ता हुआ आया, जिस पर उपनिषद का एक वचन था। उसे पढ़कर उन्होंने अपनी समस्त जायदाद कर्ज चुकाने के लिए कोर्ट को सौंप दी।

जीवन की रेलगाड़ी के इस भांति एकाएक एक पटरी पर से दूसरी पटरी पर चली जाने के प्रसंग थोड़े ही लोगों के जीवन में आते हैं। अधिकांश मनुष्य तो अपने जीवन में थोड़ा-थोड़ा हेरफेर करते चलते हैं। इसमें भी पुस्तकों का असर कई बार चमत्कारी होता है। पर ज्यादातर धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा ही होता है।

ऐसी स्थिति में बहुत-सी वस्तुओं को गौण करके किसी एक ही वस्तु को आगे करने का मन होता है और इसमें मनुष्य एक वक्त एक ग्रंथ को आगे रखता है, दूसरे वक्त दूसरे को। सो मेरे जीवन पर गहरा असर डालनेवाला कोई ग्रंथ नहीं है। अलग-अलग समयों पर, अगल-अलग प्रसंगों में, अलग-अलग ग्रंथों ने असर डाला है। और जिनका अध्ययन बहुलक्षी, विविध विषयों का और विशाल हो, वे कितनी किताबों का नाम लें ?

मनुष्य के कार्यजीवन की जब शुरूआत ही हो, तब ऐसे सवाल का उत्तर देना आसान होता है। रवींद्रनाथ ठाकुर, या स्वामी विवेकानंद, या गांधीजी, या विनोबाजी की अमुक पुस्तक पढ़ी और उसमें से अपने जीवन की दिशा पायी, प्रेरणा पायी, ऐसा मनुष्य कह सकता है। कोई सशक्त उपन्यास पढ़ते हुए, उसी में से किसी काल्पनिक व्यक्ति को अपना गुरु बनाने का संकल्प भी कुछ लोग कर सकते हैं।

मैं कह सकता हूं कि रामायण में लक्ष्मण का पात्र मुझे सबसे अच्छा लगा और उससे बड़े भाई या किसी श्रद्धेय की सेवा करने में मेरी आस्था हो गयी। लक्ष्मण शीघ्रकोपी

था। उतना [illegible] छोड़कर लक्ष्मण बनूं, ऐसा मैंने निश्चय किया। इस आदर्श का पूरे जीवन में निष्ठापूर्वक पालन किया है; फिर भी मैं यह नहीं कह सकता कि कुदरत ने मुझे हमेशा लक्ष्मण की ही भूमिका दी है।

मुझ पर गीता से अधिक उपनिषदों का असर हुआ है। धर्मकारों के लेखन से अधिक संतों की वाणी का असर हुआ है। साहित्यकारों में अधिक-से-अधिक असर रवींद्रनाथ का और जीवन-साधना में सबसे बड़ा असर महात्मा गांधी के व्यक्तित्व तथा उनके लेखन का हुआ है। अपनी आस्तिकता का पाया मैंने जितना उपनिषदों में पाया है, उतना ही खगोलविद्या के ग्रंथों में भी।

उपन्यास मैंने बहुत थोड़े पढ़े हैं। और सारे जीवन में जितने पढ़े थे, उनसे अधिक पिछले दो वर्षों में पढ़े हैं। उपन्यास जीवन का एकांगी दृश्य पेश करते हैं। बहुत बार वह छिछला होता है, कई बार विकृत होता है। और जो मनुष्य सारे समय उपन्यास ही पढ़ता रहे, उसका जीवन एक नीरस-से-नीरस उपन्यास बन जाता है, इसमें शक नहीं। तो भी इस पचरंगी दुनिया में जीवन का सारा अनुभव मनुष्य अपने ही जीवन से नहीं पा सकता। और परकाया-प्रवेश से भी भला कोई मनुष्य कितना अनुभव प्राप्त कर सकेगा? सो मनुष्य को कुछ एक सशक्त उपन्यास तो पढ़े होने ही चाहिये। रवींद्रनाथ का 'गोरा' निस्संदेह ऐसा एक उपन्यास है।

उपन्यास का जितना महत्व है, उतना ही प्रवास-वर्णनों का भी है। परंतु उनकी [illegible], तो प्रवास तो खत्म हो जायेंगे, पर वर्णन खत्म नहीं होगा। जिस मनुष्य को अनेक महाद्वीपों के अनेक देशों की यात्रा करने का सुखद अवसर मिला हो, अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों के साथ अनेक विषयों की चर्चा करने का रस मिला हो और अलग-अलग देशों की आबोहवा की वहां की संस्कृति पर कैसी छाप पड़ी है, यह चिंतन करने में जिसका रस जागा हो, उसके लिए प्रवास, लोगों के साथ का वार्तालाप और मानव-जीवन का चिंतन—यही संस्कारिता का बड़े-से-बड़ा साधन बन जाता है; प्रकृति और मनुष्य-जीवन ही एक विशाल ग्रंथ बन जाते हैं। फिर उसी के लगातार अध्ययन से मनुष्य बड़ा जाने लगता है। शब्दबद्ध और लिपिबद्ध साहित्य उसके लिए गौण बन जाता है।

इसलिए अमुक साहित्य ने ही मुझे घड़ा, ऐसा कह नहीं सकता। तो भी मुझे साहित्य से इतना अधिक मिला है कि साहित्य के प्रति मेरे मन में अखंड कृतज्ञता-भाव है।

मुझे घड़ने में जिस साहित्य का सबसे अधिक हाथ रहा है, वह मेरा अपना ही लेखन है। दूसरों के लिए उसकी उपयोगिता कम हो या खूब, लेकिन जब मैं लिखता हूं, तब मेरी संपूर्ण मनोभूमि की गोड़ाई होती है और लिखने के प्रयत्न में मैं अपने आपको घड़ता जाता हूं। किंतु इस प्रकार का आत्मनिरीक्षण और जीवन-व्यापार का निरीक्षण दुनिया के किस काम का? इसका महत्व तो हमेशा आत्मनेपदी ही होता है।

★

मीकांग के तट पर

चार्ल्स डब्ल्यू० स्टाकवेल

लंबी और वर्ष-भर जल से भरी-भरी रहने वाली मीकांग नदी तिब्वत से निकलकर थाइलैंड और लाओस के बीच सीमा बनाती हुई बहती है । उसके किनारों पर बहुत ही घने हरे-भरे महावन हैं, जिनमें बाघ, हाथी, बनैले सुअर, गौर, हिरन आदि जानवर और साम्यवादी गुरिल्ले बेधड़क होकर विचरते हैं । जिन्हें जान जोखिम में डालने में मजा आता हो, उनके लिए मीकांग के ये तटवर्ती जंगल मानो स्वर्ग हैं ।

इन जंगलों के अंतरंग को छूने-टटोलने का मौका मुझे १९६१-६२ में मिला, जब मैं सैनिक अधिकारी की हैसियत से लगभग दो वर्ष लाओस में रहा । अपने लाओ और थाइ मित्रों के साथ मैंने इन महाकांतारों में न जाने कितने दिन और कितनी रातें गुजार दी हैं ।

यों तो कहने को हम सदा बाघ के शिकार पर निकलते थे, लेकिन दूसरे प्राणियों के शिकार से भी हमें कोई परहेज नहीं था । और बहुत बार तो हमें बंदर मारकर ही संतोष कर लेना पड़ता था । कभी-कभी बंदर भी नहीं मिलता था । तो भी मन में खीज नहीं होती थी । यहां की नैसर्गिक रमणीयता ही ऐसी है ।

इस इलाके के निवासी प्राय: दिन-छिपे शिकार के लिए निकलते हैं । उनके हाथों में चिड़िया मारने के छर्रों से भरी बंदूक रहती है और सिर से बंधा होता है बुझा-बुझा-सा हेडलैंप । ये बंदूकें खास सुरक्षा नहीं प्रदान कर सकतीं, यह उन्हें भली भांति मालूम होता है । फिर भी वे गहरे अंधकार में, जंगलों में ऐसी बेफिक्री से घूमते हैं, जैसे फुलवाड़ी की सैर कर रहे हों । बिलानागा वे नंगे पांव शिकार पर निकलते हैं । वे कहते हैं कि जूतों से आवाज होती है और वन्य पशुओं को मनुष्य की उपस्थिति का पता चल जाता है । मुझे नंगे पांव चलने में काफी कठिनाई होती थी, खासकर शुरू में ।

मजेदार बात यह है कि ये लोग रात-भर शिकार करने के बाद सुबह कई-कई कप काला कहवा गले के नीचे उतारते हैं और फिर तोते व जंगली मुर्गाब मारने के लिए ऐसे उत्साह से निकल जाते हैं, जैसे रात-भर आराम से सोकर तारो-ताजे हो गये हों । वहां की १२० अंश की भीषण गरमी में,

उन उमस-भरे [illegible] कल्पना से भी मेरा तो दिल दहल जाता था।

फिर भी मैं उनके साथ हो लिया करता था। कारण ? मेरी यह अदम्य इच्छा कि हिरनों और गांव के कुत्तों को खाकर मुटियाये हुए किसी एक-आध बाघ को तो गोली का निशाना बनाऊं। यह लालसा पूरी तो हुई, पर उस रूप में नहीं, जिस रूप में मैंने कल्पना की थी।

अपने एक साथी सैनिक अफसर और चंद स्थानीय सेवकों व शिकारियों के साथ बहुधा मैं किश्ती में बैठकर मीकांग में धारा से उलटी दिशा में चल पड़ता और वियेनशियेन से दस-पंद्रह मील दूर निकल जाता। यों इतनी दूर जाने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी। वियेनशियेन हवाई-अड्डे से दो-चार फर्लांग पर ही बड़े-से-बड़ा बाघ पाया जा सकता था। लेकिन शहर की सीमा में जानवरों को मारना तो महज पशुहत्या है। शिकार तभी शिकार है, जब जंगल में खेला जाये।

हां तो दस-पंद्रह मील दूर जाकर हम किश्ती को तट के किसी वृक्ष के तने से बांधकर जमीन पर उतर पड़ते। मीकांग के साथ-साथ समानांतर रूप से कुछ कच्ची सड़कें और पगडंडियां जंगल का हृदय चीरती हुई चली गयी हैं। हम इनमें से किसी एक पर हो लेते और तब तक चलते रहते, जब तक कि थकान और पसीने से बेहाल न हो जाते। राह में चार-छः चिड़ियां और एक-आध बंदर भी मार लेते शाम के भोजन के लिए।

[illegible] मांस कितना लजीज होता है, यह मुझे यहीं पता चला। हमारे थाई और लाओ साथी बंदर का खून और स्काच व्हिस्की समान मात्रा में मिलाकर बड़े स्वाद से पीते थे। उनका कहना था कि इससे भूख खूब बढ़ती है। लेकिन मुझे इस बात में कोई सचाई नहीं दिखाई दी, और न ही इस पेय में कोई स्वाद आया।

रास्ते-भर हमें बाघ के बड़े पंजों के निशान मिलते जाते। दिन छिपने के पहले हम किसी काले पानीवाले गढ़े के किनारे डेरा डालते, जिसमें से अमोनिया की तीव्र गंध आ रही होती। उस गंध का सेवन करते हुए और मोटे-मोटे मच्छरों का संगीत सुनते हुए हम ब्यालू करते। ब्यालू में चिड़िया और बंदर के भुने हुए मांस के अलावा, उबले हुए चावल की पीठी होती, जिसे हमारे स्थानीय साथी केले के पत्तों में लपेटकर, अंगोंछे में बांधकर लाये होते थे।

और उनके ये अंगोछे मानो सर्वार्थसाधक होते थे। ये कमरबंद का काम भी देते थे और सामान बांधने के काम भी आते थे। चाहे तो इनसे बदन पोंछ लीजिये, झाड़ने-पोंछने में इनका उपयोग कीजिये, फर्श पर दरी की तरह बिछाकर ऊपर लेट जाइये और कमर में लपेटकर नहा भी लीजिये।

एक बार ऐसे ही एक गढ़े के किनारे बैठकर हम ब्यालू कर रहे थे। हमारी बंदूकें भरी हुई थीं; लेकिन कुछ गज की दूरी पर रखी हुई थीं। सबके हाथ चावल की पीठी में सने हुए थे। तभी पास की झाड़ियों में

कुछ खड़खड़ाहट हुई और हमने सिर उठाकर देखा, तो पचास गज की दूरी पर एक भीमकाय बाघ चला आ रहा था।

बंदूकें हमारे और बाघ के बीचों-बीच पड़ती थीं। हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। भय से निष्क्रिय हो बैठे रहे। लेकिन बाघ शायद बहुत प्यासा था। हमें अनदेखा करके वह सीधे गढ़े के किनारे आकर पानी पीने लगा, प्यास बुझाकर जंगल में लौट गया। जैसे मौत हमारे गाल सहलाकर चली गयी।

दूसरी वार की बात है। एक दिन सवेरे-सवेरे हमारा एक साथी हाथ-मुंह धोने के लिए ऐसे ही एक गढ़े पर पहुंचा, तो क्या देखता है कि एक युवा चीता भी प्रातर्विधि से निवटने के लिए वहीं आया हुआ है। दोनों ने एक दूसरे को निर्विघ्न अपना-अपना काम पूरा कर लेने दिया।

लेकिन मेरे मन पर सबसे गहरी छाप छोड़ी वहां के सांपों ने। वह सारा प्रदेश मानो परमात्मा ने सांपों के लिए ही सिरजा है। वियेनशियेन में मेरे अफसर के बंगले में जितने फूल के पौधे थे, उनसे कई गुना अधिक सांप थे। एक बार रात को हम दस-बारह लोग उनकी बैठक में शराब पी रहे थे। इतने में पास रखे पिंजड़े में से तोते के चिल्लाने की आवाज आयी। देखा तो एक विशाल सांप ने उसे पकड़ लिया था।

दिन के वक्त भी सांप-देवता से छुटकारा नहीं मिलता था। एक बार एक पतला सांप मेरी पैंट के पहुंचे में घुस गया। जिस फुर्ती से मैं उछला, उसे देखकर बड़े-से-बड़े मदारी को भी आश्चर्य हुआ होता। ऐसे ही एक और मौके पर जंगल की झाड़ियों में से रेंगते हुए मेरा सिर एक आदमी की जांघों से टकराया। चौंककर मैंने देखा, तो वह सामने शान से फना फैलाकर खड़े हुए किंग कोब्रा को बंदूक का निशाना बना रहा था। मेरे देखते-देखते उसने फायर किया और सांप मरकर गिर पड़ा। सांप और शिकारी के बीच पूरे दो गज की भी दूरी नहीं थी।

हम जब जंगल की अस्पष्ट पगडंडियों पर भटकते-भटकते ऊब जाते थे, तो एक और तरीका अपनाते थे। कोई छिछला नाला खोज लेते और दिन छिपने के बाद उसमें नंगे पांव उतर पड़ते। कभी बहाव के साथ-साथ तो कभी उसके विपरीत, पानी में मीलों चला करते। इसमें कुछ कष्ट तो होता था; लेकिन पानी पीने के लिए तट पर आये हुए प्राणी आसानी से हमारी गोली के शिकार बन जाते थे।

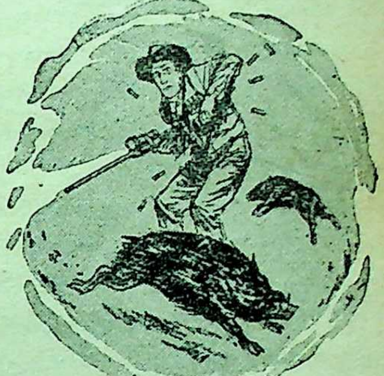

टार्च भी एक हथियार

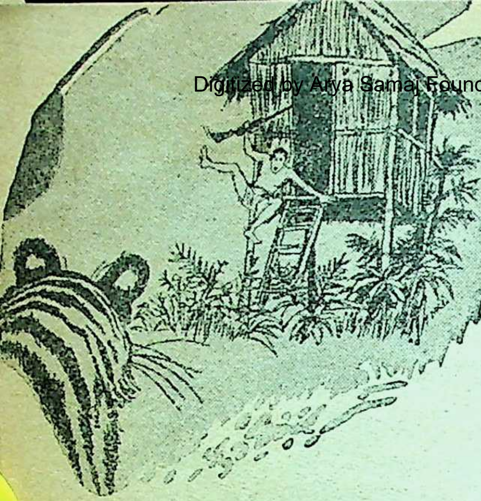

बाघ कुछ गज की दूरी पर खड़ा था

टार्च भी एक अच्छा-खासा हथियार है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे यहीं हुआ। एक भागते हुए जंगली सूअर पर मैं अपनी बंदूक खाली कर चुका था और बंदूक को फिर भरने की कोशिश कर रहा था। तभी जंगल से एक और सूअर निकल आया और वे दोनों मेरे चौगिर्द दौड़ते हुए मुझ पर आगे-पीछे से हमला करने लगे। मैं घूम-घूमकर उनकी आंखों पर टार्च की रोशनी फेंकता रहा, जिससे चौंककर वे पीछे हटते रहे। रोशनी उनके आठ-आठ इंच लंबे दांतों पर पड़ती थी और वे चमक-चमक उठते थे।

आधे घंटे तक यही सिलसिला चलता रहा। अंत में वे थककर चले गये। जरूर मेरे ग्रह अच्छे थे। नहीं तो जंगली सूअर बड़े जिद्दी होते हैं, आसानी से हार नहीं मानते।

मेरे स्थानीय शिकारी मित्रों के पास देशी बंदूकें थीं। ऐसी ही एक बंदूक मेरे एक थाइ मित्र ने मुझे दी थी। इनमें घर में बनी बारूद के साथ सीसे और लोहे के टुकड़े व छर्रे भरकर छोड़े जाते थे। चिड़िया मारने के लिए यह काफी थी। लेकिन चिड़िया से बड़े प्राणियों को इससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

और यह बात मानो जंगल के हिरन भी जानते थे। हमारे हाथ में ये बंदूकें देखकर हिरन भागना तो दूर, उलटे हमारे कुत्तों को सींग मारने की कोशिश करते थे। और जब सूअर या गौर आ निकलें, तब तो हमारे लिए सिवा इसके कोई चारा नहीं रहता था कि दौड़कर जो भी पेड़ नजदीक हो, उस पर चढ़ जायें। और तब हमें यह देखने की भी फुरसत नहीं रहती थी कि कहीं पेड़ कांटेदार तो नहीं है।

एक बार थाइ पुलिस के एक सिपाही ने सुझाया कि अगले शनिवार-रविवार के दिन शिकार में बिताये जायें। काफी समय से उसकी नजर एक बाघ पर थी, जो उसके गांव के कुत्तों को खा-खाकर काफी मोटा हो गया था।

गांव से कुछ दूर कई चट्टानें थीं। वहां हमने समतल स्थान ढूंढ़कर एक मरियल-सा कुत्ता बांध दिया और खुद अपनी देशी बंदूकें लिये चट्टानों की ओट में बैठ गये तथा लगे बाघ महाराज की प्रतीक्षा करने। यह कुत्ता पहले भी एक-दो बार हमारे साथ शिकार पर आ चुका था और उसे हमारी बंदूकों व हमारी निशानेबाजी पर कतई विश्वास नहीं रह गया था। सो वह अपनी दुम का कौपीन पहनकर हांफता-कांपता

खड़ा रहा । धीरे-धीरे दिन डूबा और रात ने आसमान पर काला चंदोवा तान दिया ।

मुझे तो किसी प्राणी के आने की आहट सुनाई नहीं दी । लेकिन थोड़ी ही देर बाद कुत्ता भयार्त और मरियल स्वर में मिमियाता हुआ, जंजीर तुड़ाकर भागने का यत्न करने लगा । मैं चौकन्ना हो गया । और तब बहुत पास ही, किसी भारी-भरकम प्राणी के सांस लेने की आवाज सुनाई देने लगी ।

साथी पुलिसमैन ने बहुत धीरे से कहा—"बाघ !" कुछ देर तक वह धौंकनी के चलने-जैसी आवाज आती रही । फिर बंद हो गयी। शायद बाघ को हमारा आयोजन पसंद नहीं आया, सो वह लौट गया । जब हमें उसके लौट जाने का पक्का निश्चय हो गया, तो हम उठे, कुत्ते को खोला और भागे गांव की ओर। अगले दिन जाकर पंजों के निशान देखे, तो पता चला कि बाघ हमारे ठीक पीछे, चट्टान के उस ओर आकर खड़ा हुआ था ।

कुछ महीने बाद फिर उस इलाके में जाने का अवसर आया, तो मैंने उन्हीं चट्टानों के पास एक घाटी में रात बिताने का निश्चय किया । पास ही एक किसान की झोंपड़ी थी—सभी थाइ झोंपड़ियों की तरह ऊंचे खंभों पर टिकी हुई । अतिथि-परायण किसान ने हमारे लिए ताजी पुआल बिछाकर आराम-देह बिस्तर बना दिया था । गरमी काफी थी । हमने सब कपड़े उतार दिये, केवल जांघिये हमारे शरीरों पर रह गये । मुलायम पुआल पर लेटते ही गाढ़ी नींद आ गयी । दो-तीन घंटे सोये होंगे कि झोंपड़ी में बैठा कुत्ता जोर से भौंकने लगा [illegible] । झोंपड़ी के सामने, सीढ़ी के एकदम पास खड़ा था एक बाघ । अंधेरे में उसकी आंखें चमक रही थीं । मैंने जल्दी-जल्दी में अपना दुनाली शाटगन भरा और दरवाजा खोलकर धड़धड़ाता हुआ सीढ़ी से नीचे उतरा ।

बाघ सीढ़ी से कोई दस-बारह गज हटकर झाड़ियों के बीच खड़ा था—मानो सोच रहा हो कि ठहरूं या चला चलूं । मैंने दोनों बैरल खाली कर दिये । फिर मैंने दोबारा बंदूक में कारतूस भरे । लेकिन बाघ अब दिखाई नहीं दे रहा था । तब तक झोंपड़ी में से दूसरे साथी भी निकल आये थे । हमने कुल्हाड़ी से आस-पास की झाड़ियों से कुछ टहनियां काटीं और आग सुलगायी ।

मैं झुककर धरती पर खून के निशान खोजने लगा । मैं जानता था कि बाघ जरूर जख्मी हुआ है । कुछ खोजने पर एक खाली कारतूस जमीन पर पड़ा मिला । मैंने उसे उठाया । मुझे हंसी आ गयी । अंधेरे में मैंने गलत कारतूस भर लिये थे—चिड़िया मारने के नंबर ७।। कारतूस ।

बाद में मुझे पता चला कि अगले दिन वहां से लगभग एक मील की दूरी पर बाघ मारा गया । जिसने उसे मारा, वह मुझसे बोला—"मेरी समझ में नहीं आया कि उस बाघ को खाल उतारनेवालों के हवाले करूं या किसी लोहार को देकर उसे पिघलवा दूं। उसका सारा पिछवाड़ा चिड़िया मारने के छर्रों से भरा पड़ा था ।" इस प्रकार मैं बाघ की खाल से वंचित ही रह गया ।

★

सिक्ख-साम्राज्य का नंबूदिरी मंत्री

इतिहास द्वारा भुला दिये गये एक स्मरणीय व्यक्ति का परिचय, 'मलबार हेराल्ड' से साभार उद्धृत।

के० एन० नायर

कभी-कभी इतिहास सचमुच अपने आपको दोहराता हुआ प्रतीत होता है। केरल में जन्मे भगवान शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत की दुंदुभि बजाकर अपने अपूर्व ज्ञानबल से सारे भारत की दिग्विजय की थी। उस घटना के दस शताब्दी पश्चात् केरल में ही जन्मे एक और नवयुवक ने अपने पांडित्य और बुद्धिबल से ठेठ उत्तर में अपूर्व यश और मान प्राप्त किया। और संयोग देखिये कि उनका नाम भी शंकर था—शंकरनाथ ज्योतिष्यार। पंजाब में, जहां कि वे महाराज रणजीत सिंह के विशेष सलाहकार और विदेश-मंत्री रहे, वे पंडित शंकरनाथ अथवा शंकरनाथ जोशी कहलाते थे।

शंकराचार्य की तरह शंकरनाथ भी नंबूदिरी ब्राह्मण थे। उनका जन्म तालिपरंबा तालुके के करिवल्लूर नामक ग्राम के एक संपन्न कुल में हुआ था। उनके पिता का नाम था अग्निशर्मा नंबूदिरी और माता का पार्वती अम्मा। १७८९ में जब टीपू सुलतान ने केरल पर आक्रमण किया, उस समय दूसरे अनेक धनी परिवारों की तरह इस दंपति ने भी आत्मरक्षा के लिए गांव से पलायन किया। लेकिन पार्वती अम्मा तब आसन्न-प्रसवा थीं, ज्यादा चल नहीं सकती थीं। अतः पति-पत्नी ने मार्ग में एक शिव-मंदिर में शरण ली। वहीं पार्वती अम्मा ने एक बालक को जन्म दिया। बच्चे का नाम रखा गया—शंकरनाथ।

शंकरनाथ बचपन से ही बड़े मेधावी थे। प्रारंभिक शिक्षा अपने विद्वान् पिता अग्निशर्मा से और गांव के दूसरे पंडितों से पायी। बहुत छोटी उम्र में ही संस्कृत साहित्य और ज्योतिष में गहरा पांडित्य प्राप्त कर वे पैत्रिक संपत्ति की देखभाल करने लगे। लेकिन उनका मन देश-परिभ्रमण तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बेचैन था। बड़ी कठिनाई से उन्होंने अपनी माता से काशी-यात्रा की अनुमति प्राप्त की और घर से प्रस्थान किया।

इस पैदल यात्रा के दौरान वे प्रसिद्ध योगी वराहाचार्य के संपर्क में आये और उनके शिष्य बन गये। योगिराज ने उन्हें धर्म-शास्त्र, मंत्रशास्त्र, ज्योतिष, वेदांत तथा

अन्य कई विद्याओं की ऊंची शिक्षा दी।

तदनंतर गुरु की अनुमति लेकर शंकरनाथ कांचीपुरम् पहुंचे। यहां के विख्यात कामाक्षी-मंदिर में उन्होंने ४२ दिन तक भजन-पूजन किया। इस समय उनके पास कानी कौड़ी भी नहीं थी; पर स्वाभिमान के कारण भिक्षाटन नहीं कर सकते थे। सो कई-कई दिन तक भूखे ही रह जाते थे। लेकिन मंदिर की एक देवदासी ने समझा कि वे कोई योगी-महात्मा हैं। वह अपने हिस्से का प्रसाद उन्हें देने लगी।

और सचमुच उन्हें देवी का प्रसाद उपलब्ध हो गया। एक दिन कावेरी में स्नान करते हुए उन्हें कामाक्षीदेवी की एक प्रतिमा प्राप्त हुई। रात को देवी ने उन्हें स्वप्न में दर्शन भी दिये। इस देवी-प्रतिमा को जीवन-भर उन्होंने अपने साथ रखा और उसकी पूजा करते रहे। बाद में एक मंदिर बनाकर मूर्ति को वहां प्रतिष्ठित कर दिया गया।

कांची से चलकर विभिन्न तीर्थों का दर्शन करते हुए अंत में शंकरनाथ काशीधाम जा पहुंचे। वर्षों वहां रहकर उन्होंने वेदों का अध्ययन और मनन किया। धीरे-धीरे उनके पांडित्य और चारित्र्य की ख्याति चारों ओर फैलने लगी। ज्योतिष में उनके तलस्पर्शी ज्ञान को देखकर लोग बड़ी तादाद में उनके पास आने लगे। वे जो भविष्य बताते थे, अक्षरशः सत्य निकलता था। बड़े-बड़े जमींदार और राजा-महाराजा पालकी या हाथी भेजकर उन्हें बुलवाते और स्वर्ण मुद्राएं, हीरे-जवाहरात एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुएं उन्हें अर्पित करते।

परंतु शंकरनाथ कुछ भी अपने पास नहीं रखते थे; सब कुछ दान-पुण्य में खर्च कर डालते थे। काशी के मणिकर्णिका घाट पर गरीबों को भोजन कराने और धर्मोपदेश के लिए उन्होंने एक धर्मार्थ संस्था स्थापित की, जो आज भी चल रही है।

हिमालय की रियासत कोट कांगड़ा के राजा शमशेरचंद १८१९ में काशी आये और शंकरनाथ की कीर्ति को सुनकर उनके दर्शन करने पधारे। वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने शंकरनाथ को अपना गुरु मान लिया और उन्हें राजज्योतिषी बनाकर आग्रहपूर्वक अपने साथ ले गये। उस समय शंकरनाथ जोशी सिर्फ सत्ताईस वर्ष के थे।

कोट कांगड़ा में रहते हुए शंकरनाथ सिक्ख-साम्राज्य के संस्थापक महाराज

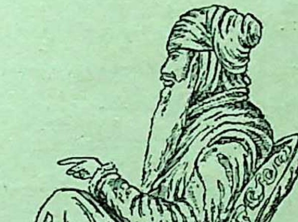

शंकरनाथ के मित्र एवं संरक्षक महाराज रणजीत सिंह

रणजीत सिंह के संपर्क में आये, जो उनसे बहुत ही प्रभावित हुए। महाराज ने इस महापंडित को लाहौर में अपना सलाहकार और विदेश-मंत्री नियुक्त किया। अब लोगों में शंकरनाथ जोशी के व्यवहार-कौशल की भी धाक जम गयी। उन्हीं की दूरदर्शिता और चतुरता से सिक्खों और अंग्रेजों के बीच संधि हुई। दोनों ही पक्ष उन्हें बहुत मानते थे और उनकी सलाह को ध्यान से सुना करते थे। लार्ड विलियम बेंटिंक तथा दूसरे ऊंचे अंग्रेज अधिकारी उनकी योग्यता के बड़े कायल थे।

महाराज रणजीत सिंह के मन में उनके लिए कितना आदर था, यह एक घटना से पता चलता है। पंजाब की सीमा पर अफगानों के आक्रमण के अवसर पर शंकरनाथ भी मोर्चे पर थे। एक मुठभेड़ में वे शत्रुओं से घिर गये और उनके प्राण संकट में पड़ गये। यह देखते ही रणजीत सिंह उनकी सहायता के लिए स्वयं लपके। एक शत्रु सैनिक के हाथ से उन्होंने तलवार छीन ली और उसी से उसका काम तमाम कर दिया। यह तलवार उन्होंने शंकरनाथ को भेंट की, जिसे उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक जीवन-पर्यंत अपने पास रखा। आज भी यह तलवार उनके कुल में सुरक्षित है। रणजीत सिंह से उन्हें दो गांव भी मिले थे।

इतना सम्मान और पद-गौरव पाने पर भी शंकरनाथ स्वजनों को नहीं भूले। अपनी माता के पास उन्होंने अपना कुशल-समाचार और बहुत-सा धन भेजा। कांचीपुरम् की [illegible] दासी भी उन्हें नहीं भूली थी, जिसने प्रसाद खिलाकर उन्हें भूखों मरने से बचाया था। उसे भी उन्होंने एक अच्छी-खासी रकम भिजवायी।

लाहौर में शंकरनाथ नौ वर्ष तक रहे। वहां उनके हजारों भक्त और शिष्य थे। दो बार उन्होंने वहां चांद्रायण व्रत किया और पचास-पचास हजार रुपये का दान दिया। अफगान-युद्ध के बाद उन्होंने लाहौर में एक भारी यज्ञ का भी अनुष्ठान किया। कुछ समय तक वे ज्वालामुखी में रहे। का के राजा ने उन्हें कई गांव भेंट में दिये। इ जायदाद उन्होंने वहीं की धर्मार्थ संस्थाओं को दान कर दी। सूर्य-ग्रहण के समय वे कुरुक्षेत्र में बहुत बड़े पैमाने पर गोदान, अन्नदान व भूदान किया करते थे।

धीरे-धीरे शंकरनाथ जोशी की कीर्ति सारे भारत में फैल गयी। ट्रावंकोर के तत्कालीन महाराज स्वाति तिरुनाल स्वयं अठारह भाषाओं तथा अनेक शास्त्रों के विद्वान और महान संगीतज्ञ थे। उन्होंने शंकरनाथ को त्रिवेंद्रम् आने का निमंत्रण दिया। रणजीत सिंह ने बड़ी अनिच्छा से उन्हें जाने की अनुमति दी और अनेक बहुमूल्य उपहार एवं अंगरक्षक उनके साथ कर दिये। अंग्रेजों ने भी उनकी यात्रा सुविधाजनक हो, इसका पूरा ध्यान रखा।

इस प्रकार १८२७ में शंकरनाथ त्रिवेंद्रम् पहुंचे। वे अपने साथ उत्तर भारत से संस्कृत के अनेक दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथ लाये थे। इनमें एक था श्रीदेवीभागवतं। उन्होंने जन

मलयालम् में इस ग्रंथ का अनुवाद भी शुरू किया । लेकिन वे इसे पूरा नहीं कर सके । बाद में यह काम उनके पुत्र ने पूरा किया । अब तक शंकरनाथ अविवाहित ही थे । अब उन्होंने त्रिवेंद्रम् के समीपवर्ती गांव अट्टुकल की लक्ष्मी अम्मा नामक युवती से विवाह किया । लक्ष्मी अम्मा से उन्हें एक पुत्र और एक पुत्री हुए ।

स्वाति तिरुनाल ने महाराज रणजीत सिंह की अनुमति लेकर शंकरनाथ को अपने यहां न्यायाधीश नियुक्त किया और फिर शीघ्र ही प्रधान न्यायाधीश बना दिया । किंतु राजदरबार के षड्यंत्री मुसाहिबों को यह बात पसंद न आयी । विरोधियों की कारस्तानियों से परेशान होकर शंकरनाथ १८३४ में त्यागपत्र देकर अपने गांव करिवल्लूर लौट गये ।

यह समाचार पाकर महाराज रणजीत सिंह ने उन्हें बुलवा भेजा और पुनः मंत्री के पद पर नियुक्त किया । रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद कुछ समय वे उनके पुत्र और पौत्र के भी मंत्री रहे । लेकिन जमाना बदल गया था और ज्योतिष द्वारा उन्हें इसका भान भी हो गया था कि शीघ्र ही सिक्ख-साम्राज्य टूट जायेगा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित होगा । सो वे केरल लौट आये ।

पंजाब से लौटने के बाद ट्रावंकोर के महाराज ने उन्हें फौजदारी सूबेदार नियुक्त किया और शंकरनाथ अपने परिवार के साथ त्रिवेंद्रम् में जाकर बस गये । वहां उन्होंने कामाक्षी-मंदिर बनवाया और पालघाट जिले के किझकंचेरी में एक धर्मार्थ संस्था की स्थापना की । शंकरनाथ के स्मारक के रूप में ये दोनों इस समय भी मौजूद हैं ।

जब तक रणजीत सिंह की धाक थी, अंग्रेज शंकरनाथ का आदर करते रहे । परंतु पंजाब पर कब्जा करने के बाद उन्होंने महाराज रणजीत सिंह के दिये हुए वे दो गांव जब्त कर लिये, जिन्हें शंकरनाथ पांच हजार रुपये सालाना लगान पर दूसरों को दे आये थे । शंकरनाथ ने अंग्रेजों के साथ इस विषय में बहुत चिट्ठी-पत्री की; परंतु कोई सुनवाई नहीं हुई । फिर उन्होंने गवर्नर जनरल, ईस्ट इंडिया कंपनी और अंत में महारानी विक्टोरिया के पास भी आवेदन-पत्र भेजे; परंतु कोई परिणाम न निकला ।

स्वाति तिरुनाल के देहावसान के बाद उनका पुत्र गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल में भी शंकरनाथ फौजदारी सूबेदार के पद पर रहे । सारे राज्य में उनका बड़ा सम्मान था और सभी उनके ज्योतिष-ज्ञान और उनकी भविष्यवाणी अमोघता की धाक स्वीकार करते थे ।

उनका अंतकाल वैसा ही था, जैसा कि किसी सात्विक, धर्मनिष्ठ ज्ञानी पुरुष का होना चाहिये ।

सन १८५८ में एक दिन वे पद्मनाभ स्वामी के मंदिर की रथ-यात्रा में जाने की तैयारी कर रहे थे कि उन्हें कुछ बेचैनी होने लगी और थोड़ी ही देर बाद बड़े ही शांतिपूर्वक उन्होंने अपनी इहलीला समाप्त की ।

★

नेतृत्व और नौकरशाही

नियम-पालन और मानवीय दृष्टि का समन्वय सुशासन का मूल है; मानवीय दृष्टि से विहीन शासन अत्याचार में परिणत हो जाता है.....देश के एक वरिष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ प्रशासक द्वारा प्रशासन की एक गुत्थी का विश्लेषण।

एच० वी० आर० अय्यंगार

सन १९३८ में एक नौजवान अंग्रेज किसी बीमा कंपनी के सहायक के रूप में भारत आया था। हम उसे यहां जोन्स के नाम से पुकारेंगे। आगे चलकर जब युद्ध छिड़ा, तो उसका सेना में जाना स्वाभाविक ही था। वह कमीशन-आफिसर बना दिया गया। अगस्त १९४२ में वह कैप्टन हो गया और पूना-स्थित सदर्न कमांड के गुप्तचर-विभाग का कार्य देखने लगा। वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति बहुत सजग था – या यों कहिये कि किसी हद तक वह जरूरत से ज्यादा सावधान था।

अगस्त १९४२ में जब कांग्रेस-नेताओं को गिरफ्तार किया गया, तब जवाहरलाल नेहरू आदि बारह प्रमुख नेताओं को अहमदनगर की किला-जेल में भेजा गया। अहमदनगर में एक पुराना किला था, जिसके बीचों-बीच एक छोटी बैरक थी। इसी बैरक को जेल में बदल दिया गया था। चूंकि यह किला सेना के अधीन था, इसलिए यदि किसी को कभी जेल देखने आना होता, तो सेना के संतरी द्वारा पूरी जांच-पड़ताल की जाती थी। जेल के द्वार पर सशस्त्र पुलिस का पहरा रहता था। अधिकारियों की आज्ञा के बिना जेल में प्रवेश पाना एक तरह से असंभव था। इसी तरह भीतर से भी कोई व्यक्ति बाहर नहीं जा सकता था, न कोई संदेश ही बाहर भिजवाया जा सकता था।

शायद दिल्ली के किसी बड़े अधिकारी ने तय किया था कि सरकार को ऐसे तमाम दुस्साहसी लोगों की निगरानी रखनी चाहिये, जो किसी भी तरह की गड़बड़ या बगावत करने की सोचते हों। और भला उन दिनों जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद, गोविंदवल्लभ पंत और जे० बी० कृपलानी जैसे बारह कैदियों से ज्यादा खतरनाक और कौन हो सकता था! अतः उन लोगों की हलचलों की निगरानी के लिए एक गुप्तचर अधिकारी रखना जरूरी था। सो कैप्टन जोन्स को इस पद पर नियुक्त किया गया।

जेल में हर नजरबंद एक-एक अलग कमरे में था। हवा और रोशनी के लिए हर कमरे में एक खिड़की थी, जो एकदम छत से मिली

हुई थी और जिनमें लोहे की छड़ें लगी थीं । कोई भी व्यक्ति बिना सीढ़ी या ऐसे अन्य किसी साधन के उस खिड़की तक नहीं पहुंच सकता था । सब कैदी बिना किसी रोक-टोक के एक-दूसरे के कमरे में आ-जा सकते थे। कैप्टन जोन्स ने मन-ही-मन सोचा, मान लो ये लोग मिलकर किसी एक को ऊपर चढ़ा दें और उसके पास ऐसा कोई औजार हो, जिससे खिड़की के सीखचे कट सकें, तब ? ......

कैप्टन के ध्यान में यह नहीं आया कि इतना कर लेने से ही उनका काम नहीं बन जायेगा । उन्हें सशस्त्र संतरी के कड़े पहरे से बचकर उस सैनिक किले का दरवाजा भी तो पार करना होगा । उसने मन-ही-मन सोच लिया कि सचमुच जेल के सुरक्षा-प्रबंध में भारी कमी है, जो तुरंत ही दूर होनी चाहिये । देर करने का मौका नहीं था । फिर युद्धकाल में तो आकस्मिक मामलों में खुद चलाकर निर्णय लेना पड़ता है; ऊपर से आदेश-निर्देश मांगने का मौका कहां होता है उस वक्त ? अत: उसने खुद ही जेल के वे सब रोशनदान बंद करवा दिये ।

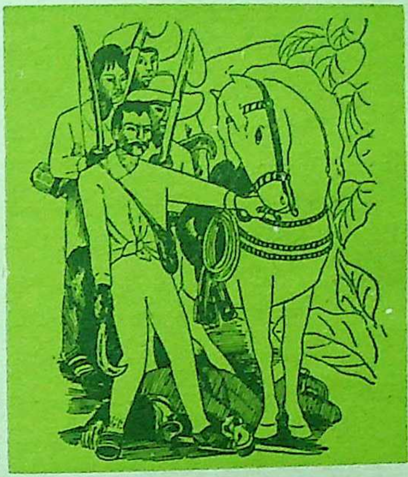

विद्रोही
ओरोज्को के एक चित्र की ओके द्वारा अनुकृति

बंबई सरकार को उपर्युक्त घटना का तब पता चला, जब जवाहरलाल नेहरू ने क्रुद्ध होकर वायसराय को एक पत्र लिखा और पूछा कि आखिर उन्हें इस अत्याचार का शिकार क्यों बनाया जा रहा है। नेहरूजी उन दिनों सारा समय पढ़ने-लिखने में लगाते थे। (और वास्तव में उन्होंने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' उसी जेल में लिखी थी।) वे बुरी तरह बिगड़ गये और यह स्वाभाविक भी था ।

मैं उन दिनों बंबई सरकार का गृह-सचिव था, सो नेहरूजी का वह पत्र मेरे पास आया । यों भी वैयक्तिक रूप से मुझे अहमदनगर जेल के उन बारहों कैदियों के पत्र-व्यवहार की जांच-पड़ताल करने का आदेश मिला हुआ था । मैं नेहरूजी का वह पत्र लेकर तत्कालीन गवर्नर सर रोजर लमली के पास पहुंचा ।

उन्होंने पत्र देखा । "कैसी नासमझी की बात है !" और मेरी तरफ मुड़कर बोले—"यह पत्र चूंकि वायसराय के नाम लिखा गया है, इसलिए उपयुक्त टिप्पणी के साथ इसे दिल्ली भिजवा दें ।" मैंने उनके आदेशा-

नुसार पत्र दिल्ली भिजवा दिया और कुछ दिन बाद रोशनदानों की ईंटें हटवा दी गयीं।

लेकिन मेरा खयाल है, इस काम के लिए किसी ने कैप्टन जोन्स की भर्त्सना नहीं की; क्योंकि वायसराय से नीचे के हर अधिकारी का रवैया लगभग वैसा ही था, जैसा उस कैप्टन ने अपनाया था।

एक बार जवाहरलाल नेहरू ने किसी को होरेबिन की 'मैथेमैटिक्स फार दि मिलियन्स' नामक पुस्तक के लिए लिखा। जब यह पुस्तक मेरे कार्यालय में आयी, तो मैंने नेहरूजी के पास भिजवा दी। कुछ दिन के बाद मेरे पास दिल्ली से केंद्रीय गृह-विभाग का पत्र आया। उसमें पूछा गया था कि क्या वह पुस्तक कैदियों को देने लायक थी और उसमें कोई विप्लवकारी या आपत्तिजनक सामग्री तो नहीं थी।

इतना ही नहीं, मुझसे ऐसी कार्रवाई करने के लिए भी कहा गया था कि जिससे कैदियों को पत्रों में अदृश्य स्याही से गुप्त लिखावट करने का मौका न मिले। गवर्नर के आदेश से मैंने इस आदेश का जो उत्तर भिजवाया, उसकी भाषा कुछ ऐसी थी कि दिल्ली के गृह-विभाग का वह अधिकारी बुरी तरह बौखला गया। लेकिन उसका अच्छा नतीजा यह हुआ कि वह पत्र-व्यवहार वहीं समाप्त हो गया।

इससे स्पष्ट है कि 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान जबकि बंबई के गवर्नर ने ईमानदारी व समझदारी का व्यवहार किया और जहां तक मेरा खयाल है, वायसराय का निजी रुख भी उन परिस्थितियों में काफी हद तक कुछ ऐसा ही था, तब दिल्ली के इन छुटभैयों का नौकरशाही रवैया एकदम दमनकारी, कल्पनाशून्य एवं क्रूरतापूर्ण था। लेकिन यह सौभाग्य की बात थी कि समझदार और दृढ़ नेतृत्व के कारण उस क्षुद्र नौकरशाही के हथकंडों को बढ़ावा नहीं मिल पाता था और वे काबू में रहते थे।

इन घटनाओं के कुछ दिन बाद, लार्ड माउंटबैटन अहमदनगर आये। वे उस समय साउथ-ईस्ट एशिया कमांड के सुप्रीम कमांडर थे और यहां सेकेंड इंडियन डिविजन का निरीक्षण करने आये थे। शाम को भोजन के समय जब माउंटबैटन से किला-जेल के इंचार्ज मेजर सेंडक का परिचय करवाया गया, तो उन्होंने नेहरूजी के स्वास्थ्य के बारे में विशेष रूप से पूछ-ताछ की।

क्या नेहरू आराम से हैं? उन्हें कागज-किताब आदि की भरपूर सुविधा है? आदि कई प्रश्नों के बाद लार्ड माउंटबैटन ने पंडित नेहरू तक उनकी शुभकामना के शब्द पहुंचाने को भी कहा था।

मेजर सेंडक बड़े जिम्मेदार अफसर थे। उन्होंने माउंटबैटन के इस वार्तालाप की रिपोर्ट पेश करके आगे के लिए आदेश मांगा। चूंकि कैदियों को कोई भी संदेश या सूचना गृह-सचिव की छान-बीन के बिना नहीं दी जा सकती थी, इसलिए मेजर सेंडक का पूछना स्वाभाविक ही था। लेकिन लार्ड माउंटबेटन की प्रतिष्ठा का खयाल करते हुए यह मामला दिल्ली भेज दिया गया; पर

संदेश पंडित नेहरू तक नहीं पहुंचाया गया ।

जब लार्ड वैवेल वायसराय बनकर यहां आये, तो उन्होंने सबसे पहला काम यह किया कि लंदन में पंडित नेहरू के एक मित्र ने उन्हें जो किताबें दी थीं, वे नेहरूजी के पास भिजवायीं । पुस्तकों के साथ लार्ड वैवेल ने अपना सौजन्य एवं मित्रतापूर्ण निजी संदेश भी भेजा ।

ये सब घटनाएं एकदम अप्रासांगिक नहीं हैं । इनके पीछे भारत के सामयिक हित का बहुत बड़ा विचार छिपा हुआ है ।

इसमें कोई शक नहीं कि छुटभैया अफसरों की नौकरशाही लगभग सभी देशों में पुराने जमाने से रही है । इसमें या तो बड़ी कर्तव्यनिष्ठा से नीतिपालन होता है, या आम तौर पर इसमें सिद्धांत व नियमों की बाल की खाल निकाली जाती है, जिससे ऐसी विचित्रताएं और बेहूदगियां पनपती हैं, जिनकी नीति-निर्धारण करनेवालों को कोई कल्पना भी नहीं होती । इन सब बातों से कितनी उलझन और निराशा पैदा होती है, यह इस पर निर्भर करती है कि बड़े अफसरों के हाथ में कितनी सत्ता रहती है, या वे नेताओं से कितनी सत्ता हथियाये हुए

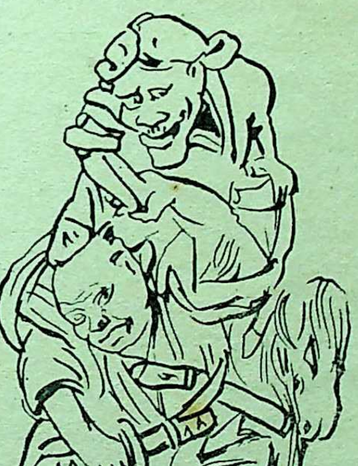

करुणाहीन शासक, साहसहीन प्रजा
[एक जापानी काष्ठशिल्प]

होते हैं ।

लार्ड वैवेल ने बड़े संकट व कठिनाइयों के वक्त में कार्य-भार संभाला था । वे चरित्र के बड़े धनी थे । किसी मामले में एक बार जो निर्णय ले लिया, उसे वे बड़ी समझदारी और ईमानदारी से निभाते थे । उनके सामने ऐसे क्षुद्र अफसरों की दाल कतई नहीं गल पाती थी, जो जान-बूझकर मामलों को उलझाकर देर लगाते थे, या दूसरे लोगों को परेशान करते थे ।

नेतृत्व का यह अद्भुत गुण सरदार पटेल में भी गजब का था । उनमें ध्येय की स्पष्टता, निर्णायिक बुद्धि और हिम्मत कूट-कूटकर भरी थी। देशी राज्यों के विलयन की समस्या को उन्होंने जिस तरह सुलझाया, उससे उनके ये गुण स्पष्ट लक्षित होते हैं । यों बेशक उनके अधीन भी छुटभैया अफसरों की कोई कमी नहीं थीं; लेकिन ऐसे लोग सरदार की नीति या कार्यक्रम में हस्तक्षेप न कर पाते थे ।

सरदार पटेल मध्य-भारत की एक रियासत का दौरा कर रहे थे । विलयन से पहले वहां के राजा ने मूर्खतापूर्वक उन राजाओं से साठ-गांठ कर ली थी, जो भारत की एकता के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे

थे । सरदार ने उनकी योजना को इतनी खूबी से विफल किया कि उसका निशान तक बाकी नहीं रहा; साथ ही उन राजाओं में से अधिकांश के साथ उनके संबंध भी मित्रतापूर्ण रहे । जब सारा मामला तय हो गया, तो किसी पर संदेह करने की गुंजाइश नहीं थी । सो उपर्युक्त मेजबान महाराजा भी भारत के प्रति पूरा वफादार था ।

किंतु सरदार के साथ इस यात्रा में भारत सरकार का एक खुफिया अधिकारी भी था । उसका रवैया और रंग-ढंग एकदम कैप्टन जोन्स जैसा था । उसके मन में शंका पैदा हुई–इस महाराजा ने तो षड्यंत्र में भाग लिया था ! संभव है, सरदार को यहां बुलाने में उसका कोई बुरा इरादा हो ।......

फिर क्या था । वह संभावित षड्यंत्रों की खोज-बीन करने लगा और इस निर्णय पर पहुंचा कि संभव है, सरदार को खाने में विष दे दिया जाये । उसने अपने कुछ सहायक भोजनालय में नियुक्त कर दिये और आदेश दिया कि जो भी खाने का सामान परोसने के लिए तैयार हो, उसे वे लोग पहले चखकर देख लें ।

यह बात महाराजा के कानों तक पहुंची, तो उससे चुप न रहा गया । आंखों में आंसू भरकर वह पटेल के पास पहुंचा और अवरुद्ध कंठ से बोला–“सरदार, मैं चाहे कितना ही मूर्ख क्यों न हूं, लेकिन मैंने यह कल्पना नहीं की थी कि मेरे बारे में यह भी सोचा जा सकता है कि मैं एक सम्मानीय अतिथि को अपने घर बुलाकर जहर भी दे सकता हूं ।”

सरदार यह सुनकर बड़े दुःखी हुए । बाद में उन्होंने इसका जिक्र मुझसे किया और पूछा–“ऐसे बेवकूफ अफसरों का क्या किया जाये ?”

खैर, सरदार ने अपना काम पूरा किया । रियासतों के एकीकरण की योजना सफल हुई । और आश्चर्य देखिये, जब सरदार का देहांत हुआ, तो उन राजा-महाराजाओं ने भी कम शोक नहीं मनाया, जिनके हाथ से सरदार ने सारी सत्ता छीन ली थी ।

आज देश के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे में परिवर्तन लाने के लिए अनेकानेक योजनाएं बन रही हैं और एक-से-एक बढ़िया कार्यक्रम तैयार हो रहे हैं । लेकिन ये महान परिवर्तन लाने के लिए सिर्फ नीति-निर्धारण और नेताओं के उपदेश ही काफी नहीं हैं; बल्कि इसके लिए शासन के विभिन्न पदाधिकारियों की हार्दिक वफादारी और सतत सहयोग भी बड़ा जरूरी है । यह सच है कि केंद्र एवं राज्यों में कुछ ऐसे सेवाभावी अधिकारी हैं, जो ऐसा सहयोग देते हैं । लेकिन उनकी संख्या अंगुलियों पर गिनने लायक है ।

यहां पर यह ज्वलंत प्रश्न उठता है कि क्या हमारा बाकी शासन-तंत्र आज इस तरह ढल चुका है कि वह इन विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने में सहयोगी सिद्ध हो सके; और कहीं वह अपनी जड़ता-अकर्मण्यता के द्वारा हमारी राष्ट्रीय आशा-आकांक्षाओं पर पानी तो नहीं फेर रहा है ? यदि ऐसा है, तो क्या हमारे राजनेता इस दिशा में सचेत हैं, जिससे उनकी नीतियों की सफलता के बारे में लोग आश्वस्त हो सकें ?

* * *

एक ईमानदार आदमी

सामाजिक शिष्टाचार के परदे में छिपे कुटिल जीवन पर तीखा कटाक्ष

हिलेर बेलौक

एक ईमानदार आदमी सुख की नींद सो रहा था कि प्रातः तीन बजे उसकी नींद खुल गयी। उसने पाया कि स्वयं शैतान उसके पांव के पास खड़ा है। शैतान ने जब देखा कि ईमानदार आदमी जाग गया है, तो अदब से झुका और बोला– "आपने मुझे पहचान ही लिया होगा। मुझ नाचीज को शैतान कहते हैं। मैं आपसे एक समझौता करने आया हूं।"

ईमानदार आदमी पहले ही झुंझला रहा था; क्योंकि उसकी नींद असमय खराब हो गयी थी और फिर शैतान के साथ समझौता! वह कांप गया। बोला–"असंभव, तुम जहां से आये हो, कृपया वहीं लौट जाओ। मेरा तुम्हारा कोई समझौता नहीं हो सकता।"

शैतान ने एक बार और प्रयत्न किया; बोला–"एक बार और सोच लो। अगर तुम मेरी बात न मानोगे, तो मैं जो थोड़ी-बहुत तुम्हारी सहायता करता हूं। वह भी आगे कभी नहीं करने का।"

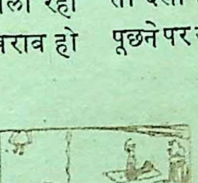

अखबार का ईमानदारी का उपयोग यह भी है

ईमानदार आदमी चारपाई पर लेट गया और करवट बदलते हुए बोला–"हां, हां, अच्छा ही होगा, जो मेरे साथ कोई वास्ता नहीं रखोगे।" और शैतान बड़बड़ाता हुआ वापस चला गया।

दूसरे दिन प्रातः ईमानदार आदमी रोज की भांति उठा। तैयार होकर उसने निजी पत्रों के उत्तर टेप-रिकार्डर पर बोल दिये।

जब शाम को ईमानदार आदमी लौटा, तो देखा कि टाइपिस्ट घबराया हुआ था। पूछने पर उसने बताया–"मैंने सारे पत्र टाइप तो कर दिये हैं, पर डाक में डालने की हिम्मत नहीं हुई; क्योंकि मुझे यह पत्र कुछ अजीब-से लगे हैं। सो, आपके लिए रुका रहा। आप पहले इन्हें खूब ध्यान से पढ़ लें, तो अच्छा हो।"

ईमानदार आदमी ने अपना चश्मा बदला और पत्र पढ़ने आरंभ किये। पत्र आधे दर्जन थे, जो अलग-अलग लोगों के नाम अलग-अलग पतों पर लिखे हुए थे। पत्र यूं थे :

पहला पत्र

मान्य महोदया,

आपके यहां पार्टी का निमंत्रण-पत्र मिला। आप तो जानती ही हैं, मेरा और आपका परिचय केवल एक दूसरे के नाम से है। पर क्योंकि इस नगर में मेरा नाम इतना हो गया है कि आप पार्टी की शोभा बढ़ाने के लिए मेरा आना आवश्यक समझती हैं, तभी आप ने मुझे बुलाया है। ऐसी पार्टियों में मेरा भी अपना कोई-न-कोई काम निकल ही आता है। क्योंकि सब अफसर आदि आते हैं, सो मैं यह निमंत्रण सहर्ष स्वीकार करता हूं। धन्यवाद सहित

भवदीय,

दूसरा पत्र

प्रिय डाक्टर,

कृपया आज या कल में आप मेरे घर पर आकर मेरे छोटे बच्चे को देख जायें। वास्तव में उसे कोई बीमारी नहीं है, यह मैं भली प्रकार जानता हूं। पर मेरी पत्नी को तो आप जानते ही हैं कि वह कैसे बच्चे की छोटी-से-छोटी तकलीफ को एक भयंकर बीमारी मान बैठती है। उसे तो तसल्ली देनी ही होगी, सो, आप अवश्य आइयेगा। आपको देना तो वही रंगीन पानी है दवा के रूप में और फीस भी आने की पूरी लेनी है; पर आप कम-से-कम समय लगायें, तो बेहतर। और मुझे विस्तार में शरीर के अंगों की क्रिया के विषय में बताना आरंभ करके मेरा समय नष्ट न कीजियेगा। आपकी पूरी फीस वैसे ही मिल जायेगी। आइयेगा तो अवश्य, वरना मेरी पत्नी मुझे चैन नहीं लेने देगी।

आपका,

तीसरा पत्र

पुजारीजी,

आपने मंदिर में एक नये भवन के लिए चंदा देने की अपील की है। सो, यह चंदा भेज रहा हूं; क्योंकि आपको उनकी सूची सबको दिखानी है, जो आपको चंदा भेजेंगे। इसी बहाने तो आप सबसे चंदा वसूल कर लेंगे। क्योंकि कोई यह नहीं चाहता कि दूसरे उनका नाम सूची में न देखें। हालांकि मन-ही-मन सब यह समझते हैं कि नये भवन की कतई आवश्यकता नहीं है, पुराना भवन काफी मजबूत है। पर आप अपने से बड़े पुजारियों को यह दिखा देना चाहते हैं कि आपकी कितनी धाक है। हां, एक बात और बता दूं, आपके भाषण अधिकांश उन दो पुस्तकों में से चुराये हुए होते हैं, जो मैंने एक दिन आपके थैले में देखी थी और जिन्हें आपने झट छिपा लिया था। उन भाषणों को आप अपने मौलिक भाषण बताते हैं, जो आपकी वर्षों की साधना के फलस्वरूप आपकी मधुर-वाणी से झरते हैं। इतना ढोंग एक पुजारी के लिए शोभा नहीं देता।

विनीत,

चौथा पत्र

महोदय,

आपने मेरा नया दफ्तर बनाने के लिए जो

ब्योरा भेजा है, उसमें मैं जानता हूं कि आपको हानि होगी । इसलिए उसे बनाने का ठेका आपको ही दे रहा हूं । आप नुक्सान उठाकर भी उसे बनाने को इसीलिए तो तैयार हो गये हैं कि मेरा जो नया कारखाना बनाना है, उसका ठेका भी आपको मिले । मैं इतना बुद्धू नहीं हूं । उस समय भी मैं ऐसे ठेकेदार को ठेका दूंगा, जो मेरे किसी अन्य काम के लालच में मेरा कारखाना नुक्सान उठाकर बना दे । मेरी तो सदा यही नीति रही है, आप लोग अभी जान नहीं पाये ।

भवदीय,

पांचवां पत्र

प्रिय बहन,

तुमने सहायता मांगी है । तुम्हें पता होना चाहिये कि मैं केवल वहीं पैसा लगाता हूं या उसी की सहायता करता हूं, जहां से बदले में मुझे लाभ होने की संभावना हो । तुम जानती हो कि ऐसी कोई संभावना मुझे तुमसे नहीं है। लेकिन तुम समझती हो कि तुम्हारा भाई अब धनवान है, इसलिए तुम भी बेखटके अपनी मांग भेज देती हो । मैं जानता हूं कि अगर मेरी ऐसी स्थिति न होती, तो तुम कुछ श्रम करके कहीं नौकरी ही ढूंढ़ लेती । क्या संसार में और विधवाएं नहीं हैं, जिनके अमीर भाई नहीं हैं । वे भी अपना गुजरकर लेती हैं ।

अगर तुम समझो कि तुम लोगों को कहती फिरोगी कि तुम्हारा इतना अमीर भाई होते हुए भी तुम्हारी यह दशा है, और इस प्रकार मेरी बदनामी होगी–तो तुम गलती पर हो । अमीर आदमियों के कई भाई-बहन बन जाते हैं । और ऐसे लोगों से दूसरे अमीर सहानुभूति ही रखते हैं । मुझे भविष्य में कभी सहायता के लिए न लिखना ।

तुम्हारा प्यारा भाई–

छठा पत्र

मंत्री महोदय,

एमरजैंसी-फंड के लिए इस पत्र के साथ बीस हजार रुपये का चैक भेज रहा हूं । यह केवल पहली किश्त है । कृपया अपने रिकार्ड में देख लें कि इस प्रकार कांग्रेस पार्टी को और सरकार को (बहरहाल दोनों एक ही तो हैं) अब तक मैं दस लाख तेरह हजार रुपया दे चुका हूं । मेरा मतलब, यह बताने

परामर्श

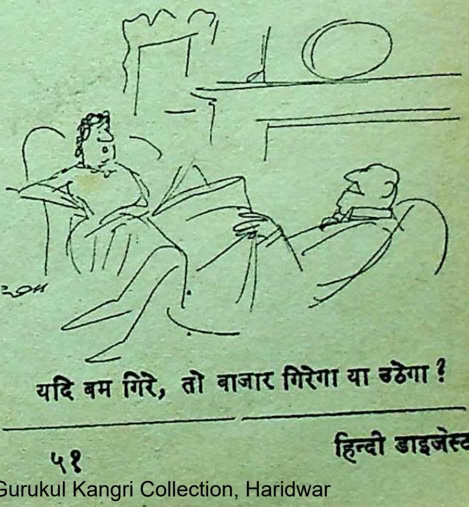

यदि बम गिरे, तो बाजार गिरेगा या उठेगा ?

का, केवल इतना है कि जब मेरा कारखाना -चप्पलों पर लगनेवाले बटनों का-बन जाये, तो इस चीज का आयात फौरन बंद करवाना आपका ही कार्य होगा। यह माना कि आपने पहले भी सहायता की है, पर मेरी आकांक्षाओं को देखते हुए वह नगण्य-सी है।

हर बार की भांति चुनाव के बाद की पार्टी का खर्च भी मेरा ही होगा, यह विश्वास रखें।

आपका ही,

जब ईमानदार आदमी ने यह पत्र पढ़ा, तो वह जान गया कि शैतान ने अपनी रात की बात रख ली है। इसीलिए तो सुबह टेप-रिकार्ड पर उसने अपने मुंह से ऐसे उत्तर लिखवाये। पर वह हार माननेवाला नहीं था। उसने अपने टाइपिस्ट को बुलाया और बोला—"यह पत्र ऐसे तो डाक में नहीं जायेंगे। अब तक तो आप जान गये हैं, मैं कैसे उत्तर भिजवाता रहा हूं। वैसे ही लिखकर आप डाल दें।"

टाइपिस्ट ने हामी भर दी। सो, अब सारे ईमानदार आदमी केवल अच्छे काम ही करते हैं। मंदिर बनवाते हैं, अस्पताल खुलवाते हैं, धर्मशालाओं एवं सरायों की नींव डलवाते हैं, और उनके टाइपिस्ट, याने अब जो मैनेजर, मैनेजिंग डाइरेक्टर बन गये हैं, उनके स्थान पर उनका कार्य करते रहते हैं।

और शैतान बेचारा छटपटाता रहता है।

◆

एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश ने संस्मरण सुनाते हुए यह घटना सुनायी—"एक दिन अपने शहर के फौजी अस्पताल जा पहुंचा। वहां देखा, एक घायल जवान को आपरेशन टेबल पर लिटाने की कोशिश की जा रही थी:—

"डाक्टर साहब, आप मेरा आपरेशन बिना क्लोरोफार्म दिये ही कर डालिये; मुझे बेहोश न कीजिये।" जवान कह रहा था।

"पास में कोई वायलिन हो, तो मुझे दे दीजिये, मैं वायलिन के स्वरों में मगन रहूंगा, आप अपना काम बेखटके करते रहिये।" जवान ने बड़े नम्र शब्दों में विनती की।

आखिर एक वायलिन मंगाया गया। उसके स्वर छेड़ते हुए जवान ने कहा—"अब आप जो मन में आये, कर लीजिये।"

आपरेशन शुरू हो गया। वायलिन के स्वरों में जवान इतना खो गया था कि ४० मिनिट की चीरफाड़ में उसने एक बार भी आह न की, और न उसके हाथ वायलिन के तारों पर कांपे या रुके।

पेरिस का संसार-प्रसिद्ध कैफे

कई संसारप्रसिद्ध लेखकों और कलाकारों को आश्रय देनेवाले कैफे की दिलचस्प कहानी।

जे० डी० रेडक्लिफ

जिस स्थान पर पेरिस की सात मुख्य सड़कें मिलती हैं, वहां संसार का सर्वप्रसिद्ध कैफे स्थित है। इसका नाम है 'कैफे द ला पे'। यद्यपि पेरिस में उससे भी कहीं शानदार और अमीरी ठाट-बाटवाले कैफे और रेस्तरां हैं, पर इस कैफे की शान अलग ही है। यह संसार-भर के लोगों का मिलन-स्थान है। हर साल दुनिया के विभिन्न देशों से लाखों लोग यहां आते हैं। यहां यूनानी यूनानी से मिलता है, ईरानी ईरानी से बातें करता है और अंग्रेज किसी ऐसे मित्र के दर्शन करता है, जिसे उसने स्कूल के दिनों के बाद कभी नहीं देखा।

इस कैफे में लोग केवल भोजन करने या कोई पेय पीने के लिए ही नहीं आते, वे एक नये प्रकार के वातावरण में बैठने के लिए भी आते हैं। यहां पृथ्वी के हर भाग के अलग-अलग चेहरे देखने को मिलते हैं। बहुत-से लोग कैफे के पते पर अपने पत्र मंगाते हैं और यहीं स्थायी रूप से टेलिफोन पर मिल सकते हैं। कैफे में तार भेजने का भी प्रबंध है। एक ऐसी एजेंसी भी है, जिससे थियेटरों के टिकट मिल सकते हैं। एक बुकस्टाल है, जहां संसार की लगभग सभी भाषाओं के समाचार-पत्र मिल सकते हैं। यद्यपि यहां हर देश के लोगों का जमघट रहता है, फिर भी यह कैफे उसी प्रकार पेरिस का प्रतीक है, जैसे ईफिल टावर।

कैफे के बाहर बैठने के लिए चार सौ पचास सीटों का प्रबंध है। अंजीर के वृक्षों से ढंके इस स्थान का अपनी एक किस्म का वातावरण है। कैफे में भोजन करने के लिए आठ सौ व्यक्तियों का प्रबंध

...जहां फल और शराब के साथ लड़की का भी मूल्य लगता है।

है—आठ डाइनिंग कमरे हैं, तीन रसोईघर हैं और एक ऐसा कमरा है, जिसमें शराब की चालीस हजार बोतलें रखी जा सकती हैं। इसमें तीन रेस्तरां हैं । तीनों अलग-अलग स्तर के ग्राहकों के लिए हैं । एक में ठाट-बाट है । दूसरे में साधारण किस्म का भोजन मिलता है । तीसरे में आम रेस्तरां का-सा वातावरण है, शोर-गुल है ।

नाचने की शिक्षा भी ऊंचे शिक्षणालयों में दी जानी चाहिये । नाचते सभी हैं—कुछ पैरों से, कुछ विचारों से, कुछ शब्दों से, कुछ वंशीस्वरों पर और कुछ हैं, जो कलम से नाचते हैं । —टेसीटस

यहां आकर एक कप काफी की कीमत में ही आदमी संसार का सबसे मनोरंजक दृश्य देख सकता है – विभिन्न प्रकार के मनुष्यों का प्रवाह । अलग-अलग शक्लें, अलग-अलग लिबास । ब्रिटिश फौज का एक अफसर यहां अपनी सालाना छुट्टी बिताने आता है । रोज सुबह वह पास के ग्रांड होटल से ठीक दस बजे इस कैफे में आता है, नाश्ता करता है, दोपहर के भोजन के लिए रुकता है और आधी रात होने पर चला जाता है । दस साल से उसका यही क्रम चला आ रहा है । एक दिन एक वेटर ने उसे तब्दीली के लिए फिल्म देखने की राय दी । वह कुछ तनकर बैठ गया और बोला—"मैं किसी किस्म की तब्दीली की जरूरत नहीं समझता । यहां मैं बड़े आनंद से अपना वक्त बिता रहा हूं ।"

एक सत्तर साल की फ्रांसीसी स्त्री रोज दस बजे इस कैफे में पहुंचती थी। एक टैक्सी आकर खड़ी होती, दो वेटर उसे बाहर निकलने में मदद देते और वह यहां के प्रबंध की नुक्ताचीनी करना शुरू कर देती। शाम के पांच बजे तक उसकी नुक्ताचीनी चलती रहती। जब वह उठती, तो वेटर को अच्छी बड़ी 'टिप' देती और यह कहती हुई चल पड़ती कि वह फिर कभी यहां नहीं आयेगी। लेकिन अगले दिन वह ठीक समय पर यहां दिखाई देती। एक दिन वह नहीं आयी, तो हैरानी हुई। आखिर समाचार-पत्रों से उसके न आने का कारण पता लगा। वह मर गयी थी।

इस कैफे के कुछ ग्राहक यहीं अपना काम करते हैं। एक पत्र के संवाददाता ने एक मेज पर अपना आफिस बना रखा है। यहीं वह लोगों से मिलता है, बातचीत करता है और अपने संवाद भेजता है। एक फ्रांसीसी लेखक ने इसी कैफे में अपनी कई पुस्तकें लिखी हैं।

कैफे के ग्राहकों में संसार के महान व्यक्ति भी शामिल हैं । मोपासां, एमिली जोला

और आस्कर वाइल्ड यहां हमेशा आया करते थे। एनरिको कारुसो नामक एक चित्रकार यहां बैठा छोटे तौलियों पर चित्र बनाया करता था, जो बाद में वेटरों की दौलत बन जाते थे। अभिनेत्री मार्लिन डीट्रिच जब भी यहां आती, सड़कें भीड़ से भर जातीं। कुछ वर्ष पहले जब अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन यूरोप की यात्रा कर रहे थे, तो वे इस कैफे में आना नहीं भूले थे। कभी अपनी जवानी के दिनों में वे यहां आया करते थे।

यह कैफे सन १८५७ में खुला था। उसने तब से इतिहास को बदलते हुए देखा है।

दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् इस कैफे ने हजारों ऐसे व्यक्तियों को सांत्वना दी है, जिन्हें कुछ पता नहीं था कि उनके दोस्त कहां चले गये हैं। एक बेघर रूमानियन यहां बैठकर इस आशा में घंटों बिताता था कि कभी-न-कभी उसका कोई परिचित व्यक्ति उसे जरूर यहां मिलेगा, उसकी मदद करेगा और उसका जीवन एक नया मोड़ लेगा।

कैफे के लगभग चालीस प्रतिशत ग्राहक फ्रांसीसी हैं, बारह प्रतिशत अंग्रेज, अठारह प्रतिशत अमरीकी। यहां हर देश और हर कौम के व्यक्तियों को खुश रखने की कोशिश की जाती है। अंग्रेजों के लिए 'मिक्स्ड ग्रिल', इतालवियों के लिए 'स्कालोपिनी' और '[illegible]', जर्मनों के लिए 'वेनर श्निट्जल' और अमरीकनों के लिए भुने हुए मुर्ग की व्यवस्था है। यहां के दो सौ वेटरों के लिए अंग्रेजी का ज्ञान जरूरी है। वैसे उन्हें अन्य भाषाएं सीखने के लिए भी प्रोत्साहन दिया जाता है।

पिछले ६३ वर्षों से कैफे का प्रबंध एक ही परिवार के हाथों में है। सन १८७० में बरगंडी से आर्थर मिलन मुख्य वेटर के तौर पर पेरिस आया। उसने अपनी कमाई में से धन बचाया और १८९७ में यह कैफे खरीद लिया। फिर इसका प्रबंध उसके बेटे आंद्रे के हाथों में आया और उसके बाद आंद्रे की बेटी डिनाइस के हाथों में। उसने पाल चापोटिन से शादी की। और अब वह अपने पति के साथ कैफे को चला रही है। उनका बड़ा लड़का बर्ट्रेंड, जो अब बाईस वर्ष का है, कैफे के प्रबंध की व्यवस्था सीख रहा है।

चापोटिन सफर करने का शौकीन है। वह दूसरे देशों नयी-नयी चीजें सीखकर आता है और उन्हें अपने कैफे में लागू करता है। इस प्रकार कैफे समय के साथ बदल रहा है, पर लाखों लोगों के दिलों में आज भी इसका वही आकर्षण है। किसी ने इसके बारे में ठीक ही कहा है—"कानूनी तौर पर यह कैफे एक परिवार का है, पर वास्तव में देखा जाये, तो यह सारे संसार का है।" ●●●

सजीव चित्र

चित्रकार की प्रशंसा करते हुए एक भावुक आलोचक ने लिखा—"चित्रकार ने मछली का ऐसा सजीव चित्र बनाया था कि चित्र पानी में गिरते ही मछली तैरने लगी।"

बच्चे कैसे देखते हैं?

केशवदेव मिश्र 'कमल'

अब तक लोगों का खयाल था कि अपने आस-पास की चीजें जैसी बड़ों को दिखाई पड़ती हैं, छोटे बच्चों को भी वैसी ही दिखाई देती होंगी। पर यह बात गलत सिद्ध हो चुकी है। जोन गेटूज नाम की एक अंग्रेज लड़की जन्मांध थी। वह अठारह वर्ष की अवस्था तक बिलकुल अंधी रही। इसके पश्चात अकस्मात उसे दिखाई पड़ने लगा और वह सब वस्तुएं स्पष्ट देखने लगी।

पर उसके नेत्रों में देखने की क्षमता आने पर उसमें विचित्र प्रतिक्रिया हुई। पहले तो उसे यही विश्वास नहीं हुआ कि उसे नेत्रों के द्वारा दिखाई पड़ता है। जब वह अंधी थी, वह थोड़ी दूर से भी नहीं बतला सकती थी कि कमरे के बीच में रखी हुई मेज दीवार से भिड़ी हुई रखी है या अलग। चंद्रमा उसे इतना निकट दिखाई पड़ता था कि वह समझती थी कि उसे हाथ बढ़ाकर पकड़ा जा सकता है। उसने जब पहले-पहल खिड़की से होकर कमरे में आती हुई सूर्य की किरणें देखीं, तो वह उन्हें तख्ता समझी। इसी प्रकार उसे पहले सारी वस्तुएं एक विचित्र आकार-प्रकार की दिखाई पड़ती थीं। मकान उसे पहाड़ से दिखाई पड़ते थे। बड़े-बड़े वृक्ष दूर से छोटे दिखाई पड़ते हैं, परंतु जोन उन्हें उतना ही बड़ा समझती थी, जितने बड़े वे उसे दिखाई पड़ते थे। अंधेरे में जब वह चलती थी, तो आंखें बंद कर लेती थी। उसका कहना था कि अंधेरे में आंख खोलकर चलने में उसे भय लगता है और कठिनाई भी होती है। आंखें बंद करके चलने में ये दोनों बातें नहीं होतीं। दो ऐसी वस्तुओं में, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था, वह कोई अंतर नहीं बता सकती थी। दोनों वस्तुएं उसे लगभग एक ही तरह की दिखाई पड़ती थीं।

कुछ हद तक पुस्तकों का ज्ञान संसारी ज्ञान के प्राप्त करने में बाधक बन जाता है। —सैंस्टोन

गोल, चौकोर, ठोस तथा पोली वस्तुओं का ज्ञान उसे केवल उस समय होता था, जब वह उन्हें हाथ से छूती थी। केवल नेत्रों से देखकर वह उनमें कोई अंतर नहीं बता सकती थी। पहले-पहल मोटर गाड़ी को देखकर वह उसे एक ऐसा संदूक समझी, जिसमें दो पहिये नीचे लगे हैं और एक पहिया (स्टीयरिंग व्हील) ऊपर लगा

है। पहले-पहल जब उसने सुअर देखा, तो उसे आदमी समझा।

उसकी यह दशा देखकर वैज्ञानिकों ने समझा कि उसके नेत्रों में कोई दोष है। अतः विशेषज्ञों द्वारा उसके नेत्रों की परीक्षा करायी गयी। उन्होंने नेत्र बिलकुल ठीक बताये।

अब क्रमशः उसे वस्तुएं ठीक रूप में दिखाई पड़ने लगी हैं, पर वैज्ञानिकों की राय है कि उसे साधारण लोगों की तरह देखने की शक्ति प्राप्त करने में कई वर्ष लगेंगे।

इस केस से वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि बच्चों को आरंभ में ऐसा ही दिखाई पड़ता है। प्रत्येक वस्तु को समुचित आकार-प्रकार में देखने के लिए बच्चों को अभ्यास करना पड़ता है। यह अभ्यास, हाथ से वस्तुएं छूकर तथा उनका वर्णन सुनकर होता है, केवल देखकर नहीं। यही कारण है कि बच्चे प्रत्येक वस्तु को हाथ में लेकर देखने की चेष्टा करते हैं, वे केवल नेत्रों से देखकर उस वस्तु का आकार-प्रकार नहीं जान पाते। ●●●

हाज़िर-जवाबी

फारस के एक सुल्तान अब्दुल मलिक मारवां के जमाने में दो प्रेमियों का नाम बड़ा मशहूर था—जमील और शब्बिया। अब्दुल मलिक को भी शब्बिया की उस खूबसूरती को देखने की तमन्ना हुई जिसने जमील को पागल बना रखा था। उसे दरबार में हाजिर किया गया। उसकी मामूली-सी सूरत देखकर बादशाह ने पूछा— "शब्बिया! तुझमें जमील ने ऐसी कौन खास बात देखी जो वह तुझ पर फिदा हो गया? तू ऐसी हसीना तो नहीं है?"

शब्बिया ने तुरंत कहा— "जहांपनाह! आपमें ऐसी कौन-सी खास बात है जो रिआया ने आपको सल्तनत का हक दे दिया है?"

सुल्तान शब्बिया की हाजिर-जवाबी से शर्मिंदा हो गया।

फैसला

एक आदमी ने पड़ोसी को अपना कुंआ बेचा। मगर, जब वह पानी खींचने लगा तो उसने कहा—"मैंने तुम्हें कुंआ दिया है, पानी नहीं। पानी का किराया अलग से देना होगा। मुकद्दमा काजी के पास गया। काजी ने बेचनेवाले आदमी को कहा:—'कुंआ बेचने के साथ यदि तुमने पानी नहीं बेचा तो कुंए में पानी रखने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। पानी का किराया तुम्हें देना होगा। और सारा पानी निकाल लेना होगा। नहीं तो तुम्हें भारी दंड देना होगा।" काजी के फैसले ने बेचनेवाले का दिमाग दुरुस्त कर दिया।

हर्ष के आंसू

डा० धीरेंद्र मेहता के इस संस्मरण से इस सत्य की पुष्टि होती है कि हृदय की आस्था न छूटे तो अतिशय संकटकाल में अकस्मात् ईश्वरीय कृपा अवश्य हो जाती है।

डा० धीरेंद्र मेहता

आस्ट्रिया की राजधानी वियेना से म्यूनिक जाने के लिए मैं रात की गाड़ी से सफर कर रहा था। करीब बारह घंटे की मुसाफिरी थी। वैसे तो मैं कई बार यह यात्रा कर चुका था, क्योंकि विद्यार्थी के तौर पर मुझे जग-विख्यात मनोवैज्ञानिक डा० फ्रायड से अपने पी० एच-डी० निबंध के मार्गदर्शन के लिए प्रायः मिलने आना पड़ता था। पर इस यात्रा में जो कड़वा अनुभव हुआ, वह मैं कभी नहीं भूल सकता।

गाड़ी चलने के करीब दो घंटे बाद टिकट-चेकर आया। उसने मुझसे टिकट मांगा। मैंने अपने कोट, पतलून और ओवरकोट की छोटी-बड़ी, अंदर और बाहर की सब जेबें टटोल डालीं, परंतु टिकट तो क्या, मेरा बटुआ भी नदारद था। मैं बेहद परेशानी में पड़ गया; परदेश में पासपोर्ट और बटुआ, ये दोनों ही चीजें बहुत संभालकर रखनी पड़ती हैं।

यदि आपका पासपोर्ट गुम जाये, तो आप अपने देश और जाति के बारे में किसी को यकीन नहीं दिला सकते। पुलिस भी आपको गिरफ्तार कर सकती है। और बटुआ गया, तो पैसे के बिना परदेश में आप एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। बटुआ मेरी गलती से कहीं गिर गया हो, यह मानने के लिए मैं तैयार नहीं था। तो क्या यूरोप में भी जेबें कट जाती हैं? यहां के लोगों के बारे में मेरे बड़े ऊंचे खयाल थे। यूरोपियन बड़े सभ्य और सच्चे होते हैं। परंतु मेरे वे खयाल खयाली पुलाव निकले। मेरा बटुआ कहीं गिरा नहीं था, उड़ा लिया गया था। कैसे और कहां? यह मैं नहीं जानता था।

टिकट-चेकर को मैं टिकट नहीं दे सका और न गाड़ी का किराया ही अब मेरे पास था। इसलिए मुझे आस्ट्रिया के एक छोटे-से स्टेशन 'आमस्टाटन' पर उतार दिया गया। रात के साढ़े बारह बजे थे। स्टेशन पर उतरकर मैंने रेलवे पुलिस में अपनी शिकायत दाखिल करवायी। लेकिन इससे क्या हो सकता था? गाड़ी तो मुझे उतारकर आगे चली गयी। पुलिस भला किसे पकड़े और मैं किस पर शक करूं। जाड़े का मौसम और आधी रात का समय। पैसे के बिना मैं किस होटल में जाकर आराम करूं? स्टेशन की बेंच पर बैठा रहूं, तो जाड़े के

मारे ठिठुर जाता हूं।

मैं म्यूनिक विश्वविद्यालय में पढ़ता था, मगर पैसे के बिना वहां कैसे पहुंचा जाये ? जेब में फूटी कौड़ी भी न थी। इस परदेश में मातृभूमि से हजारों मील दूर रात को एक बजे एक नन्हे-से स्टेशन पर भला मुझे कौन पहचानेगा ? मैं किससे बात करूं ? किससे मदद की याचना करूं ? मेरी अक्ल गुम हो गयी और मैं पागल की तरह स्टेशन पर इधर-उधर चक्कर लगाने लगा। दिन होता, तो कुछ बात भी थी। परंतु इस समय तो बस स्टेशन के तीन-चार आदमी थे। चारों ओर रात का सन्नाटा था। सारी दुनिया सुख की नींद ले रही थी। और मैं....

गनीमत थी कि मैं अपने मन की बात जर्मन भाषा में दूसरों को जता सकता था, परंतु सुननेवाला कौन था ! हंसनेवालों के साथ दुनिया हंसती है, रोनेवालों को तो अकेले ही रोना पड़ता है।

आखिर मैंने अपने आपको संभाला और कुछ उपाय सोचना शुरू किया। लंदन के बैंक में मेरा पैसा जमा था। तार करके पैसा मंगवाने का खयाल सूझा। पर तार देने के लिए भी तो पैसे चाहिये। ये पैसे कहां से आयें ? ऐसे मौकों पर अंगूठी, घड़ी, फाउंटनपेन, कैमरा वगैरह बहुत काम आते हैं। सोचा, हाथ की घड़ी किसी को धरोहर में दे दी जाये और जो भी कुछ पैसा मिले, उससे अपना काम चलाया जाये। मगर रात के वक्त घड़ी किसे दी जाये ? रेलवे रेस्तरां के वेटर की ओर मेरा खयाल गया। वह घर जाने की तैयारी कर रहा था। मैंने उससे प्रार्थना कि की मेरी घड़ी धरोहर में रख ले और मुझे कुछ पैसा दे दे। मैं कम-से-कम २५-३० शिलिंग की उम्मीद करता था। धरोहर की बात वेटर को पसंद नहीं आयी। दो सौ रुपये की घड़ी के बदले में उसने मुझे सिर्फ पांच आस्ट्रियन शिलिंग उधार दिये। मैंने रेलवे के तारघर से तार किया। बैंक से १५ पौंड टेलिग्राम द्वारा आमस्टाटन स्टेशन पोस्ट आफिस के पते पर भेजने का आदेश दिया। चार शिलिंग तो टेलिग्राम में खप गये। अब मैं एक शिलिंग लिये-लिये स्टेशन से बाहर निकला और कमरा लेने के इरादे से स्टेशन के होटल में गया।

COMPLETE
OIL CHANGE
WHILE - U - WAIT

आपूर्ण तैल-सर्विस

काउंटर पर बैठे हुए महानुभाव ने कहा कि कोई सिंगल बेड कमरा खाली नहीं है। अकेला होते हुए भी १० शिलिंग में डबल बेड कमरा किराये पर लेना पड़ा। सरदी

में ठिठुरने से तो बच गया, पर नींद नहीं आयी। तमाम रात यही चिंता लगी रही कि न जाने पैसा आयेगा या नहीं। न आया तो कल क्या होगा? होटल का किराया कैसे चुकेगा? किराया तो बाद में दिया जाता है, चाय, नाश्ता और भोजन का बिल तो फौरन चुकाना पड़ता है। सब यह कैसे होगा? इसी उधेड़बुन के कारण सुबह चाय और नाश्ता भी नहीं किया। कमरे में ही बंद पड़ा रहा।

आमस्टाटन एक छोटा-सा आस्ट्रियन शहर है। इस शहर में सिर्फ एक लंबा रास्ता है, जिसके दोनों ओर दुकानें और मकान हैं। बाजार के बीच में एक घंटाघर है। कमरे की खिड़की खोलकर घंटाघर की घड़ी देखी, दिन के बारह बजे थे। और मैंने अब तक चाय-नाश्ता भी नहीं किया था। आखिर कपड़े पहनकर कैमरा कंधे पर लटकाये होटल से बाहर निकला, बड़ी तेज भूख लग रही थी। सुबह से पानी तक नहीं पिया था। मन उदासी में डूबा हुआ था। सोचा, कैमरा बेच दूं। पर वह बहुत प्यारा था। कीमती कैमरे को कैसे बेच डालूं! अभी तो नया ही है। बेचने पर जैसे घड़ी गयी, उसी तरह यह भी कौड़ियों में जायेगा। कुछ दिन बाद फिर नया लेना पड़ेगा। लेकिन न बेचूं, तो क्या भूखा रहूं? भूख और चिंता के मारे मुझसे चला भी नहीं जाता था। पैर लड़खड़ाते थे। कभी मन कहता, कैमरा बेच दूं। कभी मन कहता, मत बेचो। कुछ भी तय नहीं कर पा रहा था। मन में घोर संघर्ष चल रहा था। यहां तक कि उसे बेच डालने के इरादे से दो-चार दुकानें भी देख डालीं। पर कोई लेने को तैयार न था। शायद लोग सोचते थे कि यह चोरी का माल होगा।

आमस्टाटन के लोगों ने शायद अब तक कोई विदेशी नहीं देखा था। छोटे शहरों में भला कोई विदेशी जायेगा भी क्यों? इसलिए लोग मुझे घूर-घूरकर देखते। कोई कहता, यह हब्शी है, तो कोई कहता इंडर (भारतीय) है। कोई मुझे दक्षिण अमरीकावासी बताता और कोई अरब-निवासी। किसी ने मुझे देखकर इटालियन कहा और किसी ने स्पेनी। सब लोग अपना-अपना अनुमान लगाते थे और मेरी हालत चिड़ियाघर के बन-मानुस की-सी हो रही थी।

दोपहर के ढाई बज गये। न पैसा आया, न कैमरा बिका। एक शिलिंग को मैं किसी और आड़े वक्त के लिए बचाये रखना चाहता था, अतः खाना भी नहीं खाया। बाजार में पागल की तरह घूमता रहा।

अब दिन ढलने लगा। बार-बार स्टेशन के डाकघर में जाकर तार के जवाब की पूछताछ कर आता। आखिर में खयाल आया कि शायद बैंकवाले मेरी मुसीबत समझ नहीं सके होंगे। अतः मैंने एक पत्र एक्सप्रेस डिलिवरी से भेजने को लिखा। अब मेरे पास आधा शिलिंग बच रहा। पत्र पोस्टमास्टर के हाथ में दिया और कैमरा बेचने के लिए फिर बाजार को रुख किया। कुछ दूर गया था कि पोस्टमास्टर ने ताली

बजाकर मुझे वापस बुलाया और पूछा—“क्यों, आपके तार का जवाब नहीं आया?” मैंने कहा—“नहीं!” उसने कहा—“आपका जवाब आ गया है। जरा, उस काउंटर पर जाइये। वहां आपको पंद्रह पौंड मिल जायेंगे।”

खुशी के मारे मेरा रोम-रोम नाच उठा। आंखों से आंसू निकल पड़े। हर्ष के आंसू पोंछते-पोंछते मैंने पंद्रह पौंड लिये। एक्सप्रेस डिलिवरी का पत्र भी वापस ले लिया। रेलवे रेस्तरां के वेटर को ढूंढ़ निकाला और पांच शिलिंग देकर घड़ी ले ली। और उसे दो शिलिंग इनाम में दिये। उसी रेस्तरां में उसी वेटर की टेबल पर तीन शिलिंग की थाली मंगवायी और खाना खाकर भूख मिटायी। होटल का हिसाब निबटा दिया और रात की गाड़ी से म्यूनिक के लिए रवाना हो गया। ●●●

फ़ारसी सुभाषित

बा अब्र मुश्किल–अस्त नज़ारा-ए आफ़ताब
“सायब” नज़ारा-ए रुखे़-इ-उ दार नक़ाब कुन —सायब

सूरज को बिना बादल के देखना मुश्किल है, इसलिए ए ‘सायब’! अपने प्रेमी को परदे की ओट से ही देख।

हर केरा बाशद ज़ सीना फतह बाब
ऊ ज़ हर ज़र्रा बिबीनद आफ़ताब —जलालुद्दीन रूमी

जिस आदमी के अंदर का दरवाजा खुल गया है, वह दुनिया के हर जर्रे में सूरज की परछाइं देखता है।

बर दोख्ता अम दीदा, चु बाज़ अज़ हम आलम
ता दीदए मन बर रुख-इ-ज़ेबा बाज़स्त —हाफिज

मैंने बाज की तरह सारे आलम की ओर से आंखें बंद कर ली हैं, क्योंकि मेरे अंदर की आंखों ने तेरी सुंदरता के दर्शन कर लिये हैं।

आसाइश-ए-दो गेती तफसीर-इ-इन दो हर्फ अस्त
बा दोस्तां तलत्तुफ, बादुश्मन मदारात —हाफिज

दो–जहां का अमन दो हर्फो की वजह से कायम है – दोस्त से तलत्तुफ; दुश्मन से अच्छा सलूक।

*

भू-गर्भ में आग की भट्टियां

भूमि के गर्भ में निहित उष्णता अब मनुष्य के लिए अक्षय शक्ति का स्रोत बन सकेगी।

जेम्स लिनर्ड

शक्ति प्राप्त करने के सारे प्राकृतिक साधन बड़ी तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। इसीलिए वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का ध्यान अब भूताप से प्राप्त होनेवाली शक्ति, अर्थात् अंतर्भौमिक ताप की ओर गया है। शीघ्र ही यह शक्ति अन्य साधनों से प्राप्त शक्तियों से अधिक सुलभ और महत्वपूर्ण बन जायेगी।

इस शक्ति का सर्वप्रथम उपयोग करनेवाला देश था न्यूजीलैंड। इस देश की गृहिणियां ज्वालामुखी-जनित भाप से निर्मित विद्युत से ही अपनी रसोई का सारा काम करती हैं।

अंतर्भौमिक तापांश काफी ऊंचे होते हैं। आधा मील नीचे पहुंचने पर ७०° फ० तापांश मिलता है, जो क्वाथनांक या बाइलिंग पाइंट है। दो मील नीचे जाने पर २१२° फ० तापांश मिलता है। और तीस मील नीचे, तापांश इतना अधिक होता है कि पिघलती हुई चट्टानों के ही दर्शन होते हैं। पृथ्वी के जिन भागों में ज्वालामुखी पाये जाते हैं, वहां ये पिघलती हुई चट्टानें पृथ्वी को चीरती-फाड़ती हुई ऊपर आती हैं। अनुमान लगाया गया है कि प्रति वर्ष पृथ्वी की सतह को चीरकर ऊपर आनेवाली यह अंतर्भौमिक शक्ति २०० खरब (ट्रिलियन) किलोवाट घंटे है, जो पृथ्वी की वर्तमान उपलब्ध शक्ति से १०० गुना अधिक है।

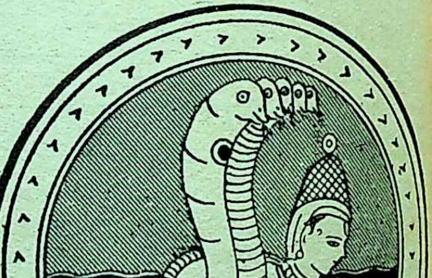

कूर्मराज की कल्पना

सौभाग्य से, ये पिघलती हुई चट्टानें पृथ्वी के गर्भ से बहुत कम बाहर निकलती हैं। वे वहां निष्क्रिय होकर पड़ी रह जाती हैं। ठंडी होने पर, भाप के रूप में उनका स्रवण आरंभ हो जाता है। पृथ्वी के निर्माण के बाद से यह कार्य निरंतर चल रहा है। यह भाप कहीं-कहीं ऊपर आकर पृथ्वी की जलधाराओं को गरम करती है। इसलिए कहीं-कहीं गरम सोते दिखाई पड़ते हैं। आरोग्यदायक गरम मिट्टी और गरम पानी के रंध्रों का निर्माण भी इसी प्रकार हुआ।

आइसलैंड की राजधानी रेय्कयाविक इस बात का एक सुंदर उदाहरण है कि अंतर्भौमिक ताप को किस प्रकार विद्युत के लिए काम में लाया जा सकता है। आइसलैंड द्वीप में पाये जानेवाले गरम सोतों के कारण ही रेय्कयाविक संसार की सबसे कम खर्चे में गरमी और विद्युत प्राप्त करनेवाली राजधानी है। यहां का जल-विभाग, दस मील परे स्थित गरम पानी के केंद्र से पाइपों द्वारा करीब-करीब खौलता हुआ जल नगर तक लाता है। सात कमरों के बड़े घर में रहनेवाला व्यक्ति कुल एक रुपया रोज खर्च करके गरम पानी की नलियों द्वारा अपने सारे घर को गरम रख सकता है। ग्रीष्म ऋतु में तो उसे रोज आठ आने से भी कम खर्च करने पड़ेंगे। इसी गरम जल से प्राप्त गरमी से इस शीत प्रधान देश में भी फल और भाजियां उगाये जाने लगे हैं।

भूताप से लाभ उठाने में इटली आजकल सब देशों से आगे है। पीसा से दक्षिण दिशा में स्थित टस्कनी में भू-रंध्रों से जो प्राकृतिक भाप निकलती रहती है, उसमें कई मूल्यवान खनिज पदार्थ रहते हैं। इन खनिज पदार्थों में सबसे अधिक कीमती है—बोरोना। इससे 'बोरिक एसिड' बनायी जाती है। कई सौ साल पहले 'बोरिक एसिड' का निर्माण इस क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय था। पिछली शताब्दी के अंत में यहां कई गहरे कुएं खोदे गये, ताकि भाप अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त हो सके। १९०५ में इन कुओं से प्राप्त भाप से एक छोटा डाइनेमो और भाप का इंजन चलाया गया।

आज इस क्षेत्र से इटली को जितनी बिजली मिलती है, उतनी अन्य किसी क्षेत्र से नहीं मिलती। यहां से १८० कुएं विभिन्न बिजलीघरों को प्रतिदिन ७,०००,००० किलोवाट घंटे बिजली प्रदान करते रहते हैं। इटली के इंजीनियर विसूवियस ज्वालामुखी की शक्ति का उपयोग करने के उद्देश्य से इश्चिया और वल्कनो द्वीपों में अधिकाधिक कुएं खोदने की योजना बना रहे हैं। भूताप से प्राप्त बिजली, अन्य साधनों से प्राप्त बिजली से एक तिहाई सस्ती है। अणुशक्ति से प्राप्त बिजली को भी इतना ज्यादा सस्ता होने में काफी समय लग जायेगा। अमरीका अपने विशाल हूवर बांध से अधिकतम विद्युत—दस लाख किलोवाट—प्राप्त करता है। इतनी विद्युत न्यूजीलैंड स्थित गरम सोतों के समूह से बड़े सस्ते में प्राप्त हो जाती है।

यही कारण है कि आज जापान, मेक्सिको,

ग्वाटेमाला तथा चिली में ऐसे सोतों की खोज हो रही है। रूस ने भी कामचटका प्रायद्वीप में ऐसे सोतों को खोदने का कार्य हाथ में ले लिया है।

अमरीका ने अलास्का की घाटी में ऐसे सोतों की खोज शुरू की है। सन १९१२ में यहां कतमह नाम का ज्वालामुखी फूट पड़ा था। इससे पास के एक द्वीप में एक फुट गहरी राख भर गयी थी और २४० मील दूर स्थित एक नगर पर तीन दिन तक अंधकार छाया रहा था। १९१६ में सरकारी निरीक्षकों ने इस घाटी में कई लाख छिद्र पाये। इन छिद्रों से निकलनेवाली भाप से असीमित मात्रा में बिजली प्राप्त होने की आशा है।

चूंकि हम पृथ्वी के गर्भ से अधिक अंतरिक्ष के विषय में जानते हैं, इसलिए अंतर्भौमिक भाप-स्रोतों के विषय में हमारी जानकारी ही बहुत सीमित है। हम सिर्फ इतना ही जानते हैं कि ज्वालामुखियों के कारण हुई दरारों की एक शृंखला प्रशांत महासागर को घेरे हुए है, और दूसरी इजरायल होती हुई, ३५०० मील तक मध्य अफ्रीका में जाती है।

जिन स्थानों पर अंतर्भौमिक भाप-क्षेत्रों का पता नहीं लग पाता, वहां अन्य तरीकों से भू ताप-शक्ति को प्राप्त करने के प्रयत्न हो रहे हैं।

पृथ्वी के अधिकांश भागों में २०,००० फुट नीचे का तापांश करीब ३००° फा० होता है। कोशिश की जा रही है कि इतनी निचाई पर पृथ्वी की सतह से पानी प्रवाहित किया जाये कि कृत्रिम पानी के सोतों का निर्माण हो सके। ज्यूरटोरिका के उत्तर की ओर १५० मील की दूरी पर, ज्वालामुखी क्षेत्र में ऐसा प्रयत्न जारी है।

पर यह प्रयत्न पृथ्वी के किसी भी भाग में किया जा सकता है। यदि आप निकट भविष्य में भारत में भी ऐसे कृत्रिम पानी के सोतों का निर्माण होते देखें, तो कोई आश्चर्य नहीं। भूताप भविष्य का आदर्श विद्युत-स्रोत सिद्ध होने जा रहा है। इससे प्राप्त बिजली धुंआ-रहित होने के अलावा प्रचुर मात्रा में, बल्कि कहिये कि असीमित मात्रा में और निरंतर प्राप्त हो सकती है।

• • •

आवाज या अक्ल

फ्रैंकलिन, मेसेच्यूसेट की नगर-समिति ने बेंजामिन फ्रैंकलिन को पत्र लिखा—"हमने अपने नगर का नाम आपके नाम पर रखा है। हम वहां के गिरजाघर में एक बड़ा घंटा लगाना चाहते हैं। उसके लिए कुछ दान आपसे मिले तो कृपा होगी।" फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया—"आपने मुझे मान दिया, कृतज्ञ हूं। दान मैं अवश्य दूंगा; किंतु आप उससे घंटा न खरीदें, पुस्तकें खरीदें और गिरजाघर में पुस्तकालय बनायें। मैं आवाज की उपेक्षा अक्ल को ज्यादा पसंद करता हूं।"

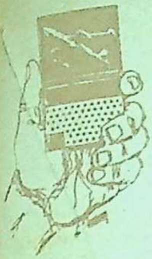

छोटे, मगर गजब के यंत्र

विद्वान् लेखक ने प्रमाणित किया है कि विशाल उपकरणों को सूक्ष्म बनाने की दिशा में विज्ञान को सफलता मिल रही है।

के० सी० शंकर

भारत में तो टेलिविजन का प्रचलन अभी नहीं के बराबर है, मगर पाश्चात्य देशों में जहां इसकी बहुतायत है, यदि कोई नागरिकों से पूछे 'क्या आप जेबी-टेलिविजन खरीदेंगे या क्या आप हाथ घड़ी के आकार का टेपरिकार्डर अथवा पुस्तकाकार गणना-यंत्र खरीदना पसंद करेंगे' तो वहां का व्यक्ति भी यही कहेगा—'आप क्या कह रहे हैं। ये चीजें इतने छोटे आकार में ? असंभव हैं! असंभव !"

लेकिन इस अंतरिक्ष युग में सब संभव है। इस युग के प्रारंभ के साथ ही हर वस्तु को छोटे-से-छोटा आकार देने की समस्या आयी। इसे हल करने में इंजीनियरों को बहुत सफलता मिली। अब वे बृहत्काय उपकरण भी, जो कभी एक साधारण कमरे के बराबर स्थान घेरते थे, इतने छोटे-रूप में आ गये हैं कि वे अब केवल एक अंगूर के बराबर स्थान घेरेंगे।

इन उपकरणों में सबसे अधिक आश्चर्यजनक है जेबी टेलिविजन। अमरीका का रेडियो कारपोरेशन इस यंत्र को ऐसा बनायेगा कि यह रेडियो और टेलिविजन दोनों का काम देगा। टेलिविजन-परदे का क्षेत्रफल ३ इंच होगा। इस पर वे सभी कार्यक्रम देखे जा सकेंगे, जो आज के किसी भी टेलिविजन सेट पर देखे जाते हैं। इंजीनियरों का कहना है कि इसे सर्वसुलभ बनाने के लिए सर्किट तैयार किया जा चुका है। अब एक नये प्रकार के लघु टेलिविजन-ट्यूब का भी निर्माण किया जा रहा है। पूरा होते ही यह जेब में रखा जा सकेगा।

जापान के एक प्रसिद्ध व्यावसायिक प्रतिष्ठान ने तो आठ पौंड का टेलिविजन सेट बेचना भी शुरू कर दिया है। इस प्रतिष्ठान का कहना है कि वह शीघ्र ही सिगरेट की डिब्बी के आकार का टेलिविजन सेट बनायेगा। अमरीका का रेडियो कारपोरेशन भी एक ऐसा टेलिविजन सेट बनायेगा, जिसे आप घड़ी की तरह अपनी कलाई पर लगा सकेंगे।

हैमिल्टन स्टैंडर्ड कंपनी लगभग एक घन-इंच आकार के रेडियो ट्रांसमिटर के इलैक्ट्रानिक सर्किट बनाती है। वेस्टिंगहाउस पहले ही अंगुस्ताने के आकार का रेडियो बना रहा है।

अमरीका का रेडियो कारपोरेशन एक ऐसा रेडियो बना रहा है, जो दो औंस वजन का होगा। इसकी लंबाई फाउंटेनपेन के बराबर होगी।

जनरल मोटर के डेल्को रेडियो विभाग ने अमरीकी सैनिकों के लिए इतना छोटा रेडियो सैट बनाया है कि इसे वे अपने लोहे के टोप में लगा सकते हैं। इसी कंपनी ने सैनिकों के लिए सिगरेट की डिब्बी के आकार का ट्रांसमिटर भी बनाया है, जिसे वे कलाई पर बांध सकते हैं।

बेल कंपनी बटन के आकार का माइक्रोफोन बनाती है, जो उनके पुराने ट्रांसमिटरों की अपेक्षा चार गुना अधिक सक्षम है! इससे भी छोटा माइक्रोफोन रेथियन प्रतिष्ठान का है, जिसका व्यास एक इंच के १६ वें भाग से भी छोटा है, फिर भी रेथियनवाले इससे संतुष्ट नहीं हैं। वे अंततः माइक्रोफोन को इतना छोटा बनायेंगे कि हम उसे अनुवीक्षण यंत्र से भी मुश्किल से देख पायेंगे।

इस प्रतिष्ठान का दावा है कि इस माइक्रोफोन की श्रवणक्षमता मनुष्यों, कुत्तों और चमगादड़ों से अच्छी है। मनुष्य की श्रवणक्षमता २०,००० सायकल प्रति सेकेंड होती है, कुत्ते की ५०,००० सायकल प्रति सेकेंड होती है और राडारों के यांत्रिक चमगादड़ में सुनने की क्षमता है ९०,००० सायकल प्रति सेकेंड तक। रेथियन का यह लघु माइक्रोफोन १,२०,००० सायकल प्रति सेकेंड तक की तरंगें ग्रहण कर सकता है। आप इसे अपने कोट पर लगा सकेंगे और यह अदृश्य श्रवणयंत्र का काम देगा।

× × ×

न्यूयार्क के दो आविष्कारक नकली दांतों के रूप में एक ऐसा उपकरण बनाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसे हम अपने दांतों के पीछे लगा सकेंगे। यह उपकरण इलेक्ट्रानिक सर्किट का संबंध हमारे नाड़ी-संस्थान से जोड़ देगा। कलाई या कोट पर लगे नन्हे माइक्रोफोन से ध्वनि ग्रहण कर यह रिसीवर का काम देगा। नाड़ी-तंतुओं से जुड़ा यह रिसीवर यंत्र - ध्वनि को नाड़ियों की सहायता से मस्तिष्क तक पहुंचा देगा। अभी यह उपकरण प्रायोगिक अवस्था में है।

टेलिविजन के चैनल ट्यूब के आविष्कारक डा० बी० डब्ल्यू० जोरिकिन ने एक ऐसा ट्रांसमिटर बनाया है, जिसे दवाई की गोली में रखकर निगला जा सकता है। यह ट्रांसमिटर जैसे-जैसे पाचन अंगों से गुजरता है, आमाशय की अवस्था की सूचना भेजता रहता है, जिसे बाहर रखा रिसीवर ग्रहण करता जाता है। इस उपकरण के बनाने का उद्देश्य यह है कि डाक्टर रोग का अचूक निदान कर सकें।

इसी उद्देश्य से एक नन्हे कैमरे का भी आविष्कार किया गया है। इसे दवा के कैपसूल में रखकर निगला जा सकता है। यह कैमरा जठर की दीवारों के रंगीन चित्र ले लेता है। न्यूयार्क के एक अस्पताल में शीघ्र ही इसे उपयोग में लाया जायेगा। चिकित्सा-अधिकारियों का विश्वास है कि

इस कैमरे के उपयोग करने के बाद रोग का निदान जानने के हेतु किये जानेवाले आपरेशन करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

× × ×

वेस्टिंग हाउस द्वारा आविष्कृत एक और छोटा-सा उपकरण न केवल हृदय रोगियों के दुर्बल हृदयों की गति ठीक रखता है, अपितु आवश्यकता पड़ने पर दो मील की परिधि में डाक्टर को भी बुला सकता है।

बेल प्रयोगशाला द्वारा आविष्कृत बेल-बाय 'काल-बाय' जैसा काम करता है। इस उपकरण को बेल्ट से कसकर जेब में रख लिया जाता है। जब भी आपके घर पर या कार्यालय में आपका फोन आयेगा, आपके जेब में रखी बेलवाय की घंटी बजने लगेगी। आप निकट के फोन-घर से या कार्यालय से संपर्क करके अपना फोन ले सकते हैं।

कुछ अन्य यंत्र भी छोटे आकार में लाये जा रहे हैं। जनरल मोटर कंपनी के इलेक्ट्रानिक विभाग ने १५ इंच लंबा गणना-यंत्र बनाया है, जिसका कुल वजन केवल ३४ पौंड है। रेडियो-कारपोरेशन ऐसे सूक्ष्मतम ट्रांसमिटर बनाने के लिए प्रयत्नशील है, जो संख्या में २०,००० होने पर भी एक डाक-टिकट के बराबर स्थान घेरेंगे। संभवतः यह ट्रांसमिटर अपने ढंग का सूक्ष्मतम यंत्र होगा। अमरीका का यही प्रतिष्ठान बड़े-बड़े गणना-यंत्रों को पुस्तकों के आकार में लाने की चेष्टा कर रहा है।

इस प्रकार बृहदाकार यंत्रों के लघु रूप में निर्माण होने के साथ मनुष्य की दृष्टि में और श्रवणशक्ति में बहुत संवृद्धि हो जायेगी।...

विजय से भी महान

फ्रेडरिक दि ग्रेट ने युद्ध में परास्त होने के बाद सीनेट को लिखा था—"हम युद्ध में हार गये—इस पराजय की जिम्मेदारी केवल मेरी है।"

बाद में गोल्डस्मिथ ने इस वाक्य पर टिप्पणी करते हुए लिखा —"अपराध-स्वीकृति का यह एक वाक्य फ्रेडरिक की उस महान विजय से भी अधिक महान है, जो उसे युद्ध में विजयी होने पर प्राप्त होती।"

वार्धक्य : वरदान

अभी हाल में ४०० सफल यशस्वी व्यक्तियों की कार्यशैली पर गहरी छान-बीन हुई थी। उससे यह साबित हुआ कि उनमें दो तिहाई ऐसे थे, जिन्हें अपने ६० वर्ष आयु के बाद के कार्यों पर यश मिला। और २३ फी सदी ऐसे थे, जिन्हें ७० वर्ष की उम्र के बाद प्रसिद्धि मिली। इस खोज से अपने बुढ़ापे को कोसनेवाले लोगों को कुछ राहत जरूर मिलेगी।

आयु भी प्रेम के समान है, जो लाख जतन करें, छिप नहीं सकती।

आयु शराब की तरह है, जो जितनी पुरानी हो, कीमती होती जाती है।

कमर-दर्द से छुटकारा पाइये

यदि आप कमर-दर्द से पीड़ित हैं, तो लेख में वर्णित उपचारों का प्रयोग अवश्य कीजिये।

डा० गिलबर्ट

अस्पतालों में प्रति वर्ष कमर दर्द की शिकायत लेकर पहुंचनेवालों का तांता लगा रहता है। मासिक धर्म से कमर-दर्द का काफी संबंध है। अतः स्त्रियां इसकी अधिक शिकार होती हैं। इस कमर-दर्द के कारण राजनीतिज्ञों, कलाकारों तथा अनेक व्यवसायियों की गतिविधियों में बहुत बाधा पहुंचती है। कई बार उन्हें विशेष प्रकार के कमरबंदों का सहारा लेकर अपना काम निकालना पड़ता है। गनीमत है कि बहुत पीड़ावाले कमर-दर्द भी प्रायः बहुत खतरनाक नहीं होते; और जो कुछ एक होते भी हैं, उनका उपचार करने के लिए अच्छी औषधों का आविष्कार हो चुका है।

बैठने-उठने के गलत तरीके से लेकर कैंसर आदि कुछ ऐसे कारण हैं, जिनसे कमर में दर्द हो सकता है। वैसे सही कारण का पता तो केवल एक चिकित्सक ही बता सकता है।

मनुष्य की पीठ एक बहुत ही पेचीदा यंत्र है। इसमें होनेवाला दर्द शायद उस मूल्य का केवल एक छोटा-सा हिस्सा है, जो हम मानव देह प्राप्त करने के दंडस्वरूप चुकाते हैं।

न्यूयार्क के डा० पीटर सायरस रिज्जो का कथन है कि यदि वास्तव में कोई कमर-दर्द के मूल कारण को जानना चाहे तो उसे प्रागैतिहासिक काल के उस समय पर गौर करना पड़ेगा, जब मनुष्य ने पहले-पहल पिछले पैरों पर खड़े होकर चलना आरंभ किया था। वस्तुतः प्रकृति ने एक चतुष्पद-प्राणी के रूप में मनुष्य देह की रचना की थी। द्विपद-प्राणी बनने के प्रयत्न में हमने बहुत-सा अतिरिक्त बोझ अपनी मांस-पेशियों व हड्डियों पर लाद दिया। पीठ के विषय में उपरोक्त बात अधिक सत्य प्रमाणित हुई—बेचारी पीठ। कहां तो वह मजे से देह पर सवारी करने के लिए बनी थी और कहां अब चलते समय उसे शरीर का अधिकांश बोझ ढोना पड़ता है।

जितने लंबे समय से मनुष्य कमर-दर्द की पीड़ा का अनुभव कर रहा है, उतने ही विभिन्न नामों से इसका उल्लेख भी किया जाता रहा है। हमारे दादा, पर दादा और पर दादाओं के लिए यह केवल 'कमर की ऐंठन' या 'पीठ का दर्द' था। तत्पश्चात चिकित्सकों ने कमर के कुछ विशिष्ट जोड़ों का पता लगाया और कमर में होनेवाले

प्रायः सभी दर्दों के लिए रीढ़ की हड्डी के निम्न भाग के ढांचे पर दोष मढ़ा जाने लगा। और अब कुछ दिनों से कमर दर्द का कारण 'डिस्क खिसक जाना' माना जाने लगा है।

यह सत्य है कि रीढ की हड्डी के वृत्तखंडों के बीच में आघात निरोधकों का कार्य करनेवाले ये तंतुमय कोमल ढांचे कभी-कभी स्थानभ्रष्ट हो जाते हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि कमर दर्द का एकमात्र कारण यही है। जब पीठ का दर्द एक या दोनों पैरों तक पहुंच जाये, केवल तभी डिस्क के खिसक जाने का संदेह किया जाना चाहिये और वैसी दशा में ही शल्य-चिकित्सा का सहारा लेने का प्रश्न उठ सकता है।

डाक्टर रिज्जो के कथनानुसार—प्रायः देखा गया है कि कमर में मामूली दर्द होते ही लोग आपरेशन की संभावना का अनुमान लगाकर चिंतित हो उठते हैं। इस भय के कारण तनाव बढ़ जाता है और हो सकता है दर्द के दूर न होने का मूल कारण यही तनाव हो, और फिर डिस्क खिसक जाने के प्रत्येक केस में आपरेशन करना अनिवार्य भी तो नहीं है। यह भी तो हो सकता कि केवल किसी मामूली चोट के कारण डिस्क का मध्य-भाग बाहरी कोशाओं में घुस गया हो और सुषुम्ना में प्रवेश करनेवाली शिराओं पर पीड़ा युक्त दबाव डालता हो।

उपरोक्त दशा में प्रायः डिस्क के पुनः पूर्वस्थिति प्राप्त कर लेने पर पीड़ा का निराकरण स्वयं हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर इंजेक्शन द्वारा पीड़ित शिरा को चेतनाशून्य करके स्थानच्युत डिस्क को शीघ्र यथास्थान पर लगने में भी सहायता पहुंचायी जा सकती है। यदि दर्द बढ़ता ही जाये और 'आपरेशन' करना परमावश्यक हो, तो प्रायः दो प्रकार से आपरेशन किया जाता है:

१–आहत 'डिस्क' को निकाल दिया जाता है, या

२–रीढ़ की स्थिरता को पुनः प्राप्त करने के लिए वृत्तखंडों के बीच में कृत्रिम अस्थिखंड जोड़ दिये जाते हैं।

कमर की पीड़ा के मूल में साधारणतया दोषयुक्त शरीर-संचालन अथवा सामान्य आघात-जैसे छोटे-मोटे कारण ही होते हैं। झुकी हुई कमर, समतल पंजा आदि शारी-

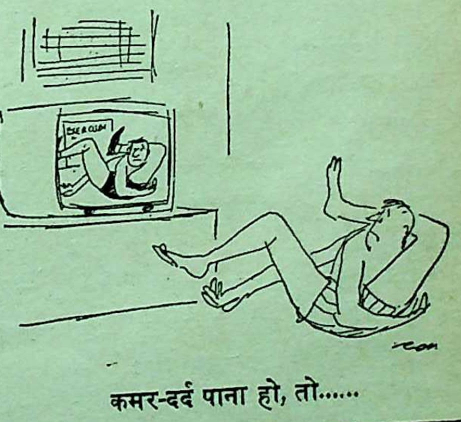

कमर-दर्द पाना हो, तो......

रिक विकारों के कारण शरीर-संचालन गलत ढंग से होता है और अक्सर इससे कमर-दर्द होने लगता है । पीड़ित व्यक्ति को ऊंची एड़ी के स्थान पर सीधे तल्ले का अथवा विशेष प्रकार से निर्मित जूता पहनाकर यह समस्या आसानी से सुलझायी जा सकती है । कमर को सीधा रखने के लिए विशेष प्रकार के पट्टे का प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध होता है ।

मांसपेशियां पृष्ठभाग को सहारा देती हैं । इन्हें मजबूत बनाने के लिए कुछ लाभकारी कसरतें यहां दी जा रही हैं :

१–पीठ के बल सीधे लेट जाइये और पैरों को सीधा रखते हुए, क्रमशः एक के बाद एक उठाकर धड़ के साथ लंब-स्थिति में लाने का प्रयत्न कीजिये । फिर एक साथ दोनों पैरों को इसी भांति कीजिये ।

२–पीठ के बल सीधे लेटकर दोनों भुजाओं को आपस में वक्षःस्थल पर बांध लीजिये । अब धीरे-धीरे बैठने का प्रयत्न कीजिये । टांगें जमीन से ज्यों-की-त्यों सटी रहने दीजिये । फिर लेट जाइये और फिर बैठिये ।

३–पेट के बल लेट जाइये । क्रमशः एक बार पैर और एक बार धड़ ऊपर की ओर उठाइये ।

४–पीठ के बल लेटकर घुटनों को वक्ष तक ले जाइये । अब अपने शरीर को क्रमशः आगे और पीछे की ओर हिलाइये ।

शुरू में एक या आधी मिनिट से अधिक समय तक ये व्यायाम नहीं किये जाने चाहिये । धीरे-धीरे आप समय बढ़ा सकते हैं । मुख्य बात यह है कि व्यायाम कष्टप्रद नहीं होना चाहिये, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि होने का भय है ।

कमर-दर्द के एक रोगी के लिए दवाई का नुस्खा लिखते हुए डाक्टर ने रोगी से कहा–"दवाई से फायदा हो, तो मुझे जरूर मिलना ।" रोगी ने मिलने का वचन देते हुए पूछा–"आप जरूर मिलने की बात क्यों कहते हैं ?"

डाक्टर ने कहा–"बात यह है कि मुझे भी पिछले १० साल से कमर-दर्द की शिकायत है । किसी भी दवा से वह दूर नहीं होती, शायद यही दवा कारगर हो जाये ।"

कभी-कभी जोड़ों की सूजन से भी कमर में दर्द हो जाता है, जो कि 'कोर्टिसोन' या अन्य किसी औषध से शीघ्र ही ठीक हो जाता है । महिलाओं के कमर-दर्द से पीड़ित होने के अधिक उदाहरण हैं । इस दर्द का उनकी जननेंद्रियों से प्रायः सीधा संबंध नहीं होता। यद्यपि ऋतुकाल में बहुत-सी महिलाओं को कमर दर्द की शिकायत होती है, किंतु जब तक यह दर्द विशेष रूप से कष्टदायक न प्रतीत हो, डाक्टर को दिखाना आवश्यक नहीं होता ।

स्त्री-रोग-विशेषज्ञ डा० आर्थर ग्रीले के अनुसार स्त्रियों के कमर-दर्द के दो प्रमुख कारण हैं :

१– गर्भाशय के भीतरी भाग में सूजन आ जाना। औषध की सहायता से इसे सहज ही ठीक किया जा सकता है।

२– गर्भ - कंदरा का स्थानभ्रष्ट होकर बहुत पीछे खिसक जाना। आपरेशन अथवा व्यायाम से इसका इलाज भी संभव है। जननेंद्रियों में हो जानेवाला कैंसर भी कमर-दर्द का कारण हो सकता है, किंतु इसकी संभावना बहुत कम रहती है। क्योंकि प्रजनन अंगों में यदि कैंसर हो, तो उसके परिणाम स्वरूप केवल कमर-दर्द से ही छुटकारा नहीं मिल जाता। उसके साथ-साथ और भी कई प्रकार के कष्टों की भीड़ लग जाती है।

नाड़ियों के तनाव के कारण भी कमर में दर्द होने लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं। मस्तिष्क की भांति ही रीढ़ की हड्डी भी शरीर के केंद्रीय नाड़ी-मंडल का एक भाग है। तनाव से जिस प्रकार मस्तिष्क के रक्त-कोषों पर प्रभाव पड़ता है, ठीक वैसे ही उसके कारण पृष्ठभाग में रक्तस्राव बढ़ सकता है। या पुट्ठों में ऐंठन हो सकती है। इन प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप सुषुम्ना से बाहर आनेवाली नाड़ियों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है और इसी दबाव को हम दर्द के रूप में अनुभव करते हैं।

मानसशास्त्रियों का अनुमान है कि सिर दर्द की तरह कमर - दर्द एक मानसिक-व्याधि भी है, किंतु रोगी प्रायः इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते। एक प्रकार से कमर का यह दर्द शुद्ध भावनात्मक प्रतिरक्षा प्रणाली है। गृहकार्य के बोझ से दबी नारी आसानी से इसका शिकार हो जाती है। एक अमरीकी विशेषज्ञ का परामर्श है कि काम करने की सभी जगहों की सतह ऊंची रखी जाये। अर्थात ऐसा प्रबंध हो कि इस्तरी करते समय, रसोई बनाते समय, अथवा बच्चों को उठाते समय नीचे की ओर बहुत झुकना न पड़े। किसी भारी वस्तु को उठाते समय भी पीठ के बल झुकना नहीं चाहिये। बल्कि उस वस्तु के निकट भूमि पर बैठकर घुटनों का सहारा लेते हुए, उसे उठाना चाहिये।

आमतौर से कमरदर्द के शिकार होनेवालों को गद्देदार पलंगों या ढीली-ढाली चारपाइयों पर नहीं सोना चाहिये। विशेषतः एक करवट होकर सोनेवालों के लिए तो तख्त या ठोस पलंग का होना परमावश्यक है। उससे पीठ को उचित आधार मिलता है। ● ● ●

आप भी अमीर बन सकते हैं

एक महत्वाकांक्षी युवक ने पिता से कहा मेरी–"बड़ी इच्छा है, मैं बड़ा निर्माता-उद्योग पति बनूं। आपकी राय में कौन-सी वस्तु का निर्माण करूं?" पिता ने कहा–"बेटा तुम केवल गुजारे लायक पैसा बनाने का उद्योग करना चाहते हो या लखपति बनने लायक? यदि कोई ऐसी चीज बनाओगे जो रोजमर्रा की जरूरत की है, तो तुम अपने गुजारे लायक बना सकोगे, मगर यदि तुम कोई गैरजरूरी चीज बनाओगे तो अमीर भी बन सकते हो।"

संसार की कृपणतम महिला

क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि एक ऐसी महिला, जिसकी आमदनी पांच डालर प्रति मिनिट या २०० डालर प्रति घंटा रही हो, संसार के कृपणतम व्यक्तियों में हो सकती है।

मनोहर प्रभाकर

हेटी ग्रीन अमरीका की एक विचित्र महिला थी । उसकी संपत्ति मृत्यु के समय लगभग १० करोड़ डालर थी, फिर भी उसने अपना सारा जीवन भिखारी से भी बदतर हालत में रहकर बिताया था । अमरीका की मामूली-से-मामूली नौकरानी भी उससे कहीं अधिक अच्छा खाती और पहनती थी ।

हेटी की कंजूसी इस सीमा तक बढ़ी-चढ़ी थी कि वह सुबह जो अखबार खरीदती थी, शाम को वापस बेच देती थी । कपड़ों के खर्च में किफायत करने के लिए वह घोर सर्दी के दिनों में भी अपने आपको पुराने अखबारों से ढंककर गरम रखने का प्रयत्न करती थी । देश के रेल यातायात में उसके अच्छे-खासे शेयर थे, फिर भी वह कभी रेलयात्रा करते समय आरामदेह दर्जे में नहीं बैठती थी ।

अपने कारोबार की देख-रेख के लिए उसे अधिकांश समय वाल स्ट्रीट में गुजारना पड़ता था । यह जगह सेहत की दृष्टि से बड़ी खतरनाक थी । फिर भी अपनी कंजूसी के कारण न्यूयार्क शहर में वह कोई ठीक-ठाक मकान लेने के पक्ष में नहीं थी। उसका खयाल था कि उसने अगर कहीं ढंग का मकान ले लिया और उसे थोड़े-बहुत फर्नीचर से सजा-संवार लिया, तो टैक्स वसूल करनेवाले उसे कच्चा चबा जायेंगे। टैक्स वसूली से बचने के लिए ही वह एक फटीचर मकान से दूसरे फटीचर मकान में रहती फिरती थी । वह अपने नाना प्रकार के कृत्रिम नाम रख लेती थी और निहायत फटेहालों में रहती थी । यहां तक कि कुछ शक्की मिजाज की मकान-मालकिनें तो उसके भिखारियों के से हाल देखकर उससे अगाऊ किराया ले लिया करती थीं।

एक बार की बात है । हेटी ने अपने कुछ दोस्तों को बोस्टन के पार्कर हाउस में डिनर पर बुलाया । मेहमान लोग बड़े सजधज कर आये । सभी को उम्मीद थी कि दावत बड़ी जोरदार होगी । किंतु ऐन वक्त पर हेटी उन सबको होटल से बाहर ले

ायी और उन्हें अच्छी-खासी [illegible] कराते हुए एक निहायत दो कौड़ी के ढाबे में ले गयी और उनकी सारी खातिर फक्त पच्चीस सेंट में कर दी । बोस्टन में वह जितने दिन रही, कभी उसने पांच सेंट से अधिक का खाना नहीं खाया । ये हालात उस समय के हैं, जब उसकी आमदनी आठ सेंट प्रति सेकेंड थी ।

जब हेटी ग्रीन की उम्र लगभग ७८ वर्ष की थी, तब एक अखबार के रिपोर्टर ने उसकी बढ़िया सेहत का राज जानना चाहा। हेटी ने बताया कि वह हर सुबह नाश्ते में एक भुने हुए मांस की बोटी, तले हुए आलू, एक प्याला चाय और थोड़ा दूध लेती है और बाकी सारे दिन पकाये हुए प्याज चबाती रहती है, जिससे भोजन में मिले हुए कीटाणुओं का नाश हो सके ।

उसकी कंजूसी के बारे में एक और दिलचस्प वाकया प्रचलित है । कहते हैं कि एक बार एक कबाड़ी फटे-पुराने चिथड़े खरीदने के लिए आया । वह सफेद चिथड़ों की कीमत रंगीन चिथड़ों से एक सेंट प्रति पौंड अधिक देता था । बस इसी लालच में हेटी अपने मकान की छत पर गरमी की चिलचिलाती हुई धूप में घंटों तक चिथड़ों के ढेर में से रंगीन और सफेद चिथड़े अलग-अलग छांटती रही ।

वह कभी भी किसी कागज पर अपने दस्तखत नहीं करती थी, क्योंकि उसे डर था कि कभी कोई चार सौ बीस आदमी उसके दस्तखतों की नकल न उतार ले और इस तरह जाली चैक बनाकर उसका रुपया बैंक से निकाल ले । उसके नाम जो डाक आती थी, उसके लिफाफों को वह सुरक्षित रख लेती थी और उन्हीं की पीठ पर अपना जवाब लिख देती थी, जिससे उसे अलग कागज पर अपने दस्तखत करने की नौबत ही न आये ।

हेटी ग्रीन ने अपने जीवन में एक ही फिजूलखर्ची की, और वह भी एक दोस्त के बहुत दबाव डालने पर । उसने एक बार अपनी उम्र कम दिखाई देने के लिए लगभग तीन सौ डालर अपने "ब्यूटी ट्रीटमेंट" पर खर्च कर डाले ।

इस मक्खीचूस बुढ़िया की मृत्यु ८१ वर्ष की अवस्था में लकवे से हुई—लेकिन मृत्यु के समय जो नर्सें उसकी सार-संभाल कर रही थीं, उन्हें मामूली नौकरानियों के वेश में रखा गया, क्योंकि अगर उसे यह पता चल जाता कि भारी खर्चे पर कुशल नर्सें उसकी सेवा-शुश्रूषा के लिए रखी गयी हैं, तो कदाचित वह शांति से न मर पाती । ● ● ●

नसीहत

हम नेक नसीहत का सबसे अच्छा उपयोग यही मानते हैं कि उसे दूसरे को दान में दे दिया जाये इससे । दोहरा लाभ होता है । भेंट करने का पुण्य भी मिल जाता है और अनावश्यक वस्तु से मुक्ति भी मिल जाती है ।

नसीहत देना खुद ही अहमकपन है और नेक नसीहत देने की मूर्खता तो बड़े-से-बड़ा अहमक भी शायद ही करे ।

*

यमन की यात्रा

अरब के सबसे सुंदर, किंतु खूनी क्रांतियों के लिए मशहूर देश की एक झलक।

जार्ज मार्टिन

रोमन लोगों ने इस प्रदेश को 'अरेबिया फेलिक्स' के नाम से पुकारा है, जिसका यात्रा-वृत्तांत की भाषा में अर्थ होगा—हंसता हुआ अरब। रेड-सी से नमी ग्रहण करके जो पश्चिमी मानसून इसकी पर्वत-मालाओं पर उठते हैं, वे इस देश के अधिकांश भाग को सुहावनी वर्षा से भिगो देते हैं। आप चाहे सऊदी अरब के रेगिस्तान से यहां पहुंचें, चाहे बेहान के बंजर इलाकों से, दक्षिणी अरब में प्रवेश करते ही आपको हरी-भरी घाटियां और उपजाऊ खेत दिखाई देने लगते हैं।

यमन में जहां पानी की सतह ऊंची नहीं है, वहां गहरे कुएं खोदकर सिंचाई की जाती है। इसके अतिरिक्त बांधों और नहरों की सुचारु व्यवस्था से भी खेतों में आवश्यकतानुसार पानी पहुंचाया जाता है। वास्तव में यमन पैदावार की दृष्टि से न केवल आत्म-निर्भर है, बल्कि अनाज का निर्यात भी करता है। यहां की बहुमूल्य पैदावार काफी है और यह आज भी मोचा बंदरगाह से जहाजों में भरकर बाहर भेजी जाती है।

यमन की पर्वत-मालाओं से यहां वर्षा तो होती ही है, इसके साथ ही ये इसकी सुरक्षा के प्राकृतिक साधन भी हैं। पिछले कई हजार वर्ष से विदेशी हमलावर इसका बाल भी बांका नहीं कर सके हैं। यही कारण है कि यमन को आज दुनिया का सबसे पुराना राज्य होने का गौरव प्राप्त है। तुर्की लोग अपनी शक्ति की चरम सीमा के वक्त में भी इसे पूर्णरूपेण परास्त करने में असमर्थ रहे थे।

यमन के साथ एक विचित्रता और है। यहां की दुर्गमता के कारण लोगों ने इसे अरब देशों में सबसे ज्यादा 'पिछड़ा हुआ' समझ रखा है। इसमें कोई शक नहीं कि अभी तक यहां पेट्रोल नहीं पाया जाता, अमरीकी कारें भी गिनी-चुनी हैं और इन्हें 'टैक्निशियन' भी आयात नहीं किये गये हैं, तब भी यहां की एक अपनी संस्कृति है। शिल्प के भी कई बेजोड़ नमूने यहां उपलब्ध हैं।

थोड़ी-बहुत शहरी जनसंख्या होते हुए भी यमन का सामाजिक ढांचा काफी हद तक आदिम जातियों से मिलता-जुलता रहा है। यहां का मुखिया इमाम कहलाता है। वह देश का धार्मिक नेता भी होता है और शासक भी। उसका उत्तराधिकारी स्वयंमेव नहीं होता। इमाम को खुद ही पैगंबर की वंश-परंपरा और व्यक्ति के शासन चला

कने के सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही उत्तराधिकारी तैयार करना पड़ता है। और फिर जहां आदिम सामंतशाही ने सारे राष्ट्रीय कारोबार को जकड़ रखा हो, वहां यह काम कोई हंसी-खेल नहीं है। इमाम अहमद ने इस जमात को काबू में रखने के लिए एक नया तरीका निकाला था। वह विभिन्न जातियों के सद्व्यवहार के आश्वासन के लिए जमानत के रूप में उस जाति के कुछ लोगों को गुलाम रखता था। अहमद के इस कदम ने उसे चारों ओर बुरी तरह बदनाम कर दिया। अंत में उसकी मृत्यु के बाद उसका बड़ा लड़का अल बदर इमाम बना। उसने अपने पिता की नीतियों का खुल्लमखुल्ला विरोध तो नहीं किया; लेकिन कई विकासशील योजनाएं चलायीं। इसके बाद वहां के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आये और आज भी आ रहे हैं।

मैं दिसंबर में यमन गया था और मेरी योजना थी कि मैं उत्तर से दक्षिण की ओर यात्रा करूं और वहां की स्थिति की जानकारी लूं। पहले-पहल इमाम से मिलना था। उसका हैडक्वार्टर उस समय सादह के पश्चिम में था, जो सऊदी अरेबियन फ्रंटियर से कोई खास दूर नहीं था। अतः वहां पहुंचने के लिए मैं सऊदी राजधानी रियाधा से जिजान के लिए उड़ा। रेड-सी पार करने के बाद हमने लैंडलोवर से यात्रा की। जैसे ही हम फ्रंटियर के निकट पहुंचे, हमें लगा कि हमारे चारों ओर पहाड़ झुके हुए हैं। इसके बाद हमारी चढ़ाई शुरू हो गयी।

हम अपनी मंजिल तक पहुंचते-पहुंचते अंधेरे ने आ घेरा। कैंप-फायर की टिमटिमाती रोशनी में कुछ सशस्त्र आदिम लोग हमारे पास आये और वे हमें अतिथि-शिविर की तरफ ले गये। वहां सब तरह का आराम था। कैंप में कारपेट व फर्नीचर आदि की पूरी व्यवस्था थी। एक नौजवान सेवक हमारी प्रतीक्षा में खड़ा था। वह पहले हमारे लिए नहाने का पानी लाया, फिर बहुत बढ़िया खाना लेकर हाजिर हुआ। खा-पीकर हम एकदम तृप्त हो गये। शिविर के पहरे के लिए वहां दो अंग-रक्षक भी थे, जिनके पास राइफलों के साथ ही, उनकी पुरानी परंपरा के तिरछे छुरे भी थे, जो उनकी पेटी में खुंसे हुए थे। रात बड़ी ठंडी थी, इसलिए मैं तीन कंबल ओढ़कर मजे से सो गया। लेकिन संतरियों की एक-एक घंटे बाद उभरनेवाली आवाज सहसा नींद उचटा देती थी।

सुबह उठकर हमने देखा कि वह शिविर घाटी के ऊपरी हिस्से पर एक शून्य स्थान पर लगा हुआ था। नीचे एक नदी बहती थी। इधर-उधर समतल टीलों पर मक्का, लूसर्न व अन्य सब्जियों की खेती थी। चारों ओर बड़ा सुहावना दृश्य था।

मेरा अनुमान है कि वहां करीब एक हजार आदिवासी होंगे, जो आसपास की छोटी-छोटी पहाड़ियों पर पत्थरों और लकड़ियों के घर बनाकर रहते थे। जब हम वहां पहुंचे, तो उनमें से सैकड़ों लोग वहां इकट्ठे थे। वे शाही फौज में भरती होने के

पहले इमाम के प्रति अपनी राज-भक्ति प्रकट करने के लिए वहां पहुंचे थे। उनके दल-के-दल युद्ध-गीत गाते हुए इमाम के टैंट की ओर मार्च कर रहे थे। जब इमाम उनकी सलामी लेने के लिए बाहर आये, तो उनके जोश व उत्साह का ठिकाना न रहा। उनका वह दिन खूब हंसी-खुशी नाच-गान और खेल-कुश्तियों में बीता।

हम लोगों को पहले एक सभा में निमंत्रित किया गया। बाद में हमने इमाम के साथ खाना खाया और उनसे कई घंटे तक इधर-उधर की चर्चा की। उनके चचेरे भाई अमीर अली हुसैन ने हमारे बीच दुभाषिये का काम किया। उसने बेरुत-विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी थी और अब जल्दी ही 'मोर्चे' पर जानेवाला था। शाही-परिवार में इमाम के साथ ही उनके चाचा प्रिंस हसन से भी मुलाकात हुई। संकट के समय में वहां के आदिवासियों ने इन्हें सहज भाव से अपना नेता स्वीकार किया था। मुझे भी इन लोगों की परिपक्वता और नेतृत्व की खूबियों ने काफी प्रभावित किया।

इमाम खुद बड़े शक्तिशाली और सुदृढ़ व्यक्ति हैं। उनकी उम्र करीब ३०-३५ वर्ष की होगी। उनके व्यक्तित्व में गजब का आकर्षण और मिठास है। जब मैंने पूछा कि लंदन की किस बात ने उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित किया, तो वे निःसंकोच भाव से बोले — "वहां के कोहरे ने।" बाद में उन्होंने मेरी प्रार्थना पर अपनी साना से निकल भागने की कहानी भी सुनायी। सच-मुच वह किसी साहस-कथा से कम रोचक नहीं थी।

MECCA
MOTEL

इस तरह इमाम से विदा लेकर मैं वापस रियाधा आ गया। वहां से फिर मैं हवाई जहाज से सऊदी अरब के एकदम दक्षिण में नाजरान की तरफ रवाना हुआ। वहां एक फोर्ड ट्रक हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। रेगिस्तान के लिए सचमुच यह गाड़ी बड़े काम की है। हमने गाड़ी में पानी, राशन और पेट्रोल के कई डिब्बे भर कर यमन के लिए कूच कर दिया। हम लोग जैसे ही हरी-भरी धरती से कुछ आगे निकले कि सड़क रेत के टीलों में खो गयी और अब हमारे लिए कार की लीकें ही सड़क रह गयीं। रास्ते के दोनों ओर कंटीले पेड़ और घास-फूस थी। जहां-तहां कुछ बकरों के झुंड भी चर रहे थे। जब हम एक कुएं तक पहुंचे, तब तक सूरज डूब चुका था। यों ही यह जगह इस यात्रा में एक पड़ाव मानी जाती है। इसलिए हम अन्य यात्रियों के साथ वहीं रात बिताने को रुक गये। रात को आग के सामने खूब गप-शप हुईं। चाय और काफी के दौर चले। साथ ही बी० बी० सी० ओवरसीज न्यूज सर्विस द्वारा प्रसारित अरब संगीत का कार्यक्रम भी सुना। इन सबसे हमारी रात बड़े मजे में कट गयी।

अगले दिन हमें एम्पटी-क्वार्टर के तट से पार जाना था—यह पृथ्वी की सतह पर सबसे ज्यादा सुनसान एकांत प्रदेश है। इसके बाद हमें उन पर्वतमालाओं की दूरी तय करनी थी, जो यमन के मार्ग में बिछी हुई थीं। वास्तव में यह हमारे ड्राइवर की होशियारी व सूझबूझ ही थी कि हम वहां तक सकुशल पहुंच गये। धीरे-धीरे इधर-उधर कुछ खेत नजर आने लगे और हम एक गांव में आ गये। यमन में जगह-जगह बड़े ऊटपटांग और बेढंगे आकारों के घर दीख पड़ते हैं, ये घर सुरक्षा की दृष्टि से बनाये गये होंगे।

दोपहर होते-होते हम आस्वाह पहुंच गये। यहां हमने गाड़ी तो एक तरफ खड़ी कर दी और ऊंटों व गदहों पर चढ़कर प्रिंस हसन के ठिकाने की ओर रवाना हुए। यह करीब चार घंटे का सफर था। पहाड़ों की चढ़ाई के बाद हम एक घाटी में उतरे और एक खुशहाल गांव में जा पहुंचे। वहां एक गुफा थी, जिसमें इमाम-सेनाओं का प्रधान सेनापति और प्रधान मंत्री प्रिंस हसन रहता था। वह वहीं खाता-पीता व सोता था और मेहमानों से मिलता था। इस तरह उसका सारा राज-काज वहीं से चलता था।

ईजिप्ट की बमबारी में यहां के करीब ५०-६० गांव धूल-धूसरित हो गये थे और सैकड़ों परिवार बेघरबार थे। मरीब-क्षेत्र में मैंने खुद देखा कि सारे जिले एकदम वीरान हो चुके थे। यह करुण दृश्य देखकर मुझे मुसोलिनी के अबेसीनिया-युद्ध की याद आ गयी।

आस्वाह से हम फिर सऊदी अरब लौट आये। फिर एक-दूसरे रास्ते से यमन की ओर बढ़े और सिनवान शहर पहुंचे। जिस क्षेत्र को बमबारी का शिकार नहीं होना पड़ा था, उसमें यही शहर ठीक आकार-प्रकार का था। इस तरह अपनी दस दिन की यात्रा में मैं यमन की एक हल्की-सी झांकी देखकर लौट आया।●●●

अभ्यास

यूनान का एक प्रसिद्ध तत्ववेत्ता डायोजिनीज, जो कि सुकरात का चेला था, अपना जीवन एक मांद में ही बिता लेता था। वह अपने रहने के लिए घर बनाना आवश्यक नहीं समझता था।

एक बार किसी युवक ने उसे देर तक एक पत्थर की मूर्ति से भीख मांगते देखा। उस युवक ने पूछा—"डायोजिनीज! भला, पत्थर की मूर्ति से तुम क्यों भीख मांगते हो? क्या वह तुमको भीख दे देगी?" डायोजिनीज ने उत्तर दिया—"मैं इस मूर्ति से भीख मांगकर किसी पुरुष के भीख न देने पर शांतचित्त रहने का अभ्यास कर रहा हूं।"

मार्ग-दर्शन

डा० प्रबोध

मानसरोग विशेषज्ञ द्वारा युवकों की मानसिक कठिनाइयों का क्रियात्मक समाधान।

प्रश्न —इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण मुझको अब ऐसा लगने लगा है कि मैं अपने जीवन में कुछ कर ही नहीं सकता। मेरा मन अस्थिर रहता है और छोटी-छोटी घटनाओं पर संदेह करने लगता है। जी तो चाहता है कि मैं श्रम करके परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करूं, पर परिश्रम करने में मैं अपने को सर्वथा असमर्थ पाता हूं। ऐसी स्थिति में मुझ को क्या करना चाहिऐ ?

उत्तर—मुझे आपकी असफलता पर बड़ा खेद है। पर जीवन में आगे चलकर आपको जिन असफलताओं का सामना करना पड़ेगा, उनकी तुलना में आपकी यह असफलता बहुत छोटी है। यदि आप इसी असफलता से इतने निराश हो गये हैं, तो बड़ी असफलताओं के सामने आप क्या करेंगे ?

माता-पिता को अपने बच्चे का संरक्षण आवश्यकता से अधिक नहीं करना चाहिये। और इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जब बाल्यावस्था में बच्चों को किसी खास सीट के न मिलने या अन्य कोई इच्छा पूरी न होने की निराशा हो, तो वे उसी में न डूब जायें। इस प्रकार उन्हें जीवन की छोटी-छोटी निराशाओं का सामना करने की शिक्षा मिलती है, तथा वे जीवन की बड़ी समस्याओं को हल करने योग्य बनते हैं।

• • • •

माता-पिता को याद रखना चाहिये कि वह सदा अपने बच्चों की देखभाल नहीं कर पायेंगे। इसलिए उन्हें बच्चों को ऐसे अवसर देने चाहिये कि वह अपनी निराशाओं से स्वयं निबटना सीख जायें।

यह बात अच्छी है कि आपने कठिन श्रम करके परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने का निश्चय किया है। आपको अपनी आशा व परीक्षा में बैठने के विचार को नहीं त्यागना चाहिये।

×

प्रश्न—मेरा एक छोटा भाई है, जिसकी आयु सात वर्ष की है। वह मीठी वस्तुएं बिलकुल पसंद नहीं करता, यहां तक कि वह दूध भी फीका ही पसंद करता है। हमने जितनी बार उसे मीठी वस्तुएं खिलाने का प्रयत्न किया है, उतनी बार मीठा मुख में पहुंचते ही वह तत्काल उलटी कर देता है। क्या कोई ऐसा उपाय है कि वह मीठा खाने लगे ?

उत्तर—यदि उसकी मीठी वस्तु खाने की इच्छा नहीं होती, तो आप इसके लिए जबर्दस्ती न करें। साथ ही यह भी जानने का प्रयत्न करें कि उसकी अरुचि का कारण

क्या है ? हो सकता है कि पहले उसने आवश्यकता से अधिक मीठा लिया हो, और इस कटु अनुभव के फलस्वरूप उसे अरुचि हो गयी हो। उदाहरणार्थ, यदि कभी किसी को बहुत अधिक मीठी वस्तु खाने के तुरंत बाद उल्टी हो जाये, तो उसके मन में यह बात घर कर जायेगी कि मीठी वस्तुओं का उल्टी होने से अवश्य कोई संबंध है। दूसरे शब्दों में, यह 'शर्तों पर आश्रित होने की घटना' हो जाती है। इसे दूर करने के लिए इन शर्तों पर आश्रित रहने की आदत छुड़वाना चाहिये। आप अपने छोटे भाई को दिखाइये कि दूसरों को मीठी वस्तु खाने के बाद उल्टी नहीं होती। या, उसे अल्प मात्रा में मीठी वस्तु दीजिये, पर जबरन नहीं। तब उसे लगेगा कि मीठी वस्तुएं हानिकारक नहीं होती, और वह धीरे-धीरे उन्हें लेना आरंभ कर देगा।

×

प्रश्न– मुझे बंद स्थानों से बड़ा ही डर लगता है। सिनेमा में मैं हमेशा आखिरी सीट पर ही बैठता हूं। भीड़ में मुझे डर लगता है कि कोई मुझे छल से पकड़नेवाला है। जब मैं और लोगों के साथ गाड़ी में बैठता हूं, तो मेरे अंदर से कोई चीखता रहता है–"यहां से निकल भागो।" इस भय से मैं किस प्रकार छुटकारा पा सकता हूं ?

उत्तर–प्राय: उपदेश दिया जाता है कि जीवन में संतुष्ट रहना सीखो, पर यदि कोई सब बातों से संतुष्ट हो जाये, तो जीवन में प्रगति कैसे होगी ? प्रगति सदा असंतुष्ट रहने से ही होती है। स्पष्ट है कि आप असंतुष्ट हैं, और यह एक शुभ चिह्न है कि आप इसका हल ढूंढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। बिना कारण के कुछ नहीं होता, और आपकी वर्तमान अवस्था का भी कोई-न-कोई कारण अवश्य होगा। उस कारण का पता, बिना आपकी सहायता के लगना संभव नहीं है, पर चूंकि आप जीवन में अपनी कमजोरियों के प्रति इतने संवेदनशील हैं, इसलिए यह इस बात का द्योतक है कि आप प्रगति करेंगे। यह ठीक नहीं है कि आप सुख पाने के लिए दुनिया से भागने का प्रयत्न करें। सुख तो यहीं है। बस आपको यह जानना चाहिये कि उसको पाने के उपाय क्या हैं ?

यदि आप इस दुनिया या उसकी बातों से भागकर अपना स्थान छोड़ कहीं और चले गये, तो आपको एक वातावरण की कठिनाइयों से तो अवश्य मुक्ति मिल जायेगी, पर दूसरे वातावरण की कठिनाइयों के विषय में आप क्या करेंगे ? सच तो यह है कि आप को कठिनाइयों का सामना करना सीखना चाहिये और उनसे भागने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। यदि आप उनका अकेले सामना नहीं कर सकते, तो किसी मित्र की सहायता ले सकते हैं, जो आपको आपकी कठिनाइयों को हल करने में सहायक हो सकता हो।

×

प्रश्न–मैंने अभी एफ० ए० की परीक्षा दी है और मेरी आयु लगभग १७ वर्ष की है। मुझे हर समय गुस्सा चढ़ा रहता है। इसी कारण

मेरी यह इच्छा होती है कि न मैं किसी से बात करूं और न हंसूं । हंसी-मजाक में कही गयी बात भी मुझे बुरी लगती है। आजकल मैं कुछ सूनापन महसूस करती हूं । और, मन यही चाहता है कि मैं रोती रहूं । मेरे पास 'कंपनी' भी अच्छी नहीं; और इन छुट्टियों के दिनों में भी मुझे दूसरे शहरों में घूमने के लिए नहीं भेजा जाता है । मेरी हर बात को हंसी में उड़ा दिया जाता है । यही कारण है कि मेरे अंदर हीन-भावनाओं ने घर कर लिया है । मेरा कोई भी काम करने का जी नहीं चाहता । काम न करने पर झिड़कियां मिलती हैं, तो मुझे जिद्द-सी चढ़ जाती है । कृपया मुझे उचित सलाह दीजिये, ताकि मैं खुद भी खुश रह सकूं ; और दूसरों को भी खुश रख सकूं ।

उत्तर—इस पत्र से, माता-पिता की आंखें खुल जानी चाहिये, कि बच्चों पर थोड़ी-सी भी उपेक्षा का, या छोटी-छोटी बातों का कैसा प्रभाव पड़ सकता है । मांबाप बच्चों के जीवन को अपनी पसंदगी और नापसंदगी के अनुसार ढालना चाहते हैं । जिन मामलों का बच्चों के जीवन से प्रत्यक्ष संबंध है, उन मामलों में भी वे बच्चों के साथ सलाह-मशविरा नहीं करते । इसी प्रकार वे अपने बच्चों के लिए, जो कुछ करने जा रहे होते हैं, अपने उन इरादों के बारें में भी बच्चों की राय नहीं लेना चाहते । माता-पिता को चाहिये कि वे अपने इरादों के बारे में बच्चों से अवश्य इस प्रकार विचार विमर्श किया करें कि बच्चे निर्भय होकर अपने दृष्टिकोण को उपस्थित कर सकें और तब वे बच्चों के दृष्टिकोण का आदर करते हुए अपना दृष्टिकोण न्उहें समझाएं ।

समाधान का यह भी एक उपाय है।

आपको मेरी सलाह है कि आप अपने माता-पिता से अपनी समस्या के बारे में निर्भयतापूर्वक खुलकर बात-चीत करें । यदि आप अपने माता-पिता से डरती हों, तो आप किसी रिस्तेदार या माता-पिता के किसी सम्मान्य मित्र की मार्फत बातचीत करें । मुझे निश्चय है कि इस प्रकार की बातचीत से आपको संतोषजनक समाधान प्राप्त होगा, और, माता-पिता आपको, कुछ समय घर से बाहर की प्रवृत्तियों के लिए तथा कुछ समय सहेलियों के साथ बिताने के लिए अनुमति दे देंगे । ●●●

किसी देश की कृषि में उन्नति नहीं हो सकती, यदि उसके लोग यह न समझें कि हल चलाना उतना ही बाइज्जत धंधा है, जितना कविता करना या व्यापार करना ।

★

सजा

बंगाल के प्रसिद्ध लेखक श्री हरिनारायण चट्टोपाधाय की वंगला कहानी का हिन्दी रूपांतर ।

यह खबर प्राय: सभी अखवारों में प्रकाशित हुई थी । 'देशसेवक' ने इस पर अढ़ाई कालम की एक संपादकीय टिप्पणी ही लिख डाली थी । घटना भी अवश्य काफी मजेदार एवं आलोचना के योग्य थी ।

हमारा देश स्वाधीन हो गया है, इसमें संदेह नहीं है, किंतु उसके साथ-साथ हमारा दायित्व बोध भी क्या बढ़ा है ? श्रम की मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा—इन सवके वारे में हम क्या पूर्णरूपेण सचेत हैं ? 'देशसेवक' की संपादकीय टिप्पणी में इन्हीं सब प्रश्नों को उठाया गया था । घटना सचमुच अपमानजनक थी ।

गोलकगंज का पोस्टमैन एक जरूरी तार गंतव्य स्थान पर न पहुंचाकर, मैदान में गिरा आया था । पोस्टमास्टर को संदेह होने पर खोज की गयी एवं इसके साथ-साथ ही सारी कहानी सामने आ गयी ।

कुछ दिनों पहले भी ऐसा ही एक समाचार प्रकाशित हुआ था । एक डाकिये ने चिट्ठियों से भरे हुए एक थैले को गंगा में बहा दिया था । यद्यपि चिट्ठियों की इससे उत्तम सद्गति की कल्पना नहीं की जा सकती, फिर भी पत्र-प्रेषक एवं पत्र-प्राप्तक काफी नाराज हुए थे ।

वह डाकिया नया था । अनुभवी नहीं था । उसको नौकरी से निकाल दिया गया था, कैद भी हुई थी या नहीं, ठीक याद नहीं आ रहा है ।

किंतु इस घटना से संबंधित डाकिये की उम्र तिरपन वर्ष है—अर्थात दो वर्ष वाद वह रिटायर्ड होनेवाला है । नौकरी का पूरा रिकार्ड कलंकहीन है । किसी एक सत्कार्य के लिए सरकार ने उसे पुरष्कृत भी किया था । आश्चर्य की बात है, प्रवीणावस्था में यह कैसी गल्ती कर बैठा ।

कुछ दिनों तक इस घटना की आलोचना सभी बैठकों में हुई । चाय के कपों के सामने बैठकर लोगों ने तर्क का तूफान खड़ा कर दिया । दो-एक जगह से हाथापाई की खबर भी आयी थी ।

एक दल का कहना है कि सरकार कर्तव्यनिष्ठा एवं कार्यपटुता चाहती है, किंतु उस हिसाब से तनख्वाह नहीं देती । पेट भरा हुआ नहीं होने पर काम में गल्ती होगी ही । किंतु दूसरे दल का कहना है कि अंग्रेजों के जमाने में तनख्वाह इससे भी कम थी, किंतु इस प्रकार की अक्षम्य गल्ती कभी नहीं हुई थी । दरअसल बात यह है कि नीचे से ऊपर तक एक शिथिलता व्याप्त हो गयी

है । चालक अगर असावधान होगा तो गाड़ी खड्डे में गिरेगी ही, इसमें गाड़ी का क्या दोष है ।

प्रायः तीन महीने तक उत्तेजना रही एवं इसके बाद अन्य सभी उत्तेजनाओं की तरह यह भी ठंडी पड़ गयी । इतनी जल्दी ठंडी पड़ जाने का एक और कारण भी था । नगर में इंग्लैंडेश्वरी का आगमन होनेवाला है । चारों तरफ साज-सजावट का काम हो रहा है । जिस रास्ते से उनकी कार गुजरेगी, उस रास्ते के मकानों पर रंग हो रहा है, सफेदी हो रही है । जगह-जगह पर स्वागत-द्वार बन रहे हैं । हर घर की बहुओं ने ढूंढ़-ढांढ़कर बनारसी साड़ियां निकाली हैं । इस आनंद की बाढ़ में कर्तव्यविमुख डाकिये को सभी भूल गये । मैं भी भूल गया ।

और शायद फिर कभी उसकी याद भी न आती, यदि मैं भतीजी के लिए लड़का देखने परागपुर न जाता ।

लड़के को देखने में अधिक समय नहीं लगा । सुना था, लड़के के कहने के अनुसार बड़े-बड़े आदमी उठ-बैठ करते हैं । बात सच थी । क्योंकि उसके एक दर्जी की दूकान थी और खरीदारों को उसके आदेशानुसार अच्छी फिटिंग की पोशाकों के लोभ में कभी गर्दन सीधी करनी पड़ती थी, कभी हाथ ऊंचा करना पड़ता था, कभी सांस जोर से खींचना पड़ता था ।

इसके अलावा लड़के का वजन पूरा साढ़े-तीन मन था । अतः अपनी भतीजी के लिए लड़के के बारे में अधिक छान-बीन करने की जरूरत नहीं समझकर मैं उठ ही रहा था कि लड़के के बाप ने रोक दिया। कहा—"बिना मुंह मीठा कराये हम आपको नहीं जाने देंगे ।"

मैंने बहुत मनाई की, किंतु वे नहीं माने। अंत में नाश्ता करके जब स्टेशन पहुंचा, तो देखा, आठ बजकर बारह मिनिटवाली गाड़ी मुझको अंगूठा दिखाये हुए जा रही है। स्टेशन-मास्टर से पूछने पर पता चला, इसके बादवाली गाड़ी दस बजकर बाइस मिनिट पर आयेगी ।

उस लड़के के बाप को बुरा-भला कहकर प्लेटफार्म पर बैठ गया । कहीं भी कोई आदमी नहीं है । टिकिटघर बंद है, स्टेशन-मास्टर आफिस में ताला लगाकर घर चले गये हैं । गाड़ी के समय पर वापस आयेंगे। जो गैस-बत्ती जल रही थी, वह दरअसल में उजाले की छलना मात्र थी । अंधेरा क्रमशः बढ़ता जा रहा था ।

अकस्मात यों लगा जैसे कोई पास आकर बैठा है । अंधेरे में भी ध्यान से देखकर पता लग गया, एक आदमी है । जिसके एक हाथ में पोटली है और दूसरे में एक छाता ।

"बाबू नमस्कार ।" अंधेरे में ही कंठस्वर तैरकर मेरे कानों तक पहुंच गया । मैंने प्रतिनमस्कार किया ।

"कहां जायेंगे बाबू ?"

"कलकता । आप ?"

वह संकुचित होकर बोला—"सरकार आप मुझे 'आप' क्यों कह रहे हैं ? मैं तो

एक किसान हूं ।"

किंतु उसका बातचीत करने का ढंग एक गंवार किसान जैसा नहीं था । अति-मार्जित चाहे न रहा हो, पर कहने का ढंग, उच्चारण की भंगिमा शहरवासियों की-सी थी । मैंने पूछा–"तुम कहां जाओगे ?"

"जी, प्रसादपुर ।"

"वहीं रहते हो ?"

"जी हां ! यहां लड़की देखने आया था ।"

मैंने ध्यान नहीं दिया था कि आकाश में बादल छाये हुए हैं । अचानक मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी । उसने छाता खोला और कहा–" चलिये बाबू, उस छप्पर के नीचे चलें । छाते से यह बारिश नहीं रुकेगी।"

मैं उसके साथ-साथ उस छप्पर के नीचे जाकर खड़ा हो गया । आकाश की ओर देखकर मैंने कहा–"बड़ी मुश्किल में फंसे ।"

उसने अभयदान देते हुए कहा–"असमय की बरसात अधिक देर तक नहीं होगी बाबू । गाड़ी आने से पहले ही रुक जायेगी । घड़ी में क्या बजा है ?"

रेडियम के अक्षर थे, अतः अंधेरे में देखने में भी कोई असुविधा नहीं हुई । मैंने कहा–"पौने नौ बजे हैं ।"

"अभी बहुत देर है । लीजिये, बैठिये ।" पेट्रोल के दो खाली डिब्बे उसने रख दिये । मैं समझ गया, इस स्टेशन से यह अति परिचित है ।

आराम से बैठने के बाद मैंने एक सिगरेट जलायी और एक उस व्यक्ति की ओर बढ़ाई । उसने कहा–"नहीं बाबूजी, खाना खाने के बाद एक [illegible] पीता हूं । बस, इसके अलावा और कोई नशा नहीं है ।"

कुछ क्षण चुपचाप रहने के बाद मैंने उससे पूछ ही लिया–"तुम्हारी बातचीत सुनकर तो तुम मुझे किसान नहीं लगते ।"

उसने हंसकर कहा–"जन्मगत किसान नहीं हूं । दुर्दिन के दलदल में फंसकर इस ढलती उम्र में हल पकड़ा है ।"

"खेतीबाड़ी करते हुए कितने साल हो गये आपको ?"

"यही कोई तीन-चार वर्ष हुए हैं ।"

अंधेरे में ही सब कुछ देखने और जानने की कोशिश की । सहारा था मात्र बिजली की चमक का और सिगरेट की रोशनी का । उसी से देखा, प्रौढ़ावस्था है, चेहरे की नसें उभर आयी हैं। अगर तीन-चार साल से खेती कर रहा है, तो इसका मतलब है कम-से-कम पचास वर्ष की उम्र के बाद यह काम शुरू किया है। मैंने पूछा–"इससे पहले क्या करते थे ?"

उसने हिचकिचाते हुए कहा–"पहले तो मैं पोस्टमैन था ।"

पोस्टमैन ! मैं समझ गया, इसीलिए बातचीत में मर्जित परिवेश है । पोस्टमैन को तो काफी आदमियों से मिलना पड़ता है, थोड़ी-बहुत विद्यार्जन भी करनी पड़ती है । मैंने हंसते हुए कहा–"तो इसका मतलब है खेतीबाड़ी तुम अपने शौक से करते हो । पेंशन मिल रही होगी, कुछ और आमदनी के लिए हल का सहारा लिया है तुमने । परिवार काफी लंबा-चौड़ा है क्या ?"

"नहीं बाबूजी ! एक लड़की थी, उसकी शादी कर चुका हूं। अब हम दोनों बूढ़े-बूढ़ी हैं तथा एक बारह वर्ष का लड़का है।"

मैं चकित रह गया। "तो फिर इस उम्र में तुम्हें इतना परिश्रम करने की क्या जरूरत है ?"

"जरूरत है बाबूजी, बहुत जरूरत है। एक अन्याय-कार्य किया था, इसलिए सरकार ने नौकरी से निकाल दिया। पेंशन भी बंद कर दी। अगर मैं खेती नहीं करूं, तो हम तीनों भूखों मर जायें।"

बारिश तो धीमी हो गयी थी, किंतु बादल जोरों से गरज रहे थे। आकाश की पीठ पर बिजली लगातार कोड़े बरसा रही थी।

सिगरेट के कई कश एक साथ खींचकर उसे फेंक दिया। तीन-चार वर्ष पुरानी एक डाकिये की कर्तव्य-च्युति की घटना याद आ गयी थी। मैंने उससे पूछा—"कुछ वर्ष पूर्व अखबारों में खबर छपी थी कि एक डाकिये ने एक तार की डिलीवरी नहीं की थी और इसलिए उसे सजा दी गयी थी।"

उसने धीरे-से कहा—"हां, मैं ही उस घटना का नायक हूं। एक तार को मैदान में गिराकर आ गया था, इसीलिए सजा हुई थी। सच्ची बात तो यह है कि बड़े पाप के लिए मुझे कम सजा ही मिली थी। मैंने जो अन्याय किया था, उसके लिए मुझे और भी कड़ी सजा मिलनी चाहिये थी।"

सुनकर मैं अवाक् रह गया। सजा कम मिली है, यह शिकायत सजायाफ्ता से सुनने को नहीं मिलती।

"तुम्हारी बातें मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा हूं।"

"कितने बजे हैं बाबूजी ?"

घड़ी देखी, नौ बजकर पंद्रह मिनिट। आश्चर्य है, मन की गति की तरह समय की गति भी क्या धीमी हो गयी है! या फिर मैं एक ऐसी जगह पर बैठा हूं, जहां समय की पहुंच नहीं है।

"अभी गाड़ी के आने में काफी देरी है बाबूजी। आप क्या मेरी कहानी सुनेंगे। जब कभी किसी ने सुननी चाही है, मैंने उसे सुनायी है। यदि इसीसे पाप कुछ खंडित हो जाये! मनुष्य द्वारा दी गयी सजा तो समाप्त हो गयी है, अब ईश्वर द्वारा दी जानेवाली सजा की मात्रा में कुछ कमी हो जाये।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। सोचा, अभी एक सच्ची-झूठी कहानी सुनने को मिलेगी। यह आदमी अभी कल्पना को रंग लगाकर अपने दोष का लाघव प्रमाणित करने का प्रयत्न करेगा।

पाकिट से सिगरेट निकालकर माचिस की तीन-चार तीलियों की सहायता से उसे जलाया। कश-पर-कश खींचकर धुएं का गुब्बारा बनाया। इतनी देर में उसने कहानी शुरू कर दी थी।

"गांव का नाम गोलकगंज है। उसे ठीक गांव नहीं कहा जा सकता बाबूजी, आधा शहर है। स्टेशन पर बिजली की बत्तियां जलती हैं, पटसन से भरी हुई लारियां हरदम चलती रहती हैं। दो-चार पक्के मकान भी हैं, किंतु मकान-मालिकों की उदासीनता

के कारण वे खंडहर प्रायः बन चुके हैं ।

“मैं लगातार पांच वर्ष तक गोलकगंज में था । काम शहर में डाक एवं तार बांटने का करता था, किंतु रहता था रेलवे लाइन के पार एक छोटे-से टीन के कमरे में । मेरे साथ पोस्टआफिस का एक क्लर्क भी रहता था । रसोई बनाने का काम भी मैं ही करता था । छोटी तनख्वाह में यही एक सुविधा है बाबूजी । गोलकगंज में हफ्ते में तीन दिन हाट लगती है—ताजी सब्जी मिल जाती है । इसके अलावा गांव के लोगों के घर से भी साग-सब्जी मिल जाती थी । हरे-भरे पेड़-पत्तों की तरह वहां के आदमियों का दिल भी हरा-भरा था; दया, माया, ममता से खूब भरा हुआ ।”

सिगरेट हाथ में ही था, किंतु पीना भूल गया था । क्योंकि जिस तरह इसने कहानी की भूमिका शुरू की है, लगता है, सारी रात ही बीत जायेगी ।

“टीन के घर के सामने थोड़ी-सी जमीन भी थी । मैंने उसमें थोड़ी-सी सब्जी भी बो रखी थी । वह लड़की रोज सुबह मेरी बगिया में आती थी ।”

मैं शायद किंचित अन्यमनस्क हो गया था । चमककर पूछा—“कौन-सी लड़की ?”

“वही भुवन बाबू की लड़की । भुवन बनर्जी एक जमाने में बड़े रोबदार जमींदार थे । आमदनी भी अच्छी थी, किंतु उन्होंने कभी कोई अन्याय नहीं किया था । गरीबों के मां-बाप थे । दुःखी के लिए उन्होंने सिर्फ आंखों से आंसू ही नहीं बहाये थे, यथासाध्य सहायता भी की थी । ऐसे आदमी के लकवा मार गया । सारी जमींदारी इलाज में खतम हो गयी । अंतिम दिनों में जो भी उनके पास जाता, उसको ही वे कहते—मुझे सिर्फ मनोरमा की चिंता है । उसकी कोई व्यवस्था नहीं होने पर मैं शांति से मर भी नहीं सकूंगा ।

“उनकी लड़की का नाम मनोरमा था । बड़ी सुंदर थी, अपूर्व लावण्यमयी थी । जैसा रंग था, वैसा ही शरीर का गठन भी । और स्वभाव था मिट्टी जैसा, कभी किसी से ऊंचे गले बातचीत करते मैंने नहीं सुना, कभी किसी से लड़ते-झगड़ते उसे मैंने नहीं देखा ।

“उसकी शादी की काफी कोशिश की जा रही थी । कलकत्ते में उसके एक मामा रहते थे । उन्होंने अखबारों में भी विज्ञापन छपाया था । खोज-खबर भी हो रही थी । किंतु ठीक जैसा वर वे चाहते थे, वैसा नहीं मिल पा रहा था ।”

आस-पास में ही कहीं शायद बिजली गिरी थी । मैं चमक उठा और मेरे चमकते

इंसान और इंसानियत

दार्शनिक अरस्तू छद्मवेशी प्रसिद्ध बदमाश के प्रति दयालु होकर दान दे रहा था । एक नागरिक ने टोकते हुए कहा—आप एक बुरे इंसान को दान देकर यह उचित नहीं कर रहे । अरस्तू ने उत्तर दिया—“मैं इंसान को नहीं, इंसानियत को दे रहा हूं ।”

ही मेरे हाथ से [illegible] फूल जा गिरी ।

उसने धीरे-धीरे कहा—"दुर्गा, मां दुर्गा ।" फिर आकाश की ओर ताक कर बोला—" आकाश की हालत बिगड़ती जा रही है बाबूजी ।"

मैंने उसका ध्यान कहानी की ओर आकर्षित करते हुए पूछा—"फिर क्या हुआ ?"

"फिर......मनोरमा रोज सुबह मेरे घर पूजा के लिए फूल लेने आती थी। उनके घर के पास ही शिवजी का मंदिर था। मनोरमा स्नान करने के बाद फूल तोड़कर पूजा करने के लिए बैठ जाती थी ।

"पहले उसके हाथ शिडलि फूल तक नहीं पहुंचते थे । इसलिए वह मुझे बुलाती । मैं या तो डाली को झुका देता या फिर डाली को जोर से झकझोरता, और शिडलि फूलों से उसका आंचल भर जाता ।

"मैं उससे कहता—मेरे छूने से तो तुम्हारे फूल अपवित्र हो जायेंगे—वर्ना मैं रोज सुबह तुम्हारे लिए फूल तोड़कर रख देता । मनोरमा विस्मित होकर पूछती क्यों, तुम्हारे छूने से फूल अपवित्र क्यों हो जायेंगे ? तुम फूल तोड़कर रख दिया करो, मैं आकर ले जाया करूंगी ।

"किंतु फूल तोड़कर रखने का साहस मुझमें नहीं हुआ था। भैरवेश्वर जाग्रत देवता हैं । अतः मनोरमा ही फूल तोड़कर या चुनकर ले जाती थी ।

"मैं प्रतिवर्ष विजयादशमी के दिन भुवन बाबू को प्रणाम करने जाता था । इधर कुछ [illegible] सिर्फ इतना कहते—दयाल, मनो के लिए कोई वर ढूंढ़ कर लाओ । तुम तो बहुत जगह घूमते-फिरते हो ।

"अब आप ही बताइये बाबूजी । मैं गोल-कगंज का डाकिया हूं । चिट्ठियां बांटता फिरता हूं । मेरी जानकारी आखिर कितनी हो सकती है ? इसके अलावा शादी के लिए वर ढूंढ़ने लायक बुद्धि मुझमें कहां है ? किंतु फिर भी भुवन बाबू के मन में ठेस पहुंचाना नहीं चाहता था । इसीलिए कहता—जरूर बाबूजी, जरूर खोज करूंगा । आप निश्चित रहिये ।

"हम सबकी यही धारणा थी कि अब भुवन बाबू अपनी लड़की की शादी नहीं कर पायेंगे । उनकी बीमारी काफी बढ़ चुकी थी । शहर का डाक्टर आकर बीच-बीच में उनको देख जाता था । मैं भी काम खत्म करके उनकी हालत पूछने के लिए उनके घर चला जाता था ।

"ठीक उसी समय एक जगह बातचीत प्रायः पक्की हो गयी । शहर से मनोरमा के मामाजी ही उस संबंध को ढूंढ़कर लाये थे। सुना, लड़का एकदम राजकुमार है; जैसा रूपवान है, वैसा ही गुणी भी । एक प्राइवेट फर्म का मैनेजर है। चार वर्ष विलायत रहकर आया है ।

"भुवन बाबू के लिए शहर में जाकर लड़के को देखकर आना संभव नहीं था । मनोरमा के मामाजी लड़के की फोटो साथ में लाये थे । सभी ने उसे पसंद कर लिया । दहेज को लेकर बातचीत चलने लगी । इधर लड़के

का पिता और काका आकर मनोरमा को देख गये । दोनों ने ही कहा—ऐसी लड़की लाखों में एक होती है ।

“आश्चर्य की बात है । बड़े-बड़े डाक्टरों की दवा ने जो काम नहीं किया, वही मनोरमा की शादी पक्की हो जाने की खबर ने कर दिखाया । भुवन बाबू धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे । लाठी का सहारा लेकर बरामदे में चहलकदमी करने लगे । नौकर के कंधों का सहारा लेकर इस कमरे से उस कमरे में जाने लगे ।

“भुवन बाबू ने ही कन्यादान का कार्य समाप्त किया । हम लोगों की धारणा थी कि भुवन बाबू इतनी देर तक एक जगह बैठे नहीं रह सकेंगे । किंतु वह बैठे रह सके । तकलीफ होने पर भी उनके चेहरे को देखकर यह महसूस नहीं हुआ । मुझे निमंत्रित करने मनोरमा के मामाजी स्वयं आये ।

“मैं तो अवाक् रह गया । बोला—आप क्यों आये ? मैं स्वयं ही आ जाता । किंतु मामाजी हंसकर बोले—यह कैसे हो सकता है । हम लड़कीवाले हैं, हमें ही निमंत्रित करना चाहिये । इसके अलावा मनोरमा ने मुझे बारंबार कहा है कि दयालदा को निमंत्रित करना न भूल जायें । और किसी पर भरोसा न करके आप स्वयं निमंत्रण देकर आइयेगा ।

“मेरी आंखों में आंसू छलछला आये । अपनी लड़की याद हो आयी । उम्र में वह भी मनोरमा के समान थी, किंतु उसकी शादी मैंने छोटी उम्र में ही कर दी थी ।

“शादी की बातचीत पक्की होते ही मनोरमा ने बाहर आना-जाना बंद कर दिया था । अब वह फूल तोड़ने के लिए मेरे यहां नहीं आती थी । सुबह एक बार मंदिर में वह अवश्य जाती थी, किंतु उस समय भी उसके साथ एक नौकरानी रहती थी ।”

× × ×

पूरे गोलकगंज को निमंत्रित किया गया था । भुवनबाबू का मकान जगमग कर रहा था । स्टेशन से लेकर घर तक दस या ग्यारह स्वागत-द्वार बनाये गये थे । सदर दरवाजे पर शहनाई बज रही थी ।

शादी गोधूलि लग्न में थी । इसलिए दूल्हा जिस समय आया, उस समय मैं डाक बांट रहा था । दूल्हे को देखकर मैं सड़क पर ही खड़ा हो गया था । भुवनबाबू ने दूल्हे के लिए एक पालकी भिजवायी थी, किंतु दूल्हा पालकी पर नहीं चढ़ा था, पैदल ही चला आ रहा था ।”

दयाल कुछ क्षण मौन रहा । आंखें मिटमिटाकर उसने एक बार फिर आकाश की ओर देखा ।

मैंने सोचा, दयाल यह कहां का लफड़ा ले बैठा । स्वयं की कर्तव्यच्युति की कहानी कहने बैठा था, किंतु अब एक शादी का विस्तृत वर्णन कर रहा है । गाड़ी के लिए प्रतीक्षा तो करनी ही है, इसलिए इस कहानी को सुनने में भी मजा आ रहा था । अतः मैंने दयाल को बाधा नहीं दी । देखूं, आखिर दयाल कहना क्या चाहता है !

“मैं सड़क पर ही खड़ा था । दूल्हा पैदल

चल रहा है, इसलिए बरातियों को भी पैदल ही चलना पड़ रहा था। केवल दूल्हे का बाप और पुरोहित अंत में एक पालकी पर बैठे थे। सामने बाजेवाले थे, पीछे गैस-बत्तियां थीं। उस समय सूरज पूरा डूबा नहीं था। धूप की लालिमा वर्तमान थी। ताल और नारियल वृक्ष के पत्तों से धूप छन-छन कर गिर रही थी।

"आंखों की पलकें भी नहीं झपकीं। इतना सुंदर पुरुष भी होता है, इसका मुझे अंदाजा नहीं था। उसके सुंदर चेहरे का वर्णन मैं नहीं कर सकूंगा। एक वाक्य में वह सुंदरतम, स्वस्थ एवं कांतिमान पुरुष था।

"मैंने सोचा, मनोरमा के साथ इसकी जोड़ी ठीक बैठेगी। एकदम जैसे सोने में सुहागा हो।

"डाक बांटने का काम समाप्त कर, मनीआर्डर का हिसाब वापस आफिस में जमाकर जब छुट्टी मिली, उस समय रात हो चुकी थी।

"बरामदे में खाने-पीने का इंतजाम था। कोने में एक आराम-कुर्सी पर भुवन बाबू लेटे हुए थे। मुझे देखते ही बोले—क्या बात है दयाल, इतनी देर कैसे हो गयी ?"

"मैंने कहा—"डाक बांटने का काम समाप्त करते-करते ही रात हो गयी।"

"इसके बाद भी मनोरमा से अनेक बार मुलाकात हुई है। कभी जब वह पालकी में बैठकर ससुराल जाती है या कभी जब वह ससुराल से लौटती है।

"शादी के महीने भर बाद ही पहला लिफाफा मिला। अक्षर जैसे सच्चे मोती ही थे। श्रीमती मनोरमा देवी, उसके नीचे भुवन बाबू का नाम लिखा था और उसके नीचे लिखा था—पो० गोलकगंज।

"लिफाफा हाथ में लेकर देखा, काफी भारी था। बैरंग होते-होते बच गया था। उस लिफाफे को बैग में न रखकर अपने कोट की अंदरवाली पाकिट में रखा।

"भुवन बाबू के घर के नजदीक पहुंचते, सदर दरवाजे पर ही मनोरमा दीख पड़ी। मांग में चमकता हुआ ताजा सिंदूर, हाथ में हाथी के दांत की बनी हुई चूड़ियां। एकदम नया रूप, नया चेहरा।

"मुझे देखते ही मनोरमा दौड़कर मेरे पास आयी, बोली—दयालदा मेरी कोई चिट्ठी है क्या ?

"हंसी को रोककर गम्भीर स्वर में बोला—"तुम्हारी चिट्ठी ? नहीं तो। तुम्हारी चिट्ठी कहां से आयेगी भला ?

"लगा, जैसे उसी क्षण सावन के काले-कजरारे बादल ने आकर मनोरमा को ढंक दिया है। हंसी गायब हो गयी। आंखों में आंसू आ गये। धीरे-धीरे अंदर की ओर जाती हुई अस्पष्ट आवाज में बोली—आश्चर्य है, आज मंगलवार है, आज ही आने की बात थी।

"तब तक मैंने कोट की पाकिट से उस लिफाफे को निकाल लिया था। बोला—देख तो, यह कहीं तेरी चिट्ठी तो नहीं है?

"मनोरमा थमक गयी। दौड़कर मेरे पास आयी और मेरे हाथ से लिफाफे को झपट लिया।

"मैंने निष्कपट-कंठ से पूछा—किसकी चिट्ठी है मनोरमा ?

"मनोरमा की मांग का सिंदूर उसके गालों पर छा गया ? मेरी ओर ताककर बोली—कलकत्ते के मुनीम की है ।

"मुझे भी मजा मिल गया था । इसके बाद जितने भी लिफाफे आते, उनको देते समय मैं कहता—मनोरमा, कलकत्तेवाले मुनीम की चिट्ठी है । काफी भारी है । शायद जोत-जमींदारी के बारे में काफी सूचनायें अथवा कोई दलील-दस्तावेज है ।

"धीरे-धीरे पत्रों की संख्या बढ़ती गयी । पहले हफ्ते में एक आता था, अब हर दूसरे दिन आता है । बीच-बीच में इधर से लिखा हुआ पत्र भी मुझे ही डाक में डालना पड़ता था । उसका वजन भी कुछ कम नहीं होता था ।

"इसके बाद ही वह सर्वनाशी टेलीग्राम आया । मनोरमा का सब कुछ उजड़ गया है, इस मर्मांतक खबर को लेकर वह टेलीग्राम आया था ।

"किस टेलीग्राम में क्या रहता है, यह हमें पहले से ही मालूम हो जाता है । कौन-से टेलीग्राम को देकर सलाम करके बख्शीश पाने के लिए रुकना चाहिये या कौन-से टेलीग्राम को देकर किसी तरह रसीद पर हस्ताक्षर करवाकर क्रंदन-ध्वनि के कोलाहल के शुरू होने के पहले ही भाग आना है—यह हमें पहले से ही मालूम होता है । तार बाबू से हम लोग मालूम कर लेते हैं । उस दिन भी उस अभागे टेलीग्राम का संदेश मैं जान गया था ।

राजा की अंतिम प्रार्थना

मृत्यु से कुछ क्षण पूर्व एक बादशाह ने हाथ जोड़कर प्रभु से प्रार्थना की—"मेरे मालिक ! आपने मुझे जन्म के साथ जिस राज्य की अमानत दी थी, वह मैं आपको लौटा रहा हूं । अब अगले जन्म में तो आप मुझे ऐसे राज्य का कार्य देना, जहां कोई भी इंसान राजा से कम न हो ।"

"काफी देर तक मैं कुछ भी नहीं कह पाया था । मेरे पैर कांप रहे थे । इच्छा हुई, इस खाकी पोशाक को आफिस में जमा करके कहीं भाग जाऊं । किंतु कोई उपाय नहीं था । उस इलाके का मैं ही पोस्टमैन हूं । मुझे ही यह दुःसंवाद पहुंचाना होगा ।

"फिर भी मैंने एक अंतिम कोशिश की । पोस्ट मास्टर के सामने हाथ जोड़कर बोला—मेरी तबियत बड़ी खराब हो रही है बाबू, आज आप मुझे छुट्टी दे दीजिये ।

"पोस्ट मास्टर बाबू नये थे । अभी तीन महीने पहले ही बदली होकर आये थे । दया-मया का नामोनिशान नहीं था । बोले—तो फिर अपना कोट मुझे दे दो दयाल, मैं ही चिट्ठियां और तार बांट आऊं ।

"इसके बाद मैं और क्या कह सकता था ! चिट्ठियों का थैला और तार लेकर डाक बांटने निकल गया ।

"सर्वप्रथम तार की डिलीवरी करनी चाहिये थी, किंतु मैंने पहले डाक बांटी। तार देने के लिए जब भुवन बाबू के मकान के पास पहुंचा, तो शाम हो चुकी थी।

"तबीयत सचमुच खराब हो गयी। सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था। छाती भी जोर-जोर से धड़क रही थी। आंखों के सामने मनोरमा की मांग सूनी नजर आ रही थी।

"दयालदा—मनोरमा ने पुकारा।

"मेरा शरीर कांप उठा। मनोरमा मेरे पास आकर खड़ी हो गयी। चेहरे पर हंसी थी। एक हाथ में तौलिया और साड़ी थी। वह तालाब पर नहाने जा रही थी। बोली—आज पांच दिन हो गये दयालदा, कलकत्ते-वाले मुनीम की कोई चिट्ठी नहीं आयी। परसों मैंने जो चिट्ठी दी थी, उसको तुमने डाक में डाला था या नहीं? आज भी क्या कोई चिट्ठी नहीं आयी?

"मुझे नहीं मालूम, मैंने कैसे और क्यों गर्दन हिला दी। यानी नहीं आयी।

"देखा, मनोरमा जा रही है। पेड़ की ओट में होने के कारण अब वह मुझे नहीं दीख रही थी। हाथ से चिट्ठियों का बंडल और वह तार गिर गया था। मैंने चिट्ठियां तो वापस उठा लीं, किंतु तार को वहीं छोड़ दिया। हजार कोशिशें करने के बावजूद भी मैं घास पर पड़े उस तार को नहीं उठा पाया था।"

दयाल चुप हो गया। मुझे लगा, जैसे वह जोर-जोर से रो रहा है। उसकी जीर्ण छाती आवेग के मारे ऊंची-नीची हो रही है। अतीत के एक मर्मांतिक दृश्य के सामने से जैसे वह अपने को हटाना चाह रहा हो।

अभिनेत्रियां और लहरें

अभिनेत्रियों और नदी की लहरों में बड़ा साम्य है।... वह थोड़ी देर के लिए उभरती हैं—जुदा-जुदा ऊंचाई तक उठती हैं—अलग-अलग वेग और ताकत से मचलती हैं और बाद में मिट जाती हैं।

दयाल फिर कहने लगा—"इसके बाद मैं पकड़ा गया बाबूजी। पोस्ट-मास्टर बाबू ने जिरह की, तार की रसीद मांगी, किंतु उस पर किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। पुलिस आयी। वह तार घास पर पड़ा हुआ मिल गया। प्रश्न-पर-प्रश्न किये गये, जवाबवंदी हुई और अदालत की खबर तो आप लोग अखबारों में ही पढ़ चुके होंगे। कर्तव्य की अवहेलना—इससे भी कड़ी सजा मिलनी चाहिये थी मुझे, किंतु मेरी उम्र और सर्विस के निष्कलंक रिकार्ड को देखते हुए जज साहब ने मामूली-सी सजा ही दी।...... गाड़ी आ रही है बाबूजी, आवाज सुनाई पड़ी रही है।"

बिजली फिर एक बार चमकी। इस नये उजाले ने दयाल का एक और रूप ही मेरे सामने रखा।

मैंने दयाल की ओर हाथ बढ़ाकर कहा—"नयी जगह है, तुम मेरा हाथ पकड़ लो दयाल, मुझे टिकटघर की तरफ ले चलो।"

★

बाप बेटा

इटली के आधुनिक कथा-लेखक मौरो सेनेसी द्वारा लिखित मार्मिक कहानी का हिन्दी रूपांतर

हमारे कस्बे में उद्योग-धंधों का अभाव था। अत: हम लड़के कभी कोई, तो कभी कोई धंधा करते-फिरते। फसल के दिनों में किसानों के यहां मजदूरी करते। साल के वाकी महीनों में और काम निकालते।

एक बार गरमी के मौसम में हमने वाइपर सर्पों को पकड़ने का धंधा अख्तियार किया। ग्रीष्म के भीषण ताप में ये विषधर चट्टानी मिट्टी से वाहर निकल आते हैं, पहाड़ियों पर उनकी विषैली फुफकार दूर से भी सुनी जा सकती है।

सांपों के शिकार का विचार संत लाजारस के पादरी को सूझा था। यह लंबा और गौरवर्ण पादरी हमारे कस्बे में कुछ दिन पहले ही आया था। यहां उसने टोप बनाने का उद्योग आरंभ किया, पर असफल रहा। तब उसे खयाल आया कि पहाड़ी क्षेत्र में बहुतायत से प्राप्त वाइपर सर्पों को जिंदा पकड़कर नगर में भेजा जाये, जहां उनके विष से दवा बनती थी।

विष से औषध बनाने की बात हमारे लिए आश्चर्यजनक थी। आरंभ में हमने इस काम के लिए अनिच्छा भी प्रकट की। ये सांप हम सबके लिए हौआ थे। लेकिन जब हमने देखा कि पादरी ने इस काम से खासी कमाई की है और चांदी का शमादान खरीदा है, तो हम भी कुछ लड़कों के साथ पादरी के पीछे हो लिये।

हम बच्चों में एक वयस्क भी शामिल हो गया था। यह मेरे मित्र पीटर का पिता ओथेलो था। जब कोई प्रकृति के विरुद्ध असाधारण कार्य हो रहा होता, तो ओथेलो उसमें सदा भाग लेता था।

लड़के उससे घृणा करते और उसे खूब चिढ़ाते थे। वे चिल्ला-चिल्लाकर भद्दे ढंग से उसका अपमान कर रहे थे। मगर ओथेलो को इस सबका अभ्यास हो चुका था। वह उन्हें कुछ भी नहीं कह रहा था। एक मैं ही चुप था। मैं पीटर का मित्र था। लेकिन दूसरे लड़के ओथेलो के पीछे लगे थे, वे उसे चिढ़ाने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने दे रहे थे।

भले ही ओथेलो पर इसकी कोई प्रतिक्रिया न हो रही हो। वहां एक व्यक्ति था, जिस पर इसका खासा असर हो रहा था और वह था पीटर। मैंने देखा, उसका चेहरा हर बार फक हो जाता है और फिर निराशा और तीव्र घृणा से लाल। मगर किसके खिलाफ? पिता के या लड़कों के?

पादरी लड़कों को चुप करने की कोशिश करता था, मगर खुद भी हंस पड़ता था। एक पहाड़ी से दूसरी पर घूमते हुए एक बार

जब मैं अचानक उसके पास पहुंचा, तो मैंने उसे भी लड़कों की तरह ही छिपकर और चिल्लाकर ओथेलो के प्रति अपशब्द कहते सुना। उस समय उसकी मुखमुद्रा और हाथों की गति वैसी ही थी, जैसी उस समय होती थी, जब वह गिरजे में शैतान की भर्त्सना करता था।

ओथेलो दूर खड़ा रहा। ऐसा लगता था, जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। उसने अकेले जितने सांप पकड़े थे, उतने हम सबने मिलकर भी नहीं पकड़े थे। अपनी लाल आंखें वह सांपों पर इस कदर गड़ाता और लकड़ी के चिमटे से ऐसा निशाना साधता कि वे उसमें आराम से फंस जाते। मानों, सांपों और ओथेलो के बीच कोई रहस्यमय समझौता हो!

वह ठिगने कद और भूरे रंग का आदमी था। धूप में उसके बाल चमकीले हो गये थे, इससे वह दूर से ही पहचाना जा सकता था। उसकी त्वचा चिकनी और सफेद थी—औरतों से भी ज्यादा; और इस गरमी के मौसम में भी उसके गालों पर बढ़िया बैंगनी खून झलकता था।

पीटर बिल्कुल उससे उलटा था—काली जिल्द और आंखें। १५ वर्ष की अवस्था में ही कड़ी दाढ़ी। यह सचमुच बेहूदा बात थी कि वह ओथेलो का पुत्र था। कभी मैं उसे कहता कि हो सकता है, वह जारज पैदाइश हो। इस पर बजाय इसके कि वह बुरा माने, उलटा बड़ी कृतज्ञतापूर्वक मेरी ओर देखता। उस वक्त उसके फटे होंठों पर एक फीकी-सी मुस्कान होती।

वह कहता—"इस आदमी का पुत्र होने से तो अच्छा था कि मेरी मां के हजार प्रेमी होते।" और यह कहते हुए वह उस अगली पहाड़ी की ओर कतई न देखता, जहां ओथेलो सांप की ताक में झुका हुआ खड़ा होता। पीटर अपनी स्वर्गीय मां का एक चित्र भी निकालकर मुझे दिखाता और कहता कि उसकी मां काफी सुंदर थी, उसका वक्षस्थल चौड़ा था और वह ओथेलो जैसे आदमी के साथ, जो कि आदमी नहीं था, संतोष करके बैठी नहीं रही होगी।

अंत में पीटर थककर अपने हाथ नीचे गिरा लेता। उसकी आंखें नीची हो जातीं, मानो वह शर्मिंदा हो, मेरे सामने भी। मैं उसका स्कूल के दिनों से दोस्त था। दूसरे लड़कों को उससे कोई मतलब नहीं था। कारण, वे जानते थे कि वह ओथेलो का बेटा है। आखिर पिता और पुत्र में अंतर ही क्या होता है? लड़के उसके भी भद्दे-भद्दे नाम धरते थे।

हम लोग सांपों के शिकार को निकल जाते। धीरे-धीरे एक-एक पत्थर उठाते, सर्प की तलाश में, और अपने चिमटे तैयार रखते। हमारे हृदय डर के मारे बुरी तरह फड़क रहे होते। और जब भूरा सांप हमें सोता हुआ मिल जाता, तो हम धीरे-धीरे उसके पास पहुंचते। तीखा लकड़ी का चिमटा अपनी सारी शक्ति लगाकर एकदम मिट्टी में घुसेड़ देते, ताकि सांप का सिर चिमटे की गिरफ्त में आ जाये। फिर उसे

दबाते जाते, जिससे कि वह उस पकड़ से भाग न निकले । वह मरोड़े खाता रहता । इस बात का ध्यान रखते कि वह अपने विषैले दांत हम पर न गढ़ा दे और इस तरह उसे काबू में करके हमें लगता कि हम स्वर्ग के सर्वोच्च देवदूत के समान विजेता हैं । तब हमारा डर भी काफूर हो जाता ।

एक बार पीटर ने मुझे कहा कि वह एक बड़ा चिमटा बनायेगा और उसमें इसी तरह सांप के बजाय, अपने पिता को ही पकड़ेगा ।

× × ×

पहाड़ियों पर गरमी बढ़ती ही जाती थी और उसी तरह बढ़ती जाती थी ओथेलो के प्रति हमारी घृणा । अब उसका अपमान बद-से-बदतर तरीके से किया जाता—कुछ लड़के तो उस पर पत्थर फेंकने तक को उतारू रहने लगे थे । पर वह आदमी था कि घनचक्कर, इस बात की ओर ध्यान ही नहीं देता था । वही फूहड़ हंसी हंसता और सांपों पर चिमटा गड़ाता रहता ।

ओथेलो को छोड़कर हम सबके होंठ फटे और सूझे हुए थे । सूर्य के भीषण ताप ने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा था । वह गोरा और चाक-चौबंद था । मानो मौसम से उसकी देह को कुछ लेना-देना ही न हो ? ग्रीष्म में गरमी के मारे हमारे होंठों का यह हाल हो जाता था—खास तौर से तब और भी, जब हम इस मौसम में पहाड़ियों पर सांप पकड़ते फिरते थे । मैंने देखा था कि पीटर के चेहरे से पसीना हमेशा चूता रहता । रक्त-प्रवाह के साथ उसकी त्वचा पर बड़े-बड़े धब्बे हो गये थे ।

मेरे मित्र को काफी परेशानियां उठानी पड़ीं । भद्दा अपमान उसे चोट पहुंचाता था, हर वक्त पीड़ा के ऐसे चाबुक उस पर पड़ते रहते थे कि उसे सांस लेना दूभर हो गया था । घृणा और वेदना से उसका गला घुटने लगा था ।

“तुम्हें अपने बाप से क्या मतलब है ?” मैं उसे समझाने की कोशिश में कहता, पर व्यर्थ । आखिर हम दोनों ही यह जानते थे कि पुत्रों का अपने पिताओं से कुछ-न-कुछ संबंध होता ही है । जीवन में प्रवेश करने के साथ ही वे हमारी देखभाल शुरू कर देते हैं । हम उनसे कभी मुक्त नहीं हो पाते । हमारा भाग्य उनसे जुड़ा होता है ।

कभी-कभी पीटर बेवकूफी की बातें भी करता । वह कहता—“मैं अपना नाम बदल लूंगा और फिर किसी दूरस्थ नगर में चला जाऊंगा । वहां कोई यह नहीं जान पायेगा कि मैं ओथेलो का बेटा हूं ।”

और एक दिन पीटर ने अपने बाप के खिलाफ सचमुच ही बगावत का झंडा खड़ा कर दिया । अचानक ही वह उसे और लड़कों से भी ज्यादा चिल्ला-चिल्लाकर बुरी-बुरी गालियां देने लगा—जैसे गलपट्टा बंधा कुत्ता भौंक उठा हो ।

ओथेलो ने सुना । इससे उसे कुछ दुःख भी हुआ, पर उसने यह अपमान भी दरकिनार कर दिया ।

हम लोग अपने झाबों में कुछ एक सांप

लिए कस्बे [illegible] । रास्ते में पीटर ने कहा कि वह अपने बाप के बिस्तर में सांप छोड़ देगा । मैंने सोचा, लड़के अक्सर ऐसी बातें किया करते हैं और हुआ भी वही ।

× × ×

दोपहर के बाद की बात है । हमने एक डरावनी चीख सुनी । अगली पहाड़ी पर देखा, ओथेलो पागल की तरह अपनी बांहें पटक रहा है । वह लंगड़ाता हुआ हमारी ओर आया, मगर गिर पड़ा । मुझे समझते देर न लगी कि उसे सांप ने काट खाया है ।

हम सब उसके पास पहुंचे । वह जमीन पर पड़ा था । उसके टखने के पास दो नीले निशान थे, जहां वाइपर सांप ने अपने दांत गड़ाये थे ।

वह चीख रहा था और आंसू तेजी से उसके गालों पर बह रहे थे । लेकिन हम लोग बिना हिले-डुले उसके चारों ओर खड़े रहे । पादरी ने कहा—"मैं नहीं जानता कि ऐसे में क्या किया जाये, तो भी घाव को चूसना जरूरी है, मगर हम सब लोगों के होंठ फटे हुए हैं ।"

और ओथेलो याचना कर रहा था—"मुझे बचाओ, कोई मुझे बचाओ ! मेरे बेटे, मुझे बचा ले !" उसके आंसू बहे जा रहे थे ।

"हम में से कोई घाव नहीं चूस सकता ।" पादरी ने कहा—"और कस्बे में ले जाने तक यह बचेगा नहीं ।" उसने पीटर के फटे होंठों की तरफ देखा और फिर ओथेलो से कहा —"परमात्मा की दया पर भरोसा करने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है ।', ओथेलो तड़फ रहा था और हममें से किसी को कोई व्यथा नहीं महसूस हो रही थी । चिमटे में फंसे सांप को तड़फते देखने के हम लोग आदी थे, यह दृश्य भी बहुत कुछ वैसा ही था । हम लोग चुप खड़े रहे । फटे होंठों के कारण आखिर हम कर भी क्या सकते थे ?

वक्त गुजरता गया । सूरज अस्ताचल को जाने लगा । अचानक पीटर आगे बढ़ा । हम उसे रोकें कि वह अपने पिता के पास जमीन पर लेटकर घाव से जहर चूसने लगा कठिनाई के बावजूद वह जोरों से घाव चूसने में लगा था । बिलकुल ऐसे, जैसे बच्चा अपनी मां के स्तन चूसता हो ।

पादरी ओथेलो की टांग दबाता रहा, ताकि सारा जहर निकल जाये और पीटर उसे चूसता रहा । जब काम पूरा हो चुका, तो हमने चाहा कि वह दौड़कर कस्बे को चले । पर विष से उसके अधर सूखने लगे थे । कुछ ही दूर चलकर वह चलने में असमर्थ हो गया ।

हम लोगों ने मिलकर उसे उठा लिया और दौड़कर कस्बे की ओर ले चले ।

यह दौड़ बेकार थी—हम सब जानते थे । कस्बा पहुंचने तक पीटर अपने पिता को पुनर्जीवन देकर स्वयं उससे जुदा हो चुकेगा ।

फिर भी हम दौड़ रहे थे । कस्बा दूर और ऊंचाई पर था । जहां अभी धूप थी । पर अंधेरा हमारा पीछा कर रहा था । थोड़ी ही देर में वह हम पर छा जायेगा ।....

★

मेरी रुचि की पंक्तियां

नारी अन्यदा हुआ करती है । इसलिए तुम उसे चरित्रहीन भी कह सकते हो । चंद्रमा का कलंक और ग्रहण तुम पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा, स्नान-ध्यान से दूर कर लेते हो; किंतु हमारे कलंक को धो सकना तुम्हारे पुरुषार्थ की बात नहीं है । तुम मात्र देख सकते हो विजित पांडवों की भांति कल की पूजा करती हुई नारी, दूसरे दिन तुम्हें कोठों पर से निमंत्रण देती है । ठीक भी तो है, वह फिर से दूसरी बन सके, यह उसके लिये तुमने संभव ही नहीं रखा ......।

......बोलकर कोई अपना मनोभाव तो प्रकट कर ही सकता है, चाहे फिर आप उसकी उपेक्षा ही कर दें । किंतु दबा हुआ भाव स्पष्ट कर दिया जाने पर, व्यक्ति अपनी तृप्ति और वांछा के नाखून से उसी तरह धरती को कुरचने लगता है, जैसे बिल्ली के पंजे ।

—नरेश मेहता (डूबते मस्तूल), प्रेषक—भगवतीलाल व्यास

पतवार-विहीन नाव हवा की इच्छा पर परिचालित होती है, लाठी-विहीन अंधा अंधकार में भटकता रहता है और लक्ष्यविहीन नवयुवक लाख सर पटकने पर भी कुछ हासिल नहीं कर पाता है । पतवार नाव को निर्दिष्ट दिशा की ओर परिचालित करती है, लाठी अंधे की सहायिका है और लक्ष्य जीवन का संगीत, जीवन की आत्मा, जीवन की सफलता की कुंजी है । **—अखिलेश्वरप्रसाद (आधुनिक निबंधावली), प्रेषक—प्रदीप कुमार**

नारी में एक विचित्र शक्ति होती है । ......अपने छोटे रूप में अंतर्यामी होती है । वह शब्द दे पाये, या समझकर उसे अस्वीकार या स्वीकार करे, यह दूसरी बात है; लेकिन पुरुष के मन में आनेवाली हर भाव लहर को जैसी सच्चाई से वह पढ़ सकती है, कोई मनोवैज्ञानिक नहीं पढ़ सकता । **—राजेन्द्र यादव (शह और मात), प्रेषक—आर० के० चौहान**

पुरुष की क्षमता ऐश्वर्य में है और स्त्रियों की क्षमता दारिद्रय में । जहां पुरुष दुर्बल है, वहीं स्त्री की शक्ति प्रकट होती है । पुरुष सर्वस्व प्राप्त कर सकता है, स्त्री सर्वस्व दे सकती है । पुरुष के लिए अप्राप्य कुछ भी नहीं है, स्त्री के लिये अदेय । पुरुष स्त्री को गिराकर खड़ा रहता है और स्त्री गिरकर भी पुरुष की रक्षा करती है ।

—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (तीर्थ ललित) प्रेषक—सत्यवती

यह ठीक है कि संसार में सब परस्परापेक्ष है, पर इसका यह अर्थ तो नहीं कि उन सबका अपना-अपना कोई अस्तित्व नहीं, महत्व नहीं। अपने-अपने अस्तित्व को और अधिक महत्वपूर्ण एवं परिपूर्ण बनाने के लिए ही तो सबको एक-दूसरे की अपेक्षा है। हम अपने अभावों के पात्र एक-दूसरे के समक्ष इसीलिए तो बढ़ाते हैं कि उनमें भराव आ सके।

—सुदर्शन चोपड़ा (हल्दी के दाग), प्रेषिका—कृष्णा

इश्क का ऊंचे-से-ऊंचा मुकाम 'एकाकीपन' है। एक 'एकाकीपन' का दूसरे एकाकीपन को देखना और पहचानना ही वह दूसरा काफिया है, जिसे कोई अपने दिल के काफिए से मिला सकता है। इस तरह दुनिया के सब एकाकी दिल, वे पंक्तियां हैं, जो मिलकर जिंदगी का एक महान् गीत बनाती हैं, पर जिसमें हर कोई एक पंक्ति का कवि है—एक अकेली पंक्ति का।

—अमृता प्रीतम (काला गुलाब), प्रेषक—आर० सी० खन्ना

ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो ईश्वर के राज्य में नहीं होती। जितने भी सत्य और आवश्यक तत्व हैं, वे सभी उसमें विद्यमान हैं। और ईश्वर का यह राज्य अपने अंतर में ही तो है। मैं ऐसे धनवान लोगों को जानता हूं, जो बहुत सुखी हैं; क्योंकि वे उदार, दयालु, पवित्र और उल्लासयुक्त हैं। लेकिन मैं ऐसे धनवान लोगों को भी जानता हूं, जो बहुत दुखी है। इसका कारण यही है कि अपने धन और साधनों का अपने ही सुख के लिए प्रयोग करके उन्होंने अपने अंतर में अच्छाई और आनंद की आत्मा का विकास नहीं किया है।

—जेम्स एलन, अनु० महावीर अधिकारी (सफलता के आठ साधन), प्रेषक—श्याम मनोहर व्यास

मोक्ष पाने के लिए कितने लोग तीर्थों की ओर जाते रहते हैं। सब तीर्थ देखने पर वे समझते हैं कि स्वर्ग में उनके लिए एक कोना सुरक्षित हो जायेगा। साधु और महात्माओं के दर्शन करने का मौका बहुत कम लोग छोड़ते हैं। लेकिन हमें यह नहीं मालूम कि सुख और शांति का झरना हमारे अंदर ही है।

—श्रीमन्नारायण (इतनी परेशानी क्यों), प्रेषक—हरिदास सोनी

मैं हल्के अंधकार में आंख बंद किये-किये सोच रहा हूं। उच्च-वर्ग और निम्न-वर्ग का संघर्ष तो अनिवार्य है, पर इसमें यह मध्य-वर्ग क्या रोल प्ले करेगा? सबसे अधिक शिक्षित और संवेदनशील होकर भी क्या सचमुच जैसा कहा जाता है, यह निराशा की अकर्मण्यता से ही घिरा रहेगा। इसकी सारी क्रियाशीलता, इसकी बुद्धि और प्रतिभा सदा दूसरों का बोझा ढोने के काम आयेगी।

—डा० रघुवंश (हरी घाटी), प्रेषक—मधुकर खरे

जमाने की हवा

सादिक हुसैन

गांववाले तो अपने गांव की बहू-बेटियों की तरफ आंख भरकर देखना तक भी गुनाह समझते थे। लेकिन अपरिचित चायवाले की दूकान में बैठे हुए मुस्टंडों की गुस्ताख निगाहों पर तो अब लंबरदार का भी बस न चलता था।

इस पांच सौ की आबादी में जब पहले शहरी ने चाय की दूकान खोली थी, तो बड़े बूढ़ों ने उसके विरुद्ध आवाज उठाई थी। औरतों ने शहरी लफंगों को कोसने दिये थे। नौजवान छुरियां हाथों में लेकर मारने-मरने पर तुल बैठे थे, लेकिन पटवारी और लंबरदार ने समझा-बुझाकर उन्हें ठंडा कर दिया था। लंबरदार ने गांववालों को बताया था कि सरकारी योजना के अनुसार गांव के पास नदी में एक बंद बांधा जायेगा। इस काम में करोड़ों रुपया खर्च होगा। नदी से विद्युत-शक्ति उत्पन्न की जायेगी। बाढ़ की रोकथाम की जायेगी, सिंचाई के लिए नहरें निकाली जायेंगी। भरपूर फसलें होंगी। हजारों मजदूरों की जरूरत होगी। पैसे इतने मिलेंगे कि वारे-न्यारे हो जायेंगे। गांव की किस्मत जाग उठी है। सांई बाबा की बरकत से अब गांव में हुन (सोना) बरसेगा। बंद बांधने का काम शहरियों को करना होगा। वह लोग इस इलाके में पक्की सड़कें बनायेंगे, इमारतें खड़ी करेंगे, बड़ी-बड़ी मशीनें लायेंगे, दफ्तर और दुकानें खोलेंगे, सभ्यता का प्रकाश लायेंगे ......।

लंबरदार की बातें सुनकर गांववालों का क्रोध क्षण-भर में ठंडा हो गया। मंगू चमार ने दिल में सोचा था, यह सब खुदा की देन है। उसके विचार में नदी किनारे लूट मचनेवाली थी और इस लूट में लक्ष्मी उस व्यक्ति के कदम चूमनेवाली थी, जिसकी भुजाओं में शक्ति होगी। वर्षों से जूतियां गांठते-गांठते उसके बाजुओं की मछलियां उभर आयीं थीं। मंगू को अपने खुरदरे हाथों की पकड़ पर भी पूरा-पूरा विश्वास था। उसे अच्छी तरह याद था कि उसकी बिरादरी के एक मोची ने कलकत्ते की लूट में बहुत-सा रुपया समेटा था और अब वह शहर में एक बहुत बड़ा ठेकेदार था और एक लंबी लाल रंग की मोटर का मालिक। मंगू जानता था कि इंसान एक रात में धनवान बन सकता है, केवल उस समय जब खुदा के हुकुम से कहीं लूट मचे, सहसा कहीं आग लगे और जिसका दिल जिन्दा हो, वह शोलों में कूदकर तिजोरी को छाती से लगा

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट

से आप के कपड़े चमक उठते हैं!

S. 56-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

ले सकत
लम्ब
वहीं बैठे
पर एक
खो गया
जिसकी
सुथरी ट
और सा
ईंटें पैदा
घर के
रंगीन प
खींच-खीं
शेरू
सारी भैं
लंग
दुकान व
गद्दी पर
फज
में पाय
तकदीर
तल्लीन
हर
सार ए
लगा।
कच्चे
हुई पग
छनकर
लहाने
लगी
नक्शा
पर हर
१९६५

ले सकता है ।

लम्बरदार की बातें सुनकर दत्ता मिस्तरी वहीं बैठे-बैठे अपनी उंगली से कच्ची धरती पर एक पक्के मकान का नक्शा बनाने में खो गया था । एक लाल ईंटों का मकान, जिसकी दीवारों की दरजों में सीमेंट की सुथरी टीप होगी । वह अपनी करनी, बसूली और साहूल द्वारा मिट्टी की ईंटों से चांदी की ईंटें पैदा करेगा और फिर उसकी पत्नी उस घर के आंगन में फतेहजंग की बनी हुई रंगीन पीढ़ी पर बैठकर मथानी की डोरियां खींच-खींचकर दही बिलोयेगी ।

शेरू गूजर ने दिल-ही-दिल में मंडी की सारी भैंसें खरीद डाली थीं ।

लंगड़ा करमू मन-ही-मन में परचून की दुकान को ठोकर मार कर शहर में आढ़त की गद्दी पर जा बैठा था—

फजलू बढ़ई विचारों की दुनिया में, विरसे में पाया हुआ तेशा और रंदा लेकर अपनी तकदीर को अपनी इच्छानुसार गढ़ने में तल्लीन हो गया था ।

हर व्यक्ति अपनी-अपनी बिसात के अनुसार एक सुनहरे भविष्य का स्वप्न देखने लगा । इस काल्पनिक संसार में गांव के कच्चे रास्तों, खेतों की मेड़ों और बलखाती हुई पगडंडियों पर चांदी की पाजेबें छन-छनकर बज उठी थीं । हरे-भरे खेत लहलहाने लगे थे । धरती सोना उगलने लगी थी । दिमागों में हर ओर मेले का नक्शा खिच गया था । सांई बाबा के मजार पर हर साल मेला लगता था । गत वर्ष के मेले की [illegible] के दिलों में अभी ताजी थी । हर व्यक्ति ने सुन रखा था कि सांई बाबा कुएं के मुंह पर चादर बिछाकर नमाज पढ़ा करते थे । उनके चमत्कारों से बच्चा-बच्चा परिचित था । श्रद्धालुओं को यह सुनकर बड़ी खुशी हुई थी कि उस मैदान में जहां सांई बाबा का मजार था—यद्यपि रहने के बंगले बनाये जायेंगे, लेकिन मजार ज्यों-का-त्यों अटल रहेगा । सांई बाबा का झंडा इसी प्रकार लहराता रहेगा । किसी ने खबर उड़ाई थी कि मजार को ज्यों-का-त्यों रखने के लिए सरकार को कालोनी के नक्शे में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन करने पड़े हैं ।

कुछ दिनों में बुलडोजर, मोटर ग्रेडर और रोड रोलर की एक संगठित टुकड़ी आ पहुंची । मशीनी शक्ति ने बहीकड़ और सरकंडों का जंगल एक दिन में साफ कर दिया । धारदार फलों के सामने ढाक के पेड़ अड़ाड़ाहम नीचे गिर पड़े । बड़ी-बड़ी मशीनों ने टीलों-टब्बों पर रंदा फेरफेरकर रास्ता समतल कर दिया । पक्की सड़क बन गयी । तंबू गाड़ दिये गये । इक्का-दुक्का मोटरकार दिखाई देने लगी । गांव की पहली गली के मोड़ के ठीक सामने अपरिचित चायवाले की दूकान में अब धमाचौकड़ी मची रहती थी । वहां शहर से आये हुए कारिंदे कारीगर, खाली असामियों के उम्मीदवार, भविष्य के साधारण ठेकेदार और उनके बेफिक्रे साथी चाय पीते-पिलाते, गप्पें मारते और मनोरंजन के लिए अपनी निगाहों को बेलगाम कर देते । नवागतों का

मसूढ़ों के कष्ट व दंतक्षय

के इलाज में

फोरहन्स

टूथपेस्ट के

आश्चर्यजनक परिणाम

दांत-डाक्टर द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

यह सन १९४८ की घटना है, जब मेरे मसूढ़े कुछ नर्म पड़ गये थे-खून भी निकलने लगा था। मेरे पति को मेरे दांतों पर बड़ा नाज था। उन्होंने फोरहन्स इस्तेमाल करवाया। तब से मैं नियमित रूप से फोरहन्स इस्तेमाल कर रही हूं, और इस का लाभ भी असाधारण रूप से अच्छा रहा।

एच. के., भिलाईनगर

पिछले तीन सालों तक मैं दांत की बीमारियों से परेशान रहा। एक मित्र की सलाह पर मैंने फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया, और एक महीने के बाद यह देख कर आश्चर्य हुआ कि दांतों की तकलीफ न सिर्फ मिट गयी, बल्कि मेरे दांत भी बहुत ही चमकीले निखर पड़े। अब मैं फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कर रहा हूं।

पी. पी., बम्बई।

मैं आप को सूचित करना चाहती हूं कि १२ साल की उम्र से ही मैं फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर रही हूं। इतना ही नहीं, मेरे घर के सभी लोग इसी टूथपेस्ट को इस्तेमाल कर रहे हैं, क्यों कि दांतों को चमकीला सफेद और मसूढ़ों को मजबूत व स्वस्थ रखने के लिए हमने इसे बहुत ही फायदेमंद पाया।

(श्रीमती) के. बी., बैंगलोर

★ ये पत्र ज्योफ्री मॅनर्स एंड कं. लि. के किसी भी दफ्तर में पढ़े जा सकते हैं

मुफ़्त-दंत-रक्षा की सचित्र पुस्तिका

मसूढ़ों के रोग और दंत-क्षय से बचने की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आज ही "CARE OF THE TEETH & GUMS" पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ़्त प्रति के लिए लिखें। साथ में डाक-खर्च के १५ नये पैसे के टिकिट भी भेजें। पता: डिपार्टमेंट ओ-६ मॅनर्स डेंटल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१

Forhan's
REGISTERED
FOR THE GUMS
BRUSH YOUR TEETH WITH IT

... और पूरी जोड़ी के लिए इस्तेमाल करें

फोरहन्स दोहरे असरवाला टूथब्रश

एकमात्र टूथब्रश,
★ जो मसूढ़ों की धीमे-धीमे मालिश,
★ साथ में दांत भी साफ करता है

B.27-HIN

यह रवैय
रियों ने
माताएं
शरीर चु
गया। य
बौल उ
एक
हथ-छुट
देर में सै
बना स
टोके प
साफे क
गये, दां
आंखों
गबरू
निकले
देखकर
बड़े बूढ़
भी था
दार ने
थान खु
एक
हुआ
के इम
बूढ़ों ने
में माल
एक प
था।
हो गये
हो जा
गांववा
१९६

यह रवैया गांववालों को बहुत अखरा। कुंवारियों ने उस राह से आना-जाना छोड़ दिया! माताएं भी यदि उधर से गुजरतीं, तो अपना शरीर चुराकर। कुएं पर जाने का मार्ग बदल गया। यह सब कुछ देखकर नया खून एकदम खौल उठा।

एक दिन सैदू के लुहारखाने में गांव के हथ-छुट नौजवानों ने नाजिश की। जितनी देर में सैदू गरम लोहे को कूटकर एक खुरपी बना सका, उतनी देर में छुरियां, लट्ठ और टोके पहुंच गये। आन-की-आन में सबने साफे कसकर, बांध लिये। जवान सीने तन गये, दांत भिंच गये, नस नस फड़क उठी, आंखों से ज्वाला फूट निकली। बिफरे हुए गबरू हल्ला बोलने का इरादा करके बाहर निकले। लेकिन अपने सामने एक दीवार देखकर पीछे हट गये। वह दीवार गांव के बड़े बूढ़ों की थी। उनमें गांव का लंबरदार भी था और मस्जिद का इमाम भी। लंबरदार ने एक उपदेश पूर्ण भाषण झाड़ा। नौजवान खून का-सा घूंट पीकर रह गये।

एक दिन गांव में बड़ा जोरदार धमाका हुआ। लोग सन्नाटे में आ गये। मस्जिद के इमाम ने खुदा की पनाह मांगी। बड़े-बूढ़ों ने समझा कि कयामत आ गयी है। बाद में मालूम हुआ कि सरकारी इंजीनियरों ने एक पहाड़ी को डायनामाइट से उड़ा दिया था। धीरे-धीरे गांववाले धमाकों के आदी हो गये। आये दिन कोई-न-कोई नयी घटना हो जाती। हर रोज शहरवाले आते और गांववालों के मन में खड़े पहाड़ का कोई हिस्सा उड़ाकर चले जाते। उस दिन भी तो गांव में एक धमाका हुआ था, जिस दिन कुछ शहरी औरतें गांव की गलियों में यों ही टहलने आ निकली थीं। उनके होंठों पर सुर्ख गुलाब खिला हुआ था और गालों पर अंगारे दहक रहे थे। लम्बे-लम्बे नाखूनों पर अरुणिमा झलक रही थी। एक सतुलित शरीर की औरत के सर के बाल कटे हुए थे। उसकी चोली और साड़ी के बीच कमर का नंगा भाग गांववालों को घूर-घूरकर देख रहा था। एक ने ऊंची एड़ी की सेंडिल पहन रखी थी। उसकी कमीज़ सिमटकर उसके शरीर का एक विद्रोही अंग बनी हुई थी। उसने अपनी असली भवें साफ करके पेंसिल से नकली भवों की कमानें खींच डाली थीं। वह एक चावी भरा हुआ खिलौना मालूम हो रही थी। वह जंचे-तुले कदमों से चल रही थी। देखनेवालों को यों अनुभव हो रहा था, जैसे कदम उठाने और रखने की यांत्रिक क्रिया में यदि उससे एक हल्की-सी चूक, एक छोटी-सी गलती भी हो गयी, तो चाबी भरे हुए खिलौने की सारी गरारियां एकदम टूट जायेंगी।

उस दिन शहरी औरतों की टुकड़ी सेंट की भीनी-भीनी सुगंध लेकर गांव में आयी। गांव के नवयुवकों ने उन्हें कनखियों से देखा। उन्हें यों अनुभव हुआ जैसे कड़ी धूप में चलते-चलते दूर से वृक्षों का झुंड दिखाई दे गया हो, जिसकी ठंडी छांव में सुस्ताकर यात्रियों की थकान दूर हो जाती है। उनका जी चाहा कि वह औरतें गांव की गलियों में इसी

आपकी प्रिय पनामा संबंधी कुछ तथ्य

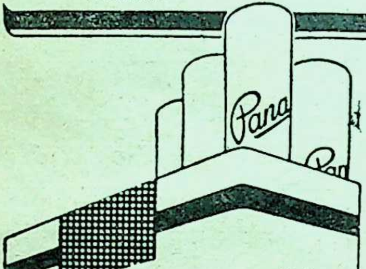
Pana
Pan
Panama
20
CIGARETTES
Specially blended for a cool and pleasant smoke from selected Virginia Tobacco leaves.

१ शीतल और सौम्य धूम्रपान के लिए आपकी पनामा चुनी हुई वर्जीनिया तम्बाकुओं को मिश्रित करके बनायी जाती है।

२ भारत के कोने-कोने में लोकप्रिय पनामा की बिक्री अपने दर्जे की सबसे ज्यादा बिकनेवाली सिगरेटों में है।

३ देश के कई भागों में पनामा बिक्री में अव्वल भी है।

४ बरसों पहले पनामा द्वारा अपनाया गया २० सिगरेटों-वाला 'पाउच' पैकिंग आज भी लोकप्रिय है।

पनामा
पीना और पिलाना
एक उम्दा बात है!

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड बम्बई-५८

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT. (P) 635 A Greens' Advtg.HIN.

प्रकार घ
दरांती
गा सकें
ओट से
में खुसर
गर्म व ह
हिलाकर
ने वर्तम
की कुश
दुआ मां
शहर
झिझक
किसी ने
प्रयत्न न
चीज दे
पर चिप
बातें क
कीं पीठ
तो वह
भर के
निगाहों
से लदी
एक ओ
कर बैल
ढर्रे पर
पूछकर
चेहरों
आंगन
चोटी
दुनिया
एक स
१९६४

प्रकार घूमती रहे, ताकि फसलें काटते हुए दरांती की सीड़-सीड़ में वह अनोखे गीत गा सकें। गांव की औरतों ने दरवाजों की ओट से उन्हें झांक-झांककर देखा, आपस में खुसर-पुसर की, पंजतन पाक के सदके, शर्म व हया की खैर मांगी, बड़े बूढ़ों ने सर हिलाकर दुख प्रकट किया, मस्जिद के इमाम ने वर्तमान पौध के चरित्र और नैतिकता की कुशलता के लिए दोनों हाथ उठाकर दुआ मांगी।

शहरी औरतों की टुकड़ी बिना किसी झिझक के गलियों में घूमती रही। उनमें से किसी ने भी मर्दों को देखकर सर ढंकने का प्रयत्न नहीं किया। उन्हें तो गांव की हर-चीज देखने का शौक था। कच्ची दीवारों पर चिपके हुए उपले देखकर वह आपस में बातें करने लगीं। गले में गुलेल डाले, भैंस कीं पीठ पर बैठा हुआ छोकरा दिखाई दिया, तो वह मुस्कराने लगीं। एक जगह वह क्षण-भर के लिए रुक गयीं। पीछा करती हुई निगाहों के लिए भी पड़ाव आ गया। चरी से लदी हुई बैलगाड़ी सामने से आयी, तो वह एक ओर को हट गयीं। गाड़ीवान ने उचककर बैलों को अंकुश मारा। पहिये तेजी से ढर्रे पर चलने लगे। एक देहाती से पता पूछकर आन-की-आन में चमाचम करते चेहरों की डार उड़कर लंबरदार के घर के आंगन में जा पहुंची। सारे गांव में वही तो चोटी का घराना था। गांव और बाहर की दुनिया में संबंध स्थापित रखने का वही तो एक साधन था। वारदात गांव में हो या उसके आसपास, पुलिस सबसे पहले उसी घर का दरवाजा खटखटाती। गांव की आवाज इसी बिंदु से उभरती थी, पटवारी और गिरधावरों की निहाटी पर चोटें खाती थी और फिर तहसीलदार की कचहरी में न्याय की तराजू में तुलकर आगे बढ़ती थी। शहरी औरतें गांव के इस विधान से भलीभांति परिचित थीं।

लंबरदार के घर के आंगन में दो जवान औरतों ने मेहमानों का स्वागत किया। एक ने बसंती रंग का दुपट्टा ओढ़ रखा था और दूसरी ने गुलाबी। गदराये हुए शरीर, करारे हाथ-पांव, शक्लो-सूरत से दोनों बहनें-सी लगती थीं, लेकिन यह फैसला करना कठिन था कि बड़ी कौन है और छोटी कौन। वसंती दुपट्टेवाली ने मुस्कराकर बताया कि वह लंबरदारनी है और गुलाबी दुपट्टे वाली है ताजी, उसकी पहलौठी की बेटी। लंबरदारनी ने मेहमानों को बान की चारपाइयों पर बिठाया। इधर-उधर की बातें होने लगीं।

आंगन के एक कोने में नांद के पास एक बैल घुटने अंदर को तै किये पेट के बल धरती पर बैठा जुगाली कर रहा था। भूसेवाली कोठरी से कुड़क मुर्गी की कुर-कुर सुनाई दे रही थी। कमर तक ऊंची दीवार के उधर दूसरे घर का आंगन था। दीवार से एक हाथ इधर शहतूत का वृक्ष खड़ा था, जिसकी डालियां फैलकर दो घरों में बंटी हुई थीं। सीढ़ियों की डाट के नीचे, घिडौंची पर पानी से भरे घड़े रखे थे। एक घड़े का

फिलिप्स

आदि
मिल्क ऑफ
मैग्नेशिया

PHILLIPS
MAGNESIA
GENUINE
PHILLIPS
MILK OF MAGNESIA
CONCENTRATED
SHAKE WELL BEFORE USING

समस्त परिवार के लिये
आदर्श
अम्लनाशक-आरेचक

इस विश्वसनीय उपाय से करोड़ों लोग आराम पाते हैं

केवल एक ही आदि तया असली फिलिप्स मिल्क आफ मैग्नेशिया—अम्लनाशक आरेचक है जिसे सारे विश्वके करोड़ों लोग जानते व व्यवहार करते हैं। कब्ज तथा कब्ज जन्य समस्याओं से निरापद तथा पूर्ण छुटकारा के लिये मिल्क ऑफ मैग्नेशिया से बढ़कर और कोई उपाय नहीं। समस्त परिवार के लिये आरेचक।

रजिस्टर मुद्रा :—डेज मेडिकल स्टोर्स (मैनुफैक्चरिंग) प्रा. लिमिटेड [illegible]

ंदा टपक रहा था, धरती पर ओख भर पानी एकत्रित हो गया था। लाल कलगी-वाला एक मुर्गा इस पानी का एक घूंट लेता और फिर अपनी चोंच ऊंची कर देता। कसी हुई कमीसवाली शहरी औरत ने मुर्गे की यह स्वाभाविक हरकत देखकर अनायास ही दो-एक बार नीले आकाश की ओर देखा। शायद इसलिए कि वह चारपाई की पट्टी पर बैठी हुई थी और उसे बान चुभे जा रहे थे। सहसा उठकर खड़े होना शिष्टाचार के विरुद्ध था और इधर बात-में-बात निकलती जा रही थी। कपड़ों की काट की बात चली, तो कई कहकहे गूंज उठे। लंबरदारनी अपने लम्बे कुर्ते और खुले पांयचे की शलवार का औचित्य पेश करते हुए कुछ झेंप-सी गयी। इजारबंद बुनने और कुरेशिया काढ़ने की बात चली, तो उसने गर्दन ऊंची कर ली। थोड़ी देर में यों मालूम होने लगा जैसे वह वर्षों से एक दूसरी को जानती हैं। लंबरदारनी को शहरी औरतों से मिलकर बड़ी खुशी हुई। वह मेहमानों को दरवाजे तक पहुंचाने आयी। तय पाया कि शहरी औरतें दो-चार दिन के अंदर-अंदर फिर आयेंगी और लंबरदारनी के लिए शहर से लिपस्टिक लायेंगी।

× × ×

रहने के मकानों की नींव खोदने से पहले सरकारी इंजीनियरों ने कालोनी के नक्शे पर पुनः विचार किया। अतएव एक दिन चार फाख्तई रंग के बुलडीजरो ने सांई बाबा के मजार की चारदीवारी को गिराना आरंभ कर दिया। यह खबर गांव में आग की तरह फैल गयी। बूढ़े जवान, सब-के-सब, जो हाथ में आया लेकर झट घरों से बाहर निकल आये। सशस्त्र पुलिस के दस्तों ने चारदीवारी को घेर रखा था। मजार का अपमान होते देखकर गांववालों के कलेजे पिसने लगे। माताओं ने अपने बेटों का दूध बख्श दिया। जिहाद के नारे लगे। शहादत का जाम पीने के लिए श्रद्धालुओं की एक टुकड़ी आगे बढ़ी। ठीक इसी समय लंबरदार की राजनीतिक सूझबूझ आड़े आयी।

लंबरदार बोला—“नीली छतरीवाला सब कुछ देखता है। सांई बाबा जलाली बुजुर्ग थे। जो मशीन मजार के पास जायेगी, चूरा-चूरा हो जायेगी। ड्राइवर अंधा हो जायेगा। आज आकाश में खून की सुर्खी फैलेगी, बिजली कौंधेगी, भयंकर तूफान आयेगा...”

लंबरदार की बातों ने आग पर पानी डाल दिया। गांववाले आकाश की ओर देखने लगे। वह नीलाहट, बादलों के सफेद-सफेद गाले, उड़ती हुई चीलें—सब कुछ खून की सुर्खी में डूब जानेवाला था।

ईमानवालों ने सुन रखा था कि पिछले वक्तों में जब एक जलाली बुजुर्ग के मज़ार को नष्ट करने की नाकाम कोशिश की गयी थी, तो सहसा आकाश में खून की सुर्खी फैल गयी थी। अंत में क्षमायाचना और दान ने गुनहगारों की जान बचायी थी, लेकिन आज तो नीली छतरीवाला चुपचाप तमाशा देख रहा था। आकाश की नीलाहट और बादलों की सफेदी में कोई परिवर्तन न हुआ।

ज्योति

बिजली के
बिल में बचत

पंप-रचना, जल-निकासी, टिकाऊपन और चालू खर्च के लिहाज से 'ज्योति वर्टीकल टरबाइन पंप' भारत भर में सब से उत्कृष्ट है। ४" से २४" व्यास के नलकूप के लिए समुचित। कार्य-शक्ति : घंटे में ४,००,००० गैलन तक, चढ़ाव : ३०० फुट तक

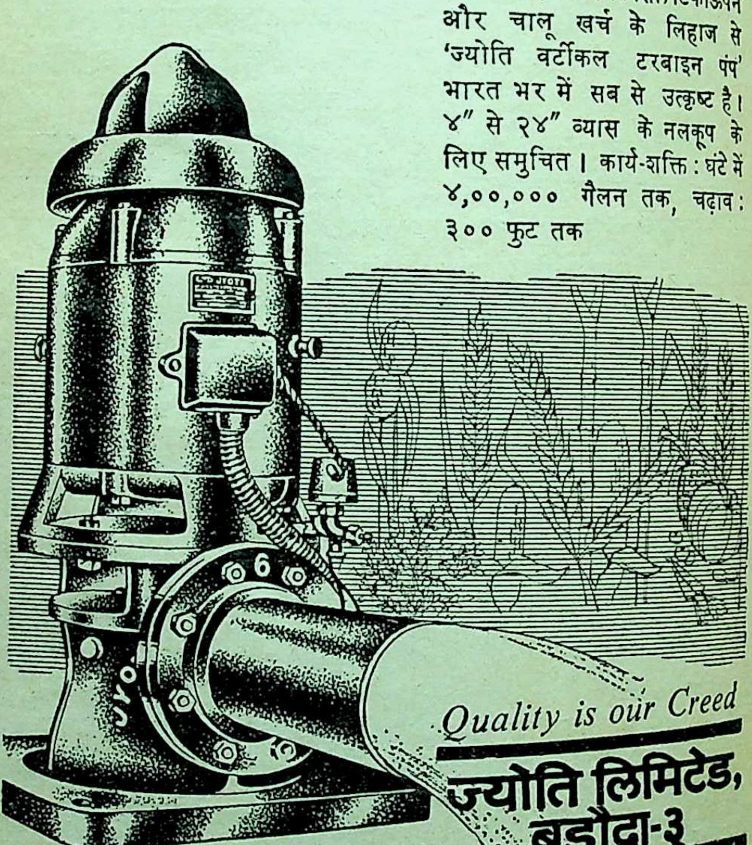

Quality is our Creed

ज्योति लिमिटेड,
बड़ौदा-३

JY-884-HI EVEREST

ब्रांच : बंबई, नयी दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, जयपुर, भोपाल और सिकंदराबाद

चीलें उसी प्रकार उड़ती रहीं, पर सांई बाबा ने टस-से-मस न की। कोलाहल मचाती मशीनों ने देखते-ही-देखते चारदीवारी का सफाया कर दिया। अब एक फाख्तई रंग का बुलडोजर मजार की ओर बढ़ा। गांववालों के कलेजे बल्लियों उछलने लगे। इतने में स्थानीय इंजीनियर दौड़ता हुआ आया। उसने बुलडोजर को रुक जाने का हुक्म दिया। गांववालों की जान-में-जान आयी। सांई बाबा का हरा झंडा फिर दिलों में लहराने लगा। लेकिन दूसरे ही क्षण आठ-दस मजदूर कुदालें और बेलचे लेकर आगे बढ़ गये। खुदाई आरंभ हो गयी। किसी मजदूर पर मौत की गशी न छायी, किसी के हाथ न टूटे, कहीं बिजली न कौंधी, कोई तूफान न आया। दो मजदूरों ने कब्र में कूदकर सांई बाबा का ताबूत उठाकर बाहर फेंक दिया। ईमानवाले हक्का-बक्का रह गये। पांव तले की जमीन निकल गयी। वह ताबूत न था, बल्कि एक वृक्ष का तना था। पहले लंबरदार और पटवारी ने और फिर गांव के हर व्यक्ति ने कब्र का मुआयना किया। शक-शुबे की कोई गुंजाइश न रही। वहां कोई कब्र न थी। केवल एक खड्डा-सा था, जिसमें से वृक्ष का तना निकाला गया था। वही वृक्ष का तना सांई बाबा था, जिसके मजार पर श्रद्धालुओं का तांता बंधा रहता था। जहां चिरागी आती थी, उर्स होता था, मेला लगता था, मुजाविर की पांचों उंगलियां घी में रहती थीं।

गांववाले मुजाविर को ढूंढ़ने लगे। उसी के पूर्वजों ने इस सौदागिरी की बुनियाद डाली थी। काफी भागदौड़ के बाद भी मुजाविर का पता न चल सका। बाद में मालूम हुआ कि वह गांव से किसी का घोड़ा चुराकर कहीं भाग गया।

× × ×

अब गांववाले खुश थे। हुन बरसना शुरू हो गया था। पहले मुर्गी का अंडा एक आने में बिकता था और उसके लिए भी चलकर शहर जाना पड़ता था। अब घर बैठे-बिठाये तीन आने मिलने लगे। घी के लिए शहरवाले पेशगी रकमें दे जाते। मांग बढ़ गयी, तो सुघड़ औरतों ने चोरी-छुपे बनस्पति की मिलावट की कला सीख ली। आरंभ में जब वह सौगंध खाकर अपने घी को शुद्ध बतातीं तो उन्हें झिझक-सी होती। धीरे-धीरे अनाड़ीपने ने कला का रूप धारण कर लिया। अब बच्चे के सर की कसम एक चटपटी चीज बन गयी, जिसे खाकर उनकी भूख और तेज हो जाती। गाजर-मूली जिसे कोई पूछता न था, तराजू में तुलकर बिकने लगी। दूध की खपत का तो यह हाल था कि बेचारे सीधे-सादे देहातियों को शहरियों की मांग पूरी करने के लिए पानी का सहारा लेना पड़ा।

अब इस इलाके में दिन-भर बातें चलती रहती थीं। पहले गांववाले पैदल चलकर शहर जाते थे, अब उन्हें अगर एक-आध घंटा इंतजार भी करना पड़ता, तो वह बस ही में यात्रा करते।

पक्की सड़क के किनारे हर पचास गज

के अंतर पर बिजली का खंबा गाड़ दिया गया था। ट्रांसफार्मर कायदे से लग गये थे। कालोनी तैयार हो चुकी थी। एक दिन कालोनी में बहुत बड़ा समारोह मनाया गया। उसी रात वहां बिजली के कुमकुमों ने उजाला फैला दिया। फिर तो भारी-भारी मशीनें चौबीस घंटे काम करने लगीं। मंगू चमार यह सब-कुछ दूर से देखता और सोचता कि नदी के किनारे अभी तक लूट नहीं मची। वहां तो सैकड़ों मजदूरों का दिन-भर का काम केवल एक मशीन कुछ घंटे में कर देती थी। लाभ तो उनको हुआ, जिनके पास अंडे और मुर्गियां थीं, घी और दूध था। लेकिन कुछ ही दिन के बाद अंडे मुर्गियां, घी और दूध बेचनेवालों को मालूम हुआ कि इस सौदे में उन्हें घाटा पड़ रहा था। जो चीज उन्हें पहले चवन्नी में मिलती थी, अब आठ आने में भी हाथ नहीं आती। कस्में खा-खाकर होठ सूख गये। बढ़ती हुई आय से नये-नये खर्चे इतने अधिक बढ़ गये कि पांव चादर से बाहर निकलने लगे।

गांव की पहली गली के मोड़ के ठीक सामने अपरिचित चायवाले की दुकान में अब दिन-भर ग्रामोफोन रेकार्ड बजते रहते, कहकहे लगते रहते। किसी को देखकर कोई सीटी बजा देता, तो किसी का खून न खौलता। कुंवारियों के शरीर निगाहों की मार खा-खाकर पक्के हो गये। शहरी औरतों की देखादेखी माताएं भी साफ-सुथरे कपड़े पहनकर खुल्लमखुल्ला रास्तों पर चलने लगीं। जवान लड़कियां पानी से भरे घड़े सरों पर रखे बेधड़क जातीं शहरियों को देखकर मुस्कराना भी सीख लिया था।

अब सैदू के लुहारखाने में भी दिन-भर केतली में पानी खौलता रहता था। गांव के नौजवान कभी गुड़ और कभी शक्कर की चाय बनाते, खुद पीते, सैदू को पिलाते, सिगरेट का धुआं अंदर खींचकर नाक से बाहर निकालते और शरीर को सुस्त कर देनेवाली लस्सी पर हजार धिक्कार भेजते।

× × ×

लंबरदार गांव के नौजवानों के लक्षण देखता तो यह कहकर चुप हो जाता कि-"जमाने की हवा ही खराब है। एक दिन जब उसने अपने घर में एक नयी बात देखी, तो भी वह मुंह से कुछ न बोला, लेकिन उसके दिल में एक आग-सी सुलग उठी। लंबरदारनी ने शहरी औरतों की तरह तंग कपड़े पहन रखे थे। लंबरदार को ऐसा लगा मानो लंबरदारनी अपना दुपट्टा उतारकर चौराहे पर खड़ी हो गयी हो।

एक दिन लंबरदार आपे से बाहर हो गया। मना करने के बावजूद लंबरदारनी ने मेकअप कर रखा था। उसके होंठों पर गुलाब खिला हुआ था, गालों पर अंगारे दहक रहे थे।

लंबरदार ने अपनी छुईं सीधी कर ली।

"बाबुल!" ताजी दौड़कर सामने आ गयी, लंबरदार ने आंखें नीची कर लीं।

ताजी ने भी कसे हुई वस्त्र पहन रखे थे।

लंबरदार यों लड़खड़ाया, मानो किसी ने दुनाली बंदूक दाग दी हो।

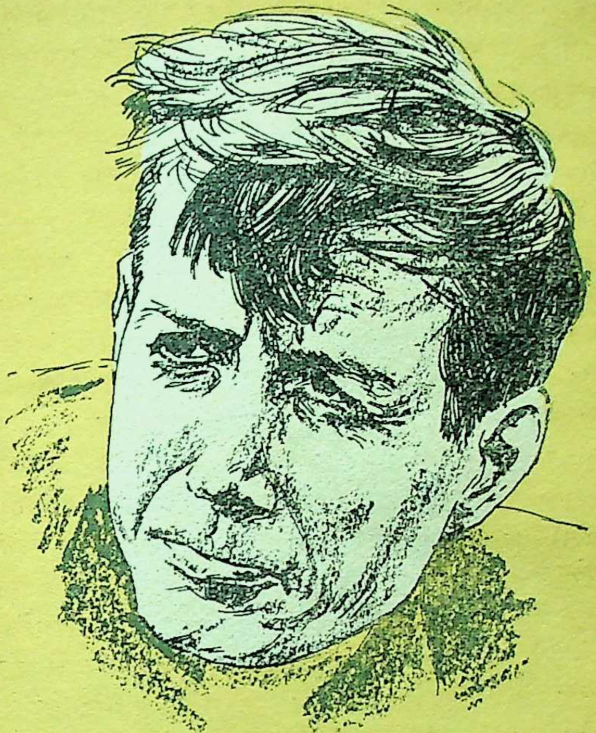

नया स्वर

येव्गेनी येव्तुशेंको

स्तालिन के शासन के मध्यकाल तक सच्ची रूसी कविता मुरझा चुकी थी; तब तक ब्लाक, मायाकोव्स्की, येसेनिन, पास्तरनाक और अखमातोवा आदि सच्चे कवि या मर चुके थे, या चुप्पी साध चुके थे। किंतु पिछले दस-बारह वर्षों में कवियों की एक नयी पीढ़ी ने चिरंतन सत्यों को नूतन दृष्टि से देखकर, स्वानुभव-स्वचिंतन की कसौटी पर कसकर रूसी कविता को नया स्वर दिया है। इस नयी पीढ़ी के अग्रणी कवि येव्गेनी अलेग्जांद्रोविच येव्तुशेंको की आत्मकथा का यह सार, जिसे सुखबीर ने प्रस्तुत किया है, कविकर्म और कविधर्म के मर्म को समझने में सहायक है।

कवि की आत्मकथा तो उसकी कविता है । उसके अतिरिक्त और सब कुछ टिप्पणी मात्र है । अगर कवि अपने को व्यक्ति और कवि, इन दो भागों में बांटने का प्रयत्न करे, तो वह कलाकार के नाते आत्मघात कर लेगा ।

कविता को धोखा नहीं दिया जा सकता । कविता ऐसी स्त्री है, जो झूठ को कभी माफ नहीं करती ।

जब आदमी अपने से बचने का प्रयत्न करता है, तो वह दूसरों की जिंदगियों और दु:ख-दर्दों से भी बचने का प्रयत्न करता है ।

लंबे अरसे तक सोवियत कवियों ने अपने निजी विचारों के बारे में, अपने संघर्षों, अपनी उलझनों के बारे में कुछ भी नहीं लिखा ; और लिहाजा दूसरों के कष्टों और संघर्षों के बारे में कुछ नहीं लिखा । इस दौर में लिखी गयी हमारी अधिकांश नयी कविताओं में उन स्थानों के नाम होते थे, जहां कवि का जन्म हुआ, जहां-जहां वह गया, और फिर उसके जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन होता था । परंतु वे कविताएं निर्जीव होती थीं । सब कवियों की कविताओं में एक ही विचारधारा बहती थी ; और इसलिए वे सब एक-सी लगती थीं । हां, कुछ-एक अच्छे कवियों की शैली कुछ अलग जरूर थी । जब तक मनुष्य के विचारों और भावनाओं का वर्णन नहीं किया जाता, उसके बाह्य जीवन का वर्णन निरर्थक है ।

आखिर मुझे अपनी यह आत्मकथा लिखने की जरूरत क्यों पड़ी ? इसलिए कि पश्चिमी देशों में, जहां मेरी कविता से लोग अनजान हैं, पत्र-पत्रिकाओं में मेरे बारे में कुछ इस प्रकार से लेख लिखे गये हैं, जिनसे यह प्रकट होता है कि मैं सोवियत रूस के खिलाफ हूं ।

पर ऐसी बात नहीं है । जिन नये विचारों और भावनाओं को मैं अपनी कविता में व्यक्त करता हूं, उनका अस्तित्व मेरे लिखने के पहले भी सोवियत समाज में था । हां, उन्हें कविता में अभिव्यक्त नहीं किया गया था । अगर मैं उन्हें अभिव्यक्त न करता, तो कोई और करता ।

०००

मेरा जन्म १९ जुलाई १९३३ को जिमा नामक एक छोटे-से रेल्वे जंक्शन में हुआ था, जो साइबेरिया में बेकाल झील के पास है । किंतु मेरा अल्ल 'येव्तुशेंको' यूक्रेनी है। पिछली सदी के अंत में मेरे पड़दादा को यूक्रेन के जिटोमीर प्रांत से साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया था । मेरे दादा अनपढ़ थे और पहले विश्वयुद्ध में सिपाही थे । उन्होंने पूर्वी साइबेरिया में किसान-आंदोलन का संगठन किया था । बाद में 'लाल सेना अकादमी' में उन्हें शिक्षा मिली और वे ब्रिगेड-कमांडर बने ।

आखिरी बार मैंने उन्हें १९३८ में देखा, जब मैं पांच वर्ष का था ।

"आज मैं तुम्हारे साथ पीना चाहता हूं," उन्होंने एक दिन रात के समय मेरे कमरे में आकर कहा था । "तुम मिठाई खाना और मैं वोदका पिऊंगा ।"

"किसके नाम पर पियें ?" मैंने बड़ों के-से लहजे में कहा था ।

"इन्कलाब के नाम पर," उन्होंने कहा ।

इसके बाद मैंने उन्हें कभी नहीं देखा । बाद में मां ने बताया कि उसी रात उन्हें गद्दारी के इलजाम में पकड़ लिया गया ।

उन्हीं दिनों एक बार मैं अपने पिता के साथ परेड देखने गया । मैंने पिताजी से कहा कि मुझे ऊपर उठा लें, ताकि मैं वहां से गुजरते हुए स्तालिन को देख सकूं । मैंने स्तालिन की ओर अपनी लाल झंडी हिलायी और मुझे लगा, स्तालिन ने भी मुझे देखा ।

स्तालिन के व्यक्तित्व में जादू का-सा प्रभाव था । उस समय उसकी हुकूमत में लोगों पर जो अत्याचार हो रहे थे, उनके लिए लोग स्तालिन को जिम्मेदार ठहराने की बात सोच भी नहीं सकते थे । यहां तक कि कई कैदियों ने घोर अत्याचार सहने पर भी जेल की दीवारों पर अपने खून से "स्तालिन जिंदाबाद" लिखा था ।

मेरे माता-पिता की, कई मानसिक कारणों से आपस में नहीं निभ सकी । उन्होंने तलाक ले लिया था ।

मैं अपने पिता का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे बचपन में पुस्तकों से प्यार करना सिखाया था; और मां का अभारी हूं, जिसने मुझे धरती से प्यार करना सिखाया और बताया कि हाथों से काम करने में कितनी शान है । मेरा खयाल है कि अपने अंतिम दिनों तक मैं आधा बुद्धिजीवी बना रहूंगा और आधा किसान ।

अपने पिता की ही बदौलत मैं आठ साल की उम्र में ड्यूमा, फ्लोबी, शिलर, बालजाक, तालस्ताय, शेक्सपियर, वेल्स, जैक लंदन आदि लेखकों को पढ़ गया था ।

उन दिनों मुझे यह नहीं पता था कि मेरे माता-पिता की आपस में अनबन थी और वे सिर्फ मेरी खातिर एक साथ रहते थे ।

०००

२२ जून १९४१ तक मैं एक रूमानी तबीयत का लड़का था और सोचता था कि लोग पुस्तकों में ही दुःख झेलते हैं ।

युद्ध के बारे में मेरी पहली प्रतिक्रिया सौंदर्यपूर्ण थी । मैं मास्को के आसमान में 'सर्चलाइटों' की रोशनियां देखा करता । हमला होने से पहले जब मैं भोंपू की आवाज सुनता, तो बहुत खुश होता । और मुझे सिपाहियों से ईर्ष्या होती, जो शानदार वर्दियां पहने 'मोर्चा' नाम के किसी देश की ओर जा रहे होते थे ।

१९४१ में मुझे अन्य लोगों की तरह मास्को छोड़कर साइबेरिया जाना पड़ा । सोलह घोड़ा-गाड़ियों में स्त्रियां और बच्चे भरे हुए थे । एक महीने में हम जिमा जंक्शन पहुंचे । मुझे लगा, वे सोलह गाड़ियां दुःखों और आंसुओं से भरी हुई आगे बढ़ रही थीं । रास्ते में मैंने तोपों से लदी हुई गाड़ियां देखीं और सिपाहियों के चेहरे देखे । तब मुझे उनसे ईर्ष्या नहीं हुई और न ही वे मुझे पहले-जैसे रोमांटिक लगे ।

जिमा जंक्शन पहुंचने पर मैंने अपने जीवन की सबसे भयानक चीज देखी—१९४१

रंग

जब तुम्हारा मुखड़ा
मेरे तुड़े-मुड़े जीवन पर उभरा,
पहले मैं इतना ही जान सका–
मेरा अपना सर्वस्व कितना दरिद्र है!
तदनंतर
वन पर, सरिता पर, समुद्र पर
उसकी क्या ज्योति ढली
कि रंगों दुनिया में
(जिसमें मैं न जन्मा था)
मेरा जन्म हो गया !
मैं भयभीत हूं, बहुत भयभीत हूं–
यह अनपेक्षित सूर्योदय
पूरा हो जायेगा,
यह रहस्य-उद्घाटन, आंसू औ' संभ्रम
सब खत्म हो जायेगा ।
इससे मुझे रार नहीं –
यह मेरा भय मेरा प्यार है ।
मैं तो इसे पाल-पोस रहा हूं –
मैं जोकि पाल-पोस सकता न किसी
को–मैं फूहड़ चौकीदार प्यार का ।
भय मुझे घेरे हैं ।
मुझे इसका भान है
कि ये क्षण क्षणिक हैं
औ' मेरी आंखों के रंग उड़ जायेंगे
तुम्हारे मुखड़े के छिपते ही ।

–येव्गेनी येव्तुशेंको

में होनेवाले [illegible] । नौजवान मोर्चों पर जा रहे थे। उनके वापस लौटने की कोई आशा नहीं थी । उनमें से बहुतों की सगाइयां हो चुकी थीं और उनकी होनेवाली पत्नियों ने उनसे विवाह करना मंजूर कर लिया था–यद्यपि वे जानती थीं कि एक या दो दिन ही अपने पतियों के संग बिताकर वे विधवा हो जायेंगी । ये बहुत ही भयानक विवाह थे, जिनका वर्णन मैंने अपनी 'शादियां' नामक कविता में किया है ।

शांति को केवल वही लोग समझ सकते हैं, जो युद्ध से परिचित हों । मैं युद्ध का आभारी हूं कि उसने मुझे 'शांति' का अर्थ समझाया । मैं युद्ध का इसलिए भी आभारी हूं कि उसने मुझे मेरे देश को समझने में मदद दी ।

उन दिनों कागज की बहुत कमी थी। एक छोटी-सी कापी एक सेर मक्खन के बदले में प्राप्त हो सकती थी । स्कूलों में हम अखबारों के हाशियों पर लिखा करते थे । उन दिनों मैंने एक उपन्यास लिखने की योजना बनायी । उसके लिए मैंने मार्क्स और एंजल्स की लिखी दो पुस्तकें चुरा लीं, जो मेरी दादी की थीं, । साल-भर में उनकी पंक्तियों के बीच की खाली जगह में उपन्यास लिख डाला । दादी ने मेरी यह चोरी माफ कर दी । "खैर, इससे तुम अच्छे मार्क्सवादी बन जाओगे ।" उसने मेरे सिर को थपकाकर कहा था ।

मेरा खयाल है कि उसका यह कहना गलत साबित नहीं हुआ । मैंने अभी कविता

लिखनी
लोकगीत
गांवों में
जा रहा
अनमोल
इन्हीं लो
रूसी भाष
गांवों
बर्फ की
फैक्टरिय
लोकग
जंगल 'ट
था। इस
सो मैं भ
लिखने ल
लिखना
पहला शि
१९४
वहां मैंने
देखा ।
चल रहे थ
स्त्रियों क
से गुजरी
में मारा
बेटा । ज
आंखों में
में से गु
हालत थ
तभी
अपने को
एक लंगड़े

लिखनी शुरू नहीं की थी। पर अकस्मात लोकगीत, मुहावरे और कहावतें, जो मैंने गांवों में सुनी थीं, अपनी कापी में लिखता जा रहा था, जैसे मुझे डर हो कि कहीं यह अनमोल खजाना खो न जाये। आखिर इन्हीं लोकगीतों और कहावतों द्वारा मुझे रूसी भाषा की सुंदरता का भान हुआ।

गांवों की भाषा शुद्ध थी—ताजी अनछुई बर्फ की तरह। पर शहरों की भाषा में मुझे फैक्टरियों का धुआं मिला हुआ दिखाई दिया।

लोकगीतों में मुझे साइबेरिया के कुंवारे जंगल 'टायगा' की महक का आभास होता था। इस जंगल को मैंने जी भरकर देखा था। सो मैं भी लोकगीतों की शैली में कविता लिखने लगा। लोग पूछते हैं, मैंने कविता लिखना किससे सीखा? वास्तव में मेरा पहला शिक्षक 'टायगा' है।

१९४१ में मां मुझे वापस मास्को ले आयी। वहां मैंने अपने देश के दुश्मनों को पहली बार देखा। बीस हजार जर्मन कैदी सड़क पर चल रहे थे। सड़क के दोनों ओर अधिकांशतः स्त्रियों की भीड़ थी, जो युद्ध की तबाही में से गुजरी थीं। उनमें से किसी का पति युद्ध में मारा गया था, तो किसी का भाई अथवा बेटा। जर्मन कैदियों को देखते हुए उनकी आंखों में घृणा थी। वे कैदी भी युद्ध की तबाही में से गुजर कर आये थे। बहुत दयनीय हालत थी उनकी भी।

तभी एक स्त्री आगे बढ़ी और उसने अपने कोट के अंदर से कोई चीज निकालकर एक लंगड़े जर्मन कैदी को दी। बस फिर क्या था, सारी स्त्रियां भी कैदियों को रोटी, सिगरेट आदि देने लगीं।

अब वे सिपाही दुश्मन नहीं रहे थे। वे आदमी बन गये थे।

०००

१९४१ में मैं मास्को के एक छोटे-से फ्लैट में अकेला रह रहा था। मेरे माता-पिता तलाक ले चुके थे और मेरे पिताजी दूसरी शादी करके कजाकस्तान में रहने लगे थे। मां मोर्चे पर गयी हुई थी, जहां वह सिपाहियों के लिए गाना गाया करती थी।

मैं गलियों में भटकता हुआ तालीम पाने लगा। गलियों ने मुझे गाली देना, सिगरेट पीना, दांत भींचकर थूक की पिचकारी छोड़ना और हर समय घूंसे तानकर घूमना सिखाया। गलियों ने ही मुझे हर चीज और हर आदमी से निडर होकर जीना सिखाया।

उन दिनों हमारी गली में एक लड़का 'दादा' बना हुआ था। उसे लोग 'लाल' नाम से पुकारते थे। गली में से गुजरनेवाले हर व्यक्ति पर वह अपनी धाक जमाता और जरूरत पड़ने पर उसकी जेब से पैसे निकाल लेता। उसके तीन-चार साथी भी थे।

'लाल' से मुझे बहुत डर लगता था। उस डर को जीतने के लिए मैंने 'लाल' के खिलाफ एक कविता लिखी। अगले दिन वह कविता गली में सभी की जबान पर थी। कविता के क्षेत्र में पत्रकारिता के ढंग की यह मेरी पहली रचना थी।

एक दिन गली में 'लाल' ने मुझे रोककर कहा—"वाह रे कवि! ...तुम कविता लिखते

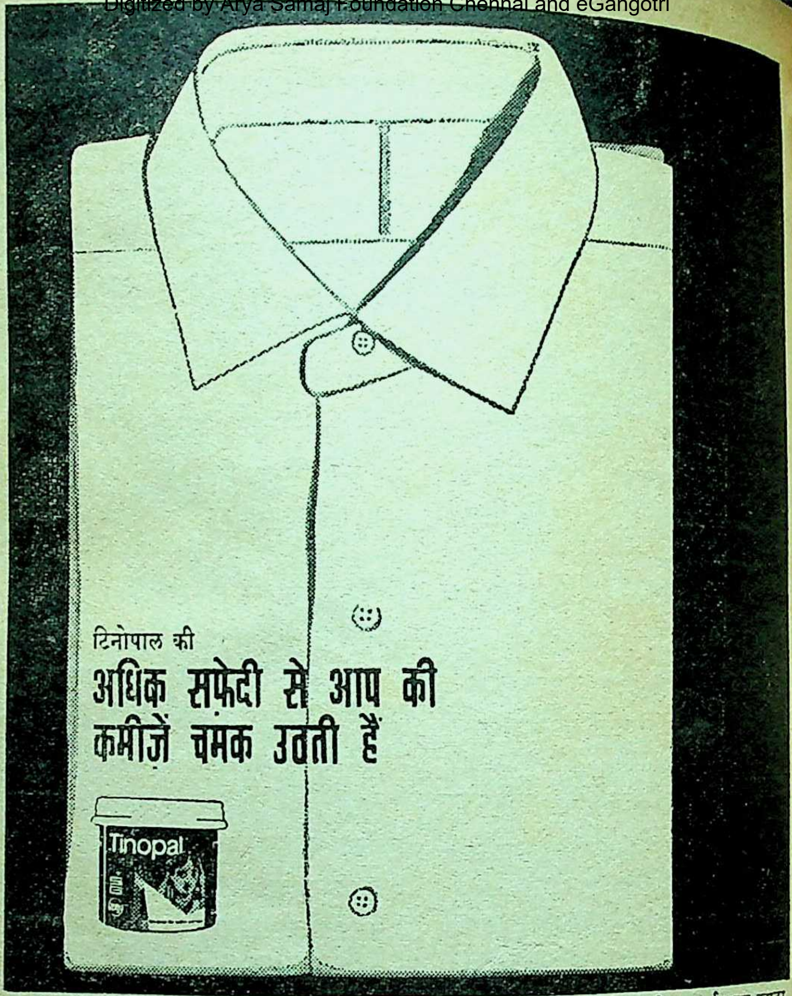
टिनोपाल की
अधिक सफ़ेदी से आप की कमीज़ें चमक उठती हैं
Tinopal

अपने सफ़ेद कपड़ों की धुलाई में टिनोपाल मिलाइये और, फिर देखिये एक अनोखा फ़र्क! हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, चमकदार और उजला होता है! कमीजें, पतलूनें, चोलियां, बच्चों के कपड़े, चादरें और आप के सारे सफ़ेद कपड़े टिनोपाल की अधिक सफ़ेदी से चमक उठेंगे!

नए पिल्फ़र प्रूफ़ डिब्बे में आज ही टिनोपाल ख़रीदिए। बाल्टी भर कपड़ों के लिए केवल ½ छोटा चम्मच टिनोपाल काफ़ी है।

थोड़ा सा टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है

टिनोपाल जे. आर. गायगी,
एस. ए. बाल, स्विटज़रलैंड
का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

भारत में बनानेवाले : सुहृद गायगी लिमिटेड, वड़ी वाड़ी, बड़ौदा।
विक्री कार्यालय : एक्स्प्रेस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई १-बी.आर.

Shilpi SGT 226 Hin

हो ?" अ
बेहोश हो
कवि
श्रमिक थ
बिस्तर प
चाहता थ
जा पहुंचा
बदला ले
मैंने
दिनों मुझे
आया, जि
बताये ग
तगड़े आ
अपने एक
ली। ती
का अभ्य
आखि
निकला
मैंने उस
धीरे इस
की चीखें
लगा रो
उस
और उस
से तगड़ो
उन्हें पछ
साथ
के लिए
उनकी ख

मां

हो ?" और मेरे सिर में घूंसा मारा । मैं बेहोश होकर गिर पड़ा ।

कवि के नाते यह मेरा पहला पारिश्रमिक था । मैं कई दिन जख्मी हालत में बिस्तर पर पड़ा रहा । पर मैं बदला लेना चाहता था । सो ठीक होते ही उसके सामने जा पहुंचा । इस बार फिर मैंने मार खायी । बदला लेने की भावना और बढ़ी ।

मैंने व्यायाम करना शुरू किया । उन्हीं दिनों मुझे एक जापानी किताब का खयाल आया, जिसमें कुश्ती के कुछ ऐसे दाव-पेंच बताये गये थे कि कमजोर आदमी अपने से तगड़े आदमी को पछाड़ सकता था । मैंने अपने एक हफ्ते का राशन देकर वह किताब ली । तीन हफ्तों तक मैं उसमें बताये दावों का अभ्यास करता रहा ।

आखिर मैं 'लाल' का मुकाबला करने निकला । गली में ही उससे मुठभेड़ हुई । मैंने उसकी कलाई पकड़ ली और उसे धीरे-धीरे इस तरह मरोड़ना शुरू किया कि उसकी चीखें निकल गयीं । वह गिर पड़ा और लगा रोने-बिलखने ।

उस दिन से वह गली का 'दादा' न रहा । और उस दिन के बाद मैंने सीखा कि अपने से तगड़ों से डरने की जरूरत नहीं है । बस उन्हें पछाड़ने का ढंग आना चाहिये ।

साथ ही मैंने यह भी सीखा कि कवि होने के लिए कविताएं लिखना ही काफी नहीं है, उनकी खातिर लड़ना भी सीखना होगा ।

०००

मां जब मोर्चे पर से लौटी, तो बीमार थी । मोर्चों पर वह ट्रकों या टैंकों पर खड़ी होकर दिन में कई-कई बार गाया करती थी । वह आंधी-पानी में भी गाया करती थी । अंत में उसकी आवाज फट गयी । उसने मुझे बताया कि सिपाही उसके सबसे कृतज्ञ श्रोता थे । मास्को आकर वह एक थियेटर में गाने लगी ।

विजय-दिवस आया । लोग बेहद खुश थे । लोग रो रहे थे, हंस रहे थे और वोदका पी रहे थे । युद्ध खत्म हो गया था । हम जीत गये थे ।

उस दिन मैं 'फोरम' सिनेमा हाल में गया । वहां सिपाहियों और स्त्रियों की भीड़ थी । बेहिसाब वोदका पी जा रही थी ।

तभी मैंने अपनी मां को स्टेज पर गाते हुए सुना । उसकी आवाज में अब पहले का-सा आकर्षण नहीं रहा था और उसे कोई नहीं सुन रहा था । चारों ओर शोर था और भीड़ बढ़ती जा रही थी । विजय-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था, जिसके लिए दो करोड़ रूसियों ने अपनी जानें कुर्बान कर दी थीं और मेरी मां ने अपनी आवाज ।

०००

मां को मेरी खातिर काफी तकलीफें भी उठानी पड़ीं । एक बार मैं पेशेवर चोरों में शामिल हो गया था । एक बार किताबों का चोर-बाजार करनेवालों के साथ मिल गया था । हर बार मां ही मेरा उद्धार करती ।

स्कूल में मैं अच्छा विद्यार्थी नहीं था । भौतिक विज्ञान मेरे कुछ भी पल्ले नहीं

खाँसी से छुटकारा पाने के लिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

लाल लेबल

लीजिए

शक्ति देता है
Waterbury's
Trade Mark *
Compound
WITH
Creosote and Guaiacol
470 ml.
ALCOHOL CONTENT 9.5% V/V
MADE IN INDIA BY
STANDARD LABORATORIES INC., U.S.A.

हठीली खाँसी से कमज़ोरी आजाती है और शरीर की रोग-निरोधक शक्ति घट जाती है। वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड तीन तरह से असर करता है—आराम पहुँचाता है, शक्ति पैदा करता है और बीमारियों का मुक़ाबला करता है। इसके सक्रिय तत्त्व 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' खाँसी में आराम पहुँचाते हैं, लोहा तथा दूसरे बलवर्धक तत्त्व, जौ तथा प्लीहा के सत्त्व भूख बढ़ाते हैं, फिरसे शक्ति पैदा करते हैं तथा शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं जिससे बीमारी के पलटने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं।

बारहों महीने रोग-निरोधक शक्ति क़ायम रखने के लिए लाल लेबलवाला वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड नियमित रूप से पीजिए।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड में मौजूद 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' श्वास-तंत्र को रोगाणुओं से मुक्त रखते हैं और बलगम निकालते हैं, फेफड़ों को साफ़ रखते हैं, खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने में मदद करते हैं और रोगाणुओं को उभरने व फैलने से रोकते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम,
साँस की तकलीफ़ और
दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने की शक्ति देता है

वॉर्नर-लैम्बर्ट फ़ार्मास्यूटिकल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस्. ए. में संस्थापित)

पड़ता था । मैं आज तक नहीं जान पाया कि बिजली क्या है और कहां से आती है । मैं भाषा शुद्ध लिख सकता था; परंतु व्याकरण में मुझे हमेशा कम नंबर मिलते थे । मैं सोचता कि जो सही भाषा लिख सकता हो, उसे व्याकरण के नियम याद करने की जरूरत ही क्या है ?

रोटी और सत्य

विपदाएं असंख्य थीं
जीवन-संरक्षण की चिंताएं अनंत थीं
श्रम से उनकी कमर दोहरी हो गयी
किंतु हर बार यही देखने में आया कि
रोटी वे न खाते थे,
रोटी उन्हें खाती थी ।
गोडाई, कटाई, सफाई
खेतों में, घर में, खलिहान में ।
जहां पर्याप्त रोटी है,
वहां नहीं सत्य का टोटा है ।
मंदगति विचार !
मेरे पड़दादाजी भूखे रहे आजीवन
अनगिनत फस्लें जो मारी गयीं !
यह उनके सपनों का सत्य था,
जीवन का सत्य नहीं ।
['जिमा जंक्शन' से] —*येव्तुशेंको*

एक बार स्कूल में हमारी कक्षा के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की फाइलों की चोरी हो गयी । चोर का पता नहीं लग रहा था; पर अंत में मुझे पकड़ लिया गया । मैं चूंकि बुरा विद्यार्थी समझा जाता था, इसलिए मुझ पर गलत इल्जाम लगाकर मुझे स्कूल से निकाल दिया गया । मैं लाचार था । कई साल बाद जब मैं कवि के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था, तो मेरा एक सहपाठी मिला और उसने मुझे बताया कि वे फाइलें तो उसने चुरायी थीं । वह कक्षा में बहुत सुशील और योग्य विद्यार्थी समझा जाता था ।

स्कूल के दिनों में मैं घर पर बेहिसाब कविताएं लिखता—कई बार तो दिन में दस-दस, बारह-बारह । उन्हें मैं पत्रिकाओं को भेजता और वे लौट-लौट आतीं ।

एक बार मैंने सभी कविताएं एक कापी में लिखीं और 'यंग गार्ड' नाम की पत्रिका को भेजीं । उसके दफ्तर से मुझे बुलावा आया । मैं बस्ता कंधे पर लटकाये वहां पर पहुंचा, तो कवि आंद्रे दोस्ताल ने (उसी ने पत्र लिखकर मुझे बुलाया था) मुझसे कहा—"शायद तुम्हारे पिताजी बीमार हैं और स्वयं आ नहीं सके।"

मैंने बताया कि वे कविताएं मेरे पिताजी की नहीं, बल्कि मेरी ही लिखी हुई हैं, तो आंद्रे दोस्ताल को बेहद आश्चर्य हुआ । कोई मान नहीं सकता था कि वैसी गंभीर कविताएं एक छोटे लड़के की लिखी हो सकती हैं ।

मां मेरे कवि बनने के पक्ष में नहीं थी; इसलिए नहीं कि उसे कविता अच्छी नहीं लगती थी, बल्कि इसलिए कि उसकी नजर में कवि सुखी आदमी नहीं होता । रूस के लगभग हर कवि का जीवन बड़ा दुःखांत रहा है । पुश्किन और लरमनतोव द्वंद्व-युद्ध में मारे गये । ब्लाक ने स्वयं को आग में झोंककर आत्महत्या कर ली । येसेनिन ने खुद

यह सुलोचना सुकेशी...

यह सदा टाटाका हेअर ऑइल इस्तेमाल करती हैं
जिससे इनके बाल स्वस्थ और चमकदार रहते हैं।
टाटा के हेअर ऑइल ● मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाते हैं
● बालों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं ● संवारने के बाद
बाल ठीक से बैठ जाते हैं ● बाल घने उगते हैं
● इनकी सुगंध भी मनमोहक होती है

टाटा के सुगंधित हेअर ऑइल

THOY-47 HIN

Tata's
Perfumed
HAIR OIL

को फांसी
गोली मार
उन कविय
स्तालिन
मेरी कवि
मुझे कोई
देश दिया
पर मे
कर महत
अतः मैं
की पढ़ाई
"कवि
न अमन-
नयी कवि
पर
रत थी;
से देखत
किसी
था कि
मुझे तो
लोगों क

मुझे
तौर पर
जब भी
दूरों को
जाता थ
था –
उन्हीं
यह
कम्युनि
१९६४

को फांसी पर लटका दिया । मायाकोव्स्की गोली मारकर मर गया ।...... फिर मां को उन कवियों का खयाल भी आया होगा, जो स्तालिन की कैद में मर गये थे । सो उसने मेरी कविताओं की कापियां फाड़ डालीं और मुझे कोई महत्वपूर्ण पेशा अपनाने का उपदेश दिया ।

पर मेरी नजर में कविताएं लिखने से बढ़कर महत्वपूर्ण और कोई काम नहीं था । अतः मैं लिखता गया । साथ ही मेरी स्कूल की पढ़ाई खराब होती गयी ।

"कविता लिखने से न पैसा मिलता है, न अमन-चैन की जिंदगी ।" मां ने फिर मेरी नयी कविताओं की कापी फाड़कर कहा ।

पर मुझे अमन-चैन की जिंदगी से नफरत थी; और पैसे को मैं हिकारत की नजर से देखता था ।

किसी प्रसिद्ध व्यक्ति ने एक बार कहा था कि पैसा स्वतंत्रता का साधन है । पर मुझे तो हमेशा यही महसूस हुआ है कि पैसा लोगों को गुलाम बनाने का साधन है ।

०००

मुझे सिनेमा देखने का शौक था—खास तौर पर रूसी क्रांति के बारे में बनी फिल्में। जब भी मैं फिल्मों में सिपाहियों और मजदूरों को देखता, तो जैसे मेरा गला रुंध जाता था । मैं भी उन जैसा बनना चाहता था – उन्हीं जैसा गर्व से भरा हुआ और उन्हीं जैसा निःस्वार्थ ।

यह बात मुझे अजीब लगती थी कि कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता का कार्ड रखनेवाले लोगों को भी पैसों से प्यार था । मेरे लिए 'कम्युनिस्ट' होना और 'निःस्वार्थ' होना एक ही बात थी ।

धीरे-धीरे मुझे इस बात का भान होने लगा कि जो लोग अपने आपको कम्युनिस्ट कहते थे और बात-बात में लेनिन और स्तालिन की दुहाई देते थे, वास्तव में कम्युनिस्ट नहीं थे । वे कम्युनिज्म की दुहाई इसलिए नहीं देते थे कि उसमें उनकी आस्था थी, बल्कि इसलिए कि उससे उन्हें आगे बढ़ने में मदद मिलती थी । बाद में ऐसे ही लोगों के बारे में मैंने अपनी कविता 'मुझे कम्युनिस्ट समझो' लिखी । उस छोटी उम्र में मैं इन सब बड़ी-बड़ी चीजों को पूरी तरह समझ नहीं सकता था; पर महसूस जरूर करता था ।

रूसी लोगों ने अपने पूरे इतिहास में जितनी तकलीफें सही हैं, उतनी शायद ही किसी अन्य देश के लोगों ने सही हों । तकलीफें आदमी की आत्मा को तोड़ डालती हैं और आदर्शों में उसकी आस्था को नष्ट कर डालती हैं । पर बहुत-से देशों के इतिहास का अध्ययन करने पर कुछ उलटी बात भी दिखाई देती है । आज जो देश भौतिक दृष्टि से संपन्न और सुखी हैं, उनमें नैतिक मान्यताएं कमजोर पड़ती जा रही हैं ।

जहां रोटी की बहुतायत हो और आदर्शों की कमी, वहां रोटी आदर्श का स्थान नहीं ले सकती । पर जहां रोटी की कमी हो, वहां आदर्श रोटी का स्थान जरूर ले सकता है । मनुष्य जन्मतः आदर्शवादी है और महान

घर में धुली
सर्फ़
से धुली
Surf
AMAZING BLUE POWDER
FOR THE WHITEST WASH!

सर्फ़ से घर में कपड़े धोइए, और देखिए धुलाई का कमाल ... अत्यधिक सफ़ेद, अपूर्व साफ़ और अत्यंत आसान! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है! अपनी सारी धुलाई सर्फ़ से कीजिए ... बच्चों के वस्त्र, कमीजें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

SU. 44-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

आदर्श म
रूस उ
देश था;
आगे था
नये दुःख
यहां रूसी
दुःख सह
हमने अप
जितनी ह
ही वह
काधिक
मेरी
वह नहीं
का सदस्य
रूप से
बल्कि व
जो लोग
भलाई प
को न्यौछ
पर लोग
भलाई के
का खून
स्कूल
जाने के
बात का
ही गया
हेडमास्ट
पर मैं न
और मैं
बैठकर
चला गय
१९६४

आदर्श महान दुःखों में से उपजे हैं।

रूस उद्योग-धंधों में सबसे पिछड़ा हुआ देश था; परंतु दुःखों और आंसुओं में सबसे आगे था। इन्कलाब आया, तो रूस के लिए नये दुःख और आंसू लेकर आया। लेकिन यहां रूसी चरित्र को नहीं भूलना चाहिये। दुःख सहना हमारी आदत बन चुकी है। हमने अपना खून दे-देकर अपने आदर्श की जितनी ही बड़ी कीमत चुकायी है, उतना ही वह आदर्श हमें अधिकाधिक प्रिय होता गया है।

मेरी नजर में कम्युनिस्ट वह नहीं है, जो किसी संस्था का सदस्य है और नियमित रूप से उसे चंदा देता है; बल्कि कम्युनिस्ट वह है, जो लोगों की सामूहिक भलाई पर अपने स्वार्थों को न्यौछावर कर देता है; पर लोगों की सामूहिक भलाई के नाम पर दूसरों का खून नहीं करता।

स्कूल से निकाल दिये जाने के बाद मैंने चाहा कि मां को इस बात का पता न लगे। पर उसे पता लग ही गया और वह बहुत रोयी। उसने मुझे हेडमास्टर से माफी मांगने के लिए कहा। पर मैं न माना। आखिर मां से झगड़ा हुआ और मैं घर छोड़कर रेलगाड़ी की छत पर बैठकर अपने पिता के पास कजाकस्तान चला गया।

कवि के लिए कविता लिखना ही काफी नहीं, कविता की खातिर लड़ना भी सीखना होगा।

उस समय मैं पंद्रह साल का था। म आदमी बनना चाहता था और अपने पांवों पर खड़े होने की मेरी इच्छा थी।

पिताजी ने कहा—"अगर तुम अपने पांवों पर खड़े होना चाहते हो, तो यहां किसी को पता न लगे कि तुम मेरे बेटे हो। वरना कर्मचारी तुमसे रियायत करेंगे और तुम आदमी नहीं बन सकोगे।"

मैं उनके नीचे एक मजदूर की तरह काम करने लगा। इस हालत में मुझे बेहद कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर जिंदगी की तल्खियों ने मुझे मनुष्यों में आस्था रखना सिखाया।

एक दिन मैंने देखा कि मेरे कपड़ों में जुएं पड़ी हुई हैं। मुझे बेहद घिन महसूस हुई। मैं वहां से एक तरफ को भागा और एक गढ़े में उतर गया। वहां मैंने सारे कपड़े उतारे और जुएं मारने लगा। मैं बिलकुल नंगा था और ठंड से कांप रहा था। अचानक गढ़े में कुछ अंधेरा-सा छा गया। सिर उठाकर देखा तो ऊपर से एक किसान औरत झांक रही थी। मैं शर्म के मारे वहीं गड़ गया और दोनों हाथों से मुंह ढंककर रोने लगा। वह औरत कूदकर गढ़े में आ गयी। उसने मेरे चेहरे पर से मेरे हाथ हटाये और अपनी बेहद नीली आंखों से बड़ी मृदुता से मेरी

बवासीर
की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये
हडेन्सा
इस्तेमाल कीजिए !

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सों के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की ज़रूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता : **दि डॉलर कम्पनी,**
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टों के यहां मिलता है।

83 DOL 2A HIN

स्वस्थ आंखों के लिये

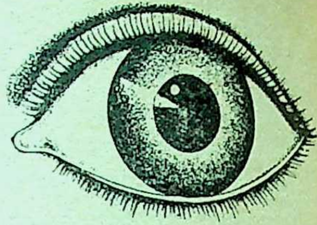

भीमसेनी
काजल
प्रयोग कीजिये

BHIMSAINI
KAJAL
MAKES EYES HEALTHY & BEAUTIFUL
BHIMSAINI KAJAL
REGISTERED TRADE MARK
MURARI BROTHERS
KAMLA NAGAR DELHI-6

यह आपकी आंखों को नीरोग
और सुन्दर बनाता है तथा
उनकी ज्योति को निखारता है

मुरारी ब्रदर्स
कमला नगर, देहली-६

वितरक—मैसर्स [illegible] ट्रेडिंग कं०,
अमृता मार्केट सदर बाजार, दिल्ली-६

ओर देखा ।

उसने मुझे ढांढ़स बंधाया और अपने साथ चलने को कहा। घर पहुंचकर उसने मुझे बच्चे की तरह मलमलकर नहलाया, मेरे कपड़े धोये, मुझे साफ-सुथरे बिस्तर पर लिटा दिया।

मैं उसे कभी नहीं भूल सकूंगा । तब से ही मैंने यह जाना कि इस संसार में और सभी चीजें गलत हो सकती हैं; पर करुणा कभी गलत नहीं हो सकती। उसका सबसे ऊंचा दर्जा है ।

एक और मानवीय स्निग्धता भी मैंने अनुभव की है । वह है मानव की पितृसहज वत्सलता ।

लड़ाई के दिनों में सिपाही मुझे कभी शक्कर दे जाते थे, कभी तंबाकू । एक बार किसानों ने 'टायगा' के जंगल में मुझे एक क्रुद्ध रीछ से बचाया था । काम पर मेरे साथी कई बार मेरे कंधों पर का बोझ उठाकर अपने कंधों पर रख लिया करते थे ।... इन सबने बचपन में ही मेरे दिल में लोगों के प्रति गहरा विश्वास पैदा कर दिया था ।

मेरी जिंदगी में यद्यपि बुरे लोग भी आये; पर दिन-प्रतिदिन मेरा यह विश्वास बढ़ता गया कि बुरे लोगों के मुकाबले में अच्छे लोगों की गिनती कहीं ज्यादा है । पर मैंने यह भी देखा कि बुरे लोग आम तौर पर भले ही एक-दूसरों से नफरत करते हों, उनमें एका होता है । और इसी में उनकी शक्ति है। इसके विपरीत अच्छे लोग बिखरे हुए होते हैं और यही उनकी कमजोरी है ।

बुद्धिवादियों को नापने के भी मुझे नये पैमाने मिले । मुझे लगा कि कई सुशिक्षित लोग आम अनपढ़ सिपाहियों, किसानों, मजदूरों, यहां तक कि अपराधियों से भी कम सुसंस्कृत होते हैं । आत्मा की अमीरी इसमें नहीं है कि कोई प्लेटो, काफ्का या जायस के बारे में कितनी गहराई से बातें कर सकता है; बल्कि इसमें है कि दूसरों के लिए उसका दिल कितना विशाल है ।

०००

मैं जब अपनी मां के पास लौटा, तो मेरा रंग धूप में तपकर पक्का हो गया था और मुझमें परिपक्वता आ चुकी थी । मैंने अपनी खून-पसीने की कमाई मां के सामने रखी, तो उसने कहा—"इसका क्या करोगे ?"

"मैं इसमें से एक टाइप-राइटर खरीदूंगा । बाकी तुम्हारे लिए हैं ।"

अब चूंकि स्कूल नहीं जाना पड़ता था, मैं धड़ाधड़ कविताएं लिखने लगा और पत्रिकाओं को भेजने लगा । पर टाइपराइटर ने कोई सहायता नहीं की । कविताएं उसी तरह लौटकर आती रहीं ।

कविता के अलावा मुझे फुटबाल का भी शौक था । रात के समय मैं कविताएं लिखता और दिन में फुटबाल खेलता । रोज फटे कपड़े और नये जख्म लिये घर लौटता ।

फुटबाल ने मुझे कई बातें सिखायीं । अपने साहित्यिक जीवन के संघर्ष में इससे मुझे काफी मदद मिली । जो लोग मुझे खेलते हुए देखते थे, कहते थे कि फुटबाल के खिलाड़ी के तौर पर मेरा भविष्य बहुत सुनहरा है ।

शीघ्र, सुरक्षित
निश्चित
खाँसी का घरेलू इलाज

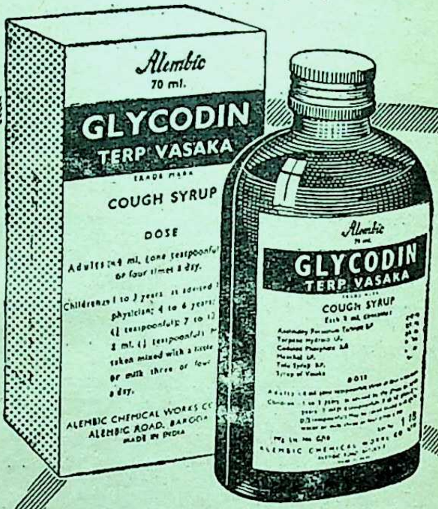
Alembic
70 ml.
GLYCODIN
TERP VASAKA
COUGH SYRUP
DOSE
ALEMBIC CHEMICAL WORKS
ALEMBIC ROAD, BARODA
MADE IN INDIA

Alembic
ग्लायकोडिन
टर्प-वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A 63 278 R EVEREST

फुटवाल खेलना कविता लिखने से कई दृष्टियों से आसान है। अगर आप गोल कर दें, तो सवकी आंखों को पूरा सबूत मिल जाता है कि फुटवाल वल्लियों के बीच से निकल गया है। पर कविता में अगर आप 'गोल' कर दें, तो भी हजारों 'रेफरी' उसे मानने से इन्कार कर देते हैं और आप यह सावित नहीं कर पाते कि सचमुच आपने 'गोल' किया है और वहुत वार तो 'आफ-साइड' को ही गोल घोषित कर दिया जाता है।

खेल के साथ चाहे कितनी भी धूल और चालाकियां जुड़ी हुई हों, फिर भी साहित्य-रचना के मुकावले में वह ज्यादा साफ-सुथरा काम है। कई बार मुझे अफसोस होता है कि मैं पेशेवर खिलाड़ी क्यों नहीं वन गया।

दरअसल मैं वनते-वनते रह गया। एक वार मैंने एक मैच में खूब जौहर दिखाये और वहां उपस्थित एक मशहूर टीम के 'कोच' ने मुझे कहा कि मैं उससे मिलूं। यह देखकर वाकी लड़कों को मुझसे वेहद ईर्ष्या हुई।

पर तभी एक ऐसी घटना घटी कि कुछ और ही वात वन गयी।

मैं काफी समय से यह सोच रहा था कि 'सोवियत स्पोर्ट' के संपादक के पास अपनी कविताएं लेकर जाऊं। वही एक पत्र था, जिसे मैंने कविताएं नहीं भेजी थीं।

मैं एक कविता लेकर, जो अमरीकी और रूसी खिलाड़ियों के बारे में थी, पत्र के दफ्तर में गया। वहां मैं तारासोव नाम के व्यक्ति से मिला, जो पत्र के चार विभागों का संपादक था—विदेशी समाचार, कम्युनिस्ट पार्टी, फुटवाल और साहित्य।

चर्चा

मुझसे लोग कहते हैं—तुम बड़े दिलेर हो।
मैं नहीं हूं।
साहस कभी मेरा गुण नहीं रहा।
मैंने यही सोचा कि
औरों जितना अपने को गिराना असंगत होगा।
नींवें न हिलीं, न ढहे महल
मेरी ध्वनि हंस भर दी दंभी असत्य पर।
मैं तो लिखा किया—खंडन नहीं किया।
हां, जितना सोचा उसे रखा नहीं अनकहा।
जो समर्थनीय थे, उनका किया समर्थन;
जो प्रतिभाहीन थे—साहित्यकार नकली—
उनके चेहरों को दाग दिया।
(किया वही, जो किया ही जाना था।)
अब लोग उमड़ आते हैं
मुझे दिलेर कहते हैं!
लाज से गड़ जायेंगी हमारी संतानें
जब कि वे अंततः प्रतीकार करेंगी
इन विभीषिकाओं का; और जब सोचेंगी—
कैसे थे वे दिन विचित्र,
जब सहज सच्चाई साहस प्रतीत होती थी!

—येव्गेनी येव्तुशेंको

आप की रसोई में
नयी रुचि लाइये

Saffola
REFINED
KARDI
OIL

सफोला

रसोई का
सहृदय
साधन

अब रसोई का नया तरीका अपनाइये। फीके सुनहरे रंगके शुद्ध करड़ी के तेल सफोला में ही खाना पकाइये। करड़ी के तेल में संपृक्त चरबीयुक्त आम्ल तत्व अति कम मात्रामें होने से धमनियों के सख़्त होने का या उससे पैदा होनेवाली ख़तरनाक बीमारी का भय नहीं रहता; इसलिये करड़ी के तेल की डाक्टरों ने बड़ी सराहना की है।

अच्छी रसोई अब कोई चिन्ता की बात नही रही। खाना पकाने के लिये हमेशा उपयोग में लाइये सफोला – रसोई का सहृदय साधन।

सफोला ♥

सफोला मिलने में आपको कोई कठिनाई हो तो आपके
निकटवर्ती सफोला-विक्रेता की जानकारी के लिये हमे लिखें।
दि बाम्बे आयल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड,
कानमूर हाउस, बम्बई ९

CBBO-5A-HIN

उसने वह कविता पढ़ी और पूछा—"और भी हैं कविताएं ?"

मैंने जेब में से कापी निकाली और कहा—"हैं, पर खेलों के बारे में नहीं हैं।"

वह मुस्कराया—"तो और भी अच्छा है।"

उसने वे कविताएं पढ़ीं और फिर पहली कविता, जिसका शीर्षक था 'दो तरह की खेलें,' उठाकर मुझे कहा—"यह इनमें सबसे बुरी है। पर हम तो इसे ही छाप सकते हैं; क्योंकि यह खेलों के बारे में है।" और उसने वह कविता छपने के लिए भेज दी।

यहीं उसने मेरा परिचय वोलोद्या बारलास से करवाया, जो भौतिक विज्ञान का विशेषज्ञ था।

उनसे काफी देर तक साहित्य के बारे में बातें होती रहीं।

इन दोनों व्यक्तियों ने मेरी जिंदगी का रुख मोड़ने में बहुत मदद की है और मैं इनका बहुत कृतज्ञ हूं। कभी ये दोनों व्यक्ति लेखक बनना चाहते थे; पर बन नहीं पाये थे। सो मुझमें उन्होंने अपनी अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति का अवसर देखा। उन्होंने मेरी मदद की, साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने मुझे सही रास्ता दिखाया।

उस रात हम सड़कों पर घूमते रहे। कोई तीसरे पहर मैंने उनसे विदा ली। सुबह सात बजे 'सोवियत स्पोर्ट' की कापियां बाजार में आयीं। मैंने एक साथ पचास कापियां खरीदीं और सड़क पर चलता हुआ उन्हें हवा में उछालने लगा। उस दिन मेरे पांव धरती पर नहीं पड़ रहे थे।

उसी दिन तारासोव ने उस कविता के ३५० रूबल मुझे दिलवाये। मैंने मां से कई बार सुना था और किताबों में भी पढ़ा था कि सभी कवि शराबी होते हैं। और अब मैं कवि था। मैंने सोचा कि कविता की कमाई के वे ३५० रूबल शराब पीने में खर्च कर दिये जायें। मैंने चौदह साल के अपने एक दोस्त से सलाह ली कि शराब कैसे और कहां पी जाये। उसने बड़े अधिकार-भरे लहजे में कहा कि हमें किसी रेस्तरां में जाना चाहिये और साथ में लड़कियां भी होनी चाहिये।

यह सोचकर सत्रह साल की दो लड़कियों को हमने अपना साथ देने के लिए कहा। उनमें से एक बाल काटने के सैलून में काम करती थी और दूसरी एक फैक्टरी में। उनकी सलाह से हम 'आरोरा रेस्तरां' में गये। वह रेस्तरां मुझे जादू की दुनिया प्रतीत हुआ।

मैंने मीनू देखा, तो उसमें एक जगह शराब की 'ड्राई' किस्म लिखी हुई थी। मैंने झट वह शराब लाने का आर्डर दिया। जब शराब की एक बोतल हमारे सामने लाकर रख दी गयी, तो मुझे बड़ी निराशा हुई। मेरा खयाल था, 'ड्राई' शराब गोलियों की शक्ल में होगी।

मैंने इतनी पी कि अंत में वे लड़कियां मुझे बेहोशी की हालत में घर पहुंचा गयीं। मुझे देखकर मेरी मां रोने लगी।

मैं बिलकुल ही भूल चुका था कि मुझे दस बजे फुटबाल के कोच से स्टेडियम में मिलना है। मेरा खेल पसंद आने पर संभव था कि वह मुझे अपनी मशहूर टीम में गोलकीपर के तौर पर रख ले।

सिरदर्द में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं—इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- दर्द में फौरन आराम के लिए 'एनासिन' में अनोखे तत्वों का मेल है।
- 'एनासिन घबराहट दूर करती है—सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द और बुखार में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी भी मिटाती है।

ANACIN
ANACIN
ANACIN
ANACIN

दो टिकियों का दाम
सिर्फ १३ नये पैसे

HIN

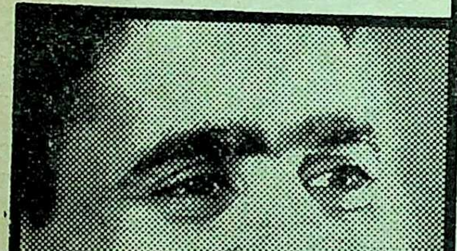

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

मैं किसी तरह उठकर स्टेडियम गया। सिर बेहद दर्द कर रहा था । मैं गोल के सामने खड़ा था, पर मुझे कुछ पता नहीं लग रहा था कि क्या हो रहा है । कभी-कभी तो एक के बजाय दो-दो, तीन-तीन फुटबाल दिखाई देने लगते थे और मैं उनमें से एक को भी न रोक पाता था ।

आखिर कोच ने सहानुभूति से पूछा– "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है क्या ?" और वह मेरे पास आया; पर शराब की महक पाकर एकाएक पीछे हट गया ।

और उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर, शेक्सपियर के किसी पात्र की तरह खिलाड़ियों की ओर मुंह करके कहा–"ओह सुबह के समय, दस बजे...पंद्रह साल का एक लड़का शराब के नशे में डूबा हुआ ! मुझे बड़ी शर्म आती है ऐसे पतनोन्मुख युग में जीते हुए !"

इस प्रकार फुटबाल के खिलाड़ी के रूप में मेरा खात्मा हो गया ।

०००

बारलास मेरे लिए जीता-जागता ज्ञान-कोश था । उसने आधुनिक दर्शनशास्त्र की ओर मेरी आंखें खोलीं । उसने मुझे हेमिंग्वे की पुस्तकों से परिचित कराया । आज रूस में हेमिंग्वे की पुस्तकें लाखों की तादाद में छपती हैं; पर उन दिनों यह बात नहीं थी । दूसरे जिन-जिन लेखकों के साहित्य का परिचय बारलास ने मुझे कराया वे थे–हैमसन, जायस, फ्रायड, प्राउस्ट, स्टाइनबेक, फाकनर, रेमार्क, सैं जुपारी......ये सभी रूस में लगभग अप्रसिद्ध थे। [illegible] ने मुझे मंत्रमुग्ध कर लिया । मैंने थामस मान, वाल्ट ह्विटमैन, रिंबो, बोदिलेयर, वार्लेन और रिल्के को पढ़ा; टी० एस० इलियट और राबर्ट फ्रास्ट को भी पढ़ा ।

वे रूसी क्लासिकी लेखक, जिन्हें स्कूल के दिनों पढ़ते समय मुझे उकताहट होती थी–क्योंकि उन्हें गलत ढंग से पढ़ाया जाता था–अब मुझे बहुत सजीव और दिलचस्प लगने लगे। तालस्ताय, चेखोव, दास्तोवस्की, पुश्किन, लरमनतोव, ब्लाक, येसेनिन और मायाकोव्स्की को मैंने नयी नजर से पढ़ा ।

अभी तक मैं पास्तरनाक को नहीं समझ पाया था । वे ज्यादा उलझे-उलझे लगते थे और उनके बिंबों से भरे हुए काव्य-लोक में मैं उनके विचारों के धागों को पकड़ नहीं पाता था, यद्यपि बारलास ने कई बार उनकी कविताएं मुझे सुनायीं और समझायी थीं । मुझे दुःख होता था कि मैं उन्हें समझ नहीं पाता था । मुझमें ऐसा अहंकार नहीं था कि किसी कलाकार को न समझ सकने पर उसे ही दोष देने लगूं । पहले समझना जरूरी है; पसंद-नापसंद का सवाल फिर उठता है । पर एक दिन जैसे चमत्कार हो गया हो, पास्तरनाक मेरे सामने एकदम स्पष्ट हो उठे, और तब से आज तक वे मुझे बहुत सरल कवि लगते हैं– आकाश और धरती जैसे सरल ।

'सोवियत स्पोर्ट' में अब लगभग रोज ही मेरी कविताएं छपने लगीं । मैंने हर तरह के खेलों पर कविताएं लिखीं; साल के खास-

मनपसंद साडी के लिये

-हेमली-

शंकर मैन्शन, ३९०, सरदार पटेल
रोड, वनिता विश्राम के पास, बंबई-४

शुभेच्छुक
भूपेन्द्र डाईंग एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स
बंबई–४

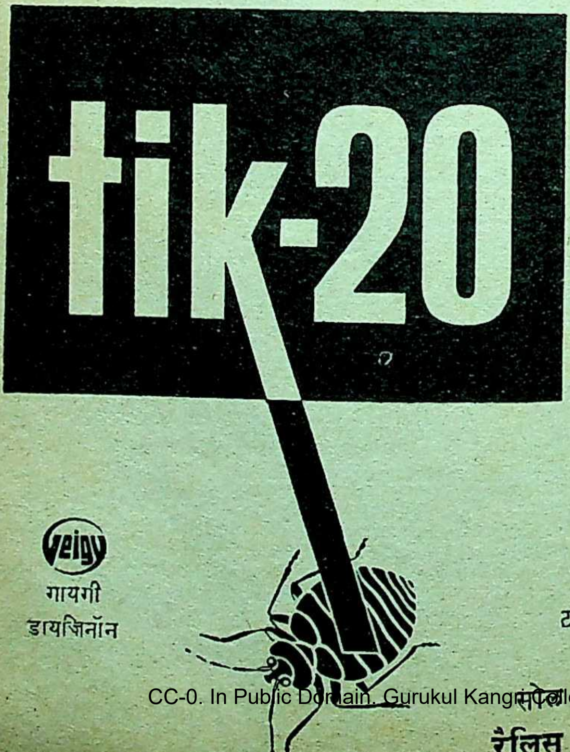

टिक-20
खटमलों का
नाश
करता है

Geigy
गायगी
डायज़िनॉन

टाटा-फाइज़न उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स
रैलिस इंडिया लि०

TFY-7 HIN

खास दि
उन दिन
कारिता
और दुभ
मैंने
'सोविय
के कुछ प
उसमें स
इसलिए
दक के
की सं
जिससे व
उसने
बारे में च
स्वयं
कविता
जोड़ दी
मैंने
इसमें
आपत्ति
फिर
मेरी कवि
छपी, त
ऐसी पंक्ति
मैंने नहीं
इसके ब
कि उन
छपना स
छपने य
इस
कविता
स्तालिन
१९६४

खास दिनों के बारे में भी कविताएं लिखीं । उन दिनों कविता में इस प्रकार की पत्रकारिता हमारे देश में बड़ी आम बात थी और दुर्भाग्य से आज भी है ।

मैंने मई-दिन पर एक कविता लिखी, जो 'सोवियत स्पोर्ट' में छपनी थी । उसके छपने के कुछ पहले तारासोव ने मुझे कहा कि मैंने उसमें स्तालिन का जिक्र नहीं किया था, इसलिए मुख्य संपादक के नाराज होने की संभावना थी, जिससे बचने के लिए उसने स्तालिन के बारे में चार पंक्तियां स्वयं लिखकर कविता के अंत में जोड़ दी हैं ।

मैंने कहा कि इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।

लोग, लोक

हर एक के लिए अपना लोक निजी है,
और उस लोक में एक क्षण गजब का,
और उस लोक में एक क्षण दुख का ।
ये उसके निजी हैं ।
जो भी मनुज मरता है, उसके संग मरता है
उसका प्रथम हिमपात, चुंबन व द्वंद्व ।
यह उसके संग चला जाता है ।
वे हैं ग्रंथ, पुल , पुते कैनवास, यंत्र
जो कि शेष रहते हैं,
कि शेष रहना ही जिनकी किस्मत है ।
जो कुछ चला गया, वह भी नकुछ नहीं था ।
प्रकृति के विधान से कुछ चला ही गया –
लोग नहीं मरते, लोक उनमें मरते हैं ।

–येव्गेनी येव्तुशेंको

फिर एक बार मेरी कविता 'त्रुद' में छपी, तो उसमें कुछ ऐसी पंक्तियां थीं, जो मैंने नहीं लिखी थीं । जब मैंने वहां जाकर इसके बारे में पता किया, तो उत्तर मिला कि उन पंक्तियों के बिना मेरी कविता का छपना संभव नहीं था । उन पंक्तियों ने उसे छपने योग्य बना दिया ।

इस प्रकार मुझे पता लगा कि किसी कविता के छपने योग्य बनने के लिए उसमें स्तालिन का जिक्र होना जरूरी है । और उन दिनों यह बात मुझे स्वाभाविक भी लगती थी । सो मैं खुद ही अपनी कविताओं में स्तालिन का जिक्र करने लगा । मैं बहुत अच्छा पत्रकार-कवि बन गया था ।

मैं समझता था कि मैं मायाकोव्स्की की परंपरा को जीवित रख रहा हूं । लेकिन यह मेरा खयाल-भर था । वास्तव में मैं मायाकोव्स्की नहीं, बल्कि सेम्योन किर्सानोव का अनुकरण कर रहा था । किर्सानोव बड़े ही प्रतिभाशाली प्रयोगवादी कवि थे, जो अपने प्रभावशाली पद्यों से अखबार भर रहे थे ।

एक दिन तारासोव ने मुझसे कहा– "जेन्या, तुमने लिखना तो सीख लिया है । अब तुम्हें सोचना चाहिये कि तुम्हें क्या लिखना है ।" बारलास भी बोला – "खिलवाड़ छोड़ो जेन्या ! मुझे तो प्रतीत होने लगा है, मैंने व्यर्थ में ही इतनी सारी किताबें पढ़ने को दीं, यों ही समय बरबाद किया ।"

सो नैतिक समर्थन और सहारा पाने के लिए मैंने अपने आदर्श कवि किर्सानोव के पास जाने का निश्चय किया । वे खिचड़ी बालोंवाले प्रौढ़-परिपक्व व्यक्ति थे । उन्होंने उदासी-भरी नजर से मुझे देखा और बोले–

साधना से सुनिए एक रहस्य की बात

'मेरे रंगरूप के लिए लक्स लाजवाब है!'

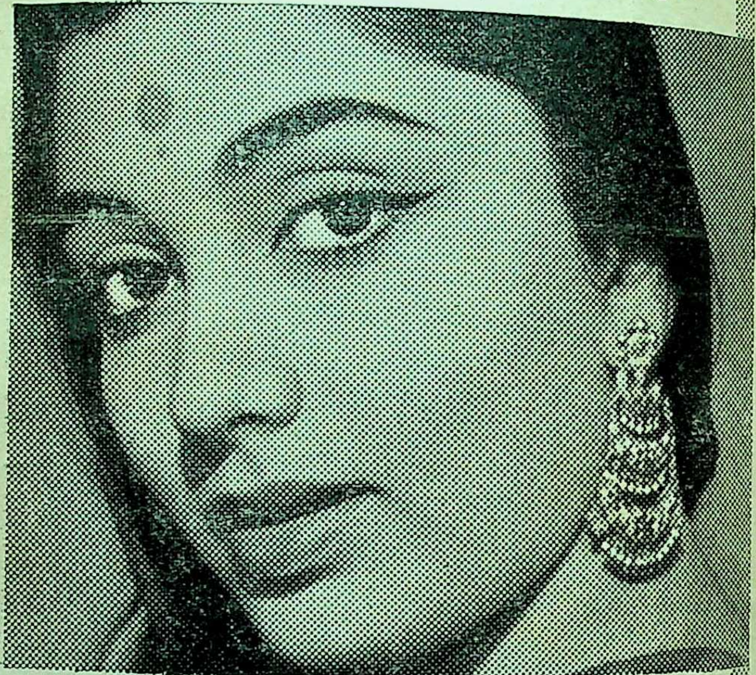

LUX
TOILET SOAP

**लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
सौंदर्य साबुन**

सफ़ेद और इंद्रधनुष के चार रंगों में

LTS. 178–75 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

"तुम
पसंद है
हैं ? ले
है । री
हूं–री
अनिव
जनता
सच्ची
के गो
रहती
हुई ए

१
अखबा
पर ए
वहां उ
उस
कोई पु
संग्रह
दुकान
चाहिये
जिसक
वैसे व
शायद
लेकिन
प्रचार
पैदा क
मे
कवित
है । अ
पीछा
१९६

"तुम समझते हो कि तुम्हारी कविताएं मुझे पसंद हैं; क्योंकि वे हूबहू मेरी कविताओं जैसी हैं ? लेकिन उनकी यही चीज मुझे नापसंद है। रीतिनिष्ठ कवि के नाते मैं तुमसे कहता हूं—रीति को भुला दो। कवि का बस एक ही अनिवार्य गुण है—चाहे वह सरल हो या जटिल, जनता को उसकी दरकार होनी चाहिये। सच्ची कविता रेस की कार नहीं है, जो रेस के गोल रास्ते पर अंधाधुंध चक्कर काटती रहती है। वह तो दूसरों की मदद को दौड़ती हुई एंबुलेंस गाड़ी है।"

०००

१९५२ में मेरा पहला काव्य-संग्रह छपा। अखबारों ने तो उसका ठीक स्वागत किया; पर एक बार जब मैं एक दुकान में गया, तो वहां उसकी कई कापियां पड़ी थीं।

उस समय एक नौजवान वहां कविता की कोई पुस्तक ढूंढ़ रहा था। उसने मेरा काव्य-संग्रह उठाया, उसके कुछ पन्ने पलटे और दुकानदार से कहा—"ऐसी किताब नहीं चाहिये मुझे। मेरी एक दोस्त लड़की है, जिसका जीवन से विश्वास उठ गया है। वैसे वह बहुत बढ़िया लड़की है। मैंने सोचा, शायद कविता उसकी सहायता कर सके। लेकिन यह कविता नहीं है, यह तो सब प्रचार है। यह भला जीवन में विश्वास कैसे पैदा कर सकती है ?"

मेरी आंखें खुल गयीं। मुझे लगा कि मेरी कविताओं से किसी को कोई फायदा नहीं है। अब तक मैं कविता की काया का ही पीछा करता रहा, साधन को ही साध्य समझता रहा।

दुकान से निकलकर मैं सड़कों पर घूमने लगा। वहां मैंने काम करते हुए लोगों को नयी नजर से देखा। उनमें मुझे नया सौंदर्य दिखाई दिया। वे एक नये युग का निर्माण कर रहे थे। मुझे शर्म महसूस हुई कि मैंने कभी उनके बारे में नहीं लिखा। मैं मास्क्वा नदी के पुल पर जाकर खड़ा हो गया। मैंने सिगरेट निकालने के लिए जेब में हाथ डाला, तो मेरा हाथ नोटों की उस गड्डी को छू गया, जो मुझे अपने काव्य-संग्रह के लिए मिले थे। मैंने वे सारे नोट नदी में फेंक दिये। यह बचकाना-सी हरकत थी; पर मैं उन पैसों से छुटकारा पाना चाहता था, जो मुझे 'झूठ' लिखने के लिए दिये गये थे। अब मेरी जेब खाली थी। और काफी समय तक मेरी जेबें खाली ही रहीं।

पहले तो मैं कुछ भी नहीं लिख पाया। फिर मैंने जो कविताएं लिखीं, वे बहुत गंभीर और उदास कविताएं थीं और जब मैं उन्हें संपादकों के पास लेकर गया, तो उन्हें मैं बूढ़ा आदमी दिखाई देने लगा। पर वास्तव में मैं बूढ़ा नहीं बना था, बल्कि विकास कर रहा था। एक संपादक को मेरी कविताओं में निराशावाद की झलक दिखाई दी और उसे उसने खतरनाक बताया। मेरा खयाल है कि जो लोग उदासी को खतरनाक समझते हैं, वे स्वयं बेहद खतरनाक आदमी हैं।

बनावटी किस्म का आशावाद घोर-से-घोर निराशावाद के मुकाबले में ज्यादा हानिकारक है और बुरा प्रभाव डालता है।

इनकी सुन्दरता का रहस्य

REGD
ब्राह्मी आंवला तैल
BRAHMI AMLA OIL
आयुर्वेद सेवाश्रम
काला
दंत-मंजन
आयुर्वेद सेवाश्रम

इनके मोती से सफेद दाँत और काले घने लम्बे बाल!
ये उदयपुर के गाय छाप काला दंत मंजन व
ब्राह्मी आंवला तेल का नियमित उपयोग करती हैं!
क्यों न आप भी इन दोनो वस्तुओं का
प्रयोग आज ही शुरू करें!

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रा. लिमिटेड
उदयपुर, वाराणसी तथा हैदराबाद

SEVASHRAM PRODUCTS
REGD.
TRADE MARK
UDAIPUR

heros'AS-878

इसके
विषय म
मैं अ
आशावा
था, उस
रंग भी

स्ता
के पहिये
नहीं लि
इतनी म
काम
महत्वपू
चीज स
भी झल
नायक
घर वन
करते
भी सो
नहीं क
सोचते
तो कठ
रूसी
वढ़िया
में निजी
अच्छी
वारे में
युद्ध के
कवि
मनुष्यों
अधिकां
१९६४

इसके विपरीत सही किस्म का दुखांत विषय मनुष्य को आशावादी बनाता है।

मैं अब भी आशावादी था; पर अब उस आशावाद का रंग सिर्फ गुलाबी ही नहीं था, उसमें सातों रंग थे और साथ में काला रंग भी था।

०००

स्तालिन ने कहा था कि लोग कम्युनिज्म के पहिये हैं। पर इस कथन को सही रूप में नहीं लिया गया। काम को इतनी महत्ता दी गयी कि वह काम करनेवालों से ज्यादा महत्वपूर्ण बन गया। सो यही चीज साहित्य और कला में भी झलकी। उपन्यासों के नायक लोहा पिघालते थे, घर बनाते थे, फसलें पैदा करते थे; पर वे कभी कुछ भी सोचते नहीं थे, प्यार नहीं करते थे– और कभी सोचते या प्यार करते भी थे, तो कठपुतलियों की तरह।

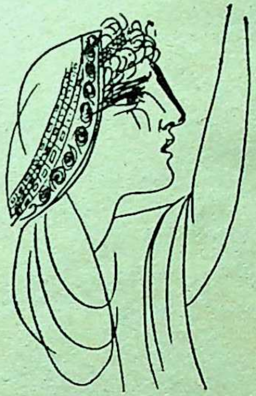

कवयित्री
[पिकासो का एक चित्र]

रूसी काव्य में युद्ध के जमाने में बहुत बढ़िया रचनाओं ने जन्म लिया; किंतु बाद में निर्जीवता आ गयी। अगर बाद में भी कुछ अच्छी कविताएं लिखी गयीं, तो वे युद्ध के बारे में ही थीं। दूसरे विषयों की अपेक्षा युद्ध के बारे में लिखना आसान था।

कवि फैक्टरियों में गये और उन्होंने मनुष्यों की अपेक्षा मशीनों के बारे में ही अधिकांश चीजें लिखीं। अगर मशीनें पढ़ सकतीं, तो वे उन कविताओं को दिलचस्पी से पढ़तीं; पर लोगों ने उन्हें दिलचस्पी से नहीं पढ़ा।

किसी लेखक की पुस्तक का कितना बड़ा संस्करण छपता है, इसका निर्णय पुस्तक की मांग के आधार पर नहीं होता था; बल्कि उसके लेखक की सरकारी 'पोजीशन' के आधार पर होता था। दुकानें ऐसी पुस्तकों से भरी रहती थीं, जिन्हें कोई नहीं चाहता था। उन दिनों या शिपाचेव का काव्य-संग्रह प्यार के बारे में पंक्तियां" बिकता था, या सिमोनोव के युद्ध - संबंधी गीतों का संग्रह, जो दो बार छापा गया था। कुछ और कवि भी थे। ये कुछ अलग ढंग से लिख रहे थे और इनकी रचनाएं पसंद की जा रही थीं। पर अधिकांशतः हालत वही पुरानी थी। कविता लोकप्रिय नहीं थी। पुराने कवि चुप थे। पास्तरनाक और अन्ना अखमातोवा जैसे महान कवि अनुवाद का काम कर रहे थे। हां, कुछ कवि जरूर गर्मजोशी से लिख रहे थे और स्तालिन-पुरस्कार प्राप्त करने के लिए लिख रहे थे।

जिस लेखक को स्तालिन-पुरस्कार मिल जाता था, उसकी किस्मत चमक उठती थी। पुस्तकों के नये संस्करण छपते थे, उसके चित्र और लेख अखबारों में प्रकाशित होते थे, उसे

दिल में तो मेरे भी है!

सच है, एक महिला के दिल में कितना ही इच्छाएं होती हैं...वह अपने परिवार के लिए, घर के लिए और स्वयं अपने लिए कितनी ही चीज़ें चाहती है। अगर आपके पास पहले से ही बहुत-सा धन नहीं है तो आप अपनी बचत के पैसों से ही अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकती हैं।

काश, ऐसा हो सकता...

आपको पैसे बचाने में मदद करने और बैठे-बिठाये आमदनी करने के लिए हमारी बचत-योजना आपकी सेवा में प्रस्तुत है। कुछ न कुछ पैसा, चाहे वह ज़्यादा हो या थोड़ा, हर महीने नियम से बचाइए। आपकी रकम आपके बचत के पैसों से बढ़ती जायगी और फिर उस पर ३% का ब्याज भी मिलेगा। कुछ समय बाद आपको यह देखकर आनन्द होगा कि अपनी मनचाही चीज़ें खरीदने के लिए आपके पास काफ़ी पैसे जमा हो गये हैं। हमारे सेविंग्ज़ एकाउण्ट में जमा करने के लिए नियम से पैसे बचाने की आदत डाल लीजिए। हमारे बैंक की सबसे पासवाली शाखा में अपना खाता खोल लीजिए।

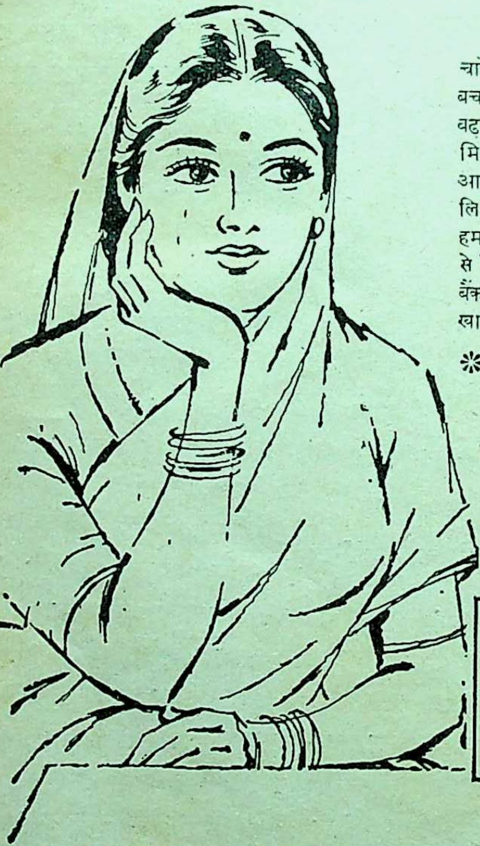

*** सेविंग्ज़ एकाउण्ट पर ब्याज ३%**
साल में १०० चेक तक भुनाये जा सकते हैं

हमारी फ़िक्स्ड डिपॉज़िट योजना:
४% से ५% तक ब्याज मिलता है

हमारी उपहार योजनाएँ:
उपहार के चेक और चाँदी की छोटी छोटी छड़ें

देना बैंक
देवकरण नानजी बैंकिंग कं. लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्स
१७ हॉर्निमेन सर्कल, बम्बई-१

१३० से अधिक ऑफ़िस तथा ४० सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट • आम बैंकिंग और वैदेशिक मुद्रा विनिमय व्यवसाय भी होता है।

प्रवीणचंद्र व. गांधी मैनेजिंग डाइरेक्टर

1964-DB/SH 6A

कोई ऊंचा सरकारी ओहदा मिल जाता था, तत्क्षण कार मिल जाती थी, फ्लैट मिल जाता था । अतः कई लेखकों को इस बात की चिंता नहीं होती थी कि उनकी पुस्तकें लोग पढ़ते हैं या नहीं; उन्हें तो इनाम पाने से मतलब होता था । पर स्तालिन-पुरस्कार पानेवाले सभी लेखक ऐसे नहीं थे । उनमें से कुछ-एक बड़ी ईमानदारी से भी लिखते थे और चूंकि बहुत अच्छा लिखते थे, इसलिए इनाम पा जाते थे । पर सिर्फ इनाम की खातिर लिखनेवाले लेखकों की संख्या ज्यादा थी ।

मैंने सिर्फ कविता ही नहीं लिखी, साहित्यिक वाद-विवादों में भी गर्मजोशी से भाग लिया और झूठ का भंडाफोड़ किया । पहले मुझे बोलने का अभ्यास नहीं था और मेरी काफी हंसी उड़ी । पर बाद में धीरे-धीरे अभ्यास हो गया ।

०००

५ मार्च १९५३ को स्तालिन की मृत्यु हुई, जिसने सारे रूस को झकझोर दिया । मेरे लिए यह सोच पाना असंभव था कि स्तालिन भी मर सकता है; क्योंकि वह जीवन का एक अटूट अंग बना हुआ था ।

उस दिन सारा देश रोया । मैं भी रोया । हमें हार्दिक दुःख था और इस बात का डर कि अब भविष्य में क्या होगा ।

स्तालिन का ताबूत देखने जाने का वाकया मैं कभी नहीं भूल सकूंगा ।

मैं त्रुबनाया चौक की भीड़ में खड़ा था । भीड़ बढ़ती जा रही थी । बेहद दबाव पड़ रहा था । मुझे लगा कि मैं उस भीड़ में एक खंभे की तरफ बहने लगा हूं । खंभा नजदीक आता जा रहा था । तभी मैंने देखा, एक छोटी-सी लड़की उससे टकरायी । वह चीखी और उसका चेहरा विकृत हो गया । उसकी हड्डियां चर्रा गयीं । मैंने अपनी आखें बंद कर लीं । उसकी वह भयानक आकृति देखी नहीं जा सकती थी । बाद में वह भीड़ के पैरों तले कुचली गयी होगी । फिर मैंने एक और व्यक्ति को खंभे के साथ सटे हुए देखा । उसका शरीर ऐंठ रहा था और उसकी दोनों बाहें एक सलीब की तरह फैली हुई थीं । उसी क्षण मुझे लगा कि मैं किसी नर्म चीज के ऊपर खड़ा हूं । मेरे पैरों तले किसी आदमी का शरीर था । मैंने उस पर से पांव उठाया, तो भीड़ के साथ आगे बह गया । भीड़ का दबाव बढ़ता जा रहा था । हमारे एक तरफ घरों की दीवारें थीं और दूसरी तरफ फौजी ट्रकों की पंक्ति ।

"ट्रकों को एक तरफ हटाओ !" लोगों ने चिल्लाकर कहा ।

"नहीं, हुक्म नहीं है," एक जवान पुलिस अफसर ने जवाब दिया ।

लोग ट्रकों से टकरा रहे थे और उनके सिरों में से खून बह रहा था । तभी एकाएक मेरे मन में उस व्यक्ति के लिए बेहिसाब नफरत जागी, जिसने इस परिस्थिति को जन्म दिया था । "हुक्म नहीं है," यह तब कहा जा रहा था, जब लोग किसी की मूर्खता के कारण मर रहे थे । तब जिंदगी में पहली बार मैंने उस व्यक्ति के बारे में नफरत से

मूल्य की तुलना में सर्वोत्तम रेडियो!

नेशनल एक्को रेडियो

मॉडल यू-७६४

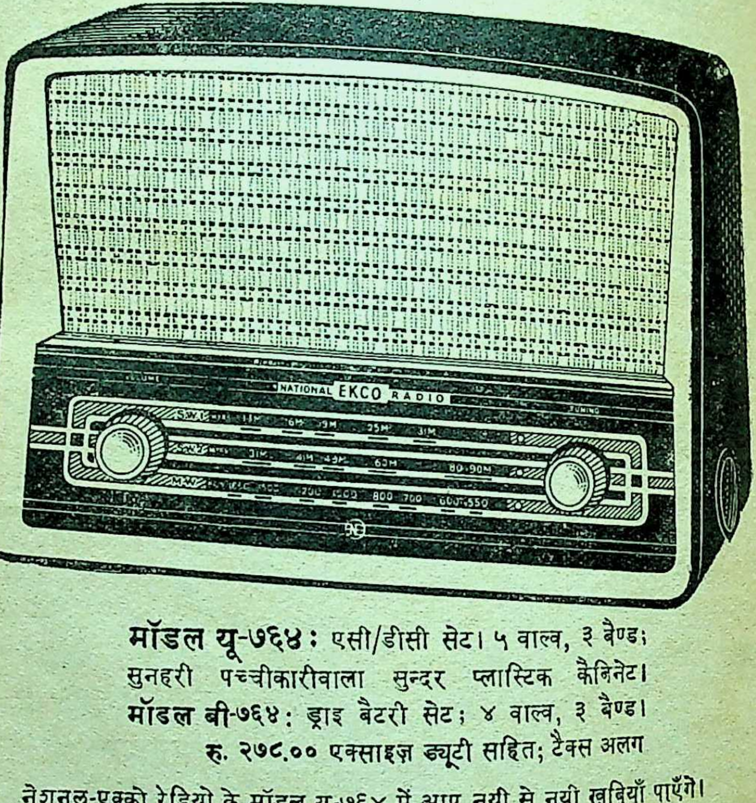

मॉडल यू-७६४: एसी/डीसी सेट। ५ वाल्व, ३ बैण्ड; सुनहरी पच्चीकारीवाला सुन्दर प्लास्टिक कैबिनेट।
मॉडल बी-७६४: ड्राइ बैटरी सेट; ४ वाल्व, ३ बैण्ड।
रु. २७८.०० एक्साइज़ ड्यूटी सहित; टैक्स अलग

नेशनल-एक्को रेडियो के मॉडल यू-७६४ में आप नयी से नयी खूबियाँ पाएँगे। ऐसी स्पष्ट और मधुर ध्वनि कि आपने एक अर्से से सुनी न हो! ऐसी सुन्दर बनावट कि बस देखते ही बने! और मूल्य? इतना कम कि सुन कर आश्चर्य हो! आज ही अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ इसे देखिए!

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड GRA
बम्बई · कलकत्ता · पटना · मद्रास · बंगलोर · दिल्ली · सिकन्दराबाद

सोचा, जिसे दफनाया जा रहा था। यह जो कुछ हो रहा था, उसी की बदौलत हो रहा था, क्योंकि उसका हुक्म नहीं था।

उस समय मैंने सोचा कि हुक्म की प्रतीक्षा किये बिना ही कुछ करना चाहिये। मैंने कुछ नौजवानों को मदद करने के लिए कहा और कुछ ही देर में हम बच्चों और स्त्रियों को उठा-उठाकर, भीड़ के ऊपर से ट्रकों तक पहुंचाने लगे। आखिर पुलिस भी हमारे साथ हाथ बंटाने लगी। कुछ देर के बाद सब शांत हो गया।

"तुम्हें तो पुलिस में भरती होना चाहिये, कामरेड।" एक पुलिस-सार्जेंट ने मुझसे कहा।

"सोचूंगा इसके बारे में," मैंने कुछ उदासी से कहा।

उस समय मुझे स्तालिन के ताबूत तक जाने की इच्छा नहीं हुई और मैं एक नौजवान के साथ वहां से वापस आ गया। हमने वोदका की बोतल खरीदी और घर आ गये।

"स्तालिन को देखा तुमने ?" मेरी मां ने पूछा।

"हां," मैंने कहा। और मैंने मां से झूठ नहीं कहा था। सचमुच मैंने स्तालिन को देखा था।

०००

वह दिन मेरे जीवन में एक मोड़ लेकर आया और मेरी कविता में भी।

स्तालिन ने लेनिन के विचारों को तोड़ा-मरोड़ा। लेनिन के सारे कार्य और लेखन का अर्थ यह था कि साम्यवाद इन्सान के लिए है; जब कि स्तालिन के रवैये का लुब्बे-लुबाब यह था कि इन्सान साम्यवाद के लिए है। —येव्तुशेंको

मैंने महसूस किया कि अब कोई और हमारी ओर से सोचे, इससे काम नहीं चलेगा। हमें खुद ही अपने बारे में सोचना होगा—सिर्फ अपने लिए ही नहीं, अपने देश के लिए भी, एक जिम्मेदारी का अहसास मुझमें जागा। अब बहुत-सी समस्याएं उठ खड़ी हुई थीं और उनकी ओर से मुंह मोड़ना घातक था। सो मैंने कविता के बारे में सोचा—अपनी कविता के बारे में भी और रूसी कविता के बारे में भी।

हर रूसी के लिए 'कवि' शब्द से 'योद्धा' शब्द की प्रतिध्वनि भी निकलती है। रूसी कवि हमेशा अपने देश के भविष्य और न्याय के लिए लड़े हैं। उन्होंने अत्याचारियों के खिलाफ आवाज उठायी है।

इसलिए मैंने महसूस किया कि मुझे कविता का निजी किस्म का जापानी बाग लगाने का हक नहीं है। रूसी लोगों के सामने जब मुसीबतें खड़ी हैं, प्रकृति या स्त्रियों के बारे में कविताएं लिखना एक घोर अनैतिक कार्य है।

उन दिनों ऐसे लग रहा था जैसे अंधे लोगों को रोशनी मिल गयी हो। वे लोग जो अपने घरों में भी चुप रहते थे, अब बोलने लगे थे और अपने विचार प्रकट करने का साहस उनमें आ गया था।

ग्लोव्हाइट
Glowhite
Glowhite

यह देखिये...

नया...

उत्कृष्ट !

सफ़ेद कपड़ों को चमकीला करनेवाला **ग्लोव्हाइट** आप के सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है। वर्षों के शोध के बाद अब मिलने लगा है... नवीनतम **ग्लोव्हाइट**।

ग्लोव्हाइट से अपने कपड़ों को पहले से भी अधिक सफ़ेद बनाइये। **ग्लोव्हाइट** आप के कपड़ों को विशेष सफ़ेदी प्रदान करता है। इसका उपयोग किफ़ायती है। आपके कपड़ों को किसी प्रकार का नुकसान भी नहीं पहुँचाता। इसकी गारंटी है।

अमर डाव-केम लिमिटेड,
'रंग उद्यान',
शीतलादेवी टेम्पल रोड, माहिम,
बम्बई—१६

ग्लोव्हाइट का इस्तेमाल करने से ही सफ़ेदी आती है

इस बात की गारंटी दी जाती है कि यह आपके कपड़ों को किसी प्रकार से नुकसान नहीं पहुँचाता। याद रखिये... ग्लोव्हाइट।

व्यापारिक पूछताछ—
भारत में
सोल सेलिंग एजेन्ट :
Akbarallys
अकबरअली इब्राहीमजी,
३८-सी, कावसजी
पटेल स्ट्रीट, बम्बई-१.

SISTA'S-ADC-5 A

पर अब यह भी डर था कि जो लोग पहले हर चीज को आंखें मूंदकर स्वीकार कर लेते थे, कहीं अब हर चीज को आंखें मूंदकर अस्वीकार न करने लगें।

०००

१९५४ में मैं कुछ विद्यार्थी दोस्तों के बीच बैठा हुआ था। हम खा-पी रहे थे, कविताएं सुना रहे थे, बहस कर रहे थे। अचानक एक अठारह साल की लड़की ने, साठ साल की बूढ़ी स्त्री की-सी खोखली आवाज में कहा—"इन्कलाब मर गया है।"

इस पर एक दूसरी अठारह साल की लड़की उठी, जिसका बच्चों का-सा गोल चेहरा था। उसने अपनी चमकती हुई तिरछी, तातारी आंखों से उसकी ओर देखा और कहा—"तुम्हें शर्म आनी चाहिये। इन्कलाब मरा नहीं है, इन्कलाब बीमार है और इन्कलाब को हमारी मदद की जरूरत है।"

इस लड़की का नाम बेला अखमादुलीना था, जिससे कुछ हफ्तों बाद मैंने शादी की। बेला बहुत अच्छी कवयित्री है और रूसी कवयित्रियों में उसका बहुत ऊंचा स्थान है।

स्तालिन-युग में व्यक्तिवादी कविताएं लिखने की मनाही थी, अब सभी पत्र-पत्रिकाओं में उनकी बाढ़-सी आ गयी थी। पर ऐसी कविताएं लोकप्रिय न हुईं। हमारे देश में जितने बड़े पैमाने पर नवनिर्माण का कार्य हो रहा था, उसके सामने ऐसी कविताएं बचकाना-सी लगती थीं।

वास्तव में हमारे पास बांसुरियां तो बहुत थीं, अब हमें किसी बिगुल की जरूरत थी।

मैंने ऐसी कविताएं लिखनी शुरू कीं, जो क्रांतिकारी आदर्शों पर प्रकाश डालती थीं। हमें अपने झंडे पर लगे गंदे दाग भी साफ करने थे। और ये कविताएं एक तरह से उन दागों को साफ करने का काम कर रही थीं।

रूस में 'कविता-दिवस' मनाने का आरंभ १९५५ में हुआ। (बाद में तो यह दिन पूरे देश-भर में मनाया जाने लगा।) उस दिन मास्को में पुस्तकों की सभी दुकानों में कवि खड़े थे। वे लोगों को अपनी कविताएं सुना रहे थे और अपनी पुस्तकों पर हस्ताक्षर करके खरीदनेवालों को दे रहे थे। मैं भी कुछ कवियों के साथ एक दुकान पर खड़ा था। बाहर लोगों की बहुत भीड़ थी। आखिर लोगों ने हमें बाहर आने के लिए कहा।

दूसरे कवियों ने अपनी-अपनी कविताएं सुनायीं, जो प्यार के गीत थे। पर लोग कुछ और सुनना चाहते थे। जब मेरी बारी आयी, तो मैंने वह कविता सुनायी, जिसके बारे में कवि क...ने कहा था कि वह हमारे दुश्मनों के लिए लिखी गयी है और उसे छापने से इन्कार कर दिया था। पर जब वहां खड़े लोगों ने उसे सुना, तो उन्हें लगा कि यह तो एक हथियार है, जिससे वे अपने दुश्मनों के खिलाफ लड़ सकते हैं। वह कविता असली कसौटी पर परखी गयी और खरी उतरी।

साहित्यिक आलोचना देश में होनेवाले महान परिवर्तनों का साथ नहीं दे पा रही थी। देश अपने लेखकों को अपने साथ कदम मिलाकर चलने के लिए पुकार रहा था। मैं फैक्टरियों, कालेजों, दफ्तरों, स्कूलों आदि

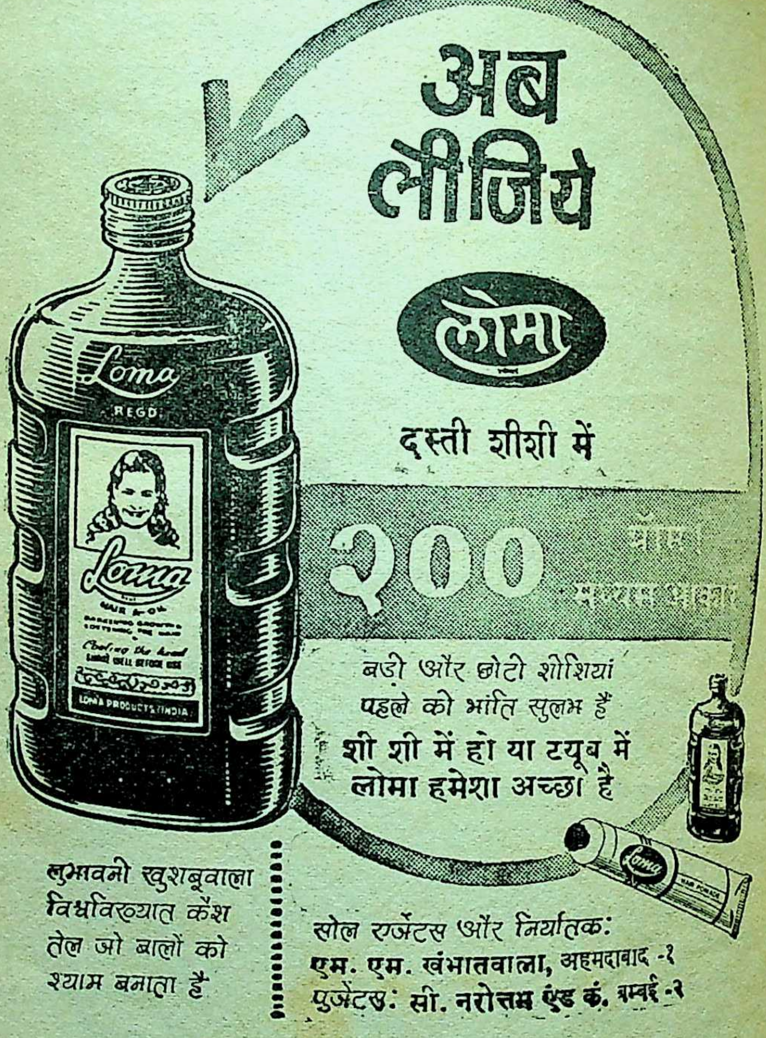
Loma
REGD.
Loma
HAIR OIL
LOMA PRODUCTS INDIA
Loma

अब लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

२०० [illegible]

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं
शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
एजेंटस: सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -२

में जा-
लोग ब
हजार
१९६३
अन्य क
के साम

कम
बाद, f
बारे मे
वाताव
लोग अ
देखने ल

पुर
गये ।
हिम्मत
और उ
दूसरे व
थे और
समझते

मेरी
१९५६
उस पर
पाठकों
कि लोग

मेर
पर भी
कुछ ही
संतोष
बड़ा स

मैं

में जा-जाकर अपनी कविताएं सुनाने लगा। लोग बड़े चाव से सुनते। बीस से लेकर एक हजार तक की हाजिरी होती। आखिरकार १९६३ में वह दिन भी आया, जब मैंने अन्य कवियों के साथ चौदह हजार श्रोताओं के सामने खड़े होकर कविता सुनायी।

०००

कम्युनिस्ट पार्टी की २०-वीं कांग्रेस के बाद, जिसमें ख्रुश्चोव ने स्तालिन-युग के बारे में अपनी रिपोर्ट पढ़ी थी, रूस में नये वातावरण ने जन्म लिया। नयी पीढ़ी के लोग अब हर चीज को शक की नजर से देखने लगे। उनकी आस्था खंडित होने लगी।

पुरानी पीढ़ी के लोग दो भागों में बंट गये। एक भाग उन लोगों का था, जिन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी और पहले की ही तरह और उसी आस्था से काम में लगे हुए थे। दूसरे वे लोग थे, जो कट्टर सिद्धांतवादी थे और अपने आपको सबसे बड़े कम्युनिस्ट समझते थे।

मेरी 'जिमा जंक्शन' नाम की कविता १९५६ में प्रकाशित हुई। आलोचकों ने उस पर हमले किये; पर उस पर जो हजारों पाठकों के पत्र मुझे मिले, उनसे मुझे लगा कि लोगों ने उसे सही अर्थों में समझा है।

मेरा दूसरा काव्य-संग्रह छपा, तो उस पर भी आलोचकों ने हमले किये; पर वह कुछ ही समय में हाथों-हाथ बिक गया। मुझे संतोष हुआ और उसकी अच्छाई का सबसे बड़ा सबूत मिल गया।

मैं जिस साहित्यिक संस्था में शिक्षण पा रहा था, उसमें से मुझे निकाल दिया गया; क्योंकि पिछले चार सालों में मैं उसमें नियमित रूप से नहीं गया था। फिर मुझे तरुण साम्यवादियों के संगठन कोमसोमाल में से भी निकाल दिया गया।

मुझे काफी धक्का लगा। पर मैंने हिम्मत नहीं हारी और कविताएं लिखता गया। मेरे कुछ कवि-मित्र मुझे हौसला देते रहे। पाठकों से भी मुझे हौसला मिलता रहा

कुछ समय के बाद मुझे फिर कोमसोमोल में ले लिया गया और अगले चार साल तक मैं उस संस्था का सेक्रेटरी रहा।

आलोचक अब भी मुझ पर हमले करते रहे। पर मैं भी साइबेरिया की मिट्टी का बना हुआ था और उन हमलों को सहने की मुझमें शक्ति थी।

अपनी कविताएं छपवाने के पहले मैं उन्हें विभिन्न पेशों के लोगों को सुनाया करता था, ताकि उनकी सार्थकता के बारे में मुझे सही जानकारी मिल सके। कविताएं सुनने के बाद वे लोग उन पर बहस करते थे, जिससे मुझे काफी मदद मिलती थी।

जब मैंने 'स्तालिन के वारिस' कविता लिखी और कई जगह लोगों को सुनायी, तो किसी ने अफवाह फैला दी कि वह सोवियत-विरोधी कविता है। हालांकि लोग उसे पसंद करते थे, पर वह एक साल तक किसी पत्रिका में नहीं छप सकी। आखिर मैंने सही राय के लिए वह कविता ख्रुश्चोव को भेजी और वह 'प्रवदा' में छप गयी। सिद्धांतवादी आलोचकों को मुंहकी खानी पड़ी।

सरदर्द
कमर का दर्द
दाँत का दर्द

दर्द, पीड़ा और
सर्दी-ज़ुकाम में
आराम पाने के लिए
एक ही
सेरिडोन 'रोश'
काफ़ी है!

Saridon
ROCHE PRODUCTS LIMITED

यह दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है, ताज़गी देती है

दुनियाभर में मशहूर सेरिडोन दर्द में जल्द और निरापद रूप से पूरा आराम पहुँचाती है। सरदर्द, दाँत के दर्द, हरारत और सर्दी-ज़ुकाम के लिए सेरिडोन लीजिए। बड़ों के लिए एक टिकिया; बच्चों के लिए १/४ से १/२ टिकिया तक काफ़ी है।

'रोश' उत्पादन
सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स: **वोल्टास लिमिटेड**

सेरिडोन की एक ही टिकिया काफ़ी है
एक टिकिया के १३ नये पैसे

पर उन्होंने मेरा पीछा नहीं छोड़ा।

इसी प्रकार मेरी कविता 'बावीय यार' भी बड़ी कठिनाई से प्रकाशित हुई और आलोचकों ने मेरे खिलाफ लेख लिखे कि मैं गद्दार हूं। पर उस कविता के बारे में जो बीस हजार से ज्यादा पाठकों के पत्र मेरे पास आये, उनसे मेरा विश्वास और दृढ़ हुआ कि मैं गलत नहीं हूं और मेरी बात को सही अर्थों में लोगों ने समझा है। फिर बाद में यही कविता मैंने हजारों लोगों के सामने पढ़कर भी सुनायी। उन्होंने उसका स्वागत किया और मुक्तकंठ से मुझे दाद दी।

हमने पिछले दौर में बहुत-सी गलतियां की हैं; लेकिन हमने उनकी ओर से आंखें बंद नहीं की हैं। कई बार हमें यह भी कहा जाता है कि हम अपने अतीत के बारे में जरूरत से ज्यादा बातें करते हैं। पर हमारे लिए अपने भूतकाल के बारे में बातें करने का अर्थ है, अपने भविष्य के बारे में सोचना। हम संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

मुझे इस बात का गर्व है कि मैं महज दर्शक नहीं हूं, बल्कि अपने देशवासियों के साथ मिलकर भविष्य के निर्माण के लिए संघर्ष कर रहा हूं।

★

लैला, कहार, कबूतरी और कोहेनूर ये चार घोड़े महाराज रणजीत सिंह के अस्तबल की शान थे। महाराज को उनसे बड़ा प्यार था। वे स्वयं उन पर सवार हुआ करते थे। एक बार उनका पुत्र राजकुमार खड़कसिंह उनमें से एक घोड़े पर सवार हो सर को चला गया और लौटकर उसे महाराज के अस्तबल में बंधवाने के बजाय अपने ही अस्तबल में बंधवा लिया। जब महाराज को इसका पता चला, वे बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने अपने वजीर सैयद अजीजुद्दीन से इसकी शिकायत की—"देखो फकीरजी कैसा अंधेर है! टक्का खड़कसिंह दिन दहाड़े हमारा घोड़ा खोल ले गया।" फकीरजी ने निहायत भोली सूरत बनाकर जवाब दिया—"वाकई महाराज, बड़ी दिलेरी और गुस्ताखी की बात है। घोड़ा जैसे उसके बाप का ही हो।" महाराज खिलखिलाकर हंस पड़े और उनका क्रोध काफूर हो गया। **—मोफीजुर्रहमान**

कालेज के कुछ नाजुक-बदन और फैशनेबल लड़कों ने अल्लामा अकबाल से सवाल किया—"अल्लामा, आप इन बेचारी औरतों के लिए परदा जरूरी क्यों मानते हैं।" अल्लामा ने मुस्कराते हुए कहा—"तुम सिर्फ औरतों की बात कर रहे हो। मैं तो तुम-जैसे नौजवानों को भी परदे में बैठाने की फिक्र में हूं।"

सेठ— तुमने आज मुझे इस नदी में डूबने से बचाया। यह लो दो रुपये का नोट। भुनाकर एक रुपया मुझे लौटा दो। एक रुपया तुम रख लो।

देहाती— सेठजी, यहां तो कोई दुकान भी नहीं है, नोट कहां से भुनाया जाये। आप इसे अपने ही पास रखिये। जब दुबारा डूबें तो मुझे पूरा दो रुपये का नोट दे देना।

आदमी के शानदार
व्यक्तित्व में निखार...

कपड़ों से ही व्यक्ति की रुचि, उसकी सफलता . . . और उसके विशिष्ट व्यक्तित्व का पता चलता है। उसका श्रेय है शक्ति की 'टेरिलिन' सूटिंग को। शक्ति की 'टेरिलिन' सूटिंग्ज औ शर्टिंग्ज धोओ और पहिनो की साबि वाले कपड़े हैं, जो आयात किये हुए 'टेरिलिन' पॉलीस्टर से तैयार किये हैं। पहिनने में मजबूत और टिकाऊ क्रीज - अवरोधक। परीक्षित पक्के आरामदेह। हर स्थिति में लाजवाब पहिनने योग्य

पोद्दार
प्रॉडक्ट्स

Shakti Silk

'टेरिलिन' सूटिंग्ज़ और शर्टिंग्ज। रेयान सूटिंग्ज़। क्रेप्स। टाफेटाज़। साटन। ब्रोकेड्स। नायलॉन्स और रेया

पत्नी
सुबह ना
आप हमे
याद है f
देर से हं
पति-
देर नहीं

×

घर
चुक जाने
पंप पर
का मालि
पेट्रोल

अरे...

चुटकी-भर हंसी

पत्नी –"आप भोजन पर देर से आये हैं। सुबह नाश्ते के समय भी देर से आये थे। आप हमेशा देर से ही क्यों आते हैं ? मुझे याद है कि आप हमारे विवाह के समय भी देर से ही आये थे।"

पति–"हां, लेकिन दुर्भाग्य से मुझे काफी देर नहीं हुई थी।"

× × ×

घर से बाहर घूमने जाते समय पेट्रोल चुक जाने की संभावना से एक सज्जन पेट्रोल-पंप पर गाड़ी में पेट्रोल भरवा रहे थे। पंप का मालिक उनका परिचित था।

पेट्रोल-पंप के आस-पास कई गधे खड़े थे। वे बिल चुकाते हुए कटाक्ष-भरे स्वर में बोले–"बहुत गधे हैं यहां तो ?"

बाकी पैसे थमाता हुआ पेट्रोल-पंप का मालिक धीरे-से मुस्कराकर बोला–"उतने गधे तो यहां नहीं है, जितने अक्सर आते-जाते रहते हैं।"

× × ×

नये अध्यापक बार-बार 'समझ गये न' कहने के आदी थे। लेकिन उन्हें यह सहन नहीं था कि विद्यार्थी प्रत्युत्तर में 'हां' कहें। एक दिन वे विद्यार्थियों को समझा रहे थे कि वे लोग इस तरह हर बार 'हां-हां' न कहा करें। अंत में बोले–"समझ गये न?"

उत्तर मिला –"हां।"

वे खीझ उठे–"मैं कह रहा हूं कि बार-बार 'हां' मत बोला करो। अब तो समझ गये न ?"

तत्पर प्रत्युत्तर था –"हां।"

× × ×

मरीज (आंखों के डाक्टर से)–"डाक्टर साहब, मेरी आंख में बहुत तकलीफ हो रही है।"

डाक्टर–"कौन-सी आंख में ?"

मरीज (दायीं आंख की ओर उंगली से इंगित करते हुए)–"इस आंख में।"

डाक्टर–"ओह, मैं तो सिर्फ बायीं आंख का डाक्टर हूं।" **–कुसुमलता**

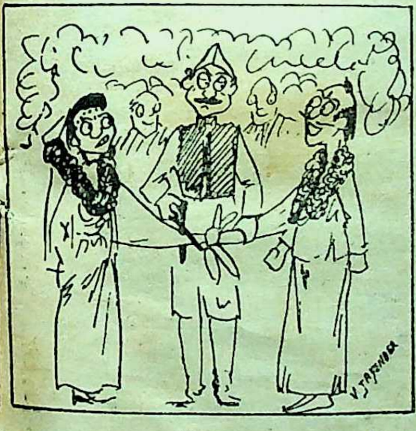

अरे...अरे...मिस्टर साहब, यह विवाह है, उद्घाटन समारोह नहीं !

★

गुलशन नंदा का साहसपूर्ण उपन्यास 'अंधेरे चिराग' अब रजतपट का कीर्तिस्तंभ बनकर आ रहा है!

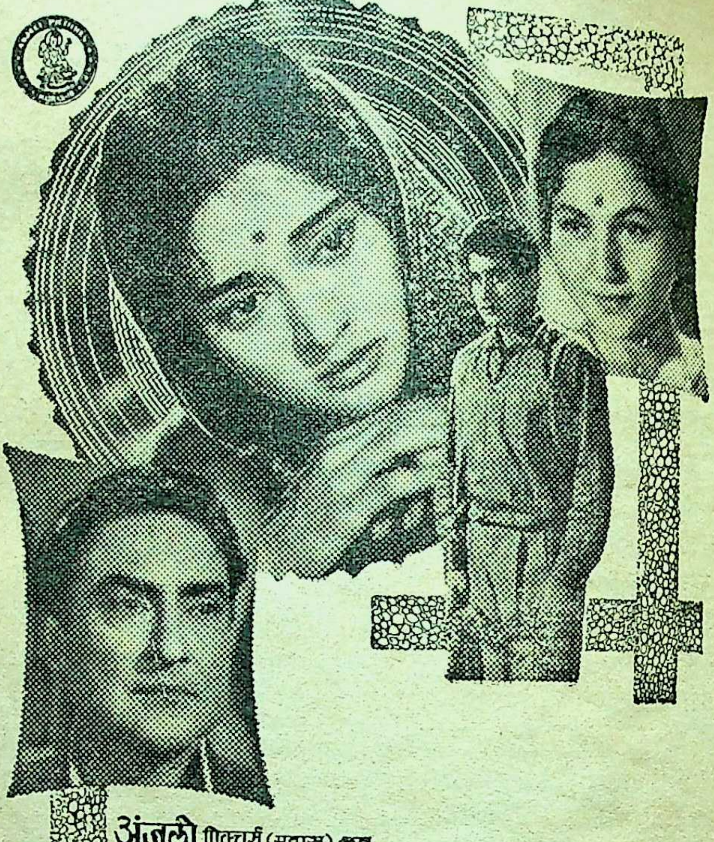

अंजली पिक्चर्स (मद्रास) कृत

फूलों की सेज

निर्माता और संगीतनिर्देशक : * पटकथा और निर्देशन

आदि नारायण राव इंदरराज आनंद

कहानी : गुलशन नंदा * गीत : हसरत * फोटोग्राफी : कमल घोष

अशोककुमार * वैजयंतीमाला * मनोज * निरुपा राय * शुभा खोटे

ललिता पवार * कन्हैयालाल * मुकरी * राजू और महमूद

विश्व वितरणाधिकार (मैसूर, आंध्र, तमिलनाड और श्रीलंका को छोड़कर)

राजश्री प्रॉडक्शंस प्रा० लि० बंबई–२०

11300

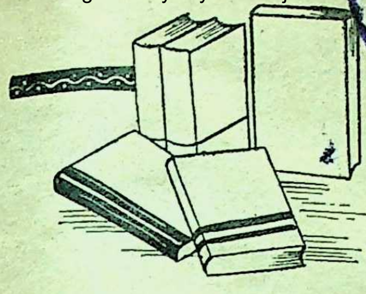

नयी पुस्तकें

जैसे उनके दिन फिरे

लेखक : हरिशंकर परसाई; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; पृष्ठसंख्या : १२६; मूल्य : ढाई रुपये ।

लेखक की १९ मौलिक हास्य-कहानियां इस पुस्तक की शोभा बढ़ाती हैं—'कहानियां' शब्द मोटे तौर पर । वैसे इनमें व्यक्तिचित्र हैं, रिपोर्ताज हैं और पौराणिक पद्धति की कथाएं व बैताल के किस्से भी हैं । पुरानी और नयी दोनों कथन-शैलियों में लेखक ने आज के जीवन की विविध आकृतियों और विकृतियों को अपनी हास्य-व्यंग्यमयी लेखनी से उरेहा है और खूब उरेहा है ।

साहित्यालोचन के सिद्धांत

लेखक : लासेलास एबरक्रांबी; अनुवादक : सोमेश पुरोहित; प्रकाशक: वोरा एंड कंपनी, बंबई; पृष्ठसंख्या: १४०; मूल्य: तीन रुपये ।

पश्चिम के इस प्रसिद्ध विद्वान की पुस्तक का हिन्दी में आना बहुत अच्छा है । अनुवादक ने मूल से मेल खानेवाला भाषांतर करने की पर्याप्त चेष्टा की है, पर कुछ अनावश्यक क्लिष्ट शब्द अखरते हैं । जहां 'बात' शब्द से काम चलता है, उसकी जगह 'वस्तु' शब्द रखना, भ्रम उत्पन्न करना है । पुस्तक में अरस्तू तथा उसके कुछ परवर्ती काव्य-मनीषियों के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया है । प्रकाशन उपादेय है ।

चेहरे

रचयिता : विजय चंद; प्रकाशक : प्रगतिशील प्रकाशन, दिल्ली ६; पृष्ठसंख्या : ११६; मूल्य : चार रुपये पचास पैसे ।

कविताओं के इस सचित्र संग्रह में १३ लंबी-लंबी कविताएं हैं । बकौल कवि महोदय उनकी आस्था सोद्देश्य कविता में है—अर्थ-रहित गीतों और प्रयोगवादी पहेलियों में नहीं । उनका कहना है कि उन्होंने कविता से ऊबे हुए लोगों के लिए कुछ सार्थक और रसदायी सामग्री जुटाने का प्रयास किया है । पर उनके इस प्रयास में शब्द बहुत हैं, भाव विरल और कवित्व सर्वथा लुप्त । हां, कुछ व्यंग्यात्मक विचार अवश्य हैं, इन्हें पद्यात्मक बाना पहनाने में बहुत-से स्थलों पर लेखक का कृतित्व अपने आप में एक मजाक-सा बन गया है । इन तुकहीन और (कहीं-कहीं) तुकबंदी के पिरामिडों से साधारण पाठक कौतूहल का आनंद ले सकेंगे ।

111302

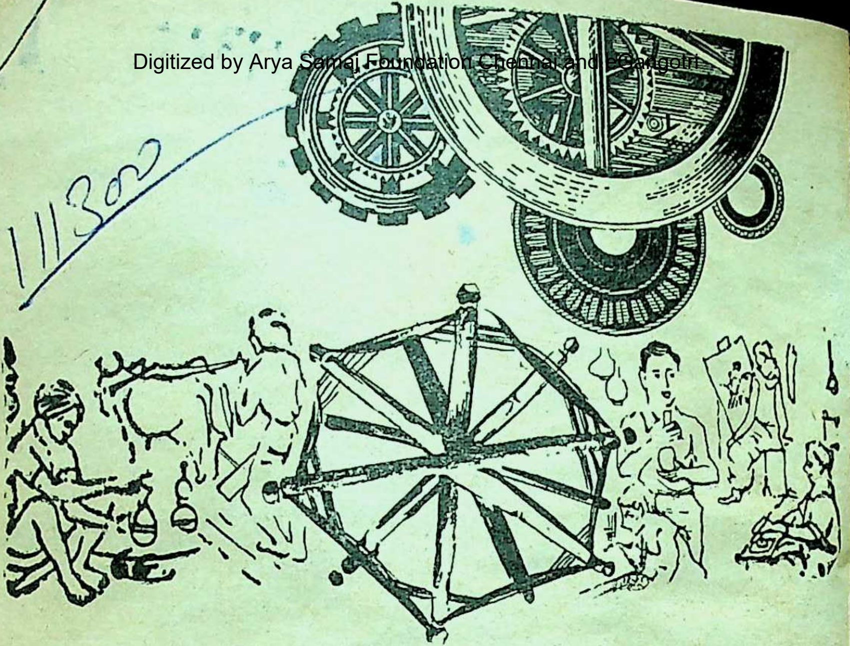

गतिमान चक्र बढ़ता रहेगा...
सभी आक्रमणों को कुचलते हुए,
प्रजातांत्रिक समाजवाद के अपने
नियत ध्येय के प्रति अग्रसर होते हुए
और सभी अवरोधों को दूर करते हुए !
आज जिस पथ का हम अनुसरण कर रहे हैं
उसके प्रति विश्वास का पुनरुच्चार हम करें।
जिसकी पुर्नरचना करने का हम प्रयत्न कर रहे
उस भारत का हम पुनरपि विचार करें
एक ऐसा समाज जिसमें शोष
असमानता और अन्याय का अस्तित्व नहीं हो
और जहाँ व्यक्तिस्वातंत्र्य, प्रेरक
और कार्यक्षमता को संपूर्ण अवसर प्राप्त होगा
...हमारे बहु आकांक्षित ध्येय की ओर
संचालक, प्रकाशन संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, बंबई

Compiled
1999-2000

1113eo

संचाल